मुख़्तसर
अल-मिन्हाजुस्सवी
मिन
अल-हदीसिन्नबवी
अ़रबी मतन, हिन्दी लिपि में उर्दू तर्जुमा
और
तहक़ीक़ो तख़रीज
तालीफ़
शैख़ुल इस्लाम डॉ. मुहम्मद ताहिरुल क़ादिरी
मिन्हाजुल क़ुरआन इण्टरनेशनल
इण्डिया
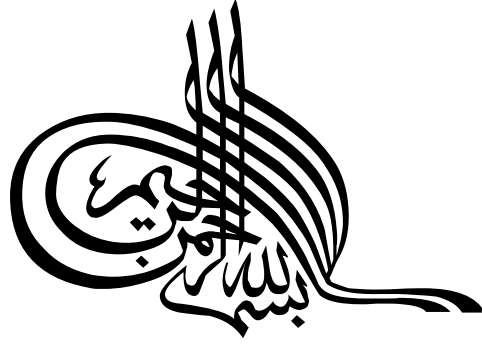
مَـوْلايَ صَـلِّ وَسَـلِّـمْ دَآئِـمًـا أَبَدًا
عَـلَـى حَبِيْبِـكَ خَيْـرِ الْخَلْقِ كُلِّهِمِ

نَبِيُّـنَـا الآمِــرُ الـنَّــاهِي فَــلَا أَحَدٌ
أَبَــرَّ فِـي قَــوْلِ لَا مِـنْـهُ وَلَا نَـعَـمِ

﴿ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَعَلَى آلِهِ وَصَحْبِهِ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ ﴾

فهرس

रक़म	अलअबवाब	पेज
❁	تَقْدِيْمَاتُ الْعُلَمَاءِ الْعَرَبِ الْأَجِلَّاءِ الْأَفَاضِلِ उलमाए अ़रब और मशाइख़े किबार की तक़दीमात	27
❁	مُخْتَصَرُ الْجَوَاهِرِ الْبَاهِرَةِ فِي الْأَسَانِيْدِ الطَّاهِرَةِ अइम्मए हदीस और तसव्वुफ़ के तुरुक़ से बारगाहे रिसालत मआब ﷺ तक मोअल्लिफ़ की मुख़तसरन मुत्तसिल असानीद	28
❁	اَلْخُطْبَةُ السَّدِيْدَةُ فِي أُصُوْلِ الْحَدِيْثِ وَفُرُوْعِ الْعَقِيْدَةِ मुक़द्दमए उसूले हदीसो फ़ुरूआते अ़क़ीदा	29
1	الْإِيْمَانُ وَالْإِسْلَامُ وَالْإِحْسَانُ ईमान, इस्लाम और एहसान	87
2	حُكْمُ الْخَوَارِجِ وَالْمُرْتَدِّيْنَ وَالْمُتَنَقِّصِيْنَ النَّبِيَّ ﷺ ख़वारिजो मुर्तदीन और गुस्ताख़ाने मुस्तफ़ा ﷺ का बयान	141
3	اَلْعِبَادَاتُ وَالْمَنَاسِک इबादात और मनासिक	193

रक़म	अलअबवाब	पेज़
4	كَيْفِيَّةُ صَلَاةِ النَّبِيِّ ﷺ हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ का तरीक़ए नमाज़	273
5	صَلَاةُ التَّرَاوِيْحِ وَعَدَدُ رَكْعَاتِهَا नमाज़े तरावीह और उसकी तादादे रकआत	311
6	الدُّعَاءُ بَعْدَ الصَّلَوَاتِ الْمَكْتُوْبَةِ फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद दुआ करना	329
7	الإِخْلَاصُ وَالرَّقَائِقُ इख़्लास और रिक़्क़ते क़ल्ब	369
8	فَضْلُ الْعِلْمِ وَالْأَعْمَالِ الصَّالِحَةِ इल्म और आमाले सालेहा की फ़ज़ीलत	423
9	عَظَمَةُ الرِّسَالَةِ وَشَرَفُ الْمُصْطَفٰى ﷺ अज़मते रिसालत और शरफे मुस्तफ़ा ﷺ	489
10	جَامِعُ الْمَنَاقِبِ जामेअ मनाक़िब	601
11	اَلْمُعْجِزَاتُ وَالْكَرَامَاتُ मुअजिज़ात और करामात	659

रक़म	अलअबवाब	पेज़
12	شَرَفُ هَذِهِ الْأُمَّةِ उम्मते मुहम्मदिया का इज़्ज़ो शरफ़	711
13	الِاعْتِصَامُ بِالسُّنَّةِ सुन्नते नबवी ﷺ को मज़बूती से थामे रखना	747
14	اَلْبِرُّ وَالصِّلَةُ وَالْحُقُوقُ नेकी, सिलारहमी और हुक़ूक़	769
15	الآدَابُ وَالْمُعَامَلَةُ आदाब और मुआमलात	807
16	اَلأُحَادِيَّاتُ وَالثُّنَائِيَّاتُ وَالثُّلَاثِيَّاتُ उहादियात–व–सुनाइयाते इमामे आज़म और सुलासियाते इमाम बुख़ारी	869
۞	مصادر التخريج मसादिरुत्तख़रीज	913

अल–अबवाब वल–फ़ुसूल

रक़्म	अल–अबवाब वल–फ़ुसूल	पेज
۞	تَقْدِيْمَاتُ الْعُلَمَاءِ الْعَرَبِ الْأَجِلَّاءِ الْأَفَاضِلِ उलमाए अ़रब और मशाइख़े किबार की तक़दीमात	27
1	فضيلة الشيخ الإمام الأكبر الدكتور محمد سيد طنطاوي (شيخ الأزهر) इ़ज़्ज़त मआब इमामुल अकबर डॉ. मुहम्मद सय्यद तन्तावी (शैख़ अल अज़हर)	28
2	فضيلة الشيخ علي جمعة (مفتي الديار المصرية) इ़ज़्ज़त मआब शैख़ अली जुम्आ (मुफ्तिए आज़म, मिस्र)	32
3	فضيلة الشيخ الأستاذ الدكتور أحمد عمر هاشم (الرئيس السّابق لجامعة الأزهر) इ़ज़्ज़त मआब शैख़ प्रोफेसर डॉ. अहमद उमर हाशिम साबिक़ वाइस चान्सलर, जामेअ अल अज़हर	36
4	فضيلة الشيخ أسعد محمد سعيد الصاغرجي (مفتي الحنفية بالشام) इ़ज़्ज़त मआब शैख़ असअद मुहम्मद सईद साग़िरजी (मुफ्तिए आज़म हनफ़िया, शाम)	40

रक़्म	अल–अबवाब वल–फ़ुसूल	पेज
۞	مُخْتَصَرُ الْجَوَاهِرِ الْبَاهِرَةِ فِي الْأَسَانِيْدِ الطَّاهِرَةِ ﴾अइम्मए हदीस और तसव्वुफ़ के तुरुक़ से बारगाहे रिसालते मआब ﷺ तक मोअल्लिफ़ की मुख़्तसरन मुत्तसिल असानीद﴿	1
1	إسنادي إلى الإمام الأعظم أبي حنيفة رضي الله عنه ﴾इमामे आज़म अबू हनीफ़ा नौमान बिन साबित رضي الله عنه तक मुत्तसिल असानीद﴿	7
2	إسنادي إلى الإمام مالک بن أنس الأصبحي رضي الله عنه ﴾इमाम मालिक बिन अनस अस्बही رضي الله عنه तक मुत्तसिल असानीद﴿	10
3	إسنادي إلى الإمام محمد بن إدريس الشافعي رضي الله عنه ﴾इमाम मुहम्मद बिन इदरीस अश्शाफ़ई رضي الله عنه तक मुत्तसिल असानीद﴿	11
4	إسنادي إلى الإمام أحمد بن حنبل الشيباني رضي الله عنه ﴾इमाम अहमद बिन हंबल अश्शैबानी رضي الله عنه तक मुत्तसिल असानीद﴿	13
5	إسنادي للجامع الصحيح إلى الإمام البخاري رضي الله عنه ﴾इमाम मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी رضي الله عنه तक ''सहीह बुख़ारी'' की मुत्तसिल असानीद﴿	14
6	إسنادي للجامع الصحيح إلى الإمام مسلم رضي الله عنه ﴾इमाम मुस्लिम बिन हुज्जाज क़ुशैरी رضي الله عنه तक ''सहीह मुस्लिम'' की मुत्तसिल असानीद﴿	16

रक़्म	अल–अबवाब वल–फ़ुसूल	पेज
7	إسنادي للسنن الأربعة من أبي داود و التّرمذي والنّسائي و ابن ماجه ﷺ ﴿इमाम अबू दाऊद, इमाम तिर्मिज़ी, इमाम नसाई और इमाम इब्ने माजा ﷺ तक ''सुनने अर्बआ'' की मुत्तसिल असानीद﴾	18
8	إسنادي للشفاء إلى الإمام القاضي عياض ﷺ ﴿क़ाज़ी अयाज़ मालिकी ﷺ तक ''शिफ़ा'' की मुत्तसिल असानीद﴾	20
9	إسنادي إلى سيّدنا الغوث الأعظم أبي محمد محي الدين الشيخ عبد القادر الجيلاني ﷺ بعلوم التصوّف و الطّريقة و المعرفة ﴿उलूमे तसव्वुफ़ और तरीक़त व मा'रिफ़त में हुज़ूर सय्यदना गौसुल आज़म अबू मुहम्मद मुहिय्युद्दीन शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी ﷺ तक मुत्तसिल असानीद﴾	22
10	إسنادي إلى الشيخ الأكبر محي الدين محمد بن علي بن العربي الطائي الحاتمي ﷺ ﴿शैख़ुल अकबर मुहियुद्दीन मुहम्मद बिन अ़ली बिन अ़रबी ﷺ तक मुत्तसिल असानीद﴾	24
۞	اَلْخُطْبَةُ السَّدِيْدَةُ فِي أُصُوْلِ الْحَدِيْثِ وَفُرُوْعِ الْعَقِيْدَةِ ﴿मुक़द्दमए उसूले हदीस व फ़ुरूआते अ़क़ीदा﴾	29

रक़्म	अल–अबवाब वल–फ़ुसूल	पेज
1	اَلْبَابُ الْأَوَّلُ : पहला बाब	
	الإِيْمَانُ وَالإِسْلَامُ وَالإِحْسَانُ	87
	ईमान, इस्लाम और एहसान	
1	فَصْلٌ فِي الإِيْمَانِ	91
	ईमान का बयान	
2	فَصْلٌ فِي حَقِيْقَةِ الإِيْمَانِ	98
	हक़ीक़ते ईमान का बयान	
3	فَصْلٌ فِي عَلَامَاتِ الْمُؤْمِنِ وَ أَوْصَافِهِ	102
	मोमिन की अ़लामात और सिफ़ात का बयान	
4	فَصْلٌ فِي الإِسْلَامِ	106
	इस्लाम का बयान	
5	فَصْلٌ فِي عَلَامَاتِ الْمُسْلِمِ وَ أَوْصَافِهِ	116
	मुसलमान की अ़लामात और सिफ़ात का बयान	
6	فصلٌ فِی حَقِّ الْمُسْلِمِ عَلَی الْمُسْلِمِ	120
	मुसलमान पर मुसलमान के हुक़ूक़ का बयान	
7	فَصْلٌ فِي الإِحْسَانِ	124
	एहसान का बयान	

रक़म	अल–अबवाब वल–फ़ुसूल	पेज
8	فَصْلٌ فِي عَـلامَاتِ الْمُحْسِنِ وَ أَوْصَافِهِ	128
	﴾मोहसिन की अलामात व सिफ़ात का बयान﴿	
9	فَصْلٌ فِي عَـلامَاتِ الْكُفْرِ وَالنِّفَاقِ	132
	﴾कुफ्र और निफ़ाक़ की अलामात का बयान﴿	
2	اَلْبَابُ الثَّانِي : ﴾दूसरा बाब﴿	
	حُكْمُ الْخَوارِجِ وَالْمُرْتَدِّيْنَ وَالْمُتَنَقِّصِيْنَ النَّبِيَّ ﷺ	141
	﴾ख़वारिजो मुरतद्दीन और गुस्ताख़ाने मुस्तफ़ा का बयान﴿	
3	اَلْبَابُ الثَّالِثُ : ﴾तीसरा बाब﴿	
	اَلْعِبَادَاتُ وَالْمَنَاسِکُ	193
	﴾इबादात और मनासिक﴿	
1	فَصْلٌ فِي فَضْلِ الصَّلَاةِ	197
	﴾फ़ज़ीलते नमाज़ का बयान﴿	
2	فَصْلٌ فِي الصَّلَوَاتِ الْمَكْتُوْبَةِ	205
	﴾फ़र्ज़ नमाज़ों का बयान﴿	
3	فَصْلٌ فِي فَضْلِ السُّنَنِ وَالنَّوَافِلِ	212
	﴾फ़ज़ीलते सुनन और नवाफ़िल का बयान﴿	

रक़्म	अल–अबवाब वल–फ़ुसूल	पेज
4	فَصْلٌ فِي صِيَامِ رَمَضَانَ	220
	रमज़ानुल मुबारक के रोज़ों का बयान	
5	فَصْلٌ فِي صِيَامِ التَّطَوُّعِ	229
	नफ़्ली रोज़ों का बयान	
6	فَصْلٌ فِي فَضْلِ قِيَامِ رَمَضَانَ	234
	फ़ज़ीलते क़यामे रमज़ान का बयान	
7	فَصْلٌ فِي فَضْلِ الِاعْتِكَافِ	242
	फ़ज़ीलते एतेकाफ़ का बयान	
8	فَصْلٌ فِي الصَّدَقَةِ وَالزَّكَاةِ	247
	सदक़ा और ज़कात का बयान	
9	فَصْلٌ فِي الصَّدَقَةِ عَلَى الْأَهْلِ وَالْأَقَارِبِ	252
	अइज़्ज़ओ अक़रबा पर सदक़ा करने का बयान	
10	فَصْلٌ فِي الْحَجِّ وَالْعُمْرَةِ	256
	हज और उमरह का बयान	
11	فَصْلٌ فِي فَضَائِلِ مَكَّةَ الْمُكَرَّمَةِ	261
	फ़ज़ाइले मक्का मुकर्रमा का बयान	
12	فَصْلٌ فِي فَضَائِلِ الْمَدِينَةِ الْمُنَوَّرَةِ	267
	फ़ज़ाइले मदीना मुनव्वरह का बयान	

रक़्म	अल–अबवाब वल–फ़ुसूल	पेज
4	اَلْبَابُ الرَّابِعُ : ﴾चौथा बाब﴿	
	كَيْفِيَّةُ صَلاةِ النَّبِيِّ ﷺ	273
	﴾हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ का तरीक़ए–नमाज़﴿	
1	فَصْلٌ فِي الإِمَامَةِ وَ عَدَمِ الْجَهْرِ بِبِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ	277
	﴾इमामत कराने और बुलन्द आवाज़ से तस्मियह न पढ़ने का बयान﴿	
2	فَصْلٌ فِي عَدَمِ رَفْعِ الْيَدَيْنِ إِلَّا فِي أَوَّلِ مَرَّةٍ	285
	﴾तक्बीरे ऊला के अलावा नमाज़ में रफ़अ यदैन न करने का बयान﴿	
3	فَصْلٌ فِي تَرْكِ الْقِرَاءَةِ خَلْفَ الإِمَامِ	292
	﴾इमाम के पीछे क़िरअत न करने का बयान﴿	
4	فَصْلٌ فِي عَدَمِ الْجَهْرِ بِالتَّأْمِينِ	305
	﴾बुलन्द आवाज़ से आमीन न कहने का बयान﴿	
5	اَلْبَابُ الْخَامِسُ : ﴾पाँचवाँ बाब﴿	
	صَلاةُ التَّرَاوِيحِ وَعَدَدُ رَكْعَاتِهَا	311
	﴾नमाज़े तरावीह और उसकी तादादे रकआत﴿	
6	اَلْبَابُ السَّادِسُ : ﴾छठा बाब﴿	
	الدُّعَاءُ بَعْدَ الصَّلَوَاتِ الْمَكْتُوبَةِ	329
	﴾फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद दुआ करना﴿	

रक़म	अल–अबवाब वल–फ़ुसूल	पेज
1	فَصْلٌ فِي فَضْلِ الدُّعَاءِ	333
	फ़ज़ीलते दुआ का बयान	
2	فَصْلٌ فِي الدُّعَاءِ بَعْدَ الصَّلَوَاتِ الْمَكْتُوْبَةِ	340
	फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद दुआ करने का बयान	
3	فَصْلٌ فِي رَفْعِ الْيَدَيْنِ فِي الدُّعَاءِ	353
	दुआ में हाथ उठाने का बयान	
7	اَلْبَابُ السَّابِعُ : सातवाँ बाब	
	الإِخْلَاصُ وَالرَّقَائِقُ	369
	इख़्लास और रिक़्क़ते क़ल्ब	
1	فَصْلٌ فِي أَنَّ الْأَعْمَالَ بِالنِّيَّاتِ	373
	आमाल का दारोमदार निय्यतों पर होने का बयान	
2	فَصْلٌ فِي الزُّهْدِ فِي الدُّنْيَا	377
	दुनिया से बेरग़बती का बयान	
3	فَصْلٌ فِي الصِّدْقِ وَالإِخْلَاصِ	382
	सच्चाई और इख़्लास का बयान	
4	فَصْلٌ فِي أَجْرِ الْحُبِّ فِي اللهِ تَعَالَى	387
	अल्लाह Ù के लिए मुहब्बत करने के सवाब का बयान	

रक़्म	अल–अबवाब वल–फ़ुसूल	पेज
5	فَصْلٌ فِي حُسْنِ الظَّنِّ بِاللهِ تَعَالٰی अल्लाह Ù के बारे में हुस्ने ज़न रखने का बयान	391
6	فَصْلٌ فِي الْبُكَاءِ مِنْ خَشْيَةِ اللهِ تَعَالٰی अल्लाह Ù के ख़ौफ़ से रोने का बयान	396
7	فَصْلٌ فِي قِرَاءَةِ الْقُرْآنِ وَتَحْسِيْنِ الصَّوْتِ بِهَا अच्छी आवाज़ से तिलावते क़ुरआन करने का बयान	399
8	فَصْلٌ فِي الْقَنَاعَةِ وَتَرْكِ الطَّمَعِ क़नाअत इख़्तियार करने और लालच से बचने का बयान	403
9	فَصْلٌ فِي التَّوْبَةِ وَالِاسْتِغْفَارِ तौबा और इस्तिग़फ़ार का बयान	407
10	فَصْلٌ فِي الْأَذْكَارِ وَالتَّسْبِيْحَاتِ अज़कार और तसबीहात का बयान	414
8	اَلْبَابُ الثَّامِنُ: आठवाँ बाब	
	فَضْلُ الْعِلْمِ وَالْأَعْمَالِ الصَّالِحَةِ इल्म और आमाले सालेहा की फ़ज़ीलत	423
1	فَصْلٌ فِي فَضْلِ الْعِلْمِ وَالْعُلَمَاءِ इल्म व उलेमा की फ़ज़ीलत का बयान	427

रक़म	अल–अबवाब वल–फ़ुसूल	पेज
2	فَصْلٌ فِي فَضْلِ الذِّكْرِ وَالذَّاكِرِيْنَ	433
	ज़िक्रे इलाही और ज़ाकिरीन की फ़ज़ीलत का बयान	
3	فَصْلٌ فِي فَضْلِ الصَّلَاةِ وَالسَّلَامِ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ	445
	हुज़ूर नबीए अकरम ﷺ पर दुरूदो सलाम भेजने की फ़ज़ीलत का बयान	
4	فَصْلٌ فِي فَضْلِ قِيَامِ اللَّيْلِ	453
	रात को क़ियाम करने की फ़ज़ीलत का बयान	
5	فَصْلٌ فِي الْمَدَائِحِ النَّبَوِيَّةِ وَ إِنْشَادِهَا	460
	हुज़ूर नबीए अकरम ﷺ की मदह और नअ़त ख़्वानी का बयान	
6	فَصْلٌ فِي فَضْلِ زِيَارَةِ الْقُبُوْرِ	476
	ज़ियारते क़ुबूर की फ़ज़ीलत का बयान	
7	فَصْلٌ فِي فَضْلِ إِيْصَالِ الثَّوَابِ إِلَى الْأَمْوَاتِ	480
	फ़ौत शुदगान को सवाब पहुँचाने की फ़ज़ीलत का बयान	
9	اَلْبَابُ التَّاسِعُ : नवाँ बाब	
	عَظَمَةُ الرِّسَالَةِ وَشَرَفُ الْمُصْطَفَى ﷺ	489
	अज़मते रिसालत और शरफ़े मुस्तफ़ा ﷺ	
1	فَصْلٌ فِي شَرَفِ النُّبُوَّةِ الْمُحَمَّدِيَّةِ ﷺ	493
	नबुव्वते मुहम्मदी ﷺ के शरफ़ का बयान	
2	فَصْلٌ فِي مَنَاقِبِ النَّبِيِّ ﷺ	505
	हुज़ूर नबीए अकरम ﷺ के मनाक़िब का बयान	

रक़म	अल–अबवाब वल–फ़ुसूल	पेज
3	فَصْلٌ فِي أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ حَيٌّ فِي قَبْرِهِ بِرُوْحِهِ وَجَسَدِهِ हुज़ूर ﷺ का रोज़ए अनवर में अपनी रूहे मुबारक और जसदे अक़दस के साथ ज़िन्दा होने का बयान	518
4	فَصْلٌ فِي سَعَةِ عِلْمِ النَّبِيِّ ﷺ وَكَمَالِ مَعْرِفَتِهِ हुज़ूर नबीए अकरम ﷺ की वुस्अते इल्म व कमाले मा'रेफ़त का बयान	526
5	فَصْلٌ فِي أَنَّ الْأُمَّةَ تُسْئَلُ عَنْ مَكَانَةِ النَّبِيِّ ﷺ فِي الْقُبُوْرِ उम्मत से क़ब्र में मुक़ामे मुस्तफ़ा ﷺ से मुतअल्लिक़ पूछे जाने का बयान	536
6	فَصْلٌ فِي الشَّفَاعَةِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ रोज़े क़यामत शफ़ाअत का बयान	546
7	فَصْلٌ فِي أَجْرِ حُبِّ النَّبِيِّ ﷺ وَالصُّحْبَةِ الصَّالِحَةِ हुज़ूर ﷺ से मुहब्बत और सोहबते सालेहीन के अज्र का बयान	553
8	فَصْلٌ فِي التَّبَرُّكِ بِالنَّبِيِّ ﷺ وَبِآثَارِهِ हुज़ूर ﷺ की ज़ाते अक़दस और आप ﷺ के आसारे मुबारका से हुसूले बरकत का बयान	564
9	فَصْلٌ فِي التَّوَسُّلِ بِالنَّبِيِّ ﷺ وَالصَّالِحِيْنَ हुज़ूर नबीए अकरम ﷺ और सालेहीन से तवस्सुल का बयान	573

रक़्म	अल–अबवाब वल–फ़ुसूल	पेज
10	فَصْلٌ فِي عَدَمِ نَظِيْرِ النَّبِيِّ ﷺ فِي الْكَوْنِ	582
	«काएनात में हुज़ूर ﷺ की मिस्ल न होने का बयान»	
11	فَصْلٌ فِي تَعْظِيْمِ النَّبِيِّ ﷺ وَتَوْقِيْرِهِ	588
	«हुज़ूर नबीए अकरम ﷺ की तअज़ीमो तौक़ीर का बयान»	
10	اَلْبَابُ الْعَاشِرُ : «दसवाँ बाब»	
	جَامِعُ الْمَنَاقِبِ	601
	«जामेउल मनाक़िब»	
1	فَصْلٌ فِي مَنَاقِبِ أَهْلِ الْبَيْتِ وَقَرَابَةِ الرَّسُوْلِ سلام الله عليهم	605
	«हुज़ूर ﷺ के अहले बैत और क़राबतदारों के मनाक़िब का बयान»	
2	فَصْلٌ فِي مَنَاقِبِ الْخُلَفَاءِ وَصَحَابَةِ الرَّسُوْلِ ؓ	619
	«ख़ुलफ़ाए राशिदीन और सहाबए किराम ؓ के मनाक़िब का बयान»	
3	فَصْلٌ فِي مَنَاقِبِ الْإِمَامِ الْمَهْدِيِّ الْمُنْتَظَرِ ؑ	633
	«मनाक़िबे इमाम महदी मुन्तज़र ؑ का बयान»	
4	فَصْلٌ فِي مَنَاقِبِ الْأَئِمَّةِ الْفُقَهَاءِ الْمُجْتَهِدِيْنَ ؓ	639
	«अइम्मए फुक़हाए मुजतहिदीन ؓ के मनाक़िब का बयान»	

रक़म	अल–अबवाब वल–फ़ुसूल	पेज
5	فَصْلٌ فِي مَنَاقِبِ الْأَوْلِيَاءِ وَالصَّالِحِيْنَ	644
	﴿औलिया और सालेहीन के मनाक़िब का बयान﴾	
6	فَصْلٌ فِي مَا أَعَدَّهُ اللهُ مِنْ قُرَّةِ أَعْيُنٍ لِعِبَادِهِ الصَّالِحِيْنَ	651
	﴿सालेहीन के लिए अल्लाह तआला की तरफ़ से तैयार कर्दह तस्कीने चश्मो जाँ का बयान﴾	
11	اَلْبَابُ الْحَادِي عَشَرَ : ﴿ग्यारहवाँ बाब﴾	659
	اَلْمُعْجِزَاتُ وَالْكَرَامَاتُ	
	﴿मुअजिज़ात और करामात﴾	
1	فَصْلٌ فِي مُعْجِزَاتِ النَّبِيِّ ﷺ	663
	﴿हुज़ूर नबीए अकरम के मुअजिज़ात का बयान﴾	
2	فَصْلٌ فِي كَرَامَاتِ الْأَوْلِيَاءِ وَالصَّالِحِيْنَ	689
	﴿औलिया और सालेहीन की करामात का बयान﴾	
12	اَلْبَابُ الثَّانِي عَشَرَ : ﴿बारहवाँ बाब﴾	
	شَرَفُ هَذِهِ الْأُمَّةِ	711
	﴿उम्मते मुहम्मदिया का इज़्ज़ो शरफ़﴾	

रक़म	अल–अबवाब वल–फ़ुसूल	पेज
1	فَصْلٌ فِي شَرَفِ الْأُمَّةِ الْمُحَمَّدِيَّةِ उम्मते मुहम्मदिया के शरफ़ का बयान	715
2	فَصْلٌ فِي فَضْلِ آخِرِ الْأُمَّةِ الْمُحَمَّدِيَّةِ आख़िरी ज़माने में उम्मते मुहम्मदिया की फ़ज़ीलत का बयान	728
3	فَصْلٌ فِي أَنَّ هَذِهِ الْأُمَّةَ لَا تَجْتَمِعُ عَلَى الضَّلَالَةِ इस उम्मत के कभी भी गुमराही पर जमा न होने का बयान	735
4	فَصْلٌ فِي أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ لَا يَخْشَى عَلَى أُمَّتِهِ أَنْ تُشْرِكَ بَعْدَهُ हुज़ूर ﷺ को अपने बाद उम्मत के शिर्क में मुब्तिला होने का अन्देशा न था	739
5	فَصْلٌ فِي بَعْثِ الْأَئِمَّةِ الْمُجَدِّدِيْنَ لِهَذِهِ الْأُمَّةِ इस उम्मत में अइम्मए मुजद्दिदीन के भेजे जाने का बयान	742
13	اَلْبَابُ الثَّالِثُ عَشَرَ : तेरहवाँ बाब الِاعْتِصَامُ بِالسُّنَّةِ सुन्नते नबवी ﷺ को मज़बूती से थामे रखना	747
1	فَصْلٌ فِي التَّمَسُّكِ بِالسُّنَّةِ النَّبَوِيَّةِ हुज़ूर नबीए अकरम ﷺ की सुन्नते मुतहहरा को मज़बूती से थामे रखने का बयान	751

रक़्म	अल–अबवाब वल–फ़ुसूल	पेज
2	فَصْلٌ فِي التَّجَنُّبِ عَنِ الْبِدْعَةِ السَّيِّئَةِ बुरी बिदअत से बचते रहने का बयान	757
3	فَصْلٌ فِي الْبِدْعَةِ الْحَسَنَةِ وَإِثْبَاتِ أَصْلِهَا مِنَ السُّنَّةِ बिदअते हसना और सुन्नत से इसकी अस्ल के सुबूत का बयान	762
14	اَلْبَابُ الرَّابِعُ عَشَرَ : चौदहवाँ बाब	
	اَلْبِرُّ وَالصِّلَةُ وَالْحُقُوْقُ	769
	नेकी, सिला रहमी और हुक़ूक़	
1	فَصْلٌ فِي حُسْنِ الْخُلُقِ हुस्ने अख़्लाक़ का बयान	773
2	فَصْلٌ فِي ثَوَابِ مَنْ قَضَى حَوَائِجَ النَّاسِ मुश्किलात में लोगों के काम आने पर अज्र का बयान	778
3	فَصْلٌ فِي بِرِّ الْوَالِدَيْنِ وَصِلَةِ الْأَرْحَامِ वालिदैन के साथ नेक सुलूक और सिला रहमी का बयान	782
4	فَصْلٌ فِي حُقُوْقِ الْأَكَابِرِ وَالْأَصَاغِرِ बड़ों और छोटों के हुक़ूक़ का बयान	787
5	فَصْلٌ فِي حُقُوْقِ الْأُسْرَةِ وَالْأَوْلَادِ ख़ानदान और औलाद के हुक़ूक़ का बयान	792

रक़म	अल–अबवाब वल–फ़ुसूल	पेज
6	فَصْلٌ فِي جَامِعِ الْحُقُوْقِ	798
	जामेअ़ हुक़ूक़ का बयान	
15	اَلْبَابُ الْخَامِسُ عَشَرَ : पन्द्रहवाँ बाब	
	الآدَابُ وَالْمُعَامَلَةُ	807
	आदाब और मुआ़मलात	
1	فَصْلٌ فِي آدَابِ اللِّقَاءِ وَالسَّلَامِ	811
	मुलाक़ात और सलाम के आदाब का बयान	
2	فَصْلٌ فِي آدَابِ حُسْنِ الْكَلَامِ	820
	आदाबे गुफ्तगू का बयान	
3	فَصْلٌ فِي آدَابِ الشُّرْبِ وَالطَّعَامِ	828
	खाने पीने के आदाब का बयान	
4	فَصْلٌ فِي مُعَامَلَةِ الْمُؤْمِنِ بِالْمُؤْمِنِ	832
	मोमिन के मोमिन के साथ मुआ़मलात का बयान	
5	فَصْلٌ فِي آدَابِ اللِّبَاسِ	836
	आदाबे लिबास का बयान	
6	فَصْلٌ فِي آدَابِ الْمَجْلِسِ وَالْجُلُوْسِ	850
	मजलिस में बैठने के आदाब का बयान	

रक़्म	अल–अबवाब वल–फ़ुसूल	पेज
7	فَصْلٌ فِي آدَابِ السَّفَرِ	853
	﴾आदाबे सफ़र का बयान﴿	
8	فَصْلٌ فِي آدَابِ الْأَمْوَاتِ وَالْجَنَائِزِ	857
	﴾मरहुमीन और जनाज़ह के आदाब का बयान﴿	
9	فَصْلٌ فِي جَامِعِ الآدَابِ	862
	﴾जामेअ़ आदाब का बयान﴿	
16	اَلْبَابُ السَّادِسُ عَشَرَ : ﴾सोलहवाँ बाब﴿	
	الأُحَادِيَّاتُ وَالثُّنَائِيَّاتُ وَالثُّلَاثِيَّاتُ	869
	﴾उहादियातो सुनाइयाते इमामे आज़म और सुलासियाते इमाम बुख़ारी﴿	
1	فَصْلٌ فِي أُحَادِيَّاتِ الإِمَامِ أَبِي حَنِيْفَةَ رضي الله عنه	873
	﴾इमाम अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी एक वास्ते की रिवायात का बयान﴿	
2	فَصْلٌ فِي ثُنَائِيَّاتِ الإِمَامِ أَبِي حَنِيْفَةَ رضي الله عنه	883
	﴾इमाम अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी दो वास्तों की रिवायात का बयान﴿	
3	فَصْلٌ فِي ثُلَاثِيَّاتِ الإِمَامِ الْبُخَارِيِّ رضي الله عنه	894
	﴾इमाम बुख़ारी रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी तीन वास्तों की रिवायात का बयान﴿	
۞	مصادر التخريج	913

تَقْدِيْمَاتُ الْعُلَمَاءِ الْعَرَبِ الْأَجِلَّاءِ الْأَفَاضِلِ

﴿उलमाए अ़रब और मशाइख़े किबार की तक़दीमात﴾

٢ـ فضيلة الشيخ علي جمعة

(مفتي الديار المصرية)

بسم الله الرحمن الرحيم

الحمد لله رب العالمين، والصلاة والسلام على أشرف المرسلين سيدنا محمد وعلى آله وأصحابه أجمعين وبعد:

فلا يخفى مدى عناية علماء هذه الأمة بحديث النبي ﷺ الذي هو أحد الوحيين، كما في حديث المسند: "ألا إني أوتيت القرآن ومثله معه". فتنوعت تصانيفهم في ذلک في جانبي الرواية والدراية خدمة لهذا الموروث النبوي، بجمعه ونقله، وتمييز صحيحه من سقيمه، والكلام على رجاله ونقلته جرحًا وتعديلاً، وشرح غريبه، وبيان فقهه، وغير ذلک، ولما صُنّفت الدووابن لجمع السنّة، تنوّعت أيضًا طريقة العلماء في تصنيفها فمنهم من اشترط الصحة فيما يجمع مرتباً إياه على الأبواب الفقهية كصحيح البخاري، ومنهم من فعل ذلک دون اشتراط الصحة كما فعله أصحاب السنن الأربعة، ومنهم من جمع مروياته مرتبًا إياها على مسانيد الصحابة كالإمام أحمد في مسنده، وغير ذلک من طرق التصنيف المعهودة عندهم.

بعد انتهاء عصر الرواية بوفاة الحافظ أبي بكر البيهقي سنة ٤٥٨هـ، ازدهرت أنواع أخرى من التصنيف في الحديث من خلال دووابن السنة المسندة، فجرّدت طائفة منها أحاديث الأحكام، وطائفة ثانية جمعت منها ما يتعلق بالآداب والزهد والرقائق، وثالثة

इज़्ज़त मअब अश्शैख़ अली जुमुआ

(मुफ्ती–ए–आज़म, मिस्र)

بسم الله الرحمن الرحيم

तमाम तारीफें उस अल्लाह के लिये हैं जो तमाम जहानों का परवरदिगार हैं और दुरूद व सलाम हो तमाम रसूलों से मुअज़िज़ तरीन हस्ती हमारे सरदार हज़रत मुहम्मद मुस्तफा ﷺ और आप ﷺ की तमाम आलो व अस्हाब पर।

इस उम्मत के उलमा का हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की अहादीस के जमा करने में शिद्दते एहतिमाम का सलीक़ा किसी से मख़्फी नहीं है। आप ﷺ की अहादीस, वही की दो अक़साम में से एक पर मुश्तमिल हैं जैसा की मुसनद की हदीस में है। ''ख़बरदार मुझे क़ुरआन और उसके साथ उसकी मिस्ल (यानी अहादीस) अ़ता की गई हैं।'' चुनांचे तन्ज़ीमो तदवीने हदीस और आइन्दा नस्लों तक इल्मे हदीस को मुन्तक़िल करने के सिलसिले में अहले इस्लाम की तरफ से रिवायत और दिरायत पर मब्नी मुख़्तलिफ तसानीफ मन्ज़रे आम पर आईं और अखज़े हदीस का तरीकेकार मुतनव्वोअ होता चला गया। कुछ ने जमए अहादीस में सिहत की शर्त आ़इद की और इन्हें फिक़्ह के अब्वाब के मुताबिक़ जमा किया जैसे सहीहुलबुख़ारी, और इनमें से कुछ ने सिहत की शर्त के बग़ैर ऐसा किया जैसा की अस्हाबे सुनने अर्बआ़, जबकि उनमें से कुछ ने अपनी मरवियात को सहाबए किराम की मसानीद के मुताबिक़ मुरत्तिब किया जैसा कि इमाम अहमद बिन हंबल ने अपनी मुसन्नद और दूसरे तुरुक़े तसनीफ के दौरान किया।

हाफिज़ अबू बकर बैहक़ी (م ۴۵۸ھ) की वफात के साथ रिवायत का दौर ख़त्म हो गया और उसके बाद अहादीसे नबवी की दूसरी अनवाए तालीफ भी मन्ज़रे आम पर आईं। उस दौर में कुछ उलमा ने फक़त अहकाम पर मब्नी अहादीस अलग कीं, कुछ ने आदाब, ज़ुहद और रक़ाइक़ के हवाले से अहादीस जमा कीं और कुछ ने मुतवातिर अहादीस को जमा करने का एहतिमाम किया।

أفردت الأحاديث القدسية، ورابعة تتبعت المتواتر من الحديث، وهكذا.

وممن سمت همته إلى السير على خطى السابقين وخدمة سنّة سيّد الأولين والآخرين صاحب الفضيلة الدكتور محمد طاهر القادري، فسبر كتب السنة وانتقى منها طائفة صالحة من الأحاديث الشريفة مرتبًا إياها على الأبواب المختلفة في العقائد والعبادات، والآداب، والرقاق، والمناقب، والملح الإسنادية كثنائيات الإمام الأعظم وثلاثيات البخاري، وترجم مشكورًا ما جمعه باللغة الأردية لينتفع به أبناء هذه اللغة، ثم ختم كتابه المبارك بذكر أسانيده عن شيوخه إلى دواوين السنة وأئمة العلم كما هي عادة المسندين الكبار من المتأخرين، فهذا جهد مشكور وعمل مبرور نسأل الله تعالى أن يجزي جامعه ومؤلفه خير الجزاء، وينفع به قارئه والناظر فيه، إنه ولي ذلك والقادر عليه، والحمد لله رب العالمين.

علي جمعة

مفتي الديار المصرية

मोहतरमुल मक़ाम प्रोफेसर डॉक्टर मुहम्मद ताहिरुल क़ादरी साहब भी उन लोगों में से हैं जिन्होंने साबेक़ीन के तरीक़ पर चलते हुए सय्यदुल अव्वलीन वल आख़िरीन ﷺ की अहादीस की ख़िदमत के लिए कमरे हिम्मत बाँधी। इन्होंने न सिर्फ अहादीस का ज़खीरा खंगाल कर उसमें से एक बेहतरीन मजमूआ मुरत्तिब किया बल्कि उसे अ़क़ाइद, इबादात, आदाब, रक़ाइक़, मनाक़िब, उहादियातो सुनाइयातुल इमामुल आज़म ؓ और सुलासियातुल बुखारी ؓ वगैरा की सूरत में अहादीस को मुख़्तलिफ अब्वाब की शक्ल में मुरत्तिब किया। इसके अलावा उन तमाम अहादीस का उर्दू ज़बान में तरजुमा किया ताकि यह ज़बान जानने वाले उससे कमा हक़्क़हू नफा उठा सकें। इस किताब में उन्होंने अपने शुयूख़ तक अपनी असानीद का ज़िक्र भी किया है जैसा की मुतअख़्ख़िरीन में से बड़े बड़े मुसन्निदीन (अइम्मा) की आ़दत है। बिला शुबह यह क़ाबिले तहसीन और मक़बूल काम है। हम अल्लाह तआ़ला की बारगाह में इस किताब के मुअल्लिफ के हक़ में दुआ गो हैं कि वो उन्हें जज़ाए ख़ैर अ़ता फरमाए और इस किताब को पढ़ने और इसमें ग़ौरो फिक्र करने वालों को हक़ीक़ी नफा अ़ता फरमाए। बेशक़ वो इस काम का निगेहबान और क़ादिर है और तमाम तारीफें अल्लाह रब्बुल आ़लमीन के ही लिये हैं।

(अली जुमुआ)

(मुफ्ती–ए–आजम, मिश्र)

٣ـ فضيلة الشيخ الأستاذ الدكتور أحمد عمر هاشم
(الرئيس السّابق لجامعة الأزهر)

بسم الله الرحمن الرحيم

الحمد لله ربّ العالمين والصّلاة والسّلام على أشرف المرسلين، سيدنا محمد وعلى آله وصحبه أجمعين...... أما بعد:

فقد اطّلعت على كتاب "المنهاج السّوي من الحديث النّبوي ﷺ" لمؤلّفه الدكتور محمد طاهر القادري، وهو كتاب عظيم القدر لاشتماله على مجموعة كبيرة من الأحاديث النّبوية الشّريفة الصحيحة التي تخدم الإسلام والمسلمين وتشتمل على أبواب متعدّدة من العقيدة والعبادة والأخلاق وفيه جهد مشكور لمؤلفه الفاضل الذي أسهم به في خدمة أشرف تراث في الوجود، وهو حديث صاحب الحوض المورود، واللواء المعقود، والمقام المحمود سيّد الخلق وشفيعنا وسيّدنا محمّد ﷺ.

ومما لاشكّ فيه أنّ نشر أحاديث النّبي ﷺ فيها خدمة للدين والدنيا، وللعقيدة والعبادة والتشريع والأخلاق.

وهذا الكتاب واحد من الكتب الهامّة التي تخدم الإسلام في أصل أصوله وهو المصدر الثاني للتشريع بعد القرآن وهو السنّة النبويّة الشّريفة على صاحبه أفضل الصّلاة وأتمّ السّلام فجزى الله مؤلف هذا الكتاب الأستاد الدكتور محمّد طاهر القادري رئيس

इ़ज़्ज़त मआब अश्शैख़ प्रोफेसर डॉक्टर अहमद उमर हाशिम

(साबिक़ वाइस चांसलर जामिआ़ अल–अज़हर)

بسم الله الرحمن الرحيم

तमाम तारीफें उस अल्लाह तआला के लिये हैं जो तमाम जहानों का परवरदिगार है और दुरूद व सलाम हो तमाम रसूलों के मुअज़िज रसूल हमारे सरदार हज़रत मुहम्मद मुस्तफा ﷺ और आप ﷺ की आल और तमाम सहाबा किराम पर।

मैंने डॉ ताहिरुल क़ादरी साहब की किताब '**المنهاج السوي من الحديث النبوي** ﷺ' का मुतालआ किया है, बेशक यह एक अज़ीम किताब है। इसलिये भी की यह हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की सहीह अहादीस के क़ाबिले जिक्र मजमूए पर मुश्तमिल है और इसलिये भी की यह मजमूआ हदीस अ़क़ीदा, इबादात और अख़लाक़ियात के मुतअद्दिद अब्वाब पर मुश्तमिल है। इस काम में फाज़िल मोअल्लिफ की कोशिश क़ाबिले तहसीन है जिसके ज़रीए इन्होंने इस काइनात के मुअ़ज़्ज़िज़ तरीन विरसे की ख़िदमत में अपना हिस्सा डाला है। और वह विरसा हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ साहिबुल होंज़ और मुक़ामे महमूद, सैय्यदुल ख़ल्क़ और हमारे शफी व सरदार हज़रत मुहम्मद मुस्तफा ﷺ की अहादीस मुबारका हैं।

इसमें कोई शक नहीं की हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की अहादीस को फैलाने में दीन व दुनिया की भलाई, अ़क़ीदा–व–इबादत की बेहतरी और अख़्लाक़ व शरीअत की बेहतरीन ख़िदमत है।

यह किताब उन अहम तरीन किताबों में से एक है जो इस्लाम के असलुल उसूल (जो की कुरआन के बाद दूसरा मुसद है) यानी सुन्नते नबवीया على صاحبها افضل الصلاة واتم السلام पर मुश्तमिल होने की वजह से ख़िदमते इस्लाम का बड़ा ज़रीआ है। फिर अल्लाह तआ़ला इस किताब के मुअल्लिफ प्रोफेसर डॉक्टर ताहिरुल क़ादरी साहब चांसलर जामिआ़ मिन्हाजुल कुरआन को इस मेहनत शाक़ा पर जो उन्होंने इस किताब की तैयारी में सर्फ की जज़ाये खैर अ़ता फरमाए।

جامعة منهاج القرآن خير الجزاء على ما بذله من جهود كبيرة فتشكر في خدمة سنّة سيّدنا محمّد ﷺ وأسأل الله تعالى أن يغفر لي وله ولسائر المسلمين وأن ينفع بهذا الكتاب كل قارئ وصلّى الله على سيّدنا محمّد وعلى آله وصحبه أجمعين.

كتبه

أ/د/أحمد عمر هاشم
الأزهر الشريف
مجمع البحوث الإسلامي
(مصر)

उनकी ख़िदमते सुन्नत की यह सई हमारे आक़ा व मौला हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की बारगाह में शरफ़े क़ुबूलियात से नवाज़ी जाए। मैं अल्लाह तआला से अर्ज़ गुज़ार हूँ की वोह मेरी, आप सब की और तमाम मुलसमानों की मग़फिरत फरमाए, इस किताब के हर क़ारी को नफा बख़्शे और हमारे आक़ा व मौला हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ और आप ﷺ की अहले बैत अत्हार سلام الله عليهم और सहाबा किराम ﷺ पर दुरूद व सलाम भेजें।

कातिब

प्रोफेसर डॉक्टर अहमद उमर हाशिम

(मिश्र)

٤ـ فضيلة الشيخ أسعد محمد سعيد الصاغرجي

(مفتي الحنفية بالشام)

بسم الله الرحمن الرحيم

عناية شيخ الإسلام الدكتور محمد طاهر القادري المحترم حفظه الله تعالى

الحمد لله الكبير المتعال الذي شرح صدور أوليائه لذكره وشكره وحسن عبادته، والفضل له وحده الذي وعد بحفظ دينه إلى يوم القيامة بقوله تعالى: ﴿إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ﴾. والثناء له تعالى أن جعلنا من المنتسبين لهذا النبي الكريم ﷺ ومن أمته التي جعلها خير أمة أخرجت للناس وزيّنها في كل حقبة من الحقب بعلماء عاملين مخلِصين مخلَصين لتكون حجّته على خلقه على الدوام. قال عليه الصلاة والسلام: "أمتي كالمطر لا يُدرى أولها خير أم آخرها."

والصلاة والسلام الأكملان على سيدنا ومولانا محمد شمس المعارف الربّانية ونور أنوار الحقائق العرفانية النائب الأول عن الحق الذي وسع خُلُقه جميع الخلَق ووقفهم على المِحجَّة البيضاء التارك فيهم ما لا يضلوا بعده إن تمسكوا به كتاب الله سبحانه وعِترتَه أهل بيته ﷺ الطيبين الطاهرين.

جمع الله تعالى عليه أئمة هداة رضي الله عنهم ورضوا عنه فكانوا في العالم مصابيح الهدى لمن اهتدى، أحيانا الله تعالى على حُبّهم وحُبّ نبيّه وآل بيته. (آمين).

इज़्ज़त मआब अश्शैख़ असअद मुहम्मद सईदुल साग़रजी

(मुफ्ती–ए–आज़म हनफिया, शाम)

بسم الله الرحمن الرحيم

हज़रत शैख़ुल इस्लाम डॉक्टर मुहम्मद ताहिरुल क़ादरी حفظه الله تعالى की नज़र

तमाम तारीफें अल्लाह तआला के लिये हैं बुलन्द तरीन मरतबे का हामिल और तमाम ऐबों से पाक है। उसी ने अपने अवलिया के सीनों में अपने जिक्र, शुक्र और हुस्ने इबादत के लिये खोला और तमाम अ़ज़मत व फज़ीलत फक़त इसी को ज़ैबा है। वही है जिसने क़ियामत तक के लिये अपने दीन की हिफ़ाज़त का वादा इन अल्फ़ाज़ में फरमायाः ''बेशक यह जिक्र (यानी कुरआने करीम) हमने नाज़िल किया है और हम ही उसकी हिफ़ाज़त फ़रमाने वाले हैं।'' और उसी के लिये सना है जिसने हमें हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की निसबत अ़ता की और बेहतरीन उम्मत का फ़र्द बनाया। इस उम्मत को उलमाए आमेलीन से मुज़य्यब और अवलियाए मुख़ल्लेसीन से मुज़य्यन किया ताकी उसकी मख़लूक़ पर उसकी हुज्जतें इस्तमरारन पूरी होती रहे। हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने इसी लिये फ़रमायाः ''मेरी उम्मत की मिसाल बारिश (के क़तरों) की मानिन्द है लिहाज़ा नहीं मालूम इसका पहला हिस्सा बेहतर है या आख़िरी।''

इसके बाद कामिल तरीन दुरूद व सलाम हो हमारे आक़ा व मौला हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा ﷺ पर, जो मआरिफे इलाहिया के आफताब, अनवारे हक़ाइक़ का नूर, ज़ाते हक़ के नाइबे अव्वल और हुस्ने अख़लाक़ में तमाम मख़लूक़ात पर फौक़ियत रखने वाले हैं। उन्होंने ना सिर्फ नस्ले इन्सानी को रौशन तरीन राह दिखाई बल्कि अपने बाद दो ऐसी चीज़ें भी छोड़ कर गए जिनको थामें रखने से इन्सानियत कभी गुमराह नहीं हो सकती और वोह दो चीज़ें: किताबुल्लाह और आप ﷺ की इतरत (अहले बैत), जो पाकीज़ा तरीन हैं।

अल्लाह तआला ने आप ﷺ की दावते हक़ को आगे बढ़ाने के लिये ऐसे अइम्मए इज़ाम का तसल्सुल काइम फ़रमाया, जो तमाम तालिबाने हिदायत के लिये रौशन चिराग थे, अल्लाह तआला हमें इनकी मुहब्बत, अपने नबीए करीम ﷺ की मुहब्बत और आप ﷺ के अहले बैत की मुहब्बत पर ज़िन्दा (और क़ाइम व दाइम) रखे (आमीन)।

أما بعد، فإن علم الحديث النبوي من أشرف العلوم قدرًا وأرفعها منزلة وذكرًا حيث يَشرف بشرف معلومه الذي يلي كتاب الله ﷻ ولم لا وهو المبيّن لمجمل القرآن المفصّل لأحكامه وقد هيّأ الله تعالى له على مرّ الدهور والعصور من أعلاهم الله تعالى بجمعه وتصحيحة وضبط حروفه وشواهده كإمام الأئمة البخاري رحمه الله تعالى وغيره من علماء الإسلام الذين سنّوا لمن بعدهم سنّة جمع الأحاديث النبوية منهاجًا سويًا وصراطًا مستقيمًا نالوا به دعوة الحبيب المصطفى نضَّر الله امراءًا سمع مقالتي فوعاها فأداها كما سمعها فربّ مبلَّغ أوعى من سامع.

وقفت على تأليف جليل لمولانا شيخ الإسلام الجهبذ الجَحجاح أوحد زمانه وفريد عصره وأوانه البروفسور العلامة والشيخ الحبر الفهّامة بحر العلوم صاحب التصانيف ومؤلف المؤلفات العارف بالله والدال عليه بالحال والقال العالم العامل عماد الدوحة القادرية الأستاذ الدكتور محمد طاهر القادري الموسوم بــ: "المنهاج السوي من الحديث النبوي ﷺ" قد حوى على ما يحتاجه المسلم في بناء نفسه وروحه وسلوكه ومجتمعه وإقامة العلاقة بربه.

نظمه المؤلف في ستة عشر بابًا مع "مختصر الجواهر الباهرة في الأسانيد الطاهرة" و "الخطبة السديدة في أصول الحديث وفروع العقيدة:"

अम्मा बाद! बेशक हदीसे नबवी का इल्म क़ुरआनी उलूम से हम आहंगी के सबब दीगर तमाम उलूम से क़द्रो मन्ज़िलत में अफज़ल है और ऐसा क्यों न होता कि यही तो क़ुरआनी इजमाल की तफसील और क़ुरआनी अहकाम की शरह है। यह एक मुसल्लमा अम्र है और अल्लाह तआला ने हर ज़माने में इस इल्म की तरवीज के लिये ऐसे रजालेकार पैदा किये जिन्होंने मुख़्तलिफ़ अदवार में इस इल्म के नज़्मो ज़ब्त के हवाले से शानदार कारनामे सर अन्जाम दिये, जिन में इमाम बुख़ारी व दीगर अइम्मा शामिल हैं। उन तमाम अइम्मा–ए–इस्लाम ने अपने बाद आने वालों के लिये अहादीसे नबवी ﷺ की जमा व तरतीब के लिये एक सिराते मुस्तक़ीम वज़ा किया और इस तरह वोह हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की इस दुआ के मुस्तहिक़ ठहरे जिसमें आप ﷺ ने फ़रमायाः ''अल्लाह तआला उस शख्स को तरो ताज़ा रखे जिसने मेरा फ़रमान सुना और उसे अच्छी तरह समझा और फिर उसी तरह आगे पहुँचाया जिस तरह उसने सुना। फिर बहुत सारे लोग जिन्हें वो फरमान पहुँचाया गया (बराहे रास्त) सुनने वाले से ज़्यादा समझदार होते हैं।''

मुझे शैख़ुल इस्लाम, अ़ल्लामा–ए–ज़माँ, फ़रीद–ए–दौराँ, नाबिग़ा–ए–अस्र, रहनुमा–ए–असरारे हाल व क़ाल, आलिमे बाअ़म्ल, आरिफ बिल्लाह, शौकते सिलसिला–ए–क़ादरिया, साहिबे तसानीफ़े कसीरा डॉक्टर मुहम्मद ताहिरुल क़ादरी की बुलन्द पाया तालीफ ''المنهاج السوي من الحديث النبوي ﷺ'' देखने का मौक़ा मिला, यह किताब ऐसी अहादीस पर मुश्तमिल है जिन से हर मुसलमान अपने नफ्स व रूह की इस्लाह, तामीरे शख़्सीयत व इस्लाहे मुआशरा और अपने रब के साथ तअल्लुक़े बन्दगी क़ाइम करने में रहनुमाई ले सकता है।

इस किताब में मुअल्लिफ़ ने ''مختصر الجواهر الباهرة في الأسانيد الطاهرة'' (अईम्मा–ए–हदीस व तसव्वुफ़ के तुरुक़ से मुअल्लिफ़ की मुख़्तसिरन मुत्तसल असानीद) और ''الخطبة السديدة في أصول الحديث وفروع العقيدة'' (मुकद्दमा उसूले हदीस व फुरूआते अ़क़ीदा) समेत सौलह (16) अब्वाब क़ाइम किये हैं (जिन की तफ़सील किताब में मुलाहिज़ा फरमायें)।

الباب الأول في علامات الإيمان والإسلام والإحسان وحقيقة الإيمان وعلامات المؤمن وأوصافه وعلامات المسلم وأوصافه وعلامات المحسن وأوصافه وعلامات النفاق والمنافق وغيرها.

الباب الثاني في حكم الخوارج والمرتدين والمتنقصين النبي ﷺ.

الباب الثالث في العبادات والمناسك وفي فضل الصلاة المكتوبة وفي السنن والنوافل والصيام وقيام رمضان وفضائل مكة والمدينة وفضل الصدقة على الأقارب.

الباب الرابع في كيفية صلاة النبي ﷺ.

الباب الخامس في صلاة التراويح.

الباب السادس في الدعاء بعد الصلوات المكتوبة.

الباب السابع في الإخلاص والرقائق والزهد في الدنيا والصدق والإخلاص وثواب الحب في الله تعالى وحسن الظن به والبكاء من خشية الله تعالى والقناعة وترك الطمع والتوبة والاستغفار والأذكار والتسبيحات.

الباب الثامن في فضل العلم والأعمال الصالحة وفضل الدعاء وفضل العلم والعلماء وفضل الصلاة والسلام على النبي ﷺ وزيارة القبور وفضل الذكر والذاكرين وفضل قيام الليل وفي المدائح النبوية و إنشادها وفضل إيصال الثواب إلى الأموات.

الباب التاسع في عظمة الرسالة وشرف المصطفى ﷺ وأن الأنبياء أحياء في قبورهم بأجسادهم وأن الأمة تسأل عن مكانة النبي ﷺ في القبور وثواب حبّ النبي ﷺ والتبرّک بآثاره والتوسّل بالنبي ﷺ والصالحين وفي شرف النبوة المحمدية ﷺ.

الباب العاشر في مناقب النبي ﷺ وأهل البيت والخلفاء الراشدين والصحابة الأجلاء والإمام المهدي ومناقب الأئمة الفقهاء والأولياء والصالحين.

الباب الحادي عشر في معجزات النبي ﷺ وكرامات الأولياء والصالحين ﷺ.

الباب الثاني عشر في فضل آخر الأئمة المحمدية وعدم اجتماعها على ضلالة وبعث المجددين في هذه الأمة وشرف الأمة المحمدية.

الباب الثالث عشر في الاعتصام بالسنّة وتجنّب البدعة السيّئة.

الباب الرابع عشر في البِرّ والصلة والحقوق وبرّ الوالدين وصلة الأرحام.

الباب الخامس عشر في آداب اللقاء وحسن الكلام وحفظ اللسان وآداب المجالس والسفر والطعام والشراب.

الباب السادس عشر في الأحاديات والثنائيات والثلاثيات.

وقد تُوِّجَتِ الأبواب بباب مديح رسول الله ﷺ امتثالاً لأمر الله تعالى وتعزّروه وتوقّروه فجاء بلسمًا لأحباب رسول الله ﷺ الذين لا يفترون عن الصلاة على النبي ﷺ فكان كتابًا جامعًا ما وجدت له نظيرًا إلا ما كان من رياض الصالحين لإمام الأئمة أبي زكريا النووي قدس الله سره الذي ليس له نظير في الدنيا فإنه يشابهه في كثير من أبوابه ويزيد عليها وبخاصة مقدمته الجديدة التي هي الخطبة السديدة في أصول الحديث وفروع العقيدة فغدا في حلة قشيبة جمعت بين أقواله وأفعاله وأحواله ﷺ وجاء العنوان حاويًا لجميع مضامينه حيث سمّاه المؤلف حفظه الله تعالى وأمدّ في عمره المنهاج السوي من الحديث النبوي ﷺ والله أسأل ونبيه الحبيب أتوسّل أن يجعله نبراسًا لكل من أراد الاهتداء لهديه إنه سميع مجيب.

ملاحظة: ما وصفت إلا ما عاينت ولا أزكي على الله أحدًا.

دمشق ٢٤ محرم الحرام ١٤٢٨   أسعد محمد سعيد الصاغرجي

١٢ شباط ٢٠٠٧   خادم العلم الشريف

मन्दरजा बाला तमाम अब्वाब को अल्लाह तआला के अम्र ''**وتعزّروه وتوقّروه**'' की पैरवी करते हुए, मिदहते रसूल ﷺ का ताज पहनाया गया है साफ तौर पर यह किताब जहाँ आशिक़ाने रसूल और आप ﷺ पर दुरूद व सलाम पढ़ने वालों के लिये बाइसे मसर्रत है वहीं एक जामे मजमुरआ–ए–अहादीस भी है। इमामुल अइम्मा अबू ज़करीया नववी कुद्दिसे सिर्रहू की ''**رياض الصالحين**'' के अलावा इस मुरक्का–ए–हदीस की कोई और नज़ीर मुझे नहीं मिली। गौया यह किताब बहुत सारे अब्वाब में रियाज़ुस सालेहीन से मुशाबेहत रखती है बल्कि कुछ अब्हास के लिहाज़ से इससे भी बढ़ कर है। खास तौर पर उस का मुक़द्दमा जो कि ''**الخطبة السديدة في أصول الحديث وفروع العقيدة**'' के नाम से मौसूम है। यह किताब जिस तरह हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के अक़वाल, अफआल व अहवाल की जामेअ है उसी तरह इसका नाम भी इस में मौजूद तमाम अहादीसे रसूल ﷺ का जामेअ है जिससे मुअल्लिफ़ (अल्लाह तआला उनकी हिफाज़त फरमाए और उन्हें दराज़ीए उम्र अ़ता फरमाए) ने इसे मौसूम किया है। मैं अल्लाह तआला से उसके नबी–ए–मुकर्रम ﷺ के वसीला–ए–जलीला से दुआ करता हूँ कि वो इस किताब को हर उस शख़्स के लिये हिदायत का चिराग़ बनाए जो इसकी हिदायत का तालिब है। बेशक़ वो तमाम दुआओं को सुनने वाला और क़ुबूल करने वाला है।

नोट : मैंने (किताब और साहिबे किताब से मुतअल्लिक़) जो देखा है वोही बयान किया है, और मैं अल्लाह तआला के मुक़ाबले में किसी की सफाई नहीं पेश करता।

असअद मुहम्मद सईदुल साग़िरजी

ख़ादिमुल इल्म शरीफ़

दमिश्क 24 मुहर्रमुल हराम 1428 हि.

12 फरवरी 2007 ई.

1. إسنادي إلى الإمام الأعظم أبي حنيفة ﵁

﴿इमामे आज़म अबू हनीफ़ा नौमान बिन साबित ﵁ तक मुत्तसिल असानीद﴾

2. إسنادي إلى الإمام مالك بن أنس الأصبحي﵁

﴿इमाम मालिक बिन अनस अल अस्बही ﵁ तक मुत्तसिल असानीद﴾

3. إسنادي إلى الإمام محمد بن إدريس الشافعي﵁

﴿इमाम मुहम्मद बिन इदरीस शाफ़ई ﵁ तक मुत्तसिल असानीद﴾

4. إسنادي إلى الإمام أحمد بن حنبل الشيباني﵁

﴿इमाम अहमद बिन हंबल शैबानी ﵁ तक मुत्तसिल असानीद﴾

5. إسنادي للجامع الصحيح إلى الإمام البخاري﵁

﴿इमाम मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी ﵁ तक 'सहीह बुखारी' की मुत्तसिल असानीद﴾

6. إسنادي للجامع الصحيح إلى الإمام مسلم﵁

﴿इमाम मुस्लिम बिन हुज्जाज क़ुशैरी ﵁ तक ''सहीह मुस्लिम'' की मुत्तसिल असानीद﴾

7. إسنادي للسنن الأربعة من أبي داود والتّرمذي والنّسائي وابن ماجه ﷺ

﴾इमाम अबू दाऊद, इमाम तिरमिज़ी, इमाम नसाई और इमाम इब्ने माजा ﷺ तक ''सुनने अर्बआ'' की मुत्तसिल असानीद﴿

8. إسنادي للشفاء إلى الإمام القاضي عياض ﷺ

﴾क़ाज़ी अयाज़ मालिकी ﷺ तक ''शिफ़ा'' की मुत्तसिल असानीद﴿

9. إسنادي إلى سيّدنا الغوث الأعظم أبي محمد محي الدين الشيخ عبد القادر الجيلاني ص بعلوم التصوّف والطّريقة والمعرفة

﴾उलूमे तसव्वुफ और तरीक़त व मारेफत में हुज़ूर सय्यिदुना ग़ौसे आज़म अबू मुहम्मद मोहिय्युद्दीन शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी ﷺ तक मुत्तसिल असानीद﴿

10. إسنادي إلى الشيخ الأكبر محي الدين محمد بن علي بن العربي الطائي الحاتمي ﷺ

﴾शैख़ अल अकबर मोहिय्युद्दीन मुहम्मद बिन अली बिन अरबी ﷺ तक मुत्तसिल असानीद﴿

اَلْحَمْدُ للهِ الْوَلِيِّ الْحَمِيْدِ، الْمُتَكَفِّلِ بِأَرْزَاقِ الْعَبِيْدِ، الْمُتَصَرِّفِ فِيْهِمْ بِمَا يُرِيْدُ، وَالْمُخَصِّصِ مِنْهُمْ بِمَا يَزِيْدُ، وَالصَّلاةُ وَالسَّلامُ عَلَى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدِ نِالَّذِي هَدَانَا إِلَى مَعَارِفِ التَّوْحِيْدِ، وَأَرْشَدَنَا إِلَى رِوَايَةِ قَوْلِهِ السَّعِيْدِ، وَأَمَرَنَا إِلَى مُتَابَعَةِ عَمَلِهِ السَّدِيْدِ، وَعَلَى آلِهِ وَصَحْبِهِ وَتَبْعِهِ الَّذِيْنَ جَعَلَهُمُ اللهُ لَنَا الثِّقَاتَ لِإِسْنَادِ الرِّوَايَةِ وَإِبْلاغِ الدِّيْنِ، لأَنَّ الإِبْلاغَ وَالإِسْنَادَ مِنْ خُصُوْصِيَاتِ الْأُمَّةِ الْمُحَمَّدِيَّةِ، فَمَا مِنْ أُمَّةٍ مِّنْ أُمَمِ الْأَنْبِيَاءِ السَّابِقِيْنَ كَانَتْ لَهَا هَذِهِ الْمَنْزِلَةُ الْعِلْمِيَّةُ الرَّفِيْعَةُ تَبْلُغُ دِيْنَهَا بِالإِسْنَادِ الْمُتَّصِلِ بَيْنَ نَبِيِّهَا وَبَيْنَ عُلَمَائِهَا، قَدْ فَضَّلَ اللهُ تَعَالَى بِهَا خَيْرَ أُمَّةٍ وَشَرَّفَ أَئِمَّتَهَا بِآدَابِهَا مِنَ الصَّحَابَةِ إِلَى الْمُحَدِّثِيْنَ.

وَقَدْ رَوَى ابْنُ مَسْعُوْدٍ ﷺ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: نَضَّرَ اللهُ امْرَأً سَمِعَ مِنَّا حَدِيْثًا. وفي رواية: سَمِعَ مِنَّا شَيْئًا فَبَلَّغَهُ كَمَا سَمِعَ فَرُبَّ مُبَلِّغٍ أَوْعَى مِنْ سَامِعٍ. رواه الترمذي. وفي رواية: نَضَّرَ اللهُ امْرَأً سَمِعَ مَقَالَتِي فَوَعَاهَا وَحَفِظَهَا وَبَلَّغَهَا فَرُبَّ حَامِلِ فِقْهٍ إِلَى مَنْ هُوَ أَفْقَهُ مِنْهُ.

وَرَوَى ابْنُ عَبَّاسٍ رضي الله عنهما قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَللَّهُمَّ ارْحَمْ خُلَفَائِي قُلْنَا: يَا رَسُوْلَ اللهِ وَمَنْ خُلَفَائُكَ؟ قَالَ: الَّذِيْنَ يَأْتُوْنَ مِنْ بَعْدِي يَرْوَوْنَ أَحَادِيْثِي وَيُعَلِّمُوْنَهَا النَّاسَ. رواه الطبراني في الأوسط.

وَقَالَ الْأَئِمَّةُ الْكِبَارُ مِنَ التَّابِعِيْنَ: الإِسْنَادُ مِنَ الدِّيْنِ، وَلَا يُحَدِّث عَنْ رَسُوْلِ اللهِ إِلَّا الثِّقَاتُ، وَلَوْلَا الإِسْنَادُ لَقَالَ مَنْ شَاءَ مَا شَاءَ، وَأَنَّ هَذَا الْعِلْمَ دِيْنٌ فَانْظُرُوْا عَمَّنْ تَأْخُذُوْنَ دِيْنَكُمْ. أمّا بعد: فيقول أسير ذنبه وراجي عفو ربّه، الدكتور محمد طاهر القادري بن المحدّث المُسنِد الدكتور فريد الدين القادري هَذِهِ أَسَانِيْدِي فِي الْحَدِيْثِ الْمُبَارَكِ وَالسُّنَّةِ النَّبَوِيَّةِ الشَّرِيْفَةِ الْمُطَهَّرَةِ وَالَّتِي عَدَدُهَا مِائَةٌ وَخَمْسٌ وَعِشْرُوْنَ سَنَدًا وَأَذْكُرُ مِنْ بَعْضِهَا شَهَادَةً وَبَرَكَةً بِالإِتِّصَالِ مَعَ الْمَشَائِخِ وَالْأَكَابِرِ، مِنَ الْعَرَبِ وَالْعَجَمِ، وَهِيَ مُحَقَّقَةٌ وَمُتَّصِلَةٌ بِطَرِيْقِ الضَّبْطِ وَالتَّسَلْسُلِ وَالاِتِّصَالِ إِلَى أَئِمَّةِ الْحَدِيْثِ الْأَعْلَامِ، وَالْأَشْيَاخِ الْقَادَةِ الْكِرَامِ، وَإِنَّهَا مُوْصِلَةٌ إِلَى سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ أَكْرَمِ الْخَلْقِ وَأَفْضَلِ الْأَنَامِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَعَلَى آلِهِ وَصَحْبِهِ وَتَبَعِهِ أَزْكَى الصَّلَاةِ وَأَبْقَى السَّلَامِ.

﴿إسنادي إلى الإمام الأعظم أبي حنيفة رضي الله عنه﴾

﴿इमामे आज़म अबू हनीफा नौमान बिन साबित रضي الله عنه तक मुत्तसिल असानीद﴾

أروي **عن** سيّدي الإمام الأعظم أبي حنيفة رضي الله عنه من ثمانية الأسانيد المتّصلة والطّرق الموصلة إليه، و أحد منها: أروي **عن** والدي المحدّث المُسنِد الدكتور فريد الدين القادري الحنفي **عن** الشيخ عبد الهادي الأنصاري اللكنوي و أخيه الأكبر الشيخ عبد الباقي بن علي محمد الأنصاري المحدّث اللكنوي الحنفي **عن** الشيخ أبي الحسنات محمد عبد الحي بن عبد الحليم اللكنوي الحنفي و الشيخ السيّد علي بن ظاهر الوتري الحنفي كلاهما **عن** الشيخ عبد الغني بن أبي سعيد الدهلوي المدني الحنفي **عن** الشيخ عثمان بن محمد الميرغني المكّي الحنفي ومحدث الحجاز الشيخ محمد عابد بن أحمد السندي المدني الحنفي كلاهما **عن** الشيخ يوسف بن محمد المزجاجي الحنفي **عن** أبيه الشيخ محمد بن علاء الدين المزجاجي الحنفي **عن** أبيه الشيخ علاء الدين بن محمد الحنفي **عن** الشيخ حسن بن علي العُجَيمي الحنفي **عن** الشيخ خير الدين بن أحمد بن علي الرملي الحنفي (صاحب الفتاوى الخيرية) **عن** الشيخ محمد بن السراج الحانوتي الحنفي (صاحب الفتاوى) **عن** الشيخ أحمد بن الشلبي الحنفي **عن** الشيخ إبراهيم بن عبد الرحمن

الكركي الحنفي **عن** الشيخ يحيى بن محمد الأقصرائي الحنفي **عن** الشيخ محمد بن محمد البخاري الحنفي **عن** الشيخ حافظ الدين محمد بن محمد بن علي الطاهري الحنفي **عن** صدر الشريعة عبيد الله بن مسعود بن محمود البخاري الحنفي **عن** جده تاج الشريعة محمود بن أحمد الحنفي **عن** والده صدر الشريعة أحمد الحنفي **عن** أبي جمال الدين عبيد الله إبراهيم المحبوبي الحنفي **عن** الشيخ محمد بن أبي بكر البخاري عرف بإمام زاده الحنفي **عن** أبي الفضائل شمس الأئمة بكر بن محمد الزَرَنْجَري الحنفي **عن** شمس الأئمة أبي بكر محمد بن أبي سهل السرخسي (صاحب المبسوط) **عن** شمس الأئمة عبد العزيز أحمد الحلوائي الحنفي **عن** أبي علي الخضر بن علي النسفي الحنفي **عن** أبي بكر محمد بن فضل البخاري الحنفي **عن** الأستاذ عبد الله بن محمد الحارث الحنفي **عن** أبي حفص الصغير محمد الحنفي **عن** أبيه أبي حفص الكبير أحمد بن حفص البخاري الحنفي **عن** الإمام محمد بن حسن الشيباني الحنفي **عن الإمام الأعظم أبي حنيفة النعمان بن ثابت** رضي الله عنه (٨٠-١٥٠هـ).

وَقَالَ أَبُوْحَنِيْفَةَ رضي الله عنه: **سَمِعْتُ** أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ رضي الله عنه **يَقُوْلُ**: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: طَلَبُ الْعِلْمِ فَرِيْضَةٌ عَلَى كُلِّ مُسْلِمٍ.(١)

وَأَيْضًا قَالَ أَبُوْحَنِيْفَةَ رضي الله عنه: **سَمِعْتُ** عَبْدَ اللهِ بْنَ أُنَيْسٍ رضي الله عنه **يَقُوْلُ**:

(١) مسند الإمام أبي حنيفة.

سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: حُبُّكَ الشَّيءَ يُعْمِي وَيُصِمُّ.

وَأَيْضًا قَالَ أَبُوْحَنِيْفَةَ رضي الله عنه **سَمِعْتُ** عَبْدَ اللهِ بْنَ الْحَارِثِ رضي الله عنه يَقُوْلُ: **سَمِعْتُ** رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ تَفَقَّهَ فِي دِيْنِ اللهِ كَفَاهُ اللهُ هَمَّهُ وَرَزَقَهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ.

وَأَيْضًا رَوَى أَبُوْحَنِيْفَةَ رضي الله عنه **عَنْ** وَاثِلَةَ بْنِ الْأَسْقَعِ رضي الله عنه **عَنْ** رَسُوْلِ اللهِ ﷺ.

وَأَيْضًا رَوَى أَبُوْحَنِيْفَةَ رضي الله عنه **عَنْ** عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي أَوْفَى رضي الله عنه **عَنْ** رَسُوْلِ اللهِ ﷺ.

﴿إسنادي إلى الإمام مالك بن أنس الأصبحي رضي الله عنه﴾

﴿इमाम मालिक बिन अनस अल अस्बही رضي الله عنه तक मुत्तसिल असानीद﴾

أروي **عن** الإمام مالك بن أنس الأصبحي رضي الله عنه من ثمانية الأسانيد المتّصلة والطّرق الموصلة إليه، و أحد منها: **أروي عن** السيّد محمد بن علوي المالكي المكّي **عن** أبيه الإمام علوي بن عباس المالكي المكّي **عن** أبيه الإمام عباس بن عبد العزيز المالكي المكّي **عن** محمد عابد المالكي الأزهرى **عن** السيد أحمد بن زيني دحلان **عن** عثمان بن حسن الدمياطي **عن** الإمام محمد الأمير الكبير المصري **عن** علي بن محمد العربي السقاط **عن** الشيخ محمد الزرقاني (شارح الموطأ) **عن** أبيه الشيخ عبد الباقي **عن** الشيخ علي الأجهوري **عن** الشيخ محمد بن أحمد الرملي **عن** القاضي زكريا بن محمد الأنصاري **عن** الإمام الحافظ ابن حجر العسقلاني **عن** الشيخ نجم الدين محمد بن علي البالسي **عن** محمد بن علي المكفي **عن** محمد بن الدلاصي **عن** عبد العزيز بن عبد الوهاب الطرطوشي **عن** سليمان بن خلف الباجي **عن** يونس بن عبد الله بن مغيث **عن** أبي عيسي يحيى بن يحيى **عن** عم أبيه عبيد الله بن يحيى **عن** أبيه الإمام يحيى بن يحيى الليثي الأندلسي **عن إمام دار الهجرة الإمام مالك بن أنس الأصبحي** (٩٣-١٧٩ﻫ) قدس الله سره العزيز.

﴿إسنادي إلى الإمام محمد بن إدريس الشافعي رضي الله عنه﴾

﴿इमाम मुहम्मद बिन इदरीस शाफई रضي الله عنه तक मुत्तसिल असानीद﴾

أروي **عن** الإمام محمد بن إدريس الشافعي رضي الله عنه من **عدة** الأسانيد المتّصلة والطّرق الموصلة إليه، و منها: أروي **عن** الشيخ علوي بن عباس المالكي المكّي **عن** محدّث الحرمين عمر بن حمدان المحرسي **عن** الشيخ أحمد بن إسماعيل البرزنجي **عن** الشيخ أحمد بن زيني دحلان **عن** الشيخ عثمان بن حسن الدمياطي **عن** الإمام أبي عبد الله محمد بن محمد الأمير الكبير المصري **عن** الشيخ أبي الحسن علي بن أحمد العدوي الصعيدي المصري **عن** الشيخ محمد بن عقيلة المكّي **عن** الشيخ حسن بن علي العُجَيْمي **عن** الشيخ صفي الدين أحمد بن محمد القشاشي المدني **عن** الشيخ شمس الدين محمد بن أحمد الرملي **عن** الشيخ القاضي زكريا بن محمد الأنصاري **عن** الحافظ الشهاب أحمد بن حجر العسقلاني **عن** الصلاح بن أبي عمر المقدسي **عن** فخر الدين على بن أحمد البخاري **عن** القاضي أبي المكارم أحمد بن محمد اللبان و أبي جعفر محمد بن أحمد الصيدلاني كلاهما **عن** أبي علي الحسن بن أحمد الحداد **عن** الحافظ أبي نعيم أحمد بن عبد الله الأصبهاني **عن** أبي العباس

محمد بن يعقوب الأصم عن الربيع بن سليمان المرادي عن الإمام أبي عبد الله محمد بن إدريس الشافعي رضي الله عنه (١٥٠-٢٠٤هـ).

﴿إسنادي إلى الإمام أحمد بن حنبل الشيباني رضي الله عنه﴾

﴿इमाम अहमद बिन हंबल शैबानी ﷺ तक मुत्तसिल असानीद﴾

أروي **عن** الإمام أحمد بن حنبل الشيباني رضي الله عنه من **عدة الأسانيد** المتّصلة والطّرق الموصلة إليه، و منها: **أروي عن** الشيخ علوي بن عباس المالكي **عن** محدّث الحرمين عمر بن حمدان المحرسي **عن** الشيخ أحمد بن إسماعيل البرزنجي **عن** الشيخ أحمد بن زيني دحلان **عن** الشيخ عثمان بن حسن الدمياطي **عن** الإمام أبي عبد الله محمد بن محمد الأمير الكبير المصري **عن** الشيخ أبي الحسن علي بن أحمد العدوي الصعيدي المصري **عن** الشيخ محمد بن عقيلة المكّي **عن** الشيخ حسن بن علي العُجَيْمي **عن** الشيخ صفي الدين أحمد بن محمد القشاشي المدني **عن** الشيخ شمس الدين بن أحمد الرملي **عن** الشيخ القاضي زكريا بن محمد الأنصاري **عن** الحافظ الشهاب أحمد بن حجر العسقلاني **عن** الشيخ الصلاح بن أبي عمر المقدسي **عن** الشيخ فخر الدين علي بن أحمد البخاري **عن** الشيخ أبي علي حنبل بن عبد الله بن الفرج المكبر **عن** أبي القاسم هبة الله بن محمد بن عبد الواحد الشيباني **عن** أبي علي الحسن بن علي التميمي **عن** أبي بكر أحمد بن جعفر بن حمدان القَطِيعي **عن** عبد الله بن أحمد بن حنبل **عن** أبيه **الإمام أحمد بن حنبل الشيباني** رضي الله عنه (١٦٤-٢٤١هـ).

﴿إسنادي للجامع الصحيح إلى الإمام البخاري﴾

﴿इमाम मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी ؓ तक 'सहीह बुख़ारी' की मुत्तसिल असानीद﴾

أروي الجامع الصحيح للإمام البخاري من خمسين سندًا متصلًا وطريقًا موصلًا إليه، و أحد منها: أروي **عن** الشيخ علوي بن عباس المالكي المكّي **عن** الشيخ أحمد بن الملاّ صالح السويدي البغدادي **عن** الحافظ السيّد محمد مرتضٰى الزبيدي الحسيني **عن** الشيخ محمد بن سنَّة الفلاني **عن** الشيخ أحمد بن محمد العَجِل اليمني (عاش ١٤٧ سنة) **عن** الشيخ المعمّر قطب الدين محمد بن أحمد النهروالي **عن** الشيخ أبي الفتوح الطاووسي **عن** الشيخ المعمّر يوسف الهروي (عاش ٣٠٠ سنة) **عن** الشيخ محمد بن شاذ بخت الفارسي الفرغاني (عاش ١٣٠ سنة) **عن** الشيخ أبي لقمان يحيى بن عمار بن مقبل بن شاهان الختلاني (عاش ١٤٣ سنة) **عن** الإمام أبي عبد الله محمد بن يوسف الفربري **عن الإمام أبي عبد الله محمد بن إسماعيل البخاري** (١٩٤-٢٥٦ھ) قدس الله سره العزيز.

﴿وهذا أعلى سند في العلو والغرابة بغاية القرب من رسول الله ﷺ يوجد الآن في الدنيا إلى الجامع الصحيح، لأنه بيني وبين الإمام البخاري إحدى عشرة واسطةً وجاءت الرواية في هذا السند

بالإجازة الخاصة مشافعة و بالإجازة العامّة لأهل العصر﴾.

فإنّ بين الإمام البخاري وبين النّبي ﷺ ثلاث واسطاتٍ باعتبار الثلاثيات:

كما روى البخاري قال: **حَدَّثَنَا** الْمَكِّيُّ بْنُ إِبْرَاهِيمَ قَالَ: **حَدَّثَنَا** يَزِيْدُ بْنُ أَبِي عُبَيْدٍ **عَنْ** سَلَمَةَ بْنِ الْأَكْوَعِ رضي الله عنه قَالَ: **سَمِعْتُ النَّبِيَّ** ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ يَقُلْ عَلَيَّ مَا لَمْ أَقُلْ فَلْيَتَبَوَّأْ مَقْعَدَهُ مِنَ النَّارِ.[١]

وأيضا قال البخاري: **حَدَّثَنَا** أَبُوْعَاصِمٍ الضَّحَّاكُ بْنُ مَخْلَدٍ **عَنْ** يَزِيْدَ بْنِ أَبِي عُبَيْدٍ **عَنْ** سَلَمَةَ بْنِ الْأَكْوَعِ رضي الله عنه **عَنِ النَّبِيِّ** ﷺ.[٢]

وأيضًا قال البخاري: **حَدَّثَنَا** عِصَامُ بْنُ خَالِدٍ **حَدَّثَنَا** حَرِيْزُ بْنُ عُثْمَانَ **عَنْ** عَبْدِ اللهِ بْنِ بُسْرٍ رضي الله عنه **عَنِ النَّبِيِّ** ﷺ.[٣]

فإنّني أتّصل بالنّبي الحبيب المصطفٰى ﷺ عن طريق البخاري بست عشرة واسطة فالحمد لله على ذالک.

---

(١) الجامع الصحيح للبخاري، كتاب: العلم، باب: إثم من كذب على النّبي ﷺ.

(٢) الجامع الصحيح للبخاري، كتاب: المظالم، باب: هل تكسر الدِّنان التي فيها الخمر.

(٣) الجامع الصحيح للبخاري، كتاب: المناقب، باب: صفة النّبي ﷺ.

﴿إسنادي للجامع الصحيح إلى الإمام مسلم رضي الله عنه﴾

﴿इमाम मुस्लिम बिन हुज्जाज क़ुशैरी رضي الله عنه तक ''सहीह मुस्लिम'' की मुत्तसिल असानीद﴾

أروي الجامع الصحيح للإمام مسلم رضي الله عنه من عشرة الأسانيد المتّصلة والطّرق الموصلة إليه و أحد منها: أروي عن والدي المحدث المُسنِد الدكتور فريد الدين القادري عن الشيخ محمد المكّي بن محمد بن جعفر الكتّاني عن الشيخ عمر بن حمدان المحرسي عن الشيخ أحمد بن إسماعيل البرزنجي عن والده الشيخ إسماعيل بن زين العابدين البرزنجي عن الشيخ صالح بن محمد الفلاني ﴿ ح ﴾ ويروي الوالد عن الشيخ عبد الهادي الأنصاري اللكنوي و أخيه الأكبر الشيخ عبد الباقي بن علي محمد الأنصاري المحدّث اللكنوي عن صالح بن عبد الله العباسي عن محمد بن علي السنوسي عن الشيخ صالح بن محمد الفلاني عن الشيخ محمد بن سنّة الفلاني عن الشريف محمد بن عبد الله الولاتي عن محمد بن خليل بن أركماش عن الإمام الحافظ الشهاب أحمد بن حجر العسقلاني عن أبي محمد عبد الله بن محمد النيسابوري عن أبي الفضل سليمان بن حمزة المقدسي عن أبي الحسن علي بن الحسين بن علي الهاشمي و أبي الفضل محمد بن ناصر السلامي كلاهما عن الحافظ أبي القاسم عبد الرحمن بن محمد بن إسحاق بن منده عن الحافظ أبي بكر محمد بن عبد الله الشيباني عن الإمام مكّي بن عبدان النيسابوري والإمام أبي حامد الشرقي كلاهما

عن الإمام أبي الحسين مسلم بن الحجاج القشيري النيسابوري (٢٠٦ـ٢٦١هـ) قدس الله سره العزيز.

فهذا السند معظم العلو والغرابة بغاية الاتّصال لأنّه بيني وبين الإمام مسلم أربع عشرة واسطة وبين الإمام مسلم وبين النّبي ﷺ أربع واسطاتٍ:

كما روى الإمام مسلم عن عبد الله بن مَسلَمة قال **حدثنا** مالك **عن** إسحاق بن عبد الله بن أبي طلحة **عن** أنس بن مالك رضي الله عنه، أن أعرابيا قال: لرسول الله ﷺ متى الساعة؟ قال له رسول الله ﷺ: ما أعددت لها؟ قال: حبّ الله ورسوله ﷺ قال: أنت مع من أحببت.(١)

وأيضًا روى مسلم **عن** حسن بن الربيع وأبي بكر بن أبي شيبة قالا: **حدثنا** أبوالأحوص **عن** سِماک **عن** جابر بن سَمُرة رضي الله عنه **عن** رسول الله ﷺ.(٢)

وأيضًا روى مسلم **عن** عون بن سلام الكوفي **عن** زهير **عن** سِماک **عن** جابر بن سَمُرة رضي الله عنه **عن** رسول الله ﷺ.(٣)

فإنّني أتّصل بالنّبي الحبيب المصطفٰى ﷺ عن طريق الإمام مسلم بتسع عشرة واسطة فالحمد لله على ذالک.

---

(١) الجامع الصحيح لمسلم، كتاب: البر والصلة والأدب، باب: المرء مع من أحب.

(٢) الجامع الصحيح لمسلم، كتاب: الجمعة، باب: تخفيف الصّلاة والخطبة.

(٣) الجامع الصحيح لمسلم، كتاب: الجنائز، باب: ترك الصلاة على القاتل نفسه.

﴿إسنادي للسنن الأربعة من أبي داود والتّرمذي والنّسائي وابن ماجه ﷺ﴾

﴿इमाम अबू दाऊद, इमाम तिरमिज़ी, इमाम निसाई और इमाम इब्ने माजा ﷺ तक ''सुनने अर्बआ'' की मुत्तसिल असानीद﴾

أروي السنن الأربعة للإمام أبي داود والتّرمذي والنّسائي وابن ماجه ﷺ من ثلاثين سندًا متصلًا وطريقًا موصلًا إليهم، ومنها: أروي **عن** الشيخ حسين بن أحمد عسيران **عن** الإمام يوسف بن إسماعيل النبهاني ﴿ح﴾ و أروي **عن** والدي الدكتور فريد الدين القادري **عن** الشيخ محمد المكّي بن محمد الكتّاني **عن** والده الإمام محمد بن جعفر الكتّاني **عن** الإمام يوسف بن إسماعيل النبهاني﴾ **عن** الشيخ إبراهيم بن حسن السقا المصري **عن** الشيخ محمد بن محمود الجزائري **عن** الشيخ علي بن عبد القادر بن الأمين الجزائري **عن** الشيخ الشهاب أحمد بن محمد الجوهري **عن** الإمام عبد الله بن سالم المحدّث البصري **عن** الشيخ محمد بن علاء الدين البابلي **عن** الشيخ عيسى بن محمد المغربي **عن** الشيخ سالم بن محمد السنهوري **عن** الشيخ النجم محمد بن أحمد الغيطي **عن** شيخ الإسلام القاضي زكريا بن محمد الأنصاري **عن** الإمام الحافظ الشهاب أحمد بن حجر العسقلاني **بأسانيده** إلى **الإمام أبي داود سليمان بن الأشعث السجستاني** (٢٠٢-٢٧٥هـ) **والإمام أبي عيسى**

محمد بن عيسى الترمذي (٢١٠-٢٧٩هـ) **والإمام أبي عبد الرحمن أحمد بن شعيب النسائي** (٢١٥-٣٠٣هـ) **والإمام ابن ماجه القزويني** (٢٠٩-٢٧٣هـ) **قدس الله سرّهم العزيز.**

﴿ ح ﴾ أروي **عن** أبي البركات السيّد أحمد القادري **عن** إمام الهند الشاه أحمد رضا خان البريلوي ﴿ ح ﴾ **عن** السيّد أحمد سعيد الكاظمي الأمروهي **عن** الشيخ مصطفى رضا خان البريلوي **عن** إمام الهند الشاه أحمد رضا خان البريلوي ﷺ **عن** الشاه آل رسول أحمد المارهروي **عن** الشاه عبد العزيز المحدّث الدهلوي **عن** محدّث الهند الشّاه أحمد ولي الله الدهلوي **عن** الشيخ أبي طاهر محمد بن إبراهيم الكوراني المدني **عن** أبيه البرهان إبراهيم بن حسن الكوراني المدني **عن** الشيخ أحمد بن محمد القشاشي المالكي المدني **عن** أحمد بن علي الشناوي المصري المدني **عن** شمس الدين محمد بن أحمد الرملي الشافعي **عن** شيخ الإسلام القاضي زكريا بن محمد الأنصاري **عن** الإمام الحافظ الشهاب أحمد بن حجر العسقلاني **بأسانيده** إلى **الإمام أبي داود سليمان بن الأشعث السجستاني والإمام أبي عيسى محمد بن عيسى الترمذي والإمام أبي عبد الرحمن أحمد بن شعيب النسائي والإمام ابن ماجه القزويني** قدس الله سرهم العزيز.

﴿إسنادي للشفاء إلى الإمام القاضي عياض رضي الله عنه﴾

﴿क़ाज़ी अयाज़ मालिकी رضي الله عنه तक ''शिफ़ा'' की मुत्तसिल असानीद﴾

أروي الشفاء للقاضي عياض رضي الله عنه من ستة الأسانيد المتّصلة والطّرق الموصلة إليه، و أحد منها: أروي **عن** والدي الشيخ الدكتور فريد الدين القادري **عن** الشيخ محمد عبد الشكور المهاجر المدني **عن** الشيخ أحمد علي المحدث السهارنفوري **عن** الشيخ محمد إسحاق الدهلوي المكّي **عن** الشاه عبد العزيز المحدث الدهلوي **عن** أبيه محدث الهند الشاه أحمد ولي الله الدهلوي **عن** الشيخ أبي طاهر محمد بن إبراهيم الكوراني المدني **عن** أبيه البرهان إبراهيم بن حسن الكوراني المدني ﴿ ح ﴾ أروي **عن** الشيخ حسين بن أحمد عسيران **عن** الإمام يوسف بن إسماعيل النبهاني **عن** محمد أبي الخير عابدين **عن** محمد بن عمر ابن عابدين الشامي (صاحب ردّ المحتار) **عن** الشيخ محمد شاكر العقّاد **عن** الشيخ محمد التافلاتي **عن** الشيخ محمد الحفني **عن** الشيخ محمد البديري **عن** الشيخ إبراهيم بن حسن الكوراني **عن** الشيخ أحمد بن محمد القشاشي المالكي المدني **عن** الشيخ شمس الدين محمد بن أحمد الرملي **عن** الشيخ القاضي زكريا بن محمد الأنصاري **عن** الشيخ محمد بن علي القاياتي **عن** السراج عمر بن علي بن الملقّن الأنصاري **عن** النجم أبي الفتوح

يوسف بن محمد الدلاصي **عن** الشيخ يحيى بن أحمد بن محمد اللواتي **عن** أبي الحسن يحيى بن محمد الأنصاري الشهير بابن الصانع **عن الإمام القاضي أبي الفضل عياض بن موسى اليحصُبي الأندلسي المالكي** (٤٧٦-٥٤٤هـ) قدس الله سره العزيز.

﴿إسنادي إلى سيّدنا الغوث الأعظم أبي محمد محي الدين الشيخ عبد القادر الجيلاني رضي الله عنه بعلوم التصوّف والطّريقة والمعرفة﴾

﴿उलूमे तसव्वुफ और तरीक़त व मारेफत में हुज़ूर सय्यिदुना ग़ौसे आज़म अबू मुहम्मद मुहिय्युद्दीन शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी رضي الله عنه तक मुत्तसिल असानीद﴾

أروي عن سيّدنا الغوث الأعظم أبي محمد محي الدين الشيخ عبد القادر الجيلاني رضي الله عنه من عدة الأسانيد المتّصلة والطّرق الموصلة إليه، ومنها: أروي عن شيخي وسيّدي طاهر علاء الدين الآفندي الجيلاني البغدادي عن النقيب الشيخ السيّد محمود حسام الدين الجيلاني البغدادي عن شيخه قطب العارفين السيّد عبد الرحمن المحض النقيب البغدادي عن أبيه وشيخه إمام الأولياء السيّد علي بن سلمان النقيب البغدادي عن شيخه السيّد عبد القادر الجيلاني عن شيخه السيّد أبي بكر الجيلاني عن شيخه السيّد إسماعيل الجيلاني عن شيخه السيّد عبد الوهاب الجيلاني عن شيخه السيّد نور الدين الجيلاني عن شيخه السيّد محمد درويش الجيلاني عن شيخه السيّد حسام الدين الجيلاني عن شيخه السيّد أبي بكر الجيلاني عن شيخه السيّد يحيى الجيلاني عن شيخه السيّد نور الدين الجيلاني عن شيخه السيّد ولي الدين الجيلاني عن شيخه السيّد زين الدين الجيلاني عن شيخه السيّد شرف الدين الجيلاني عن شيخه السيّد شمس الدين

الجيلاني **عن** شيخه السيّد محمد الهتاك الجيلاني **عن** شيخه السيّد عبد العزيز بن الشيخ عبد القادر الجيلاني **عن شيخه سيّدنا الغوث الأعظم الشيخ أبي محمد محي الدين عبد القادر الحسني الحسيني الجيلاني** (٤٧٠-٥٦١هـ) **عن** شيخه السيّد أبي سعيد المبارك المخرمي **عن** شيخه أبي الحسن علي بن محمد القرشي الهنكاري **عن** شيخه أبي الفرج الطرطوسي **عن** شيخه أبي الفضل عبد الواحد التميمي **عن** شيخه أبي بكر الشبلي **عن** شيخه أبي القاسم الجنيد البغدادي **عن** شيخه السَري السَقطي **عن** شيخه معروف الكرخي **عن** شيخه سيّدنا الإمام أبي الحسن علي بن موسى الرضا **عن** شيخه سيّدنا الإمام موسى الكاظم **عن** شيخه سيّدنا الإمام جعفر الصادق **عن** شيخه سيّدنا الإمام محمد الباقر **عن** شيخه سيّدنا الإمام زين العابدين علي الأوسط **عن** شيخه سيّدنا الإمام الحسين بن علي المرتضى **عن** شيخه سيّدنا الإمام أمير المؤمنين علي بن أبي طالب رضي الله عنه و أخذ الشيخ معروف الكرخي أيضًا **عن** شيخه الإمام داود الطائي **عن** شيخه حبيب العجمي **عن** شيخه الإمام حسن البصري **عن** شيخه الإمام سيّدنا علي بن أبي طالب رضي الله عنه قال: **حدثني** حبيبي وقرة عيني رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم قال: **حدثني** جبرئيل عليه السلام قال: **سمعت** ربّ العزة عز وجل يقول: لا إله إلا الله حصني فمن قالها دخل حصني ومن دخل حصني أمن من عذابي.[١]

---

(١) الديلمي، الفردوس بمأثور الخطاب

﴿إسنادي إلى الشيخ الأكبر محي الدين محمد بن علي بن العربي الطائي الحاتمي رضي الله عنه﴾

﴿शैख़ुल अकबर मुहिय्युद्दीन मुहम्मद बिन अ़ली बिन अ़रबी रضي الله عنه तक मुत्तसिल असानीद﴾

أروي **عن** الشيخ الأكبر محي الدين محمد بن علي بن العربي رضي الله عنه من ثلاثة الأسانيد المتّصلة والطّرق الموصلة إليه، و أحد منها: **أروي عن الشيخ حسين بن أحمد عسيران عن الشيخ السيّد أحمد بن محمد السنوسي عن والده الشيخ السيّد محمد بن محمد السنوسي عن** والده قدوة العارفين الشيخ محمد بن علي السنوسي الطرابلسي **عن الشيخ المعمّر السّيد الشريف عبد العزيز الحفيد الحبشي**[1] **عن الشيخ الأكبر محي الدين محمد بن علي بن العربي الطائي الحاتمي** رضي الله عنه (٥٦٠-٦٣٨هـ).

(1) إنه عاش من العمر ٥٢٠ سنة وفي روايةٍ أخرى التي ذكرها الشيخ المحدث عبد الحي الكتّاني وحقّقها في كتابه "فهرس الفهارس والأثبات" كانت ولادة الشيخ السيد عبد العزيز الحفيد الحبشي في اليوم الثالث ربيع الأوّل عام ٥٨١هـ وهو عاش سبعمائة سنة إلّا خمس سنين (٦٩٥هـ) و أخذ في بغداد عن الشيخ السيد عبد الرزاق ابن الغوث الأعظم سيّدنا الشيخ عبد القادر الجيلاني رضي الله عنه مباشرةً وأخذ أيضًا في دمشق عن الشيخ الأكبر محي الدين ابن عربي مباشرةً وأخذ في مصر عن الإمام ابن حجر العسقلاني مباشرةً. (☆)

☆ عبد الحي الكتّاني، فهرس الفهارس والأثبات، ٢:٩٢٨

فَإِنَّنِي قَدْ أُوْصِي كُلَّ مَنِ اقْتَرَأَ وَاكْتَسَبَ مِنْ هَذَا الْكِتَابِ بِصَلَاحِ النِّيَّةِ وَحِفْظِ الْحُرْمَةِ وَضَبْطِ الْعَمَلِ وَحُسْنِ الْأَدَبِ، فَلْيَتَمَسَّكْ بِالإِخْلَاصِ وَالتَّقْوَى وَصَفَاءِ السِّيْرَةِ وَجَلَاءِ السَّرِيْرَةِ وَلْيَجْتَهِدْ فِي تَصْحِيْحِ التَّوْبَةِ وَتَحْقِيْقِ الْأَوْبَةِ وَلُزُوْمِ الْبَابِ وَالسَّعْيِ فِي كَشْفِ الْحِجَابِ فَإِنِّي أُوْصِيْهِ لِيَكُوْنَ لَهُ شَهَادَةً وَتَذْكِرَةً وَنَصِيْحَةً لِتَبْلِيْغِ أَحْكَامِ الدِّيْنِ وَإِعْلَاءِ الْحَقِّ الْمُبِيْنِ وَأَدْعُو اللهَ لَهُ بِجَمِيْعِ مَا يُحِبُّهُ وَيَرْضَاهُ وَأُلَقِّنُهُ بِالإِخْلَاصِ فِي عَقِيْدَةِ التَّوْحِيْدِ وَالرُّسُوْخِ فِي مَحَبَّةِ الرَّسُوْلِ ﷺ وَتَعْظِيْمِهِ ﷺ وَاتِّبَاعِ سُنَّتِهِ ﷺ وَنُصْرَةِ دِيْنِهِ ﷺ وَحُبِّ أَهْلِ الْبَيْتِ الْأَطْهَارِ وَإِكْرَامِ الصَّحَابَةِ الْأَخْيَارِ وَمُحَابَّةِ الْأَوْلِيَاءِ وَمُجَالَسَةِ الصَّالِحِيْنَ وَأَنْصَحُهُ بِحِمَايَةِ السُّنَّةِ وَالْجَمَاعَةِ وَهِيَ السَّوَادُ الْأَعْظَمُ وَمُجَانَبَةِ أَهْلِ الْبِدْعَةِ وَالْغَوَايَةِ وَالتَّمَسُّكِ بِمِنْهَاجِ الْقُرْآنِ وَاللهُ الْمُسْتَعَانُ وَعَلَيْهِ التُّكْلَانُ.

فَالْحَمْدُ للهِ عَلَى تَوْفِيْقِهِ وَخِدْمَةِ سُنَّةِ حَبِيْبِهِ ﷺ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدِ نِالنَّبِيِّ الْأُمِّيِّ الْحَبِيْبِ الْمُصْطَفَى وَعَلَى آلِهِ الْمُرْتَضَى وَصَحْبِهِ الْمُجْتَبَى وَتَبْعِهِ الْمُنْتَقَى الَّذِيْنَ شَرَّفَهُمُ اللهُ بِالْفَضْلِ وَالاِصْطِفَاءِ وَعَلَيْنَا مَعَهُمْ أَجْمَعِيْنَ بِرَحْمَتِكَ يَا أَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ.

الراجي إلى الرّبّ الغفور العلى

والفقير إلى حضرة النّبيّ المصطفى ﷺ

خادم العلم والحديث

الدكتور محمد طاهر القادري

ابن المحدِّث المُسنِد الدكتور فريد الدين القادري

(باكستان)

١ ربيع الأول ١٤٢٨هـ

بسم الله الرحمن الرحيم

الحمد لله الواحد الأحد الصّمد، الماجد الحميد المتحمّد الّذي لا تحيط به الأفكار ولا تنتهي إليه الأسرار، ولا تدركه البصائر والأبصار، والصّلاة والسّلام على عبده الأعبد وحبيبه الأوحد ورسوله الأمجد وأمينه الأجود سيّدنا ومولانا محمّد ﷺ المرسل الأكمل الأجمل الأفضل الأعظم الأكرم الأسلم الأحلم الأعلم، مصدر الأمر والخلق، ومبدأ الرتق والفتق، ومنبع الجمع والفرق، ومنظر النّور والبرق، هو الّذي أخذ منه ونطق عنه وشهد الله به: ﴿وَمَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوٰى ٥ اِنْ هُوَ اِلَّا وَحْيٌ يُّوْحٰى ٥﴾ [النجم، ٥٣:٣-٤].

فقال رسول الله ﷺ: "ألا إنّي أُعطيت القرآن ومثله معه." رواه أحمد وأبوداود والدارمي وابن ماجه عن المقدام بن مَعْدي ﵁. وروى أبوداود والترمذي عنه: قال رسول الله ﷺ: "ألا وإنّ ما حرّم رسول الله ﷺ كما حرّم الله." وفي رواية ابن ماجه: "مثل ما حرّم الله." فبيّن النّبي ﷺ أنّه قد أعطاه الله تعالى وَحْيَيْنِ، هما: وحي القرآن العظيم ووحي السنّة النبوية، فالقرآن وحي متلوٌ متعبَّد بتلاوته وأمّا السنّة فهي وحي غير متلوٍّ وغير متعبَّد بتلاوته. ولذالک جاء في الحديث النبوي ﷺ بأن الحديث هو من الوحي لأنّه لا يمكن أن يصدر

منه ﷺ كالوقائع البشرية كما جاء في الحديث عن أسماء بنت أبي بكر الصديق رضي الله عنهما: فخطب رسول الله ﷺ الناس، فقال: ''وإنّه قد أوحي إليّ أنّكم تفتنون في القبور، قريباً. أو مثل فتنة المسيح الدجال.'' الحديث بطوله، متفق عليه. وعن عياض بن حمار رضي الله عنه قال: قام فينا رسول الله ﷺ ذات يوم خطيباً، فقال: ''وإنّ الله أوحى إليّ أن تواضعوا، حتى لا يفخر أحد على أحدٍ......'' الحديث، رواه مسلم وعن عائشة رضي الله عنها قالت: ''وقد أوحي إلى رسول الله ﷺ أن يبشرها ببيت لها في الجنّة من قصب......'' الحديث. متفق عليه. وقال الإمام الحسن البصري رضي الله عنه: ''أي قوم خذوا عنّا (سنّة النّبي ﷺ) فإنّكم والله إلا تفعلوا لتضلنّ.'' رواه البيهقي في مدخل الدلائل، وروى الإمام الأوزاعي عن حسان بن عطية قال: ''كان جبريل عليه السلام ينزل على النّبي ﷺ بالسّنّة كما ينزل عليه بالقرآن.'' رواه الدارمي في السنن. وعن الأوزاعي قال: أيوب السختياني: ''إذا حدّثت الرجل بالسّنّة فقال: دعنا من هذا وحدّثنا من القرآن، فاعلم أنّه ضالٌ مضلٌ.'' أخرجه الحاكم والبيهقى والخطيب. وقال الأوزاعى ومكحول ويحي بن أبي كثير وغيرهم: ''القرآن أحوج إلى السّنّة من السّنّة إلى الكتاب، والسّنّة قاضية على الكتاب وليس الكتاب قاضياً على السّنّة.'' رواه الدارمي في السنن.

وصرّح الإمام الشافعي رحمه الله تعالى في كتابيه ''الأم'' و ''الرسالة'' بأنه ما فرض رسول الله ﷺ شيئًا قطّ إلا بوحي، فمن

الوحي ما يُتلى، ومنه مايكون وحياً إلى رسول الله ﷺ فيستن به وقال: فأمر الله تعالى إيّاه وجهان: أحدهما: وحي ينزل، فيتلى على الناس. والثاني: رسالة تأتيه عن الله تعالى، بأن افعل كذا فيفعله......، وكذالك قال الإمام ابن حزم الظاهري رحمه الله تعالى في "الإحكام" فصحّ لنا أنّ الوحي من الله ﷻ إلى رسوله ﷺ ينقسم إلى قسمين: أحدهما: وحيٌ متلُوٌّ. والثاني: وحيٌ مرويٌّ، وهما شيء واحد في أنّهما من عند الله تعالى وحكمهما حكمٌ واحدٌ، ونقل الإمام السيوطي عن الإمام أبي المعالي الجُوَيني رحمه الله تعالى قال: كلام الله المنزّل قسمان: قسمٌ: قال الله ﷻ لجبريل عليه السلام: قل للنّبي أنت مرسلٌ إليه: إن الله تعالى يقول: افعل كذا وأمر بكذا؟ ففهم جبريل ما قاله ربّه، ثم نزل بذلك على النّبي ﷺ ولم تكن تلك الكلمة عبارته، وقسمٌ آخر: قال الله تعالى لجبريل عليه السلام: اقرأ على النّبي عليه السلام هذا الكتاب، فنزل جبريل عليه السلام بكلمة من الله تعالى، من غير تغيير فثبت أنّ جبريل عليه السلام كان ينزل بالسّنّة كما ينزل بالقرآن، فالقرآن هو رواية كلام الله تعالى لفظاً والسّنّة هي رواية كلام الله تعالى معناً فأمّا المقصود من الأوّل هو التلاوة والتعبّد والمقصود من الثّاني هو الرواية والتنقّل.

فإنّ الوحيين، القرآن والسّنّة، بعضهما مضاف إلى بعضٍ فكلّ واحدٍ من هذين يستلزم الآخر فإثبات القرآن يقتضي إثبات السّنّة وإنكار السّنّة يقتضي إنكار القرآن.

فإنّ هذا الأصول بيّن وثابت من قوله تعالى: ﴿وَمَا قَدَرُوا اللهَ حَقَّ قَدْرِهٖ اِذْ قَالُوْا مَا اَنْزَلَ اللهُ عَلٰى بَشَرٍ مِّنْ شَيْءٍ﴾ [الأنعام، ٦:٩١]. هذه الآية دآلّة على أنّه لا يوجد ولا يقبل الاعتراف بقدر الله تعالى ولا بعظمة ألوهيّته قطعاً إلّا بإقرار الرّسالة والنّبوّة. لأنّ الرّسالة والنّبوّة هي واسطةٌ وحيدةٌ ووسيلةٌ فريدةٌ لمعرفة وجوده تعالى وألوهيّته ولتبليغ شريعته إلى عباده ولتشكّل طاعته لأحكامه وأوامره، حيث اجتبى الله ﷻ الرّسل العظام واختارهم للأخذ من الخالق والإيصال إلى الخلق، واصطفاهم للقبول من الخالق والإفضال على الخلق. واختصّهم للعطاء من الخالق والقسم بين الخلق، وشرّفهم بالسّماع من الخالق والرّواية للخلق. وعزّزهم بالوحي من الخالق والهدي للخلق. وأكرمهم بالكتاب من الخالق والسّنّة للخلق.

فلا بدّ أن نؤمن بالله تعالى ونقرّ التّوحيد ونعرف قدر الألوهيّة بواسطة الرّسالة ومعرفة عظمتها وحجيّة أسوتها واتّباع سنّتها كما قال الله تعالى: ﴿وَمَاكَانَ لِبَشَرٍ اَنْ يُّكَلِّمَهُ اللهُ اِلَّا وَحْيًا اَوْ مِنْ وَّرَآئِ حِجَابٍ اَوْ يُرْسِلَ رَسُوْلًا فَيُوْحِيَ بِاِذْنِهٖ مَا يَشَاءُ ط اِنَّهٗ عَلِيٌّ حَكِيْمٌ٥﴾ [الشورى، ٤٢:٥١]. فإنّ هذه الآية صرّحت بأنّ الله تعالى لا يعطى أمره ولا يوصل كلامه مباشرة إلى عالم البشريّة والإنسانيّة إلّا بواسطة النّبوّة والرّسالة.

فإنّه يصطفي من عباده أحدًا فيجعله نبيًا ورسولا ويشرّفه

بخطابه وينزل عليه كلامه وهو، أي النّبيّ ﷺ يخطب الإنسان رسالة عنه تعالى ويكلّم البشر نيابة عنه تعالى ويخبرهم عن أمره ونهيه. فيقرّر الله تعالى خطاب النّبيّ ﷺ خطابه، وكلام النّبيّ ﷺ كلامه، وإخبار النّبيّ ﷺ إخباره، وبيان النّبيّ ﷺ بيانه، وطاعة النّبيّ ﷺ طاعته، ومعصيّة النّبيّ ﷺ معصيته، وسنّة النّبيّ ﷺ سبيله، واتّباع النّبيّ ﷺ دليله، فأعلنت الملائكة بنفس الأمر كما روى جابر بن عبد الله رضي الله عنهما: "فمن أطاع محمّدًا فقد أطاع الله، ومن عصى محمّدًا فقد عصى الله، ومحمّدٌ فرّق بين النّاس." أخرجه البخاري.

وقال رسول الله ﷺ كما روى أبوهريرة رضي الله عنه: "من أطاعني فقد أطاع الله ومن عصاني فقد عصى الله." متفق عليه. وقال الله تعالى: ﴿اَللّٰهُ اَعْلَمُ حَيْثُ يَجْعَلُ رِسَالَتَهٗ﴾ [الأنعام، ٦:١٢٤]. هذه الآية دلّت على أنّ الرّسالة نعمةٌ عظيمةٌ، ومنزلةٌ رفيعةٌ، ولا يعلم إلّا الله تعالى بمن يُكرمه بهذه المكانة وبمن يجعله محل الرّسالة، لأنّ قول الرّسول ليس كمثل قول أحد من البشر إنّما هو قول من عند الله تعالى كما قال الله ﷻ: ﴿وَمَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوٰىo اِنْ هُوَ اِلَّا وَحْيٌ يُّوْحٰىo﴾ [النجم، ٥٣:٣].

❁ وَفِعْلُ الرَّسُوْلِ ﷺ ليس كمثل فعل أحد من البشر إنّما هو فعل بإذن الله تعالى كما قال الله ﷻ: ﴿وَمَا رَمَيْتَ اِذْ رَمَيْتَ وَ لٰكِنَّ اللّٰهَ رَمٰى﴾ [الأنفال، ٨:١٧].

❁ وَصِرَاطَ الرَّسُوْلِ ﷺ ليس كمثل صراط أحد مّن البشر، إنّما هو صراط الله تعالى كما قال الله ﷻ: ﴿وَهٰذَا صِرَاطُ رَبِّکَ مُسْتَقِيْمًا﴾ [الأنعام، ٦:١٢٦].

❁ وَرِضَا الرَّسُوْلِ ﷺ ليس كمثل رضا أحد مّن البشر إنّما هو رضا الله تعالى كما قال الله ﷻ: ﴿اللهُ وَ رَسُوْلُهٗٓ اَحَقُّ اَنْ يُّرْضُوْهُ اِنْ كَانُوْا مُؤْمِنِيْنَ٥﴾ [التوبة، ٩:٦٢].

❁ وَعَطَاءُ الرَّسُوْلِ ﷺ ليس كمثل عطاء أحد مّن البشر إنّما هو عطاء الله تعالى كما قال الله ﷻ: ﴿وَلَوْ اَنَّهُمْ رَضُوْا مَآ اٰتٰهُمُ اللهُ وَ رَسُوْلُهٗ﴾ [التوبة، ٩:٥٩].

❁ وَفَضْلُ الرَّسُوْلِ ﷺ ليس كمثل فضل أحد مّن البشر إنّما هو فضل الله تعالى كما قال الله ﷻ: ﴿وَ قَالُوْا حَسْبُنَا اللهُ سَيُؤْتِيْنَا اللهُ مِنْ فَضْلِهٖ وَ رَسُوْلُهٗٓ اِنَّآ اِلَى اللهِ رٰغِبُوْنَ٥﴾ [التوبة، ٩:٥٩].

❁ وَإِغْنَاءُ الرَّسُوْلِ ﷺ ليس كمثل إغناء أحد مّن البشر إنّما هو إغناء الله تعالى كما قال الله ﷻ: ﴿وَمَا نَقَمُوْٓا اِلَّآ اَنْ اَغْنٰهُمُ اللهُ وَرَسُوْلُهٗ مِنْ فَضْلِهٖ﴾ [التوبة، ٩:٧٤].

❁ وَإِنْعَامُ الرَّسُوْلِ ﷺ ليس كمثل إنعام أحد مّن البشر إنّما هو إنعام الله تعالى كما قال الله ﷻ: ﴿اَنْعَمَ اللهُ عَلَيْهِ وَاَنْعَمْتَ عَلَيْهِ﴾ [الأحزاب، ٣٣:٣٧].

❁ وَالْأَدَبُ مَعَ الرَّسُوْلِ ﷺ ليس كمثل أدب أحد مّن

البشر إنّما هو الأدب مع الله تعالى كما قال الله ﷻ: ﴿يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لاَ تُقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَیِ اللهِ وَ رَسُوْلِهٖ وَ اتَّقُوا اللهَ اِنَّ اللهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝﴾ [الحجرات، ٤٩:١].

۞ **وَتَعْظِيْمُ الرَّسُوْلِ** ﷺ ليس كمثل تعظيم أحد مّن البشر إنّما هو تعظيم الله تعالى كما قال الله ﷻ: ﴿اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ۝ لِّتُؤْمِنُوْا بِاللهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتُعَزِّرُوْهُ وَتُوَقِّرُوْهُ ؕ وَتُسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ۝﴾ [الفتح، ٤٨:٨-٩].

۞ **وَالْبَيْعَةُ عَلَى يَدِ الرَّسُوْلِ** ﷺ ليس كمثل بيعة أحد مّن البشر إنّما هي بيعة الله تعالى كما قال الله ﷻ: ﴿اِنَّ الَّذِيْنَ يُبَايِعُوْنَكَ اِنَّمَا يُبَايِعُوْنَ اللهَ ؕ يَدُ اللهِ فَوْقَ اَيْدِيْهِمْ ۚ﴾ [الفتح، ٤٨:١٠].

۞ **وَدُعَاءُ الرَّسُوْلِ** ﷺ ليس كمثل دعاء أحد مّن البشر إنّما هو دعاء الله تعالى كما قال الله ﷻ: ﴿لَا تَجْعَلُوْا دُعَآءَ الرَّسُوْلِ بَيْنَكُمْ كَدُعَآءِ بَعْضِكُمْ بَعْضًا ؕ﴾ [النور، ٢٤:٦٣]. وقوله: ﴿يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَجِيْبُوْا لِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ اِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيْكُمْ﴾ [الأنفال، ٨:٢٤].

۞ **وَمِلْكُ الرَّسُوْلِ** ﷺ ليس كمثل ملك أحد مّن البشر إنّما هو ملك الله تعالى كما قال الله ﷻ: ﴿يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْاَنْفَالِ ؕ قُلِ الْاَنْفَالُ لِلّٰهِ وَالرَّسُوْلِ ۚ﴾ [الأنفال، ٨:١].

۞ **وَإِطَاعَةُ الرَّسُوْلِ** ﷺ ليس كمثل إطاعة أحد مّن البشر إنّما هي إطاعة الله تعالى كما قال الله ﷻ: ﴿مَنْ يُّطِعِ الرَّسُوْلَ فَقَدْ

اَطَاعَ اللهَ ج وَ مَنْ تَوَلّٰى فَمَآ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ۝﴾ [النساء، ٤:٨٠]. وقوله: ﴿تِلْكَ حُدُوْدُ اللهِ ط وَ مَنْ يُّطِعِ اللهَ وَ رَسُوْلَهٗ يُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ط وَذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝﴾ [النساء، ٤:١٣]. وقوله: ﴿يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَطِيْعُوا اللهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَلَا تُبْطِلُوْٓا اَعْمَالَكُمْ ۝﴾ [محمد، ٤٧:٣٣].

۞ وَمَعْصِيَّةُ الرَّسُوْلِ ﷺ ليس كمثل معصيّة أحد مّن البشر إنّما هي معصيّة الله تعالى كما قال الله ﷻ: ﴿وَمَنْ يَّعْصِ اللهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَتَعَدَّ حُدُوْدَهٗ يُدْخِلْهُ نَارًا خَالِدًا فِيْهَا وَلَهٗ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ۝﴾ [النساء، ٤:١٤]. وقوله: ﴿اِلَّا بَلٰغًا مِّنَ اللهِ وَرِسٰلٰتِهٖ ط وَمَنْ يَّعْصِ اللهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاِنَّ لَهٗ نَارَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۝﴾ [الجن، ٧٢:٢٣].

۞ وَمَشَاقَّةُ الرَّسُوْلِ ﷺ ليس كمثل مشاقّة أحد مّن البشر إنّما هي مشاقّة الله تعالى كما قال الله ﷻ: ﴿ذَالِكَ بِاَنَّهُمْ شَآقُّوْا اللهَ وَرَسُوْلَهٗ وَمَنْ يُّشَاقِقِ اللهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاِنَّ اللهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝﴾ [الأنفال، ٨:١٣]. وقوله: ﴿ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ شَآقُّوا اللهَ وَرَسُوْلَهٗ ج وَمَنْ يُّشَآقِّ اللهَ فَاِنَّ اللهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝﴾ [الحشر، ٥٩:٤].

۞ وَبَرَاءَةٌ مِّنَ الرَّسُوْلِ ﷺ ليس كمثل براءة أحد مّن البشر إنّما هي براءة الله تعالى كما قال الله ﷻ: ﴿بَرَآءَةٌ مِّنَ اللهِ وَرَسُوْلِهٖ اِلَى الَّذِيْنَ عٰهَدْتُّمْ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝﴾ [التوبة، ٩:١].

۞ وَأَذَانٌ مِّنَ الرَّسُوْلِ ﷺ ليس كمثل أذان أحد مّن البشر

إنّما هي أذان من الله تعالى كما قال الله ﷻ: ﴿وَاَذَانٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِه اِلَي النَّاسِ يَوْمَ الْحَجِّ الْاَكْبَرِ اَنَّ اللّٰهَ بَرِيْٓءٌ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ وَرَسُوْلُهٗ﴾ [التوبة، ٩:٣].

۞ **وَأَذِيَّةُ الرَّسُوْلِ** ﷺ ليس كمثل أذيّة أحد من البشر إنّما هي أذيّة الله تعالى، كما قال الله ﷻ: ﴿اِنَّ الَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَاَعَدَّلَهُمْ عَذَابًا مُّهِيْنًا۝﴾ [الأحزاب، ٣٣:٥٧].

۞ **وَغَضُّ الْأَصْوَاتِ عِنْدَ الرَّسُوْلِ** ﷺ تعظيماً له ليس كمثل إكرام أحد مّن البشر إنّما هي عبادة الله وتقوى القلوب كما قال الله ﷻ: ﴿اِنَّ الَّذِيْنَ يَغُضُّوْنَ اَصْوَاتَهُمْ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ امْتَحَنَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ لِلتَّقْوٰى ؕ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ عَظِيْمٌ ۝﴾ [الحجرات، ٤٩:٣].

۞ **وَمَحَبَّةُ الرَّسُوْلِ** ﷺ ليس كمثل محبة أحد مّن البشر إنّما هي محبة الله تعالى كما قال الله ﷻ: ﴿قُلْ اِنْ كَانَ اٰبَاؤُكُمْ وَاَبْنَآؤُكُمْ وَاِخْوَانُكُمْ وَاَزْوَاجُكُمْ وَعَشِيْرَتُكُمْ وَاَمْوَالُ ۨاقْتَرَفْتُمُوْهَا وَتِجَارَةٌ تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا وَمَسٰكِنُ تَرْضَوْنَهَآ اَحَبَّ اِلَيْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَجِهَادٍ فِىْ سَبِيْلِهٖ فَتَرَبَّصُوْا حَتّٰى يَاْتِىَ اللّٰهُ بِاَمْرِهٖ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ۝﴾ [التوبة، ٩:٢٤].

۞ **وَاتِّبَاعُ الرَّسُوْلِ** ﷺ ليس كمثل اتّباع أحد مّن البشر إنّما

هي محبة الله ومغفرة منه كما قال الله ﷻ: ﴿قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللهَ فَاتَّبِعُوْنِيْ يُحْبِبْكُمُ اللهُ وَيَغْفِرْلَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ۭ وَاللهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝﴾ [آل عمران، ٣:٣١].

۞ وَالدَّعْوَةُ إِلَى الرَّسُوْلِ ﷺ ليس كمثل الدعوة إلى أحد مّن البشر إنّما هي الدعوة إلى الله تعالى كما قال الله ﷻ: ﴿وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا اِلٰى مَا اَنْزَلَ اللهُ وَاِلَى الرَّسُوْلِ رَاَيْتَ الْمُنَافِقِيْنَ يَصُدُّوْنَ عَنْكَ صُدُوْدًا ۝﴾ [النساء، ٤:٦١]. وقوله: ﴿اِذَا دُعُوْٓا اِلَى اللهِ وَرَسُوْلِهٖ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ اَنْ يَّقُوْلُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ۭ﴾ [النور، ٢٤:٥١].

۞ وَمُحَادَّةُ الرَّسُوْلِ ﷺ ليس كمثل محادّة أحد مّن البشر إنّما هي محادّة الله تعالى كما قال الله ﷻ: ﴿اَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّهٗ مَنْ يُّحَادِدِ اللهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاَنَّ لَهٗ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدًا فِيْهَا ۭ ذٰلِكَ الْخِزْيُ الْعَظِيْمُ ۝﴾ [التوبة، ٩:٦٣]. وقوله: ﴿اِنَّ الَّذِيْنَ يُحَآدُّوْنَ اللهَ وَرَسُوْلَهٗٓ اُولٰٓئِكَ فِي الْاَذَلِّيْنَ ۝﴾ [المجادلة، ٥٨:٢٠].

۞ وَتَحْرِيْمُ الرَّسُوْلِ ﷺ ليس كمثل تحريم أحد مّن البشر إنّما هو تحريم الله تعالى كما قال الله ﷻ: ﴿وَلَا يُحَرِّمُوْنَ مَا حَرَّمَ اللهُ وَرَسُوْلُهٗ﴾ [التوبة، ٩:٢٩].

۞ وَقَضَاءُ الرَّسُوْلِ ﷺ ليس كمثل قضاء أحد مّن البشر إنّما هو قضاء الله تعالى كما قال الله ﷻ: ﴿وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَّلَا مُؤْمِنَةٍ اِذَا

قَضَى اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ اَمْرًا اَنْ يَّكُوْنَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ مِنْ اَمْرِهِمْ﴾ [الأحزاب، ٣٣:٣٦].

❁ وَالْمُحَارَبَةُ مَعَ الرَّسُوْلِ ﷺ ليس كمثل المحاربة مع أحد مّن البشر إنّما هي المحاربة مع الله تعالى كما قال الله ﷻ: ﴿اِنَّمَا جَزٰٓؤُا الَّذِيْنَ يُحَارِبُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَسْعَوْنَ فِى الْاَرْضِ فَسَادًا اَنْ يُّقَتَّلُوْٓا اَوْيُصَلَّبُوْٓا اَوْتُقَطَّعَ اَيْدِيْهِمْ وَاَرْجُلُهُمْ مِّنْ خِلَافٍ اَوْ يُنْفَوْا مِنَ الْاَرْضِ ط ذٰلِكَ لَهُمْ خِزْىٌ فِى الدُّنْيَا وَلَهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ۝﴾ [المائدة، ٥:٣٣].

ونقل القاضي أبوالفضل عياض اليحصبي في "الشفا" عن الإمام جعفر بن محمد الصادق رضي الله عنه: "علم الله عجز خلقه من طاعته فعرّفهم ذالك، لكي يعلموا أنّهم لا ينالون العفو من خدمته، فأقام بينهم وبينه مخلوقاً من جنسهم في الصّورة، وألبسه من نعته الرأفة والرحمة وأخرجه إلى الخلق سفيرًا صادقًا وجعل طاعته، طاعته، وموافقته، موافقته فقال الله تعالى: ﴿مَنْ يُّطِعِ الرَّسُوْلَ فَقَدْ اَطَاعَ اللّٰهَ ج﴾ [النساء، ٤:٨٠]. وقال الله تعالى: ﴿وَمَا اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ۝﴾ [الأنبياء، ٢١:١٠٧].

وقال العلامة ابن تيمية في "الصارم المسلول": "وفي هذا وغيره بيان لتلازم الحقّين وأن جهة حرمة الله تعالى ورسوله ﷺ جهة واحدة فمن آذى الرّسول ﷺ فقد آذى الله ﷻ، ومن أطاعه فقد أطاع الله، لأنّ الأمّة لا يصلون ما بينهم وبين ربهم إلّا بواسطة

الرّسول، ليس لأحدٍ منهم طريق غيره، ولا سبب سواه، وقد أقامه الله مقام نفسه في أمره ونهيه وإخباره وبيانه، فلا يجوز أن يفرّق بين الله ورسوله في شيء من هذه الأمور. وقال: فيبيّن ذالک أنّ الله تعالى جعل محبته ومحبة رسوله ﷺ وإرضاءه وإرضاء رسوله ﷺ وطاعته وطاعة رسوله ﷺ شيئًا واحدًا وكذالک جعل شقاقه وشقاق رسوله ﷺ ومحادّته ومحادة رسوله ﷺ وأذاه وأذى رسوله ﷺ ومعصيته ومعصية رسوله ﷺ شيئًا واحدًا حتّى وحّد الضمير له ولرسوله ﷺ في مواضع متعدّدةٍ وقال: ﴿وَاللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗٓ اَحَقُّ اَنْ يُّرْضُوْهُ﴾ [التوبة، ٩:٦٢]. وقال: ﴿وَمَا نَقَمُوْٓا اِلَّآ اَنْ اَغْنٰـهُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ مِنْ فَضْلِهٖ﴾ [التوبة، ٩:٧٤]. فثبت أنّ في توحيد الضمير لله ورسوله ﷺ حكمةٌ بالغةٌ وهي رفع التغاير في الحكم، فإذا رُفِعَ التغاير بينهما في الحكم تبيّن لنا الأمر بوحدة المصدرية والمرجعية في الأحكام كلها، وهذا كما صرّح به القاضي أبوالفضل عياض رحمه الله تعالى تقدير من الله تعالى لنبيّه ﷺ على عظيم نعمه لديه وشريف منزلته عنده وكرامته عليه وتنويهه بجليل مكانه ورتبته ورفع شأنه بقِرَانِ ذكره مع ذكره واسمه مع اسمه وطاعته مع طاعته وأمره مع أمره حتى بجمع بينهما بواو العطف المشرّكة أو بالضمير الواحد ولا يجوز الجمع مثله في غير حقه ﷺ إنَّ الله تعالى ذَكَرَه ﷺ في كلامه ﴿بِالصِّرَاطِ الْمُسْتَقِيْم﴾ كما رُوي عن أبي العالية والحسن البصري

وعبد الرحمٰن بن زيد، وذكره ﷺ في كلامه ﴿بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰى﴾ كما رُوي عن أبي عبد الرحمٰن السُّلَمي، وذكره ﷺ في كلامه ﴿بِنِعْمَةِ اللّٰهِ﴾ كما رُوي عن سهل بن عبد الله، وذكره في كلامه ﴿بِمَثَلِ نُوْرِهٖ﴾، كما رُوي عن ابن عباس رضي الله عنهما وكعب الأحبار رضي الله عنه وسعيد بن جبير، وذكره ﷺ في كلامه ﴿بِذِكْرِ اللّٰهِ﴾ كما رُوي عن مجاهد، وذكره ﷺ في كلامه ﴿بِقَدَمِ صِدْقٍ﴾ كما رُوي عن مجاهد والحسن البصري وزيد بن أسلم، حتى ذكره ﷺ بجملة أوصافٍ من العزّة والمِدحة والعظمة والرّفعة والكرامة والرّتبة وجعله ﷺ شاهدًا على أمّته لنفسه بالرّسالة وألبسه ﷺ من صفاته لأمتّه ﷺ بالطاعة.

لمّا بيّنا أنّ القرآن والسّنّة هما وحيان، فوجدنا في القرآن إيجاب السنّة، لأنّ كلام النّبيّ ﷺ كُلَّهُ وحيٌ، والوحي كلّ ما نطق به النّبيّ ﷺ بقوله تعالى: ﴿وَمَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوٰىo اِنْ هُوَ اِلَّا وَحْيٌ يُّوْحٰىo﴾ لأنّ الله تعالى ما جعل لنا قدرةً وصفةً وسعةً أن نسمع كلامه إلّا بواسطة فم الرّسول ﷺ ونعرف بيانه إلّا بواسطة نطق الرّسول ﷺ ونفهم أمره إلّا بواسطة حكم الرّسول ﷺ ونجعل طاعته إلّا بواسطة سنّة الرّسول ﷺ.

لأنّه لم يتكلّم ﷺ بفمه عن هواه ﷺ بل سمع كلام الله تعالى مميّزا فصحّ سماعه فحدّثه الله تعالى وأخبره ونبّأه وقال له وذكر له ﷺ ما كان وما يكون بقوله تعالى: ﴿وَعَلَّمَكَ مَالَمْ تَكُنْ

تَعْلَمُ ط وَكَانَ فَضْلُ اللهِ عَلَيْكَ عَظِيْمًا ٥﴾ [النساء، ١١٣:٤] وقوله: ﴿اَللهُ نَزَّلَ أَحْسَنَ الْحَدِيْثِ كِتَابًا مُّتَشَابِهًا﴾ [الزمر، ٢٣:٣٩]، وقوله: ﴿وَهَلْ اَتٰـكَ حَدِيْثُ مُوْسٰى﴾ [طٰه، ٩:٢٠]، وقوله: ﴿سَنُقْرِئُكَ فَلَا تَنْسٰى﴾ [الأعلى، ٦:٨٧] وقوله: ﴿إِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهٗ وَ قُرْآنَهٗ ٥ فَإِذَا قَرَاْنٰـهُ فَاتَّبِعْ قُرْاٰنَهٗ ٥ ثُمَّ إِنَّ عَلَيْنَا بَيَانَهٗ ٥﴾ [القيامة، ١٧:٧٥-١٩] وقوله: ﴿قَالَ نَبَّاَنِيَ الْعَلِيْمُ الْخَبِيْرُ ٥﴾ [التحريم، ٣:٦٦] وقوله: ﴿وَاِنَّكَ لَتُلَقَّى الْقُرْاٰنَ مِنَ لَّدُنْ حَكِيْمٍ عَلِيْمٍ ٥﴾ [النّمل، ٦:٢٧] وقوله: ﴿وَمَا عَلَّمْنٰـهُ الشِّعْرَ وَمَا يَنْبَغِيْ لَهٗ اِنْ هُوَا اِلَّا ذِكْرٌ وَّ قُرْاٰنٌ مُّبِيْنٌ ٥﴾ [يٰس، ٦٩:٣٦] وقوله: ﴿اِنَّا سَنُلْقِيْ عَلَيْكَ قَوْلًا ثَقِيْلًا ٥﴾ [المزّمل، ٥:٧٣] وقوله: ﴿ذٰلِكَ نَتْلُوْهُ عَلَيْكَ مِنَ الْآيَاتِ وَالذِّكْرِ الْحَكِيْمِ ٥﴾ [آل عمران، ٥٨:٣] وقوله: ﴿وَاَنَا اخْتَرْتُكَ فَاسْتَمِعْ لِمَا يُوْحٰى﴾ [طٰه، ١٣:٢٠].

وأمر الله تعالى أمّته ﷺ **بالسّماع** عنه ﷺ بقوله: ﴿ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقُوْلُوْا رَاعِنَا وَقُوْلُوْا انْظُرْنَا وَاسْمَعُوْا ط﴾ [البقرة، ١٠٤:٢] وقوله: ﴿رَبَّنَآ اِنَّنَا سَمِعْنَا مُنَادِيًا يُّنَادِيْ لِلْاِيْمَانِ اَنْ اٰمِنُوْا بِرَبِّكُمْ فَاٰمَنَّا﴾ [آل عمران، ١٩٣:٣]، وقوله: ﴿الَّذِيْنَ يَسْتَمِعُوْنَ الْقَوْلَ فَيَتَّبِعُوْنَ اَحْسَنَهٗ﴾ [الزمر، ١٨:٣٩]، **فتحمّل** خطابه من رؤيةٍ باعتمادٍ واثقٍ وبفهمٍ كاملٍ وأدّاه ﴿عَلَّمَهٗ شَدِيْدُ الْقُوٰى ٥ ذُوْ مِرَّةٍ ط فَاسْتَوٰى ٥﴾ [النجم، ٥:٥٣-٦]. ثم **قرأ** النّبي ﷺ ما قرأ وعرض على الله تعالى ما عرض طلبًا وتعلّمًا وتحدّثًا وتفهّمًا للتوثيق والتصديق بقوله تعالى: ﴿اِقْرَاْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِيْ خَلَقَ ٥ خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ﴾ [العلق،

٩٦: ١-٢] وقوله: ﴿اِقْرَاْ وَرَبُّكَ الْاَكْرَمُ٥ الَّذِىْ عَلَّمَ بِالْقَلَمِ٥ عَلَّمَ الْاِنْسَانَ مَالَمْ يَعْلَم٥﴾ [العلق، ٩٦: ٣-٥] وقوله: ﴿وَإِذَا قَرَأْتَ الْقُرْآنَ جَعَلْنَا بَيْنَكَ وَ بَيْنَ الَّذِيْنَ لَايُؤْمِنُوْنَ بِالآخِرَةِ حِجَابًا مَّسْتُوْرًا ٥﴾ [الإسراء، ١٧: ٤٥] وقوله: ﴿اَقِمِ الصَّلٰوةَ لِدُلُوْكِ الشَّمْسِ اِلٰى غَسَقِ الَّيْلِ وَقُرْاٰنَ الْفَجْرِ ط اِنَّ قُرْاٰنَ الْفَجْرِ كَانَ مَشْهُوْدًا ٥﴾ [الإسراء، ١٧: ٧٨] وقوله: ﴿وَرَتِّلِ الْقُرْآنَ تَرْتِيْلا﴾ [المزمل، ٧٣: ٤].

فأجازه إجازةً خاصّةً وعامّةً ليأذن لأمّته ﷺ إذناً خاصّا لخاصٍ وإذناً خاصاً لعامٍ وإذناً عامّاً لعامٍ وإذناً معيّناً لغير معيّنٍ وإذنًا غيرَ معيّن لجميع المسلمين والموجودين من الشاهدين والغائبين بقوله تعالى: ﴿أَنْزَلْنٰهُ إِلَيْكَ لِتُخْرِجَ النَّاسَ مِنَ الظُّلُمٰتِ إِلَى النُّوْرِ بِإِذْنِ رَبِّهِمْ﴾ [إبراهيم، ١٤: ١] وقوله: ﴿يـٰاَيُّهَا النَّبِيُّ اِنَّا اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّ مُبَشِّرًا وَّ نَذِيْرًا٥ وَّ دَاعِيًا اِلَى اللهِ بِاِذْنِهٖ وَ سِرَاجًا مُّنِيْرًا٥﴾ [الأحزاب، ٣٣: ٤٥-٤٦] وقوله: ﴿وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا لِيُطَاعَ بِاِذْنِ اللهِ﴾ [النساء، ٤: ٦٤] وقوله: ﴿وَاَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ﴾ [الضحى، ٩٣: ١١] وقوله: ﴿فَذَكِّرْ قف اِنَّمَا اَنْتَ مُذَكِّرٌ ٥﴾ [الغاشية، ٨٨: ٢١] وقوله: ﴿فَذَكِّرْ بِالْقُرْاٰنِ مَنْ يَّخَافُ وَعِيْدِ٥﴾ [ق، ٥٠: ٤٥] وقوله: ﴿اِنَّـآ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ لِتَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ بِمَـآ اَرٰكَ اللهُ﴾ [النساء، ٤: ١٠٥] وقوله: ﴿وَ بِالْحَقِّ أَنْزَلْنٰـهُ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ وَمَا أَرْسَلْنٰكَ إِلَّا مُبَشِّرًا وَّ نَذِيْرًا وَقُرْآنًا فَرَقْنٰهُ لَتَقْرَاَهُ عَلَى النَّاسِ عَلٰى مُكْثٍ وَّ نَزَّلْنٰهُ تَنْزِيْـلا٥﴾ [الإسراء، ١٧: ١٠٥-١٠٦]. وهٰكذا إذناً للأطفال بقوله: ﴿وَ

اٰتَیْنٰهُ الْحُکْمَ صَبِیًّا﴾ [مريم، ١٩:١٢] وإذناً للمعدومين الّذين وُلِدُوا بعده ﷺ ويُولدون في آخر أمّته ﷺ وآخر زمانه ﷺ بقوله تعالى: ﴿هُوَ الَّذِیْ بَعَثَ فِی الْاُمِّیّٖنَ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ یَتْلُوْا عَلَیْهِمْ اٰیٰتِهٖ وَ یُزَکِّیْهِمْ وَ یُعَلِّمُهُمُ الْکِتٰبَ وَالْحِکْمَةَ وَ اِنْ کَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِیْ ضَلٰلٍ مُّبِیْنٍo وَّاٰخَرِیْنَ مِنْهُمْ لَمَّا یَلْحَقُوْا بِهِمْ ط وَهُوَ الْعَزِیْزُ الْحَکِیْمُo﴾ [الجمعة، ٦٢:٢-٣].

وروى أبوهريرة ﷺ قال: ''كنّا جلوسا عند النّبيّ ﷺ فأنزلت عليه سورة الجمعة: ﴿وَّاٰخَرِیْنَ مِنْهُمْ لَمَّا یَلْحَقُوْا بِهِمْ﴾ [الجمعة، ٦٢:٣] قال: قلت: من هم يا رسول الله؟ فلم يراجعه حتى سأل ثلاثا، وفينا سلمان الفارسي، وضع رسول الله ﷺ يده على سلمان، ثم قال: لو كان الإيمان عند الثريا لناله رجال أو رجل من هولاء.'' متفق عليه وهذا لفظ البخاري.

وعنه ﷺ قال: قال رسول الله ﷺ: ''لو كان الدين عند الثريا لذهب به رجل من فارس أو قال: من أبناء فارس، حتى يتناوله.'' رواه مسلم. وعنه ﷺ قال: قال رسول الله ﷺ: ''لو كان الدِّين عند الثريا لذهب رجل من فارس أو أبناء فارس حتى يتناوله.'' رواه أحمد. وعنه ﷺ: ''يوشک أن يضرب الناس (الرجل) أكباد الإبل يطلبون العلم.'' وفي رواية: ''يخرج الناس من المشرق والمغرب، فلا يجدون أحدًا أعلم من عالم المدينة.'' رواه الترمذي والنسائي والحاكم.

وعن عبد الله ﷺ قال: قال رسول الله ﷺ: ''لا تسبوا قريشاً،

فإنّ عالمها يملأ طباق الأرض علمًا." وفي رواية: "اللّهم اهد قريشًا." رواه الطيالسي وابن أبي عاصم والخطيب. وعن معاوية ﵁ قال: سمعت النّبي ﷺ يقول: "لا يزال من أمتي أمة قائمة بأمر الله لا يضرهم من خذلهم ولا من خالفهم حتى يأتيهم أمر الله وهم على ذلك." متفق عليه وهذا لفظ البخاري.

وعن أبي هريرة ﵁ قال: قال رسول الله ﷺ: "والّذي نفس محمّد ﷺ بيده، ليأتينّ على أحدكم يوم ولا يراني، ثم لأن يراني أحب إليه من أهله وماله معهم." متفق عليه وهذا لفظ مسلم. وعن أنس بن مالك ﵁ قال: قال رسول الله ﷺ: "وددتُ أني لقيت إخواني، قال: فقال أصحاب النّبي ﷺ: أو ليس نحن إخوانك؟ قال: أنتم أصحابي، ولكن إخواني الذين أمنوا بي ولم يروني." رواه أحمد. وعن أبي أمامة ﵁ أنّ رسول الله ﷺ قال: "طوبى لمن رآني وآمن بي وطوبى سبع مرات لمن لم يرني وآمن بي." رواه أحمد وابن حبّان. وعن أبي جمعة ﵁ قال: "تغدينا مع رسول الله ﷺ ومعنا أبوعبيدة بن الجراح ﵁، قال: قال: يا رسول الله، هل أحد خير منّا؟ أسلمنا معك، وجاهدنا معك، قال: نعم، قوم يكونون من بعدكم يؤمنون بي ولم يروني." رواه أحمد والدارمي والطبراني وقال الهيثمي: رجاله ثقات. وعن عبد الرّحمٰن بن العلاء الحضرميّ ﵁ قال: حدثني من سمع النّبي ﷺ يقول: "إنّه سيكون في آخر هذه الأمّة قوم لهم مثل أجر أولهم، يأمرون بالمعروف وينهون عن المنكر، ويقاتلون أهل الفتن." رواه

البيهقي في الدلائل والسيوطي في المفتاح.

وعن أبي هريرة ﷺ أن رسول الله ﷺ قال: ''مِن أشدّ أمّتي لي حبًّا، ناس يكونون بعدي، يودّ أحدهم لو رآني، بأهله وماله.'' رواه مسلم وأحمد.

وعنه ﷺ قال: قال رسول الله ﷺ: ''إنّ أناسًا من أمّتي يأتون بعدي يودّ أحدهم لو اشترى رؤيتي بأهله وماله.'' رواه الحاكم. وقال الحاكم: هذا حديث صحيح الإسناد. **وعن أنس ﷺ قال: قال رسول الله ﷺ: ''مثل أمّتي مثل المطر، لا يُدرى أوّله خير أم آخره.''** رواه الترمذي وحسّنه وأحمد والبزار وإسناده أحسن.

فَأَخْبَرَ الْعِبَادَ بِهِ ﷺ عَنْ جَمِيْعِ الْوَسَائِطِ وَالْوَسَائِلِ لِلْإِيْصَالِ وَالإِعْطَاءِ وَالتَّحَمُّلِ وَالْأَدَاءِ مِنَ الْمُنَاوَلَةِ وَالْمُكَاتَبَةِ وَالإِعْـلَامِ وَالْوَصِيَّةِ وَالْوِجَادَةِ. فأمّا المناولة مع الإجازة فلها إشارة في قوله تعالى: ﴿يٰيَحْيٰى خُذِ الْكِتٰبَ بِقُوَّةٍؕ وَاٰتَيْنٰهُ الْحُكْمَ صَبِيًّا﴾ [مريم، ١٩:١٢] **وقوله: ﴿وَلَا يَنَالُوْنَ مِنْ عَدُوٍّ نَّيْلاً اِلَّا كُتِبَ لَهُمْ بِهٖ عَمَلٌ صَالِحٌ اِنَّ اللّٰهَ لا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ٥ وَلَا يُنْفِقُوْنَ نَفَقَةً صَغِيْرَةً وَّلَا كَبِيْرَةً وَّلَا يَقْطَعُوْنَ وَادِيًا اِلَّا كُتِبَ لَهُمْ لِيَجْزِيَهُمُ اللّٰهُ اَحْسَنَ مَاكَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ٥ وَمَا كَانَ الْمُؤْمِنُوْنَ لِيَنْفِرُوْا كَآفَّةًؕ فَلَوْلَا نَفَرَ مِنْ كُلِّ فِرْقَةٍ مِّنْهُمْ طَآئِفَةٌ لِّيَتَفَقَّهُوْا فِى الدِّيْنِ وَلِيُنْذِرُوْا قَوْمَهُمْ اِذَا رَجَعُوْا اِلَيْهِمْ لَعَلَّهُمْ يَحْذَرُوْنَ ٥﴾** [التوبة، ٩:١٢٠-١٢٢].

فيشير الحديث النبويّ ﷺ في المناولة مع الإجازة الّذي روى ابن مسعود ﷺ عن رسول الله ﷺ: "كان الدِّين معلّقًا بالثريّا لتناوله ناس من أبناء فارس." رواه الطبراني وابن أبي شيبة. وعن أبي هريرة ﷺ قال: قال رسول الله ﷺ: "لو كان العلم بالثريا لتناوله ناس من أهل (أبناء) فارس." رواه أحمد وابن حبان. وقال الهيثمي: رواه أبويعلى والبزار والطبراني ورجالهم رجال الصحيح.

وعنه ﷺ عن النّبي ﷺ قال: "ويل للعرب من شرٍ قد اقترب، أفلح من كفّ يده، تقرّبوا يا بني فرّوخ إلى الله، فإنّ العرب قد أعرضت، ووالله، إنّ منكم لرجالاً لو كان العلم بالثريا لنالوه." رواه الطحاوي. وعنه ﷺ عن النّبي ﷺ قال: "اقتربوا يا بني فرُّوخ، إلى الذِّكر، والله، إنّ منكم لرجالاً لو أنّ العلم كان معلقًا بالثّريّا لتناولوه." رواه البيهقي. وعنه ﷺ عن النّبي ﷺ قال: "ادنوا يا معشر الموالي، إلى الذكر، فإن العرب قد أعرضت وإن الإيمان لو كان معلقًا بالعرش كان منكم من يطلبه." رواه أبونعيم في تاريخه.

والمناولة من غير الإجازة: بقوله تعالى: ﴿أُولَٰئِكَ يَنَالُهُمْ نَصِيبُهُمْ مِّنَ الْكِتَابِ﴾ [الأعراف، ٣٧:٧] وسنّ النّبي ﷺ المناولة لأمته حينما كتب لأمير السرية كتابًا وقال: لا تقرأه حتى تبلغ مكان كذا وكذا فلما بلغ ذالك المكان قرأه على الناس وأخبرهم بأمر النّبي ﷺ. رواه البخاري عن عبد الله بن عمر رضي الله عنهما.

فعلّمه الله تعالى بالمكاتبة بقوله تعالى: ﴿ذٰلِكَ الْكِتَابُ لَا رَيْبَ فِيْهِ هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَo﴾ [البقرة، ٢:٣]. وقوله: ﴿كَتَبَ اللهُ لَأَغْلِبَنَّ اَنَا وَرُسُلِيْ ط اِنَّ اللهَ قَوِيٌّ عَزِيْزٌ o﴾ [المجادلة، ٥٨:٢١]، وقوله: ﴿وَكَتَبْنَا لَهُ فِي الْاَلْوَاحِ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ مَّوْعِظَةً﴾ [الأعراف، ٧:٢١]، وقوله: ﴿وَلْيَكْتُبْ بَيْنَكُمْ كَاتِبٌ بِالْعَدْلِ وَلَا يَاْبَ كَاتِبٌ اَنْ يَّكْتُبَ كَمَا عَلَّمَهُ اللهُ o﴾ [البقرة، ٢:٢٨٢]، وقوله: ﴿اِذَا تَدَايَنْتُمْ بِدَيْنٍ اِلٰى اَجَلٍ مُّسَمًّى فَاكْتُبُوْهُ﴾ [البقرة، ٢:٢٨٢]، وقوله: ﴿فَمَنْ اُوْتِيَ كِتَابَهٗ بِيَمِيْنِهٖ فَاُولٰٓئِكَ يَقْرَءُوْنَ كِتَابَهُمْ﴾ [الإسراء، ١٧:٧١] وقوله: ﴿اِذْهَبْ بِّكِتٰبِيْ هٰذَا فَاَلْقِهْ اِلَيْهِمْ ثُمَّ تَوَلَّ عَنْهُمْ فَانْظُرْ مَاذَا يَرْجِعُوْنَ o﴾ [النمل، ٢٧:٢٨].

وسنّ النّبيّ ﷺ المكاتبة لأمّته حينما قال ﷺ: "اكتبوا لأبي شاهٍ." رواه البخاري ومسلم والترمذي عن أبي هريرة. وأمر ﷺ لرجل من الأنصار الّذي كان يسمع من النّبي ﷺ الحديث فيعجبه ولا يحفظه فقال له رسول الله ﷺ: "استعن بيمينك وأومأ بيده الخط." رواه الترمذي عن أبي هريرة وعن ابن عمر رضي الله عنهما قال: قلت: "يا رسول الله، إنّي أسمع منك الشيء أفأكتبه؟ قال: نعم. قال: وفي الغضب والرّضا؟ قال: نعم. فإنّي لا أقول فيهما إلا حقّاً." رواه أبوداود والحاكم وعن أبي هريرة ﷺ قال: "ليس أحدٌ من أصحاب النّبي ﷺ أكثر حديثًا عنه منّي إلا ما كان من عبد الله بن عمرو رضي الله عنهما فإنهّ كان يكتب ولا أكتب." رواه البخاري وعن أنسٍ ﷺ موقوفاً: "قيّدوا العلم بالكتاب." رواه الحاكم وعن رافع بن خديج ﷺ قال: قلت: يا رسول

الله ﷺ: إنّا نسمع منک أشياء أفأكتبها؟ قال: "اكتبوا ذالک ولا حرج." أسند الرامهرمزي بسنده في المحدث الفاضل وبعث رسول الله ﷺ بكتابه إلى كسرى مع عبد الله بن حذافة ﷺ السّهمي فأمره أن يدفعه إلى عظيم البحرين فدفعه عظيم البحرين إلى كسرى. رواه البخاري عن ابن عباس رضي الله عنهما.

وقال أبوسفيان: كتب النّبي ﷺ إلى هرقل: "تعالوا إلى كلمةٍ سوآءٍ بيننا وبينكم." رواه البخاري. وكان النّبيّ ﷺ يكتب إلى ولاته وقضاته وعماله بالأحكام ومن ذالک رسالته إلى قيصر الروم، وإلى أمير بصرى، وإلى الحارث بن أبي شمر أمير دمشق من قبل هرقل، وإلى المقوقس أمير مصر من قبل هرقل، يدعوهم إلى الإسلام كما وجّه كتبه إلى النّجاشي ملک الحبشة وإلى كسرى ملک الفارس وإلى المنذر بن ساوي ملک البحرين وأرسل كتبه ورسله إلى اليمن وعمان واليمامة وغيرها من الملوک والأمراء ورؤساء القبائل ليبيّن لهم الإسلام ويدعوهم إليه.

فعلّمه الله تعالى بالإعلام بقوله: ﴿فَاعْلَمْ اَنَّهٗ لَآ اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاسْتَغْفِرْ لِذَنْبِکَ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ط وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مُتَقَلَّبَكُمْ وَمَثْوٰكُمْ﴾ [محمد، ٤٧:١٩]، وقوله: ﴿فَاِنْ لَّمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَکَ فَاعْلَمْ اَنَّمَا يَتَّبِعُوْنَ اَهْوَآءَهُمْ ط﴾ [القصص، ٢٨:٥٠]، وقوله: ﴿وَاتَّقُوْا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ٥﴾ [البقرة، ٢:٢٠٣]، وقوله: ﴿مَا كُنْتَ

تَعۡلَمُهَا اَنۡتَ وَلَا قَوۡمُکَ مِنۡ قَبۡلِ هٰذَا﴾ [هود، ۱۱:۴۹]، وقوله: ﴿وَلَتَعۡلَمُنَّ نَبَاَهٗ بَعۡدَ حِیۡنٍ﴾ [ص، ۳۸:۸۸]، وقوله: ﴿وَيُعَلِّمُهُ الۡكِتٰبَ وَالۡحِكۡمَةَ وَالتَّوۡرٰىةَ وَالۡاِنۡجِيۡلَ﴾ [آل عمران، ۳:۴۸]، وقوله: ﴿اٰتَيۡنٰهُ رَحۡمَةً مِّنۡ عِنۡدِنَا وَ عَلَّمۡنٰهُ مِنۡ لَّدُنَّا عِلۡمًا﴾ [الكهف، ۱۸:۶۵] وقوله: ﴿قَالَتۡ مَنۡ اَنۡبَاَکَ هٰذَا قَالَ نَبَّاَنِیَ الۡعَلِيۡمُ الۡخَبِيۡرُ﴾ [تحريم، ۶۶:۳] وقوله: ﴿قُلۡ لَّا تَعۡتَذِرُوۡا لَنۡ نُّؤۡمِنَ لَكُمۡ قَدۡ نَبَّاَنَا اللّٰهُ مِنۡ اَخۡبَارِكُمۡ﴾ [التوبة، ۹:۹۴].

وعلّمه الله تعالى بالوصيّة بقوله: ﴿شَرَعَ لَكُمۡ مِّنَ الدِّيۡنِ مَا وَصّٰى بِهٖ نُوۡحًا وَّالَّذِیۡۤ اَوۡحَيۡنَاۤ اِلَيۡکَ﴾ [الشورى، ۴۲:۱۳] وقوله: ﴿وَلَقَدۡ وَصَّيۡنَا الَّذِيۡنَ اُوۡتُوا الۡكِتٰبَ مِنۡ قَبۡلِكُمۡ وَاِيَّاكُمۡ اَنِ اتَّقُوا اللّٰهَ﴾ [النساء، ۴:۱۳۱] وقوله: ﴿وَصَّيۡنَا بِهٖۤ اِبۡرٰهِيۡمَ وَمُوۡسٰى وَعِيۡسٰۤى اَنۡ اَقِيۡمُوا الدِّيۡنَ وَلَا تَتَفَرَّقُوۡا فِيۡهِ﴾ [الشورى، ۴۲:۱۳] فأمّا الوصية حين يحضر الموت فجعل إشارتها في قوله تعالى: ﴿وَ وَصّٰى بِهَاۤ اِبۡرٰهٖمُ بَنِيۡهِ وَيَعۡقُوۡبُ يٰبَنِىَّ اِنَّ اللّٰهَ اصۡطَفٰى لَكُمُ الدِّيۡنَ فَلَا تَمُوۡتُنَّ اِلَّا وَاَنۡتُمۡ مُّسۡلِمُوۡنَ اَمۡ كُنۡتُمۡ شُهَدَآءَ اِذۡ حَضَرَ يَعۡقُوۡبَ الۡمَوۡتُ اِذۡ قَالَ لِبَنِيۡهِ مَا تَعۡبُدُوۡنَ مِنۡۢ بَعۡدِىۡ قَالُوۡا نَعۡبُدُ اِلٰهَکَ وَاِلٰهَ اٰبَآئِکَ اِبۡرٰهِيۡمَ وَ اِسۡمٰعِيۡلَ وَاِسۡحٰقَ اِلٰهًا وَّاحِدًا وَّ نَحۡنُ لَهٗ مُسۡلِمُوۡنَ﴾ [البقرة، ۲:۱۳۲-۱۳۳] وقوله: ﴿كُتِبَ عَلَيۡكُمۡ اِذَا حَضَرَ اَحَدَكُمُ الۡمَوۡتُ اِنۡ تَرَکَ خَيۡرَا ۨالۡوَصِيَّةُ﴾ [البقرة، ۲:۱۸۰] وقوله: ﴿شَهَادَةُ بَيۡنِكُمۡ اِذَا حَضَرَ اَحَدَكُمُ الۡمَوۡتُ حِيۡنَ الۡوَصِيَّةِ اثۡنٰنِ ذَوَا عَدۡلٍ مِّنۡكُمۡ﴾ [المائدة، ۵:۱۰۶].

وسنّ النّبيّ ﷺ الوصيّة لأمّته ﷺ لتحمّل حديثه ﷺ وأدائه حينما وصّى لمعاذ بن جبل رضي الله عنه ولأبي موسى الأشعري رضي الله عنه عندما وجّههما إلى اليمن فقال عليه الصلاة والسلام: "يسِّرا ولا تعسِّرا وبشِّرا ولا تنفِّرا." رواه البخاري. كان ذالک في السّنة التاسعة للهجرة. وقال رسول الله ﷺ لمعاذ رضي الله عنه: "إنّک ستأتي قومًا من أهل كتاب، فادُعهم إلى شهادة أن لا إله إلّا الله وأنّي رسول الله، فإن هم أطاعوا لذالک فأعلمهم أنّ الله افترض عليهم خمس صلوٰت في كلّ يوم وليلة، فإن هم أطاعوا لذالک، فأعلمهم أنّ الله افترض عليهم صدقة تؤخذ من أغنيائهم فترُدّ في فقرائهم، فإن هم أطاعوا لذالک، فإيّاک وكرائم أموالهم، واتّق دعوة المظلوم فإنه ليس بينها وبين الله حجاب." رواه مسلم. وأقبلت وفود العرب من سائر أطراف الجزيرة يبايعون الرّسول ﷺ بعد فتح مكة وحجّة الوداع وكانت بعض الوفود تقيم عنده ﷺ أيامًا وكان رسول الله ﷺ يجعل لهم الوصيّة والنّصيحة ثم تعود إلى قبائلها تبلّغهم وصيّة النّبي المصطفى ﷺ وتعليمات الدين المجتبى. ومن هذه الوفود كان وفد ضمام بن ثعلبة، ووفد عبد القيس ووفود بني حنيفة وطيء وكِندة، ووفد رسول ملوک حمير فبعث إليهم النّبي ﷺ كتابًا يخبرهم عن الإسلام ويحثّهم على طاعة الله والرّسول والتّمسک بدِينه وفيه وصيّته ﷺ لهم برسله وبعوثه ويوصيهم الخير في الرعية وقدمت وفود همدان ووفود ثعلبة وبني سعد وغيرها كثيرة ووصّى بها رسول الله ﷺ قولاً وكتابة.

وأكرمه الله تعالى **بالوِجَادَةِ** بقوله: ﴿اَلَّذِيْنَ يَتَّبِعُوْنَ الرَّسُوْلَ النَّبِيَّ الْاُمِّيَّ الَّذِیْ يَجِدُوْنَهٗ مَكْتُوْبًا عِنْدَهُمْ فِی التَّوْرٰةِ وَ الْاِنْجِيْلِ﴾ [الأعراف، ٧:١٥٧] وقوله: ﴿مَا تُقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوْهُ عِنْدَ اللهِ هُوَ خَيْرًا وَاَعْظَمَ اَجْرًا﴾ [المزمل، ٧٣:٢٠] وقوله: ﴿لَعَلِّیْ اٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِقَبَسٍ اَوْ اَجِدُ عَلَی النَّارِ هُدًی﴾ [طٰه، ٢٠:١٠] وقوله: ﴿وَوَجَدُوْا مَا عَمِلُوْا حَاضِرًا وَلَا يُظْلِمُ رَبُّكَ اَحَدًا﴾ [الكهف، ١٨:٤٩] وقوله: ﴿قُلْ لَّآ اَجِدُ فِیْ مَآ اُوْحِیَ اِلَیَّ مُحَرَّمًا عَلٰی طَاعِمٍ يَّطْعَمُهٗٓ اِلَّآ اَنْ يَّكُوْنَ مَيْتَةً اَوْ دَمًا مَّسْفُوْحًا﴾ [الأنعام، ٦:١٤٥] وقوله: ﴿وَجَدَهَا تَغْرُبُ فِیْ عَيْنٍ حَمِئَةٍ وَّوَجَدَ عِنْدَهَا قَوْمًا﴾ [الكهف، ١٨:٨٦] وقوله: ﴿اِنِّیْ وَجَدْتُّ امْرَاَةً تَمْلِكُهُمْ وَاُوْتِيَتْ مِنْ كُلِّ شَیْءٍ﴾ [النمل، ٢٧:٢٣].

وسنّ النّبي ﷺ الوجادة لأمّته حينما قال رسول الله ﷺ لأصحابه: "أَيُّ الخلق أعجب إليكم إيمانًا؟ قالوا: الملائكة. قال: وما لهم لا يؤمنون وهم عند ربهم؟ قالوا: فالنّبيّون. قال: وما لهم لا يؤمنون والوحي ينزل عليهم، قالوا: فنحن. قال: ومالكم لا تؤمنون وأنا بين أظهركم؟ فقال رسول الله ﷺ: إنّ أعجب الخلق إليّ إيمانًا لقوم يكونون من بعدي يجدون صحفًا فيها كتاب يؤمنون بما فيها." رواه عمرو ابن شعيب عن أبيه عن جدّه عن النّبي ﷺ أخرجه أحمد والحاكم والبزّار والطبّراني. وفي رواية: "أولئک أعظم أجرًا منكم." وفي رواية: "فهؤلاء أفضل أهل الإيمان إيمانًا."

وشرّفه بأعلى الطّرق حين عرج به ﷺ من المكان النّازل إلى المقام العالي حتّى ظهر لمستوى يسمع فيه صرير الأقلام. رواه البخاري ومسلم عن طريق ابن شهاب الزّهري عن ابن عباس رضي الله عنهما. ورفعه إليه حتّى راه وفاز من اللّقاء والسّماع بالأماني والأمالي فرجع محدثًا لأمته بما أخذه في رحلته عن العليم الخبير في العاجل والآجل وجعل الله أخبار إسرآئه ومعراجه ﷺ متواترة مشهورة وآثار دنوّه ودلوه عزيزة مستفيضة وأحوال لقائه ورؤيته غريبة وحيدة لأنه تعالى دنا وقَرُب من حبيبه الأولى ﷺ فتدلّى على المقام الأجلى وزاد في قرب الإبانة والكرام لعظيم منزلته ولتشريف رتبته وإشراق أنوار معرفته ومشاهدة أسرار غيبه وقدرته من الله تعالى له مبرّة وتأنيسًا وبسطًا وإكرامًا وفضلًا وإنعامًا: ﴿فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ أَوْ أَدْنَىٰ﴾ [النجم، ٥٣:٩] حتّى فارقه جبريل وانقطعت عنه الأصوات وسمع كلام ربّه ﷻ وهو يقول: "ليهدأ روعک يا محمد، اُدْنُ، اُدْنُ." رواه ابن أبي حاتم وابن جرير. وعن أنس رضي الله عنه: "ودنا الجبّار ربّ العزّة فتدلّى حتّى كان منه قاب قوسين أو أدنى." رواه البخاري في الصحيح عن طريق مسلم بن إبراهيم عن هشام عن قتادة عن أنس. ومكّنه ﷺ من المقام الأعلى، حيث انعدم هناک الحال والمقام، ولم تبق هناک النفوس والقلوب والعقول والأوهام، وفنيت جميع الظّلم والأنوار وذهب الفوق والتحت، والجنة والنار، وعدم كل قاب ورفرف، ولم يبق جناح ولا ملک أشرف، واتحد هناک السؤال والجواب، وزال

المكتوب والكتاب، والحضور والغياب، وصار المجيب هو المجاب: ﴿فَأَوْحٰى اِلٰى عَبْدِهٖ مَا أَوْحٰى﴾ [النجم، ١٠:٥٣] فكلّم الربّ عبده ﷺ بلا واسطة حين شرّفه بروئيته بلاحجاب كما قال تعالى: ﴿وَمَاكَانَ لِبَشَرٍ أَنْ يُّكَلِّمَهُ اللهُ اِلَّا وَحْيًا اَوْ مِنْ وَّرَآئِ حِجَابٍ اَوْ يُرْسِلَ رَسُوْلًا فَيُوْحِيَ بِاِذْنِهٖ مَا يَشَاءُ﴾ [الشورى، ٥١:٤٢].

ذكر ﷻ ثلاثة أقسامٍ من كلامه، فالأوّل: من وراء حجاب، هٰذا كتكليم موسى ؑ، والثاني: بإرسال الملائكة رسلا، هذا كحال جميع الأنبياء وأكثر أحوال نبيّنا ﷺ. والثالث: قوله: وحيًا فلم يبق من صور الكلام إلّا المشافهة مع المشاهدة فهذا كحال النّبي المصطفى ﷺ ليلة الإسراء والمعراج كما روى ابن عبّاس رضي الله عنهما: ''إنّه ﷺ رآه بعينه.'' أخرجه أحمد بإسنادٍ صحيحٍ. وأيّده تفسير الآية: ﴿وَمَا جعَلْنَا الرُّؤْيَا الَّتِيْٓ اَرَيْنٰكَ اِلَّا فِتْنَةً لِّلنَّاسِ﴾ [الإسراء، ٦٠:١٧] الّذي أخرجه البخاري في الصحيح عن ابن عبّاسٍ رضي الله عنهما قال: ''هي رؤيا عين أُرِيها رسول الله ﷺ ليلة أسري به.'' ورُوي ذالك عنه من طرقٍ وقال: ''إنّ الله تعالى اختصّ موسى ؑ بالكلام وإبراهيم ؑ بالخلّة ومحمّدًا ﷺ بالرّؤية.'' أخرجه النّسائي وابن أبي عاصم في السّنّة وابن خزيمة في التّوحيد والطبراني في الأوسط وصحّحه الحاكم ووافقه الذّهبي.

وروى الترمذي عن الشعبي قال لقي ابن عباس رضي الله عنهما

كعباً بعرفة فسأله عن شيءٍ فكبّر حتى جاوبته الجبال فقال ابن عباسٍ رضي الله عنهما: إنّا بنو هاشم، فقال كعبٌ ﷺ: "إنّ الله قسّم رؤيته وكلامه بين محمّد وموسى، فكلّم موسى مرّتين ورآه محمّدٌ ﷺ مرّتين." وروى الترمذي عن عكرمة عن ابن عبّاس رضي الله عنهما بإسناد حسن، قال: "رأى محمدٌ ﷺ ربّه، قلت: أليس الله يقول: ﴿لَا تُدْرِكُهُ الْأَبْصَارُ وَهُوَ يُدْرِكُ الْأَبْصَارَ﴾ [الأنعام، ٦:١٠٣] قال: ويحك! ذاك إذا تجلّى بنوره الّذي هو نوره، وقد رأى محمّدٌ ﷺ ربّه مرّتين." وقال ابن عبّاس رضي الله عنهما: "قد رآه النّبي ﷺ." وقال الترمذي: هذا حديثٌ حسنٌ. وروى في قوله: ﴿مَا كَذَبَ الْفُؤَادُ مَا رَأَى ٥﴾ [النجم، ٥٣:١١] قال ابن عبّاس رضي الله عنهما: "رآه بقلبهِ." وقال الترمذيُّ: هذا حديثٌ حسنٌ. وروى أيضاً عنه ﷺ في قول الله: ﴿وَلَقَدْ رَآهُ نَزْلَةً أُخْرَى ٥ عِنْدَ سِدْرَةِ الْمُنْتَهَى ٥﴾ [النجم، ٥٣:١٣-١٤].

وروى مسلم عن عبد الله بن شفيق ﷺ قال: قلت لأبي ذرٍ ﷺ: "لو رأيتُ رسول الله ﷺ لسألته، فقال: عن أيّ شيءٍ كنت تسأله؟ قال: كنتُ أسأله هل رأيتَ ربّك؟ فقال أبو ذرٍ ﷺ: قد سألته فقال: رأيتُ نورًا." وروى الترمذي ولفظه: "نورٌ أنّي أراه." وقال: هذا حديثٌ حسنٌ، وروى أحمد في المسند قال: حدّثنا عفّان حدّثنا همّام حدّثنا قتادة عن عبد الله بن شقيق ﷺ قال: قلت لأبي ذرّ ﷺ: "لو رأيتُ رسول الله ﷺ لسألته قال: وماكنتَ تسأله قال: كنت أسأله هل رأى ربّه ﷻ قال: فإني قد سألته فقال: قد رأيته نورًا أنّي أراه. قال عفّان:

بلغني عن ابن هشام يعني معاذًا أنه رواه عن أبيه كما قال همّام: قد رأيته.''

وروى أحمد أيضًا في المسند قال: حدّثنا وكيع وبَهْزٌ قالا: حدّثنا يزيد بن إبراهيم، عن قتادة قال بهز: حدّثنا قتادة: عن عبد الله بن شقيق رضي الله عنه قال: قلت لأبي ذرّ رضي الله عنه: ''لو أدركتُ رسول الله ﷺ لسألته قال: عن أي شيء؟ قلت: هل رأيتَ ربّك فقال: قد سألته فقال: ''نورٌ أنّى أراه يعني على طريق الإيجاب.''

وأخرج مسلم في الصحيح عن عطاء التّابعي رضي الله عنه مثله، وعن أبي العالية التابعي رضي الله عنه وقال: ''رآه بفؤاده مرّتين.'' روى ابن أبي حاتم عن محمّد بن كعب القرظي وربيع بن أنس رضي الله عنه أنّ النّبي ﷺ سُئل هل رأيتَ ربّك؟ قال: ''رأيته بفؤادي.'' وروى عبد الرزاق رضي الله عنه عن الحسن البصري التابعي رضي الله عنه ''أنّه كان يحلف بالله لقد رأى محمّدٌ ﷺ ربّه.'' وروى ابن إسحاق رضي الله عنه عن مروان بن الحكم أنّه سأل أبا هريرة رضي الله عنه: ''هل رأى محمّدٌ ﷺ ربّه؟ فقال: نعم.'' وحكى النّقاش عن أحمد بن حنبل رضي الله عنه أنّه قال: ''أنا أقول بحديث ابن عبّاس رضي الله عنهما بعينه رآه حتىّ انقطع نفسه يعني نفس أحمد.'' وروى أبو عمر أحمد بن حنبل رضي الله عنه مثله وروى عبد الله بن أحمد بن حنبل رضي الله عنه عن أبيه مثله. قال مثله معاذ بن جبل رضي الله عنه وابن عمر وعكرمة التابعي والإمام جعفر بن محمّد الصادق رضي الله عنه وقال أبو الحسن على بن إسماعيل الأشعري رضي الله عنه وجماعة من أصحابه: ''أنّه رأى الله تعالى ببصره وعيني رأسه وهكذا بقلبه وبفؤاده.''

ففهم من وحيه صريح المعنى ﴿مَا كَذَبَ الْفُؤَادُ مَا رَاٰى﴾ [النجم، ٥٣:١١] من حقائق القرب والوصل بين العبدية والأحدية، والفصل بين الحدثية والقَدمية، ﴿وَلَقَدْ رَاٰهُ نَزْلَةً اُخْرٰىo﴾ [النجم، ٥٣:١٣] وما شغلته ملاحظة الملأ الأعلى، ﴿عِنْدَ سِدْرَةِ الْمُنْتَهٰىo﴾ [النجم، ٥٣:١٤] حيث تجتمع البداية والانتها ويكون الأزل والوقت والأبد سواء، ﴿عِنْدَهَا جَنَّةُ الْمَاْوٰى o﴾ [النجم، ٥٣:١٥] مستقر الواصلين الأحياء إذ شاهدوا جنة الذات وأنهار الصفات عن الورى، ﴿اِذْ يَغْشَى السِّدْرَةَ مَا يَغْشٰىo﴾ [النجم، ٥٣:١٦] من طرف الأسرار والأنوار في العُلٰى، ﴿مَا زَاغَ الْبَصَرُ وَمَا طَغٰىo﴾ [النجم، ٥٣:١٧] وكيف يزيغ من القدم إلى العدم الذي لا يُرى.

إنّ الله أمرنا أن نحمد على مُرسَل آلائه ومرفوعها، ونشكر على مسلسل نعمائه وموصولها، بصحيح الحديث، وحسن الخبر، وقوي الأثر ما بين مؤتلف الفضل ومتّفقه ومختلف العدل ومفترقه، وشرّفه بأقوى سندٍ يتّصل به لأنّه هو الطّريق الموصلة إلى الغاية وهو الّذي يلجأ إليه ويُستند به ويُعتمد عليه وأنعمه بأعلى متن يُهتدى به لأنّه يخبر عن قول النّبي ﷺ وفعله ووصف النّبي ﷺ وتقريره ويراد بها السنن عند أهل الفن وأُرسل إلى الخلق كافة بشيرًا ونذيرًا، وأزال عنهم بصحة التوحيد عِلَل الشّرك والفسق والكذب والضلال، وشرح الدين الصحيح بعُلّو العدالة وتمام الضبط في كل مقالٍ، وحفظه عن الشذوذ في كل مجالٍ وبلّغه بالسّـلامة عن العلّة والطعن

وسوء الحال، وشرّف سندنا من أوله إلى منتهاه بالاتّصال ومن أطاعه ﷺ فقد أطاع الله، ومن عصاه ﷺ فقد عصى الله، لأنّه ﷺ فرّق بين الحقّ والباطل، والمقبول والمردود، وقسّم الأعمال والأحوال بين الصحيح والحسن والضعيف، وجعل الله ذكره ﷺ مَرْفُوْعًا له وحُبّه ﷺ مُسنَدًا إليه، وحكمه ﷺ مُتّصلا به، وجعل قبول العمل مَوْقُوْفًا على اتّباعه ﷺ، وقرّر كمال الإيمان مَقْطُوْعًا إلى ما جاء به ﷺ غير كونه منقطعًا ولا مُعْضلاً لا مُرسلًا، ومن قطع اتّصاله به ﷺ أو إسناده إليه ﷺ صار مُعَلَّقًا، ومَنْ بدّل هديه ﷺ صار مَقْلُوْبًا، ومن اختلف على الأوجه والتفرفة بغير الترجيح والجمع صار مُضْطَرِبًا، ومن دخلت علّةٌ قادحةٌ في صحة باطنه مع سلامة ظاهره صار مُعَلَّـلا، ومن تبع ثقةً وخالف من كان أوثق منه بغير الجمع صار شَاذًا، ومن خلط ظلام الترک والخفاء بنور الذكر والجلاء صار مُدَلِّسًا، ومن أخذ عن مُرشده إلى الطريق ولم يسمّ صار مُبْهَمًا، ومن أدخل على كلامه من كلام الغير كلمةً زائدةً صار مُدْرِجًا ومن أخذ عن مَثِيْله وقرينه الّذي تساوى به في السِّنِ والسند صار مُدَبَّجًا، ومن سقط بسبب الضّعف وانحطّ في بُؤرة الوضع صار مَطْرُوْحًا، ومن غيّر الحديث إعرابًا أو حروفًا صار مُحَرِّفًا، ومن حوّل الكلمة شَكْـلا بتغيير النقط صار مُصَحِّفًا، ومن أطاع واحدًا متّهمًا بالكذب صار مَتْرُوْكًا، ولو خالف الضعيف معروفًا الّذي هو أولى وأوثق منه صار مُنْكِرًا ومن صنع واختلق وكذب وافترى عليه صار وَضَّاعًا، فهو شرّ

الضعاف خطرًا وأشدّها ضررًا.

فاعلموا أنّ الله تعالى قسّم الأمّة المحمّدية الّتي أورثها الكتاب واصطفاها إلى ثلاثة أصنافٍ: فمنهم نَاقِصٌ، ومنهم مُتَوَسِّطٌ، ومنهم كَامِلٌ، فالناقص: هو ظالمٌ لنفسه، والمتوسط: هو مقتصدٌ، والكامل: هو سابقٌ بالخيرات وقال الله في كتابه: ﴿ثُمَّ اَوْرَثْنَا الْكِتٰبَ الَّذِيْنَ اصْطَفَيْنَا مِنْ عِبَادِنَاۚ فَمِنْهُمْ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖۚ وَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌۚ وَمِنْهُمْ سَابِقٌ بِالْخَيْرَاتِ بِإِذْنِ اللهِؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيْرُo جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا يُحَلَّوْنَ فِيْهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّلُؤْلُؤًاۚ وَلِبَاسُهُمْ فِيْهَا حَرِيْرٌo وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ أَذْهَبَ عَنَّا الْحَزَنَؕ اِنَّ رَبَّنَا لَغَفُوْرٌ شَكُوْرُo ۙالَّذِىْ اَحَلَّنَا دَارَ الْمُقَامَةِ مِنْ فَضْلِهٖۚ لَا يَمَسُّنَا فِيْهَا نَصَبٌ وَّلَا يَمَسُّنَا فِيْهَا لُغُوْبٌo﴾ [فاطر، ٣٥:٣٢-٣٥] فالظالم لنفسه هو الضعيف، والمقتصد هو الحسن، والسابق بالخيرات هو الصحيح. وكلٌ واحدٍ مِن هؤلاء الثلاثة ورث الكتاب، ودخل في العباد المُصْطفَين واستحقّ نعمة القبول للجنّة، ويعطى مِن أساوِرَ مِنْ ذَهَبٍ ولؤلؤ وحَرِيْرٍ، كما ورد عن الرؤوف الرحيم العليم الخبير. وهذه الثلاثة تمثّل الدرجات الثلاث المذكورة في حديث جبريل عليه السلام: الإسلام والإيمان والإحسان.

عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رضي الله عنه، قَالَ: بَيْنَمَا نَحْنُ عِنْدَ رَسُوْلِ اللهِ صلى الله عليه وآله وسلم ذَاتَ يَوْمٍ إِذْ طَلَعَ عَلَيْنَا رَجُلٌ شَدِيْدُ بَيَاضِ الثِّيَابِ، شَدِيْدُ

سَوَادِ الشَّعْرِ، لَا يُرَى عَلَيْهِ أَثَرُ السَّفَرِ، وَلَا يَعْرِفُهُ مِنَّا أَحَدٌ، حَتَّى جَلَسَ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ، فَأَسْنَدَ رُكْبَتَيْهِ إِلَى رُكْبَتَيْهِ، وَوَضَعَ كَفَّيْهِ عَلَى فَخِذَيْهِ، وَقَالَ: يَا مُحَمَّدُ، أَخْبِرْنِي عَنِ الإِسْلَامِ، فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: الإِسْلَامُ أَنْ تَشْهَدَ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ، وَأَنَّ مُحَمَّدًا رَسُوْلُ اللهِ وَتُقِيمَ الصَّلَاةَ، وَتُؤْتِيَ الزَّكَاةَ، وَ تَصُوْمَ رَمَضَانَ، وَتَحُجَّ الْبَيْتَ إِنِ اسْتَطَعْتَ إِلَيْهِ سَبِيْلاً. قَالَ: صَدَقْتَ. قَالَ: فَعَجِبْنَا لَهُ يَسْأَلُهُ وَيُصَدِّقُهُ! قَالَ: فَأَخْبِرْنِي عَنِ الإِيْمَانِ. قَالَ: أَنْ تُؤْمِنَ بِاللهِ، وَمَلَائِكَتِهِ، وَكُتُبِهِ، وَرُسُلِهِ، وَالْيَوْمِ الآخِرِ، وَتُؤْمِنَ بِالْقَدَرِ خَيْرِهِ وَشَرِّهِ. قَالَ: صَدَقْتَ. قَالَ: فَأَخْبِرْنِي عَنِ الإِحْسَانِ. قَالَ: أَنْ تَعْبُدَ اللهَ كَأَنَّكَ تَرَاهُ، فَإِنْ لَمْ تَكُنْ تَرَاهُ فَإِنَّهُ يَرَاكَ. قَالَ: فَأَخْبِرْنِي عَنِ السَّاعَةِ قَالَ: مَا الْمَسْئُوْلُ عَنْهَا بِأَعْلَمَ مِنَ السَّائِلِ. قَالَ: فَأَخْبِرْنِي عَنْ أَمَارَتِهَا؟ قَالَ: أَنْ تَلِدَ الْأَمَةُ رَبَّتَهَا، وَأَنْ تَرَى الْحُفَاةَ الْعُرَاةَ الْعَالَةَ رِعَاءَ الشَّاءِ يَتَطَاوَلُوْنَ فِي الْبُنْيَانِ. ثُمَّ انْطَلَقَ، فَلَبِثْتُ مَلِيّاً، ثُمَّ قَالَ: يَا عُمَرُ أَتَدْرِي مَنِ السَّائِلُ؟ قُلْتُ: اَللهُ وَرَسُوْلُهُ أَعْلَمُ. قَالَ: فَإِنَّهُ جِبْرِيْلُ أَتَاكُمْ يُعَلِّمُكُمْ دِيْنَكُمْ. متفق عليه وهذا لفظ مسلم.

وقال الله تعالى عن الإسلام: ﴿قَالَتِ الْأَعْرَابُ آمَنَّا ط قُلْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا وَلَكِنْ قُوْلُوْٓا اَسْلَمْنَا وَلَمَّا يَدْخُلِ الْاِيْمَانُ فِيْ قُلُوْبِكُمْ ط وَاِنْ تُطِيْعُوا اللهَ وَرَسُوْلَهٗ لَا يَلِتْكُمْ مِّنْ اَعْمَالِكُمْ شَيْئًا ط اِنَّ اللهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ٥﴾ [الحجرات، ٤٩:١٤] فميّز الله تعالى المسلمين من المنافقين تمييزًا صريحًا بقوله: ﴿اِنَّ الْمُنَافِقِيْنَ فِى الدَّرْكِ الْاَسْفَلِ مِنَ النَّارِ ج وَلَنْ تَجِدَ لَهُمْ نَصِيْرًا ٥ اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا وَ اَصْلَحُوْا وَاعْتَصَمُوْا بِاللهِ وَ اَخْلَصُوْا

دِيْنَهُمْ لِلّٰهِ فَأُولٰٓئِكَ مَعَ الْمُؤْمِنِيْنَ ط وَ سَوْفَ يُؤْتِ اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ اَجْرًا عَظِيْمًا o﴾ [النساء، ٤:١٤٥-١٤٦] فإن الناس قبل الهجرة لم يكونوا إلا مؤمنًا أو كافرًا، فلم يكن هناك منافقٌ، فإنّ المسلمين كانوا مستضعفين، فكان من آمن، آمن باطنًا وظاهرًا، ومن لم يؤمن كان كافرًا، فبعد الهجرة إلى المدينة صار للمسلمين عزٌّ ونصرٌ وعلوٌّ وولايةٌ فدخل كثير من أهلها في الإسلام موافقة، أو رغبة ورهبة، فمن دخل في الإسلام موافقة ومتابعة كان مسلمًا ومن دخل في الإسلام ظاهرًا متربصًا وهو في الباطن كافرٌ كان منافقاً، ومن دخل في الإسلام مطمئناً مخلصاً متيقناً كان مؤمناً.

فجعل للمنافقين الدرك الأسفل فهي درجة مردودة. هذا مثل الإسناد الموضوع، فوصف المسلمين بالتوبة والإصلاح والاعتصام، والإخلاص وأخرجهم من الدرك الأسفل المردود. هذا مثل الإسناد الضعيف، وشرّفهم بمعيّة المؤمنين الذين لهم أجرٌ عظيمٌ، وتنزل عليهم السّكينة: ﴿لِيَزْدَادُوْا إِيْمَانًا مَّعَ إِيْمَانِهِمْ﴾ [الفتح، ٤٨:٤] ويمشون معهم ﴿نُوْرُهُمْ، يَسْعٰى بَيْنَ أَيْدِيْهِمْ وَ بِأَيْمَانِهِمْ﴾ [التحريم، ٦٦:٨] لن يستطيع المنافقون أن يقتبسوا من نورهم بل يقال لهم: ﴿ارْجِعُوْا وَرَآئَكُمْ فَالْتَمِسُوْا نُوْرًا ط فَضُرِبَ بَيْنَهُمْ بِسُوْرٍ لَّهٗ بَابٌ ط بَاطِنُهٗ فِيْهِ الرَّحْمَةُ وَ ظَاهِرُهٗ مِنْ قِبَلِهِ الْعَذَابُ o﴾ [الحديد، ٥٧:١٢-١٥] فإنّ المنافقين مثلهم مثل الإسناد الموضوع المردود، له الدرك الأسفل، وليس له القبول قطعاً، هذا الّذي لبث في النّار أحقابًا لا يذوق فيها

بردًا ولا شرابًا إسمه مرقوم في كتٰبِ الفجّار لفي سِجّين فويلٌ للكاذبين الوضّاعين المكذّبين والمسلمون مثلهم مثل الإسناد الضعيف، الذي تعطي له المغفرة والقبول في الطّرف الأدنى، وليس له الدخول في مساكن الفردوس الأعلى، فإنه يأكل من فواكه الجنّة وجعل الله شربه شراباً طهورًا، ولم يكن قبل الشفاعة شيئا مذكورًا: ﴿فَوَقٰـهَمُ اللّٰهُ شَرَّ ذَالِکَ الْيَوْمِ وَلَقّٰهُمْ نَضْرَةً وَّسُرُوْرًا o﴾ [الدهر، ١١:٧٦] المؤمنون مثلهم مثل الإسناد الحسن. هو من ﴿إِنَّ الْاَبْرَارَ يَشْرَبُوْنَ مِنْ كَاْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُوْرًاo عَيْنًا يَّشْرَبُ بِهَا عِبَادُ اللّٰهِ يُفَجِّرُوْنَهَا تَفْجِيْرًاo﴾ [الدهر، ٧٦:٥-٦] وهذا الذي اقتبس الحُسْنَ من غيره، والذين صاروا من الحسن لذاته فإنهم: ﴿وَيُسْقَوْنَ فِيْهَا كَأْسًا كَانَ مِزَاجُهَا زَنْجَبِيْلًاo عَيْنًا فِيْهَا تُسَمّٰى سَلْسَبِيْلًاo وَ يَطُوْفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ ج إِذَا رَأَيْتَهُمْ حَسِبْتَهُمْ لُؤْلُؤًا مَّنْثُوْرًا o﴾ [الدهر، ٧٦:١٧-١٩] فلا بُدّ للمسلمين أن ينتفعوا من معية الصالحين ودعواتهم واستغفارهم وشفاعتهم كما قال الله تعالى: ﴿اَلَّذِيْنَ يَحْمِلُوْنَ الْعَرْشَ وَمَنْ حَوْلَهٗ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَ يَسْتَغْفِرُوْنَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ج رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ رَّحْمَةً وَّعِلْمًا فَاغْفِرْ لِلَّذِيْنَ تَابُوْا وَ اتَّبَعُوْا سَبِيْلَکَ وَ قِهِمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِo رَبَّنَا وَاَدْخِلْهُمْ جَنّٰتِ عَدْنِ نِ الَّتِيْ وَعَدْتَّهُمْ وَمَنْ صَلَحَ مِنْ اٰبَآئِهِمْ وَ اَزْوَاجِهِمْ وَ ذُرِّيّٰتِهِمْ ط اِنَّکَ اَنْتَ

الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ o وَقِهِمُ السَّيِّاٰتِ ط وَمَنْ تَقِ السَّيِّاٰتِ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمْتَهُ ط وَذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ o﴾ [المؤمن، ٤٠:٧-٩] وقال الله تعالى: ﴿اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِينَ اٰمَنُوْا بِاللهِ وَرَسُوْلِهٖ ثُمَّ لَمْ يَرْتَابُوْا وَجٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ ط اُولٰئِکَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ o﴾ [الحجرات، ٤٩:١٥] وقال: ﴿اُولٰئِکَ کَتَبَ فِيْ قُلُوْبِهِمُ الْاِيْمَانَ وَاَيَّدَهُمْ بِرُوْحٍ مِّنْهُ﴾ [المجادلة، ٥٨:٢٢]. فالمؤمن صادقٌ مصدوقٌ مؤيّدٌ ومؤيَّدٌ فيزيد الله إيمانه بأعماله الصّالحة ويزيد إيمان عامّة المسلمين ويؤيّدهم ببركاته المؤثرة الشائعة. كما قال الله تعالى: ﴿وَإِذَا مَآ أُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ فَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ أَيُّكُمْ زَادَتْهُ هٰذِهٖٓ إِيْمَانًا فَأَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فَزَادَتْهُمْ إِيْمَانًا وَّ هُمْ يَسْتَبْشِرُوْنَ o﴾ [التوبة، ٩:١٢٤] وقال الله تعالي: ﴿هُوَ الَّذِي أَنْزَلَ السَّكِينَةَ فِي قُلُوْبِ الْمُؤْمِنِيْنَ لِيَزْدَادُوْا إِيْمَانًا مَّعَ إِيْمَانِهِمْ﴾ [الفتح، ٤٨:٤] وقال الله تعالي: ﴿وَالَّذِيْنَ اهْتَدَوْا زَادَهُمْ هُدًى وَآتَاهُمْ تَقْوَاهُمْ﴾ [محمد، ٤٧:١٧] وقال الله تعالي: ﴿اِنَّهُمْ فِتْيَةٌ اٰمَنُوْا بِرَبِّهِمْ وَزِدْنٰهُمْ هُدًى o وَّرَبَطْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ﴾ [الكهف، ١٨:١٣-١٤] وقال الله تعالي: ﴿إِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ إِذَا ذُكِرَ اللهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَإِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمْ اٰيٰتُهٗ زَادَتْهُمْ إِيْمَانًا وَّعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ o﴾ [الأنفال، ٨:٢] وقال الله تعالي: ﴿لِيَسْتَيْقِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ وَ يَزْدَادَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْآ اِيْمَانًا﴾ [المدثر، ٧٤:٣١] وقال الله تعالي: ﴿اَلَّذِيْنَ قَالَ لَهُمُ النَّاسُ اِنَّ النَّاسَ قَدْ جَمَعُوْا لَكُمْ فَاخْشَوْهُمْ فَزَادَهُمْ إِيْمَانًا وَّقَالُوْا حَسْبُنَا اللهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ o﴾ [آل عمران، ٣:١٧٣] وصَحَّ عَنْ رَسُوْلِ

اللهِ ﷺ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: لَيَدْخُلَنَّ الْجَنَّةَ مِنْ أُمَّتِي سَبْعُونَ أَلْفًا، أَوْسَبْعُ مِائَةِ أَلْفٍ (لَا يَدْرِي أَبُوْحَازِمٍ أَيُّهُمَا قَالَ): مُتَمَاسِكُونَ آخِذٌ بَعْضُهُمْ بَعْضًا، لَا يَدْخُلُ أَوَّلُهُمْ حَتَّى يَدْخُلَ آخِرُهُمْ، وُجُوْهُهُمْ عَلَى صُورَةِ الْقَمَرِ لَيْلَةَ الْبَدْرِ. متفق عليه. وَعَنْ أَبِي سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَا مُجَادَلَةُ أَحَدِكُمْ فِي الْحَقِّ يَكُوْنُ لَهُ فِي الدُّنْيَا بِأَشَدَّ مُجَادَلَةً مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ لِرَبِّهِمْ فِي إِخْوَانِهِمُ الَّذِيْنَ أُدْخِلُوا النَّارَ قَالَ: يَقُوْلُوْنَ: رَبَّنَا إِخْوَانُنَا كَانُوْا يُصَلُّوْنَ مَعَنَا وَيَصُوْمُوْنَ مَعَنَا وَيَحُجُّوْنَ مَعَنَا فَأَدْخَلْتَهُمُ النَّارَ قَالَ: فَيَقُوْلُ: اذْهَبُوْا فَأَخْرِجُوْا مَنْ عَرَفْتُمْ مِنْهُمْ. رواه البخاري.

هناك الصّراحة بالآيات القرآنية، والأحاديث الصحيحة، والدلالة والاقتضاء القطعي فيها بأن الإيمان والإيقان يزيدان، وكذا الهداية والمعرفة تزيدان بمدد الأمور المباركة المفضّلة، ولهذا صار الحديث الحسن مؤيَّدًا بالخيرات والبركات، ويصير ناصرًا و مؤيّدًا أيضًا للضّعاف في الحسنات والمبرات. فأما المحسن فهو في المرتبة الرابعة الأعلى، فقال الله تعالى فيه: ﴿وَمَنْ اَحْسَنُ دِيْنًا مِّمَّنْ اَسْلَمَ وَجْهَهٗ لِلّٰهِ وَ هُوَ مُحْسِنٌ وَّ اتَّبَعَ مِلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ؕ وَاتَّخَذَ اللّٰهُ اِبْرٰهِيْمَ خَلِيْلًا۰﴾ [النساء، ٤:١٢٥] وقال: ﴿بَلٰى مَنْ اَسْلَمَ وَجْهَهٗ لِلّٰهِ وَ هُوَ مُحْسِنٌ فَلَهٗ اَجْرُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ۰﴾ [البقرة، ٢:١١٢] وفي قوله "وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ" إشارةٌ إلى أن ليس لهم الخوف على نفوسهم أن لا يقبلوا ولا يصلوا الجنّة نعيمًا. وفي قوله

"وَلَاهُمْ يَحْزَنُوْنَ" إشارةٌ إلى أن ليس لهم الحزن في أزواجهم وأحبابهم وأتباعهم وذرّيّاتهم لو تبعوهم في الإيمان أن يُرَدّوْا ويُلْقَوا في النّار تعذيبًا. وقال الله تعالى: ﴿إِنَّ رَحْمَتَ اللهِ قَرِيْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِيْنَ٥﴾ [الأعراف، ٧:٥٦] وقال: ﴿وَ اَحْسِنُوْا اِنَّ اللهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ٥﴾ [البقرة، ٢:١٩٥] فهذا معلوم أنّ الإحسان لا يوجد ولا يتحقق إلا بالسخاء والنصرة والعطاء للغير، وإذ اختار العباد المحسنون عمل الإحسان لم يفعلوا إلّا الإيثار للضعفاء، والإمداد للمساكين، والاستغفار للمذنبين، وإذا اختار الله ﷻ جزاء الإحسان لن يفعل إلّا بقبول شفاعة المحسنين المسندين في حق الخطّائين المنتسبين إليهم، وبمعونتهم وبمغفرتهم، لأن نفوسهم كانت راضيةً، وجعلها الله مرضيةً، كي تفرح وترضى في أعوانهم وأنصارهم ومحبيهم ومتبعيهم فهل جزاء الإحسان إلّا الإحسان ولا بدّ أن يكون إحسان الله العظيم المعين أوسع من إحسان العبد المستعين، فأما المحسنون فهم أهل الإسناد الصحيح. فإنهم يشربون من تسنيم: ﴿يُسْقَوْنَ مِنْ رَّحِيْقٍ مَّخْتُوْمٍ٥ خِتَامُهٗ مِسْكٌ ؕ وَفِيْ ذٰلِكَ فَلْيَتَنَافَسِ الْمُتَنَافِسُوْنَ٥﴾ [المطففين، ٨٣:٢٥-٢٦] فإن المحسن إيمانه بعيدٌ عن رجم الظّنون، ونظيفٌ كأمثال اللؤلؤ المكنون، ومعصوم من الخوف والحزن والرّيب، ومحفوظٌ من التّهمة والوهم والعيب، والمؤمن أي صاحب الإسناد الحسن هو ممنوع من الدّنس والدَّرَنِ، ولا يُوْصَفُ بكسل ولا أرن، نقيّ العرض والذّات، ومأمون عن الكبائر وخبائث

الشّهوات، يبصر حسنه بالعين، لا يلفظ بلسان ولا شفتين، فأمّا المسلم وهو صاحب الإسناد الضّعيف، فتَنْقُصُ صحته بالعلّة، أمّا الشديد أو الخفيف فإنّه يقبل ويترقى من مرتبة الضعف إلى مرتبة العمل به، بالانتشار عند الثقات والانضمام بالمتابعات الطيبات، فإنّه يقبل بشفاعة الصحاح للكاملين والحسان المتقين، ويعتضد بتقوية الصالحين المحفوظين الثابتين، ويصلح بمتابعة المعروفين المقبولين الصادقين، ويتقوى بشهادة كثرة طرق الثقات المؤيدين العادلين، وينتفع بموافقة الحفّاظ المعدّلين والكبار المسندين، ويُحتجّ بتأييد القياس المعتبر، والإفتاء المشتهر، من العلماء المحققين، ويستشهد بقبول أهل العصور وتعامل أهل الدّهور من المحدثين.

فأما الأولياء والصلحاء المحسنون، أي أصحاب الإسناد الصحيح فقد قال الله تعالى في حقهم: ﴿اَلْاَخِلَّآءُ يَوْمَئِذٍ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ اِلَّا الْمُتَّقِيْنَo يَا عِبَادِ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ وَلَا اَنْتُمْ تَحْزَنُوْنَo الَّذِيْنَ آمَنُوْا بِآيَاتِنَا وَكَانُوْا مُسْلِمِيْنَo اُدْخُلُوا الْجَنَّةَ اَنْتُمْ وَ اَزْوَاجُكُمْ تُحْبَرُوْنَ o﴾ [الزخرف، ٤٣:٦٧-٧٠] إنَّ الله فرّق بين ”أنتم“ و”أزواجكم“ في دخولهم الجنّة فقال: ادخلوا (أيها الأولياء) الجنّة أنتم، لأنكم من العباد المتّقين الذين لا خوف عليهم ولا هم يحزنون، ولكنّ ”أزواجكم“ أيضًا يدخلون الجنّة معكم فإنّهم لايدخلون باستحقاق أنفسهم، بل يكون دخولهم لأجل معيّتهم بالأقوياء المتّقين ولموافقتهم الصّلحاء الثّابتين، وبإعانة الصحاح الحسان المقبولين

إنّ هذه المعيّة والموافقة والإعانة والتّقوية رفعت ضعف الأزواج الّذي كان في نفوسهم وأعمالهم وجعلتهم مقبولين مغفورًا لهم.

قال الله تعالى في مقام آخر: ﴿إِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنَّاتٍ وَّ نَعِيْمٍ o فَاكِهِيْنَ بِمَآ اٰتَاهُمْ رَبُّهُمْ وَوَقَاهُمْ رَبُّهُمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ o كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْٓئًا م بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ o مُتَّكِئِيْنَ عَلٰى سُرُرٍ مَّصْفُوْفَةٍ وَّ زَوَّجْنَاهُمْ بِحُوْرٍ عِيْنٍ o وَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَاتَّبَعَتْهُمْ ذُرِّيَّتُهُمْ بِإِيْمَانٍ أَلْحَقْنَا بِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَمَآ أَلَتْنَاهُمْ مِّنْ عَمَلِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ ط كُلُّ امْرِئٍ م بِمَا كَسَبَ رَهِيْنٌ o﴾ [الطور، ٥٢:١٧-٢١] إذا وقعت فطرة الذرّيّة مومنة سليمة طيّبة بقبول الفضائل والحسنات والخيرات والبركات. ولكنّها ضعيفة في صحّتها وعملها ودرجتها. وصل إليها فيض الآباء الأقوياء، وبركة الكبرآء ومدد الأولياء والصلحاء فيقوّيها، ويرفعها إلى مرتبة القبول، ويدخلها في الدرجات العليّة مع الأرواح الرفيعة المقرّبة الواصلة، فإنّه تعالى مبلغهم من الأدنى إلى الأعلى، ومخرجهم من الوحشة إلى الوصلة، وموصلهم من الغربة إلى القربة. كما قال الله تعالى: ﴿يَتَنَازَعُوْنَ فِيْهَا كَأْسًا لَّا لَغْوٌ فِيْهَا وَلَا تَأْثِيْمٌ o﴾ [الطور، ٥٢:٢٣] إذا شرب هؤلاء الضعفاء شراب القبولية والقربة والوصال بعد رفع درجاتهم إلى مقامات الأولياء والصّلحاء من أهل الكمال فورثوا درجات الاستقامة بعد الموافقة من أهل الكرامة ﴿قَالُوْٓا إِنَّا كُنَّا قَبْلُ فِيْٓ أَهْلِنَا مُشْفِقِيْنَ o﴾ [الطور، ٥٢:٢٦] أي كنّا خائفين في حال الضّعف والفرقة والغربة، عالمين بأنّنا غير مقبولين وغير موصولين. ﴿فَمَنَّ اللهُ

عَلَيْنَا وَ وَقَانَا عَذَابَ السَّمُوْمِo﴾ [الطور، ٥٢:٢٧] أي أخرجنا الله تعالى من الذّلة ووصفنا بالعزّة وشرّفنا باللقاء والتّلقي والقبول. لأنّهم إذا رغبوا في حرص الثواب، والخوف من العقاب، وفي مناقب أهل الكمال وفضائل الأعمال اشتاق الصلحاء إليهم، وتلاقوا بهم، وتحابّ وتوافق الكبراء لهم، وتجالس وتماثل العمداء بهم، ورفعوهم وتقبّلوهم ووثّقوهم، ورجّحوهم حدّ الثقة والشهرة والترجيح.

فمن دخل في زمرهم تيسّر له المدد والبركة والموافقة المؤيّدة، وخرج من الظلمة إلى النور، وتعزّز بالتّلقي والظهور، وحصل له الترقي والقبول بتحيّة السّلام ومزيد الجوار الكرام كما قال الله تعالى: ﴿هُوَ الَّذِىْ يُصَلِّىْ عَلَيْكُمْ وَ مَلَآئِكَتُهُ لِيُخْرِجَكُمْ مِّنَ الظُّلُمَاتِ اِلَى النُّوْرِ ط وَكَانَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَحِيْمًاo تَحِيَّتُهُمْ يَوْمَ يَلْقَوْنَهُ سَلٰمٌ ج وَّاَعَدَّ لَهُمْ اَجْرًا كَرِيْمًاo﴾ [الأحزاب، ٣٣:٤٣-٤٤] هذا الأصل من القطعيّات الشرعية الثابتة من الكتاب والسّنّة كما ذُكِرَ في الدعاء في القرآن الكريم: ﴿وَاجْعَلْ لَّنَا مِنْ لَّدُنْکَ وَلِيًّا وَّاجْعَلْ لَّنَا مِنْ لَّدُنْکَ نَصِيْرًا﴾ [النساء، ٤:٧٥] قوله تعالى: ﴿وَالْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنٰتُ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ط ﴾ [التوبة، ٩:٧١] وقوله تعالى: ﴿وَ تَعَاوَنُوْا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوٰى وَلَا تَعَاوَنُوْا عَلَى الْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ﴾ [المائدة، ٥:٢] فمعناه لو كانت هناک علّة في الإسناد علة قبيحة شديدة مثل الوضع والكذب، أو غير ذالک، فلا تنفعه شفاعة الشافعين. وإن كانت في الإسناد علةٌ خفيفةٌ ضعيفةٌ، مثل سيّئة أو زلّة أو خطيئة إمّا صغيرة أو

كبيرة، تمكن إزالة ضررها بالشّفاعة والمعاونة والموافقة من الأولياء والصّالحين والثّابتين، لينفعه ويعينه ويرفعه فيصير مقبولاً ومعمولاً به. كما قال الله تعالى: ﴿فَإِنَّ اللهَ هُوَ مَوْلٰهُ وَجِبْرِيْلُ وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمَلٰٓئِكَةُ بَعْدَ ذٰلِكَ ظَهِيْرٌ ٥﴾ [التحريم، ٦٦:٤]. لأن الله جعل صالح المؤمنين ظهيرًا للضعاف المسلمين، فلا تنفع الشفاعة والولاية للكفار الظالمين، ولا للمنافقين.

وأمّا حكم المراسيل والضِعاف فالخبر المرسل هو قويٌّ وحجّةٌ عند أكثر الأئمة الكبار، غير محتاج للتقوية والاعتضاد والانتصار، كالضعيف والمجروح في الاعتبار، قال الله تعالى: ﴿وَمَا كَانَ الْمُؤْمِنُوْنَ لِيَنْفِرُوْا كَآفَّةً ؕ فَلَوْلَا نَفَرَ مِنْ كُلِّ فِرْقَةٍ مِّنْهُمْ طَآئِفَةٌ لِّيَتَفَقَّهُوْا فِى الدِّيْنِ وَلِيُنْذِرُوْا قَوْمَهُمْ اِذَا رَجَعُوْا اِلَيْهِمْ لَعَلَّهُمْ يَحْذَرُوْنَ ٥﴾ [التوبة، ٩:١٢٢] دلّت الآية على أنّ الطائفة الّتي تفقّهت في الدّين، وتخصصت في العلم. إذا رجعت إلى قومها وأنذرتهم بما قال النّبي ﷺ. أنّه يجب قبول خبرهم، ولم تفرق الآية في الأخبار والإنذار بين ما أسندوه، وما أرسلوه، ولا بين الصحابة والتابعين، ومن بعدهم. ولم يميز بين من أخبر وأنذر مِنْ مرسلٍ أو من مسند. فقد قال الله تعالى فيه: ﴿يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اِنْ جَاءَ كُمْ فَاسِقٌ بِنَبَإٍ فَتَبَيَّنُوْا﴾ [الحجرات، ٤٩:٦] رويت هناك قراء تان متواترتان "فتبيّنُوا" أو "فتثبّتُوا" وما قال "فلا تقبلُوا" أو "ردُّوه" أو "اتركوه، بل الأمر فيه للتبين والتحقق والتثبت. فلم يأمر الله تعالى بالتبيّن والتثبّت

إلا في خبر الفاسق، فدلّت الآية على أنّ العدل الثّقة لا يجب التبيُّن والتثبُّت والتحقّق في خبره، والمرسل عدلٌ ثقة فيجب قبول خبره لأنّ الآية لم تفرق بين ما أسنده وما أرسله، وهكذا الأحاديث النبوية ﷺ الّتي وردت في التبليغ كقوله ﷺ: ''بلغّوا عنّي ولو آية.'' و''ليبلّغ الشاهد منكم الغائب.'' رواهما البخاري لأنّه أمر بالتبليغ عنه في كلّ حالٍ ومجالٍ، فالأمر بالتبليغ لا بّد له من فائدة العمل بما يبلّغ الراوي من بعده، ولم يفرّق الحديث بين ما كان يبلّغه الراوي مسندًا أو مرسـًلا. واتّفق الصحابة على قبول روايات ابن عباس والنعمان بن بشير وابن الزبير ﷺ، وسائر الصغار من الصحابة والقرابة. مع أنّهم لم يسمعوا من النّبي ﷺ أكثرها ورووها مرسلة وهكذا إجماع التابعين على قبول المراسيل ولم يزل العمل بالإرسال وقبوله حتى حدث بعد المائتين القول بردّه. ولاريب أنّ خبر الفاسق هو الإسناد الضعيف جدًا فأشار بهذا الأمر إلى وجود الصلاحيّة الأصليّة للقبول في السند الضعيف، ولوكان ''نبأ الفاسق'' مردودًا قطعًا ومطلقاً لقال الله تعالى: ﴿وَلَا تَقْبَلُوْا لَهُمْ شَهَادَةً اَبَدًا ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ۝﴾ [النور، ٢٤:٤] ولكن قوله: ''فتبيّنوا'' صريح الدلالة وصحيح الشهادة، لأنّ هذا الخبر والإسناد مطالب فيه بالتبيّن والتحقق للقبول، ولا يجوز الإنكار عليه والتكذيب به على الإطلاق فمعناه لوحصلت التقوية للإسناد الضعيف بعد التبيّن والتثبت لتأييد الثقات والأثبات فيقبل ويعمل به. أو وجد الخبر الضعيف في المناقب، وفي الفضائل

وفي الترغيب والترهيب فيقبل ويُعمل به. أو وجد الخبر من طريقين: كل منهما ضعيف قوي أحد الطريقين بالآخر فيصير حسنًا. أو وجد الخبر، فصرّح أحد من أئمة الحديث والجرح وضعه أو ضعفه وآخر بالصحة، وتوجد كثرة طرق فيه أو تأيد متنه بروايات أخرى، فيصير في درجة الحسن. أو وجد الخبر بسند ضعيف وتوبع بمعتبر يقبل ولا ينحط إلى الضعف. أو وجد الخبر الضعيف وورد من جهة أخرى. أو وجد الخبر الضعيف في أمر لا يروى فيه حديث بإسناد أحسن منه، فيقبل ويعمل به. فإنّ الضعيف هو مانقص عن درجة الحسن قليلا، كما الحسن هو ما قصر عن رتبة الصحيح قليلا، وارتقى عن درجة الضّعيف، ولذا يقال آخر مراتب الحسن هي أوّل مراتب الضّعيف. وهكذا جعل المطروح ما نزل عن رتبة الضّعيف، وارتفع عن الموضوع، فمنزلته بين الضعيف والموضوع، حتى لا يقال الضعيف ولا المتروك ولا المطروح موضوعًا، لأنّ كلّ ضعيفٍ ليس بموضوعٍ، بل الموضوع هو المختلق المصنوع، هو في الحقيقة ليس بحديث، ولكنّ المحدثين سمّوه حديثًا بالنظر إلى زعم راويه، فإنّ الموضوع لا يعادل الضّعيف ولا يساويه. أمّا الضعاف فيكفي لنا قول العفاف قول الإمام عبد الرحمٰن بن المهدي، رواه الحاكم في المدخل: "إذا روينا في الثواب والعقاب وفضائل الأعمال تساهلنا في الأسانيد وسمحنا في الرجال، وإذا روينا في الحلال والحرام والأحكام تشدّدنا في الأسانيد وانتقدنا الرجال." وأيّد هذا القول

الّذي صدر من أكابر الأئمة والرجال قول الإمام أحمد بن حنبل رواه الحاكم في المدخل إذا روينا عن رسول الله ﷺ في الحلال والحرام والسّنن تشدّدنا، وإذا روينا عن النّبي ﷺ في فضائل الأعمال وما لا يضع حكمًا ولا يرفعه تساهلنا في الأسانيد.

فَإِنَّ شَرَّ الضَّعِيْفِ الْمَوْضُوْعُ، وَأَخَفَّهُ الْمَتْرُوْكُ، ثُمَّ الْمُنْكَرُ، ثُمَّ الْمُعَلَّلُ، ثُمَّ الْمُدْرَجُ، ثُمَّ الْمَقْلُوْبُ، ثُمَّ الْمُضْطَرِبُ، فَهُوَ الْمُضْطَرُّ هَكَذَا رَتَّبَ ابْنُ حَجَرٍ.

أمّا بعد: فإنّ علم السّنّة والحديث أشرف المطالب وأعلاها وأنجح الرغائب وأغلاها وأطيب المكاسب وأزكاها وأهم الأمور بالعناية وأولاها قد بيّن الله شرفه وفضله ورفع أسانيد أهل الرواية وكملهم بمعارف لطائف الدراية ومنّ علينا بهباته الوافرة وآلائه المتكاثرة وأيّدنا بهذا الدين المتين برواية السّنّة المطهرة والأحاديث الشريفة المنوّرة في كل زمان ومكان.

كما نقل العلامة محمد جمال الدين القاسمي في قواعد التحديث ''قال الإمام النووي قدس الله سرّه في ''مقدمة شرحه على صحيح مسلم'': ''إن من أهم العلوم تحقيق معرفة الأحاديث النبويات، أعني معرفة متونها، صحيحها وحسنها وضعيفها، وبقية أنواعها المعروفات، ودليل ذلك: أن شرعنا مبنيٌّ على الكتاب العزيز والسنن المرويات، وعلى السنن مدار أكثر الأحكام

الفقهيات، فإنّ أكثر الآيات الفروعيات مجملاتٌ، وبيانها في السنن المحكمات.

وقد اتفق العلماء على أنّ من شرط المجتهد من القاضي والمفتي أن يكون عالمًا بالأحاديث الحكميات. فثبت بما ذكرناه: أنّ الاشتغال بالحديث من أجلّ العلوم الراجحات، وأفضل أنواع الخير، وآكد القربات. وكيف لا يكون كذلك وهو مشتمل على بيان حال أفضل المخلوقات، عليه من الله الكريم أفضل الصلوات والسلام والبركات؟

ولقد كان أكثر اشتغال العلماء بالحديث في الأعصار الخاليات، حتى لقد كان يجتمع في مجلس الحديث من الطالبين ألوفٌ متكاثراتٌ، فتناقص ذلك، وضعفت الهِمم، فلم يبق إلا آثارٌ من آثار هم قليلات، والله المستعان على هذه المصيبة وغيرها من البليات.

وقد جاء في فضل إحياء السنن المماتات أحاديث كثيرة، معروفات مشهورات، فينبغي الاعتناء بعلم الحديث، والتحريض عليه لما ذكرنا من الدلالات، ولكونه أيضاً من النصيحة لله تعالى، وكتابه ورسوله وللأئمة والمسلمين والمسلمات، وذلك هو الدين كما صحّ عن سيد البريات صلوات الله وسلامه عليه، ولقد أحسن القائلُ: من جمع أدوات الحديث استنار قلبه واستخرج كنوزه

الخفيات، وذلک لکثرة فوائده البارزات والکامنات، وهو جديرٌ بذلک، فإنه کلام أفصح الخلق، ومن أعطي جوامع الکلمات ﷺ صلوات متضاعفات.

وقال العلامة الشهاب أحمد المِنّيني الدمشقي الحنفي. في ''القول السديد في إتصال الأسانيد'': إن علم الحديث علمٌ رفيعُ القدر، عظيمُ الفخر، شريف الذکر، لا يعتني به إلا کلُّ حَبْرٍ، ولا يُحرمُهُ إلاّ کلُّ غِمْرٍ، ولا تَفْنَى محاسنُهُ على مرّ الدهر، لم يزل في القديم والحديث يسمو عزة وجلالة، وکم عزّ به من کشف الله له عن مخبآت أسراره وجلاله، إذْ به يُعرف المراد من کلام رب العالمين، ويظهر المقصودُ من حَبْلِهِ المتصل المتين، ومنه يُدرَى شمائلُ مَنْ سَمَا ذاتًا ووصفًا واسمًا ويوقف على أسرار بلاغة مَنْ شرَّف الخلائق عُرُبًا وعجمًا، وتمتدُّ من برکاته للمُعتني به موائدُ الإکرام من ربّ البرية، فيُدرک في الزمن القليل من المولى الجليل المقامات العلية والرتب السنية، مَنْ کَرَعَ من حِيَاضِه أو رَتَعَ في رياضه فَلْيَهْنِهِ الأنسُ بجنى جنانه السنة المحمدية، والتمتع بمقصورات خيام الحقيقة الأحمدية، وناهيک بعلم من المصطفى ﷺ بدايتُهُ، وإليه مستندُهُ وغايتُهُ، وحسبُ الراوي للحديث شرفاً وفضلاً، وجلالةً ونُبلاً، أن يکون أول سلسلة آخرها الرسولُ ﷺ، وإلى حضرته الشريفة بها الانتهاءُ والوصولُ، وطالما کان السلفُ الصالح يُقاسُون في تحمّله شدائدَ الأسفار، ليأخذوه عن أهله بالمشافهة، ولا يقنعون بالنقل من

الأسفار فربما ارتكبوا غارب الاغتراب بالارتحال إلى البلدان الشاسعة لأخذ حديثٍ عن إمام انحصَرَتْ روايتُهُ فيه، أو لبيان وضع حديثٍ تتبعُوا سَنَدَهُ حتى انتهى إلى مَنْ يَختلِقُ الكذب ويفتريه، وتأسّى بهم مَنْ بعدهم من نَقَلةِ الأحاديث النبوية، وحَفَظَةِ السنة المصطفوية، فضبطُوا الأسانيد وقيدوا منها كلَّ شريدٍ، وسَبَروا الرواة بين تجريحٍ وتعديلٍ، وسلكوا في تحرير المتن أقوم سبيلٍ، ولا غرض لهم إلَّا الوقوفُ على الصحيح من أقوال المصطفى ﷺ وأفعاله، ونفي الشبهة بتحقيق السند واتصاله، فهذه هي المَنْقَبةُ التي تتسابقُ إليها الهِممُ العوالي، والمأثرة التي يُصرَف في تحصيلها الأيامُ والليالي.

وقال الإمام أبو الطيب الأثري القَنُوَجي رحمه الله في كتابه "الحِطة في ذكر الصحاح الستة": اعلم أنّ آنف العلوم الشرعية ومفتاحَها، ومشكاةَ الأدلة السمعية ومصباحَها، وعمدةَ المناهج اليقينية ورأسَها، ومبنى شرائع الإسلام وأساسَها، ومستندَ الروايات الفقهية كلّها، ومآخذَ الفنون الدينية دِقّها وجُلّها، وأسوةّ جملة الأحكام وأسَّها، وقاعدة جميع العقائد وأُسْطُقُسها، وسماءَ العبادات وقُطْبَ مَدَارها، ومركزَ المعاملات وَمَحطَّ حارّها وقارها، هو: علمُ الحديث الشريف الذي تُعرف به جوامعُ الكَلِم، وتنفجرُ منه ينابيعُ الحِكمَ، وتدورُ عليه رَحَى الشرح بالأسْر، وهو مِلاكُ كل نهي وأمر، ولولاهُ لقالَ من شاء ماشاء، وخَبَط الناسُ خَبْطَ عَشْواءَ، وركبوا متن عمياء، فطوبى لمن جَدَّ فيه، وحصل منه على تنويه يملك من العلوم

النواصي، ويُقَرّبُ من أطرافها البعيد القاصي.

وَمَنْ لم يرضع من درّه، ولم يَخُضْ في بحره، ولم يقتطف من زهره، ثم تعرّض للكلام في المسائل والأحكام، فقد جار فيما حكم، وقال على الله تعالى مالم يعلم، كيف وهو كلام رسول الله ﷺ. والرسولُ (ﷺ) أشرفُ الخَلْق كلّهم أجمعين، وقد أُوتي جوامعَ الكَلِم، وسواطعَ الحِكَم من عند رب العالمين. فكلامُهُ أشرفُ الكَلِم وأفضلُها، وأجمعُ الحِكم وأكملُها، كما قيل: ''كلامُ الملوك ملوكُ الكلام.'' وهو تِلْوُ كلام الله تعالى العَلَّام، وثاني أدلة الأحكام، فإن علوم القرآن وعقائد الإسلام بأسرها، وأحكام الشريعة المطهرة بتمامها، وقواعد الطريقة الحقّه بحذافيرها، وكذا الكشفياتُ والعقلياتُ بنقيرها، وقِطْمِيرها، تتوقفُ على بيانه ﷺ، فإنها مالم تُوزَنْ بهذا القسطاس المستقيم، ولم تُضْرَب على ذلك المعيار القويم، لا يُعتمد عليها، ولا يُصار إليها.

فهذا العلم المنصوص، والبناءُ المرصوص، بمنزلة الصرّاف لجواهر العلوم، عقليّها ونقليّها، وكالنقَّاد لنقود كل الفنون، أَصليها وفرعيها من وجوه التفاسير والفقهيات ونصوص الأحكام، ومآخذ عقائد الإسلام، وطرق السلوك إلى الله تعالى ذي الجلال والإكرام، فما كان منها كامل العيار، في نقد هذا الصرَّاف، فهو الحَرِيُّ بالترويج والاشتهار، وماكان زيفاً غير جيد عند ذاك النقاد، فهو

القَمِين بالرد والطرد والإنكار.

فكلُّ قول يُصَدّقُهُ خبرُ الرسول ﷺ، فهو الأصلحُ للقبول، وكلُّ ما لا يساعده الحديثُ والقرآن، فذلک في الحقيقة سَفْسَطَةٌ بلا برهان، فهي مصابيح الدُّجَى، ومعالِمُ الهدى، وبمنزلةِ البدر المنير، مَنْ انقاد فقد رَشَد واهتدى، وأوتي الخير الكثير، ومن أعرضَ عنها وتولّى فقد غَوَى وهَوَى، وما زاد نفسَهُ إلاّ التخسير، فإنه ﷺ نهى وأمر، وأنذرَ وبشَّر، وضَرَب الأمثالَ وذكّر، وإنها لَمِثْلُ القرآن بل هي أكثر، وقد ارتبطَ بها اتباعُهُ ﷺ الذي هو ملاک سعادة الدارين، والحياةُ الأبديةُ بلا مَيْنٍ، كيف وما الحقُّ إلا فيما قاله ﷺ أو عَمِل به أو قرَّرَهُ أو أشار إليه أو تفكّر فيه، أو خطر بباله أو هَجَسَ في خَلَده واستقام عليه، فالعلمُ في الحقيقة هو علمُ السنة والكتاب، والعمل بهما في كل إياب وذهاب، ومنزلتُهُ من العلوم منزلةُ الشمس بين كواكب السماء، وَمَزِيّةُ أهله على غيرهم من العلماء، مزيةُ الرجال على النساء ﴿ذَلِکَ فَضْلُ اللهِ يُؤْتِيهِ مَنْ يَّشَآءُ﴾ [المائدة، ٥:٥٤]، فيَالَهُ من علم سِيُط بدمه الحقُّ والهدى، ونيُطَ بعنُقهِ الفوزُ بالدرجات العُلى. وقد كان الإمام محمد بن علي بن الحسين (محمد الباقر) عليه السلام يقول: "إنَّ من فقه الرجل بصيرتَهُ أو فِطنتَهُ بالحديث."

فلذلک لا يزال يجري ذكر أقواله الكريمه وأحواله العظيمه وفضائله الشريفة وشمائله المنيفة على لسان الصحابة والتابعين

والرواة المحدثين ولم يبرح تمثال جماله الكريم وخيال وجهه الوسيم ونور حديثه المستبين تحت أمر النبي الأمين المكين ﷺ:

١۔ كما روى ابن مسعود رضي الله عنه قال: قال رسول الله ﷺ: ''نضّر الله امرءًا سمع منّا شيئًا فبلّغه كما سمعه، فربّ مبلغٍ أوعىٰ من سامع.'' رواه الترمذي وأبوداوود.

٢۔ وعن زيد بن ثابت رضي الله عنه قال: سمعت رسول الله ﷺ يقول: ''نضّر الله المرء سمع منّا حديثًا فبلّغه غيره، فربّ حامل فقهٍ إلى من هو أفقه منه، وربّ حامل فقه ليس بفقيه.'' رواه أبوداود.

٣۔ وعن عبد الله بن مسعود رضي الله عنه أنّ رسول الله ﷺ قال: ''نضّر الله امرءًا سمع مقالتي، فحفظها ووعاها وأدّاها.'' رواه الترمذي وأبوداود والشافعي واللفظ له والبيهقي.

٤۔ وعن ابن عباس رضي الله عنهما قال: قال رسول الله ﷺ: ''اللّهم ارحم خلفائي، قيل: ومن خلفاؤك؟ قال: الذين يأتون من بعدي يروون أحاديثي، ويعلّمونها الناس.'' رواه الطبراني في الأوسط.

٥۔ وعن عبد الله بن عمرو بن العاص رضي الله عنهما قال: قال رسول الله ﷺ: ''بلّغوا عني ولو آية، وحدّثوا عن بني إسرائيل ولا حرج، ومن كذب عليّ متعمدًا فليتبوّأ مقعده من النار.''
رواه البخاري.

٦۔ وعن أبي قرصافة رضي الله عنه عن رسول الله ﷺ قال: ''حدّثوا عنّي بما

تسمعون، ولا تقولوا إلا حقًا، ومن كذب عليّ بني له بيت في جهنم يرتعُ فيه." رواه الطبراني.

٧- وعن ابن عباس رضي الله عنهما عن رسول الله ﷺ أنه قال: "علِّموا ويسِّروا ولا تعسِّرو، وبشروا ولا تنفِّروا، وإذا غضب أحدكم فليسكت." رواه أحمد والبخاري في الأدب.

٨- وعن أبي هريرة رضي الله عنه عن رسول الله ﷺ: "تعلّموا الفرائض والقرآن، وعَلِّمُوا الناس، فإني مقبوض." رواه الترمذي.

٩- وعن عمرو بن عوف رضي الله عنه أن رسول الله ﷺ قال لبلال بن الحرث يومًا: "اعلم يا بلال قال: ما أعلم يا رسول الله، قال: أن من أحيا سنة من سنتي أميتت بعدي، كان له من الأجر مثل من عمل بها من غير أن ينقص من أجورهم شيء، ومن ابتدع بدعة ضلالة لا يرضاها الله ورسوله، كان عليه مثل آثام من عمل بها، لا ينقص ذلك من أوزار الناس شيئا."

رواه الترمذي وابن ماجه.

١٠- وعن أبي هريرة رضي الله عنه عن النّبي ﷺ قال: "المتمسّك بسنتي عند فساد أمتي له أجر شهيد." رواه الطبراني.

١١- عن ابن عباس رضي الله عنهما عن النّبي ﷺ قال: "من تمسّك بسنّتي عند فساد أمتي فله أجر مئة شهيد." أخرجه البيهقي ورفعه.

١٢- وعن أسامة بن زيد رضي الله عنهما عن النّبي ﷺ أنه قال: "يحمل هذا

العلم من كل خلف عدوله، ينفون عنه تحريف الغالين وانتحال المبطلين وتأويل الجاهلين.'' أخرجه ابن عدي في الكامل ورواه البيهقي في المدخل، والدارقطني في السنن، وأبونعيم في كتاب الضعفاء وذكر القسطلاني أنه يصير بطرقه حسنًا وجزم به العلائي.

١٣۔ وعن ثابت بن قيس رضي الله عنه عن رسول الله ﷺ أنه قال: ''تسمعون ويسمع منكم، ويسمع من الذين يسمعون منكم، ويسمع من الذين يسمعون من الذين يسمعون منكم.''

رواه الطبراني والحاكم.

١٤۔ وعن عمر ابن الخطاب رضي الله عنه كان يقول: ''سيأتي قومٌ يجادلونكم بشُبُهات القرآن، فخذوهم بالسنن، فإنَّ أصحابَ السنن أعلم بكتاب الله عز وجل.'' نقله الإمام الشعراني في الميزان الكبرى.

فإنَّ اللهَ جَعَلَ لَنَا الثِّقَاتَ لِإِسْنَادِ الرِّوَايَةِ وَإِبْلاَغِ الدِّيْنِ، لِأَنَّ الإِبْلاَغَ وَالإِسْنَادَ مِنْ خُصُوْصِيَاتِ الْأُمَّةِ الْمُحَمَّدِيَّةِ، فَمَا مِنْ أُمَّةٍ مِّنْ أُمَمِ الْأَنْبِيَاءِ السَّابِقِيْنَ كَانَتْ لَهَا هَذِهِ الْمَنْزِلَةُ الْعِلْمِيَّةُ الرَّفِيْعَةُ تَبْلُغُ دِيْنَهَا بِالإِسْنَادِ الْمُتَّصِلِ بَيْنَ نَبِيِّهَا وَبَيْنَ عُلَمَائِهَا، قَدْ فَاضَلَ اللهُ تَعَالَى بِهَا خَيْرَ أُمَّةٍ وَشَرَّفَ أَئِمَّتَهَا بِآدَابِهَا مِنَ الصَّحَابَةِ إِلَى الْمُحَدِّثِيْنَ، وفي قوله تعالى: ﴿أَثَارَةٍ مِنْ عِلْمٍ﴾ [الأحقاف، ٤:٤٦] هي إشارةٌ إلى إسناد الحديث وروايته هذا الأمر في شأن الإسناد لرواية الدين، وقال الأئمّة الكبار من التّابعين:

١٥- منهم الإمام محمد بن سيرين ﷺ (١١٠هـ) الّذي قال: "إن هذا العلم دين فانظروا عمن تأخذون دينكم". رواه مسلم.

١٦- وعنه قال: "لم يكونوا يسألون عن الإسناد، فلما وقعت الفتنة قالوا: سمّوا لنا رجالكم، فيُنظر إلى أهل السنة فيؤخذ حديثهم، وينظر إلى أهل البدع فلا يؤخذ حديثهم". رواه مسلم.

١٧- وعن سعد بن إبراهيم بن عبد الرحمن بن عوف ﷺ (١٢٥هـ) قال: "لا يحدِّث عن رسول الله ﷺ إلا الثقات".

رواه مسلم والدارمي.

١٨- وعن عبد الله بن المبارك ﷺ (١٨١هـ) قال: "الإسناد من الدين ولولا الإسناد لقال من شاء ما شاء". رواه مسلم.

١٩- وعنه ﷺ قال: "بيننا وبين القوم القوائم يعني الإسناد." رواه مسلم.

٢٠- وعن الإمام الشافعي ﷺ (٢٠٤هـ) قال: "مَثَلُ الذي يطلب العلم بلا حجة، مثل حاطب ليل، يحمل حُزْمَةَ حطب فيها أفعى، تَلْدغه وهو لا يدري." رواه البيهقي.

٢١- وعن الربيع بن سليمان المرادي ﷺ (١٧٤هـ): "مثل الّذي يطلب الحديث بلا إسناد، مثل حاطب ليل."

٢٢- وعن سفيان الثوري ﷺ (١٦١هـ) قال: "الإسناد سلاح المؤمن، فإذا لم يكن معه سلاح، فبأي شيء يقاتل." رواه الذهبي والخطيب.

٢٣ـ قال صالح بن أحمد (٣٨٤ هـ): "يعني إن الحديث بلا إسناد ليس بشيء وإن الإسناد دُرُج المتون، به يوصل إليها."

رواه الخطيب.

فجمع الأئمة سنته المطهرة وأحاديثه الشريفة في الكتب ورتّبوها في المؤلفات، وقسموها في الطبقات والدرجات قد صحّ طلوع شمسه ﷺ على مطلع الصحاح، وأضاءت جميع لوامعه على منظر الجوامع، وتسنّنت عنه الأحكام والمِنَنُ في السّنن وتعدّدت طرقه بأسانيد أصحابه في المسانيد، وانتشرت مَعَالِمُه بالأسماء على الهجاء في المعاجم، واشتملت أحكامه مبوّبة في المصنفات، واستدرِكت روايات كماله على نفس الشرط في المستدركات، واستخرجت مرويّاته بأسانيد أخرى في المستخرجات، واختيرت اللالٓي الجيّدة من كلامه في المنتقى، وجمعت أخباره المأثورة في الآثار و نوّرت أنوار أشعته في الأجزاء.

وَصَلَّى اللّٰهُ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِهِ وَأَصْحَابِهِ الشُّهُوْدِ الْعُدُوْلِ الثِّقَاتِ، وَأَتْبَاعِهِ أَهْلِ الصِّدْقِ وَالْاِعْتِبَارِ وَالْمُتَابَعَاتِ، الَّذِيْنَ ضَبَطُوْا فِي صُدُوْرِهِمُ الْمَعَارِفَ وَالْمِنَنَ، وَبَلَّغُوْا إِلَيْنَا أَحْكَامَ الْكِتَابِ وَالسُّنَنَ وَمَا أَحَدٌ مِنْهُمْ مَوْصُوْفٌ بِالتَّدْلِيْسِ وَالتَّضْلِيْلِ، لِأَنَّهُمْ صَرَّحُوْا فِي الرِّوَايَةِ وَالدِّرَايَةِ وَالْهِدَايَةِ بَالْجَرْحِ وَالتَّعْدِيْلِ، حَتَّى جَعَلَ اللّٰهُ بِهِمْ غَرِيْبَ الدِّيْنِ عَزِيْزًا مُؤَهَّلًا وَقَوِيَّ الشِّرْكِ ضَعِيْفًا مُسَلْسَلًا وَصَارَ قَوْلُ

وَعَمَلُ كُلِّ وَاحِدٍ مِنْهُمْ صَحِيْحًا، حَسَنًا، جَيِّدًا، قَوِيًّا، صَالِحًا، مَعْرُوْفًا، مَحْفُوْظًا، ثَابِتًا، وَمُجَوَّدًا.

قد ألّفت هذه الرسالة ولخّصت فيها مسألة مهمة عظيمة وسمّيتها "الخطبة السديدة في أصول الحديث و فروع العقيدة" تتضمن ما يأتي به شواهد الحق من النصيحة في أصول الحديث وفروع العقيدة الصحيحة السديدة وهذه الأنوار المكنونة والأسرار المخزونة، تنزل على سماء الروح من الملاء الأعلى وتضيء على مطلع القلب بعد كشف الغطاء فاشرب من هذه الكأسة على قدر ما تستطيع وما تشاء وانتفع بها بالأخذ والحفظ والتحمل والأداء على قدر ما اقتضى فتوكل على الله وأسأل الله تعالى أن يجعل هذه الخطبة نافعة ومفيدة وصحيحة وسديدة بحرمة سيد الأنبياء والمرسلين وصلّى الله عليه وآله وأصحابه وأتباعه أجمعين إلى يوم الدين.

बाब 1 : اَلْبَابُ الْأَوَّلُ:

الإِيْمَانُ وَالإِسْلَامُ وَالإِحْسَانُ

﴿ईमान, इस्लाम और एहसान﴾

1. فَصْلٌ فِي الإِيْمَانِ

﴿ईमान का बयान﴾

2. فَصْلٌ فِي حَقِيْقَةِ الإِيْمَانِ

﴿हक़ीक़ते ईमान का बयान﴾

3. فَصْلٌ فِي عَـلَامَاتِ الْمُؤْمِنِ وَأَوْصَافِهِ

﴿मोमिन की अ़लामात और सिफात का बयान﴾

4. فَصْلٌ فِي الإِسْلَامِ

﴿इस्लाम का बयान﴾

5. فَصْلٌ فِي عَـلَامَاتِ الْمُسْلِمِ وَأَوْصَافِهِ

﴿मुसलमान की अ़लामात और सिफात का बयान﴾

6. فَصْلٌ فِي حَقِّ الْمُسْلِمِ عَلَى الْمُسْلِمِ

﴿मुसलमान के मुसलमान पर हुक़ूक़ का बयान﴾

7. فَصْلٌ فِي الإِحْسَانِ

﴿एहसान का बयान﴾

8. فَصْلٌ فِي عَـلَامَاتِ الْمُحْسِنِ وَأَوْصَافِهِ

﴿मोहसिन की अ़लामात और सिफ़ात का बयान﴾

9. فَصْلٌ فِي عَـلَامَاتِ الْكُفْرِ وَالنِّفَاقِ

﴿कुफ्र और निफाक़ की अ़लामात का बयान﴾

فَصْلٌ فِي الإِيْمَانِ

ईमान का बयान

١ / ١۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضي الله عنه قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صلى الله عليه وآله وسلم: الإِيْمَانُ بِضْعٌ وَسَبْعُوْنَ شُعْبَةً، فَأَفْضَلُهَا: قَوْلُ لَا إِلَهَ اِلَّا اللهُ، وَأَدْنَاهَا: إِمَاطَةُ الْأَذَى عَنِ الطَّرِيْقِ، وَالْحَيَاءُ شُعْبَةٌ مِنَ الإِيْمَانِ.

مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ وَهَذَا لَفْظُ مُسْلِمٍ.

''हज़रत अबू हुरैरा رضي الله عنه से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम صلى الله عليه وآله وسلم ने फ़रमाया : ईमान की सत्तर से कुछ ज़्यादा शाख़ें हैं जिन में सब से अफ़ज़ल **لا إله إلا الله** (यानी वहदानियते इलाही) का इक़रार करना है, इनमें सब से निचला दर्जा किसी तकलीफ़ वाली चीज़ का रास्ते से दूर कर देना है, और ह़या भी ईमान की एक (अहम) शाख़ है।''

٢ / ٢۔ عَنْ أَنَسٍ رضي الله عنه عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وآله وسلم قَالَ: ثَلَاثٌ مَنْ كُنَّ فِيْهِ

الحديث رقم ١: أخرجه البخارى في الصحيح، كتاب: الإيمان، باب: أمور الإيمان، ١ / ١٢، الرقم: ٩، ولفظه: الإِيْمَانُ بِضْعٌ وَسِتُّوْنَ شُعْبَةً وَالْحَيَاءُ شُعْبَةٌ مِنَ الإِيْمَانِ، ومسلم في الصحيح، كتاب: الإيمان، باب: بيان عدد شعب الإيمان وأفضلها وأدناها، ١ / ٦٣، الرقم: ٣٥، وزاد (أَوْبِضْعٌ وَسِتُّوْنَ)، والترمذى بنحوه فى السنن، كتاب: الإيمان عن رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم، باب: ماجاء فى استكمال الإيمان وذيادته ونقصانه، ٥ / ١٠، الرقم: ٢٦١٤، وقال أبوعيسى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ، وأبوداود فى السنن، كتاب: السنة، باب: فى ردّ الإرجاء، ٤ / ٢١٩، الرقم: ٤٦٧٦، والنسائى فى السنن، كتاب: الإيمان وشرائعه، باب: ذكر شعب الإيمان، ٨ / ١١٠، الرقم: ٥٠٠٥، وابن ماجه فى السنن، المقدمة، باب: فى الإيمان، ١ / ٢٢، الرقم: ٥٧۔

الحديث رقم ٢: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: الإيمان، باب: حلاوةِ الإِيمانِ، ١ / ١٤، الرقم: ١٦، وفى كتاب: الإيمان، باب: مَنْ كَرِهَ أَن يعودَ فِى الكفرِ كَمَا يَكْرَهُ أَن يُلقَى فِى النَّارِ مِنَ الإِيْمَانِ، ١ / ١٦، الرقم: ٢١، وفى كتاب: الإكراهِ، باب: ←

وَجَدَ حَلَاوَةَ الإِيْمَانِ: (وفي رواية: حَلَاوَةَ الإِسْلَامِ) أَن يَكُوْنَ اللهُ وَرَسُوْلُهُ أَحَبَّ إِلَيْهِ مِمَّا سِوَاهُمَا، وَ أَنْ يُحِبَّ الْمَرْءَ لَا يُحِبُّهُ إِلَّا لِلّٰهِ، وَ أَنْ يَكْرَهَ أَنْ يَعُوْدَ فِي الْكُفْرِ كَمَا يَكْرَهُ أَنْ يُقْذَفَ فِي النَّارِ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अनस ﷺ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः ''जिस शख्स में तीन ख़स्लतें हों, कि वो ईमान की मिठास (और एक रिवायत में है कि इस्लाम की मिठास) को पा लेगा अल्लाह ﷻ और उस का रसूल ﷺ उसे बाक़ी तमाम चीज़ों से ज़्यादा महबूब हों, जिस शख़्स से भी उसे मुहब्बत हो वो महज़ अल्लाह ﷻ की वजह से हो, कुफ्र से निजात पाने के बाद दोबारा (हालते) कुफ्र में लौटने को वो इसी तरह नापसन्द करता हो जैसे वो ख़ुद को आग में फैंका जाना नापसन्द करता हो।''

٣ / ٣. عَنْ سُفْيَانَ بْنِ عَبْدِ اللهِ الثَّقَفِيِّ ﷺ قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُوْلَ

.... مَنِ اخْتَارَ الضَّرْبَ وَالقَتْلَ وَالهَوَانَ عَلَى الكُفْرِ، ٦ / ٢٥٤٦، وفى كتاب: الأدب، باب: الحُبِّ فِى اللّٰهِ، ٥ / ٢٢٤٦، الرقم: ٥٦٩٤، ومسلم فى الصحيح، كتاب: الإيمان، باب: بيان خصال من اتصف بهن وجد حلاوة الإيمان، ١ / ٦٦، الرقم: ٤٣، والترمذي فى السنن، كتاب: الإيمان عن رسول الله ﷺ، باب: (١٠)، والنسائى فى السنن، كتاب: الإيمان وشرائعه، باب: طعم الإيمان، ٨ / ٩٤، الرقم: ٤٩٨٧، وفى باب: حلاوة الإيمان، ٨ / ٩٦، الرقم: ٤٩٨٨، وفى كتاب: الإيمان وشرائعه، باب: حلاوة الإسلام، ٨ / ٩٧، الرقم: ٤٩٨٩، وابن ماجه فى السنن، كتاب: الفتن، باب: الصَّبْرِ عَلَى الْبَلَاءِ، ٢ / ١٣٣٨، الرقم: ٤٠٣٣، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٣ / ١٠٣، الرقم: ١٢٠٢١، وأبويعلى فى المسند، ٥ / ١٩٤، الرقم: ٢٨١٣، وابن حبان فى الصحيح، ١ / ٤٧٤، الرقم: ٢٣٨، وابن أبي شيبة فى المصنف، ٦ / ١٦٤، الرقم: ٣٠٣٦٠.

الحديث رقم ٣: أخرجه مسلم فى الصحيح، كتاب: الإيمان، باب: جامع أوصاف الإسلام، ١ / ٦٥، الرقم: ٣٨، والنسائى فى السنن الكبرى، سورة الأحقاف، ٦ / ٤٥٨، الرقم: ١١٤٨٩،وأحمد بن حنبل فى المسند، ٣ / ٤١٣، والدارمى فى السنن، ٢ / ٣٨٦، الرقم: ٢٧١٠، والشيبانى فى الآحاد والمثانى، ٣ / ٢٢٢، الرقم: ١٥٨٤، وابن منده فى الإيمان، ١ / ٢٨٦، الرقم: ١٤٠، وابن أبى عاصم فى السنة، ١ / ١٥، الرقم: ٢١.

اللهِ، قُلْ: لِي فِي الإِسْلَامِ قَوْلًا لَا أَسْأَلُ عَنْهُ أَحَدًا بَعْدَكَ (وفي حديث أبي أسامة: غَيْرَكَ). قَالَ: قُلْ: آمَنْتُ بِاللهِ ثُمَّ اسْتَقِمْ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ.

''हज़रत सुफ़्यान बिन अ़ब्दुल्लाह सक़फ़ी ﷺ रिवायत करते हैं कि मैंने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह ! इस्लाम के मुतअल्लिक़ मुझे कोई ऐसी बात बता दें कि फिर मैं आप ﷺ के बाद (और अबू उसामा से मरवी रिवायत में है कि अ़र्ज़ किया, आप ﷺ के सिवा) उसे किसी और से दरयाफ़्त ना करूँ। आप ﷺ ने फरमाया, कहो! मैं अल्लाह तआ़ला पर ईमान लाया, फिर उस पर पुख़्तगी से क़ायम रहो।''

٤ / ٤. عَنْ أَنَسٍ ﷺ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: لَا يُؤْمِنُ أَحَدُكُمْ حَتَّى أَكُوْنَ أَحَبَّ إِلَيْهِ مِنْ وَالِدِهِ وَوَلَدِهِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِيْنَ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

وفي رواية للبخاري: عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ قَالَ: فَوَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ، وَذَكَرَ نَحْوَهُ. (١)

''हज़रत अनस ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः तुम में से कोई मोमिन नहीं हो सकता, जब तक कि मैं उसे उसके वालिद (यानी वालिदैन), उसकी औलाद और तमाम लोगों से महबूब तर न हो जाऊँ।''

''और हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से मरवी एक रिवायत में है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़ए कुदरत में मेरी जान है! (इस के बाद साबिक़ा अल्फाज़े हदीस हैं)।''

٥ / ٥. عَنْ أَنَسٍ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَا يُؤْمِنُ عَبْدٌ

الحديث رقم ٤: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: الإيمان، باب: حُبُّ الرَّسُوْلِ ﷺ مِنَ الإِيْمَانِ، ١ / ١٤، الرقم:١٥، ومسلم فى الصحيح، كتاب: الإيمان، باب: وجوب محبّة رسول الله ﷺ أكثر من الأهل والولد والوالد والناس أجمعين، ١ / ٦٧، الرقم: ٤٤.

(١) أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: الإِيْمَانِ، باب: حُبُّ الرَّسُوْلِ ﷺ مِنَ الإِيْمَانِ، ١ / ١٤، الرقم:١٤.

الحديث رقم ٥: أخرجه مسلم فى الصحيح، كتاب: الإيمان، باب: وجوب محبة ←

(وَفِي حَدِيْثِ عَبْدِ الْوَارِثِ: الرَّجُلِ) حَتّٰى أَكُوْنَ أَحَبَّ إِلَيْهِ مِنْ أَهْلِهِ وَمَالِهِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِيْنَ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ.

''हज़रत अनस ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : कोई बन्दा मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि मैं उस के नज़दीक उसके घर वालों, उसके माल और तमाम लोगों से महबूब तर न हो जाऊँ।''

٦/٦. عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ هِشَامٍ ﷺ قَالَ: كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ، وَهُوَ آخِذٌ بِيَدِ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ، فَقَالَ لَهُ عُمَرُ: يَا رَسُوْلَ اللهِ، لَأَنْتَ أَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ إِلَّا مِنْ نَفْسِي، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: لَا، وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ، حَتّٰى أَكُوْنَ أَحَبَّ إِلَيْكَ مِنْ نَفْسِكَ. فَقَالَ لَهُ عُمَرُ: فَإِنَّهُ الْآنَ، وَاللهِ، لَأَنْتَ أَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ نَفْسِي، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: الْآنَ يَا عُمَرُ.

رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ.

''हज़रत अब्दुल्लाह बिन हिशाम ﷺ से मरवी है कि हम हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के साथ थे और आप ﷺ ने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब ﷺ का हाथ पकड़ा हुआ था। हज़रत उमर ﷺ ने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह ! आप मुझे अपनी जान के सिवा हर चीज़ से ज़्यादा महबूब हैं, इस पर हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया, नहीं, क़सम है उस ज़ात की जिसके कब्ज़ए कुदरत में मेरी जान है ! जब तक मैं तुम्हें अपनी जान से भी महबूब तर न हो जाऊँ (तुम उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकते)। हज़रत उमर ﷺ ने अर्ज़ किया : अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की

.........رسول الله ﷺ أكثر من الأهل والولد والوالد والناس أجمعين وإطلاق عدم الإيمان على من لم يحبه هذه المحبة، ١/٦٧، الرقم: ٤٤، وأحمد بن حنبل مثله فی المسند، ٥/١٦٢، الرقم: ٢١٤٨٠، وأبويعلى فی المسند، ٧/٦، الرقم: ٣٨٩٥، والبيهقی فی شعب الإيمان، ٢/١٢٩، الرقم: ١٣٧٥، وابن حيان فی العظمة، ٥/١٧٨٠، الرقم: ٢٨٢٤، والديلمی فی مسند الفردوس، ٤/٥٣، الرقم: ٦١٦٩، وابن منصور فی كتاب السنن، ٢/٢٠٤، الرقم: ٢٤٤٣.

الحديث رقم ٦: أخرجه البخاری فی الصحيح، كتاب: الأَيْمَانِ وَالنُّذُوْرِ، باب: كَيْفَ كَانَتْ يَمِيْنُ النَّبِيِّ ﷺ، ٦/٢٤٤٥، الرقم: ٦٢٥٧.

क़सम, अब आप मुझे अपनी जान से भी ज़्यादा महबूब हैं, चुनान्चे हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया, ऐ उ़मर! अब (तुम्हारा ईमान कामिल हुआ) है।''

٧/٧. عَنْ أَبِي أُمَامَةَ رضي الله عنه، قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ أَحَبَّ لِلّٰهِ، وَأَبْغَضَ لِلّٰهِ، وَأَعْطَى لِلّٰهِ، وَمَنَعَ لِلّٰهِ، فَقَدِ اسْتَكْمَلَ الإِيْمَانَ.

رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ وَالْحَاكِمُ.

وَقَالَ الْحَاكِمُ: هٰذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत अबू उमामा رضي الله عنه से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : जिस शख़्स ने अल्लाह तआ़ला के लिये मुहब्बत की, अल्लाह तआ़ला के लिए अ़दावत रखी, अल्लाह तआ़ला के लिए दिया और अल्लाह तआ़ला के लिए देने से हाथ रोक लिया, पस उसने अपना ईमान मुकम्मल कर लिया है।''

٨/٨. عَنْ مُعَاذٍ رضي الله عنه قَالَ: كُنْتُ رِدْفَ النَّبِيِّ ﷺ عَلَى حِمَارٍ يُقَالُ لَهُ عُفَيْرٌ، فَقَالَ: يَا مُعَاذُ، هَلْ تَدْرِي حَقَّ اللهِ عَلَى عِبَادِهِ، وَمَا حَقُّ الْعِبَادِ عَلَى اللهِ. قُلْتُ: اَللهُ وَرَسُوْلُهُ أَعْلَمُ، قَالَ: فَإِنَّ حَقَّ اللهِ عَلَى الْعِبَادِ أَنْ يَعْبُدُوْهُ، وَلَا يُشْرِكُوْا بِهِ شَيْئًا، وَحَقَّ الْعِبَادِ عَلَى اللهِ أَنْ لَا يُعَذِّبَ مَنْ لَا يُشْرِكُ بِهِ شَيْئًا. فَقُلْتُ: يَا رَسُوْلَ اللهِ، أَفَلَا أُبَشِّرُ بِهِ النَّاسَ؟ قَالَ: لَا تُبَشِّرْهُمْ فَيَتَّكِلُوْا. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत मआ़ज़ رضي الله عنه रिवायत करते हैं कि मैं हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के पीछे

الحديث رقم ٧: أخرجه أبوداود في السنن، كتاب: السنة، باب: الدليل على زيادة الإيمان ونقصانه ٤/٢٢٠، الرقم: ٤٦٨١، والحاكم فى المستدرك، ٢/١٧٨ الرقم: ٢٦٩٤، والطبراني فى المعجم الأوسط، ٩/٤١، الرقم: ٩٠٨٣.

الحديث رقم ٨: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: الجهاد، باب: اسم الفَرَسِ والحمار، ٣/١٠٤٩، الرقم: ٢٧٠١، وفى كتاب: اللباس، باب: إرداف الرّجُلِ خلف الرجلِ، ٥/٢٢٢٤، الرقم: ٥٦٢٢، وفى كتاب: الاستئذان، باب: مَن أجاب ←

ज़ुफ़ैर नामी गधे पर सवार था कि आप ﷺ ने फरमायाः ऐ मुआज़! क्या तुम्हें मालूम है बन्दों पर अल्लाह तआला का क्या हक़ है, और अल्लाह तआला का बन्दों पर क्या हक़ है? मैंने अर्ज़ कियाः अल्लाह तआला और उसका रसूल ﷺ बेहतर जानते हैं। आप ﷺ ने फरमायाः बन्दों पर अल्लाह तआला का हक़ ये है कि वो सिर्फ़ उसी की इबादत करें और उसके साथ किसी को शरीक ना बनाएं, और अल्लाह तआला पर बन्दों का हक़ यह है कि जो शख़्स शिर्क न करे वो उसे अज़ाब न दे। मैंने अर्ज़ कियाः या रसूलुल्लाह! क्या मैं ये ख़ुश–ख़बरी लोगों तक न पहुँचाऊँ? आप ﷺ ने फरमायाः नहीं। उन्हें ये ख़ुश–ख़बरी मत दो कि फिर वो उसी पर भरोसा कर के बैठ रहेंगे (और अमल में कोताही करेंगे)।''

٩/ ٩- عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ ﷺ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ وَمُعَاذٌ رَدِيفُهُ عَلَى الرَّحْلِ، قَالَ: يَا مُعَاذُ ابْنَ جَبَلٍ، قَالَ: لَبَّيْکَ يَا رَسُوْلَ اللهِ وَسَعْدَيْکَ، قَالَ: يَا مُعَاذُ، قَالَ: لَبَّيْکَ يَا رَسُوْلَ اللهِ وَسَعْدَيْکَ، ثَـلَاثًا، قَالَ: مَا مِنْ أَحَدٍ يَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ وَ أَنَّ مُحَمَّدًا رَسُوْلُ اللهِ صِدْقًا مِنْ قَلْبِهِ إِلَّا حَرَّمَهُ اللهُ عَلَى النَّارِ. قَالَ: يَا رَسُوْلَ اللهِ، أَفَـلَا أُخْبِرُ بِهِ النَّاسَ فَيَسْتَبْشِرُوْا؟ قَالَ: إِذًا يَتَّكِلُوْا. وَ أَخْبَرَ بِهَا مُعَاذٌ عِنْدَ مَوْتِهِ تَأَثُّمًا.

مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

.... بَلبّيك وسعديك، ٥/ ٢٣١٢، الرقم: ٥٩١٢، وفى كتاب: الرقاق، باب: من جاهد نفسه فى طاعة الله، ٥/ ٢٣٨٤، الرقم: ٦١٣٥، وفى كتاب: التوحيد، باب: ماجاء فى دُعَاءِ النَّبِي ﷺ أُمَّتَهُ إلى توحيد الله تبارك وتعالى، ٦/ ٢٦٨٥، الرقم: ٢٩٣٨، ومسلم فى الصحيح، كتاب: الإيمان، باب: الدليل على أن من مات على التوحيد دخل الجنة، ١/ ٥٨- ٥٩، الرقم: ٣٠، والترمذى فى السنن، كتاب: الإيمان عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء فى افتراق هذه الأمة، ٥/ ٢٦، الرقم: ٢٦٤٣، وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ. وابن ماجه فى السنن، كتاب: الزهد، باب: ما يرجى من رحمة الله يوم القيامة، ٢/ ١٤٣٥، الرقم: ٤٢٩٦، والنسائى فى السنن الكبرى، ٣/ ٤٤٣، الرقم: ٥٨٧٧.

الحديث رقم ٩: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: العلم، باب: مَن خصَّ بالعلم قوما دون قومٍ، كراهيةَ أن لَا يَفْهَمُوا، ١/ ٥٩، الرقم: ١٢٨، ومسلم فى الصحيح، ←

''हज़रत अनस ﷺ रिवायत करते हैं कि एक मौके पर जबकि हज़रत मुआज़ ﷺ हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की सवारी पर आप ﷺ के पीछे सवार थे, हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने (हजरत मुआज़ से) फरमायाः ऐ मुआज़ बिन जबल ! हज़रत मुआज़ ﷺ ने अ़र्ज़ कियाः या रसूलल्लाह ﷺ मैं हाजिर हूँ। हज़रत अनस ﷺ कहते हैं कि तीन बार हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने हज़रत मुआज़ को मुख़ातिब किया और हर मर्तबा हज़रत मुआज़ ﷺ ने यही अल्फ़ाज़ दोहराये। तीसरी मर्तबा आप ﷺ ने फरमाया, जो कोई सच्चे दिल से इस बात की शहादत दे कि अल्लाह तआला के सिवा कोई माबूद नहीं और मुहम्मद मुस्तफा अल्लाह तआला के रसूल हैं, अल्लाह तआला उस पर दौज़ख़ की आग हराम कर देगा। हज़रत मुआज़ ﷺ ने अ़र्ज़ कियाः या रसूलुल्लाह ﷺ ! क्या मैं इस बात से लोगों को मुत्तला न कर दूँ कि वो खुश हो जाएं? आप ﷺ ने फरमायाः नहीं! अगर तुम उन्हें ये बात बता दोगे तो वो इसी पर भरोसा कर के बैठ रहेंगे (और अ़मल में कोताही करेंगे) चुनान्चे हज़रत मुआज़ ﷺ ने ये हदीस अपने इन्तिक़ाल के वक़्त बयान की ताकि हदीस बयान न करने की वजह से गुनाहगार ना हों।''

.... كتاب: الإيمان، باب: الدليل على أن من مات على التوحيد دخل الجنة قطعا، ١/٦١، الرقم: ٣٢، والبيهقى فى شعب الإيمان، ١/١٤٧، الرقم: ١٢٥، واللالكائي فى اعتقاد أهل السنة، ٤/٨٤١، الرقم: ١٥٦٤، وابن منده فى الإيمان، ١/٢٣٤، الرقم: ٩٣، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٢/٢٦٦، الرقم: ٢٣٤٤.

فَصْلٌ فِي حَقِيْقَةِ الإِيْمَانِ

﴾हक़ीक़ते ईमान का बयान﴿

١٠/ ١٠۔ عَنْ عَبْدِ السَّلَامِ بْنِ صَالِحٍ أَبِي الصَّلْتِ الْهَرَوِيِّ عَنْ عَلِيِّ بْنِ مُوْسَى الرِّضَا، عَنْ أَبِيْهِ، عَنْ جَعْفَرِ بْنِ مُحَمَّدٍ، عَنْ أَبِيْهِ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ الْحُسَيْنِ، عَنْ أَبِيْهِ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ رضي الله عنه، قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: الإِيْمَانُ مَعْرِفَةٌ بِالْقَلْبِ وَقَوْلٌ بِاللِّسَانِ وَعَمَلٌ بِالْأَرْكَانِ. قَالَ أَبُو الصَّلْتِ: لَوْ قُرِئَ هَذَا الإِسْنَادُ عَلَى مَجْنُوْنٍ لَبَرَأَ.

رَوَاهُ ابْنُ مَاجَه وَالطَّبَرَانِيُّ وَالْبَيْهَقِيُّ.

''इमाम अब्दुस्सलाम बिन सालेह अबिस–सल्त अल हरवी इमाम अली बिन मूसा अर्रिज़ा से वो अपने वालिद (इमाम मूसा रज़ा) से वो इमाम जाफ़र बिन मुहम्मद से वो अपने वालिद (इमाम मुहम्मद अल बाक़र) से वो इमाम अ़ली बिन हुसैन से वो अपने वालिद (इमाम हुसैन عليه السلام) से वो (अपने वालिद) हज़रत अ़ली बिन अबू तालिब رضي الله عنه से रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः ईमान दिल से पहचानने, ज़ुबान से इक़रार करने और अरकान पर अ़मल करने का नाम है। (इमाम इब्ने माजा के शैख़) इमाम अबू सल्त हरवी फरमाते हैं कि अगर यह सनद (﴾عَنْ عَلِيِّ بْنِ مُوْسَى الرِّضَا، عَنْ أَبِيْهِ، عَنْ جَعْفَرِ بْنِ مُحَمَّدٍ، عَنْ أَبِيْهِ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ الْحُسَيْنِ، عَنْ أَبِيْهِ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ رضي الله عنه﴿) किसी पागल पर पढ़ कर दम कर दी जाए तो वो ठीक हो जाए।''

١١/ ١١۔ عَنِ الْحَارِثِ بْنِ مَالِكٍ الْأَنْصَارِيِّ رضي الله عنه أَنَّهُ مَرَّ بِرَسُوْلِ

الحديث رقم ١٠: أخرجه ابن ماجه فى السنن، المقدمة، باب: فى الإيمان، ١/ ٢٥، الرقم: ٦٥، والطبرانى فى العمجم الأوسط، ٦/ ٢٢٦، الرقم: ٦٢٥٤، ٨/ ٢٦٢، الرقم: ٨٥٨٠، والبيهقى فى شعب الإيمان، ١/ ٤٧، الرقم: ١٦، والمروزى فى تعظيم قدر الصلاة، ٢/ ٧٤٢، والسيوطى فى شرحه سنن ابن ماجه، ١/ ٨، الرقم: ٦٥، وابن القيم فى حاشية على سنن أبى داود، ٢/ ٢٩٤۔

الحديث رقم ١١: أخرجه الطبرانى فى المعجم الكبير، ٣/ ٢٦٦، الرقم: ٣٣٦٧، والبيهقى فى شعب الإيمان، ٧/ ٣٦٢، الرقم: ١٠٥٩٠۔١٠٥٩١، وابن أبى شيبة ←

اللهِ ﷺ، فَقَالَ لَهُ: كَيْفَ أَصْبَحْتَ يَا حَارِثُ، قَالَ: أَصْبَحْتُ مُؤْمِنًا حَقًّا. فَقَالَ: انْظُرْ مَا تَقُوْلُ، فَإِنَّ لِكُلِّ شَيءٍ حَقِيْقَةً، فَمَا حَقِيْقَةُ إِيْمَانِکَ؟ فَقَالَ: عَزَفَتْ نَفْسِي عَنِ الدُّنْيَا وَأَسْهَرْتُ لِذَالِکَ لَيْلِي وَاظْمَأَنَّ نَهَارِي، وَكَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَى عَرْشِ رَبِّي بَارِزًا (وفي رواية: قَالَ عَزَفَتْ نَفْسِي عَنِ الدُّنْيَا وَأَسْهَرْتُ لَيْلِي وَاظْمَأْتُ نَهَارِي وَكَأَنِّي أَنْظُرُ عَرْشَ رَبِّي بَارِزًا) وَكَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَى أَهْلِ الْجَنَّةِ يَتَزَاوَرُوْنَ فِيْهَا، وَكَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَى أَهْلِ النَّارِ يَتَضَاغُوْنَ فِيْهَا. قَالَ: يَا حَارِثُ، عَرَفْتَ فَالْزَمْ، ثَلَاثًا.

رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ وَالْبَيْهَقِيُّ وَابْنُ أَبِي شَيْبَةَ.

وفي رواية: عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ ﷺ: فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: أَصَبْتَ فَالْزَمْ، مُؤْمِنٌ نَوَّرَ اللهُ قَلْبَهُ. رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ وَابْنُ أَبِي شَيْبَةَ وَالْهَيْثَمِيُّ وَاللَّفْظُ لَهُ.(1)

''हज़रत हारिस बिन मालिक अन्सारी ﷺ से मरवी है कि एक मर्तबा वो हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के पास से गुजरे तो आप ﷺ ने इन्हें फरमायाः ऐ हारिस! तूने कैसे सुबह की ? उन्होंने अ़र्ज़ कियाः मैंने सच्चे मोमिन की तरह (यानी हक़ीक़ते ईमान के साथ) सुबह की, हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया, यकीनन हर एक शै की कोई न कोई हक़ीक़त होती है, सो तुम्हारे ईमान की हक़ीक़त क्या है ? अ़र्ज़ किया (या रसूलुल्लाह !) मेरा नफ़्स दुनिया से बेरग़बत हो गया है और इसी वजह से अपनी रातों में बेदार और दिन में (दीदारे ईलाही की तलब

.... فى المصنف، ٦/١٧٠، الرقم: ٣٠٤٢٣، وعبد بن حميد فى المسند، ١/١٦٥، الرقم: ٤٤٥، والهيثمى فى مجمع الزوائد، ١/٥٧، وقال: رواه البزار، وابن رجب فى جامع العلوم والحكم، ١/٣٦۔

(١) أخرجه ابن أبى شيبة فى المصنف، ٦/١٧٠، الرقم: ٣٠٤٢٥، والبيهقى فى شعب الإيمان، ٧/٣٦٣، الرقم: ١٠٥٩٢، وفى كتاب الزهد الكبير، ٢/٣٥٥، الرقم: ٩٧٣، وابن المبارك فى الزهد، ١/١٠٦، الرقم: ٣١٤، والهيثمى فى مجمع الزوائد، ١/٥٧، وقال الهيثمى: رواه البزار۔

में) प्यासा रहता हूँ और हालत यह है गोया मैं अपने रब के अ़र्श को सामने ज़ाहिर देख रहा हूँ और अहले जन्नत को एक दूसरे से मिलते हुए देख रहा हूँ और दोज़ख़ियों को तकलीफ़ से चिल्लाते देख रहा हूँ। हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः ऐ हारिस ! तूने (हक़ीक़ते ईमान को) पहचान लिया। अब (इससे) चिमट जा। यह कलिमा आप ﷺ ने तीन बार फरमाया।''

''और यही रिवायत हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ से इन अल्फ़ाज़ के इज़ाफ़े के साथ मरवी हैः हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः तूने हक़ीक़त को पा लिया, पस इस हालत को क़ायम रखना, तू वो मोमिन है जिसके दिल को अल्लाह तआ़ला ने नूर से भर दिया है।''

١٢/١٢ـ عَنْ عَمْرِو بْنِ الْجَمُوْحِ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَا يُحِقُّ الْعَبْدُ حَقِيقَةَ الإِيْمَانِ حَتَّى يَغْضَبَ لِلّٰهِ وَيَرْضَى لِلّٰهِ، فَإِذَا فَعَلَ ذٰلِکَ اسْتَحَقَّ حَقِيْقَةَ الإِيْمَانِ، وَإِنَّ أَحِبَّائِي وَأَوْلِيَائِي الَّذِيْنَ يُذْكَرُوْنَ بِذِكْرِي وَأُذْكَرُ بِذِكْرِهِمْ. رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالطَّبَرَانِيُّ وَاللَّفْظُ لَهُ.

''हज़रत अम्र बिन जमूह ﷺ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः बन्दा उस वक़्त तक ईमान की हक़ीक़त को नहीं पा सकता जब तक कि वो अल्लाह तआ़ला के लिए ही (किसी से) नाराज़ और अल्लाह तआ़ला के लिए ही (किसी से) राज़ी न हो (यानी उसकी रज़ा का मर्कज़ व महवर फ़क़त खुशनूदीए ज़ात–ए–इलाही हो जाए) और जब इस ने यह काम कर लिया तो उसने ईमान की हक़ीक़त को पा लिया, और बेशक मेरे अहबाब और औलिया वो लोग हैं कि मेरा ज़िक्र करने से वो याद आ जाते हैं और उनका ज़िक्र करने से मैं याद आ जाता हूँ। (मेरे ज़िक्र से उन की याद आ जाती है और उनके ज़िक्र से मेरी याद आ जाती है यानी मेरा ज़िक्र उनका ज़िक्र है और उनका ज़िक्र मेरा ज़िक्र है)।''

الحديث رقم ١٢: أخرجه أحمد بن حنبل فى المسند، ٣/٤٣٠، الرقم: ١٥٦٣٤، والطبرانى فى المعجم الأوسط، ١/٢٠٣، الرقم: ٦٥١، وابن أبي الدنيا فى كتاب الأولياء، ١/١٥، الرقم: ١٩، والديلمى فى مسند الفردوس، ٥/١٥٢، الرقم: ٧٧٨٩، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٤/١٤، الرقم: ٤٥٨٩، وابن رجب فى جامع العلوم والحكم، ١/٣٦٥، والهيثمى فى مجمع الزوائد، ١/٥٨ـ

١٣ / ١٣۔ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ ﷺ، قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَا يَسْتَقِيْمُ إِيْمَانُ عَبْدٍ حَتَّى يَسْتَقِيْمَ قَلْبُهُ، وَلَا يَسْتَقِيْمُ قَلْبُهُ حَتَّى يَسْتَقِيْمَ لِسَانُهُ، وَ لَا يَدْخُلُ (الْجَنَّةَ رَجُلٌ) لَا يَأْمَنُ جَارُهُ بَوَائِقَهُ.

رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالْبَيْهَقِيُّ.

''हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी-ए-अकरम ﷺ ने फरमायाः किसी बन्दे का ईमान उस वक़्त तक दुरुस्त नहीं होता जब तक उसका दिल दुरुस्त न हो और दिल उस वक़्त तक दुरुस्त नहीं होता जब तक उसकी ज़ुबान दुरुस्त न हो जाए, और कोई भी शख़्स उस वक़्त तक जन्नत में दाखिल नहीं हो सकता जब तक कि उस का पड़ौसी उस की अज़िय्यत से महफ़ूज़ ना हो जाए।''

١٤ / ١٤۔ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: ثَلَاثٌ مِنْ أَخْلَاقِ الإِيْمَانِ: مَنْ إِذَا غَضِبَ لَمْ يُدْخِلْهُ غَضَبُهُ فِي بَاطِلٍ، وَمَنْ إِذَا رَضِيَ لَمْ يُخْرِجْهُ رِضَاهُ مِنْ حَقٍّ، وَمَنْ إِذَا قَدَرَ لَمْ يَتَعَاطَ مَا لَيْسَ لَهُ.

رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ.

''हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी-ए-अकरम ﷺ ने फरमायाः तीन चीज़ें अख़्लाक़ ईमान में से हैंः जब किसी को गुस्सा आए तो वो गुस्सा उसे (अमल) बातिल में न डाल दे, और जब कोई ख़ुश हो तो वो खुशी उसे हक़ से निकाल न दे, और वो शख़्स जो कुदरत रखता है मगर फिर भी वो चीज़ नहीं लेता जो उस की नहीं है।''

الحديث رقم ١٣: أخرجه أحمد بن حنبل فى المسند، ٣ / ١٩٨، الرقم: ١٣٠٧١، والبيهقى فى شعب الإيمان، ١ / ٤١، الرقم: ٨، والقضاعى فى مسند الشهاب، ٢ / ٦٢، الرقم: ٨٨٧، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٣ / ٢٤٠، الرقم: ٣٨٦٠، وابن رجب فى جامع العلوم والحكم، ١ / ٧٥، والهيثمى فى مجمع الزوائد ووثّقه، ١ / ٥٣۔

الحديث رقم ١٤: أخرجه الطبرانى فى المعجم الصغير، ١ / ١١٤، الرقم: ١٦٤، والديلمى فى مسند الفردوس، ٢ / ٨٧، الرقم: ٢٤٦٦، والهيثمى فى مجمع الزوائد، ١ / ٥٩، وابن رجب فى جامع العلوم والحكم، ١ / ١٤٨۔

فَصْلٌ فِي عَـلامَاتِ الْمُؤْمِنِ وَ أَوْصَافِهِ

मोमिन की अ़लामात और सिफात का बयान

١٥/١٥۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ، قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ فَلا يُؤْذِ جَارَهُ، وَمَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ فَلْيُكْرِمْ ضَيْفَهُ، وَمَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ فَلْيَقُلْ خَيْرًا أَوْ لِيَصْمُتْ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ وَهَذَا لَفْظُ الْبُخَارِيِّ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जो अल्लाह ﷻ पर और क़यामत के दिन पर ईमान रखता है अपने हमसाए को न सताए, और जो अल्लाह ﷻ और क़यामत के दिन पर ईमान रखता है अपने मेहमान की इज़्ज़त करे, और जो अल्लाह ﷻ और क़यामत के दिन पर ईमान रखता है मुँह से अच्छी बात निकाले या ख़ामोश रहे।''

الحديث رقم ١٥: أخرجه البخاري فى الصحيح، كِتاب: الْأَدَبِ، باب: مَن كَانَ يُؤْمِنَ بِالله وَالْيَوْمِ الآخِرِ فَلَا يُؤْذِ جَارَهُ، ٥/٢٢٤٠، الرقم: ٥٦٧٢، وَ فِى كِتاب الْأَدَبِ، باب: إِكْرَامِ الضَّيْفِ وَ خِدْمَتِهِ إِيَّاهُ بِنَفْسِهِ، ٥/٢٢٧٣، الرقم: ٥٧٨٥، وفى كتاب: الرِّقَاقِ، باب: حِفْظِ اللِّسَانِ، ٥/٢٣٧٦، الرقم: ٦١١٠، ومسلم فى الصحيح، كتاب: الإيمان، باب: الحث على إكرام الجار والضيف ولزوم الصمت إلا عن الخير، ١/٦٩٦٨، الرقم: ٤٧-٤٨، والترمذى فى السنن، كتاب: الصفة والرقائق والورع عن رسول الله ﷺ، باب: (٥٠)، ٤/٦٥٩، الرقم: ٢٥٠٠، وقال أبوعيسى: هذا حديث صحيح، وفى الباب: عن عَائِشَةَ وَ أَنَسٍ وَ أَبِى شُرَيْحٍ الْعَدَوِيِّ الْكَعْبِيِّ الْخَزَاعِيِّ وإسمُهُ خُوَيْلَدُ بْنُ عَمْرٍو، وأبو داود فى السنن، كتاب: الأدب، باب: فى حق الجوار، ٤/٣٣٩، الرقم: ٥١٥٤، وابن ماجه فى السنن، كتاب: الأدب، باب: حق الجوار، ٢/١٢١١، الرقم: ٣٦٧٢، وابن حبان فى الصحيح، ٢/٢٧٣، الرقم: ٥١٦، والدارمى فى السنن، ٢/١٣٤، الرقم: ٢٠٣٦۔

١٦/ ١٦۔ عَنْ أَبِي مُوْسَى ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَلْمُؤْمِنُ لِلْمُؤْمِنِ كَالْبُنْيَانِ يَشُدُّ بَعضُهُ بَعْضًا، وَ شَبَّکَ بَيْنَ أَصَابِعِهِ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अबू मूसा (अशअरी) ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी-ए-अकरम ﷺ ने फरमाया एक मोमिन दूसरे मोमिन के लिए एक (मज़बूत) दीवार की तरह है जिस का एक हिस्सा दूसरे हिस्से को मज़बूत करता है, और (इस बात की वज़ाहत के तौर पर) आप ﷺ ने अपने दोनों हाथों की उंगलियाँ एक दूसरे में डालीं।''

١٧/ ١٧۔ عَنْ أَنَسٍ ﷺ: عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: لَا يُؤْمِنُ أَحَدُكُمْ حَتَّى يُحِبَّ لِأَخِيْهِ مَا يُحِبُّ لِنَفْسِهِ.

مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ وزاد مسلم: أَوْ قَالَ لِجَارِهِ.

الحديث رقم ١٦: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتابُ: المَظَالِمِ، باب: نَصرِ المَظْلُوْمِ، ٢/ ٨٦٣، الرقم: ٢٣١٤، وفى كتاب: الصلاة، باب: تشبيك الأصابع فى المسجد وغيره، ١/ ١٨٢، الرقم: ٤٦٧، وفى كتاب: الأدب، باب: تعاون المؤمنين بعضهم بعضا، ٥/ ٢٢٤٢، الرقم: ٥٦٨٠، ومسلم فى الصحيح، كتاب: البر والصلة والآدب، باب: تراحم المؤمنين وتعاطفهم وتعاضدهم، ٤/ ١٩٩٩، الرقم: ٢٥٨٥، والترمذى فى السنن، كتاب: البر والصلة عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء فى شفقة المسلم على المسلم، ٤/ ٣٢٥، الرقم: ١٩٢٨، والنسائى فى السنن، كتاب: الزكاة، باب: أجر الخازن إذا تصدق بإذن مولاه، ٥/ ٧٩، الرقم: ٢٥٦٠، وابن حبان فى الصحيح، ١/ ٤٦٧، الرقم: ٢٣١، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٤/ ٤٠٤.

الحديث رقم ١٧: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: الإِيْمَانِ، باب: مِنَ الْإِيْمَانِ أَنْ يُحِبَّ لِأَخِيْهِ مَا يُحِبُّ لِنَفْسِهِ، ١/ ١٤، الرقم: ١٣، ومسلم فى الصحيح، كتاب: الإيمان، باب: الدليل على أن من خصال الإيمان أن يحب لأخيه المسلم ما يحب لنفسه من الخير، ١/ ٦٧، الرقم: ٤٥، والترمذى فى السنن، كتاب: صفة القيامة والرقائق والورع عن رسول الله ﷺ، باب: (٥٩)، ٤/ ٦٦٧، الرقم: ٢٥١٥، والنسائى فى السنن، كتاب: الإيمان وشرائعه، باب: علامة الإيمان، ٨/ ١١٥، الرقم: ٥٠١٦، وابن ماجه في السنن، المقدمة، باب: فى الإيمان، ١/ ٢٦، الرقم: ٦٦۔

''हज़रत अनस बिन मालिक ؓ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः तुम में से कोई उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक वो अपने भाई के लिये भी वही पसन्द न करे जो अपने लिये पसन्द करता है। (और मुस्लिम ने यह ईज़ाफ़ा कियाः) या हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : अपने पड़ौसी के लिये।''

١٨ / ١٨۔ عَنْ أَبِي شُرَيْحٍ ؓ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: وَاللهِ لَا يُؤْمِنُ، وَاللهِ لَا يُؤْمِنُ، وَاللهِ لَا يُؤْمِنُ، قِيْلَ :مَنْ يَا رَسُوْلَ اللهِ؟ قَالَ: الَّذِى لَا يَأْمَنُ جَارُهُ بَوَائِقَهُ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अबू शुरैह ؓ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः ख़ुदा की क़सम ! वो मोमिन नहीं, ख़ुदा की क़सम ! वो मोमिन नहीं, ख़ुदा की क़सम ! वो मोमिन नहीं, अर्ज़ किया गयाः या रसूलल्लाह ! कौन (मोमिन नहीं) ? आप ﷺ ने फरमायाः जिसका पड़ौसी उसकी ईज़ा रसानी (तकलीफ पहुँचाने) से महफूज नहीं।''

١٩ / ١٩۔ عَنِ النُّعْمَانِ بْنِ بَشِيْرٍ رضي الله عنهما قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَثَلُ الْمُؤْمِنِيْنَ فِي تَوَادِّهِمْ وَتَرَاحُمِهِمْ وَتَعَاطُفِهِمْ مَثَلُ الْجَسَدِ، إِذَا اشْتَكَى مِنْهُ عُضْوٌ تَدَاعَى لَهُ سَائِرُ الْجَسَدِ بِالسَّهَرِ وَالْحُمَّى.

مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ وَ هَذَا لَفْظُ مُسْلِمٍ.

الحديث رقم ١٨: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتابُ: الأَدَبِ، باب: إِثْمِ مَن لَا يَأْمَنُ جَارُهُ بَوَائِقَهُ، ٥ / ٢٢٤٠، الرقم: ٥٦٧٠، ومسلم فى الصحيح، كتاب: الإيمان، باب: بيان تحريم ايذاء الجار، ١ / ٦٨، الرقم: ٤٦، والحاكم فى المستدرك، ١ / ٥٣، الرقم: ٢١، وقال الحاكم: هذا حديث صحيح.

الحديث رقم ١٩: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: الأدب، باب: رَحْمَةِ النَّاسِ وَ البَهَائِمِ، ٥ / ٢٢٣٨، الرقم، ٥٦٦٥، ومسلم فى الصحيح، كتاب: البر والصلة والآداب، باب: تراحم المؤمنين وتعاطفهم وتعاضدهم، ٤ / ١٩٩٩، الرقم: ٢٥٨٦، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٤ / ٢٧٠، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٣ / ٣٥٣، الرقم: ٦٢٢٣، وفى شعب الإيمان، ٦ / ٤٨١، الرقم: ٨٩٨٥، والبزار فى المسند، ٨ / ٢٣٨، الرقم: ٣٢٩٩، وابن منده فى: الإيمان، ١ / ٤٥٥، الرقم: ٣١٩، وابن سليمان القرشى فى من حديث خيثمة، ١ / ٧٤.

''हज़रत नौमान बिन बशीर रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः मोमिनीन की मिसाल एक दूसरे पर रहम करने, दोस्ती रखने और शफ़क़त का मुज़ाहिरा करने में एक जिस्म की तरह है, चुनान्चे जब जिस्म के किसी भी हिस्से को तकलीफ़ पहुँचती है तो सारा जिस्म बेख़्वाबी व बुख़ार में उसका शरीक होता है।''

٢٠ / ٢٠۔ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ رضي الله عنهما يَقُوْلُ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: تَدْرُونَ مَنِ الْمُؤْمِنُ؟ قَالُوْا: اَللهُ وَرَسُوْلُهُ أَعْلَمُ. قَالَ: مَنْ أَمِنَهُ الْمُؤْمِنُوْنَ عَلَى أَنْفُسِهِمْ وَ أَمْوَالِهِمْ، وَ الْمُهَاجِرُ مَنْ هَجَرَ السُّوْءَ فَاجْتَنَبَهُ. رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالطَّبَرَانِيُّ.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स ﷺ रिवायत करते हैं कि मैंने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ को यह फरमाते हुए सुना, क्या तुम जानते हो मोमिन कौन है ? सहाबा–ए–किराम ﷺ ने अ़र्ज़ कियाः अल्लाह ﷻ और उसके रसूल ﷺ ज़्यादा जानते हैं। आप ﷺ ने फरमायाः मोमिन वो है जिस से अहले ईमान अपनी जान व माल पर महफ़ूज हों, और मुहाजिर वो है जिस ने बुराई छोड़ दी और उससे परहेज़ किया।''

٢١ / ٢١۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ، قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَلْمُؤْمِنُ مِرْآةُ أَخِيْهِ إِذَا رَأَى فِيهِ عَيْبًا أَصْلَحَهُ.

رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ فِي الْأَدَبِ وَابْنُ الْمُبَارَكِ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः मोमिन अपने भाई का आईना है, जब वो उसमें कोई बुराई देखता है तो उस बुराई की इस्लाह कर लेता है।''

الحديث رقم ٢٠: أخرجه أحمد بن حنبل فى المسند، ٢/٢٠٦، ٢١٥، الرقم: ٦٩٢٥، ٧٠١٧، والطبراني فى المعجم الأوسط، ٣/٢٩١، الرقم: ٣١٨٨، وفى المعجم الكبير، ٣/٢٩٩، الرقم: ٣٤٦٢، والمروزى فى تعظيم قدر الصلاة، ٢/٦٠٣، الرقم: ٦٤٢۔

الحديث رقم ٢١: أخرجه البخارى فى الأدب المفرد، ١/٩٣، الرقم: ٢٣٨، وابن المبارك فى الزهد، ١/٤٨٥، الرقم: ١٣٧٨، والعسقلانى فى تهذيب التهذيب، ٥/١٨١، الرقم: ٣٥٧، والمزى فى تهذيب الكمال، ١١/٤٢٨، الرقم: ٢٥١٥، ٣٢٥٦۔

فَصْلٌ فِي الإِسْلَامِ

इस्लाम का बयान

٢٢ / ٢٢۔ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رضي الله عنهما قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: بُنِيَ الإِسْلَامُ عَلَى خَمْسٍ: شَهَادَةِ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا رَسُوْلُ اللهِ وَإِقَامِ الصَّلَاةِ وَإِيْتَاءِ الزَّكَاةِ وَالْحَجِّ وَصَوْمِ رَمَضَانَ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर رضي الله عنهما से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः इस्लाम की बुनियाद पाँच चीज़ों पर हैः यह गवाही देना कि अल्लाह तआला के सिवा कोई माबूद नहीं और यह कि मुहम्मद ﷺ अल्लाह तआला के रसूल हैं, और नमाज़ क़ायम करना, ज़कात अदा करना, हज करना और रमज़ान के रोज़े रखना।''

٢٣ / ٢٣۔ عَنْ سَمُرَةَ رضي الله عنه قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: أَقِيْمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَحَجُّوْا وَاعْتَمِرُوْا وَاسْتَقِيْمُوا يُسْتَقَمْ بِكُمْ.

رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ فِي مَعَاجِمِهِ الثَّلَاثَةِ بِإِسْنَادٍ حَسَنٍ.

''हज़रत समुरह رضي الله عنه रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः

الحديث رقم ٢٢: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: الإيمان، باب: قول النبى ﷺ: بُنى الإسلام على خمس، ١/ ٢١، الرقم: ٨، ومسلم فى الصحيح، كتاب: الإيمان، باب: بيان أركان الإسلام ودعائمه العظام، ١/ ٤٥، الرقم: ١٦، والترمذى فى السنن، كتاب: الإيمان عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء بني الإسلام على خمس، ٥/ ٥، الرقم: ٢٦٠٩، والنسائى فى السنن، كتاب: الإيمان وشرائعه، باب: على كم بنى الإسلام، ٨/ ١٠٧، الرقم: ٥٠٠١۔

الحديث رقم ٢٣: أخرجه الطبراني في المعجم الصغير، ١/ ٩٩، الرقم: ١٣٦، وفي المعجم الأوسط، ٢/ ٢٩٨، الرقم: ٢٠٣٤، وفي المعجم الكبير، ٧/ ٢١٦، الرقم: ٦٨٩٧، والمنذري في الترغيب والترهيب، ١/ ٣٠١، الرقم: ١١١٥، وقال: رواه الطبراني في الثلاثة وإسناده جيد إن شاء الله تعالى، والهيثمي في مجمع الزوائد، ١/ ٤٥، ٣/ ٢٠٥۔

नमाज़ क़ायम करो, जक़ात अदा करो, हज और उमरह करो, इस्तिक़ामत इख़्तियार करो, तुम्हें इस्तिक़ामत दी जाएगी।''

٢٤ / ٢٤۔ عَنْ عَمْرِو بْنِ مَرَّةَ الْجُهَنِيِّ ﷺ قَالَ: جَاءَ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ رَجُلٌ مِنْ قُضَاعَةَ فَقَالَ لَهُ: يَا رَسُوْلَ اللهِ، أَ رَأَيْتَ إِنْ شَهِدْتُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ وَ أَنَّکَ رَسُوْلُ اللهِ وَ صَلَّيْتُ الصَّلَوَاتِ الْخَمْسَ وَصُمْتُ الشَّهْرَ وَقُمْتُ رَمَضَانَ وَآتَيْتُ الزَّکَاةَ. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: مَنْ مَاتَ عَلَى هَذَا کَانَ مِنَ الصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَاءِ.

رَوَاهُ ابْنُ خُزَيْمَةَ وَابْنُ حِبَّانَ وَالْبَيْهَقِيُّ.

''हज़रत उमर बिन मर्रतलजोहनी ﷺ ने बयान किया कि क़बीला क़ज़ाआ के एक शख़्स ने रसूलुल्लाह ﷺ कि ख़िदमत में हाज़िर हो कर आप ﷺ से अर्ज़ किया: या रसूलुल्लाह! आप इस बारे में क्या फरमाते हैं अगर मैं गवाही दूँ कि अल्लाह तआला के सिवा कोई माबूद नहीं और आप अल्लाह तआला के (सच्चे) रसूल हैं, पाँचों नमाज़ें पढ़ूँ, माहे रमज़ान के रोज़े भी रखूँ और इस माह में क़याम भी करूँ और जक़ात भी अदा करूँ ? तो हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया: जो शख़्स इस हालत में फ़ौत हो जाए वो (क़यामत के दिन) सिद्दीक़ों और शहीदों में से होगा।''

٢٥ / ٢٥۔ عَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: خَمْسٌ

الحديث رقم ٢٤: أخرجه ابن خزيمة في الصحيح، ٣ / ٣٤٠، الرقم: ٢٢١٢، وابن حبان في الصحيح، ٨ / ٢٢٣، الرقم: ٣٤٣٨، والبيهقي في شعب الإيمان، ٣ / ٣٠٨، الرقم: ٣٦١٧، والمنذري في الترغيب والترهيب، ١ / ١٤٥، ٣٠٢، الرقم: ٥٣١، ١١٢٠، ٢ / ٦٤، الرقم: ١٥٠٥، وقال: رواه البزار بإسناد حسن وابن خزيمة وابن حبان، والشيباني في الأحاد والمثاني، ٥ / ٢٣، الرقم: ٢٥٥٨، وابن رجب في جامع العلوم والحكم، ١ / ٢٠٨، والهيثمي في مجمع الزوائد، ١ / ٤٦، وقال: رواه البزار ورجاله رجال الصحيح، وفي موارد الظمآن، ١ / ٣٦، الرقم: ١٩۔

الحديث رقم ٢٥: أخرجه أبوداود في السنن، كتاب: الصلاة، باب: في المحافظة على وقت الصلوات، ١ / ١١٦، الرقم: ٤٢٩، والطبراني في المعجم الصغير، ←

مَنْ جَاءَ بِهِنَّ مَعَ إِيْمَانٍ دَخَلَ الْجَنَّةَ مَنْ حَافَظَ عَلَى الصَّلَوَاتِ الْخَمْسِ عَلَى وُضُوْئِهِنَّ وَرُكُوْعِهِنَّ وَسُجُودِهِنَّ وَمَوَاقِيْتِهِنَّ وَصَامَ رَمَضَانَ وَحَجَّ الْبَيْتَ إِنِ اسْتَطَاعَ إِلَيْهِ سَبِيْلًا وَأَعْطَى الزَّكَاةَ طَيِّبَةً بِهَا نَفْسُهُ وَأَدَّى الْأَمَانَةَ. رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ وَالطَّبَرَانِيُّ بِإِسْنَادٍ حَسَنٍ.

''हज़रत अबू दरदा ﷺ ने बयान किया कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः पाँच काम ऐसे हैं जिन्हें जो शख़्स भी ईमान की हालत में सर अंजाम देगा वो जन्नत में दाखिल हो जाएगा। जो शख़्स वुज़ू, रुकूअ, सुजूद और औक़ात का ख़याल रख कर पाँच वक़्त की नमाज़ की पाबन्दी करे और रमज़ान के रोज़े रखे और अगर इस्तिताअत हो तो बैतुल्लाह का हज करे और ज़कात अदा कर के अपने नफ्स की पाकीज़गी का सामान करे और अमानत अदा करे।''

٢٦ / ٢٦۔ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رضي الله عنهما قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ أَقَامَ الصَّلَاةَ وَأَتَى الزَّكَاةَ وَحَجَّ الْبَيْتَ وَصَامَ رَمَضَانَ وَقَرَى الضَّيْفَ دَخَلَ الْجَنَّةَ. رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ وَالْبَيْهَقِيُّ.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास ﷺ ने बयान किया कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमायाः जिस शख़्स ने नमाज़ क़ायम की, जक़ात अदा की, बैतुल्लाह का हज किया, रमज़ान के

.... ٢/٥٦، الرقم: ٧٧٢، والمنذري في الترغيب والترهيب، ١/١٤٨، ٣٠٠، الرقم: ٥٤٤، ١١٠٥، وقال: رواه الطبراني في الكبير بإسناد جيد، والهيثمي في مجمع الزوائد، ١/٤٧، وقال: رواه الطبراني بإسناد جيد، وابن رجب في جامع العلوم والحكم، ١/٢١٥، والمقريزي في مختصر كتاب الوتر، ١/٣٢، الرقم: ١٤، وقال: إسناده حسن.

الحديث رقم ٢٦: أخرجه الطبراني في المعجم الكبير، ١٢/١٣٦، الرقم: ١٢٦٩٢، والبيهقي في شعب الإيمان، ٧/٩٢، الرقم: ٩٥٩٣، وابن راشد في الجامع، ١١/٢٧٤، والمنذري في الترغيب والترهيب، ١/٣٠١، الرقم: ١١١٦، ٣/٢٥٢، الرقم: ٣٩١٤، وقال: رواه الطبراني في الكبير وله شواهد، والهيثمي في مجمع الزوائد، ١/٤٥.

रोज़े रखे और मेहमान नवाज़ी की वो जन्नत में दाख़िल होगा।''

٢٧ / ٢٧۔ عَنْ أُسَامَةَ بْنِ زَيْدِ بْنِ حَارِثَةَ رضي الله عنهما قَالَ: بَعَثَنَا رَسُوْلُ اللهِ ﷺ إِلَى الْحُرَقَةِ مِنْ جُهَيْنَةَ، فَصَبَّحْنَا الْقَوْمَ، فَهَزَمْنَاهُمْ، وَلَحِقْتُ أَنَا وَرَجُلٌ مِنَ الْأَنْصَارِ رَجُلًا مِنْهُمْ، فَلَمَّا غَشِيْنَا قَالَ: لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ. فَكَفَّ عَنْهُ الْأَنْصَارِيُّ، وَطَعَنْتُهُ بِرُمْحِي حَتَّى قَتَلْتُهُ. قَالَ: فَلَمَّا قَدِمْنَا، بَلَغَ ذَلِكَ النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَ لِي: يَا أُسَامَةُ! أَقَتَلْتَهُ بَعْدَ مَا قَالَ لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ؟ قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُوْلَ اللهِ؟ إِنَّمَا كَانَ مُتَعَوِّذًا، قَالَ: فَقَالَ: أَقَتَلْتَهُ بَعْدَ مَا قَالَ لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ؟ قَالَ: فَمَا زَالَ يُكَرِّرُهَا عَلَيَّ حَتَّى تَمَنَّيْتُ أَنِّي لَمْ أَكُنْ أَسْلَمْتُ قَبْلَ ذَلِكَ الْيَوْمِ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

وفي رواية: فَدَعَاهُ فَسَأَلَهُ، فَقَالَ: لِمَ قَتَلْتَهُ؟ قَالَ: يَا رَسُوْلَ اللهِ، أَوْجَعَ فِي الْمُسْلِمِيْنَ، وَقَتَلَ فُلَانًا وَفُلَانًا، وَسَمَّى لَهُ نَفَرًا. وَإِنِّي حَمَلْتُ عَلَيْهِ، فَلَمَّا رَأَى السَّيْفَ، قَالَ: لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ. قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: أَقَتَلْتَهُ؟ قَالَ: نَعَمْ: قَالَ: فَكَيْفَ تَصْنَعُ بِلَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ إِذَا جَاءَتْ يَوْمَ

الحديث رقم ٢٧: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: المغازي، باب: بَعْثُ النَّبِيِّ ﷺ أُسَامَةَ بْنَ زَيْدٍ إِلَى الْحُرُقَاتِ مِنْ جُهَيْنَةَ، ٤ / ١٥٥٥، الرقم: ٤٠٢١، وفي كتاب: الديات، باب: قَوْلِ اللهِ تَعَالَى: وَ مَنْ أَحْيَاهَا [المائدة: ٣٢]، ٦ / ٢٥١٩، الرقم: ٦٤٧٨، ومسلم في الصحيح، كتاب: الإيمان، باب: تحريم قتل الكافر بعد أن قال: لَا إِلَه إلا الله، ١ / ٩٧، الرقم: ٩٤-٩٧، وابن منده في الإيمان، ١ / ٢٠٨، ٢١٠، الرقم: ٦٣-٦٥، وَ قَالَ ابن منده: هَذَا حَدِيْثٌ مُجْمَع عَلَى صِحَّتِهِ، والبزار في المسند، ٧ / ٦٣، الرقم: ٢٦١٢، والطيالسي في المسند، ١ / ٨٧، الرقم: ٦٢٦، وأبونعيم في المسند المستخرج، ١ / ١٧١، الرقم: ٢٧٧، والعسقلاني في فتح الباري، ١٢ / ١٩٥، والعظيم آبادي في عون المعبود، ١٢ / ٤، والمباركفوري في تحفة الأحوذي، ٤ / ٥٤٧۔

الْقِيَامَةِ؟ قَالَ: يَا رَسُوْلَ اللهِ اسْتَغْفِرْلِي. قَالَ: وَكَيْفَ تَصْنَعُ بِلاَ إِلَهَ إِلَّا اللهُ إِذَا جَاءَتْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ؟ قَالَ: فَجَعَلَ لَا يَزِيْدُهُ عَلَى أَنْ يَقُوْلَ: كَيْفَ تَصْنَعُ بِلاَ إِلَهَ إِلَّا اللهُ إِذَا جَاءَتْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ؟ مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत उसामा बिन ज़ैद बिन हारिसा رضي الله عنهما रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने हमें जिहाद के लिये हुरक़ा की तरफ रवाना किया जो क़बीला जहैना की एक शाख़ है। हम सुबह वहाँ पहुँच गए और उन्हें शिकस्त दी। मैंने और एक अंसारी ने मिल कर उस क़बीले के एक शख़्स को घेर लिया, जब हम उस पर ग़ालिब आ गए तो उस ने कहाः لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ, अन्सारी तो (उसकी ज़बान से) कलिमा सुन कर अलग हो गया लेकिन मैंने उसे नेजा मार–मार कर हलाक कर डाला। जब हम वापस आए तो हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ को भी इस वाक़िये की ख़बर हो चुकी थी। हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः ऐ उसामा! तुम ने उसे कलिमा पढ़ने के बाद क़त्ल किया है? मैंने अ़र्ज़ कियाः या रसूलुल्लाह! उसने जान बचाने के लिये कलिमा पढ़ा था। आप ﷺ ने फिर फरमायाः तुमने उसे कलिमा पढ़ने के बाद क़त्ल किया? हुज़ूर ﷺ बार–बार यह कलिमात दोहरा रहे थे और मैं अफ़सोस कर रहा था कि काश आज से पहले इस्लाम न लाया होता।

''एक और रिवायत में हैः हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने हज़रत उसामा ﷺ को बुला का दरयाफ़्त किया कि तुम ने उसे क्यों क़त्ल किया? अ़र्ज़ कियाः या रसूलुल्लाह! उसने मुसलमानों को तकलीफ़ दी, चन्द सहाबा किराम का नाम ले कर बताया कि फ़लां फ़लां को उसने शहीद किया है। मैंने उस पर हमला किया जब उस ने तलवार देखी तो फ़ौरन कहा, لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमायाः तुमने उसे क़त्ल कर दिया? अ़र्ज़ कियाः जी हुज़ूर ! फरमायाः जब क़यामत के दिन لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ का कलिमा आयेगा तो तुम उस का क्या जवाब दोगे ? अ़र्ज़ कियाः या रसूलुल्लाह ! मेरे लिये इस्तग़फ़ार कीजिये। आप ﷺ ने फिर फरमायाः जब क़यामत के दिन لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ का कलिमा आएगा तो तुम उसका क्या जवाब दोगे? हुज़ूर ﷺ बार–बार यही कलिमात दोहराते रहे, कि जब क़यामत के दिन لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ का कलिमा आएगा तो उसका क्या जवाब दोगे ?''

٢٨ / ٢٨. عَنْ أَبِي سَعَيْدٍ الْخُدْرِيِّ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ:

الحديث رقم ٢٨: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: الإِيْمَانِ، باب: حُسْنِ إِسْلَامِ الْمَرْءِ، ١/ ٢٤، الرقم: ٤١، والنسائي في السنن، كتاب: الإيمان وشرائعه، باب: حسْنِ إِسْلَامِ الْمَرْءِ، ٨/ ١٠٥، الرقم: ٤٩٩٨.

إِذَا أَسْلَمَ الْعَبْدُ فَحَسُنَ إِسْلَامُهُ، يُكَفِّرُ اللهُ عَنْهُ كُلَّ سَيِّئَةٍ كَانَ زَلَفَهَا، ثُمَّ كَانَ بَعْدَ ذٰلِكَ الْقِصَاصُ: الْحَسَنَةُ بِعَشْرِ أَمْثَالِهَا إِلَى سَبْعِ مِئَةِ ضِعْفٍ، وَالسَّيِّئَةُ بِمِثْلِهَا إِلَّا أَنْ يَتَجَاوَزَ اللهُ عَنْهَا. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ وَالنَّسَائِيُّ.

''हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ रिवायत करते हैं रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमायाः जब किसी शख़्स ने इस्लाम क़ुबूल कर लिया और उसका इस्लाम ख़ूब निखरा तो अल्लाह तआला उसकी तमाम गुज़िश्ता ख़ताएं मुआफ़ फरमा देता है और फिर इस के बाद उसका बदला है, उसकी हर नेकी का बदला दस गुना से सात सौ गुना तक है और बुराई का सिर्फ़ उसी के बराबर है और अगर अल्लाह तआला चाहे तो उससे भी दरगुज़र फरमा दे।''

٢٩ / ٢٩. عَنْ عَدِيِّ بْنِ حَاتِمٍ ﷺ قَالَ: أَتَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَ: يَا عَدِيَّ بْنَ حَاتِمٍ، أَسْلِمْ تَسْلَمْ، قُلْتُ: وَ مَا الإِسْلَامُ؟ فَقَالَ: تَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ، وَأَنِّي رَسُوْلُ اللهِ، وَتُؤْمِنُ بِالْأَقْدَارِ كُلِّهَا، لِخَيْرِهَا وَشَرِّهَا، حُلْوِهَا وَ مُرِّهَا. رَوَاهُ ابْنُ مَاجَه وَ الطَّبَرَانِيُّ.

''हज़रत अदी बिन हातिम ताई ﷺ फरमाते हैं कि मैं नबी–ए–अकरम ﷺ की बारगाहे अक़दस में हाज़िर हुआ तो आप ﷺ ने फरमायाः ऐ अदी बिन हातिम ! इस्लाम कुबूल कर लो, सलामती में रहोगे। मैंने अर्ज़ कियाः इस्लाम क्या है ? आप ﷺ ने फरमायाः इस बात की गवाही दो कि अल्लाह तआला के सिवा कोई माबूद नहीं और मैं अल्लाह तआला का रसूल हूँ और तक़दीर पर ईमान लाओ, ख़्वाह भली हो या बुरी, शीरीं हो या तल्ख़।''

٣٠ / ٣٠. عَنْ مُعَاوِيَةَ بْنِ حَيْدَةَ ﷺ أَنَّهُ قَالَ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! وَالَّذِي

الحديث رقم ٢٩: أخرجه ابن ماجه فى السنن، المقدمة، باب: في القدر، ١ / ٣٤، الرقم: ٨٧، والطبرانى فى المعجم الكبير، ١٧ / ٨١، الرقم: ١٨٢، وابن أبى عاصم فى السنة، ١ / ٧٦، والهيثمي فى مجمع الزوائد، ٧ / ١٩٩، والكنانى فى مصباح الزجاجة، ١ / ١٤، الرقم: ٣٠.

الحديث رقم ٣٠: أخرجه ابن حبان فى الصحيح، ١ / ٣٧٦، ٣٧٧، الرقم: ١٦٠، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٥ / ٣، الرقم: ٢٠٠٢٢، والطبرانى في المعجم ←

بَعَثَکَ بِالْحَقِّ! مَا أَتَيْتُکَ حَتَّى حَلَفْتُ عَدَدَ أَصَابِعِي هَذِهِ أَنْ لَا آتِيَکَ فَمَا الَّذِي بَعَثَکَ بِهِ؟ قَالَ: الإِسْلَامُ. قَالَ: وَ مَا الْإِسْلَامُ؟ قَالَ: أَنْ تُسْلِمَ قَلْبَکَ لِلّٰهِ، وَأَنْ تُوَجِّهَ وَجْهَکَ لِلّٰهِ وَأَنْ تُصَلِّيَ الصَّلَاةَ الْمَکْتُوْبَةَ، وَتُؤَدِّيَ الزَّکَاةَ الْمَفْرُوْضَةَ، أَخَوَانِ نَصِيْرَانِ، لَا يَقْبَلُ اللّٰهُ مِنْ أَحَدٍ تَوْبَةً أَشْرَکَ بَعْدَ إِسْلَامِهِ. رَوَاهُ ابْنُ حِبَّانَ وَأَحْمَدُ وَالطَّبَرَانِيُّ.

''हज़रत मुआविया बिन हैदह ﷺ बयान करते हैं कि उन्होंने अ़र्ज़ किया: या रसूलुल्लाह! उस ज़ात की क़सम जिस ने आप को हक़ के साथ मबऊ़स फरमाया है ! मैं उस वक़्त तक आप के पास नहीं आया जब तक मैंने अपनी इन उंगलियों के बराबर क़सम ना खा ली कि मैं आप के पास नहीं आऊँगा, वो कौन सी चीज़ है जिसके साथ अल्लाह तआ़ला ने आप को मबऊ़स फरमाया? फरमाया: इस्लाम। अ़र्ज़ किया: इस्लाम क्या है ? आप ﷺ ने फरमाया: यह कि तू अपना दिल अल्लाह तआ़ला के सुपुर्द कर दे और अपना रुख अल्लाह तआ़ला की तरफ करले और यह कि तू फ़र्ज़ नमाज़ अदा कर और फ़र्ज़ ज़कात अदा कर, यह दोनों (नमाज व ज़कात) दो मददगार भाई हैं। अल्लाह तआ़ला किसी ऐसे शख़्स की तौबा क़ुबूल नहीं फरमाता जिस ने इस्लाम लाने के बाद शिर्क किया।''

٣١/٣١۔ عَنْ أَبِي أَيُّوبَ الْأَنْصَارِيِّ ﷺ أَنَّ رَجُلًا قَالَ لِلنَّبِيِّ ﷺ: أَخْبِرْنِي بِعَمَلٍ يُدْخِلُنِي الْجَنَّةَ، قَالَ الْقَوْمُ: مَا لَهُ مَا لَهُ! وَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ:

.... الكبير، ١٩/٤٢٦، الرقم: ١٠٣٦، وابن رجب في جامع العلوم والحكم، ١/٣٢، والمروزي في تعظيم قدر الصلاة، ١/٤١٠، الرقم: ٤٠٣، والهيثمي في موارد الظمآن، ١/٣٧، الرقم: ٢٨.

الحديث رقم ٣١: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: الزكاة، باب: وجوب الزكاة، ٢/٥٠٥، الرقم: ١٣٣٢، وفي كتاب: الأدب، باب: فضل صِلةِ الرَّحمِ، ٥/٢٢٣١، الرقم: ٥٦٣٧، ومسلم في الصحيح، كتاب: الإيمان، باب: الإيمان الذي يدخل به الجنة، وأن من تمسك بما أمربه دخل الجنة، ١/٤٢، الرقم: ١٣، والنسائي في السنن الكبرى، ٣/٤٤٥، الرقم: ٥٨٨٠، وابن حبان في الصحيح، ٨/٣٨، الرقم: ٣٢٤٦، وأحمد بن حنبل في المسند، ٥/٤١٨، الرقم: ٢٣٥٩٦، والطبراني في المعجم الكبير، ٤/١٣٩، الرقم: ٣٩٢٥، وابن منده في الإيمان، ١/٢٦٧، الرقم: ١٢٦.

أَرَبٌ مَا لَهُ تَعبُدُ اللهَ وَلَا تُشْرِكُ بِهِ شَيئًا، وَتُقِيمُ الصَّلَاةَ، وَتُؤْتِي الزَّكَاةَ، وَتَصِلُ الرَّحِمَ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अबू अय्यूब अंसारी ﷺ रिवायत करते हैं कि एक शख़्स ने अ़र्ज़ कियाः ''या रसूलुल्लाह! मुझे ऐसा अ़मल बतायें जिसको अंजाम देने से मैं जन्नत में दाख़िल हो सकूँ। (उस शख़्स को आगे बढ़ते और हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ से मुख़ातिब होते देखकर) लोगों ने कहना शुरू कर दिया कि इसे क्या हो गया है? क्यों इस तरह बात कर रहा है? इस पर हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने इरशाद फरमायाः कुछ नहीं हुआ। इसे मुझसे काम है। इसे कहने दो फिर आप ﷺ ने उस शख़्स को मुख़ातिब कर के फरमायाः अल्लाह की इबादत करो, उसके साथ किसी को शरीक न ठहराओ, नमाज़ क़ायम करो, ज़कात अदा करो और रिश्तेदारों से मेलजोल और हुस्ने सुलूक करो।''

٣٢ / ٣٢. عَنْ طَلْحَةَ بْنِ عُبَيْدِ اللهِ ﷺ قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى رَسُوْلِ اللهِ ﷺ مِنْ أَهْلِ نَجْدٍ، ثَائِرَ الرَّأْسِ، يُسْمَعُ دَوِيُّ صَوْتِهِ وَلَا يُفْقَهُ مَا يَقُوْلُ، حَتَّى دَنَا فَإِذَا هُوَ يَسْأَلُ عَنِ الإِسْلَامِ، فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: خَمْسُ صَلَوَاتٍ فِي الْيَوْمِ وَاللَّيْلَةِ. فَقَالَ: هَلْ عَلَيَّ غَيْرُهَا؟ قَالَ: لَا، إِلَّا أَنْ تَطَوَّعَ. قَالَ: رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: وَ صِيَامُ رَمَضَانَ. قَالَ: هَلْ عَلَيَّ غَيْرُهُ؟ قَالَ: لَا، إِلَّا أَنْ تَطَوَّعَ. قَالَ: وَ ذَكَرَ لَهُ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ الزَّكَاةَ، قَالَ: هَلْ

الحديث رقم ٣٢: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: الإيمان، باب: الزَّكاةُ مِنَ الإسلام، ١ / ٢٥، الرقم: ٤٦، وفى كتاب: الصوم، باب: وجوب صوم رمضان، ٢ / ٦٦٩، الرقم: ١٧٩٢، وفى كتاب: الشهادات، باب: كيفَ يُسْتَحْلَفُ، ٢ / ٩٥١، الرقم: ٢٥٣٢، وفى كتاب: الحِيَل، باب: في الزكاة، وأن لا يُفرَّق بينَ مُجتَمِعٍ ولا يُجمَعَ بين مُتَفرِّقٍ، خشيةَ الصَّدَقَةِ، ٦ / ٢٥٥١، الرقم: ٦٥٥٦، ومسلم فى الصحيح، كتاب: الإيمان، باب: بيان الصلوات التي هي أحد أركان الإسلام، ١ / ٤٠، الرقم: ١١، وأبوداود فى السنن، كتاب: الصلاة، باب: فرض الصلاة، ١ / ١٨، الرقم: ٣٩١، والنسائى فى السنن، كتاب: الصلاة، باب: كم فرضت فى اليوم والليلة، ١ / ٢٢٦، الرقم: ٤٥٨، وفى كتاب: الإيمان وشرائعه، باب: الزكاة، ٨ / ١١٨، الرقم: ٥٠٢٨، ومالك فى الموطأ، ١ / ١٧٥، الرقم: ٤٢٣، والشافعى فى المسند، ١ / ٢٣٤، وابن حبان فى الصحيح، ٥ / ١١، الرقم: ١٧٢٤.

عَلَيَّ غَيْرُهَا؟ قَالَ: لَا، إِلَّا أَنْ تَطَوَّعَ. قَالَ فَأَدْبَرَ الرَّجُلُ وَ هُوَ يَقُوْلُ: وَاللهِ لَا أَزِيدُ عَلَى هَذَا وَلَا أَنْقُصُ، قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: أَفْلَحَ إِنْ صَدَقَ.

مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह ﷺ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की खिदमत में नज्द का रहने वाला एक शख़्स इस हाल में हाज़िर हुआ कि उसके बाल बिखरे हुए थे। उसकी गुनगुनाहट तो सुनाई देती थी लेकिन बात समझ में नहीं आती थी, हत्ता कि जब वो क़रीब आया तो मालूम हुआ कि इस्लाम के बारे में पूछ रहा है, आप ﷺ ने फरमायाः दिन और रात के (चौबीस घण्टों) में पाँच नमाज़ें (फ़र्ज़ हैं)। उसने सवाल कियाः क्या इनके अलावा कोई और नमाज़ भी मुझ पर फ़र्ज़ है। आप ﷺ ने फरमायाः (फ़र्ज़) नहीं है, हाँ, अगर तुम नफ़्ल नमाज़ अदा करना चाहो तो कर सकते हो। और आप ﷺ ने फरमाया, माहे रमज़ान के रोजे (फ़र्ज़ हैं)। साइल ने दरयाफ़्त कियाः क्या रमज़ान के अलावा कोई और रोज़े भी मुझ पर हैं ? आप ﷺ ने फरमाया (फ़र्ज़) नहीं हैं, अलबत्ता अगर तुम नफ़्ल रखना चाहो तो रख सकते हो, आप ﷺ ने उसे जक़ात के बारे में भी बताया, उस शख़्स ने दरयाफ़्त कियाः क्या मुझ पर इस के अलावा भी कोई अदायगी ज़रूरी है? आप ﷺ ने फरमाया (फ़र्ज़) नहीं है अलबत्ता तुम रज़ा काराना तौर पर कुछ (सदक़ा) देना चाहो तो दे सकते हो। रावी कहते हैंः फिर वो शख़्स वापस जाने के लिये मुड़ गया और कहता जाता थाः बख़ुदा! मैं न तो इसमें कोई इज़ाफ़ा करूँगा और न किसी क़िस्म की कमी करूँगा। आप ﷺ ने (उस शख़्स की यह बात सुन कर) फरमायाः वो फ़लाह पा गया, अगर उसने अपनी बात सच कर दिखाई।''

٣٣/٣٣۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ أَعْرَابِيًّا أَتَى النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَ: دُلَّنِي عَلَى عَمَلٍ، إِذَا عَمِلْتُهُ دَخَلْتُ الْجَنَّةَ، قَالَ: تَعْبُدُ اللهَ لَا تُشْرِكُ بِهِ

الحديث رقم ٣٣: أخرجه البخاری فی الصحيح، کتاب: الزکاة، باب: وجوب الزکاة، ٢/٥٠٦، الرقم: ١٣٣٣، ومسلم فی الصحيح، کتاب: الإيمان، باب: بيان الإيمان الذی يدخل به الجنة وأن تمسك بما أمربه دخل الجنة، ١/٤٤، الرقم: ١٤، وابن خزيمة فی الصحيح، ٤/١٢، وأبوعوانة فی المسند، ١/١٧، الرقم: ٤، وابن رجب فی جامع العلوم والحکم، ١/٢٠٧۔

شَيْئًا، وَ تُقِيمُ الصَّلَاةَ الْمَكْتُوبَةَ، وَ تُؤَدِّي الزَّكَاةَ الْمَفْرُوْضَةَ، وَتَصُوْمُ رَمَضَانَ. قَالَ: وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ، لَا أَزِيدُ عَلَى هَذَا. فَلَمَّا وَلَّى، قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: مَنْ سَرَّهُ أَنْ يَنْظُرَ إِلَى رَجُلٍ مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ، فَلْيَنْظُرْ إِلَى هَذَا. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ बयान करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की ख़िदमत में एक देहाती हाज़िर हुआ, और उसने अ़र्ज़ कियाः या रसूलुल्लाह! मेरी ऐसे अ़मल की तरफ रहनुमाई फरमाएं जिसे अंजाम देने से मैं जन्नत में दाख़िल हो जाऊँ। आप ﷺ ने फरमायाः अल्लाह तआ़ला की इबादत इस तरह करो कि इबादत में अल्लाह तआ़ला के साथ किसी को उस का शरीक न बनाओ। फ़र्ज़ नमाज़ें और मुक़र्ररह ज़कात अदा करो और रमज़ान के रोज़े रखो। उस अ'राबी ने कहाः उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़ए कुदरत में मेरी जान है! मैं इन अहकाम में कोई इज़ाफ़ा नहीं करूँगा। पस जब वो शख़्स वापस जाने के लिये मुड़ा तो आप ﷺ ने फरमायाः जो किसी जन्नती को देखने की सआ़दत हासिल करना चाहे तो इसे देख ले।''

فَصْلٌ فِي عَـلَامَاتِ الْمُسْلِمِ وَأَوْصَافِهِ

मुसलमान की अलामात और सिफ़ात का बयान

٣٤ / ٣٤۔ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو رضي الله عنهما قَالَ: إِنَّ رَجُلاً سَأَلَ النَّبِيَّ ﷺ: أَيُّ الْمُسْلِمِيْنَ خَيْرٌ؟ قَالَ: مَنْ سَلِمَ الْمُسْلِمُوْنَ مِنْ لِسَانِهِ وَيَدِهِ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रضی اللہ عنہما से मरवी है कि एक आदमी ने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ से अर्ज़ किया: कौन सा मुसलमान अफ़ज़ल है ? आप ﷺ ने फ़रमाया: जिसकी ज़ुबान और हाथ से दूसरे मुसलमान महफ़ूज़ हों।''

٣٥ / ٣٥۔ عَنْ عَبدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو رضي الله عنهما، قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَلْمُسْلِمُ مَنْ سَلِمَ الْمُسْلِمُوْنَ مِنْ لِسَانِهِ وَيَدِهِ، وَالْمُهَاجِرُ مَنْ هَجَرَ مَا نَهَى اللهُ عَنْهُ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ.

''हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रضی اللہ عنہما से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फ़रमाया: मुसलमान वो है जिसकी ज़ुबान और हाथ से दूसरे मुसलमान महफ़ूज़ हों, और हक़ीक़ी

الحديث رقم ٣٤: أخرجه البخاري فى الصحيح، كتاب: الرقاق، باب: الإنتهاء عن المعاصى، ٥/ ٢٣٧٩، الرقم: ٦١١٩، ومسلم فى الصحيح، كتاب: الإيمان، باب: بيان تفاضل الإسلام ونصف أموره أفضل، ١/ ٦٥، الرقم: ٣٩، وابن حبان فى الصحيح، ٢/ ١٢٤، الرقم: ٣٩٩۔

الحديث رقم ٣٥: أخرجه البخاري فى الصحيح، كتاب: الإيمان، باب: المسلم من سَلِمَ المسلمون من لسانه ويده، ١/ ١٣، الرقم: ١٠، وأبوداود فى السنن، كتاب: الجهاد، باب: فى الهجرة هل انقطعت، ٣/ ٤، الرقم: ٢٤٨١، والنسائى فى السنن، كتاب: الإيمان وشرائعه، باب: صفة المسلم، ٨/ ١٠٥، الرقم: ٤٩٩٦، وابن حبان فى الصحيح، ١/ ٤٦٧، الرقم: ٢٣٠، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٢/ ١٦٣، الرقم: ٦٥١٥۔

मुहाज़िर वो है जिसने इन कामों को छोड़ दिया जिनसे अल्लाह तआला ने मना फ़रमाया है।''

٣٦ / ٣٦۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ، قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَلْمُسْلِمُ مَنْ سَلِمَ الْمُسْلِمُوْنَ مِنْ لِسَانِهِ وَيَدِهِ، وَالْمُؤْمِنُ مَنْ أَمِنَهُ النَّاسُ عَلَى دِمَائِهِمْ وَأَمْوَالِهِمْ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ.

وَ قَالَ أَبُوْعِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमायाः मुसलमान वो है जिसकी ज़ुबान और हाथ से मुसलमान महफ़ूज़ रहें, और मोमिन वो है जिससे लोगों की जानें और माल महफ़ूज़ हों।''

٣٧ / ٣٧۔ عَنِ بْنِ عُمَرَ رضي الله عنهما، أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: اَلْمُسْلِمُ أَخُوالْمُسْلِمِ، لَا يَظْلِمُهُ وَلَايُسْلِمُهُ، مَنْ كَانَ فِي حَاجَةِ أَخِيْهِ كَانَ اللهُ فِي حَاجَتِهِ، وَ مَنْ فَرَّجَ عَنْ مُسْلِمٍ كُرْبَةً فَرَّجَ اللهُ عَنْهُ كُرْبَةً مِنْ كُرُبَاتِ يَوْمِ الْقِيَامَةِ، وَ مَنْ سَتَرَ مُسْلِمًا سَتَرَهُ اللهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ.

الحديث رقم ٣٦: أخرجه الترمذی في السنن، كتاب: الإيمان عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء في أن المسلم من سلم المسلمون من لسانه ويده، ٥ / ١٧، الرقم: ٢٦٢٧۔ والنسائی فی السنن، كتاب: الإيمان وشرائعه، باب: صفة المؤمن، ٨ / ١٠٤، الرقم: ٤٩٩٥ وابن حبان فی الصحيح، ١ / ٤٠٦، الرقم: ١٨٠، وأحمد بن حنبل فی المسند، ٢ / ٣٧٩، الرقم: ٨٩١٨۔

الحديث رقم ٣٧: أخرجه البخاری فی الصحيح، كتاب: المظالم، باب: لَا يَظْلِمُ المُسْلِمُ المُسْلِمَ وَ لَا يُسْلِمُهُ، ٢ / ٨٦٢، الرقم: ٢٣١٠، ومسلم فی الصحيح، كتاب: البر والصلة والآداب، باب: تحريم الظلم، ٤ / ١٩٩٦، الرقم: ٢٥٨٠، والترمذی فی السنن، كتاب: الحدود عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء فی الشر علی المسلم، ٤ / ٣٤، الرقم: ١٤٢٥، وأبوداود فی السنن، كتاب: الأدب، باب: المؤاخاة، ٤ / ٢٧٣، الرقم: ٤٨٩٣ والنسائی فی السنن الكبری، ٤ / ٣٠٩، الرقم: ٧٢٩١ وأحمد بن حنبل فی المسند، ٢ / ٩١، الرقم: ٥٦٤٦۔

رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ وَمُسْلِمٌ وَالتِّرْمِذِيُّ وَحَسَّنَهُ.

''हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फ़रमायाः एक मुसलमान दूसरे मुसलमान का भाई है, वो न तो उस पर ज़ुल्म करता है न (मुश्किल हालात में) उसे बे यारो मददगार छोड़ता है। जो शख़्स अपने (मुसलमान) भाई के काम आता रहता है अल्लाह तआला उसके काम में (मदद करता) रहता है और जो शख़्स किसी मुसलमान की दुनियावी मुश्किल हल करता है, अल्लाह तआला उसकी उख़रवी (आख़िरत की) मुश्किलात में से कोई मुश्किल हल फ़रमाएगा और जो शख़्स किसी मुसलमान की पर्दापोशी करता है अल्लाह तआला क़यामत के दिन उसकी पर्दापोशी फ़रमाएगा।''

٣٨ / ٣٨. عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ، قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَا تَحَاسَدُوْا وَلَا تَنَاجَشُوْا وَلَا تَبَاغَضُوْا وَلَا تَدَابَرُوْا وَلَا يَبِعْ بَعْضُكُمْ عَلَى بَيْعِ بَعْضٍ، وَكُوْنُوْا عِبَادَ اللهِ إِخْوَانًا، الْمُسْلِمُ أَخُو الْمُسْلِمِ لَا يَظْلِمُهُ وَ لَا يَخْذُلُهُ وَ لَا يَحْقِرُهُ، التَّقْوَى هَاهُنَا (وَ يُشِيْرُ إِلَى صَدْرِهِ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ) بِحَسْبِ امْرِىءٍ مِنَ الشَّرِّ أَنْ يَحْقِرَ أَخَاهُ الْمُسْلِمَ، كُلُّ الْمُسْلِمِ عَلَى الْمُسْلِمِ حَرَامٌ دَمُهُ وَ مَالُهُ وَعِرْضُهُ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَأَحْمَدُ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फ़रमायाः एक दूसरे से हसद ना करो और एक दूसरे को धोका न दो और एक दूसरे से बुग़्ज न रखो और एक दूसरे से रुख न मोड़ो, और तुम में से कोई शख़्स दूसरे के सौदे पर अपना सौदा न करे। ऐ अल्लाह तआला के बन्दो ! बाहम भाई भाई हो जाओ। मुसलमान मुसलमान का भाई है, वो उस पर न तो

الحديث رقم ٣٨: أخرجه مسلم فى الصحيح، كتاب: البر والصلة والآداب، باب: تحريم ظلم والمسلم وخذله واحتقاره ودمه وعرضه وماله، ٤ / ١٩٨٦، الرقم: ٢٥٦٤، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٢ / ٢٧٧، الرقم:٧٧١٣، وعبد بن حميد فى المسند، ١ / ٤٢٠، الرقم: ١٤٤٢، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٦ / ٩٢، الرقم: ١١٢٧٦، وفى شعب الإيمان، ٥ / ٢٨٠، الرقم: ٦٦٦٠، والديلمى فى مسند الفردوس، ٢ / ٤٧٠، الرقم: ٤٠٠٢، وابن رجب فى جامع العلوم والحكم، ١ / ٣٢٦، والعسقلانى فى فتح البارى، ١٠ / ٤٨٣.

ज़ुल्म करता है और न उसे जलील करता है, और न ही उसे हक़ीर समझता है। तक़वा और परहेज़गारी यहाँ है (और आप ﷺ ने तीन मर्तबा अपने सीनए अक़दस की तरफ़ इशारा किया) किसी मुसलमान के लिए इतनी बुराई काफ़ी है कि वो अपने किसी मुसलमान भाई को हक़ीर समझे। एक मुसलमान पर दूसरे का ख़ून, उस का माल और उसकी इज़्ज़त (व आबरू पामाल करना) हराम है।''

٣٩/٣٩۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضي الله عنه، قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَلْمُسْلِمُ أَخُو الْمُسْلِمِ لَا يَخُوْنُهُ وَلَا يَكْذِبُهُ وَلَا يَخْذُلُهُ، كُلُّ الْمُسْلِمِ عَلَى الْمُسْلِمِ حَرَامٌ عِرْضُهُ وَمَالُهُ وَدَمُهُ، التَّقْوَى هَاهُنَا، بِحَسْبِ امْرِیءٍ مِنَ الشَّرِّ أَنْ يَحْتَقِرَ أَخَاهُ الْمُسْلِمَ.

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَحَسَّنَهُ.

''हज़रत अबू हुरैरा رضي الله عنه से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फ़रमायाः मुसलमान, मुसलमान का भाई है वो ना उससे ख़यानत करता है और न उससे झूठ बोलता है और न उसे ज़लील करता है। हर मुसलमान पर दूसरे मुसलमान की इज़्ज़त (की पामाली) उसका माल और उस का ख़ून हराम है। (आप ﷺ ने क़ल्बे अतहर की तरफ़ इशारा करते हुए फ़रमायाः) तक़वा यहाँ है, किसी मुसलमान के लिए इतनी बुराई ही काफ़ी है कि वो अपने किसी मुसलमान भाई को हक़ीर समझे।''

الحديث رقم ٣٩: أخرجه الترمذى فى السنن، كتاب: البر والصلة عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء فى شفقة المسلم على المسلم، ٣٢٥/٤، الرقم: ١٩٢٧، وابن رجب فى جامع العلوم والحكم، ٣٢٦/١۔

فَصْلٌ فِي حَقِّ الْمُسْلِمِ عَلَى الْمُسْلِمِ

﴾मुसलमान के मुसलमान पर हुक़ूक़ का बयान﴿

٤٠ / ٤٠۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضي الله عنه أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: حَقُّ الْمُسْلِمِ عَلَى الْمُسْلِمِ خَمْسٌ: رَدُّ السَّلَامِ وَعِيَادَةُ الْمَرِيْضِ، وَاتِّبَاعُ الْجَنَائِزِ، وَ إِجَابَةُ الدَّعْوَةِ، وَ تَشْمِيتُ الْعَاطِسِ.

مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ وَهَذَا لَفْظُ الْبُخَارِيِّ.

''हज़रत अबू हुरैरा रضي الله عنه से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फ़रमाया: एक मुसलमान के दूसरे मुसलमान पर पाँच हक़ हैं : सलाम का जवाब देना, बीमार की इयादत करना, उसके जनाज़े के साथ जाना, उसकी दा'वत क़ुबूल करना और छींक का जवाब देना।''

٤١ / ٤١۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضي الله عنه أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: حَقُّ الْمُسْلِمِ عَلَى الْمُسْلِمِ سِتٌّ. قِيْلَ: مَا هُنَّ؟ يَا رَسُوْلَ اللهِ! قَالَ: إِذَا لَقِيْتَهُ فَسَلِّمْ عَلَيْهِ، وَإِذَا دَعَاكَ فَأَجِبْهُ، وَ إِذَا اسْتَنْصَحَكَ فَانْصَحْ لَهُ، وَ إِذَا

الحديث رقم ٤٠: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: الجنائز، باب: الأمر باتباع الجنائز، ١ / ٤١٨، الرقم: ١١٨٣، ومسلم فى الصحيح، كتاب: السلام، باب: من حق المسلم للمسلم ردّ السلام، ٤ / ١٧٠٤، الرقم: ٢١٦٢، وابن حبان فى الصحيح، ١ / ٤٧٦، الرقم: ٢٤١، والحاكم فى المستدرك، ١ / ٥٥٠، الرقم: ١٢٩٢، والنسائى فى السنن الكبرى، ٦ / ٦٤، الرقم: ١٠٠٤٩، وابن ماجه فى السنن، كتاب: الجنائز، باب: ما جاء فى عيادة المريض، ١ / ٤٦١، الرقم: ٦٤٣٥، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٢ / ٥٤٠، الرقم: ١٠٩٧٩۔

الحديث رقم ٤١: أخرجه مسلم فى الصحيح، كتاب: السلام، باب: من حق المسلم للمسلم ردّ السلام، ٤ / ١٧٠٥، الرقم: ٢١٦٢، وابن حبان فى الصحيح، ١ / ٤٧٧، الرقم: ٢٤٢، والدارمى فى السنن، ٢ / ٣٥٧، الرقم: ٢٦٣٣، ←

عَطَسَ فَحَمِدَ اللهَ فَسَمِّتْهُ، وَ إِذَا مَرِضَ فَعُدْهُ، وَ إِذَا مَاتَ فَاتَّبِعْهُ.

رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَالدَّارِمِيُّ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फ़रमायाः एक मुसलमान के दूसरे मुसलमान पर छः हक़ हैं: अ़र्ज़ किया गया : या रसूलल्लाह! वो कौन से हक़ हैं? आप ﷺ ने फ़रमायाः जब तू मुसलमान से मिले तो उसे सलाम कर जब वो तुझे दा'वत दे तो क़ुबूल कर, और जब वो तुझसे मश्विरा चाहे तो उसे अच्छा मश्विरा दे, और जब वो छींके और अल–हम्दु लिल्लाह कहे तो तू भी जवाब में (यरहमुकल्लाह) कह, और जब बीमार हो तो उस की तीमारदारी कर, और जब वो फ़ौत हो जाए तो उसके जनाज़े के साथ शामिल हो।''

٤٢ / ٤٢. عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: انْصُرْ أَخَاكَ ظَالِمًا أَوْ مَظْلُومًا. فَقَالَ رَجُلٌ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! أَنْصُرُهُ إِذَا كَانَ مَظْلُوْمًا، أَرَأَيْتَ إِنْ كَانَ ظَالِمًا كَيْفَ أَنْصُرُهُ؟ قَالَ: تَحْجُزُهُ أَوْ تَمْنَعُهُ مِنَ الظُّلْمِ، فَإِنَّ ذَلِكَ نَصْرُهُ.

رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ وَ نَحْوُهُ مُسْلِمٌ وَالتِّرْمِذِيُّ.

.... وأحمد بن حنبل فى المسند، ٢/٣٧٢، الرقم: ٨٨٣٢، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٥/٣٤٧، الرقم: ١٠٦٩١.

الحديث رقم ٤٢: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: الإكراه، باب: يَمِينِ الرَّجُلِ لِصاحِبِهِ، إِنَّهُ أَخُوهُ، إذا خاف عليهِ القتلَ أَوْ نَحْوَهُ، ٦/٢٥٥٠، الرقم: ٦٥٥٢، وفى كتاب: المظالم، باب: أَعِن أخاك ظالماً أو مظلوما، ٢/٨٦٣، الرقم: ٢٣١١. ٢٣١٢، ومسلم فى الصحيح، كتاب: البر والصلة والآداب، باب: نصر الأخ ظالما أو مظلوما، ٤/١٩٩٨، الرقم: ٢٥٨٤، والترمذى فى السنن، كتاب: الفتن عن رسول الله ﷺ، باب: (٦٨)، ٤/٥٢٣، الرقم: ٢٢٥٥، والدارمى فى السنن، ٢/٤٠١، الرقم: ٢٧٥٣، وابن حبان فى الصحيح، ١١:٥٧٠، الرقم: ٥١٦٦-٥١٦٨، وأحمد بن حنبل فى المسند ٣/٩٩، الرقم: ١١٩٦٧، ١٣١٠١، ١٤٥٠٧، والطبرانى فى المعجم الأوسط، ١/٢٠٢، الرقم: ٦٤٩، ٧٧٩، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٦/٩٤، الرقم: ١١٢٨٩-١١٢٩٠.

وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: هٰذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत अनस ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फ़रमायाः अपने भाई की मदद करो चाहे वो ज़ालिम हो या मज़लूम। एक शख़्स ने अर्ज़ कियाः या रसूलल्लाह! अगर वो मज़लूम हो तब तो मैं उसकी मदद करूँ लेकिन मुझे यह बताइये कि जब वो ज़ालिम हो तब मैं उसकी मदद कैसे करूँ? आप ﷺ ने फ़रमायाः उसे ज़ुल्म से बाज़ रखो, या फरमाया : उसे (इस ज़ुल्म से) रोको, क्योंकि यह भी उसकी मदद है।''

٤٣ / ٤٣. عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ، قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّ اللهَ ﷻ يَقُوْلُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ: يَا ابْنَ آدَمَ، مَرِضْتُ فَلَمْ تَعُدْنِي. قَالَ: يَا رَبِّ! كَيْفَ أَعُوْدُکَ وَأَنْتَ رَبُّ الْعَالَمِيْنَ؟ قَالَ: أَمَا عَلِمْتَ أَنَّ عَبْدِي فُـلَانًا مَرِضَ فَلَمْ تَعُدْهُ. أَمَا عَلِمْتَ أَنَّکَ لَوْ عُدْتَهُ لَوَجَدْتَنِي عِنْدَهُ؟ يَا ابْنَ آدَمَ! اسْتَطْعَمْتُکَ فَلَمْ تُطْعِمْنِي. قَالَ: يَا رَبِّ! وَ كَيْفَ أُطْعِمُکَ وَأَنْتَ رَبُّ الْعَالَمِيْنَ؟ قَالَ: أَمَا عَلِمْتَ أَنَّهُ اسْتَطْعَمَکَ عَبْدِي فُـلَانٌ فَلَمْ تُطْعِمْهُ؟ أَمَا عَلِمْتَ أَنَّکَ لَوْ أَطْعَمْتَهُ لَوَجَدْتَ ذٰلِکَ عِنْدِي؟ يَا ابْنَ آدَمَ! اسْتَسْقَيْتُکَ فَلَمْ تَسْقِنِي. قَالَ: يَا رَبِّ! كَيْفَ أَسْقِيْکَ وَأَنْتَ رَبُّ الْعَالَمِيْنَ؟ قَالَ: اسْتَسْقَاکَ عَبْدِي فُـلَانٌ فَلَمْ تَسْقِهِ، أَمَا إِنَّکَ لَوْ سَقَيْتَهُ وَجَدْتَ ذٰلِکَ عِنْدِي. رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَالْبُخَارِيُّ فِي الْأَدَبِ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फ़रमायाः

الحديث رقم ٤٣: أخرجه مسلم في الصحيح، كتاب: البر والصلة والآداب، باب: فضل عيادة المريض، ٤ / ١٩٩٠، الرقم: ٢٥٦٩، والبخاري في الأدب المفرد، ١٨٢:١، الرقم: ٥١٧، وابن حبان في الصحيح، ١ / ٥٠٣، الرقم: ٩٤٤،٢٦٩، ٧٣٦٦، والبيهقي في شعب الإيمان، ٦ / ٥٣٤، الرقم: ٩١٨٢، وابن راهوية في المسند، ١ / ١١٥، الرقم: ٢٨، والمنذري في الترغيب والترهيب، ٢ / ٣٧، الرقم: ١٤٠٦.

बेशक क़यामत के दिन अल्लाह तआला फ़रमाएगाः ऐ इब्ने आदम ! मैं बीमार हुआ और तूने मेरी मिज़ाज पुरसी नहीं की । बन्दा अ़र्ज़ करेगाः ऐ परवरदिगार ! मैं तेरी बीमार पुरसी कैसे करता जबकि तू ख़ुद सारे जहानों को पालने वाला है? इरशाद होगाः क्या तुझे मालूम नहीं कि मेरा फ़लां बन्दा बीमार हुआ और तूने उस की मिजाज पुरसी नहीं की। क्या तू नहीं जानता कि अगर तू उसकी बीमार पुरसी करता तो मुझे उसके पास मौजूद पाता? ऐ इब्ने आदम ! मैंने तुझ से खाना तलब किया और तूने मुझे खाना ना खिलाया। बन्दा अ़र्ज़ करेगा : ऐ परवरदिगार ! मैं तुझे खाना कैसे खिलाता जबकि तू खुद तमाम जहानों का पालनहार है ? इरशाद होगा : क्या तुझे मालूम नहीं कि मेरे फ़लां बन्दे ने तुझसे खाना माँगा और तूने उसे खाना नहीं खिलाया ? क्या तू नहीं जानता कि अगर तू उसे खाना खिलाता तो उस का सवाब मेरी बारगाह से पाता ? ऐ इब्ने आदम ! मैंने तुझ से पानी मांगा और तूने मुझे पानी नहीं पिलाया। बन्दा अ़र्ज़ करेगाः परवरदिगार ! मैं तुझे पानी कैसे पिलाता जबकि तू रब्बुल आलमीन है ? इरशाद होगाः मेरे फ़लां बन्दे ने तुझसे पानी माँगा और तूने उसे पानी नहीं पिलाया। क्या तुझे मालूम नहीं कि अगर तू उसे पानी पिलाता तो उस का सवाब तुझे मेरी बारगाह से मिलता।''

فَصْلٌ فِي الإِحْسَانِ

﴿एहसान का बयान﴾

٤٤ / ٤٤۔ عَنْ عُمَرَ بْنِ الخَطَّابِ ﷺ، قَالَ: بَيْنَمَا نَحْنُ عِنْدَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ ذَاتَ يَوْمٍ إِذْ طَلَعَ عَلَيْنَا رَجُلٌ شَدِيْدُ بَيَاضِ الثِّيَابِ، شَدِيْدُ سَوَادِ الشَّعْرِ، لَا يُرَى عَلَيْهِ أَثَرُ السَّفَرِ، وَلَا يَعْرِفُهُ مِنَّا أَحَدٌ، حَتَّى جَلَسَ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ، فَأَسْنَدَ رُكْبَتَيْهِ إِلَى رُكْبَتَيْهِ، وَوَضَعَ كَفَّيْهِ عَلَى فَخِذَيْهِ، وَقَالَ: يَا مُحَمَّدُ! أَخْبِرْنِي عَنِ الإِسْلَامِ، فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: الإِسْلَامُ أَنْ تَشْهَدَ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ، وَأَنَّ مُحَمَّدًا رَسُوْلُ اللهِ وَتُقِيمَ الصَّلَاةَ، وَتُؤْتِيَ الزَّكَاةَ، وَ تَصُوْمَ رَمَضَانَ، وَتَحُجَّ الْبَيْتَ إِنِ اسْتَطَعْتَ إِلَيْهِ سَبِيْلًا. قَالَ: صَدَقْتَ. قَالَ: فَعَجِبْنَا لَهُ يَسْأَلُهُ وَيُصَدِّقُهُ! قَالَ: فَأَخْبِرْنِي عَنِ الإِيْمَانِ. قَالَ: أَنْ تُؤْمِنَ بِاللهِ، وَمَلَائِكَتِهِ، وَكُتُبِهِ، وَرُسُلِهِ، وَالْيَوْمِ الآخِرِ،

الحديث رقم ٤٤: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: الإيمان، باب: سُؤَالِ جِبْرِيْلَ النَّبِيَّ ﷺ عَنِ الإِيْمان وَ الإِسْلَامِ وَ الإِحْسَانِ وَ عِلْمِ السَّاعَةِ، ١ /٢٧، الرقم: ٥٠، وفى كتاب: التفسير /لقمان، باب: إِنَّ اللهَ عِنْدَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ /٣٤، ٤ /١٧٩٣، الرقم: ٤٤٩٩، ومسلم فى الصحيح، كتاب: الإيمان، باب: بيان الإيمان والإسلام والإحسان، ١ /٣٦، الرقم: ٨-٩، والترمذى فى السنن، كتاب: الإيمان عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء فى وصف جبريل للنبي ﷺ الإيمان والإسلام، ٥ /٦، الرقم: ٢٦٠١، وأبوداود فى السنن، كتاب: السنة، باب: فى القدر، ٤ /٢٢٢، الرقم: ٤٦٩٥، والنسائى فى السنن، كتاب: الإيمان وشرائعه، باب: نعت الإسلام، ٨ /٩٧، الرقم: ٤٩٩٠، وابن ماجة فى السنن، المقدمة، باب: في الإيمان، ١ /٢٤، الرقم: ٦٣، وأحمد بن حنبل فى المسند، ١ /٥١، الرقم: ٣٦٧، وابن خزيمة فى الصحيح، ٤ /١٢٧، الرقم: ٢٥٠٤، وابن حبان فى الصحيح، ١ /٣٨٩، الرقم: ١٦٨.

وَتُؤْمِنَ بِالْقَدَرِ خَيْرِهِ وَشَرِّهِ. قَالَ: صَدَقْتَ. قَالَ: فَأَخْبِرْنِي عَنِ الإِحْسَانِ. قَالَ: أَنْ تَعْبُدَ اللهَ كَأَنَّكَ تَرَاهُ، فَإِنْ لَمْ تَكُنْ تَرَاهُ فإِنَّهُ يَرَاكَ. قَالَ: فَأَخْبِرْنِي عَنِ السَّاعَةِ قَالَ: مَا الْمَسْئُوْلُ عَنْهَا بِأَعْلَمَ مِنَ السَّائِلِ. قَالَ: فَأَخْبِرْنِي عَنْ أَمَارَتِهَا؟ قَالَ: أَنْ تَلِدَ الأَمَةُ رَبَّتَهَا، وَأَنْ تَرَى الْحُفَاةَ الْعُرَاةَ الْعَالَةَ رِعَاءَ الشَّاءِ يَتَطَاوَلُونَ فِي الْبُنْيَانِ. ثُمَّ انْطَلَقَ، فَلَبِثْتُ مَلِيّاً، ثُمَّ قَالَ: يَا عُمَرُ أَتَدْرِي مَنِ السَّائِلُ؟ قُلتُ: اللهُ وَرَسُوْلُهُ أَعْلَمُ. قَالَ: فَإِنَّهُ جِبْرِيْلُ أَتَاكُمْ يُعَلِّمُكُمْ دِيْنَكُمْ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ وَهَذَا لَفْظُ مُسْلِمٍ.

''हज़रत उमर बिन ख़त्ताब ﷺ रिवायत करते हैं कि एक रोज़ हम हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर थे। अचानक एक शख़्स हमारी महफ़िल में आया, उसके कपड़े निहायत सफ़ेद, बाल गहरे स्याह थे। उस पर सफ़र के कुछ भी असरात नुमायां न थे और हम में से कोई उसे पहचानता भी नहीं था। आख़िरकार वो शख़्स हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के सामने आप ﷺ के घुटने से घुटने मिला कर बैठ गया और उसने दोनों हाथ अपनी दोनों रानों पर रख लिए और अ़र्ज़ कियाः या मुस्तफ़ा! मुझे बताएंः इस्लाम क्या है? आप ﷺ ने फ़रमायाः इस्लाम यह है कि तू इस बात की गवाही दे कि अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई मा'बूद नहीं, और मुहम्मद (ﷺ) अल्लाह के रसूल हैं और तू नमाज़ कायम करे, जक़ात अदा करे, रमज़ानुल मुबारक के रोज़े रखे और इस्तिताअत रखने पर बैतुल्लाह का हज करे। उसने अ़र्ज़ कियाः आपने सच फ़रमाया। हज़रत उमर ﷺ फ़रमाते हैं कि हमें तअ़ज्जुब हुआ कि खुद ही सवाल करता है और खुद ही तस्दीक़ भी करता है। उसके बाद उसने अ़र्ज़ कियाः मुझे ईमान के बारे में बताएं? हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फ़रमायाः ईमान यह है कि अल्लाह तआ़ला पर, फ़रिश्तों पर, उसकी किताबों पर, उसके रसूलों पर और क़यामत के दिन पर ईमान लाए और अच्छी बुरी तक़दीर पर ईमान रखे। वो बोलाः आप ने सच फ़रमाया। फिर उसने अ़र्ज़ कियाः मुझे एहसान के बारे में बताएं, आप ﷺ ने फ़रमायाः एहसान यह है कि तू अल्लाह ﷻ की इबादत इस तरह करे गोया तू उसे देख रहा है और अगर तू उसे न देख सके तो यह जान ले कि यक़ीनन वो तुझे देख रहा है। उसने अ़र्ज़ कियाः अच्छा अब मुझे क़यामत क़ायम होने के (वक़्त के) बारे में बताएं, आप ﷺ ने फ़रमायाः जिससे सवाल किया गया है वो इस मस्अले पर साइल से ज़्यादा इल्म नहीं

रखता (यानी जो कुछ मुझे मालूम वो तुम्हें भी मालूम है और दूसरे हाज़िरीन के लिए उसे ज़ाहिर करना मुफ़ीद नहीं है।) उस शख़्स ने अ़र्ज़ कियाः अच्छा फिर क़यामत की अ़लामात ही बता दें। हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फ़रमायाः अ़लामाते क़यामत यह है कि नौकरानी अपनी मालिका को जनम देगी (यानी बेटी अपनी माँ के साथ नौकरानियों वाला सुलूक करेगी) और बरहना पाँव और नंगे बदन वाले मुफ़लिस चरवाहे ऊँचे ऊँचे महल्लात पर फ़ख़्र करेंगे। फिर वो शख़्स चला गया। हज़रत उमर ﷺ फ़रमाते हैं कि मैं कुछ देर ठहरा रहा, फिर हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फ़रमायाः ऐ उमर ! जानते हो यह सवाल करने वाला कौन था? मैंने अ़र्ज़ कियाः अल्लाह तआ़ला और उसका रसूल ﷺ बेहतर जानते हैं। आप ﷺ ने फ़रमायाः यह जिब्राईल عليه السلام थे जो तुम्हें तुम्हारा दीन सिखाने आए थे।''

٤٥ / ٤٥۔ عَنْ أَبِي ذَرٍّ رضي الله عنه قَالَ: أَوْصَانِي خَلِيْلِي ﷺ أَنْ أَخْشَى اللهَ كَأَنِّي أَرَاهُ، فَإِنْ لَمْ أَكُنْ أَرَاهُ فَإِنَّهُ يَرَانِي. رَوَاهُ أَبُوْنُعَيْمٍ.

''हज़रत अबूज़र (गफ्फ़ारी) ﷺ रिवायत करते हैं कि मुझे मेरे हबीब ﷺ ने फ़रमाया कि मैं खशिय्यते इलाही में ऐसा हो जाऊँ गोया मैं उसे देख रहा हूँ, पस अगर मैं उसे नहीं देख सकता तो वो तो यक़ीनन मुझे देख ही रहा है।''

٤٦ / ٤٦۔ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رضي الله عنه قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَلإِحْسَانُ أَنْ تَعْمَلَ لِلّٰهِ كَأَنَّكَ تَرَاهُ فَإِلَمْ تَكُنْ تَرَاهُ فَإِنَّهُ يَرَاكَ.
رَوَاهُ الرَّبِيْعُ.

''हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ फ़रमाते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फ़रमायाः एहसान यह है कि तू अल्लाह तआ़ला के लिए इस तरह अमल कर गोया तू उसे देख रह है, फिर अगर तू उसे नहीं देख सकता तो यक़ीनन वो तो तुझे देख रहा है।''

الحديث رقم ٤٥: أخرجه أبونعيم فى كتاب الأربعين، ١/ ٣٩، الرقم: ١٢، وابن رجب فى جامع العلوم والحكم، ١/ ١٢٦۔

الحديث رقم ٤٦: أخرجه ابن الربيع فى المسند، ١/ ٤٢، الرقم: ٥٦، وابن رجب فى جامع العلوم والحكم، ١/ ٣٦۔

٤٧ / ٤٧۔ عَنْ زَيْدِ بْنِ أَرْقَمَ رضي الله عنه قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صلى الله عليه وآله وسلم: كُنْ كَأَنَّكَ تَرَى اللهَ، فَإِنْ لَمْ تَكُنْ تَرَاهُ فَإِنَّهُ يَرَاكَ. رَوَاهُ أَبُوْنُعَيْمٍ وَالدَّيْلَمِيُّ.

''हज़रत ज़ैद बिन अरक़म رضي الله عنه रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम صلى الله عليه وآله وسلم ने फ़रमायाः (ऐ अल्लाह के बन्दे!) इस तरह होजा गोया अल्लाह तआला को देख रहा है, अगर तुम उसे नहीं देख रहे तो वो तो यक़ीनन तुम्हें देख रहा है।''

٤٨ / ٤٨۔ عَنْ شَدَّادِ بْنِ أَوْسٍ رضي الله عنه، قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صلى الله عليه وآله وسلم: إِنَّ اللهَ كَتَبَ الإِحْسَانَ عَلَى كُلِّ شَيءٍ، فَإِذَا قَتَلْتُمْ فَأَحْسِنُوا الْقِتْلَةَ، وَإِذَا ذَبَحْتُمْ فَأَحْسِنُوا الذَّبْحَ، وَ لْيُحِدَّ أَحَدُكُمْ شَفْرَتَهُ فَلْيُرِحْ ذَبِيْحَتَهُ.
رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَالتِّرْمِذِيُّ.

''हज़रत शद्दाद बिन औस رضي الله عنه से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम صلى الله عليه وآله وسلم ने फ़रमायाः अल्लाह तआला ने हर काम में एहसान फ़र्ज़ किया है। जब तुम क़त्ल करो तो अच्छी तरह से क़त्ल करो और जब तुम ज़िबह करो तो अच्छी तरह से ज़िबह करो और ज़िबह करने वाले को चाहिये कि छूरी को अच्छी तरह तेज़ करे और अपने ज़िबह होने वाले जानवर को आराम दे।''

الحديث رقم ٤٧: أخرجه أبونعيم فى كتاب الأربعين، ١ / ٤٠، الرقم: ١٣، وفى حلية الأولياء، ٨ / ٢٠٢، والديلمى فى مسند الفردوس، ٣ / ٢٧٤، الرقم: ٤٨٤٣، وابن رجب فى جامع العلوم والحكم، ١ / ٣٦۔

الحديث رقم ٤٨: أخرجه مسلم فى الصحيح، كتاب: الصيد والذبائح وما يؤكل من الحيوان، باب: الأمر بإحسان الذبح والقتل وتحديد الشفرة، ٣ / ١٥٤٨، الرقم: ١٩٥٥، والترمذى فى السنن، كتاب: الديات عن رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم، باب: ماجاء فى النهى عن المثلة، ٤ / ٢٣، الرقم: ١٤٠٩، وأبوداود فى السنن، كتاب: الضحايا، باب: في النهي أن تصبر البهائم والرفق بالذبيحة، ٣ / ١٠٠، الرقم: ٢٨١٥، والنسائى فى السنن، كتاب: الضحايا، باب: الأمر بإحداد الشفرة، ٧ / ٢٢٧، الرقم: ٤٤٠٥، وفى كتاب: الضحايا، باب: ذكر المنفلتة التى لا يقدر على أخذها، ٧ / ٢٢٩، الرقم: ٤٤١١، وفى كتاب: الضحايا، باب: حسن الذبح، ٧ / ٢٢٩، الرقم: ٤٤١٢۔٤٤١٤، وابن ماجه فى السنن، كتاب: الذبائح، باب: إذا ذبحتم فأحسنوا الذبح، ٢ / ١٠٥٨، الرقم: ٣١٧٠ وأحمد بن حنبل فى المسند، ٤ / ١٢٣، وابن حبان فى الصحيح، ١٣ / ١٩٩، الرقم: ٥٨٨٣، وابن الجارود فى كتاب المنتقى، ١ / ٢١٤، الرقم: ٨٣٩، والدارمى فى السنن، ٢ / ١١٢، الرقم: ١٩٧٠۔

فَصْلٌ فِي عَـلامَاتِ الْمُحْسِنِ وَأَوْصَافِهِ

मोहसिन की अलामात और सिफ़ात का बयान

٤٩ / ٤٩۔ عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ ﷺ يَقُوْلُ: أَمَرَنَا رَسُوْلُ اللهِ ﷺ أَنْ نَتَصَدَّقَ فَوَافَقَ ذَلِکَ عِنْدِي مَالًا، فَقُلْتُ: الْيَوْمَ أَسْبِقُ أَبَابَکْرٍ إِنْ سَبَقْتُهُ يَوْمًا، قَالَ: فَجِئْتُ بِنِصْفِ مَالِي، فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَا أَبْقَيْتَ لِأَهْلِکَ؟ قُلْتُ: مِثْلَهُ، وَ أَتَى أَبُوْبَکْرٍ بِکُلِّ مَا عِنْدَهُ، فَقَالَ: يَا أَبَابَکْرٍ! مَا أَبْقَيْتَ لِأَهْلِکَ؟ قَالَ: أَبْقَيْتُ لَهُمُ اللهَ وَرَسُوْلَهُ، قُلْتُ: وَاللهِ! لَا أَسْبِقُهُ إِلَى شَيءٍ أَبَدًا. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُوْدَاوُدَ.

''हज़रत उमर बिन ख़त्ताब ﷺ रिवायत फ़रमाते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने हमें सदक़ा करने का हुक्म दिया। इत्तिफ़ाक़ से उस वक़्त मेरे पास माल था, मैंने कहाः अगर मैं हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ ﷺ से सबक़त ले जा सकता हूँ तो आज ले जाऊँगा। फ़रमाते हैं कि फिर मैं निस्फ़ (आधा) माल ले कर हाज़िर हुआ। हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फ़रमायाः अपने घर वालों के लिये क्या छोड़ा है? मैंने अर्ज़ कियाः इस (माल) के बराबर ही, इतने में अबू बकर सिद्दीक़ ﷺ सारा माल लेकर हाज़िर हुए। आप ﷺ ने फ़रमायाः अबू बकर! घर वालों के लिए क्या छोड़ा है ? अर्ज़ किया उनके लिए अल्लाह ﷻ और उसके रसूल ﷺ को छोड़ आया हूँ। मैंने (दिल में) कहाः बख़ुदा ! मैं कभी उनसे किसी (नेक) बात में आगे नहीं बढ़ सकूँगा।''

الحديث رقم ٤٩: أخرجه الترمذي في السنن، كتاب: المناقب عن رسول الله ﷺ، باب: في مناقب أبي بكر وعمر رضي الله عنهما كليهما، ٦ / ٥٢، الرقم: ٣٦٧٥، وأبوداود في السنن، كتاب: الزكاة، باب: الرخصة في ذلك، ٢ / ١٢٩، الرقم: ١٦٧٨، والدارمي في السنن، ١ / ٤٨٠، الرقم: ١٦٦٠، والبزار في المسند، ١ / ٢٦٣، الرقم: ١٥٩، والمقدسي في الأحاديث المختارة، ١ / ١٧٣، الرقم: ٨١، وعبد بن حميد في المسند، ١ / ٣٣، الرقم: ١٤، وابن أبي عاصم في السنة، ٢ / ٥٧٩، الرقم: ١٢٤٠.

٥٠ / ٥٠۔ عَنْ أَبِي ذَرٍّ ﷺ، قَالَ: قَالَ لِي رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اتَّقِ اللهَ حَيْثُمَا كُنْتَ، وَأَتْبِعِ السَّيِّئَةَ الْحَسَنَةَ تَمْحُهَا، وَخَالِقِ النَّاسَ بِخُلُقٍ حَسَنٍ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالدَّارِمِيُّ وَأَحْمَدُ.

وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत अबू ज़र ﷺ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने मुझे फ़रमायाः तुम जहाँ भी हो अल्लाह तआला से डरते रहो, गुनाह के बाद नेकी किया करो वो उसे मिटा देगी और लोगों से अच्छे अख़लाक़े हसना (अच्छे अख़लाक़) के साथ पेश आया करो।''

٥١ / ٥١۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: يَقُوْلُ اللهُ:

الحديث رقم ٥٠: أخرجه الترمذى فى السنن، كتاب: البر والصلة عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء في معاشرة الناس، ٤ / ٣٥٥، الرقم: ١٩٨٧، والدارمى فى السنن، ٢ / ٤١٥، الرقم: ٢٧٩١، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٥ / ١٥٣، الرقم: ٢١٣٩٢، والطبرانى عن معاذ ﷺ فى المعجم الكبير، ٢٠ / ١٤٤، الرقم: ٢٩٦، وابن أبى شيبة فى المصنف، ٥ / ٢١١، الرقم: ٢٥٣٢٤، والبزار فى المسند، ٩ / ٤١٦، الرقم: ٤٠٢٢۔

الحديث رقم ٥١: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: التوحيد، باب: قولِ الله تعالى: يُرِيْدُوْنَ أَنْ يُبَدِّلُوا كَلَامَ اللهِ [الفتح: ١٥]، ٦ / ٢٧٢٤، الرقم: ٧٠٦٢، وفى كتاب: الرقاق، باب: مَنْ هَمَّ بِحَسَنَةٍ أَوْسَيِّئَةٍ، ٥ / ٢٣٨٠، الرقم: ٦١٢٦، ومسلم فى الصحيح، باب: إذا همّ العبد بحسنة كتبت وإذا همّ سيّئة لم تكتب، ١ / ١١٧، الرقم: ١٢٨۔١٣١، والترمذى فى السنن، كتاب: تفسير القرآن عن رسول الله ﷺ، باب: ومن سورةِ الأَنْعَامِ، ٥ / ٢٦١، الرقم:٣٠٧٣، وابن حبان فى الصحيح، ٢ / ١٠٣، ١٠٥، الرقم: ٣٧٩۔٣٨٢، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٢ / ٣١٥، الرقم: ٨١٥١، والطبرانى فى المعجم الأوسط، ١ / ٢٦٥، الرقم: ٨٦٥، والبيهقى فى شعب الإيمان، ١ / ٣٠٠، الرقم: ٣٣٦، ٥ / ٣٨٩، الرقم: ٧٠٤٣، ٧٠٤٦، وأبو عوانة فى المسند، ١ / ٨١، الرقم: ٢٣٩۔٢٤٢، وأبونعيم فى المسند المستخرج، ١ / ٢٧، الرقم: ٣٣٥، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ١ / ٢٧، الرقم: ٢١۔٢٤، والهيثمى فى مجمع الزوائد، ٣ / ١٨٢۔

إِذَا أَرَادَ عَبْدِي أَنْ يَعْمَلَ سَيِّئَةً فَلَا تَكْتُبُوْهَا عَلَيْهِ حَتَّى يَعْمَلَهَا، فَإِنْ عَمِلَهَا فَاكْتُبُوْهَا بِمِثْلِهَا، وَ إِنْ تَرَكَهَا مِنْ أَجْلِي فَاكْتُبُوْهَا لَهُ حَسَنَةً، وَ إِذَا أَرَادَ أَنْ يَعْمَلَ حَسَنَةً، فَلَمْ يَعْمَلْهَا فَاكْتُبُوْهَا لَهُ حَسَنَةً، فَإِنْ عَمِلَهَا فَاكْتُبُوْهَا لَهُ بِعَشَرِ أَمْثَالِهَا إِلَى سَبْعِ مِائَةِ ضِعْفٍ.

مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ وَهَذَا لَفْظُ الْبُخَارِيِّ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फ़रमायाः अल्लाह तआला (फ़रिश्तों से) फ़रमाता हैः जब मेरा बन्दा बुरे काम का इरादा करे तो उस की कोई बुराई न लिखो, जब तक कि वो उस बुराई को न कर ले और जब वो बुराई कर ले तो उसके बराबर ही (गुनाह) लिखो, और अगर मेरी वजह से तर्क कर दे तो उस (तर्के गुनाह) को उसके लिए एक नेकी लिख दो, और जब उसने नेकी का इरादा किया मगर नेकी न कर सका तो उसके लिए एक नेकी लिख दो और अगर वो उसे कर ले तो उस नेकी को उस के लिए दस गुना से सात सौ गुना तक लिखो।''

٥٢ / ٥٢۔ عَنْ عَبْدِ اللهِ ﷺ قَالَ: قَالَ رَجُلٌ : يَا رَسُوْلَ اللهِ، مَتَى أَكُوْنُ مُحْسِنًا؟ قَالَ: إِذَا قَالَ جِيْرَانُكَ: أَنْتَ مُحْسِنٌ فَأَنْتَ مُحْسِنٌ، وَإِذَا قَالُوْا: إِنَّكَ مُسِيءٌ فَأَنْتَ مُسِيءٌ.

رَوَاهُ ابْنُ مَاجَه وَابْنُ حِبَّانَ وَاللَّفْظُ لَهُ.

وَقَالَ الْحَاكِمُ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत अब्दुल्लाह ﷺ से मरवी है कि एक शख़्स ने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की बारगाह में अर्ज़ कियाः या रसूलल्लाह! मैं मोहसिन कब बनूँगा? फ़रमायाः जब तेरा पड़ौसी

الحديث رقم ٥٢: أخرجه ابن ماجه فى السنن، كتاب: الزهد، باب: الثناء الحسن، ٢/ ١٤١١، الرقم: ٤٢٢٢-٤٢٢٣، وابن حبان فى الصحيح، ذكر العلامة التى يستبدل المرء بها على إحسانه، ٢/ ٢٨٤، الرقم: ٥٢٥، والحاكم فى المستدرك، ١/ ٥٣٤، الرقم: ١٣٩٩، والبيهقى فى شعب الإيمان، ٧/ ٨٥، الرقم: ١٣٩٩، والحسينى فى البيان والتعريف، ١/ ٤٨، الرقم: ٩٧، والمناوى فى فيض القدير، ١/ ٢٤٤۔

तुझसे कहे कि तू मोहसिन है तो तू मोहसिन है, और जब वो तुझे कहे कि तू बुरा है तो तू बुरा है।''

٥٣ / ٥٣۔ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِذَا جَمَعَ اللهُ الْأَوَّلِيْنَ وَالْآخَرِيْنَ يُنَادِي مُنَادٍ فِي صَعِيْدٍ وَاحِدٍ مِنْ بُطْنَانِ الْعَرْشِ: أَيْنَ أَهْلُ الْمَعْرِفَةِ بِاللهِ؟ أَيْنَ الْمُحْسِنُوْنَ؟ قَالَ: فَيَقُوْمُ عُنُقٌ مِنَ النَّاسِ حَتَّى يَقِفُوْا بَيْنَ يَدَيِ اللهِ، فَيَقُوْلُ. وَهُوَ أَعْلَمُ بِذَلِكَ: مَا أَنْتُمْ؟ فَيَقُوْلُوْنَ: نَحْنُ أَهْلُ الْمَعْرِفَةِ الَّذِيْنَ عَرَّفْتَنَا إِيَّاكَ وَجَعَلْتَنَا أَهْلاً لِذَلِكَ. فَيَقُوْلُ: صَدَقْتُمْ. ثُمَّ يَقُوْلُ لِلْآخَرِيْنَ: مَا أَنْتُمْ؟ قَالُوْا: نَحْنُ الْمُحْسِنُوْنَ. قَالَ: صَدَقْتُمْ، قُلْتُ لِنَبِيِّ: ﴿مَا عَلَى الْمُحْسِنِيْنَ مِنْ سَبِيْلٍ﴾ [التوبة، ٩: ٩١] مَا عَلَيْكُم مِنْ سَبِيْلٍ، ادْخُلُوا الْجَنَّةَ بِرَحْمَتِي. ثُمَّ تَبَسَّمَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ فَقَالَ: لَقَدْ نَجَّاهُمُ اللهُ مِنْ أَهْوَالِ بِوَائِقِ الْقِيَامَةِ.

رَوَاهُ أَبُوْنُعَيْمٍ فِي كِتَابِ الْأَرْبَعِيْنَ.

''हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फ़रमायाः अल्लाह तआला जब अव्वलीन–व–आख़िरीन के लोगों को जमा फ़रमाएगा तो एक पुकारने वाला अर्श के पायों तले एक मैदान से सदा देगाः कहाँ हैं अल्लाह तआला की मा'रेफ़त रखने वाले? कहाँ है साहिबाने एहसान? फ़रमायाः लोगों में से एक गिरोह अल्लाह तआला के सामने आ खड़ा होगा। फिर वो (यानी अल्लाह तआला) फ़रमाएगा, हालांकि वो बेहतर जानने वाला हैः तुम कौन हो? फिर वो लोग कहेंगेः हम अहले मा'रेफ़त हैं, जिन्हें तूने अपनी मा'रेफ़त अता की और हमें इस मा'रेफ़त का अहल बनाया, तो अल्लाह तआला फ़रमाएगाः तुमने सच कहा, फिर दूसरे गिरोह से पूछेगाः तुम कौन हो? वो अ़र्ज़ करेंगेः हम साहिबाने एहसान हैं। अल्लाह तआला फ़रमाएगाः तुम ने सच कहा, मैंने अपने नबी से फ़रमाया थाः 'साहिबाने एहसान पर इल्ज़ाम की कोई राह नहीं।' लिहाज़ा तुम पर भी (ता'नाज़नी की) कोई राह नहीं। मेरी रहमत के साथ सीधे जन्नत में दाख़िल हो जाओ। फिर हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने तबस्सुम फ़रमाया और इरशाद फ़रमायाः यक़ीनन अल्लाह तआला इन्हें क़यामत के अहवाल और सख्तियों से निजात दे देगा।''

الحديث رقم ٥٣: أخرجه أبونعيم فى كتاب الأربعين، ١ / ١٠٠، الرقم: ٥١، والمناوى فى فيض القدير، ١ / ٤٢٠، الرقم: ٤۔

فَصْلٌ فِي عَلَامَاتِ الْكُفْرِ وَالنِّفَاقِ

﴿कुफ़्र और निफ़ाक़ की अ़लामात का बयान﴾

٥٤ / ٥٤۔ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُودٍ رضي الله عنه أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: سِبَابُ الْمُسْلِمِ فُسُوْقٌ، وَقِتَالُهُ كُفْرٌ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद رضي الله عنه रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फ़रमायाः मुसलमान को गाली देना फ़िस्क़ (ऐलानिया गुनाह करना) है और उसके साथ क़िताल (लड़ाई करना) करना कुफ़्र है।''

٥٥ / ٥٥۔ عَنْ أَنَسٍ رضي الله عنه أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يَقُوْلُ: يُجَاءُ بِالْكَافِرِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَيُقَالُ لَهُ: أَرَأَيْتَ لَوْ كَانَ لَکَ مِلْءُ الْأَرْضِ ذَهَبًا أَكُنْتَ تَفْتَدِي بِهِ؟ فَيَقُوْلُ: نَعَمْ. فَيُقَالُ لَهُ: قَدْ كُنْتَ سُئِلْتَ مَا هُوَ أَيْسَرُ مِنْ ذٰلِکَ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ، وَهٰذَا لَفْظُ الْبُخَارِيِّ.

الحديث رقم ٥٤: أخرجه البخاري فى الصحيح، كتاب: الإيمان، باب: خوف المؤمن من أن يحبط عمله وهو لا يشعر، ١ / ٢٧، الرقم: ٤٨، ومسلم فى الصحيح، كتاب: الإيمان، باب: بيان قول النبى ﷺ: سباب المسلم فسوق وقتاله كفر، ١ / ٨١، الرقم: ٦٤، والترمذي في السنن، كتاب: البر والصلة عن رسول الله ﷺ، باب: (٥٢)، ٤ / ٣٥٣، الرقم: ١٩٨٣، والنسائى فى السنن، كتاب: تحريم الدم، باب: قتال المسلم، ٧ / ١٢١، الرقم: ٤١٠٥، وابن ماجه فى السنن، المقدمة، باب: فى الإيمان، ١ / ٢٧، الرقم: ٦٩، وأحمد بن حنبل فى المسند، ١ / ٤١١، الرقم: ٣٩٠٣، والبزار فى المسند، ٤ / ١٣، الرقم: ١١٧٢۔

الحديث رقم ٥٥: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: الرقاق، باب: من نوقش الحساب عذب، ٥ / ٢٣٩٥، الرقم: ٦١٧٣، ومسلم فى الصحيح، كتاب: صفة القيامة والجنة والنار، باب: طلب الكافر الفداء بملء الأرض ذهبا، ٤ / ٢١٦١، الرقم: ٢٨٠٥، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٣ / ٢٩١، الرقم: ١٤١٣٩، وابن حبان فى الصحيح، ١٦ / ٣٤٨، الرقم: ٧٣٥١، والطبرانى فى المعجم الأوسط، ٧ / ١١٨، الرقم: ٧٠٢٦، وأبويعلى فى المسند، ٥ / ٣٠٤، الرقم: ٢٩٢٦۔

''हज़रत अनस ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ फ़रमाते हैं कि क़यामत के रोज़ काफ़िर को पेश किया जाएगा तो उस से कहा जाएगा कि अगर तेरे पास इतना सोना हो कि उससे ज़मीन भर जाए तो क्या तुम उसे अपनी रिहाई के बदले में फ़िदया देने को तैयार हो जाते? वो कहेगाः हाँ! तो उससे कहा जाएगा कि तुझसे उसकी निस्बत बहुत ही आसान चीज़ मांगी गई थी (और तूने इन्कार कर दिया था)।''

٥٦ / ٥٦۔ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رضي الله عنهما أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: إِذَا كَفَّرَ الرَّجُلُ أَخَاهُ فَقَدْ بَاءَ بِهَا أَحَدُهُمَا. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ وَهَذَا لَفْظُ مُسْلِمٍ.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमायाः जब कोई शख़्स अपने (मुसलमान) भाई को काफ़िर कहता है तो दोनों में से कोई एक शख़्स उस कुफ्र के साथ लौटा (यानी अगर जिसे कहा गया वो काफ़िर न हुआ तो कहने वाला ख़ुद काफ़िर हो जाएगा)।''

٥٧ / ٥٧۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: الدُّنْيَا سِجْنُ الْمُؤْمِنِ وَجَنَّةُ الْكَافِرِ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَالتِّرْمِذِيُّ.

الحديث رقم ٥٦: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: الأدب، باب: من كفر أخاه بغير تأويل فهو كما قال، ٥ / ٢٢٦٤، الرقم: ٥٧٥٣، ومسلم في الصحيح، كتاب: الإيمان، باب، بيان حال إيمان من قال لأخيه المسلم يا كافر، ١ / ٧٩، الرقم: ٦٠، ومالك في المؤطا، ٢ / ٩٨٤، الرقم: ١٧٧٧، وأحمد بن حنبل في المسند، ٢ / ١٨، الرقم: ٤٦٨٧، وأبو عوانة في المسند، ١ / ٣٢، الرقم: ٥٤، والبخاري في الأدب المفرد، ١ / ١٥٧، الرقم: ٤٣٩.

الحديث رقم ٥٧: أخرجه مسلم في الصحيح، كتاب: الزهد والرقائق، ٤ / ٢٢٧٢، الرقم: ٢٩٥٦، والترمذي في السنن، كتاب: الزهد عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء أن الدنيا سجن المؤمن وجنة الكافر، ٤ / ٥٦٢، الرقم:٢٣٢٤، وابن ماجه في السنن، كتاب: الزهد، باب: مثل الدنيا، ٢ / ١٣٧٨، الرقم: ٤١١٣، وأحمد بن حنبل في المسند، ٢ / ٣٢٣، الرقم: ٨٢٧٢، وابن حبان في الصحيح، ٢ / ٤٦٢، الرقم: ٦٨٧، والحاكم عن سلمان ﷺ في المستدرك، وقال الحاكم: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحٌ الإِسْنَادِ، ٣ / ٦٩٩، الرقم: ٦٥٤٥، والبزار عن سلمان ﷺ في المسند، ٦ / ٤٦١، الرقم: ٢٤٩٨.

وَقَالَ أَبُوْعِيْسي: هٰذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फ़रमायाः दुनिया मोमिन के लिए क़ैदख़ाना और काफ़िर के लिए जन्नत है।''

٥٨/٥٨. عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ ضَافَهُ ضَيْفٌ كَافِرٌ فَأَمَرَ لَهُ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ بِشَاةٍ فَحُلِبَتْ فَشَرِبَ. ثُمَّ أُخْرَى فَشَرِبَهُ. ثُمَّ أُخْرَى فَشَرِبَهُ. حَتَّى شَرِبَ حِلَابَ سَبْعِ شِيَاهٍ، ثُمَّ أَصْبَحَ مِنَ الْغَدِ فَأَسْلَمَ. فَأَمَرَ لَهُ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ بِشَاةٍ فَحُلِبَتْ فَشَرِبَ حِلَابَهَا. ثُمَّ أَمَرَ لَهُ بِأُخْرَى فَلَمْ يَسْتَتِمَّهَا فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: الْمُؤْمِنُ يَشْرَبُ فِي مِعًى وَاحِدٍ، وَالْكَافِرُ يَشْرَبُ فِي سَبْعَةِ أَمْعَاءٍ.

رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَالتِّرْمِذِيُّ وَاللَّفْظُ لَهُ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के यहाँ एक काफ़िर मेहमान हुआ। आप ﷺ ने उस के लिए एक बकरी का दूध दूहने का हुक्म दिया वो दूही गई तो वो तमाम दूध पी गया, दूसरी बकरी का हुक्म दिया वो दूही गई तो उसे भी पी गया। फिर एक और दूही गई तो उसे भी पी गया यहाँ तक कि सात बकरियों का दूध पी गया। दूसरी सुबह वो इस्लाम ले आया। हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने उसके लिए बकरी दूहने का हुक्म दिया तो उस ने दूध पी लिया फिर दूसरी बकरी दूहने का हुक्म दिया गया वो दूही गई तो वो उस का सारा दूध ना पी सका। रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमायाः मोमिन एक आँत में पीता है और काफ़िर सात आँतों से पीता है।''

الحديث رقم ٥٨: أخرجه مسلم في الصحيح، كتاب: الأشربة، باب: المؤمن يأكل في معى واحد والكافر يأكل في سبعة، ٣/١٦٣٢، الرقم: ٢٠٦٣، والترمذي في السنن، كتاب: الأطعمة عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء أن المؤمن يأكل في معى واحد والكافر يأكل في سبعة أمعاء، ٤/ ٢٦٧، الرقم: ١٨١٩، ومالك فى الموطأ، ٢/٩٢٤، الرقم: ١٦٤٨، والنسائى فى السنن الكبرى، ٤/ ٢٠٠، الرقم: ٦٨٩٣، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٢/٣٧٥، الرقم: ٨٨٦٦، وابن حبان فى الصحيح، ١/٣٧٩، الرقم: ١٦٢.

٥٩ / ٥٩۔ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّ اللهَ لَا يَظْلِمُ مُؤْمِنًا حَسَنَةً. يُعْطَى بِهَا فِي الدُّنْيَا وَيُجْزَى بِهَا فِي الآخِرَةِ. وَأَمَّا الْكَافِرُ، فَيُطْعَمُ بِحَسَنَاتِ مَا عَمِلَ بِهَا لِلّٰهِ فِي الدُّنْيَا حَتَّى إِذَا أَفْضَى إِلَى الآخِرَةِ لَمْ يَكُنْ لَهُ حَسَنَةٌ يُجْزَى بِهَا. رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَأَحْمَدُ.

''हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी-ए-अकरम ﷺ ने फ़रमायाः बेशक़ अल्लाह तआला नेकी के हवाले से मोमिन पर ज़ुल्म नहीं फ़रमाता। दुनिया में भी उस (मोमिन) को उस (नेकी) का अज्र दिया जाता है और आख़िरत में भी उस का अज्र दिया जाता है। रहा काफ़िर, तो उसने दुनिया में जो अल्लाह तआला के लिए नेकियाँ की हैं उन का अज्र उसे दुनिया में ही दे दिया जाएगा और जब वो आख़िरत में पहुँचेगा तो उसके पास कोई नेकी नहीं होगी जिसकी उसे जज़ा दी जाए।''

٦٠ / ٦٠۔ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رضي الله عنهما قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَا تَرْتَدُّوْا بَعْدِي كُفَّارًا يَضْرِبُ بَعْضُكُمْ رِقَابَ بَعْضٍ. رَوَاهُ الْبُخَارِيّ.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी-ए-अकरम ﷺ ने फ़रमायाः तुम मेरे बाद कुफ्र की तरफ़ न लौट जाना कि तुम में से बा'ज़, बा'ज़ की गरदनें उड़ाने लगें।''

الحديث رقم ٥٩: أخرجه مسلم فى الصحيح، كتاب: صفة القيامة والجنة والنار، باب: جزاء المؤمن بحسناته فى الدنيا والآخرة وتعجيل حسنات الكافر فى الدنيا، ٤ / ٢١٦٢، الرقم: ٢٨٠٨، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٣ / ٢٨٣، الرقم: ١٤٠٥٠، وابن حبان فى الصحيح، ٢ / ١٠١، الرقم: ٣٧٧، والطيالسى فى المسند، ١ / ٢٦٩، الرقم: ٢٠١١، والديلمى فى مسند الفردوس، ٤ / ٣٥٧، الرقم: ٧٠٢٨.

الحديث رقم ٦٠: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: الفتن، باب: قول النبي ﷺ: لا ترجعوا بعدى كفارا يضرب بعضكم رقاب بعض، ٦ / ٢٥٩٤، الرقم: ٦٦٦٨، والطبرانى فى المعجم الأوسط، ٤ / ٢٦٩، الرقم: ٤١٦٦، والهيثمى فى مجمع الزوائد، ٦ / ٢٨٣.

٦١ / ٦١۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: بَادِرُوْا بِالْأَعْمَالِ فِتَنًا كَقِطَعِ اللَّيْلِ الْمُظْلِمِ. يُصْبِحُ الرَّجُلُ مُؤْمِنًا وَيُمْسِي كَافِرًا أَوْ يُمْسِي مُؤْمِنًا وَ يُصْبِحُ كَافِرًا. يَبِيْعُ دِيْنَهُ بِعَرَضٍ مِنَ الدُّنْيَا.

رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَالتِّرْمِذِيُّ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमायाः उन फ़ितनों के वाके'अ होने से पहले नेक आ'माल कर लो जो अंधेरी रात की तरह छा जाएंगे, एक शख़्स सुबह मोमिन होगा और शाम को काफ़िर हो जाएगा या शाम को मोमिन होगा और सुबह काफ़िर हो जाएगा और मामूली से दुनियावी फायदे के एवज़ अपनी मताए ईमान (ईमान की पूँजी) फ़रोख्त कर डालेगा।''

٦٢ / ٦٢۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: الْمِرَاءُ فِي الْقُرْآنِ كُفْرٌ. رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَأَحْمَدُ. إِسْنَادُهُ حَسَنٌ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फ़रमायाः क़ुरआन मजीद में (मनमानी तहरीफ़ात–व–ताविलात करके) झगड़ा करना कुफ्र है।''

الحديث رقم ٦١: أخرجه مسلم فى الصحيح، كتاب: الإيمان، باب: الحث على المبادرة بالأعمال قبل تظاهر الفتن، ١ / ١١٠، الرقم: ١١٨، والترمذي فى السنن، كتاب: الفتن عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء ستكون فتن كقطع الليل المظلم، ٤ / ٤٨٧، الرقم: ٢١٩٥، وقال أبوعيسى: هذا حديث حسن صحيح، وابن حبان فى الصحيح، ١٥ / ٩٦، الرقم: ٦٧٠٤، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٢ / ٣٠٣، الرقم: ٨٠١٧۔

الحديث رقم ٦٢: أخرجه أبوداود فى السنن، كتاب: السنة، باب: النهى عن الجدال فى القرآن، ٤ / ١٩٩، الرقم: ٤٦٠٣، والنسائى فى السنن الكبرى، ٥ / ٣٣، الرقم: ٨٠٩٣، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٢ / ٣٠٠، الرقم: ٧٩٧٦ وابن حبان فى الصحيح، ٤ / ٣٢٤، الرقم: ١٤٦٤، والطبرانى فى المعجم الأوسط، ٣ / ٦١، الرقم: ٢٤٧٨، والهيثمى فى المجمع الزوائد، ١ / ١٥٧۔

٦٣/٦٣۔ عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ رضي الله عنه عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وآله وسلم قَالَ: إِنَّ الْكَافِرَ إِذَا حُضِرَ بُشِّرَ بِعَذَابِ اللهِ وَعُقُوْبَتِهِ فَلَيْسَ شَيءٌ أَكْرَهَ إِلَيْهِ مِمَّا أَمَامَهُ فَكَرِهَ لِقَاءَ اللهِ وَكَرِهَ اللهُ لِقَاءَهُ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ وَأَحْمَدُ.

''हज़रत उबादा बिन सामित رضي الله عنه से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम صلى الله عليه وآله وسلم ने फ़रमायाः काफ़िर की मौत आती है तो उसे अल्लाह तआला के अ़ज़ाब और उसकी नाराज़गी की खबर दी जाती है। पस जो चीज़ भी उसके सामने होती है वो उसे सख़्त नापसन्द हो जाती है सो वो अल्लाह तआला से मिलना भी नापसन्द करता है और अल्लाह तआला उससे मिलना नापसन्द करता है।''

٦٤/٦٤۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضي الله عنه أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ صلى الله عليه وآله وسلم قَالَ: آيَةُ الْمُنَافِقِ ثَلَاثٌ: إِذَا حَدَّثَ كَذَبَ، وَ إِذَا وَعَدَ أَخْلَفَ. وَإِذَا اؤْتُمِنَ خَانَ.

مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

الحديث رقم ٦٣: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: الرقاق، باب: من أحب لقاء الله أحب الله لقاءه، ٥/٢٣٨٦، الرقم: ٦١٤٢، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٣/١٠٧، الرقم: ١٢٠٦٦، وابن حبان فى الصحيح، ٧/٢٧٩، الرقم: ٣٠٠٩، والدارمى فى السنن، ٢/٤٠٢، الرقم: ٢٧٥٦، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٤/١٧١، الرقم: ٥٢٩٨۔

الحديث رقم ٦٤: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: الإيمان، باب: علامة المنافق، ١/٢١، الرقم: ٣٣، وفى كتاب: الشهادات، باب: من أمر بإنجاز الوعد، ٢/٩٥٢، الرقم: ٢٥٣٦، وفى كتاب: الوصايا، باب: قول الله تعالى: مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُوْصَى بِهَا أَوْ دَيْنٍ، ٣/١٠١٠، الرقم: ٢٥٩٨، وفى كتاب: الأدب، باب: قول الله تعالى: يَا أَيُّهَا الَّذِيْنَ آمَنُوا اتَّقُوا اللهَ وَكُوْنُوا مَعَ الصَّادِقِيْنَ، ٥/٢٢٦٢، الرقم: ٥٧٤٤، ومسلم فى الصحيح، كتاب: الإيمان، باب: بيان خصال المنافق، ١/٧٨، الرقم: ٥٩، والترمذى فى السنن، كتاب: الإيمان عن رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم، باب: ماجاء فى علامة المنافق، ٥/١٩، الرقم: ٢٦٣١، وَ حَسَّنَهُ، والنسائى فى السنن، كتاب: الإيمان وشرائعه، باب: علامة المنافق، ٨/١١٦، الرقم: ٥٠٢١، وفى السنن الكبرى، ٦/٣٢٩، الرقم: ١١١٢٧، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٢/٣٥٧، الرقم: ٨٦٧٠۔

و زاد مسلم: وَإِنْ صَامَ وَ صَلَّى وَزَعَمَ أَنَّهُ مُسْلِمٌ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमायाः मुनाफ़िक़ की तीन निशानियाँ होती है जब बात करे तो झूठ बोले, वादा करे तो ख़िलाफ़वर्ज़ी करे और उसके पास अमानत रखी जाए तो ख़यानत करे।''

''और मुस्लिम ने अपनी रिवायत में ''آية المنافق ثلاث'' के बाद इन अल्फ़ाज़ का इज़ाफ़ा किया हैः अगरचे रोज़ा रखे, नमाज़ पढ़े और अपने आप को मुसलमान ख़याल करे।''

٦٥ / ٦٥۔ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو رضي الله عنهما أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: أَرْبَعٌ مَنْ كُنَّ فِيهِ كَانَ مُنَافِقًا خَالِصًا وَمَنْ كَانَتْ فِيْهِ خَصْلَةٌ مِنْهُنَّ كَانَتْ فِيْهِ خَصْلَةٌ مِنَ النِّفَاقِ حَتَّى يَدَعَهَا: إِذَا اؤْتُمِنَ خَانَ، وَ إِذَا حَدَّثَ كَذَبَ، وَإِذَا عَاهَدَ غَدَرَ وَ إِذَا خَاصَمَ فَجَرَ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमायाः चार बातें जिसमें हों वो ख़ालिस मुनाफ़िक़ है और जिसके अन्दर उनमें से कोई एक हो तो उसमें निफ़ाक़ की एक ख़सलत है यहाँ तक कि उसे छोड़ दे (वो ख़सलतें यह हैं) : जब अमानत उसके सुपुर्द की जाए तो ख़यानत करे, जब बात करे तो झूट बोले, जब वादा करे तो खिलाफ़वर्ज़ी करे और झगड़े तो बेहूदागोई (गाली गलौच) करे।''

الحديث رقم ٦٥: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: الإيمان، باب: علامة المنافق، ١ / ٢١، الرقم: ٣٤، وفى كتاب: المظالم والغصب، باب: إذا خاصم فجر، ٢ / ٨٦٨، الرقم: ٢٣٢٧، وفى كتاب: الجزية، باب: إثم من عاهد ثم غدر، ٣ / ١١٦٠، الرقم: ٣٠٠٧، ومسلم فى الصحيح، كتاب: الإيمان، باب: بيان خصال المنافق، ١ / ٧٨، الرقم: ٥٨، والترمذى فى السنن، كتاب: الإيمان عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء فى علامة المنافق، ٥ / ١٩، الرقم: ٢٦٣٢، وأبوداود فى السنن، كتاب: السنة، باب: الدليل على زيادة الإيمان ونقصانه، ٤ / ٢٢١، الرقم: ٤٦٨٨، والنسائى فى السنن، كتاب: الإيمان وشرائعه، باب: علامة المنافق، ٨ / ١١٦، الرقم: ٥٠٢٠، وفي السنن الكبرى، ٥ / ٢٢٤، الرقم: ٨٧٣٤، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٢ / ١٨٩، الرقم: ٦٧٦٨، وابن حبان فى الصحيح، ١ / ٤٨٨، الرقم: ٢٥٤، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٩ / ٢٣٠.

٦٦/٦٦۔ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ ﷺ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: آيَةُ الإِيْمَانِ حُبُّ الْأَنْصَارِ، وَآيَةُ النِّفَاقِ بُغْضُ الْأَنْصَارِ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फ़रमायाः अन्सार से मुहब्बत ईमान की निशानी है, और अन्सार से बुग़्ज़ मुनाफ़िक़त की अ़लामत है।''

٦٧/٦٧۔ عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ رضي الله عنها تَقُوْلُ: كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: لَا يُحِبُّ عَلِيًّا مُنَافِقٌ وَلَا يَبْغَضُهُ مُؤْمِنٌ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُوْيَعْلَى.

''हज़रत उम्मे सलमा رضي الله عنها से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ फ़रमाया करते थेः कोई मुनाफ़िक़, अली (ﷺ) से मुहब्बत नहीं करता और कोई मोमिन अली (ﷺ) से बुग़्ज़ नहीं रखता।''

الحديث رقم ٦٦: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: الإيمان، باب: علامة الإيمان حب الأنصار، ١/١٤، الرقم: ١٧، وفى كتاب: فضائل الصحابة، باب: حب الأنصار من الإيمان، ٣/١٣٧٩، الرقم: ٣٥٧٣، ومسلم فى الصحيح، كتاب: الإيمان، باب: الدليل على أن حب الأنصار وعلي ﷺ من الإيمان وعلاماته، وبغضهم من علامات النفاق، ١/٨٥، الرقم: ٧٤، والنسائى فى السنن، كتاب: الإيمان وشرائعه، باب: علامة الإيمان، ٨/١١٦، الرقم:٥٠١٩، وفى السنن الكبرى، ٦/٥٣٤، الرقم: ٨٣٣١، وأحمد بن حنبل فى المسند عن أبى سعيد الخدرى ﷺ، ٣/٧٠، الرقم: ١١٦٨٦، ١٢٣٣٨، ١٢٣٩٢، ١٣٦٣٢، وأبويعلى فى المسند، ٧/١٩٠، الرقم: ٤١٧٥، ٤٣٠٨۔

الحديث رقم ٦٧: أخرجه الترمذى فى السنن، كتاب: المناقب عن رسول الله ﷺ، باب: (٢١)، ٥/٦٣٥، الرقم: ٣٧١٧، وأبويعلى فى المسند، ١٢/٣٦٢، الرقم: ٦٩٣١، والطبرانى فى المعجم الكبير، ٢٣/٣٧٥، الرقم: ٨٨٦، وأبوالمحاسن فى معتصر المختصر، ٢/٢٤٧۔

الحديث رقم ٦٨: أخرجه مسلم فى الصحيح، كتاب: الإيمان، باب: الدليل على أن حب الأنصار وعلي من الإيمان وعلاماته، وبغضهم من علامات النفاق، ١/٨٦، ←

٦٨/٦٨. عَنْ زِرِّ بْنِ حُبَيْشٍ رضي الله عنه قَالَ: قَالَ عَلِيٌّ رضي الله عنه: وَالَّذِي فَلَقَ الْحَبَّةَ وَ بَرَأَ النَّسَمَةَ، إِنَّهُ لَعَهْدُ النَّبِيِّ الْأُمِّيِّ ﷺ إِلَيَّ: أَنْ لَا يُحِبَّنِي إِلَّا مُؤْمِنٌ، وَلَا يُبْغِضَنِي إِلَّا مُنَافِقٌ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَالنَّسَائِيُّ.

وفي رواية عنه: قَالَ: لَقَدْ عَهِدَ إِلَيَّ النَّبِيُّ الْأُمِّيُّ ﷺ أَنَّهُ لَا يُحِبُّكَ إِلَّا مُؤْمِنٌ، وَلَا يَبْغَضُكَ إِلَّا مُنَافِقٌ.(١)

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَه.

وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत ज़िर्र बिन हुबैश رضي الله عنه रिवायत करते हैं कि हज़रत अली رضي الله عنه ने फ़रमायाः क़सम है उस ज़ात की जिसने दाना चीरा और जिसने जानदारों को पैदा किया! हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने मुझसे अ़हद फ़रमाया था कि मुझसे सिर्फ मोमिन मुहब्बत रखेगा और सिर्फ मुनाफ़िक़ ही मुझसे बुग़्ज़ रखेगा।''

''और एक रिवायत में इन्हीं (हज़रत ज़िर्र बिन हुबैश رضي الله عنه) से मरवी है कि हज़रत अली رضي الله عنه बयान करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने मुझसे अ़हद फ़रमायाः (ऐ अली!) तुझसे मोमिन ही मुहब्बत रखेगा और तुझसे मुनाफ़िक़ ही बुग़्ज़ रखेगा।''

....

اَلْبَابُ الثَّانِي: बाब 2 :

ت

حُكْمُ الْخَوَارِجِ وَالْمُرْتَدِّيْنَ وَالْمُتَنَقِّصِيْنَ النَّبِيَّ ﷺ

ख़वारिज व मुरतद्दीन व गुस्ताख़ाने मुस्तफ़ा ﷺ का बयान

٦٩ / ١ـ عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ ﷺ يَقُوْلُ: بَعَثَ عَلِيُّ بْنُ أَبِي طَالِبٍ ﷺ إِلَى رَسُوْلِ اللهِ ﷺ مِنَ الْيَمَنِ بِذُهَيْبَةٍ فِي أَدِيْمٍ مَقْرُوْظٍ لَمْ تُحَصَّلْ مِنْ تُرَابِهَا. قَالَ: فَقَسَمَهَا بَيْنَ أَرْبَعَةِ نَفَرٍ بَيْنَ عُيَيْنَةَ ابْنِ بَدْرٍ وَأَقْرَعَ بْنِ حَابِسٍ وَزَيْدِ الْخَيْلِ وَالرَّابِعُ إِمَّا عَلْقَمَةُ وَإِمَّا عَامِرُ بْنُ الطُّفَيْلِ، فَقَالَ رَجُلٌ مِنْ أَصْحَابِهِ: كُنَّا نَحْنُ أَحَقَّ بِهَذَا مِنْ هَؤُلَاءِ قَالَ: فَبَلَغَ ذَلِكَ النَّبِيَّ ﷺ، فَقَالَ: أَلاَ تَأْمَنُوْنِي وَأَنَا أَمِيْنُ مَنْ فِي السَّمَاءِ يَأْتِيْنِي خَبَرُ السَّمَاءِ صَبَاحًا وَمَسَاءً، قَالَ: فَقَامَ رَجُلٌ غَائِرُ الْعَيْنَيْنِ، مُشْرِفُ الْوَجْنَتَيْنِ، نَاشِزُ الْجَبْهَةِ، كَثُّ اللِّحْيَةِ، مَحْلُوْقُ الرَّأْسِ، مُشَمَّرُ الإِزَارِ. فَقَالَ: يَارَسُوْلَ اللهِ، اتَّقِ اللهَ، قَالَ: وَيْلَكَ أَوَلَسْتُ أَحَقَّ أَهْلِ الْأَرْضِ أَنْ يَتَّقِيَ اللهَ ؟ قَالَ: ثُمَّ وَلَّى الرَّجُلُ، قَالَ خَالِدُ بْنُ الْوَلِيْدِ: يَارَسُوْلَ اللهِ، أَلاَ أَضْرِبُ عُنُقَهُ؟ قَالَ: لاَ، لَعَلَّهُ أَنْ يَكُوْنَ يُصَلِّي. فَقَالَ

الحديث رقم ١: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: المغازي، باب: بعث على بن أبي طالب وخالد بن الوليد رضي الله عنهما إلى اليمن قبل حجة الوداع، ٤ / ١٥٨١، الرقم: ٤٠٩٤، ومسلم في الصحيح، كتاب: الزكاة، باب: ذكر الخوارج وصفاتهم، ٢ / ٧٤٢، الرقم: ١٠٦٤، وأحمد بن حنبل في المسند، ٣ / ٤، الرقم: ١١٠٢١، وابن خزيمة في الصحيح، ٤ / ٧١، الرقم: ٢٣٧٣، وابن حبان في الصحيح، ١ / ٢٠٥، الرقم: ٢٥، وأبويعلى في المسند، ٢ / ٣٩٠، الرقم: ١١٦٣، وأبونعيم في المسند المستخرج، ٣ / ١٢٨، الرقم: ٢٣٧٥، وفي حلية الأولياء، ٥ / ٧١، والعسقلاني في فتح البارى، ٨ / ٦٨، الرقم: ٤٠٩٤، وفى حاشية ابن القيم، ١٣ / ١٦، والسيوطي في الديباج، ٣ / ١٦٠، الرقم: ١٠٦٤، وابن تيمية في الصارم المسلول، ١ / ١٨٨، ١٩٢.

خَالِدٌ: وَكَمْ مِنْ مُصَلٍّ يَقُوْلُ بِلِسَانِهِ مَا لَيْسَ فِي قَلْبِهِ، قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنِّي لَمْ أُوْمَرْ أَنْ أَنْقُبَ عَنْ قُلُوْبِ النَّاسِ، وَلَا أَشُقَّ بُطُوْنَهُمْ، قَالَ: ثُمَّ نَظَرَ إِلَيْهِ وَهُوَ مُقَفٍّ، فَقَالَ: إِنَّهُ يَخْرُجُ مِنْ ضِئْضِيءِ هَذَا قَوْمٌ يَتْلُوْنَ كِتَابَ اللهِ رَطْبًا لَا يُجَاوِزُ حَنَاجِرَهُمْ يَمْرُقُوْنَ مِنَ الدِّيْنِ كَمَا يَمْرُقُ السَّهْمُ مِنَ الرَّمِيَّةِ. وَأَظُنُّهُ قَالَ: لَئِنْ أَدْرَكْتُهُمْ لَأَقْتُلَنَّهُمْ قَتْلَ ثَمُوْدَ.

مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ फरमाते हैं कि हज़रत अली ﷺ ने यमन से रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में चमड़े के थैले में भर कर कुछ सोना भेजा, जिससे अभी तक मिट्टी भी साफ़ नहीं की गई थी। हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने वो सोना चार आदमियों उयैना बिन बदर, अक़रअ बिन हाबिस और ज़ैद बिन खैल और चौथे अलक़मा या आमिर बिन तुफैल के दरमियान तक़सीम फरमा दिया। इस पर आप ﷺ के अस्हाब में से किसी ने कहाः उन लोगों से तो हम ज़्यादा हक़दार थे। जब यह बात हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ तक पहुँची तो आप ﷺ ने फरमायाः क्या तुम मुझे अमानतदार शुमार नहीं करते? हालांकि आसमान वालों के नज़दीक तो मैं अमीन हूँ। इस की ख़बरें तो मेरे पास सुबह व शाम आती रहती हैं। रावी का बयान है कि फिर एक आदमी खड़ा हो गया जिसकी आँखें अन्दर को धंसी हुईं, रुख़सारों की हड्डियाँ उभरी हुईं, ऊँची पेशानी, घनी दाढ़ी, सर मुंडा हुआ था और वो ऊँचा तहबन्द बाँधे हुए था, वो कहने लगा : या रसूलल्लाह ﷺ! खुदा से डरें, आप ﷺ ने फरमाया : तू हलाक हो, क्या मैं तमाम अहले ज़मीन से ज़्यादा खुदा से डरने का मुस्तहिक़ नहीं हूँ? फिर जब वो आदमी जाने के लिए मुड़ा तो हज़रत खालिद बिन वलीद ﷺ ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह ﷺ! मैं उसकी गर्दन ना उड़ा दूँ? आप ﷺ ने फरमायाः ऐसा न करो, शायद यह नमाज़ी हो, हज़रत खालिद ﷺ ने अर्ज़ किया : बहुत से ऐसे नमाज़ी भी तो हैं कि जो कुछ उन की ज़बान पर है वो दिल में नहीं होता। रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमायाः मुझे यह हुक्म नहीं दिया गया कि लोगों के दिलों में नक़ब (सेंध) लगाऊँ और उनके पेट चाक करूँ। रावी का बयान है कि वो पलटा तो आप ﷺ ने फिर उसकी जानिब देखा तो फरमायाः उसकी पुश्त से ऐसे लोग पैदा होंगे जो अल्लाह तआला की किताब की तिलावत से ज़बान तर रखेंगे, लेकिन क़ुरआन उनके हलक से नीचे नहीं उतरेगा। दीन से इस तरह निकल

जाएंगे जैसे तीर शिकार से पार निकल जाता है। मेरा ख़्याल है कि आप ﷺ ने यह भी फरमाया कि अगर मैं उन लोगों को पाऊँ तो क़ौमे समूद की तरह उन्हें क़त्ल कर दूँ।''

٧٠ / ٢ـ وفي رواية مسلم زاد: فَقَامَ إِلَيْهِ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ ﷺ، فَقَالَ: يَا رَسُوْلَ اللهِ، أَلاَ أَضْرِبُ عُنُقَهُ؟ قَالَ: لاَ، قَالَ: ثُمَّ أَدْبَرَ فَقَامَ إِلَيْهِ خَالِدٌ سَيْفُ اللهِ. فَقَالَ: يَا رَسُوْلَ اللهِ، أَلاَ أَضْرِبُ عُنُقَهُ؟ قَالَ: لاَ، فَقَالَ: إِنَّهُ سَيَخْرُجُ مِنْ ضِئْضِئِ هَذَا قَوْمٌ، يَتْلُوْنَ كِتَابَ اللهِ لَيِّنًا رَطْبًا، (وَقَالَ: قَالَ عَمَّارَةُ: حَسِبْتُهُ) قَالَ: لَئِنْ أَدْرَكْتُهُمْ لَأَقْتُلَنَّهُمْ قَتْلَ ثَمُوْدَ.

''और मुस्लिम की एक रिवायत में इज़ाफ़ा है कि हज़रत उमर फ़ारूक़ ﷺ खड़े हुए और अर्ज़ कियाः या रसूलल्लाह! क्या मैं उस (मुनाफ़िक़) की गर्दन ना उड़ा दूँ ? आप ﷺ ने फरमायाः नहीं। फिर वो शख़्स चला गया, फिर हज़रत ख़ालिद सैफुल्लाह ﷺ ने खड़े हो कर अर्ज़ कियाः या रसूलल्लाह! मैं उस (मुनाफ़िक़) की गर्दन ना उड़ा दूँ? आप ﷺ ने फरमायाः नहीं उसकी नस्ल से ऐसे लोग पैदा होंगे जो क़ुरआन बहुत ही अच्छा पढ़ेंगे (रावी) अम्मारह कहते हैं कि मेरा ख़याल है आप ﷺ ने यह भी फरमाया : अगर मैं उन लोगों को पा लेता तो (क़ौमे) समूद की तरह ज़रूर उन्हें क़त्ल कर देता।''

٧١ / ٣ـ عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ ﷺ قَالَ: بَيْنَا النَّبِيُّ ﷺ يَقْسِمُ

الحديث رقم ٢: أخرجه مسلم في الصحيح، كتاب: الزكاة، باب: ذكر الخوارج وصفاتهم، ٢/٧٤٣، الرقم: ١٠٦٤.

الحديث رقم ٣: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: الأدب، باب: ماجاء في قول الرجل ويلك، ٥/٢٢٨١، الرقم: ٥٨١١، وفي كتاب: استتابة المرتدين والمعاندين وقتالهم، باب: من ترك قتال الخوارج للتألف وأن لا ينفر الناس عنه، ٦/٢٥٤٠، الرقم: ٦٥٣٤، ومسلم في الصحيح، كتاب: الزكاة، باب: ذكر الخوارج وصفاتهم، ٢/٧٤٤، الرقم: ١٠٦٤، والنسائي في السنن الكبرى، ٥/١٥٩، الرقم: ٨٥٦٠-٨٥٦١، ٦/٣٥٥، الرقم: ١١٢٢٠، وأحمد بن حنبل في المسند، ٣/٦٥، الرقم: ١١٦٣٩، وابن حبان في الصحيح، ١٥/١٤٠، الرقم: ٦٧٤١، والبيهقي في السنن الكبرى، ٨/١٧١، وعبد الرزاق في المصنف، ١٠/١٤٦.

ذَاتَ يَوْمٍ قِسْمًا فَقَالَ ذُوالْخُوَيْصَرَةِ رَجُلٌ مِنْ بَنِي تَمِيْمٍ: يَا رَسُوْلَ اللهِ، اعْدِلْ، قَالَ: وَيْلَكَ مَنْ يَعْدِلُ إِذَا لَمْ أَعْدِلْ؟ فَقَالَ عُمَرُ: ائْذَنْ لِي فَلْأَضْرِبْ عُنُقَهُ، قَالَ: لَا، إِنَّ لَهُ أَصْحَابًا يَحْقِرُ أَحَدُكُمْ صَلَاتَهُ مَعَ صَلَاتِهِمْ، وَ صِيَامَهُ مَعَ صِيَامِهِمْ، يَمْرُقُوْنَ مِنَ الدِّيْنِ كَمُرُوْقِ السَّهْمِ مِنَ الرَّمِيَّةِ يَنْظُرُ إِلَى نَصْلِهِ فَلَا يُوْجَدُ فِيْهِ شَيءٌ ثُمَّ يَنْظُرُ إِلَى رِصَافِهِ فَلَا يُوْجَدُ فِيْهِ شَيءٌ ثُمَّ يَنْظُرُ إِلَى نَضِيِّهِ فَلَا يُوْجَدُ فِيْهِ شَيءٌ ثُمَّ يَنْظُرُ إِلَى قُذَذِهِ فَلَا يُوْجَدُ فِيْهِ شَيءٌ، قَدْ سَبَقَ الْفَرْثَ وَالدَّمَ يَخْرُجُوْنَ عَلَى حِيْنَ فُرْقَةٍ مِنَ النَّاسِ آيَتُهُمْ رَجُلٌ إِحْدَى يَدَيْهِ مِثْلُ ثَدْيِ الْمَرْأَةِ أَوْ مِثْلُ الْبَضْعَةِ تَدَرْدَرُ. قَالَ أَبُوْسَعِيْدٍ: أَشْهَدُ لَسَمِعْتُهُ مِنَ النَّبِيِّ ﷺ، وَأَشْهَدُ أَنِّي كُنْتُ مَعَ عَلِيٍّ حِيْنَ قَاتَلَهُمْ فَالْتُمِسَ فِي الْقَتْلَى فَأُتِيَ بِهِ عَلَى النَّعْتِ الَّذِي نَعْتَ النَّبِيُّ ﷺ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ؓ से मरवी है उन्होंने फरमाया कि एक रोज़ हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ माले (ग़नीमत) तक़्सीम कर रहे थे तो ज़ुल्ख़ुवैसरा नामी शख़्स ने जो कि बनी तमीम से था कहाः या रसूलल्लाह ! इन्साफ़ कीजिये। आप ﷺ ने फरमायाः तू हलाक हो, अगर मैं इन्साफ़ न करूँ तो और कौन इन्साफ़ करेगा? हज़रत उमर ؓ ने अर्ज़ कियाः (या रसूलल्लाह!) मुझे इजाज़त दें कि उसकी गर्दन उड़ा दूँ? आप ﷺ ने फरमायाः नहीं क्योंकि उसके (ऐसे) साथी भी हैं कि तुम उन की नमाज़ों के मुक़ाबले में अपनी नमाज़ों को हक़ीर पाओगे और उनके रोज़ों के मुकाबले में अपने रोज़ों को हक़ीर जानोगे। वो दीन से इस तरह निकले हुए होंगे जैसे शिकार से तीर निकल जाता है, फिर उस के पैकान (तीर की नोक) पर कुछ नज़र नहीं आता, उस के पट्ठे पर भी कुछ नज़र नहीं आता, उसकी लकड़ी पर भी कुछ नज़र नहीं आता और न उस के परों पर कुछ नज़र आता है, वो गोबर और खून को भी छोड़ कर निकल जाता है। वो लोगों में फ़िरक़ा बन्दी के वक़्त (उसे हवा देने के लिए) निकलेंगे। उनकी निशानी यह है कि उन में एक आदमी का हाथ औरत के पिस्तान या गोश्त के लोथड़े की तरह हिलता होगा। हज़रत अबू सईद ؓ फरमाते हैं कि मैं गवाही देता हूँ कि मैंने यह हदीसे पाक हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ से

सुनी है और मैं (यह भी) गवाही देता हूँ कि मैं हज़रत अली ؓ के साथ था जब उन (ख़ारजी) लोगों से जंग की गई, उस शख़्स को मुक़्तुलीन में तलाश किया गया तो उस वस्फ़ (निशानी) का एक आदमी मिल गया जो हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने बयान फरमाया था।''

٧٢/ ٤. عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ ؓ قَالَ: بَعَثَ عَلِيٌّ ؓ وَهُوَ بِالْيَمَنِ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ بِذُهَيْبَةٍ فِي تُرْبَتِهَا فَقَسَمَهَا بَيْنَ الْأَقْرَعِ بْنِ حَابِسٍ الْحَنْظَلِيِّ ثُمَّ أَحَدِ بَنِي مُجَاشِعٍ وَبَيْنَ عُيَيْنَةَ بْنِ بَدْرٍ الْفَزَارِيِّ وَبَيْنَ عَلْقَمَةَ بْنِ عُلَاثَةَ الْعَامِرِيِّ ثُمَّ أَحَدِ بَنِي كِلَابٍ وَبَيْنَ زَيْدِ الْخَيْلِ الطَّائِيِّ ثُمَّ أَحَدِ بَنِي نَبْهَانَ فَتَغَيَّظَتْ قُرَيْشٌ وَالْأَنْصَارُ فَقَالُوْا: يُعْطِيْهِ صَنَادِيْدَ أَهْلِ نَجْدٍ وَ يَدَعُنَا، قَالَ: إِنَّمَا أَتَأَلَّفُهُمْ فَأَقْبَلَ رَجُلٌ غَائِرُ الْعَيْنَيْنِ نَاتِئُ الْجَبِيْنِ، كَثُّ اللِّحْيَةِ، مُشْرِفُ الْوَجْنَتَيْنِ، مَحْلُوْقُ الرَّأْسِ، فَقَالَ: يَا مُحَمَّدُ، اتَّقِ اللهَ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: فَمَنْ يُطِيْعُ اللهَ إِذَا عَصَيْتُهُ فَيَأْمَنُنِي عَلَى أَهْلِ الْأَرْضِ، وَ لَاتَأْمَنُوْنِي؟ فَسَأَلَ رَجُلٌ مِنَ الْقَوْمِ قَتْلَهُ أُرَاهُ خَالِدَ بْنَ الْوَلِيْدِ فَمَنَعَهُ النَّبِيُّ ﷺ (وفي رواية أبي نعيم: فَقَالَ: يَا مُحَمَّدُ، اتَّقِ اللهَ، وَاعْدِلْ، فَقَالَ

الحديث رقم ٤: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: التوحيد، باب: قول الله تعالى: تعرج الملائكة والروح إليه، ٦/ ٢٧٠٢، الرقم: ٦٩٩٥، وفي كتاب: الأنبياء، باب: قول الله ﷻ: وأما عاد فأهلكوا بريح صرصر شديدة عاتية، ٣/ ١٢١٩، الرقم: ٣١٦٦، ومسلم في الصحيح، كتاب: الزكاة، باب: ذكر الخوارج وصفاتهم، ٢/ ٧٤١، الرقم: ١٠٦٤، وأبوداود في السنن، كتاب: السنة، باب: في قتال الخوارج، ٤/ ٢٤٣، الرقم: ٤٧٦٤، والنسائي في السنن، كتاب: تحريم الدم، باب: من شهر سيفه ثم وضعه في الناس، ٧/ ١١٨، الرقم: ٤١٠١، وفي كتاب: الزكاة، باب: المؤلفة قلوبهم، ٥/ ٨٧، الرقم: ٢٥٧٨، وفي السنن الكبرى، ٦/ ٣٥٦، الرقم: ١١٢٢١، وأحمد بن حنبل في المسند، ٣/ ٦٨، ٧٣، الرقم: ١١٦٦٦، ١١٧١٣، وعبد الرزاق في المصنف، ١٠/ ١٥٦، وأبونعيم في المسند المستخرج، ٣/ ١٢٧، الرقم: ٢٣٧٣.

رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: يَأْمَنُنِي أَهْلُ السَّمَاءِ وَلَا تَأْمَنُوْنِي؟ فَقَالَ أَبُوْبَكْرٍ: أَضْرِبُ رَقَبَتَهُ يَا رَسُوْلَ اللهِ؟ قَالَ: نَعَمْ، فَذَهَبَ فَوَجَدَهُ يُصَلِّي، فَجَاءَ النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَ: وَجَدْتُهُ يُصَلِّي فَقَالَ آخَرُ: أَنَا أَضْرِبُ رَقَبَتَهُ؟ فَلَمَّا وَلَّى قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: إِنَّ مِنْ ضِئْضِئِ هَذَا قَوْمًا يَقْرَءُوْنَ الْقُرْآنَ لَا يُجَاوِزُ حَنَاجِرَهُمْ يَمْرُقُوْنَ مِنَ الإِسْلَامِ مُرُوْقَ السَّهْمِ مِنَ الرَّمِيَّةِ يَقْتُلُوْنَ أَهْلَ الإِسْلَامِ وَ يَدْعُوْنَ أَهْلَ الْأَوْثَانِ لَئِنْ أَدْرَكْتُهُمْ لَأَقْتُلَنَّهُمْ قَتْلَ عَادٍ.

مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ وَهَذَا لَفْظُ الْبُخَارِيِّ.

''हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ ने फरमाया कि हज़रत अ़ली ﷺ ने यमन से मिट्टी में मिला हुआ थोड़ा सा सोना हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की ख़िदमत में भेजा तो आप ﷺ ने उसे अक़रअ बिन हाबिस जो बनी मुजाशेअ का एक फ़र्द था और उयैना बिन बदर फ़ज़ारी, अ़लक़मा बिन उलासा आमिर, जो बनी किलाब से था और ज़ैद–अल–ख़ैल ताई जो बनी नबहान से था उन चारों के दरमियान तक़्सीम फरमा दिया। इस पर कुरैश और अन्सार को नाराज़गी हुई और उन्होंने कहा कि अहले नज्द के सरदारों को माल देते हैं, और हमें नज़र अन्दाज़ करते हैं। आप ﷺ ने फरमायाः मैं तो उनकी तालीफ़े क़ल्ब के लिए करता हूँ। उसी अस्ना में एक शख़्स आया जिसकी आँखें अन्दर को धंसी हुई, पेशानी उभरी हुई, दाढ़ी घनी, गाल फूले हुए और सर मुंडा हुआ था और उसने कहा : ऐ मुहम्मद ! अल्लाह से डरो, हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः अल्लाह तआला की इताअ़त करने वाला कौन है ? अगर मैं उसकी नाफरमानी करता हूँ हालांकि उस ने मुझे ज़मीन वालों पर अमीन बनाया है और तुम मुझे अमीन नहीं मानते। तो सहाबा में से एक शख़्स ने उसे क़त्ल करने की इजाज़त माँगी मेरे ख़याल में वो हज़रत ख़ालिद बिन वलीद ﷺ थे तो हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने उन्हें मना फरमा दिया (और अबू नईम की रिवायत में है कि ''उस शख़्स ने कहाः ऐ मुहम्मद अल्लाह से डरो और अ़द्ल करो, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमायाः आसमान वालों के नज़दीक, मैं अमानतदार हूँ और तुम मुझे अमीन नहीं समझते? तो हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ ﷺ ने अ़र्ज़ किया: या रसूलुल्लाह ! मैं उस की गर्दन काट दूँ? फरमायाः हाँ, सो वो गए तो उसे नमाज़ पढ़ते हुए पाया, तो (वापस पलट आए और) हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर होकर अ़र्ज़ किया: मैंने उसे नमाज़ पढ़ते

पाया (इसलिए क़त्ल नहीं किया) तो किसी दूसरे सहाबी ने अ़र्ज़ कियाः मैं उसकी गर्दन काट दूँ?) जब वो चला गया तो हुज़ूर नबी–ए– अकरम ﷺ ने फरमायाः उस शख़्स की नस्ल से ऐसी क़ौम पैदा होगी कि वो लोग क़ुरआन पढ़ेंगे लेकिन उनके हलक़ से नीचे नहीं उतरेगा, वो इस्लाम से इस तरह निकल जाएंगे जैसे तीर शिकार से निकल जाता है। वो बुतपरस्तों को छोड़ कर मुसलमानों को क़त्ल करेंगे अगर मैं उन्हें पाऊँ तो क़ौमे आ़द की तरह उन्हें क़त्ल कर दूँ।''

٧٣/ ٥۔ عَنْ عَلِيٍّ رضي الله عنه قَالَ: إِنِّي سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: سَيَخْرُجُ قَومٌ فِي آخِرِ الزَّمَانِ أَحْدَاثُ الْأَسْنَانِ سُفَهَاءُ الْأَحْلَامِ يَقُوْلُوْنَ مِنْ خَيْرِ قَوْلِ الْبَرِيَّةِ، لاَ يُجَاوِزُ إِيْمَانُهُمْ حَنَاجِرَهُمْ، يَمْرُقُوْنَ مِنَ الدِّيْنِ كَمَا يَمْرُقُ السَّهْمُ مِنَ الرَّمِيَّةِ، فَأَيْنَمَا لَقِيْتُمُوْهُمْ فَاقْتُلُوْهُمْ، فَإِنَّ فِي قَتْلِهِمْ أَجْرًا لِمَنْ قَتَلَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

و أخرجه أبوعيسى الترمذي عن عبد الله بن مسعود رضي الله عنه في سننه وقال: وفي الباب عن علي وأبي سعيد وأبي ذرّ رضي الله عنهم وهذا حديث حسن صحيح وقد رُوي في غير هذا الحديث: عَنِ النَّبِيِّ ﷺ حَيْثُ وَصَفَ

الحديث رقم ٥: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: استتابة المرتدين والمعاندين وقتالهم، باب: قتل الخوارج والملحدين بعد إقامة الحجة عليهم، ٦/ ٢٥٣٩، الرقم: ٦٥٣١، ومسلم في الصحيح، كتاب: الزكاة، باب: التحريض على قتل الخوارج، ٢/ ٧٤٦، الرقم: ١٠٦٦، والترمذي في السنن، كتاب: الفتن عن رسول الله ﷺ، باب: في صفة المارقة، ٤/ ٤٨١، الرقم: ٢١٨٨، والنسائي في السنن، كتاب: تحريم الدم، باب: من شهر سيفه ثم وضعه في الناس، ٧/ ١١٩، الرقم: ٤١٠٢، وابن ماجه في السنن، المقدمة، باب: في ذكر الخوارج، ١/ ٥٩، الرقم: ١٦٨، وأحمد بن حنبل في المسند، ١/ ٨١، ١١٣، ١٣١، الرقم: ٦١٦، ٩١٢، ١٠٨٦، وابن أبي شيبة في المصنف، ٧/ ٥٥٣، الرقم: ٣٧٨٨٣، وعبد الرزاق في المصنف، ١٠/ ١٥٧، والبزار في المسند، ٢/ ١٨٨، الرقم: ٥٦٨، وأبويعلى في المسند، ١/ ٢٧٣، الرقم: ٣٢٤، والبيهقي في السنن الكبرى، ٨/ ١٧٠، والطبراني في المعجم الصغير، ٢/ ٢١٣، الرقم: ١٠٤٩، وعبد الله بن أحمد في السنة، ٢/ ٤٤٣، الرقم: ٩١٤، والطيالسي في المسند، ١/ ٢٤، الرقم: ١٦٨۔

هَؤُلَاءِ الْقَومَ الَّذِيْنَ يَقرَءُوْنَ الْقُرْآنَ لَا يُجَاوِزُ تَرَاقِيَهُمْ يَمْرُقُوْنَ مِنَ الدِّيْنِ كَمَا يَمْرُقُ السَّهْمُ مِنَ الرَّمِيَّةِ. إنما هم الخوارج الحرورية وغيرهم من الخوارج.

''हज़रत अली ﷺ रिवायत करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना कि अनक़रीब आख़िरी ज़माने में ऐसे लोग ज़ाहिर होंगे या निकलेंगे जो नौउमर और अक़्ल से कोरे होंगे वो हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की अहादीस बयान करेंगे लेकिन ईमान उनके अपने हलक़ से नहीं उतरेगा। दीन से वो यूं ख़ारिज होंगे जैसे तीर शिकार से ख़ारिज हो जाता है पस तुम इन्हें जहाँ कहीं पाओ तो क़त्ल कर देना क्योंकि उन को क़त्ल करने वालों को क़यामत के दिन सवाब मिलेगा।''

''इमाम अबू ईसा तिर्मिज़ी ने अपनी सुनन में इस हदीस को बयान करने के बाद फरमायाः यह रिवायत हज़रत अली, हज़रत अबू सईद और हज़रत अबूज़र ﷺ से भी मरवी है और यह हदीस हुस्ने सहीह है। इस हदीस के अलावा भी हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ से रिवायत किया गया कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमायाः जबकि एक ऐसी क़ौम ज़ाहिर होगी जिसमें यह औसाफ़ होंगे जो क़ुरआन मजीद को तिलावत करते होंगे लेकिन वो इनके हलकों से नहीं उतरेगा वो लोग दीन से इस तरह ख़ारिज होंगे जिस तरह तीर शिकार से ख़ारिज हो जाता है वो ख़वारिज हरूरिया होंगे और इस के अलावा ख़वारिज में से (दीगर फ़िरकों पर मुश्तमिल) लोग होंगे।''

٧٤ / ٦. عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ ﷺ قَالَ: بَيْنَا النَّبِيُّ ﷺ يَقْسِمُ، جَاءَ عَبْدُ اللهِ بْنُ ذِي الْخُوَيْصِرَةِ التَّمِيْمِيُّ فَقَالَ: اعْدِلْ يَا رَسُوْلَ اللهِ! قَالَ: وَيْحَكَ، وَمَنْ يَعْدِلُ إِذَا لَمْ أَعْدِلْ. قَالَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ: اِئْذَنْ لِي فَأَضْرِبَ عُنُقَهُ، قَالَ: دَعْهُ، فَإِنَّ لَهُ أَصْحَابًا، يَحْقِرُ أَحَدُكُمْ صَلَاتَهُ مَعَ

الحديث رقم ٦: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: استتابة المرتدين والمعاندين، باب: مَن ترك قتال الخوارج لِلتَّأَلُّفِ، وَ لِئَلَّا يَنْفِرَ النَّاسُ عَنه، ٦ / ٢٥٤٠، الرقم: ٦٥٣٢،٦٥٣٤، وفي كتاب: المناقب، باب: علاماتِ النُّبُوَّةِ في الإسلامِ، ٣ / ١٣٢١، الرقم: ٣٤١٤، وفي كتاب: فضائل القرآن، باب: البكاء عند قراءة ←

صَلَاتِهِ وَ صِيَامَهُ مَعَ صِيَامِهِ، يَمْرُقُوْنَ مِنَ الدِّيْنِ كَمَا يَمْرُقُ السَّهْمُ مِنَ الرَّمِيَّةِ، يُنْظَرُ فِي قُذَذِهِ فَلَا يُوْجَدُ فِيْهِ شَيءٌ ثُمَّ يُنْظَرُ فِي نَصْلِهِ فَلَا يُوْجَدُ فِيْهِ شَيءٌ ثُمّ يُنْظَرُ فِي رِصَافِهِ فَلَا يُوْجَدُ فِيْهِ شَيءٌ، ثُمَّ يُنْظَرُ فِي نَضِيِّهِ فَلَا يُوْجَدُ فِيْهِ شَيءٌ، قَدْ سَبَقَ الفَرْثَ وَالدَّمَ......الحديث. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ माले ग़नीमत तक़्सीम कर रहे थे कि अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुल्ख़ुवैसिरह तमीमी आया और कहने लगाः या रसूलुल्लाह ! इन्साफ़ से तक़्सीम कीजिए (इसके इस तअ़्न पर) नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : कमबख़्त अगर मैं इन्साफ़ नहीं करता तो कौन करता है? हज़रत उमर ﷺ ने अ़र्ज़ कियाः (या रसूलल्लाह!) इजाज़त अ़ता फरमाएं मैं इस (ख़बीस मुनाफ़िक़) की गर्दन उड़ा दूँ? आप ﷺ ने फरमायाः रहने दो इसके कुछ साथी ऐसे हैं (या होंगे) कि उन की नमाज़ों और उनके रोज़ों के मुक़ाबले में तुम अपनी नमाज़ों और रोज़ों को हक़ीर जानोगे लेकिन वो लोग दीन से इस

.... القرآن، ٤/١٩٢٨، الرقم: ٤٧٧١، وفى كتاب: الأدب، باب: ما جاء فى قول الرَّجلِ ويْلَكَ، ٥/٢٢٨١، الرقم: ٥٨١١، ومسلم فى الصحيح، كتاب: الزكاة، باب: ذكر الخوارج وصفاتهم، ٢/٧٤٤، الرقم: ١٠٦٤، ونحوه النسائى عن أبى برزة ﷺ فى السنن، كتاب: تحريم الدم، باب: من شهر سيفه ثم وضعه فى الناس، ٧/١١٩، الرقم: ٤١٠٣، وفى السنن الكبرى، ٦/٣٥٥، الرقم: ١١٢٢٠، وابن ماجه فى السنن، المقدمة، باب: فى ذكر الخوارج، ١/٦١، الرقم: ١٧٢، وابن الجارود فى المنتقى، ١/٢٧٢، الرقم: ١٠٨٣، وابن حبان فى الصحيح، ١٥/١٤٠، الرقم: ٦٧٤١، والحاكم عن أبي برزة ﷺ فى المستدرك، ٢/١٦٠، الرقم: ٢٦٤٧، وقال: هَذَا حَدِيثٌ صَحِيْحٌ، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٣/٥٦، الرقم: ١١٥٥٤، ١٤٨٦١، وابن أبى شيبة فى المصنف، ٧/٥٦٢، الرقم: ٣٧٩٣٢، وعبد الرزاق فى المصنف، ١٠/١٤٦، ونحوه البزار عن أبى برزة ﷺ فى المسند، ٩/٣٠٥، الرقم: ٣٨٤٦، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٨/١٧١، والطبرانى فى المعجم الأوسط، ٩/٣٥، الرقم: ٩٠٦٠، وأبويعلى فى المسند، ٢/٢٩٨، الرقم: ١٠٢٢، والبخارى عن جابر ﷺ فى الأدب المفرد، ١/٢٧٠، الرقم: ٧٧٤.

तरह निकले हुए होंगे जैसे तीर निशाने से पार निकल जाता है। (तीर फेंकने के बाद) तीर के पर को देखा जाएगा तो उसमें भी ख़ून का कोई असर न होगा। तीर की बाड़ को देखा जाएगा तो उसमें भी ख़ून का कोई निशान न होगा और तीर (जानवर के) गोबर और ख़ून से पार निकल चुका होगा। (ऐसी ही इन ख़बीसों की मिसाल है कि दीन के साथ उन का सिर से कोई ताअल्लुक़ ना होगा)।''

٧٥/٧. عَنْ جَابِرٍ رضي الله عنه يَقُوْلُ: بَصَرَ عَيْنِي وَسَمِعَ أُذُنِي رَسُوْلَ اللهِ ﷺ بِالْجِعْرَانَةِ وَفِي ثَوبِ بِـلَالٍ فِضَّةٌ وَرَسُوْلُ اللهِ ﷺ يَقْبِضُهَا لِلنَّاسِ يُعْطِيْهِمْ، فَقَالَ رَجُلٌ: اعْدِلْ، قَالَ: وَيْلَكَ، وَمَنْ يَعْدِلُ إِذَا لَمْ أَكُنْ أَعْدِلُ؟ قَالَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ: يَارَسُوْلَ اللهِ، دَعْنِي أَقْتُلْ هَذَا الْمُنَافِقَ الْخَبِيْثَ؟ فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَعَاذَ اللهِ أَنْ يَتَحَدَّثَ النَّاسُ أَنِّي أَقْتُلُ أَصْحَابِي، إِنَّ هَذَا وَأَصْحَابَهُ يَقْرَءُوْنَ الْقُرْآنَ لَا يُجَاوِزُ تَرَاقِيَهُمْ يَمْرُقُوْنَ مِنَ الدِّيْنِ كَمَا يَمْرُقُ السَّهْمُ مِنَ الرَّمِيَّةِ. رَوَاهُ أَحْمَدُ وَأَبُوْنُعَيْمٍ.

''हज़रत जाबिर رضي الله عنه से मरवी है फरमाते हैं कि मेरी आँखों ने देखा और कानों ने रसूलुल्लाह ﷺ से सुना, जिअ़राना के मुकाम पर हज़रत बिलाल رضي الله عنه के कपड़ों (गोद) में चाँदी थी और हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ उस में से मुट्ठियाँ भर–भर के लोगों को अ़ता फरमा रहे हैं तो एक शख़्स ने कहा : अ़द्ल करें। आप ﷺ ने फरमायाः तू हलाक हो। अगर मैं भी अद्ल नहीं करूँगा तो कौन अद्ल करेगा? हज़रत उमर बिन ख़त्ताब رضي الله عنه ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! मुझे इजाज़त अ़ता फरमायें कि मैं इस ख़बीस मुनाफ़िक़ को क़त्ल कर दूँ? तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमायाः मैं लोगों के इस क़ौल से कि मैं अपने साथियों को क़त्ल करने लग गया हूँ अल्लाह की पनाह चाहता हूँ। बेशक यह और इसके साथी (निहायत शीरीं अन्दाज़ में) क़ुरआन पढ़ेंगे वो उन के हलक़ से नहीं उतरेगा, वो दीन के दायरे से ऐसे ख़ारिज हो जाएंगे जैसे तीर शिकार से ख़ारिज़ हो जाता है।''

الحديث رقم ٧: أخرجه أحمد بن حنبل في المسند، ٣/ ٣٥٤، الرقم: ١٤٦١، وأبونعيم في المسند المستخرج، ٣/ ١٢٧، الرقم: ٢٣٧٢.

٨/٧٦. عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ رضي الله عنه عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: يَخْرُجُ نَاسٌ مِنْ قِبَلِ الْمَشْرِقِ وَ يَقْرَءُوْنَ الْقُرْآنَ لَا يُجَاوِزُ تَرَاقِيَهُمْ يَمْرُقُوْنَ مِنَ الدِّيْنِ كَمَا يَمْرُقُ السَّهْمُ مِنَ الرَّمِيَّةِ، ثُمَّ لَا يَعُوْدُوْنَ فِيْهِ حَتَّى يَعُوْدَ السَّهْمُ إِلَى فُوْقِهِ، قِيْلَ: مَا سِيْمَاهُمْ؟ قَالَ: سِيْمَاهُمُ التَّحْلِيْقُ أَوْ قَالَ: التَّسْبِيْدُ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ.

وفي رواية: عَنْ يُسَيْرِ بْنِ عَمْرٍو، قَالَ: سَأَلْتُ سَهْلَ بْنَ حُنَيْفٍ رضي الله عنه هَلْ سَمِعْتَ النَّبِيَّ ﷺ يَذْكُرُ الْخَوَارِجَ؟ فَقَالَ: سَمِعْتُهُ وَأَشَارَ بِيَدِهِ نَحْوَ الْمَشْرِقِ قَوْمٌ يَقْرَءُوْنَ الْقُرْآنَ بِأَلْسِنَتِهِمْ لَا يَعْدُوْا تَرَاقِيَهُمْ يَمْرُقُوْنَ مِنَ الدِّيْنِ كَمَا يَمْرُقُ السَّهْمُ مِنَ الرَّمِيَّةِ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ.

''हज़रत अबू सईद ख़ुदरी رضي الله عنه से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : मश्‍रिक़ की जानिब से कुछ लोग निकलेंगे कि वो क़ुरआने पाक पढ़ेंगे मगर उन के गलों से नीचे नहीं उतरेगा। वो दीन से इस तरह निकल जाएंगे जैसे तीर शिकार से पार निकल जाता है और फिर वो दीन में वापस नहीं आएंगे जब तक तीर अपनी जगह पर वापस न लौट आए। दरयाफ़्त किया गया कि उन की निशानी क्या है ? फरमाया : उन की निशानी सर मुंडाना है या फरमाया : सर मुंडाये रखना है।

الحديث رقم ٨: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: التوحيد، باب: قراءة الفاجر والمنافق وأصواتهم وتلاوتهم لا تجاوز حنا جرهم، ٦/٢٧٤٨، الرقم: ٧١٢٣، ومسلم في الصحيح، كتاب: الزكاة، باب: الخوارج شر الخلق والخليفة، ٢/٧٥٠، الرقم: ١٠٦٨، وأحمد بن حنبل في المسند، ٣/٦٤، الرقم: ١١٦٣٢، ٣/٤٨٦، وابن أبي شيبة في المصنف، ٧/٥٦٣، الرقم: ٣٧٣٩٧، وأبويعلى في المسند، ٢/٤٠٨، الرقم: ١١٩٣، والطبراني في المعجم الكبير، ٦/٩١، الرقم: ٥٦٠٩، وابن أبي عاصم في السنة، ٢/٤٩٠، الرقم: ٩٠٩، وقال: إسناده صحيح، وأبونعيم في المسند المستخرج، ٣/١٣٥، الرقم: ٢٣٩٠.

और मुस्लिम की रिवायत में है : युसैर बिन अ़म्र कहते हैं कि मैंने हज़रत सहल बिन हुनैफ़ ﷺ से पूछा : क्या आप ने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ से ख़वारिज का जिक्र सुना है? उन्होंने फरमाया : हाँ ! मैंने सुना है और अपने हाथ से मश्रिक की तरफ़ इशारा कर के कहा : वो (वहां से निकलेगें और) अपनी जुबानों से क़ुरआन मजीद पढ़ेंगे मगर वो उन के हलक़ से नहीं उतरेगा और दीन से ऐसे निकल जाएंगे जैसे तीर शिकार से पार निकल जाता है।''

٧٧ / ٩۔ عَنْ زَيْدِ بْنِ وَهْبِ الْجُهَنِيِّ أَنَّهُ كَانَ فِي الْجَيْشِ الَّذِيْنَ كَانُوْا مَعَ عَلِيٍّ ﷺ الَّذِيْنَ سَارُوْا إِلَى الْخَوَارِجِ، فَقَالَ عَلِيٌّ ﷺ: أَيُّهَا النَّاسُ إِنِّي سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: يَخْرُجُ قَوْمٌ مِنْ أُمَّتِي يَقْرَءُوْنَ الْقُرْآنَ لَيْسَ قِرَاءَتُكُمْ إِلَى قِرَاءَتِهِمْ بِشَيءٍ وَلاَ صَلَاتُكُمْ إِلَى صَلَاتِهِمْ بِشَيءٍ وَلَا صِيَامُكُمْ إِلَى صِيَامِهِمْ بِشَيءٍ يَقْرَءُوْنَ الْقُرْآنَ يَحْسِبُوْنَ أَنَّهُ لَهُمْ، وَهُوَ عَلَيْهِمْ لاَ تُجَاوِزُ صَلَاتُهُمْ تَرَاقِيَهُمْ يَمْرُقُوْنَ مِنَ الإِسْلَامِ كَمَا يَمْرُقُ السَّهْمُ مِنَ الرَّمِيَّةِ......الحديث. رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَأَبُوْدَاوُدَ.

''ज़ैद बिन वहब जुहनी बयान करते हैं कि वो उस लश्कर में थे जो हज़रत अ़ली ﷺ के साथ ख़वारिज से जंग के लिए गया था। हज़रत अ़ली ﷺ ने फरमाया : ऐ लोगो ! मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से सुना कि आप ﷺ ने फरमाया : मेरी उम्मत में एक ऐसी क़ौम ज़ाहिर होगी वो ऐसा (ख़ूबसूरत) क़ुरआन पढ़ेंगे कि उन के पढ़ने के सामने तुम्हारे क़ुरआन पढ़ने की कोई हैसियत न होगी, न उनकी नमाज़ों के सामने तुम्हारी नमाज़ों की कुछ हैसियत होगी और न ही उन के रोज़ों के सामने तुम्हारे रोज़ो की कोई हैसियत होगी। वो यह समझ कर क़ुरआन पढ़ेंगे कि वो उन के

الحديث رقم ٩: أخرجه مسلم في الصحيح، كتاب: الزكاة باب: التحريض على قتل الخوارج، ٢ / ٧٤٨، الرقم: ١٠٦٦، وأبوداود في السنن، كتاب: السنة، باب: في قتال الخوارج، ٤ / ٢٤٤، الرقم: ٤٧٦٨، والنسائي في السنن الكبرى، ٥ / ١٦٣، الرقم: ٨٥٧١، وأحمد بن حنبل في المسند، ١ / ٩١، الرقم: ٧٠٦، وعبد الرزاق في المصنف، ١٠ / ١٤٧، والبزار في المسند، ٢ / ١٩٧، الرقم: ٥٨١، وابن أبي عاصم في السنة، ٢ / ٤٤٥۔ ٤٤٦، والبيهقي في السنن الكبرى، ٨ / ١٧٠۔

लिए मुफ़ीद है लेकिन दर हक़ीक़त वो उन के लिए नुक़सानदेह होगा। नमाज़ उन के गले से नीचे न उतर सकेगी और वो इस्लाम से ऐसे निकल जाएंगे जैसे तीर शिकार से निकल जाता है।''

٧٨ / ١٠۔ عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ ﷺ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ ذَكَرَ قَوْمًا يَكُوْنُوْنَ فِي أُمَّتِهِ يَخْرُجُوْنَ فِي فُرْقَةٍ مِنَ النَّاسِ سِيْمَاهُمُ التَّحَالُقُ، قَالَ: هُمْ شَرُّ الْخَلْقِ (أَوْ مِنْ أَشَرِّ الْخَلْقِ) يَقْتُلُهُمْ أَدْنَى الطَّائِفَتَيْنِ إِلَى الْحَقِّ، قَالَ: فَضَرَبَ النَّبِيُّ ﷺ لَهُمْ مَثَلًا أَوْ قَالَ قَوْلاً: الرَّجُلُ يَرْمِي الرَّمِيَّةَ (أَوْ قَالَ: الْغَرَضَ) فَيَنْظُرُ فِي النَّصْلِ فَلَا يَرَى بَصِيْرَةً وَيَنْظُرُ فِي النَّضِيِّ فَلَا يَرَى بَصِيْرَةً وَيَنْظُرُ فِي الْفُوْقِ فَلَا يَرَى بَصِيْرَةً. رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَأَحْمَدُ.

''हज़रत अबू सईद ﷺ से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने एक क़ौम का ज़िक्र किया जो आप ﷺ की उम्मत में पैदा होगी, उसका ज़हूर उस वक्त होगा जब लोगों में फ़िरक़ाबन्दी हो जाएगी। उनकी अलामत सर मुंडाना होगी और वो मख़लूक़ में सबसे बदतर (या बदतरीन) होंगे और उन्हें दो जमाअतों में से वो जमाअत क़त्ल करेगी जो हक़ से ज़्यादा क़रीब होगी, फिर आप ﷺ ने उन लोगों की एक मिसाल बयान फरमाई कि जब आदमी किसी शिकार या निशाने को तीर मारता है तो पर को देखता है उस में कुछ असर नहीं होता और तीर की लकड़ी को देखता है और वहाँ भी असर नहीं होता, फिर उस हिस्से को देखता है जो तीर अन्दाज़ की चुटकी में होता है तो वहाँ भी कुछ असर नहीं पाता।''

٧٩ / ١١۔ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ وَعَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ أَنَّهُمَا أَتَيَا أَبَا سَعِيْدٍ الْخُدْرِيَّ ﷺ فَسَأَلَاهُ عَنِ الْحَرُوْرِيَّةِ أَسَمِعْتَ النَّبِيَّ ﷺ؟ قَالَ: لَا أَدْرِي

الحديث رقم ١٠: أخرجه مسلم في الصحيح، كتاب: الزكاة، باب: ذكر الخوارج وصفاتهم، ٢ / ٧٤٥، الرقم: ١٠٦٥، وأحمد بن حنبل في المسند، ٣ / ٥، الرقم: ١١٠٣١، وعبد الله بن أحمد في السنة، ٢ / ٦٢٢، الرقم: ١٤٨٢، وقال: إسناده صحيح.

الحديث رقم ١١: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: استتابة المرتدين والمعاندين وقتالهم، باب: قتل الخوارج والملحدين بعد إقامة الحجة عليهم، ٦ / ٢٥٤٠، الرقم: ٦٥٣٢، وفي كتاب: فضائل القرآن، باب: إثم من راءى بقراءة القرآن ←

مَا الْحَرُوْرِيَّةُ؟ سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُوْلُ: يَخْرُجُ فِي هَذِهِ الْأُمَّةِ وَ لَمْ يَقُلْ مِنْهَا قَوْمٌ تَحْقِرُوْنَ صَلَاتَكُمْ مَعَ صَلَاتِهِمْ يَقْرَءُوْنَ الْقُرْآنَ لَا يُجَاوِزُ حُلُوْقَهُمْ أَوْ حَنَاجِرَهُمْ يَمْرُقُوْنَ مِنَ الدِّيْنِ مُرُوْقَ السَّهْمِ مِنَ الرَّمِيَّةِ.

مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अबू सलमा और हज़रत अ़ता बिन यसार رضي الله عنهما दोनों हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया : क्या आप ने रसूलुल्लाह ﷺ से हरूरिय्या के बारे में कुछ सुना है? तो उन्होंने फरमाया कि मुझे नहीं मालूम कि हरूरिय्या क्या है? हाँ मैंने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ को यह फरमाते हुए सुना है कि इस उम्मत में से कुछ ऐसे लोग निकलेंगे और यह नहीं फरमाया कि एक ऐसी क़ौम निकलेगी (बल्कि लोग फरमाया) जिनकी नमाज़ों के मुक़ाबले में तुम अपनी नमाज़ों को हक़ीर जानोगे, वो क़ुरआन मजीद की तिलावत करेंगे लेकिन ये (क़ुरआन) उनके हलक़ से नहीं उतरेगा या यह फरमाया कि उन के नरख़रे से नीचे नहीं उतरेगा और वो दीन से यूँ ख़ारिज हो जाएंगे जैसे तीर शिकार से ख़ारिज हो जाता है।''

٨٠ / ١٢۔ عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ وَ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رضي الله عنهما عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ قَالَ: سَيَكُوْنُ فِي أُمَّتِي اخْتِلَافٌ وَفُرْقَةٌ قَوْمٌ يُحْسِنُوْنَ الْقِيْلَ وَ يُسِيْئُوْنَ الْفِعْلَ يَقْرَأُوْنَ الْقُرْآنَ لَا يُجَاوِزُ تَرَاقِيَهُمْ (وفي رواية:

.... أو تاكل به أو فخر به، ٤/ ١٩٢٨، الرقم: ٤٧٧١، ومسلم في الصحيح، كتاب: الزكاة، باب: ذكر الخوارج وصفاتهم، ٢/ ٧٤٣، الرقم: ١٠٦٤، ومالك في الموطأ، كتاب: القرآن، باب: ماجاء في القرآن، ١/ ٢٠٤، الرقم: ٤٧٨، والنسائي في السنن الكبرى، ٣/ ٣١، الرقم: ٨٠٨٩، وأحمد بن حنبل في المسند، ٣/ ٦٠، الرقم: ١١٥٩٦، وابن حبان في الصحيح، ١٥/ ١٣٢، الرقم: ٦٧٣٧، والبخاري في خلق أفعال العباد، ١/ ٥٣ وا بن أبي شيبة في المصنف، ٧/ ٥٦٠، الرقم: ٣٧٩٢٠، وأبويعلى في المسند، ٢/ ٤٣٠، الرقم: ١٢٣٣۔

الحديث رقم ١٢: أخرجه أبوداود في السنن، كتاب: السنة، باب: في: قتال الخوارج، ٤/ ٢٤٣، الرقم: ٤٧٦٥، وابن ماجه في السنن، المقدمة، باب: في ذكر ←

يَحْقِرُ أَحَدُكُمْ صَلَاتَهُ مَعَ صَلَاتِهِمْ وَصِيَامَهُ مَعَ صِيَامِهِمْ) يَمْرُقُوْنَ مِنَ الدِّيْنِ مُرُوْقَ السَّهْمِ مِنَ الرَّمِيَّةِ لَا يَرْجِعُوْنَ حَتَّى يَرْتَدَّ عَلَى فُوْقِهِ هُمْ شَرُّالْخَلْقِ وَالْخَلِيْقَةِ طُوْبَى لِمَنْ قَتَلَهُمْ وَقَتَلُوْهُ يَدْعُوْنَ إِلَى كِتَابِ اللهِ وَلَيْسُوْا مِنْهُ فِي شَيءٍ مَنْ قَاتَلَهُمْ كَانَ أَوْلَى بِاللهِ مِنْهُمْ قَالُوْا: يَارَسُوْلَ اللهِ مَا سِيْمَاهُمْ؟ قَالَ: التَّحْلِيْقُ.

وفي رواية: عَنْ أَنَسٍ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ نَحْوَهُ: سِيْمَاهُمُ التَّحْلِيْقُ وَ التَّسْبِيْدُ. رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ وَابْنُ مَاجه مُخْتَصَرًا وَأَحْمَدُ وَالْحَاكِمُ.

''हज़रत अबू सईद ख़ुदरी और हज़रत अनस बिन मालिक رضي الله عنهما से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः अनक़रीब मेरी उम्मत में इख़्तिलाफ़ और तफ़रिक़ा बाज़ी होगी, एक क़ौम ऐसी होगी कि वो लोग गुफ़्तार के अच्छे और किरदार के बुरे होंगे, क़ुरआन पाक पढ़ेंगे जो उन के गले नहीं उतरेगा (और एक रिवायत में है कि तुम अपनी नमाज़ों और रोज़ों को उनकी नमाज़ों और रोज़ों के मुक़ाबले में हक़ीर समझोगे) वो दीन से ऐसे ख़ारिज हो जाएंगे जैसे तीर शिकार से ख़ारिज हो जाता है और वापस नहीं आएंगे जब तक तीर कमान में वापस नहीं आ जाये वो सारी मख़लूक़ में सब से बुरे होंगे, ख़ुशख़बरी हो उसे जो उन्हें क़त्ल करें और जिसे वो क़त्ल करें। वो अल्लाह ﷻ की किताब की तरफ़ बुलाएंगे लेकिन उस के साथ उन को कोई ताअल्लुक़ नहीं होगा उन का कातिल उन की निस्बत अल्लाह तआला से ज़्यादा क़रीब होगा। सहाबा किराम ने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह ! उनकी निशानी क्या है? फरमाया : सिर मुंडाना।''

''एक और रिवायत में हज़रत अनस ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ

.... الخوارج، ١/ ٦٠، الرقم: ١٦٩، وأحمد بن حنبل في المسند، ٣/ ٢٢٤، الرقم: ١٣٣٦٢، والحاكم في المستدرك، ٢/ ١٦١، الرقم: ٢٦٤٩، والبيهقي في السنن الكبرى، ٨/ ١٧١، والمقدسي في الأحاديث المختارة، ٧/ ١٥، الرقم: ٢٣٩١-٢٣٩٢، وقال: إسناده صحيح، وأبويعلى في المسند، ٥/ ٤٢٦، الرقم: ٣١١٧، والطبراني نحوه في المعجم الكبير، ٨/ ١٢١، الرقم: ٧٥٥٣، والمروزي في السنة، ١/ ٢٠، الرقم: ٥٢.

ने इसी तरह फरमायाः उन की निशानी सर मुंडाना और अक्सर मुंडाए रखना है।''

٨١ / ١٣۔ عَنْ شَرِيْكِ بْنِ شِهَابٍ قَالَ: كُنْتُ أَتَمَنَّى أَنْ أَلْقَى رَجُلًا مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ ﷺ أَسْأَلُهُ عَنِ الْخَوَارِجِ، فَلَقِيْتُ أَبَا بَرْزَةَ فِي يَومِ عِيْدٍ فِي نَفَرٍ مِنْ أَصْحَابِهِ فَقُلْتُ لَهُ: هَلْ سَمِعْتَ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَذْكُرُ الْخَوَارِجَ؟ فَقَالَ: نَعَمْ، سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ بِأُذُنِي وَرَأَيْتُهُ بِعَيْنِي أُتِيَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ بِمَالٍ فَقَسَمَهُ، فَأَعْطَى مَنْ عَنْ يَمِيْنِهِ وَ مَنْ عَنْ شِمَالِهِ، وَلَمْ يُعْطِ مَنْ وَرَاءَهُ شَيْئًا، فَقَامَ رَجُلٌ مِنْ وَرَائِهِ. فَقَالَ: يَا مُحَمَّدُ، مَا عَدَلْتَ فِي الْقِسْمَةِ، رَجُلٌ أَسْوَدُ مَطْمُوْمُ الشَّعْرِ، عَلَيْهِ ثَوْبَانِ أَبْيَضَانِ (وزاد أحمد: بَيْنَ عَيْنَيْهِ أَثَرُ السُّجُوْدِ)، فَغَضِبَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ غَضَبًا شَدِيْدًا، وَ قَالَ: وَاللهِ، لَا تَجِدُوْنَ بَعْدِي رَجُلًا هُوَ أَعْدَلُ مِنِّي، ثُمَّ قَالَ: يَخْرُجُ فِي آخِرِ الزَّمَانِ قَوْمٌ كَأَنَّ هَذَا مِنْهُمْ (وفي رواية: قَالَ: يَخْرُجُ مِنْ قِبَلِ الْمَشْرِقِ رِجَالٌ كَانَ هَذَا مِنْهُمْ هَدْيُهُمْ هَكَذَا) يَقْرَءُوْنَ الْقُرْآنَ لَا يُجَاوِزُ تَرَاقِيَهُمْ، يَمْرُقُوْنَ مِنَ الإِسْلَامِ كَمَا يَمْرُقُ السَّهْمُ مِنَ الرَّمِيَّةِ، سِيْمَاهُمُ التَّحْلِيْقُ، لَا يَزَالُوْنَ يَخْرُجُوْنَ حَتَّى يَخْرُجَ آخِرُهُمْ مَعَ الْمَسِيْحِ الدَّجَّالِ، فَإِذَا لَقِيْتُمُوْهُمْ فَاقْتُلُوْهُمْ، هُمْ شَرُّ الْخَلْقِ وَالْخَلِيْقَةِ.

الحديث رقم ١٣: أخرجه النسائي في السنن، كتاب: تحريم الدم، باب: من شهر سيفه ثم وضعه في الناس، ٧ / ١١٩، الرقم: ٤١٠٣، وفي السنن الكبرى، ٢ / ٣١٢، الرقم: ٣٥٦٦، وأحمد بن حنبل في المسند، ٤ / ٤٢١، والبزار في المسند، ٩ / ٢٩٤، ٣٠٥، الرقم: ٣٨٤٦، والحاكم في المستدرك، ٢ / ١٦٠، الرقم: ٢٦٤٧، وابن أبي شيبة في المصنف، ٧ / ٥٥٩، الرقم: ٣٧٩١٧، وابن أبي عاصم في السنة، ٢ / ٤٥٢، الرقم ٩٢٧، والطيالسي في المسند، ١ / ١٢٤، الرقم: ٩٢٣، والعسقلاني في فتح الباري، ١٢ / ٢٩٢، والقيسراني في تذكرة الحفاظ، ٣ / ١١٠١، وابن تيمية في الصارم المسلول، ١ / ١٨٨۔

رَوَاهُ النَّسَائِيُّ وَأَحْمَدُ وَالْبَزَّارُ وَالْحَاكِمُ.

وَقَالَ الْحَاكِمُ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحٌ. وَرِجَالُهُ رِجَالُ الصَّحِيْحِ كَمَا قَالَ الْهَيْثَمِيُّ.

''हज़रत शरीक बिन शिहाब ने बयान किया कि मुझे इस बात की शदीद ख़्वाहिश थी कि मैं हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के किसी सहाबी से मिलूँ और उनसे ख़वारिज के मुतअल्लिक़ दरयाफ़्त करूँ। इत्तिफ़ाक़न मैंने ईद के रोज हज़रत अबू बरज़ा ﷺ को उनके कई दोस्तों के साथ देखा मैंने उनसे दरयाफ़्त कियाः क्या आप ने ख़ारजियों के बारे में हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ से कुछ सुना है ? आप ने फरमायाः हाँ, मैंने अपने कानों से सुना और आँखों से देखा कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की ख़िदमते अक़दस में कुछ माल पेश किया गया और आप ﷺ ने उस माल को उन लोगों में तक़्सीम फरमा दिया जो दाईं और बाईं तरफ़ बैठे थे और जो लोग पीछे बैठे थे आप ﷺ ने उन्हें कुछ इनायत न फरमाया, चुनान्चे उनमें से एक शख़्स खड़ा हुआ और उसने कहा ऐ मुहम्मद ! आप ने इन्साफ़ से तक़्सीम नहीं की। वो शख़्स सियाह रंग, सर मुंडा और सफेद कपड़े पहने हुए था। (और इमाम अहमद बिन हंबल ने इज़ाफ़ा किया कि उसकी दोनों आँखों के दरमियान (पेशानी पर) सजदों का असर नुमायां था)। हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ शदीद नाराज़ हुए और फरमायाः खुदा की क़सम! तुम मेरे बाद मुझसे बढ़ कर किसी शख़्स को इन्साफ़ करने वाला न पाओगे, फिर फरमायाः आख़िरी जमाने में कुछ लोग पैदा होंगे यह शख़्स भी उन्हीं लोगों में से है (और एक रिवायत में है कि आप ﷺ ने फरमायाः मश्रिक़ की तरफ़ से एक क़ौम निकलेगी यह आदमी भी उन लोगों में से है और उन का तौर तरीक़ा भी यही होगा) वो क़ुरआन मजीद की तिलावत करेंगे मगर क़ुरआन उनके हलक़ से नीचे ना उतरेगा वो इस्लाम से इस तरह निकल जाएंगे जैसे तीर शिकार से निकल जाता है। उन की निशानी यह है वो सर मुंडे होंगे हमेशा निकलते ही रहेंगे यहाँ तक कि उनका आखिरी गिरोह दज्जाल के साथ निकलेगा जब तुम उन से मिलो तो उन्हें क़त्ल कर दो। वो तमाम मख़लूक़ से बदतरीन हैं।''

٨٢ / ١٤. عَنْ أَبِي سَلَمَةَ قَالَ: قُلْتُ لِأَبِي سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ ﷺ: هَلْ

الحديث رقم ١٤: أخرجه ابن ماجه في السنن، المقدمة، باب: في ذكر الخوارج، ١/ ٦٠، الرقم: ١٦٩، وأحمد بن حنبل في المسند، ٣/ ٣٣، الرقم: ١١٣٠٩، وابن أبي شيبة في المصنف، ٧/ ٥٥٧، الرقم: ٣٧٩٠٩.

سَمِعْتَ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَذْكُرُ فِي الْحَرُوْرِيَّةِ شَيْئًا؟ فَقَالَ: سَمِعْتُهُ يَذْكُرُ قَوْمًا يَتَعَبَّدُونَ (وفي رواية أحمد: يَتَعَمَّقُوْنَ فِي الدِّيْنِ) يَحْقِرُ أَحَدُكُمْ صَلَاتَهُ مَعَ صَلَاتِهِمْ وَصَومَهُ مَعَ صَومِهِمْ يَمْرُقُوْنَ مِنَ الدِّيْنِ كَمَا يَمْرُقُ السَّهْمُ مِنَ الرَّمِيَّةِ أَخَذَ سَهْمَهُ فَنَظَرَ فِي نَصْلِهِ فَلَمْ يَرَ شَيْئًا، فَنَظَرَ فِي رِصَافِهِ فَلَمْ يَرَ شَيْئًا فَنَظَرَ فِي قِدْحِهِ فَلَمْ يَرَ شَيْئًا، فَنَظَرَ فِي الْقُذَذِ فَتَمَارَى هَلْ يَرَى شَيْئًا أَمْ لَا. رَوَاهُ ابْنُ مَاجَه وَأَحْمَدُ.

''अबू सलमा कहते हैं मैंने हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ से दरयाफ़्त किया: क्या आप ने रसूलुल्लाह ﷺ से हरूरिय्या (यानी ख़वारिज) के मुतअल्लिक़ कोई हदीस सुनी है? उन्होंने फरमाया : आप ﷺ ने एक क़ौम का जिक्र फरमाया है जो ख़ूब इबादत करेगी (इमाम अहमद की एक रिवायत में है कि वो दीन में इन्तिहाई पुख्ता नज़र आएंगे) और (यहाँ तक कि) तुम अपनी नमाज़ों और रोज़ों को उनकी नमाज़ों और रोज़ों के मुक़ाबले में हक़ीर समझोगे। वो दीन से इस तरह निकल जाएंगे जैसे तीर शिकार से, कि आदमी अपने तीर को उठा कर उस के फल को देखे तो उस में कोई खून वगैरह नज़र न आए फिर वो तीर की लकड़ी को देखे उस में कोई निशान न पाए फिर उस की नोक को देखे और कोई निशान नज़र न आए फिर तीर के पर को देखे उस में भी कुछ नज़र न आए।''

٨٣/١٥ـ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رضي الله عنهما قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ وَهُوَ عَلَى الْمِنْبَرِ: أَلَا إِنَّ الْفِتْنَةَ هَاهُنَا يُشِيْرُ إِلَى الْمَشْرِقِ مِنْ حَيْثُ يَطْلُعُ قَرْنُ الشَّيْطَانِ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ وَهَذَا لَفْظُ الْبُخَارِيِّ.

الحديث رقم ١٥: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: المناقب، باب: نسبة اليمن إلى إسماعيل، ٣/١٢٩٣، الرقم: ٣٣٢٠، وفي كتاب: بدء الخلق، باب: صفة إبليس وجنوده، ٣/١١٩٥، الرقم: ٣١٠٥، ومسلم في الصحيح، كتاب: الفتن وأشراط الساعة، باب: الفتنة من المشرق من حيث يطلع قرنا الشيطان، ٤/٢٢٢٩، الرقم: ٢٩٠٥، ومالك في الموطأ، كتاب: الاستئذان، باب: ما جاء في المشرق، ٢/٩٧٥، الرقم: ١٧٥٧، وأحمد بن حنبل في المسند، ٢/٧٣، الرقم: ٥٤٢٨، وابن حبان في الصحيح، ١٥/٢٥، الرقم: ٦٦٤٩.

''हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर رضي الله عنهما रिवायत करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को मिम्बर पर यह फरमाते हुए सुनाः ख़बरदार हो जाओ ! फ़ितना उधर है आप ﷺ ने मश्रिक़ की तरफ़ इशारा करते हुए फरमायाः यहाँ से शैतान का सींग ज़ाहिर होगा।''

١٦/٨٤۔ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رضي الله عنهما أَنَّهُ سَمِعَ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ وَهُوَ مُسْتَقْبِلُ الْمَشْرِقِ يَقُوْلُ: أَلَا إِنَّ الْفِتْنَةَ هَاهُنَا مِنْ حَيْثُ يَطْلُعُ قَرْنُ الشَّيْطَانِ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर رضي الله عنهما बयान करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से सुना कि आप ﷺ मश्रिक़ की जानिब चेहरा मुबारक कर के फरमा रहे थेः ख़बरदार हो जाओ कि फ़ितना उधर है जहाँ से शैतान का सींग ज़ाहिर होगा।''

١٧/٨٥۔ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رضي الله عنهما قَالَ ذَكَرَ النَّبِيُّ ﷺ: اَللَّهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِي شَامِنَا اَللَّهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِي يَمَنِنَا قَالُوْا: يَارَسُوْلَ اللهِ، وَفِي نَجْدِنَا؟ قَالَ: اَللَّهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِي شَامِنَا اَللَّهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِي يَمَنِنَا، قَالُوْا: يَارَسُوْلَ اللهِ، وَفِي نَجْدِنَا فَأَظُنُّهُ قَالَ فِي الثَّالِثَةِ: هُنَاكَ الزَّلَازِلُ

الحديث رقم ١٦: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: الفتن، باب: قول النبي ﷺ: الفتنة من قبل المشرق، ٦/٢٥٩٨، الرقم: ٦٦٨٠، ومسلم في الصحيح، كتاب: الفتن وأشراط الساعة، باب: الفتنة من المشرق من حيث يطلع قرنا الشيطان، ٤/٢٢٢٨، الرقم: ٢٩٠٥، وأحمد بن حنبل في المسند، ٢/٩١، الرقم: ٥٦٥٩، والطبراني في المعجم الأوسط، ١/١٢٢، الرقم: ٣٨٧، والمقرئ في السنن الواردة، ١/٢٤٦، الرقم: ٤٣۔

الحديث رقم ١٧: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: الفتن، باب: قول النبي ﷺ: الفتنة من قبل المشرق، ٦/٢٥٩٨، الرقم: ٦٦٨١، وفي كتاب: الاستسقاء، باب: ما قيل في الزلازل والآيات، ١/٣٥١، الرقم: ٩٩٠، والترمذي في السنن، كتاب: المناقب عن رسول الله ﷺ، باب: في فضل الشام واليمن، ٥/٧٣٣، الرقم: ٣٩٥٣، وأحمد بن حنبل في المسند، ٢/١١٨، الرقم: ٥٩٨٧، وابن حبان في ←

وَالْفِتَنُ، وَبِهَا يَطْلُعُ قَرْنُ الشَّيْطَانِ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ وَالتِّرْمِذِيُّ وَأَحْمَدُ.
وَقَالَ أَبُوْ عِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर رضي الله عنهما रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने दुआ फरमाई, ऐ अल्लाह! हमारे लिए हमारे शाम में बरकत अ़ता फरमा, ऐ अल्लाह! हमें हमारे यमन में बरकत अ़ता फरमा, (कुछ) लोगों ने अ़र्ज़ कियाः या रसूलल्लाह! हमारे नज्द में भी? आप ﷺ ने (फिर) दुआ फरमाईः ऐ अल्लाह! हमारे लिए हमारे शाम में बरकत अ़ता फरमा। ऐ अल्लाह! हमारे लिए हमारे यमन में बरकत अ़ता फरमा। (कुछ) लोंगो ने (फ़िर) अ़र्ज़ कियाः या रसूलल्लाह! हमारे नज्द में भी। मेरा ख़्याल है कि आप ﷺ ने तीसरी मर्तबा फरमायाः वहाँ ज़लज़ले और फ़ितने होंगे और शैतान का सींग (फ़ितनए वहाबिय्यत व नजदिय्यत) वहीं से निकलेगा।''

٨٦/١٨. أخرج البخاري في صحيحه في ترجمة الباب: قَوْلُ اللهِ تَعَالَى: ﴿وَمَا كَانَ اللهُ لِيُضِلَّ قَوْمًا بَعْدَ إِذْ هَدَاهُمْ حَتَّى يُبَيِّنَ لَهُمْ مَا يَتَّقُوْنَ﴾ [التوبة، ٩: ١١٥] وَ كَانَ ابْنُ عُمَرَ رضي الله عنهما يَرَاهُمْ شِرَارَ خَلْقِ اللهِ، وَقَالَ: إِنَّهُمُ انْطَلَقُوْا إِلَى آيَاتٍ نَزَلَتْ فِي الْكُفَّارِ فَجَعَلُوْهَا عَلَى

.... الصحيح، ٦١/٢٩٠، الرقم: ٧٣٠١، والطبراني في المعجم الكبير، ١٢/٣٨٤، الرقم: ١٣٤٢٢، والمقرى في السنن الواردة في الفتن، ١/٢٥١، الرقم: ٤٦، والمنذري في الترغيب والترهيب، ٤/٢٩، الرقم: ٤٦٦٦.

الحديث رقم ١٨: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: استتابة المرتدين والمعاندين وقتالهم، باب: (٥) قتل الخوارج والملحدين بعد إقامة الحجة عليهم، ٦/٢٥٣٩، ومسلم في الصحيح، كتاب الزكاة، باب: الخوارج شر الخلق والخليقة، ٢/٧٥٠، الرقم: ١٠٦٧، وفي كتاب: الزكاة، باب: التحريض على قتل الخوارج، ٢/٧٤٩، الرقم: ١٠٦٦، وأبوداود في السنن، كتاب: السنة، باب: في قتال الخوارج، ٤/٢٤٣، الرقم: ٤٧٦٥، والنسائي في السنن، كتاب: تحريم الدم، باب: من شهر سيفه ثم وضعه في الناس، ٧/١١٩. ١٢٠، الرقم: ٤١٠٣، وابن ماجه في السنة، المقدمة، باب: في ذكر الخوارج، ١/٦٠، الرقم: ١٧٠، وأحمد بن حنبل في المسند، ٣/١٥، ٢٢٤، الرقم: ١١١٣٣، ١٣٣٦٢، ٤/٤٢١، ٤٢٤، ←

الْمُؤْمِنِيْنَ.

وقال العسقلاني في الفتح: وصله الطبري في مسند علي من تهذيب الآثار من طريق بكير بن عبد الله بن الأشج: أَنَّهُ سَأَلَ نَافِعًا كَيْفَ كَانَ رَأَى ابْنُ عُمَرَ فِي الْحَرُوْرِيَّةِ؟ قَالَ: كَانَ يَرَاهُمْ شِرَارَ خَلْقِ اللهِ، انْطَلَقُوْا إِلَى آيَاتِ الْكُفَّارِ فَجَعَلُوْهَا فِي الْمُؤْمِنِيْنَ.

قلت: وسنده صحيح، وقد ثبت في الحديث الصحيح المرفوع عند مسلم من حديث أبي ذر رضي الله عنه في وصف الخوارج: هُمْ شِرَارُ الْخَلْقِ وَالْخَلِيْقَةِ. وعند أحمد بسند جيد عن أنس مرفوعًا مثله.

وعند البزار من طريق الشعبي عَنْ عَائِشَةَ رضي الله عنها قَالَتْ: ذَكَرَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ الْخَوَارِجَ فَقَالَ: هُمْ شِرَارُ أُمَّتِي يَقْتُلُهُمْ خِيَارُ أُمَّتِي. وسنده حسن.

وعند الطبراني من هذا الوجه مرفوعا: هُمْ شِرَارُ الْخَلْقِ وَالْخَلِيْقَةِ يَقْتُلُهُمْ خَيْرُ الْخَلْقِ وَالْخَلِيْقَةِ. وفي حديث أبي سعيد رضي الله عنه عند أحمد: هُمْ شَرُّ الْبَرِيَّةِ.

وفي رواية عبيد الله بن أبي رافع عن علي رضي الله عنه عند مسلم: مِنْ أَبْغَضِ

.... ٥/ ٣١، ١٧٦، الرقم: ٢١٥٧١، وابن حبان في الصحيح، ١٥/ ٣٨٧، الرقم: ٦٩٣٩، وابن أبي شيبة في المصنف، ٧/ ٥٥٧، ٥٥٩، الرقم: ٣٧٩٠٥، ٣٧٩١٧، والبزار في المسند، ٩/ ٢٩٤، ٣٠٥، الرقم: ٣٨٤٦، والحاكم في المستدرك، ٢/ ١٦٧، الرقم: ٢٦٥٩، والطبراني في المعجم الأوسط، ٦/ ١٨٦، الرقم: ٦١٤٢، ٧/ ٣٣٥، الرقم: ٧٦٦٠، وفي المعجم الصغير، ١/ ٤٢، الرقم: ٣٣، وفي المعجم الكبير، ٥/ ١٩، الرقم: ٤٤٦١، ٨/ ٢٦٦، الرقم: ٨٠٣٣، والبيهقي في السنن الكبرى، ٨/ ١٨٨، وأبويعلى في المسند، ٥/ ٣٣٧، الرقم: ٢٩٦٣، والهيثمي في مجمع الزوائد، ٦/ ٢٣٠، ٢٣٩، والعسقلاني في فتح الباری، ١٢/ ٢٨٦، الرقم: ٦٥٣٢، وفي تغليق التعليق، ٥/ ٢٥٩، وابن عبد البر في التمهيد، ٢٣/ ٣٣٥.

خَلْقِ اللهِ إِلَيْهِ.

وفي حديث عبد الله بن خباب ﷺ يعني عن أبيه عند الطبراني: شَرُّ قَتْلَى أَظَلَّتْهُمُ السَّمَاءُ وَأَقَلَّتْهُمُ الْأَرْضُ. وفي حديث أبي أمامة ﷺ نحوه.

وعند أحمد وابن أبي شيبة من حديث أبي برزة مرفوعًا في ذكر الخوارج: شَرُّ الْخَلْقِ وَالْخَلِيْقَةِ يَقُولُهَا ثَـلَاثًا.

وعند ابن أبي شيبة من طريق عمير بن إسحاق عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ: هُمْ شَرُّ الْخَلْقِ. وهذا مما يؤيد قول من قال بكفرهم.

''इमाम बुख़ारी ने अपनी सहीह में बाब के उनवान (तर्जुमातुलबाब) के तौर पर यह हदीस रिवायत की है : अल्लाह तआला का फरमान : 'और अल्लाह की शान नहीं कि वो किसी क़ौम को गुमराह कर दे। इस के बाद कि उसने उन्हें हिदायत से नवाज़ दिया हो, यहाँ तक कि वो उन के लिए वो चीज़ें वाज़ेह फरमा दे जिन से उन्हें परहेज़ करना चाहिये।' और अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ उन (ख़वारिज) को अल्लाह तआला की बदतरीन मख़लूक़ समझते थे। (क्योंकि) उन्होंने अल्लाह तआला की उन आयात को लिया जो कुफ्फ़ार के हक़ में नाज़िल हुई थीं और उनका इत्लाक़ मोमिनीन पर करना शुरु कर दिया।''

और इमाम अ़स्क़लानी 'फ़त्हुलबारी' में बयान करते हैं कि इमाम तबरी ने उस हदीस को तहज़ीबुल आसार से बकीर बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अशज के तरीक़ से मस्नदे अ़ली ﷺ में शामिल किया है कि उन्होंने नाफ़ेअ से पूछा कि अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ की हरूरिय्या (ख़वारिज) के बारे में क्या राय थी ? तो उन्होंने फरमायाः वो उन्हें अल्लाह तआला की बदतरीन मख़लूक़ ख़याल किया करते थे जिन्होंने अल्लाह तआला की उन आयात को लिया जो कुफ्फ़ार के हक़ में नाज़िल हुई थीं और उन का इत्लाक़ मोमिनीन पर किया।

मैं 'इमाम अस्क़लानी' कहता हूँ कि इस हदीस की सनद सहीह है और तहक़ीक़ यह सनदे हदीस सहीह मरफ़ूअ में इमाम मुस्लिम के हाँ अबूज़र ग़िफ़ारी की ख़वारिज के वस्फ़ वाली हदीस में साबित है और वो हदीस यह है कि ''वो खल्क़ और खुल्क़ में बदतरीन लोग हैं'' और इमाम अहमद बिन हंबल के हाँ भी उसी की मिस्ल हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ से मरवी मरफ़ूअ हदीस है।

''और इमाम बज़ार के यहाँ शअबी के तरीक़ से वो हज़रत आइशा सिद्दीक़ा رضي الله عنها से रिवायत करते हैं कि उन्होंने फरमायाः हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने ख़वारिज का जिक्र किया और फरमायाः 'वो मेरी उम्मत के बदतरीन लोग हैं और उन्हें मेरी उम्मत के बेहतरीन लोग क़त्ल करेंगे।' और इस हदीस की सनद हसन है।''

और इमाम तिबरानी के हाँ उसी तरीक़ से मरफूअ ﷺ हदीस में मरवी है कि ''वो (ख़वारिज) बदतरीन खल्क़ और खुल्क़ वाले हैं और उनको बेहतरीन खल्क़ और खुल्क़ वाले लोग क़त्ल करेंगे।''

और इमाम अहमद बिन हंबल के हाँ हज़रत अबू सईद वाली हदीस में है कि ''वो (ख़वारिज) मख़लूक़ में से सब से बदतरीन लोग हैं।''

और इमाम मुस्लिम ने अब्दुल्लाह बिन अबी राफ़े' की रिवायत में बयान किया जो उन्होंने हज़रत अली ﷺ से रिवायत की ''येह (ख़वारिज) अल्लाह तआला की मख़लूक़ में से उसके नज़दीक सबसे बदतरीन लोग हैं।''

और इमाम तिबरानी ने हाँ अब्दुल्लाह बिन खुबाब वाली हदीस में है जो कि वो अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि ''यह (ख़वारिज) बदतरीन मक़्तूल हैं जिन पर आसमान ने साया किया और ज़मीन ने उन को उठाया।'' और अबू उमामा वाली हदीस में भी यही अल्फ़ाज़ हैं।

''और इमाम अहमद बिन हम्बल और इब्न अबी शैबा अबू बरज़ा ﷺ की हदीस को मरफ़ूआ ख़वारिज के ज़िक्र में बयान करते हैं कि ''वो (ख़वारिज) बदतरीन खल्क़ और खुल्क़ वाले हैं।'' ऐसा तीन बार फरमाया।

और इब्ने अबी शैबा के हाँ उमर बिन इस्हाक़ के तरीक़ से वो हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से रिवायत करते हैं कि ''वो (ख़वारिज) बदतरीन मख़लूक़ हैं।'' और यह वो चीज़ है जो उस शख़्स के क़ौल की ताईद करती है जो उन को काफ़िर क़रार देता है।''

٨٧ / ١٩۔ عَنْ أَبِي غَالِبٍ قَالَ: رَأَى أَبُوْأُمَامَةَ ﷺ رُءُوْسًا مَنْصُوْبَةً

الحديث رقم ١٩: أخرجه الترمذي في السنن، كتاب: تفسير القرآن عن رسول الله ﷺ، باب: ومن سورة آل عمران، ٥/ ٢٢٦، الرقم: ٣٠٠٠، وأحمد بن حنبل في المسند، ٥/ ٢٥٦، الرقم: ٢٢٢٦٢، والحاكم في المستدرك، ٢/ ١٦٣، الرقم: ٢٦٥٥، والبيهقي في السنن الكبرى، ٨/ ١٨٨، والطبراني في مسند الشاميين، ٢/ ٢٤٨، الرقم: ١٢٧٩، وفي المعجم الكبير، ٨/ ٢٧١، الرقم: ٨٠٤٤، والمحلي ←

عَلَى دَرَجِ مَسْجِدِ دِمَشْقَ، فَقَالَ أَبُوْأُمَامَةَ ﷺ: كِلَابُ النَّارِ شَرُّ قَتْلَى تَحْتَ أَدِيْمِ السَّمَاءِ خَيْرُ قَتْلَى مَنْ قَتَلُوْهُ ثُمَّ قَرَأَ: ﴿يَوْمَ تَبْيَضُّ وُجُوْهٌ وَّتَسْوَدُّ وُجُوْهٌ﴾ إِلَى آخِرِ الآيَةِ [آل عمران، ٣: ١٠٦] قُلْتُ لِأَبِي أُمَامَةَ: أَنْتَ سَمِعْتَهُ مِنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ؟ قَالَ: لَوْ لَمْ أَسْمَعْهُ إِلَّا مَرَّةً أَوْ مَرَّتَيْنِ أَوْ ثَلَاثًا أَوْ أَرْبَعًا حَتَّى عَدَّ سَبْعًا مَا حَدَّثْتُكُمُوْهُ.

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَحْمَدُ وَالْحَاكِمُ.

وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ. وَقَالَ الْحَاكِمُ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحٌ.

''अबू ग़ालिब ने हज़रत अबू उमामा ﷺ से रिवायत किया कि उन्होंने मस्जिदे दमिश्क़ की सीढ़ियों पर (ख़ारजियों के) सर नसब (लगे हुए) किए हुए देखे तो फरमाया (यह) जहन्नुम के कुत्ते, आसमान के नीचे बदतरीन मख़लूक़ हैं। और वो शख़्स बेहतरीन मख़लूक़ है जिसे इन्होंने क़त्ल किया। फिर आप ने यह आयत पढ़ी। ''जिस दिन कई चेहरे सफेद होंगे और कई चेहरे सियाह होंगे।'' अबू ग़ालिब कहते हैं कि मैंने हज़रत अबू उमामा ﷺ से अर्ज़ किया : क्या आप ने यह रसूलुल्लाह ﷺ से सुना है ? उन्होंने फरमाया : अगर मैंने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ से एक, दो, तीन, चार यहां तक कि सात बार तक गिना, सुना होता तो तुम से बयान न करता (यानी एक दो बार नहीं बल्कि कई बार सुना है)।''

٨٨ / ٢٠. عَنِ ابْنِ عُمَرَ رضي الله عنهما عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ كَانَ قَائِمًا عِنْدَ بَابِ عَائِشَةَ رضي الله عنها فَأَشَارَ بِيَدِهِ نَحْوَ الْمَشْرِقِ فَقَالَ: الْفِتْنَةُ هَاهُنَا حَيْثُ يَطْلُعُ قَرْنُ الشَّيْطَانِ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ وَأَحْمَدُ وَاللَّفْظُ لَهُ.

.... في الأمالي، ١ / ٤٠٨، الرقم: ٤٧٨-٤٧٩، وعبد الله بن أحمد في السنة، ٢ / ٦٤٣، الرقم: ١٥٤٢-١٥٤٦، وقال: إسناده صحيح، وابن تيمية في الصارم المسلول، ١ / ١٨٩.

الحديث رقم ٢٠: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: الخمس، باب: ما جاء في بيوت أزواج النبي ﷺ وما نسب من البيوت إليهن، ٣ / ١١٣٠، الرقم: ٢٩٣٧، وأحمد بن حنبل في المسند، ٢ / ١٨، الرقم: ٤٦٧٩، والمقرئ في السنن الواردة في الفتن، ١ / ٢٤٥، الرقم: ٤٢.

''हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर رضي الله عنهما रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने जबकि आप ﷺ बाबे हज़रत आइशा رضي الله عنهما के पास खड़े हुए थे अपने हाथ से मश्रिक़ की तरफ़ इशारा करते हुए फरमाया : फ़ितना वहाँ से होगा जहाँ से शैतान का सींग निकलेगा।''

٨٩ / ٢١۔ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رضي الله عنهما أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَامَ عِنْدَ بَابِ حَفْصَةَ فَقَالَ بِيَدِهِ نَحْوَ الْمَشْرِقِ: اَلْفِتْنَةُ هَاهُنَا مِنْ حَيْثُ يَطْلُعُ قَرْنُ الشَّيْطَانِ قَالَهَا مَرَّتَيْنِ أَوْ ثَـلَاثًا. رَوَاهُ مُسْلِمٌ.

''हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने जबकि आप ﷺ बाबे हज़रत हफ़्सा رضي الله عنهما के पास खड़े हुए थे अपने दस्ते अक़दस से मश्रिक़ की तरफ़ इशारा करते हुए फरमाया : फितना वहाँ से होगा जहाँ से शैतान का सींग निकलेगा आप ﷺ ने यह (कलिमात) तीन बार अदा फरमाए।''

٩٠ / ٢٢۔ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رضي الله عنهما أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: اَللَّهُمَّ بَارِکْ لَنَا فِي شَامِنَا وَ يَمَنِنَا مَرَّتَيْنِ فَقَالَ رَجُلٌ: وَ فِي مَشْرِقِنَا يَا رَسُوْلَ اللهِ؟ فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مِنْ هُنَالِکَ يَطْلُعُ قَرْنُ الشَّيْطَانِ وَلَهَا تِسْعَةُ أَعْشَارِ الشَّرِّ. رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالطَّبَرَانِيُّ.

''हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ बयान करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : ऐ अल्लाह! हमारे लिए हमारे शाम में और हमारे यमन में बरकत अता फरमा और ऐसा आप ﷺ ने दो बार फरमाया, तो एक आदमी ने अर्ज़ किया: या रसूलल्लाह और हमारे मश्रिक़ में (भी बरकत हो) तो हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया: वहाँ तो शैतान का सींग निकलेगा और वहाँ दस में से नौ हिस्सों (के बराबर) बुराई होगी।''

الحديث رقم ٢١: أخرجه مسلم في الصحيح، كتاب: الفتن وأشراط الساعة، باب: الفتنة من حيث يطلع قرنا الشيطان، ٤ / ٢٢٢٩، الرقم: ٢٩٠٥۔

الحديث رقم ٢٢: أخرجه أحمد بن حنبل في المسند، ٢ / ٩٠، الرقم: ٥٦٤٢، والطبراني في المعجم الأوسط، ٢ / ٢٤٩، الرقم: ١٨٨٩، والروياني في المسند، ٢ / ٤٢١، الرقم: ١٤٣٣، والهيثمي في مجمع الزوائد، ١٠ / ٥٧، وقال: رجال أحمد رجال عبدالرحمن بن عطاء وهو ثقة۔

....

٩١ / ٢٣. عَنْ أَنَسٍ رضي الله عنه قَالَ: ذُكِرَ لِي أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: وَلَمْ أَسْمَعْهُ مِنْهُ: إِنَّ فِيْكُمْ قَوْمًا يَعْبُدُوْنَ وَيَدْأَبُوْنَ حَتَّى يُعْجَبَ بِهِمُ النَّاسُ وَتُعْجِبَهُمْ نُفُوْسُهُمْ يَمْرُقُونَ مِنَ الدِّيْنِ مُرُوْقَ السَّهْمِ مِنَ الرَّمِيَّةِ.

رَوَاهُ أَحْمَدُ وَرِجَالُهُ رِجَالُ الصَّحِيْحِ.

''हज़रत अनस رضي الله عنه बयान करते हैं कि मुझे बताया गया कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया है और मैंने खुद यह आप ﷺ से नहीं सुना, आप ﷺ ने फरमायाः बेशक़ तुम में ऐसे लोग होंगे जो इबादत करेंगे और अपनी इबादत में तुनदही (पाबन्दी से) से काम लेंगे यहाँ तक कि वो लोगों को भले लगेंगे और वो ख़ुद भी अपने आप (और अपनी नमाज़ों) पर इतराएंगे हालांकि वो दीन से इस तरह ख़ारिज होंगे जिस तरह तीर शिकार से ख़ारिज हो जाता है।''

٩٢ / ٢٤. عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ رِبَاحٍ الْأَنْصَارِيِّ رضي الله عنه قَالَ: سَمِعْتُ كَعْبًا رضي الله عنه يَقُوْلُ: لِلشَّهِيْدِ نُوْرٌ وَلِمَنْ قَاتَلَ الْحَرُوْرِيَّةَ عَشْرَةُ أَنْوَارٍ (وفي رواية ابن أبي شيبة: فَضْلُ ثَمَانِيَةِ أَنْوَارٍ عَلَى نُوْرِ الشُّهَدَاءِ) وَكَانَ يَقُوْلُ لِجَهَنَّمَ سَبْعَةُ أَبْوَابٍ ثَلَاثَةٌ مِنْهَا لِلْحَرُوْرِيَّةِ. رَوَاهُ عَبْدُ الرَّزَّاقِ وَابْنُ أَبِي شَيْبَةَ.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन रिबाह अन्सारी رضي الله عنه बयान करते हैं कि मैंने हज़रत का'ब رضي الله عنه को फरमाते हुए सुना कि शहीद के लिए एक नूर होगा और उस शख़्स के लिए जो हरूरिय्या (ख़वारिज) के साथ क़िताल करेगा दस नूर होंगे (और इब्न अबी शैबा की रिवायत में है : (दीगर) शहीदों के नूर के मुक़ाबले में वो नूर आठ गुना ज़्यादा फ़ज़ीलत रखता होगा।) और आप यह भी फरमाते थे कि जहन्नुम के सात दरवाजे हैं उन में से तीन हरूरिय्या (ख़वारिज) के लिए (मख़्सूस) हैं।''

الحديث رقم ٢٣: أخرجه أحمد بن حنبل في المسند، ٣/١٨٣، الرقم: ١٢٩٠٩، والهيثمي في مجمع الزوائد، ٦/٢٢٩، وقال: رواه أحمد ورجاله رجال الصحيح.

الحديث رقم ٢٤: أخرجه عبد الرزاق في المصنف، ١٠/١٥٥، وابن أبي شيبة في المصنف، ٧/٥٥٧، الرقم: ٣٧٩١١.

٩٣/٢٥۔ عَنْ حُذَيْفَةَ رضي الله عنه قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّ مَا أَتَخَوَّفُ عَلَيْكُمْ رَجُلٌ قَرَأَ الْقُرْآنَ حَتَّى إِذَا رُئِيَتْ بَهْجَتُهُ عَلَيْهِ وَكَانَ رِدْئًا لِلْإِسْلَامِ غَيْرَهُ إِلَى مَاشَاءَ اللهُ فَانْسَلَخَ مِنْهُ وَ نَبَذَهُ وَرَاءَ ظَهْرِهِ وَ سَعَى عَلَى جَارِهِ بِالسَّيْفِ وَرَمَاهُ بِالشِّرْكِ قَالَ: قُلْتُ: يَا نَبِيَّ اللهِ، أَيُّهُمَا أَوْلَى بِالشِّرْكِ الْمَرْمِيُّ أَمِ الرَّامِي قَالَ: بَلِ الرَّامِي.

رَوَاهُ ابْنُ حِبَّانَ وَالْبَزَّارُ وَالْبُخَارِيُّ فِي الْكَبِيْرِ، إِسْنَادُهُ حَسَنٌ.

''हज़रत हुजैफ़ा رضي الله عنه बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमायाः बेशक जिस चीज़ का तुम पर खदशा है वो एक ऐसा आदमी है जिस ने क़ुरआन पढ़ा यहाँ तक कि जब उस पर उस क़ुरआन का जमाल देखा गया और वो उस वक्त तक जब तक अल्लाह ने चाहा इस्लाम की ख़ातिर दूसरों की पुश्त पनाही भी करता था। फिर वो उस क़ुरआन से दूर हो गया और उस को अपनी पुश्त पीछे फेंक दिया और अपने पड़ौसी पर तलवार ले कर चढ़ दौड़ा और उस पर शिर्क का इल्ज़ाम लगाया, रावी बयान करते हैं कि मैंने अ़र्ज़ कियाः ऐ अल्लाह के नबी ! उन दोनों में से कौन ज़्यादा शिर्क के क़रीब था शिर्क का इल्ज़ाम लगाने वाला या जिस पर शिर्क का इल्ज़ाम लगा। आप ﷺ ने फरमाया : शिर्क का इल्ज़ाम लगाने वाला।''

٩٤/٢٦۔ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رضي الله عنهما قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ عِنْدَ حُجْرَةِ عَائِشَةَ رضي الله عنها يَدْعُوْ: اَللَّهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِي مُدِّنَا وَبَارِكْ

الحديث رقم ٢٥: أخرجه ابن حبان في الصحيح، ١/٢٨٢، الرقم: ٨١، والبزار في المسند، ٧/٢٢٠، الرقم: ٢٧٩٣، والبخاري في التاريخ الكبير، ٤/٣٠١، الرقم: ٢٩٠٧، والطبراني عن معاذ بن جبل رضي الله عنه في المعجم الكبير، ٢٠/٨٨، الرقم: ١٦٩، وفي مسند الشاميين، ٢/٢٥٤، الرقم: ١٢٩١، وابن أبي عاصم في السنة، ١/٢٤، الرقم: ٤٣، والهيثمي في مجمع الزوائد، ١/١٨٨، وقال: إسناده حسن، وابن كثير في تفسير القرآن العظيم، ٢/٢٦٦۔

الحديث رقم ٢٦: أخرجه الطبراني في المعجم الأوسط، ٧/٢٥٢، الرقم: ٧٤٢١، وأبونعيم في المسند المستخرج، ٤/٤٤، الرقم: ٣١٨٣۔

لَنَا فِي صَاعِنَا وَ بَارِكْ لَنَا فِي شَامِنَا وَ يَمَنِنَا ثُمَّ اسْتَقْبَلَ الْمَشْرِقَ فَقَالَ: مِنْ هَاهُنَا يَخْرُجُ قَرْنُ الشَّيْطَانِ وَالزَّلَازِلُ وَالْفِتَنُ وَمِنْ هَاهُنَا الْفَدَّادُوْنَ. رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ.

''हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर رضي الله عنهما रिवायत करते हैं कि मैंने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ को हज़रत आइशा सिद्दीक़ा رضي الله عنها के हुजरे के क़रीब दुआ करते हुए सुना, आप ﷺ फरमा रहे थे : 'ऐ अल्लाह! हमारे मुद और हमारे साअ (मुद और साह ग़ल्ला मापने के दो आले हैं) में बरकत डाल और हमारे शाम और यमन में बरकत अता फरमा, फिर आप ﷺ मश्रिक़ रुख हो गए और फरमायाः यहाँ से शैतान का सींग निकलेगा और (यहीं से) ज़लज़ले और फ़ितने ज़ाहिर होंगे और यहीं से सख़्त गुफ़्तार, तकब्बुर के साथ चलने वाले (लोग ज़ाहिर) होंगे।''

٩٥/٢٧۔ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ ﷺ قَالَ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: سَيَخْرُجُ أُنَاسٌ مِنْ أُمَّتِي مِنْ قِبَلِ الْمَشْرِقِ يَقْرَءُوْنَ الْقُرْآنَ لَا يُجَاوِزُ تَرَاقِيَهُمْ كُلَّمَا خَرَجَ مِنْهُمْ قَرْنٌ قُطِعَ كُلَّمَا خَرَجَ مِنْهُمْ قَرْنٌ قُطِعَ حَتَّى عَدَّهَا زِيَادَةً عَلَى عَشْرَةِ مَرَّاتٍ كُلَّمَا خَرَجَ مِنْهُمْ قَرْنٌ قُطِعَ حَتَّى يَخْرُجُ الدَّجَّالَ فِي بَقِيَّتِهِمْ. رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالْحَاكِمُ.

''हज़रत अब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स ﷺ रिवायत करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह फरमाते हुए सुनाः मेरी उम्मत में मश्रिक़ की जानिब से कुछ ऐसे लोग निकलेंगे जो क़ुरआन पढ़ते होंगे लेकिन वो उन के हलक़ से नहीं उतरेगा और उन में से जो भी (शैतान के) सींग की (सूरत) में निकलेगा वो काट दिया जाएगा। उनमें से जो भी (शैतान के) सींग की सूरत में निकलेगा वो काट दिया जाएगा, यहां तक कि आप ﷺ ने यूँ ही दस बार से भी ज़्यादा मर्तबा

الحديث رقم ٢٧: أخرجه أحمد بن حنبل في المسند، ٢/١٩٨، الرقم: ٦٨٧١، والحاكم في المستدرك، ٤/٥٣٣، الرقم: ٨٤٩٧، وابن حماد في الفتن، ٢/٥٣٢، وابن راشد في الجامع، ١١/٣٧٧، والآجري في الشريعة، ١/١١٣، الرقم: ٢٦٠، والهيثمي في مجمع الزوائد، ٦/٢٢٨۔

दोहराया और फरमायाः उन में जो भी (शैतान के) सींग की सूरत में ज़ाहिर होगा काट दिया जाएगा यहाँ तक कि उन ही की बाक़ी बची हुई नस्ल से दज्जाल निकलेगा।''

٩٦ / ٢٨۔ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو رضي الله عنهما قَالَ: يَأْتِي عَلَى النَّاسِ زَمَانٌ يَجْتَمِعُوْنَ وَيُصَلُّوْنَ فِي الْمَسَاجِدِ وَلَيْسَ فِيْهِمْ مُؤْمِنٌ.

رَوَاهُ ابْنُ أَبِي شَيْبَةَ وَالْحَاكِمُ.

وَ قَالَ الْحَاكِمُ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحُ الإِسْنَادِ عَلَى شَرْطِ الشَّيْخَيْنِ.

''हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र رضي الله عنهما रिवायत करते हैं कि लोगों पर एक ऐसा ज़माना आएगा की वो मस्जिदों में जमा होंगे, नमाज़ें अदा करेंगे लेकिन उनमें से मोमिन कोई नहीं होगा।''

٩٧ / ٢٩۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ يَقُوْلُ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: يَخْرُجُ فِي آخِرِ الزَّمَانِ رِجَالٌ يَخْتِلُوْنَ الدُّنْيَا بِالدِّيْنِ يَلْبَسُوْنَ لِلنَّاسِ جُلُوْدَ الضَّأْنِ مِنَ اللِّيْنِ، أَلْسِنَتُهُمْ أَحْلَى مِنَ السُّكَّرِ (وفي رواية: أَلْسِنَتُهُمْ أَحْلَى مِنَ الْعَسَلِ) وَقُلُوْبُهُمْ قُلُوْبُ الذِّئَابِ، يَقُوْلُ اللهُ ﷻ: أَبِي يَغْتَرُّوْنَ أَمْ عَلَيَّ يَجْتَرِئُوْنَ؟ فَبِي حَلَفْتُ لَأَبْعَثَنَّ عَلَى أُوْلَئِكَ مِنْهُمْ فِتْنَةً تَدَعُ الْحَلِيْمَ

الحديث رقم ٢٨: أخرجه ابن أبي شيبة في المصنف، ٦/ ١٦٣، الرقم: ٣٠٣٥٥، ٧/ ٥٠٥، الرقم: ٣٧٥٨٦، والحاكم في المستدرك، ٤/ ٤٨٩، الرقم: ٨٣٦٥، والديلمي في مسند الفردوس، ٥/ ٤٤١، الرقم: ٨٠٨٦، وأبو المحاسن في معتصر المختصر، ٢/ ٢٦٦، والفريابي في صفة المنافق، ١/ ٨٠، الرقم: ١٠٨۔١١٠۔

الحديث رقم ٢٩: أخرجه الترمذي في السنن، كتاب: الزهد عن رسول الله ﷺ، باب: (٥٩)، ٤/ ٦٠٤، الرقم: ٢٤٠٤۔٢٤٠٥، وابن أبي شيبة فى المصنف، ٧/ ٢٣٥، الرقم: ٣٥٦٢٤، والبيهقي في شعب الإيمان، ٥/ ٣٦٢، الرقم: ٦٩٥٦، والطبراني في المعجم الأوسط، ٨/ ٣٧٩، وابن المبارك في الزهد، ١/ ١٧، الرقم: ٥٠، والديلمى في مسند الفردوس، ٥/ ٥١٠، الرقم: ٨٩١٩، والمنذري في الترغيب والترهيب، ١/ ٣٢، الرقم: ٤١، وابن هناد في الزهد، ٢/ ٤٣٧، الرقم: ٨٦٠۔

مِنْهُمْ حَيْرَانًا. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ.

وَ قَالَ أَبُوْعِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ बयान करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : आख़िरी ज़माने में कुछ लोग पैदा होंगे जो दुनिया को दीन के ज़रिये हासिल करेंगे, लोगों के सामने भेड़ की खालों का नर्म लिबास पहनेंगे। उनकी ज़बानें शक्कर से ज्यादा शीरीं होंगी (एक रिवायत में है कि शहद से भी ज्यादा मीठी होंगी) और उनके दिल भेड़ियों के दिलों की तरह (ख़ूंख़ार) होंगे। अल्लाह ﷻ फरमाता है : ''क्या यह लोग मुझे धोका देना चाहते हैं या मुझ पर दिलेरी करते हैं? (या मुझसे नहीं डरते?) मुझे अपनी (ज़ात की) क़सम! जो लोग उनमें से होंगे, मैं ज़रूर उन पर ऐसे फ़ितने भेजूँगा जो उनमें से बुर्दबार लोगों को भी हैरान कर देंगे।''

٩٨ / ٣٠۔ عَنْ أَبِي بَكْرَةَ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ : سَيَخْرُجُ قَوْمٌ أَحْدَاثٌ أَحِدَّاءُ أَشِدَّاءُ ذَلِقَةٌ أَلْسِنَتُهُمْ بِالْقُرْآنِ يَقْرَءُوْنَهُ لاَ يُجَاوِزُ تَرَاقِيَهُمْ. فَإِذَا لَقِيْتُمُوْهُمْ فَأَنِيْمُوْهُمْ ثُمَّ إِذَا لَقِيْتُمُوْهُمْ فَاقْتُلُوْهُمْ فَإِنَّهُ يُؤْجَرُ قَاتِلُهُمْ. رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالْحَاكِمُ وَابْنُ أَبِي عَاصِمٍ.

رِجَالُ أَحْمَدُ رِجَالُ الصَّحِيْحِ، وَقَالَ ابْنُ أَبِي عَاصِمٍ: إِسْنَادُهُ صَحِيْحٌ، وَقَالَ الْحَاكِمُ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत अबू बकर ﷺ ने रिवायत की है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : अनक़रीब नौउम्र लोग निकलेंगे जो कि निहायत तेज़ तर्रार और क़ुरआन को निहायत फ़साहत व बलाग़त से पढ़ने वाले होंगे वो क़ुरआन पढ़ेंगे लेकिन वो उन के हलक़ से नीचे नहीं उतरेगा। सो

الحديث رقم ٣٠: أخرجه أحمد بن حنبل في المسند، ٥/٣٦، ٤٤، والحاكم في المستدرك، ٢/١٥٩، الرقم: ٢٦٤٥، وابن أبي عاصم في السنة، ٢/٤٥٦، الرقم: ٩٣٧، وعبد الله بن أحمد في السنة، ٢/٦٣٧، الرقم: ١٥١٩، وقال: إسناده حسن، والبيهقي في السنن الكبرى، ٨/١٨٧، والديلمي في مسند الفردوس، ٢/٣٢٢، الرقم: ٣٤٦٠، والهيثمي في مجمع الزوائد، ٦/٢٣٠، والحارث في المسند، (زوائد الهيثمي)، ٢/٧١٤، الرقم: ٧٠٤.

तुम जब उनसे मिलो तो उन्हें क़त्ल कर दो फिर जब (उन का कोई दूसरा गिरोह निकले और) तुम उन्हें मिलो तो उन्हें भी क़त्ल कर दो, यक़ीनन उन के क़ातिल को अज्र अ़ता किया जाएगा।''

٩٩ / ٣١ـ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رضي الله عنه أَنَّ أَبَابَكْرٍ رضي الله عنه جَاءَ إِلَى رَسُوْلِ اللهِ ﷺ، فَقَالَ: يَارَسُوْلَ اللهِ، إِنِّي مَرَرْتُ بِوَادٍ كَذَا وَكَذَا فَإِذَا رَجُلٌ مُتَخَشِّعٌ، حَسَنُ الْهَيْئَةِ، يُصَلِّي فَقَالَ لَهُ النَّبِيُّ ﷺ: اِذْهَبْ إِلَيْهِ، فَاقْتُلْهُ، قَالَ: فَذَهَبَ إِلَيْهِ أَبُوْبَكْرٍ، فَلَمَّا رَآهُ عَلَى تِلْكَ الْحَالِ كَرِهَ أَنْ يَقْتُلَهُ، فَرَجَعَ إِلَى رَسُوْلِ اللهِ ﷺ، قَالَ: فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ لِعُمَرَ: اِذْهَبْ فَاقْتُلْهُ فَذَهَبَ عُمَرُ فَرَآهُ عَلَى تِلْكَ الْحَالِ الَّتِي رَآهُ أَبُوْبَكْرٍ قَالَ: فَكَرِهَ أَنْ يَقْتُلَهُ، قَالَ: فَرَجَعَ فَقَالَ: يَارَسُوْلَ اللهِ، إِنِّي رَأَيْتُهُ يُصَلِّي مُتَخَشِّعًا فَكَرِهْتُ أَنْ أَقْتُلَهُ، قَالَ: يَا عَلِيُّ! اِذْهَبْ فَاقْتُلْهُ، قَالَ: فَذَهَبَ عَلِيٌّ، فَلَمْ يَرَهُ فَرَجَعَ عَلِيٌّ، فَقَالَ: يَارَسُوْلَ اللهِ، إِنَّهُ لَمْ يَرَهُ، قَالَ: فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: إِنَّ هَذَا وَأَصْحَابَهُ يَقْرَءُوْنَ الْقُرْآنَ لَا يُجَاوِزُ تَرَاقِيَهُمْ، يَمْرُقُوْنَ مِنَ الدِّيْنِ كَمَا يَمْرُقُ السَّهْمُ مِنَ الرَّمِيَّةِ ثُمَّ لَا يَعُوْدُوْنَ فِيْهِ حَتَّى يَعُوْدَ السَّهْمُ فِي فُوْقِهِ فَاقْتُلُوْهُمْ هُمْ شَرُّ الْبَرِيَّةِ. رَوَاهُ أَحْمَدُ. وَرِجَالُهُ ثِقَاتٌ.

''हज़रत अबू सईद ख़ुदरी رضي الله عنه से मरवी है कि हज़रत अबू बकर رضي الله عنه ने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया: या रसूलल्लाह! मैं फ़लां फ़लां वादी से गुज़रा तो मैंने एक निहायत मुतवाज़े' ज़ाहिरन ख़ूबसूरत दिखाई देने वाले शख़्स को नमाज़ पढ़ते देखा। हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने उनसे फरमाया : उसके पास जा कर उसे क़त्ल कर दो। रावी ने कहा कि हज़रत अबू बकर رضي الله عنه उसकी तरफ़ गए तो उन्होंने ने जब उसे

الحديث رقم ٣١: أخرجه أحمد بن حنبل في المسند، ٣ / ١٥، الرقم: ١١١٣٣، والهيثمي في مجمع الزوائد، ٦ / ٢٢٥، وقال: رجاله ثقات، والعسقلاني في فتح الباري، ١٢ / ٢٢٩، وابن حزم في المحلى، ١١ / ١٠٤، والشوكاني في نيل الأوطار، ٧ / ٣٥١.

इस हाल में (निहायत ख़ुशूअ से नमाज़ पढ़ते) देखा तो उसे क़त्ल करना मुनासिब न समझा और हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की ख़िदमत में (उसे बग़ैर क़त्ल किए) लौट आए, रावी ने कहा फिर हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने हज़रत उमर ﷺ से फरमाया : जाओ उसे क़त्ल करो, हज़रत उमर गए और उन्होंने भी उसे इसी हालत में देखा जैसे कि हज़रत अबूबकर ने देखा था। उन्होंने भी उस के क़त्ल को ना पसन्द किया। बयान किया कि वो भी लौट आए। और अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! मैंने उसे निहायत ख़ुशूअ व ख़ुज़ूअ से नमाज़ पढ़ते देखा तो (इस हालत में) उसे क़त्ल करना पसन्द न किया। आप ﷺ ने फरमायाः ऐ अ़ली ! जाओ उसे क़त्ल करो बयान किया कि हज़रत अ़ली ﷺ तशरीफ़ ले गए, तो उन्हें वो नज़र न आया तो हज़रत अ़ली ﷺ लौट आए, फिर अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह! वो कहीं दिखाई नहीं दिया। बयान किया कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : यक़ीनन यह और इसके साथी कुरआन पढ़ेंगे लेकिन वो उनके गलों से नीचे नहीं उतरेगा, वो दीन से इस तरह निकल जाएंगे जैसे तीर शिकार से निकल जाता है फिर वो उस में पलट कर नहीं आएंगे यहाँ तक कि तीर पलट कर कमान में न आ जाए (यानी उनका पलट कर दीन की तरफ़ लौटना ना मुमकिन है) सो तुम उन्हें (जब भी पाओ) क़त्ल करदो, वो बदतरीन मख़्लूक़ हैं।''

١٠٠ / ٣٢۔ عَنْ أَبِي بَكْرَةَ رضي الله عنه أَنَّ نَبِيَّ اللهِ ﷺ مَرَّ بِرَجُلٍ سَاجِدٍ وَهُوَ يَنْطَلِقُ إِلَى الصَّلَاةِ فَقَضَى الصَّلَاةَ وَرَجَعَ عَلَيْهِ وَهُوَ سَاجِدٌ فَقَامَ النَّبِيُّ ﷺ، فَقَالَ: مَنْ يَقْتُلُ هٰذَا؟ فَقَامَ رَجُلٌ فَحَسَرَ عَنْ يَدَيْهِ فَاخْتَرَطَ سَيْفَهُ وَهَزَّهُ ثُمَّ قَالَ: يَانَبِيَّ اللهِ، بِأَبِي أَنْتَ وَأُمِّي، كَيْفَ أَقْتُلُ رَجُلاً سَاجِدًا يَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ؟ ثُمَّ قَالَ: مَنْ يَقْتُلُ هٰذَا؟ فَقَامَ رَجُلٌ، فَقَالَ: أَنَا فَحَسَرَ عَنْ ذِرَاعَيْهِ وَاخْتَرَطَ سَيْفَهُ وَهَزَّهُ

الحديث رقم ٣٢: أخرجه أحمد بن حنبل في المسند، ٥/ ٤٢، الرقم: ١٩٥٣٦، وابن أبي عاصم في السنة، ٢/ ٤٥٧، الرقم: ٩٣٨، والهيثمي في مجمع الزوائد، ٦/ ٢٢٥، وقال: رواه أحمد والطبراني ورجال أحمد رجال الصحيح، والحارث في المسند (زوائد الهيثمي) ٢/ ٧١٣، الرقم: ٧٠٣، وابن رجب في جامع العلوم والحكم ١/ ١٣١۔

حَتَّى أَرْعَدَتْ يَدُهُ، فَقَالَ: يَانَبِيَّ اللهِ، كَيْفَ أَقْتُلُ رَجُلاً سَاجِدًا يَشْهَدُ أَنْ لاَ إِلَهَ إِلَّا اللهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ؟ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: وَالَّذِي نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهِ، لَوْ قَتَلْتُمُوْهُ لَكَانَ أَوَّلَ فِتْنَةٍ وَآخِرَهَا.

رَوَاهُ أَحْمَدُ وَابْنُ أَبِي عَاصِمٍ.

إِسْنَادُهُ صَحِيْحٌ وَرِجَالُهُ كُلُّهُمْ ثِقَاتٌ كَمَا قَالَ ابْنُ أَبِي عَاصِمٍ وَالْهَيْثَمِيُّ.

''हज़रत अबू बकरह ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ एक शख़्स के पास से गुज़रे जो सज्दे की हालत में था। और आप ﷺ नमाज़ के लिए तशरीफ़ ले जा रहे थे। आप ﷺ ने नमाज़ अदा की और उस की तरफ़ लौटे और वो उस वक़्त भी (हालते) सज्दा में था। हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ खड़े हो गए और फरमायाः कौन इसे क़त्ल करेगा ? तो एक आदमी खड़ा हुआ उसने अपने बाज़ू चढ़ाये तलवार निकाली और उसे लहराया (उस की तरफ़ देखा तो उस की ज़ाहिरी दीनी वज़ा कतअ को देख कर मुतस्सिर हो गया) फिर अ़र्ज़ कियाः या नबिय्यल्लाह! मेरे माँ बाप आप पर क़ुर्बान! मैं कैसे उस शख़्स को क़त्ल कर दूँ जो हालते सज्दा में है और गवाही देता है कि अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई माबूद नहीं और बेशक मुहम्मद ﷺ उसके बन्दे और रसूल हैं ? फिर आप ﷺ फरमायाः कौन इसे क़त्ल करेगा ? तो एक शख़्स खड़ा हुआ, अ़र्ज़ किया : मैं तो उसने अपने बाज़ू चढ़ाये अपनी तलवार निकाली और उसे लहराया (उसे क़त्ल करने ही लगा था) कि उसके हाथ कांपे, अ़र्ज़ किया, ऐ अल्लाह के नबी! मैं कैसे ऐसे शख़्स को क़त्ल कर दूँ जो हालते सज्दा में गवाही देता है कि अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई माबूद नहीं और बेशक मुहम्मद ﷺ उसके बन्दे और रसूल हैं ? तो हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़े में मुहम्मद ﷺ की जान है ! अगर तुम उसे क़त्ल कर देते तो वो फ़ितनो का अव्वलो आख़िर था (यानी यह फ़ितनए–ख़ारिजिय्यत इसी पर ख़त्म हो जाता)।''

١٠١/٣٣ـ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ ﷺ قَالَ: كَانَ فِي عَهْدِ رَسُوْلِ

الحديث رقم ٣٣: أخرجه أبويعلى في المسند، ١/٩٠، الرقم: ٩٠، ٧/١٥٥، ١٦٨، الرقم: ٤١٤٣، ٤١٢٧، وعبد الرزاق في المصنف، ١٠/١٥٥، الرقم: ١٨٦٧٤، وأبونعيم فيحلية الأولياء، ٣/٥٢، والمروزي في السنة، ١/٢١، الرقم: ٥٣، والمقدسي في الأحاديث المختارة، ١٧/٦٩، الرقم: ٢٤٩٩، والهيثمي في مجمع الزوائد، ٦/٢٢٦.

اللهِ ﷺ رَجُلٌ يُعْجِبُنَا تَعَبُّدُهُ وَاجْتِهَادُهُ (وفي رواية: حَتَّى جَعَلَ بَعْضُ أَصْحَابِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّ لَهُ فَضْلًا عَلَيْهِمْ) قَدْ عَرَّفْنَاهُ لِرَسُوْلِ اللهِ ﷺ بِاسْمِهِ وَ وَصَّفْنَاهُ بِصِفَتِهِ فَبَيْنَمَا نَحْنُ نَذْكُرُهُ إِذْ طَلَعَ الرَّجُلُ قُلْنَا: هُوَ، هَذَا. قَالَ: إِنَّكُمْ لَتُخْبِرُوْنَ عَنْ رَجُلٍ إِنَّ عَلَى وَجْهِهِ سُفْعَةً مِنَ الشَّيْطَانِ فَأَقْبَلَ حَتَّى وَقَفَ عَلَيْهِمْ وَ لَمْ يُسَلِّمْ، فَقَالَ لَهُ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: أَنْشُدُکَ بِاللهِ، هَلْ قُلْتَ فِي نَفْسِکَ حِيْنَ وَقَفْتَ عَلَى الْمَجْلِسِ مَا فِي الْقَوْمِ أَحَدٌ أَفْضَلُ أَوْ أَخْيَرُ مِنِّي؟ قَالَ: اَللَّهُمَّ نَعَمْ، ثُمَّ دَخَلَ يُصَلِّي (وفي رواية: ثُمَّ انْصَرَفَ فَأَتَى نَاحِيَةً مِنَ الْمَسْجِدِ فَخَطَّ خَطًّا بِرِجْلِهِ ثُمَّ صَفَّ كَعْبَيْهِ فَقَامَ يُصَلِّي) فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ يَقْتُلُ الرَّجُلَ؟ فَقَالَ أَبُوْبَكْرٍ: أَنَا فَدَخَلَ عَلَيْهِ فَوَجَدَهُ يُصَلِّي فَقَالَ:سُبْحَانَ اللهِ أَقْتُلُ رَجُلًا يُصَلِّي؟ وَقَدْ نَهَى رَسُوْلُ اللهِ ﷺ عَنْ ضَرْبِ الْمُصَلِّيْنَ فَخَرَجَ، فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَا فَعَلْتَ؟ قَالَ: كَرِهْتُ أَنْ أَقْتُلَهُ وَهُوَ يُصَلِّي وَقَدْ نَهَيْتَ عَنْ ضَرْبِ الْمُصَلِّيْنَ. قَالَ: مَنْ يَقْتُلُ الرَّجُلَ؟ قَالَ عُمَرُ: أَنَا، فَدَخَلَ فَوَجَدَهُ وَاضِعًا وَجْهَهُ، قَالَ عُمَرُ: أَبُوبَكْرٍ أَفْضَلُ مِنِّي، فَخَرَجَ، فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَا فَعَلْتَ؟ قَالَ: وَجَدْتُهُ وَاضِعًا وَجْهَهُ لِلّٰهِ فَكَرِهْتُ أَنْ أَقْتُلَهُ. قَالَ: مَنْ يَقْتُلُ الرَّجُلَ؟ فَقَالَ عَلِيٌّ: أَنَا، قَالَ: أَنْتَ لَهُ إِنْ أَدْرَكْتَهُ. قَالَ: فَدَخَلَ عَلَيْهِ فَوَجَدَهُ قَدْ خَرَجَ فَرَجَعَ إِلَى رَسُوْلِ اللهِ ﷺ فَقَالَ: مَا فَعَلْتَ؟ قَالَ: وَجَدْتُهُ وَقَدْ خَرَجَ قَالَ: لَوْ قُتِلَ مَا اخْتَلَفَ فِي أُمَّتِي رَجُلَانِ كَانَ أَوَّلُهُمْ وَآخِرُهُمْ. قَالَ مُوْسَى: سَمِعْتُ مُحَمَّدَ بْنَ كَعْبٍ يَقُوْلُ: هُوَ الَّذِي قَتَلَهُ عَلِيٌّ ﷺ ذَا الثُّدَيَةِ.

وفي رواية: فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: هَذَا أَوَّلُ قَرْنٍ مِنَ الشَّيْطَانِ طَلَعَ فِي

أُمَّتِي (أَوْ أَوَّلُ قَرْنٍ طَلَعَ مِنْ أُمَّتِي) أَمَّا إِنَّكُمْ لَوْ قَتَلْتُمُوهُ مَا اخْتَلَفَ مِنْكُمْ رَجُلَانِ، إِنَّ بَنِي إِسْرَائِيلَ اخْتَلَفُوْا عَلَى إِحْدَى أَوِ اثْنَتَيْنِ وَسَبْعِيْنَ فِرْقَةً، وَإِنَّكُمْ سَتَخْتَلِفُوْنَ مِثْلَهُمْ أَوْ أَكْثَرَ، لَيْسَ مِنْهَا صَوَابٌ إِلَّا وَاحِدَةٌ. قِيْلَ: يَا رَسُوْلَ اللهِ، وَمَا هٰذِهِ الْوَاحِدَةُ؟ قَالَ: الْجَمَاعَةُ، وَآخِرُهَا فِي النَّارِ.

رَوَاهُ أَبُوْيَعْلَى وَعَبْدُ الرَّزَّاقِ وَأَبُوْنُعَيْمٍ.

وَرِجَالُهُ رِجَالُ الصَّحِيْحِ كَمَا قَالَ الْهَيْثَمِيُّ. وَإِسْنَادُهُ صَحِيْحٌ.

''हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ से मरवी है उन्होंने फरमाया कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के ज़मानए मुबारक में एक शख़्स था जिस की इबादत गुज़ारी और मुजाहिदे ने हमें हैरानी में मुब्तिला किया हुआ था। (और एक रिवायत में यहां तक है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के सहाबए किराम में से बा'ज़ उसे ख़ुद से भी अफ़ज़ल समझने लगे थे) हम ने रसूलुल्लाह ﷺ के सामने उसका नाम और उसकी सिफ़त बयान कर के उस का ता'रूफ़ कराया। एक दफ़ा हम उसका ज़िक्र कर रहे थे कि वो शख़्स आ गया। हम ने अ़र्ज़ किया (या रसूलुल्लाह!) वो शख़्स यह है। आप ﷺ ने फरमाया : बेशक तुम जिस शख़्स की खबरें देते थे यकीनन उसके चेहरे पर शैतानी रंग है फिर वो शख़्स क़रीब आया यहां तक कि उन के पास आ कर खड़ा हो गया और उन से सलाम भी नहीं किया। तो हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने उसे फरमायाः मैं तुझे अल्लाह की क़सम देता हूँ (कि सच बताना) जब तू मजलिस के पास खड़ा था, तूने अपने दिल में यह नहीं कहा था कि इन लोगों में मुझ से अफ़ज़ल या मुझ से ज्यादा बरगुज़ीदह शख़्स कोई नहीं ? उस ने कहा ! अल्लाह की क़सम! हाँ (मैंने कहा था)। फिर वो (मस्जिद में) दाख़िल हुआ, नमाज़ पढ़ने लगा। (और एक रिवायत में है कि फिर वो शख़्स मुड़ा मस्जिद के सहन में आया, नमाज़ की तैयारी की, टांगें सीधी कीं और नमाज़ पढ़ने लगा) तो हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः उस शख़्स को कौन क़त्ल करेगा ? हज़रत अबू बकर ﷺ ने अ़र्ज़ कियाः मैं करूँगा फिर वो उस के पास गए तो उसे नमाज़ पढ़ते हुए पाया कहने लगे। सुब्हानल्लाह मैं नमाज़ पढ़ते शख़्स को (कैसे) क़त्ल करूँ ? जबकि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने नमाज़ियों को क़त्ल करने से मना फरमाया है तो वो (उसे क़त्ल किए बगैर) बाहर निकल गए। हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः तूने क्या किया? अ़र्ज़ कियाः मैंने इस हालत में कि वो

नमाज़ पढ़ रहा था उसे क़त्ल करना ना पसन्द किया जबकि आप ﷺ ने नमाज़ियों को क़त्ल करने से मना किया है। आप ﷺ ने फरमायाः उस शख़्स को कौन क़त्ल करेगा? हज़रत उमर ؓ ने अ़र्ज़ कियाः मैं करूँगा, फिर वो उसके पास गए तो उसे अल्लाह ﷻ की बारगाह में चेहरा झुकाए देखा हज़रत उमर ने कहाः हज़रत अबू बकर मुझसे अफ़ज़ल हैं लिहाज़ा वो भी (उसे क़त्ल किए बग़ैर) बाहर निकल गए। तो हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः तूने क्या किया? अ़र्ज़ किया मैंने उसे अल्लाह तआ़ला की बारगाह में सर झुकाए देखा तो (इस हालत में) उसे क़त्ल करना ना पसन्द किया। आप ﷺ ने फरमायाः कौन उस शख़्स को क़त्ल करेगा ? तो हज़रत अ़ली ؓ ने अ़र्ज़ किया, मैं करूँगा, आप ﷺ ने फरमायाः तुम ही उस के (क़त्ल के) लिए हो अगर तुम ने उसे पा लिया तो (तुम ज़रूर उसका क़त्ल कर लोगे) रावी ने बयान किया कि अन्दर उस के पास गए तो देखा कि वो चला गया था वो हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के पास लौट आए। आप ﷺ ने फरमायाः अगर वो क़त्ल कर दिया जाता तो मेरी उम्मत में दो आदमियों में भी कभी इख्तिलाफ़ न होता, वो (फ़ित्ने में) उन का अव्वलो आख़िर था। हज़रत मूसा ने बयान किया मैंने हज़रत मुहम्मद बिन का'ब ؓ से सुनाः फरमाते हैं : वो वही पिस्तान (के मुशाबह हाथ) वाला शख़्स था जिसे हज़रत अ़ली ؓ ने क़त्ल किया था।''

और एक रिवायत में है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः यह शैतान का पहला सींग है जो मेरी उम्मत में ज़ाहिर होगा (या पहला सींग है जो मेरी उम्मत में ज़ाहिर हुआ) जबकि अगर तुम उसे क़त्ल कर देते तो तुम मैं से दो आदमियों में भी कभी इख़्तिलाफ़ ना होता। बेशक बनी इस्राईल में इख्तिलाफ़ से वो 71 या 72 फ़िरक़ों में बंट गए और तुम अनक़रीब इतने ही या इस से भी ज्यादा फ़िरक़ों में बट जाओगे। उनमें से कोई राहे रास्त पर नहीं होगा सिवाए एक के, अ़र्ज़ किया गयाः या रसूलल्लाह! वो एक फ़िरक़ा कौनसा होगा? आप ﷺ ने फरमायाः जमाअ़त (सबसे बड़ा गिरोह) इसके अलावा दूसरे सब आग में जाएंगे।''

١٠٢/٣٤- عَنْ طَارِقِ بْنِ زِيَادٍ قَالَ: خَرَجْنَا مَعَ عَلِيٍّ ؓ إِلَى

الحديث رقم ٣٤: أخرجه النسائي في السنن الكبرى، ٥/١٦١، الرقم: ٨٥٦٦، وأحمد بن حنبل في المسند، ١/١٠٧، الرقم: ٨٤٨، وفي فضائل الصحابة، ٢/٧١٤، الرقم: ١٢٢٤، والخطيب البغدادي في تاريخ بغداد، ١٤/ ٣٦٢، الرقم: ٧٦٨٩، والمروزي في تعظيم قدر الصلاة، ١/٢٥٦، الرقم: ٢٤٧، والمزي في تهذيب الكمال، ١٣/٣٣٨، الرقم: ٢٩٤٨.

الْخَوَارِجِ فَقَتَلَهُمْ، ثُمَّ قَالَ: انْظُرُوا فَإِنَّ نَبِيَّ اللهِ ﷺ قَالَ: إِنَّهُ سَيَخْرُجُ قَوْمٌ يَتَكَلَّمُونَ بِالْحَقِّ لَا يُجَاوِزُ حَلْقَهُمْ، يَخْرُجُوْنَ مِنَ الْحَقِّ كَمَا يَخْرُجُ السَّهْمُ مِنَ الرَّمِيَّةِ ...... الحديث. رَوَاهُ النَّسَائِيُّ وَأَحْمَدُ.

''हज़रत तारिक़ बिन ज़ियाद ने बयान किया कि हम हज़रत अ़ली ﷺ के साथ ख़वारिज की तरफ़ (उनसे जंग के लिए) निकले हज़रत अ़ली ﷺ ने उन्हें क़त्ल किया फिर फरमायाः देखा बेशक हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः अनक़रीब ऐसे लोग निकलेंगे कि हक़ की बात करेंगे लेकिन वो उन के हलक़ से नीचे नहीं उतरेगा वो हक़ से यूँ निकल जाएंगे जैसे तीर शिकार से निकल जाता है।''

١٠٣/٣٥۔ عَنْ مِقْسَمٍ أَبِي الْقَاسِمِ مَوْلَى عَبْدِ اللهِ بْنِ الْحَارِثِ بْنِ نَوفَلٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ ﷺ ...... فَذَكَرَ الْحَدِيْثَ وَ فِيْهِ: قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: فَإِنَّهُ سَيَكُوْنُ لَهُ شِيْعَةٌ يَتَعَمَّقُوْنَ فِي الدِّيْنِ حَتَّى يَخْرُجُوْا مِنْهُ كَمَا يَخْرُجُ السَّهْمُ مِنَ الرَّمِيَّةِ ...... وَذَكَرَ تَمَامَ الْحَدِيْثِ. رَوَاهُ أَحْمَدُ وَابْنُ أَبِي عَاصِمٍ.

وَقَالَ ابْنُ أَبِي عَاصِمٍ: إِسْنَادُهُ جَيِّدٌ وَرِجَالُهُ كُلُّهُمْ ثِقَاتٌ.

''अ़ब्दुल्लाह बिन हारिस बिन नवफ़ल मौला मिक़्सम अबूल क़ासिम ﷺ ने हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स ﷺ से रिवायत किया कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : अनक़रीब उसका एक गिरोह होगा जो दीन से (ज़ाहिरन) बहुत गहरी वाबस्ती रखने वाले नज़र आएंगे मगर दीन से यूँ निकल जाएंगे जैसे तीर शिकार से निकल जाता है .... फिर मुकम्मल हदीस ज़िक्र की।''

الحديث رقم ٣٥: أخرجه أحمد بن حنبل في المسند، ٢/٢١٩، الرقم: ٧٠٣٨، وابن أبي عاصم في السنة ٢/٤٥٣۔ ٤٥٤، الرقم: ٩٢٩۔ ٩٣٠، وعبد الله بن أحمد في السنة، ٢/٦٣١، الرقم: ١٥٠٤، وابن تيمية في الصارم المسلول، ١/٢٣٧، والعسقلاني في فتح الباري، ١٢/٢٩٢، والطبري في تاريخ الأمم والملوك، ٢/١٧٦۔

١٠٤ / ٣٦۔ عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ رضي الله عنه قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: سَيَخْرُجُ أَقْوَامٌ مِنْ أُمَّتِي يَشْرَبُوْنَ الْقُرْآنَ كَشُرْبِهِمُ اللَّبَنَ.

رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ وَرِجَالُهُ ثِقَاتٌ كَمَا قَالَ الْهَيْثَمِيُّ وَالْمَنَاوِيُّ.

''हज़रत उक़्बा बिन आमिर رضي الله عنه से मरवी है उन्होंने बयान किया कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः अनक़रीब मेरी उम्मत में से ऐसे लोग निकलेंगे जो कुरआन को यूँ (ग़ट ग़ट) पढ़ेंगे गोया वो दूध पी रहे हों।''

١٠٥ / ٣٧۔ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رضي الله عنه أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ دَخَلَ عَامَ الْفَتْحِ وَعَلَى رَأْسِهِ الْمِغْفَرُ فَلَمَّا نَزَعَهُ جَاءَ رَجُلٌ فَقَالَ: إِنَّ ابْنَ خَطَلٍ مُتَعَلِّقٌ بِأَسْتَارِ الْكَعْبَةِ فَقَالَ: اقْتُلُوْهُ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अनस बिन मालिक رضي الله عنه से रिवायत है कि फ़तह (मक्का) के साल रसूलुल्लाह ﷺ मक्का मुकर्रमा में दाख़िल हुए तो आप के सर मुबारक पर लोहे का ख़ूद (लोहे

الحديث رقم ٣٦: أخرجه الطبراني في المعجم الكبير، ١٧ / ٢٩٧، الرقم: ٨٢١، والهيثمي في مجمع الزوائد، ٦ / ٢٢٩، والمناوي في فيض القدير، ٤ / ١١٨۔

الحديث رقم ٣٧: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: الحج، باب: دخول الحرم ومكة بغير إحرام، ٢ / ٦٥٥، الرقم: ١٧٤٩، وفي كتاب: الجهاد والسير، ٣ / ١١٠٧، الرقم: ٢٨٧٩، وفي كتاب: المغازي، باب: أين ركز النبي ﷺ الرأية يوم الفتح، ٤ / ١٥٦١، الرقم: ٤٠٣٥، ومسلم في الصحيح، كتاب: الحج، باب: جواز دخول مكة بغير إحرام، ٢ / ٩٨٩، الرقم: ١٣٥٧، والترمذي في السنن، كتاب: الجهاد عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء في المغفر، وقال: هذا حديث حسن صحيح، ٤ / ٢٠٢، الرقم: ١٦٩٣، وأبوداود في السنن، كتاب: الجهاد، باب: قتل الأسير ولايعرض عليه الإسلام، ٣ / ٦٠، الرقم: ٢٦٨٥، والنسائي في السنن، كتاب: مناسك الحج، باب: دخول مكة بغير إحرام، ٥ / ٢٠٠، الرقم: ٢٨٦٧، وفي السنن الكبرى، ٢ / ٣٨٢، الرقم: ٣٨٥٠، وأحمد بن حنبل في المسند، ٣ / ١٨٥، ٢٣١-٢٣٢، الرقم: ١٢٩٥٥، ١٣٤٣٧، ١٣٤٦١، ١٣٥٤٢، وابن حبان في الصحيح، ٩ / ٣٧، الرقم: ٣٧٢١، والطحاوى في شرح معاني الآثار، ٢ / ٢٥٩، والطبراني في المعجم الأوسط، ٩ / ٢٩، الرقم: ٩٠٣٤۔

की टोपी जो लड़ाई में पहनते हैं) था जब आप ﷺ ने उसे उतारा तो एक शख़्स ने आ कर अ़र्ज़ किया : (या रसूलल्लाह! आप का गुस्ताख़) इब्न ख़तल (जान बचाने के लिए) काबे के पर्दों से लटका हुआ है। आप ﷺ ने फरमायाः उसे (वहाँ भी) क़त्ल कर दो।''

١٠٦ / ٣٨۔ عَنْ عُرْوَةَ بْنِ مُحَمَّدٍ عَنْ رَجُلٍ مِنْ بِلْقِيْنَ: أَنَّ امْرَأَةً كَانَتْ تَسُبُّ النَّبِيَّ ﷺ. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: مَنْ يَكْفِيْنِي عَدُوِّي؟ فَخَرَجَ إِلَيْهَا خَالِدُ بْنُ الْوَلِيْدِ رضي الله عنه فَقَتَلَهَا. رَوَاهُ عَبْدُ الرَّزَّاقِ وَالْبَيْهَقِيُّ.

''उरवा बिन मुहम्मद ने बिल्क़ीन के किसी शख़्स से रिवायत की कि एक औ़रत हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ को गालियाँ दिया करती थी। हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः मेरे दुश्मन से मेरा बदला कौन लेगा? तो हज़रत ख़ालिद बिन वलीद رضي الله عنه उस की तरफ़ गए और उसे क़त्ल कर दिया।''

١٠٧ / ٣٩۔ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رضي الله عنهما أَنَّ رَجُلًا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ شَتَمَ النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: مَنْ يَكْفِيْنِي عَدُوِّي؟ فَقَالَ الزُّبَيْرُ: أَنَا، فَبَارَزَهُ، فَقَتَلَهُ، فَأَعْطَاهُ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ سَلَبَهُ. رَوَاهُ عَبْدُ الرَّزَّاقِ وَأَبُوْنُعَيْمٍ.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رضي الله عنه से मरवी है कि एक मुश्रिक़ शख़्स ने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ को गालियाँ दीं। हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः कौन मेरे दुश्मन से बदला लेगा? हज़रत ज़ुबैर رضي الله عنه ने अ़र्ज़ कियाः ''मैं'', फिर मैदान में निकल कर उसे क़त्ल कर दिया। हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने क़त्ल होने वाले (मुश्रिक़ शख़्स) के जिस्म का सामान हज़रत ज़ुबैर رضي الله عنه को दे दिया।''

الحديث رقم ٣٨: أخرجه عبد الرزاق في المصنف، ٥/ ٣٠٧، الرقم: ٩٧٠٥، والبيهقي في السنن الكبرى، ٨/ ٢٠٢، وابن تيمية في الصارم المسلول، ١/ ١٤٠.

الحديث رقم ٣٩: أخرجه عبد الرزاق في المصنف، ٥/ ٢٣٧، ٣٠٧، الرقم: ٩٤٧٧، ٩٧٠٤، وأبونعيم في حلية الأولياء، ٨/ ٤٥، وابن تيمية في الصارم المسلول، ١/ ١٥٤.

١٠٨ / ٤٠۔ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رضي الله عنهما قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ بَدَّلَ دِيْنَهُ فَاقْتُلُوْهُ.

رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ وَالتِّرْمِذِيُّ وَأَبُوْدَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَه وَاللَّفْظُ لَهُمَا.

''हज़रत इब्ने अब्बास رضي الله عنهما से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जो (मुसलमान) अपना दीन बदल ले (यानी उस से फिर जाए) उसे क़त्ल कर दो।''

١٠٩ / ٤١۔ عَنْ عَبْدِالْمَلِكِ عَنْ أَبِي حُرَّةٍ أَنَّ عَلِيًّا رضي الله عنه لَمَّا بَعَثَ أَبَا مُوْسَى لِإِنْفَاذِ الْحَكُوْمَةِ، اجْتَمَعَ الْخَوَارِجُ فِي مَنْزِلِ عَبْدِ اللهِ بْنِ وَهَبِ الرَّاسِبِيِّ مِنْ رُؤُوْسِ الْخَوَارِجِ، فَخَطَبَهُمْ خُطْبَةً بَلِيْغَةً زَهَّدَهُمْ فِي هَذِهِ الدُّنْيَا وَرَغَّبَهُمْ فِي الْآخِرَةِ وَالْجَنَّةِ وَحَثَّهُمْ عَلَى الْأَمْرِ بِالْمَعْرُوْفِ وَالنَّهْيِ عَنِ الْمُنْكَرِ ثُمَّ قَالَ: فَاخْرُجُوْا بِنَا إِخْوَانِنَا مِنْ هَذِهِ الْقَرْيَةِ الظَّالِمِ أَهْلُهَا إِلَى جَانِبِ هَذَا السَّوَادِ إِلَى بَعْضِ كُوَرِ الْجِبَالِ أَوْ بَعْضِ هَذِهِ الْمَدَائِنِ مُنْكَرِيْنَ لِهَذِهِ الْبِدَعِ الْمُضِلَّةِ......ثُمَّ اجْتَمَعُوْا فِي مَنْزِلِ شُرَيْحِ بْنِ أَوْفَى الْعَبَسِيِّ فَقَالَ ابْنُ وَهَبٍ: اشْخَصُوْا بِنَا إِلَى بَلْدَةٍ نَجْتَمِعُ فِيْهَا لِإِنْفَاذِ حُكْمِ اللهِ فَإِنَّكُمْ أَهْلُ الْحَقِّ. رَوَاهُ ابْنُ جَرِيْرٍ وَابْنُ الْأَثِيْرِ وَابْنُ كَثِيْرٍ.

الحديث رقم ٤٠: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: الجهاد والسير، باب: لا يعذب بعذاب الله، ٣/١٠٩٨، الرقم: ٢٨٥٤، والترمذي فى السنن، كتاب: الحدود عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء فى المرتد، ٤/٥٩، الرقم: ١٤٥٨، وأبوداود فى السنن، كتاب: الحدود، باب: الحكم فيمن ارتد، ٤/١٢٦، الرقم: ٤٣٥١، والنسائى فى السنن، كتاب: تحريم الدم، باب: الحكم فى المرتد، ٧/١٠٣، الرقم: ٤٠٥٩، وابن ماجه فى السنن، كتاب: الحدود، باب: المرتد عن دينه، ٢/٨٤٨، الرقم: ٢٥٣٥، وأحمد بن حنبل فى المسند، ١/٣٢٢، الرقم: ٢٩٦٨، وابن حبان فى الصحيح، ١٠/٣٢٧، الرقم: ٤٤٧٥.

الحديث رقم ٤١: أخرجه ابن جرير الطبرى في تاريخ الأمم والملوك، ٣/١١٥، وابن الأثير في الكامل، ٣/٢١٣۔ ٢١٤، وابن كثير في البداية والنهاية، ٧/٢٨٥۔٢٨٦ وابن الجوزي في المنتظم في تاريخ الملوك والأمم، ٥/١٣٠۔١٣١.

''अब्दिल मलिक ने अबू हुर्रह से रिवायत बयान की कि हज़रत अ़ली ؓ ने हज़रत अबू मूसा (अशअरी ؓ) को (अपना गवर्नर बना कर) निफ़ाज़े हुकूमत के लिए भेजा तो ख़वारिज (अपने सरदार) अब्दुल्लाह बिन वहब रासिबी के घर में जमा हुए और उसने इन्हें बलीग़ ख़ुत्बा दिया जिस में उसने उन्हें इस दुनिया से बे रग़बती और आख़िरत और जन्नत की रग़बत दिलाई और उन्हें अम्र बिल मारूफ़ और नह्य अनिल मुन्कर पर उभारा फिर कहाः हमारे लिए ज़रूरी है हम पहाड़ों या दूसरे शहरों की तरफ़ निकल जायें ताकि इन गुमराह करने वाली बिदअ़तों से हमारा इन्कार साबित हो जाए .... फिर सब शुरै बिन अबी अवफ़ा अबसी के घर जमा हुए तो इब्ने वहब ने कहाः अब कोई शहर ऐसा देखना चाहिए कि (उसे अपना मर्कज़ बना कर) हम सब उसी में जमा हों और अल्लाह तआ़ला का हुक्म जारी करें क्योंकि अहले हक़ अब तुम ही लोग हो।''

١١٠/٤٢۔ ذكر ابن الأثير في الكامل: خَرَجَ الْأَشْعَثُ بِالْكِتَابِ يَقْرَؤُهُ عَلَى النَّاسِ حَتَّى مَرَّ عَلَى طَائِفَةٍ مِنْ بَنِي تَمِيْمٍ فِيْهِمْ عُرْوَةُ بْنُ أُدَيَّةَ أَخُوْ أَبِي بِلَالٍ فَقَرَأَ عَلَيْهِمْ، فَقَالَ عُرْوَةُ: تحَكِّمُوْنَ فِي أَمْرِ اللهِ الرِّجَالُ؟ لَا حُكْمَ إِلَّا لِلّٰهِ.

''इमाम इब्ने असीर ने 'अल्कामिल' में बयान कियाः ''अशअ़स बिन क़ैस ने उस अ़हदनामे को (जो हज़रत अ़ली ؓ और हज़रत मुआविया ؓ के दरमियान हुआ था) ले कर हर हर क़बीले में लोगों को सुनाना शुरू किया। जब क़बीले बनी तमीम में पहुँचे तो उरवह बिन उदय्यह (ख़ारिजी) जो अबू बिलाल का भाई था भी उनमें था जब उस ने वो मुआहिदा उन्हें सुनाया तो उरवह (ख़ारिजी) कहने लगाः अल्लाह तआ़ला के फरमान में आदमियों को हकम बनाते हो ? अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई हुक्म नहीं कर सकता।''

١١١/٤٣۔ عَنْ عَلِيٍّ ؓ أَنَّهُ كَتَبَ إِلَى الْخَوَارِجِ بِالنَّهْرِ: بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيْمِ، مِنْ عَبْدِ اللهِ عَلِيٍّ أَمِيْرِ الْمُؤْمِنِيْنَ إِلَى زَيْدِ بْنِ حُصَيْنٍ وَ عَبْدِ اللهِ بْنِ وَهَبٍ وَ مَنْ مَعَهُمَا مِنَ النَّاسِ. أَمَّا بَعْدُ فَإِنَّ هَذَيْنِ الرَّجُلَيْنِ

الحديث رقم ٤٢: أخرجه ابن الأثير في الكامل، ٣/١٩٦، وابن الجوزي في المنتظم في تاريخ الملوك والأمم، ٥/١٢٣۔

الحديث رقم ٤٣: أخرجه ابن جرير الطبري في تاريخ الأمم والملوك، ٣/١١٧، وابن الأثير في الكامل، ٣/٢١٦، وابن كثير في البداية والنهاية، ٧/٢٨٧، وابن الجوزي في المنتظم، ٥/١٣٢۔

اللَّذَيْنِ ارْتَضَيْنَا حَكَمَيْنِ قَدْ خَالَفَا كِتَابَ اللهِ وَاتَّبَعَا هَوَاهُمَا بِغَيْرِ هُدًى مِنَ اللهِ فَلَمْ يَعْمَلَا بِالسُّنَّةِ وَلَمْ يُنْفِذَا الْقُرْآنَ حُكْمًا فَبَرِئَ اللهُ مِنْهُمَا وَرَسُوْلُهُ وَالْمُؤْمِنُوْنَ، فَإِذَا بَلَغَكُمْ كِتَابِي هٰذَا فَأَقْبِلُوْا إِلَيْنَا فَإِنَّا سَائِرُوْنَ إِلَى عَدُوِّنَا وَ عَدُوِّكُمْ وَ نَحْنُ عَلَى الْأَمْرِ الْأَوَّلِ الَّذِي كُنَّا عَلَيْهِ.

فَكَتَبُوْا (الخوارج) إِلَيْهِ: أَمَّا بَعْدُ فَإِنَّكَ لَمْ تَغْضَبْ لِرَبِّكَ وَ إِنَّمَا غَضِبْتَ لِنَفْسِكَ فَإِنْ شَهِدْتَ عَلَى نَفْسِكَ بِالْكُفْرِ وَاسْتَقْبَلْتَ التَّوْبَةَ نَظَرْنَا فِيْمَا بَيْنَنَا وَ بَيْنَكَ وَ إِلَّا فَقَدْ نَبَذْنَاكَ عَلَى سَوَاءٍ، إِنَّ اللهَ لَا يُحِبُّ الْخَائِنِيْنَ.

فَلَمَّا قَرَأَ كِتَابَهُمْ أَيِسَ مِنْهُمْ وَرَأَى أَنْ يَدَعَهُمْ وَيَمْضِيَ بِالنَّاسِ حَتَّى يَلْقَى أَهْلَ الشَّامِ حَتَّى يَلْقَاهُمْ.

رَوَاهُ ابْنُ جَرِيْرٍ وَابْنُ الْأَثِيْرِ وَابْنُ كَثِيْرٍ.

''हज़रत अ़ली ﷺ से मरवी है कि उन्होंने ख़वारिज को नहरवान से ख़त लिखाः ''अल्लाह तआ़ला के नाम से शुरू जो निहायत महरबान हमेशा रहम फरमाने वाला है, अल्लाह तआ़ला के बन्दे अमीरुल मोमिनीन अ़ली की तरफ़ से जैद बिन हुसैन और अ़ब्दुल्लाह बिन वहब और उन के पैरोकारों के लिए। वाज़ेह हो कि वो दो शख़्स जिनके फैसले पर हम राज़ी हुए थे उन्होंने किताबुल्लाह के ख़िलाफ़ किया और अल्लाह तआ़ला की हिदायत के बग़ैर अपनी ख़्वाहिशात की पैरवी की। जब उन्होंने क़ुरआनो सुन्नत पर अ़मल नहीं किया तो अल्लाह तआ़ला और अल्लाह तआ़ला का रसूल ﷺ और सब अहले ईमान उनसे बरी हो गए। तुम लोग इस खत को देखते ही हमारी तरफ़ चले आओ ताकि हम अपने और तुम्हारे दुश्मनों की तरफ़ निकलें और हम अब भी अपनी उसी पहली बात पर हैं।''

''इस ख़त के जवाब में उन्होंने (यानी ख़वारिज ने) हज़रत अ़ली ﷺ को लिखाः ''वाज़ेह हो कि अब तुम्हारा ग़ज़ब अल्लाह के लिए नहीं है इसमें नफ़्सानियत शरीक है अब अगर तुम अपने कुफ्र पर गवाह हो जाओ (यानी काफ़िर होने का इक़रार कर लो) और नए सिरे से तौबा

करते हो तो देखा जाएगा वरना हम ने तुम्हें दूर कर दिया क्योंकि अल्लाह तआला ख़यानत करने वालों को दोस्त नहीं रखता।''

''फ़िर जब हज़रत अली ﷺ ने उनका जवाबी ख़त पढ़ा तो उनके (हिदायत की तरफ़ लौटने से) मायूस हो गए लिहाज़ा उन्हें उनके हाल पर छोड़ने का फैसला करके अपने लश्कर के साथ अहले शाम से जा मिले।''

١١٢ / ٤٤. عَنْ زِيَادِ بْنِ أَبِيْهِ أَنَّ عُرْوَةَ بْنَ حُدَيْرٍ (الخارجي) نَجَا بَعْدَ ذَلِکَ مِنْ حَرْبِ النَّهْرَوَانِ وَبَقِيَ إِلَی أَيَّامِ مُعَاوِيَةَ ﷺ. ثُمَّ أَتَی إِلَی زِيَادِ بْنِ أَبِيْهِ وَمَعَهُ مَولًی لَهُ، فَسَأَلَهُ زِيَادُ عَنْ عُثْمَانَ ﷺ، فَقَالَ: كُنْتُ أَوَالِي عُثْمَانَ عَلَی أَحْوَالِهِ فِي خِلَافَتِهِ سِتَّ سِنِيْنَ. ثُمَّ تَبَرَّأْتُ مِنْهُ بَعْدَ ذَلِکَ لِلْأَحْدَاثِ الَّتِي أَحْدَثَهَا، وَشَهِدَ عَلَيْهِ بِالْكُفْرِ. وَسَأَلَهُ عَنْ أَمِيْرِ الْمُؤْمِنِيْنَ عَلِيٍّ ﷺ فَقَالَ: كُنْتُ أَتَوَلَّاهُ إِلَی أَنْ حَكَمَ الْحَاكِمِيْنَ، ثُمَّ تَبَرَّأْتُ مِنْهُ بَعْدَ ذَلِکَ، وَشَهِدَ عَلَيْهِ بِالْكُفْرِ وَسَأَلَهُ عَنْ مُعَاوِيَةَ ﷺ فَسَبَّهُ سَبًّا قَبِيْحًا...... فَأَمَرَ زِيَادُ بِضَرْبِ عُنُقِهِ. رَوَاهُ الشَّهَرَسْتَانِيُّ.

''ज़ियाद बिन अबीह से मरवी है कि उरवाह बिन हुदैर (ख़ारिजी) नहरवान की जंग से बच गया और हज़रत मुआविया ﷺ के दौर तक ज़िन्दा रहा फिर वो ज़ियाद बिन अबीह के पास लाया गया उस के साथ उस का गुलाम भी था तो ज़ियाद ने उस से हज़रत उस्मान ﷺ का हाल दरयाफ़्त किया ? उसने कहा : इब्तिदा में छः साल तक उन्हें मैं बहुत दोस्त रखता था फिर जब उन्होंने बिदअतें शुरू कीं तो उनसे अलग हो गया इसलिए कि वो आख़िर में (नऊज़ु बिल्लाह) काफ़िर हो गए थे, फिर हज़रत अली ﷺ का हाल पूछा ? कहाः वो भी शुरुआत में अच्छे थे जब हकम बनाया (नऊज़ु बिल्लाह) काफ़िर हो गए। इसलिए उनसे भी अलग हो गया। फिर हज़रत मुआविया ﷺ का हाल दरयाफ़्त किया ? तो वो उन्हें सख़्त गालियाँ देने लगा .... फिर ज़ियाद ने उसकी गर्दन काटने का हुक्म दे दिया।''

الحديث رقم ٤٤: أخرجه عبدالكريم الشهرستاني في الملل والنحل، ١ / ١٣٧.

١١٣/٤٥۔ عَنْ أَبِي الطُّفَيْلِ أَنَّ رَجُلًا وُلِدَ لَهُ غُلَامٌ عَلَى عَهْدِ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ فَأَتَى النَّبِيَّ ﷺ فَأَخَذَ بِبَشَرَةِ وَجْهِهِ وَدَعَا لَهُ بِالْبَرَكَةِ قَالَ: فَنَبَتَتْ شَعَرَةٌ فِي جَبْهَتِهِ كَهَيْئَةِ الْقَوْسِ وَشَبَّ الْغُلَامُ فَلَمَّا كَانَ زَمَنَ الْخَوَارِجِ أَحَبَّهُمْ فَسَقَطَتِ الشَّعَرَةُ عَنْ جَبْهَتِهِ فَأَخَذَهُ أَبُوْهُ فَقَيَّدَهُ وَ حَسَبَهُ مَخَافَةَ أَنْ يَلْحَقَ بِهِمْ قَالَ: فَدَخَلْنَا عَلَيْهِ فَوَعَظْنَاهُ وَقُلْنَا لَهُ فِيْمَا نَقُوْلُ: أَلَمْ تَرَ أَنَّ بَرَكَةَ دَعْوَةِ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ قَدْ وَقَعَتْ عَنْ جَبْهَتِکَ فَمَا زِلْنَا بِهِ حَتَّى رَجَعَ عَنْ رَأْيِهِمْ فَرَدَّ اللهُ عَلَيْهِ الشَّعَرَةَ بَعْدُ فِي جَبْهَتِهِ وَتَابَ.

رَوَاهُ أَحْمَدُ وَابْنُ أَبِي شَيْبَةَ.

''अबू तुफैल से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के ज़माने में एक लड़का पैदा हुआ वो हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की बारगाह में लाया गया आप ﷺ ने उसे उस के चेहरे से पकड़ा और उसे दुआ दी और उसका यह असर हुआ कि उसकी पेशानी पर ख़ास तौर पर बाल उगे जो तमाम बालों से मुमताज़ थे वो लड़का जवान हुआ और ख़वारिज का ज़माना आया तो उसे मुहब्बत हो गई। (यानी ख़वारिज का गिरवीदह हो गया) उसी वक्त वो बाल जो दस्ते मुबारक का असर थे झड़ गए उसके बाप ने जो यह हाल देखा उसे क़ैद कर दिया कि कहीं उनमें मिल न जाये। अबू तुफैल कहते हैं कि हम लोग उसके पास गए और उसे वाज़ो नसीहत की और कहाः देखो, तुम जब उन लोगों की तरफ़ माइल हुए हो तो रसूलुल्लाह ﷺ की दुआ की बरकत तुम्हारी पेशानी से जाती रही ग़रज़ जब तक उस शख़्स ने उनकी राय से रूजूअ न किया हम उसके पास से हटे नहीं। फिर जब ख़वारिज की मुहब्बत उसके दिल से निकल गई तो अल्लाह तआला ने दोबारा उसकी पेशानी में वो मुबारक बाल लौटा दिए फिर तो उसने उनके अक़ाइद से सच्ची तौबा कर ली।''

الحديث رقم ٤٥: أخرجه أحمد بن حنبل في المسند، ٥/٤٥٦، الرقم: ٢٣٨٥٦، وابن أبي شيبة في المصنف، ٧/٥٥٦، الرقم: ٣٧٩٠٤، والأصبهاني في دلائل النبوة، ١/١٧٤، الرقم: ٢٢٠، والهيثمي في مجمع الزوائد، ٦/٢٤٣، ١٠/٢٧٥، وقال: رواه أحمد والطبراني ورجاله رجال علي ابن زيد وقد وثق، والعسقلاني في الإصابة، ٥/٣٥٩، الرقم: ٦٩٧٢۔

١١٤ / ٤٦ ـ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ جُهْمَانَ قَالَ: كَانَتِ الْخَوَارِجُ قَدْ تَدْعُوْنِي حَتّٰى كِدْتُ أَنْ أَدْخُلَ فِيْهِمْ، فَرَأَتْ أُخْتُ أَبِي بِلَالٍ فِي النَّوْمِ أَنَّ أَبَا بِلَالٍ كَلْبٌ أَهْلَبُ أَسْوَدُ عَيْنَاهُ تَذْرِفَانِ. فَقَالَتْ: بِأَبِي أَنْتَ يَا أَبَا بِلَالٍ مَا شَأْنُكَ أَرَاكَ هٰكَذَا؟ وَ كَانَ أَبُوْ بِلَالٍ مِنْ رُؤُوْسِ الْخَوَارِجِ.

رَوَاهُ ابْنُ أَبِي شَيْبَةَ وَابْنُ أَبِي عَاصِمٍ وَاللَّفْظُ لَهُ إِسْنَادُهُ صَحِيْحٌ.

''सईद बिन जुहमान से मरवी है बयान किया कि ख़वारिज मुझे (अपनी तरफ़) दावत दिया करते थे (सो उससे मुतास्सिर होकर) क़रीब था कि मैं उनके साथ शामिल हो जाता कि अबू बिलाल की बहन ने ख़्वाब में देखा की अबू बिलाल काले लम्बे बालों वाले कुत्तों की शक्ल में हैं और उस की आँखें बह रही थीं। बयान किया कि उस ने कहा : ऐ अबू बिलाल मेरा बाप आप पर कुरबान, क्या वजह है कि मैं तुम्हें इस हाल में देख रही हूँ। उस ने कहा : हम लोग तुम्हारे बाद दोज़ख के कुत्ते बना दिए गए हैं वो अबू बिलाल ख़ारिजियों के सरदारों में से था।''

١١٥ / ٤٧ ـ عَنْ أَبِي عُثْمَانَ النَّهْدِيِّ: سَأَلَ رَجُلٌ مِنْ بَنِي يَرْبُوْعٍ، أَوْ مِنْ بَنِي تَمِيْمٍ. عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ رضي الله عنه عَنِ ﴿الذَّارِيَاتِ وَالْمُرْسَلَاتِ وَالنَّازِعَاتِ﴾. أَوْ عَنْ بَعْضِهِنَّ، فَقَالَ عُمَرُ: ضَعْ عَنْ رَأْسِكَ، فَإِذَا لَهُ وَفْرَةٌ، فَقَالَ عُمَرُ رضي الله عنه: أَمَا وَاللهِ لَوْ رَأَيْتُكَ مَحْلُوقًا لَضَرَبْتُ الَّذِي فِيْهِ عَيْنَاكَ، ثُمَّ قَالَ: ثُمَّ كَتَبَ إِلَى أَهْلِ الْبَصْرَةِ أَوْ قَالَ إِلَيْنَا. أَنْ لَا تُجَالِسُوْهُ، قَالَ: فَلَوْ جَاءَ وَ نَحْنُ مِائَةٌ تَفَرَّقْنَا.

رَوَاهُ سَعِيْدُ بْنُ يَحْيَى الْأُمَوِيُّ وَغَيْرُهُ بِإِسْنَادٍ صَحِيْحٍ كَمَا قَالَ ابْنُ تَيْمِيَّةَ.

''हज़रत अबू उस्मान नहदी बयान करते हैं कि क़बीला बनी यर्बूअ या बनी तमीम के एक आदमी ने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब رضي الله عنه से पूछा कि '' الزَّارِيَاتِ وَالْمُرْسَلَاتِ وَالنَّازِعَاتِ ''

الحديث رقم ٤٦: أخرجه ابن أبي شيبة في المصنف، ٧ / ٥٥٥، الرقم: ٣٧٨٩٥، وعبد الله بن أحمد في السنة، ٢ / ٦٣٤، الرقم: ١٥٠٩.

الحديث رقم ٤٧: أخرجه ابن تيمية في الصارم المسلول، ١ / ١٩٥.

के क्या मा'ना हैं ? या उनमें से किसी एक के बारे में पूछा तो हज़रत उमर ﷺ ने फरमायाः अपने सर का कपड़ा उतारो, जब दिखाया तो उस के बाल कानों तक लम्बे थे । उन्होंने फरमायाः बाखुदा! अगर मैं तुम्हें सर मुंडा हुआ पाता तो तुम्हारा यह सर उड़ा देता जिस में तुम्हारी यह आँखें धंसी हुई हैं । शअबी कहते हैं फिर हज़रत उमर ﷺ ने अहले बसरा के नाम ख़त लिखवाया कहा कि हमें ख़त लिखा जिसमें तहरीर किया कि ऐसे शख़्स के पास न बैठा करो । रावी कहता है कि जब वो आता, हमारी ता'दाद एक सौ भी होती तो भी हम अलग अलग हो जाते थे ।''

١١٦/٤٨۔ عَنِ السَّائِبِ بْنِ يَزِيْدَ: قَالَ: فَبَيْنَمَا عُمَرُ رضي الله عنه ذَاتَ يَوْمٍ جَالِسًا يُغَدِّي النَّاسَ إِذَا جَاءَ رَجُلٌ عَلَيْهِ ثِيَابٌ وَ عِمَامَةٌ فَتَغَدَّى حَتَّى إِذَا فَرَغَ قَالَ: يَا أَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ، ﴿وَالذَّارِيَاتِ ذَرْوًا فَالْحَامِلَاتِ وِقْرًا﴾ فَقَالَ عُمَرُ رضي الله عنه: أَنْتَ هُوَ فَقَامَ إِلَيْهِ وَ حَسَرَ عَنْ ذِرَاعَيْهِ فَلَمْ يَزَلْ يَجْلِدُهُ حَتَّى سَقَطَتْ عِمَامَتُهُ، فَقَالَ: وَالَّذِي نَفْسُ عُمَرَ بِيَدِهِ، لَوْ وَجَدْتُكَ مَحْلُوْقًا لَضَرَبْتُ رَأْسَكَ. رَوَاهُ اللَّالْكَائِيُّ.

''हज़रत साइब बिन यज़ीद ने बयान किया कि एक दिन हज़रत उमर ﷺ लोगों के साथ बैठे दोपहर का खाना खा रहे थे उसी अस्ना में एक शख़्स आया उसने (आ'ला क़िस्म के) कपड़े पहन रखे थे और अमामा बाँधा हुआ था तो उसने भी दोपहर का खाना खाया जब फ़ारिग़ हुआ तो कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन ﴿وَالزَّارِيَاتِ ذَرْوًا فَالْحَامِلَاتِ وِقْرًا﴾ का क्या मा'ना है? हज़रत अ़ली ﷺ ने फरमायाः तू वही (गुस्ताख़े रसूल ﷺ) है । फिर उसकी तरफ़ बढ़े और अपने बाज़ू चढ़ा कर उसे इतने कोड़े मारे यहाँ तक कि उस का अमामा गिर गया । फिर फरमायाः उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्जए क़ुदरत में मेरी जान है, अगर मैं तुझे सर मुंडा पाता तो तेरा सर काट देता ।''

١١٧/٤٩۔ عَنْ أَبِي يَحْيَى قَالَ: سَمِعَ رَجُلًا مِنَ الْخَوَارِجِ وَهُوَ

الحديث رقم ٤٨: أخرجه اللالكائي في اعتقاد أهل السنة، ٤/٦٣٤، الرقم: ١١٣٦، والشوكاني في نيل الأوطار، ١/١٥٥، والعظيم آبادي في عون المعبود، ١١/١٦٦، وابن قدامة في المغني، ١/٦٥، ٩/٨.

الحديث رقم ٤٩: أخرجه ابن أبي شيبة في المصنف، ٧/٥٥٤، الرقم: ٣٧٨٩١.

يُصَلِّي صَلَاةَ الْفَجْرِ يَقُوْلُ: ﴿وَلَقَدْ أُوْحِيَ إِلَيْکَ وَإِلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِکَ لَئِنْ أَشْرَکْتَ لَيَحْبِطَنَّ عَمَلُکَ وَلَتَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِيْنَ﴾، [الزمر، ٣٩:٦٥]، قَالَ فَتَرَکَ سُوْرَتَهُ الَّتِي كَانَتْ فِيْهَا قَالَ: وَقَرَأَ ﴿فَاصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللهِ حَقٌّ وَلَا يَسْتَخِفَّنَّکَ الَّذِيْنَ لَا يُوْقِنُوْنَ﴾، [الروم، ٣٠:٦٠].

رَوَاهُ ابْنُ أَبِي شَيْبَةَ.

''अबू याह्या से मरवी है उन्होंने बयान किया कि एक ख़ारिजी ने सुबह की नमाज़ में यह आयत पढ़ी। 'और हक़ीक़त में आप की तरफ़ (यह) वही की गई है और उन (पैग़म्बरों) की तरह (भी) जो आप से पहले (मबऊस हुए) थे कि (ऐ इन्सान!) अगर तूने शिर्क किया तो यक़ीनन तेरा अ़मल बर्बाद हो जाएगा और तू ज़रूर नुक़सान उठाने वालों में से होगा।' मज़ीद बयान किया, फिर इस सूरत को छोड़ कर उसने दूसरी सूरत की यह आयत पढ़ डाली, ''फ़िर आप सब्र कीजिए, बेशक अल्लाह तआ़ला का वादा सच्चा है, जो लोग यक़ीन नहीं रखते कहीं आप को कमज़ोर ही ना कर दें।' (ख़वारिज) इन आयात को जानबूझ कर चुन–चुन कर नमाज़ में पढ़ते थे जिन से उन बदबख्तों के मा'ज़ल्लाह हुज़ूर ﷺ की शान में नुक़्श के कई शक पैदा होते थे। (यह उन की गुस्ताख़ियाँ और बदबख़्ती थी)।''

١١٨ / ٥٠. عَنْ أَبِي غَالِبٍ قَالَ: كُنْتُ فِي مَسْجِدِ دِمَشْقٍ فَجَاءُوا بِسَبْعِيْنَ رَأْسًا مِنْ رُؤُوْسِ الْحُرُوْرِيَّةِ فَنُصِبَتْ عَلَى دُرَجِ الْمَسْجِدِ، فَجَاءَ أَبُوْأُمَامَةَ رضي الله عنه فَنَظَرَ إِلَيْهِمْ فَقَالَ: كِلَابُ جَهَنَّمَ، شَرُّ قَتْلَى قُتِلُوْا تَحْتَ ظِلِّ السَّمَاءِ، وَ مَنْ قُتِلُوْا خَيْرُ قَتْلَى تَحْتَ السَّمَاءِ، وَ بَكَى فَنَظَرَ إِلَيَّ وَقَالَ: يَا أَبَا غَالِبٍ! إِنَّکَ مِنْ بَلَدِ هَؤُلَاءِ؟ قُلْتُ: نَعَمْ، قَالَ: أَعَاذَکَ، قَالَ: أَظُنُّهُ قَالَ: اللهُ مِنْهُمْ، قَالَ: تَقْرَأُ آلَ عِمْرَانَ؟ قُلْتُ: نَعَمْ، قَالَ: ﴿مِنْهُ آيَاتٌ

الحديث رقم ٥٠: أخرجه ابن أبي شيبة في المصنف، ٧/٥٥٤، الرقم: ٣٧٨٩٢، والبيهقي في السنن الكبرى، ٨/ ١٨٨، والطبراني في المعجم الكبير، ٨/٢٦٧-٢٦٨، الرقم: ٨٠٣٤-٨٠٣٥، والحارث في المسند، (زوائد الهيثمي)، ٢/٧١٦، الرقم: ٧٠٦.

مُحْكَمَاتٌ هُنَّ أُمُّ الْكِتَابِ وَ أُخَرُ مُتَشَابِهَاتٌ، فَأَمَّا الَّذِيْنَ فِي قُلُوْبِهِمْ زَيْغٌ فَيَتَّبِعُوْنَ مَا تَشَابَهَ مِنْهُ ابْتِغَاءَ الْفِتْنَةِ وَابْتِغَاءَ تَأْوِيْلِهِ وَمَا يَعْلَمُ تَأْوِيْلَهُ إِلَّا اللهُ، والرَّاسِخُونَ فِي الْعِلْمِ﴾، [آل عمران، ٣: ٧]، قَالَ: ﴿يَوْمَ تَبْيَضُّ وُجُوْهٌ وَّ تَسْوَدُّ وُجُوْهٌ فَأَمَّا الَّذِيْنَ اسْوَدَّتْ وُجُوْهُهُمْ أَكَفَرْتُمْ بَعْدَ إِيْمَانِكُمْ فَذُوْقُوْا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ﴾ [آل عمران، ٣: ١٠٦]، قُلْتُ: يَا أَبَا أُمَامَةَ! إِنِّي رَأَيْتُكَ تُهْرِيْقُ عِبْرَتَكَ قَالَ: نَعَمْ، رَحْمَةٌ لَهُمْ إِنَّهُمْ كَانُوْا مِنْ أَهْلِ الإِسْلَامِ، قَالَ: افْتَرَقَتْ بَنُو إِسْرَائِيْلَ عَلَى وَاحِدَةٍ وَ سَبْعِيْنَ فِرْقَةً، وَ تَزِيْدُ هَذِهِ الْأُمَّةُ فِرْقَةً وَاحِدَةً، كُلُّهَا فِي النَّارِ إِلَّا السَّوَادَ الْأَعْظَمَ، عَلَيْهِمْ مَا حُمِّلُوا وَعَلَيْكُمْ مَا حُمِّلْتُمْ، وَإِنْ تُطِيْعُوْهُ تَهْتَدُوْا، وَمَا عَلَى الرَّسُوْلِ إِلَّا الْبَلَاغُ، السَّمْعُ وَالطَّاعَةُ خَيْرٌ مِنَ الْفُرْقَةِ وَالْمَعْصِيَةِ، فَقَالَ لَهُ رَجُلٌ: يَا أَبَا أُمَامَةَ! أَمِنْ رَأْيِكَ تَقُوْلُ أَمْ شَيءٌ سَمِعْتَهُ مِنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ؟ قَالَ: إِنِّي إِذًا لَجَرِيءٌ قَالَ: بَلْ سَمِعْتُهُ مِنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ مَرَّةً وَلَا مَرَّتَيْنِ حَتَّى ذَكَرَ سَبْعًا. رَوَاهُ ابْنُ أَبِي شَيْبَةَ وَالْبَيْهَقِيُّ وَالطَّبَرَانِيُّ.

''अबू ग़ालिब से रिवायत है वो बयान करते हैं कि मैं मस्जिदे दिमश्क़ में था कि ख़ारिजियों के सत्तर सर दिमश्क़ में मस्जिद की सीढ़ियों पर नसब किए गए हज़रत अबू उमामा ﷺ ने उन की तरफ़ देख कर कहा की यह जहन्नुम के कुत्ते हैं और ज़ेरे आसमान तमाम मक़्तूलों से बदतर हैं और उनके हाथों से जो शहीद हुए वो ज़ेरे आसमान तमाम मक़्तूलों से बेहतर हैं, यह कहा और रो पड़े फिर मेरी तरफ़ देखा और पूछाः अबू ग़ालिब, क्या तू इस शहर से है, मैंने कहा : हाँ। उन्होंने कहाः अल्लाह तआला आपको उनसे महफ़ूज़ रखे उन्होंने कहा क्या तुम सूरह आले–इमरान पढ़ते हो? मैंने कहाः हाँ, फिर यह आयात, 'जिसमें से कुछ आयतें मोहकम (यानी ज़ाहिरन भी साफ़ और वाज़ेह मा'ने रखने वाली) हैं वही (अहकाम) किताब की बुनियाद हैं और दूसरी आयाते मुतशाबह (यानी मा'ने में कई एहतिमाल और इश्तिबाह रखने वाली) हैं, फिर वो लोग

जिन के दिलों में कजी (बुराई) है उस में से सिर्फ मुतशाबेहात की पैरवी करते हैं (फ़कत) फ़ितना परवरी की ख़्वाहिश के ज़ेरे असर और अस्ल मुराद की बजाए मन पसन्द मा'ने मुराद लेने की ग़रज़ से, और उस की अस्ल मुराद को अल्लाह तआला के सिवा कोई नहीं जानता, और अमल में कामिल पुख़्तगी रखने वाले।' और फरमाया 'जिस दिन कई चेहरे सफेद होंगे और कई चेहरे सियाह होंगे, तो जिन के चेहरे सियाह हो जाएंगे (उनसे कहा जाएगा) क्या तुम ने ईमान लाने के बाद कुफ्र किया? तो जो कुफ्र तुम करते रहे थे सो उसके अज़ाब (का मज़ा) चख लो।' मैंने कहा : अबू उमामा! मैं देखता हूँ कि आप रो रहे हैं ? उन्होंने कहाः हाँ, उन लोगों (ख़ारिजियों पर तरस खाते हुए क्योंकि (ख़ारिजी से पहले) अहले इस्लाम में से थे और कहा, क़ौमे बनी इस्राईल इकहत्तर फ़िरकों में बंट गई थी और यह उम्मत उन से एक फ़िरका बढ़ेगी (यानी बहत्तर फ़िरकों में बट जाएगी) और सवादे आज़म (जो सब से पड़ा तबक़ा है) उसको छोड़ कर बाक़ी सारे जहन्नुम में जाएंगे, वो उसके जवाब देह हैं जो जिम्मेदारी उन पर डाली गई और तुम उसके जवाबदेह हो जो जिम्मेदारी तुम पर डाली गई और अगर तुम रसूल नबी–ए–अकरम ﷺ की फरमाबरदारी करोगे तो हिदायत पा जाओगे और रसूले अकरम ﷺ के जिम्मे तो सिर्फ पहुँचा देना ही है और ग़ौर से (अहकामात को) सुनना और उन को बजा लाना तफ़्रिका और नाफरमानी से बहतर है। फिर (यह सुन कर) एक शख़्स ने कहाः ऐ अबू उमामा ! क्या आप अपनी तरफ़ से यह बातें कह रहे हो या उन में से कुछ आपने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ से सुनी हैं ? उन्होंने फरमायाः (अगर मैं अपनी तरफ़ से कहूँ) तब तो मैं बहुत बड़ी जसारत (हौसला) करने वाला हूँ नहीं बल्कि मैंने (यह बातें) एक या दो दफ़ा नहीं बल्कि सात बार (हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ से) सुनी हैं।''

बाब 3 : اَلْبَابُ الثَّالِثُ:

اَلْعِبَادَاتُ وَالْمَنَاسِكُ

इबादात और मनासिक

1. فَصْلٌ فِي فَضْلِ الصَّلَاةِ

﴿फ़ज़ीलते नमाज़ का बयान﴾

2. فَصْلٌ فِي الصَّلَوَاتِ الْمَكْتُوبَةِ

﴿फ़र्ज नमाज़ों का बयान﴾

3. فَصْلٌ فِي فَضْلِ السُّنَنِ وَالنَّوَافِلِ

﴿फ़ज़ीलते सुनन और नवाफ़िल का बयान﴾

4. فَصْلٌ فِي صِيَامِ رَمَضَانَ

﴿रमज़ानुल मुबारक के रोज़ों का बयान﴾

5. فَصْلٌ فِي صِيَامِ التَّطَوُّعِ

﴿नफ़्ल रोज़ों का बयान﴾

6. فَصْلٌ فِي فَضْلِ قِيَامِ رَمَضَانَ

﴿फ़ज़ीलते क़ियामे रमज़ान का बयान﴾

7. فَصْلٌ فِي فَضْلِ الاعْتِكَافِ

﴿फ़ज़ीलते ए'तिकाफ़ का बयान﴾

8. فَصْلٌ فِي الصَّدَقَةِ وَالزَّكَاةِ

﴿सदक़ा और ज़कात का बयान﴾

9. فَصْلٌ فِي الصَّدَقَةِ عَلَى الْأَهْلِ وَالْأَقَارِبِ

अइज़्ज़ा व अक़्रेबा पर सदक़ा करने का बयान

10. فَصْلٌ فِي الْحَجِّ وَالْعُمْرَةِ

हज और उमरह का बयान

11. فَصْلٌ فِي فَضَائِلِ مَكَّةَ الْمُكَرَّمَةِ

फ़ज़ाइले मक्का मुकर्रमा का बयान

11. فَصْلٌ فِي فَضَائِلِ الْمَدِيْنَةِ الْمُنَوَّرَةِ

फ़ज़ाइले मदीना मुनव्वरा का बयान

فَصْلٌ فِي فَضْلِ الصَّلَاةِ

फ़ज़ीलते नमाज़ का बयान

١١٩ / ١ـ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رضي الله عنه قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وآله وسلم: فَرَضَ اللهُ عزوجل عَلَى أُمَّتِي خَمْسِيْنَ صَلَاةً، فَرَجَعْتُ بِذَلِكَ، حَتَّى مَرَرْتُ عَلَى مُوْسَى، فَقَالَ: مَا فَرَضَ اللهُ لَكَ عَلَى أُمَّتِكَ؟ قُلْتُ: فَرَضَ خَمْسِيْنَ صَلَاةً، قَالَ: فَارْجِعْ إِلَى رَبِّكَ، فَإِنَّ أُمَّتَكَ لَا تُطِيْقُ ذَلِكَ، فَرَاجَعَنِي فَوَضَعَ شَطْرَهَا، فَرَجَعْتُ إِلَى مُوْسَى، قُلْتُ: وَضَعَ شَطْرَهَا، فَقَالَ: رَاجِعْ رَبَّكَ، فَإِنَّ أُمَّتَكَ لَا تُطِيْقُ، فَرَاجَعْتُ فَوَضَعَ شَطْرَهَا، فَرَجَعْتُ إِلَيْهِ، فَقَالَ: ارْجِعْ إِلَى رَبِّكَ، فَإِنَّ أُمَّتَكَ لَا تُطِيْقُ ذَلِكَ، فَرَاجَعْتُهُ، فَقَالَ: هِيَ خَمْسٌ وَهِيَ خَمْسُوْنَ، لَا يُبَدَّلُ الْقَوْلُ لَدَيَّ، فَرَجَعْتُ إِلَى مُوْسَى، فَقَالَ: رَاجِعْ رَبَّكَ، فَقُلْتُ: اسْتَحْيَيْتُ مِنْ رَبِّي ثُمَّ انْطَلَقَ بِي حَتَّى انْتَهَى بِي إِلَى سِدْرَةِ الْمُنْتَهَى وَغَشِيَهَا أَلْوَانٌ لَا أَدْرِي مَا هِيَ، ثُمَّ أُدْخِلْتُ

الحديث رقم ١: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: الصلاة، باب: كيف فرضت الصلوة في الإسراء، ١ / ١٣٦، الرقم: ٣٤٢، وفي كتاب: الأنبياء، باب: ذكر إدريس وهو جد أبي نوح ويقال جد نوح عليهما السلام، ٣ / ١٢١٧، الرقم: ٣١٦٤، ومسلم في الصحيح، كتاب الإيمان، باب الإسراء برسول الله صلى الله عليه وآله وسلم إلى السماوات وفرض الصلوات، ١ / ١٤٨، الرقم: ١٦٣، والنسائي في السنن، كتاب: الصلاة، باب: فرض الصلاة، ١ / ٢٢١، الرقم: ٤٤٩، وابن ماجه في السنن، كتاب: إقامة الصلاة والسنة فيها، باب: ماجاء في فرض الصلوات الخمس والمحافظة عليها، ١ / ٤٤٨، الرقم: ١٣٩٩، وأحمد بن حنبل في المسند، ٥ / ١٤٣، الرقم: ٢١٣٢٦، وابن حبان في الصحيح، ١٦ / ٤٢١، الرقم: ٧٤٠٦، والبيهقي في السنن الصغرى، ١ / ١٩١، الرقم: ٢٥٧، وابن منده في الإيمان، ٢ / ٧٢١، الرقم: ٧١٤، وأبو عوانة في المسند، ١ / ١١٩، الرقم: ٣٥٤.

الْجَنَّةَ، فَإِذَا فِيهَا حَبَائِلُ اللُّؤْلُؤِ، وإِذَا تُرَابُهَا الْمِسْكُ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमायाः (शबे मे'राज) अल्लाह तआला ने मेरी उम्मत पर पचास नमाज़ें फ़र्ज़ कीं तो मैं उन (नमाज़ों) के साथ वापस आया यहाँ तक कि मैं हज़रत ईसा ﷺ के पास से गुज़रा तो उन्होंने कहा कि अल्लाह तआला ने आप की उम्मत के लिए क्या फ़र्ज़ किया है? मैंने कहाः अल्लाह तआला ने पचास नमाज़ें फ़र्ज़ की हैं, उन्होंने कहा कि अपने रब की तरफ़ वापस जाएं क्योंकि आप की उम्मत इसकी ताक़त नहीं रखती, फिर उन्होंने मुझे वापस लौटा दिया (मेरी दरख़्वास्त पर) अल्लाह तआला ने उनका एक हिस्सा कम कर दिया। मैं हज़रत मूसा ﷺ की तरफ़ वापस गया और कहा कि अल्लाह तआला ने एक हिस्सा कम कर दिया है, उन्होंने कहाः अपने रब की तरफ़ वापस जाएं क्योंकि आपकी उम्मत में इनकी ताक़त नहीं है, फिर मैं वापस गया तो अल्लाह तआला ने उन का एक हिस्सा कम कर दिया, मैं उन की तरफ़ आया तो उन्होंने फिर कहा कि अपने रब की तरफ़ जाएं क्योंकि आप की उम्मत में इन की ताकत भी नहीं है मैं वापस लौटा तो (अल्लाह तआला ने) फरमाया, यह ज़ाहिरन पाँच (नमाज़ें) हैं और (सवाब के ऐतबार से) पचास (के बराबर) हैं मेरे नज़दीक बात तबदील नहीं हुआ करती। मैं हज़रत मूसा ﷺ के पास आया तो उन्होंने कहाः अपने रब की तरफ़ जाएं (और मज़ीद कमी के लिए दरख़्वास्त करें) मैंने कहाः मुझे अब अपने रब से हया आती है। फिर (जिब्राईल ﷺ) मुझे ले कर चले, यहाँ तक कि सिदरतुल–मुन्तहा पर पहुँचे जिसे मुख़्तलिफ़ रंगों ने ढाँप रखा था, नहीं मालूम कि वो क्या है? फिर मुझे जन्नत मैं दाख़िल किया गया जिसमें मोतियों के हार हैं और उसकी मिट्टी मुश्क है।''

١٢٠ / ٢. عَنْ عُثْمَانَ ابْنِ عَفَّانَ ﷺ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: مَنْ عَلِمَ أَنَّ الصَّلَاةَ حَقٌّ وَاجِبٌ دَخَلَ الْجَنَّةَ. رَوَاهُ الْحَاكِمُ وَالْبَيْهَقِيُّ.

الحديث رقم ٢: أخرجه أحمد بن حنبل فى المسند، ١/ ٦٠، الرقم:٤٢٣، والحاكم فى المستدرك، ١/ ١٤٤، الرقم:٢٤٣، والبيهقى فى السنن الكبرى، ١/ ٣٥٨، الرقم: ١٥٦٢، والبزار فى المسند، ٢/ ٨٧، الرقم:٤٣٩، والبيهقى فى شعب الإيمان، ٣/ ٤٠، الرقم:٢٨٠٨، وعبد بن حميد في المسند، ١/ ٤٧، الرقم: ٤٩، والهيثمي في مجمع الزوائد، ١/ ٢٨٨.

''हज़रत उस्मान इब्न अफ़्फ़ान ﷺ से रिवायत है वो फरमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फरमाया : जिसने यक़ीन कर लिया कि नमाज़ हक़ है और (हम पर) फ़र्ज़ है तो वो जन्नत में दाख़िल होगा।''

١٢١ / ٣۔ عَنْ أَبِي أُمَامَةَ ﷺ يَقُوْلُ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَخْطُبُ فِي حَجَّةِ الْوَدَاعِ فَقَالَ: اتَّقُوا اللهَ رَبَّكُمْ وَصَلُّوْا خَمْسَكُمْ وَصُوْمُوْا شَهْرَكُمْ وَ أَدُّوْا زَكَاةَ أَمْوَالِكُمْ وَ أَطِيْعُوْا ذَا أَمْرِكُمْ تَدْخُلُوْا جَنَّةَ رَبِّكُمْ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَحْمَدُ وَابْنُ خُزَيْمَةَ وَالْحَاكِمُ.

وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: هٰذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत अबू उमामा ﷺ रिवायत फरमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से सुनाः आप ﷺ ने हज्जतुल विदा के मौक़े पर ख़ुत्बा करते हुए फरमायाः अपने रब से डरो, अपनी पाँचों नमाज़ें अदा करते रहो और अपने महीने (रमज़ान) के रोज़े रखा करो और अपने मालों की ज़कात दिया करो और अपने ऊलुल–अम्र (साहिबे हुक्म) की इताअत करो तो तुम (इसके बदले में) अपने परवरदिगार की जन्नत में दाख़िल हो जाओगे।''

١٢٢ / ٤۔ عَنْ أَبِي أُمَامَةَ ﷺ يَقُوْلُ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: أَيُّهَا النَّاسُ، إِنَّهُ لَا نَبِيَّ بَعْدِي وَلَا أُمَّةَ بَعْدَكُمْ أَلاَ فَاعْبُدُوْا رَبَّكُمْ وَصَلُّوْا

الحديث رقم ٣: أخرجه الترمذي في السنن، كتاب: الجمعة عن رسول الله ﷺ، باب: منه (٤٣٤)، ٢/٥١٦، الرقم: ٦١٦، وأحمد بن حنبل في المسند، ٥/٢٥١، الرقم: ٢٢٢١٥، ٢٢٣١٢، وابن خزيمة في الصحيح، ٤/١٢، والحاكم في المستدرك، ١/٥٢، ٥٤٧، الرقم: ١٩، ١٤٣٦، وقال: هذا حديث صحيح وسائر رواته متفق عليهم، والطبراني في المعجم الكبير، ٨/١٥٤، الرقم: ٧٦٦٤، والبيهقي في شعب الإيمان، ٦/٥، الرقم: ٧٣٤٨، والمقدسي في الأحاديث المختارة، ٥/٦٤، الرقم: ١٦٨٧.

الحديث رقم ٤: أخرجه الطبراني في المعجم الكبير، ٨/١١٥، الرقم: ٧٥٣٥، وفي مسند الشامين، ٢/١٦، الرقم: ٨٣٤، وابن أبي عاصم في السنة، ٢/٥٠٥، الرقم: ١٠٦١.

خَمْسَكُمْ وَصُوْمُوْا شَهْرَكُمْ وَأَدُّوْا زَكَاةَ أَمْوَالِكُمْ طِيْبَةً بِهَا أَنْفُسِكُمْ وَأَطِيْعُوْا وُلَاةَ أَمْرِكُمْ تَدْخُلُوْا جَنَّةَ رَبِّكُمْ. رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ وَابْنُ أَبِي عَاصِمٍ.

''हज़रत अबू उमामा ﷺ से मरवी है फरमाते हैं कि मैंने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ से सुना, आप ﷺ ने फरमायाः ऐ लोगो ! जान लो कि मेरे बाद कोई नबी नहीं और न ही तुम्हारे बाद कोई और उम्मत है। ख़बरदार! सिर्फ अपने रब की ही इबादत करो, और अपनी पाँच (फ़र्ज़) नमाज़ें अदा करो, और अपने माह (रमज़ान) के रोज़े रखो, दिली रज़ामन्दी के साथ अपने मालों की ज़कात अदा करो और अपने (इंसाफ करने वाले) हुक्मरानों की इताअत करो, तो तुम अपने रब की जन्नत में दाख़िल हो जाओगे।''

١٢٣ / ٥. عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ ﷺ قَالَ: إِنِّي سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: خَمْسُ صَلَوَاتٍ افْتَرَضَهُنَّ اللهُ تَعَالَى عَلَى عِبَادِهِ مَنْ أَحْسَنَ وُضُوْءَهُنَّ وَصَلَّاهُنَّ لِوَقْتِهِنَّ وَأَتَمَّ رُكُوْعَهُنَّ وَسُجُوْدَهُنَّ وَخُشُوْعَهُنَّ كَانَ لَهُ عَلَى اللهِ عَهْدٌ أَنْ يَغْفِرَ لَهُ وَمَنْ لَمْ يَفْعَلْ فَلَيْسَ لَهُ عِنْدَ اللهِ عَهْدٌ إِنْ شَاءَ غَفَرَلَهُ وَ إِنْ شَاءَ عَذَّبَهُ.

رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ وَأَحْمَدُ وَالْبَيْهَقِيُّ وَالطَّبَرَانِيُّ.

''हज़रत उबादा बिन सामत ﷺ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से सुनाः आप ﷺ ने फरमायाः पाँच नमाज़ें हैं, जिनको अल्लाह तआला ने अपने बन्दों पर फ़र्ज़ क़रार दिया है, जिसने उन नमाज़ों को बेहतरीन वुज़ू के साथ उन के मुक़र्रर किए गए वक़्त पर अदा किया और उन नमाज़ों को रुकूअ, सजूद और कामिल खुशूअ से अदा किया तो ऐसे शख़्स से अल्लाह तआला का वादा है कि उसकी मग़फ़िरत फरमा दे और जिस ने ऐसा नहीं किया

الحديث رقم ٥: أخرجه أبوداود في السنن، كتاب: الصلاة، باب: في المحافظة على وقت الصلوات، ١ / ١١٥، الرقم: ٤٢٥، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٥ / ٣١٧، الرقم: ٢٢٧٥٦، والطبرانى في المجعم الأوسط، ٥ / ٥٦، الرقم: ٤٦٥٨، ٩ / ١٢٦، الرقم: ٩٣١٥، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٣ / ٣٦٦، الرقم: ٦٢٩٢، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ١ / ١٤٨، الرقم: ٥٤٦.

(यानी नमाज़ ही न पढ़ी या नमाज़ को अच्छी तरह न पढ़ा) तो ऐसे शख़्स के लिए अल्लाह तआला का कोई वादा नहीं है, अगर चाहे तो उसकी मग़फ़िरत फरमा दे और चाहे तो उसको अज़ाब दे।''

١٢٤ / ٦۔ عَنْ أَبِي ذَرٍّ ﷺ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ خَرَجَ زَمَنَ الشِّتَاءِ وَالْوَرَقُ يَتَهَافَتُ فَأَخَذَ بِغُصْنَيْنِ مِنْ شَجَرَةٍ قَالَ: فَجَعَلَ ذَلِکَ الْوَرَقُ يَتَهَافَتُ قَالَ: فَقَالَ: يَا أَبَا ذَرٍّ قُلْتُ: لَبَّيْکَ يَا رَسُوْلَ اللهِ، قَالَ: إِنَّ الْعَبْدَ الْمُسْلِمَ لَيُصَلِّ الصَّلَاةَ يُرِيْدُ بِهَا وَجْهَ اللهِ فَتَهَافَتُ عَنْهُ ذُنُوْبُهُ کَمَا يَتَهَافَتُ هَذَا الْوَرَقُ عَنْ هَذِهِ الشَّجَرَةِ. رَوَاهُ أَحْمَدُ إِسْنَادُهُ حَسَنٌ.

''हज़रत अबूज़र ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ सरमा (सर्दी) के मौसम में जब पत्ते (दरख़्तों से) गिर रहे थे बाहर निकले, आप ﷺ ने एक दरख़्त की दो शाखों को पकड़ लिया, अबू ज़र ﷺ फरमाते हैं शाख़ से पत्ते गिरने लगे। रावी कहते हैं, हुज़ूर ﷺ ने पुकाराः ऐ अबू ज़र!, मैंने अर्ज़ कियाः लब्बैक या रसूलल्लाह! हुज़ूर ﷺ ने फरमायाः मुसलमान बन्दा जब नमाज़ इस मक़सद से पढ़ता है कि उसे अल्लाह तआला की रज़ामन्दी हासिल हो जाए तो उसके गुनाह इसी तरह झड़ जाते हैं जिस तरह यह पत्ते दरख़्त से झड़ते जा रहे हैं।''

١٢٥ / ٧۔ عَنِ الْحَسَنِ ﷺ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: لِلْمُصَلِّي ثَلَاثُ خِصَالٍ تَتَنَاثَرُ الرَّحْمَةُ عَلَيْهِ مِنْ قَدَمِهِ إِلَى عِنَانِ السَّمَاءِ وَتَحُفُّ بِهِ الْمَلَائِكَةُ مِنْ قَرْنِهِ إِلَى أَعْنَانِ السَّمَاءِ وَيُنَادِي مُنَادٍ لَوْ عَلِمَ الْمُنَاجِي مَنْ يُنَاجِي مَا انْفَتَلَ. رَوَاهُ عَبْدُ الرَّزَّاقِ.

الحديث رقم ٦: أخرجه أحمد بن حنبل فى المسند، ٥ / ١٧٩، الرقم: ٢١٥٩٦، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ١ / ١٥١، الرقم: ٥٦٠، وقال: رواه أحمد بإسناد حسن.

الحديث رقم ٧: أخرجه عبد الرزاق فى المصنف، ١ / ٤٩، الرقم: ١٥٠، والمروزي في تعظيم قدر الصلاة، ١ / ١٩٩، الرقم: ١٦٠، والمناوي في فيض القدير، ٥ / ٢٩٢۔

''हज़रत हसन ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : नमाज़ी के लिए तीन ख़सलतें (आदतें) हैं (एक) यह कि उसके दोनों क़दमों से ले कर सर तक रहमते इलाही नाज़िल होती रहती है और दूसरा यह कि मलाइका उसे उस के दोनों क़दमों से लेकर आसमान तक घेरे हुए रहते हैं और (तीसरा) यह कि निदा करने वाला निदा करता है कि अगर मुनाजात करने वाला (यानी नमाज़ पढ़ने वाला) यह जान लेता कि वो किस से राज़ व नियाज़ की बातें कर रहा है तो वो नमाज़ से कभी वापस न पलटता।''

١٢٦/٨۔ عَنْ حُمْرَانَ بْنِ أَبَانَ ﷺ قَالَ: كُنَّا عِنْدَ عُثْمَانَ بْنِ عَفَّانَ ﷺ فَدَعَا بِمَاءٍ فَتَوَضَّأَ فَلَمَّا فَرَغَ مِنْ وُضُوْئِهِ تَبَسَّمَ، فَقَالَ: هَلْ تَدْرُوْنَ مِمَّا ضَحِكْتُ؟ قَالَ: فَقَالَ: تَوَضَّأَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ، كَمَا تَوَضَّأْتُ، ثُمَّ تَبَسَّمَ ثُمَّ قَالَ: هَلْ تَدْرُوْنَ مِمَّا ضَحِكْتُ قَالَ: قُلْنَا: اللهُ وَرَسُوْلُهُ أَعْلَمُ، قَالَ: إِنَّ الْعَبْدَ إِذَا تَوَضَّأَ فَأَتَمَّ وُضُوْءَهُ، ثُمَّ دَخَلَ فِي صَلَاتِهِ فَأَتَمَّ صَلَاتَهُ خَرَجَ مِنْ صَلَاتِهِ كَمَا خَرَجَ مِنْ بَطْنِ أُمِّهِ مِنَ الذُّنُوبِ.

رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالْبَزَّارُ.

''हज़रत हुमरान बिन अबान ﷺ बयान करते हैं कि हम हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर थे तो आप ﷺ ने पानी तलब किया और फिर वुज़ू किया जब आप वुज़ू से फ़ारिग़ हुए तो आप मुस्कुराए और पूछा कि क्या तुम जानते हो कि मैं किस वजह से मुस्कुराया हूँ? तो फिर आप ने ख़ुद ही फरमायाः एक मर्तबा हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने वुज़ू फरमाया जिस तरह मैंने वुज़ू किया है और फिर आप ﷺ मुस्कुराए और पूछाः क्या तुम जानते हो कि मैं किस वजह से मुस्कुराया हूँ? तो हम ने जवाब दियाः अल्लाह तआला और उसका रसूल ﷺ ही बेहतर जानते हैं। तो आप ﷺ ने फरमायाः जब बन्दा बड़े एहतिमाम के साथ वुज़ू मुकम्मल करता है और फिर नमाज़ पढ़ता है और नमाज़ को भी बड़े एहतिमाम के साथ मुकम्मल करता है तो जब वो नमाज़ से फ़ारिग़ होता है तो वो इस तरह गुनाहों से पाक होता है गोया कि वो

الحديث رقم ٨: أخرجه أحمد بن حنبل فى المسند، ١/٦١، الرقم:٤٠٣، والبزار في المسند، ٢/٨٣، الرقم:٤٣٥، وعبد بن حميد فى المسند، ١/٤٩، الرقم:٥٩، والحسيني في البيان والتعريف، ١/٢٠٩، الرقم: ٥٤٢۔

अपनी माँ के बतन (पेट) से अभी पैदा हुआ है।''

١٢٧ / ٩۔ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رضي الله عنه عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وآله وسلم قَالَ: أَوَّلُ مَا يُحَاسَبُ بِه الْعَبْدُ الصَّلَاةُ، فَإِنْ صَلَحَتْ صَلَحَ سَائِرُ عَمَلِهِ، وَ إِنْ فَسَدَتْ فَسَدَ سَائِرُ عَمَلِهِ. رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ.

''हज़रत अनस बिन मालिक रضي الله عنه ने हुज़ूर नबी–ए–अकरम صلى الله عليه وآله وسلم से रिवायत की, आप صلى الله عليه وآله وسلم ने फरमायाः यक़ीनन पहली चीज़ जिसका हिसाब बन्दे से लिया जाएगा वो नमाज़ है फिर अगर नमाज़ दुरुस्त होगी तो बन्दे के जुम्ला आमाल दुरुस्त होंगे और अगर नमाज़ दुरुस्त न होगी तो दूसरे तमाम आमाल भी दुरुस्त नहीं होंगे।''

١٢٨ / ١٠۔ عَنْ أَبِي عُثْمَانَ النَّهْدِيِّ رضي الله عنه قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صلى الله عليه وآله وسلم: إِنَّ الْمُسْلِمَ لَيُصَلِّي وَخَطَايَاهُ مَوْضُوْعَةٌ عَلَى رَأْسِهِ، فَكُلَّمَا سَجَدَ تَحَاتَتْ فَيَفْرُغُ عَنْهُ، حِيْنَ يَفْرُغُ مِنْ صَلَاتِهِ، وَقَدْ تَحَاتَتْ خَطَايَاهُ.

رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ وَالْبَيْهَقِيُّ.

''हज़रत अबू उस्मान नोहदी رضي الله عنه से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह صلى الله عليه وآله وسلم ने फरमाया : बेशक मुसलमान नमाज़ पढ़ता है और उसके गुनाह उसके सर पर धरे रहते हैं फिर जिस वक़्त वो सज्दा करता है तो उसके गुनाह झड़ते चले जाते हैं और जब वो नमाज़ से

الحديث رقم ٩: أخرجه الطبرانى فى المعجم الأوسط، ٢ / ٢٤٠، الرقم: ١٨٥٩، والطيالسى في المسند، ١ / ١٠٦، الرقم: ٧٨٨، والمقدسي في الأحاديث المختارة، ٧ / ١٤٥، الرقم: ٢٥٧٩، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ١ / ١٥٠، الرقم: ٥٥١، والهيثمى فى مجمع الزوائد، ١ / ٢٩٢۔

الحديث رقم ١٠: أخرجه الطبراني في المعجم الصغير، ٢ / ٢٧٢، الرقم: ١١٥٣، وفي المعجم الكبير، ٦ / ٢٥٠، الرقم: ٦١٢٥، والبيهقى فى شعب الإيمان، ٣ / ١٤٥، الرقم: ٣١٤٤، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ١ / ١٤٥، الرقم: ٥٣٣، والخطيب البغدادى فى تاريخ بغداد، ١٤ / ٣١٣، الرقم: ٧٦٣٤، والهيثمي في مجمع الزوائد، ١ / ٣٠٠۔

फ़ारिग़ होता है तो उसकी हालत ऐसी हो जाती है कि उसके तमाम गुनाह उससे झड़ चुके होते हैं।''

١٢٩ / ١١۔ عَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ جَدِّهِ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مُرُوْا أَوْلَادَكُمْ بِالصَّلَاةِ وَهُمْ أَبْنَاءُ سَبْعِ سِنِيْنَ، وَاضْرِبُوْهُمْ عَلَيْهَا وَهُمْ أَبْنَاءُ عَشْرٍ، وَفَرِّقُوْا بَيْنَهُمْ فِي الْمَضَاجِعِ.

رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ وَأَحْمَدُ.

وفي رواية: عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ الرَّبِيعِ بْنِ سَبْرَةَ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ جَدِّهِ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: عَلِّمُوا الصَّبِيَّ الصَّلَاةَ ابْنَ سَبْعِ سِنِيْنَ وَاضْرِبُوْهُ عَلَيْهَا ابْنَ عَشْرٍ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُوْدَاوُدَ.

وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत अम्र बिन शुऐब ﷺ बवास्ता वालिद अपने दादा से रिवायत करते हैं उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमायाः तुम अपनी औलाद को जब वो सात साल के हो जाएं तो नमाज़ का हुक्म किया करो और जब वो दस साल की उम्र को पहुँच जाए तो नमाज़ की पाबन्दी न करने पर उन्हें मारा करो और उन के सोने की जगह अलग–अलग कर दो।''

''और एक रिवायत में अ़ब्दुल मालिक बिन रबीअ बिन सबरा बवास्ता अपने वालिद अपने दादा से रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः सात साल के बच्चे को नमाज़ सिखाओ और दस साल के बच्चे को नमाज़ (न पढ़ने) पर सजा दो।''

الحديث رقم ١١: أخرجه الترمذي في السنن، كتاب: الصلاة عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء متى يؤمر الصبي بالصلاة، ٢/٢٥٩، الرقم: ٤٠٧، وأبوداود في السنن، كتاب: الصلاة، باب: متى يؤمر الغلام بالصلاة، ١/١٣٣، الرقم: ٤٩٤-٤٩٥، وأحمد بن حنبل في المسند، ٢/١٨٧، والحاكم في المستدرك، ١/٣١١، الرقم: ٧٠٨، والدارقطني في السنن، ١/٢٣٠، الرقم: ١-٣، وابن خزيمة في الصحيح، ٢/١٠٢، الرقم: ١٠٠٢، والدارمي في السن، ١/٣٩٣، الرقم: ١٤٣١، والبيهقي في السنن الكبرى، ٢/٢٢٨- ٢٢٩، الرقم: ٣٠٥٠-٣٠٥٢، وفي شعب الإيمان، ٦/٣٩٨، الرقم: ٨٦٥٠، والطبراني في المعجم الكبير، ٧/١١٥، الرقم: ٦٥٤٦۔

فَصْلٌ فِي الصَّلَوَاتِ الْمَكْتُوْبَةِ

﴾फ़र्ज़ नमाज़ों का बयान﴿

١٣٠ / ١٢۔ عَنِ ابْنِ مَسْعُوْدٍ رضي الله عنه قَالَ: سَأَلْتُ النَّبِيَّ صلى الله عليه وآله وسلم: أَيُّ الْأَعْمَالِ أَحَبُّ إِلَى اللهِ تَعَالَى؟ قَالَ: الصَّلَاةُ عَلَى وَقْتِهَا. قُلْتُ: ثُمَّ أَيٌّ؟ قَالَ: بِرُّ الْوَالِدَيْنِ. قُلْتُ: ثُمَّ أَيٌّ؟ قَالَ: الْجِهَادُ فِي سَبِيْلِ اللهِ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रضي الله عنه रिवायत करते हैं कि मैंने हुज़ूर नबी–ए–अकरम صلى الله عليه وآله وسلم से अर्ज़ किया: अल्लाह तआला के यहाँ कौनसा अमल सबसे ज़्यादा महबूब है? फरमाया: वक़्ते मुक़र्ररा पर नमाज़ अदा करना। मैंने अर्ज़ किया: फिर कौनसा? फरमाया: वालिदैन के साथ नेक सुलूक करना। मैंने अर्ज़ किया फिर कौनसा? फरमाया: अल्लाह तआला की राह में जिहाद करना।''

١٣١ / ١٣۔ عَنْ جَابِرٍ رضي الله عنه، قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صلى الله عليه وآله وسلم: بَيْنَ الْعَبْدِ وَبَيْنَ الْكُفْرِ تَرْكُ الصَّلَاةِ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَالتِّرْمِذِيُّ وَاللَّفْظُ لَهُ.

الحديث رقم ١٢: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: مواقيت الصلاة، باب: فضل الصلاة لوقتها، ١ / ١٩٧، الرقم: ٥٠٤، ومسلم فى الصحيح، كتاب: الإيمان، باب: بيان كون الإيمان بالله تعالى أفضل الأعمال، ١ / ٨٩، الرقم: ٨٥، والترمذي مثله فى السنن، كتاب: الصلاة عن رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم، باب: ما جاء فى الوقت الأول من الفضل، ١ / ٣٢٥، الرقم: ١٧٣، والنسائى فى السنن، كتاب: المواقيت، باب: فضل الصلاة لمواقيتها، ١ / ٢٩٢، الرقم: ٦١١۔

الحديث رقم ١٣: أخرجه مسلم فى الصحيح، كتاب: الإيمان، باب: بيان إسم الكفر على من ترك الصلاة، ١ / ٨٨، الرقم: ٨٢، ولفظه: (بَيْنَ الرَّجُلِ وَ بَيْنَ الشِّرْكِ وَ الْكُفْرِ تَرْكُ الصَّلَاةِ)، والترمذي فى السنن، كتاب: الإيمان عن رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم، باب: ما جاء فى ترك الصلاة، ٥ / ١٣، الرقم: ٢٦٢٠، وأبو داود فى السنن، كتاب: السنة، باب: فى ردّ الإرجاء، ٤ / ٢١٩، الرقم ٢: ٤٦٧٨، والنسائى فى السنن، كتاب: الصلاة، باب: الحكم فى تارك الصلاة، ١ / ٢٣١، الرقم: ٤٦٣، وابن ماجه فى السنن، كتاب: إقامة الصلاة والسنة فيها، باب: ما جاء فى من ترك الصلاة، ١ / ٣٤٢، الرقم: ١٠٧٨۔

وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत जाबिर ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमायाः इन्सान और उसके कुफ्र के दरमियान फ़र्क (सिर्फ) नमाज़ का छोड़ना है।''

١٣٢ / ١٤. عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: الصَّلَوَاتُ الْخَمْسُ، وَالْجُمُعَةُ إِلَى الْجُمُعَةِ، وَرَمَضَانُ إِلَى رَمَضَانَ، مُكَفِّرَاتٌ لِمَا بَيْنَهُنَّ إِذَا اجْتَنَبَ الْكَبَائِرَ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَالتِّرْمِذِيُّ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः पाँचों नमाज़ें और जुम्आ अगले जुम्आ तक और रमज़ान अगले रमज़ान तक सब दरमियानी अ़र्से के लिए गुनाहों का कफ़्फ़ारा हो जाते हैं जबकि इस दौरान इन्सान कबीरा गुनाहों से बचा रहे।''

١٣٣ / ١٥. عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: أَرَأَيْتُمْ لَوْ أَنَّ نَهْرًا بِبَابِ أَحَدِكُمْ يَغْتَسِلُ مِنْهُ كُلَّ يَوْمٍ خَمْسَ مَرَّاتٍ، هَلْ يَبْقَى مِنْ دَرَنِهِ شَيْءٌ؟ قَالُوْا: لَا يَبْقَى مِنْ دَرَنِهِ شَيْءٌ. قَالَ: فَذَلِكَ مَثَلُ الصَّلَوَاتِ

الحديث رقم ١٤: أخرجه مسلم في الصحيح، كتاب: الطهارة، باب: الصلوات الخمس والجمعة إلى الجمعة ورمضان إلى رمضان مكفرات لما بينهن ما اجتنبت الكبائر، ١ / ٢٠٩، الرقم: ٢٣٣، والترمذي في السنن، كتاب: الطهارة عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء في فضل الصلوات الخمس، ١ / ٤١٨، الرقم: ٢١٤، وابن ماجه في السنن، كتاب: الطهارة وسننها، باب: تحت كل شعرة جنابة، ١ / ١٩٦، الرقم: ٥٩٨، وأحمد بن حنبل في المسند، ٢ / ٣٥٩، الرقم: ٨٧٠٠، وابن حبان في الصحيح، ٥ / ٢٤، الرقم: ١٧٣٣، والحاكم في المستدرك، ١ / ٢٠٧، الرقم: ٤١٢.

الحديث رقم ١٥: أخرجه مسلم في السنن، كتاب: المساجد، باب: المشي إلى الصلاة تُمحَى به الخطايا وتُرْفَعُ بِهِ الدرجات، ١ / ٤٦٢، الرقم: ٦٦٧، والترمذي في السنن، كتاب: الأمثال عن رسول الله ﷺ، باب: مثل الصلوات الخمس، ٥ / ١٥١، الرقم: ٢٨٦٨، والنسائي في السنن، كتاب: الصلاة، باب: فضل الصلوات الخمس، ١ / ٢٣٠، الرقم: ٤٦٢، وابن ماجه في السنن، كتاب: إقامة الصلاة والسنة فيها، باب: ماجاء في أن الصلاة كفارة، ١ / ٤٤٧، الرقم: ١٣٩٧، والنسائي في السنن الكبرى، ١ / ١٤٣، الرقم: ٣٢٣، وابن خزيمة في الصحيح، ←

الْخَمْسِ. يَمْحُو اللهُ بِهِنَّ الْخَطَايَا. رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَالتِّرْمِذِيُّ.

وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः बताओ ! अगर तुम में से किसी के दरवाज़े पर एक दरिया हो जिस में वो हर रोज़ पाँच बार गुस्ल करे तो क्या उस (के बदन) पर कुछ मैल बाक़ी रहेगा? सहाबा किराम ﷺ ने अर्ज़ कियाः उस (के बदन) पर बिल्कुल मैल बाक़ी नहीं रहेगा। आप ﷺ ने फरमायाः पाँच नमाज़ों की मिसाल भी ऐसी है, अल्लाह तआला उनके सबब (बन्दे के सारे) गुनाह मिटा देता है।''

١٣٤ / ١٦. عَنْ بُرَيْدَةَ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: الْعَهْدُ الَّذِي بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمُ الصَّلَاةُ، فَمَنْ تَرَكَهَا فَقَدْ كَفَرَ.

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَه.

وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ.

وفي رواية: عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ شَقِيْقٍ الْعُقَيْلِيِّ، قَالَ: كَانَ أَصْحَابُ

.... ١ / ١٦٠، الرقم: ٣١٠، وابن حبان في الصحيح، ٥ / ١٤، الرقم: ١٧٢٦، والدارمي في السنن، كتاب: الصلاة، باب: في فضل الصلوات، ١ / ٢٨٣، الرقم: ١١٨٢-١١٨٣، وأحمد بن حنبل في المسند، ١ / ٧١، الرقم: ٥١٨، ٨٩١١.

الحديث رقم ١٦: أخرجه الترمذي في السنن، كتاب: الإيمان عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء في ترك الصّلاة، ٥ / ١٣، الرقم: ٢٦٢١-٢٦٢٢، والنسائي في السنن، كتاب: الصلاة، باب: الحكم في تارك الصلاة، ١ / ٢٣١، الرقم: ٤٦٣، وابن ماجه في السنن، كتاب: إقامة الصلاة والسنة فيها، باب: ماجاء في من ترك الصلاة، ١ / ٣٤٢، الرقم: ١٠٧٩، والحاكم في المستدرك، ١ / ٤٨، الرقم: ١١، وقال الحاكمُ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحُ الإِسْنَادِ، والدار قطني في السنن، ٢ / ٥٢، الرقم: ٢، وابن حبان في الصحيح، ٤ / ٣٠٥، الرقم: ١٤٥٤، والنسائي في السنن الكبرى، ١ / ١٤٥، الرقم: ٣٢٩، وابن أبي شيبة في المصنف، ٦ / ١٦٧، الرقم: ٣٠٣٩٦، وأحمد بن حنبل في المسند، ٥ / ٣٤٦، الرقم: ٢٢٩٨٧، ٢٣٠٥٧، والبيهقي في السنن الكبرى، ٣ / ٣٦٦، الرقم: ٦٢٩١، وفي شعب الإيمان، ١ / ٧٢، الرقم: ٤٣، ٢٧٩٥.

مُحَمَّدٍ ﷺ: لَا يَرَوْنَ شَيْئًا مِنَ الْأَعْمَالِ تَرْكُهُ كُفْرٌ، غَيْرَ الصَّلَاةِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ.

''हज़रत बुरैदा ؓ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः हमारे और उन (काफ़िरों) के दरमियान अ़हद नमाज़ ही है, जिसने इसे छोड़ा कुफ्र किया।''

''और अब्दुल्लाह बिन शक़ीक़ उक़ैली से मरवी है, वो फरमाते हैं कि सहाबा किराम ؓ नमाज़ के सिवा किसी दूसरे अ़मल के तर्क को कुफ्र नहीं जानते थे।''

١٣٥ / ١٧. عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ؓ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: إِنَّ أَوَّلَ مَا يُحَاسَبُ بِهِ الْعَبْدُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مِنْ عَمَلِهِ صَلَاتُهُ، فَإِنْ صَلُحَتْ فَقَدْ أَفْلَحَ وَأَنْجَحَ، وَإِنْ فَسَدَتْ، فَقَدْ خَابَ وَخَسِرَ، فَإِنِ انْتَقَصَ مِنْ فَرِيْضَتِهِ شَيْءٌ، قَالَ الرَّبُّ ﷻ: انْظُرُوْا، هَلْ لِعَبْدِي مِنْ تَطَوُّعٍ؟ فَيُكَمَّلُ بِهَا مَا انْتَقَصَ مِنَ الْفَرِيْضَةِ، ثُمَّ يَكُوْنُ سَائِرُ عَمَلِهِ عَلَى ذَلِكَ.

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَه.

''हज़रत अबू हुरैरा ؓ रिवायत करते हैं कि मैंने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ से सुनाः

الحديث رقم ١٧: أخرجه الترمذي فى السنن، كتاب: الصلاة عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء أَنَّ أَوَّلَ ما يُحَاسَبُ به العبد يوم القيامة الصلاة، ٢ / ٢٦٩، الرقم: ٤١٣، والنسائى فى السنن، كتاب: الصلاة، باب: المحاسبة على الصلاة، ١ / ٢٣٢، الرقم: ٤٦٥-٤٦٧، وابن ماجه فى السنن، كتاب: إقامة الصلاة والسنة فيها، باب: ما جاء في أول ما يحاسب به العبد الصلاة، ١ / ٤٥٨، الرقم:١٤٢٥، والدارمى فى السنن، ١ / ٣٦١، الرقم:١٣٥٥، وابن أبى شيبة فى المصنف، ٧ / ٢٧٦، الرقم: ٣٦٠٤٧، والطبرانى فى المعجم الأوسط، ٢ / ٢٤٠، الرقم: ١٨٥٩، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٢ / ٤٢٥، الرقم: ٩٤٩٠، وأبويعلى فى المسند، ١١ / ٩٦، الرقم: ٦٢٢٥، والطيالسى فى المسند، ١ / ٣٢٣، الرقم: ٢٤٦٨، والبيهقى فى شعب الإيمان، ٣ / ١٨٢، الرقم: ٣٢٨٦، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ١ / ٢٠٢، الرقم: ٧٦٧.

क़यामत के दिन बन्दे से (सबसे) पहले जिस अ़मल का हिसाब होगा वो नमाज़ है, अगर यह सही हुआ तो वो कामयाब हुआ और निजात पा गया और अगर यह ठीक न हुआ तो बन्दा नाकाम हुआ और उसने नुकसान उठाया फिर अगर फ़र्ज़ नमाज़ में कुछ कमी रहेगी तो अल्लाह तआला फरमाएगा, क्या मेरे बन्दे के पास कोई नफ़्ल है ? फिर उससे फ़र्ज़ की कमी पूरी की जाएगी, फिर तमाम आ'माल का इसी तरह हिसाब किताब होगा (यानी फ़र्ज़ आ'माल के न होने की सूरत में नवाफ़िल से कमी पूरी की जाएगी)।''

١٣٦ / ١٨ـ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ: أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ! لَقَدْ هَمَمْتُ أَنْ آمُرَ بِحَطَبٍ فَيُحْطَبَ، ثُمَّ آمُرَ بِالصَّلَاةِ فَيُؤَذَّنَ لَهَا، ثُمَّ آمُرَ رَجُلاً فَيَؤُمَّ النَّاسَ، ثُمَّ أُخَالِفَ إِلَى رِجَالٍ فَأُحَرِّقَ عَلَيْهِمْ بُيُوْتَهُمْ، وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ، لَو يَعْلَمُ أَحَدُهُمْ: أَنَّهُ يَجِدُ عَرْقًا سَمِيْنًا، أَوْ مِرْمَاتَيْنِ حَسَنَتَيْنِ، لَشَهِدَ الْعِشَاءَ.

مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ وَهَذَا اللَّفْظُ لِلْبُخَارِيِّ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः

الحديث رقم ١٨: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: الجماعة والإمامة، باب: وجوب صلاة الجماعة، ١ / ٢٣١، الرقم: ٦١٨، وفى باب: فضل العشاء فى الجماعة، ١ / ٢٣٤، الرقم: ٦٢٦، وفى كتاب: الخصومات، باب: إخراج أهل المعاصي والخُصُوم من البيوت بعد المعرفة، ٢ / ٨٥٢، الرقم: ٢٢٨٨، وفى كتاب: الأحكام، باب: إخراج الخُصُوم وأهل الرِّيَبِ من البيوت بعد المعرفة، ٦ / ٢٦٤٠، الرقم: ٦٧٩٧، ومسلم فى الصحيح، كتاب: المساجد، باب: فضل صلاة الجماعة، وبيان التشديد فى التخلف عنها، ١ / ٤٥١، الرقم: ٦٥١، وأبو داود فى السنن، كتاب: الصلاة، باب: التشديد فى ترك الجماعة، ١ / ١٥٠، الرقم: ٥٤٨-٥٤٩، وابن ماجه فى السنن، كتاب: المساجد والجماعات، باب: التغليظ فى التخلف عن الجماعة، ١ / ٢٥٩، الرقم: ٧٩١، وابن خزيمة فى الصحيح، ٢ / ٣٧٠، الرقم: ١٤٨٤، وابن أبى شيبة فى المصنف، ١ / ٢٩٢، الرقم: ٣٣٥١، والبيهقى فى شعب الإيمان، ٣ / ٥٥، الرقم: ٢٨٥٣، وأبوعوانة فى المسند، ١ / ٣٥١، الرقم: ١٢٥٧، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ١ / ١٦٣، الرقم: ٦٠٢ـ

क़सम उस ज़ात की जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! मैंने इरादा किया कि लकड़ियाँ इकट्ठी करने का हुक्म दूँ, फिर नमाज़ का हुक्म दूँ तो इसके लिए अज़ान कही जाए। फिर एक आदमी को हुक्म दूँ कि लोगों की इमामत करे फिर ऐसे लोगों की तरफ़ निकल जाऊँ (जो नमाज़ में हाज़िर नहीं होते) और उनके घरों को आग लगा दूँ। क़सम उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है! अगर उनमें से कोई जानता कि उसे गोश्त से पुर हड्डी या दो उम्दा खुरियां (पाए) मिलेंगी तो ज़रूर नमाज़े इशा में शामिल होता।''

١٣٧ / ١٩۔ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رضي الله عنهما أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: صَـلَاةُ الْجَمَاعَةِ تَفْضُلُ صَـلَاةَ الْفَذِّ بِسَبْعٍ وَعِشْرِيْنَ دَرَجَةً.
مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ. وَقَالَ ابْنُ نُمَيْرٍ عَنْ أَبِيْهِ: بِضْعًا وَعِشْرِيْنَ.

''हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर رضي الله عنهما से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः बाजमाअत नमाज़ अदा करना तन्हा नमाज़ अदा करने से सत्ताईस दर्जा फ़ज़ीलत रखता है।''

١٣٨ / ٢٠۔ عَنْ أَبِي قَتَادَةَ بْنِ رِبْعِيٍّ ﷺ، قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ:

الحديث رقم ١٩: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: الجماعة والإمامة، باب: فضل صلاة الجماعة، ١ / ٢٣١، الرقم: ٦١٩، ٦٢١، ومسلم فى الصحيح، كتاب: المساجد، باب: فضل صلاة الجماعة وبيان التشديد فى التخلف عنها، ١ / ٤٥٠، الرقم: ٦٥٠، والترمذى فى السنن، كتاب: الصلاة عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء فى فضل الجماعة، ١ / ٤٢٠، الرقم: ٢١٥، والنسائى فى السنن، كتاب: الإمامة، باب: فضل الجماعة، ٢ / ١٠٣، الرقم: ٨٣٧، وفى السنن الكبرى، ١ / ٢٩٤، الرقم: ٩١١، ومالك فى الموطأ، كتاب: الصلاة، باب: فضل صلاة الجماعة على صلاة الفذ، ١ / ١٢٩، الرقم: ٢٨٨، وابن حبان فى الصحيح، ٥ / ٤٠١، الرقم: ٢٠٥٢، والشافعى فى المسند، ١ / ٥٢، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٢ / ٦٥، الرقم: ٥٩٢١،٥٣٣٢، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٣ / ٥٩، الرقم: ٤٧٣٤، وفى شعب الإيمان، ٣ / ٤٧، الرقم: ٢٨٢٦، والعسقلانى فى سلسلة الذهب، ١ / ٤٤، الرقم:٩، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ١ / ١٥٨، الرقم: ٥٨٦.

الحديث رقم ٢٠: أخرجه أبوداود فى السنن، كتاب: الصلاة، باب: في المحافظة على وقت الصلاة، ١ / ١١٧، الرقم: ٤٣٠، وابن ماجه فى السنن، كتاب: إقامة ←

قَالَ اللهُ ﷻ: افْتَرَضْتُ عَلَى أُمَّتِكَ خَمْسَ صَلَوَاتٍ. وَعَهِدْتُ عِنْدِي عَهْدًا أَنَّهُ مَنْ حَافَظَ عَلَيْهِنَّ لِوَقْتِهِنَّ أَدْخَلْتُهُ الْجَنَّةَ. وَمَنْ لَمْ يُحَافِظْ عَلَيْهِنَّ، فَلَا عَهْدَ لَهُ عِنْدِي. رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ وَابْنُ مَاجَه وَاللَّفْظُ لَهُ.

''हज़रत अबू क़तादा बिन रिबई ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः अल्लाह तआला ने फरमायाः मैंने आप की उम्मत पर पाँच नमाज़ें फ़र्ज़ की हैं और मैंने अपने यहाँ पक्का वादा कर रखा है कि जो इनके औक़ात के साथ उनकी पाबन्दी करेगा उसे जन्नत में दाख़िल करूँगा और जो इनकी पाबन्दी नहीं करेगा तो उसके साथ मेरा कोई वादा नहीं (कि उसे सज़ा दूँ या बख़्श दूँ)।''

.... الصلاة والسنة فيها، باب: ما جاء فى فرض الصلوات الخمس والمحافظة عليها، ١/ ٤٥٠، الرقم: ١٤٠٣، والمقدسى فى الأحاديث المختارة، ٨/ ٣٠٥، الرقم: ٣٦٨، والطيالسى فى المسند، ١/ ٧٨، الرقم: ٥٧٣، والديلمى فى مسند الفردوس، ٣/ ١٦٦، الرقم: ٤٤٤٠، والمروزى فى تعظيم قدرة الصلاة، ٢/ ٩٧٠، الرقم: ١٠٥٤، والمقريزى فى مختصر كتاب الوتر، ١/ ٣١، الرقم: ١٣.

فَصْلٌ فِي فَضْلِ السُّنَنِ وَالنَّوَافِلِ

फ़ज़ीलते सुनन और नवाफ़िल का बयान

فَضْلُ صَلاةِ السُّنَنِ

١٣٩ / ٢١ـ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّ اللهَ قَالَ: مَنْ عَادَى لِي وَلِيًّا، فَقَدْ آذَنْتُهُ بِالْحَرْبِ، وَمَا تَقَرَّبَ إِلَيَّ عَبْدِي بِشَيءٍ أَحَبَّ إِلَيَّ مِمَّا افْتَرَضْتُ عَلَيْهِ، وَمَا يَزَالُ عَبْدِي، يَتَقَرَّبُ إِلَيَّ بِالنَّوَافِلِ حَتَّى أُحِبَّهُ، فَإِذَا أَحْبَبْتُهُ: كُنْتُ سَمْعَهُ الَّذِي يَسْمَعُ بِهِ، وَبَصَرَهُ الَّذِي يُبْصِرُ بِهِ، وَيَدَهُ الَّتِي يَبْطِشُ بِهَا، وَرِجْلَهُ الَّتِي يَمْشِي بِهَا، وإِنْ سَأَلَنِي، لَأُعْطِيَنَّهُ، وَلَئِنِ اسْتَعَاذَنِي، لَأُعِيذَنَّهُ، وَمَا تَرَدَّدْتُ عَنْ شَيءٍ أَنَا فَاعِلُهُ تَرَدُّدِي عَنْ نَفْسِ الْمُؤْمِنِ، يَكْرَهُ الْمَوْتَ وَأَنَا أَكْرَهُ مَسَاءَتَهُ.

رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ وَابْنُ حِبَّانَ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः अल्लाह तआला फरमाता हैः जो मेरे किसी वली से दुश्मनी रखे मैं उससे ऐलाने जंग करता हूँ और मेरा बन्दा ऐसी किसी चीज़ के ज़रीये मेरा कुर्ब नहीं पाता जो मुझे फ़राइज़ से ज़्यादा महबूब हो और मेरा बन्दा नफ़्ली इबादात के ज़रीये बराबर मेरा कुर्ब हासिल करता रहता है यहाँ तक कि मैं उस से मुहब्बत करने लगता हूँ और जब मैं उससे मुहब्बत करता हूँ तो मैं उसके कान बन जाता हूँ जिस से वो सुनता है और उसकी आँख बन जाता हूँ जिससे वो देखता है और उसका हाथ बन जाता हूँ जिस से वो पकड़ता है और उसका पाँव बन जाता हूँ जिससे वो चलता है अगर वो मुझसे सवाल करता है तो मैं उसे जरूर अता करता हूँ और अगर वो मेरी पनाह माँगता है तो मैं ज़रूर उसे

الحديث رقم ٢١: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: الرقاق، باب: التواضع، ٥/٢٣٨٤، الرقم: ٦١٣٧، وابن حبان فى الصحيح، ٢/٥٨، الرقم: ٣٤٧، والبيهقى فى السنن الكبرى، ١٠/٢١٩، وفى كتاب الزهد الكبير، ٢/٢٦٩، الرقم: ٦٩٦.

पनाह देता हूँ। मुझे जो काम करना होता है उसमें कभी इस तरह फिक्रमन्द नहीं होता जैसे बन्दए मोमिन की जान लेने में होता हूँ। उसे मौत पसन्द नहीं और मुझे उसकी तकलीफ़ पसन्द नहीं।''

١٤٠ / ٢٢۔ عَنْ رَبِيْعَةَ بْنِ كَعْبِ الْأَسْلَمِيِّ ﷺ قَالَ: كُنْتُ أَبِيْتُ مَعَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ فَأَتَيْتُهُ بِوَضُوْئِهِ وَحَاجَتِهِ فَقَالَ لِي: سَلْ، فَقُلْتُ: أَسْأَلُكَ مُرَافَقَتَكَ فِي الْجَنَّةِ قَالَ: أَوْ غَيْرَ ذَلِكَ قُلْتُ: هُوَ ذَاكَ، قَالَ: فَأَعِنِّي عَلَى نَفْسِكَ بِكَثْرَةِ السُّجُوْدِ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَأَبُوْدَاوُدَ.

''हज़रत रबी बिन कअ़ब अस्लमी ﷺ बयान करते हैं कि रात को हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की ख़िदमते अक़दस में रहा करता था और आप ﷺ के इस्तिन्जा और वुज़ू के लिए पानी लाता। एक बार आप ﷺ ने फरमायाः ''माँग क्या माँगता है'' मैंने अ़र्ज़ किया, मैं आप से जन्नत की रिफ़ाक़त (साथ) माँगता हूँ, आप ﷺ ने फरमायाः इस के अलावा ''और कुछ'' मैंने कहा मुझे यही काफ़ी है। आप ﷺ ने फरमायाः तो फिर कसरते सुजूद से अपने मामले में मेरी मदद करो।''

١٤١ / ٢٣۔ عَنْ أُمِّ حَبِيْبَةَ رضي الله عنها زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهَا قَالَتْ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَا مِنْ عَبْدٍ مُسْلِمٍ يُصَلِّي لِلّٰهِ كُلَّ يَوْمٍ ثِنْتَي

الحديث رقم ٢٢: أخرجه مسلم في الصحيح، كتاب: الصلاة، باب: فضل السجود والحث عليه، ١/ ٣٥٣، الرقم: ٤٨٩، وأبوداود في السنن، كتاب: الصلاة، باب: وقت قيام النبي ﷺ من الليل، ٢/ ٣٥، الرقم: ١٣٢٠، والنسائي في السنن، كتاب: التطبيق، باب: فضل السجود، ٢/ ٢٢٧، الرقم: ١١٣٨، وفي السنن الكبرى، ١/٢٤٢، الرقم: ٧٢٤، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٤/٥٩، والطبراني في المعجم الكبير، ٥/٥٦، الرقم: ٤٥٧٠، والبيهقي في السنن الكبرى، ٢/ ٤٨٦، الرقم: ٤٣٤٤، والمنذري فى الترغيب والترهيب، ١/ ١٥٢، الرقم: ٥٦٤۔

الحديث رقم ٢٣: أخرجه مسلم فى الصحيح، كتاب: صلاة المسافرين وقصرها، باب: فضل السنن الراتبة قبل الفرائض وبعد هن وبيان عددهن، ١/٥٠٣ الرقم: ٧٢٨، وأبوداود فى السنن، كتاب: الصلاة، باب: تفريع أبواب التطوع وركعات السنة، ٢/١٨، الرقم: ١٢٥٠، والنسائى فى السنن، كتاب: قيام الليل وتطوع النهار، باب: الاختلاف على إسماعيل بن أبى خالد، ٣/٢٦٤، الرقم: ١٨٠٨، ←

عَشْرَةَ رَكْعَةً تَطَوُّعًا، غَيْرَ فَرِيْضَةٍ، إِلَّا بَنَى اللهُ لَهُ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ. أَوْ إِلَّا بُنِي لَهُ بَيْتٌ فِي الْجَنَّةِ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَأَبُوْدَاوُدَ.

''उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे हबीबा رضي الله عنها रिवायत करती हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुनाः जो भी मुसलमान अल्लाह तआला के लिए हर रोज़ बारह रकअत नफ़्ल फ़राइज़ के अलावा अदा करता है, अल्लाह तआला उसका घर जन्नत में बना देता है या जन्नत में उसका घर बना दिया जाता है।''

١٤٢ / ٢٤۔ عَنْ عَائِشَةَ رضي الله عنها قَالَتْ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ مَنْ صَلَّى فِي يَوْمٍ وَلَيْلَةٍ ثِنْتَي عَشْرَةَ رَكْعَةً مِنَ السُّنَّةِ بَنَى اللهُ لَهُ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ، أَرْبَعِ رَكَعَاتٍ قَبْلَ الظُّهْرِ وَرَكْعَتَيْنِ بَعْدَهَا وَرَكْعَتَيْنِ بَعْدَ الْمَغْرِبِ وَرَكْعَتَيْنِ بَعْدَ الْعِشَاءِ وَرَكْعَتَيْنِ قَبْلَ الْفَجْرِ.

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُوْدَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَه.

''हज़रत आइशा رضي الله عنها फरमाती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमायाः जिस शख़्स ने दिन और रात में (फ़राइज़ के अलावा) बारह रकअत सुन्नतें अदा की तो अल्लाह

.... وابن ماجه فى السنن، كتاب: إقامة الصلاة والسنة فيها، باب: ماجاء فى ثنتى عشرة ركعة من السنة، ١/٣٦١، الرقم: ١١٤١، وابن خزيمة فى الصحيح، ٢/٢٠٢، الرقم: ١١٨٥، والدارمى فى السنن، ١/٣٩٧، الرقم: ١٤٣٨، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٦/٣٢٧، الرقم: ٢٦٨١٨۔

الحديث رقم ٢٤: أخرجه الترمذى فى السنن، كتاب: الصلاة عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء فيمن صلى فى يوم وليلة ثنتي عشرة ركعة من السنة وماله فيه من الفضل، ٢/٢٧٤، الرقم: ٤١٥، ونحوه أبوداود فى السنن، كتاب: الصلاة، باب: تفريع أبواب التطوع وركعات السنة، ٢/١٨، الرقم: ١٢٥١، والنسائى فى السنن، كتاب: الإمامة، باب: الصلاة بعد الظهر، ٢/١١٩، الرقم: ٨٧٣، وابن ماجه فى السنن، كتاب: إقامة الصلاة والسنة فيها، ١/٣٦١، الرقم: ١١٤٠، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٢/٥١، الرقم: ٥١٢٧، وابن خزيمة فى الصحيح، ٢/٢٠٤، الرقم: ١١٨٨، والحاكم فى المستدرك بإسنادين، ١/٤٥٦، الرقم: ١١٧٣، وقال: كلا الإسنادين صحيحان۔

तआला उसके लिए जन्नत में मकान बनाएगा। (इन सुन्नतों की तफ़्सील यह है) चार रकअतें ज़ोहर से पहले और दो रकअतें ज़ोहर के बाद, दो रकअतें मग़रिब के बाद, दो रकअतें इशा के बाद और दो रकअतें फ़ज्र से पहले।''

١٤٣ / ٢٥۔ عَنْ زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ رضي الله عنه أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وآله وسلم قَالَ: صَلُّوْا أَيُّهَا النَّاسُ فِي بُيُوتِكُمْ، فَإِنَّ أَفْضَلَ الصَّلَاةِ صَلَاةُ الْمَرْءِ فِي بَيْتِهِ إِلَّا الْمَكْتُوْبَةَ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ وَهَذَا لَفْظُ الْبُخَارِيِّ.

''हज़रत ज़ैद बिन साबित رضي الله عنه से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम صلى الله عليه وآله وسلم ने फरमायाः ऐ लोगो! अपने घरों में नमाज़ पढ़ा करो क्योंकि सिवाए फ़र्ज़ नमाज़ के आदमी की अफ़ज़ल नमाज़ वो है जो वो अपने घर में पढ़े।''

فَضْلُ صَلَاةِ التَّهَجُّدِ

١٤٤ / ٢٦۔ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّهُ سَأَلَ عَائِشَةَ رضي الله عنها كَيْفَ كَانَتْ صَلَاةُ رَسُوْلِ اللهِ صلى الله عليه وآله وسلم فِي رَمَضَانَ؟ فَقَالَتْ: مَا كَانَ رَسُوْلُ اللهِ صلى الله عليه وآله وسلم يَزِيْدُ فِي رَمَضَانَ وَلَا فِي غَيْرِهِ عَلَى إِحْدَى عَشْرَةَ رَكْعَةً

الحديث رقم ٢٥: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: التهجد، باب: صلاة الليل، ١ / ٢٥٦، الرقم: ٦٩٨، ومسلم فى الصحيح، كتاب: صلاة المسافرين وقصرها، باب: استحباب صلاة النافلة فى بيته وجوازها فى المسجد، ١ / ٥٣٩، الرقم: ٧٨١، وأبوداود فى السنن، كتاب: الصلاة، باب: صلاة الرجل التطوع فى بيته، ١ / ٢٧٤، الرقم: ١٠٤٤، وابن خزيمة فى الصحيح، ٢ / ٢١١، الرقم: ١٢٠٣، وابن حبان فى الصحيح، ٦ ٢٣٨، الرقم: ٢٤٩١ والدارمى فى السنن، ١ / ٣٦٦، الرقم: ١٣٦٦۔

الحديث رقم ٢٦: أخرجه البخاري في كتاب: التهجد، باب: قيام النبي صلى الله عليه وآله وسلم بالليل في رمضان وغيره، ١ / ٣٨٥، الرقم: ١٠٩٦، ومسلم في الصحيح، كتاب: صلاة المسافرين وقصرها، باب: صلاة الليل وعدد ركعات النبي صلى الله عليه وآله وسلم في الليل، ١ / ٥٠٩، الرقم: ٧٣٨، والترمذي في السنن، كتاب: الصلاة عن رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم، باب: ما جاء في وصف صلاة النبي صلى الله عليه وآله وسلم بالليل، ٢ / ٣٠٢، الرقم: ٤٣٩، وقال أبوعيسى: هذا حديث حسن صحيح، وأبوداود في السنن، كتاب: الصلاة، باب: في صلاة اليل، ←

يُصَلِّي أَرْبَعًا فَلَا تَسَلْ عَنْ حُسْنِهِنَّ وَطُوْلِهِنَّ ثُمَّ يُصَلِّي أَرْبَعًا فَلَا تَسَلْ عَنْ حُسْنِهِنَّ وَ طُوْلِهِنَّ ثُمَّ يُصَلِّي ثَلَاثًا قَالَتْ عَائِشَةُ: فَقُلْتُ: يَا رَسُوْلَ اللهِ، أَتَنَامُ قَبْلَ أَنْ تُوْتِرَ؟ فَقَالَ: يَا عَائِشَةُ، إِنَّ عَيْنَيَّ تَنَامَانِ وَلَا يَنَامُ قَلْبِي.

مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान ﷺ से रिवायत है कि उन्होंने हज़रत आइशा رضي الله عنها से दरयाफ़्त किया रमज़ानुल मुबारक में हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की नमाज़ कैसी होती थी? तो उन्होंने फरमायाः हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ रमज़ानुल मुबारक में और उसके अलावा भी (नमाज़े तहज्जुद) ग्यारह रकअत से ज़्यादा नहीं पढ़ते थे चार रकअतें पढ़ते। तो उन के अदा करने की ख़ूबसूरती और तवालते (क़ियाम) के मुतअल्लिक़ कुछ न पूछो। फिर तीन रकअतें पढ़ते हज़रत आइशा رضي الله عنها ने फरमायाः मैंने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह! क्या आप वित्र पढ़ने से पहले सो जाते हैं ? आप ﷺ ने फरमायाः ऐ आइशा ! बेशक मेरी आँखें सोती हैं लेकिन मेरा दिल नहीं सोता।''

١٤٥ / ٢٧۔ عَنْ أَبِي أُمَامَةَ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: عَلَيكُمْ بِقِيَامِ اللَّيْلِ، فَإِنَّهُ دَأْبُ الصَّالِحِيْنَ قَبْلَكُمْ، وَهُوَ قُرْبَةٌ لَكُمْ إِلَى رَبِّكُمْ، وَمَكْفَرَةٌ لِلسَّيِّئَاتِ، وَمَنْهَاةٌ عَنِ الإِثْمِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالْحَاكِمُ.

.... ٢/٤٠، الرقم: ١٣٤١، والنسائي في السنن، كتاب: قيام الليل وتطوع النهار، باب: كيف الوتر بثلاث، ٣/٢٣٤، الرقم: ١٦٩٧، وفي السنن الكبرى، ١/١٥٩، الرقم: ٣٩٣، ومالك في الموطأ، كتاب: صلاة الليل، باب: صلاة النبي ﷺ في الوتر، ١/١٢٠، الرقم: ٢٦٣، وأحمد بن حنبل في المسند، ٦/٣٦، الرقم: ٢٤١١٩، وابن خزيمة في الصحيح، ١/٣٠، الرقم: ٤٩، ٢/٢١٧، وابن حبان في الصحيح، ٦/١٨٦، الرقم: ٢٤٣٠، وعبد الرزاق في المصنف، باب: صلاة النبي ﷺ من الليل ووتره، ٣/٣٨، الرقم: ٤٧١١، والطحاوي في شرح معاني الآثار، ١/٢٨٢۔

الحديث رقم ٢٧: أخرجه الترمذي فى السنن، كتاب: الدعوات عن رسول الله ﷺ، باب: فى دعاء النبى ﷺ، ٥/٥٥٢، الرقم: ٣٥٤٩، والحاكم فى المستدرك، ١/٤٥١، الرقم: ١١٥٦، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٢/٥٠٢، الرقم: ٤٤٢٣، والطبرانى فى المعجم الكبير، ٨/٩٢، الرقم: ٧٧٦٦۔

وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ أَصَحُّ، وَقَالَ الْحَاكِمُ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत अबू उमामा ﷺ फरमाते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः रात को क़ियाम अपने ऊपर लाज़िम कर लो कि वो तुम से पहले के नेक लोगों का तरीक़ा है और तुम्हारे लिए कुर्बे ख़ुदावन्दी का बाइस है और बुराइयों को मिटाने वाला और गुनाहों से रोकने वाला है।''

١٤٦ / ٢٨۔ عَنْ عَمْرِو بْنِ عَبَسَةَ ﷺ أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ يَقُوْلُ: أَقْرَبُ مَايَكُوْنُ الرَّبُّ مِنَ الْعَبْدِ فِي جَوْفِ اللَّيْلِ الْآخِرِ، فَإِنِ اسْتَطَعْتَ أَنْ تَكُوْنَ مِمَّنْ يَذْكُرُ اللهَ فِي تِلْكَ السَّاعَةِ فَكُنْ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ.

وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ.

''हज़रत अम्र बिन अबसा ﷺ से मरवी है कि उन्होंने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ से सुना कि आप ﷺ फरमातेः अल्लाह ﷻ अपने बन्दे के सबसे ज़्यादा नज़दीक रात के आख़िरी हिस्से में होता है अगर तुम उस वक़्त अल्लाह तआला का ज़िक्र करने वालों में शामिल हो सकते हो तो ज़रूर हो जाओ।''

١٤٧ / ٢٩۔ عَنْ أَسْمَاءَ بِنْتِ يَزِيْدَ رضي الله عنها عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ قَالَ: يُحْشَرُ النَّاسُ فِي صَعِيْدٍ وَاحِدٍ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَيُنَادِي مُنَادٍ فَيَقُوْلُ أَيْنَ الَّذِيْنَ كَانَتْ تَتَجَافَى جُنُوْبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ؟ فَيَقُوْمُوْنَ وَهُمْ قَلِيْلٌ فَيَدْخُلُوْنَ

الحديث رقم ٢٨: أخرجه الترمذى فى السنن، كتاب: الدعوات عن رسول الله ﷺ، باب: (١١٩)، ٥ / ٥٦٩، الرقم: ٣٥٧٩، والنسائى فى السنن، كتاب: المواقيت، باب: النهي عن الصلاة بعد العصر، ١ / ٢٧٩، الرقم: ٥٧٢، وفى كتاب: التطبيق، باب: أقرب مايكون العبد من الله ﷻ، ٢ / ٢٢٦، الرقم: ١١٣٧، وابن خزيمة فى الصحيح، ٢ / ١٨٢، الرقم: ١١٤٧، والحاكم فى المستدرك، ١ / ٤٥٣، الرقم: ١١٦٢، وَقَالَ الحَاكِمُ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحٌ، وَالبهيقى فى السنن الكبرى، ٣ / ٤، الرقم: ٤٤٣٩، والطبرانى فى مسند الشامين، ١ / ٣٤٩، الرقم: ٦٠٥، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ١ / ٢٤٥، الرقم: ٩٣٣۔

الحديث رقم ٢٩: أخرجه البيهقى فى شعب الإيمان، ٣ / ١٦٩، الرقم: ٣٢٤٤، ٣٦٩٣، ٣٢٤٦، ونحوه الحاكم فى المستدرك، ٢ / ٤٣٣، الرقم: ٣٥٠٨، وابن المبارك فى كتاب الزهد، ١ / ١٠١، الرقم: ٣٥٣، والقرطبى فى الجامع لأحكام القرآن، ١٤ / ١٠٢، والطبرى فى جامع البيان، ٣٠ / ١٨٦، وابن كثير فى تفسير القرآن العظيم، ٣ / ٤٦١۔

الْجَنَّةَ بِغَيْرِ حِسَابٍ ثُمَّ يُؤْمَرُ بِسَائِرِ النَّاسِ إِلَى الْحِسَابِ. رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ.

''हज़रत अस्मा बिन्ते यज़ीद رضي الله عنها से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः लोग क़यामत के दिन एक मैदान में इकट्ठे किए जाएंगे और एक मुनादी ऐलान करेगा, जिन लोगों की करवटें (अपने रब की याद में) बिस्तरों पर न लगती थीं, वो कहाँ हैं? वो खड़े हो जाएंगें, उनकी तादाद बहुत कम होगी और वो जन्नत में बगैर हिसाबो किताब के दाख़िल हो जाएंगे फिर बाक़ी (बच जाने वाले) लोगों के हिसाबो किताब का हुक़्म जारी कर दिया जाएगा।''

فَضْلُ صَلَاةِ الإِشْرَاقِ

١٤٨ / ٣٠۔ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ صَلَّى الْغَدَاةَ فِي جَمَاعَةٍ ثُمَّ قَعَدَ يَذْكُرُ اللهَ حَتَّى تَطْلُعَ الشَّمْسُ ثُمَّ صَلَّى رَكْعَتَيْنِ كَانَتْ لَهُ كَأَجْرِ حَجَّةٍ وَعُمْرَةٍ، قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: تَامَّةٍ تَامَّةٍ تَامَّةٍ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالطَّبَرَانِيُّ وَالْبَيْهَقِيُّ.

وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: هٰذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ.

''हज़रत अनस ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जो शख़्स सुबह की नमाज़ बा जमाअत पढ़ कर तुलूए आफ़ताब तक बैठा अल्लाह तआला का ज़िक्र करता रहा फिर दो रकअत नमाज़ (इशराक़) अदा की उस के लिए कामिल (व मक़बूल) हज और उमरह का सवाब है। हज़रत अनस ﷺ फरमाते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने लफ़्ज़ 'ताम्मह' यानी 'कामिल' तीन बार फरमाया।''

فَضْلُ صَلَاةِ الضُّحَى

١٤٩ / ٣١۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ حَافَظَ

الحديث رقم ٣٠: أخرجه الترمذي في السنن، كتاب: الجمعة عن رسول الله ﷺ، باب: ذكر ما يستحب من الجلوس في المسجد بعد صلاة الصبح حتى تطلع الشمس، ٢ / ٤٨١، الرقم: ٥٨٦، والطبراني في مسند الشاميين، ٢ / ٤٢، الرقم: ٨٨٥، والبيهقي في شعب الإيمان، ٧ / ١٣٨، الرقم: ٩٧٦٢، والمنذري في الترغيب والترهيب، ١ / ١٧٨، الرقم: ٦٦٧۔

الحديث رقم ٣١: أخرجه الترمذى فى السنن، كتاب: الصلاة عن رسول ﷺ، باب: ←

عَلَى شُفْعَةِ الضُّحَى غُفِرَتْ لَهُ ذُنُوْبُهُ وَ إِنْ كَانَتْ مِثْلَ زَبَدِ الْبَحْرِ.

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَه.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमायाः जो शख़्स चाश्त की दो रकअत की पाबन्दी करता है, उस के गुनाह बख़्श दिए जाते हैं चाहे समन्दर के झाग के बराबर हों।''

فَضْلُ صَلَاةِ الْأَوَّابِيْنَ

١٥٠ / ٣٢۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ صَلَّى بَعْدَ الْمَغْرِبِ سِتَّ رَكَعَاتٍ لَمْ يَتَكَلَّمْ فِيْمَا بَيْنَهُنَّ بِسُوْءٍ عُدِلْنَ لَهُ بِعِبَادَةِ ثِنْتَي عَشْرَةَ سَنَةً. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَه.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ का बयान है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमायाः जो शख़्स मग़रिब की नमाज़ के बाद छः नफ़्ल इस तरह पढ़े कि उन के दरमियान कोई बुरी बात ना करे उसके लिए यह नफ़्ल बारह साल की इबादत के बराबर शुमार होंगे।''

.... ماجاء فى صلاة الضحى، ٢/٣٤١، الرقم: ٤٧٦، وابن ماجه فى السنن، كتاب: إقامة الصلاة والسنة فيها، باب: ماجاء فى صلاة الضحى، ١/٤٤٠، الرقم: ١٣٨٢، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٢/٤٤٣، الرقم: ٩٧١٤، وابن راهوية فى المسند، ١/٣٣٨، الرقم: ٣٢٩، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ١/٢٦٤، الرقم: ٩٩٦.

الحديث رقم ٣٢: أخرجه الترمذي فى السنن، كتاب: الصلاة عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء فى فضل التطوع وست ركعات بعد المغرب، ٢/٢٩٨، الرقم: ٤٣٥، وابن ماجه فى السنن، كتاب: إقامة الصلاة والسنة فيها، باب: ماجاء في ست ركعات بعد المغرب، ١/٣٦٩، الرقم: ١١٦٧، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ١/٢٢٧، الرقم: ٨٦٢.

فَصْلٌ فِي صِيَامِ رَمَضَانَ

﴿रमज़ानुल मुबारक के रोज़ों का बयान﴾

١٥١ / ٣٣۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضي الله عنه قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ : مَنْ صَامَ رَمَضَانَ إِيْمَانًا وَاحْتِسَابًا غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अबू हुरैरा रضي الله عنه से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जो शख़्स ईमान की हालत में सवाब की निय्यत से रमज़ान के रोज़े रखता है उसके पिछले गुनाह बख़्श दिए जाते हैं।''

١٥٢ / ٣٤۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضي الله عنه، قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِذَا دَخَلَ شَهْرُ رَمَضَانَ فُتِحَتْ أَبْوَابُ السَّمَاءِ. وفي رواية: فُتِحَتْ أَبْوَابُ الْجَنَّةِ، وَغُلِّقَتْ أَبْوَابُ جَهَنَّمَ، وَسُلْسِلَتِ الشَّيَاطِيْنُ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

الحديث رقم ٣٣: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: الصوم، باب: صوم رمضان احتسابا من الإيمان، ١ / ٢٢، الرقم: ٣٨، ومسلم في الصحيح، كتاب: صلاة المسافرين وقصرها، باب: الترغيب في قيام رمضان وهو التراويح، ١ / ٥٢٣، الرقم: ٧٦٠، وأبوداود في السنن، كتاب: الصلاة، باب: فى قيام شهر رمضان، ٢ / ٤٩، الرقم: ١٣٧٢، والنسائي في السنن، كتاب: الصيام، باب: ثواب من قام رمضان وصامه إيمان واحتسابا، ٤ / ١٥٧، الرقم: ٢٢٠٣۔ ٢٢٠٥، وابن ماجه في السنن، كتاب: الصيام، باب: ماجاء في فضل شهر رمضان، ١ / ٥٢٦، الرقم: ١٦٤١۔

الحديث رقم ٣٤: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: بدء الخلق، باب: صفة إبليس وجنوده، ٣ / ١١٩٤، الرقم: ٣١٠٣، ومسلم فى الصحيح، كتاب: الصيام، باب: فضل شهر رمضان، ٢ / ٧٥٨، الرقم: ١٠٧٩، والنسائى فى السنن، كتاب: الصيام، باب: ذكر الاختلاف على الزهرى فيه، ٤ / ١٢٦، ١٢٨، الرقم: ٢٠٩٧، ٢١٠١، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٢ / ٢٨١، الرقم: ٧٧٦٨۔

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : जब रमज़ान शुरू होता है तो आसमान के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं । (और एक रिवायत में है कि) जन्नत के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं और जहन्नम के दरवाज़े बन्द कर दिए जाते हैं और शैतान (ज़ंजीरों में) जकड़ दिए जाते हैं।''

١٥٣ / ٣٥. عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضي الله عنه يَقُوْلُ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: قَالَ اللهُ عزوجل: كُلُّ عَمَلِ ابْنِ آدَمَ لَهُ إِلَّا الصِّيَامَ، فَإِنَّهُ لِي وَأَنَا أَجْزِي بِهِ، وَالصِّيَامُ جُنَّةٌ، وَإِذَا كَانَ يَوْمُ صَوْمِ أَحَدِكُمْ فَلَا يَرْفُثْ وَلَا يَصْخَبْ، فَإِنْ سَابَّهُ أَحَدٌ أَوْ قَاتَلَهُ فَلْيَقُلْ: إِنِّي امْرُؤٌ صَائِمٌ. وَالَّذِي نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهِ! لَخُلُوفُ فَمِ الصَّائِمِ أَطْيَبُ عِنْدَ اللهِ مِنْ رِيْحِ الْمِسْكِ. لِلصَّائِمِ فَرْحَتَانِ يَفْرَحُهُمَا: إِذَا أَفْطَرَ فَرِحَ، وَإِذَا لَقِيَ رَبَّهُ فَرِحَ بِصَوْمِهِ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः अल्लाह तआला ने फरमायाः बनी आदम का हर अ़मल उसी के लिए है सिवाए रोज़े के, रोज़ा सिर्फ मेरे लिए है और मैं ही इस का बदला देता हूँ। और रोज़ा ढाल है और जिस रोज़ तुम में से कोई रोज़े से हो तो न फ़हश कलामी करे और न झगड़े और अगर उसे (रोज़ेदार को) कोई गाली दे या लड़े तो यह वो कह दे कि मैं रोज़े से हूँ। क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़ए क़ुदरत में मुहम्मद मुस्तफ़ा ﷺ की जान है, रोज़ेदार के मुँह की बू अल्लाह عزوجل को मुश्क से ज़्यादा प्यारी है। रोज़ेदार के लिए वो खुशियाँ हैं, जिनसे उसे फ़रहत होती है, एक (फ़रहते इफ़्तार) जब वो रोज़ा इफ़्तार करता है, और दूसरी (फ़रहते दीदार की) जब वो अपने रब से मिलेगा तो अपने रोज़े के बाइस ख़ुश होगा।''

الحديث رقم ٣٥: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: الصوم، باب: هل يقول إنى صائم إذا شتم، ٢/ ٦٧٣، الرقم: ١٨٠٥، ومسلم فى الصحيح، كتاب: الصيام، باب: فضل الصيام، ٢/ ٨٠٧، الرقم: ١١٥١، والنسائى فى السنن، كتاب: الصيام، باب: ذكرالإختلاف على أبى بن صالح فى هذا الحديث، ٤/ ٢٢١٧، الرقم: ٢٢١٣-٢٢١٨، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٤/ ٢٧٠، الرقم: ٨٠٩٤.

١٥٤۔ / ٣٦۔ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ رضی الله عنه عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: إِنَّ فِي الْجَنَّةِ بَابًا يُقَالُ لَهُ الرَّيَّانُ يَدْخُلُ مِنْهُ الصَّائِمُوْنَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، لَا يَدْخُلُ مِنْهُ أَحَدٌ غَيْرُهُمْ، يُقَالُ: أَيْنَ الصَّائِمُوْنَ؟ فَيَقُوْمُوْنَ لَايَدْخُلُ مِنْهُ أَحَدٌ غَيْرُهُمْ، فَإِذَا دَخَلُوْا أُغْلِقَ، فَلَمْ يَدْخُلْ مِنْهُ أَحَدٌ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत सहल बिन सा'द रضی الله عنه रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जन्नत में एक दरवाज़ा है जिसे रय्यान कहा जाता है, क़ियामत के दिन रोज़ेदार उस में से दाख़िल होंगे और उन के सिवा उस दरवाज़े से कोई दाख़िल नहीं होगा। कहा जाएगाः कहाँ हैं रोज़ेदार ? फिर वो खड़े होंगे, उन के अलावा उस में से कोई दाख़िल नहीं हो सकेगा। जब वो दाख़िल हो जाएंगे तो उसे बन्द कर दिया जाएगा, फिर कोई और उससे दाख़िल नहीं हो सकेगा।''

١٥٥ / ٣٧۔ عَنْ أَبِي أُمَامَةَ رضی الله عنه قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُوْلَ اللهِ، مُرْنِي بِعَمَلٍ قَالَ: عَلَيْكَ بِالصَّوْمِ فَإِنَّهُ لَا عِدْلَ لَهُ، قُلْتُ: يَا رَسُوْلَ اللهِ، مُرْنِي بِعَمَلٍ، قَالَ: عَلَيْكَ بِالصَّوْمِ فَإِنَّهُ لَا عِدْلَ لَهُ.

رَوَاهُ النَّسَائِيُّ وَأَحْمَدُ وَابْنُ خُزَيْمَةَ وَابْنُ حِبَّانَ وَالْحَاكِمُ.

وَقَالَ الْحَاكِمُ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحُ الإِسْنَادِ.

الحديث رقم ٣٦: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: الصوم، باب: الريان للصائمين، ٢ / ٦٧١، الرقم: ١٧٩٧، ومسلم فى الصحيح، كتاب: الصيام، باب: فضل الصيام، ٢ / ٨٠٨، الرقم: ١١٥٢، وابن خزيمة فى الصحيح، ٣ / ١٩٩، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٤ / ٣٠٥، الرقم: ٨٢٩٤، والطبرانى فى المعجم الكبير، ٦ / ١٩٢، الرقم: ٥٩٧٠۔

الحديث رقم ٣٧: أخرجه النسائي في السنن، كتاب: الصيام، باب: في فضل الصائم، ٤ / ١٦٥، الرقم: ٢٢٢٣، وفي السنن الكبرى، ٢ / ٩٢، الرقم: ٢٥٣٣، وأحمد بن حنبل في المسند، ٥ / ٢٤٨۔ ٢٤٩، الرقم: ٢٢١٩٤۔ ٢٢١٩٥، وابن خزيمة في الصحيح، ٣ / ١٩٤، الرقم: ١٨٩٣، وابن حبان في الصحيح، ٨ / ٢١٣، الرقم: ٣٤٢٦، والحاكم في المستدرك، ١ / ٥٨٢، الرقم: ١٥٣٣، والبيهقي في شعب الإيمان، ٣ / ٢٩٧، الرقم: ٣٥٨٧۔

''हज़रत अबू उमामा ﷺ ने रिवायत की कि मैंने अ़र्ज़ कियाः या रसूलल्लाह! मुझे कोई (ऐसा) अ़मल बतायें (जिससे मैं जन्नत में दाख़िल हो जाऊँ) आप ﷺ ने फरमायाः रोज़ा रखो, उसके बराबर कोई अ़मल नहीं है। मैंने (फ़िर) अ़र्ज़ कियाः या रसूलल्लाह! मुझे कोई (और) अ़मल (भी) बतायें, आप ﷺ ने फरमायाः रोज़ा रखो, उसके बराबर कोई अ़मल नहीं है।''

١٥٦ / ٣٨۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: أَتَاكُمْ رَمَضَانُ شَهْرٌ مُبَارَكٌ فَرَضَ اللهُ ﷻ عَلَيْكُمْ صِيَامَهُ تُفْتَحُ فِيْهِ أَبْوَابُ السَّمَاءِ وَتُغْلَقُ فِيْهِ أَبْوَابُ الْجَحِيْمِ وَتُغَلُّ فِيْهِ مَرَدَةُ الشَّيَاطِيْنِ لِلّٰهِ فِيْهِ لَيْلَةٌ خَيْرٌ مِنْ أَلْفِ شَهْرٍ مَنْ حُرِمَ خَيْرَهَا فَقَدْ حُرِمَ. رَوَاهُ النَّسَائِيُّ.

وفي رواية للطبراني: عَنْ أَنَسٍ ﷺ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: هَذَا رَمَضَانَ قَدْ جَاءَ تُفْتَحُ فِيْهِ أَبْوَابُ الْجَنَّةِ وَتُغْلَقُ أَبْوَابُ النَّارِ وَتُغَلُّ فِيْهِ الشَّيَاطِيْنُ. بُعْدًا لِمَنْ أَدْرَكَ رَمَضَانَ فَلَمْ يُغْفَرْ لَهُ إِذَا لَمْ يُغْفَرْ لَهُ فِيْهِ فَمَتَى؟

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः तुम्हारे पास माहे रमज़ान आया, यह मुबारक महीना है, अल्लाह तआ़ला ने तुम पर इसके रोज़े फ़र्ज किए हैं। इसमें आसमानों के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं और जहन्नम के दरवाज़े बन्द कर दिए जाते हैं और बड़े शैतानों को जकड़ दिया जाता है। इस(महीने) में अल्लाह तआ़ला की एक ऐसी रात (भी) है जो हज़ार महीना से अफ़ज़ल है जो इस के सवाब से महरूम हो गया फिर वो महरूम हो गया।''

''और तिबरानी की एक रिवायत में हज़रत अनस ﷺ से मरवी है उन्होंने फरमाया कि

الحديث رقم ٣٨: أخرجه النسائي في السنن، كتاب: الصيام، باب: ذكر الاختلاف على معمر فيه، ٤/ ١٤٢، الرقم: ٢١٠٦، وفي السنن الكبرى، ٢/ ٦٦، الرقم: ٢٤١٦، وابن أبي شيبة في المصنف، ٢/ ٢٧٠، الرقم: ٨٨٦٧، والطبراني في المعجم الأوسط، ٧/ ٣٢٣، والمنذري في الترغيب والترهيب، ٢/ ٦٠، الرقم: ١٤٩٢، والهيثمي في مجمع الزوائد، ٣/ ١٤٣.

मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुनाः रमज़ानुल मुबारक का मुक़द्दस महीना आ गया है। इसमें जन्नत के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं और दोज़ख़ के दरवाज़े बन्द कर दिए जाते हैं। इसमें शैतानों को (ज़ंजीरों में) जकड़ दिया जाता है। वो शख़्स बड़ा ही बदनसीब है जिस ने रमज़ान का महीना पाया लेकिन उसकी बख़्शिश न हुई। अगर उसकी इस (मग्फ़िरत के) महीने में भी बख़्शिश न हुई तो (फ़िर) कब होगी ?''

١٥٧ / ٣٩۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: الصِّيَامُ جُنَّةٌ، وَحِصْنٌ حَصِيْنٌ مِنَ النَّارِ. رَوَاهُ أَحْمَدُ بِإِسْنَادٍ حَسَنٍ وَالْبَيْهَقِيُّ.

وفي رواية: عَنْ جَابِرٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: إِنَّمَا الصِّيَامُ جُنَّةٌ يَسْتَجِنُّ بِهَا الْعَبْدُ مِنَ النَّارِ.(١)

رَوَاهُ أَحْمَدُ بِإِسْنَادٍ حَسَنٍ وَالْبَزَّارُ وَالطَّبَرَانِيُّ وَالْبَيْهَقِيُّ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ से रिवायत करते हैं कि आप ﷺ ने फरमायाः रोज़ा ढाल है और दोज़ख़ की आग से बचाव के लिए महफ़ूज़ क़िला है।''

''और एक रिवायत में हज़रत जाबिर ﷺ ने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ से रिवायत किया है कि आप ﷺ ने फरमायाः रोज़ा ढाल है उस के साथ बन्दा खुद को दोज़ख़ की आग से बचाता है।''

الحديث رقم ٣٩: أخرجه بن حنبل في المسند، ٢/ ٤٠٢، الرقم: ٩٢١٤، والبيهقي في شعب الإيمان، ٣/ ٢٨٩، الرقم: ٣٥٧١، والمنذري في الترغيب والترهيب، ٢/ ٥٠، الرقم: ١٤٥١، وقال: إسناده حسن، وابن رجب في جامع العلوم والحكم، ١/ ٢٧١، والهيثمي في مجمع الزوائد، ٣/ ١٨٠، وقال: إسناده حسن.

(١) أخرجه أحمد بن حنبل في المسند، ٣/ ٣٩٦، الرقم: ١٥٢٩٩، والبزار عن ابن أبي الوقاص ﷺ، ٦/ ٣٠٩، الرقم: ٢٣٢١، والطبراني في المعجم الكبير، ٩/ ٥٨، الرقم: ٨٣٨٦، والبيهقي في شعب الإيمان، ٣/ ٢٩٤، الرقم: ٣٥٨٢، والمنذري في الترغيب والترهيب، ٢/ ٥٠، الرقم: ١٤٥٢، وقال: إسناد حسن، وابن رجب في جامع العلوم والحكم، ١/ ٢٧١، والهيثمي في مجمع الزوائد، ٣/ ١٨٠، وقال: رواه أحمد وإسناده حسن.

١٥٨ / ٤٠۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضي الله عنه قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صلى الله عليه وآله وسلم: يَقُوْلُ اللهُ تَعَالَى: كُلُّ عَمَلِ ابْنِ آدَمَ لَهُ فَالْحَسَنَةُ بِعَشْرِ أَمْثَالِهَا إِلَى سَبْعِ مِائَةِ ضِعْفٍ إِلَّا الصِّيَامَ هُوَ لِي وَ أَنَا أَجْزِي بِهِ إِنَّهُ يَتْرُكُ الطَّعَامَ وَشَهْوَتَهُ مِنْ أَجْلِي وَيَتْرُكُ الشَّرَابَ وَشَهْوَتَهُ مِنْ أَجْلِي فَهُوَ لِي وَأَنَا أَجْزِي بِهِ.

رَوَاهُ الدَّارِمِيُّ وَأَحْمَدُ.

''हज़रत अबू हुरैरा रضي الله عنه से मरवी है कि रसूलुल्लाह صلى الله عليه وآله وسلم ने फरमायाः अल्लाह तआला ने फरमायाः आदमी का हर अ़मल उसके लिए है और हर नेकी का सवाब दस गुना से ले कर सात सौ गुना तक है। सिवाए रोज़े के कि वो मेरे लिए है और मैं ही उस की जज़ा अ़ता करता हूँ, यक़ीनन वो (रोज़ेदार) खाना और शहवते नफ़्सानी को मेरी वजह से तर्क करता है और अपना पीना और शहवत मेरी वजह से तर्क करता है, फिर वो (रोज़ा) मेरे लिए है और मैं ही उसकी जज़ा अ़ता करता हूँ।''

١٥٩ / ٤١۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضي الله عنه، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وآله وسلم قَالَ: إِذَا نَسِيَ أَحَدُكُمْ، فَأَكَلَ، أَوْ شَرِبَ، فَلْيُتِمَّ صَوْمَهُ، فَإِنَّمَا أَطْعَمَهُ اللهُ وَسَقَاهُ.

مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ، وَهَذَا لَفْظُ الْبُخَارِيِّ.

الحديث رقم ٤٠: أخرجه الدارمي في السنن، ٢ / ٤٠، الرقم: ١٧٧٠، وأحمد بن حنبل في المسند، ٢ / ٤٤٣، الرقم: ٩٧١٢، وابن خزيمة في الصحيح، ٣ / ١٩٧، الرقم: ١٨٩٨، والمنذري في الترغيب والترهيب، ٢ / ٤٧، الرقم: ١٤٤٢۔

الحديث رقم ٤١: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: الصوم، باب: الصائم إذا أكل أو شرب ناسيا، ٢ / ٦٨٢، الرقم: ١٨٣١، وفى كتاب: الأيمان والنذور، باب: إذا حنث ناسيا في الأيمان، ٦ / ٢٤٥٥، الرقم: ٦٢٩٢، ومسلم فى الصحيح، كتاب: الصيام، باب: أكل الناسي وشربه وجماعة لا يفطر، ٢ / ٨٠٩، الرقم: ١١٥٥، وابن ماجه فى السنن، كتاب: الصيام، باب: ماجاء فيمن أفطر ناسيا، ١ / ٥٣٥، الرقم: ١٦٧٣، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٢ / ٤٢٥، الرقم: ٩٤٨٥، والنسائى فى السنن الكبرى، ٢ / ٢٤٤، الرقم: ٣٢٧٥۔

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जब तुम में से कोई शख़्स भूल जाये और खा–पी ले तो उसे चाहिए कि वो अपना रोज़ा पूरा करे क्योंकि उसे अल्लाह तआला ने ही तो खिलाया पिलाया है।''

١٦٠ / ٤٢۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لِكُلِّ شَيءٍ زَكَاةٌ وَ زَكَاةُ الْجَسَدِ الصَّوْمُ. وَقَالَ: الصِّيَامُ نِصْفُ الصَّبْرِ.

رَوَاهُ ابْنُ مَاجَه وَالطَّبَرَانِيُّ وَالْبَيْهَقِيُّ.

وفي رواية: صَلُّوْا تَنْجَحُوْا وَزَكُّوْا تُفْلِحُوْا وَصُوْمُوْا تَصِحُّوْا وَسَافِرُوْا تَغْنَمُوْا. رَوَاهُ الرَّبِيْعُ.(١)

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया, हर एक चीज़ की ज़कात है और जिस्म की ज़कात रोज़ा है और रोज़ा आधा सब्र है।''

''और एक रिवायत में है कि नमाज़ पढ़ो, नजात पाओगे, और ज़कात अदा करो फ़लाह पा जाओगे, और रोज़े रखो, सेहत व तन्दरुस्ती पाओगे और सफ़र करो ग़नी हो जाओगे।''

١٦١ / ٤٣۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ، قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: مَنْ لَمْ يَدَعْ

الحديث رقم ٤٢: أخرجه ابن ماجه فى السنن، كتاب: الصيام، باب: فى الصوم زكاة الجسد، ١ / ٥٥٥، الرقم:١٧٤٥، والطبرانى فى المعجم الكبير، ٦ / ١٩٣، الرقم: ٥٩٧٣، والقضاعى فى مسند الشهاب، ١ / ١٦٢، الرقم:٢٢٩، والبيهقى فى شعب الإيمان، ٣ / ٢٩٢، الرقم:٣٥٧٧، والديلمى فى مسند الفردوس، ٣ / ٣٣١، الرقم:٤٩٩٦، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٢ / ٥١، الرقم:١٤٥٩، والهيثمى فى مجمع الزوائد، ٣ / ١٨٢۔

(١): أخرجه الربيع في المسند، ١ / ١٢٢، الرقم: ٢٩١۔

الحديث رقم ٤٣: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: الصوم، باب: من لم يدع قول الزور والعمل به فى الصوم، ٢ / ٦٧٣، الرقم: ١٨٠٤، وفى كتاب: الأدب، باب: قول الله تعالىٰ: واجتنبوا قول الزور، ٥ / ٢٢٥١، الرقم: ٥٧١٠، والترمذى فى السنن، كتاب: الصوم عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء فى التشديد فى الغيبة للصائم، ٣ / ٨٧، الرقم:٧٠٧، وقال أبوعيسى: هذا حديث حسن صحيح، وأبوداود فى السنن، ←

قَولَ الزُّوْرِ وَالْعَمَلَ بِهِ فَلَيْسَ لِلّٰهِ حَاجَةٌ فِي أَنْ يَدَعَ طَعَامَهُ وَشَرَابَهُ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ وَالتِّرْمِذِيُّ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जो शख़्स (रोज़े की हालत में) झूठ बोलना और उस पर (बुरे) अ़मल करना तर्क न करे तो अल्लाह तआला को उसकी कोई ज़रूरत नहीं कि वो खाना पीना छोड़ दे।''

١٦٢ / ٤٤۔ عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ عَمْرٍو رضي الله عنهما أَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ قَالَ: الصِّيَامُ وَالْقُرْآنُ يَشْفَعَانِ لِلْعَبْدِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ. يَقُوْلُ الصِّيَامُ: أَي رَبِّ مَنَعْتُهُ الطَّعَامَ وَالشَّهَوَاتِ بِالنَّهَارِ فَشَفِّعْنِي فِيْهِ وَيَقُوْلُ الْقُرْآنُ: مَنَعْتُهُ النَّوْمَ بِاللَّيْلِ فَشَفِّعْنِي فِيْهِ فَيُشَفَّعَانِ. رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالْحَاكِمُ. وَقَالَ الْحَاكِمُ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र ﷺ बयान करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः रोज़ा और कुरआन क़ियामत के रोज़ बन्दए मोमिन के लिए शफ़ाअत करेंगे। रोज़ा अ़र्ज़ करेगाः ऐ मेरे अल्लाह! दिन के वक़्त मैंने इस को खाने और शहवत से रोके रखा फिर इस के हक़ में मेरी शफ़ाअत कुबूल फरमा और कुरआन कहेगा मैंने रात को इसे जगाए रखा फिर इसके हक़

.... كتاب: الصوم، باب: الغيبة للصائم، ٢ / ٣٠٧، الرقم: ٢٣٦٢، وابن ماجه فى السنن، كتاب: الصيام، باب: ماجاء فى الغيبة والرفث للصائم، ١ / ٥٣٩، الرقم: ١٦٨٩، والنسائى فى السنن الكبرى، ٢ / ٢٣٨، الرقم: ٣٢٤٧، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٢ / ٤٥٢، الرقم: ٩٨٣٨، وابن الجعد فى المسند، ١ / ٤١٤، الرقم: ٢٨٣١۔

الحديث رقم ٤٤: أخرجه أحمد بن حنبل فى المسند، ٢ / ١٧٤، الرقم: ٦٦٢٦، والحاكم فى المستدرك، ١ / ٧٤٠، الرقم: ٢٠٣٦، وابن المبارك فى الزهد، ١ / ١١٤، الرقم: ٣٨٥، والبيهقى فى شعب الإيمان، ٢ / ٣٤٦، الرقم: ١٩٩٤، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٢ / ٥٠، الرقم: ١٤٥٥، وقال: رواه الطبرانى في الكبير ورجاله محتج بهم في الصحيح ورواه ابن أبي الدنيا في كتاب الجوع وغيره بإسناد حسن، والهيثمى فى مجمع الزوائد، ٣ / ١٨١۔

में मेरी शफ़ाअत क़ुबूल फरमा, फिर दोनों की शफ़ाअत क़ुबूल कर ली जाएगी।''

١٦٣ / ٤٥۔ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رضي الله عنهما عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: اسْتَعِيْنُوْا بِطَعَامِ السَّحْرِ عَلَى صِيَامِ النَّهَارِ وَبِالْقَيْلُوْلَةِ عَلَى قِيَامِ اللَّيْلِ.

رَوَاهُ ابْنُ مَاجَه وَابْنُ خُزَيْمَةَ وَالْحَاكِمُ.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास ﷺ ने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ से रिवायत बयान की, आप ﷺ ने फरमायाः सहरी के खाने के ज़रिये दिन का रोज़ा (पूरा करने) के लिए मदद लो और क़ैलूला (दोपहर को कुछ देर की नींद) के ज़रिये रात के क़ियाम के लिए मदद लो।''

الحديث رقم ٤٥: أخرجه ابن ماجه في السنن، كتاب: الصيام، باب: ما جاء في السحور، ١ / ٥٤٠، الرقم: ١٦٩٣، وابن خزيمة في الصحيح، ٣ / ٢١٤، الرقم: ١٩٣٩، والحاكم في المستدرك، ١ / ٥٨٨، الرقم: ١٥٥١، والمنذري في الترغيب والترهيب، ٢ / ٨٩، الرقم: ١٦٢٠.

فَصْلٌ فِي صِيَامِ التَّطَوُّعِ

नफ़्ली रोज़ों का बयान

١٦٤ / ٤٦۔ عَنْ عَبْدِ اللهِ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: يَا مَعْشَرَ الشَّبَابِ مَنِ اسْتَطَاعَ الْبَاءَةَ فَلْيَتَزَوَّجْ فَإِنَّهُ أَغَضُّ لِلْبَصَرِ وَ أَحْصَنُ لِلْفَرْجِ وَمَنْ لَمْ يَسْتَطِعْ فَعَلَيْهِ بِالصَّوْمِ فَإِنَّهُ لَهُ وِجَاءٌ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद ﷺ से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ऐ नौजवानो! जो तुम में औरतों के हुक़ूक़ अदा करने की ताक़त रखता है तो वो ज़रूर निकाह करे क्योंकि यह निगाह को झुकाता है और शर्मगाह की हिफ़ाज़त करता है और जो निकाह की ताक़त न रखे तो उसके लिए ज़रूरी है कि वो रोज़े रखे, बेशक यह उसके लिए (बुराई से) बचाव का ज़रिया है।''

١٦٥ / ٤٧۔ عَنْ أَبِي أَيُّوبَ الْأَنْصَارِيِّ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ ﷺ: قَالَ: مَنْ

الحديث رقم ٤٦: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: النكاح، باب: من لم يستطع الباءة فليصم، ٥/ ١٩٥٠، الرقم: ٤٧٧٩، وفي كتاب: الصوم، باب: الصوم لمن خاف على نفسه العزبة، ٢/ ٦٧٣، الرقم: ١٨٠٦، ومسلم في الصحيح، كتاب: النكاح، باب: استحباب النكاح لمن تاقت نفسه إليه ووجده مؤنة، ٢/ ١٠١٨۔ ١٠١٩، الرقم: ١٤٠٠، وأبوداود في السنن، كتاب: النكاح، باب: التحريض على النكاح، ٢/ ٢١٩، الرقم: ٢٠٤٦، والنسائي في السنن، كتاب: الصيام، باب: في فضل الصائم، ٤/ ٨١٦٩، الرقم: ٢٢٣٩، ٢٢٤١، وابن ماجه في السنن، كتاب: النكاح، باب: ماجاء في فضل النكاح، ١/ ٥٩٢، الرقم: ١٨٤٥، وأحمد بن حنبل في المسند، ١/ ٤٢٥، الرقم: ٤٠٣٥، وابن حبان في الصحيح، ٩/ ٣٣٥، الرقم: ٤٠٢٦۔

الحديث رقم ٤٧: أخرجه مسلم فى الصحيح، كتاب: الصيام، باب: استحباب صوم ستة أيام من شوال إتباعا لرمضان، ٢/ ٨٢٢، الرقم/ ١١٦٤، والترمذى فى السنن، كتاب: الصوم عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء فى صيام ستة أيام من شوال، ٣/ ١٣٢، الرقم:٧٥٩، وأبوداود فى السنن، كتاب: الصوم، باب: فى ←

صَامَ رَمَضَانَ ثُمَّ أَتْبَعَهُ سِتًّا مِنْ شَوَّالٍ كَانَ كَصِيَامِ الدَّهْرِ.
رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَالتِّرْمِذِيُّ.

''हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमायाः जो शख़्स रमज़ानुल मुबारक के रोज़े रखे, फिर उस के बाद शव्वाल के छः रोज़े रखे गोया उसने उम्र भर के रोज़े रखे।''

١٦٦/ ٤٨. عَنْ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ ﷺ قَالَ: قَالَ: رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِذَا كَانَتْ لَيْلَةُ النِّصْفِ مِنْ شَعْبَانَ فَقُوْمُوْا لَيْلَهَا وَصُوْمُوْا نَهَارَهَا فَإِنَّ اللهَ يَنْزِلُ فِيْهَا لِغُرُوْبِ الشَّمْسِ إِلَى سَمَاءِ الدُّنْيَا فَيَقُوْلُ: أَلاَ مِنْ مُسْتَغْفِرٍ لِي فَأَغْفِرَ لَهُ؟ أَلا مِنْ مُسْتَرْزِقٍ فَأَرْزُقَهُ؟ أَلاَ مُبْتَلًى فَأُعَافِيَهُ؟ أَلا كَذَا أَلا كَذَا؟ حَتَّى يَطْلُعَ الْفَجْرُ. رَوَاهُ ابْنُ مَاجَه.

''हज़रत अली बिन अबी तालिब ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमायाः जब पन्द्रह शाबान की रात हो तो उस रात को क़ियाम किया करो और दिन को रोज़ा रखा करो क्योंकि अल्लाह तआला गुरूबे आफ़ताब के वक़्त आसमानी दुनिया पर नुजूल फरमाता है और फरमाता है कि : क्या कोई मेरी बख़्शिश का तालिब है कि मैं उसे बख़्श दूँ? क्या कोई रिज़्क़ माँगने वाला है कि मैं उसे रिज़्क़ दूँ? क्या कोई बीमार है कि मैं उसे शिफ़ा दूँ? क्या कोई ऐसे है? ऐसे है? यहाँ तक कि फ़ज्र तुलूअ हो जाती है।''

.... صوم ستة أيام من شوال، ٢/ ٣٢٤، الرقم:٢٤٣٣، وابن ماجه فى السنن، كتاب: الصيام، باب: صيام ستة أيام من شوال، ١٠/ ٥٤٧، الرقم:١٧١٦، والنسائى فى السنن الكبرى، ٢/ ١٦٤، الرقم:٢٨٦٦، والطبرانى فى المعجم الكبير، ٤/ ١٣٥، الرقم:٣٩٠٨، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٢/ ٦٦٠، الرقم: ١٥١٢.

الحديث رقم ٤٨: أخرجه ابن ماجه فى السنن، كتاب: إقامة الصلاة والسنة فيها، باب: ماجاء في ليلة النصف من شعبان، ١/ ٤٤٤، الرقم:١٣٨٨، والكنانى فى مصباح الزجاجة، ٢/ ١٠، الرقم:٤٩١، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٢/ ٧٤، الرقم:١٥٥٠.

١٦٧ / ٤٩۔ عَنْ أَبِي قَتَادَةَ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ سُئِلَ عَنْ صِيَامِ يَوْمِ عَاشُوْرَاءَ، فَقَالَ: يُكَفِّرُ السَّنَةَ الْمَاضِيَةَ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَالتِّرْمِذِيُّ.

''हज़रत अबू क़तादह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ से आशूरा के रोज़े के बारे में पूछा गया तो आप ﷺ ने फरमाया, यह रोज़ा पिछले साल के गुनाहों को मिटा देता है।''

١٦٨ / ٥٠۔ عَنْ أَبِي قَتَادَةَ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ سُئِلَ عَنْ صَوْمِ يَوْمِ الاِثْنَيْنِ فَقَالَ: ذَلِكَ يَوْمٌ وُلِدْتُ فِيْهِ، وَيَوْمٌ بُعِثْتُ، أَوْ أُنْزِلَ عَلَيَّ فِيْهِ.

رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَالنَّسَائِيُّ وَأَحْمَدُ.

''हज़रत अबू क़तादह ﷺ से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ से पीर के रोज़े के बारे में पूछा गया, तो आप ﷺ ने फरमायाः यह वो दिन है जिसमें मेरी विलादते बा सआदत हुई और इसी दिन मैं मबऊस हुआ या इसी दिन मुझ पर कुरआन नाज़िल हुआ।''

الحديث رقم ٤٩: أخرجه مسلم فى الصحيح، كتاب: الصيام، باب: استحباب صيام ثلاثة أيام من كل شهر وصوم يوم عرفة وعاشوراء، ٢/٨١٩، الرقم:١١٦٢، والترمذى فى السنن، كتاب: الصوم عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء فى الحث صوم يوم عاشوراء، ٣/١٢٦، الرقم:٧٥٢، وأبوداود فى السنن، كتاب: الصيام، باب: فى صوم الدهر تطوعا، ٢/٣٢١، الرقم:٢٤٢٥، وابن ماجه فى السنن، كتاب: الصيام، باب: صيام يوم عاشوراء، ١/٥٥٣، الرقم:١٧٣٨، والنسائى فى السنن الكبرى، ٢/١٥٠، الرقم:٢٧٩٦، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٥/٣٠٨، الرقم:٢٢٦٧٤۔

الحديث رقم٥٠: أخرجه مسلم فى الصحيح، كتاب: الصيام، باب: استحباب صيام ثلاثة أيام من كل شهر وصوم يوم عرفة وعاشوراء والاثنين والخميس، ٢/٨١٩، الرقم:١١٦٢، والنسائى فى السنن الكبرى، ٢/١٤٦، الرقم:٢٧٧٧، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٥/٢٩٧، الرقم: ٢٢٥٩٤، وابن حبان فى الصحيح، ٨/٤٠٣، الرقم:٣٦٤٢، وعبد الرزاق فى المصنف، ٤/٢٩٥، الرقم:٧٨٦٥، وأبويعلى فى المسند، ١/١٣٣، الرقم:١٤٤، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٤/٣٠٠، الرقم: ٨٢٥٩۔

١٦٩ / ٥١۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ قَالَ: تُعْرَضُ الْأَعْمَالُ يَوْمَ الاِثْنَيْنِ وَالْخَمِيْسِ فَأُحِبُّ أَنْ يُعْرَضَ عَمَلِي وَأَنَا صَائِمٌ.

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَعَبْدُ الرَّزَّاقِ.

وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमायाः पीर और जुमेरात को आ'माल (बारगाहे इलाही में) पेश किए जाते हैं, मैं चाहता हूँ कि मेरा अ़मल रोज़े की हालत में पेश हो।''

١٧٠ / ٥٢۔ عَنْ أَبِي قَتَادَةَ ﷺ قَالَ: سُئِلَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ عَنْ يَوْمِ عَرَفَةَ قَالَ: يُكَفِّرُ السَّنَةَ الْمَاضِيَةَ وَالْبَاقِيَةَ. رواه مسلم والترمذي: إِلَّا أَنَّهُ قَالَ: صِيَامُ يَوْمِ عَرَفَةَ إِنِّي أَحْتَسِبُ عَلَى اللهِ أَنْ يُكَفِّرَ السَّنَةَ الَّتِي بَعْدَهُ وَالسَّنَةَ الَّتِي قَبْلَهُ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَالتِّرْمِذِيُّ.

وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: حَدِيْثُ أَبِي قَتَادَةَ حَدِيْثٌ حَسَنٌ.

''हज़रत अबू क़तादह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ से यौमे अरफ़ा (नौवीं ज़िल्हिज्जा के रोज़े) के बारे में पूछा गया तो आप ﷺ ने फरमायाः (यौमे अरफ़ा का

الحديث رقم ٥١: أخرجه الترمذي فى السنن، كتاب: الصوم عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء فى صوم يوم الاثنين والخميس، ٣ / ١٢٢، الرقم: ٧٤٧، وعبد الرزاق فى المصنف، ٤ / ٣١٤، الرقم: ٧٩١٧، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٢ / ٧٨، الرقم: ١٥٦٩۔

الحديث رقم ٥٢: أخرجه مسلم فى الصحيح، كتاب: الصيام، باب: استحباب صيام ثلاثة أيام من كل شهر وصوم يوم عرفة، ٢ / ٨١٩، الرقم: ١١٦٢، والترمذي فى السنن، كتاب: الصوم عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء فى فضل صوم يوم عرفة، ٣ / ١٢٤، الرقم: ٧٤٩، وأبوداود فى السنن، كتاب: الصوم، باب: فى صوم الدهر تطوعا، ٢ / ٣٢١، الرقم: ٢٤٢٥، وابن ماجه فى السنن، كتاب: الصيام، باب: صيام يوم عرفة، ١ / ٥٥١، الرقم: ١٧٣٠، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٥ / ٣٠٨، الرقم: ٢٢٦٧٤۔

रोज़ा) पिछले और आने वाले साल के गुनाहों का कफ़्फ़ारा है। (तिर्मिज़ी के अल्फ़ाज़ यह हैं) की यौमे अ़रफ़ा के रोज़ों के बारे में मुझे अल्लाह तआ़ला से उम्मीद है कि वो इसे पिछले और आने वाले साल का कफ़्फ़ारा बना देता है।''

١٧١ / ٥٣۔ عَنْ أُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ رضي الله عنهما، قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُوْلَ اللهِ ﷺ، لَمْ أَرَکَ تَصُوْمُ مِنْ شَهْرٍ مِنَ الشُّهُوْرِ مَا تَصُوْمُ مِنْ شَعْبَانَ؟ قَالَ: ذَاکَ شَهْرٌ يَغْفُلُ النَّاسُ عَنْهُ بَيْنَ رَجَبٍ وَ رَمَضَانَ وَهُوَ شَهْرٌ تُرْفَعُ فِيْهِ الْأَعْمَالُ إِلَی رَبِّ الْعَالَمِيْنَ فَأُحِبُّ أَنْ يُرْفَعَ عَمَلِي وَأَنَا صَائِمٌ.

رَوَاهُ النَّسَائِيُّ وَأَحْمَدُ.

''हज़रत उसामा बिन ज़ैद رضي الله عنهما रिवायत करते हैं कि मैंने अ़र्ज़ किया: या रसूलल्लाह! जिस क़द्र आप माहे शाबान में (नफ़्ली) रोज़े रखते हैं इस क़द्र मैंने आप को किसी और महीने में (नफ़्ली) रोज़े रखते हुऐ नहीं देखा? आप ﷺ फरमाया: यह एक ऐसा महीना है जो रजब और रमज़ान के दरमियान में (आता) है और लोग उससे ग़फ़लत बरतते हैं हालांकि इस महीने में (पूरे साल के) अ़मल अल्लाह तआ़ला की तरफ़ उठाए जाते हैं। लिहाज़ा मैं चाहता हूँ कि मेरे अ़मल रोज़ादार होने की हालत में उठाए जाएं।''

الحديث رقم ٥٣: أخرجه النسائی فی السنن، کتاب: الصيام، باب: صوم النبي ﷺ بأبي هو وأمّي وذکر اختلاف الناقلين للخبر في ذلك، ٤ / ٢٠١، الرقم: ٢٣٥٧، وأحمد بن حنبل فی المسند، ٥ / ٢٠١، الرقم: ٢١٨٠١، والطحاوی فی شرح معانی الآثار، ٢ / ٨٢، وابن أبي شيبة فی المصنف، ٢ / ٣٤٦، الرقم: ٩٧٦٥، ونحوه البزار فی المسند، ٧ / ٦٩، الرقم: ٢٦١٧، والمقدسی فی الأحاديث المختارة، ٤ / ١٠٨، الرقم: ١٣١٩، وقال: إسناده حسن، والبغوی فی مسند أسامة، ١ / ١٢٣، الرقم: ٤٨، والمحاملی فی أمالی، ١ / ٤١٦، الرقم: ٤٨٥۔

فَصْلٌ فِي فَضْلِ قِيَامِ رَمَضَانَ

﴿फ़ज़ीलते क़ियामे रमज़ान का बयान﴾

١٧٢ / ٥٤. عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضي الله عنه أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ قَامَ رَمَضَانَ إِيْمَانًا وَاحْتِسَابًا غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अबू हुरैरा رضي الله عنه से मरवी है कि रसूलल्लाह ﷺ ने फरमायाः जिसने रमज़ान में बहालते ईमान सवाब की निय्यत से क़ियाम किया तो उसके पिछले गुनाह माफ कर दिए गए ।''

١٧٣ / ٥٥. عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضي الله عنه، قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ صَامَ

الحديث رقم ٥٤: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: الإيمان، باب: تطوع قيام رمضان من الإيمان، ١ / ٢٢، الرقم: ٣٧، ومسلم في الصحيح، كتاب: صلاة المسافرين وقصرها، باب: الترغيب في قيام رمضان، ١ / ٥٢٣، الرقم: ٧٥٩، والنسائي في السنن، كتاب: قيام الليل وتطوع النهار، باب: ثواب من قام رمضان إيمانا واحتسابا، ٣ / ٢٠١، الرقم: ١٦٠٢. ١٦٠٣، وأحمد بن حنبل في المسند، ٢ / ٤٠٨، الرقم: ٩٢٧٧، وابن خزيمة في الصحيح، ٣ / ٣٣٦، الرقم: ٢٢٠٣، والدارمي في السنن، ٢ / ٤٢، الرقم: ١٧٧٦.

الحديث رقم ٥٥: أخرجه البخارى في الصحيح، كتاب: صلاة التراويح، باب: فضل ليلة القدر، ٢ / ٧٠٩، الرقم: ١٩١٠، ٣٧، ٣٨، ١٨٠١، ١٩٠٥، ومسلم فى الصحيح كتاب: صلاة المسافرين وقصرها، باب: الترغيب فى قيام رمضان وهو التراويح، ١ / ٥٢٣، الرقم: ٧٦٠، والترمذى فى السنن، كتاب: الصوم عن رسول الله ﷺ، باب: الترغيب فى قيام رمضان وما جاء فيه من الفضل، ٣ / ١٧١، الرقم: ٨٠٨، وأبوداود فى السنن، كتاب: الصلاة، باب: تفريع أبواب شهر رمضان، باب: فى قيام شهر رمضان، ٢ / ٤٩، الرقم: ١٣٧١، والنسائى فى السنن، كتاب: الصيام، باب: ثواب من قام رمضان وصامه إيمانا واحتسابا، ٤ / ١٥٦، الرقم: ٢٢٠٢، وابن ماجه فى السنن، كتاب: الصيام، باب: ماجاء فى فضل شهر رمضان، ١ / ٥٢٦، الرقم: ١٦٤١.

رَمَضَانَ إِيْمَانًا وَاحْتِسَابًا غُفِرَلَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ. وَمَنْ قَامَ رَمَضَانَ إِيْمَاناً وَإِحْتِسَابًا غُفِرَلَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ. وَمَنْ قَامَ لَيْلَةَ الْقَدْرِ إِيْمَانًا واحْتِسَابًا غُفِرَلَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जिस शख़्स ने हालते ईमान में और सवाब की निय्यत से रमज़ान के रोज़े रखे तो उस के पिछले गुनाह माफ कर दिए जाते हैं और जो रमज़ान में ईमान की हालत और सवाब की निय्यत से क़ियाम करता है तो उसके (भी) पिछले गुनाह माफ कर दिए जाते हैं और जो लैलतुल क़द्र में ईमान की हालत और सवाब की निय्यत से क़ियाम करे उसके पिछले गुनाह बख़्श दिए जाते हैं।''

١٧٤ / ٥٦۔ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ ﷺ عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ أَنَّهُ ذَكَرَ شَهْرَ رَمضَانَ فَفَضَّلَهُ عَلَى الشُّهُوْرِ، وَقَالَ: مَنْ قَامَ رَمَضَانَ إِيْمَانًا وَاحْتِسَابًا خَرَجَ مِنْ ذُنُوْبِهِ كَيَوْمٍ وَلَدَتْهُ أُمُّهُ. رَوَاهُ النَّسَائِيُّ.

وفي رواية له: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّ اللهَ تَبَارَكَ وَتَعَالَى فَرَضَ صِيَامَ رَمَضَانَ عَلَيْكُمْ، وَسَنَنْتُ لَكُمْ قِيَامَهُ، فَمَنْ صَامَهُ وَقَامَهُ إِيْمَانًا وَاحْتِسَابًا خَرَجَ مِنْ ذُنُوْبِهِ كَيَوْمٍ وَلَدَتْهُ أُمُّهُ.

رَوَاهُ النَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَه.

''हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन औफ़ ﷺ रसूलुल्लाह ﷺ से रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने रमज़ानुल मुबारक का ज़िक्र फरमाया तो सब महीनों पर उसे फ़ज़ीलत दी। इसके बाद आप ﷺ ने फरमायाः जो शख़्स ईमान और हुसूले सवाब की निय्यत के साथ रमज़ान की रातों में क़ियाम करता है तो वो गुनाहों से यूँ पाक साफ़ हो जाता है जैसे वो उस दिन था जब उसे उसकी माँ ने जन्म दिया था।''

الحديث رقم ٥٦: أخرجه النسائی فی السنن، کتاب: الصيام، باب: ذكر اختلاف يحيى بن أبی كثير والنضر بن شيبان فيه، ٤ / ١٥٨، الرقم: ٢٢٠٨۔٢٢١٠، وابن ماجه فی السنن، كتاب: إقامة الصلاة والسنة فيها، باب: ماجاء فی قيام شهر رمضان، ١ / ٤٢١، الرقم: ١٣٢٨۔

''और एक रिवायत में है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः बेशक अल्लाह तआला ने रमज़ान के रोज़े फ़र्ज़ किए हैं और मैंने तुम्हारे लिए उसके क़ियाम (नमाज़े तरावीह) को सुन्नत क़रार दिया है, लिहाज़ा जो शख़्स ईमान और हुसूले सवाब की निय्यत के साथ माहे रमज़ान के दिनों में रोज़े रखता और रातों में क़ियाम करता है तो वो गुनाहों से यूँ पाक साफ़ हो जाता है, जैसे वो उस दिन था जब उसे उसकी माँ ने जन्म दिया था।''

١٧٥ / ٥٧ـ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضي الله عنه قَالَ: كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ، يُرَغِّبُ فِي قِيَامِ رَمَضَانَ، مِنْ غَيْرِ أَنْ يَأْمُرَ بِعَزِيْمَةٍ، فَيَقُوْلُ: مَنْ قَامَ رَمَضَانَ إِيْمَانًا وَاحْتِسَابًا، غُفِرَلَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ. فَتُوُفِّيَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ، وَالْأَمْرُ عَلَى ذَلِكَ، ثُمَّ كَانَ الْأَمْرُ عَلَى ذَلِكَ فِي خِلَافَةِ أَبِي بَكْرٍ وَصَدْرًا مِنْ خِلَافَةِ عُمَرَ عَلَى ذَلِكَ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ وَهَذَا لَفْظُ مُسْلِمٍ.

''हज़रत अबू हुरैरा रضی الله عنه से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ नमाज़े तरावीह की रग़बत दिलाया करते थे लेकिन हुक्म नहीं फरमाते थे, चुनान्चे फरमाया कि जिस ने रमज़ानुल मुबारक में

الحديث رقم ٥٧: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: صلاة التروايح، باب: فضل من قام رمضان، ٢/٧٠٧، الرقم: ١٩٠٥، ومسلم في الصحيح، كتاب: صلاة المسافرين وقصرها، باب: الترغيب في قيام رمضان وهو التراويح، ١/٥٢٣، الرقم: ٧٥٩، والترمذي في السنن، كتاب: الصوم عن رسول الله ﷺ، باب: الترغيب في قيام رمضان وما جاء فيه من الفضل، ٣/١٧١، الرقم: ٨٠٨، وقال أبوعيسى: هذا حديث حسن صحيح، وأبوداود في السنن، كتاب: الصلاة، باب: في قيام شهر رمضان، ٢/٤٩، الرقم: ١٣٧١، والنسائي في السنن، كتاب: الصيام، باب: ثواب من قام رمضان وصامه إيمانا واحتسابا، ٤/١٥٤، الرقم: ٢١٩٢، ومالك في الموطأ، كتاب: الصلاة في رمضان، باب: الترغيب في الصلاة في رمضان، ١/١١٣، الرقم: ٢٤٩، وأحمد بن حنبل في المسند، ٢/٢٨١، الرقم: ٧٧٧٤، وابن خزيمة في الصحيح، ٣/٣٣٨، الرقم: ٢٢٠٧، وابن حبان في الصحيح، ١/٣٥٣، الرقم: ١٤١، وعبد الرزاق في المصنف، ٤/ ٢٥٨، الرقم: ٧٧١٩، والبيهقي في السنن الكبرى، ٢/٤٩٣، الرقم: ٤٣٧٨، والطبراني في المعجم الأوسط، ٩/ ١٢٠، الرقم: ٩٢٩٩.

हुसूल सवाब की निय्यत से और हालते ईमान के साथ क़ियाम किया तो उस के पिछले (तमाम) गुनाह बख़्श दिए जाते हैं। हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के विसाल मुबारक तक नमाज़े तरावीह की यही सूरत बरक़रार रही और ख़िलाफ़ते अबू बक़र ؓ में और फिर खिलाफ़ते उमर फ़ारूक़ ؓ के शुरू तक यही सूरत बरक़रार रही।''

١٧٦ / ٥٨. عَنْ مَالِكٍ ؓ أَنَّهُ سَمِعَ مَنْ يَثِقُ بِهِ مِنْ أَهْلِ الْعِلْمِ يَقُوْلُ: إِنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ أُرِيَ أَعْمَارَ النَّاسِ قَبْلَهُ أَوْ مَا شَاءَ اللهُ مِنْ ذٰلِكَ فَكَأَنَّهُ تَقَاصَرَ أَعْمَارَ أُمَّتِهِ أَنْ يَبْلُغُوْا مِنَ الْعَمَلِ مِثْلَ الَّذِي بَلَغَ غَيْرُهُمْ فِي طُوْلِ الْعُمْرِ فَأَعْطَاهُ اللهُ لَيْلَةَ الْقَدْرِ خَيْرٌ مِنْ أَلْفِ شَهْرٍ.

رَوَاهُ مَالِكٌ وَالْبَيْهَقِيُّ.

''हज़रत इमाम मालिक ؓ से रिवायत है कि उन्होंने सिक़ा (यानी क़ाबिले ए'तमाद) अहले इल्म को यह कहते हुए सुना कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ को पिछली उम्मतों की उम्रें दिखाई गईं या उस बारे में जो अल्लाह तआला ने चाहा दिखाया तो आप ﷺ ने अपनी उम्मत की कम उम्रों का ख़याल करते हुए सोचा कि क्या मेरी उम्मत इस क़द्र आ'माल कर सकेगी जिस क़द्र दूसरी उम्मतों के लोगों ने लम्बी उम्र की वजह से किए। तो अल्लाह तआला ने आप ﷺ को शबे क़द्र अता फरमा दी जो हज़ार महीनों से भी अफ़ज़ल है।''

١٧٧ / ٥٩. عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ ؓ أَنَّهُ قَالَ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! أَخْبِرْنَا عَنْ لَيْلَةِ الْقَدْرِ؟ فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: هِيَ فِي رَمَضَانَ الْتَمِسُوْهَا فِي

الحديث رقم ٥٨: أخرجه مالك في الموطأ، كتاب: الاعتكاف، باب: ما جاء في ليلة القدر، ١/٣٢١، الرقم: ٦٩٨، والبيهقي في شعب الإيمان، ٣/٣٢٣، الرقم: ٣٦٦٧، والمنذري في الترغيب والترهيب، ٢/٦٥، الرقم: ١٥٠٨.

الحديث رقم ٥٩: أخرجه أحمد بن حنبل في المسند، ٥/٣١٨، ٣٢١، ٣٢٤، الرقم: ٢٢٧٦٥، ٢٢٧٩٣، ٢٢٨١٥، والطبراني في المعجم الأوسط، ٢/٧١، الرقم: ١٢٨٤، والمنذري في الترغيب والترهيب، ٢/٦٥، الرقم: ١٥٠٧، والهيثمي في مجمع الزوائد، ٣/١٧٥-١٧٦.

الْعَشْرِ الْأَوَاخِرِ فَإِنَّهَا وِتْرٌ فِي إِحْدَى وَعِشْرِيْنَ أَوْثَلَاثٍ وَعِشْرِيْنَ أَوْخَمْسٍ وَعِشْرِيْنَ أَوْسَبْعٍ وَعِشْرِيْنَ أَوْ تِسْعٍ وَعِشْرِيْنَ أَوْ فِي آخِرِ لَيْلَةٍ فَمَنْ قَامَهَا إِيْمَانًا وَاحْتِسَابًا غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ وَمَا تَأَخَّرَ.

رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالطَّبَرَانِيُّ.

''हज़रत उबादह बिन सामित ﷺ से मरवी है कि उन्होंने अ़र्ज़ किया: या रसूलल्लाह! हमें शबे क़द्र के बारे में बताएं तो आप ﷺ ने फरमाया, यह (रात) माहे रमज़ान के आख़िरी अशरे में इक्कीसवीं, तेईसवीं, पच्चीसवीं, सत्ताईसवीं, उन्तीसवीं या रमज़ान की आख़िरी रात होती है। जो बन्दा इस में इमानो सवाब के इरादे से क़ियाम करे उस के अगले पिछले (तमाम) गुनाह बख़्श दिए जाते हैं।''

١٧٨ / ٦٠. عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ صَعِدَ الْمِنْبَرَ فَقَالَ: آمِيْنَ. آمِيْنَ. آمِيْنَ. قِيلَ يَا رَسُوْلَ اللهِ، إِنَّکَ حِيْنَ صَعِدْتَ الْمِنْبَرَ قُلْتَ: آمِيْنَ. آمِيْنَ. آمِيْنَ؟ قَالَ: إِنَّ جِبْرِيْلَ عليه السلام أَتَانِي، فَقَالَ: مَنْ أَدْرَکَ شَهْرَ رَمَضَانَ وَ لَمْ يُغْفَرْ لَهُ، فَدَخَلَ النَّارَ، فَأَبْعَدَهُ اللهُ. قُلْ: آمِيْنَ. فَقُلْتُ: آمِيْنَ. وَمَنْ أَدْرَکَ أَبَوَيْهِ أَوْ أَحَدَهُمَا فَلَمْ يَبَرَّهُمَا فَمَاتَ فَدَخَلَ النَّارَ فَأَبْعَدَهُ اللهُ. قُلْ آمِيْنَ. فَقُلْتُ: آمِيْنَ. وَمَنْ ذُکِرْتَ عِنْدَهُ فَلَمْ يُصَلِّ عَلَيْکَ فَمَاتَ فَدَخَلَ النَّارَ فَأَبْعَدَهُ اللهُ قُلْ: آمِيْنَ. فَقُلْتُ: آمِيْنَ.

الحديث رقم ٦٠: أخرجه ابن خزيمة في الصحيح، ٣/١٩٢، الرقم: ١٨٨٨، وابن حبان في الصحيح، ٣/١٨٨، الرقم: ٩٠٧، والبخاري في الأدب المفرد، ١/٢٢٥، الرقم: ٦٤٦، والبزار في المسند، ٤/٢٤٠، الرقم: ١٤٠٥، ٩/٢٤٧، الرقم: ٣٧٩٠، وأبو يعلي في المسند، ١٠/٣٢٨، الرقم: ٥٩٢٢، والبيهقي في السنن الكبرى، ٤/٣٠٤، الرقم: ٨٢٨٧، والطبراني في المعجم الأوسط، ٩/١٧، الرقم: ٨٩٩٤، وفي المعجم الكبير، ٢/٢٤٣، الرقم: ٢٠٢٢، والمنذري في الترغيب والترهيب، ٢/٥٧، الرقم: ١٤٨١.

رَوَاهُ ابْنُ حِبَّانَ وَابْنُ خُزَيْمَةَ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ मिम्बर पर तशरीफ़ फरमा हुए तो तीन बार आमीन, आमीन, आमीन फरमाया, अ़र्ज़ किया गया : या रसूलल्लाह! आप मिम्बर पर जलवा अफ़रोज़ हुए तो आप ने आमीन, आमीन, आमीन फरमाया, (इसकी क्या वजह है ?), आप ﷺ ने फरमायाः जिब्राईल ﷺ मेरे पास हाज़िर हुए और कहने लगे, जिस शख़्स ने माहे रमज़ान पाया और उसकी मग़्फ़िरत ना हो सकी तो वो आग में गया, उसे अल्लाह तआ़ला अपनी रहमत से दूर कर दे। (ऐ हबीबे ख़ुदा !) आप आमीन कहें। उस पर मैंने आमीन कहा और जिस शख़्स ने माँ–बाप दोनों को पाया या उन में से किसी एक को पाया और उन के साथ नेकी ना की और मर गया तो वो आग में गया। अल्लाह तआ़ला उसे अपनी रहमत से दूर कर दे। (ऐ हबीबे खुदा!) आप आमीन कहें। तो मैंने आमीन कहा, और वो शख़्स जिस के पास आप का जिक्र किया गया और उसने आप पर दुरूद न पढ़ा और उसी हालत में मर गया तो वो भी आग में गया, अल्लाह तआ़ला उसे अपनी रहमत से दूर कर दे (ऐ हबीबे खुदा!) आप आमीन कहें, तो मैंने आमीन कहा।''

١٧٩ / ٦١۔ عَنْ عَائِشَةَ رضي الله عنها زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهَا قَالَتْ: كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ إِذَا دَخَلَ شَهْرُ رَمَضَانَ شَدَّ مِئْزَرَهُ ثُمَّ لَمْ يَأْتِ فِرَاشَهُ حَتَّى يَنْسَلِخَ. رَوَاهُ ابْنُ خُزَيْمَةَ وَأَحْمَدُ وَالْبَيْهَقِيُّ.

''हज़रत आइशा رضي الله عنها से मरवी है कि उन्होंने फरमायाः जब माहे रमज़ान शुरू हो जाता तो हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ अपना कमर बन्द कस लेते फिर आप ﷺ अपने बिस्तर पर तशरीफ़ नहीं लाते थे यहाँ तक कि रमज़ान गुज़र जाता।''

الحديث رقم ٦١: أخرجه ابن خزيمة في الصحيح، ٣/٣٤٢، الرقم: ٢٢١٦، وأحمد بن حنبل في المسند، ٦/٦٦، الرقم: ٢٤٤٢٢، والبيهقي في شعب الإيمان، ٣/٣١٠، الرقم: ٣٦٢٤، والسيوطي في الجامع الصغير، ١/١٤٣، الرقم: ٢١١.

١٨٠ / ٦٢. عَنْ عَائِشَةَ رضي الله عنها قَالَتْ: كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ إِذَا دَخَلَ رَمَضَانَ تَغَيَّرَ لَوْنُهُ وَكَثُرَتْ صَلَاتُهُ وَابْتَهَلَّ فِي الدُّعَاءِ وَأَشْفَقَ مِنْهُ. رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ.

''हज़रत आइशा رضي الله عنها से मरवी है कि उन्होंने फरमाया कि जब माहे रमज़ान शुरू होता तो आप ﷺ के चेहरे का रंग मुबारक तब्दील हो जाता और आप ﷺ नमाज़ों की (मज़ीद) कसरत कर देते और अल्लाह तआला से आजिज़ी व गिड़गिड़ा कर दुआ करते और इस माह में निहायत मोहतात रहते।''

١٨١ / ٦٣. عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَبَّاسٍ رضي الله عنهما عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: إِنَّ فِي رَمَضَانَ يُنَادِي مُنَادٍ بَعْدَ ثُلُثِ اللَّيْلِ الْأَوَّلِ أَوْ ثُلُثِ اللَّيْلِ الْآخِرِ أَلَا سَائِلٌ يَسْأَلُ فَيُعْطَى، أَلَا مُسْتَغْفِرٌ يَسْتَغْفِرُ فَيُغْفَرُ لَهُ، أَلَا تَائِبٌ يَتُوْبُ فَيَتُوْبُ اللهُ عَلَيْهِ. رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رضي الله عنها ने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ से रिवायत बयान की कि आप ﷺ ने फरमाया, वेशक रमज़ानुल मुबारक में रात के पहले, तीसरे पहर के बाद या आख़िरी तीसरे पहर के बाद एक निदा करने वाला निदा करता है, है कोई सवाल करने वाला कि वो सवाल करे तो उसे अता किया जाए ? क्या है कोई मग़्फ़िरत का तलबगार कि वो मग़्फ़िरत तलब करे तो उसे बख़्श दिया जाए? क्या है कोई तौबा करने वाला कि वो तौबा करे तो अल्लाह तआला उसकी तौबा क़ुबूल करे।''

١٨٢ / ٦٤. عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ رضي الله عنه أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ يَوْمًا وَحَضَرَ رَمَضَانُ: أَتَاكُمْ رَمَضَانُ شَهْرُ بَرَكَةٍ يَغْشَاكُمُ اللهُ فِيْهِ فَيُنْزِلُ

الحديث رقم ٦٢: أخرجه البيهقي في شعب الإيمان، ٣/ ٣١٠، الرقم: ٣٦٢٥، والسيوطي في الجامع الصغير، ١/ ١٤٣، الرقم: ٢١٢.

الحديث رقم ٦٣: أخرجه البيهقي في شعب الإيمان، ٣/ ٣١١، الرقم: ٣٦٢٨.

الحديث رقم ٦٤: أخرجه المنذري في الترغيب والترهيب، ٢/ ٦٠، الرقم: ١٤٩٠، وقال: رواه الطبراني ورواته ثقات، والهيثمي في مجمع الزوائد، ٣/ ١٤٢، وقال: رواه الطبراني في الكبير.

الرَّحْمَةَ، وَيَحُطُّ الْخَطَايَا، وَيَسْتَجِيبُ فِيهِ الدُّعَاءَ، يَنْظُرُ اللهُ تَعَالَى إِلَى تَنَافُسِكُمْ فِيهِ، وَيُبَاهِي بِكُمْ مَلَائِكَتَهُ فَأَرُوا اللهَ مِنْ أَنْفُسِكُمْ خَيْرًا، فَإِنَّ الشَّقِيَّ مَنْ حُرِمَ فِيهِ رَحْمَةَ اللهِ ﷻ.

رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ وَرُوَاتُهُ ثِقَاتٌ كَمَا قَالَ الْمُنْذِرِيُّ وَالْهَيْثَمِيُّ.

''हज़रत उबादह बिन सामित ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने एक दिन फरमाया जबकि रमज़ानुल मुबारक शुरू हो चुका थाः तुम्हारे पास बरकतों वाला महीना आया है इस महीने में अल्लाह तआला तुम्हें अपनी रहमत से ढाँप लेता है। रहमत नाज़िल फरमाता है, गुनाहों को मिटाता है और दुआएं क़ुबूल फरमाता है। इस महीने में अल्लाह तआला तुम्हारे दिलों पर नज़र फरमाता है और तुम्हारी वजह से अपने फ़रिश्तों के सामने फ़ख्र फरमाता है। लिहाज़ा तुम अपने क़ल्बो बातिन से अल्लाह तआला की बारगाह में नेकी पेश करो क्योंकि बदबख़्त है वो शख़्स जो इस माह में अल्लाह तआला की रहमत से महरूम रहा।''

١٨٣ / ٦٥۔ عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ ذَاكِرُ اللهِ فِي رَمَضَانَ مَغْفُورٌ لَهُ، وَسَائِلُ اللهِ فِيهِ لَا يَخِيبُ.

رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ وَالْبَيْهَقِيُّ.

''हज़रत उमर बिन खत्ताब ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः माहे रमज़ान में अल्लाह तआला का ज़िक्र करने वाला बख़्श दिया जाता है और इस माह में अल्लाह तआला से माँगने वाले को नामुराद नहीं किया जाता।''

الحديث رقم ٦٥: أخرجه الطبراني في المعجم الأوسط، ٦/ ١٩٥، الرقم: ٦١٧٠، ٧/ ٢٢٦، الرقم: ٧٣٤١، والبيهقي في شعب الإيمان، ٣/ ٣١١، الرقم: ٣٦٢٧، والديلمي في مسند الفردوس، ٢/ ٢٤٢، الرقم: ٣١٤١، والمنذري في الترغيب والترهيب، ٢/ ٦٤، الرقم: ١٥٠١، والهيثمي في مجمع الزوائد، ٢/ ٦٤.

فَصْلٌ فِي فَضْلِ الاعْتِكَافِ

﴾फ़ज़ीलते ऐ'तिकाफ़ का बयान﴿

١٨٤ / ٦٦۔ عَنْ عَائِشَةَ رضي الله عنها أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يَعْتَكِفُ الْعَشْرَ الْأَوَاخِرَ مِنْ رَمَضَانَ حَتَّى تَوَفَّاهُ اللهُ ثُمَّ اعْتَكَفَ أَزْوَاجُهُ مِنْ بَعْدِهِ.

مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत आइशा رضي الله عنها से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ रमज़ानुल मुबारक के आख़िरी दिन ऐ'तिकाफ़ किया करते थे, यहाँ तक कि अल्लाह तआला के हुक्म से आप ﷺ का विसाल मुबारक हो गया। फिर आप ﷺ के बाद आप की अज़वाजे मुतह्हेरात (आप ﷺ की पाक बीवियों) ने भी ऐ'तिकाफ़ किया है।''

١٨٥ / ٦٧۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضي الله عنه قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَعْتَكِفُ فِي كُلِّ

الحديث رقم ٦٦: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: الاعتكاف، باب: الاعتكاف في العشر الأواخر والاعتكاف في المساجد، ٢/٧١٣، الرقم: ١٩٢٢، ومسلم فى الصحيح، كتاب: الاعتكاف، باب: اعتكاف العشر الأواخر من رمضان، ٢/٨٣١، الرقم: ١١٧٢، وأبوداود فى السنن، كتاب: الصوم، باب: الاعتكاف، ٢/٣٣١، الرقم: ٢٤٦٢، والترمذى نحوه فى السنن، كتاب: الصوم عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء في الاعتكاف، وقال: حديث حسن صحيح، ٣/١٥٧، الرقم: ٧٩٠، والنسائى فى السنن الكبرى، ٢/٢٥٨، الرقم: ٣٣٣٨، وابن ماجه فى السنن، كتاب: الصيام، باب: فى المعتكف يلزم مكانا من المسجد، ١/٥٦٤، الرقم: ١٧٧٣، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٦/٩٢، الرقم: ٢٤٦٥٧۔

الحديث رقم ٦٧: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: الاعتكاف، باب: الاعتكاف فى العشر الأوسط من رمضان، ٢/٧١٩، الرقم: ١٩٣٩، وأبوداود فى السنن، كتاب: الصوم، باب: أين يكون الاعتكاف، ٢/٣٣٢، الرقم: ٢٤٦٦، وابن ماجه فى السنن، كتاب: الصيام، باب: ماجاء فى الاعتكاف، ١/٥٦٢، الرقم: ١٧٦٩، والنسائى فى السنن الكبرى، ٢/٢٥٩، الرقم: ٣٣٤٣، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٢/٣٣٦، الرقم: ٨٤١٦، والدارمى فى السنن، ٢/٤٣، الرقم: ١٧٧٩۔

رَمَضَانَ عَشْرَةَ أَيَّامٍ، فَلَمَّا كَانَ الْعَامُ الَّذِيَ قُبِضَ فِيْهِ اعْتَكَفَ عِشْرِيْنَ يَوْمًا. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ وَابْنُ مَاجَه.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ हर साल रमज़ानुल मुबारक में दस दिन ऐ'तिकाफ़ फरमाते थे, और जिस साल आप ﷺ का विसाल हुआ उस साल आप ﷺ ने बीस दिन ऐ'तिकाफ़ किया।''

١٨٦ / ٦٨۔ عَنْ عَبْدِ اللهِ ابْنِ عُمَرَ رضي الله عنهما أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ كَانَ يَعْتَكِفُ الْعَشْرَ الْأَوَاخِرَ مِنْ رَمَضَانَ قَالَ نَافِعٌ: وَقَدْ أَرَانِي عَبْدُ اللهِ ﷺ الْمَكَانَ الَّذِي كَانَ يَعْتَكِفُ فِيْهِ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ مِنَ الْمَسْجِدِ.

رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَأَبُوْدَاوُدَ.

''हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर رضي الله عنها बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ रमज़ान के आख़िरी अशरे में ऐ'तिकाफ़ किया करते थे। नाफ़ेअ कहते हैं कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ने मुझे मस्जिद में वो जगह दिखाई जहाँ रसूलुल्लाह ﷺ ऐ'तिकाफ़ फरमाया करते थे।''

١٨٧ / ٦٩۔ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رضي الله عنهما أَنَّ عُمَرَ ﷺ سَأَلَ النَّبِيَّ ﷺ

الحديث رقم ٦٨: أخرجه مسلم فى الصحيح، كتاب: الاعتكاف، باب: اعتكاف العشر الأواخر من رمضان، ٢ / ٨٣٠، الرقم: ١١٧١، وأبوداود فى السنن، كتاب: الصوم، باب: أين يكون الاعتكاف، ٢ / ٣٣٢، الرقم: ٢٤٦٥، وابن ماجه فى السنن، كتاب: الصيام، باب: فى المعتكف يلزم مكانا من المسجد، ١ / ٥٦٤، الرقم: ١٧٧٣۔

الحديث رقم ٦٩: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: الاعتكاف، باب: الاعتكاف ليلا، ٢ / ٧١٤، الرقم: ١٩٢٧، ومسلم فى الصحيح، كتاب: الأيمان، باب: نذر الكافر وما يفعل فيه إذا أسلم، ٣ / ١٢٧٧، الرقم: ١٦٥٦، والترمذى فى السنن، كتاب: الأيمان والنذور عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء في وفاء النذر، ٤ / ١١٢، الرقم: ١٥٣٩، وقال أبوعيسى: حديث عمرو حديث حسن صحيح، وأبوداود فى السنن، كتاب: الأيمان والنذور، باب: من نذر فى الجاهلية ثم أدرك الإسلام، ٣ / ٢٤٢، الرقم: ٣٣٢٥، وابن ماجه فى السنن، كتاب: الكفارات، باب: الوفاء بالنذر، ١ / ٦٨٧، الرقم: ٢١٢٩، وأحمد بن حنبل فى المسند، ١ / ٣٧، الرقم: ٢٥٥، والدارمى فى السنن، ٢ / ٢٣٩، الرقم: ٢٣٣٣۔

قَالَ: كُنْتُ نَذَرْتُ فِي الْجَاهِلِيَّةِ أَنْ أَعْتَكِفَ لَيْلَةً فِي الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ قَالَ: فَأَوْفِ بِنَذْرِكَ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ से रिवायत है कि हज़रत उमर ﷺ ने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ से दरयाफ़्त कियाः मैंने दौरे जाहिलियत में मन्नत मानी थी कि खानए काबा में एक रात का ऐ'तिकाफ़ करूँगा। आप ﷺ ने फरमायाः अपनी मन्नत पूरी करो।''

١٨٨ / ٧٠۔ عَنْ عَائِشَةَ رضي الله عنها قَالَتْ: كَانَ النَّبِيُّ يَمُرُّ الْمَرِيْضَ وَهُوَ مُعْتَكِفٌ، فَيَمُرُّ كَمَا هُوَ وَلَا يُعَرِّجُ يَسْأَلُ عَنْهُ. رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ.

''हज़रत आइशा सिद्दीक़ा رضي الله عنها ने फरमायाः हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ किसी मरीज़ के पास से ऐ'तिकाफ़ की हालत में गुज़रते तो बगैर ठहरे हस्बे मा'मूल गुज़रते जाते और उसका हाल पूछ लेते।''

١٨٩ / ٧١۔ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رضي الله عنهما عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ كَانَ إِذَا اعْتَكَفَ طُرِحَ لَهُ فِرَاشُهُ أَوْ يُوضَعُ لَهُ سَرِيْرُهُ وَرَاءَ أُسْطَوَانَةِ التَّوْبَةِ.
رَوَاهُ ابْنُ مَاجَه وَابْنُ خُزَيْمَةَ.

''हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर رضي الله عنها से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ जब ऐ'तिकाफ़ फरमाते तो आप ﷺ के लिए सुतूने तौबा (मस्जिद नबवी के एक खम्बे का नाम) के पीछे तख़्त या बिस्तर बिछा दिया जाता।''

الحديث رقم ٧٠: أخرجه أبوداود فی السنن، كتاب: الصوم، باب: المعتكف يعود المريض، ٢ / ٣٣٣، الرقم: ٢٤٧٢، والبيهقی فی السنن الكبری، ٤ / ٣٢١، الرقم: ٨٣٧٨۔

الحديث رقم ٧١: أخرجه ابن ماجه فی السنن، كتاب: الصيام، باب: المعتكف يلزم مكانا من المسجد، ١ / ٥٦٤، الرقم: ١٧٧٤، وابن خزيمة فی الصحيح، ٣ / ٣٥٠، الرقم: ٢٢٣٦، والطبرانی فی المعجم الكبير، ١٢ / ٣٨٥، الرقم: ١٣٤٢٤، وفی المعجم الأوسط، ٨ / ٩٤، الرقم: ٨٠٧١، والكنانی فی مصباح الزجاجة، ٢ / ٨٤، الرقم: ٦٤١، وقال: هذا إسناد صحيح۔

١٩٠ / ٧٢۔ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رضي الله عنهما أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ فِي الْمُعْتَكِفِ: هُوَ يَعْتَكِفُ الذُّنُوْبَ وَيُجْرَى لَهُ مِنَ الْحَسَنَاتِ كَعَامِلِ الْحَسَنَاتِ كُلِّهَا. رَوَاهُ ابْنُ مَاجَه.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رضي الله عنها से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने ऐ'तिकाफ़ के बारे में फरमायाः वो गुनाह से रोक देता है। इसके लिए ऐसी नेकियाँ लिखी जाती हैं जो तमाम नेकियों पर अ़मल करने वालों के लिए लिखी जाती है।''

١٩١ / ٧٣۔ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رضي الله عنهما عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَنِ اعْتَكَفَ يَوْمًا ابْتِغَاءَ وَجْهِ اللهِ ﷻ جَعَلَ اللهُ بَيْنَهُ وَبَيْنَ النَّارِ ثَلَاثَ خَنَادِقَ كُلُّ خَنْدَقٍ أَبْعَدُ مِمَّا بَيْنَ الْخَافِقَيْنِ. رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ بِإِسْنَادٍ جَيِّدٍ.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رضي الله عنها से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जो शख़्स अल्लाह तआला की रज़ा के लिए एक दिन ऐ'तिकाफ़ करता है अल्लाह तआला उसके और दोज़ख़ के दरमियान तीस ख़न्दक़ों का फ़ासला कर देता है, हर ख़न्दक़ मश्रिक़ से मग़्रिब के दरमियानी फ़ासले से ज्यादा लम्बी है।''

١٩٢ / ٧٤۔ عَنْ عَلِيِّ بْنِ حُسَيْنٍ رضي الله عنهما عَنْ أَبِيْهِ رضي الله عنه قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنِ اعْتَكَفَ عَشْرًا فِي رَمَضَانَ كَانَ كَحَجَّتَيْنِ وَعُمْرَتَيْنِ. رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ وَالْبَيْهَقِيُّ.

الحديث رقم ٧٢: أخرجه ابن ماجه فى السنن، كتاب: الصيام، باب: فى ثواب الاعتكاف، ١/٥٦٧، الرقم: ١٧٨١، والديلمى فى مسند الفردوس، ٤/٢٠٧، الرقم: ٦٦٣٢، والكنانى فى مصباح الزجاجة، ٢/٨٥، الرقم: ٦٤٣۔

الحديث رقم ٧٣: أخرجه الطبرانى فى المعجم الأوسط، ٧/٢٢٠، الرقم: ٧٣٢٦، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٣/٢٦٣، الرقم: ٣٩٧١، وقال: رواه الحاكم وقال: صحيح الإسناد، والهيثمى فى مجمع الزوائد، ٨/١٩٢۔

الحديث رقم ٧٤: أخرجه الطبرانى فى المعجم الكبير، ٣/١٢٨، الرقم: ٢٨٨٨، والبيهقى فى شعب الإيمان، ٣/٤٢٥، الرقم: ٣٩٦٦-٣٩٦٧، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٢:٩٦، الرقم: ١٦٤٩، والهيثمى فى مجمع الزوائد، ٣/١٧٣۔

''हज़रत अ़ली बिन हुसैन رضي الله عنهما अपने वालिद (हज़रत इमाम हुसैन ؑ) से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया : जो शख़्स रमज़ानुल मुबारक में दस दिन ऐ'तिकाफ़ करता है उसका सवाब दो हज और दो उमरह के बराबर है।''

١٩٣ / ٧٥. عَنْ عَائِشَةَ رضي الله عنها أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ: قَالَ: تَحَرَّوْا لَيْلَةَ الْقَدْرِ فِي الْوِتْرِ مِنَ الْعَشْرِ الْأَوَاخِرِ، وفي رواية: فِي السَّبْعِ الْأَوَاخِرِ مِنْ رَمَضَانَ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत आइशा رضي الله عنها से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमायाः शबे क़द्र को रमज़ान के आख़िरी अशरे की ताक़ रातों (और एक रिवायत में है कि रमज़ान की आख़िरी सात रातों) में तलाश किया करो।''

١٩٤ / ٧٦. عَنْ عَائِشَةَ رضي الله عنها زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ، قَالَتْ: كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ إِذَا بَقِيَ عَشْرٌ مِنْ رَمَضَانَ شَدَّ مِئْزَرَهُ وَاعْتَزَلَ أَهْلَهُ. رَوَاهُ أَحْمَدُ.

''हज़रत आइशा رضي الله عنها से मरवी है कि उन्होंने फरमायाः जब रमज़ान के (आख़िरी अशरे) के दस दिन बाक़ी रह जाते तो आप ﷺ अपना कमर बन्द कस लेते और अपने अहले ख़ाना से अलग हो (कर इबादतो रियाज़त में मशग़ूल हो) जाते।''

الحديث رقم ٧٥: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: صلاة التراويح، باب: تحري ليلة القدر في الوتر من العشر الأواخر، ٢ / ٧١٠، الرقم: ١٩١٣، ومسلم فى الصحيح، كتاب: الصيام، باب: فضل ليلة القدر والحث على طلبها وبيان محلى وأرجى روينا طلبها، ٢ / ٨٢٣، الرقم: ١١٦٥ / ١١٦٩، والترمذى فى السنن، كتاب: الصوم عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء فى ليلة القدر، وقال حديث عائشة رضي الله عنها حديث حسن صحيح، ٣ / ١٥٨، الرقم: ٧٩٢، وأبوداود فى السنن، كتاب: الصلاة، باب: من روى فى السبع الأواخر، ٢ / ٥٣، الرقم: ١٣٨٥، ومالك فى الموطأ، ١ / ٣١٩-٣٢٠، الرقم: ٦٩٣-٦٩٤.

الحديث رقم ٧٦: أخرجه أحمد بن حنبل في المسند، ٦ / ٦٦، الرقم: ٢٤٤٢٢، والسيوطي في الجامع الصغير، ١ / ١٤٣، الرقم: ٢١١.

فَصْلٌ فِي الصَّدَقَةِ وَالزَّكَاةِ

सदक़ा और ज़कात का बयान

١٩٥ / ٧٧۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ قَالَ: خَيْرُ الصَّدَقَةِ مَا كَانَ عَلَى ظَهْرِ غِنًى، وَابْدَأْ بِمَنْ تَعُوْلُ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी-ए-अकरम ﷺ ने फरमायाः बेहतरीन सदक़ा वो है जिस के बाद (भी) खुशहाली क़ायम रहे, और इब्तिदा उन लोगों से करो जो तुम्हारे ज़ेरे कफ़ालत (ज़िम्मेदारी में) हों।''

١٩٦ / ٧٨۔ عَنْ أَبِي أُمَامَةَ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: يَا ابْنَ آدَمَ! إِنَّکَ أَنْ تَبْذُلَ الْفَضْلَ خَيْرٌ لَکَ، وَأَنْ تُمْسِکَهُ شَرٌّ لَکَ. وَلَا تُـلَامُ عَلَى كَفَافٍ وَابْدَأْ بِمَنْ تَعُوْلُ. وَالْيَدُ الْعُلْيَا خَيْرٌ مِنَ الْيَدِ السُّفْلَى.
رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَالتِّرْمِذِيُّ.
وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ.

الحديث رقم ٧٧: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: النفقات، باب: وجوب النفقة على الأهل والعيال، ٥/ ٢٠٨، الرقم: ٥٠٤١، وأبوداود فى السنن، كتاب: الزكاة، باب: الرجل يخرج من ماله، ٢/ ١٢٩، الرقم: ١٦٧٦، والنسائى فى السنن، كتاب: الزكاة، باب: أى الصدقة أفضل، ٥/ ٦٩، الرقم: ٢٥٤٤۔

الحديث رقم ٧٨: أخرجه مسلم فى الصحيح، كتاب: الزكاة، باب: بيان أن اليد العليا خير من اليد السفلى، ٢/ ٧١٨، الرقم: ١٠٣٦، والترمذى فى السنن، كتاب: الشهادات عن رسول الله ﷺ، باب: منه (٣٢)، ٤/ ٥٧٣، الرقم: ٢٣٤٣، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٤/ ١٨٢، الرقم: ٧٥٧٠، وفى شعب الإيمان، ٣/ ٢٢٤، الرقم: ٣٣٨٦، والرؤيانى فى المسند، ٢/ ٣٠٣، الرقم: ١٢٥١، والطيالسى مثله فى المسند، ١/ ٤٠، الرقم: ٣١٢، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ١/ ٣٣٤، الرقم: ١٢٣٠۔

''हज़रत अबू उमामा ﷺ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः ऐ इब्ने आदम! तेरे लिए ज़रूरत से ज़्यादा ख़र्च करना बेहतर है और (ज़रूरत से ज़्यादा अपने पास) रोके रखना बुरा है, और बक़द्रे ज़रूरत (अपने पास) रखने पर तुझे कुछ मलामत नहीं और पहले उन पर ख़र्च करो जो तुम्हारे ज़ेरे कफ़ालत (ज़िम्मेदारी में) हैं और ऊपर का हाथ (यानी देने वाला हाथ) नीचे के हाथ (यानी लेने वाले हाथ) से बेहतर है।''

١٩٧ / ٧٩۔ عَنْ جَابِرٍ ﷺ قَالَ: قَالَ رَجُلٌ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! أَرَأَيْتَ إِنْ أَدَّى الرَّجُلُ زَكَاةَ مَالِهِ؟ فَقَالَ: مَنْ أَدَّى زَكَاةَ مَالِهِ فَقَدْ ذَهَبَ عَنْهُ شَرُّهُ.

رَوَاهُ ابْنُ خُزَيْمَةَ وَالطَّبَرَانِيُّ وَاللَّفْظُ لَهُ وَالْحَاكِمُ.

وَقَالَ الْحَاكِمُ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत जाबिर ﷺ रिवायत करते हैं कि एक आदमी ने अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह! उस शख़्स के बारे में आप का क्या ख़याल है जिसने अपने माल की ज़कात अदा कर दी? रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमायाः जिसने अपने माल की ज़कात अदा कर दी, उस माल का शर्र (बुराई) उस से जाता रहा।''

١٩٨ / ٨٠۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ قَالَ: إِنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: إِذَا أَدَّيْتَ الزَّكَاةَ فَقَدْ قَضَيْتَ مَا عَلَيْکَ، وَمَنْ جَمَعَ مَالًا حَرَامًا ثُمَّ تَصَدَّقَ بِهِ لَمْ يَكُنْ لَهُ فِيْهِ أَجْرٌ، وَكَانَ أَجْرُهُ عَلَيْهِ.

رَوَاهُ ابْنُ خُزَيْمَةَ وَابْنُ حِبَّانَ وَالْحَاكِمُ.

وَقَالَ الْحَاكِمُ: صَحِيْحُ الإِسْنَادِ.

الحديث رقم ٧٩: أخرجه ابن خزيمة فى الصحيح، ٤ / ١٣، الرقم: ٢٢٥٨، والحاكم فى المستدرك، ١ / ٥٤٧، الرقم: ١٤٣٩، والطبرانى فى المعجم الأوسط، ٢ / ١٦١، الرقم: ١٥٧٩، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ١ / ٣٠١، الرقم: ١١١١، والهيثمى فى مجمع الزوائد، ٣ / ٦٣۔

الحديث رقم ٨٠: أخرجه ابن خزيمة فى الصحيح، ٤ / ١١٠، الرقم: ٢٤٧١، وابن حبان فى الصحيح ٥ / ١١، الرقم: ٣٢١٦، والحاكم فى المستدرك، ١ / ٥٤٧، الرقم: ١٤٤٠۔

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जब तूने (अपने माल की) ज़कात अदा कर दी तो तूने अपना फ़र्ज़ अदा कर दिया, और जो शख़्स हराम माल जमा करे फिर उसे सदक़ा कर दे उसे उस सदक़े का कोई सवाब नहीं मिलेगा बल्कि उस का बोझ उस पर होगा।''

١٩٩ / ٨١۔ عَنِ الْحَسَنِ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: حَصِّنُوْا أَمْوَالَكُمْ بِالزَّكَاةِ، وَدَاوُوْا أَمْرَاضَكُمْ بِالصَّدَقَةِ، وَاسْتَقْبِلُوْا أَمْوَاجَ الْبَلَاءِ بِالدُّعَاءِ وَالتَّضَرُّعِ. رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ وَالطَّبَرَانِيُّ وَالْبَيْهَقِيُّ.

''हज़रत हसन बसरी ﷺ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः अपने मालो दौलत को ज़कात के ज़रीये बचाओ और अपनी बीमारियों का इलाज सदक़े के ज़रीये करो और मुसीबत की लहरों का सामना दुआ और गिरया–व–ज़ारी के ज़रीये करो।''

٢٠٠ / ٨٢۔ عَنْ عَلْقَمَةَ ﷺ، قَالَ: فَقَالَ لَنَا رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّ تَمَامَ إِسْلَامِكُمْ أَنْ تُؤَدُّوا زَكَاةَ أَمْوَالِكُمْ. رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ وَالشَّيْبَانِيُّ.

''हज़रत अल्क़मा ﷺ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने हमें फरमायाः तुम्हारे इस्लाम की तकमील (पूरा होना) यह है कि तुम अपने माल की (पूरी) ज़कात अदा करो।''

الحديث رقم ٨١: أخرجه أبوداود فی السنن، كتاب: المراسيل: ١٣٣، والطبرانی عن عبد الله بن مسعود ﷺ فی المعجم الأوسط ، ٢ / ٢٧٩، الرقم: ١٩٢٣ وفی المعجم الكبير، ١٠ / ١٢٨، الرقم: ١٠١٩٤، والبيهقی فی شعب الإيمان، ٣ / ٢٨٢، الرقم: ٣٥٥٨، والمنذری فی الترغيب والترهيب، ١ / ٣٠١، الرقم: ١١١٢، والهيثمی فی مجمع الزوائد، ٣ / ٦٣ ۔

الحديث رقم ٨٢: أخرجه الطبرانی فی المعجم الكبير، ١٨ / ٨، الرقم: ٦، وابن قانع فی معجم الصحابة، ٢ / ٢٨٥، الرقم: ٨١٦، والشيبانی فی الآحاد والمثانی، ٤ / ٣٠٩، الرقم: ٢٣٣٤، والمنذری فی الترغيب والترهيب، ١ / ٣٠١، الرقم: ١١١٣، والهيثمی فی مجمع الزوائد، ٣ / ٦٢، وقال: رواه البزار ۔

٢٠١ / ٨٣۔ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ ﷺ، قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّ الصَّدَقَةَ لَتُطْفِيءُ غَضَبَ الرَّبِّ، وَتَدْفَعُ عَنْ مِيْتَةِ السُّوْءِ.

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَحَسَّنَهُ وَابْنُ حِبَّانَ.

''हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः बेशक सदक़ा अल्लाह तआला के गुस्से को ठण्डा करता है और बुरी मौत से बचाता है।''

٢٠٢ / ٨٤۔ عَنْ أَبِي ذَرٍّ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: تَبَسُّمُكَ فِي وَجْهِ أَخِيْكَ لَكَ صَدَقَةٌ، وأَمْرُكَ بِالْمَعْرُوْفِ وَنَهْيُكَ عَنِ الْمُنْكَرِ صَدَقَةٌ، وَإِرْشَادُكَ الرَّجُلَ فِي أَرْضِ الضَّلَالِ لَكَ صَدَقَةٌ، وَبَصَرُكَ لِلرَّجُلِ الرَّدِيءِ الْبَصَرِ لَكَ صَدَقَةٌ، وَإِمَاطَتُكَ الْحَجَرَ وَالشَّوْكَةَ وَالْعَظْمَ عَنِ الطَّرِيْقِ لَكَ صَدَقَةٌ، وَإِفْرَاغُكَ مِنْ دَلْوِكَ فِي دَلْوِ أَخِيْكَ لَكَ صَدَقَةٌ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ حِبَّانَ.

وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ.

الحديث رقم ٨٣: أخرجه الترمذي في السنن، كتاب: الزكاة عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء فى فضل الصَّدَقَةِ، ٣ / ٥٢، الرقم: ٦٦٤، وابن حبان فى الصحيح، ٨ / ١٠٣، الرقم: ٣٣٠٩، والبيهقى فى شعب الإيمان، ٣ / ٢١٣، الرقم: ٣٣٥١، والمقدسى فى الأحاديث المختارة، ٥ / ٢١٨، الرقم: ١٨٩٧، وابن رجب فى جامع العلوم والحكم، ١ / ٢٧٢، والديلمى فى مسند الفردوس، ٢ / ٤١٣، الرقم: ٣٨٣٤، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٢ / ٧، الرقم: ١٢٨٣۔

الحديث رقم ٨٤: أخرجه الترمذى فى السنن، كتاب: البر والصلة عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء فى صَنَائِعِ المعروف، ٤ / ٣٣٩، الرقم: ١٩٥٦، وابن حبان فى الصحيح، ٢ / ٢٨٦، الرقم: ٥٢٩، والطبرانى فى المعجم الأوسط، ٨ / ١٨٣، الرقم: ٨٣٤٢، والبزار فى المسند، ٩ / ٤٥٧، الرقم: ٤٠٧٠، وابن رجب فى جامع العلوم والحكم، ١ / ٢٣٥، والمروزى فى تعظيم قدر الصلاة، ٢ / ٨١٧، الرقم: ٨١٣، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٣ / ٢٨٢، الرقم: ٤٠٧٤، والهيثمى فى مجمع الزوائد، ٣ / ١٣٤، وفى موارد الظمآن، ١ / ٢٢٠، الرقم: ٨٦٤۔

''हज़रत अबू ज़र ग़िफ्फारी ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः तुम्हारा अपने मुसलमान भाई के सामने मुस्कुराना भी सदक़ा है, तुम्हारा नेकी का हुक्म देना और बुराई से रोकना भी सदक़ा है, तुम्हारा भटके हुए को रास्ता दिखाना भी तुम्हारे लिए सदक़ा है और तुम्हारा किसी अन्धे को रास्ता दिखाना भी तुम्हारे लिए सदक़ा है और तुम्हारा रास्ते से पत्थर, काँटा और हड्डी (वग़ैरह तकलीफ़ देने वाली चीज़) का हटाना भी तुम्हारे हक़ में सदक़ा है और अपने डोल से दूसरे भाई की बाल्टी में पानी डालना भी सदक़ा है।''

٢٠٣ / ٨٥۔ عَنْ أَبِي ذَرٍّ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: يُصْبِحُ عَلَى كُلِّ سُلَامَى مِنْ أَحَدِكُمْ صَدَقَةٌ. فَكُلُّ تَسْبِيْحَةٍ صَدَقَةٌ. وَكُلُّ تَحْمِيْدَةٍ صَدَقَةٌ. وَكُلُّ تَهْلِيْلَةٍ صَدَقَةٌ. وَكُلُّ تَكْبِيْرَةٍ صَدَقَةٌ وَأَمْرٌ بِالْمَعْرُوْفِ صَدَقَةٌ وَنَهْيٌ عَنِ الْمُنْكَرِ صَدَقَةٌ وَيُجْزِئُ مِنْ ذَلِكَ رَكْعَتَانِ يَرْكَعُهُمَا مِنَ الضُّحَى. رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَأَحْمَدُ وَابْنُ حِبَّانَ.

''हज़रत अबू ज़र ﷺ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः तुम में से हर एक के जोड़ पर सदक़ा है जब वो सुबह करे (हर जोड़ की तरफ़ से सदक़े की अदायगी यह है कि) हर दफ़ा ﴿اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ﴾ हर दफ़ा ﴿سُبْحَانَ اللهِ﴾ कहना सदक़ा है और हर दफ़ा ﴿اَللهُ أَكْبَرُ﴾ कहना सदक़ा है, और हर दफ़ा ﴿لاَ إِلَهَ إِلَّا اللهُ﴾ कहना सदक़ा है, और हर दफ़ा कहना सदक़ा है और नेकी का हुक्म देना और बुराई से रोकना भी सदक़ा है और इन सब की तरफ़ से चाश्त के दो नफ़्ल काफ़ी हैं।''

الحديث رقم ٨٥: أخرجه مسلم فى الصحيح، كتاب: صلاة المسافرين وقصرها، باب: استحباب صلاة الضحى، ١/ ٤٩٨، الرقم: ٧٢٠، وفى كتاب: الزكاة، باب: بيان أن اسم الصدقة يقع على كل نوع من المعروف، ٢/ ٦٠٧، الرقم: ١٠٠٦، وابن حبان فى الصحيح، ٣/ ١١٩، الرقم: ٨٣٨، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٥/ ١٦٧، الرقم: ٢١٥١١، ٧٦١٢، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٣/ ٤٧، الرقم: ٤٦٧٧، ٧٦١٢، والبزار فى المسند، ٩/ ٣٥٢، الرقم: ٣٥٢، وابن أبى شيبة فى المصنف، ٦/ ٥٤، الرقم: ٢٩٤٦٠، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ١/ ٢٦٤، الرقم: ٩٩٤۔

فَصْلٌ فِي الصَّدَقَةِ عَلَى الْأَهْلِ وَ الْأَقَارِبِ

अइज़्ज़ा–व–अक़रिबा पर सदक़ा करने का बयान

٢٠٤ / ٨٦۔ عَنْ أَبِي مَسْعُودٍ رضی الله عنه عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: إِذَا أَنْفَقَ الرَّجُلُ عَلَى أَهْلِهِ يَحْتَسِبُهَا فَهُوَ لَهُ صَدَقَةٌ. مُتَّفَقٌ عَلَيهِ وَهَذَا لَفْظُ الْبُخَارِيِّ.

''हज़रत अबू मसऊद رضی الله عنه रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जब आदमी अपने अहलो अयाल (घर वालों) पर सवाब की निय्यत से ख़र्च करता है, तो वो (जो कुछ भी ख़र्च करता है) उसके लिए सदक़े (का सवाब) है।''

٢٠٥ / ٨٧۔ عَنْ ثَوْبَانَ رضی الله عنه قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: أَفْضَلُ دِيْنَارٍ يُنفِقُهُ الرَّجُلُ دِيْنَارٌ يُنْفِقُهُ عَلَى عِيَالِهِ. وَدِيْنَارٌ يُنْفِقُهُ الرَّجُلُ عَلَى دَابَّتِهِ فِي

الحديث رقم ٨٦: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: الإيمان، باب: ماجاء أن الأعمال بالنية والحسبة، ولكل امرىءٍ مانوى، ١ / ٣٠، الرقم: ٥٥، ومسلم فى الصحيح كتاب: الزكوة، باب: فضل النفقة والصدقة على الأقربين والزوج والأولاد والوالدين ولو كانوا مشركين، ٢ / ٦٩٥، الرقم: ١٠٠٢، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٤ / ١٢٢۔

الحديث رقم ٨٧: أخرجه مسلم فى الصحيح، كتاب: الزكاة، باب: فضل النفقة على العيال والمملوك وإثم من ضيعهم أوحبس نفقتهم عنهم، ٢ / ٦٩١، الرقم: ٩٩٤، والترمذى فى السنن، كتاب: البر والصلة عن رسول الله ﷺ ، باب: ماجاء فى النفقةِ عَلَى الأَهْلِ، ٤ / ٣٤٤، الرقم: ١٩٦٦، وابن ماجه فى السنن، كتاب: الجهاد، باب: فضل النفقة فى سبيل الله تعالى، ٢ / ٩٢٢، الرقم: ٢٧٦٠، والنسائى فى السنن الكبرى، ٥ / ٣٧٦، الرقم: ٩١٨٢، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٥ / ٢٧٩، الرقم: ٢٢٤٥٩، ٢٢٥٠٦، وابن حبان فى الصحيح، ١٠ / ٥٣، الرقم: ٤٢٤٢، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٤ / ١٧٨، الرقم: ٧٥٤٦، وفى شعب الإيمان، ٣ / ٢٣٧، الرقم: ٣٤٢٢، والبخارى فى الأدب المفرد، ١ / ٢٦٢، الرقم: ٧٤٨، وابن رجب فى جامع العلوم والحكم، ١ / ٢٣٦، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٣ / ٤١، الرقم: ٢٩٩٨۔

سَبِيْلِ اللهِ. وَدِيْنَارٌ يُنْفِقُهُ عَلَى أَصْحَابِهِ فِي سَبِيْلِ اللهِ. قَالَ أَبُوقِلَابَةَ: وَبَدَأَ بِالْعَيَالِ: ثُمَّ قَالَ أَبُوْقِلَابَةَ: وَأَيُّ رَجُلٍ أَعْظَمُ أَجْرًا مِنْ رَجُلٍ يُنْفِقُ عَلَى عِيَالٍ صِغَارٍ، يُعِفُّهُمْ أَوْ يَنْفَعُهُمُ اللهُ بِهِ، وَ يُغْنِيهِمْ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَالتِّرْمِذِيُّ.

وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत सौबान ﷺ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः बेहतरीन दीनार वो है जो कोई शख़्स अपने अहलो अ़याल (घर वालों) पर ख़र्च करता है, बेहतरीन दीनार वो है जो कोई शख़्स अल्लाह तआ़ला की राह में अपनी सवारी पर ख़र्च करता है और बेहतरीन दीनार वो है जो कोई शख़्स अल्लाह तआ़ला की राह में अपने साथियों पर ख़र्च करता है, अबू क़िलाबा ने कहाः आप ने घरवालों पर ख़र्च से शुरू किया था। फिर अबू क़िलाबा ने कहाः उस शख़्स से ज्यादा और किस का अज्र होगा जो अपने छोटे बच्चों पर ख़र्च करता है। अल्लाह तआ़ला उस शख़्स के सबब उन बच्चों को नफ़ा देता है और ग़नी करता है।''

٢٠٦ / ٨٨. عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: دِيْنَارٌ أَنْفَقْتَهُ فِي سَبِيْلِ اللهِ. وَدِيْنَارٌ أَنْفَقْتَهُ فِي رَقَبَةٍ وَدِيْنَارٌ تَصَدَّقْتَ بِهِ عَلَى مِسْكِيْنٍ. وَدِينَارٌ أَنْفَقْتَهُ عَلَى أَهْلِكَ أَعْظَمُهَا أَجْرًا الَّذِي أَنْفَقْتَهُ عَلَى أَهْلِكَ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَالْبُخَارِيُّ فِي الْأَدَبِ وَأَحْمَدُ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः एक दीनार वो है जिसे तुम अल्लाह तआ़ला की राह में ख़र्च करते हो, एक दीनार वो है जिसे तुम मिस्कीनों पर सदक़ा करते हो, और एक दीनार वो है जिसे तुम अपने अहले खाना पर ख़र्च करते

الحديث رقم ٨٨: أخرجه مسلم فى الصحيح، كتاب: الزكاة، باب: فضل النفقة على العيال والمملوك وإثم من ضيعهم أو حبس نفقتهم عنهم، ٢ / ٦٩٢، الرقم: ٩٩٥، والبخارى فى الأدب المفرد، ١ / ٢٦٣، الرقم: ٧٥١، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٢ / ٤٧٦، الرقم: ١٠١٧٧، والطبرانى فى المعجم الأوسط، ٩ / ٣٩، الرقم: ٩٠٧٩، والديلمى فى مسند الفردوس، ٢ / ٢٢٢، الرقم: ٣٠٧٩، وابن رجب فى جامع العلوم والحكم، ١ / ٢٣٦، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٣ / ٤١، الرقم: ٢٩٩٧.

हो उनमें सबसे ज्यादा अज्र उस दीनार पर मिलेगा जिसे तुम अपने अहले ख़ाना पर ख़र्च करते हो।''

٢٠٧ / ٨٩۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ قَالَ: أَمَرَ النَّبِيُّ ﷺ بِالصَّدَقَةِ، فَقَالَ رَجُلٌ: يَارَسُوْلَ اللهِ عِنْدِي دِيْنَارٌ. قَالَ: فَقَالَ: تَصَدَّقْ بِهِ عَلَى نَفْسِکَ. قَالَ: عِنْدِي آخَرُ قَالَ: تَصَدَّقْ بِهِ عَلَى وَلَدِکَ: قَالَ: عِنْدِي آخَرُ. قَالَ: تَصَدَّقْ بِهِ عَلَى زَوْجَتِکَ أَوْ زَوْجِکَ. قَالَ: عِنْدِي آخَرُ قَالَ. أَنْتَ أَبْصَرُ. رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ.

وَقَالَ الْحَاكِمُ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने सदक़ा करने का हुक्म फरमाया तो एक आदमी ने अ़र्ज़ किया: या रसूलल्लाह ! मेरे पास एक दीनार है । आप ﷺ ने फरमाया: उसे अपने ऊपर ख़र्च कर लो, उसने अ़र्ज़ किया: मेरे पास और भी है, फरमाया: उसे अपनी औलाद पर ख़र्च कर लो, अ़र्ज़ किया: मेरे पास और भी है, फरमाया: उसे अपनी बीवी पर ख़र्च कर लो, अ़र्ज़ किया: मेरे पास और भी है, फरमाया: जिसके लिए तुम मुनासिब समझो (उस पर ख़र्च करो)।''

٢٠٨ / ٩٠۔ عَنْ سَلْمَانَ بْنِ عَامِرٍ ﷺ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: الصَّدَقَةُ

الحديث رقم ٨٩: أخرجه أبوداود فى السنن، كتاب: الزكاة، باب: فى صلة الرحم، ٢ / ١٣٢، الرقم: ١٦٩١، والنسائى فى السنن، كتاب: الزكاة، باب: تفسير لك، ٥ / ٦٢، الرقم: ٢٥٣٥، وفى السنن الكبرى، ٢ / ٣٤، الرقم: ٢٣١٤، ٩١٨١، والبخارى فى الأدب المفرد، ١ / ٧٨، الرقم: ١٩٧، ٧٥٠، وابن حبان فى الصحيح، ٨ / ١٢٦، الرقم: ٣٣٣٧، والطبرانى فى المعجم الأوسط، ٨ / ٢٣٧، الرقم: ٨٥٠٨، والحاكم فى المستدرك، ١ / ٥٨٥، الرقم: ١٥١٤، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٧ / ٤٦٦، وفى شعب الإيمان، ٣ / ٢٣٦، الرقم: ٣٤٢١، والشافعى فى المسند، ١ / ٢٦٦، والشافعى فى السنن الماثورة، ١ / ٣٩٣، الرقم: ٥٤٩، وأبو المحاسن فى معتصر المختصر، ١ / ١٢٦، والحميدى فى المسند، ٢ / ٤٩٥، الرقم: ١١٧٦، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٣ / ٤٢، الرقم: ٣٠٠٥۔

الحديث رقم ٩٠: أخرجه الترمذى فى السنن، كتاب: الزكوة عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء فى الصدقة على ذى القرابة، ٣ / ٤٦، الرقم: ٦٥٨، والنسائى فى ←

عَلَى الْمِسْكِيْنِ صَدَقَةٌ وَعَلَى ذِي الرَّحِمِ ثِنْتَانِ صَدَقَةٌ وَصِلَةٌ.

رَوَاهُ التِّرمِذِيُّ وَحَسَّنَهُ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَه.

وَقَالَ الْحَاكِمُ: صَحِيْحُ الإِسْنَادِ.

''हज़रत सुलैमान बिन आमिर ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः किसी हाजत मन्द को सदक़ा देना (सिर्फ़) एक सदक़ा है और रिश्तेदारों को सदक़ा देना दो सदक़ात (के बराबर) है, एक सदक़ा और दूसरा सिला रहमी।''

.... السنن، كتاب: الزكوة، باب: الصدقة على الأقارب، ٥/٩٢، الرقم: ٢٥٨٢، وابن ماجه فى السنن، كتاب: الزكاة، باب: فضل الصدقة، ١/٥٩١، الرقم: ١٨٤٤، وابن خزيمة فى الصحيح، ٨/١٣٢، الرقم: ٣٣٤٤، والحاكم فى المستدرك، ١/٥٦٤، الرقم: ١٤٧٦.

فَصْلٌ فِي الْحَجِّ وَالْعُمْرَةِ

हज और उमरह का बयान

٢٠٩ / ٩١۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضي الله عنه، قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ حَجَّ هَذَا الْبَيْتَ، فَلَمْ يَرْفُثْ، وَلَمْ يَفْسُقْ، رَجَعَ كَمَا وَلَدَتْهُ أُمُّهُ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अबू हुरैरा رضي الله عنه रिवायत फरमाते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जिस ने इस घर (काबे) का हज किया फिर वो न तो औरत के क़रीब गया और न ही कोई गुनाह किया तो (तमाम गुनाहों से पाक हो कर) इस तरह वापस लौटा जैसे उसकी माँ ने उसे जन्म दिया था।''

٢١٠ / ٩٢۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضي الله عنه، قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَلْعُمْرَةُ إِلَى الْعُمْرَةِ كَفَّارَةٌ لِمَا بَيْنَهُمَا، وَالْحَجُّ الْمَبْرُوْرُ لَيْسَ لَهُ جَزَاءٌ إِلَّا الْجَنَّةُ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अबू हुरैरा رضي الله عنه रिवायत फरमाते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने

الحديث رقم ٩١: أخرجه البخاری فی الصحيح، أبواب: العمرة، باب: قول الله تعالى: فلا رفث، ٢/ ٦٤٥، الرقم: ١٧٢٣، ١٤٤٩، ١٧٢٤، ومسلم فی الصحيح، كتاب: الحج، باب: فضل الحج والعمرة ويوم عرفة، ٢/ ٩٨٣، الرقم: ١٣٥٠، والنسائی فی السنن، كتاب: مناسك الحج، باب: فضل الحج، ٥/ ١١٤، الرقم: ٢٦٢٧، وابن ماجه فی السنن، كتاب: المناسك، باب: فضل الحج والعمرة، ٢/ ٩٦٤، الرقم: ٢٨٨٧۔

الحديث رقم ٩٢: أخرجه البخاری فی الصحيح، أبواب: العمرة، باب: وجوب العمرة وفضلها، ٢/ ٦٢٩، الرقم: ١٦٨٣، ومسلم فی الصحيح، كتاب: الحج، باب: فی فضل الحج والعمرة ويوم عرفة، ٢/ ٩٨٣، الرقم: ١٣٤٩، والترمذی فی السنن، كتاب: الحج عن رسول الله ﷺ، باب: ما ذكر فی فضل العمرة، ٣/ ٢٧٢، الرقم: ٩٣٣ وقال أبوعيسى: هذا حديث حسن صحيح، والنسائی فی السنن، كتاب: مناسك الحج، باب: فضل العمرة، ٥/ ١١٥، الرقم: ٢٦٢٩، وابن ماجه فی السنن، كتاب: المناسك، باب: فضل الحج والعمرة، ٢: ٩٦٤، الرقم: ٢٨٨٨۔

फरमायाः एक उमरह से दूसरे उमरह तक का दरमियानी अरसा गुनाहों का कफ़्फ़ारा है, और हज्जे मबरूर (मक़बूल हज) का बदला जन्नत ही है।''

٢١١/٩٣- عَنْ أَبِي أُمَامَةَ رضي الله عنه قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صلى الله عليه وآله وسلم: مَنْ لَمْ يَمْنَعْهُ مِنَ الْحَجِّ حَاجَةٌ ظَاهِرَةٌ أَوْ سُلْطَانٌ جَائِرٌ أَوْ مَرَضٌ حَابِسٌ، فَمَاتَ وَلَمْ يَحُجَّ فَلْيَمُتْ إِنْ شَآءَ يَهُوْدِيًّا وَإِنْ شَآءَ نَصْرَانِيًّا.

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالدَّارِمِيُّ وَاللَّفْظُ لَهُ وَابْنُ أَبِي شَيْبَةَ.

''हज़रत अबू उमामा رضي الله عنه से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम صلى الله عليه وآله وسلم ने फरमायाः जिस शख़्स को फरीज़ए हज की अदायगी में कोई ज़ाहिरी ज़रूरत या कोई ज़ालिम बादशाह या रोकने वाली बीमारी (यानी सख़्त मर्ज़) न रोके और वो फिर (भी) हज न करे और (फरीज़ए हज की अदायगी के बग़ैर ही) मर जाए तो चाहे वो यहूदी हो कर मरे या ईसाई हो कर (अल्लाह तआला को उसकी कोई फ़िक्र नहीं है)।''

٢١٢/٩٤- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضي الله عنه قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صلى الله عليه وآله وسلم: اَلْحُجَّاجُ وَالْعُمَّارُ وَفْدُ اللهِ. إِنْ دَعَوْهُ أَجَابَهُمْ، وَإِنِ اسْتَغْفَرُوْهُ غَفَرَ لَهُمْ.

وَفِي رِوَايَةٍ: اَلْغَازِيُّ فِي سَبِيْلِ اللهِ وَالْحَاجُّ وَالْمُعْتَمِرُ.

الحديث رقم ٩٣: أخرجه الترمذي فى السنن، كتاب: الحج عن رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم، باب: مَا جَاء فِي التَّغْلِيظِ فى ترك الحج، ٣/١٧٦، الرقم: ٨١٢، والدارمى فى السنن، ٢/٤٥ الرقم: ١٧٨٥، وابن أبي شيبة فى المصنف، ٣/٣٠٥، الرقم: ١٤٤٥٠، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٤/٣٣٤، الرقم: ٨٤٤٣، وفى شعب الإيمان، ٣/٤٣٠، الرقم: ٣٩٧٩، والديلمى فى مسند الفردوس، ٣/٦٢٥، الرقم: ٥٩٥١، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٢/١٣٧، الرقم: ١٨٢٠.

الحديث رقم ٩٤: أخرجه ابن ماجه فى السنن، كتاب: المناسك، باب: فضل دعاء الحج، ٢/٩، الرقم: ٢٨٩٢، وابن حبان فى الصحيح، ٩/٤٤٧، الرقم: ٣٦٩٢، والطبرانى فى المعجم الأوسط، ٦/٢٤٧، الرقم: ٦٣١١، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٥/٢٦٢، الرقم: ١٠١٦٨، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٢/١٠٧، الرقم: ١٦٩٧، وَقَالَ الْمُنْذِرِيُّ: رَوَاهُ الْبَزَّارُ وَرِجَالُهُ ثِقَاتٌ.

رَوَاهُ ابْنُ مَاجَه وَالطَّبَرَانِيُّ وَالْبَيْهَقِيُّ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः हज और उमरह करने वाले अल्लाह तआला के मेहमान हैं , वो उससे दुआ करें तो उनकी दुआ कुबूल करता है, और अगर उससे बख़्शिश तलब करें तो उन्हें बख़्श देता है। (एक रिवायत में) जिहाद करने वाला, हज करने वाला और उमरह करने वाला (के अल्फ़ाज़ भी हैं)।''

٢١٣ / ٩٥۔ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رضي الله عنهما قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ دَخَلَ الْبَيْتَ دَخَلَ فِي حَسَنَةٍ وَخَرَجَ مِنْ سَيِّئَةٍ مَغْفُوْرًا لَهُ.

رَوَاهُ ابْنُ خُزَيْمَةَ وَالطَّبَرَانِيُّ.

''हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास رضي الله عنهما रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जो शख़्स बैतुल्लाह में दाख़िल हो गया वो नेकी में दाख़िल हो गया और बुराई से ख़ारिज हो कर मग़्फ़िरत पा गया।''

٢١٤ / ٩٦۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ، قَالَ: خَطَبَنَا رَسُوْلُ اللهِ ﷺ فَقَالَ: أَيُّهَا النَّاسُ، قَدْ فُرِضَ عَلَيْكُمُ الْحَجَّ فَحُجُّوْا. فَقَالَ رَجُلٌ: أَكُلَّ عَامٍ يَارَسُوْلَ اللهِ؟ فَسَكَتَ حَتَّى قَالَهَا ثَـلَاثاً. فَقَالَ: لَوْ قُلْتُ: نَعَمْ، لَوَجَبَتْ وَلَمَّا اسْتَطَعْتُمْ. ثُمَّ قَالَ: ذَرُوْنِي مَا تَرَكْتُكُمْ، فَإِنَّمَا هَلَكَ مَنْ كَانَ

الحديث رقم ٩٥: أخرجه ابن خزيمة فى الصحيح، ٤/ ٣٣٢، الرقم: ٣٠١٣، والطبرانى فى المعجم الكبير، ١١/ ٢٠٠، الرقم: ١١٤٩٠، والهيثمى فى مجمع الزوائد، ٣/ ٢٩٣۔

الحديث رقم ٩٦: أخرجه مسلم في الصحيح، كتاب: الحج، باب: فرض الحج مرة فى العمر، ٢/ ٩٧٥ الرقم: ١٣٣٧، والترمذى فى السنن، كتاب: الحج عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء كم فرض الحج، ٣/ ١٧٨، الرقم: ٨١٤، والنسائى فى السنن، كتاب: مناسك الحج، باب: وجوب الحج، ٥/ ١١٠، الرقم: ٢٦١٩، وابن ماجة فى السنن، كتاب: المناسك، باب: فرض الحج، ٢/ ٩٦٣، الرقم: ٢٨٨٤، وابن خزيمة فى الصحيح، ٤/ ١٢٩، الرقم: ٢٥٠٨۔

قَبْلَكُمْ بِكَثْرَةِ سُؤَالِهِمْ، وَاخْتِلَافِهِمْ عَلَى أَنْبِيَائِهِمْ، فَإِذَا أَمَرْتُكُمْ بِشَيءٍ فَأْتُوْا مِنْهُ مَا اسْتَطَعْتُمْ، وَإِذَا نَهَيْتُكُمْ عَنْ شَيءٍ فَدَعُوْهُ.

رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَالتِّرْمِذِيُّ وَحَسَّنَهُ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ रिवायत फरमाते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने हमें खुत्बा दिया और फरमायाः ऐ लोगो ! तुम पर हज फ़र्ज़ कर दिया गया है फिर हज किया करो । एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह ! क्या हर साल हज फ़र्ज़ है ? आप ﷺ ख़ामोश रहे, यहाँ तक कि तीन बार उसने यही अ़र्ज़ कियाः इस के बाद हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः अगर मैं हाँ कह देता तो (हर साल) फ़र्ज़ हो जाता, और फिर तुम इसकी ताक़त न रखते, फिर फरमायाः मेरी इतनी ही बात पर इक्तिफ़ा (बस) किया करो जिस पर मैं तुम्हें छोड़ूँ, इसलिए कि तुम से पहले लोग ज्यादा सवाल करने और अपने नबियों से इख़्तिलाफ़ करने की वजह से ही हलाक हुए थे, लिहाज़ा जब मैं तुम्हें किसी शै का हुक्म दूँ तो बक़द्रे इस्तिताअ़त उसे बजा लाया करो और जब किसी शै से मना करूँ तो उसे छोड़ दिया करो ।''

٢١٥ / ٩٧۔ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رضي الله عنهما قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ فِي الْحَجَرِ: وَاللهِ لَيَبْعَثُهُ اللهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ لَهُ عَيْنَانِ يُبْصِرُ بِهِمَا، وَلِسَانٌ يَنْطِقُ بِهِ يَشْهَدُ عَلَى مَنِ اسْتَلَمَهُ بِحَقٍّ.

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَحَسَّنَهُ وَابْنُ خُزَيْمَةَ وَابْنُ حِبَّانَ.

''हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास رضي الله عنهما रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने हजरे अस्वद के मुतअ़ल्लिक़ फरमायाः अल्लाह तआ़ला की क़सम ! क़यामत के दिन अल्लाह तआ़ला इसे दो आँखें अ़ता फरमाएगा जिनसे यह देखेगा और एक ज़बान अ़ता फरमाएगा जिससे यह बोलेगा और उस शख़्स के मुतअ़ल्लिक़ गवाही देगा जिसने हालते ईमान में इसे बोसा दिया ।''

الحديث رقم ٩٧: أخرجه الترمذى فى السنن، كتاب: الحج عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء فى الحجر الأسود، ٣ / ٢٩٤، الرقم: ٩٧١، وابن خزيمة فى الصحيح، ٤ / ٢٢٠، الرقم: ٢٧٣٥، وابن حبان فى الصحيح، ٩ / ٢٥، الرقم: ٣٧١٢، وأحمد بن حنبل فى المسند، ١ / ٢٤٧، الرقم: ٢٢١٥، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٥ / ٧٥، الرقم: ٩٠١٤.

٢١٦ / ٩٨۔ عَنْ عَابِسِ بْنِ رَبِيْعَةَ، عَنْ عُمَرَ رضی الله عنه أَنَّهُ جَاءَ إِلَى الْحَجَرِ الْأَسْوَدِ فَقَبَّلَهُ، فَقَالَ: إِنِّي أَعْلَمُ أَنَّکَ حَجَرٌ، لَا تَضُرُّ وَلَا تَنْفَعُ، وَلَوْلَا أَنِّي رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ يُقَبِّلُکَ مَا قَبَّلْتُکَ. وفي رواية: قَالَ عُمَرُ: شَيئٌ صَنَعَهُ النَّبِيُّ ﷺ فَلَا نُحِبُّ أَنْ نَتْرُکَهُ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ وَهَذَا لَفْظُ الْبُخَارِيِّ.

''हज़रत आबिस बिन रबीआ رضی الله عنه रिवायत करते हैं कि हज़रत उमर رضی الله عنه हजरे अस्वद के पास आए और उसे बोसा देकर कहाः मैं ख़ूब जानता हूँ कि तू पत्थर है न तो नुकसान पहुँचा सकता है, और न नफ़ा। अगर मैंने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ को तुझे बोसा देते हुए न देखा होता तो मैं कभी तुझे बोसा न देता। (और एक रिवायत में है कि) हज़रत उमर رضی الله عنه ने फरमायाः यह वो काम है जिसे हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने अदा फरमाया है फिर हम नहीं चाहते कि इसे तर्क करें।''

الحديث رقم ٩٨: أخرجه البخاری فی الصحيح، کتاب: الحج، باب: ما ذُکر فی الحجر الأسود، ٢ / ٥٧٩، الرقم: ١٥٢٠، ١٥٢٨، ومسلم في الصحيح، کتاب: الحج، باب: استحباب تقبيل الحجر الأسود في الطواف، ٢ / ٩٢٥، الرقم: ١٢٧٠، وأبوداود في السنن، کتاب: المناسک، باب: في تقبيل الحجر، ٢ / ١٧٥، الرقم: ١٨٧٣، والنسائي في السنن، کتاب: مناسک الحج، باب: کيف يقبل، ٥ / ٢٢٧، الرقم: ٢٩٣٨، وابن ماجه فی السنن، باب: استلام الحجر، ٢ / ٩٨١، الرقم: ٢٩٤٣، ومالک في الموطأ، ١ / ٣٦٧، الرقم: ٨١٨، وأحمد بن حنبل في المسند، ١ / ١٦، الرقم: ٩٩، والبزار في المسند، ١ / ٩٤٩، الرقم: ١٣٩، وابن حبان في الصحيح، ٤ / ٢١٢، الرقم: ٢٧١١.

فَصْلٌ فِي فَضَائِلِ مَكَّةَ الْمُكَرَّمَةِ

फ़ज़ाइले मक्का मुकर्रमा का बयान

٢١٧ / ٩٩۔ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رضي الله عنه قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صلى الله عليه وآله وسلم: لَيْسَ مِنْ بَلَدٍ إِلَّا سَيَطَؤُهُ الدَّجَّالُ إِلَّا مَكَّةَ وَالْمَدِيْنَةَ لَيْسَ لَهُ مِنْ نِقَابِهَا نَقْبٌ إِلَّا عَلَيْهِ الْمَلَائِكَةُ صَافِّيْنَ يَحْرُسُوْنَهَا. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अनस बिन मालिक رضي الله عنه से रिवायत है कि हुज़ूर नबी-ए-अकरम صلى الله عليه وآله وسلم ने फरमायाः कोई शहर ऐसा नहीं जिसे दज्जाल रौंदे सिवाए मक्का मुकर्रमा और मदीना मुनव्वरा के। उनके रास्तों में से हर रास्ते पर सफ़ बस्ता फ़रिश्ते हिफ़ाज़त कर रहे होंगे।''

٢١٨ / ١٠٠۔ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رضي الله عنهما قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وآله وسلم: يَوْمَ افْتَتَحَ مَكَّةَ، فَإِنَّ هَذَا بَلَدٌ حَرَّمَهُ اللهُ يَوْمَ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ، وَهُوَ

الحديث رقم ٩٩: أخرجه البخاری فی الصحيح، كتاب: فضائل المدينة، باب: لا يدخل الدجال المدينة، ٢/٦٦٥، الرقم: ١٧٨٢، ومسلم فی الصحيح، كتاب: الفتن وأشراط الساعة، باب: قصة الجساسة، ٤/٢٢٦٥، الرقم: ٢٩٤٣، والنسائی فی السنن الكبری، ٢/٤٨٥، الرقم: ٤٢٧٤، وابن حبان فی الصحيح، ١٥/٢١٤، الرقم: ٦٨٠٣، والمقرئ فی السنن الواردة فی الفتن، ٦/١١٦٣، الرقم: ٦٣٨۔

الحديث رقم ١٠٠: أخرجه البخاری فی الصحيح، كتاب: جزاء الصَّيدِ، باب: لا يحل القتال بمكة، ٢/٦٥١، الرقم: ١٧٣٧، وفی كتاب: الجزية، باب: إثم الغادر للبر والفاجر، ٣/١١٦٤، الرقم: ٣٠١٧، ومسلم في الصحيح، كتاب: الحج، باب: تحريم مكة وصيدها وخلاها وشجرها ولقطتها إلا لمنشد على الدوام، ٢/٩٨٦، الرقم:١٣٥٣، والنسائی فی السنن، كتاب: مناسك الحج، باب: حرمة مكة، ٥/٢٠٣، الرقم: ٢٨٧٤، وأحمد بن حنبل فی المسند، ١/٢٥٩، الرقم: ٢٣٥٣، والبيهقی فی شعب الإيمان، ٣/٤٤١، الرقم: ٤٠٠٧۔

حَرَامٌ بِحُرْمَةِ اللهِ إِلَى يَومِ الْقِيَامَةِ، وَإِنَّهُ لَمْ يَحِلَّ الْقِتَالُ فِيْهِ لِأَحَدٍ قَبْلِي، وَلَمْ يَحِلَّ لِي إِلَّا سَاعَةً مِنْ نَهَارٍ فَهُوَ حَرَامٌ بِحُرْمَةِ اللهِ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ، لَا يُعْضَدُ شَوْكُهُ وَلَا يُنَفَّرُ صَيْدُهُ، وَلَا يَلْتَقِطُ لُقَطَتَهُ إِلَّا مَنْ عَرَّفَهَا وَلَا يُخْتَلَى خَلَاهَا. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رضي الله عنهما से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने जब मक्का मुकर्रमा फ़तह किया तो उस रोज़ फरमायाः इस शहर को अल्लाह तआला ने उस दिन से हुरमत अ़ता फरमाई है जिस रोज़ आसमानों और ज़मीन को पैदा किया था और वो अल्लाह तआला की हुरमत के बाइस ता क़यामत हराम है और इसमें जंग करना किसी के लिए न मुझ से पहले हलाल हुआ न मेरे लिए, मगर दिन की एक साअत के लिए, फिर वो अल्लाह तआला की हुरमत के साथ क़यामत तक हराम है। न इसका काँटा तोड़ा जाए और ना इसका शिकार भड़काया जाए और इसकी गिरी पड़ी चीज़ सिर्फ वो उठाये जिस ने ऐलान करना हो और न यहाँ की घास उखाड़ी जाए।''

٢١٩ / ١٠١. عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَدِيِّ ابْنِ حَمْرَاءَ الزُّهْرِيِّ ﷺ قَالَ: رَأَيْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ وَاقِفًا عَلَى الْحَزْوَرَةِ، فَقَالَ: وَاللهِ إِنَّكِ لَخَيْرُ أَرْضِ اللهِ وَأَحَبُّ أَرْضِ اللهِ إِلَى اللهِ وَلَوْلَا أَنِّي أُخْرِجْتُ مِنْكِ مَا خَرَجْتُ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَه.

وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अदी बिन हमरा ﷺ रिवायत करते हैं कि मैंने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ को मक़ामे हज़वरा पर खड़े हो कर फरमाते हुए सुनाः अल्लाह रब्बुल

الحديث رقم ١٠١: أخرجه الترمذي في السنن، كتاب: المناقب عن رسول الله ﷺ، باب: في فضل مكة، ٥ / ٧٢٢، الرقم: ٣٩٢٥، والنسائي في السنن الكبرى، ٢ / ٤٧٩، الرقم: ٤٢٥٢ – ٤٢٥٣، وابن ماجه في السنن، كتاب: المناسك، باب: فضل مكة، ٢ / ١٠٣٧، الرقم: ٣١٠٨، وأحمد بن حنبل في المسند، ٤ / ٣٠٥، الرقم: ١٨٧٣٩، وابن حبان في الصحيح، ٩ / ٢٢، الرقم: ٣٧٠٨، والحاكم في المستدرك، ٣ / ٨، الرقم: ٤٣٧٠، وقال الحاكم: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحٌ.

इज़्ज़त की क़सम ! ऐ मक्का तू अल्लाह तआला की सारी ज़मीन से बेहतर और अल्लाह तआला को सारी ज़मीन से ज़्यादा मेहबूब है अगर मुझे तुझ से निकल जाने पर मजबूर न किया जाता तो मैं हरगिज़ न जाता।''

٢٢٠ / ١٠٢. عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رضي الله عنهما قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لِمَكَّةَ مَا أَطْيَبَكِ مِنْ بَلَدٍ وَأَحَبَّكِ إِلَيَّ وَلَوْلَا أَنَّ قَوْمِي أَخْرَجُوْنِي مِنْكِ مَا سَكَنْتُ غَيْرَكِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَحَسَّنَهُ وَابْنُ حِبَّانَ.

وَقَالَ الْحَاكِمُ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحُ الإِسْنَادِ.

''हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास رضي الله عنهما रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी-ए-अकरम ﷺ ने मक्का मुकर्रमा को मुख़ातिब करके फरमाया, (ऐ मक्का!) तू कितना अच्छा शहर है और मुझे कितना अज़ीज़ है अगर मेरी क़ौम मुझे यहाँ से ना निकालती तो मैं तेरे अलावा कहीं ना ठहरता।''

٢٢١ / ١٠٣. عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رضي الله عنه قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: صَلَاةُ الرَّجُلِ فِي بَيْتِهِ بِصَلَاةٍ، وَصَلَاتُهُ فِي مَسْجِدِ الْقَبَائِلِ بِخَمْسٍ وَعِشْرِيْنَ صَلَاةً، وَصَلَاتُهُ فِي الْمَسْجِدِ الَّذِي يُجَمَّعُ فِيْهِ بِخَمْسِ مِائَةِ صَلَاةٍ. وَصَلَاتُهُ فِي الْمَسْجِدِ الْأَقْصَى بِخَمْسِيْنَ أَلْفِ صَلَاةٍ. وَصَلَاتُهُ فِي مَسْجِدِي بِخَمْسِيْنَ أَلْفِ صَلَاةٍ. وَصَلَاتُهُ فِي الْمَسْجِدِ

الحديث رقم ١٠٢: أخرجه الترمذى فى السنن، كتاب: المناقب عن رسول الله ﷺ، باب: في فضل مكة، ٥/ ٧٢٣، الرقم: ٣٩٢٦، وابن حبان فى الصحيح، ٩/ ٢٣، الرقم: ٣٧٠٩، والحاكم فى المستدرك، ١/ ٦٦١، الرقم: ١٧٨٧، والطبرانى فى المعجم الكبير، ١٠/ ٢٦٧، ٢٧٠، الرقم: ١٠٦٢٤، ١٠٦٣٣، والبيهقى فى شعب الإيمان، ٣/ ٤٤٣، الرقم: ٤٠١٣.

الحديث رقم ١٠٣: أخرجه ابن ماجه فى السنن، كتاب: إقامة الصلاة والسنة فيها، باب: ماجاء فى الصلاة فى المسجد الجامع، ١/ ٤٥٣، الرقم: ١٤١٣، والطبرانى فى المعجم الأوسط، ٧/ ١١٢، الرقم: ٧٠٠٨، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٢/ ١٤٠، الرقم: ١٨٣٣.

الْحَرَامِ بِمِائَةِ أَلْفِ صَلَاةٍ. رَوَاهُ ابْنُ مَاجَه وَالطَّبَرَانِيُّ.
وَقَالَ الْمُنْذِرِيُّ: رُوَاتُهُ ثِقَاتٌ.

''हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जो अपने घर में नमाज़ पढ़े उसे एक नमाज़ का और जो क़बीले में नमाज़ पढ़े उसे पच्चीस नमाज़ों का और जो जामा मस्जिद में नमाज़ पढ़े उसे पाँच सौ नमाज़ों का, जो मस्जिदे अक़्सा और मेरी मस्जिद (मस्जिदे नबवी) में नमाज़ पढ़े उसे पचास हजार नमाज़ों का और जो मस्जिदे हराम में नमाज़ पढ़े उसे एक लाख नमाज़ों का सवाब मिलता है।''

٢٢٢ / ١٠٤ ـ عَنْ أَبِي ذَرٍّ ﷺ قَالَ: قُلْتُ: يَارَسُوْلَ اللهِ، أَيُّ مَسْجِدٍ وُضِعَ فِي الْأَرْضِ أَوَّلُ؟ قَالَ: الْمَسْجِدُ الْحَرَامُ. قَالَ: قُلْتُ: ثُمَّ أَيٌّ؟ قَالَ: الْمَسْجِدُ الْأَقْصَى. قُلْتُ: كَمْ كَانَ بَيْنَهُمَا؟ قَالَ: أَرْبَعُوْنَ سَنَةً، ثُمَّ أَيْنَمَا أَدْرَكَتْكَ الصَّلَاةُ بَعْدُ فَصَلِّهْ، فَإِنَّ الْفَضْلَ فِيْهِ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अबू ज़र ﷺ फरमाते हैं कि मैंने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की बारगाहे अक़दस में अर्ज़ कियाः या रसूलल्लाह ! ज़मीन पर सब से पहले कौनसी मस्जिद बनाई गई ? आप ﷺ ने फरमायाः मस्जिदे हराम। फरमाते हैं कि मैंने अर्ज़ कियाः उसके बाद ? आप ﷺ

الحديث رقم ١٠٤: أخرجه البخاری فی الصحيح، كتاب: الأنبياء، باب: يَزِفُّونَ النَّسلَانُ فِي المَشْيِ، ٣ / ١٢٣١، الرقم: ٣١٨٦، وفی كتاب: الأنبياء، باب: قول الله تعالى: وَوَهَبْنَا لِدَاوُدَ سُلَيْمَانَ: [ص: ٣٠] الرَّاجِعُ المُنِيْبُ، ٣ / ١٢٦٠، الرقم: ٣٢٤٣، ومسلم فی الصحيح، كتاب: المساجد ومواضع الصلاة، ١ / ٣٧٠، الرقم: ٥٣٠، والنسائی فی السنن، كتاب: المساجد، باب: ذكر أي مسجد وضع أولا، ٢ / ٣٢، الرقم: ٦٩٠، وفی السنن الكبری، ١ / ٢٥٥، الرقم: ٧٦٩، وابن ماجه فی السنن، كتاب: المساجد والجماعات، باب: أي مسجد وضع أول، ١ / ٢٤٨، الرقم: ٧٥٣، وأحمد بن حنبل فی المسند، ٥ / ١٥٠، الرقم: ٢١٣٧١، ٢١٤٢٠، ٢١٤٢٧، ٢١٤٢٨، ٢١٤٥٩، وابن خزيمة فی الصحيح، ٢ / ٥، الرقم: ٧٨٧، ١٢٩٠، وابن حبان فی الصحيح، ٤ / ٤٧٥، الرقم: ١٥٩٨: ١٤ / ١٢٠، الرقم: ٦٢٢٨، وعبد الرزاق فی المصنف، ١ / ٤٠٣، الرقم: ١٥٧٨ـ٥٩٢٥، والبزار فی المسند، ٩ / ٤١٠، الرقم: ٤٠١٥ـ

ने फरमायाः मस्जिदे अक्सा, मैंने अ़र्ज़ कियाः (या रसूलल्लाह !) इन दोनों (मस्जिदों) की तामीर के दरमियान कितना वक्फ़ा है ? आप ﷺ ने फरमायाः चालीस साल, लेकिन तुम जहाँ वक़्त हो जाए उसी जगह नमाज पढ़ लिया करो इसी में तुम्हारे लिए फ़ज़ीलत है।''

٢٢٣ / ١٠٥ ـ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رضي الله عنهما قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّ لِهَذَا الْحَجَرِ لِسَانًا وَشَفَتَيْنِ يَشْهَدُ لِمَنِ اسْتَلَمَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ بِحَقٍّ.

رَوَاهُ أَحْمَدُ وَابْنُ حِبَّانَ.

وَقَالَ الْحَاكِمُ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحُ الإِسْنَادِ.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رضي الله عنهما से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया, बेशक उस पत्थर (संगे अस्वद) को अल्लाह तआला ने ज़ुबान और दो होंट अता फरमाए हैं जिनसे यह क़यामत के दिन उन लोगों के बारे में गवाही देगा, जिन्होंने हक़ समझ कर उसे बोसा दिया होगा।''

٢٢٤ / ١٠٦ ـ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو رضي الله عنهما يَقُوْلُ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: إِنَّ الرُّكْنَ وَالْمَقَامَ يَاقُوْتَتَانِ مِنْ يَاقُوْتِ الْجَنَّةِ طَمَسَ اللهُ نُوْرَهُمَا وَلَوْلَمْ يَطْمِسْ نُوْرَهُمَا لَأَضَاءَتَا مَا بَيْنَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ.

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَحْمَدُ.

''हज़रत अब्दुल्लाह बिन अ़म्र رضي الله عنهما रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–

الحديث رقم ١٠٥: أخرجه أحمد بن حنبل فى المسند، ١/٢٦٦، الرقم: ٢٣٩٨، وابن خزيمة فى الصحيح، ٤/٢٢١، الرقم: ٢٧٣٦، وابن حبان فى الصحيح، ٩/٢٥، الرقم: ١/٣٧، والحاكم فى المستدرك، ١/٦٢٧، الرقم: ١٦٨٠، وأبويعلى فى المسند، ٥/١٠٧، الرقم: ٢٧١٩، والبيهقى فى شعب الإيمان، ٣/٤٥٠، الرقم: ٤٠٣٥، والمقدسى فى الأحاديث المختارة، ١٠/٢٠٤، الرقم: ٢٠٩-٢١٠.

الحديث رقم ١٠٦: أخرجه الترمذى فى السنن، كتاب: الحج عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء في فضل الحجر الأسود والركن والمقام، ٣/٢٢٦، الرقم: ٨٧٨، ←

अकरम ﷺ ने फरमायाः रुकने यमानी और मक़ामे इब्राहीम जन्नत के याक़ूतों में से दो याक़ूत हैं। अल्लाह तआला ने इनके नूर की रोशनी बुझा दी है अगर अल्लाह तआला इन्हें न बुझाता तो उनकी रोशनी मश्रिक़ से मग़्रिब तक सारा माहौल रोशन कर देती।''

.... وأحمد بن حنبل فی المسند، ٢/٢١٣-٢١٤، الرقم: ٧٠٠٠-٧٠٠٨، وابن حبان فی الصحیح، ٩/٢٤، الرقم: ٣٧١٠، والحاکم فی المستدرک، ١/٦٢٦، الرقم: ١٦٧٧، وروی عن أنس بن مالك ﷺ بنحوه فی المستدرک، ١/٦٢٧، الرقم: ١٦٧٨، وعبد الرزاق فی المصنف، ٥/٣٩، الرقم: ٨٩٢١.

فَصْلٌ فِي فَضَائِلِ الْمَدِيْنَةِ الْمُنَوَّرَةِ

फ़ज़ाइले मदीना मुनव्वरा का बयान

٢٢٥ / ١٠٧۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ، قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَا بَيْنَ بَيْتِي وَمِنْبَرِي رَوْضَةٌ مِنْ رِيَاضِ الْجَنَّةِ، وَمِنْبَرِي عَلَى حَوْضِي. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : मेरे घर और मेरे मिम्बर के दरमियान का हिस्सा जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है और मेरा मिम्बर मेरे हौज़ पर है।''

٢٢٦ / ١٠٨۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: إِنَّ الإِيمَانَ لَيَأْرِزُ إِلَى الْمَدِيْنَةِ، كما تَأْرِزُ الْحَيَّةُ إِلَى جُحْرِهَا. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

الحديث رقم ١٠٧: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: الجمعة، باب: فضل ما بين القبر والمنبر، ١/ ٣٩٩، الرقم: ١١٣٨، وفي كتاب: الحج، باب: كراهية النبي ﷺ أن تعرى المدينة، ٢/ ٦٦٧، الرقم: ١٧٨٩، وفي كتاب: الرقاق، باب: في الحوض، ٥/ ٢٤٠٨، الرقم: ٦٢١٦، وفي كتاب: الإعتصام بالكتاب والسنة، باب: ذكر النبي ﷺ ، وفي باب: حض على إتفاق أهل العلم وما اجتمع عليه الحرمان مكة والمدينة، ٦/ ٢٦٧٢، الرقم: ٦٩٠٤، ومسلم في الصحيح، كتاب: الحج، باب: ما بين القبر والمنبر روضة من رياض الجنة، ٢/ ١١٠، ١١١، الرقم: ١٣٩٠-١٣٩١، والترمذي في السنن، كتاب: المناقب عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء في فضل المدينة، ٥٠/ ٧١٨- ٧١٩، الرقم: ٣٩١٥-٣٩١٦، والنسائي في السنن، كتاب: المساجد، باب: فضل مسجد النبي ﷺ والصلاة فيه، ٢/ ٣٥، الرقم: ٦٩٥، والنسائي في السنن الكبرى، ١/ ٢٥٧، الرقم: ٧٧٤، ٢/ ٣٥، الرقم: ٦٩٥، ومالك في الموطأ، ١/ ١٩٧، الرقم: ٤٦٣-٤٦٤، وأحمد بن حنبل، في المسند، ٢/ ٢٣٦، الرقم: ٧٢٢٢۔

الحديث رقم ١٠٨: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: فضائل المدينة، باب: ←

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः (क़यामत के क़रीब) ईमान इस तरह मदीना मुनव्वरा की तरफ़ सिमट जाएगा जैसे साँप अपने बिल की तरफ़ सिमट आता है।''

٢٢٧ / ١٠٩۔ عَنْ أَنَسٍ ﷺ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: اَلْمَدِيْنَةُ حَرَمٌ مِنْ كَذَا إِلَى كَذَا، لَا يُقْطَعُ شَجَرُهَا، وَلَا يُحْدَثُ فِيهَا حَدَثٌ، مَنْ أَحْدَثَ فِيْهَا حَدَثًا فَعَلَيْهِ لَعْنَةُ اللهِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِيْنَ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

وهذا لفظ البخاري وزاد مسلم: **لَا يَقْبَلُ اللهُ مِنْهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ صَرَفاً وَلَا عَدَلاً.**

''हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः मदीना मुनव्वरा फ़लाँ जगह से फ़लाँ जगह तक हरम है उसके दरख़्त न काटे जाएं और न उसमें कोई फ़ितना बपा किया जाए जो इसमें फ़ितने का कोई काम ईजाद करेगा उस पर अल्लाह तआला, फ़रिश्तों और तमाम इन्सानों की ला'नत है। इसे इमाम बुख़ारी ने रिवायत किया है यह अल्फ़ाज़ भी इन्हीं के हैं और मुस्लिम ने इन अल्फ़ाज़ के इज़ाफ़ा के साथ रिवायत किया है कि

.... باب: الإيمانُ يأرز إلى المدينة، ٢/٦٦٣، الرقم: ١٧٧٧، ومسلم فى الصحيح، كتاب: الإيمان، باب: بيان أن الإسلام بدأ غريبا وسيعود غريبا وإنه يأرز بين المسجدين، ١/١٣١، الرقم: ١٤٧، والترمذي فى السنن، كتاب: الإيمان عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء أن الإسلام بدأ غريبا وسيعود غريبا، ٥/١٨، الرقم: ٢٦٣٠، وابن ماجه فى السنن، كتاب: المناسك، باب: فضل المدينة، ٢/١٠٨، الرقم: ٣١١١، وابن حبان فى الصحيح، ٩/٤٦، الرقم: ٧٨٣٣.

الحديث رقم ١٠٩: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: فضائل المدينة، باب: حرم المدينة، ٢/٦٦١، الرقم: ١٧٦٨، وفى كتاب: الإعتصام بالكتاب والسنة، باب: إثم من آوى محدثا، ٦/٢٦٦٥، الرقم: ٦٨٧٦، ومسلم فى الصحيح، كتاب: الحج، باب: فضل المدينة ودعاء النبى ﷺ فيها بالبركة وبيان تحريمها وتحريم صيدها وشجرها وبيان حدود حرمها، ٢/٩٩٤، الرقم: ١٣٦٦، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٥/١٩٧، الرقم: ٩٧٣٩، والطحاوى فى شرح معانى الآثار، ٤/١٩٣.

क़यामत के दिन उसका फ़र्ज़ व नफ़्ल कुछ भी क़ुबूल न होगा।''

٢٢٨ / ١١٠۔ عَنْ جَابِرٍ رضی الله عنه قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وآله وسلم: إِنَّ إِبْرَاهِيمَ حَرَّمَ مَكَّةَ وَإِنِّي حَرَّمْتُ الْمَدِينَةَ مَا بَيْنَ لَابَتَيْهَا. لَا يُقْطَعُ عِضَاهُهَا وَلَا يُصَادُ صَيْدُهَا.

رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَأَحْمَدُ.

''हज़रत जाबिर ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः हज़रत इब्राहीम عليه السلام ने मक्का मुकर्रमा को हरम क़रार दिया था और मैं दोनों काले पत्थरों वाले मैदानों के दरमियान मदीना मुनव्वरा को हरम क़रार देता हूँ न वहाँ कोई दरख़्त और झाड़ी काटी जाये और न ही वहाँ कोई जानवर शिकार किया जाए।''

٢٢٩ / ١١١۔ عَنْ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ رضی الله عنه قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صلى الله عليه وآله وسلم: وَلَا يُرِيدُ أَحَدٌ أَهْلَ الْمَدِينَةِ بِسُوْءٍ إِلَّا أَذَابَهُ اللهُ فِي النَّارِ ذَوْبَ الرُّصَاصِ، أَوْ ذَوْبَ الْمِلْحِ فِي الْمَاءِ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَالنَّسَائِيُّ.

''हज़रत सा'द बिन अबी वक़्क़ास ﷺ रिवायत फरमाते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जो शख़्स अहले मदीना को तक्लीफ़ देना चाहेगा तो अल्लाह तआला दोज़ख़ में उसे इस तरह पिघलाएगा जिस तरह आग में शीशा पिघलता है या जिस तरह नमक पानी में पिघलता है।''

الحديث رقم ١١٠: أخرجه مسلم فى الصحيح، كتاب: الحج، باب: فضل المدينة ودعاء النبى صلى الله عليه وآله وسلم فيها بالبركة وبيان تحريمها وتحريم صيدها وشجرها وبيان حدود حرمها، ٢ / ٩٩٢، الرقم: ١٣٦٢، وأحمد بن حنبل فى المسند، ١ / ١٨٤، والعسقلانى فى فتح البارى، ٤ / ٨٤، والزرقانى فى شرحه على موطا إمام مالك، ٤ / ٢٨٣، والنووى فى شرحه على صحيح مسلم، ٩ / ١٣٦۔

الحديث رقم ١١١: أخرجه مسلم فى الصحيح، كتاب: الحج، باب: فضل المدينة ودعاء النبى صلى الله عليه وآله وسلم فيها بالبركة وبيان تحريمها وتحريم صيدها وشجرها وبيان حدود حرمها، ٢ / ٩٩٢، الرقم: ١٣٦٣، والنسائى فى السنن الكبرى، ٢ / ٤٨٦، الرقم: ٤٢٧٩، وأحمد بن حنبل فى المسند، ١ / ١٨٤، الرقم: ١٦٠٦، وابن كثير الدورقى فى مسند سعد، ١ / ٨٢، الرقم: ٣٨، وإبراهيم الجندى فى فضائل المدينة، ١ / ٢٩، الرقم: ٢٨۔

٢٣٠ / ١١٢ ـ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ قَالَ: قَالَ: رَسُوْلُ اللهِ ﷺ : عَلَى أَنْقَابِ الْمَدِيْنَةِ مَـلَائِكَةٌ لَا يَدْخُلُهَا الطَّاعُوْنُ وَلَا الدَّجَّالُ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः मदीना मुनव्वरा के रास्तों पर फ़रिश्ते (बतौर मुहाफ़िज़ मुकर्रर) हैं लिहाज़ा ताऊन और दज्जाल इस (मुक़द्दस शहर) में दाख़िल नहीं होंगे।''

٢٣١ / ١١٣ ـ عَنْ أَبِي بَكْرَةَ ﷺ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: لَا يَدْخُلُ الْمَدِيْنَةَ رُعْبُ الْمَسِيْحِ الدَّجَّالِ، لَهَا يَوْمَئِذٍ سَبْعَةُ أَبْوَابٍ، عَلَى كُلِّ بَابٍ مَلَكَانِ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ وَابْنُ حِبَّانَ.

''हज़रत अबू बकर ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः मसीह दज्जाल का रो'ब मदीना के अन्दर दाख़िल नहीं होगा उस दिन इस (शहर) के सात दरवाज़े होंगे और हर दरवाज़े पर दो फ़रिश्ते मुक़र्रर होंगे।''

الحديث رقم ١١٢: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: فضائل المدينة، باب: لا يدخل الدجال المدينة، ٢ / ٦٦٤، الرقم: ١٧٨١، وفى كتاب: الطب، باب: ما يُذْكَرُ في الطاعون، ٥ / ٢١٦٥، الرقم: ٥٣٩٩، وفى كتاب: الفتن، باب: لا يدخل الدجال المدينة، ٦ / ٢٦٠٩، الرقم: ٦٧١٤، ومسلم فى الصحيح، كتاب: الحج، باب: صيانة المدينة من دخول الطاعون والدجال إليها، ٢ / ١٠٠٥، الرقم: ١٣٧٩، ومالك فى الموطأ، ٢ / ٨٩٢، الرقم: ١٥٨٢، والجندى فى فضائل المدينة، ١ / ٢٤، الرقم: ١٥، والمقرىء فى السنن الواردة فى الفتن، ٦ / ١١٦٥، الرقم: ٢، وأبونعيم فى المسند المستخرج، ٤ / ٤٧، الرقم: ٣١٩٣.

الحديث رقم ١١٣: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: فضائل المدينة، باب: لايدخُلُ الدَّجَّال المدينة، ٢ / ٦٦٤، الرقم: ١٧٨٠، وفى كتاب: الفتن، باب: ذكر الدجال، ٦ / ٢٦٠٧، الرقم: ٦٧٠٧، وابن حبان فى الصحيح، ٩ / ٤٨، الرقم: ٣٧٣١، ٦٨٠٥، والحاكم فى المستدرك، ٤ / ٥٨٥، الرقم: ٨٦٢٧، وابن أبى شيبة فى المصنف، ٦ / ٤٠٦، الرقم: ٣٢٤٢٥، ٣٧٤٨٣.

٢٣٢ / ١١٤. عَنْ أَنَسٍ رضي الله عنه عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: قَالَ: اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ بِالْمَدِيْنَةِ ضِعْفَي مَاجَعَلْتَ بِمَكَّةَ مِنَ الْبَرَكَةِ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अनस رضي الله عنه से मरवी है कि हुज़ूर नबीए अकरम ﷺ ने दुआ फरमाईः ऐ अल्लाह! मदीना मुनव्वरा में उससे दो गुना बरकत अ़ता फरमा जितनी तूने मक्का मुकर्रमा में रखी है।''

٢٣٣ / ١١٥. عَنْ عَبْدِاللهِ بْنِ عُمَرَ رضي الله عنهما قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ صَبَرَ عَلَى لَأْوَائِهَا وَشِدَّتِهَا، كُنْتُ لَهُ شَهِيدًا أَوْ شَفِيْعًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ (يَعْنِي الْمَدِينَةَ). رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَالنَّسَائِيُّ وَمَالِكٌ.

''हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर رضي الله عنهما रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जो शख़्स मदीना मुनव्वरा की सख़्तियों और मुसीबतों पर सब्र करेगा क़यामत के दिन मैं उसका गवाह हूँगा या उसकी शफ़ाअ़त करूँगा।''

٢٣٤ / ١١٦. عَن أَبِي هُرَيْرَةَ رضي الله عنه أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: لَا يَصْبِرُ

الحديث رقم ١١٤: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: فضائل المدينة، باب: المدينة تَنْفِي الخَبَثَ، ٢ / ٦٦٦، الرقم: ١٧٨٦، ومسلم فى الصحيح، كتاب: الحج، باب: فضل المدينة ودعا النبى ﷺ فيها بالبركة وبيان تحريمها وتحريم صيدها وشجرها وبيان حدود حرمها، ٢ / ٩٩٤، الرقم: ١٣٦٩، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٢ / ١٤٨، الرقم: ١٨٧٣.

الحديث رقم ١١٥: أخرجه مسلم فى الصحيح، كتاب: الحج، باب: الترغيب في سكنى المدينة والصبر على لأوائها، ٢ / ١٠٠٤، الرقم: ١٣٧٧، والنسائى فى السنن الكبرى، ٢ / ٤٨٧، الرقم: ٤٢٨١، ومالك فى الموطأ، ٢ / ٨٨٥، الرقم: ١٥٦٩، وابن حبان فى الصحيح، ٣ / ٥٦، الرقم: ٣٧٣٩، والبهيقى فى شعب الايمان، ٣ / ٤٩٦، الرقم: ٤١٧٩، والجندى فى فضائل المدينة، ١ / ٣١، الرقم: ٣٢. ٣٤، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٢ / ١٤٥.١٤٦، الرقم: ١٨٥٧.١٨٥٨، والهيثمى فى مجمع الزوائد، ٣ / ٣٠٠: ٦ / ١١٩، وَقَالَ الهيثمىُّ: وَرِجَالُهُ ثِقَاتٌ.

الحديث رقم ١١٦: أخرجه مسلم فى الصحيح، كتاب: الحج، باب: الترغيب في سكنى المدينة والصبر على لأوائها، ٢ / ١٠٠٤، الرقم: ١٣٧٨.

عَلَى لَأْوَاءِ الْمَدِيْنَةِ وَشِدَّتِهَا أَحَدٌ مِنْ أُمَّتِي، إِلَّا كُنْتُ لَهُ شَفِيْعًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ أَوْشَهِيْدًا. رَوَاهُ مُسْلِمٌ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः मेरी उम्मत में से जो शख़्स भी मदीना पाक की तंगी और सख़्ती पर सब्र करेगा, क़यामत के दिन मैं उसकी शफ़ाअत करूँगा या उसके हक़ में गवाही दूँगा।''

اَلْبَابُ الرَّابِعُ : बाब 4 :

كَيْفِيَّةُ صَلَاةِ النَّبِيِّ ﷺ

हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ का तरीक़ा–ए–नमाज़

1. فَصْلٌ فِي الإِمَامَةِ وَعَدَمِ الْجَهْرِ بِبِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيْمِ

इमामत करने और बुलन्द आवाज़ से तस्मिया न पढ़ने का बयान

2. فَصْلٌ فِي عَدَمِ رَفْعِ الْيَدَيْنِ إِلَّا فِي أَوَّلِ مَرَّةٍ

तक्बीरे ऊला के अलावा नमाज़ में रफ़ा'यदैन न करने का बयान

3. فَصْلٌ فِي تَرْكِ الْقِرَاءَةِ خَلْفَ الإِمَامِ

इमाम के पीछे क़िरअत न करने का बयान

4. فَصْلٌ فِي عَدَمِ الْجَهْرِ بِالتَّأْمِيْنِ

बुलन्द आवाज़ से आमीन न कहने का बयान

فَصْلٌ فِي الْإِمَامَةِ وَعَدَمِ الْجَهْرِ بِبِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيْمِ

﴾इमामत कराने और बुलन्द आवाज़ से तस्मिया न पढ़ने का बयान﴿

٢٣٥ / ١. عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ الْأَنْصَارِيِّ رضي الله عنه أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ رَكِبَ فَرَسًا فَجُحِشَ شِقُّهُ الْأَيْمَنُ. قَالَ أَنَسٌ رضي الله عنه: فَصَلَّى لَنَا يَوْمَئِذٍ صَلَاةً مِنَ الصَّلَوَاتِ، وَهُوَ قَاعِدٌ، فَصَلَّيْنَا وَرَاءَهُ قُعُوْدًا، ثُمَّ قَالَ لَمَّا سَلَّمَ: إِنَّمَا جُعِلَ الإِمَامُ لِيُؤْتَمَّ بِهِ فَإِذَا صَلَّى قَائِمًا فَصَلُّوْا قِيَامًا، وَإِذَا رَكَعَ فَارْكَعُوا وَإِذَا رَفَعَ فَارْفَعُوْا. وَإِذَا سَجَدَ فَاسْجُدُوْا، وَإِذَا قَالَ: ﴿سَمِعَ اللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ﴾، فقُوْلُوْا: ﴿رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ﴾. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

الحديث رقم ١: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: صفة الصلاة، باب: إيجاب التكبير وافتتاح الصلاة، ١/٢٥٧، الرقم: ٦٩٩، وفي كتاب: الجمعة، باب: صلاة القاعد، ١/٣٧٥، الرقم: ١٠٦٣، ومسلم في الصحيح، كتاب: الصلاة، باب: ائتمام المأموم بالإمام، ١/٣٠٨، الرقم: ٤١١، وأبوداود في السنن، كتاب: الصلاة، باب: الإمام يصلي من قعود، ١/١٦٤، الرقم: ٦٠١، والنسائي في السنن، كتاب: الإمامة، باب: الإئتمام بالإمام يصلي قاعدا، ٢/٩٨، الرقم: ٨٣٢، وابن ماجه في السنن، كتاب: إقامة الصلاة والسنة فيها، باب: ماجاء في إنما جعل الإمام ليؤتم به، ١/٣٩٢، الرقم: ١٢٣٨، ومالك في الموطأ، ١/١٣٥، الرقم: ٣٠٤، وأحمد بن حنبل في المسند، ٢/٤١١، الرقم: ٩٣١٨، والشافعي في المسند، ١/٥٨، وابن حبان في الصحيح، ٥/٤٦١، الرقم: ٢١٠٣، ٥/٤٦٩، الرقم: ٢١٠٨، والنسائي في السنن الكبرى، ١/٢٩٢، الرقم: ٩٠٦، وابن أبي شيبة في المصنف، ٧/٢٨٦، الرقم: ٣٦١٣٤، وعبد الرزاق في المصنف، ٢/٤٦٠، الرقم: ٤٠٧٨، والطحاوي في شرح معاني الآثار، ١/٤٠٣، وأبويعلى في المسند، ٦/٢٨٣، الرقم: ٣٥٩٥، وأبوعوانة في المسند، ١/٤٣٦، الرقم: ١٦١٩، والبيهقي في السنن الصغرى، ١/٣٢٠، الرقم: ٥٤٦، وفي السنن الكبرى، ٢/٩٧، الرقم: ٢٤٥١، والطبراني في مسند الشاميين، ١/٦٢، الرقم: ٦٦.

''हज़रत अनस बिन मालिक अन्सारी ﷺ बयान करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ घोड़े पर सवार हुए और आप ﷺ का दायाँ पहलू मुबारक जख़्मी हो गया सो आप ﷺ ने हमें एक नमाज़ बैठ कर पढ़ाई और हमने भी आप ﷺ के पीछे बैठ कर नमाज़ पढ़ी फिर आप ﷺ ने सलाम फेर कर फरमायाः इमाम तो बनाया ही इसलिए जाता है कि उसकी पैरवी की जाए। जब वो खड़ा हो कर नमाज़ पढ़े तो तुम भी खड़े हो कर पढ़ो और जब वो रूकूअ करे तो तुम भी रूकूअ करो और जब वो सर उठाए तो तुम भी सर उठाओ और जब वो सज्दा करे तो तुम भी सज्दा करो और जब वो ﴿سَمِعَ اللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ﴾ कहे तो तुम ﴿رَبَّنَا وَلَکَ الْحَمْدُ﴾ कहो।''

٢٣٦ / ٢۔ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ ﷺ أَنَّهُ قَالَ: خَرَّ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ عَنْ فَرَسٍ فَجُحِشَ، فَصَلَّى لَنَا قَاعِدًا، فَصَلَّيْنَا مَعَهُ قُعُوْدًا، ثُمَّ انْصَرَفَ فَقَالَ: إِنَّمَا الإِمَامُ (أَوْ إِنَّمَا جُعِلَ الإِمَامُ) لِيُؤْتَمَّ بِهِ، فَإِذَا كَبَّرَ فَكَبِّرُوْا، وَإِذَا رَكَعَ فَارْكَعُوْا، وَإِذَا رَفَعَ فَارْفَعُوْا، وَإِذَا قَالَ: ﴿سَمِعَ اللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ﴾، فَقُوْلُوْا: ﴿رَبَّنَا لَکَ الْحَمْدُ﴾، وَإِذَا سَجَدَ فَاسْجُدُوْا. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ''

الحديث رقم ٢: أخرجه البخاری فی الصحيح، کتاب: صفة الصلاة، باب: إيجاب التكبير وافتتاح الصلاة، ١: ٢٥٧، الرقم: ٧٠٠، وفي كتاب: الجمعة، باب: صلاة القاعد، ١ / ٣٧٥، الرقم: ١٠٦٣، ومسلم في الصحيح، كتاب: الصلاة، باب: ائتمام المأموم بالإمام، ١ / ٣٠٨، الرقم: ٤١١، والترمذي في السنن، كتاب: الصلاة عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء إذا صلى الإمام قاعدا فصلوا قعودا، ٢ / ١٩٤، الرقم: ٣٦١، وقال أبوعيسى: هذا حديث حسن صحيح، وأبوداود في السنن، كتاب: الصلاة، باب: الإمام يصلي من قعود، ١ / ١٦٤، الرقم: ٦٠١، والنسائي في السنن، كتاب: التطبيق، باب: ما يقول المأموم، ٢ / ١٩٥، الرقم: ١٠٦١، وابن ماجه في السنن، كتاب: إقامة الصلاة والسنة فيها، باب: ماجاء في إنما جعل الإمام ليؤتم به، ١ / ٣٩٣، الرقم: ١٢٣٨، والشافعي في المسند، ١ / ٥٨، وأحمد بن حنبل في المسند، ٣ / ١١٠، الرقم: ١٢٠٩٥، وابن حبان في الصحيح، ٥ / ٤٧٧، الرقم: ٢١١٣۔

घोड़े से नीचे तशरीफ़ ले आए तो ख़राश आ गई, आप ﷺ ने हमें बैठ कर नमाज़ पढ़ाई और हम ने भी आप ﷺ के साथ बैठ कर नमाज़ पढ़ी, फिर फ़ारिग़ हुए तो आप ﷺ ने फरमायाः इमाम इसीलिए बनाया जाता है कि उसकी पैरवी की जाए। जब वो तक्बीर कहे तो तुम भी तक्बीर कहो और जब वो रूकूअ करे तो रूकूअ करो और जब वो सर उठाए तो तुम भी सर उठाओ और जब वो ﴿سَمِعَ اللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ﴾ कहे तो तुम ﴿رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ﴾ कहो, और सज्दा करे तो तुम भी सज्दा करो।''

٣/٢٣٧ـ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ ﷺ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: أَقِيْمُوا الرُّكُوْعَ وَالسُّجُوْدَ، فَوَاللهِ إِنِّي لَأَرَاكُمْ مِنْ بَعْدِي (وَرُبَّمَا قَالَ: مِنْ بَعْدِ ظَهْرِي) إِذَا رَكَعْتُمْ وَسَجَدْتُمْ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया, रूकूअ और सज्दे पूरे किया करो, ख़ुदा की क़सम! मैं तुम्हें अपने बाद भी देखता हूँ (और कभी फरमाया, पीठ पीछे से देखता हूँ) जब रूकूअ और सज्दा करते हो।''

٤/٢٣٨ـ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ ﷺ قَالَ: كَانَ النَّاسُ يُؤْمَرُوْنَ أَنْ يَضَعَ الرَّجُلُ الْيَدَ الْيُمْنَى عَلَى ذِرَاعِهِ الْيُسْرَى فِي الصَّلَاةِ. وَقَالَ أَبُوْحَازِمٍ: لَا أَعْلَمُهُ إِلَّا يَنْمِي ذَلِكَ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ.
رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ وَمَالِكٌ.

''हज़रत सहल बिन सा'द ﷺ ने फरमायाः लोगों से कहा जाता था कि नमाज़ी हालते

الحديث رقم ٣: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: صفة الصلوة، باب: الخشوع فى الصلاة، ١/٢٥٩، الرقم: ٧٠٩، ومسلم في الصحيح، كتاب: الصلاة، باب: الأمر بتحسين الصلاة وإتمامها والخشوع فيها، ١/٣١٩، الرقم: ٤٢٥، وأحمد بن حنبل في المسند، ٣/١٣٠، الرقم: ١٢٣٤٣.

الحديث رقم ٤: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: صفة الصلاة، باب: وضع اليمنى على اليسرى فى الصلوة، ١/٢٥٩، الرقم: ٧٠٧ ومالك في الموطأ، ١/١٥٩، الرقم: ٣٧٦، وأبو عوانة في المسند، ١/٤٢٩، الرقم: ١٥٩٧، والطبراني في المعجم الكبير، ٦/١٤٠، الرقم: ٥٧٧٢.

नमाज़ में अपने दाएँ हाथ को अपनी बाईं कलाई पर रखे। अबू हाज़िम ने फरमाया कि मुझे तो यही मालूम है कि हज़रत सहल इस बात को नबी–ए–अकरम ﷺ की तरफ़ मन्सूब करते थे।''

٢٣٩ / ٥۔ عَنْ عِمْرَانَ ابْنِ حُصَيْنٍ رضي الله عنه قَالَ: صَلَّى مَعَ عَلِيٍّ رضي الله عنه بِالْبَصْرَةِ، فَقَالَ: ذَكَّرَنَا هَذَا الرَّجُلُ صَلَاةً، كُنَّا نُصَلِّيْهَا مَعَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ فَذَكَرَ أَنَّهُ كَانَ يُكَبِّرُ كُلَّمَا رَفَعَ وَكُلَّمَا وَضَعَ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ.

''हज़रत इमरान बिन हुसैन रضي الله عنه ने फरमायाः उन्होंने हज़रत अली رضي الله عنه के साथ बसरा में नमाज़ पढ़ी तो उन्होंने हमें वो नमाज़ याद करा दी जो हम रसूलुल्लाह ﷺ के साथ पढ़ा करते थे। बताया कि आप जब भी उठते और झुकते तो तक्बीर कहा करते थे।''

٢٤٠ / ٦۔ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضي الله عنه أَنَّهُ كَانَ يُصَلِّي بِهِمْ، فَيُكَبِّرُ كُلَّمَا خَفَضَ وَرَفَعَ فَإِذَا انْصَرَفَ قَالَ إِنِّي لَأَشْبَهُكُمْ صَلَاةً بِرَسُوْلِ اللهِ ﷺ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अबू सलमा से रिवायत है कि हज़रत अबू हुरैरा رضي الله عنه उन्हें नमाज़ पढ़ाया करते थे, जब भी झुकते और उठते तो तक्बीर कहते। जब आप नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो फरमाया, मेरी नमाज़ तुम सब से ज़्यादा रसूलुल्लाह ﷺ की नमाज़ के साथ मुशाबिहत रखती है।''

الحديث رقم ٥: أخرجه البخاری فی الصحیح، کتاب: الأذان، باب: إتمام التکبیر فی الرکوع، ١ / ٢٧١، الرقم: ٧٥١، والبزار في المسند، ٩ / ٢٦، الرقم: ٣٥٣٢، والبيهقي في السنن الكبرى، ٢ / ٦٨، الرقم: ٢٣٢٦۔

الحديث رقم ٦: أخرجه البخاری فی الصحیح، کتاب: صفة الصلاة، باب: إتمام التکبیر فی الرکوع، ١ / ٢٧٢، الرقم: ٧٥٢، ومسلم في الصحيح، كتاب: الصلاة، باب: إثبات التكبير في كل خفض ورفع في الصلاة، ١ / ٢٩٣، الرقم: ٣٩٢، والنسائي في السنن، كتاب: التطبيق، باب: التكبير للنهوض، ٢ / ٢٣٥، الرقم: ١١٥٥، والشافعي في المسند، ١ / ٣٨، وأحمد بن حنبل في المسند، ٢ / ٢٣٦، الرقم: ٧٢١٩، ومالك في الموطأ، ١ / ٧٦، الرقم: ١٦٦، والطحاوي في شرح معاني الآثار، ١ / ٢٢١، وابن الجارود في المنتقى، ١ / ٥٧، الرقم: ١٩١، وابن حبان في الصحيح، ٥ / ٦٢، الرقم: ١٧٦٦۔

٢٤١ /٧۔ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ ﷺ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ وَأَبَابَكْرٍ وَعُمَرَ رضي الله عنهما كَانُوْا يَفْتَتِحُوْنَ الصَّلَاةَ: بِ ﴿الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ﴾.

رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ.

''हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ, हज़रत अबू बकर और हज़रत उमर رضي الله عنهما नमाज़ को ﴿ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ﴾ से शुरू किया करते थे।''

٢٤٢ /٨۔ عَنْ أَنَسٍ ﷺ قَالَ: صَلَّيْتُ مَعَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ، وَأَبِي بَكْرٍ، وَعُمَرَ، وَعُثْمَانَ ﷺ فَلَمْ أَسْمَعْ أَحَدًا مِنْهُمْ يَقْرَأُ: ﴿بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيْمِ﴾. رَوَاهُ مُسْلِمٌ.

''हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ रिवायत करते हैं मैंने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ, हज़रत अबू बकर, हज़रत उमर और हज़रत उस्मान ग़नी ﷺ की इक़्तिदाअ में नमाज़ पढ़ी, मगर मैंने उन में से किसी को ﴿بسم الله الرحمن الرحيم﴾ पढ़ते न सुना।''

الحديث رقم ٧: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: صفة الصلاة، باب: ما يقول بعد التكبير، ١/٢٥٩، الرقم: ٧١٠، والشافعي في السنن المأثورة، ١/١٣٥۔١٣٨۔

الحديث رقم ٨: أخرجه مسلم في الصحيح، كتاب: الصلاة، باب: حجة من قال لا يجهر بالبسملة، ١/٢٩٩، الرقم: ٣٩٩، والنسائي فى السنن، كتاب: الافتتاح، باب: ترك الجهر ببسم الله الرحمن الرحيم، ٢/٩٩، الرقم: ٩٠٧، والنسائي فى السنن الكبرى، ١/٣١٥، الرقم: ٩٧٩، وابن حبان فى الصحيح، ٥/١٠٣، الرقم: ١٧٩٩، وابن خزيمة فى الصحيح، ١/٢٤٩، ٢٥٠، الرقم: ٤٩٥۔٤٩٧، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٣/١٧٦، ٢٧٥، ٢٧٨، وابن أبي شيبة فى المصنف ١/٣٦٠، الرقم: ٤١٤٤، والدارقطني فى السنن، ١/٣١٤، ٣١٥، وأبو عوانة فى المسند، ١/٤٤٨، الرقم: ١٦٥٦، وابن الجعد فى المسند، ١/١٤٦، ٢٩٣، الرقم: ٩٢٢، ١٩٨٦، وعبد بن حميد فى المسند، ١/٣٥٩، الرقم: ١١٩١، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٢/٥١، الرقم: ٢٢٤٣، والطحاوى فى شرح معانى الآثار، ١/٢٦١، الرقم: ١١٦٦۔

٢٤٣ / ٩ـ عَنِ ابْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ مُغَفَّلٍ رضي الله عنه، قَالَ: سَمِعَنِي أَبِي وَأَنَا فِي الصَّلَاةِ، أَقُوْلُ: ﴿بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ﴾، فَقَالَ لِي: أَي بُنَيَّ! مُحْدَثٌ إِيَّاكَ وَالْحَدَثَ، قَالَ: وَلَمْ أَرَ أَحَدًا مِنْ أَصْحَابِ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ كَانَ أَبْغَضَ إِلَيْهِ الْحَدَثُ فِي الإِسْلَامِ يَعْنِي: مِنْهُ. قَالَ: وَقَدْ صَلَّيْتُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ. وَمَعَ أَبِي بَكْرٍ، وَمَعَ عُمَرَ، وَمَعَ عُثْمَانَ رضي الله عنهم فَلَمْ أَسْمَعْ أَحَدًا مِنْهُمْ يَقُوْلُهَا، فَلَا تَقُلْهَا، إِذَا أَنْتَ صَلَّيْتَ، فَقُلْ: ﴿الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ﴾ [الفاتحة، ١: ١]. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ.

وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: حَدِيْثُ عَبْدِ اللهِ بْنِ مُغَفَّلٍ حَدِيْثٌ حَسَنٌ وَالْعَمَلُ عَلَيْهِ عِنْدَ أَكْثَرِ أَهْلِ الْعِلْمِ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ ﷺ مِنْهُمْ: أَبُوبَكْرٍ، وَعُمَرُ، وَعُثْمَانُ، وَعَلِيٌّ، وَغَيْرُهُمْ رضي الله عنهم، وَمَنْ بَعْدَهُمْ مِنَ التَّابِعِيْنَ. وَبِهِ يَقُوْلُ: سُفْيَانُ الثَّوْرِيُّ، وَابْنُ الْمُبَارَكِ، وَأَحْمَدُ وَإِسْحَاقُ: لَا يَرَوْنَ أَنْ يَجْهَرَ. بِ ﴿بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيْمِ﴾ قَالُوْا: وَيَقُوْلُهَا فِي نَفْسِهِ.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल رضي الله عنه फरमाते हैं: मेरे वालिद ने मुझे नमाज़ में ﴿بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ﴾ पढ़ते हुए सुना तो फरमायाः ऐ बेटे ! यह बिदअ़त है बिदअ़त से बचो। फिर फरमायाः मैंने सहाबा किराम رضي الله عنهم को इससे ज़्यादा किसी और बिदअ़त को इतना नापसन्द करते हुए नहीं देखा। और यह भी कहा कि मैंने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ, हज़रत अबू बकर सिद्दीक़, हज़रत उमर और हज़रत उस्मान ग़नी رضي الله عنهم के साथ नमाज़ पढ़ी, लेकिन उनमें से किसी को ﴿بِسْمِ اللهِ﴾ को ज़ाहिरन कहते हुए नहीं सुना लिहाज़ा तुम भी बुलन्द आवाज से न कहो जब नमाज़ पढ़ो तो सिर्फ ﴿اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ﴾ से (क़िरअत) शुरू करो।''

''इमाम तिर्मिज़ी फरमाते हैं कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल की हदीस हसन है

الحديث رقم ٩: أخرجه الترمذى فى السنن، كتاب: الصلاة عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء فى ترك الجهربسم الله الرحمن الرحيم، ٢ / ١٢، الرقم: ٢٤٤، وابن قدامة في المغني، ١ / ٢٨٤.

और अक्सर अस्हाबे रसूल जिनमें हज़रत अबू बकर, हज़रत उमर, हज़रत उस्मान ग़नी और हज़रत अली ﷺ और के अलावा कई सहाबा किराम शामिल हैं इसी पर अमल पैरा रहे और ताबेईन का भी इसी पर अमल है। सुफ़ियान सौरी, इब्ने मुबारक, अहमद और इस्हाक़ (﴿بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ﴾) को ऊँची आवाज़ से पढ़ना जाइज़ नहीं क़रार देते बल्कि फरमाते हैं कि आहिस्ता पढ़नी चाहिये।''

٢٤٤ / ١٠ـ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مُغَفَّلٍ ﷺ، قَالَ: صَلَّيْتُ خَلْفَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ وَخَلْفَ أَبِي بَكْرٍ، وَخَلْفَ عُمَرَ رضي الله عنهما، فَمَا سَمِعْتُ أَحَدًا مِنْهُمْ قَرَأَ بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيْمِ. رَوَاهُ أَبُوْحَنِيْفَةَ وَالنَّسَائِيُّ.

''हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल ﷺ से रिवायत है कि मैंने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के पीछे और अबू बकर व उमर رضي الله عنهما के पीछे नमाज़ पढ़ी और किसी को भी (बुलन्द आवाज़ से) ﴿بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ﴾ पढ़ते हुए न सुना।''

٢٤٥ / ١١ـ عَنْ أَنَسٍ ﷺ قَالَ: صَلَّيْتُ خَلْفَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ وَخَلْفَ أَبِي بَكْرٍ وَعُمَرَ وَعُثْمَانَ ﷺ، وَكَانُوْا لَا يَجْهَرُوْنَ بِ ﴿بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيْمِ﴾. رَوَاهُ أَبُوْحَنِيْفَةَ وَأَحْمَدُ.

''हज़रत अनस ﷺ बयान करते हैं कि मैंने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ, अबू बकर,

---

الحديث رقم ١٠: أخرجه الخوارزمي فى جامع المسانيد للإمام أبى حنيفة ١/٣١٨، ٣٢٣، والنسائى فى السنن، كتاب: الافتتاح، باب: ترك الجهر ببسم الله الرحمن الرحيم، ٢/٩٩، الرقم: ٩٠٨، والنسائي فى السنن الكبرى، ١/٣١٥، الرقم: ٩٨٠، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٥/٥٤ـ٥٥، والطحاوى فى شرح معانى الآثار، ١/٢٦٠، ٢٦١، الرقم: ١١٦١، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٢/٥٢، الرقم: ٢٢٤٨ـ

الحديث رقم ١١: أخرجه الخوارزمي في جامع المسانيد للإمام أبى حنيفة، ١/٣٢٢، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٣/١٧٩، ٢٧٥، وابن حبان فى الصحيح، ٥/١٠٥، الرقم: ١٨٠٢، وابن الجعد فى المسند، ١/١٤٦، الرقم: ٩٢٣، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٢/٥٢، الرقم: ٢٢٤٩، والطحاوى فى شرح معانى الآثار، ١/٢٦٢، الرقم: ١١٦٧ـ

उमर व उस्मान ﷺ की इक़्तिदा में नमाज़ पढ़ी, यह तमाम हज़रात ﴿بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ﴾ बुलन्द आवाज में नहीं पढ़ते थे।''

٢٤٦ / ١٢۔ عَنْ أَبِي وَائِلٍ ﷺ: أَنَّ عَلِيًّا وَعَمَّارًا رضي الله عنهما كَانَا لَا يَجْهَرَانِ بِ ﴿بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ﴾. رَوَاهُ ابْنُ أَبِي شَيْبَةَ.

''हज़रत अबू वाइल ﷺ रिवायत करते हैं कि हज़रत अली और हज़रत अम्मार رضي الله عنهما (नमाज़ में) ﴿بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ﴾ पढ़ते वक़्त आवाज़ बुलन्द नहीं करते थे।''

٢٤٧ / ١٣۔ قَالَ إِبْرَاهِيمُ النَّخَعِيُّ ﷺ: جَهْرُ الإِمَامِ ﴿بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ﴾ بِدْعَةٌ. رَوَاهُ ابْنُ أَبِي شَيْبَةَ.

''हज़रत इब्राहीम नख़ई ﷺ रिवायत करते हैं कि इमाम का बुलन्द आवाज़ में ﴿بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ﴾ पढ़ना बिदअत है।''

الحديث رقم ١٢: أخرجه ابن أبى شيبة فى المصنف، ١ / ٣٦١، الرقم: ٤١٤٩۔
الحديث رقم ١٣: أخرجه ابن أبى شيبة فى المصنف، ١ / ٣٦٠، الرقم: ٤١٣٨۔

فَصْلٌ فِي عَدَمِ رَفْعِ الْيَدَيْنِ إِلَّا فِي أَوَّلِ مَرَّةٍ

तक्बीरे ऊला के अलावा नमाज़ में रफ़ा'यदैन न करने का बयान

٢٤٨ / ١٤۔ عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ رضي الله عنه قَالَ: صَلَّى مَعَ عَلِيٍّ رضي الله عنه بِالْبَصْرَةِ، فَقَالَ: ذَكَّرَنَا هَذَا الرَّجُلُ صَلَاةً، كُنَّا نُصَلِّيهَا مَعَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ، فَذَكَرَ أَنَّهُ كَانَ يُكَبِّرُ كُلَّمَا رَفَعَ وَكُلَّمَا وَضَعَ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ.

''हज़रत इमरान बिन हुसैन رضي الله عنه ने फरमायाः उन्होंने हज़रत अ़ली رضي الله عنه के साथ बसरा में नमाज़ पढ़ी तो उन्होंने हमें वो नमाज़ याद करा दी जो हम रसूलुल्लाह ﷺ के साथ पढ़ा करते थे। उन्होंने बताया कि वो (यानी हज़रत अली رضي الله عنه) जब भी उठते और झुकते तो तक्बीर कहा करते थे।''

٢٤٩ / ١٥۔ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضي الله عنه أَنَّهُ كَانَ يُصَلِّي لَهُمْ، فَيُكَبِّرُ كُلَّمَا خَفَضَ وَرَفَعَ، فَإِذَا انْصَرَفَ قَالَ: إِنِّي لَأَشْبَهُكُمْ صَلَاةً بِرَسُوْلِ اللهِ ﷺ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अबू सलमा से रिवायत है कि हज़रत अबू हुरैरा رضي الله عنه उन्हें नमाज़ पढ़ाया करते थे, जब भी झुकते और उठते तो तक्बीर कहते। जब आप नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो फरमाया, तुम में से मेरी नमाज़ रसूलुल्लाह ﷺ की नमाज़ से ज़्यादा मुशाबिहत रखती है।''

الحديث رقم ١٤: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: صفة الصلاة، باب: إتمام التكبير فى الركوع، ١ / ٢٧١، الرقم: ٧٥١، والبيهقى في السنن الكبرى، ٢ / ٧٨، الرقم: ٢٣٢٦، والبزار في المسند، ٩ / ٢٦، الرقم: ٣٥٣٢۔

الحديث رقم ١٥: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: صفة الصلاة، باب: إتمام التكبير فى الركوع، ١ / ٢٧٢، الرقم: ٧٥٢، ومسلم في الصحيح، كتاب: الصلاة، باب: اثبات التكبير فى كل خفض ورفع فى الصلاة، ١ / ٢٩٣، الرقم: ٣٩٢، والنسائى في السنن، كتاب: التطبيق، باب: التكبير للنهوض، ٢ / ٢٣٥، الرقم: ١١٥٥، وأحمد بن حنبل في المسند، ٢ / ٢٣٦، الرقم: ٧٢١٩، ومالك في الموطأ، ١ / ٧٦، الرقم: ١٦٦، والطحاوي في شرح معانى الآثار، ١ / ٢٢١۔

٢٥٠ / ١٦۔ عَنْ مُطَرِّفِ بْنِ عَبْدِ اللهِ ﷺ قَالَ: صَلَّيْتُ خَلْفَ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ ﷺ، أَنَا وَعِمْرَانُ بْنُ حُصَيْنٍ، فَكَانَ إِذَا سَجَدَ كَبَّرَ، وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ كَبَّرَ، وَإِذَا نَهَضَ مِنَ الرَّكْعَتَيْنِ كَبَّرَ، فَلَمَّا قَضَى الصَّلَاةَ، أَخَذَ بِيَدِي عِمْرَانُ بْنُ حُصَيْنٍ فَقَالَ: قَدْ ذَكَّرَنِي هَذَا صَلَاةَ مُحَمَّدٍ ﷺ، أَوْ قَالَ: لَقَدْ صَلَّى بِنَا صَلَاةَ مُحَمَّدٍ ﷺ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत मुतर्रिफ़ बिन अ़ब्दुल्लाह ﷺ रिवायत करते हैं कि मैंने और हज़रत इमरान बिन हुसैन ﷺ ने हज़रत अली बिन अबू तालिब ﷺ के पीछे नमाज़ पढ़ी जब उन्होंने सज्दा किया तो तक्बीर कही, जब सर उठाया तो तक्बीर कही और जब दो रकअ़तों से उठे तो तक्बीर कही। जब नमाज़ मुकम्मल हो गई तो हज़रत इमरान बिन हुसैन ﷺ ने मेरा हाथ पकड़ कर फरमायाः उन्होंने मुझे मुहम्मद मुस्तफ़ा ﷺ की नमाज़ याद करा दी है (या फरमाया) उन्होंने मुझे मुहम्मद मुस्तफ़ा ﷺ की नमाज़ जैसी नमाज़ पढ़ाई है।''

٢٥١ / ١٧۔ عَنْ أَبِي بَكْرِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ ﷺ يَقُوْلُ: كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ إِذَا قَامَ إِلَى الصَّلَاةِ، يُكَبِّرُ حِينَ يَقُوْمُ، ثُمَّ يُكَبِّرُ حِينَ يَرْكَعُ، ثُمَّ يَقُوْلُ: ﴿سَمِعَ اللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ﴾. حِينَ يَرْفَعُ صُلْبَهُ مِنَ الرَّكْعَةِ. ثُمَّ يَقُوْلُ وَهُوَ قَائِمٌ: ﴿رَبَّنَا لَکَ الْحَمْدُ﴾. قَالَ عَبْدُ اللهِ: ﴿وَلَکَ الْحَمْدُ﴾. ثُمَّ يُكَبِّرُ حِينَ يَهْوِي، ثُمَّ يُكَبِّرُ حِينَ يَرْفَعُ رَأْسَهُ، ثُمَّ

الحديث رقم ١٦: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: صفة الصلاة، باب: إتمام التكبير في السجود، ١ / ٢٧٢، الرقم: ٧٥٣، ومسلم في الصحيح، كتاب: الصلاة، باب: إثبات التكبير في كل خفض ورفع في الصلاة، ١ / ٢٩٥، الرقم: ٣٩٣، وأحمد بن حنبل في المسند، ٤ / ٤٤٤۔

الحديث رقم ١٧: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: صفة الصلاة، باب: التكبير إذا قام من السجود، ١ / ٢٧٢، الرقم: ٧٥٦، ومسلم في الصحيح، كتاب: الصلاة، باب: إثبات التكبير في كل خفض ورفع في الصلاة، ١ / ٢٩٣، الرقم: ٣٩٢۔

يُكَبِّرُ حِينَ يَسْجُدُ، ثُمَّ يُكَبِّرُ حِينَ يَرْفَعُ رَأْسَهُ، ثُمَّ يَفْعَلُ ذَلِكَ فِي الصَّلَاةِ كُلِّهَا حَتَّى يَقْضِيَهَا، وَ يُكَبِّرُ حِينَ يَقُوْمُ مِنَ الثِّنْتَيْنِ بَعْدَ الْجُلُوْسِ.

مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अबू बकर बिन अ़ब्दुर्रहमान ने हज़रत अबू हुरैरा ﷺ को फरमाते हुए सुना कि रसूलुल्लाह ﷺ जब नमाज़ के लिए खड़े होते तो खड़े होते वक़्त तक्बीर कहते फिर रूकूअ़ करते वक़्त तक्बीर कहते फिर ﴿سَمِعَ اللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ﴾ कहते, जब कि रूकूअ़ से अपनी पुश्त मुबारक को सीधा करते फिर सीधा खड़े हो कर ﴿رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ﴾ कहते, फिर झुकते वक़्त तक्बीर कहते। फिर सर उठाते वक़्त तक्बीर कहते। फिर सज्दा करते वक़्त तक्बीर कहते। फिर सज्दे से सर उठाते वक़्त तक्बीर कहते। फिर सारी नमाज़ में इसी तरह करते यहाँ तक कि पूरी हो जाती और जब दो रकअ़तों के आख़िर में बैठने के बाद खड़े होते तो तक्बीर कहते।''

٢٥٢ / ١٨. عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رضي الله عنه كَانَ يُكَبِّرُ فِي كُلِّ صَلَاةٍ مِنَ الْمَكْتُوبَةِ وَغَيْرِهَا، فِي رَمَضَانَ وَغَيْرِهِ، فَيُكَبِّرُ حِينَ يَقُوْمُ، ثُمَّ يُكَبِّرُ حِينَ يَرْكَعُ، ثُمَّ يَقُوْلُ: ﴿سَمِعَ اللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ﴾، ثُمَّ يَقُوْلُ: ﴿رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ﴾، قَبْلَ أَنْ يَسْجُدَ، ثُمَّ يَقُوْلُ: ﴿اللهُ أَكْبَرُ﴾، حِينَ يَهْوِي سَاجِدًا، ثُمَّ يُكَبِّرُ حِيْنَ يَرْفَعُ رَأْسَهُ مِنَ السُّجُوْدِ، ثُمَّ يُكَبِّرُ حِيْنَ يَسْجُدُ، ثُمَّ يُكَبِّرُ حِيْنَ يَرْفَعُ رَأْسَهُ مِنَ السُّجُوْدِ، ثُمَّ يُكَبِّرُ حِينَ يَقُوْمُ مِنَ الْجُلُوْسِ فِي الاِثْنَتَيْنِ، وَيَفْعَلُ ذَلِكَ فِي كُلِّ رَكْعَةٍ، حَتَّى يَفْرُغَ مِنَ الصَّلَاةِ، ثُمَّ يَقُوْلُ حِينَ يَنْصَرِفُ: وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ، إِنِّي لَأَقْرَبُكُمْ شَبَهًا بِصَلَاةِ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ، إِنْ كَانَتْ هَذِهِ لَصَلَاتَهُ حَتَّى فَارَقَ الدُّنْيَا.

الحديث رقم ١٨: أخرجه البخاری فی الصحيح، كتاب: صفة الصلاة، باب: يهوي بالتكبير حين يسجد، ١ / ٢٧٦، الرقم: ٧٧٠، وأبوداود في السنن، كتاب: الصلاة، باب: تمام التكبير، ١ / ٢٢١، الرقم: ٨٣٦.

رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ وَأَبُوْدَاوُدَ.

''अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान से रिवायत है कि हज़रत अबू हुरैरा ؓ हर नमाज़ में तक्बीर कहते चाहे वो फ़र्ज़ होती या दूसरी, माह रमज़ान में होती या उस के अ़लावा जब खड़े होते तो तक्बीर कहते और जब रूकूअ़ करते तो तक्बीर कहते, फिर ﴿سَمِعَ اللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ﴾ कहते, फिर सज्दा करने से पहले ﴿رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ﴾ कहते, फिर जब सज्दे के लिए झुकते तो ﴿اَللهُ اَكْبَرُ﴾ कहते, फिर जब सज्दे से उठते तो तक्बीर कहते, फिर जब (दूसरा) सज्दा करते तो तक्बीर कहते, फिर जब सज्दे से सर उठाते तो तक्बीर कहते, फिर जब दूसरी रकअ़त के क़अदे से उठते तो तक्बीर कहते, और हर रकअ़त में ऐसा ही करते यहाँ तक कि नमाज़ से फ़ारिग़ हो जाते। फिर फ़ारिग़ होने पर फरमातेः क़सम है उस ज़ात की जिस के क़ब्ज़ए कुदरत में मेरी जान है! तुम सब में से मेरी नमाज़ रसूलुल्लाह ﷺ की नमाज़ के साथ ज़्यादा मुशाबिहत रखती है। हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने ता दमे विसाल इसी तरीक़े पर नमाज़ अदा की।''

۲۵۳/۱۹۔ عَنْ أَبِي قِلَابَةَ أَنَّ مالِكَ ابْنَ الْحُوَيْرِثِ ؓ قَالَ لِأَصْحَابِهِ: أَلَا أُنَبِّئُكُمْ صَلَاةَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ؟ قَالَ: وَذَاكَ فِي غَيْرِ حِينِ صَلَاةٍ، فَقَامَ، ثُمَّ رَكَعَ فَكَبَّرَ، ثُمَّ رَفَعَ رَأْسَهُ، فَقَامَ هُنَيَّةً، ثُمَّ سَجَدَ، ثُمَّ رَفَعَ رَأْسَهُ هُنَيَّةً، فَصَلَّى صَلَاةَ عَمْرِو بْنِ سَلَمَةَ شَيْخِنَا هَذَا. قَالَ أَيُّوْبُ: كَانَ يَفْعَلُ شَيْئًا لَمْ أَرَهُمْ يَفْعَلُونَهُ، كَانَ يَقْعُدُ فِي الثَّالِثَةِ وَالرَّابِعَةِ. قَالَ: فَأَتَيْنَا النَّبِيَّ ﷺ فَأَقَمْنَا عِنْدَهُ، فَقَالَ: لَوْ رَجَعْتُمْ إِلَى أَهْلِيكُمْ، صَلُّوْا صَلَاةَ كَذَا فِي حِينِ كَذَا، صَلُّوْا صَلَاةَ كَذَا فِي حِينِ كَذَا، فَإِذَا حَضَرَتِ الصَّلَاةُ، فَلْيُؤَذِّنْ أَحَدُكُمْ، وَلْيَؤُمَّكُمْ أَكْبَرُكُمْ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ.

''हज़रत अबू क़िलाबा से रिवायत है कि हज़रत मालिक बिन हुवैरिस ؓ ने अपने साथियों से फरमायाः क्या मैंने तुम्हें रसूलुल्लाह ﷺ की नमाज़ न बताई ? और यह नमाज़ के मुक़र्ररा वक़्त के अ़लावा की बात है। फिर उन्होनें क़ियाम किया, फिर रूकूअ़ किया तो तक्बीर

الحديث رقم ١٩: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: صفة الصلاة، باب: المكث بين السجدتين إتمام التكبير فى الركوع، ١/٢٨٢، الرقم: ٧٨٥.

कही, फिर सर उठाया तो थोड़ी देर खड़े रहे, फिर सज्दा किया, फिर थोड़ी देर सर उठाए रखा फिर सज्दा किया, फिर थोड़ी देर सर उठाए रखा। उन्होंने हमारे इन बुज़ुर्ग हज़रत अ़म्र बिन सलमा की तरह नमाज़ पढ़ी। अय्यूब का बयान है कि वो एक काम ऐसा करते जो मैंने किसी को करते हुए नहीं देखा। वो तीसरी और चौथी रकअत में बैठा करते थे, फरमायाः हम हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की बारगाह में हाज़िर हुए तो आप ﷺ के पास ठहरे। आप ﷺ ने फरमायाः जब तुम अपने घर वालों के पास वापस जाओ तो फ़लाँ नमाज़ फ़लाँ वक़्त में पढ़ना। जब नमाज़ का वक़्त हो जाए तो तुम में से एक अज़ान कहे और जो बड़ा हो वो तुम्हारी इमामत करे।''

٢٥٤ / ٢٠۔ عَنْ عَلْقَمَةَ قَالَ: قَالَ عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْعُوْدٍ ﷺ: أَلاَ أُصَلِّي بِكُمْ صَلَاةَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ؟ قَالَ: فَصَلَّى فَلَمْ يَرْفَعْ يَدَيْهِ إِلَّا مَرَّةً.

رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ، وَالنَّسَائِيُّ وَزَادَ: ثُمَّ لَمْ يُعِدْ.

وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ.

''हज़रत अल्क़मा रिवायत करते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद ﷺ ने फरमायाः क्या मैं तुम्हें रसूल–ए–अकरम ﷺ की नमाज़ ना पढ़ाऊँ ? रावी कहते हैंः फिर उन्होंने नमाज़ पढ़ाई और एक बार के अ़लावा अपने हाथ ना उठाए,'' इमाम नसाई की बयान कर्दह रिवायत में है, ''फ़िर उन्होंने हाथ न उठाए।''

٢٥٥ / ٢١۔ حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ، حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ وَخَالِدُ بْنُ عَمْرٍو وَ أَبُوْحُذَيْفَةَ ﷺ، قَالُوْا: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بِإِسْنَادِهِ بِهَذَا، قَالَ: فَرَفَعَ يَدَيْهِ فِي

الحديث رقم ٢٠: أخرجه أبوداود فى السنن، كتاب: التطبيق، باب: من لم يذكر الرفع عند الركوع، ١ / ٢٨٦، الرقم: ٧٤٨، والترمذي فى السنن، كتاب: الصلاة عن رسول الله ﷺ، باب: رفع اليدين عند الركوع، ١ / ٢٩٧، الرقم: ٢٥٧، والنسائى فى السنن، كتاب: الافتتاح، باب: ترك ذلك، ٢ / ١٣١، الرقم: ١٠٢٦، وفى السنن الكبرى، ١ / ٢٢١، ٣٥١، الرقم: ٦٤٥، ١٠٩٩، وأحمد بن حنبل فى المسند، ١ / ٣٨٨، ٤٤١، وابن أبى شيبة في المصنف، ١ / ٢١٣، الرقم: ٢٤٤١۔

الحديث رقم ٢١: أخرجه أبوداود فى السنن، كتاب: التطبيق، باب: من لم يذكر الرفع عند الركوع، ١ / ٢٨٦، الرقم: ٧٤٩۔

أَوَّلِ مَرَّةٍ، وَ قَالَ بَعْضُهُمْ: مَرَّةً وَاحِدَةً. رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ.

''हज़रत हसन बिन अ़ली, मुआविया, ख़ालिद बिन अ़म्र व अबू हुज़ैफ़ा ﷺ रिवायत करते हैं कि सुफ़ियान ने अपनी सनद के साथ हमसे हदीस बयान की (कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद ﷺ ने) पहली बार ही हाथ उठाए और फिर कुछ ने कहा, एक ही बार हाथ उठाए।''

٢٥٦ / ٢٢. عَنِ الْبَرَاءِ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ كَانَ إِذَا افْتَتَحَ الصَّلَاةَ رَفَعَ يَدَيْهِ إِلَى قَرِيْبٍ مِنْ أُذُنَيْهِ ثُمَّ لَا يَعُوْدُ. رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ.

''हज़रत बरा' बिन आ़ज़िब ﷺ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ जब नमाज़ शुरु करते तो अपने दोनों हाथों को कानों तक उठाते, और फिर ऐसा ना करते।''

٢٥٧ / ٢٣. عَنِ الْأَسْوَدِ أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ مَسْعُوْدٍ ﷺ كَانَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ فِي أَوَّلِ التَّكْبِيْرِ، ثُمَّ لَا يَعُوْدُ إِلَى شَيءٍ مِنْ ذَلِکَ. وَيَأْثِرُ ذَلِکَ عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ. رَوَاهُ أَبُوْحَنِيْفَةَ.

''हज़रत अस्वद रिवायत करते हैं कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद ﷺ सिर्फ तक्बीरे तेहरीमा के वक़्त हाथ उठाते थे, फिर नमाज़ में किसी और जगह हाथ न उठाते और यह अ़मल हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ से नक़ल किया करते।''

٢٥٨ / ٢٤. عَنْ عَبْدِ اللهِ ﷺ قَالَ: صَلَّيْتُ مَعَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ وَأَبِي بَكْرٍ وَعُمَرَ رضي الله عنهما، فَلَمْ يَرْفَعُوْا أَيْدِيَهِم إِلَّا عِنْدَ اسْتِفْتَاحِ الصَّلَاةِ. رَوَاهُ الدَّارُقُطْنِيُّ.

الحديث رقم ٢٢: أخرجه أبوداود فى السنن، كتاب: الصلاة، باب: من لم يذكر الرفع عند الركوع، ١/٢٨٧، الرقم: ٧٥٠، وعبد الرزاق في المصنف، ٢/٧٠، الرقم: ٢٥٣٠، وابن أبي شيبة في المصنف، ١/٢١٣، الرقم: ٢٤٤٠، والدارقطني في السنن، ١/٢٩٣، والطحاوي في شرح معاني الآثار، ١/٢٥٣، الرقم: ١١٣١.

الحديث رقم ٢٣: أخرجه الخوارزمي فى جامع المسانيد، ١/٣٥٥.

الحديث رقم ٢٤: أخرجه الدارقطني في السنن، ١/٢٩٥، وأبويعلى في المسند، ٨/٤٥٣، الرقم: ٥٠٣٩، والبيهقى في السنن الكبرى، ٢/٧٩، والهيثمى في مجمع الزوائد، ٢/١٠١.

''हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद ﷺ रिवायत करते हैं कि मैंने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ और अबू बकर व उमर ﷺ के साथ नमाज़ पढ़ी, यह सब हज़रात सिर्फ़ नमाज़ के शुरू में ही अपने हाथ बुलन्द करते थे।''

٢٥٩ / ٢٥۔ عَنْ سَالِمٍ، عَنْ أَبِيْهِ، قَالَ: رَأَيْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ إِذَا افْتَتَحَ الصَّلَاةَ رَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى يُحَاذِيَ بِهِمَا، وَقَالَ بَعْضُهُمْ: حَذْوَ مَنْكَبَيْهِ، وَإِذَا أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ، وَبَعْدَ مَا يَرْفَعُ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوْعِ، لَا يَرْفَعُهُمَا، وَقَالَ بَعْضُهُمْ: وَلَا يَرْفَعُ بَيْنَ السَّجْدَتَيْنِ. رَوَاهُ أَبُوْعَوَانَةَ.

''हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र رضي الله عنهما बयान करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को देखा कि आप ﷺ ने नमाज़ शुरू करते वक़्त अपने हाथों को कन्धों तक उठाया, और जब आप ﷺ रूकूअ करना चाहते और रूकूअ से सर उठाते तो हाथ नहीं उठाते थे, और उनमें से कुछ ने कहा दोनों सज्दों के दरमियान (हाथ) नहीं उठाते थे।''

٢٦٠ / ٢٦۔ عَنِ الْأَسْوَدِ، قَالَ: رَأَيْتُ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ ﷺ يَرْفَعُ يَدَيْهِ فِي أَوَّلِ تَكْبِيْرَةٍ، ثُمَّ لَا يَعُوْدُ. رَوَاهُ الطَّحَاوِيُّ.

''हज़रत अस्वद बयान करते हैं कि मैंने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब ﷺ को नमाज़ अदा करते देखा है। आप ﷺ तक्बीरे तहरीमा कहते वक़्त दोनों हाथ उठाते, फिर (बाक़ी नमाज़ में हाथ) नहीं उठाते थे।''

٢٦١ / ٢٧۔ عَنْ عَاصِمِ بْنِ كُلَيْبٍ عَنْ أَبِيْهِ أَنَّ عَلِيًّا ﷺ كَانَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ إِذَا افْتَتَحَ الصَّلَاةَ، ثُمَّ لَا يَعُوْدُ. رَوَاهُ ابْنُ أَبِي شَيْبَةَ.

''आसिम बिन कुलैब अपने वालिद कुलैब से रिवायत करते हैं कि हज़रत अली ﷺ सिर्फ़ तक्बीर में ही हाथों को उठाते थे फिर नमाज़ के दौरान हाथ नहीं उठाते थे।''

الحديث رقم ٢٥: أخرجه أبو عوانة فى المسند، ١ / ٤٢٣، الرقم: ١٥٧٢۔
الحديث رقم ٢٦: أخرجه الطحاوي فى شرح معانى الآثار، ١ / ٢٩٤، الرقم: ١٣٢٩۔
الحديث رقم ٢٧: أخرجه ابن أبى شيبة فى المصنف، ١ / ٢١٣، الرقم: ٢٤٤٤۔

فَصْلٌ فِي تَرْكِ الْقِرَاءَةِ خَلْفَ الإِمَامِ

इमाम के पीछे क़िरअत न करने का बयान

٢٦٢ / ٢٨۔ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رضي الله عنهما قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ صَلَّى خَلْفَ الإِمَامِ فَإِنَّ قِرَاءَةَ الإِمَامِ لَهُ قِرَاءَةٌ.

رَوَاهُ أَبُوْحَنِيْفَةَ.

''हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जो शख़्स इमाम के पीछे नमाज़ पढ़े तो इमाम का पढ़ना ही उसका पढ़ना है।''

٢٦٣ / ٢٩۔ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رضي الله عنهما قَالَ: صَلَّى رَسُوْلُ اللهِ ﷺ بِالنَّاسِ، فَقَرَأَ رَجُلٌ خَلْفَهُ، فَلَمَّا قَضَى الصَّلَاةَ، قَالَ: أَيُّكُمْ قَرَأَ خَلْفِي؟ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ، فَقَالَ رَجُلٌ: أَنَا يَا رَسُوْلَ اللهِ! فَقَالَ ﷺ: مَنْ صَلَّى خَلْفَ الإِمَامِ فَإِنَّ قِرَاءَةَ الإِمَامِ لَهُ قِرَاءَةٌ. رَوَاهُ أَبُوْحَنِيْفَةَ.

''हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने लोगों को नमाज़ पढ़ाई, तो एक शख़्स ने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के पीछे क़िरअत की। आप ﷺ ने नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर फरमायाः तुम में से किस ने मेरे पीछे क़िरअत की थी ? (लोग हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की नाराज़गी के डर से ख़ामोश रहे, यहाँ तक कि) तीन बार आप ﷺ ने बतकरार यही इस्तिफ़सार फरमाया (पूछा), आख़िर एक शख़्स ने अ़र्ज़ कियाः या रसूलल्लाह! मैंने। आप ﷺ ने फरमायाः जो इमाम के पीछे हो तो इमाम की क़िरअत ही उसकी क़िरअत है।''

الحديث رقم ٢٨: أخرجه الخوارزمي في جامع المسانيد، ١ / ٣٣١، والإمام محمد في الموطأ، باب: القراءة في الصلاة خلف الإمام، ١ / ٩٦، وعبد بن حميد في المسند، ١ / ٣٢٠، الرقم: ١٠٥٠، والطبراني في المعجم الأوسط، ٨ / ٤٣، الرقم: ٧٩٠٣، والبيهقي في السنن الكبرى، ٢ / ١٦٠۔

الحديث رقم ٢٩: أخرجه الحصكفى فى مسند الإمام الأعظم : ٦١۔

٢٦٤ / ٣٠۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضي الله عنه قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: إِنَّمَا جُعِلَ الإِمَامُ لِيُؤْتَمَّ بِهِ فَإِذَا كَبَّرَ فَكَبِّرُوْا وَإِذَا رَكَعَ فَارْكَعُوْا وَإِذَا قَالَ: ﴿سَمِعَ اللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ﴾ فَقُوْلُوْا: ﴿رَبَّنَا وَلَکَ الْحَمْدُ﴾، وَإِذَا سَجَدَ فَاسْجُدُوْا، وَإِذَا صَلَّى جَالِسًا، فَصَلُّوْا جُلُوْسًا أَجْمَعُوْنَ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अबू हुरैरा رضي الله عنه से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः इमाम इसीलिए बनाया जाता है कि उसकी पैरवी की जाए। जब वो तक्बीर कहे तो तुम भी तक्बीर कहो और जब वो रूकूअ करे तो रूकूअ करो जब ﴿سَمِعَ اللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ﴾ कहे तो तुम ﴿رَبَّنَا وَلَکَ الْحَمْدُ﴾ कहो, और सज्दा करे तो तुम भी सज्दा करो और जब वो बैठ कर नमाज़ पढ़े तो तुम भी बैठ कर पढ़ो।''

٢٦٥ / ٣١۔ عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ أَنَّهُ سَأَلَ زَيْدَ بْنَ ثَابِتٍ رضي الله عنه عَنِ الْقِرَاءَةِ مَعَ الإِمَامِ، فَقَالَ: لَا قِرَاءَةَ مَعَ الإِمَامِ فِي شَيءٍ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَالنَّسَائِيُّ.

''अता बिन यसार रिवायत करते हैं कि उन्होंने हज़रत ज़ैद बिन साबित رضي الله عنه से इमाम के साथ क़िरअत के मुतअल्लिक़ सवाल किया तो हज़रत ज़ैद बिन साबित رضي الله عنه ने जवाब दियाः इमाम के साथ किसी चीज़ में क़िरअत नहीं।''

الحديث رقم ٣٠: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: صفة الصلاة، باب: إيجاب التكبير وافتتاح الصلاة، ١/٢٥٧، الرقم: ٧٠١، ومسلم في الصحيح، كتاب: الصلاة، باب: إئتمام المأموم مع الإمام، ١/٣٠٩، الرقم: ٤١٤، وأبوداود في السنن، كتاب: الصلاة، باب: الإمام يصلي من قعود، ١/١٦٤، الرقم: ٦٠٢، وابن ماجه في السنن، كتاب: إقامة الصلاة والسنة فيها، باب: إذا قرأ الإمام فأنصتوا، ١/٢٧٦، الرقم: ٨٤٦، وأحمد بن حنبل في المسند، ٢/٣٤١، الرقم: ٨٤٨٣، والدارمى في السنن، ١/٣٤٣، الرقم: ١٣١١۔

الحديث رقم ٣١: أخرجه مسلم فى الصحيح، كتاب: المساجد ومواضع الصلاة، باب: سجود التلاوة، ١/٤٠٦، الرقم: ٥٧٧، والنسائى فى السنن، كتاب: الافتتاح، باب: ترك السجود فى النجم، ٢/١٦٠، الرقم: ٩٦٠، وفى السنن الكبرى، ١/٣٣١، الرقم: ١٠٣٢، وأبو عوانة فى المسند، ١/٥٢٢، الرقم: ١٩٥١، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٢/١٦٣، الرقم: ٢٧٣٨۔

٢٦٦ / ٣٢۔ عَنْ حِطَّانَ بْنِ عَبْدِ اللهِ الرَّقَاشِيِّ، قَالَ: صَلَّيْتُ مَعَ أَبِي مُوْسَى الْأَشْعَرِيِّ ﷺ صَلَاةً. فَلَمَّا كَانَ عِنْدَ الْقَعْدَةِ قَالَ رَجُلٌ مِنَ الْقَوْمِ: أُقِرَّتِ الصَّلَاةُ بِالْبِرِّ وَالزَّكَاةِ. قَالَ: فَلَمَّا قَضَى أَبُوْ مُوْسَى الصَّلَاةَ وَسَلَّمَ انْصَرَفَ فَقَالَ: أَيُّكُمُ الْقَائِلُ كَلِمَةَ كَذَا وَكَذَا؟ قَالَ: فَأَرَمَّ الْقَوْمُ. ثُمَّ قَالَ: أَيُّكُمُ الْقَائِلُ كَلِمَةَ كَذَا وَكَذَا؟ فَأَرَمَّ الْقَوْمُ. فَقَالَ: لَعَلَّكَ يَا حِطَّانُ قُلْتَهَا؟ قَالَ: مَا قُلْتُهَا. وَلَقَدْ رَهِبْتُ أَنْ تَبْكَعَنِي بِهَا. فَقَالَ رَجُلٌ مِنَ الْقَوْمِ: أَنَا قُلْتُهَا. وَلَمْ أُرِدْ بِهَا إِلَّا الْخَيْرَ. فَقَالَ أَبُوْ مُوْسَى: أَمَا تَعْلَمُوْنَ كَيْفَ تَقُوْلُوْنَ فِي صَلَاتِكُمْ؟ إِنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ خَطَبَنَا فَبَيَّنَ لَنَا سُنَّتَنَا وَعَلَّمَنَا صَلَاتَنَا. فَقَالَ: إِذَا صَلَّيْتُمْ فَأَقِيْمُوْا صُفُوْفَكُمْ. ثُمَّ لْيَؤُمَّكُمْ أَحَدُكُمْ. فَإِذَا كَبَّرَ فَكَبِّرُوْا. وَإِذَا قَالَ: ﴿غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ﴾. فَقُوْلُوْا: ﴿آمِيْنَ﴾. يُجِبْكُمُ اللهُ. فَإِذَا كَبَّرَ وَرَكَعَ فَكَبِّرُوْا وَارْكَعُوْا فَإِنَّ الإِمَامَ يَرْكَعُ قَبْلَكُمْ وَيَرْفَعُ قَبْلَكُمْ، فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: تِلْكَ بِتِلْكَ. وَإِذَا قَالَ: ﴿سَمِعَ اللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ﴾. فَقُوْلُوْا: ﴿اَللَّهُمَّ رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ﴾. يَسْمَعُ اللهُ لَكُمْ. فَإِنَّ اللهَ ﷻ قَالَ: عَلَى لِسَانِ نَبِيِّهِ ﷺ: ﴿سَمِعَ اللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ﴾. وَإِذَا كَبَّرَ وَسَجَدَ فَكَبِّرُوْا وَاسْجُدُوْا. فَإِنَّ الإِمَامَ يَسْجُدُ قَبْلَكُمْ. فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: فَتِلْكَ بِتِلْكَ. وَإِذَا كَانَ عِنْدَ الْقَعْدَةِ فَلْيَكُنْ مِنْ أَوَّلِ قَوْلِ أَحَدِكُمْ: ﴿التَّحِيَّاتُ الطَّيِّبَاتُ الصَّلَوَاتُ لِلّٰهِ. السَّلَامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ

الحديث رقم ٣٢: أخرجه مسلم فی الصحيح، كتاب: الصلاة، باب: التشهد فی الصلاة، ١ / ٣٠٣-٣٠٤، الرقم: ٤٠٤، وابن حبان في الصحيح، ٥ / ٥٤١، الرقم: ٢١٦٧، والدارمی فی السنن، ١ / ٣٦٣، الرقم: ١٣٥٨.

اللهِ وَبَرَكَاتُهُ. السَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلَى عِبَادِ اللهِ الصَّالِحِيْنَ. أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ﴾. رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَابْنُ حِبَّانَ.

''हज़रत हित्तान बिन अ़ब्दुल्लाह रक़ाशी ﷺ बयान करते हैं कि एक बार मैंने हज़रत अबू मूसा अशअरी ﷺ के साथ नमाज़ पढ़ी, जब वो क़ा'दा के क़रीब थे तो एक शख़्स ने कहाः यह नमाज़ नेकी और पाकीज़गी के साथ पढ़ी गई है, जब वो नमाज़ से फ़ारिग़ हो गए तो उन्होंने मुड़ कर देखा और पूछा तुम में से किस ने यह बात की थी? सब खामोश रहे, उन्होंने फिर दोबारा पूछा कि तुम में से किस ने यह बात कही थी? सब खामोश रहे, कि आप मेरी पिटाई करेंगे (या नाराज़ होंगे) इस मौक़े पर हज़रत मूसा ने मुझसे पूछाः ऐ हित्तान! शायद तुमने यह कलिमा कहा है ? मैंने कहा मैंने तो नहीं कहा, मुझे तो आप का डर था, फिर लोगों में से एक शख़्स ने कहाः मैंने यह कलिमा कहा था और मेरी निय्यत सिवाए भलाई के और कुछ न थी, हज़रत अबू मूसा ﷺ ने फरमायाः क्या तुम नहीं जानते नमाज़ में क्या कहना चाहिए? रसूलुल्लाह ﷺ ने हमें ख़ुत्बा दिया और हमें नमाज़ का मुकम्मल तरीक़ा बतला दिया, आप ﷺ ने फरमायाः जब तुम नमाज़ पढ़ने लगो तो सब से पहले अपनी सफें दुरुस्त करो फिर तुम में से कोई शख़्स इमामत करे जब इमाम तक्बीर कहे तो तुम तक्बीर कहो, जब वो ﴿غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّيْنَ﴾ कहे, तो तुम आमीन कहो, अल्लाह तआ़ला तुम्हारी दुआ़ को कुबूल फरमाएगा, फिर जब वो तक्बीर कह कर रूकूअ़ में जाए तो तुम भी तक्बीर कह कर रूकूअ़ करो, इमाम तुमसे पहले रूकूअ़ करेगा और तुमसे पहले रूकूअ़ से सर उठाएगा, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया : इस तरह तुम्हारा अमल उसके मुक़ाबले में हो जाएगा और जब इमाम ﴿سَمِعَ اللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ﴾ कहे तो तुम ﴿اَللّٰهُمَّ رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ﴾ कहो। अल्लाह तआ़ला तुम्हारा क़ौल सुनता है और तुम्हारे नबी की जुबान पर अल्लाह तआला ने ﴿سَمِعَ اللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ﴾ जारी कर दिया, फिर जब इमाम तक्बीर कह कर सज्दा करे तो तुम भी तक्बीर कह कर सज्दा करो, इमाम तुमसे पहले सज्दा करेगा और तुम से पहले सज्दे से सर उठाएगा। फिर रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया, तुम्हारा यह अमल इमाम के मुक़ाबले में होगा और जब इमाम क़ा'दे में बैठ जाए तो तुम सब से पहले यह कलिमात पढ़ो :

﴿التَّحِيَّاتُ الطَّيِّبَاتُ الصَّلَوَاتُ لِلّٰهِ. السَّلَامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهُ. السَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلَى عِبَادِ اللهِ الصَّالِحِيْنَ. أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ﴾

٢٦٧ / ٣٣- عَنْ قَتَادَةَ ﷺ (مِنَ الزِّيَادَةِ): وَإِذَا قَرَأَ فَأَنْصِتُوْا. (وفي حديث) أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ: وَإِذَا قَرَأَ فَأَنْصِتُوْا.

أَخْرَجَهُ مُسْلِمٌ وَقَالَ: هُوَ عِنْدِي صَحِيْحٌ.

''हज़रत क़तादह ﷺ से मरवी में यह अल्फ़ाज़ ज़्यादा हैं, जब इमाम क़िरअत करे तो तुम ख़ामोश रहो, और हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से मरवी हदीस में भी यह अल्फ़ाज़ हैं : और जब इमाम क़िरअत करे तो तुम ख़ामोश रहो।''

इमाम मुस्लिम ने फरमाया की यह रिवायत मेरे नज़दीक सही है।''

٢٦٨ / ٣٤- عَنْ أَبِي نُعَيْمٍ وَهْبِ بْنِ كَيْسَانَ أَنَّهُ سَمِعَ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ رضي الله عنهما يَقُوْلُ: مَنْ صَلَّى رَكْعَةً لَمْ يَقْرَأْ فِيْهَا بِأُمِّ الْقُرْآنِ فَلَمْ يُصَلِّ اِلَّا أَنْ يَكُوْنَ وَرَاءَ الإِمَامِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَمَالِكٌ.

وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत अबू नुऐम वहब कैसान से रिवायत है कि उन्होंने हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رضي الله عنهما को यह फरमाते हुए सुनाः जिसने कोई रकअ़त पढ़ी और उसमें सूरह फ़ातिहा नहीं पढ़ी तो गोया उसने नमाज़ ही नहीं पढ़ी, सिवाए इसके कि वो इमाम के पीछे हो।''

الحديث رقم ٣٣: أخرجه مسلم فى الصحيح، كتاب: الصلاة، باب: التشهد فى الصلاة، ١/ ٣٠٤، الرقم: ٤٠٤، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٢/ ١٥٥، الرقم: ٢٧٠٩.

الحديث رقم ٣٤: أخرجه الترمذي فى السنن، كتاب: الصلاة عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء فى ترك القراءة خلف الإمام إذا جهر الإمام بالقراءة، ١/ ٣٤٦، ٣٤٧، الرقم: ٣١٢، ٣١٣، ومالك فى الموطأ، كتاب: الصلاة، باب: ما جاء فى القرآن، ١/ ٨٤، الرقم: ١٨٧، وعبد الرزاق فى المصنف، ٢/ ١٢١، الرقم: ٢٧٤٥، وابن أبى شيبة فى المصنف، ١/ ٣١٧، الرقم: ٣٦٢١، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٢/ ١٦٠، الرقم: ٢٧٢٥، والطحاوى فى شرح معانى الآثار، ١/ ٢٨٢، الرقم: ١٢٦٥.

٢٦٩ / ٣٥۔ عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ رضی الله عنه أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ صَلَّى الظُّهْرَ، فَجَاءَ رَجُلٌ فَقَرَأَ خَلْفَهُ: ﴿سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْأَعْلَى﴾، فَلَمَّا فَرَغَ قَالَ: أَيُّكُمْ قَرَأَ؟ قَالُوْا: رَجُلٌ، قَالَ: قَدْ عَرَفْتُ أَنَّ بَعْضَكُمْ خَالَجَنِيْهَا.

رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ.

''हज़रत इमरान बिन हुसैन رضی الله عنه से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने ज़ुहर की नमाज़ पढ़ाई, एक शख़्स आया और उसने आप ﷺ के पीछे सूरत ﴿سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْأَعْلَى﴾ पढ़ी, जब आप ﷺ नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो फरमाया, तुम में से क़िरअत किसने की ? सहाबा किराम رضی الله عنهم ने अ़र्ज़ किया, एक आदमी ने, मैं जान गया था कि तुममें से कोई मुझसे झगड़ रहा है।''

٢٧٠ / ٣٦۔ عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ رضی الله عنه أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ صَلَّى بِهِمُ الظُّهْرَ فَلَمَّا انْفَتَلَ قَالَ: أَيُّكُمْ قَرَأَ: ﴿سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْأَعْلَى﴾؟ فَقَالَ رَجُلٌ: أَنَا. فَقَالَ: عَلِمْتُ أَنَّ بَعْضَكُمْ خَالَجَنِيهَا. رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ.

''हज़रत इमरान बिन हुसैन رضی الله عنه से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने नमाज़ पढ़ाई, जब आप ﷺ नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो फरमायाः तुम में से सूरत (﴿سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْأَعْلَى﴾) किसने पढ़ी, एक आदमी ने अ़र्ज़ किया, मैंने। आप ﷺ ने फरमाया मैं जान गया था कि तुम में से कोई मुझ से झगड़ रहा है।''

٢٧١ / ٣٧۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضی الله عنه أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ انْصَرَفَ مِنْ صَلَاةٍ جَهَرَ فِيْهَا بِالْقِرَاءَةِ، فَقَالَ: هَلْ قَرَأَ مَعِي أَحَدٌ مِنْكُمْ آنِفاً؟ فَقَالَ

الحديث رقم ٣٥: أخرجه أبوداود في السنن، كتاب: الصلاة، باب: من رأى الفداء ة إذا لم يجهر، ١/ ٢١٩، الرقم: ٨٢٨۔

الحديث رقم ٣٦: أخرجه أبوداود في السنن، كتاب: الصلاة، باب: من رأى القراء ة إذا لم يجهر، ١/ ٢١٩، الرقم: ٨٢٩۔

الحديث رقم ٣٧: أخرجه الترمذي في السنن، كتاب: الصلاة عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء في ترك القراءة خلف الإمام إذا جهر الإمام بالقراءة، ١/ ٣٤٤، ←

رَجُلٌ: نَعَمْ، يَا رَسُوْلَ اللهِ! قَالَ: إِنِّي أَقُوْلُ مَالِي أُنَازَعُ الْقُرْآنَ. قَالَ: فَانْتَهَى النَّاسُ عَنِ الْقِرَاءَةِ مَعَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ فِيْمَا جَهَرَ فِيْهِ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ مِنَ الصَّلَوَاتِ بِالْقِرَاءَةِ، حِيْنَ سَمِعُوْا ذٰلِکَ مِنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَه وَمَالِکٌ.

وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: هٰذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ.

''हज़रत अबू हुरैरा ؓ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने एक जहरी नमाज़ (जिनमें आवाज़ से क़िरअत होती है) से फ़ारिग़ हो कर फरमायाः क्या तुममें से किसी ने अब मेरे साथ क़िरअत की थी? एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया, जी हाँ ! या रसूलल्लाह! आप ﷺ ने फरमायाः मैं भी कह रहा था कि क्या हो गया है कि मुझसे कुरआन में झगड़ा किया जा रहा है रावी बयान करते हैं कि यह सुनने के बाद सहाबा किराम ؓ हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के साथ जहरी नमाज़ों में क़िरअत से रुक गये थे।''

٢٧٢ / ٣٨۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ؓ، قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّمَا جُعِلَ الإِمَامُ لِيُؤْتَمَّ بِهِ، فَإِذَا كَبَّرَ فَكَبِّرُوْا وَ إِذَا قَرَأَ فَأَنْصِتُوْا.

رَوَاهُ ابْنُ مَاجَه وَأَبُوْدَاوُدَ وَأَحْمَدُ.

هٰذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत अबू हुरैरा ؓ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः

.... ٣٤٥، الرقم: ٣١٢، وأبوداود فى السنن، كتاب: الصلاة، باب: من كره القراءة بفاتحة الكتاب إذا جهر الإمام، ١/ ٣١٣، الرقم: ٨٢٦، والنسائي فى السنن، كتاب: الافتتاح، باب: ترك القراءة خلف الإمام فيما جهر به، ٢/ ١٠٣، الرقم: ٩١٩، وابن ماجه فى السنن، كتاب: إقامة الصلاة والسنة فيها، باب: إذا قرأ الإمام فأنصتوا، ١/ ٤٥٩، الرقم: ٨٤٨، ومالك في الموطأ، كتاب: الصلاة، باب: ترك القراء ة خلف الإمام فيما الرجعة فيه، ١/ ٨٦، الرقم: ١٩٣، وأحمد بن حنبل في المسند، ٢/ ٢٤٠، ٢٨٤، ٢٨٥، ٣٠١، ٤٨٧، والطحاوي في شرح معاني الآثار، ١/ ٢٨٠، ٢٨١، الرقم: ١٢٥٥۔

الحديث رقم ٣٨: أخرجه ابن ماجه فى السنن، كتاب: إقامة الصلاة والسنة فيها، باب: إذا قرأ الإمام فأنصتوا، ١/ ٤٥٨، الرقم: ٨٤٦، وأبوداود فى السنن، ←

इमाम इसीलिए बनाया जाता है कि उसकी इक़्तिदा की जाए, जब वो अल्लाहु अक्बर कहे तो तुम लोग भी अल्लाहु अक्बर कहो, और जब क़िरअत करे तो तुम चुप रहो।''

٢٧٣ / ٣٩۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّمَا جُعِلَ الإِمَامُ لِيُؤْتَمَّ بِهِ، فَإِذَا كَبَّرَ فَكَبِّرُوْا، وَإِذَا قَرَأَ فَأَنْصِتُوا، وَإِذَا قَالَ: ﴿سَمِعَ اللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ﴾ فَقُوْلُوْا: ﴿اللَّهُمَّ رَبَّنَا لَکَ الْحَمْدُ﴾.

رَوَاهُ النَّسَائِيُّ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः इमाम इसी लिए बनाया जाता है कि उसकी पैरवी की जाए, जब वो तक्बीर कहे तो तुम भी तक्बीर कहो और जब वो क़िरअत करे तो तुम खामोश रहो और जब वो ﴿سَمِعَ اللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ﴾ कहे तो तुम ﴿اللَّهُمَّ رَبَّنَا لَکَ الْحَمْدُ﴾ कहो।''

٢٧٤ / ٤٠۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ انْصَرَفَ مِنْ صَلَاةٍ جَهَرَ فِيْهَا بِالْقِرَاءَةِ. فَقَالَ: هَلْ قَرَأَ مَعِي اَحَدُكُمْ انِفًا؟ قَالَ رَجُلٌ: نَعَمْ، يَا رَسُوْلَ اللهِ! قَالَ: إِنِّي أَقُوْلُ مَالِي أُنَازَعُ الْقُرْآنَ، فَانْتَهَى النَّاسُ عَنِ الْقِرَاءَةِ فِيْمَا جَهَرَ فِيْهِ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ بِالْقِرَاءَةِ مِنَ الصَّلَاةِ حِيْنَ سَمِعُوْا ذَلِکَ. رَوَاهُ النَّسَائِيُّ.

.... كتاب: الصلاة، باب: الإمام يصلى من قعود، ١ / ٢٣٧، الرقم: ٦٠٤، والنسائى فى السنن الكبرى، ١ / ٣٢٠، الرقم: ٩٩٣، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٢ / ٣٧٦، ٤٢٠، وابن أبى شيبة فى المصنف، ١ / ٣٣١، الرقم: ٣٧٩٩، ٢ / ١١٥، الرقم: ٧١٣٧، والطحاوى فى شرح معانى الآثار، ١ / ٢٨١، الرقم: ١٢٥٧۔

الحديث رقم ٣٩: أخرجه النسائى فى السنن، كتاب: الافتتاح، باب: تأويل قوله ﷻ: وإذا قرىء القرآن فاستمعوا له وأنصتوا لعلكم ترحمون، ٢ / ١٤١، الرقم: ٩٢١۔

الحديث رقم ٤٠: أخرجه النسائى فى السنن، كتاب: الافتتاح، باب: قراءة أم القرآن خلف الإمام فيما جهر به الإمام، ٢ / ١٤٠، الرقم: ٩١٩۔

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर सरवरे कायनात ﷺ एक ऐसी नमाज़ से फ़ारिग़ हुए जिसमें आप ﷺ ने बुलन्द आवाज़ में क़िरअत फरमाई थी। आप ﷺ ने दरयाफ़्त फरमायाः क्या तुम में से अब किसी शख़्स ने मेरे साथ कुरआन पढ़ा ? एक शख़्स ने कहाः जी हाँ! या रसूलल्लाह! मैंने पढ़ा । आप ﷺ ने फरमायाः इसीलिए तो मैं भी कह रहा था क्या हो गया कि कोई शख़्स मुझ से कुरआन में झगड़ रहा है । जब से लोगों ने यह सुना तो जिस नमाज़ में आप ﷺ बा आवाज़ क़िरअत फरमाते थे कोई शख़्स आप ﷺ के पीछे क़िरअत न करता ।''

٢٧٥ / ٤١ـ عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ ﷺ قَالَ: صَلَّى النَّبِيُّ ﷺ الظُّهْرَ فَقَرأَ رَجُلٌ خَلْفَهُ: ﴿سَبِّحِ اسْمَ رَبِّکَ الْأَعْلَى﴾ فَلَمَّا صَلَّى قَالَ: مَنْ قَرَأَ: ﴿سَبِّحِ اسْمَ رَبِّکَ الْأَعْلَى﴾؟ قَالَ رَجُلٌ: أَنَا. قَالَ: قَدْ عَلِمْتُ أَنَّ بَعْضَكُمْ قَدْ خَالَجَنِيهَا. رَوَاهُ النَّسَائِيُّ وَالطَّحَاوِيُّ.

''हज़रत इमरान बिन हुसैन ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर सरकारे दो आलम ﷺ ने नमाज़े ज़ुहर अदा फरमाई, एक शख़्स ने आप ﷺ के पीछे ﴿سَبِّحِ اسْمَ رَبِّکَ الْأَعْلَى﴾ पढ़ा, जब आप ﷺ नमाज़ अदा फरमा चुके तो आप ﷺ ने दरयाफ़्त फरमायाः इस सूरह को किस शख़्स ने पढ़ा? एक शख़्स ने अर्ज़ कियाः मैंने! आप ﷺ ने फरमायाः मुझे ऐसा मालूम हुआ गोया कोई शख़्स मुझसे कुरआन में झगड़ रहा है।''

٢٧٦ / ٤٢ـ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ، قَالَ: رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّمَا جُعِلَ الإِمَامُ لِيُؤْتَمَّ بِهِ فَإِذَا كَبَّرَ فَكَبِّرُوْا. وَإِذَا قَرَأَ فَأَنْصِتُوْا. وَإِذَا قَالَ: ﴿غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّيْنَ﴾، فَقُوْلُوْا: ﴿آمِينَ﴾. وَإِذَا رَكَعَ فَارْكَعُوْا. وَإِذَا قَالَ: ﴿سَمِعَ اللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ﴾، فَقُوْلُوْا: ﴿اَللَّهُمَّ رَبَّنَا

الحديث رقم ٤١: أخرجه النسائى فى السنن، كتاب: الافتتاح، باب: ترك القراءة خلف الإمام فيما لم جهر به ، ٢ / ١٤١، الرقم: ٩١٧، والطحاوى فى شرح معانى الآثار، ١ / ٢٠٧.

الحديث رقم ٤٢: أخرجه ابن ماجه فى السنن، كتاب: إقامة الصلاة والسنة فيها، باب: إذا قرأ الإمام فأنصتوا، ١ / ٢٧٦، الرقم: ٨٤٦.

وَلَکَ الْحَمْدُ﴾. وَإِذَا سَجَدَ فَاسْجُدُوْا. وَإِذَا صَلَّى جَالِسًا فَصَلُّوْا جُلُوْسًا أَجْمَعِيْنَ. رَوَاهُ ابْنُ مَاجَه.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमायाः इमाम इस लिए होता है कि उसकी इक़्तिदा की जाए। जब वो ﴿الله اكبر﴾ कहे तो तुम ﴿الله اكبر﴾ कहो, जब वो क़िरअत करे तो तुम ख़ामोश रहो जब वो ﴿ولا الضالين﴾ कहे तो तुम ﴿آمين﴾ कहो, जब वो रूकूअ करे तुम रूकूअ करो, जब वो ﴿سمع الله لمن حمده﴾ कहे तो तुम ﴿اللهم ربنا ولك الحمد﴾ कहो जब वो सज्दा करे तो तुम सज्दा करो, और जब वो बैठ कर नमाज़ पढ़े तो तुम भी बैठ कर नमाज़ पढ़ो।''

٢٧٧ / ٤٣. عَنْ أَبِي مُوْسَى الْأَشْعَرِيِّ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِذَا قَرَأَ الإِمَامُ فَأَنْصِتُوْا، فَإِذَا كَانَ عِنْدَ الْقَعْدَةِ فَلْيَكُنْ أَوَّلَ ذِكْرِ أَحَدِكُمُ التَّشَهُّدُ. رَوَاهُ ابْنُ مَاجَه.

''हज़रत अबू मूसा अश्अरी ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमायाः जब इमाम क़िरअत करे तो तुम ख़ामोश रहो, जब वो क़ा'दे में हो तो तुम पहले अत्तहिय्यात पढ़ा करो।''

٢٧٨ / ٤٤. عَنْ نَافِعٍ ﷺ أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ عُمَرَ رضي الله عنهما كَانَ إِذَا سُئِلَ: هَلْ يَقْرَأُ أَحَدٌ خَلْفَ الإِمَامِ. قَالَ: إِذَا صَلَّى أَحَدُكُمْ خَلْفَ الإِمَامِ فَحَسْبُهُ قِرَاءَةُ الإِمَامِ، وَ إِذَا صَلَّى وَحْدَهُ فَلْيَقْرَأْ. قَالَ: وَكَانَ عَبْدُ اللهِ بْنُ عُمَرَ رضي الله عنهما لَا يَقْرَأُ خَلْفَ الإِمَامِ. رَوَاهُ مَالِكٌ وَالطَّحَاوِيُّ.

''हज़रत नाफ़ेअ ﷺ से रिवायत है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर رضي الله عنهما से

الحديث رقم ٤٣: أخرجه ابن ماجه فى السنن، كتاب: إقامة الصلاة والسنة فيها، باب: إذا قرأ الإمام فأنصتوا، ١ / ٢٧٦، الرقم: ٨٤٧.

الحديث رقم ٤٤: أخرجه مالك في الموطأ، كتاب: النداء بالصلاة، باب: القراءة خلف الإمام فيما لايجهرفيه بالقراءة، ١ / ٨٦، الرقم: ١٩٢، والطحاوي في شرح معاني الآثار، ١ / ٢٨٤، الرقم: ١٢٨٣.

जब मुक़्तदी की क़िरअत के बारे में सवाल किया गया कि क्या मुक़्तदी भी इमाम के पीछे क़िरअत करेगा? तो उन्होंने फरमाया, जब तुम में से कोई इमाम के पीछे नमाज़ पढ़े तो उसे इमाम की क़िरअत काफ़ी है और जब अकेला पढ़े तो खुद क़िरअत करे । नाफ़ेअ फरमाते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ ख़ुद भी इमाम के पीछे क़िरअत नहीं करते थे।''

٢٧٩ / ٤٥۔ عَنْ أَبِي مُوْسَى ﷺ، قَالَ: عَلَّمَنَا رَسُوْلُ اللهِ ﷺ، قَالَ: إِذَا قُمْتُمْ إِلَى الصَّلَاةِ فَلْيَؤُمَّكُمْ أَحَدُكُمْ، وَ إِذَا قَرَأَ الإِمَامُ فَأَنْصِتُوْا.

رَوَاهُ أَحْمَدُ.

''हज़रत अबू मूसा अश्अरी ﷺ से रिवायत है उन्होंने फरमाया कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने हमें तालीम देते हुए फरमायाः जब तुम नमाज़ के लिए खड़े हो तो कोई एक तुम्हारा इमाम बन जाए और जब इमाम क़िरअत करे तो तुम ख़ामोश रहा करो।''

٢٨٠ / ٤٦۔ عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ ﷺ، قَالَ: نَهَى رَسُوْلُ اللهِ ﷺ عَنِ الْقِرَاءَةِ خَلْفَ الإِمَامِ، قَالَ: وَأَخْبَرَنِي أَشْيَاخُنَا أَنَّ عَلِيًّا ﷺ قَالَ: مَنْ قَرَأَ خَلْفَ الإِمَامِ فَلَا صَلَاةَ لَهُ. قَالَ: وَأَخْبَرَنِي مُوْسَى بْنُ عُقْبَةَ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ وَأَبَابَكْرٍ وَعُمَرَ وَعُثْمَانَ ﷺ كَانُوْا يَنْهَوْنَ عَنِ الْقِرَاءَةِ خَلْفَ الإِمَامِ. رَوَاهُ عَبْدُ الرَّزَّاقِ.

''हज़रत ज़ैद बिन अस्लम ﷺ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ इमाम की इक़्तिदा में क़िरअत करने से मना फरमाया करते थे और हमारे मशाइख़ ने मुझे बताया है कि हज़रत अली ﷺ ने फरमायाः उस शख़्स की नमाज़ नहीं जो इमाम के इक़्तिदा में क़िरअत करे और हज़रत मूसा बिन उक़्बा ﷺ ने मुझे बताया है कि रसूलुल्लाह ﷺ हज़रत अबू बकर, हज़रत उमर व हज़रत उस्मान ﷺ इमाम के पीछे क़िरअत करने से मना फरमाया करते थे।''

الحديث رقم ٤٥: أخرجه أحمد بن حنبل فى المسند، ٤ / ٤١٥۔

الحديث رقم ٤٦: أخرجه عبد الرزاق فى المصنف، ٢ / ١٣٩، الرقم: ٢٨١٠، والإمام محمد فى الموطأ، باب: القراءة فى الصلوة خلف الإمام، ١ / ٩٨۔

۲۸۱ / ٤٧۔ عَنْ أَبِي وَائِلٍ ﷺ قَالَ: سُئِلَ عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْعُوْدٍ ﷺ عَنِ الْقِرَاءَةِ خَلْفَ الإِمَامِ. قَالَ: أَنْصِتْ فَإِنَّ فِي الصَّلَاةِ شُغْلاً سَيَكْفِيْكَ ذَاكَ الإِمَامُ. رَوَاهُ الإِمَامُ مُحَمَّدٍ فِي الْمُوَطَأ.

''हज़रत अबू वाइल ﷺ से रिवायत है कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद ﷺ से इमाम की इक़्तिदा में क़िरअत करने के बारे में पूछा गया तो उन्होंने फरमायाः ख़ामोश रहो कि नमाज़ में मसरूफ़ियत है तुझे इमाम इस (क़िरअत) की क़िफ़ायत कर देगा।''

۲۸۲ / ٤٨۔ عَنْ عَلْقَمَةَ بْنِ قَيْسٍ: أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ مَسْعُوْدٍ ﷺ كَانَ لَا يَقْرَأُ خَلْفَ الإِمَامِ، فِيْمَا يَجْهَرُ فِيْهِ وَ فِيْمَا يُخَافِتُ فِيْهِ.

رَوَاهُ الإِمَامُ مُحَمَّدٍ فِي الْمُوَطَّأ.

''हज़रत अ़लक़मा बिन क़ैस ﷺ से रिवायत है कि अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद ﷺ जहरी (जिन में आवाज़ से क़िरअत होती है) और सिर्री (जिनमें क़िरअत आहिस्ता होती है) दोनों तरह की नमाज़ों में इमाम के पीछे क़िरअत नहीं करते थे।''

۲۸۳ / ٤٩۔ أَخْبَرَنَا دَاوُدُ بْنُ الْقَيْسِ الْفَرَّاءُ الْمَدَنِيُّ أَخْبَرَنِي بَعْضُ وَلَدِ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ ﷺ أَنَّهُ ذُكِرَ لَهُ أَنَّ سَعْدًا قَالَ: وَدِدْتُ أَنَّ الَّذِي يَقْرَءُ خَلْفَ الإِمَامِ فِي فِيْهِ جَمْرَةٌ. رَوَاهُ الإِمَامُ مُحَمَّدٍ فِي الْمُوَطَّأ.

''दाऊद बिन क़ैस फ़र्रा मदनी कहते हैं कि मुझे हज़रत सईद बिन अबी वक़्क़ास ﷺ की औलाद में से किसी ने बताया कि हज़रत सईद बिन अबू वक़्क़ास ﷺ फरमाया करते थेः मैं यह पसन्द करता हूँ कि जो शख़्स इमाम के पीछे क़िरअत करे उसके मुँह में अंगारा हो।''

الحديث رقم ٤٧: أخرجه الإمام محمد في الموطأ، باب: القراءة في الصلاة خلف الإمام: ٩٦، والطحاوي في شرح معاني الآثار، ١/ ٢٨٤، الرقم: ١٢٧٣.

الحديث رقم ٤٨: أخرجه الإمام محمد فى الموطأ، باب: القراءة فى الصلاة خلف الإمام: ٩٦.

الحديث رقم ٤٩: أخرجه الإمام محمد فى الموطأ، باب: القراءة فى الصلاة خلف الإمام: ٩٨.

٢٨٤ / ٥٠۔ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْن أَبِي لَيْلَى أَنَّ عَلِيًّا رضي الله عنه كَانَ يَنْهَى عَنِ الْقِرَاءَةِ خَلْفَ الإِمَامِ. رَوَاهُ عَبْدُ الرَّزَّاقِ.

''अ़ब्दुल्लाह बिन अबी लैला रिवायत करते हैं कि हज़रत अ़ली رضي الله عنه इमाम की इक़्तिदा में क़िरअत करने से मना फरमाया करते थे।''

٢٨٥ / ٥١۔ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عُجْلَانَ، قَالَ: قَالَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ رضي الله عنه: وَدِدْتُ أَنَّ الَّذِي يَقْرَأُ خَلْفَ الإِمَامِ فِي فِيْهِ حَجَرٌ. رَوَاهُ عَبْدُ الرَّزَّاقِ.

''इमाम मुहम्मद बिन उजलान से रिवायत है कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब رضي الله عنه ने फरमायाः मेरी यह ख़्वाहिश है कि जो शख़्स इमाम के पीछे क़िरअत करे उसके मुँह में पत्थर हो।''

٢٨٦ / ٥٢۔ عَنْ أَبِي حَمْزَةَ، قَالَ: قُلْتُ لِابْنِ عَبَّاسٍ رضي الله عنهما: أَقْرَأُ وَ الإِمَامُ بَيْنَ يَدَيَّ؟ قَالَ: لَا. رَوَاهُ الطَّحَاوِيُّ.

''हज़रत अबू हमज़ा बयान करते हैं कि मैंने हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رضي الله عنهما से अ़र्ज़ कियाः क्या मैं क़िरअत करूँ जबकि इमाम मेरे सामने हो ? तो उन्होंने फरमायाः नहीं।''

الحديث رقم ٥٠: أخرجه عبد الرزاق في المصنف، ٢/ ١٣٨، الرقم: ٢٨٠٥۔
الحديث رقم ٥١: أخرجه عبد الرزاق في المصنف، ٢/ ١٣٨، الرقم: ٢٨٠٦۔
الحديث رقم ٥٢: أخرجه الطحاوي في شرح معاني الآثار، ١/ ٢٨٤، الرقم: ١٢٨٢۔

فَصْلٌ فِي عَدَمِ الْجَهْرِ بِالتَّأْمِينِ

बुलन्द आवाज़ से आमीन न कहने का बयान

٢٨٧ / ٥٣. عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضي الله عنه أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: إِذَا قَالَ الإِمَامُ: ﴿غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ﴾ فَقُوْلُوْا: آمِيْنَ. فَإِنَّهُ مَنْ وَافَقَ قَوْلُهُ قَوْلَ الْمَـلَائِكَةِ، غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अबू हुरैरा رضي الله عنه फरमाते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : जब इमाम ﴿غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّيْنَ﴾ कहे तो तुम कहो : आमीन, जिसका कहना फ़रिश्तों की तरह होगा तो उसके साबिक़ा गुनाह बख़्श दिए जाते हैं।''

٢٨٨ / ٥٤. عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضي الله عنه قَالَ: كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يُعَلِّمُنَا، يَقُوْلُ: لَا تُبَادِرُوا الْإِمَامَ. إِذَا كَبَّرَ فَكَبِّرُوْا. وَإِذَا قَالَ: ﴿وَلَا الضَّالِّيْنَ﴾، فَقُوْلُوْا: ﴿آمِيْنَ﴾. وَإِذَا رَكَعَ فَارْكَعُوا. وَإِذَا قَالَ: ﴿سَمِعَ اللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ﴾، فَقُوْلُوْا: ﴿اَللّٰهُمَّ رَبَّنَا لَکَ الْحَمْدُ﴾. رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَابْنُ خُزَيْمَةَ.

''हज़रत अबू हुरैरा رضي الله عنه बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ हमें तालीम देते थे कि

الحديث رقم ٥٣: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: صفة الصلاة، باب: جهر المأموم بالتأمين، ١ / ٢٧١، الرقم: ٧٤٩، ومسلم في الصحيح، كتاب: الصلاة، باب: التسميع والتحميد والتأمين، ١ / ٣٠٧، الرقم: ٤١٠، وأبوداود في السنن، كتاب: الصلاة، باب: التأمين وراء الإمام، ١ / ٣٥٤، الرقم: ٩٣٥، والنسائي في السنن، كتاب: الافتتاح، باب: جهر الإمام بآمين، وباب: الأمر بالتأمين خلف الإمام، ٢ / ١٠٥، الرقم: ٩٢٧، ٩٢٩، وابن حبان في الصحيح، ٥ / ١٠٦، الرقم: ١٨٠٤، والحاكم في المستدرك، ١ / ٣٤٠، الرقم: ٧٩٧.

الحديث رقم ٥٤: أخرجه مسلم في الصحيح، كتاب: الصلاة، باب: النهي عن مبادرة الإمام بالتكبير وغيره، ١ / ٣١٠، الرقم: ٤١٥، وابن خزيمة في الصحيح، ٣ / ٣٤، الرقم: ١٥٧٦، والبيهقي في السنن الكبرى، ٢ / ٩٢، الرقم: ٢٤٢٤.

इमाम पर सब्क़त ना करो, जब इमाम तक्बीर कहे तो तुम भी तक्बीर कहो, और जब वो ﴿وَلَا الضَّالِّيْنَ﴾ कहे तो तुम आमीन कहो, और जब वो रूकूअ करे तो तुम रूकूअ करो और जब वो ﴿سَمِعَ اللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ﴾ कहे तो तुम ﴿اللّٰهُمَّ رَبَّنَا لَکَ الْحَمْدُ﴾ कहो।''

٢٨٩ / ٥٥۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: إِذَا قَالَ الْقَارِئُ: ﴿غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّيْنَ﴾ فَقَالَ مَنْ خَلْفَهُ: آمِيْنَ. فَوَافَقَ قَوْلُهُ قَوْلَ أَهْلِ السَّمَاءِ. غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया कि जब इमाम ﴿غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّيْنَ﴾ कहे और उस के पीछे मुक़्तदी आमीन कहें और आमीन पढ़ने वालों का क़ौल फ़रिश्तों के क़ौल की तरह हो जाए तो नमाज़ी के पिछले तमाम गुनाह माफ़ कर दिए जाते हैं।''

٢٩٠ / ٥٦۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِذَا قَالَ الإِمَامُ: ﴿غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّيْنَ﴾ فَقُوْلُوْا: ﴿آمِينَ﴾، فَإِنَّ الْمَـلَائِكَةَ تَقُوْلُ: ﴿آمِيْنَ﴾. وَإِنَّ الإِمَامَ يَقُوْلُ: ﴿آمِيْنَ﴾. فَمَنْ وَافَقَ تَأْمِيْنُهُ تَأْمِيْنَ الْمَـلَائِكَةِ غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ. رَوَاهُ النَّسَائِيُّ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जब इमाम ﴿غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّيْنَ﴾ कहे तो तुम आमीन कहो। बेशक फ़रिश्ते भी आमीन कहते हैं और इमाम भी आमीन कहता है। तो जिसकी आमीन फ़रिश्तों के साथ मिल जाएगी उस के पिछले गुनाह बख़्श दिए जाएंगे।''

الحديث رقم ٥٥: أخرجه مسلم فى الصحيح، كتاب: الصلاة، باب: التسميع والتحميد والتأمين، ١/ ٣٠٧، الرقم: ٤١٠، وأحمد بن حنبل في المسند، ٢/ ٤٤٩، الرقم: ٩٨٠٣، وأبوعوانة في المسند، ٢/ ٤٥٦، الرقم: ١٦٨٩.

الحديث رقم ٥٦: أخرجه النسائى فى السنن، كتاب: الافتتاح، باب: جهر الإمام بآمين، ١/ ١٤٤، الرقم: ٩٢٧.

٢٩١ / ٥٧. عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضي الله عنه أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: إِذَا قَالَ الإِمَامُ: ﴿غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّيْنَ﴾، فَقُوْلُوْا: ﴿آمِيْنَ﴾، فَإِنَّهُ مَنْ وَافَقَ قَوْلُهُ قَوْلَ الْمَـلَائِكَةِ غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ.

رَوَاهُ النَّسَائِيُّ.

''हज़रत अबू हुरैरा رضي الله عنه से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : जब इमाम ﴿غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّيْنَ﴾ कह चुके तो तुम आमीन कहो क्योंकि जिस शख़्स का आमीन कहना फ़रिश्तों के आमीन कहने की तरह हो जाएगा उस के पिछले गुनाह माफ़ फरमा दिए जाएंगे।''

٢٩٢ / ٥٨. عَنْ وَائِلِ بْنِ حُجْرٍ رضي الله عنه قَالَ: سَمِعْتُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَرَأَ: ﴿غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّيْنَ﴾ فَقَالَ: ﴿آمِيْنَ﴾، وَخَفَضَ بِهَا صَوْتَهُ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَحْمَدُ وَالْحَاكِمُ.

وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत वाइल बिन हुज्र رضي الله عنه से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने ﴿غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّيْنَ﴾ पढ़ा तो कहा : आमीन और आप ﷺ ने आमीन की आवाज़ को पस्त किया।''

٢٩٣ / ٥٩. عَنْ أَبِي وَائِلٍ رضي الله عنه، قَالَ: كَانَ عَلِيٌّ وَابْنُ مَسْعُوْدٍ رضي الله عنهما لَا يَجْهَرَانِ بِ ﴿بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ﴾، وَلَا بِالتَّعَوُّذِ، وَلَا بِ

الحديث رقم ٥٧: أخرجه النسائي في السنن، كتاب: الافتتاح، باب: الأمر بالتأمين خلف الإمام، ٢ / ١٤٤، الرقم: ٩٢٩.

الحديث رقم ٥٨: أخرجه الترمذي في السنن، كتاب: الصلاة عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء في التأمين، ١ / ٢٨٩، الرقم: ٢٤٨، وأحمد بن حنبل في المسند، ٤ / ٣١٦، والحاكم في المستدرك، ٢ / ٢٥٣، الرقم: ٢٩١٣، والطيالسي في المسند: ١٣٨، الرقم: ١٠٢٤.

الحديث رقم ٥٩: أخرجه الطبراني في المعجم الكبير، ٩ / ٢٦٣، الرقم: ٩٣٠٤، والهيثمي في مجمع الزوائد، ٢ / ١٠٨.

﴿آمِينَ﴾. رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ.

''हज़रत अबू वाइल ﷺ रिवायत करते हैं कि हज़रत अ़ली और हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद رضي الله عنهما तस्मिया ﴿بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيْمِ﴾ और त–अव्वुज़ ﴿أَعُوذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ﴾ और तामीन ﴿آمِيْن﴾ बुलन्द आवाज़ से नहीं कहते थे।''

٢٩٤ / ٦٠. عَنْ إِبْرَاهِيْمَ ﷺ قَالَ: خَمْسٌ يُخْفَيْنَ: ﴿سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ﴾، وَالتَّعَوُّذُ، وَ ﴿بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيْمِ﴾، وَ ﴿آمِيْنَ﴾، وَ ﴿اللَّهُمَّ! رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ﴾. رَوَاهُ عَبْدُ الرَّزَّاقِ.

''हज़रत इब्राहीम नखई ﷺ रिवायत करते हैं, पाँच चीज़ों में इख़्फ़ा किया जाएगा : सना ﴿سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ﴾, त–अव्वुज़ ﴿أَعُوذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ﴾, तस्मिया ﴿بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيْمِ﴾, तामीन ﴿آمِيْن﴾, और तहमीद (﴿اللَّهُمَّ رَبَّنَا﴾ وَلَكَ الْحَمْدُ﴾)।''

٢٩٥ / ٦١. عَنْ أَبِي وَائِلٍ، قَالَ: كَانَ عُمَرُ وَعَلِيٌّ رضي الله عنهما لَا يَجْهَرَانِ بِ﴿بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيْمِ﴾، وَلَا بِالتَّعَوُّذِ، وَلَا بِالتَّأْمِيْنِ. رَوَاهُ الطَّحَاوِيُّ.

''हज़रत अबू वाइल ﷺ रिवायत करते हैं कि हज़रत उमर और हज़रत अ़ली رضي الله عنهما तस्मिया ﴿بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيْمِ﴾, त–अव्वुज़ (﴿أَعُوذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ﴾) और तामीन ﴿آمِيْن﴾ बुलन्द आवाज़ से नहीं कहते थे।''

٢٩٦ / ٦٢. عَنْ إِبْرَاهِيْمَ، قَالَ: قَالَ عُمَرُ ﷺ: أَرْبَعٌ يُخْفَيْنَ عَنِ الإِمَامِ: التَّعَوُّذِ، وَبِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيْمِ، وَآمِيْنَ، وَاللَّهُمَّ! رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدَ. رَوَاهُ الْهِنْدِيُّ.

الحديث رقم ٦٠: أخرجه عبد الرزاق فى المصنف، ٢ / ٨٧، الرقم: ٢٥٩٧.
الحديث رقم ٦١: أخرجه الطحاوى فى شرح معاني الآثار، ١ / ٢٦٣، الرقم: ١١٧٣.
الحديث رقم ٦٢: أخرجه الهندي في كنز العمال، ٨ / ٢٧٤، الرقم: ٢٢٨٩٤.

''इमाम इब्राहीम रिवायत करते हैं कि हज़रत उमर رضي الله عنه ने फरमायाः चार चीज़ों को इमाम से आहिस्ता कहा जाएगा : त–अव्वुज़ ﴿أَعُوذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ﴾, तस्मिया ﴿بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيْم﴾, तामीन ﴿آمين﴾, तहमीद ﴿اللّٰهُمَّ رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ﴾''

اَلْبَابُ الْخَامِسُ : बाब 5 :

صَلَاةُ التَّرَاوِيحِ وَعَدَدُ رَكْعَاتِهَا

नमाज़े तरावीह और उसकी ता'दादे रकआत

٢٩٧/١۔ عَنْ عَائِشَةَ أُمِّ الْمُؤْمِنِيْنَ رضي الله عنها أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ صَلَّى ذَاتَ لَيْلَةٍ فِي الْمَسْجِدِ، فَصَلَّى بِصَلَاتِهِ نَاسٌ، ثُمَّ صَلَّى مِنَ الْقَابِلَةِ، فَكَثُرَ النَّاسُ، ثُمَّ اجْتَمَعُوا مِنَ اللَّيْلَةِ الثَّالِثَةِ أَوِ الرَّابِعَةِ، فَلَمْ يَخْرُجْ إِلَيْهِمْ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ، فَلَمَّا أَصْبَحَ، قَالَ: قَدْ رَأَيْتُ الَّذِي صَنَعْتُمْ، وَلَمْ يَمْنَعْنِي مِنَ الْخُرُوْجِ إِلَيْكُمْ إِلَّا أَنِّي خَشِيْتُ أَنْ تُفْرَضَ عَلَيْكُمْ، وَذٰلِكَ فِي رَمَضَانَ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ وَهٰذَا لَفْظُ الْبُخَارِيِّ.

وزاد ابن خزيمة وابن حبان: وَكَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يُرَغِّبُهُمْ فِي قِيَامِ رَمَضَانَ مِنْ غَيْرِ أَنْ يَأْمُرَ بِعَزِيْمَةِ أَمْرٍ فَيَقُوْلُ: مَنْ قَامَ رَمَضَانَ إِيْمَانًا وَاحْتِسَابًا غُفِرَلَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ، فَتُوُفِّيَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ فَكَانَ الْأَمْرُ كَذٰلِكَ فِي خِلَافَةِ أَبِي بَكْرٍ رضي الله عنه وَصَدْرًا مِنْ خِلَافَةِ عُمَرَ رضي الله عنه حَتَّى جَمَعَهُمْ

الحديث رقم ١: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: التهجد، باب: تحريض النبي ﷺ على صلاة الليل والنوافل من غير إيجاب، ١/٣٨٠، الرقم: ١٠٧٧، وفي كتاب: صلاة التراويح، باب: فضل من قام رمضان، ٢/٧٠٨، الرقم: ١٩٠٨، ومسلم في الصحيح، كتاب: صلاة المسافرين وقصرها، باب: الترغيب في قيام رمضان وهو التراويح، ١/٥٢٤، الرقم: ٧٦١، وأبو داود في السنن، كتاب: الصلاة، باب: في قيام شهر رمضان، ٢/٤٩، الرقم: ١٣٧٣، والنسائي في السنن، كتاب: قيام الليل وتطوع النهار، باب: قيام شهر رمضان،٣/٢٠٢، الرقم: ١٦٠٤، وفي السنن الكبرى، ١/٤١٠، الرقم: ١٢٩٧، ومالك في الموطأ، كتاب: الصلاة في رمضان، باب: الترغيب في الصلاة في رمضان، ١/١١٣، الرقم: ٢٤٨، وأحمد بن حنبل في المسند، ٦/١٧٧، الرقم: ٢٥٤٨٥، وابن حبان في الصحيح، ١/٣٥٣، الرقم: ١٤١، وابن خزيمة في الصحيح، ٣/٣٣٨، الرقم: ٢٢٠٧،و عبد الرزاق في المصنف، ٣/٤٣، الرقم: ٤٧٢٣، والبيهقي في السنن الكبرى، ٢/٤٩٢، الرقم: ٤٣٧٧، وفي السنن الصغرى، ١/٤٨٠، الرقم: ٤٨٦، والعسقلاني في تلخيص الحبير، ٢/٢١.

عُمَرُ رضي الله عنه عَلَى أُبَيِّ بْنِ كَعْبٍ وَصَلَّى بِهِمْ فَكَانَ ذَلِكَ أَوَّلُ مَا اجْتَمَعَ النَّاسُ عَلَى قِيَامِ رَمَضَانَ.

وأخرجه العسقلاني في "التلخيص": أَنَّهُ ﷺ صَلَّى بِالنَّاسِ عِشْرِيْنَ رَكْعَةً لَيْلَتَيْنِ فَلَمَّا كَانَ فِي اللَّيْلَةِ الثَّالِثَةِ اجْتَمَعَ النَّاسُ فَلَمْ يَخْرُجْ إِلَيْهِمْ ثُمَّ قَالَ مِنَ الْغَدِ: خَشِيْتُ أَنْ تُفْرَضَ عَلَيْكُمْ فَلَا تَطِيْقُوْهَا.

''उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा رضي الله عنها से मरवी है कि एक रात रसूलुल्लाह ﷺ ने मस्जिद में (नफ़्ल) नमाज़ पढ़ी तो लोगों ने भी आप ﷺ के साथ नमाज़ पढ़ी। फिर आप ﷺ ने अगली रात नमाज़ पढ़ी तो ज़्यादा लोग जमा हो गए फिर तीसरी या चौथी रात भी आ खड़े हुए लेकिन रसूलुल्लाह ﷺ उनकी तरफ़ तशरीफ़ ना लाए। जब सुबह हुई तो फरमायाः मैंने देखा जो तुम ने किया और मुझे तुम्हारे पास (नमाज़ पढ़ाने के लिए) आने से सिर्फ इस अन्देशे ने रोका कि यह तुम पर फ़र्ज़ कर दी जाएगी और यह रमज़ानुल मुबारक का वाक़िआ है।''

इमाम ख़ुज़ैमा और इमाम इब्ने हबान ने इन अल्फ़ाज़ का इज़ाफ़ा कियाः और हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ उन्हें क़ियामे रमज़ान (तरावीह) की रग़बत दिलाया करते थे, लेकिन हुक्मन नहीं फरमाते थे चुनान्चे (तरग़ीब के लिए) फरमाते कि जो शख़्स रमज़ानुल मुबारक में ईमान और सवाब की निय्यत के साथ क़ियाम करता है तो उसके पिछले तमाम गुनाह बख़्श दिए जाते हैं। फिर हुजूर नबी–ए–अकरम ﷺ के विसाल मुबारक तक क़ियामे रमज़ान की यही सूरत बरक़रार रही और यही सूरत ख़िलाफ़ते अबू बकर رضي الله عنه और खिलाफ़ते उमर رضي الله عنه के अवाइल दौर तक जारी रही यहाँ तक कि हज़रत उमर رضي الله عنه ने उन्हें हज़रत उबै बिन का'ब رضي الله عنه की इक़्तिदा में जमा कर दिया और वो उन्हें नमाज़े (तरावीह) पढ़ाया करते थे, लिहाज़ा यह वो इब्तिदाई ज़माना है जब लोग तरावीह के लिए (बाजमाअत) इकट्ठा होते थे।''

और इमाम अस्क़लानी ने '**التلخيص**' में बयान किया कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने लोगों को दो रातें 20 रकअत नमाज़ पढ़ाई जब तीसरी रात लोग फिर जमा हो गए तो आप ﷺ उन की तरफ़ (हुजरा मुबारक से बाहर) तशरीफ़ नहीं लाए, फिर सुबह आप ﷺ ने

फरमायाः मुझे अन्देशा हुआ कि (नमाज़े तरावीह) तुम पर फ़र्ज कर दी जाएगी, लेकिन तुम इसकी ताक़त न रखोगे।''

٢٩٨/ ٢ـ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضي الله عنه قَالَ: خَرَجَ رَسُوْلُ اللهِ صلى الله عليه وآله وسلم فَإِذَا أُنَاسٌ فِي رَمَضَانَ يُصَلُّوْنَ فِي نَاحِيَةِ الْمَسْجِدِ فَقَالَ: مَا هَؤُلَاءِ؟ فَقِيْلَ: هَؤُلَاءِ نَاسٌ لَيْسَ مَعَهُمْ قُرْآنٌ وَ أُبَيُّ بْنُ كَعْبٍ يُصَلِّي وَهُمْ يُصَلُّوْنَ بِصَلَاتِهِ، فَقَالَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وآله وسلم: أَصَابُوْا وَنِعْمَ مَا صَنَعُوْا.

رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ وَابْنُ خُزَيْمَةَ وَابْنُ حِبَّانَ وَالْبَيْهَقِيُّ.

وفي رواية للبيهقي: قَالَ: قَدْ أَحْسَنُوْا أَوْ قَدْ أَصَابُوْا وَلَمْ يَكْرَهْ ذَلِكَ لَهُمْ.

''हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि उन्होंने फरमायाः हुज़ूर नबी–ए–अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम (हुजरे मुबारक से) बाहर तशरीफ़ लाये तो (आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम ने देखा कि) रमज़ानुल मुबारक में लोग मस्जिद के एक गोशे में नमाज़ पढ़ रहे थे, आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम ने दरयाफ़्त फरमाया: ये कौन हैं ? अ़र्ज़ किया गया : ये वो लोग हैं जिन्हें क़ुरआन पाक याद नहीं और हज़रत उबै बिन का'ब नमाज़ पढ़ाते हैं और ये लोग उन की इक़्तिदा में नमाज़ पढ़ते हैं तो हुज़ूर नबी–ए–अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम ने फरमाया : इन्होंने दुरुस्त किया और कितना ही अच्छा अ़मल है जो इन्होंने किया।''

और बैहक़ी की एक रिवायत में है फरमायाः इन्होंने कितना अहसन इक़दाम या कितना अच्छा अ़मल किया और उनके इस अ़मल को हुज़ूर नबी–ए–अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम ने नापसन्द नहीं फरमाया।''

٢٩٩/ ٣ـ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضي الله عنه قَالَ: كَانَ رَسُوْلُ اللهِ صلى الله عليه وآله وسلم، يُرَغِّبُ

الحديث رقم ٢: أخرجه أبوداود في السنن، كتاب: الصلاة، باب: في قيام شهر رمضان، ٢/ ٥٠، الرقم: ١٣٧٧، وابن خزيمة في الصحيح، ٣/ ٣٣٩، الرقم: ٢٢٠٨، وابن حبان في الصحيح، ٦/ ٢٨٢، الرقم: ٢٥٤١، والبيهقي في السنن الكبرى، ٢/ ٤٩٥، الرقم: ٤٣٨٦ـ ٤٣٨٨، وابن عبد البر في التمهيد، ٨/ ١١١، وابن قدامة في المغني، ١/ ٤٥٥ـ

فِي قِيَامِ رَمَضَانَ، مِنْ غَيْرِ أَنْ يَأْمُرَ بِعَزِيْمَةٍ، فَيَقُوْلُ: مَنْ قَامَ رَمَضَانَ إِيْمَانًا وَاحْتِسَابًا، غُفِرَلَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ. فَتُوُفِّيَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ، وَالْأَمْرُ عَلَى ذَلِکَ، ثُمَّ كَانَ الْأَمْرُ عَلَى ذَلِکَ فِي خِلَافَةِ أَبِي بَكْرٍ وَصَدْرًا مِنْ خِلَافَةِ عُمَرَ ﷺ عَلَى ذَلِکَ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ وَهَذَا لَفْظُ مُسْلِمٍ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ नमाज़े तरावीह पढ़ने की रग़बत दिलाया करते थे लेकिन हुक्म नहीं फरमाते थे चुनान्चे फरमाते कि जिस ने रमज़ानुल मुबारक में हुसूले सवाब की निय्यत से और हालते ईमान के साथ क़ियाम किया तो उसके पिछले (तमाम) गुनाह बख़्शा दिए जाते हैं। हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के विसाल मुबारक तक नमाज़े तरावीह की यही सूरत बरक़रार रही और ख़िलाफ़ते अबू बकर ﷺ में और फिर ख़िलाफ़ते उमर फ़ारूक ﷺ के शुरू तक यही सूरत बरक़रार रही।''

٣٠٠ / ٤۔ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَبْدِ الْقَارِيِّ أَنَّهُ قَالَ: خَرَجْتُ مَعَ

الحديث رقم ٣: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: صلاة التروايح، باب: فضل من قام رمضان، ٢ / ٧٠٧، الرقم: ١٩٠٥، ومسلم في الصحيح، كتاب: صلاة المسافرين وقصرها، باب: الترغيب في قيام رمضان وهو التراويح، ١ / ٥٢٣، الرقم: ٧٥٩، والترمذي في السنن، كتاب: الصوم عن رسول الله ﷺ، باب: الترغيب في قيام رمضان وما جاء فيه من الفضل، ٣ / ١٧١، الرقم: ٨٠٨، وقال أبو عيسى: هذا حديث حسن صحيح، وأبو داود في السنن، كتاب: الصلاة، باب: في قيام شهر رمضان، ٢ / ٤٩، الرقم: ١٣٧١، والنسائي في السنن، كتاب: الصيام، باب: ثواب من قام رمضان وصامه إيمانا واحتسابا، ٤ / ١٥٤، الرقم: ٢١٩٢، ومالك في الموطأ، كتاب: الصلاة في رمضان، باب: الترغيب في الصلاة في رمضان، ١ / ١١٣، الرقم: ٢٤٩، وأحمد بن حنبل في المسند، ٢ / ٢٨١، الرقم: ٧٧٧٤،، وابن خزيمة في الصحيح، ٣ / ٣٣٨، الرقم: ٢٢٠٧، وابن حبان في الصحيح، ١ / ٣٥٣، الرقم: ١٤١، وعبد الرزاق في المصنف، ٤ / ٢٥٨، الرقم: ٧٧١٩، والبيهقي في السنن الكبرى، ٢ / ٤٩٣، الرقم: ٤٣٧٨، والطبراني في المعجم الأوسط، ٩ / ١٢٠، الرقم: ٩٢٩٩.

عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رضي الله عنه لَيْلَةً فِي رَمَضَانَ إِلَى الْمَسْجِدِ، فَإِذَا النَّاسُ أَوْزَاعٌ مُتَفَرِّقُوْنَ يُصَلِّي الرَّجُلُ لِنَفْسِهِ، وَيُصَلِّي الرَّجُلُ فَيُصَلِّي بِصَلَاتِهِ الرَّهْطُ، فَقَالَ عُمَرُ رضي الله عنه: إِنِّي أَرَى لَوْ جَمَعْتُ هَؤُلَاءِ عَلَى قَارِئٍ وَاحِدٍ لَكَانَ أَمْثَلَ، ثُمَّ عَزَمَ فَجَمَعَهُمْ عَلَى أُبَيِّ بْنِ كَعْبٍ، ثُمَّ خَرَجْتُ مَعَهُ لَيْلَةً أُخْرَى وَالنَّاسُ يُصَلُّوْنَ بِصَلَاةِ قَارِئِهِمْ، قَالَ عُمَرُ رضي الله عنه: نِعْمَ الْبِدْعَةُ هَذِهِ، وَالَّتِي يَنَامُوْنَ عَنْهَا أَفْضَلُ مِنَ الَّتِي يَقُوْمُوْنَ، يُرِيْدُ آخِرَ اللَّيْلِ، وَكَانَ النَّاسُ يَقُوْمُوْنَ أَوَّلَهُ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ وَمَالِكٌ.

''हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन अ़ब्दुल क़ारी रिवायत करते हैं कि मैं हज़रत उमर رضي الله عنه के साथ रमज़ान की एक रात मस्जिद की तरफ़ निकला तो लोग अलग–अलग थे कोई तन्हा नमाज़ पढ़ रहा था और किसी की इक़्तिदा में एक गिरोह नमाज़ पढ़ रहा था। हज़रत उमर رضي الله عنه ने फरमायाः मेरे ख़याल में इन्हें एक क़ारी के पीछे जमा कर दूँ तो अच्छा होगा फिर उन्होंने हज़रत उबै बिन का'ब رضي الله عنه के पीछे सब को जमा कर दिया, फिर मैं एक और रात उन के साथ निकला और लोग एक इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ रहे थे हज़रत उमर رضي الله عنه ने (उन्हें देख कर) फरमाया : यह कितनी अच्छी बिदअ़त है, और जो लोग इस नमाज़ (तरावीह) से सो रहे हैं वो नमाज़ अदा करने वालों से ज़्यादा बेहतर हैं और इससे उनकी मुराद वो लोग थे (जो रात को जल्दी सो कर) रात के पिछले पहर में नमाज़ अदा करते थे और तरावीह अदा करने वाले लोग रात के पहले पहर में नमाज़ अदा करते थे।''

٣٠١ / ٥۔ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ رضي الله عنه، عَنْ رَسُوْلِ اللهِ صلى الله عليه وآله وسلم أَنَّهُ

الحديث رقم ٤: أخرجه البخاری فی صحيح، كتاب: صلاة التراويح، باب: فضل من قام رمضان، ٢ / ٧٠٧، الرقم: ١٩٠٦، ومالك فی الموطأ، كتاب: الصلاة فی رمضان، باب: الترغيب في الصلاة في رمضان، ١ / ١١٤، الرقم: ٦٥٠، وابن خزيمة فی الصحيح، ٢ / ١٥٥، الرقم: ١٥٥، وعبد الرزاق فی المصنف، ٤ / ٢٥٨، الرقم: ٧٧٢٣، والبيهقی فی السنن الكبری، ١٢، ٤٩٣، الرقم: ٤٣٧٨، وفی شعب الإيمان، ٣ / ١٧٧، الرقم: ٣٢٦٩۔

ذَكَرَ شَهْرَ رَمضَانَ فَفَضَّلَهُ عَلَى الشُّهُوْرِ، وَقَالَ: مَنْ قَامَ رَمَضَانَ إِيْمَانًا وَاحْتِسَابًا خَرَجَ مِنْ ذُنُوْبِهِ كَيَوْمِ وَلَدَتْهُ أُمُّهُ. رَوَاهُ النَّسَائِيُّ.

وفي رواية له: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّ اللهَ تَبَارَكَ وَتَعَالَى فَرَضَ صِيَامَ رَمَضَانَ عَلَيْكُمْ، وَسَنَنْتُ لَكُمْ قِيَامَهُ، فَمَنْ صَامَهُ وَقَامَهُ إِيْمَاناً وَاحْتِسَابًا خَرَجَ مِنْ ذُنُوْبِهِ كَيَوْمِ وَلَدَتْهُ أُمُّهُ. رَوَاهُ النَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَه.

''हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ ﷺ रसूलुल्लाह ﷺ से रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने रमज़ानुल मुबारक का ज़िक्र फरमाया तो सब महीनों पर उसे फ़ज़ीलत दी। इसके बाद आप ﷺ ने फरमायाः जो शख़्स ईमान और हुसूले सवाब की निय्यत के साथ रमज़ान की रातों में क़ियाम करता है तो वो गुनाहों से यूँ पाक साफ़ हो जाता है जैसे वो उस दिन था, जब उसे उसकी माँ ने जन्म दिया था।''

''और एक रिवायत में है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : बेशक अल्लाह तआला ने रमज़ान के रोज़े फ़र्ज़ किए हैं और मैंने तुम्हारे लिए इस के क़ियाम (नमाज़े तरावीह) को सुन्नत क़रार दिया है लिहाज़ा जो शख़्स ईमान और हुसूले सवाब की निय्यत के साथ माहे रमज़ान के दिनों में रोज़े रखता है और रातों में क़ियाम करता है वो गुनाहों से यूँ पाक साफ़ हो जाता है जैसे वो उस दिन था जब उसे उसकी माँ ने जन्म दिया था।''

٣٠٢ / ٦۔ عَنْ يَزِيْدَ بْنِ رُوْمَانَ أَنَّهُ قَالَ: كَانَ النَّاسُ يَقُوْمُوْنَ فِي زَمَانِ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رضي الله عنه فِي رَمَضَانَ، بِثَلَاثٍ وَعِشْرِيْنَ رَكْعَةً.

الحديث رقم ٥: أخرجه النسائى فى السنن، كتاب: الصيام، باب: ذكر اختلاف يحيى بن أبى كثير والنضر بن شيبان فيه، ٤ / ١٥٨، الرقم: ٢٢٠٨-٢٢١٠، وابن ماجه فى السنن، كتاب: إقامة الصلاة والسنة فيها، باب: ماجاء فى قيام شهر رمضان، ١ / ٤٢١، الرقم: ١٣٢٨۔

الحديث رقم ٦: أخرجه مالك في الموطأ، كتاب: الصلاة في رمضان، باب: الترغيب في الصلاة في رمضان، ١ / ١١٥، الرقم: ٢٥٢، والبيهقي في السنن الكبرى، ٢ / ٤٩٦، الرقم: ٤٣٩٤، وفي شعب الإيمان، ٣ / ١٧٧، الرقم: ٣٢٧٠، والفريابي ←

رَوَاهُ مَالِكٌ وَالْفَرْيَابِيُّ وَالْبَيْهَقِيُّ. وَقَالَ الْفَرْيَابِيُّ: إِسْنَادُهُ وَرِجَالُهُ مُوَثَّقُوْنَ وَقَالَ ابْنُ قُدَامَةَ فِي الْمُغْنِيّ: وَهَذَا كَالإِجْمَاعِ.

''हज़रत यज़ीद बिन रूमान ने बयान किया कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब ﷺ के दौर में लोग (ब–शुमूले वित्र) 23 रकआत पढ़ते थे।''

٣٠٣ / ٧ـ عَنْ مَالِكٍ، عَنْ دَاوُدَ بْنِ الْحُصَيْنِ، أَنَّهُ سَمِعَ الْأَعْرَجَ يَقُوْلُ: مَا أَدْرَكْتُ النَّاسَ إِلَّا وَهُمْ يَلْعَنُوْنَ الْكَفَرَةَ فِي رَمَضَانَ، قَالَ: وَكَانَ الْقَارِىءُ يَقْرَأُ سُوْرَةَ الْبَقَرَةِ فِي ثَمَانِ رَكَعَاتٍ، فَإِذَا قَامَ بِهَا فِي اثْنَتَي عَشْرَةَ رَكْعَةً، رَأَى النَّاسُ أَنَّهُ قَدْ خَفَّفَ.

رَوَاهُ مَالِكٌ وَالْبَيْهَقِيُّ وَالْفَرْيَابِيُّ وَقَالَ: إِسْنَادُهُ قَوِيٌّ.

وقال الإمام ولي الله الدهلوي: هو مذهب الشافعية والحنفية، وعشرون ركعة تراويح وثلاث وتر عند الفريقين هكذا قال المحلّي عن البيهقي.

''हज़रत मालिक ने दाऊद बिन हुसैन से रिवायत किया, उन्होंने हज़रत अ'रज को

في كتاب الصيام، ١ / ١٣٢، الرقم: ١٧٩، والعسقلاني في فتح الباري، ٤ / ٢٥٣، في الدراية في تخريج أحاديث الهداية، ١ / ٢٠٣، الرقم: ٢٥٧، وابن عبد البر في التمهيد، ٨ / ١١٥، والزرقاني في شرحه على الموطأ، ١ / ٣٤٢، وابن قدامة في المغني، ١ / ٤٥٦، والشوكاني في نيل الأوطار، ٣ / ٦٣، والزيلعي في نصب الراية، ٢ / ١٥٤، وابن رشد في بداية المجتهد، ١ / ١٥٢.

الحديث رقم ٧: أخرجه مالك في الموطأ، كتاب: الصلاة في رمضان، باب: ماجاء في قيام رمضان، ١ / ١١٥، الرقم: ٧٥٣، والبيهقي في السنن الكبرى، ٢ / ٤٩٧، الرقم: ٤٤٠١، وفي شعب الإيمان، ٣ / ١٧٧، الرقم: ٣٢٧١، والفريابي في كتاب الصيام، ١ / ١٣٣، الرقم: ١٨١، وابن عبد البر في التمهيد، ١٧ / ٤٠٥، والذهبي في سير أعلام النبلاء، ٥ / ٧٠، الرقم: ٢٥، والسيوطي في تنوير الحوالك شرح موطأ مالك، ١ / ١٠٥، والزرقاني في شرحه على الموطأ، ١ / ٣٤٢، وولي الله الدهلوي في المسوى من أحاديث الموطأ، ١ / ١٧٥.

फरमाते हुए सुना कि मैंने लोगों को इस हाल में पाया कि वो रमज़ान में काफ़िरों पर लानत किया करते थे उन्होंने फरमाया (नमाज़े तरावीह में) क़ारी सूरह बक़रह को आठ रकअतों में पढ़ता और जब बाक़ी बारह रकअतें पढ़ी जातीं तो लोग देखते की इमाम इन्हें हल्की (मुख़्तसर) कर देता।''

''हज़रत शाह वली अल्लाह दहलवी ने (इस हदीस की शरह में) बयान किया कि बीस रकअत तरावीह और तीन वित्र शवाफ़े और अहनाफ़ का मज़हब है। इसी तरह महल्ली ने इमाम बैहक़ी से बयान किया।''

٣٠٤ / ٨۔ عَنْ عُرْوَةَ ﷺ أَنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ ﷺ جَمَعَ النَّاسَ عَلَى قِيَامِ شَهْرِ رَمَضَانَ الرِّجَالَ عَلَى أُبَيِّ بْنِ كَعْبٍ وَالنِّسَاءَ عَلَى سُلَيْمَانَ بْنِ أَبِي حَثْمَةَ. رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ.

''हज़रत उरवह ﷺ से मरवी है कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब ﷺ ने लोगों को माहे रमज़ान में तरावीह के लिए इकट्ठा किया। मर्दों को हज़रत उबै बिन का'ब ﷺ और औरतों को सुलैमान बिन हस्मा ﷺ तरावीह पढ़ाते।''

٣٠٥ / ٩۔ وقال الإمام أبوعيسى الترمذي في سننه: وَأَكْثَرُ أَهْلِ الْعِلْمِ عَلَى مَا رُوِيَ عَنْ عُمَرَ، وَعَلِيٍّ رضي الله عنهما وَغَيْرِهِمَا مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ ﷺ عِشْرِيْنَ رَكْعَةً، وَهُوَ قَوْلُ الثَّوْرِيِّ، وَابْنِ الْمُبَارَكِ، وَالشَّافِعِيِّ. وَقَالَ الشَّافِعِيُّ: وَهَكَذَا أَدْرَكْتُ بِبَلَدِنَا بِمَكَّةَ يُصَلُّوْنَ

الحديث رقم ٨: أخرجه البيهقي في السنن الكبرى، ٢/ ٤٩٣، الرقم: ٤٣٨٠، والعسقلاني في فتح الباري، ٤/ ٢٥٢-٢٥٣، الرقم: ١٩٠٥، والزرقاني في شرحه على الموطأ، ١/ ٣٣٨، ٣٤١، والسيوطي في تنوير الحوالك، ١/ ١٠٥، والعسقلاني في الدراية في تخريج أحاديث الهداية، ١/ ٢٠٣، وفي تلخيص الحبير، ٢/ ٢٤، الرقم: ٥٤٩، وابن قدامة في المغني، ١/ ٤٥٥۔

الحديث رقم ٩: أخرجه الترمذي في السنن، كتاب: الصوم عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء في قيام شهر رمضان، ٣/ ١٦٩، الرقم: ٨٠٦۔

عِشْرِيْنَ رَكْعَةً.

''हज़रत अबू ईसा तिर्मिज़ी ﷺ ने अपनी सुनन में फरमाया: अक्सर अहले इल्म का मज़हब बीस रकअत तरावीह है जोकि हज़रत अली, हज़रत उमर ﷺ और हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के दीगर सहाबा से मरवी है यही (کبار تابعین) सुफ़्यान सौरी, अब्दुल्लाह बिन मुबारक और इमाम शाफ़ई ﷺ का क़ौल है और इमाम शाफ़ई ने फरमाया : मैंने अपने शहर मक्का में (अहले इल्म को) बीस रकआत तरावीह पढ़ते पाया।''

٣٠٦ / ١٠۔ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رضي الله عنهما قَالَ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يُصَلِّي فِي رَمَضَانَ عِشْرِيْنَ رَكْعَةً سِوَى الْوِتْرِ.

رَوَاهُ ابْنُ أَبِي شَيْبَةَ وَابْنُ حُمَيْدٍ وَالْبَيْهَقِيُّ وَالطَّبَرَانِيُّ وَاللَّفْظُ لَهُ.

''हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास رضي الله عنهما से मरवी है फरमाया कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ रमज़ानुल मुबारक में वित्र के अलावा बीस रकअत तरावीह पढ़ा करते थे।''

٣٠٧ / ١١۔ عَنِ السَّائِبِ بْنِ يَزِيْدَ قَالَ: كُنَّا نَنْصَرِفُ مِنَ الْقِيَامِ عَلَى

الحديث رقم ١٠: أخرجه ابن أبي شيبة في المصنف، ٢/١٦٤، الرقم: ٧٦٩٢، والطبراني في المعجم الأوسط، ١/٢٤٣، الرقم: ٧٩٨، ٥/٣٢٤، الرقم: ٥٤٤٠، وفي المعجم الكبير، ١١/٣٩٣، الرقم: ١٢١٠٢، والبيهقي في السنن الكبرى، ٢/٤٩٦، الرقم: ٤٣٩١، وعبد بن حميد في المسند، ١/٢١٨، الرقم: ٦٥٣، والخطيب البغدادي في تاريخ بغداد، ٦/١١٣، والهيثمي في مجمع الزوائد، ٣/١٧٢، وابن عبد البر في التمهيد، ٨/١١٥، والعسقلاني في فتح الباري، ٤/٢٥٤، الرقم: ١٩٠٨، وفي الدراية، ١/٢٠٣، الرقم: ٢٥٧، والسيوطي في تنوير الحوالك، ١/١٠٨، الرقم: ٢٦٣، والذهبي في ميزان الاعتدال، ١/١٧٠، والصنعاني في سبل السلام، ٢/١٠، والمزي في تهذيب الكمال، ٢/١٤٩، والخطيب البغدادى في موضع أوهام الجمع والتفريق، ١/٣٨٧، والزيلعي في نصب الراية، ٢/١٥٣، والزرقاني في شرحه على الموطأ، ١/٣٤٢، ٣٥١، والعظيم آبادي في عون المعبود، ٤/١٥٣، والمباركفوي في تحفة الأحوذي، ٣/٤٤٥.

عَهْدِ عُمَرَ ﷺ وَقَدْ دَنَا فُرُوْعُ الْفَجْرِ وَكَانَ الْقِيَامُ عَلَى عَهْدِ عُمَرَ ﷺ ثَـلَاثَةً وَعِشْرِيْنَ رَكْعَةً. رَوَاهُ عَبْدُ الرَّزَّاقِ.

''हज़रत साइब बिन यज़ीद ने बयान किया कि हम हज़रत उमर ﷺ के ज़माने में फ़ज्र के क़रीब तरावीह से फ़ारिग़ होते थे और हम (ब–शुमूले वित्र) तेईस रकआत पढ़ते थे।''

٣٠٨ / ١٢۔ عَنِ السَّائِبِ بْنِ يَزِيْدَ قَالَ: كَانُوْا يَقُوْمُوْنَ عَلَى عَهْدِ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ ﷺ فِي شَهْرِ رَمَضَانَ بِعِشْرِيْنَ رَكْعَةً، قَالَ: وَكَانُوْا يَقْرَأُوْنَ بِالْمِئَيْنِ وَكَانُوا يَتَوَكَّؤُنَ عَلَى عَصِيِّهِمْ فِي عَهْدِ عُثْمَانَ بْنِ عَفَّانَ ﷺ مِنْ شِدَّةِ الْقِيَامِ. رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ وَالْفَرْيَابِيُّ وَابْنُ الْجُعْدِ.

إِسْنَادُهُ وَرِجَالُهُ ثِقَاتٌ كَمَا قَالَ الْفَرْيَابِيُّ.

''हज़रत साइब बिन यज़ीद से मरवी है उन्होंने बयान किया कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब ﷺ के अहद में सहाबा किराम माहे रमज़ान में बीस रकआत तरावीह पढ़ते थे और उन में सौ आयात वाली सूरतें पढ़ते थे और हज़रत उस्मान ﷺ के अहद में शिद्दते क़ियाम की वजह से वो अपनी लाठियों से टेक लगाते थे।''

٣٠٩۔ / ١٣۔ عَنْ أَبِي الْخَصِيْبِ، قَالَ: كَانَ يَؤُمُّنَا سُوَيْدُ بْنُ غَفْلَةَ فِي رَمَضَانَ فَيُصَلِّي خَمْسَ تَرْوِيْحَاتٍ عِشْرِيْنَ رَكْعَةً.

الحديث رقم ١١: أخرجه عبد الرزاق في المصنف، ٤ / ٢٦١، الرقم: ٧٧٣٣، وابن حزم في الاحكام، ٢ / ٢٣٠۔

الحديث رقم ١٢: أخرجه البيهقي في السنن الكبرى، ٢ / ٤٩٦، الرقم: ٤٣٩٣، وابن الحسن فريابي في كتاب الصيام، ١ / ١٣١، الرقم: ١٧٦، وقال: إسناده ورجاله ثقات، وابن جعد في المسند، ١ / ٤١٣، الرقم: ٢٨٢٥، والمباركفوري في تحفة الأحوذي، ٣ / ٤٤٧۔

الحديث رقم ١٣: أخرجه البيهقي في السنن الكبرى، ٢ / ٤٤٦، الرقم: ٤٣٩٥، والبخاري في الكنى، ١ / ٢٨، الرقم: ٢٣٤۔

رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ إِسْنَادُهُ حَسَنٌ وَالْبُخَارِيُّ فِي الْكُنَى.

''हज़रत ख़सीब ने बयान किया कि हमें हज़रत सुवैद बिन ग़फ़ला माहे रमज़ान में नमाज़े तरावीह पाँच तरवीहों (यानी बीस रकअ़त में) पढ़ाते थे।''

٣١٠/ ١٤۔ عَنْ شُتَيْرِ بْنِ شَكَلٍ وَكَانَ مِنْ اَصحاب عَلِيٍّ ﷺ أَنَّهُ كَانَ يَؤُمُّهُمْ فِي شَهْرِ رَمَضَانَ بِعِشْرِيْنَ رَكْعَةً وَ يُوْتِرُ بِثَلَاثٍ.

رَوَاهُ ابْنُ أَبِي شَيْبَةَ وَالْبَيْهَقِيُّ وَاللَّفْظُ لَهُ، وَقَالَ: وَفِي ذَلِكَ قُوَّةٌ.

''हज़रत शुतैर बिन शकल से रिवायत है वो हज़रत अली ﷺ के अस्हाब में से थे कि हज़रत अ़ली ﷺ रमज़ान में बीस रकअ़त तरावीह और तीन रकअ़त वित्र पढ़ाते थे।''

٣١١/ ١٥۔ عَنْ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ السُّلَمِيِّ، عَنْ عَلِيٍّ ﷺ قَالَ: دَعَا الْقُرَّاءَ فِي رَمَضَانَ فَأَمَرَ مِنْهُمْ رَجُلًا يُصَلِّي بِالنَّاسِ عِشْرِيْنَ رَكْعَةً، قَالَ: وَ كَانَ عَلِيٌّ ﷺ يُوْتِرُ بِهِمْ. وَ رَوَى ذَلِكَ مِنْ وَجْهٍ آخَرَ عَنْ عَلِيٍّ ﷺ.

رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ.

''हज़रत अ़ब्दुर्रहमान सलमी से मरवी है कि हज़रत अ़ली ﷺ ने रमज़ानुल मुबारक में क़ारियों को बुलाया और उन में से एक शख़्स को बीस रकअ़त तरावीह पढ़ाने का हुक्म दिया और ख़ुद हज़रत अ़ली ﷺ उन्हें वित्र पढ़ाते थे।'' यह हदीस हज़रत अ़ली से दीगर सनद से भी मरवी है।

الحديث رقم ١٤: أخرجه ابن أبي شيبة في المصنف، ٢/ ١٦٣، الرقم: ٧٦٨٠، والبيهقي في السنن الكبرى، ٢/ ٤٩٦، الرقم: ٤٣٩٥.

الحديث رقم ١٥: أخرجه البيهقي في السنن الكبرى، ٢/ ٤٩٦، الرقم: ٤٣٩٦، والمباركفوري في تحفة الأحوذي، ٣/ ٤٤٤.

٣١٢ـ/١٦ـ عَنْ أَبِي الْحَسَنَاءِ أَنَّ عَلِيَّ بْنَ أَبِي طَالِبٍ ﷺ أَمَرَ رَجُلًا أَنْ يُصَلِّيَ بِالنَّاسِ خَمْسَ تَرْوِيْحَاتٍ عِشْرِيْنَ رَكْعَةً.

رَوَاهُ ابْنُ أَبِي شَيْبَةَ وَالْبَيْهَقِيُّ وَاللَّفْظُ لَهُ.

''हज़रत अबुल हसना बयान करते हैं कि हज़रत अली ﷺ ने एक शख़्स को रमज़ान में पाँच तरवीहों में बीस रकअत तरावीह पढ़ाने का हुक्म दिया।''

٣١٣/١٧ـ وفي رواية أَنَّ عَلِيًّا ﷺ كَانَ يُؤُمُّهُمْ بِعِشْرِيْنَ رَكْعَةً وَ يُوْتِرُ بِثَلَاثٍ. رَوَاهُ ابْنُ الإِسْمَاعِيْلِ الصَّنْعَانِيُّ وَقَالَ: فِيْهِ قُوَّةٌ.

''एक रिवायत में है कि हज़रत अली ﷺ उन्हें बीस रकअत तरावीह और तीन वित्र पढ़ाया करते थे।''

٣١٤/١٨ـ عَنْ عَلِيٍّ ﷺ أَنَّهُ أَمَرَ رَجُلًا يُصَلِّي بِهِمْ فِي رَمَضَانَ عِشْرِيْنَ رَكْعَةً وَهَذَا أَيْضًا سِوَى الْوِتْرِ. رَوَاهُ ابْنُ عَبْدِ الْبَرِّ.

''हज़रत अली ﷺ से मरवी है कि उन्होंने एक शख़्स को हुक्म दिया कि वो रमज़ानुल मुबारक में मुसलमानों को बीस रकअत तरावीह पढ़ाए और यह रकअत वित्र के अलावा थीं।''

٣١٥/١٩ـ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيْدٍ أَنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ ﷺ أَمَرَ رَجُلًا

الحديث رقم ١٦: أخرجه ابن أبي شيبة في المصنف، ٢/١٦٣، الرقم: ٧٦٨١، والبيهقي في السنن الكبرى، ٢/٤٩٧، الرقم: ٤٣٩٧، وابن عبد البر في التمهيد، ٨/١١٥، والمباركفوري في تحفة الأحوذي، ٣/٤٤٥، والصنعاني في سبل السلام، ٢/١٠، وابن قدامة في المغني، ١/٤٥٦، وقال: هذا كالإجماع.

الحديث رقم ١٧: أخرجه الصنعاني في سبل السلام، ٢/١٠، وابن قدامة في المغني، ١/٤٥٦، وقال: هذا كالإجماع.

الحديث رقم ١٨: أخرجه ابن عبد البر في التمهيد، ٨/١١٥.

الحديث رقم ١٩: أخرجه ابن أبي شيبة في المصنف، ٢/١٦٣، الرقم: ٧٦٨٢، والمباركفوري في تحفة الأحوذي، ٣/٤٤٥.

يُصَلِّي بِهِمْ عِشْرِيْنَ رَكْعَةً. رَوَاهُ ابْنُ أَبِي شَيْبَةَ. إِسْنَادُهُ مُرْسَلٌ قَوِيٌّ.

''हज़रत यहया बिन सईद बयान करते हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब ﷺ ने एक शख़्स को हुक्म दिया की वो उन्हें (मुसलमानों को) बीस रकअ़त तरावीह पढ़ाए।''

٣١٦/٢٠. عَنْ نَافِعِ بْنِ عُمَرَ رضي الله عنهما قَالَ: كَانَ ابْنُ أَبِي مُلَيْكَةَ يُصَلِّي بِنَا فِي رَمَضَانَ عِشْرِيْنَ رَكْعَةً. رَوَاهُ ابْنُ أَبِي شَيْبَةَ. إِسْنَادُهُ صَحِيْحٌ.

''हज़रत नाफ़ेअ बिन उमर رضي الله عنهما ने बयान किया हज़रत इब्ने अबी मुलैका हमें रमज़ानुल मुबारक में बीस रकअ़त तरावीह पढ़ाया करते थे।''

٣١٧/٢١. عَنْ عَبْدِ الْعَزِيْزِ بْنِ رَفِيْعٍ قَالَ: كَانَ أُبَيُّ بْنُ كَعْبٍ يُصَلِّي بِالنَّاسِ فِي رَمَضَانَ بِالْمَدِيْنَةِ عِشْرِيْنَ رَكْعَةً وَ يُوْتِرُ بِثَلَاثٍ.

رَوَاهُ ابْنُ أَبِي شَيْبَةَ. إِسْنَادُهُ مُرْسَلٌ قَوِيٌّ.

''हज़रत अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन रफ़ी ने बयान किया कि हज़रत अबी बिन का'ब ﷺ मदीना मुनव्वरा में लोगों को रमज़ानुल मुबारक में बीस रकअ़त तरावीह और तीन वित्र पढ़ाते थे।''

٣١٨/٢٢. عَنِ الْحَارِثِ أَنَّهُ كَانَ يَؤُمُّ النَّاسَ فِي رَمَضَانَ بِاللَّيْلِ بِعِشْرِيْنَ رَكْعَةً وَيُوْتِرُ بِثَلَاثٍ وَيَقْنُتُ قَبْلَ الرُّكُوْعِ. رَوَاهُ ابْنُ أَبِي شَيْبَةَ.

''हज़रत हारिस से मरवी है कि वो लोगों को रमज़ानुल मुबारक की रातों में (नमाज़े तरावीह) में बीस रकअ़तें और तीन वित्र पढ़ाया करते थे और रूकूअ से पहले दुआए क़ुनूत पढ़ते थे।''

٣١٩/٢٣. عَنْ أَبِي الْبُخْتَرِيِّ أَنَّهُ كَانَ يُصَلِّي خَمْسَ تَرْوِيْحَاتٍ فِي

الحديث رقم ٢٠: أخرجه ابن أبي شيبة في المصنف، ٢/١٦٣، الرقم: ٧٦٨٣.

الحديث رقم ٢١: أخرجه ابن أبي شيبة في المصنف، ٢/١٦٣، الرقم: ٧٦٨٤، والمباركفوري في تحفة الأحوذي، ٣/٤٤٥.

الحديث رقم ٢٢: أخرجه ابن أبي شيبة في المصنف، ٢/١٦٣، الرقم: ٧٦٨٥.

الحديث رقم ٢٣: أخرجه ابن أبي شيبة في المصنف، ٢/١٦٣، الرقم: ٧٦٨٦.

رَمَضَانَ وَيُوْتِرُ بِثَلَاثٍ. رَوَاهُ ابْنُ أَبِي شَيْبَةَ إِسْنَادُهُ صَحِيْحٌ.

''हज़रत अबुल बुख़्तरी से रिवायत है कि वो रमज़ानुल मुबारक में पाँच तरावीह (यानी बीस रकअत) और तीन वित्र पढ़ा करते थे।''

٣٢٠ / ٢٤. عَنْ عَطَاءٍ قَالَ: أَدْرَكْتُ النَّاسَ وَهُمْ يُصَلُّوْنَ ثَلَاثًا وَعِشْرِيْنَ رَكْعَةً بِالْوِتْرِ. رَوَاهُ ابْنُ أَبِي شَيْبَةَ. إِسْنَادُهُ حَسَنٌ.

''हज़रत अ़ता फरमाते हैं कि मैनें लोगों को देखा कि वो बशुमूले वित्र 23 रकअ़त तरावीह पढ़ते थे।''

٣٢١ / ٢٥. عَنْ سَعِيْدِ بْنِ عُبَيْدٍ أَنَّ عَلِيَّ بْنَ رَبِيْعَةَ كَانَ يُصَلِّي بِهِمْ فِي رَمَضَانَ خَمْسَ تَرْوِيْحَاتٍ وَ يُوْتِرُ بِثَلَاثٍ.

رَوَاهُ ابْنُ أَبِي شَيْبَةَ. إِسْنَادُهُ صَحِيْحٌ.

''हज़रत सईद बिन उबैद से मरवी है कि हज़रत अली बिन रबीआ़ उन्हें रमज़ानुल मुबारक में पाँच तरावीह (यानी बीस रकअ़त) नमाज़े तरावीह और तीन वित्र पढ़ाते थे।''

٣٢٢ / ٢٦. عَنِ الْحَسَنِ أَنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ ﷺ جَمَعَ النَّاسَ عَلَى أُبَيِّ بْنِ كَعْبٍ فِي قِيَامِ رَمَضَانَ فَكَانَ يُصَلِّي بِهِمْ عِشْرِيْنَ رَكْعَةً.

رَوَاهُ الذَّهَبِيُّ وَالْعَسْقَلَانِيُّ وَابْنُ قُدَامَةَ.

''हज़रत हसन (बसरी) ﷺ से मरवी है कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब ने लोगों को

الحديث رقم ٢٤: أخرجه ابن أبي شيبة في المصنف، ٢/١٦٣، الرقم: ٧٦٨٨.

الحديث رقم ٢٥: أخرجه ابن أبي شيبة في المصنف، ٢/١٦٣، الرقم: ٧٦٩٠.

الحديث رقم ٢٦: أخرجه الذهبي في سير أعلام النبلاء، ١/٤٠٠، والعسقلاني في تلخيص الحبير، ٢/٢١، الرقم: ٥٤٠، وابن قدامة في المغني، ١/٤٥٦، ومالك في المدونة الكبرى، ١/٢٢٢، والسيوطي في تنوير الحوالك، ١/١٠٤، والزرقاني في شرحه على الموطأ، ١/٣٣٨، وابن تيمية في مجموع فتاوى، ٢/٤٠١.

हज़रत उबै बिन का'ब ﷺ की इक़्तिदा में क़ियामे रमज़ान के लिए इकट्ठा किया तो वो उन्हें बीस रकअत तरावीह पढ़ाते थे।''

٣٢٣/٢٧۔ عَنِ الزَّعْفَرَانِيِّ عَنِ الشَّافِعِيِّ قَالَ: رَأَيْتُ النَّاسَ يَقُوْمُوْنَ بِالْمَدِيْنَةِ بِتِسْعٍ وَثَلَاثِيْنَ وَبِمَكَّةَ بِثَلَاثٍ وَعِشْرِيْنَ.

رَوَاهُ الْعَسْقَلَانِيُّ وَالشَّوْكَانِيُّ عَنْ مَالِكٍ.

''हज़रत ज़ाफ़रानी इमाम शाफ़ई ﷺ से रिवायत करते हैं कि उन्होंने फरमाया : मैंने लोगों को मदीना मुनव्वरा में उन्तालीस (39) और मक्का मुकर्रमा में तैईस (23) रकअत (बीस तरावीह और तीन वित्र) पढ़ते देखा।''

٣٢٤/٢٨۔ وقال ابن رشد القرطبي: فَاخْتَارَ مَالِكٌ فِي أَحَدِ قَوْلَيْهِ وَأَبُوحَنِيْفَةَ وَالشَّافِعِيُّ وَأَحْمَدُ وَدَاوُدُ الْقِيَامَ بِعِشْرِيْنَ رَكْعَةً سِوَى الْوِتْرِ ...... أَنَّ مَالِكًا رَوَى عَنْ يَزِيْدَ بْنِ رُوْمَانَ قَالَ: كَانَ النَّاسُ يَقُوْمُوْنَ فِي زَمَانِ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ ﷺ بِثَلَاثٍ وَعِشْرِيْنَ رَكْعَةً.

''हज़रत रुश्द क़रतबी ने फरमाया कि इमाम मालिक ﷺ ने अपने दो कौलों में से एक और इमाम अबू हनीफ़ा, इमाम शाफ़ई, इमाम अहमद और इमाम दाऊद ज़ाहरी ﷺ ने बीस तरावीह का क़ियाम पसन्द किया है और तीन वित्र इसके अलावा हैं ..... इसी तरह इमाम मालिक ﷺ ने यज़ीद बिन रूमान से रिवायत बयान की फरमाया कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब ﷺ के ज़माने में लोग तेईस रकअत (तरावीह बशुमूल तीन वित्र) का क़ियाम किया करते थे।''

٣٢٥/٢٩۔ وقال الشيخ ابن تيمية في ''الفتاوى'': ''ثَبَتَ أَنَّ

الحديث رقم ٢٧: أخرجه العسقلاني في فتح الباري، ٤/٢٥٣، والشوكاني في نيل الأوطار، ٣/٦٤۔

الحديث رقم ٢٨: أخرجه ابن رشد في بداية المجتهد، ١/١٥٢۔

الحديث رقم ٢٩: أخرجه ابن تيمية في مجموع فتاوى، ١/١٩١، وإسماعيل بن محمد الأنصاري في تصحيح حديث صلاة التراويح عشرين ركعة، ١/٣٥۔

أُبَيَّ بْنَ كَعْبٍ كَانَ يَقُوْمُ بِالنَّاسِ عِشْرِيْنَ رَكْعَةً فِي رَمَضَانَ وَ يُوتِرُ بِثَلاثٍ فَرَأَى كَثِيْرًا مِنَ الْعُلَمَاءِ أَنَّ ذَلِكَ هُوَ السُّنَّةُ لِأَنَّهُ قَامَ بَيْنَ الْمُهَاجِرِيْنَ وَالْأَنْصَارِ وَلَمْ يُنكِرْهُ مُنْكِرٌ.

''शैख़ इब्ने तैमिया ने 'अपने फ़तावा' (मजमूआ फ़तावा) में कहा कि साबित हुआ कि हज़रत उबै बिन का'ब ﷺ रमज़ानुल मुबारक में लोगों को बीस रकअत तरावीह और तीन वित्र पढ़ाते थे तो अक्सर अहले इल्म ने इसे सुन्नत माना है। इस लिए की वो मुहाजिरीन और अन्सार (तमाम) सहाबा किराम के दरमियान (उनकी मौजूदगी में) क़ियाम करते (बीस रकअत पढ़ाते) और उन सहाबा में से कभी भी किसी ने उन्हें नहीं रोका।''

٣٢٦ / ٣٠۔ وَفِي مَجْمُوْعَةِ الْفَتَاوَى النَّجْدِيَّةِ: أَنَّ الشَّيْخَ عَبْدَ اللهِ بْنَ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِالْوَهَّابِ ذَكَرَ فِي جَوَابِهِ عَنْ عَدَدِ التَّرَاوِيْحِ أَنَّ عُمَرَ ﷺ لَمَّا جَمَعَ النَّاسَ عَلَى أُبَيِّ بْنِ كَعْبٍ، كَانَتْ صَلَاتُهُمْ عِشْرِيْنَ رَكْعَةً.

मजमूआ फ़तावा नजदिया में है कि शैख़ अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन अ़ब्दुल वहाब ने तरावीह की कुल रकअ़तों से मुतअ़ल्लिक़ सवाल के जवाब में बयान किया कि हज़रत उमर ﷺ ने लोगों को हज़रत उबै बिन का'ब ﷺ की इक़्तिदा में नमाज़े तरावीह के लिए जमा किया तो वो उन्हें बीस रकअ़त पढ़ाते थे।''

الحديث رقم ٣٠: أخرجه إسماعيل بن محمد الأنصاري في تصحيح حديث صلاة التراويح عشرين ركعة، ١ / ٣٥۔

बाब 6 :

اَلْبَابُ السَّادِسُ :

اَلدُّعَاءُ بَعْدَ الصَّلَوَاتِ الْمَكْتُوْبَةِ

फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद दुआ करना

1. فَصْلٌ فِي فَضْلِ الدُّعَاءِ

﴿फ़ज़ीलते दुआ का बयान﴾

2. فَصْلٌ فِي الدُّعَاءِ بَعْدَ الصَّلَوَاتِ الْمَكْتُوبَةِ

﴿फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद दुआ करने का बयान﴾

3. فَصْلٌ فِي رَفْعِ الْيَدَيْنِ فِي الدُّعَاءِ

﴿दुआ में हाथ उठाने का बयान﴾

فَصْلٌ فِي فَضْلِ الدُّعَاءِ

﴿फ़ज़ीलते दुआ का बयान﴾

١/٣٢٧۔ عَنِ النُّعْمَانِ بْنِ بَشِيْرٍ رضي الله عنهما قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُوْلُ: الدُّعَاءُ هُوَ الْعِبَادَةُ ثُمَّ قَرَأَ: ﴿وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُوْنِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ إِنَّ الَّذِيْنَ يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِي سَيَدْخُلُوْنَ جَهَنَّمَ دَاخِرِيْنَ﴾ [غافر، ٤٠: ٦٠]. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَصَحَّحَهُ وَأَبُوْدَاوُدَ.

وَقَالَ الْحَاكِمُ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحُ الإِسْنَادِ.

''हज़रत नौमान बिन बशीर رضي الله عنهما से रिवायत है कि हुज़ूर नबी-ए-अकरम ﷺ ने फरमायाः दुआ ऐन इबादत है फिर आप ﷺ ने (बतौरे दलील) यह आयत तिलावत फरमाईः 'और तुम्हारे रब ने फरमाया है तुम लोग मुझसे दुआ किया करो मैं ज़रूर क़ुबूल करूँगा, बेशक जो लोग मेरी बन्दगी से सरकशी करते हैं वो अनक़रीब दोज़ख़ में ज़लील होकर दाख़िल होंगे।''

٢/٣٢٨۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضي الله عنه قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَيْسَ

الحديث رقم ١: أخرجه الترمذى فى السنن، كتاب: التفسير عن رسول الله ﷺ، باب: ومن سورة المؤمن، ٥/٣٧٤، الرقم: ٣٢٤٧، وفى باب: ومن سورة البقرة، ٥/٢١١، الرقم: ٢٩٦٩، وفى كتاب: الدعوات عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء فى فضل الدعاء، ٥/٤٥٦، الرقم: ٣٣٧٢، وأبو داود فى السنن، كتاب: الصلاة، باب: الدعاء، ٢/٧٦، الرقم: ١٤٧٩، وابن ماجه فى السنن، كتاب: الدعاء، باب: فضل الدعاء، ٢/١٢٥٨، الرقم: ٣٨٢٨، والنسائى فى السنن الكبرى، سورة غافر، ٦/٤٥٠، الرقم: ١١٤٦٤، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٤/٢٦٧، ٢٧١، ٢٧٦، وابن حبان فى الصحيح، ٣/١٧٢، الرقم: ٨٩٠، والحاكم فى المستدرك، ١/٦٦٧، الرقم: ١٨٠٢، وأبو يعلى فى المعجم، ١/٢٦٢، الرقم: ٣٢٨، والطيالسى فى المسند، ١/١٠٨، الرقم: ٨٠١۔

الحديث رقم ٢: أخرجه الترمذى فى السنن، كتاب: الدعوات عن رسول الله ﷺ، ←

شَيءٌ أَكْرَمَ عَلَى اللهِ تَعَالَى مِنَ الدُّعَاءِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَحَسَّنَهُ وَابْنُ مَاجَه.
وَقَالَ الْحَاكِمُ: هَذَا حَدِيثٌ صَحِيحُ الإِسْنَادِ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया: अल्लाह तआला की बारगाह में दुआ से ज़्यादा कोई चीज़ मोहतरम व मुकर्रम नहीं है।''

٣/٣٢٩. عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ سَرَّهُ أَنْ يَسْتَجِيْبَ اللهُ لَهُ عِنْدَ الشَّدَائِدِ وَالْكُرَبِ فَلْيُكْثِرِ الدُّعَاءَ فِي الرَّخَاءِ.
رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُوْدَاوُدَ وَابْنُ مَاجَه.
وَقَالَ الْحَاكِمُ : صَحِيْحُ الإِسْنَادِ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : जिसे पसन्द हो कि अल्लाह तआला मुश्किलों और तकलीफ़ों के वक़्त उस की दुआ क़ुबूल करे, वो ख़ुशहाली के औक़ात में ज़्यादा से ज़्यादा दुआ किया करे।''

.... باب: ماجاء فی فضل الدعاء، ٥/٤٥٥، الرقم: ٣٣٧٠، وابن ماجه فی السنن، كتاب: الدعاء، باب: فضل الدعاء ٢/١٢٥٨، الرقم: ٣٨٢٩، وابن حبان فی الصحيح، ٣/١٥١، الرقم: ٨٧٠، والحاكم فی المستدرك، ١/٦٦٦، الرقم: ١٨٠١، وأحمد بن حنبل فی المسند، ٢/٣٦٢، ٢٥٢٣، والبيهقی فی شعب الإيمان، ٢/٣٨، الرقم: ١١٠٦، والبخاری فی الأدب المفرد، ١/٢٤٩، الحدث رقم: ٧١٢.

الحديث رقم ٣: أخرجه الترمذی فی السنن، كتاب: الدعوات عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء أن دعوة المسلم مستجاب، ٥/٤٦٢، الرقم: ٣٣٨٢، وأبو داود فی السنن، كتاب: الصلاة، باب: الدعاء، ٢/٧٦، الرقم: ١٤٧٩، وابن ماجه فی السنن، كتاب: الدعاء، باب: فضل الدعاء، ٢/١٢٥٨، الرقم: ٣٨٢٨، والنسائی فی السنن الكبرى، باب: سورة غافر، ٦/٤٥٠، الرقم: ١١٤٦٤، وابن حبان فی الصحيح، ٣/١٧٢، الرقم: ٨٩٠، والحاكم فی المستدرك، ١/٦٦٧، الرقم: ١٨٠٢، وأحمد بن حنبل فی المسند، ٤/٢٦٧، ٢٧١، ٢٧٦، وأبو يعلى فی المعجم، ١/٢٦٢، الرقم: ٣٢٨، والطيالسی فی المسند، ١/١٠٨، الرقم: ٨٠١.

٣٣٠/ ٤۔ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: الدُّعَاءُ مُخُّ الْعِبَادَةِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ.

''हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : दुआ इबादत का मग़ज़ (यानी खुलासा और जौहर) है।''

٣٣١/ ٥۔ عَنْ سَلْمَانَ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَا يَرُدُّ الْقَضَاءَ إِلَّا الدُّعَاءُ وَلَا يَزِيْدُ فِي الْعُمْرِ إِلَّا الْبِرُّ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَحْمَدُ.

وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ.

''हज़रत सुलैमान ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : दुआ के अलावा कोई चीज़ तक़दीर को रद्द नहीं कर सकती और नेकी के अलावा कोई चीज़ उम्र में इज़ाफ़ा नहीं कर सकती।''

٣٣٢/ ٦۔ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: الدُّعَاءُ لَا يُرَدُّ بَيْنَ الْأَذَانِ وَالإِقَامَةِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ.

الحديث رقم ٤: أخرجه الترمذی فی السنن، کتاب: الدعوات عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء فی فضل الدعاء، ٥/٤٥٦، الرقم: ٣٣٧١، والديلمی فی مسند الفردوس، ٢/٢٢٤، الرقم: ٣٠٨٧، والحکيم الترمذی فی نوادر الأصول، ٢/١١٣، وابن رجب فی جامع العلوم والحکم، ١/١٩١، والمنذری فی الترغيب والترهيب، ٢/٣١٧، الرقم: ٢٥٣٤.

الحديث رقم ٥: أخرجه الترمذی فی السنن، کتاب: القدر عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء لا يرد القدر إلا الدعاء، ٤/٤٤٨، الرقم: ٢١٣٩، وأحمد بن حنبل فی المسند، ٥/٢٧٧، ٢٨٠، ٢٨٢، الرقم: ٢٢٤٤٠، ٢٢٤٦٦، ٢٢٤٩١، والحاکم فی المستدرک، ١/٦٧٠، الرقم: ١٨١٤، وابن أبی شيبة فی المصنف، ٦/١٠٩، الرقم: ٢٩٨٦٧، والطبرانی فی المعجم الکبير، ٢/١٠٠، الرقم: ١٤٤٢، أخرجه أحمد والطبرانی عن ثوبان ﷺ والبزار فی المسند، ٦/٥٠١ الرقم: ٢٥٤٠.

الحديث رقم ٦: أخرجه الترمذی فی السنن، کتاب: الصلاة عن رسول الله ﷺ، ⟵

وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: حَدِيْثُ أَنَسٍ حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः अज़ान और इक़ामत के दरमियान माँगी जाने वाली दुआ रद्द नहीं होती।''

٧/٣٣٣. عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ ﷺ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: قَالَ اللهُ تَبَارَکَ وَتَعَالَى: يَا ابْنَ آدَمَ إِنَّکَ مَا دَعَوْتَنِي وَرَجَوْتَنِي غَفَرْتُ لَکَ عَلَى مَا کَانَ فِيْکَ وَلَا أُبَالِي. يَا ابْنَ آدَمَ لَوْ بَلَغَتْ ذُنُوْبُکَ عَنَانَ السَّمَاءِ ثُمَّ اسْتَغْفَرْتَنِي غَفَرْتُ لَکَ وَلَا أُبَالِي. يَا ابْنَ آدَمَ إِنَّکَ لَوْ أَتَيْتَنِي بِقُرَابِ الْأَرْضِ خَطَايَا ثُمَّ لَقِيْتَنِي لَا تُشْرِکُ بِي شَيْئًا لَأَتَيْتُکَ بِقُرَابِهَا مَغْفِرَةً.

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالدَّارِمِيُّ وَأَحْمَدُ وَالطَّبَرَانِيُّ فِي الثَّلَاثَةِ.

.... باب: ماجاء فی أَنَّ الدُّعَاءَ لَا يُرَدُّ بينَ الْأَذَانِ وَالإقامَةِ، ١/٤١٥، الرقم: ٢١٢، وفی کتاب: الدعوات عن رسول الله ﷺ، باب: فی العَفْوِ وَالْعافِيَةِ، ٥/٥٧٦، الرقم: ٣٥٩٤-٣٥٩٥، والنسائی فی السنن الکبری، ٦/٢٢، الرقم: ٩٨٩٥-٩٨٩٧، وأحمد بن حنبل فی المسند، ٣/١١٩، الرقم: ١٢٢٢١، ١٢٦٠٦، ١٣٦٩٣، وابن أبي شيبة فی المصنف، ٦/٣١، الرقم: ٢٩٢٤٧، وأبويعلی فی المسند، ٦/٣٦٣، الرقم: ٣٦٧٩، والمقدسی فی الأحاديث المختارة، ٤/٣٩٢، الرقم: ١٥٦٢، والمنذری فی الترغيب والترهيب، ٤/١٣٨، الرقم: ٥١٣٩، والهيثمی فی مجمع الزوائد، ١/٣٣٤، وابن کثير فی تفسير القرآن العظيم، ٤/١٠٢.

الحديث رقم ٧: أخرجه الترمذی فی السنن، کتاب: الدعوات عن رسول الله ﷺ، باب: فی فضل التوبة والاستغفار وَ مَا ذُکِرَ مِن رحمة اللّٰهِ لِعِبَادِه، ٥/٥٤٨، الرقم: ٣٥٤٠، والدارمی فی السنن، ٢/٤١٤، الرقم: ٢٧٨٨، وأحمد بن حنبل فی المسند، ٥/١٦٧، الرقم: ٢١٥١٠- ٢١٥٤٤، والطبرانی عن ابن عباس رضی الله عنهما فی المعجم الکبير، ١٢/١٩، الرقم: ١٢٣٤٦، وفی المعجم الأوسط، ٥/٣٣٧، الرقم: ٥٤٨٣، وفی المعجم الصغير، ٢/٨٢، الرقم: ٨٢٠، والبيهقی عن أبی ذر ﷺ فی شعب الإيمان، ٢/١٧، الرقم: ١٠٤٢، والهيثمی فی مجمع الزوائد، ١٠/٢١٦.

وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ.

''हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ को फरमाते हुए सुना : अल्लाह तआला ने फरमाया : ऐ इब्ने आदम ! जब तक तू मुझ से दुआ करता रहेगा और उम्मीद रखेगा जो कुछ भी तू करता रहे मैं तुझे बख़्शता रहूँगा और मुझे कोई परवाह नहीं । ऐ इब्ने आदम ! अगर तेरे गुनाह आसमान के बादलों तक पहुँच जाएं फिर भी तू बख़्शिश माँगे तो मैं बख़्श दूँगा । ऐ इब्ने आदम ! अगर तू ज़मीन भर के बराबर गुनाह भी ले कर मेरे पास आए फिर मुझे इस हालत में मिले कि तूने मेरे साथ किसी चीज़ को शरीक न ठहराया तो यक़ीनन मैं ज़मीन भर के बराबर तुझे बख़्शिश अता करूँगा ।''

٣٣٤/ ٨۔ عَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَا مِنْ عَبْدٍ مُسْلِمٍ يَدْعُوْ لِأَخِيْهِ بِظَهْرِ الْغَيْبِ، إِلَّا قَالَ الْمَلَکُ: وَلَکَ بِمِثْلٍ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ.

''हज़रत अबू दरदा ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : जब कोई मुसलमान अपने मुसलमान भाई के लिए उसकी अदम मौजूदगी में दुआ करता है तो (मुक़र्रर कर्दह) फ़रिश्ता कहता है तेरे लिये भी ऐसा ही हो (जो तूने अपने भाई के लिए दुआ की है) ।''

٣٣٥/ ٩۔ عَنْ أُمِّ الدَّرْدَاءِ قَالَتْ: إِنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يَقُوْلُ: دَعْوَةُ الْمَرْءِ الْمُسْلِمِ لِأَخِيْهِ، بِظَهْرِ الْغَيْبِ مُسْتَجَابَةٌ. عِنْدَ رَأْسِهِ مَلَکٌ

الحديث رقم ٨: أخرجه مسلم فی الصحيح، کتاب: الذکر والدعاء والتوبة والاستغفار، باب: فضل الدعاء للمسلمين بظهر الغيب، ٤/ ٢٠٩٤، الرقم: ٢٧٣٢، وأحمد بن حنبل فی المسند، ٦/ ٤٥٢، الرقم: ٢٧٥٩٨، وابن حبان فی الصحيح، ٣/ ٢٦٨، الرقم: ٩٨٩، وابن أبی شيبة فی المصنف، ٦/ ٢١، الرقم: ٢٩١٥٨۔ ٢٩١٦١۔

الحديث رقم ٩: أخرجه مسلم فی الصحيح، کتاب: الذکر والدعاء والتوبة والاستغفار، باب: فضل الدعاء للمسلمين بظهر الغيب، ٤/ ٢٠٩٤، الرقم: ٢٧٣٣، وأحمد بن حنبل فی المسند، ٦/ ٤٥٢، الرقم: ٢٧٥٩٩، والبيهقي فی السنن الکبری، ٣/ ٣٥٣، وابن غزوان فی کتاب الدعاء، ١/ ٢٣٤، الرقم: ٦٣۔

مُوَكَّلٌ. كُلَّمَا دَعَا لِأَخِيْهِ بِخَيْرٍ، قَالَ الْمَلَكُ الْمُوَكَّلُ بِهِ: آمِينَ. وَلَكَ بِمِثْلٍ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ.

''हज़रत उम्मे दरदा ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ फरमाया करते थेः मुसलमान की अपने भाई के लिए उसकी अदम मौजूदगी में की जाने वाली दुआ मक़बूल होती है। उसके सिर के पास एक फ़रिश्ता मुक़र्रर होता है जब भी वो अपने उस भाई के लिए नेक दुआ करता है, तो फ़रिश्ता कहता है आमीन और तुझे भी ऐसे ही नसीब हो (जैसे कि तूने अपने भाई के लिए दुआ की है)।''

٣٣٦ / ١٠. عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو رضي الله عنهما أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: إِنَّ أَسْرَعَ الدُّعَاءِ إِجَابَةً دَعْوَةُ غَائِبٍ لِغَائِبٍ.

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُوْدَاوُدَ.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رضي الله عنهما से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः दुआओं में सबसे जल्दी क़ुबूल होने वाली दुआ वो है जो एक ग़ाइब शख़्स (इख़्लास के साथ) दूसरे ग़ाइब शख़्स के लिए करे।''

٣٣٧ / ١١. عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: ثَلَاثُ دَعَوَاتٍ مُسْتَجَابَاتٌ لَا شَكَّ فِيْهِنَّ: دَعْوَةُ الْمَظْلُوْمِ وَدَعْوَةُ الْمُسَافِرِ

الحديث رقم ١٠: أخرجه الترمذى فى السنن، كتاب: البر والصلة عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء فى دعوة الأخ لأخيه بظهر الغيب، ٤/٣٥٢، الرقم: ١٩٨٠، وأبو داود فى السنن، كتاب: الصلاة، باب: الدعاء بظهر الغيب، ٢/٨٩، الرقم: ١٥٣٥، وابن أبى شيبة فى المصنف، ٦/٢١، الرقم: ٢٩١٥٩، والديلمى فى الفردوس بما ثور الخطاب، ١/٣٦٩، الرقم: ١٤٩٠، وعبد بن حميد فى المسند، ١/١٣٣١، الرقم: ٣٢٧، ٣٣١، والقضاعى فى مسند الشهاب، ٢/٢٦٥، الرقم: ١٣٢٨ـ١٣٣٠، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٤/٤٣، الرقم: ٤٧٣٤ـ

الحديث رقم ١١: أخرجه الترمذي فى السنن، كتاب: البر والصلة عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء فى دعوة الوالدين، ٤/٣١٤، الرقم: ١٩٠٥، وفى كتاب: الدعوات عن رسول الله ﷺ، باب: ما ذكر فى دعوة المسافر، ٥/٥٠٢، الرقم: ←

وَدَعْوَةُ الْوَالِدِ عَلَى وَلَدِهِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُوْدَاوُدَ وَأَحْمَدُ.

وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : तीन (क़िस्म के लोगों की) दुआएं बिला शक व शुबह मक़बूल हैं, मज़लूम की दुआ, मुसाफ़िर की दुआ और वालिद की अपनी औलाद के लिए की गई बद्दुआ।''

.... ٣٤٤٨، وأبو داود فى السنن، كتاب: الصلاة، باب: الدعاء بظهر الغيب، ٢/٨٩، الرقم: ١٥٣٦، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٢/٢٥٨، الرقم: ٧٥٠١، ٨٥٦٤، ١٠١٩٩، ١٠٧١٩، ١٠٧٨١، وابن حبان فى الصحيح، ٦/٤١٦، الرقم: ٢٦٩٩، وابن أبي شيبة فى المصنف، ٦/١٠٥، الرقم: ٢٩٨٣٠، والبخارى فى الأدب المفرد، ١/٢٥، الرقم: ٣٢، والطبرانى فى المعجم الأوسط، ١/١٢، الرقم: ٢٤، والبيهقى فى شعب الإيمان، ٣/٣٠٠، الرقم: ٣٥٩٤، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٤/٤٣، الرقم: ٤٧٣٥.

فَصْلٌ فِي الدُّعَاءِ بَعْدَ الصَّلَوَاتِ الْمَكْتُوبَةِ

फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद दुआ करने का बयान

٣٣٨ / ١٢. عَنْ أَبِي أُمَامَةَ رضي الله عنه قَالَ: قِيْلَ: يَا رَسُوْلَ اللهِ، أَيُّ الدُّعَاءِ أَسْمَعُ؟ قَالَ: جَوْفَ اللَّيْلِ الآخِرِ، وَدُبُرَ الصَّلَوَاتِ الْمَكْتُوْبَاتِ.

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ.

وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ.

''हज़रत अबू उमामा رضي الله عنه से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की ख़िदमते अक़दस में अर्ज़ किया गयाः किस वक़्त की दुआ ज़्यादा सुनी जाती है ? आप ﷺ ने फरमायाः रात के आख़िरी हिस्से में (की गई दुआ) और फ़र्ज नमाज़ों के बाद (की गई दुआ जल्द मक़बूल होती है)।''

٣٣٩ / ١٣. عَنْ مُغِيْرَةَ بْنِ شُعْبَةَ رضي الله عنه أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يَقُوْلُ فِي دُبُرِ كُلِّ صَلَاةٍ مَكْتُوبَةٍ. وفي رواية للبخاري: أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ كَانَ يَقُوْلُ

الحديث رقم ١٢: أخرجه الترمذى فى السنن، كتاب: الدعوات عن رسول الله ﷺ، باب: (٧٩)، ٥ / ٥٢٦، الرقم: ٣٤٩٩، والنسائى فى السنن الكبرى، ٦ / ٣٢، الرقم: ٩٩٣٦، وعبد الرزاق فى المصنف، ٢ / ٤٢٤، الرقم: ٣٩٤٤، والنسائى فى عمل اليوم والليلة، ١ / ١٨٦، الرقم: ١٠٨، والطبرانى فى المعجم الأوسط، ٣ / ٣٧٠، الرقم: ٣٤٢٨، وفى مسند الشاميين، ١ / ٤٥٤، الرقم: ٨٠٣، والبيهقى فى السنن الصغرى، ١ / ٤٧٧، الرقم: ٨٣٩-٨٤٠، وابن رجب فى جامع العلوم والحكم، ١ / ٢٧٣، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٢ / ٣٢١، الرقم: ٢٥٥٠، والعسقلانى فى فتح البارى، ١١ / ١٣٤.

الحديث رقم ١٣: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: صفة الصلاة، باب: الذكر بعد الصلاة، ١ / ٢٨٩، الرقم: ٨٠٨، وفي كتاب: الدعوات، باب: الدعاء بعد الصلاة، ٥ / ٢٣٣٢، الرقم: ٥٩٧١، وفي كتاب: القدر، باب: لا مانع لما أعطى الله، ٦ / ٢٤٣٩، الرقم: ٦٣٤١، وفى كتاب: الاعتصام بالكتاب والسنة، باب: مايكره من ←

فِي دُبُرِ كُلِّ صَلَاةٍ إِذَا سَلَّمَ. وفي رواية مسلم: كَانَ إِذَا فَرَغَ مِنَ الصَّلَاةِ وَسَلَّمَ قَالَ: لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيءٍ قَدِيْرٌ. اللَّهُمَّ لَا مَانِعَ لِمَا أَعْطَيْتَ وَلَا مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ وَلَا يَنْفَعُ ذَاالْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत मुग़ीरा बिन शो'बा ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ हर फ़र्ज नमाज़ के बाद यूँ कहा करते थे और बुख़ारी की रिवायत में है : हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ हर नमाज़ के बाद जब सलाम फेरते तो यूँ कहा करते थे और मुस्लिम की रिवायत में है : जब आप ﷺ नमाज़ से फ़ारिग़ होते और सलाम फेरते तो इस के बाद यूँ फरमाते : नहीं है कोई माबूद मगर अल्लाह तआला, वो तन्हा है उसका कोई शरीक नहीं, उसी की बादशाही है और उसी के लिए सब तारीफें हैं और वो हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है। ऐ अल्लाह ! जिसे तू दे उसे कोई रोकने वाला नहीं और जिसे तू रोके उसे कोई देने वाला नहीं और किसी दौलतमन्द को तेरे मुक़ाबले में दौलत नफ़ा नहीं देगी।''

٣٤٠ / ١٤۔ عَنْ عَمْرِو بْنِ مَيْمُوْنٍ الْأَوْدِيِّ قَالَ: كَانَ سَعْدٌ ﷺ يُعَلِّمُ

.... كثرة السؤال وتكلف مالا يعنيه، ٦ / ٢٦٥٩، الرقم: ٦٨٦٢، ومسلم في الصحيح، كتاب: المساجد ومواضع الصلاة، باب: استحباب الذكر بعد الصلاة وبيان صفة، ١ / ٤١٤، الرقم: ٥٩٣، والترمذي نحوه في السنن، كتاب: الصلاة عن رسول الله ﷺ، باب: مايقول إذا أسلم من الصلاة، ٢ / ٩٦، الرقم: ٢٩٩، وأبوداود في السنن، كتاب: الصلاة، باب: ما يقول الرجل إذا سلم، ٢ / ٨٢، الرقم: ١٥٠٥، والنسائي في السنن، كتاب: السهو، باب: نوع آخر من الدعاء عند الانحراف من الصلاة، ٣ / ٧٠، الرقم: ١٣٤١-١٣٤٢، وأحمد بن حنبل في المسند، ٤ / ٩٧، ٢٤٥-٢٤٧، ٢٥٠، ٢٥٤-٢٥٥، وابن خزيمة في الصحيح، ١ / ٣٦٥، الرقم: ٧٤٢، وابن حبان في الصحيح، ٥ / ٣٤٥، الرقم: ٢٠٠٥، ٢٠٠٧، وابن أبي شيبة في المصنف، ١ / ٢٦٩، الرقم: ٣٠٩٦، ٦ / ٣٢، الرقم: ٢٩٢٦٠، وعبد الرزاق في المصنف، ٢ / ٢٤٤، الرقم: ٣٢٢٤، والبيهقي في السنن الكبرى، ٢ / ١٨٥، الرقم: ٢٨٤٠، والطبراني في المعجم الكبير، ٢٠ / ٣٨٨، الرقم: ٩١٤.

الحديث الرقم ١٤: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: الجهاد والسير، باب: ←

بَنِيهِ هَؤُلَاءِ الْكَلِمَاتِ كَمَا يُعلِّمُ الْمُعَلِّمُ الْغِلْمَانَ الْكِتَابَةَ وَيَقُوْلُ: إِنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ كَانَ يَتَعَوَّذُ مِنْهُنَّ دُبُرَ الصَّلَاةَ: اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوْذُ بِکَ مِنَ الْجُبْنِ وَأَعُوْذُبِکَ أَنْ أَرُدَّ إِلَى أَرْذَلِ الْعُمُرِ وَأَعُوْذُ بِکَ مِنْ فِتْنَةِ الدُّنْيَا، وَأَعُوْذُبِکَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ. فَحَدَّثْتُ بِهِ مُصْعَبًا فَصَدَّقَهُ.

رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ وَالتِّرْمِذِيُّ.

وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत अ़म्र बिन मैमून अवदी ﷺ बयान करते हैं कि हज़रत सा'द बिन अबी वक़्क़ास ﷺ अपने साहबज़ादों को इन कलिमात की ऐसे तालीम देते जैसे उस्ताद बच्चों को लिखना सिखाता है और फरमाते : बेशक रसूलुल्लाह ﷺ हर नमाज़ के बाद इन कलिमात के ज़रीये अल्लाह तआला की पनाह तलब किया करते थे (आप ﷺ फरमाते :) ऐ अल्लाह ! मैं बुज़दिली से तेरी पनाह चाहता हूँ और मैं ज़िल्लत की जिन्दगी की तरफ़ लौटाए जाने से तेरी पनाह चाहता हूँ और दुनिया के फ़ितने से तेरी पनाह माँगता हूँ और अज़ाबे क़ब्र से तेरी पनाह माँगता हूँ। (हज़रत अ़म्र बिन मैमून बयान करते हैं) जब मैंने यह हदीस हज़रत मुस्अब (बिन सा'द) के सामने बयान की तो उन्होंने भी इस की तस्दीक़ की।''

١٥/٣٤١۔ عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ أَخَذَ بِيَدِهِ يَوْمًا

.... مايتعوذ من الجبن، ٣/١٠٣٨، الرقم: ٢٦٦٧، وفي كتاب: الدعوات، باب: التعوذ من عذاب القبر، ٥/٢٣٤١، الرقم: ٦٠٠٤، والترمذي في السنن، كتاب: الدعوات عن رسول الله ﷺ، باب: في دعاء النبي وتعوذه في دبر كل صلاة، ٥/٥٦٢، الرقم: ٣٥٦٧، والنسائي في السنن، كتاب: الاستعاذة، باب: الاستعاذة من العجل، ٨/٢٦٧، الرقم: ٥٤٤٧، وأحمد بن حنبل في المسند، ١/١٨٦، الرقم: ١٦٢١، وابن خزيمة في الصحيح، ١/٣٦٧، الرقم: ٧٤٦، وابن حبان في الصحيح، ٥/٣٧١، الرقم: ٢٠٢٤، والبزار في المسند، ٣/٣٤٣، الرقم: ١١٤٤، وابن أبي شيبة في المصنف، ٦/١٨، الرقم: ٢٩١٣٠، وأبويعلى في المسند، ٢/١١٠، الرقم: ٧٧١، والنسائي في عمل اليوم والليلة، ١/١٩٨، الرقم: ١٣١۔

الحديث الرقم ١٥: أخرجه أبوداود في السنن، كتاب: الصلاة، باب: في الاستغفار، ←

ثُمَّ قَالَ: يَا مُعَاذُ، إِنِّي لَأُحِبُّکَ فَقَالَ لَهُ مُعَاذٌ: بِأَبِي أَنْتَ وَأُمِّي وَأَنَا أُحِبُّکَ قَالَ: أُوْصِيکَ يَا مُعَاذُ لاَ تَدَعَنَّ فِي دُبُرِ کُلِّ صَلَاةٍ أَنْ تَقُوْلَ: اَللَّهُمَّ أَعِنِّي عَلَى ذِکْرِکَ وَشُکْرِکَ وَحُسْنِ عِبَادَتِکَ قَالَ: وَأَوْصَى بِذَالِکَ مُعَاذٌ الصُّنَابِحِيَّ وَأَوْصَى بِهِ الصُّنَابِحِيُّ أَبَا عَبْدِ الرَّحْمَنِ.

رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَاللَّفْظُ لَهُ وَأَحْمَدُ وَابْنُ حِبَّانَ وَالْحَاکِمُ.

وَقَالَ الْحَاکِمُ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحٌ عَلَى شَرْطِ الشَّيْخَيْنِ.

''हज़रत मआज़ बिन जबल ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने एक दिन उन का हाथ पकड़ कर फरमाया : ऐ मआज़ ! मैं तुमसे मुहब्बत करता हूँ हज़रत मआज़ ﷺ ने अर्ज़ किया (या रसूलल्लाह !) मेरे माँ बाप आप पर कुरबान हों मैं भी आप से मुहब्बत करता हूँ। फिर आप ﷺ ने फरमाया : ऐ मआज़ ! मैं तुम्हें नसीहत करता हूँ कि हर नमाज़ के बाद यह दुआ माँगना हरगिज़ ना छोड़ना : ऐ अल्लाह ! अपने ज़िक्र, शुक्र और अच्छी तरह इबादत की अदायगी में मेरी मदद फरमा। फिर हज़रत मआज़ ने सुनाबिही को इस दुआ की नसीहत की और उन्होंने अबू अब्दुर्रहमान को नसीहत की (कि हर नमाज़ के बाद यह दुआ ज़रूर माँगना)।''

٣٤٢ / ١٦. عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رضي الله عنهما قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: أَتَانِي اللَّيْلَةَ رَبِّي تَبَارَکَ وَتَعَالَى فِي أَحْسَنِ صُوْرَةٍ...... فَقَالَ: يَا مُحَمَّدُ،

.... ٢/ ٨٦، الرقم: ١٥٢٢، والنسائي في السنن الکبرى، باب: ما يستحب من الدعاء دبر الصلوات المکتوبات، ٦/ ٣٢، الرقم: ٩٩٣٧، وأحمد بن حنبل في المسند، ٥/ ٢٤٤، الرقم: ٢٢١٧٢، وابن حبان في الصحيح، ٥/ ٣٦٥، الرقم: ٢٠٢١، والحاکم في المستدرک، ١/ ٤٠٧، الرقم: ١٠١٠، والبزار في المسند، ٧/ ١٠٤، الرقم: ٢٦٦١، والبيهقي في السنن الصغرى، ١/ ٢٧، الرقم: ١٧، والطبراني في المعجم الکبير، ٢٠/ ٦٠، الرقم: ١١٠، والنسائي في عمل اليوم والليلة، ١/ ١٨٧، الرقم: ١٠٩، وابن السني في عمل اليوم والليلة، ١/ ٤٥، الرقم: ١١٩، والمنذري في الترغيب والترهيب، ٢/ ٣٠٠، الرقم: ٢٤٧٥.

الحديث رقم ١٦: أخرجه الترمذي في السنن، کتاب: تفسير القرآن عن رسول الله ﷺ، باب: ومن سورة ص، ٥/ ٣٦٦، ٣٦٨، الرقم: ٣٢٣٣، ٣٢٣٥، ومالک ←

إِذَا صَلَّيْتَ فَقُلْ: اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُکَ فِعْلَ الْخَيْرَاتِ وَتَرْکَ الْمُنکَرَاتِ وَحُبَّ الْمَسَاكِيْنَ وَإِذَا أَرَدْتَ بِعِبَادِکَ فِتْنَةً فَاقْبِضْنِي إِلَيْکَ غَيْرَ مَفْتُوْنٍ......الحديث. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَمَالِکٌ وَأَحْمَدُ.

وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ، وَقَالَ الْحَاكِمُ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رضي الله عنهما बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमायाः आज रात मेरा रब मेरे पास निहायत अहसन सूरत में आया अल्लाह तआ़ला ने मुझसे फरमायाः ऐ मुहम्मद ! आप नमाज़ अदा कर चुकें तो यह दुआ माँगें। ऐ अल्लाह ! मैं तुझसे अच्छे आमाल के अपनाने, बुरे आमाल को छोड़ने और मसाकीन की मुहब्बत का सवाल करता हूँ और जब तू अपने बन्दों को आज़माने का इरादा करे तो मुझे उस से पहले ही बग़ैर आज़माए अपने पास बुला ले।''

٣٤٣۔ /١٧۔ عَنْ أَبِي أَيُّوْبَ رضي الله عنه قَالَ: مَا صَلَّيْتُ خَلْفَ نَبِيِّكُمْ ﷺ إِلَّا سَمِعْتُهُ حِيْنَ يَنْصَرِفُ يَقُوْلُ: اللَّهُمَّ اغْفِرْلِي خَطَايَايَ وَذُنُوْبِي كُلَّهَا، اَللَّهُمَّ وَأَنْعِشْنِي وَاجْبُرْنِي وَاهْدِنِي لِصَالِحِ الْأَعْمَالِ وَالْأَخْلَاقِ، إِنَّهُ لَا يَهْدِي لِصَالِحِهَا، وَلَا يَصْرِفُ سَيِّئَهَا إِلَّا أَنْتَ.

رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ فِي مَعَاجِمِهِ الثَّلَاثَةِ وَالْحَاكِمُ.

.... في الموطأ، كتاب: القرآن، باب: العمل في الدعاء، ١/٢١٨، الرقم: ٥٠٨، وأحمد بن حنبل في المسند، ١/٣٦٨، الرقم: ٣٤٨٤، ٥/٢٤٣، الرقم: ٢٢١٦٢، والحاكم في المستدرك، ١/٧٠٨، الرقم: ١٩٣٢، والطبراني في المعجم الكبير، ٢٠/١٠٩، الرقم: ٢١٦، وعبد بن حميد في المسند، ١/٢٢٨، الرقم: ٦٨٢، والمنذري في الترغيب والترهيب، ١/١٥٩، الرقم: ٥٩١، والهيثمي في مجمع الزوائد، ٧/١٧٧۔

الحديث رقم ١٧: أخرجه الطبراني في المعجم الصغير، ١/٣٦٥، الرقم: ٦١٠، وفي المعجم الأوسط، ٤/٣٦٢، الرقم: ٤٤٤٢، وفي المعجم الكبير، ٤/١٢٥: الرقم: ٣٨٧٥، ٨/٢٢٧، الرقم: ٧٨٩٣، والحاكم في المستدرك، ٣/٥٢٢، الرقم: ٥٩٤٢، والديلمي في مسند الفردوس، ١/٤٧٥، الرقم: ١٩٣٥، وابن السني في عمل اليوم والليلة، ١/٤٥، الرقم: ١١٧، والهيثمي في مجمع الزوائد، ١٠/١٧٣، وقال: ورجاله وثقوا۔

والطبراني في الكبير عن أبي أمامة ﷺ ولفظه: قَالَ سَمِعْتُهُ ﷺ يَقُوْلُ فِي دُبُرِ كُلِّ صَلاةٍ: اللَّهُمَّ اغْفِرْلِي خَطَايَايَ وَذُنُوْبِي...... فذكر الدعاء المذكور هنا.

''हज़रत अबू अय्यूब ﷺ बयान करते हैं कि मैंने जब भी हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की इक़्तिदा में नमाज़ पढ़ी तो देखा कि आप ﷺ जब नमाज़ से फ़ारिग़ होते तो मैं आप ﷺ को फरमाते हुए सुनता : ऐ मेरे अल्लाह ! मेरी तमाम ख़ताएं और गुनाह बख़्श दे, ऐ मेरे अल्लाह! मुझे (इबादत व इताअत के लिए) चुस्त–दुरूस्त रख और मुझे अपनी आज़माइश से महफूज रख और मुझे नेक आमाल और अख़्लाक़ की रहनुमाई अता फरमा, बेशक नेक आमाल और अख़्लाक़ की हिदायत तेरे सिवा कोई नहीं देता और बुरे आमाल और अख़्लाक़ से तेरे सिवा कोई नहीं बचाता।''

٣٤٤ / ١٨ـ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ ﷺ قَالَ: كَانَ مَقَامِي بَيْنَ كَتَفَي رَسُوْلِ اللهِ ﷺ فَكَانَ إِذَا سَلَّمَ قَالَ: اللَّهُمَّ اجْعَلْ خَيْرَ عُمُرِي آخِرَهُ، اللَّهُمَّ اجْعَلْ خَوَاتِيْمَ عَمَلِي رِضْوَانَكَ. اللَّهُمَّ اجْعَلْ خَيْرَ أَيَّامِي يَوْمَ أَلْقَاكَ. رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ وَابْنُ السُّنِّيِّ وَالدَّيْلَمِيُّ.

''हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ फरमाते हैं कि मैं (नमाज़ में) हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के ऐन पीछे खड़ा होता था। फिर आप ﷺ जब सलाम फेरते तो फरमाते : ऐ मेरे अल्लाह! मेरी उम्र का आख़िरी हिस्सा बेहतरीन बना दे, ऐ मेरे अल्लाह ! मेरे आमाल का ख़ात्मा अपनी रज़ा पर कर, ऐ मेरे अल्लाह ! मेरे दिनों में से बेहतरीन दिन उसको बना जिस दिन मैं तेरे साथ मुलाक़ात करूँ।''

٣٤٥ / ١٩ـ عَنْ أَبِي أُمَامَةَ ﷺ قَالَ: مَا دَنَوْتُ مِنْ نَبِيِّكُمْ ﷺ فِي

الحديث رقم ١٨: أخرجه الطبراني في المعجم الأوسط، ٩ / ١٥٧، الرقم: ٩٤١١، وابن السني في عمل اليوم والليلة، ١ / ٤٦، الرقم: ١٢٢، والديلمي في مسند الفردوس، ١ / ٤٨٠، الرقم:١٩٦٢، والهيثمي في مجمع الزوائد، ١٠ / ١١٠.

الحديث رقم ١٩: أخرجه الطبراني في المعجم الكبير، ٨ / ٢٠٠، ٢٥١، الرقم: ←

صَلاةٍ مَكْتُوْبَةٍ أَوْ تَطَوُّعٍ إِلَّا سَمِعْتُهُ يَدْعُوْ بِهَؤُلَاءِ الْكَلِمَاتِ الدَّعْوَاتِ لَا يَزِيْدُ فِيْهِنَّ وَلَا يَنْقُصُ مِنْهُنَّ: اللَّهُمَّ اغْفِرْلِي ذُنُوبِي وَخَطَايَايَ اللَّهُمَّ أَنْعِشْنِي وَاجْبُرْنِي وَاهْدِنِي لِصَالِحِ الْأَعْمَالِ وَالْأَخْلَاقِ فَإِنَّهُ لَا يَهْدِي لِصَالِحِهَا وَلَا يَصْرِفُ سَيِّئَهَا إِلَّا أَنْتَ.

رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ وَالدَّيْلَمِيُّ وَرِجَالُهُ رِجَالُ ثِقَاتٍ.

''हज़रत अबू उमामा ﷺ बयान करते हैं कि मैं जब भी फ़र्ज़ नमाज़ या नफ़्ल नमाज़ में हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के पीछे खड़ा हुआ तो मैंने आप ﷺ को इन कलिमात से दुआ फरमाते हुए सुना जिनमें आप ﷺ न इज़ाफ़ा फरमाते थे और न कमी (वो कलिमात यह है)। ऐ मेरे अल्लाह! मेरी ख़ताएं और गुनाह बख़्श दे, ऐ मेरे अल्लाह ! मुझे (अपनी इबादत और इताअत के लिए) चुस्त–दुरूस्त कर दे और मुझे अपनी आज़माइश से महफ़ूज़ रख और मुझे नेक आमाल और अख़्लाक़ की रहनुमाई अता फरमा, फिर बेशक तेरे सिवा इन नेक आमाल की रहनुमाई कोई नहीं फरमाता और न ही तेरे सिवा बुरे आमाल और अख़्लाक़ से कोई बचाता है।''

٣٤٦ / ٢٠۔ عَنْ أَبِي مَرْوَانَ أَنَّ كَعْبَ (الْأَحْبَارَ) ﷺ حَلَفَ لَهُ بِاللهِ الَّذِي فَلَقَ الْبَحْرَ لِمُوْسَى عليه السلام إِنَّا لَنَجِدُ فِي التَّوْرَاةِ أَنَّ دَاوُدَ نَبِيَّ اللهِ عليه السلام كَانَ إِذَا انْصَرَفَ مِنْ صَلَاتِهِ قَالَ: اَللَّهُمَّ أَصْلِحْ لِي دِيْنِي الَّذِي جَعَلْتَهُ لِي عِصْمَةً وَأَصْلِحْ لِي دُنْيَايَ الَّتِي جَعَلْتَ فِيْهَا مَعَاشِي، اَللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوْذُ

.... ٧٨١١، ٧٩٨٢، والديلمي في مسند الفردوس، ١ / ٤٧٥، الرقم: ١٩٣٥، والهيثمي في مجمع الزوائد، ١٠ / ١١٢، وقال: رواه الطبراني ورجاله رجال الزبير بن خريق وهو ثقة،والمباركفورى في تحفة الأحوذي، ٢ / ١٧٠، والقزويني في التدوين، ٣ / ٢٥٢۔

الحديث رقم ٢٠: أخرجه النسائي في السنن، كتاب: السهو، باب: نوع آخر من الدعاء وعند الانصراف من الصلاة، ٣ / ٧٣، الرقم: ١٣٤٦، وفي السنن الكبرى، ١ / ٤٠٠، الرقم: ١٢٦٩، وابن خزيمة في الصحيح، ١ / ٣٦٦، الرقم: ٧٤٥، والطبراني في المعجم الكبير، ٨ / ٣٣، الرقم: ٧٢٩٨، والمقدسي في الأحاديث المختارة، ٨ / ٦٥، الرقم: ٥٩، وقال: إسناده صحيح۔

بِرِضَاکَ مِنْ سَخَطِکَ، وَأَعُوْذُ بِعَفْوِکَ مِنْ نِقْمَتِکَ وَأَعُوْذُ بِکَ مِنْکَ لَا مَانِعَ لِمَا أَعْطَيْتَ وَلَا مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ وَلَا يَنْفَعُ ذَالْجَدِّ مِنْکَ الْجَدُّ وَحَدَّثَنِي كَعْبٌ أَنَّ صُهَيْبًا حَدَّثَهُ أَنَّ مُحَمَّدًا ﷺ كَانَ يَقُوْلُهُنَّ عِنْدَ انْصِرَافِهِ مِنْ صَلَاتِهِ.

رَوَاهُ النَّسَائِيُّ وَابْنُ خُزَيْمَةَ وَالطَّبَرَانِيُّ. إِسْنَادُهُ صَحِيْحٌ.

''मरवान से रिवायत है कि उनकी मौजूदगी में हज़रत का'ब (अहबार) ﷺ ने हलफ़ उठाया कि उस ज़ात की क़सम जिसने हज़रत मूसा ﷺ के लिए दरिया को चीर दिया ! हम ने तौरात में देखा है कि हज़रत दाऊद ﷺ जब नमाज़ से फ़ारिग़ होते तो वो (यानी हज़रत दाऊद ﷺ) यूँ दुआ करते। ऐ अल्लाह ! वो दीन जिस से मेरा बचाव है उसे दुरुस्त फरमा दे। और मेरी दुनिया जिसमें मेरा रिज़्क है उसकी इस्लाह फरमा। ऐ अल्लाह ! मैं तेरे ग़ज़ब से तेरी रज़ामन्दी की पनाह तलब करता हूँ और तेरे अ़ज़ाब से तेरी माफी की पनाह माँगता हूँ तू जो कुछ अ़ता करे उसे कोई रोकने वाला नहीं और जो तू रोक ले उसे कोई देने वाला नहीं है और मालदार का माल तेरे नज़दीक किसी काम न आएगा। हज़रत मरवान ﷺ ने कहा कि मुझसे हज़रत का'ब ﷺ ने बयान किया और हज़रत सुहैब ﷺ ने उनसे बयान किया कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ जब नमाज़ अदा फरमा लेते तो आप ﷺ भी यह कलिमात इरशाद फरमाते।''

٣٤٧ / ٢١۔ عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ قَالَ: كَانَ ابْنُ الزُّبَيْرِ ﷺ يَقُوْلُ فِي دُبُرِ

الحديث رقم ٢١: أخرجه مسلم في الصحيح، كتاب: المساجد ومواضع الصلاة، باب: استحباب الذكر بعد الصلاة وبيان صفته، ١/٤١٥، الرقم: ٥٩٤، وأبو داود في السنن، كتاب: الوتر، باب: ما يقول الرجل إذا سلم، ٢/٨٢، الرقم: ١٥٠٦-١٥٠٧، والنسائي في السنن، كتاب: السهو، باب: عدد التهليل والذكر بعد التسليم، ٣/٧٠، الرقم: ١٣٤٠، وفي السنن الكبرى، ١/٣٩٨، الرقم: ١٢٦٣، ٦/٣٨، الرقم: ٩٩٥٦، والشافعي في المسند، ١/٤٤، وأحمد بن حنبل في المسند، ٤/٤، وابن أبي شيبة في المصنف، ٦/٣٣، الرقم: ٢٩٢٦٢، وأبو يعلى في المسند، ١٢/١٨٤، الرقم: ٦٨١١، والبيهقي في السنن الكبرى، ٢/١٨٤، الرقم: ٢٨٣٩، والطبراني في كتاب الدعاء، ١/٢١٦، الرقم: ٦٨١۔

كُلِّ صَلَاةٍ حِيْنَ يُسَلِّمُ: لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيءٍ قَدِيْرٌ، لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللهِ لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ وَلَا نَعْبُدُ إِلَّا إِيَّاهُ لَهُ النِّعْمَةُ وَلَهُ الْفَضْلُ وَلَهُ الثَّنَاءُ الْحَسَنُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُوْنَ. وَقَالَ: كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يُهَلِّلُ بِهِنَّ دُبُرَ كُلِّ صَلَاةٍ.

رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَالنَّسَائِيُّ وَأَحْمَدُ وَالشَّافِعِيُّ وَلَفْظُهُ: كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ إِذَا سَلَّمَ مِنْ صَلَاتِهِ يَقُوْلُ بِصَوْتِهِ الْأَعْلَى ...... فذكر الحديث.

''हज़रत अबू ज़ुबैर से रिवायत है कि उन्होंने बयान किया कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर ﷺ हर नमाज़ में सलाम फेरने के बाद (दुआ में) कहा करते थेः अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई माबूद नहीं , वो अकेला है, उसका कोई शरीक़ नहीं , उसी के लिए बादशाही है और उसी के लिए तमाम तारीफें हैं और वो हर शै पर क़ुदरत रखता है अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई ग़ालिब आने वाला और क़ुव्वत रखने वाला नहीं और हम सिवाए उसके किसी की इबादत नहीं करते उसके लिए तमाम नेअ़मतें हैं, उसी के लिए फ़ज़्ल और तमाम अच्छी तारीफें हैं अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई माबूद नहीं उसी का दीन ख़ालिस है अगर चे काफ़िरों को यह ना गवार गुजरे।''

''और इमामा शाफ़ई ﷺ की रिवायत के अल्फ़ाज़ हैं : रसूलुल्लाह ﷺ इन कलिमात को हर नमाज़ के बाद बुलन्द आवाज़ से अदा फरमाते थे, फिर आगे उसी तरह हदीस ज़िक्र की।''

٣٤٨ / ٢٢۔ عَنِ الْأَزْرَقِ بْنِ قَيْسٍ ﷺ قَالَ: صَلَّى بِنَا إِمَامٌ لَنَا يُكْنَى أَبَا رِمْثَةَ فَقَالَ: صَلَّيْتُ هَذِهِ الصَّلَاةَ أَوْ مِثْلَ هَذِهِ الصَّلَاةِ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: وَكَانَ أَبُوبَكْرٍ وَعُمَرُ رضي الله عنهما يَقُوْمَانِ فِي الصَّفِّ الْمُقَدَّمِ عَنْ يَمِيْنِهِ

الحديث رقم ٢٢: أخرجه أبوداود في السنن، كتاب: الصلاة، باب: في الرجل يتطوع في مكانه الذي صلى فيه المكتوبة، ١ / ٢٦٤، الرقم: ١٠٠٧، والحاكم في المستدرك، ١ / ٤٠٣، الرقم: ٩٩٦، والبيهقي في السنن الصغرى، ١ / ٣٩٥، الرقم: ٦٧٥، وفي السنن الكبرى، ٢ / ١٩٠، الرقم: ٢٨٦٧، والطبراني في المعجم الأوسط، ٢ / ٣١٦، الرقم: ٢٠٨٨۔

وَكَانَ رَجُلٌ قَدْ شَهِدَ التَّكْبِيْرَةَ الْأُوْلَى مِنَ الصَّلَاةِ فَصَلَّى نَبِيُّ اللهِ ﷺ ثُمَّ سَلَّمَ عَنْ يَمِينِهِ وَعَنْ يَسَارِهِ حَتَّى رَأَيْنَا بَيَاضَ خَدَّيْهِ ثُمَّ انْفَتَلَ كَانْفِتَالِ أَبِي رِمْثَةَ يَعْنِي نَفْسَهُ فَقَامَ الرَّجُلُ الَّذِي أَدْرَكَ مَعَهُ التَّكْبِيْرَةَ الْأُوْلَى مِنَ الصَّلَاةِ يَشْفَعُ فَوَثَبَ إِلَيْهِ عُمَرُ فَأَخَذَ بِمَنْكِبِهِ فَهَزَّهُ ثُمَّ قَالَ: اجْلِسْ فَإِنَّهُ لَمْ يَهْلِكْ أَهْلَ الْكِتَابِ إِلَّا أَنَّهُ لَمْ يَكُنْ بَيْنَ صَلَوَاتِهِمْ فَصْلٌ فَرَفَعَ النَّبِيُّ ﷺ بَصَرَهُ فَقَالَ: أَصَابَ اللهُ بِكَ يَا ابْنَ الْخَطَّابِ.

رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ وَالْحَاكِمُ وَالْبَيْهَقِيُّ وَالطَّبَرَانِيُّ.

وَقَالَ الْحَاكِمُ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحٌ عَلَى شَرْطِ مُسْلِمٍ.

''हज़रत अर्ज़क़ बिन क़ैस ﷺ का बयान है कि एक इमाम ने हमें नमाज़ पढ़ाई जिन्हें लोग अबू रमसा ﷺ भी कहते थे, उन्होंने फरमाया कि मैंने यह नमाज़ या इस जैसी नमाज़ हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के साथ पढ़ी है। फरमाया कि हज़रत अबू बकर और हज़रत उमर رضي الله عنهما पहले सफ़ में दाएं जानिब खड़े थे और एक आदमी नमाज़ की तक्बीरे ऊला में आ शामिल हुआ। जब हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने नमाज़ पढ़ा ली तो दाएँ जानिब सलाम फेरा, यहाँ तक कि आप ﷺ के रुख़सारों की सफेदी हमें न दिखी। फिर ऐसे ही मुड़े जैसे अबू रमसा मुड़े हैं यानी वो खुद। फिर जो शख़्स तक्बीरे ऊला में आ कर शामिल हुआ था खड़ा हो कर दोगाना पढ़ने लगा पस हज़रत उमर ﷺ उसकी तरफ़ झपटे और उसे कन्धों से पकड़ कर हिलाया फिर फरमाया कि बैठ जाओ क्योंकि अहले किताब सिर्फ इस वजह से हलाक हुए कि उन की नमाज़ों के दरमियान वक़्फ़ा नहीं रहता था। हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने निगाह मुबारक उठाइ और फरमाया : ऐ इब्ने ख़त्ताब ! अल्लाह तआला ने तुम्हें सही बात की तौफ़ीक़ अता फरमाई है।''

٣٤٩ / ٢٣۔ وَقَدْ أَخْرَجَ عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، وَابْنُ جَرِيْرٍ وَابْنُ الْمُنْذِرِ وَابْنُ أَبِي حَاتِمٍ وَابْنُ مَرْدَوَيْه مِنْ طُرُقٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رضي الله عنهما فِي قَوْلِهِ

الحديث رقم ٢٣: أخرجه ابن جرير الطبري في جامع البيان، ٣٠ / ٢٣٦، والسيوطي في الدر المنثور، ٨ / ٥٥١، والبيضاوي في أنوار التنزيل، ٥ / ٥٠٦، والشوكاني في فتح القدير، ٥ / ٤٦٣، وابن الجوزي في زاد المسير، ٩ / ١٦٦، والآلوسي في روح المعاني، ٣٠ / ١٧٢۔

تَعَالَى: ﴿فَإِذَا فَرَغْتَ فَانْصَبْ﴾ [الم نشرح، ٩٤: ٧] قَالَ: إِذَا فَرَغْتَ مِنَ الصَّلَاةِ فَانْصَبْ فِي الدُّعَاءِ وَاسْأَلِ اللهَ وَارْغَبْ إِلَيْهِ.

ذَكَرَهُ ابْنُ جَرِيْرٍ وَالسُّيُوطِيُّ.

''इमाम अ़ब्द बिन हुमैद, इमाम इब्ने जरीर, इमाम इब्ने मुन्ज़िर, इमाम इब्ने अबी हातिम और इमाम इब्ने मरदौया ने हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رضي الله عنهما की तरफ़ से अल्लाह तआ़ला के इस फरमानः ﴿فَإِذَا فَرَغْتَ فَانْصَبْ﴾ में रिवायत किया है कि इससे मुराद यह है कि 'ऐ मेहबूब! जब आप नमाज़ से फ़ारिग़ हो जाएं तो दुआ़ में मशगूल हो जाया करें और अल्लाह तआ़ला से माँगा करें और उसी की तरफ़ (कामिल यकसूई से) राग़िब हुआ करें।''

٣٥٠ / ٢٤۔ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُودٍ رضي الله عنه ﴿فَإِذَا فَرَغْتَ﴾ مِنَ الصَّلَاةِ ﴿فَانْصَبْ﴾ إِلَى الدُّعَاءِ ﴿وَإِلَى رَبِّكَ فَارْغَبْ﴾ [الم نشرح، ٩٤: ٧-٨] فِي الْمَسْأَلَةِ.

ذَكَرَهُ السُّيُوطِيُّ وَقَالَ: أَخْرَجَهُ ابْنُ أَبِي الدُّنْيَا فِي الذِّكْرِ.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद رضي الله عنه बयान करते हैं ﴿فَإِذَا فَرَغْتَ﴾ यानी जब आप नमाज़ से फ़ारिग़ हो जाएं ﴿فَانْصَبْ﴾ तो दुआ़ में मशग़ूल हो जाएं ﴿وَ إِلَى رَبِّكَ فَارْغَبْ﴾ और सवाल करने में अपने रब की तरफ़ ही राग़िब हुआ करें।''

٣٥١ / ٢٥۔ وَأَخْرَجَ عَبْدُ الرَّزَّاقِ وَعَبْدُ بْنُ حَمَيْدٍ وَابْنُ جَرِيْرٍ وَابْنُ الْمُنْذِرِ عَنْ قَتَادَةَ: ﴿فَإِذَا فَرَغْتَ فَانْصَبْ﴾ [الم نشرح، ٩٤: ٧] قَالَ: إِذَا فَرَغْتَ مِنْ صَلَاتِكَ فَانْصَبْ فِي الدُّعَاءِ. ذَكَرَهُ السُّيُوطِيُّ وَالْجَصَّاصُ.

الحديث رقم ٢٤: أخرجه السيوطي في الدر المنثور، ٨ / ٥٥١، والشوكاني في فتح القدير، ٥ / ٤٦٣۔

الحديث رقم ٢٥: أخرجه السيوطي في الدر المنثور، ٨ / ٥٥٢، والجصاص في أحكام القرآن، ٥ / ٣٧٣، والنحاس في الناسخ والمنسوخ، ١ / ٧٧٣۔

''इमाम अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक और इमाम अब्द बिन हमैद, इमाम इब्ने जरीर और इमाम इब्ने मुन्ज़िर ने हज़रत क़तादा ﷺ से रिवायत की है : ﴿فَإِذَا فَرَغْتَ فَانْصَبْ﴾ से मुराद यह है कि जब अपनी नमाज़ से फ़ारिग़ हो जाएं तो ख़ुद को दुआ में मशग़ूल कर लें।''

٣٥٢ / ٢٦۔ عَنْ قَتَادَةَ وَالضَّحَاكِ وَمَقَاتِلَ فِي قَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿فَإِذَا فَرَغْتَ فَانْصَبْ﴾ أَي إِذَا فَرَغْتَ مِنَ الصَّلَاةِ الْمَكْتُوبَةِ فَانْصَبْ إِلَى رَبِّكَ فِي الدُّعَاءِ وَارْغَبْ إِلَيْهِ فِي الْمَسْأَلَةِ يُعْطِكَ.

رَوَاهُ فَخْرُ الدِّيْنِ الرَّازِيُّ وَالسُّيُوْطِيُّ.

''हज़रत क़तादा ज़हाक और मक़ातिल अल्लाह तआ़ला के इस फरमानः (﴿فَإِذَا فَرَغْتَ فَانْصَبْ﴾) की तफ़्सीर में बयान करते हैं कि इस से मुराद है कि जब आप ﷺ फ़र्ज़ नमाज़ से फ़ारिग़ हो जाएं तो ख़ुद को अपने रब की तरफ़ दुआ करने में मशग़ूल करें और सवाल करने (यानी माँगने) में उसी की तरफ़ राग़िब हो वो आप को अ़ता फरमाएगा।''

٣٥٣ / ٢٧۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ لَمْ يَسْأَلِ اللهَ ﷻ يَغْضَبْ عَلَيْهِ.

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالْحَاكِمُ وَأَبُوْيَعْلَى وَالْبُخَارِيُّ فِي الْأَدَبِ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जो

الحديث رقم ٢٦: أخرجه الرازي في التفسير الكبير، ٣٢/٨، والسيوطي في الدر المنثور، ٨/٥٥، والبغوي في معالم التنزيل، ٤/٥٠٣، والسمعاني في تفسيره، ٦/٢٥٢، وابن الجوزي في زاد المسير، ٩/١٦٦، والشوكاني في فتح القدير، ٥/٤٦٢.

الحديث رقم ٢٧: أخرجه الترمذي في السنن، كتاب: الدعوات عن رسول الله ﷺ، باب: منه(٢)، ٥/٤٥٦، الرقم: ٣٣٧٣، والحاكم في المستدرك، ١/٦٦٧-٦٦٨، الرقم: ١٨٠٦-١٨٠٧، وأبويعلى في المسند، ١٢/١٠، الرقم: ٦٦٥٥، والبخاري في الأدب المفرد، ١/٢٢٩، الرقم: ٦٥٨، وابن رجب في جامع العلوم والحكم، ١/١٩١.

शख़्स अल्लाह तआला से (दुआ) नहीं माँगता अल्लाह तआला उस पर ग़ज़ब फरमाता है।''

٣٥٤ / ٢٨۔ عَنْ عَبْدِ اللهِ رضي الله عنه أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ كَانَ يُعْجِبُهُ أَنْ يَدْعُوَ ثَـلَاثًا وَيَسْتَغْفِرَ ثَـلَاثًا. رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَأَحْمَدُ.

''हज़रत अब्दुल्लाह (बिन मसऊद) رضي الله عنه से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ तीन बार दुआ और तीन बार इस्तग़फ़ार करना पसन्द फरमाया करते थे।''

الحديث رقم ٢٨: أخرجه أبو داود في السنن، كتاب: الصلاة، باب: في الاستغفار، ٢ / ٨٦، الرقم: ١٥٢٤، والنسائي في السنن الكبرى، ٦ / ١١٩، الرقم: ١٠٢٩١، وأحمد بن حنبل في المسند، ١ / ٣٩٤، ٣٩٧، الرقم: ٣٧٤٤، ٣٧٦٩-٣٧٧٠، والطبراني في المعجم الكبير، ١٠ / ١٥٩، الرقم: ١٠٣١٧، والشاشي في المسند، ٢ / ١٣٨، الرقم: ٦٧٧، والنسائي في عمل اليوم والليلة، ١ / ٣٣١، الرقم: ٤٥٧، وأبونعيم في حلية الأولياء، ٤ / ٣٤٨۔

فَصْلٌ فِي رَفْعِ الْيَدَيْنِ فِي الدُّعَاءِ

दुआ में हाथ उठाने का बयान

٣٥٥ / ٢٩۔ قَالَ أَبُوْمُوْسَى الْأَشْعَرِيُّ ﷺ: دَعَا النَّبِيُّ ﷺ ثُمَّ رَفَعَ يَدَيْهِ، وَرَأَيْتُ بَيَاضَ إِبْطَيْهِ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ.

''हज़रत अबू मूसा अश्अरी ﷺ फरमाते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने दुआ की और अपने दोनों हाथ उठाए, यहाँ तक कि मैंने आप ﷺ की मुबारक बग़लों की सफेदी देखी।''

٣٥٦ / ٣٠۔ عَنْ أَنَسٍ ﷺ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: رَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى رَأَيْتُ بَيَاضَ إِبْطَيْهِ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ.

''हज़रत अनस ﷺ फरमाते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने (दुआ के लिए) हाथ उठाए, यहाँ तक कि मैंने आप ﷺ की बग़ल मुबारक की सफेदी देखी।''

٣٥٧ / ٣١۔ قَالَ ابْنُ عُمَرَ رضي الله عنهما: رَفَعَ النَّبِيُّ ﷺ يَدَيْهِ وَقَالَ:

الحديث رقم ٢٩: أخرجه البخاری فی الصحيح، كتاب: الدعوات، باب: رَفْعِ الأيدي فی الدُّعاءِ، ٥/٢٣٣٥، وفی كتاب: المغازی، باب: غَزْوَةِ أَوْطاسٍ، ٤/١٥٧١، الرقم: ٤٠٦٨.

الحديث رقم ٣٠: أخرجه البخاری فی الصحيح، كتاب: الدعوات، باب: رَفْعِ الأيدي فی الدُّعاءِ، ٥/٢٣٣٥، وفی كتاب: الاستسقاء، باب: رفع الإمامِ يَدَه فِی الاسْتِسْقَاءِ، ١/٣٤٩، الرقم: ٩٨٤، وفی كتاب: المناقب، باب: صفة النبي ﷺ، ٣/١٣٠٧، الرقم: ٣٣٧٢.

الحديث رقم ٣١: أخرجه البخاری فی الصحيح، كتاب: الدعوات، باب: رَفْعِ الأيدي فی الدُّعاءِ، ٥/٢٣٣٥، وفی باب: بَعْثِ النَّبِيِّ ﷺ خالد بن الوليد إلى بنی جَذِيْمَةِ، ٤/١٥٧٧، الرقم: ٤٠٨٤، وفی كتاب: الأحكام، باب: إذا قضى الحاكم بجور، أو خلاف أهل العلم فهو ردّ، ٦/٢٦٢٨، الرقم: ٦٧٦٦، والنسائی فی ←

اَللّٰهُمَّ إِنِّي أَبْرَأُ إِلَيْکَ مِمَّا صَنَعَ خَالِدٌ.

''हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर رضي الله عنهما फरमाते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने अपने हाथ उठाए अ़र्ज़ किया: ऐ अल्लाह! जो ख़ालिद ने किया मैं तेरी बारगाह में उससे बरी हूँ।''

٣٥٨۔ / ٣٢۔ عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رضي الله عنه، قَالَ: کَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ إِذَا رَفَعَ يَدَيْهِ فِي الدُّعَاءِ، لَمْ يَحُطَّهُمَا حَتَّی يَمْسَحَ بِهِمَا وَجْهَهُ.

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالْحَاکِمُ وَالْبَزَّارُ.

وَقَالَ أَبُوْعِيْسَی: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत उमर बिन ख़त्ताब رضي الله عنه से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ दुआ के लिए हाथ उठाते तो अपने चेहरए अक़्दस पर फेरने से पहले (हाथ) नीचे न करते थे।''

٣٥٩۔ / ٣٣۔ عَنِ السَّائِبِ بْنِ يَزِيْدَ عَنْ أَبِيْهِ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ کَانَ إِذَا دَعَا

.... السنن، کتاب: آداب القضاة، باب: الردّ علی الحاکم إذا قضی بغير الحق، ٨ / ٢٣٦، الرقم: ٥٤٠٥، وأحمد بن حنبل فی المسند، ٢ / ١٥٠، الرقم: ٦٣٨٢، وابن حبان فی الصحيح، ١١ / ٥٣، الرقم: ٤٧٤٩، والبيهقی فی السنن الکبری، ٩ / ١١٥، وعبد الرزاق فی المصنف، ٥ / ٢٢١، الرقم: ٩٤٣٤۔

الحديث رقم ٣٢: أخرجه الترمذی فی السنن، کتاب: الدعوات عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء في رفع الأيدي عند الدعاء، ٥ / ٤٦٣، الرقم: ٣٣٨٦، وعبد الرزاق فی المصنف، ٢ / ٢٤٧، الرقم: ٣٢٣٤، والحاکم فی المستدرک، ١ / ٧١٩، الرقم: ١٩٦٧، والبزار فی المسند، ١ / ٢٤٣، الرقم: ١٢٩، والطبرانی فی المعجم الأوسط، ٧ / ١٢٤، الرقم: ٧٠٥٣، وعبد بن حميد فی المسند، ١ / ٤٤، الرقم: ٣٩، والسيوطی فی الجامع الصغير، ١ / ١٥٦، الرقم: ٢٣٦، والمناوی فی فيض القدير، ٥ / ١٣٨۔

الحديث الرقم ٣٣: أخرجه أبوداود في السنن، کتاب: الصلاة، باب: الدعاء، ٢ / ٧٩، الرقم: ١٤٩٢، وأحمد بن حنبل في المسند، ٤ / ٢٢١، والطبراني في المعجم الکبير، ٢٢ / ٢٤١، الرقم: ٦٣١، والبيهقي في شعب الإيمان، ٢ / ٤٥، والسيوطي في الجامع الصغير، ١ / ١٤٥، الرقم: ٢١٦، والمقريزي في مختصر کتاب الوتر، ١ / ١٥٢۔

فَرَفَعَ يَدَيْهِ مَسَحَ وَجْهَهُ بِيَدَيْهِ. رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ وَأَحْمَدُ وَالطَّبَرَانِيُّ.

''हज़रत साइब बिन यज़ीद ﷺ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ जब दुआ फरमाते तो (उसके लिए) अपने दोनों हाथ मुबारक उठाते (फ़िर दुआ के बाद) अपने चेहरए अनवर पर फेरते।''

٣٦٠ / ٣٤۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَا مِنْ عَبْدٍ يَرْفَعُ يَدَيْهِ حَتَّى يَبْدُوَ إِبِطُهُ يَسْأَلُ اللهَ مَسْأَلَةً إِلَّا آتَاهَا إِيَّاهُ مَالَمْ يَعْجَلْ. قَالُوْا: يَا رَسُوْلَ اللهِ، وَكَيْفَ عَجَلَتُهُ؟ قَالَ: يَقُوْلُ: قَدْ سَأَلْتُ وَسَأَلْتُ وَلَمْ أُعْطَ شَيْئًا. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमायाः जब भी कोई शख़्स दुआ के लिए हाथ उठाता है (और इतने बुलन्द करता है) यहाँ तक कि उसके बग़ल (की सफेदी) ज़ाहिर हो जाती है फिर वो जो कुछ अल्लाह तआला से माँगता है अल्लाह तआला उसे अ़ता फरमा देता है जब तक कि वो जल्दी न करे। सहाबा किराम ﷺ ने अ़र्ज़ कियाः या रसूलुल्लाह ! जल्दी से क्या मुराद है? आप ﷺ ने फरमायाः इस तरह कहेः मैंने माँगा, मैंने माँगा लेकिन मुझे कुछ न दिया गया।''

٣٦١ / ٣٥۔ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رضي الله عنهما قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّ

الحديث رقم ٣٤: أخرجه الترمذي في السنن، كتاب: الدعوات عن رسول الله ﷺ، باب: (١٣٨)، الرقم: ٣٦٠٨ / ٣٩٦٩۔

الحديث رقم ٣٥: أخرجه ابن حبان في الصحيح، ٣ / ١٠٦، الرقم: ٨٧٦، وأبو يعلى في المسند، ٣ / ٣٩١، الرقم: ١٨٦٧، والبزار عن سلمان ﷺ في المسند، ٦ / ٤٧٨، الرقم: ٢٥١١، والطبراني في المعجم الكبير، ١٢ / ٤٢٣، الرقم: ١٣٥٥٧، والديلمي في مسند الفردوس، ١ / ٢٢١، الرقم: ٨٤٧، وابن راشد في الجامع، ١٠ / ٤٤٣، والقضاعي في مسند الشهاب، ٢ / ١٦٥، الرقم: ١١١١، والمنذري في الترغيب والترهيب، ٢ / ٣١٥، الرقم: ٢٥٢٧، والهيثمي في مجمع الزوائد، ١٠ / ١٦٩، والهندى في كنز العمال، ٢ / ٨٧، الرقم: ٣٢٦٦، ٣٢٦٨۔

رَبَّكُمْ حَيِيٌّ كَرِيْمٌ، يَسْتَحِيِّ أَنْ يَرْفَعَ الْعَبْدُ يَدَيْهِ، فَيَرُدَّهُمَا صِفْرًا لَا خَيْرَ فِيْهِمَا، فَإِذَا رَفَعَ أَحَدُكُمْ يَدَيْهِ فَلْيَقُلْ: ﴿يَا حَيُّ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ يَا أَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ﴾ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ ثُمَّ إِذَا رَدَّ يَدَيْهِ فَلْيُفْرِغْ ذَلِكَ الْخَيْرَ عَلَى وَجْهِهِ. رَوَاهُ ابْنُ حِبَّانَ وَأَبُوْيَعْلَى وَالْبَزَّارُ وَالطَّبَرَانِيُّ وَاللَّفْظُ لَهُ.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर رضي الله عنهما बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमायाः बेशक तुम्हारा रब बड़ा हयादार और करीम है वो इस बात से हया महसूस करता है कि उसका कोई बन्दा (उसके सामने दुआ के लिए) हाथ उठाए और वो उन्हें खाली लौटा दे फिर जब भी तुम में से कोई दुआ के लिए हाथ उठाए तो यूँ कहे : ﴿يا حي لا إله إلا أنت يا أرحم الرحمين﴾ यह कलिमात तीन बार दोहराए फिर जब वो अपने हाथों को (वापस) हटाए तो वो उन्हें अपने चहरे पर फेर ले।''

٣٦٢/٣٦. عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يَرْفَعُ يَدَيْهِ عِنْدَ صَدْرِهِ فِي الدُّعَاءِ، ثُمَّ يَمْسَحُ بِهِمَا وَجْهَهُ.

رَوَاهُ عَبْدُ الرَّزَّاقِ وَقَالَ: وَرُبَّمَا رَأَيْتُ مَعْمَرًا يَفْعَلُهُ وَأَنَا أَفْعَلُهُ.

''हज़रत ज़ुहरी फरमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ दुआ में अपने हाथ मुबारक सीना–ए–अक़दस तक बुलन्द फरमाते और फिर दुआ के बाद उन को अपने चेहरए अनवर पर फेर लेते।''

''इस हदीस को इमाम अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने रिवायत किया है और वो फरमाते है कि मैंने इमाम मअ़मर को अक्सर (दुआ में) ऐसे ही करते देखा और मेरा अपना मामूल भी यही है।''

٣٦٣/٣٧. عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رضي الله عنهما قَالَ: كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ إِذَا

الحديث رقم ٣٦: أخرجه عبد الرزاق في المصنف، ٢/٢٤٧، الرقم: ٣٢٣٤-٣٢٣٥، ٣/١٢٣، الرقم: ٥٠٠٣.

الحديث رقم ٣٧: أخرجه الطبراني في المعجم الكبير، ١١/٤٣٥، الرقم: ١٢٢٣٤، وفي المعجم الأوسط، ٥/٢٥٠، الرقم: ٥٢٢٦، والسيوطي في الجامع الصغير، ١/١٤٥، الرقم: ٢١٧، والمناوي في فيض القدير، ٥/١٣٣.

دَعَا جَعَلَ بَاطِنَ كَفِّهِ إِلَى وَجْهِهِ. رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ.

''हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास رضي الله عنهما फरमाते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ जब दुआ फरमाते तो अपनी मुबारक हथेलियों को अपने रुख़े ज़ैबा की तरफ़ फरमा लेते।''

٣٦٤ / ٣٨. عَنْ خَلَّادِ بْنِ السَّائِبِ الْأَنْصَارِيِّ رضي الله عنه أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ كَانَ إِذَا دَعَا جَعَلَ بَاطِنَ كَفَّيْهِ إِلَى وَجْهِهِ. رَوَاهُ أَحْمَدُ.

''हज़रत ख़ल्लाद बिन साइब अन्सारी رضي الله عنه बयान करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ जब दुआ फरमाते तो अपनी मुबारक हथेलियों को अपने चेहरए अनवर के सामने कर लेते।''

٣٦٥ / ٣٩. عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رضي الله عنه رَأَيْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَدْعُو هَكَذَا بِبَاطِنِ كَفَّيْهِ وَظَاهِرِهِمَا. رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ وَأَحْمَدُ نَحْوَهُ.

''हज़रत अनस बिन मालिक رضي الله عنه बयान करते हैं कि मैंने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ को दुआ करते हुए देखा और आप ﷺ ने अपनी हथेलियों के बातिन और (बारिश माँगने वाली नमाज़ में) ज़ाहिर को यूँ किया हुआ था।''

٣٦٦ / ٤٠. عَنْ سَلْمَانَ رضي الله عنه عَنِ النَّبِيِّ ﷺ، قَالَ: إِنَّ اللهَ عزوجل

الحديث رقم ٣٨: أخرجه أحمد بن حنبل في المسند، ٤/ ٥٦، والسيوطي في الجامع الصغير، ١/ ١٤٦، الرقم: ٢١٧، ٢٤٧، والمزي في تهذيب الكمال، ٧/ ٧٧، الرقم: ١٤١٨، والعسقلاني في تلخيص الحبير، ٢/ ١٠٠، الرقم: ٧٢٣، والشوكاني في نيل الأوطار، ٤/ ٣٥.

الحديث رقم ٣٩: أخرجه أبوداود في السنن، كتاب: الصلاة، باب: الدعاء، ٢/ ٧٨، الرقم: ١٤٨٧، وأحمد بن حنبل في المسند، ٥/ ٤٢٧، الرقم: ٢٣٦٧٠، والشيباني في المبسوط، ١/ ١٠٢، والقرطبي في الجامع لأحكام القرآن، ١١/ ٣٣٧، وابن عدي في الكامل، ٥/ ٣٢، الرقم: ١٢٠٢.

الحديث رقم ٤٠/ ٤١/ ٤٢: أخرجه الطبراني في المعجم الكبير، ٦/ ٢٥٦، الرقم: ٦١٤٨، وفي كتاب الدعاء، ١/ ٨٤، الرقم: ٢٠٣، ٢٠٥، والهندي في كنز العمال، ٢/ ٨٧، الرقم: ٣٢٦٧.

لَيَسْتَحْيِي إِذَا رَفَعَ الْعَبْدُ يَدَيْهِ أَنْ يَرُدَّهُمَا صِفْرًا لَا شَيْءَ فِيهِمَا.
رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ.

''हज़रत सलमान ﷺ हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ से रिवायत करते हैं कि आप ﷺ ने फरमायाः बेशक अल्लाह ﷻ को इस बात से हया आती है कि उसका बन्दा दुआ के लिए (उसके सामने) हाथ उठाए और वो उन्हें खाली बग़ैर उन में कुछ डाले लौटा दे।''

٣٦٧/ ٤١. عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِذَا دَعَا الْعَبْدُ فَرَفَعَ يَدَيْهِ فَسَأَلَ، قَالَ اللهُ ﷻ: إِنِّي لَأَسْتَحْيِي مِنْ عَبْدِي أَنْ أَرُدَّهُ. رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ فِي الدُّعَاءِ.

''हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ बयान करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जब कोई बन्दा दुआ करता है और अपने हाथ को उठाता है और अल्लाह तआला से माँगता है तो अल्लाह तआला फरमाता है : बेशक मैं अपने इस बन्दे से हया करता हूँ कि मैं इसकी दुआ को रद्द कर दूँ।''

٣٦٨/ ٤٢. عَنْ عَلِيٍّ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّ رَبَّكُمْ حَيِيٌّ كَرِيْمٌ، يَسْتَحْيِي إِذَا رَفَعَ الْعَبْدُ يَدَيْهِ أَنْ يَرُدَّهُمَا صِفْرًا لَا خَيْرَ فِيهِمَا.
رَوَاهُ الدَّارَقُطْنِيُّ فِي الْأَفْرَادِ كَمَا قَالَ الْهِنْدِيُّ.

''हज़रत अली ﷺ बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया : बेशक तुम्हारा रब बड़ा हयादार और सख़ी है। उसे इस बात से हया आती है कि कोई बन्दा (दुआ के लिए उसके सामने) अपने हाथ उठाए और वो उन्हें ख़ाली, उनमें खैरात डाले बग़ैर वापस लौटा दे।''

٣٦٩/ ٤٣. عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَبَّاسٍ رضي الله عنهما أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: لَا تَسْتُرُوا الْجُدُرَ مَنْ نَظَرَ فِي كِتَابِ أَخِيْهِ بِغَيْرِ إِذْنِهِ فَإِنَّمَا يَنْظُرُ فِي

الحديث رقم ٤٣: أخرجه أبوداود في السنن، كتاب: الصلاة، باب: الدعاء، ٢/ ٧٨، الرقم: ١٤٨٥، والحاكم في المستدرك، ١/ ٧١٩، الرقم: ١٩٦٨، وابن أبي شيبة في المصنف، ٦/ ٥٢، الرقم: ٢٩٤٠٥، والبيهقي في السنن الكبرى، ٢/ ٢١٢، الرقم: ٢٩٦٩، والطبراني في المعجم الكبير، ١٠/ ٣١٩، الرقم: ١٠٧٧٩، وفي ←

النَّارِ سَلُوا اللهَ بِبُطُوْنِ أَكُفِّكُمْ وَلَا تَسْأَلُوهُ بِظُهُورِهِمَا فَإِذَا فَرَغْتُمْ فَامْسَحُوْا بِهَا وُجُوْهَكُمْ.

رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ وَالْحَاكِمُ وَابْنُ أَبِي شَيْبَةَ وَالْبَيْهَقِيُّ وَالطَّبَرَانِيُّ. وَرِجَالُهُ ثِقَاتٌ.

''हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास رضي الله عنهما से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : दीवारों को (पर्दों से) ना छुपाया करो और जो शख़्स अपने भाई के खत में बग़ैर उसकी इजाज़त के देखता है बेशक वो जहन्नम की आग में देखता है। अल्लाह तआला से हथेलियाँ ऊपर कर के सवाल किया करो और हाथों की पुश्त ऊपर न रखा करो और जब फ़ारिग़ हो जाओ तो उन्हें चेहरों पर मल लिया करो।''

٣٧٠ / ٤٤. عَنِ الْأَسْوَدِ الْعَامِرِيِّ عَنْ أَبِيْهِ ﷺ قَالَ: صَلَّيْتُ مَعَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ، الْفَجْرَ سَلَّمَ، انْحَرَفَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ وَدَعَا.

رَوَاهُ ابْنُ أَبِي شَيْبَةَ.

''हज़रत अस्वद आमिरी अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि मैंने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के साथ नमाज़े फ़ज्र अदा की फिर जब आप ﷺ ने सलाम फेरा तो एक तरफ रुख़े अनवर मोड़ कर अपने दोनों मुबारक हाथ उठाए और दुआ फरमाई।''

٣٧١ / ٤٥. عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ أَبِي يَحْيَى قَالَ: رَأَيْتُ عَبْدَ اللهِ بْنَ الزُّبَيْرَ

.... مسند الشاميين، ٢ / ٤٣٢، الرقم: ١٦٣٩، والشيباني في الأحاد والمثاني، ٤ / ٤١٠، الرقم: ٢٤٥٩، والديلمي في مسند الفردوس، ٢ / ٣٠٦، الرقم: ٣٣٨٣، والمقريزي في مختصر كتاب الوتر، ١ / ١٥٢، والهيثمي في مجمع الزوائد، ١٠ / ١٦٩، وقال: رجاله ثقات، والقرطبي في الجامع لأحكام القرآن، ١١ / ٣٣٧.

الحديث رقم ٤٤: أخرجه ابن أبي شيبة في المصنف، ١ / ٢٦٩، الرقم: ٣٠٩٣، والمباركفوري في تحفة الأحوذي، ٢ / ١٧١، وقال: رواه ابن أبي شيبة في مصنفه، وابن القدامة في المغني، ١ / ٣٢٨.

الحديث رقم ٤٥: أخرجه المقدسي في الأحاديث المختارة، ٩ / ٣٣٦، الرقم: ٣٠٣، والهيثمي في مجمع الزوائد، ١٠ / ١٦٩، وقال: رواه الطبراني وترجم له فقال ←

رضي الله عنهما وَرَأَى رَجُلًا رَافِعًا يَدَيْهِ يَدْعُو قَبْلَ أَنْ يَفْرُغَ مِنْ صَلَاتِهِ، فَلَمَّا فَرَغَ مِنْهَا قَالَ: لَهُ إِنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ لَمْ يَكُنْ يَرْفَعُ يَدَيْهِ حَتَّى يَفْرُغَ مِنْ صَلَاتِهِ. رَوَاهُ الْمَقْدَسِيُّ وَالطَّبَرَانِيُّ كَمَا قَالَ الْهَيْثَمِيُّ. وَقَالَ: وَرِجَالُهُ ثِقَاتٌ.

''मुहम्मद बिन अबी यह्या ﷺ रिवायत करते हैं कि मैंने हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رضي الله عنهما को देखा और उन्होंने एक आदमी को नमाज़ से फ़ारिग़ होने से क़ब्ल हाथ उठाए दुआ माँगते हुए देखा फिर जब वो नमाज़ से फ़ारिग़ हुआ तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर ﷺ ने उसे फरमाया : बेशक हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ (दुआ के लिए) हाथ नहीं उठाते थे यहाँ तक कि वो नमाज़ से फ़ारिग़ न हो जाएं।''

٣٧٢ / ٤٦ ـ عَنْ أَنَسٍ ﷺ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ قَالَ: مَا مِنْ عَبْدٍ بَسَطَ كَفَّيْهِ فِي دُبُرِ كُلِّ صَلَاةٍ ثُمَّ يَقُوْلُ: ﴿اللَّهُمَّ إِلَهِي وَإِلَهَ إِبْرَاهِيْمَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوْبَ، وَإِلَهَ جِبْرِيْلَ وَمِيْكَائِيْلَ وَإِسْرَافِيْلَ عليهم السلام أَسْأَلُكَ: أَنْ تَسْتَجِيْبَ دَعْوَتِي فَإِنِّي مُضْطَرٌّ، وَتَعْصِمَنِي فِي دِيْنِي، فَإِنِّي مُبْتَلًى، وَتَنَالَنِي بِرَحْمَتِكَ، فَإِنِّي مُذْنِبٌ، وتَنْفِيَ عَنِّي الْفَقْرَ، فَإِنِّي مُتَمَسْكِنٌ﴾ إِلَّا كَانَ حَقًّا عَلَى اللهِ ﷻ أَنْ لَا يَرُدَّ يَدَيْهِ خَائِبَتَيْنِ.

رَوَاهُ ابْنُ عَسَاكِرَ وَابْنُ السُّنِّيِّ وَاللَّفْظُ لَهُ وَالدَّيْلَمِيُّ وَالْهِنْدِيُّ.

''हज़रत अनस ﷺ ने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ से रिवायत किया कि आप ﷺ ने फरमाया : कोई भी बन्दा–ए–(मोमिन) ऐसा नहीं जो हर नमाज़ के बाद अपनी हथेलियाँ (दुआ के लिए) फैलाता है फिर यह कहता है : ''ऐ मेरे अल्लाह! ऐ मेरे और इब्राहीम और इस्हाक़ और याक़ूब عليهم السلام के माबूद और जिब्राईल और मीकाईल और इस्राफील عليهم السلام के माबूद

.... محمد بن يحيى الأسلمي عن عبدالله بن الزبير ورجاله ثقات، والمباركفورى في تحفة الأحوذي، ٢ / ١٠٠، وقال: رواه الطبراني ورجاله ثقات.

الحديث رقم ٤٦: أخرجه ابن عساكر، ١٦ / ٣٨٣، وابن السني في عمل اليوم والليلة، ١ / ٥٢، الرقم: ١٣٩؛ والديلمي في مسند الفردوس، ١ / ٤٨١، الرقم: ١٩٧٠، والهندي في كنز العمال، ٢ / ١٣٤، الرقم: ٣٤٧٥، والمباركفوري في تحفة الأحوزي، ٢ / ١٧١.

में तुझ से सवाल करता हूँ कि तू मेरी दुआ को कुबूल फरमा क्योंकि मैं मजबूर हूँ और तू मुझे मेरे दीन में मज़बूत रख क्योंकि मैं आज़माइश में हूँ और तू मुझे अपनी रहमत से ज़्यादा से ज़्यादा हिस्सा अ़ता फरमा क्योंकि मैं गुनाहगार हूँ और मुझसे फ़िक्र को दूर फरमा क्योंकि मैं एक मिस्कीन हूँ।' फिर अल्लाह तआ़ला अपने ज़िम्मए करम पर ले लेता है और उसके हाथ को नाकाम वापस नहीं लौटाता।''

٣٧٣/٤٧۔ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ ﷺ قَالَ: خَرَجْتُ مَعَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ مِنَ الْبَيْتِ إِلَى الْمَسْجِدِ، وَقَوْمٌ فِي الْمَسْجِدِ رَافِعِي أَيْدِيَهُمْ يَدْعُوْنَ اللهَ ﷻ، فَقَالَ لِي رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: هَلْ تَرَى مَا أَرَى بِأَيْدِي الْقَوْمِ؟ فَقُلْتُ: مَا تَرَى فِي أَيْدِيْهِمْ؟ فَقَالَ: نُورٌ قُلْتُ: أُدْعُ اللهَ أَنْ يُرِيَنِيْهِ، قَالَ: فَدَعَا، فَرَأَيْتُهُ، فَقَالَ: يَا أَنَسُ، اسْتَعْجِلْ بِنَا حَتَّى نُشْرِكَ الْقَوْمَ، فَأَسْرَعْتُ مَعَ نَبِيِّ اللهِ ﷺ فَرَفَعْنَا أَيْدِيَنَا.

رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ فِي الْكَبِيْرِ وَالطَّبَرَانِيُّ فِي الدُّعَاءِ وَاللَّفْظُ لَهُ.

''हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ बयान करते हैं कि मैं रसूलुल्लाह ﷺ के साथ घर से मस्जिद की तरफ़ निकला और कुछ लोग मस्जिद में अपने हाथों को उठाये अल्लाह ﷻ से दुआ माँग रहे थे तो मुझे हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : क्या तुम वो चीज़ देख रहे हो जो उन के हाथों में है ? तो मैंने अ़र्ज़ किया : आप उन के हाथों में क्या देख रहे हैं ? तो आप ﷺ ने फरमाया : (मैं उनके हाथों में) नूर (देख रहा हूँ) मैंने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! अल्लाह तआ़ला से दुआ फरमाएं कि वो मुझे भी यह नूर दिखाए, हज़रत अनस बयान करते हैं फिर आप ﷺ ने फरमाया : ऐ अनस! जल्दी करो यहाँ तक कि हम भी उन लोगों के साथ (दुआ में) शरीक हो सकें। फिर मैं हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के साथ जल्दी–जल्दी उन लोगों की तरफ़ गया फिर हम ने भी दुआ के लिए हाथ उठा लिए।''

الحديث رقم ٤٧: أخرجه البخاري في التاريخ الكبير، ٣/٢٠٢، الرقم: ٦٩٢، والطبراني في كتاب الدعاء، ١/٨٥، الرقم: ٢٠٦.

٣٧٤ / ٤٨. عَنِ الْفَضْلِ بْنِ عَبَّاسٍ رضي الله عنهما قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: الصَّلَاةُ مَثْنَى، مَثْنَى تَشَهَّدُ فِي كُلِّ رَكْعَتَيْنِ، وَتَخَشَّعُ وَتَضَرَّعُ، وَتَمَسْكَنُ وَتَذَرَّعُ وَتُقْنِعُ يَدَيْكَ تَقُوْلُ تَرْفَعُهُمَا إِلَى رَبِّكَ مُسْتَقْبِلاً بِبُطُوْنِهِمَا وَجْهَكَ وَتَقُوْلُ: يَا رَبِّ يَا رَبِّ، وَمَنْ لَمْ يَفْعَلْ ذٰلِكَ فَهُوَ كَذَا وَكَذَا. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ وَأَحْمَدُ وَالطَّبَرَانِيُّ.

''हज़रत फ़ज़्ल बिन अब्बास رضي الله عنهما रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमायाः नमाज़ (नफ़्ल) दो दो रकअतें हैं हर दो रकअत के बाद तशहहुद है, ख़ुशूअ व ख़ुज़ूअ सुकून और अपने रब की तरफ़ हाथों को (दुआ में) इस तरह उठाना कि उन का अन्दरूनी हिस्सा मुँह के सामने रहे और फिर कहना : ऐ रब ! ऐ रब ! जिसने ऐसा न किया वो ऐसा है वो ऐसा है।''

٣٧٥ / ٤٩. عَنِ الْمُطَّلِبِ رضي الله عنه عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: الصَّلَاةُ مَثْنَى مَثْنَى أَنْ تَشَهَّدَ فِي كُلِّ رَكْعَتَيْنِ وَأَنْ تَبَأَّسَ وَتَمَسْكَنَ وَتُقْنِعَ بِيَدَيْكَ وَتَقُوْلُ: اللّٰهُمَّ اللّٰهُمَّ فَمَنْ لَمْ يَفْعَلْ ذٰلِكَ فَهِيَ خِدَاجٌ.

رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ وَابْنُ مَاجَه وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ خُزَيْمَةَ.

الحديث رقم ٤٨: أخرجه الترمذي في السنن، كتاب: الصلاة عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء في التخشع في الصلاة، ٢ / ٢٢٥، الرقم: ٣٨٥، والنسائي في السنن الكبرى، ١ / ٢١٢، ٤٥٠، الرقم: ٦١٥، ١٤٤٠، وأحمد بن حنبل في المسند، ٤ / ١٦٧، والطبراني في المعجم الكبير، ١٨ / ٢٩٥، الرقم: ٧٥٧، والمنذري في الترغيب والترهيب، ١ / ٢٠٣، الرقم: ٧٧٠، وأبو المحاسن في المعتصر المختصر، ١ / ٣٨، وابن رجب في جامع العلوم والحكم، ١ / ١٠٦، وابن قتيبة في تأويل مختلف الحديث، ١ / ١٦٨.

الحديث رقم ٤٩: أخرجه أبوداود في السنن، كتاب: الصلاة، باب: في صلاة النهار، ٢ / ٢٩، الرقم: ١٢٩٦، وابن ماجه في السنن، كتاب: إقامة الصلاة والسنة فيها، باب: ماجاء في صلاة الليل والنهار مثنى مثنى، ١ / ٤١٩، الرقم: ١٣٢٥، والنسائي في السنن الكبرى، ١ / ٢١٢، ٤٥١، الرقم: ٦١٦، ١٤٤١، وابن خزيمة في الصحيح، ٢ / ٢٢٠-٢٢١، الرقم: ١٢١٢-١٢١٣، وأحمد بن حنبل في المسند، ←

وقال الإمام ابن خزيمة بعد تخريج الحديث المذكور: في هذا الخبر زيادة شرح ذكر رفع اليدين ليقول: اللَّهُمَّ اللَّهُمَّ، وفي خبر الليث ترفعهما إلى ربک تستقبل بهما وجهک وتقول: يا ربّ يا ربّ، ورفع اليدين وتشهد قبل التسليم ليس من سنة الصلاة، وهذا دالٌّ على أنه إنما أمره برفع اليدين والدعا والمسألة بعد التسليم من المثنى.

''हज़रत मुत्तलिब ﷺ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : नमाज़ की दो दो रकअतें हैं हर दो रकअत पर तशह्हुद है और (नमाज़ से फ़राग़त के बाद बन्दा अपने परवरदिगार की बारगाह में) मुसीबत व ग़ुरबत का हाल अ़र्ज़ करता है दोनों हाथ फैला कर कहता है, या अल्लाह ! (यह अ़ता फरमा वो अ़ता फरमा) या अल्लाह ! जो ऐसा न करे उसकी नमाज़ ना मुकम्मल है।''

इमाम इब्ने ख़ुज़ैमा अपनी सहीह में इस हदीस की तख़रीज के बाद फरमाते हैं : इस हदीस में दुआ में हाथ उठाने की मज़ीद शरह है और यह कि दुआ माँगने वाले को कहना चाहिए: ऐ मेरे अल्लाह! ऐ मेरे अल्लाह! और लैस की रिवायत में है कि दुआ माँगने वाला अपने दोनों हाथ अल्लाह की तरफ़ उठाए और उन्हें अपने चेहरे के सामने रखे और यह कहे : ऐ मेरे रब! ऐ मेरे रब! और रफ़ा'यदैन और सलाम से पहले तशहहुद सुन्नत नमाज़ में से नहीं है और यह चीज़ इस बात पर दलालत करती है कि रफ़ा'यदैन, और दुआ, और सवाल करना सलाम के बाद है यानी दोनों तरफ़ सलाम फेरने के बाद (और नमाज़ मुकम्मल करने के बाद) दोनों हाथ उठा कर दुआ करनी चाहिए।''

٣٧٦ / ٥٠۔ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رضي الله عنهما قَالَ: اَلْمَسْأَلَةُ أَنْ تَرْفَعَ يَدَيْکَ

.... ٤ / ١٦٧، والدارقطني في السنن، ١ / ٤١٨، الرقم: ٤، والبيهقي في السنن الكبرى، ٢ / ٤٨٨، الرقم: ٤٣٥٤، والديلمي في مسند الفردوس، ٢ / ٤٠٧، الرقم: ٣٨١١، والمنذري في الترغيب والترهيب، ١ / ٢٠٣، الرقم: ٧٧٠.

الحديث رقم ٥٠: أخرجه أبو داود في السنن، كتاب: الصلاة، باب: الدعاء، ٢ / ٧٩، الرقم: ١٤٨٩۔ ١٤٩٠، وعبد الرزاق في المصنف، ٢ / ٢٥٠، الرقم: ٣٢٤٧، والطبراني في كتاب الدعاء، ١ / ٨٦، الرقم: ٢٠٨، والمقدسي في الأحاديث المختارة، ٩ / ٤٨٦، الرقم: ٤٦٨۔٤٦٩، والعسقلاني في فتح الباري، ١١ / ١٤٣، ←

حَذْوَ مَنْكِبَيْكَ أَوْ نَحْوَهُمَا وَالْإِسْتِغْفَارُ أَنْ تُشِيْرَ بِإِصْبَعٍ وَاحِدٍ وَالابْتِهَالُ أَنْ تَمُدَّ يَدَيْكَ جَمِيْعًا.

وفي رواية: عَنْ عَبَّاسِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَعْبَدِ بْنِ عَبَّاسٍ ﷺ بِهَذَا الْحَدِيْثِ قَالَ فِيْهِ وَالابْتِهَالُ هَكَذَا وَرَفَعَ يَدَيْهِ وَجَعَلَ ظُهُوْرَهُمَا مِمَّا يَلِي وَجْهَهُ. رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ وَعَبْدُ الرَّزَّاقِ وَالطَّبَرَانِيُّ.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رضي الله عنهما फरमाते हैं : माँगने का तरीक़ा यह है कि अपने दोनों हाथ अपने कन्धों तक उठाओ या उन के बराबर और इस्तग़फ़ार एक उंगली से इशारा करना है और आ़जिज़ी का इज़हार दोनों हाथों का इकट्ठे फैलाना है।

और हज़रत अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल्लाह बिन माबद बिन अ़ब्बास ﷺ इसी हदीस की रिवायत में फरमाते हैं कि आ़जिज़ी का इज़हार इस तरह है : फिर उन्होंने अपने दोनों हाथ उठाए और उनकी पुश्त अपने चहरे के सामने रखी।''

٣٧٧ / ٥١ـ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رضي الله عنهما قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِذَا دَعَوْتَ اللهَ، فَادْعُ بِبُطُوْنِ كَفَّيْكَ. وَلَا تَدْعُ بِظُهُوْرِهِمَا. فَإِذَا فَرَغْتَ فَامْسَحْ بِهِمَا وَجْهَكَ. رَوَاهُ ابْنُ مَاجَه.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رضي الله عنهما से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जब अल्लाह ﷻ से दुआ करो तो अपने हाथों की हथेलियों

.... وقال: أخرجه أبوداود والحاكم، وفي الدراية في تخريج أحاديث الهداية، ٢/ ١٧، الرقم: ٤٢٦، والزيلعي في نصب الراية، ٣/ ٥١، والصنعاني في سبل السلام، ٤/ ٢١٩، والزرقاني في شرح الموطأ، ٢/ ٥٩، الرقم: ١٢٣، والمناوي في فيض القدير، ١/ ١٨٤، والعظيم آبادي في عون المعبود، ٤/ ٢٥٣.

الحديث رقم ٥١: أخرجه ابن ماجه فى السنن، كتاب: الدعاء، باب: رفع اليدين فى الدعاء، ٢/ ١٢٧٢، الرقم: ٣٨٦٦، وفى كتاب: إقامة الصلاة والسنة فيها، ١/ ٣٧٣، الرقم: ١١٨١، والكنانى فى مصباح الزجاجة، ١/ ١٤١، الرقم: ٤٢٢، والمقريزى فى مختصر كتاب الوتر، ١/ ١٥١، الرقم: ٦٥، والسيوطى فى شرح سنن ابن ماجه، ١/ ٢٧٥، الرقم: ٣٨٦٦.

से दुआ किया करो न कि उनकी पुश्त से और जब दुआ से फ़ारिग़ हो जाओ तो अपने हाथों को मुँह पर मल लो।''

٣٧٨ / ٥٢۔ وقال الإمام البيهقي (٣٨٤-٤٥٨هـ) في الشعب وأما آدابه:

فَمِنْهَا: الْمُحَافَظَةُ عَلَى الدُّعَاءِ فِي الرَّخَاءِ دُوْنَ تَخْصِيْصِ حَالِ الشِّدَّةِ وَالْبَـلَاءِ.

وَمِنْهَا: افْتِتَاحُ الدُّعَاءِ وَخَتْمُهُ بِالصَّلَاةِ عَلَى رَسُوْلِ اللهِ ﷺ.

وَمِنْهَا: أَنْ يَّدْعُوَ فِي دُبُرِ صَلَوَاتِهِ.

وَمِنْهَا: أَنْ يَرْفَعَ الْيَدَيْنِ حَتَّى يُحَاذِيَ بِهِمَا الْمَنْكِبَيْنِ إِذَا دَعَا.

وَمِنْهَا: أَنْ يَمْسَحَ وَجْهَهُ بِيَدَيْهِ إِذَا فَرَغَ مِنَ الدُّعَاءِ.

''इमाम बैहक़ी ने ''शा'बुल ईमान'' में फरमाया : आदाबे दुआ में से हैं : (इन्सान का) हमेशा दुआ पर इस्तिक़ामत इख़्तियार करना ख़्वाह वो ख़ुशहाली में हो और दुआ को सिर्फ सख़्ती और मुसीबत के (वक्त के) साथ ख़ास न करे।

और यह कि दुआ के आग़ाज और आख़िर में हुज़ूर नबी-ए-अकरम ﷺ पर दुरूद भेजना, और यह कि अपनी (तमाम) नमाज़ों के बाद दुआ करना।

और यह कि (दोनों) हाथों को दुआ में अपने कन्धों के बराबर बुलन्द करना।

और यह कि दुआ से फ़ारिग़ होकर अपने हाथों को चेहरे पर फेरना।''

٣٧٩ / ٥٣۔ وقال الإمام أبوزكريا يحيى بن شرف النووي (٦٣١-٦٧٦هـ): قَالَ جَمَاعَةٌ مِنْ أَصْحَابِنَا وَغَيْرِهِمُ السُّنَّةُ فِي كُلِّ دُعَاءٍ لِرَفْعِ بَلَاءٍ كَالْقَحْطِ وَنَحْوِهِ أَنْ يَّرْفَعَ يَدَيْهِ وَيَجْعَلَ

الحديث رقم ٥٢: أخرجه البيهقي في شعب الإيمان، ٢/ ٤٥.

الحديث رقم ٥٣: أخرجه النووي في شرحه على صحيح مسلم، ٦/ ١٩٠.

ظَهْرَ كَفَّيْهِ إِلَى السَّمَاءِ احْتَجُّوا بِهَذَا الْحَدِيْثِ قوله: عَنْ أَنَسٍ رضي الله عنه أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ لَا يَرْفَعُ يَدَيْهِ فِي شَيءٍ مِنْ دُعَائِهِ إِلَّا فِي الاسْتِسْقَاءِ حَتَّى يُرَى بَيَاضُ ابْطَيْهِ، هَذَا الْحَدِيْثُ يُوْهِمُ ظَاهِرُهُ أَنَّهُ لَمْ يَرْفَعْ ﷺ إِلَّا فِي الاسْتِسْقَاءِ وَلَيْسَ الْأَمْرُ كَذَلِكَ بَلْ قَدْ ثَبَتَ رَفْعُ يَدَيْهِ ﷺ فِي الدُّعَاءِ فِي مَوَاطِنَ غَيْرَ الاسْتِسْقَاءِ وَهِيَ أَكْثَرُ مِنْ أَنْ تُحْصَرَ وَقَدْ جَمَعْتُ مِنْهَا نَحْوًا مِنْ ثَلاثِيْنَ حَدِيْثًا مِنَ الصَّحِيْحَيْنِ أَوْ أَحَدِهِمَا.

''इमाम अबू ज़करिया यहया बिन शर्फ नववी ने फरमाया : हमारे उलमा किराम और कुछ दीगर ने कहा है कि हर दुआ में जो किसी मुसीबत जैसे क़हत वग़ैरह के टालने के लिए हो हाथ उठाना सुन्नत है और वो इस तरह कि अपनी हथेलियों की पुश्त आसमान की तरफ़ करे। इस हदीस को दलील बनाते हुए कुछ लोगों ने हज़रत अनस رضي الله عنه का कौल बयान किया है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ नमाज़े इस्तिस्क़ा (बारिश माँगने वाली नमाज़) के अलावा दुआ में हाथ बुलन्द नहीं फरमाते थे हत्ता कि (जब आप हाथ बुलन्द फरमाते तो) आप ﷺ की बग़लों की सफेदी मुबारक नज़र आती थी। इस हदीस का ज़ाहिर यह वहम डालता है कि नमाज़े इस्तिस्क़ा (बारिश माँगने वाली नमाज़) के अलावा हाथ बुलन्द नहीं फरमाते थे जबकि दर हक़ीक़त मामला ऐसा हरगिज़ नहीं बल्कि यह बात साबित है कि आप ﷺ ने नमाजे इस्तिस्क़ा के अलावा दीगर मौकों पर भी हाथ उठा कर दुआ माँगी है और यह मौक़े बेशुमार हैं और मैंने सहीहैन या इन दोनों में से किसी एक में से इस तरह की तीस हदीसें जमा की हैं।''

٣٨٠ / ٥٤۔ قال الإمام ابن تيمية (٦٦١–٧٢٨هـ) في الفتاوى:

وَإِنْ أَرَادَ أَنَّ مَنْ دَعَا اللهَ لاَ يَرْفَعُ إِلَيْهِ يَدَيْهِ فَهَذَا خِلَافُ مَا تَوَاتَرَتْ بِهِ السُّنَنُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ، وَمَا فَطَرَ اللهُ عَلَيْهِ عِبَادَهُ مِنْ

الحديث رقم ٥٤: أخرجه ابن تيمية في مجموع فتاوى، ٥/ ٢٦٥۔

رَفْعِ الْأَيْدِي إِلَى اللهِ فِي الدُّعَاءِ.

''शैख़ इब्ने तैमिया ने अपने फ़तवों में बयान किया कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ से हाथ उठा कर दुआ माँगना इस कसरत से साबित है कि इसका शुमार नहीं किया जा सकता। नीज़ फरमाते हैं कि इसकी मु–तवातिरह हैं और अगर इससे किसी ने यह मुराद लिया है कि दुआ करने वाला अपने हाथ न उठाए तो यह हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ से मन्क़ूल सुनने मु–तवातिरह के ख़िलाफ़ है और उस (इन्सानी) फ़ितरत के भी ख़िलाफ़ है जिस पर अल्लाह तआला के बन्दे हैं (यानी माँगने वाला हमेशा हाथ बढ़ाता है) और यह है कि दुआ में अल्लाह तआला की तरफ़ हाथ बुलन्द किये जाएँ।''

٣٨١/٥٥. وأخرج الإمام ابن رجب الحنبلي (٧٣٦–٧٩٥هـ): مَدَّ يَدَيْهِ إِلَى السَّمَاءِ وَهُوَ مِنْ آدَابِ الدُّعَاءِ الَّتِي يُرْجَى بِسَبَبِهَا إِجَابَتُهُ.

''इमाम इब्ने रजब हम्बली ने एक तवील हदीस में (हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के एक सहाबी की कैफ़ियते दुआ बयान करते हुए) बयान किया : उन्होंने अपने हाथ आसमान की तरफ़ बुलन्द किए और यह आदाबे दुआ में से है जिस के सबब उम्मीदे क़ुबूलियत रखी जाती है।''

٣٨٢/٥٦. وقال الإمام جلال الدين السّيوطي (٨٤٩–٩١١هـ): أَحَادِيثُ رَفْعِ الْيَدَيْنِ فِي الدُّعَاءِ فَقَدْ وَرَدَ عَنْهُ ﷺ نَحْوُ مِائَةِ حَدِيثٍ فِيهِ رَفْعَ يَدَيْهِ فِي الدُّعَاءِ وَقَدْ جَمَعْتُهَا فِي جُزْءٍ ﴿فض الوعا في أحاديث رفع اليدين في الدعاء﴾ لَكِنَّهَا فِي قَضَايَا مُخْتَلِفَةٍ فَكُلُّ قَضِيَةٍ مِنْهَا لَمْ تَتَوَاتَرْ وَالْقَدْرُ الْمُشْتَرَكُ فِيهَا وَهُوَ

الحديث رقم ٥٥: أخرجه ابن رجب في جامع العلوم والحكم، ١/١٠٥.
الحديث رقم ٥٦: أخرجه السيوطي في تدريب الراوي، ٢/١٨٠.

الرَّفْعُ عِنْدَ الدُّعَاءِ تَوَاتَرَ بِاعْتَبَارِ الْمُجْمُوْعِ.

''इमाम जलालुद्दीन सुयूती ने फरमायाः दुआ के लिए हाथ उठाने के बारे में हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ से तक़रीबन सौ के क़रीब अहादीस मन्क़ूल हैं जिन में यह मज़कूर है कि आप ﷺ ने दुआ में हाथ बुलन्द फरमाए हैं इन तमाम अहदीस को मैंने एक मुस्तक़िल किताब (فض الوعا في أحاديث رفع اليدين في الدعاء) में जमा कर दिया है अगर चे यह दुआएँ मुख़्तलिफ़ क़ज़ाया से मुतअल्लिक़ हैं मगर इन में हाथ उठाना चूंकि क़द्रे मुश्तरक़ है इसलिए यह (हाथ उठा कर दुआ करना) मजमूई ऐतिबार से अहदीसे मु–तवातिर (से साबित) हो गया।''

बाब 7 : اَلْبَابُ السَّابِعُ:

الإِخْلاصُ وَالرَّقَائِقُ

इख़लास और रिक़्क़ते क़ल्ब

1. فَصْلٌ فِي أَنَّ الْأَعْمَالَ بِالنِّيَّاتِ

﴿आमाल का दारोमदार निय्यतों पर होने का बयान﴾

2. فَصْلٌ فِي الزُّهْدِ فِي الدُّنْيَا

﴿दुनिया से बेरग़बती का बयान﴾

3. فَصْلٌ فِي الصِّدْقِ وَالإِخْلَاصِ

﴿सच्चाई और इख़्लास का बयान﴾

4. فَصْلٌ فِي أَجْرِ الْحُبِّ فِي اللهِ تَعَالَى

﴿अल्लाह ﷻ के लिए मुहब्बत करने के सवाब का बयान﴾

5. فَصْلٌ فِي حُسْنِ الظَّنِّ بِاللهِ تَعَالَى

﴿अल्लाह ﷻ के बारे में हुस्ने ज़न रखने का बयान﴾

6. فَصْلٌ فِي الْبُكَاءِ مِنْ خَشْيَةِ اللهِ تَعَالَى

﴿अल्लाह ﷻ के ख़ौफ़ से रोने का बयान﴾

7. فَصْلٌ فِي قِرَاءَةِ الْقُرْآنِ وَتَحْسِيْنِ الصَّوْتِ بِهَا

﴿अच्छी आवाज़ से तिलावते कुरआन करने का बयान﴾

8. فَصْلٌ فِي الْقَنَاعَةِ وَتَرْكِ الطَّمْعِ

﴿क़नाअत इख़्तियार करने और लालच से बचने का बयान﴾

9. فَصْلٌ فِي التَّوْبَةِ وَالاسْتِغْفَارِ

तौबा और इस्तग़फ़ार का बयान

10. فَصْلٌ فِي الْأَذْكَارِ وَالتَّسْبِيحَاتِ

अज़कार और तस्बीहात का बयान

فَصْلٌ فِي أَنَّ الْأَعْمَالَ بِالنِّيَّاتِ

﴿आमाल का दारोमदार निय्यतों पर होने का बयान﴾

١/٣٨٣۔ عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: الْأَعْمَالُ بِالنِّيَّةِ، وَلِكُلِّ امْرِئٍ مَا نَوَى، فَمَنْ كَانَتْ هِجْرَتُهُ إِلَى اللهِ وَرَسُوْلِهِ فَهِجْرَتُهُ إِلَى اللهِ وَرَسُوْلِهِ، وَمَنْ كَانَتْ هِجْرَتُهُ لِدُنْيَا يُصِيْبُهَا، أَوِ امْرَأَةٍ يَتَزَوَّجُهَا، فَهِجْرَتُهُ إِلَى مَا هَاجَرَ إِلَيْهِ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ وَهَذَا لَفْظُ الْبُخَارِيِّ.

''हज़रत उमर बिन ख़त्ताब ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः आमाल का दारोमदार निय्यत पर है और हर शख़्स के लिए वही है जिसकी उसने निय्यत की, फिर जिसने अल्लाह तआला और उसके रसूल ﷺ की तरफ़ हिजरत की। उसकी हिजरत अल्लाह तआला और उसके रसूल ﷺ के लिए ही शुमार होगी, और जिसकी हिजरत

الحديث رقم ١: أخرجه البخاري فى الصحيح، كتاب: الإيمان، باب: ماجاءَ أَنَّ الأعمال بالنِيّةِ والحِسْبَةِ وَ لِكُلِّ امْرِئٍ مَانَوَى، ١/٣٠، الرقم: ٥٤، وفي كتاب: العتق، باب: الخطا والنسيان في العتاقة والطلاق ونحوه ولا عتاقه إلا لوجه الله، ٢/٨٩٤، الرقم: ٢٣٩٢، وفى كتاب: المناقب، باب: هجرة النبي ﷺ وأصحابه إلى المدينة، ٣/١٤١٦، الرقم: ٣٦٨٥، وفى كتاب: الأيمان والنذور، باب: النية فى الأيمان، ٦/٢٤٦١، الرقم: ٦٣١١، وفى كتاب: الحيل، باب: فى ترك الحيل وأن لكل امرىء مانوى في الأيمان وغيرها، ٦/٢٥٥١، الرقم: ٦٥٥٣، وفى كتاب: بدء الوحي، باب: كيف كان بدء الوحي، ١/٣، الرقم: ١، ومسلم فى الصحيح، كتاب: الإمارة، باب: قوله إنما الأعمال بالنية وأنه يدخل فيه الغزو وغيره من الأعمال، ٣/١٥١٥، الرقم: ١٩٠٧، والترمذى فى السنن، كتاب: فضائل الجهاد عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء فيمن يقاتل رياء وللدنيا، ٤/١٧٩، الرقم: ١٦٤٧، وأبو داود فى السنن، كتاب: الطلاق، باب: فيها عني به الطلاق والنيات، ٢/٢٦٢، الرقم: ٢٢٠١، والنسائى فى السنن، كتاب: الأيمان والنذور، باب: النية في اليمين، ٧/١٣، الرقم: ٣٧٩٤، وابن ماجه فى السنن، كتاب: الزهد، باب: النية، ٢/١٤١٣، الرقم: ٤٢٢٧۔

दुनिया हासिल करने या किसी औरत से शादी करने के लिए हुई तो उसकी हिजरत उसी के लिए है जिस की तरफ़ उसने हिजरत की।''

٣٨٤ / ٢۔ عَنْ عَائِشَةَ رضي الله عنها قَالَتْ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَا هِجْرَةَ بَعْدَ الْفَتْحِ، وَلَكِنْ جِهَادٌ وَنِيَّةٌ، وَ إِذَا اسْتُنْفِرْتُمْ فَانْفِرُوْا.

مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत आइशा رضي الله عنها से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया: फ़तहे (मक्का) के बाद (मक्का मुकर्रमा से) हिजरत नहीं, हाँ जिहाद और निय्यत बाक़ी है। जब तुम्हें जिहाद की तरफ़ बुलाया जाए तो फ़ौरन निकल पड़ो।''

٣٨٥ / ٣۔ عَنْ أَبِي بَكْرَةَ نُفَيْعِ بْنِ الْحَارِثِ الثَّقَفِيِّ رضي الله عنه أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: إِذَا الْتَقَى الْمُسْلِمَانِ بِسَيْفَيْهِمَا، فَالْقَاتِلُ وَالْمَقْتُوْلُ فِي النَّارِ. قُلْتُ: يَا رَسُوْلَ اللهِ، هَذَا الْقَاتِلُ فَمَا بَالُ الْمَقْتُوْلِ؟ قَالَ: إِنَّهُ كَانَ رَيْصًا

الحديث رقم ٢: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: الجهاد والسير، باب: فضل الجهاد والسِّيَر، ٣ / ١٠٢٥، الرقم: ٢٦٣١، وفى باب: وجُوبِ النَّفِيْرِ، ما يجِبُ مِنَ الجهَادِ وَالنِّيَّةِ، ٤ / ١٠٤٠، الرقم: ٢٦٧٠، وفى باب: لا هِجْرَةَ بَعْدَ الفتح، ٣ / ١١٢٠، الرقم: ٢٩١٢، ومسلم فى الصحيح، كتاب: الإمارة، باب: المبايعة بعد فتح مكة على الإسلام والجهاد والخير، وبيان معنى لا هجرة بعد الفتح، ٣ / ١٤٨٨، الرقم: ١٨٦٣۔ ١٨٦٤، والترمذى فى السنن، كتاب: السِّيَر عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء فى الهجرة، ٤ / ١٤٨، الرقم: ١٥٩٠، وَ قَالَ أَبُوعِيْسَى: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ، وابن الجارود فى المنتقى، ١ / ٢٥٧، الرقم: ١٠٣٠، وابن حبان فى الصحيح، ١٠ / ٤٥٢، الرقم: ٤٥٩٢، والدارمى فى السنن، ٢ / ٣١٢، الرقم: ٢٥١٢، وابن أبى شيبة فى المصنف، ٧ / ٤٠٨، الرقم: ٣٦٩٣٢، وأحمد بن حنبل فى المسند، ١ / ٢٢٦، الرقم: ١٩٩١، ٣٣٣٥، وأبويعلى فى المسند، ٨ / ٣٦٢، الرقم: ٤٩٥٢، والطبرانى فى المعجم الكبير، ١٠ / ٣٣٩، الرقم: ١٠٨٤٤۔

الحديث رقم ٣: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: الإيمان، باب: وَ إِنْ طائِفَتَانِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اقْتَتَلُوا فَأَصْلِحُوا بَيْنَهُمَا، الحجرات: (٩)، فَسَمَّاهُمُ الْمُؤْمِنِيْنَ، ←

عَلَى قَتْلِ صَاحِبِهِ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अबू बक्र नुफ़ैअ बिन हारिस सक़फ़ी ﷺ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : जब दो मुसलमान अपनी तलवारों के साथ मिलें (आपस में लड़ें) तो कातिल और मक़तूल दोनों जहन्नम में हैं। मैंने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! क़ातिल के मुतअ़ल्लिक़ तो दुरुस्त (है) लेकिन मक़तूल क्यों ? फरमाया : क्योंकि वो भी अपने दुश्मन को क़त्ल करने का तमन्नाई था।''

٣٨٦ / ٤۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ صَخْرٍ ﷺ، قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّ اللهَ لَا يَنْظُرُ إِلَى أَجْسَادِكُمْ، وَلَا إِلَى صُوَرِكُمْ وَلَكِنْ يَنْظُرُ إِلَى قُلُوْبِكُمْ. وفي رواية بلفظ: إِنَّ اللهَ لَا يَنْظُرُ إِلَى صُوَرِكُمْ وَأَمْوَالِكُمْ وَلَكِنْ يَنْظُرُ إِلَى قُلُوْبِكُمْ وَأَعْمَالِكُمْ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَابْنُ مَاجَه.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : बेशक अल्लाह तआला न तुम्हारे जिस्मों को देखता है और न ही तुम्हारी सूरतों को, बल्कि वो

...... ١ / ٢٠، الرقم: ٣١، وفى كتاب: الديات، باب: قول الله تعالى: وَ مَنْ أَحْيَاهَا [المائدة: ٣٢]، ٦ / ٢٥٢٠، الرقم: ٦٤٨١، وفى كتاب: الفتن، باب: إذا الْتَقَى الْمُسْلِمَانِ بِسَيْفَيْهِمَا، ٤ / ٢٢١٤، الرقم: ٦٦٧٢، ومسلم فى الصحيح، كتاب: الفتن وأشراط الساعة، باب: إذا تواجه المسلمان بِسَيْفَيْهِمَا، ٤ / ٢٢١٤، الرقم: ٢٨٨٨، وابن ماجه فى السنن، كتاب: الفتن، باب: إذا التقى المسلمان بِسَيْفَيْهِمَا، ٢ / ١٣١١، الرقم: ٣٩٦٣۔ ٣٩٦٤، والبزار فى المسند، ٩ / ١٠٤، والمنذري فى الترغيب والترهيب، ٣ / ٣١٩، الرقم: ٤٢٥١، وابن رجب فى جامع العلوم والحكم، ١ / ٣٥٤۔

الحديث رقم ٤: أخرجه مسلم فى الصحيح، كتاب: البر والصلة والآداب، باب: تحريم ظلم المسلم وخذله واحتقاره ودمه وعرضه وماله، ٤ / ١٩٨٦، الرقم: ٢٥٦٤، وابن ماجه فى السنن، كتاب: الزهد، باب: القناعة، ٢ / ١٣٨٨، الرقم: ٤١٤٣، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٢ / ٢٨٤، الرقم: ٧٨١٤، والبيهقى فى شعب الإيمان، ٧ / ٥٠٨، الرقم: ١١١٥١، والديلمى فى مسند الفردوس، ١ / ١٦٦، الرقم: ٦١٤، وابن المبارك فى كتاب الزهد، ١ / ٥٤٠، الرقم: ١٥٤٤۔

तुम्हारे दिलों को देखता है। (और एक रिवायत में यह अल्फ़ाज़ हैं :) ''बेशक अल्लाह तआला तुम्हारी शक्लों और तुम्हारी दौलत को नहीं देखता बल्कि वो तुम्हारे दिलों और आमाल को देखता है।''

٣٨٧ / ٥۔ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ السَّاعِدِيِّ رضي الله عنه، قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِنْ عَمَلِهِ، وَعَمَلُ الْمُنَافِقِ خَيْرٌ مِنْ نِيَّتِهِ، وَكُلٌّ يَّعْمَلُ عَلَى نِيَّتِهِ، فَإِذَا عَمِلَ الْمُؤْمِنُ عَمَلًا ثَارَ فِي قَلْبِهِ نُوْرٌ.

رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ وَالدَّيْلَمِيُّ وَرِجَالُهُ مُوَثَّقُوْنَ.

''हज़रत सहल बिन सा'द साइदी رضي الله عنه से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : मोमिन की निय्यत उसके अ़मल से बेहतर और मुनाफ़िक़ का अमल उस की निय्यत से बेहतर है और हर एक अपनी निय्यत पर अ़मल करता है। फिर जब मोमिन कोई (नेक) अमल करता है तो उस (नेक अ़मल की बरकत के बाइस उस) के दिल में नूर फूट पड़ता है।''

الحديث رقم ٥: أخرجه الطبراني في المعجم الكبير، ٦ / ١٨٥، الرقم: ٥٩٤٢، والديلمي في مسند الفردوس، ٤ / ٢٨٥، الرقم: ٦٨٤٢، والربيع عن عبد الله بن عباس في المسند، ١ / ٢٣، الرقم: ١، والقضاعي في مسند الشهاب، ١ / ١١٩، الرقم: ١٤٨، والبيهقي في شعب الإيمان، ٥ / ٣٤٣، الرقم: ٦٨٦٠ والهيثمي في مجمع الزوائد، ١ / ٦١ وقال رجاله موثّقون.

فَصْلٌ فِي الزُّهْدِ فِي الدُّنْيَا

दुनिया से बेरग़बती का बयान

٣٨٨ / ٦۔ رَوَى أَبُوْحَنِيْفَةَ رضي الله عنه قَالَ حَدَّثَنِي دَاوُدُ عَنْ عُمَرَ بْنِ أَبِي زَائِدَةَ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رضي الله عنهما أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ صلى الله عليه وآله وسلم قَالَ: أَعْقَلُ النَّاسِ أَتْرَكُهُمْ لِلدُّنْيَا. أَخْرَجَهُ فِي مُسْنَدِهِ.

''हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर رضي الله عنهما से रिवायत है कि बेशक हुज़ूर नबी–ए–अकरम صلى الله عليه وآله وسلم ने फरमाया : लोगों में सबसे ज्यादा अक़्लमन्द वो है जो दुनिया (की मुहब्बत) को सब से ज़्यादा छोड़ने वाला हो।''

٣٨٩ / ٧۔ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ السَّاعِدِيِّ رضي الله عنه أَتَى النَّبِيَّ صلى الله عليه وآله وسلم رَجُلٌ، فَقَالَ: يَا رَسُوْلَ اللهِ، دُلَّنِي عَلَى عَمَلٍ إِذَا أَنَا عَمِلْتُهُ أَحَبَّنِيَ اللهُ وَأَحَبَّنِيَ النَّاسُ. فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ صلى الله عليه وآله وسلم: ازْهَدْ فِي الدُّنْيَا يُحِبَّکَ اللهُ، وَازْهَدْ فِيْمَا فِي أَيْدِيَ النَّاسِ يُحِبُّکَ النَّاسُ. رَوَاهُ ابْنُ مَاجَه وَالْحَاکِمُ وَالْبَيْهَقِيُّ.

وَقَالَ الْحَاکِمُ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحُ الإِسْنَادِ.

''हज़रत सहल बिन सा'द साइदी رضي الله عنه रिवायत करते हैं कि एक आदमी हुज़ूर नबी–ए–अकरम صلى الله عليه وآله وسلم की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और उसने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह मुझे

الحديث رقم ٦: أخرجه الخوارزمى فى جامع المسانيد للإمام أبى حنيفة، ١ / ١٩٩۔

الحديث رقم ٧: أخرجه ابن ماجه فى السنن، کتاب: الزهد، باب: الزهد فى الدنيا، ٢ / ١٣٧٣، الرقم: ٤١٠٢، والحاکم فى المستدرک، ٤ / ٣٤٨، الرقم: ٧٨٧٣، والطبرانى فى المعجم الکبير، ٦ / ١٩٣، الرقم: ٥٩٧٢، والبيهقى فى شعب الإيمان، ١٧ ٣٤٤، الرقم: ١٠٥٢٢، والصيداوى فى معجم الشيوخ، ١ / ٣١٢، الرقم: ٢٨٢، والقضاعى فى مسند الشهاب، ١ / ٣٧٣، الرقم: ٦٤٣، والديلمى فى مسند الفردوس، ١ / ٤٣١، الرقم: ١٧٥٨، وابن عبد البر فى التمهيد، ٩ / ٢٠١۔

कोई ऐसा अ़मल बताएं जिसे करने से अल्लाह तआ़ला भी मुझसे मुहब्बत करे और लोग भी। आप ﷺ ने फरमाया : दुनिया से बेरग़बत हो जा, अल्लाह तआ़ला तुझ से मुहब्बत करेगा और जो कुछ लोगों के पास है उससे बेरग़बत हो जा, लोग भी तुझ से मुहब्बत करेंगे।''

٣٩٠ / ٨۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ، قَالَ:قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّ اللهَ تَعَالَى يَقُوْلُ: يَا ابْنَ آدَمَ! تَفَرَّغْ لِعِبَادَتِي أَمْلَأْ صَدْرَكَ غِنًى وَأَسُدُّ فَقْرَكَ وَ إِلاَّ تَفْعَلْ مَلأْتُ يَدَيْكَ شُغْلاً وَلَمْ أَسُدَّ فَقْرَكَ.

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَه.

وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: هٰذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ، وَقَالَ الْحَاكِمُ : صَحِيْحُ الإِسْنَادِ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : अल्लाह तआ़ला फरमाता है : ऐ इब्ने आदम ! तू मेरी इबादत के लिए फ़ारिग़ तो हो मैं तुम्हारा सीना बेनियाज़ी से भर दूँगा और तेरा फ़िक्र व फ़ाक़ा ख़त्म कर दूँगा : और अगर तू ऐसा नहीं करेगा तो मैं तेरे हाथ काम काज से भर दूँगा और तेरी मोहताजी (कभी) ख़त्म नहीं करूँगा।''

٣٩١ / ٩۔ عَنْ أَبِي خَلَّادٍ ﷺ (وَكَانَتْ لَهُ صُحْبَةٌ) قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِذَا رَأَيْتُمُ الرَّجُلَ قَدْ أُعْطِيَ زُهْدًا فِي الدُّنْيَا وَقِلَّةَ مَنْطِقٍ فَاقْتَرِبُوْا مِنهُ، فَإِنَّهُ يُلْقَى الْحِكْمَةَ. رَوَاهُ ابْنُ مَاجَه.

الحديث رقم ٨: أخرجه الترمذى فى السنن، كتاب: صفة القيامة والرقائق والورع عن رسول الله ﷺ، باب: (٣٠)، ٤/ ٦٤٢، الرقم: ٢٤٦٦، وابن ماجه فى السنن، كتاب: الزهد، باب: الهم بالدنيا، ٢/ ١٣٧٦، الرقم: ٤١٠٧، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٢/ ٣٥٨، الرقم: ٨٦٨١، وابن حبان عن أبى هريرة ﷺ فى الصحيح، ٢/ ١١٩، الرقم: ٣٩٣، والحاكم فى المستدرك، ٢/ ٤٨١، الرقم: ٣٦٥٧، والطبرانى فى المعجم الكبير، ٢٠/ ٢١٦، الرقم: ٥٠٠، والبيهقى فى شعب الإيمان، ٧/ ٢٨٨، الرقم: ١٠٣٣٩، والديلمى عن أبى هريرة ﷺ فى مسند الفردوس، ٥/ ٢٣٢، الرقم: ٨٠٤٥۔

الحديث رقم ٩: أخرجه ابن ماجه فى السنن، كتاب: الزهد، باب: الزهد فى الدنيا، ٢/ ١٣٧٣، الرقم: ٤١٠١، والبيهقى عن أبى هريرة ﷺ فى شعب الإيمان، ←

''हज़रत अबू ख़ल्लाद ﷺ (जो कि सहाबी–ए–रसूल हैं) रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–करम ﷺ ने फरमाया : जब तुम देखो कि किसी शख़्स को दुनिया में परहेज़गारी और कम गोई अता कर दी गई है तो उसका क़ुर्ब हासिल करो क्योंकि उसे हिकमत अता कर दी जाती है।''

٣٩٢ / ١٠۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: الدُّنْيَا سِجْنُ الْمُؤْمِنِ وَجَنَّةُ الْكَافِرِ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَالتِّرمِذِيُّ.

وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: هَذَاحَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : दुनिया मोमिन का क़ैदख़ाना और काफ़िर के लिए जन्नत है।''

٣٩٣ / ١١۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَلزُّهْدُ فِي الدُّنْيَا يُرِيْحُ الْقَلْبَ وَالْجَسَدَ. رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ بِإِسْنَادٍ لَا بَأْسَ بِهِ.

وأخرجه القضاعي عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو رضي الله عنهما وزاد: وَالرَّغْبَةُ فِي الدُّنْيَا تُكْثِرُ الْهَمَّ وَالْحُزْنَ وَالْبِطَالَةُ تُقْسِي الْقَلْبَ.

.... ٤ / ٢٥٤، الرقم: ٤٩٨٥، ١٠٥٣٤، وأبو يعلى فى المسند، ١٢ / ١٧٥، الرقم: ٦٨٠٣، والشيبانى فى الآحاد والمثانى، ٤ / ٤٩٩، الرقم: ٢٤٤٨۔

الحديث رقم ١٠: أخرجه مسلم فى الصحيح، كتاب: الزهد والرقائق، ٤ / ٢٢٧٢، الرقم: ٢٩٥٦، والترمذى فى السنن، كتاب: الزهد عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء أن الدنيا سجن المؤمن وجنة الكافر، ٤ / ٥٦٢، الرقم:٢٣٢٤، وابن ماجه فى السنن، كتاب: الزهد، باب: مثل الدنيا، ٢ / ١٣٧٨، الرقم: ٤١١٣، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٢ / ٣٢٣، الرقم: ٨٢٧٢، وابن حبان فى الصحيح، ٢ / ٤٦٢، الرقم: ٦٨٧، والحاكم عن سلمان ﷺ فى المستدرك، ٣ / ٦٩٩، الرقم: ٦٥٤٥، وقال الحاكم: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحٌ الإِسْنَادِ، والبزار عن سلمان ﷺ فى المسند، ٦ / ٤٦١، الرقم: ٢٤٩٨۔

الحديث رقم ١١: أخرجه الطبرانى فى المعجم الأوسط، ٦ / ١٧٧، الرقم: ٦١٢٠، والقضاعى فى مسند الشهاب، ١ / ١٨٨، الرقم: ٢٧٨، والبيهقى فى شعب الإيمان، ←

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : दुनिया से बेरग़बती दिल और जिस्म (दोनों) को सुकून बख़्शती है।''

''और इमाम क़ज़ाई ने हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رضي الله عنهما से रिवायत करते हुए इन अल्फ़ाज़ का इज़ाफ़ा किया है : दुनिया से मुहब्बत रंजो ग़म में इज़ाफ़ा करती है और फ़हश कलामी (बुरा बोलना) दिल को सख़्त कर देती है।''

٣٩٤ / ١٢۔ عَنْ عَمَّارِ بْنِ يَاسِرٍ رضي الله عنهما قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ: يَقُوْلُ: مَا تَزَّيَنَ الْأَبْرَارُ بِمِثْلِ الزُّهْدِ فِي الدُّنْيَا.

رَوَاهُ أَبُوْيَعْلَى بِإِسْنَادِهِ.

''हज़रत अम्मार बिन यासिर رضي الله عنهما रिवायत फरमाते हैं कि मैंने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ से सुना : नेक लोग दुनिया से बेरग़बती के अ़लावा किसी और चीज़ के साथ ख़ूबसूरत नहीं लगते।''

٣٩٥ / ١٣۔ عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنِ انْقَطَعَ إِلَى اللهِ ﷻ كَفَاهُ اللهُ كُلَّ مَؤُوْنَةٍ وَرَزَقَهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ وَمَنِ انْقَطَعَ إِلَى الدُّنْيَا وَكَّلَهُ اللهُ إِلَيْهَا. رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ وَالْبَيْهَقِيُّ.

.... ٧/٣٤٧، الرقم: ١٠٥٣٦، والديلمى فى مسند الفردوس، ٢/٢٩٩، الرقم: ٣٣٦٤، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٤/٧٥، الرقم: ٤٨٥٧، وابن رجب فى جامع العلوم والحكم، ١/٢٩٧، والهيثمى فى مجمع الزوائد، ١٠/٢٨٦.

الحديث رقم ١٢: أخرجه أبو يعلى فى المسند، ٣/١٩١، الرقم: ١٦١٧، والديلمى فى مسند الفردوس، ٤/١٠٥، الرقم: ٦٣٣٢، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٤/٧٦، الرقم: ٤٨٦٠.

الحديث رقم ١٣: أخرجه الطبرانى فى المعجم الأوسط، ٣/٣٤٦، الرقم: ٣٣٥٩، وفى المعجم الصغير، ١/٢٠١، الرقم: ٣٢١، والبيهقى فى شعب الإيمان، ٢/٢٨، الرقم: ١٠٧٦، ١٣٥١، والقضاعى فى مسند الشهاب، ١/٢٩٨، الرقم: ٤٩٣، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٢/٣٤١، الرقم: ٢٦٤٢، وقال المنذرى: رواه أبو الشيخ فى كتاب الثواب،والهيثمى فى مجمع الزوائد، ١٠/٣٠٣، والقرطبى فى الجامع لأحكام القرآن، ١٨/١٦١، وابن كثير فى تفسير القرآن العظيم، ٤/٣٨١.

''हज़रत इमरान बिन हुसैन ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : जो शख़्स (दुनिया से) कट कर सिर्फ अल्लाह ﷻ की (राह की) तरफ़ हो जाए अल्लाह तआला उसकी हर ज़रूरत पूरी करता है और उसे वहाँ से रिज़्क देता है जहाँ से उसे वहम व गुमान भी न हो और जो शख़्स (अल्लाह तआला से) कट कर दुनिया की तरफ़ हो जाता है तो अल्लाह तआला उसे इसी (दुनिया) के सुपुर्द कर देता है।''

١٤/٣٩٦ـ عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَوْ أَنَّكُمْ كُنتُمْ تَوَكَّلُوْنَ عَلَى اللهِ حَقَّ تَوَكُّلِهِ لَرُزِقْتُمْ كَمَا تُرْزَقُ الطَّيْرُ، تَغْدُوْ خِمَاصًا وَ تَرُوْحُ بِطَانًا. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ.

وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: هٰذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ. وَقَالَ الْحَاكِمُ: هٰذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحُ الإِسْنَادِ.

''हज़रत उमर बिन ख़त्ताब ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : अगर तुम अल्लाह तआला पर इस तरह भरोसा करते जैसा भरोसा करने का हक़ है, तो तुम्हें इस तरह रिज़्क दिया जाता जिस तरह परिन्दों को रिज़्क दिया जाता है। वो सुबह को भूखे निकलते हैं और शाम को पेट भर कर वापस आते हैं।''

الحديث رقم ١٤: أخرجه الترمذى فى السنن، كتاب: الزهد عن رسول الله ﷺ، باب: فى التَّوَكُّلِ عَلَى اللهِ، ٤/٥٧٣، الرقم: ٢٣٤٤، وابن ماجه فى السنن، كتاب: الزهد، باب: التوكل واليقين، ٢/١٣٩٤، والحاكم فى المستدرك، ٤/٣٥٤، الرقم: ٧٨٩٤، والبزار فى المسند، ١/٤٧٦، الرقم: ٣٤٠، وأحمد بن حنبل فى المسند، ١/٣٠، الرقم: ٢٠٥، ٣٧٠، وأبو يعلى فى المسند، ١/٢١٢، الرقم: ٢٤٧، والبيهقى فى شعب الإيمان، ٢/٦٦، الرقم: ١١٨٢، والطيالسى فى المسند، ١/١١، الرقم: ٥١،١٣٩، وعبد بن حميد فى المسند، ١/٣٢، الرقم: ١٠، والقضاعى فى مسند الشهاب، ٢/٣١٠، الرقم: ١٤٤٤.

فَصْلٌ فِي الصِّدْقِ وَالإِخْـلَاصِ

सच्चाई और इख़्लास का बयान

٣٩٧ / ١٥۔ عَنْ عَبْدِ اللهِ ﷺ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: إِنَّ الصِّدْقَ يَهْدِي إِلَى الْبِرِّ وَإِنَّ الْبِرَّ يَهْدِي إِلَى الْجَنَّةِ، وَإِنَّ الرَّجُلَ لَيَصْدُقُ حَتَّى يَكُوْنَ صِدِّيْقًا، وَإِنَّ الْكَذِبَ يَهْدِي إِلَى الْفُجُوْرِ وَإِنَّ الْفُجُوْرَ يَهْدِي إِلَى النَّارِ، وَإِنَّ الرَّجُلَ لَيَكْذِبُ حَتَّى يُكْتَبَ عِنْدَ اللهِ كَذَّابًا. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : सच (हमेशा) नेकी की राह दिखाता है और नेकी जन्नत की राह दिखाती है। आदमी सच बोलता रहता है यहाँ तक वो सिद्दीक़ (सच्चा) बन जाता है और झूठ बदी का रास्ता दिखाता है और बदी दोज़ख़ में ले जाती है। आदमी झूठ बोलता रहता है यहाँ तक कि उसे अल्लाह तआ़ला के यहाँ झूठा ही लिख दिया जाता है।

الحديث رقم ١٥: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: الأدب، باب: قول الله تعالى: يَأَيُّهَا الَّذِيْنَ آمَنُوا اتَّقُوا اللهَ وَكُونُوا مَعَ الصَّادِقِينَ: [التوبة: ١١٩] وَمَا يُنْهى عَنِ الْكَذِبِ، ٥ / ٢٢٦١، الرقم: ٥٧٤٣، ومسلم فى الصحيح، كتاب: البر والصلة والآداب، باب: قبح الكذب وحسن الصدق وفضله، ٤ / ٢٠١٢، الرقم: ٢٦٠٧، والترمذى فى السنن، كتاب: البر والصلة عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء فى الصدق والكَذِبِ، ٤ / ٣٤٧، الرقم ١٩٧١، وأبو داود فى السنن، كتاب: الأدب، باب: فى التشديد فى الكذب، ٤ / ٢٩٧، الرقم: ٤٩٨٩، وابن ماجه فى السنن، المقدمة، باب: اجتناب البدع والجدل، ١ / ١٨، الرقم: ٤٦، ومالك فى الموطأ، ٢ / ٩٨٩، الرقم: ١٧٩٢، والدارمى فى السنن، ٢ / ٣٨٨، الرقم: ٢٧١٥، وابن حبان فى الصحيح، ١ / ٥٠٨، الرقم: ٢٧٤، والبيهقى فى السنن الكبرى، ١٠ / ١٩٥، ٢٤٣، وأحمد بن حنبل فى المسند، ١ / ٣٨٤، الرقم: ٣٦٣٨، ٤١٠٨، وأبو يعلى فى المسند، ٩ / ٧١، الرقم: ٥١٣٨، والطبرانى فى المعجم الكبير، ٩ / ٩٧، الرقم: ٨٥٢٢، والبيهقى فى شعب الإيمان، ٤ / ١٩٩، الرقم: ٤٧٨٤۔ ٤٧٨٧، ٤٧٨٨، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٣ / ٣٦٥، الرقم: ٤٤٤٣۔

٣٩٨ / ١٦۔ عَنْ سَهْلِ بْنِ حُنَيْفٍ رضي الله عنه أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: مَنْ سَأَلَ اللهَ الشَّهَادَةَ بِصِدْقٍ، بَلَّغَهُ اللهُ مَنَازِلَ الشُّهَدَاءِ، وَإِنْ مَاتَ عَلَى فِرَاشِهِ.

رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَأَبُوْدَاوُدَ.

''हज़रत सहल बिन हुनैफ़ رضي الله عنه से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाय: जिसने अल्लाह तआला से सच्चे दिल के साथ शहादत (की मौत) तलब की तो अल्लाह तआला उसे शहीदों का मुक़ाम अ़ता फरमाएगा ख़्वाह उसे बिस्तर पर ही मौत (क्यों ना) आई हो।''

٣٩٩ / ١٧۔ عَنْ أَبِي مُحَمَّدٍ الْحَسَنِ بْنِ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ رضي الله عنهما قَالَ: حَفِظْتُ مِنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ: دَعْ مَا يُرِيْبُكَ إِلَى مَا لَا يُرِيْبُكَ، فَإِنَّ الصِّدْقَ طَمَأْنِينَةٌ، وَالْكَذِبَ رِيْبَةٌ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ.

وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ.

الحديث رقم ١٦: أخرجه مسلم فى الصحيح، كتاب: الإمارة، باب: استحباب طلب الشهادة فى سبيل الله تعالى، ٣/١٥١٧، الرقم: ١٩٠٨۔ ١٩٠٩، وأبوداود فى السنن، كتاب: الوتر، باب: فى الاستغفار، ٢/٨٥، الرقم: ٢، والنسائى فى السنن، كتاب: الجهاد، باب: مسألة الشهادة، ٦/٣٦، الرقم: ٣١٦٢، وفي السنن الكبرى، ٣/٢٥، الرقم: ٤٣٧٠، وابن ماجه فى السنن، كتاب: الجهاد، باب: القتال فى سبيل الله سبحانه وتعالى، ٢/٩٣٥، الرقم: ٢٧٩٧، وابن حبان فى الصحيح، ٧/٤٦٥، الرقم: ٣١٩٢، والحاكم فى المستدرك، ٢/٨٧، الرقم: ٢٤١٢، وقال الحاكم: هذا حَدِيْثٌ صَحِيْحٌ. والبيهقى فى السنن الكبرى، ٩/١٦٩، وأبو عوانة فى المسند، ٤/٤٩٠، الرقم: ٧٤٤٦، وأبوالمحاسن فى معتصر المختصر، ١/٢٠٥، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٢/١٧٧، الرقم: ٢٠٠٥۔

الحديث رقم ١٧: أخرجه الترمذى فى السنن، كتاب: صفة القيامة والرقائق والورع عن رسول الله ﷺ، باب: (٦٠)، ٤/٦٦٨، الرقم: ٢٥١٨، والنسائى فى السنن، كتاب: الأشربة، باب: الحث على ترك الشبهات، ٨/٣٢٧، الرقم: ٥٧١١، وابن خزيمة فى الصحيح، ٤/٥٩، الرقم: ٢٣٤٨، وابن حبان فى الصحيح، ٢/٤٩٨، الرقم: ٧٢٢، والحاكم فى المستدرك، ٢/١٥، الرقم: ٢١٦٩، وقال الحاكمُ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحُ الإِسْنَادِ۔ والدارمى فى السنن، ٢/٣١٩، الرقم: ٢٥٣٢، ←

''हज़रत अबू मुहम्मद हसन बिन अ़ली رضي الله عنهما बयान करते हैं कि मुझे हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ का इर्शाद (आज भी) याद है। आप ﷺ ने फरमाया : शक–व–शुब्हा वाली चीज़ छोड़ कर हमेशा शक–व–शुब्हा से पाक चीज़ों को इख़्तियार करो, बेशक सच सुकून और झूठ शक–व–शुब्हा है।''

٤٠٠ / ١٨۔ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو رضي الله عنهما أَنَّ رَجُلًا جَاءَ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: يَارَسُوْلَ اللهِ! مَا عَمَلُ الْجَنَّةِ؟ قَالَ: الصِّدْقُ إِذَا صَدَقَ الْعَبْدُ بَرَّ، وَإِذَا بَرَّ أَمِنَ، وَإِذَا أَمِنَ دَخَلَ الْجَنَّةَ. قَالَ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! مَا عَمَلُ النَّارِ؟ قَالَ:الْكَذِبُ إِذَا كَذَبَ الْعَبْدُ فَجَرَ، وَإِذَا فَجَرَ كَفَرَ، وَإِذَا كَفَرَ دَخَلَ يَعْنِي النَّارَ. رَوَاهُ أَحْمَدُ.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र رضي الله عنهما रिवायत करते हैं कि एक आदमी हुज़ूर नबीए अकरम ﷺ की ख़िदमते अक़दस में हाज़िर हुआ और उसने अ़र्ज़ कियाः या रसूलल्लाह! जन्नत (में ले जाने) वाला अ़मल कौनसा है? आप ﷺ ने फरमाया : सच बोलना। जब आदमी सच बोलता है तो वो नेकी करता है और जब वो नेकी करता है तो गुनाह से महफ़ूज़ हो जाता है और जब वो (गुनाह से) महफ़ूज़ हो जाता है तो जन्नत में दाख़िल हो जाता है। उसने अ़र्ज़ कियाः या रसूलल्लाह दोज़ख़ (में ले जाने) वाल अ़मल कौनसा है? आप ﷺ ने फरमायाः झूठ। जब आदमी झूठ बोलता है तो वो बुराई करता है और जब बुराई करता है तो कुफ्र करता है और जब कुफ्र करता है तो दोज़ख़ में दाख़िल हो जाता है।''

.... وعبد الرزاق فى المصنف، ٣/١١٧، الرقم: ٤٩٨٤، والبزار فى المسند، ٤/١٧٥، الرقم: ١٣٣٦، وأحمد بن حنبل فى المسند، ١/٢٠٠، الرقم: ١٧٢٣، ١٢٥٧٢، وأبو يعلى فى المسند، ١٢/١٣٢، الرقم: ٢٧٦٢، والطبرانى فى المعجم الكبير، ٣/٧٦، الرقم: ٢٧١١، والبيهقي فى السنن الكبرى، ٥/٣٣٥، الرقم: ١٠٦٠١، وابن أبى شيبة فى المصنف، ٣/٤٧٤، الرقم: ٣٦، والطيالسى فى المسند، ١/١٦٣، الرقم: ١١٧٨، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٢/٣٥١، الرقم: ٢٦٨٦، والهيثمى فى موارد الظمآن، ١/١٣٧، الرقم: ٥١٢۔

الحديث رقم ١٨: أخرجه أحمد بن حنبل فى المسند، ٢/١٧٦، الرقم: ٦٦٤١، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٣/٣٦٦، الرقم: ٤٤٤٦،والهيثمى فى مجمع الزوائد، ١/٩٢، ١٤٢۔

٤٠١ / ١٩ـ عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ ﷺ أَنَّهُ قَالَ لِرَسُوْلِ اللهِ ﷺ: حِيْنَ بَعَثَهُ إِلَى الْيَمَنِ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! أَوْصِنِي. قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: أَخْلِصْ دِيْنَکَ، يَكْفِکَ الْعَمَلُ الْقَلِيْلُ. رَوَاهُ الْحَاكِمُ وَالْبَيْهَقِيُّ.

وَقَالَ الْحَاكِمُ: صَحِيْحُ الإِسْنَادِ.

''हज़रत मुआज़ बिन जबल ﷺ को जब यमन की तरफ़ भेजा गया तो उन्होंने बारगाहे रिसालत मआब ﷺ में अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! मुझे ख़ुसूसी नसीहत फरमाएं। आप ﷺ ने फरमाया : दीन में इख़्लास पैदा करो, तुम्हें थोड़ा अमल भी काफ़ी होगा।''

٤٠٢ / ٢٠ـ عَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ ﷺ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: الدُّنْيَا مَلْعُوْنَةٌ، مَلْعُوْنٌ مَا فِيْهَا إِلَّا مَا ابْتُغِيَ بِهِ وَجْهُ اللهِ.

رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ وَالْبَيْهَقِيُّ بِإِسْنَادٍ لَا بَأْسَ بِهِ.

''हज़रत अबू दरदा ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : दुनिया मलऊन (मर्दूद) है और जो कुछ इसमें है वो (भी) मलऊन है, सिवाए इस (नेक) अमल के जिसके ज़रीये अल्लाह तआला की रज़ा तलब की जाए।''

٤٠٣ / ٢١ـ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِکٍ ﷺ: قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ

الحديث رقم ١٩: أخرجه الحاكم في المستدرك، ٤/ ٣٤١، الرقم: ٧٨٤٤، والبيهقي في شعب الإيمان، ٥/ ٣٤٢، الرقم: ٦٨٥٩، والمنذري في الترغيب والترهيب، ١/ ٢٢، والديلمي في مسند الفردوس، ١/ ٤٣٥، الرقم: ١٧٧٢، والحسيني في البيان والتعريف ١٠/ ٣٩، الرقم: ٧٩.

الحديث رقم ٢٠: أخرجه الطبراني في مسند الشاميين، ١/ ٣٥٣، الرقم: ٦١٢، والبيهقي في شعب الإيمان، ٧/ ٣٨١، الرقم: ١٠٤٤١، وابن رجب في جامع العلوم والحكم، ١/ ٢٩٨، والمنذري في الترغيب والترهيب، ١/ ٢٤، الرقم: ١٠، وأحمد بن حنبل في كتاب الزهد، ١/ ٦٢، الرقم: ١٢٧، والهيثمي في مجمع الزوائد، ١٠/ ٢٢ ووثّقه، والحكيم الترمذي في نوادر الأصول، ١/ ٢٥٥.

الحديث رقم ٢١: أخرجه ابن ماجه في السنن، المقدمة، باب: في الإيمان، ١/ ٢٧، ←

فَارَقَ الدُّنْيَا عَلَى الإِخْلَاصِ ِللهِ وَحْدَهُ وَعِبَادَتِهِ لَا شَرِيْکَ لَهُ وَإِقَامِ الصَّلَاةِ وَإِيْتَاءِ الزَّکَاةِ مَاتَ وَاللهُ عَنْهُ رَاضٍ. رَوَاهُ ابْنُ مَاجَه.

وَقَالَ الْحَاکِمُ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحُ الإِسْنَادِ.

''हज़रत अनस बिन मालिक ﷛ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : जो शख़्स अल्लाह वह्दहु ला शरीक़ के लिए कामिल इख़्लास पर और बिला शिर्क उसकी इबादत पर और नमाज़ क़ायम करने पर, जक़ात देने पर हमेशा अमल पैरा हो कर रुख़्सत होगा उसकी मौत इस हाल में होगी कि अल्लाह तआला उससे राज़ी होगा।''

.... الرقم: ٧٠، والحاکم فی المستدرک، ٢/ ٣٦٢، الرقم: ٣٢٧٧، والبيهقی فی شعب الإيمان، ٥/ ٣٤١، الرقم: ٦٨٥٦،والمقدسی فی الأحاديث المختارة، ٦/ ١٢٦، الرقم: ٢١٢٢، واللالکائي فی اعتقاد أهل السنة، ٤/ ٨٣٥، الرقم: ١٥٤٩، والمنذری فی الترغيب والترهيب، ١/ ٢٢، الرقم: ١، والحارث فی المسند (زوائد الهيثمی)، ١/ ١٥٢، الرقم: ٧.

فَصْلٌ فِي أَجْرِ الْحُبِّ فِي اللهِ تَعَالَى

अल्लाह ﷻ के लिए मुहब्बत करने के सवाब का बयान

٤٠٤ / ٢٢ - عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضي الله عنه، قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّ اللهَ تَعَالَى يَقُوْلُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ: أَيْنَ الْمُتَحَابُّوْنَ بِجَلَالِي؟ الْيَوْمَ أُظِلُّهُمْ فِي ظِلِّي يَوْمَ لَا ظِلَّ إِلَّا ظِلِّي. رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَأَحْمَدُ وَابْنُ حِبَّانَ.

''हज़रत अबू हुरैरा रضي الله عنه से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : अल्लाह तआला क़यामत के दिन फरमाएगा : मेरी अज़मत की ख़ातिर एक दूसरे से मुहब्बत करने वाले आज कहाँ हैं ? मैं उन्हें अपने साये में जगह दूँ, क्योंकि आज मेरे साये के अलावा कोई और साया नहीं है।''

٤٠٥ / ٢٣ - عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضي الله عنه عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: أَنَّ رَجُلًا زَارَ أَخًا لَهُ فِي قَرْيَةٍ أُخْرَى. فَأَرْصَدَ اللهُ لَهُ عَلَى مَدْرَجَتِهِ مَلَكًا. فَلَمَّا أَتَى عَلَيْهِ قَالَ: أَيْنَ تُرِيْدُ؟ قَالَ: أُرِيْدُ أَخًا لِي فِي هَذِهِ الْقَرْيَةِ. قَالَ: هَلْ لَكَ عَلَيْهِ مِنْ نِعْمَةٍ تَرُبُّهَا؟ قَالَ: لَا. غَيْرَ أَنِّي أَحْبَبْتُهُ فِي اللهِ ﷻ. قَالَ: فَإِنِّي رَسُوْلُ اللهِ إِلَيْكَ بِأَنَّ اللهَ قَدْ أَحَبَّكَ كَمَا أَحْبَبْتَهُ فِيْهِ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَأَحْمَدُ وَابْنُ حِبَّانَ.

الحديث رقم ٢٢: أخرجه مسلم فى صحيح، كتاب: البر والصلة والآداب، باب: فى فضل الحب فى الله، ٤ /١٩٨٨، الرقم: ٢٥٦٦، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٢ /٢٣٧، الرقم: ٧٢٣، ٨٤٣٦، ٨٨١٨، ١٠٧٩٠، ١٠٩٢٣، وابن حبان فى الصحيح، ٢ /٣٣٤، الرقم: ٥٧٤، والدارمى فى السنن، ٢ /٤٠٣، الرقم: ٢٧٥٧، والبيهقى فى السنن الكبرى، ١٠ /٢٣٢.

الحديث رقم ٢٣: أخرجه مسلم فى الصحيح، كتاب: البر والصلة والآداب، باب: فى فضل الحب فى الله، ٤ /١٩٨٨، الرقم: ٦٥٦٧، وابن حبان فى الصحيح، ٢ /٣٣١، ٣٣٧، الرقم: ٥٧٢، ٥٧٦، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٢ /٤٠٨، ←

''हज़रत अबू हुरैरा ؓ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : एक शख़्स अपने भाई से मिलने के लिए एक दूसरी बस्ती में गया, अल्लाह तआला ने उसके रास्ते में एक फ़रिश्ते को भेज दिया, जब उस शख़्स का इस फ़रिश्ते के पास से गुज़र हुआ तो फ़रिश्ते ने पूछा : कहाँ जाने का इरादा है ? उस शख़्स ने कहा : इस बस्ती में मेरा एक (दीनी) भाई है उससे मिलने का इरादा है। फ़रिश्ते ने पूछा : क्या तुम्हारा उस पर कोई एहसान है जिसकी तकमील मक़सूद है ? उसने कहा : इसके सिवा और कोई बात नहीं कि मुझे उससे सिर्फ अल्लाह तआला के लिए मुहब्बत है, तब उस फ़रिश्ते ने कहा कि मैं तुम्हारे पास अल्लाह तआला का यह पैग़ाम लाया हूँ कि जिस तरह तुम उस शख़्स से महज़ अल्लाह तआला के लिए मुहब्बत करते हो अल्लाह तआला भी तुम से मुहब्बत करता है।''

٤٠٦ / ٢٤۔ عَنْ عَبْدِ اللهِ ابْنِ مَسْعُوْدٍ ؓ قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَی رَسُوْلِ اللهِ ﷺ، فَقَالَ: يَا رَسُوْلَ اللهِ، کَيْفَ تَقُوْلُ فِي رَجُلٍ أَحَبَّ قَوْمًا وَلَمْ يَلْحَقْ بِهِمْ؟ فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَلْمَرْءُ مَعَ مَنْ أَحَبَّ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

الرقم: ٩٢٨٠، ٩٩٥٩، ١٠٦٠٨، وأبويعلی فی المعجم، ١ / ٢١١، الرقم: ٢٥٤، والبيهقی فی شعب الإيمان، ٦ / ٤٨٨، وابن المبارك فی الزهد، ١ / ٢٤٧، الرقم: ٧١٠، والمنذری فی الترغيب والترهيب، ٤ / ١٠، الرقم: ٤٥٧٣، والذهبی فی سير أعلام النبلاء، ٧ / ٤٥٤، والخطيب البغدادی فی تاريخ بغداد، ٣ / ٤٠٠، الرقم: ١٥٢٧، ٥٧٥١، ٦٨٢٧، ٧٣٧٦۔

الحديث رقم ٢٤: أخرجه البخاری فی الصحيح، کتاب: الأدب، باب: عَلَامَةِ الْحُبِّ فِي اللهِ ﷻ، ٥ / ٢٢٨٣، الرقم: ٥٨١٧، ٥٨١٨، ومسلم فی الصحيح، کتاب: البر والصلة والآداب، باب: المرء مع من أحب، ٤ / ٢٠٣٤، الرقم: ٢٦٤٠، والترمذی فی السنن، کتاب: الزهد عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء أن الْمرءَ مَعَ مَن أحبَّ، ٤ / ٥٩٦، الرقم: ٢٣٨٧، وَقَالَ أَبُو عِيْسَی: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحٌ، والنسائی فی السنن الکبری، ٦ / ٣٤٤، الرقم: ١١٧٨، وأحمد بن حنبل فی المسند، ٤ / ٢٣٩، ٣٩٥، ٣٩٨، ٤٠٥، وأبو يعلی فی المسند، ٩ / ١٠٠، الرقم: ٥١٦٦، وابن حبان فی الصحيح، ٢ / ٣١٦، الرقم: ٥٥٧، والبزار فی المسند، ٨ / ٣٢، الرقم: ٣٠١٤، والطبرانی فی المعجم الأوسط، ٤ / ٤٢، الرقم: ٣٥٦٣، والبيهقی فی شعب الإيمان، ١ / ٣٨٧، الرقم: ٤٩٧، والمنذری فی الترغيب والترهيب، ٤ / ١٥، الرقم: ٤٥٩٧، والمقدسی فی الأحاديث المختارة، ٨ / ٣٦، الرقم: ٢٩۔

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद ﷺ से मरवी है कि एक शख़्स ने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया (या रसूलल्लाह!) इस शख़्स के बारे में आप का क्या इर्शाद है जो किसी क़ौम से मुहब्बत रखता है लेकिन उनसे मिला नहीं है ? इस पर हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : (क़यामत के रोज़) आदमी उसी के साथ होगा जिससे मुहब्बत रखता है।''

٤٠٧ / ٢٥۔ عَنْ أَبِي ذَرٍّ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: أَفْضَلُ الْأَعْمَالِ (وفي رواية لأحمد: أَحَبَ الْأَعْمَالِ. وفي رواية للبزار: أَفْضَلُ الْعِلْمِ) الْحُبُّ فِي اللهِ وَالْبُغْضُ فِي اللهِ. رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ وَأَحْمَدُ وَالْبَزَّارُ.

''हज़रत अबू ज़र ﷺ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : (अल्लाह ﷻ के नज़दीक) आमाल में सबसे अफ़ज़ल अ़मल (और अहमद की रिवायत में है कि सब से प्यारा अ़मल और बज़्ज़ार की रिवायत में है कि सबसे अफ़ज़ल अ़मल) अल्लाह ﷻ के लिए मुहब्बत रखना और अल्लाह ﷻ ही के लिए दुश्मनी रखना है।''

٤٠٨ / ٢٦۔ عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ ﷺ، قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: قَالَ اللهُ تَعَالَى: وَجَبَتْ مَحَبَّتِي لِلْمُتَحَابِّيْنَ فِيَّ، وَالْمُتَجَالِسِيْنَ فِيَّ، وَالْمُتَزَاوِرِيْنَ فِيَّ، وَالْمُتَبَاذِلِيْنَ فِيَّ.

رَوَاهُ مَالِكٌ بِإِسْنَادِهِ الصَّحِيْحِ وَابْنُ حِبَّانَ.

الحديث رقم ٢٥: أخرجه أبوداود فى السنن، كتاب: السنة، باب: مجانبة أهل الأهواء وبغضهم، ٤/١٩٨، الرقم: ٤٥٩٩، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٥/١٤٦، الرقم: ٢١٣٤١، والبزار فى المسند، ٩/٤٦١، الرقم: ٤٠٧٦، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٤/١٤، الرقم: ٤٥٩٣، والديلمى فى مسند الفردوس، ١/٣٥٥، الرقم: ١٤٢٩۔

الحديث رقم ٢٦: أخرجه ملك فى الموطأ، ٢/٩٥٣، الرقم: ١٧١، وإِسْنَادُهُ صَحِيْحٌ، وَ صَحَّحَهُ ابن حبان فى الصحيح، ٢/٣٣٥، الرقم: ٥٧٥، والحاكم فى المستدرك، ٤/١٨٦، الرقم: ٧٣١٤، والبيهقى فى السنن الكبرى، ١٠/٢٣٣، وَ صَحَّحَهُ، وَ وَافَقَهُ الذهبي، وقال ابن عبد البر: إِسْنَادُهُ صَحِيْحٌ۔

وَقَالَ الْحَاكِمُ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत मुआज़ बिन जबल ؓ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ को यह फरमाते हुए सुना है कि अल्लाह तआला ने फरमाया : मेरी ख़ातिर मुहब्बत करने वालों, मेरी ख़ातिर (मेरी) महाफ़िल सजाने वालों, मेरी ख़ातिर एक दूसरे से मिलने वालों और मेरी ख़ातिर ख़र्च करने वालों के लिए मेरी मुहब्बत वाजिब हुई है।''

٤٠٩ / ٢٧. عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ؓ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَوْ أَنَّ عَبْدَيْنِ تَحَابَّا ِللهِ ﷻ، وَاحِدٌ فِي الْمَشْرِقِ وَآخَرُ فِي الْمَغْرِبِ، لَجَمَعَ اللهُ بَيْنَهُمَا يَوْمَ الْقِيَامَةِ، يَقُوْلُ: هَذَا الَّذِي كُنْتَ تُحِبُّهُ فِيَّ. رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ.

''हज़रत अबू हुरैरा ؓ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : अगर दो बन्दे अल्लाह तआला के लिए एक दूसरे से मुहब्बत करें और एक मश्रिक़ में हो और दूसरा मग़्रिब में (भी) हो तो अल्लाह तआला क़यामत के रोज़ उन्हें ज़रूर मिला देगा और फरमाएगा : यह है वो (शख़्स) जिससे तू मेरी ख़ातिर मुहब्बत करता था।''

الحديث رقم ٢٧: أخرجه البيهقى فى شعب الإيمان، ٦ / ٤٩٢، الرقم: ٩٠٢٢.

فَصْلٌ فِي حُسْنِ الظَّنِّ بِاللهِ تَعَالَى

अल्लाह ﷻ के बारे में हुस्ने ज़न रखने का बयान

٤١٠ / ٢٨۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّ اللهَ يَقُوْلُ: أَنَا عِنْدَ ظَنِّ عَبْدِي بِي، وَأَنَا مَعَهُ إِذَا دَعَانِي. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : अल्लाह तआला फरमाता है : मैं अपने बन्दे के गुमान के साथ होता हूँ जो वो मेरे बारे में रखता है, और मैं उस के साथ होता हूँ जब वो मुझे पुकारता है।''

٤١١ / ٢٩۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: يَقُوْلُ اللهُ تَعَالَى: أَنَا عِنْدَ ظَنِّ عَبْدِي بِي وَأَنَا مَعَهُ إِذَا ذَكَرَنِي، فَإِنْ ذَكَرَنِي فِي نَفْسِهِ ذَكَرْتُهُ فِي نَفْسِي، وَإِنْ ذَكَرَنِي في مَـلَاءٍ ذَكَرْتُهُ فِي مَلَاءٍ خَيْرٍ مِنْهُمْ، وَإِنْ تَقَرَّبَ إِلَيَّ بِشِبْرٍ تَقَرَّبْتُ إِلَيْهِ ذِرَاعًا، وَإِنْ تَقَرَّبَ إِلَيَّ ذِرَاعًا تَقَرَّبْتُ إِلَيْهِ بَاعًا، وَإِنْ أَتَانِي يَمْشِي، أَتَيْتُهُ هَرْوَلَةً. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

الحديث رقم ٢٨: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: التوحيد، باب: قول الله تعالى: يُرِيْدُوْنَ أَنْ يُبَدِّلُوْا كَلَامَ اللهِ، ٦ / ٢٧٢٥، الرقم: ٧٠٦٦٣، ومسلم فى الصحيح، كتاب: الذكر والدعاء والتوبة والاستغفار، باب: فضل الذكر والدعاء والتقرب إلى الله تعالى، ٤ / ٢٠٦٧، الرقم: ٢٦٧٥، والترمذى فى السنن، كتاب: الزهد عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء فى حسن الظن بالله، ٤ / ٥٩٦، الرقم: ٢٣٨٨، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٢ / ٤٤٥، الرقم: ٩٧٤٨۔

الحديث رقم ٢٩: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: التوحيد، باب: قول الله تعالى: ويحذركم الله نفسه، ٦ / ٢٦٩٤، الرقم: ٦٩٧٠، ومسلم فى الصحيح، كتاب: الذكر والدعاء والتوبة والاستغفار، باب: الحث على ذكر الله تعالى، ٤ / ٢٠٦١، الرقم: ٢٦٧٥، والترمذى فى السنن، كتاب: الزهد عن رسول الله ﷺ، باب: فى حسن الظن بالله ﷻ، ٥ / ٥٨١، الرقم: ٣٦٠٣، وقال أبوعيسى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ

''हज़रत अबू हुरैरा ؓ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : अल्लाह तआला फरमाता है कि मेरा बन्दा मेरे मुतअल्लिक़ जैसा ख़याल रखता है मैं उसके साथ वैसा ही मामला करता हूँ। जब वो मेरा ज़िक्र करता है मैं उसके साथ होता हूँ। अगर वो अपने दिल में मेरा ज़िक्र (यानी ज़िक्रे ख़फ़ी) करे तो मैं भी (अपनी शान के लायक़) अपने दिल में उसका ज़िक्र करता हूँ, और अगर वो जमाअ़त में मेरा ज़िक्र (यानी ज़िक्रे जली) करे तो मैं उसकी जमाअ़त से बेहतर जमाअ़त (यानी फ़रिश्तों) में उसका ज़िक्र करता हूँ। अगर वो एक बालिश्त मेरे नज़दीक आए तो मैं दो बाज़ुओं के बराबर उसके नज़दीक हो जाता हूँ और अगर वो मेरी तरफ़ चल कर आता है तो मैं उसकी तरफ़ दौड़ कर आता हूँ।

٤١٢ / ٣٠۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ؓ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: قَالَ اللهُ تَعَالَى: أَنَا مَعَ عَبْدِي إِذَا هُوَ ذَكَرَنِي وَتَحَرَّكَتْ بِي شَفَتَاهُ.

رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ وَابْنُ مَاجَه وَاللَّفْظُ لَهُ وَأَحْمَدُ.

''हज़रत अबू हुरैरा ؓ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : अल्लाह तआला फरमाता है : मैं बन्दे के साथ होता हूँ जब वो मेरा ज़िक्र करता है और उसके लब मेरे ज़िक्र के लिए हरकत करते हैं।''

.... صَحِيْحٌ، وابن ماجه فی السنن، کتاب: الأدب، باب: فضل العمل، ٢/١٢٥٥، الرقم: ٣٨٢٢، والنسائی فی السنن الکبری، ٤/٤١٢، الرقم: ٧٧٣٠، وأحمد بن حنبل فی المسند، ٢/٤١٣، الرقم: ٩٣٤، والبيهقی فی شعب الإيمان، ١/٤٠٦، الرقم: ٥٥٠۔

الحديث رقم ٣٠: أخرجه البخاری فی الصحيح، کتاب: التوحيد، باب: قول الله تعالی: لَا تُحَرِّكْ بِهِ لِسَانَكَ، [القيامة: ١٦] ، ٦/٢٧٣٦، وابن ماجه فی السنن، کتاب: الأدب، باب: فضل الذکر، ٢/١٢٤٦، الرقم: ٣٧٩٢، وأحمد بن حنبل فی المسند، ٢/٥٤٠، الرقم: ١٠٩٨١، ١٠٩٨٨، ١٠٩٨٩، وابن حبان فی الصحيح، ٣/٩٧، الرقم: ٨١٥، والحاکم فی المستدرک، ١/٦٧٣، الرقم: ١٨٢٤، والطبرانی فی المعجم الأوسط، ٦/٣٦٣، الرقم: ٦٦٢١، وفی مسند الشاميين، ١/٣٢٠، الرقم: ٥٦٢، ٢/٣١٩، الرقم: ١٤١٧، والديلمی فی مسند الفردوس، ٣/١٨٦، الرقم: ٤٥١١، وابن المبارک فی الزهد، ١/٣٣٩، الرقم: ٩٥٦، والمنذری فی الترغيب والترهيب، ٢/٢٥٣، الرقم: ٢٢٨٩۔

٤١٣ / ٣١۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضي الله عنه، قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صلى الله عليه وآله وسلم: يَقُوْلُ اللهُ عزوجل: أَنَا عِنْدَ ظَنِّ عَبْدِي بِي وَأَنَا مَعَهُ حِيْنَ يَذْكُرُنِي.

رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَالتِّرْمِذِيُّ.

''हज़रत अबू हुरैरा रضي الله عنه से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम صلى الله عليه وآله وسلم ने फरमाया : अल्लाह तआला फरमाता है : मैं अपने बन्दे के उस गुमान के मुताबिक़ होता हूँ जो वो मेरे मुतअल्लिक़ रखता है और मैं उसके साथ होता हूँ जब वो मेरा ज़िक्र करता है।''

٤١٤ / ٣٢۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضي الله عنه عَنْ رَسُوْلِ اللهِ صلى الله عليه وآله وسلم: قَالَ: إِنَّ اللهَ عزوجل قَالَ: إِذَا تَلَقَّانِي عَبْدِي بِشِبْرٍ، تَلَقَّيْتُهُ بِذِرَاعٍ. وَإِذَا تَلَقَّانِي بِذِرَاعٍ، تَلَقَّيْتُهُ بِبَاعٍ، وَإِذَا تَلَقَّانِي بِبَاعٍ، أَتَيْتُهُ بِأَسْرَعَ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَأَحْمَدُ.

''हज़रत अबू हुरैरा رضي الله عنه से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम صلى الله عليه وآله وسلم ने फरमाया : अल्लाह तआला ने फरमाया : जब मेरा बन्दा एक बालिश्त मेरी तरफ़ बढ़ता है तो मैं एक हाथ उसकी तरफ़ बढ़ता हूँ और अगर वो एक हाथ मेरी तरफ़ बढ़ता है तो मैं दो हाथ उसकी तरफ़ बढ़ता हूँ और जब वो दो हाथ मेरी तरफ़ बढ़ता है तो मैं तेजी से उसकी तरफ़ बढ़ता हूँ (यानी इसी रफ्तार से उस पर अपनी रहमत और मदद व नुसरत का नुज़ूल फरमाता हूँ)।''

الحديث رقم ٣١: أخرجه مسلم فى الصحيح، كتاب: الذكر والدعاء والتوبة والاستغفار، باب: الحث على ذكر الله تعالى، ٤/ ٢٠٦١، الرقم: ٢٦٧٥، والترمذى فى السنن، ، كتاب: الدعوات عن رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم، باب: فى حسن الظن بالله عزوجل، ٥/ ٥٨١، الرقم: ٣٦٠٣، والنسائى فى السنن الكبرى، ٤/ ٤١٢، الرقم: ٧٧٣٠، وابن ماجه فى السنن، كتاب: الأدب، باب: فضل العمل، ٢/ ١٢٥٥، الرقم: ٣٨٢٢، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٢/ ٤١٣، الرقم: ٩٣٤٠، ١٠٢٥٨، ١٠٧١٥.

الحديث رقم ٣٢: أخرجه مسلم فى الصحيح، كتاب: الذكر والدعاء والتوبة والاستغفار، باب: الحث على ذكر الله تعالى، ٤/ ٢٠٦١، الرقم: ٢٦٧٥، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٢/ ٣١٦، الرقم: ٨١٧٨، ٣/ ٢٨٣، الرقم: ١٤٠٤٥.

٤١٥ / ٣٣۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ وَ أَبِي سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ رضي الله عنهما أَنَّهُمَا شَهِدَا عَلَى النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ قَالَ: لَا يَقْعُدُ قَوْمٌ يَذْكُرُوْنَ اللهَ ﷻ إِلَّا حَفَّتْهُمُ الْمَلَائِكَةُ وَغَشِيَتْهُمُ الرَّحْمَةُ، وَنَزَلَتْ عَلَيْهِمُ السَّكِيْنَةُ، وَذَكَرَهُمُ اللهُ فِيْمَنْ عِنْدَهُ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَالتِّرْمِذِيُّ.

وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत अबू हुरैरा और अबू सईद ख़ुदरी رضي الله عنهما दोनों हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की बारगाह में हाज़िर हुए। हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जब भी लोग अल्लाह तआला के ज़िक्र के लिए बैठते हैं फ़रिश्ते ढाँप लेते हैं और रहमते इलाही इन्हें अपनी आग़ोश में ले लेती है और उन पर सकीना (रहमत) नाज़िल होती है अल्लाह तआला उनका ज़िक्र अपनी बारगाह के हाज़िरीन में करता है।''

٤١٦ / ٣٤۔ عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ سُئِلَ:

الحديث رقم ٣٣: أخرجه مسلم فى الصحيح، كتاب: الذكر والدعاء والتوبة والاستغفار، باب: فضل الاجتماع على تلاوة القرآن وعلى الذكر، ٤ / ٢٠٧٤، الرقم: ٢٧٠٠، والترمذى فى السنن، كتاب: الدعوات عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء فى القوم يجلسون فيذكرون الله ﷻ ما لهم من الفضل، ٥ / ٤٥٩، الرقم: ٣٣٧٨، وابن ماجه فى السنن، كتاب: الأدب، باب: فضل الذكر، ٢ / ١٢٤٥، الرقم: ٣٧٩١، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٣ / ٩٢، الرقم: ١١٨٩٣، وابن حبان فى الصحيح، ٣ / ١٣٦، الرقم: ٨٥٥، وأبو يعلى فى المسند، ١١ / ٢٠، الرقم: ٦١٥٩، وابن أبى شيبة فى المصنف، ٦ / ٦٠، الرقم: ٢٩٤٧٥، والطبرانى فى المعجم الأوسط، ٢ / ١٣٧، الرقم: ١٥٠٠، والطيالسى فى المسند، ١ / ٢٩٦، الرقم: ٢٢٣٣، والبيهقى فى شعب الإيمان، ١ / ٣٩٨، الرقم: ٥٣٠، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٢ / ٢٦٢، الرقم: ٢٣٢٨۔

الحديث رقم ٣٤: أخرجه الترمذى فى السنن، كتاب: الدعوات عن رسول الله ﷺ، باب: منه (٥)، ٥ / ٤٥٨، الرقم: ٣٣٧٦، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٣ / ٧٥، الرقم: ١١٧٣٨، والبيهقى فى شعب الإيمان، ١ / ٤١٩، الرقم: ٥٨٩، وأبو يعلى فى المسند، ٢ / ٥٣٠، الرقم: ١٤٠١، وابن رجب فى جامع العلوم والحكم، ١ / ٢٣٨، ٤٤٤، و المنذرى فى الترغيب والترهيب، ٢ / ٢٥٤، الرقم: ٢٢٩٦۔

أَيُّ الْعِبَادِ أَفْضَلُ دَرَجَةً عِنْدَ اللهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ؟ قَالَ: الذَّاكِرُوْنَ اللهَ كَثِيْرًا وَالذَّاكِرَاتُ. قُلْتُ: يَا رَسُوْلَ اللهِ، وَمِنَ الْغَازِي فِي سَبِيْلِ اللهِ؟ قَالَ: لَوْ ضَرَبَ بِسَيْفِهِ فِي الْكُفَّارِ وَالْمُشْرِكِيْنَ حَتَّى يَنْكَسِرَ، وَ يَخْتَضِبَ دَمًا لَكَانَ الذَّاكِرُوْنَ اللهَ أَفْضَلُ مِنْهُ دَرَجَةً. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَحْمَدُ.

''हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ से पूछा गया कौनसे लोग क़यामत के दिन अल्लाह तआला के यहाँ दर्जे में अफ़ज़ल होंगे? आप ﷺ ने फरमायाः अल्लाह तआला का कसरत से ज़िक्र करने वाले मर्द और औरतें। मैंने (ता'ज्जुब से) अर्ज़ कियाः क्या अल्लाह तआला की राह में जिहाद करने वाले ग़ाज़ी से भी (अफ़ज़ल होंगे ?) आप ﷺ ने फरमाया : (हाँ) अगर चै मुजाहिद अपनी तलवार काफ़िरों और मुश्रिकों पर इस क़द्र चलाए की वो टूट जाए और ख़ून आलूद हो जाए फिर भी अल्लाह तआला का ज़िक्र करने वाले दर्जे में उससे अफ़ज़ल हैं।''

٤١٧ / ٣٥۔ عَنْ وَاثِلَةَ بْنِ الْأَسْقَعِ ﷺ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: قَالَ اللهُ تَبَارَکَ وَتَعَالَى: أَنَا عِنْدَ ظَنِّ عَبْدِي بِي فَلْيَظُنَّ بِي مَا شَاءَ.

رَوَاهُ ابْنُ حِبَّانَ وَالدَّارِمِيُّ وَأَحْمَدُ.

وَقَالَ الْحَاكِمُ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحُ الإِسْنَادِ.

''हज़रत वासिला बिन अस्क़ा' ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : अल्लाह तआला ने फरमाया : मैं अपने बन्दे के गुमान के मुताबिक़ होता हूँ जो वो मेरे बारे में रखता है लिहाज़ा वो जो मेरे बारे में गुमान रख ले।''

الحديث رقم ٣٥: أخرجه ابن حبان فى الصحيح، ٢ / ٤٠١، الرقم: ٦٣٣، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٣ / ٤٩١، والحاكم فى المستدرك، ٤ / ٢٦٨، الرقم: ٧٦٠٣، والدارمى فى السنن، ٢ / ٣٩٥، الرقم: ٢٧٣١، والطبرانى فى مسند الشاميين، ٢ / ٣٨٤، الرقم: ١٥٤٦، والهيثمى فى موارد الظمآن، ١ / ١٨٤، الرقم: ٧١٧.

فَصْلٌ فِي الْبُكَاءِ مِنْ خَشْيَةِ اللهِ تَعَالَى

﴾अल्लाह ﷻ के ख़ौफ़ से रोने का बयान﴿

٤١٨ / ٣٦. عَنْ أَنَسٍ رضي الله عنه قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: يَقُوْلُ اللهُ ﷻ: أَخْرِجُوْا مِنَ النَّارِ مَنْ ذَكَرَنِي يَوْمًا أَوْ خَافَنِي فِي مَقَامٍ.

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَحَسَّنَهُ وَالْحَاكِمُ.

''हज़रत अनस رضي الله عنه से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : (क़यामत के दिन) अल्लाह ﷻ फरमाएगा : दोज़ख़ में से ऐसे शख़्स को निकाल दो जिस ने एक दिन भी मुझे याद किया या मेरे ख़ौफ़ से कभी भी मुझ से डरा।''

٤١٩ / ٣٧. عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رضي الله عنهما قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: عَيْنَانِ لَا تَمَسُّهُمَا النَّارُ: عَيْنٌ بَكَتْ مِنْ خَشْيَةِ اللهِ وَعَيْنٌ بَاتَتْ تَحْرُسُ فِي سَبِيْلِ اللهِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَحَسَّنَهُ وَالحَاكِمُ.

الحديث رقم ٣٦: أخرجه الترمذى فى السنن، كتاب: صفة جهنم عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء أن للنار نفسين، ٤ / ٧١٢، الرقم: ٢٥٩٤، والحاكم فى المستدرك، ١ / ١٤١، الرقم: ٢٣٤، وقال الحاكم: صحيح الإسناد، ٥ / ٢٤٤، الرقم: ٨٠٨٤، وابن أبى عاصم فى كتاب السنة، ٢ / ٤٠٠، الرقم: ٨٣٣، والبيهقى فى كتاب الاعتقاد، ١ / ٢٠١.

الحديث رقم ٣٧: أخرجه الترمذى فى السنن، كتاب: فضائل الجهاد عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء فى فضل الحرس فى سبيل الله، ٤ / ٩٢، الرقم: ١٦٣٩، والحاكم عن أبي هريرة رضي الله عنه فى المستدرك، ٢ / ٩٢، الرقم: ٢٤٣٠، والقضاعى فى مسند الشهاب، ١ / ٢١٢، الرقم: ٣٢١، والطيالسى فى المسند، ١ / ٣٢١، الرقم: ٢٤٤٣، وعبد بن حميد فى المسند، ١ / ٤٢٢، الرقم: ١٤٤٧، والبيهقى فى شعب الإيمان، ٤ / ١٦، الرقم: ٤٢٣٥، والديلمى فى مسند الفردوس، ٣ / ٤٨، الرقم: ٤١٢٥، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٢ / ١٥٨، الرقم: ١٩١٨.

''हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास رضي الله عنهما रिवायत करते हैं कि मैंने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ को फरमाते हुए सुना : दो आँखों को (दोज़ख़ की) आग नहीं छूएगी : (एक) वो आँख जो अल्लाह तआला के ख़ौफ़ से रोई और (दूसरी) वो आँख जिसने अल्लाह तआला की राह में पहरा दे कर रात गुज़ारी।''

٤٢٠ / ٣٨۔ عَنْ أَنَسٍ رضي الله عنه أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: مَنْ ذَكَرَ اللهَ فَفَاضَتْ عَيْنَاهُ مِنْ خَشْيَةٍ حَتَّى يُصِيبَ الْأَرْضَ مِنْ دُمُوعِهِ لَمْ يُعَذِّبْهُ اللهُ تَعَالَى يَوْمَ الْقِيَامَةِ. رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ وَالْحَاكِمُ.

وَقَالَ الْحَاكِمُ: هَذَا حَدِيثٌ صَحِيحُ الإِسْنَادِ.

''हज़रत अनस رضي الله عنه से रिवायत है कि हुज़ूर नबीए अकरम ﷺ ने फरमाया : जिसने अल्लाह तआला को याद किया और उसके ख़ौफ़ से उसकी आँख इस क़द्र अश्कबार हुई कि ज़मीन तक उसके आँसू पहुँच गए तो अल्लाह तआला उसे क़यामत के दिन अज़ाब नहीं देगा।''

٤٢١ / ٣٩۔ عَنْ أَبِي أُمَامَةَ رضي الله عنه عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: لَيْسَ شَيْءٌ أَحَبَّ إِلَى اللهِ مِنْ قَطْرَتَيْنِ وَأَثَرَيْنِ: قَطْرَةُ دُمُوعٍ مِنْ خَشْيَةِ اللهِ وَقَطْرَةُ دَمٍ تُهَرَاقُ فِي سَبِيلِ اللهِ. وَأَمَّا الْأَثَرَانِ: فَأَثَرٌ فِي سَبِيلِ اللهِ وَأَثَرُ فَرِيضَةٍ مِنْ فَرَائِضِ اللهِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَحَسَّنَهُ وَالطَّبَرَانِيُّ.

''हज़रत अबू उमामा رضي الله عنه से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : अल्लाह तआला को दो क़तरों और दो निशानों से ज़्यादा कोई चीज़ पसन्द नहीं : अल्लाह

الحديث رقم ٣٨: أخرجه الحاكم فی المستدرك، ٤ / ٢٨٩، الرقم: ٧٦٦٨، والطبرانی فی المعجم الأوسط، ٢ / ١٧٨، الرقم: ١٦٤١، ٦١٧٠، والمنذری فی الترغيب والترهيب، ٤ / ١١٣، الرقم: ٥٠٢٣۔

الحديث رقم ٣٩: أخرجه الترمذی فی السنن، کتاب: فضائل الجهاد عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء فی فضل المرابط، ٤ / ١٩٠، الرقم: ١٦٦٩، والطبرانی فی المعجم الكبير، ٨ / ٢٣٥، الرقم: ٧٩١٨، والمنذری فی الترغيب والترهيب، ٢ / ١٩٢، الرقم: ٢٠٦٧، وابن أبی عاصم فی کتاب الجهاد، ١ / ٣٢٣، الرقم: ١٠٨۔

तआला के ख़ौफ़ से (बहने वाले) आँसुओं का क़तरा और अल्लाह तआला की राह में बहने वाले ख़ून का क़तरा। रहे दो निशान तो एक (है) अल्लाह तआला की राह (में चलने) का निशान और (दूसरा है) अल्लाह तआला के फ़राइज़ में (पड़ जाने वाले) किसी फ़रीज़े (की अदायगी) का निशान।''

٤٢٢ / ٤٠۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: قَالَ اللهُ ﷻ: وَعِزَّتِي! لَا أَجْمَعُ عَلَى عَبْدِي خَوْفَيْنِ وَأَمْنَيْنِ إِذَا خَافَنِي فِي الدُّنْيَا أَمَنْتُهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَإِذَا أَمِنَنِي فِي الدُّنْيَا أَخَفْتُهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ.

رَوَاهُ ابْنُ حِبَّانَ وَالْبَيْهَقِيُّ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : अल्लाह तआला ने फरमाया : मुझे अपनी इज़्ज़त की क़सम ! मैं अपने बन्दे पर दो ख़ौफ़ और दो अम्न इकट्ठे नहीं करूँगा। अगर वो मुझ से दुनिया में ख़ौफ़ रखेगा तो मैं उसे क़यामत के रोज़ अम्न में रखूँगा और अगर वो मुझसे दुनिया में बेख़ौफ़ रहा तो मैं उसे क़यामत के रोज़ ख़ौफ़ में मुब्तिला करूँगा।''

الحديث رقم ٤٠: أخرجه ابن حبان فى الصحيح، ٢/٤٠٦، الرقم: ٦٤٠، والبيهقى فى شعب الإيمان، ١/٤٨٢، الرقم: ٧٧٧، وابن المبارك فى كتاب الزهد، ١/٥٠، الرقم: ١٥٧، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٤/١٣١، الرقم: ٥١١٠، والهيثمى فى موارد الظمان، ١/٦١٧، الرقم: ٢٤٩٤، وفى مجمع الزوائد، ١٠/٣٠٨.

فَصْلٌ فِي قِرَاءَةِ الْقُرْآنِ وَتَحْسِيْنِ الصَّوْتِ بِهَا

﴿अच्छी आवाज़ से तिलावते क़ुरआन करने का बयान﴾

٤٢٣ / ٤١۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ يَقُوْلُ: ما أَذِنَ اللهُ لِشَيءٍ مَا أَذِنَ لِنَبِيٍّ ﷺ حَسَنِ الصَّوْتِ يَتَغَنَّى بِالْقُرْآنِ يَجْهَرُ بِهِ.
مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ وَهَذَا لَفْظُ مُسْلِمٍ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : अल्लाह तआला किसी काम पर इस क़द्र जज़ा अता नहीं फरमाता जितना नबी के ख़ुश इल्हानी से क़ुरआन मजीद पढ़ने पर अज्र अता फरमाता है।''

٤٢٤ / ٤٢۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَا أَذِنَ اللهُ لِشَيءٍ مَا أَذِنَ لِلنَّبِيِّ ﷺ أَنْ يَتَغَنَّى بِالْقُرْآنِ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : अल्लाह तआला ने किसी अम्र पर इतना सवाब नहीं दिया जितना अपने नबी ﷺ को तरन्नुम

الحديث رقم ٤١: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: التوحيد، باب: قول النبى ﷺ: الماهر بالقرآن مع السفرة الكرام البررة وزينوا القرآن بأصواتكم، ٦/٢٧٤٣، الرقم: ٧١٠٥، ومسلم فى الصحيح، كتاب: صلاة المسافرين وقصرها، باب: استحباب تحسين الصوت بالقرآن، ١/٥٤٥، الرقم: ٧٩٢، وأبو داود فى السنن، كتاب: الصلاة، باب: استحباب الترتيل فى القراءة، ٢/٧٣، الرقم: ١٤٧٣، والنسائى فى السنن، كتاب: الافتتاح، باب: تزيين القرآن بالصوت، ٢/١٨٠، الرقم: ١٠١٧، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٢/٥، الرقم: ٢٢٥٦۔

الحديث رقم ٤٢: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: فضائل القرآن، باب: من لم يتغن بالقرآن، ٤/١٩١٨، الرقم: ٤٧٣٥۔ ٤٧٣٦، وفى كتاب: فضائل القران، باب: قول الله تعالى ولا تنفع الشفاعة عنده إلا لمن أذن له ، ٦/٢٧٢٠، الرقم: ٧٠٤٤، ومسلم فى الصحيح، كتاب: صلاة المسافرين وقصرها، باب: استحباب تحسين الصوت بالقرآن، ١/٥٤٥، الرقم: ٧٩٣، ٧٩٢، وعبد الرزاق فى المصنف، ٢/٤٨٢، الرقم: ٤١٦٧۔

के साथ कुरआने करीम पढ़ने पर दिया है।''

٤٢٥ / ٤٣ـ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَيْسَ مِنَّا مَنْ لَمْ يَتَغَنَّ بِالْقُرْآنِ. وزاد: غَيْرُهُ لا يَجْهَرُ بِهِ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : वो शख़्स हम में से नहीं जो कुरआन मजीद को खूब ख़ुश इल्हानी के साथ नहीं पढ़ता। (दूसरे रावी ने इसके साथ यह इज़ाफ़ा भी किया है) जो बुलन्द आवाज़ से नहीं पढ़ता।''

٤٢٦ / ٤٤ـ عَنْ أَبِي أُمَامَةَ ﷺ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: اقْرَؤُوْا الْقُرْآنَ فَإِنَّهُ يَأْتِي يَوْمَ الْقِيَامَةِ شَفِيْعًا لِأَصْحَابِهِ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ.

''हज़रत अबू उमामा ﷺ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ को फरमाते हुए सुना : कुरआन मजीद पढ़ा करो, यह क़यामत के दिन अपने पढ़ने वालों के लिए शफ़ाअत करने वाला बन कर आएगा।''

٤٢٧ / ٤٥ـ عَنْ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ:

الحديث رقم ٤٣: أخرجه البخاری فی الصحيح، كتاب: التوحيد، باب: قول الله تعالى: وأسرّوا قولكم أو اجهروا به، ٦/٢٧٣٧، الرقم: ٧٠٨٩، وأبوداود فی السنن، كتاب: الصلاة، باب: استحباب الترتيل فی القرأة، ٢/٧٣، الرقم: ١٤٦٩، والدارمی فی السنن، ١/٤١٧، الرقم: ١٤٩٠، والبيهقی فی السنن الصغری، ١/٥٥٩، الرقم: ١٠٢٦.

الحديث رقم ٤٤: أخرجه مسلم فی الصحيح، كتاب: صلاة المسافرين وقصرها، باب: فضل قراءة القرآن وسورة البقرة، ١/٥٥٣، الرقم: ٨٠٤، وأحمد بن حنبل فی المسند، ٥/٢٥٤، الرقم: ٢٢٢٤٧، ٢٢٢٦٧، وابن حبان فی الصحيح، ١/٣٢٢، الرقم: ١١٦، والطبرانی فی المعجم الأوسط، ١/١٥٠، الرقم: ٤٨، وفی المعجم الكبير، ٨/١١٨، الرقم: ٧٥٤٦، والبيهقی فی شعب الإيمان، ٢/٣٤١، الرقم: ١٩٨٠.

الحديث رقم ٤٥: أخرجه الترمذی فی السنن، كتاب: فضائل القرآن عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء فی فضل قاری القرآن، ٥/١٧١، الرقم: ٢٩٠٥، وابن ماجه فی السنن، المقدمة، باب فضل من تعلم القرآن وعلّمه، ١/٧٨، الرقم: ٢١٦، والبيهقی فی شعب الإيمان، ٢/٣٢٩، ٥٥٢، الرقم: ١٩٤٧، ٢٦٩١.

مَنْ قَرَأَ الْقُرْآنَ وَاسْتَظْهَرَهُ، فَأَحَلَّ حَلَالَهُ وَحَرَّمَ حَرَامَهُ أَدْخَلَهُ اللهُ بِهِ الْجَنَّةَ وَشَفَّعَهُ فِي عَشَرَةٍ مِنْ أَهْلِ بَيْتِهِ كُلُّهُمْ وَجَبَتْ لَهُ النَّارُ.

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَه.

''हज़रत अ़ली बिन अबू तालिब ﷺ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : जिस शख़्स ने क़ुरआने हकीम पढ़ा और उसे हिफ़्ज़ कर लिया, उसकी हलाल कर्दह चीज़ों को हलाल और हराम कर्दह चीज़ों को हराम समझा, अल्लाह तआ़ला इस (किराअत व इल्मे क़ुरआन) की वजह से उसे जन्नत में दाख़िल कर देगा और उसके ख़ानदान के दस ऐसे अफ़राद के हक़ में (भी) सिफ़ारिश क़ुबूल करेगा जिन के लिए दोज़ख़ वाजिब हो चुकी होगी।''

٤٢٨ / ٤٦۔ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو رضي الله عنهما قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: يُقَالُ لِصَاحِبِ الْقُرْآنِ: إِقْرَأْ وَارْتَقِ وَ رَتِّلْ كَمَا كُنْتَ تُرَتِّلُ فِي الدُّنْيَا، فَإِنَّ مَنْزِلَتَکَ عِنْدَ آخِرِ آيَةٍ تَقْرَأُ بِهَا. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُوْدَاوُدَ.

وَقَالَ أَبُوعِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رضي الله عنهما रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : क़ुरआन मजीद पढ़ने वाले से कहा जाएगाः क़ुरआन पढ़ता जा और जन्नत में मंज़िल ब मंज़िल ऊपर चढ़ता जा और यूँ तरतीब से पढ़, जैसे तू दुनिया में तरतीब से पढ़ा करता था, तेरा ठिकाना जन्नत में उस जगह होगा जहाँ तू आख़िरी आयत तिलावत करेगा।''

الحديث رقم ٤٦: أخرجه الترمذى فى السنن، كتاب: فضائل القرآن عن رسول الله ﷺ، باب:(١٨)، ٥/ ١٧٧، الرقم: ٢٩١٤، وأبو داود فى السنن، كتاب: الصلاة، باب: استحباب الترتيل فى القراءة، ٢/ ٧٣، الرقم: ١٤٦٤، وابن ماجه عن أبى سعيد الخدرى ﷺ فى السنن، كتاب: الأدب، باب: ثواب القرآن، ٢/ ١٢٤٢، الرقم: ٣٧٨٠، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٢/ ١٩٢، الرقم: ٦٧٩٩، وابن حبان فى الصحيح، ٣/ ٤٣، الرقم: ٧٦٦، والحاكم فى المستدرك، ١/ ٧٣٩، الرقم: ٢٠٣٠، والبيهقى فى السنن الصغرى، ١/ ٥٦٠، الرقم: ١٠٣٠، وابن أبى شيبة فى المصنف، ٦/ ١٣١، الرقم: ٣٠٥٦۔

٤٢٩ / ٤٧۔ عَنْ أَنَسٍ رضي الله عنه قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّ لِلّٰهِ أَهْلِيْنَ مِنَ النَّاسِ. قَالُوْا: مَنْ هُمْ يَا رَسُوْلَ اللهِ؟ قَالَ: أَهْلُ الْقُرْآنِ، هُمْ أَهْلُ اللهِ وَخَاصَّتُهُ. رَوَاهُ ابْنُ مَاجَه وَالنَّسَائِيُّ وَأَحْمَدُ وَالدَّارِمِيُّ.

وَإِسْنَادُهُ صَحِيْحٌ.

''हज़रत अनस रضي الله عنه रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : लोगों में से कुछ (लोग ख़ास) अल्लाह वाले होते हैं। सहाबा किराम رضي الله عنهم ने अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह! वो कौन (ख़ुश नसीब) लोग हैं ? आप ﷺ ने फरमाया : कुरआन पढ़ने वाले, वही अल्लाह वाले और उस के ख़ास हैं।''

٤٣٠ / ٤٨۔ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رضي الله عنهما قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ إِنَّ الَّذِي لَيْسَ فِي جَوْفِهِ شَيْءٌ مِنَ الْقُرْآنِ، كَالْبَيْتِ الْخَرِبِ.

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالدَّارِمِيُّ وَأَحْمَدُ.

وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ، وَقَالَ الْحَاكِمُ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحُ الإِسْنَادِ.

''हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास رضي الله عنهما से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : वो शख़्स जिस के दिल में कुरआने करीम का कुछ हिस्सा भी नहीं वो वीरान घर की तरह है।''

الحديث رقم ٤٧: أخرجه ابن ماجه فى السنن، المقدمة، باب: فضل من تعلم القرآن وعلمه، ١/ ٧٨، الرقم: ٢١٥، والنسائى فى السنن الكبرى، ٥/ ١٧، الرقم: ٨٠٣١، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٣/ ١٢٧، الرقم: ١٢٣٠١، ٣/ ٢٤٢، الرقم: ١٣٥٦٦، والدارمي في السنن، ٢/ ٥٢٥، الرقم: ٣٣٢٦، والحاكم فى المستدرك، ١/ ٧٤٣، الرقم: ٢٠٤٦، والبيهقي فى شعب الإيمان، ٢/ ٥٥١، الرقم: ٢٦٨٨، والطيالسى في المسند، ١/ ٢٨٣، الرقم: ٢١٢٤۔

الحديث رقم ٤٨: أخرجه الترمذي فى السنن، كتاب: فضائل القرآن عن رسول الله ﷺ، باب: (١٨)، ٥/ ١٧٧، الرقم: ٢٩١٣، والدارمى فى السنن، ٢/ ٥٢١، الرقم: ٣٣٠٦، وأحمد بن حنبل فى المسند، ١/ ٢٢٣، الرقم: ١٩٤٧، والحاكم فى المستدرك، ١/ ٧٤١، الرقم: ٢٠٣٧، والبيهقى فى شعب الإيمان، ٢/ ٣٢٨، الرقم:١٩٤٣، والمقدسى فى الأحاديث المختارة، ٩/ ٥٣٧، الرقم: ٥٢٥۔

فَصْلٌ فِي الْقَنَاعَةِ وَتَرْكِ الطَّمْعِ

क़नाअत इख़्तियार करने और लालच से बचने का बयान

٤٣١ / ٤٩ـ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: لَيْسَ الْغِنَى عَنْ كَثْرَةِ الْعَرَضِ، وَلَكِنَّ الْغِنَى غِنَى النَّفْسِ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : अमीरी कसरते माल से नहीं होती बल्कि अस्ल अमीरी दिल का ग़नी (और अमीर) होना है।''

٤٣٢ / ٥٠ـ عَنْ حَكِيْمِ بْنِ حِزَامٍ ﷺ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: الْيَدُ الْعُلْيَا خَيْرٌ مِنَ الْيَدِ السُّفْلَى، وَابْدَأْ بِمَنْ تَعُوْلُ، وَخَيْرُ الصَّدَقَةِ عَنْ ظَهْرِ غِنًى، وَمَنْ يَسْتَعْفِفْ يُعِفَّهُ اللهُ، وَمَنْ يَسْتَغْنِ يُغْنِهِ اللهِ.

مُتَفَقٌ عَلَيْهِ وَهَذَا لَفْظُ الْبُخَارِيِّ.

الحديث رقم ٤٩: أخرجه البخاری فی الصحيح، كتاب: الرقاق، باب: الغنى غنى النّفس، ٥/٢٣٦٨، الرقم: ٦٠٨١، ومسلم فی الصحيح، كتاب: الزكاة، باب: ليس الغنى عن كثرة العرض، ٢/٧٢٦، الرقم: ١٠٥١، والترمذی فی السنن، كتاب: الزهد عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء أنّ الغنى غِنَى النَّفْسِ، ٤/٥٨٦، الرقم: ٢٣٧٣، وابن ماجه فی السنن، كتاب: الزهد، باب: القناعة، ٢/٣٨٦، الرقم: ٤١٣٧، وابن حبان فی الصحيح، ٢/٤٥٣، الرقم: ٦٧٩، وأحمد بن حنبل فی المسند، ٢/٢٤٣، الرقم:٧٣١٤، ٧٥٤٦، ٨١٥٩، ٩٠٥٠، وأبو يعلی فی المسند، ١١/١٣٢، الرقم: ٦٢٥٩.

الحديث رقم ٥٠: أخرجه البخاری فی الصحيح، كتاب: الزكاة، باب: لا صَدَقَةَ إِلَّا عَنْ ظَهْرِ غِنىً، ٢/٥١٨، الرقم: ١٣٦١، ومسلم فی الصحيح، كتاب: الزكاة، باب: بيان أن اليد العليا خير من اليد السفلى، وأن اليد العليا هی المنفقة، وأن السفلى هي الآخذة، ٢/٧١٧، الرقم: ١٠٣٤، وأحمد بن حنبل فی المسند، ٣/٤٠٣، الرقم: ١٥٣٦١، وابن أبی شيبة فی المصنف، ٢/٤٢٦، الرقم: ١٠٦٨٧، والطبرانی فی المعجم الكبير، ٣/١٩٢، الرقم: ٣٠٩١، والدارمی فی السنن، ١/٤٧٦، الرقم: ١٦٥٢.

''हज़रत हकीम बिन हिज़ाम ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : ऊपर वाला (यानी देने वाला) हाथ नीचे वाले (यानी लेने वाले हाथ) से बेहतर है और (सदक़ा व ख़ैरात की) इब्तिदा अपने अहलो अयाल से करो और बेहतरीन सदक़ा वो है जिसके बाद इस्तिग़ना (बेफिक्री) क़ायम रहे और जो सवाल से बचता है अल्लाह तआला उसे सवाल (करने) से बचाता है और जो इस्तिग़ना (बेफिक्री) इख़्तियार करता है उसे अल्लाह तआला ग़नी कर देता है।''

٤٣٣ / ٥١۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: لَيْسَ الْمِسْكِينُ الَّذِي يَطُوْفُ عَلَى النَّاسِ، تَرُدُّهُ اللُّقْمَةُ وَاللُّقْمَتَانِ، وَالتَّمْرَةُ وَالتَّمْرَتَانِ، وَلَكِنِ الْمِسْكِيْنُ الَّذِي لَا يَجِدُ غِنًى يُغْنِيْهِ، وَلَا يُفْطَنُ بِهِ فَيُتَصَدَّقُ عَلَيْهِ، وَلَا يَقُوْمُ فَيَسْأَلُ النَّاسَ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : मिस्कीन वो नहीं जो लोगों के गिर्द चक्कर लगाता रहे, एक या दो लुक़्मों या एक या दो खजूरों का लालच उसे घुमाता फ़िराता रहे, बल्कि मिस्कीन तो वो है कि जिसके पास न तो इतना माल हो कि उसकी ज़रूरत को पूरा कर सके, न (ज़ाहिरन) मिस्कीन नज़र आता हो कि लोग उसे सदक़ा दें और न कि (शर्म के मारे ख़ुद) खड़े हो कर लोगों से माँगता है।''

الحديث رقم ٥١: أخرجه البخاری فی الصحيح، كتاب: الزكاة، باب: قول الله تعالى: لا يسألون الناس إلحافا، [البقرة: ٢٧٣] وَكَمِ الغِنَى، ٢ / ٥٣٨، الرقم: ١٤٠٩، ومسلم فی الصحيح، كتاب: الزكاة، باب: المسكين الذي لا يجد غني، ولا يفطن له فيصدق عليه، ٢ / ٧١٩، الرقم: ١٠٣٩، والنسائی فی السنن، كتاب: الزكاة، باب: تفسير المسكين، ٥ / ٨٥، الرقم: ٢٥٧٢، ومالك فی الموطأ، كتاب: صفة النبی ﷺ، باب: ما جاء فی المسكين، ٢ / ٩٢٣، الرقم: ١٦٤٥، وابن حبان فی الصحيح، ٨ / ١٣٩، الرقم: ٣٣٥٢، وأحمد بن حنبل فی المسند، ٢ / ٣١٦، الرقم: ٨١٧٢، ١٠٠٦٩، والبيهقی فی السنن الكبری، ٧ / ١١، الرقم: ١٢٩٢٦، والطبرانی فی مسند الشاميين، ١ / ٩٥، الرقم: ١٣٩، وأبو يعلی فی المسند، ١١ / ٢٢٠، الرقم: ٦٣٣٧، والمنذری فی الترغيب والترهيب، ١ / ٣٣٤، الرقم: ١٢٢٧.

٤٣٤ / ٥٢۔ عَنِ ابْنِ مَسْعُوْدٍ رضي الله عنه قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صلى الله عليه وآله وسلم: مَنْ أَصَابَتْهُ فَاقَةٌ فَأَنْزَلَهَا بِالنَّاسِ لَمْ تُسَدَّ فَاقَتُهُ، وَمَنْ أَنْزَلَهَا بِاللهِ، فَيُوشِكُ اللهُ لَهُ بِرِزْقٍ عَاجِلٍ أَوْ آجِلٍ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُوْدَاوُدَ.

وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद رضي الله عنه फरमाते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम صلى الله عليه وآله وسلم ने फरमाया : जिस शख़्स पर मुफ़लिसी आ गई और उसने अपनी मुफ़लिसी (को दूर करने के लिए उस) को लोगों के सामने पेश किया तो उसकी मुफ़लिसी दूर नहीं होगी और जिस शख़्स ने अपनी मुफ़लिसी को अल्लाह तआला की ख़िदमत में पेश किया तो अल्लाह तआला उसे जल्द या बदेर अपनी हिकमत के मुताबिक़ रिज़्क अता फरमाएगा।''

٤٣٥ / ٥٣۔ عَنْ ثَوْبَانَ رضي الله عنه قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صلى الله عليه وآله وسلم: مَنْ تَكَفَّلَ لِي أَنْ لَا يَسْأَلَ النَّاسَ شَيْئًا، وَأَتَكَفَّلُ لَهُ بِالْجَنَّةِ؟ فَقُلْتُ: أَنَا. فَكَانَ لَا يَسْأَلُ

الحديث رقم ٥٢: أخرجه الترمذي فى السنن، كتاب: الزهد عن رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم، باب: ماجاء فى الهم فى الدنيا وحبها، ٤ / ٥٦٣، الرقم: ٢٣٢٦، وأبو داود فى السنن، كتاب: الزكاة، باب: فى الاستعفاف، ٢ / ٦٢٢، الرقم: ١٦٤٥، وأحمد بن حنبل فى المسند، ١ / ٤٠٧، الرقم: ٣٨٦٩، والطبرانى فى المعجم الكبير، ١٠ / ١٣، الرقم: ٩٧٨٥، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٤ / ١٩٦، الرقم: ٧٦٥٨، وفي شعب الإيمان، ٢ / ٢٩، الرقم: ١٠٧٨، والشاشى فى المسند، ٢ / ٢٠٠، الرقم: ٧٦٩، وأبويعلى فى المسند، ٩ / ٢٧٥، الرقم: ٥٣٩٩، وابن المبارك فى الزهد، ١ / ٣٤، الرقم: ١٣٢، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ١ / ٣٣٧، الرقم: ١٢٣٩۔

الحديث رقم ٥٣: أخرجه أبوداود فى السنن، كتاب: الزكاة، باب: كراهية المسألة، ٢ / ١٢١، الرقم: ١٦٤٣، والنسائى فى السنن نحوه، كتاب: الزكاة، باب: فضل من لا يسئل الناس شيئا، ٥ / ٩٦، الرقم: ٢٥٩٠، والحاكم فى المستدرك، ١ / ٥٧١، الرقم: ١٥٠٠، والبيهقى فى شعب الإيمان، ٣ / ٢٧٢، الرقم: ٣٥٢١، والطبرانى فى المعجم الكبير، ٢ / ٩٨، الرقم: ١٤٣٣، وابن عبد البر فى المتهيد، ٤ / ١٠٨، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ١ / ٣٢٩، الرقم: ١٢١٠۔

أَحَدًا شَيْئًا. رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ بِإِسْنَادٍ جَيِّدٍ وَالْحَاكِمُ.

وَقَالَ الْحَاكِمُ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحٌ عَلَى شَرْطِ مُسْلِمٍ.

''हज़रत सौबान ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : जो शख़्स मुझे इस बात की ज़मानत दे कि लोगों से कोई चीज़ नहीं माँगेगा तो मैं उसे जन्नत की ज़मानत देता हूँ, मैंने अर्ज़ किया : (या रसूलल्लाह!) मैं इस बात की ज़मानत देता हूँ। उसके बाद हज़रत सौबान ﷺ किसी से कुछ नहीं माँगा करते थे।''

٤٣٦ / ٥٤۔ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رضي الله عنهما أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: قَدْ أَفْلَحَ مَنْ أَسْلَمَ وَ رُزِقَ كَفَافًا وَقَنَّعَهُ اللهُ بِمَا آتَاهُ.

رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَالتِّرْمِذِيُّ.

وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर رضي الله عنهما से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : बिला शुब्हा वो कामयाब हो गया जो इस्लाम लाया, उसे हस्बे ज़रूरत रिज़्क़ अता हुआ और अल्लाह तआला ने उसे जो कुछ दिया उसे उस पर क़नाअत भी अता फरमाई।''

الحديث رقم ٥٤: أخرجه مسلم في الصحيح، كتاب: الزكاة، باب: في الكفاف والقناعة، ٢ / ٧٣٠، الرقم: ١٠٥٤، والترمذي في السنن، كتاب: الزهد عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء في الكفاف والصبر عليه، ٤ / ٥٧٥، الرقم: ٢٣٤٨، وأحمد بن حنبل في المسند، ٢ / ١٦٨، الرقم: ٦٥٧٢، ٦٦٠٩، والحاكم في المستدرك، ٤ / ١٣٧، الرقم: ٧١٤٩، وقال الحاكم: هذا حديث صحيح، والبيهقي في السنن الكبرى، ٤ / ١٩٦، الرقم: ٧٦٥٧، وفي شعب الإيمان، ٧ / ٢٩٠، الرقم: ١٠٣٦٥، وعبد بن حميد في المسند، ١ / ١٣٦، الرقم: ٣٤١، وابن درهم في كتاب الزهد وصفة الزاهدين، ١ / ٥٦، الرقم: ٩٣، وابن أبي عاصم في كتاب الزهد، ١ / ٨، والمنذري في الترغيب والترهيب، ١ / ٣٣٤، الرقم: ١٢٢٨.

فَصْلٌ فِي التَّوْبَةِ وَالاسْتِغْفَارِ

तौबा और इस्तग़्फ़ार का बयान

٤٣٧ / ٥٥۔ عَنْ أَنَسٍ رضي الله عنه أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: كُلُّ ابْنِ آدَمَ خَطَّاءٌ، وَخَيْرُ الْخَطَّائِيْنَ التَّوَّابُوْنَ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَه وَأَحْمَدُ.

وَقَالَ الْحَاكِمُ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحُ الإِسْنَادِ.

''हज़रत अनस रضي الله عنه से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः हर इन्सान ख़ताकार है और अच्छे ख़ताकार (ख़ता हो जाने के बाद नदामत से सच्ची) तौबा करने वाले हैं।''

٤٣٨ / ٥٦۔ عَنْ عَبْدِ اللهِ رضي الله عنه قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: التَّائِبُ مِنَ

الحديث رقم ٥٥: أخرجه الترمذي في السنن، كتاب: صفة القيامة والرقائق والورع عن رسول الله ﷺ، باب (٤٩)، ٤ / ٦٥٩، الرقم: ٢٤٩٩، وابن ماجه في السنن، كتاب: الزهد، باب: ذكر التوبة، ٢ / ١٤٢٠، الرقم: ٤٢٥١، وأحمد بن حنبل في المسند، ٣ / ١٩٨، الرقم: ١٣٠٧٢، والحاكم في المستدرك، ٤ / ٢٧٢، الرقم: ٧٦١٧، وابن أبي شيبة في المصنف، ٧ / ٦٢، الرقم: ٣٤٢١٦، وأبو يعلى في المسند، ٥ / ٣٠١، الرقم: ٢٩٢٢، والبيهقي في شعب الإيمان، ٥ / ٤٢٠، الرقم: ٧١٢٧، والروياني في المسند، ٢ / ٣٨٤، الرقم: ١٣٦٦، وعبد بن حميد في المسند، ١ / ٣٦٠، الرقم: ١١٩٧، وابن أبي عاصم في كتاب الزهد، ١ / ٩٦، وابن رجب في جامع العلوم والحكم، ١ / ٢٢٦، والمنذري في الترغيب والترهيب، ٤ / ٤٦، الرقم: ٤٧٥٠۔

الحديث رقم ٥٦: أخرجه ابن ماجه في السنن، كتاب: الزهد، باب: ذكر التوبة، ٢ / ١٤١٩، الرقم: ٤٢٥٠، والطبراني في المعجم الكبير، ١٠ / ١٥٠، الرقم: ١٠٢٨١، والبيهقي في السنن الكبرى، ١٠ / ١٥٤، وابن الجعد في المسند، ١ / ٢٦٦، الرقم: ١٧٥٦، والقضاعي في مسند الشهاب، ١ / ٩٧، الرقم: ١٠٨، والبيهقي عن ابن عباس رضى الله عنهما في شعب الإيمان، ٥ / ٤٣٦، الرقم: ٧١٧٨، ٧١٩٦، والديلمي في مسند الفردوس، ٢ / ٧٧، الرقم: ٢٤٣٢-٢٤٣٣، والهيثمي في مجمع الزوائد، ١٠ / ٢٠٠۔

الذَّنْبِ، كَمَنْ لَا ذَنْبَ لَهُ. رَوَاهُ ابْنُ مَاجَه وَالطَّبَرَانِيُّ وَالْبَيْهَقِيُّ.

وَقَالَ الْهَيْثَمِيُّ: وَرِجَالُهُ رِجَالُ الصَّحِيحِ.

''हज़रत अब्दुल्लाह رضي الله عنه से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया: गुनाह से (सच्ची) तौबा करने वाला उस शख़्स की तरह है जिसने कोई गुनाह किया ही न हो।''

٤٣٩ / ٥٧. عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضي الله عنه عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: كَانَ رَجُلٌ يُسْرِفُ عَلَى نَفْسِهِ، فَلَمَّا حَضَرَهُ الْمَوْتُ قَالَ لِبَنِيهِ: إِذَا أَنَا مُتُّ فَأَحْرِقُوْنِي، ثُمَّ اطْحَنُوْنِي، ثُمَّ ذَرُّوْنِي فِي الرِّيْحِ، فَوَاللهِ لَئِنْ قَدَرَ عَلَيَّ رَبِّي لَيُعَذِّبَنِي عَذَابًا مَا عَذَّبَهُ أَحَدًا، فَلَمَّا مَاتَ فُعِلَ بِهِ ذَلِكَ، فَأَمَرَ اللهُ الْأَرْضَ فَقَالَ: اجْمَعِي مَا فِيْكِ مِنْهُ، فَفَعَلَتْ، فَإِذَا هُوَ قَائِمٌ، فَقَالَ: مَا حَمَلَكَ عَلَى مَا صَنَعْتَ؟ قَالَ: يَا رَبِّ، خَشْيَتُكَ، أَوْ قَالَ: مَخَافَتُكَ يَا رَبِّ، فَغَفَرَ لَهُ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

الحديث رقم ٥٧: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: الأنبياء، باب: أَمْ حَسِبْتَ أَنَّ أَصْحَابَ الْكَهْفِ وَ الرَّقِيْمِ [الكهف: ٩]، ٣/١٢٨٣، الرقم: ٣٢٩٤، وفي كتاب: التوحيد، باب: قول الله تعالى: يُرِيْدُوْنَ أَنْ يُبَدِّلُوا كَلَامَ اللهِ [الفتح:١٥]، ٦/٢٧٢٥، الرقم: ٧٠٦٧، وفي كتاب: الأنبياء، باب: ما ذُكِرَ عن بني إسرائيل، ٣/١٢٧٣، الرقم:٣٢٦٦، ومسلم في الصحيح، كتاب: التوبة، باب: في سعة رحمة الله تعالى، وأنها سبقت غضبه، ٤/٢١١٠، الرقم: ٢٧٥٦، والنسائي في السنن، كتاب: الجنائز، باب: أرواح المؤمنين، ٤/١١٢، الرقم: ٢٠٧٩-٢٠٨٠، وفي السنن الكبرى، ١/٦٦٦، الرقم: ٢٢٠٦، وابن ماجه في السنن، كتاب: الزهد، باب: ذكر التوبة، ٢/١٤٢١، الرقم: ٤٢٥٥، ومالك في الموطأ، كتاب: الجنائز، باب: جامع الجنائز، ١/٢٤٠، الرقم: ٥٧٠، وأحمد بن حنبل في المسند، ٢/٢٦٩، الرقم: ٧٦٣٥، والطبراني في مسند الشاميين، ١/٨٩، الرقم: ١٢٨، وابن المبارك في الزهد، ١/٣٧٢، الرقم: ١٠٥٦، وابن راشد في الجامع، ١١/٢٨٣، والمنذري في الترغيب والترهيب، ٤/١٣٠، الرقم: ٥١٠٥-٥١٠٧.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः एक आदमी अपने ऊपर ज़ुल्म व ज़्यादती करता रहा (यानी ज़्यादा गुनाहों में मुलव्विस रहा), जब उसकी मौत का वक़्त आया तो उसने अपने बेटों से कहा : जब में फ़ौत हो जाऊँ तो मुझे अच्छी तरह जला देना, फिर (मेरे जले हुए जिस्म को) पीस देना, फिर मेरी राख हवा में उड़ा देना, अल्लाह की क़सम ! अगर मेरे रब ने मुझे पकड़ लिया तो वो मुझे ऐसा अज़ाब देगा कि उस जैसा अज़ाब कभी किसी को न दिया होगा, जब वो फ़ोत हो गया तो उसके साथ उसी तरह किया गया, अल्लाह तआला ने ज़मीन को हुक्म दिया : अपने अन्दर मौजूद उसके (बिखरे हुए ज़र्रात) जमा कर दे, ज़मीन ने ज़र्रात जमा कर दिए तो वो (पूरे जिस्म के साथ अल्लाह तआला के सामने) खड़ा हो गया। अल्लाह तआला ने फरमायाः तुम्हें इस कार्रवाई पर किस चीज़ ने आमादा किया था ? उसने कहाः ऐ मेरे रब! तेरी खशिय्यत ने, या अर्ज़ किया ऐ रब! तेरे ख़ौफ़ ने। तो अल्लाह तआला ने उसे बख़्शा दिया।''

٤٤٠ / ٥٨ـ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: إِنَّ الْمُؤْمِنَ، إِذَا أَذْنَبَ، كَانَتْ نُكْتَةٌ سَوْدَاءُ فِي قَلْبِهِ. فَإِنْ تَابَ وَنَزَعَ وَاسْتَغْفَرَ، صُقِلَ قَلْبُهُ. فَإِنْ زَادَ زَادَتْ حَتَّى تَغْلَفَ قَلْبُهُ. فَذَلِكَ الرَّانُ الَّذِي ذَكَرَهُ اللهُ فِي كِتَابِهِ ﴿كَلَّا بَلْ رَانَ عَلَى قُلُوْبِهِمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ﴾ [المطففين، ٨٣: ١٤]. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَه وَاللَّفْظُ لَهُ.

وَقَالَ أَبُوْعَيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ. وَقَالَ الْحَاكِمُ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحٌ.

الحديث رقم ٥٨: أخرجه الترمذي في السنن، كتاب: تفسير القرآن عن رسول الله ﷺ، باب: ومن سورة ويل للمطففين، ٥/ ٤٣٤، الرقم: ٣٣٣٤، وابن ماجه في السنن، كتاب: الزهد، باب: ذكر الذنوب، ٢/ ١٤١٨، الرقم: ٤٢٤٤، والنسائي في السنن الكبرى، ٦/ ١١٠، الرقم: ١٠٢٥١ ـ ١١٦٥٨، وفي عمل اليوم والليلة، ١/ ٣١٧، الرقم: ٤١٨، والحاكم في المستدرك، ٢/ ٥٦٢، الرقم: ٣٩٠٨، والبيهقي في السنن الكبرى، ١٠/ ١٨٨، وفي شعب الإيمان، ٥/ ٤٤٠، الرقم: ٧٢٠٣، والطبراني في المعجم الكبير، ١/ ٢٧٥، الرقم: ٨٠١، وابن حبان في الصحيح، ٧/ ٢٧، الرقم: ٢٧٨٧، والديلمي في مسند الفردوس، ١/ ١٩٩، الرقم: ٧٥١، والمنذري في الترغيب والترهيب، ٤/ ٤٧، الرقم: ٤٧٥٢.

''हज़रत अबू हुरैरा ؓ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः मोमिन जब कोई गुनाह करता है तो उसके दिल पर एक स्याह निशान बन जाता है, फिर अगर वो तौबा करले और (गुनाह से) हट जाए और इस्तग़फ़ार करे तो उसका दिल साफ़ हो जाता है (लेकिन) अगर वो ज़्यादा (गुनाह) करे तो यह निशान बढ़ता जाता है, यहाँ तककि उसके (पूरे) दिल को अपनी लपेट में ले लेता है और यही वो 'رَان' (रंग) है जिसका जिक्र अल्लाह तआला ने अपनी किताब (कुरआन मजीद) में फरमायाः ﴿ كَلَّا بَلْ رَانَ عَلَى قُلُوْبِهِمْ مَاكَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴾ ''हरगिज़ नहीं बल्कि उनके दिलों पर अमलों की वजह से स्याही छा गई है।''

٤٤١ / ٥٩۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ؓ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ تَابَ قَبْلَ أَنْ تَطْلُعَ الشَّمْسُ مِنْ مَغْرِبِهَا، تَابَ اللهُ عَلَيْهِ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَالنَّسَائِيُّ.

''हज़रत अबू हुरैरा ؓ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जो शख़्स मग़्रिब से सूरज तुलूअ होने तक (यानी क़यामत बपा होने) से पहले–पहले तौबा करेगा अल्लाह तआला उसकी तौबा क़ुबूल फरमाएगा।''

٤٤٢ / ٦٠۔ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رضي الله عنهما، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: إِنَّ اللهَ يَقْبَلُ تَوْبَةَ الْعَبْدِ مَا لَمْ يُغَرْغِرْ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَه.

وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ. وَقَالَ الْحَاكِمُ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحُ الإِسْنَادِ.

الحديث رقم ٥٩: أخرجه مسلم فى الصحيح، كتاب: الذكر والدعاء والتوبة والاستغفار، باب: استحباب الاستغفار والاستكثار منه، ٤ / ٢٠٧٦، الرقم: ٢٧٠٣، والنسائى فى السنن الكبرى، ٦ / ٣٤٤، الرقم: ١١١٧٩، وابن حبان فى الصحيح، ٢ / ٣٩٦، الرقم: ٦٢٩، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٢ / ٣٩٥، الرقم: ٩١١٩، ٩٥٠٥، ١٠٤٢٤، ١٠٥٨٩، والطبرانى فى المعجم الأوسط، ٧ / ٢٢٧، الرقم: ٧٣٤٤، ١٠ / ١٩٨، وابن منده فى الإيمان، ٢ / ٩٣٠، الرقم: ١٠٢٤، ١٠٢٥، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٤ / ٤٥، الرقم: ٤٧٤١۔

لحديث رقم ٦٠: أخرجه الترمذي فى السنن، كتاب: الدعوات عن رسول الله ﷺ، باب: فى فضل التوبة والاستغفار وما ذكر من رحمة الله لعباده، ٥ / ٥٤٧، ←

''हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर رضي الله عنهما से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः अल्लाह तआला उस वक़्त तक बन्दे की तौबा क़ुबूल फरमाता है जब तक रूह उसके हलक़ में पहुँच कर ग़र–ग़र नहीं करती (यानी जब तक वो हालते नज़ा में मुब्तिला नहीं होता)।''

٤٤٣ / ٦١۔ عَنْ أَنَسِ بْنِ مالِكٍ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ : إِنَّ لِلْقُلُوْبِ صَدَأً كَصَدَإِ النُّحَاسِ (أَوْ كَصَدَإِ الْحَدِيْدِ) وَجِلاؤُهَا الاسْتِغْفَارُ.

رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ وَالْبَيْهَقِيُّ بِإِسْنَادِهِ.

''हज़रत अनस ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः पीतल (या लोहे) की तरह दिलों का भी एक रंग है और उसकी पॉलिश (और उससे छुटकारे का ज़रीया) इस्तग़फ़ार है।''

٤٤٤ / ٦٢۔ عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ ﷺ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: إِنَّ الشَّيْطَانَ قَالَ: وَعِزَّتِكَ! لَا أَبْرَحُ أُغْوِي عِبَادَكَ مَادَامَتْ أَرْوَاحُهُمْ فِي

الرقم: ٣٥٣٧، وابن ماجه فی السنن، كتاب: الزهد، باب: ذكر التوبة، ٢ / ١٤٢٠، الرقم: ٤٢٥٣، والحاكم فی المستدرك، ٤ / ٢٨٦، الرقم: ٧٦٥٩، وابن حبان فی الصحيح، ٢ / ٣٩٤، الرقم: ٦٢٨، وأبو يعلى فی المسند، ٩ / ٤٦٢، الرقم: ٥٤٠٩، ٥٧١٧، وأحمد بن حنبل فی المسند، ٢ / ١٥٣، الرقم: ٦٤٠٨، ٢٣١١٨، وابن أبي شيبة فی المصنف، ٧ / ١٧٣، الرقم: ٣٥٠٧٧، والطبرانی فی مسند الشاميين، ١ / ١٢٤، الرقم: ١٩٤، والبيهقی فی شعب الإيمان، ٥ / ٣٩٥، الرقم: ٧٠٦٣، والمنذری فی الترغيب والترهيب، ٤ / ٤٨، الرقم: ٤٧٨٤، والهيثمی فی موارد الظمآن، ١ / ٦٠٧، الرقم: ٢٤٤٩، وفی مجمع الزوائد، ١٠ / ١٩٧، وَقَالَ: رِجَالُهُ ثِقَاتٌ۔

الحديث رقم ٦١: أخرجه الطبرانی فی المعجم الصغير، ١ / ٣٠٧، الرقم: ٥٠٩، وفی المعجم الأوسط، ٧ / ٧٤، الرقم: ٦٨٩٤، والبيهقي فی شعب الإيمان، ١ / ٤٤١، الرقم: ٦٤٩، والمنذری فی الترغيب والترهيب، ٢ / ٣١٠، الرقم: ٢٥٠٧، والهيثمی فی مجمع الزوائد، ١٠ / ٢٠٧۔

الحديث رقم ٦٢: أخرجه أحمد بن حنبل فی المسند، ٣ / ٢٩، الرقم: ١١٢٥٥، ١١٧٤٧، والحاكم فی المستدرك، ٤ / ٢٩٠، الرقم: ٧٦٧٢، وأبو يعلى فی المسند، ←

أَجْسَادِهِمْ. فَقَالَ: وَعِزَّتِي وَجَلَالِي! لَا أَزَالُ أَغْفِرُ لَهُمْ مَا اسْتَغْفَرُوْنِي.

رَوَاهُ أَحْمَدُ وَأَبُوْيَعْلَى وَالْحَاكِمُ.

وَقَالَ الْحَاكِمُ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحُ الإِسْنَادِ.

''हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः शैतान ने (बारगाहे इलाही में) कहा : (ऐ अल्लाह!) मुझे तेरी इज़्ज़त की क़सम ! मैं तेरे बन्दों को जब तक उन की रूहें उनके जिस्मों में बाक़ी रहेंगी गुमराह करता रहूँगा । अल्लाह तआला ने फरमाया : मुझे अपनी इज़्ज़त और जलाल की क़सम! जब तक वो मुझ से बख़्शिश माँगते रहेंगे मैं उन्हें बख़्शता रहूँगा।''

٤٤٥ / ٦٣ـ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ! لَوْلَمْ تُذْنِبُوْا لَذَهَبَ اللهُ بِكُمْ وَلَجَاءَ بِقَوْمٍ يُذْنِبُوْنَ فَيَسْتَغْفِرُوْنَ اللهَ فَيَغْفِرُ لَهُمْ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَأَحْمَدُ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः मुझे उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़ए कुदरत में मेरी जान है ! अगर तुम गुनाह न करोगे तो अल्लाह तआला तुम्हें ले जाएगा और ऐसे लोग ले आएगा जो गुनाह भी करेंगे और माफी भी माँगेंगे और अल्लाह तआला उन्हें माफ करेगा।''

.... ٢ / ٥٣٠، الرقم: ١٣٩٩، والديلمى فى مسند الفردوس، ٣ / ١٩٩، الرقم: ٤٥٥٩، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٢ / ٣٠٩، الرقم: ٢٥٠٠۔

الحديث رقم ٦٣: أخرجه المسلم في الصحيح، كتاب: التوبة، باب: سقوط الذنوب بالاستغفار والتوبة، ٤ / ٢١٠٦، الرقم: ٢٧٤٩، وأحمد بن حنبل في المسند، ٢ / ٣٠٩، الرقم: ٨٠٦٨، والبيهقي في شعب الإيمان، ٥ / ٤١٠، الرقم: ٧١٠٢، وأبويعلى فى المعجم، ١ / ٩٩، الرقم: ٩٣، والديلمي عن ابن عمر رضى الله عنهما فى مسند الفردوس، ٣ / ٣٦٠، الرقم: ٥٠٨٦، وابن راشد فى الجامع، ١١ / ١٨١، والسيوطى فى أسباب ورود الحديث، ١ / ٢٠٥، الرقم:١٦٩۔ ١٧٦، والحسينى فى البيان والتعريف، ٢ / ١٦٨، الرقم: ١٣٩١، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٤ / ٤٩، الرقم: ٤٧٦٣۔

٤٤٦ / ٦٤۔ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَبَّاسٍ رضي الله عنهما قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ لَزِمَ الْإِسْتِغْفَارَ جَعَلَ اللهُ لَهُ مِنْ كُلِّ هَمٍّ وَمِنْ ضِيْقٍ مَخْرَجًا، وَرَزَقَهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ. رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ وَابْنُ مَاجَه.

وَقَالَ الْحَاكِمُ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحُ الإِسْنَادِ.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رضي الله عنهما से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जो शख़्स पाबन्दी के साथ इस्तग़फ़ार करता है, अल्लाह तआ़ला उसके लिए हर ग़म से नजात और हर मुश्किल से निकलने का रास्ता बना देता है और उसे वहाँ से रिज़्क़ देता है जहाँ से उसे वहम व गुमान भी न हो।''

الحديث رقم ٦٤: أخرجه أبوداود فى السنن، كتاب: الصلاة، باب: في الاستغفار، ٢ / ٨٥، الرقم: ١٥١٨، وابن ماجه فى السنن، كتاب: الأدب، باب: الاستغفار، ٢ / ١٢٥٤، الرقم: ٣٨١٩، والنسائى فى عمل اليوم والليلة، ١ / ٣٣٠، الرقم: ٤٥٦، والحاكم فى المستدرك، ٤ / ٢٩١، الرقم: ٧٦٧٧، وأحمد بن حنبل فى المسند، ١ / ٢٤٨، الرقم: ٢٢٣٤، والطبرانى فى المعجم الكبير، ١٠ / ٢٨١، الرقم: ١٠٦٦٥، والبيهقي فى السنن الكبرى، ٣ / ٣٥١، الرقم: ٦٢١٤، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٢ / ٣٠٩، الرقم: ٢٥٠٢۔

فَصْلٌ فِي الْأَذْكَارِ وَالتَّسْبِيْحَاتِ

अज़कार और तस्बीहात का बयान

٤٤٧ / ٦٥۔ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رضي الله عنهما قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: أَفْضَلُ الذِّكْرِ: لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ، وَأَفْضَلُ الدُّعَاءِ: اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ.

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَه وَالنَّسَائِيُّ.

وَقَالَ أَبُوْعِيسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ، وَقَالَ الْحَاكِمُ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رضي الله عنهما रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबीए अकरम ﷺ ने फरमायाः बेहतरीन ज़िक्र ﴿لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ﴾ है, और बेहतरीन दुआ ﴿اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ﴾ है।''

٤٤٨ / ٦٦۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضي الله عنه عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: كَلِمَتَانِ خَفِيْفَتَانِ عَلَى اللِّسَانِ، ثَقِيْلَتَانِ فِي الْمِيْزَانِ، حَبِيْبَتَانِ إِلَى الرَّحْمَنِ: سُبْحَانَ اللهِ وَبِحَمْدِهِ، سُبْحَانَ اللهِ الْعَظِيْمِ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

الحديث رقم ٦٥: أخرجه الترمذى فى السنن، كتاب: الدعوات عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء أن دعوة المسلم مستجابة، ٥/ ٤٦٢، الرقم: ٣٣٨٣، وابن ماجه فى السنن، كتاب: الأدب، باب: فضل الحامدين، ٢/ ١٢٤٩، الرقم: ٣٨٠٠، والنسائي فى السنن الكبرى، ٦/ ٢٠٨، الرقم: ١٠٦٦٧، وابن حبان فى الصحيح، ٣/ ١٢٦، الرقم: ٨٤٦، والحاكم فى المستدرك، ٤/ ٩٠، الرقم: ١٨٣٤.

الحديث رقم ٦٦: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: الدعوات، باب: فضل التسبيح، ٥/ ٢٣٥٢، الرقم: ٦٠٤٣، وفى كتاب: الأيمان والنذور، باب: إِذَا قَالَ: واللهِ لَا أَتَكَلَّمُ اليَومَ، فصلَّى أَوْ قَرَأَ، أَوْ سَبَّحَ، أَوْ كَبَّرَ، أَو حَمِدَ، أَو هَلَّلَ، فَهُوَ عَلَى نِيَّتِهِ، ٦/ ٢٤٥٩، الرقم: ٦٣٠٤، وفى كتاب: التوحيد، باب: قول الله تعالى: وَ نَضَعُ الْمَوَازِيْنَ الْقِسْطَ، [الأنبياء: ٤٧]، ٦/ ٢٧٤٩، الرقم: ٧١٢٤، ومسلم فى الصحيح، كتاب: الذكر والدعاء والتوبة والاستغفار، باب: فضل التهليل و ←

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः वो कलिमात ज़बान पर (बहुत) हल्के फुल्के हैं, तराज़ु में (बहुत) वज़नी हैं, रहमान को बहुत प्यारे हैं (और वो कलिमात यह हैं :) ﴿سُبْحَانَ اللهِ وَبِحَمْدِهِ، سُبْحَانَ اللهِ الْعَظِيْمِ﴾ (अल्लाह तआला पाक है और तमाम तारीफ़ें उसी के लिए हैं, अल्लाह तआला पाक है और निहायत अज़मत वाला है)।''

٤٤٩ / ٦٧۔ عَنْ جَابِرٍ ﷺ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ، قَالَ: مَنْ قَالَ: سُبْحَانَ اللهِ الْعَظِيْمِ وَبِحَمْدِهِ، غُرِسَتْ لَهُ نَخْلَةٌ فِي الْجَنَّةِ.

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالْبَزَّارُ وَابْنُ حِبَّانَ.

وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत जाबिर ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जिसने कहाः ﴿سُبْحَانَ اللهِ الْعَظِيْمِ وَبِحَمْدِهِ﴾ उसके लिए जन्नत में खजूर का एक दरख़्त लगा दिया गया।''

.... التسبيح والدعاء، ٤/٢٠٧٢، الرقم: ٢٦٩٤، والترمذي في السنن، كتاب: الدعوات عن رسول الله ﷺ، باب:(٦٠)، ٥/٥١٢، الرقم: ٣٤٦٧، وقال الترمذي: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ، وابن ماجه في السنن، كتاب: الأدب، باب: فضل التسبيح، ٢/١٢٥١، الرقم: ٣٨٠٦، والنسائي في السنن الكبرى، ٦/٢٠٧، الرقم: ١٠٦٦٦، وفي عمل اليوم والليلة، ١/٤٨٠، الرقم: ٨٣٠، وأحمد بن حنبل في المسند، ٢/٢٣٢، الرقم: ٧١٦٧، والبيهقي في شعب الإيمان، ١/٤٢٠، الرقم: ٥٩١، وابن أبي شيبة في المصنف، ٦/٥٣، الرقم: ٢٩٤١٣، ٣٥٠٢٦، والديلمي في مسند الفردوس، ٣/٢٩٦، الرقم: ٤٨٨٧، وابن غزوان في كتاب الدعاء، ١/٢٥٩، الرقم: ٨٣، والمنذري في الترغيب والترهيب، ٢/٢٧٢، الرقم: ٢٣٧٢۔

الحديث رقم ٦٧: أخرجه الترمذي في السنن، كتاب: الدعوات عن رسول الله ﷺ، باب: (٦٠)، ٥/٥١١، الرقم: ٣٤٦٤۔٣٤٦٥، والبزار في المسند، ٦/٤٣٦، الرقم: ٢٤٦٨، وابن حبان في الصحيح، ٣/١٠٩، الرقم: ٨٢٦، وأبو يعلى في المسند، ٤/١٦٥، الرقم: ٢٢٣٣، والطبراني في المعجم الصغير، ١/١٨١، الرقم: ٢٨٧، والمنذري في الترغيب والترهيب، ٢/٢٧٣، الرقم: ٢٣٧٧، والهيثمي في مجمع الزوائد، ١٠/٩٤، وقال الهيثمي: إِسْنَادُهُ جَيِّدٌ۔

٤٥٠ / ٦٨۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضي الله عنه أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ قَالَ: سُبْحَانَ اللهِ وَبِحَمْدِهِ، فِي يَوْمٍ مِائَةَ مَرَّةٍ، حُطَّتْ خَطَايَاهُ وَإِنْ كَانَتْ مِثْلَ زَبَدِ الْبَحْرِ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अबू हुरैरा رضي الله عنه से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया: जो शख़्स एक दिन में सौ बार ﴿سُبْحَانَ اللهِ وَبِحَمْدِهِ﴾ पढ़ता है उसके तमाम गुनाह माफ कर दिए जाते हैं अगर चे वो समन्दर के झाग के बराबर भी हों।''

٤٥١ / ٦٩۔ عَنْ أَبِي مُوْسَى رضي الله عنه أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ لَهُ: قُلْ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللهِ، فَإِنَّهَا كَنْزٌ مِنْ كُنُوْزِ الْجَنَّةِ. أَوْ قَالَ: هَلْ أَدُلُّکَ عَلَى كَلِمَةٍ هِيَ كَنْزٌ مِنْ كُنُوْزِ الْجَنَّةِ؟ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللهِ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

الحديث رقم ٦٨: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: الدعوات، باب: فضل التسبيح، ٥/٢٣٥٢، الرقم: ٦٠٤٢، ومسلم فى الصحيح، كتاب: الذكر والدعاء والتوبة والاستغفار، باب: فضل التهليل والتسبيح والدعاء، ٤/٢٠٧١، الرقم: ٢٦٩١، والترمذي فى السنن، كتاب: الدعوات عن رسول الله ﷺ، باب: (٦٠)، ٥/٥١١، الرقم: ٣٤٤٤، وقال أبو عيسى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ، ونحوه النسائى فى السنن، كتاب: السهو، باب: نوع آخر، ٣/٧٩، الرقم: ١٣٥٤، وابن ماجه فى السنن، كتاب: الأدب، باب: فضل التسبيح، ٢/١٢٥٣، الرقم: ٣٨١٢، ومالك فى الموطأ، كتاب: القرآن، باب: ما جاء فى ذكر الله تبارك وتعالى، ١/٢٠٩، الرقم: ٤٨٩، وابن حبان فى الصحيح، ٣/١١١، الرقم: ٨٢٩، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٢/٣٠٢، الرقم: ٧٩٩٦، وابن أبي شيبة فى المصنف، ٦/٥٤، الرقم: ٢٩٤١٧، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٢/٢٧٤، الرقم: ٢٣٨٠۔

الحديث رقم ٦٩: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: الدعوات، باب: الدُّعَاءِ إِذَا عَلاَ عَقَبَةً، ٥/٢٣٤٦، الرقم: ٦٠٢١، وفى كتاب: المغازى، باب: غزوة خيبر، ٤/١٥٤١، الرقم: ٣٩٦٨، وفى كتاب: التوحيد، باب: قولِ الله تعالى: وكان الله سميعا بصيرا، [النساء: ١٣٤]، ٦/٢٦٩٠، الرقم: ٦٩٥٢، ومسلم فى الصحيح، كتاب: الذكر والدعاء والتوبة والاستغفار، باب: استحباب خفض الصوت بالذكر، ٤/٢٠٧٦، الرقم: ٢٧٠٤، وابن ماجه فى السنن، كتاب: الأدب، باب: ما ←

''हज़रत अबी मूसा ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः तुम कहो ﴿لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللهِ﴾ : ''अल्लाह तआला (की तौफ़ीक़) के बग़ैर न बुराई से बचने की ताक़त है और न नेकी करने की इस्तिताअत। यह जन्नत के ख़ज़ानों में से एक ख़ज़ाना है या फरमाया : क्या मैं तुम्हें ऐसे कल्मे की ख़बर दूँ जो जन्नत के ख़ज़ानों में से एक ख़ज़ाना है? (वो कलिमा) ﴿لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللهِ﴾ है।''

٤٥٢ / ٧٠۔ عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ ﷺ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: أَ لَا أَدُلُّکَ عَلَى بَابٍ مِنْ أَبْوَابِ الْجَنَّةِ؟ قَالَ: وَمَا هُوَ؟ قَالَ: لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللهِ. رَوَاهُ النَّسَائِيُّ وَأَحْمَدُ وَالطَّبَرَانِيُّ بِإِسْنَادٍ جَيِّدٍ.

''हज़रत मुआज़ बिन जबल ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः क्या मैं तुम्हें जन्नत के दरवाज़ों में से एक दरवाज़ा न बताऊँ ? अर्ज़ किया : वो क्या है? आप ﷺ ने फरमायाः ﴿لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللهِ﴾ ''अल्लाह तआला (की तौफ़ीक़) के बग़ैर न बुराई से बचने की ताकत है और न नेकी करने की इस्तिताअत।''

٤٥٣ / ٧١۔ عَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ ﷺ قَالَ: مَنْ قَالَ:إِذَا أَصْبَحَ وَإِذَا أَمْسَي: ﴿حَسْبِيَ اللهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ﴾، سَبْعَ مَرَّاتٍ، كَفَاهُ اللهُ مَا أَهَمَّهُ صَادِقًا كَانَ أَوْ كَاذِبًا.

.... جاء فی لاحول ولا قوة إلا باالله، ٢/١٢٥٦، الرقم: ٣٨٢٤۔ ٣٨٢٥، والنسائی عن أبی ذر ﷺ فی السنن الکبری، ٦/٩٦، الرقم: ١٠١٨٦، وأحمد بن حنبل فی المسند، ٤/٣٩٩، وابن حبان فی الصحيح، ٣/١٠١، الرقم: ٨٢٠۔

الحديث رقم ٧٠: أخرجه النسائی فی السنن الکبری، ٦/٩٧، الرقم:١٠١٨٩، وأحمد بن حنبل فی المسند، ٥/٢٢٨، الرقم: ٢٢٠٤٩، ٢٢١٥٢، والنسائی فی عمل اليوم والليلة، ١/٢٩٥، الرقم: ٣٥٧، وعبد بن حميد فی المسند، ١/٧٣، الرقم: ١٢٨، والمنذری فی الترغيب والترهيب، ٢/٢٩١، الرقم: ٢٤٤١، والهيثمی فی مجمع الزوائد، ١٠/٩٧۔

الحديث رقم ٧١: أخرجه أبوداود فی السنن، کتاب: الأدب، باب: ما يقول إذا أصبح، ٤/٣٢١، الرقم: ٥٠٨١، والديلمی فی مسند الفردوس، ٣/٤٧٥، الرقم: ٥٤٧٢، والمنذری فی الترغيب والترهيب، ١/٢٥٥، الرقم: ٩٦٨۔

رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ.

''हज़रत अबी दरदा ﷺ से रिवायत है कि जो शख़्स सुबह व शाम 7 बार यह दुआ पढ़ता है वो सच्चा हो या झूठा अल्लाह तआला उसके लिए (हर फ़िक्रमन्द करने वाले काम के लिए) काफ़ी हो जाता है (﴿حَسْبِيَ اللهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ﴾): ''मुझे अल्लाह तआला काफ़ी है अल्लाह तआला के अलावा कोई सच्चा माबूद नहीं उसी पर मैंने तवक्कल किया और वो अर्शे अज़ीम का रब है।''

٤٥٤ / ٧٢. عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: اسْتَكْثِرُوْا مِنَ الْبَاقِيَاتِ الصَّالِحَاتِ. قِيْلَ: وَمَا هُنَّ يَا رَسُوْلَ اللهِ؟ قَالَ: التَّكْبِيْرُ وَالتَّهْلِيْلُ وَالتَّسْبِيْحُ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللهِ.

رَوَاهُ ابْنُ حِبَّانَ وَأَحْمَدُ.

وَقَالَ الْحَاكِمُ: هَذَا أَصَحُّ الإِسْنَادِ.

''हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः बाक़ियाते सालेहात (बाक़ी रहने वाली नेकियाँ) ज़्यादा से ज़्यादा जमा करो। अर्ज़ किया गया : या रसूलल्लाह! वो कौनसी हैं? फरमाया ﴿اَللهُ أَكْبَرُ﴾، ﴿لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ﴾، ﴿سُبْحَانَ اللهِ﴾، ﴿اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ﴾ और ﴿لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللهِ﴾ पढ़ते रहो।''

٤٥٥ / ٧٣. عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ قَالَ:

الحديث رقم ٧٢: أخرجه ابن حبان فى الصحيح، ٣ / ١٢١، الرقم: ٨٤٠، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٣ / ٧٥، الرقم: ١١٧٣١، والحاكم فى المستدرك، ١ / ٦٩٤، الرقم: ١٨٨٩، وأبو يعلى فى المسند، ٢ / ٥٢٤، الرقم: ١٣٨٤، والبيهقى فى شعب الإيمان، ١ / ٤٢٥، الرقم: ٦٠٥، وابن رجب فى جامع العلوم والحكم، ١ / ٤٤٤، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٢ / ٢٨٠، الرقم: ٢٤٠٣، والهيثمى فى مجمع الزوائد، ١٠ / ٨٧، وقال الهيثمى: إِسْنَادُهُ حَسَنٌ.

الحديث رقم ٧٣: أخرجه الحاكم فى المستدرك، ١ / ٦٨١، الرقم: ١٨٥٠، وابن الجعد فى المسند، ١ / ٢٥٧، الرقم: ١٧٠٧، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٢ / ٢٨٤، الرقم: ٢٤١٦.

سُبْحَانَ اللهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ وَاللهُ أَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ، قَالَ اللهُ: اسْلَمَ عَبْدِي وَاسْتَسْلَمَ. رَوَاهُ الْحَاكِمُ.

وَقَالَ الْحَاكِمُ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحُ الإِسْنَادِ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से रिवायत है कि उन्होंने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ को फरमाते हुए सुनाः जब कोई शख़्स कहता है : ﴿سُبْحَانَ اللهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ وَاللهُ أَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ﴾ ''अल्लाह तआला पाक है और तमाम तारीफ़ें अल्लाह तआला के लिए हैं अल्लाह तआला के सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं और अल्लाह तआला सबसे बड़ा है, अल्लाह तआला (की तौफ़ीक़) के बग़ैर न बुराई से बचने की ताक़त है और न नेकी करने की इस्तिताअत।'' तो अल्लाह तआला फरमाता है। ''मेरा बन्दा मेरा मुतीअ और फरमाँबरदार हो गया है (उसे बख़्श दिया गया)।''

٤٥٦ / ٧٤. عَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ صَلَّى عَلَيَّ حِيْنَ يُصْبِحُ عَشْرًا وَحِيْنَ يُمْسِي عَشْرًا أَدْرَكَتْهُ شَفَاعَتِي يَوْمَ الْقِيَامَةِ. رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ بِإِسْنَادٍ جَيِّدٍ كَمَا قَالَ الْمُنْذِرِيُّ.

''हज़रत अबी दरदा ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : जो शख़्स सुबह के वक़्त और शाम के वक़्त मुझ पर दस बार दुरूद भेजेगा उसे क़यामत के दिन मेरी शफ़ाअत नसीब होगी।''

٤٥٧ / ٧٥. عَنْ كَعْبِ بْنِ عُجْرَةَ ﷺ عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ قَالَ:

الحديث رقم ٧٤: أخرجه المنذرى فى الترغيب والترهيب، ١ / ٢٦١، الرقم: ٩٨٧، وقال: رواه الطبرانى بإسنادين أحدهما جيد، ورجاله وثقوا، والهيثمى فى مجمع الزوائد، ١٠ / ١٢٠.

الحديث رقم ٧٥: أخرجه مسلم في الصحيح، كتاب: المساجد ومواضع الصلاة، باب: استحباب الذكر بهذا الصلاة وبيان صفته، ١ / ٤١٨، الرقم: ٥٩٦، والترمذى فى السنن، كتاب: الدعوت عن رسول الله ﷺ، باب: منه (٢٥)، ٥ / ٤٧٩، الرقم: ٣٤١٢، والنسائى فى السنن، كتاب: السهو، باب: نوع آخر من عدد التسبيح، ←

مُعَقِّبَاتٌ لَا يَخِيْبُ قَائِلُهُنَّ أَوْ فَاعِلُهُنَّ دُبُرَ كُلِّ صَلَاةٍ مَكْتُوبَةٍ ثَلَاثٌ وَثَلَاثُوْنَ تَسْبِيْحَةً وَثَلَاثٌ وَثَلَاثُوْنَ تَحْمِيْدَةً وَأَرْبَعٌ وَثَلَاثُوْنَ تَكْبِيْرَةً.

رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَالتِّرْمِذِيُّ.

وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ.

''हज़रत क़ा'ब बिन उजरह ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद किए जाने वाले कुछ अज़कार ऐसे हैं जिन्हें पढ़ने वाला या करने वाला नाकाम नहीं होता (जो कि यह हैं) 33 बार ﴿سبحان الله﴾, 33 बार ﴿الحمدالله﴾ और 34 बार ﴿الله اكبر﴾ पढ़ना।''

٤٥٨ / ٧٦۔ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رضي الله عنهما قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: أَ لَا أُخْبِرُكُمْ بِوَصِيَّةِ نُوْحٍ ابْنَهُ؟ قَالُوْا: بَلَى، قَالَ: أَوْصَى نُوْحٌ ابْنَهُ فَقَالَ لِابْنِهِ: يَا بُنَيَّ! إِنِّي أُوْصِيْكَ بِاثْنَتَيْنِ وَأَنْهَاكَ عَنِ اثْنَتَيْنِ. أُوْصِيْكَ بِقَوْلِ لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ فَإِنَّهَا لَوْ وُضِعَتْ فِي كَفَّةٍ وَوُضِعَتِ

.... ٣ / ٧٥، الرقم: ١٣٤٩، وفى السنن الكبرى، ١ / ٤٠١، الرقم: ١٢٧٢، ٩٩٨٣، ٩٩٨٤، وفى عمل اليوم والليلة، ١ / ٢٠٩، الرقم: ١٥٥۔ ١٥٦، وابن حبان فى الصحيح، ٥ / ٣٦٢، الرقم: ٢٠١٩، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٢ / ١٨٧، الرقم:٢٨٤٩، وعبد الرزاق فى المصنف، ٢ / ٢٣٥، الرقم: ٣١٩٣، وابن أبى شيبة فى المصنف، ٦ / ٣١، الرقم: ٢٩٢٥٢۔ ٢٩٢٥٤، والطبرانى فى المعجم الكبير، ١٩ / ١٢٢، الرقم:٢٥٩۔ ٢٦٠، والبخارى فى الأدب المفرد، ١ / ٢١٨، الرقم: ٦٢٢،و المنذرى فى الترغيب والترهيب، ٢ / ٢٩٧، الرقم: ٦٤٦٥۔

الحديث رقم ٧٦: أخرجه أحمد بن حنبل فى المسند، ٢ / ١٦٩، الرقم: ٦٥٨٣، والبخارى فى الأدب المفرد، ١ / ١٩٢، الرقم: ٥٤٨، والنسائى فى السنن الكبرى، ٦ / ٢٠٨، الرقم: ١٠٦٦٨، وفى عمل اليوم والليلة ، ١ / ٤٨١، الرقم: ٨٣٢، وابن رجب فى جامع العلوم والحكم، ١ / ٢١٧، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٢ / ٢٦٩، الرقم: ٢٣٦٠، وقال المنذرى: رواه البزار ورواته محتج بهم فى الصحيح، والهيثمى فى مجمع الزوائد، ١٠ / ٨٤ ، وقال الهيثمى : رَوَاهُ الْبَزَّارُ۔

السَّمَاوَاتُ وَالْأَرْضُ فِي كَفَّةٍ لَرَجَحَتْ بِهِنَّ، وَلَوْ كَانَتْ حَلْقَةً لَقَصَمَتْهُنَّ حَتَّى تَخْلُصَ إِلَى اللهِ فَذَكَرَهُ بِتَمَامِهِ.

رَوَاهُ الْبَزَّارُ وأَحْمَدُ وَالنَّسَائِيُّ وَالْبُخَارِيُّ فِي الْأَدَبِ.

وَقَالَ الْحَاكِمُ: صَحِيْحُ الإِسْنَادِ.

''हज़रत अ़ब्दुलल्लाह बिन उमर رضي الله عنهما से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः क्या मैं तुम्हें हज़रत नूह عليه السلام की अपने बेटे को की हुई वसीयत न बताऊँ? सहाबा किराम ने अ़र्ज़ किया (या रसूलल्लाह!) ज़रूर बताएं। आप ﷺ ने फरमायाः हज़रत नूह عليه السلام ने अपने बेटे को वसीयत कीः ऐ मेरे प्यारे बेटे! मैं तुम्हें दो कामों का हुक्म देता हूँ और दो कामों से रोकता हूँ। मैं तुम्हें ﴿لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ﴾ के जिक्र की वसीयत करता हूँ। क्योंकि यह कलिमा अगर एक पलड़े में रख दिया जाए और आसमान व ज़मीन दूसरे पलड़े में रख दिए जाएं तो यह उनसे वज़नी हो जाएगा और अगर (यह आसमान व ज़मीन) गोल दायरे की तरह भी हों तो यह उन्हें चीरता हुआ सीधा अल्लाह तआ़ला की तरफ़ चला जाएगा।'' उसके बाद पूरी हदीस ज़िक्र की।''

٤٥٩ / ٧٧. عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ رضي الله عنه قَالَ: سَمِعَ النَّبِيُّ ﷺ رَجُلًا وَهُوَ يَقُوْلُ: يَا ذَا الْجَلَالِ وَالإِكْرَامِ! فَقَالَ: اسْتُجِيْبَ لَكَ فَسَلْ.

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَحْمَدُ وَالْبَزَّارُ.

وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ.

''हज़रत मुआज़ बिन जबल رضي الله عنه से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने एक आदमी को यह अल्फ़ाज़ कहते हुए सुनाः ''﴿يَا ذَا الْجَلَالِ وَالإِكْرَامِ﴾'' तो आप ﷺ ने फरमायाः तुम्हारी दुआ क़ुबूल हो गई है, तुम माँगो।''

الحديث رقم ٧٧: أخرجه الترمذى فى السنن، كتاب: الدعوات عن رسول الله ﷺ، باب: (٩٤)، ٥/٥٤١، الرقم: ٣٥٢٧، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٥/٢٣٥، الرقم: ٣٢١٠٩، والبزار فى المسند، ٧/٨٢، الرقم: ٢٦٣٥، والطبرانى فى المعجم الكبير، ٢٠/٥٦، الرقم: ٩٨، وعبد بن حميد فى المسند، ١/٦٦، الرقم: ١٠٧، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٢/٣١٧، الرقم: ٢٥٣٧.

٤٦٠ / ٧٨۔ عَنْ عَائِشَةَ رضي الله عنها أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يَقُوْلُ لِلْمَرِيْضِ: بِسْمِ اللهِ، تُرْبَةُ أَرْضِنَا، وَرِيْقَةُ بَعْضِنَا، يُشْفَى سَقِيْمُنَا، بِإِذْنِ رَبِّنَا.

مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत आइशा رضي الله عنها से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ मरीज़ के लिए फरमाया करते थे : अल्लाह तआला के नाम से शिफ़ा तलब कर रहा हूँ, हमारी ज़मीन की मिट्टी और हम से कुछ का लुआब अल्लाह तआला के हुक्म से हमारे मरीज़ को शिफ़ा देता है।''

الحديث رقم ٧٨: أخرجه البخاري فى الصحيح، كتاب: الطب، باب: رُقْيَةِ النَّبِي ﷺ، ٥/٢١٦٨، الرقم: ٥٤١٤، ومسلم فى الصحيح، كتاب: السلام، باب: استحباب الرقية من العين والنملة والحملة والنظرة، ٤/١٧٢٤، الرقم: ٢١٩٤، وأبو داود فى السنن، كتاب: الطب، باب: كيف الرقى، ٤/١٢، الرقم: ٣٨٩٥، والنسائى فى السنن الكبرى، ٤/٣٦٨، الرقم: ٧٥٥٠، وابن ماجه فى السنن، كتاب: الطب، باب: ما عوذ به النبى ﷺ وما عوذ به، ٢/١١٦٣، الرقم: ٣٥٢١، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٦/٩٣، الرقم: ٢٤٦٦١۔

बाब 8 : اَلْبَابُ الثَّامِنُ:

فَضْلُ الْعِلْمِ وَالْأَعْمَالِ الصَّالِحَةِ

इल्म और आमाले सालेहा की फ़ज़ीलत

1. فَصْلٌ فِي فَضْلِ الْعِلْمِ وَالْعُلَمَاء

﴾इल्म और उल्मा की फ़ज़ीलत का बयान﴿

2. فَصْلٌ فِي فَضْلِ الذِّكْرِ وَالذَّاكِرِيْنَ

﴾ज़िक्रे इलाही और ज़ाकिरीन की फ़ज़ीलत का बयान﴿

3. فَصْلٌ فِي فَضْلِ الصَّلَاةِ وَالسَّلَامِ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ

﴾हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ पर दुरूदो सलाम भेजने की फ़ज़ीलत का बयान﴿

4. فَصْلٌ فِي فَضْلِ قِيَامِ اللَّيْلِ

﴾रात को क़ियाम करने की फ़ज़ीलत का बयान﴿

5. فَصْلٌ فِي الْمَدَائِحِ النَّبَوِيَّةِ وَ إِنْشَادِهَا

﴾हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की मदह और नात ख़्वानी का बयान﴿

6. فَصْلٌ فِي فَضْلِ زِيَارَةِ الْقُبُوْرِ

﴾ज़ियारते क़ुबूर की फ़ज़ीलत का बयान﴿

7. فَصْلٌ فِي فَضْلِ إِيْصَالِ الثَّوَابِ إِلَى الْأَمْوَاتِ

﴾फ़ौत शुदगान को सवाब पहुँचाने की फ़ज़ीलत का बयान﴿

فَصْلٌ فِي فَضْلِ الْعِلْمِ وَالْعُلَمَاءِ

इल्म और उल्मा की फ़ज़ीलत का बयान

٤٦١ / ١۔ عَنْ مُعَاوِيَةَ ﷺ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُوْلُ: مَن يُرِدِ اللهُ بِهِ خَيْرًا يُفَقِّهُهُ فِي الدِّيْنِ، وَإِنَّمَا أَنَا قَاسِمٌ وَاللهُ يُعْطِي.

مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ وَهَذَا لَفْظُ الْبُخَارِيِّ.

''हज़रत मुआविया ﷺ से रिवायत है कि मैंने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ को फरमाते हुए सुनाः अल्लाह तआला जिसके साथ भलाई का इरादा फरमाता है उसे दीन की समझ बूझ अता फरमा देता है और मैं तो फिर तक़सीम करने वाला हूँ जबकि देता अल्लाह तआला है।''

٤٦٢ / ٢۔ عَنْ أَنَسٍ بْنِ مَالِكٍ ﷺ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ

الحديث رقم ١: أخرجه البخاری فی الصحيح، کتاب: العلم، باب: من يرد اللّٰه به خيرا يفقّهه فی الدين، ١ / ٣٩، الرقم: ٧١، وفی أبواب: فرض الخمس، باب: قول اللّٰه تعالی: فإن للّٰه خمسه وللرسول، ٣ / ١١٣٤، الرقم: ٢٩٤٨، وفی کتاب: الاعتصام بالکتاب والسنة، باب: قول النبی ﷺ: لا تزال طائفة من أمتی ظاهرين علی الحق وهم أهل العلم، ٦ / ٢٦٦٧، الرقم: ٦٨٨٢، ومسلم فی الصحيح، کتاب: الزکاة، باب: النهی عن المسألة، ٢ / ٧١٨، الرقم: ١٠٣٧، والترمذی عن ابن عباس فی السنن، کتاب: العلم عن رسول اللّٰه ﷺ، باب: إذا اراد اللّٰه بعبد خيرا فقهه فی الدين، ٥ / ٢٨، الرقم: ٢٦٤٥، وابن ماجه عن معاوية وأبی هريرة رضی اللّٰه عنهما فی السنن، المقدمة، باب: فضل العلماء والحث علی طلب العلم، ١ / ٨٠، الرقم: ٢٢٠۔ ٢٢١، والنسائی فی السنن الکبری، ٣ / ٤٢٥، الرقم: ٥٨٣٩، ومالك فی الموطأ، ٢ / ٩٠٠، الرقم: ١٥٩٩، وأحمد بن حنبل فی المسند، ٢ / ٢٣٤، الرقم: ٧٩٣، والدارمی فی السنن، ١ / ٨٥، الرقم: ٢٢٤۔ ٢٢.

الحديث رقم ٢: أخرجه الترمذي فی السنن، کتاب: العلم عن رسول اللّٰه ﷺ، باب: فضل طلب العلم، ٥ / ٢٩، الرقم: ٢٦٤٧، والطبرانی فی المعجم الصغير، ١ / ٢٣٤، الرقم: ٣٨٠، والمقدسی فی الأحاديث المختارة، ٦ / ١٢٤، الرقم: ٢١١٩، وإسناده حسن، والمنذری فی الترغيب، ١ / ٦٠، الرقم: ١٤٨۔

خَرَجَ فِي طَلَبِ الْعِلْمِ كَانَ فِي سَبِيْلِ اللهِ حَتَّى يَرْجِعَ.

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَحَسَّنَهُ وَالطَّبَرَانِيُّ.

''हज़रत अनस ﷺ फरमाते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जो शख़्स हुसूले इल्म के लिए निकला वो उस वक़्त तक अल्लाह तआला की राह में है जब तक कि वापस नहीं लौट आता।''

٤٦٣ / ٣۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: أَلَا! إِنَّ الدُّنْيَا مَلْعُوْنَةٌ مَلْعُوْنٌ مَا فِيْهَا إِلَّا ذِكْرُ اللهِ وَمَا وَالَاهُ وَعَالِمٌ أَوْ مُتَعَلِّمٌ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَحَسَّنَهُ وَابْنُ مَاجَه.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ रिवायत करते हैं कि मैंने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ को यह फरमाते हुए सुनाः अल्लाह तआला का ज़िक्र और उसका दम भरने वाले और आलिम और तालिबे इल्मों को छोड़ कर बक़ाया दुनिया और जो कुछ इस (दुनिया) में है सब मलऊन (मर्दूद) हैं।''

٤٦٤ / ٤۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ تَعَلَّمَ عِلْمًا مِمَّ يُبْتَغَى بِهِ وَجْهُ اللهِ، لَا يَتَعَلَّمُهُ إِلَّا لِيُصِيْبَ بِهِ عَرَضًا مِنَ الدُّنْيَا، لَمْ يَجِدْ عَرْفَ الْجَنَّةِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ يَعْنِي رِيْحَهَا. رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ وَابْنُ مَاجَه.

الحديث رقم ٣: أخرجه الترمذي في السنن، كتاب: الزهد عن رسول الله ﷺ، باب: منه، (١٤)، ٤ / ٥٦١، الرقم: ٢٣٢٢، وابن ماجه في السنن، كتاب: الزهد، باب: مثل الدنيا، ٢ / ١٣٧٧، الرقم: ٤١١٢، والدارمي في السنن، ١ / ١٠٦، الرقم: ٣٢٢، والطبراني في المعجم الأوسط، ٤ / ٢٣٦، الرقم: ٤٠٧٢، والهيثمي في مجمع الزوائد، ١ / ١٢٢۔

الحديث رقم ٤: أخرجه أبو داود في السنن، كتاب: العلم، باب: في طلب العلم لغير الله تعالى، ٣ / ٣٢٣، الرقم: ٣٦٦٤، وابن ماجه في السنن، المقدمة، باب: الانتفاع بالعلم والعمل به، ١ / ٩٢، الرقم: ٢٥٢، وأحمد بن حنبل في المسند، ٢ / ٣٣٨، الرقم: ٨٤٣٨، وابن حبان في الصحيح، ١ / ٢٧٩، الرقم: ٧٨، وابن أبي شيبة في المصنف، ٥ / ٢٨٥، الرقم: ٢٦١٢٧، وأبويعلى في المسند، ١١ / ٢٦٠، الرقم: ٦٣٧٣، والبيهقي في شعب الإيمان، ٢ / ٢٨٢، الرقم: ١٧٧٠، والمنذري في الترغيب والترهيب، ١ / ٦٥، الرقم: ١٧٧۔

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जिसने इल्म हासिल किया जिससे अल्लाह तआला की रज़ामन्दी हासिल की जाती है लेकिन (अगर) वो यह इल्म हुसूले दुनिया के लिए सीखता है तो क़यामत के रोज़ जन्नत की खुशबू भी नहीं पाएगा।''

٤٦٥ / ٥. عَنْ أَبِي أُمَامَةَ الْبَاهِلِيِّ ﷺ، قَالَ: ذُكِرَ لِرَسُوْلِ اللهِ ﷺ رَجُلاَنِ: أَحَدُهُمَا عَابِدٌ وَالْآخَرُ عَالِمٌ، فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: فَضْلُ الْعَالِمِ عَلَى الْعَابِدِ، كَفَضْلِي عَلَى أَدْنَاكُمْ، ثُمَّ قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّ اللهَ، وَمَلَائِكَتَهُ، وَأَهْلَ السَّمَوَاتِ، وَالْأَرْضِيْنَ، حَتَّى النَّمْلَةَ فِي جُحْرِهَا وَحَتَّى الْحُوْتَ، لَيُصَلُّوْنَ عَلَى مُعَلِّمِ النَّاسِ الْخَيْرَ.

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَحَسَّنَهُ وَالدَّارِمِيُّ.

''हज़रत अबू उमामा बाहिली ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के सामने दो आदमियों का ज़िक्र किया गयाः जिनमें से एक आबिद था और दूसरा आलिम, हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः आबिद पर इल्म की फ़ज़ीलत उसी तरह है जिस तरह मेरी फ़ज़ीलत तुम में से एक अदना (सहाबी) पर है। फिर आप ﷺ ने फरमायाः बेशक अल्लाह तआला, उसके फ़रिश्ते, (तमाम) ज़मीन व आसमान वाले यहाँ तक कि चींटी अपने बिल में और मछलियाँ (भी समन्दरों, दरियाओं और तालाबों में) उस शख़्स के लिए रहमत (की दुआ) मांगते हैं जो लोगों को भलाई की तालीम देता है।''

٤٦٦ / ٦. عَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ ﷺ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ،

الحديث رقم ٥: أخرجه الترمذى فى السنن، كتاب: العلم عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء فى فضل الفقه على العبادة، ٥ / ٥٠، الرقم: ٢٦٨٥، والدارمى فى السنن، ١ / ١٠٠، الرقم: ٢٨٩، والطبرانى فى العمجم الكبير، ٨ / ٢٣٣، الرقم: ٧٩١١، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ١ / ٥٦، الرقم: ١٣٠.

الحديث رقم ٦: أخرجه الترمذى فى السنن، كتاب: العلم عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء فى فضل الفقه على العبادة، ٥ / ٤٨، الرقم: ٢٦٨٢، وأبو حنيفة فى المسند، ١ / ٥٧، وأبوداود فى السنن، كتاب: العلم، باب: الحث على طلب العلم، ٣ / ٣١٧، الرقم: ٣٦٤١، وابن ماجه فى السنن، المقدمة،باب: فضل العلماء والحث على طلب العلم، ١ / ٨١، الرقم: ٢١٧٢٣، والدارمى فى المسند، ١ / ١١٠، الرقم: ٣٤٢، ←

يَقُولُ: مَنْ سَلَكَ طَرِيقًا يَبْتَغِي فِيهِ عِلْمًا سَلَكَ اللهُ لَهُ طَرِيقًا إِلَى الْجَنَّةِ، وَإِنَّ الْمَلاَئِكَةَ لَتَضَعُ أَجْنِحَتَهَا، رِضَاءً لِطَالِبِ الْعِلْمِ وَإِنَّ الْعَالِمَ لَيَسْتَغْفِرُ لَهُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ حَتَّى الْحِيتَانُ فِي الْمَاءِ، وَفَضْلُ الْعَالِمِ عَلَى الْعَابِدِ، كَفَضْلِ الْقَمَرِ عَلَى سَائِرِ الْكَوَاكِبِ، إِنَّ الْعُلَمَاءَ وَرَثَةُ الْأَنْبِيَاءَ إِنَّ الْأَنْبِيَاءَ لَمْ يُوَرِّثُوا دِينَارًا، وَلاَ دِرْهَمًا، إِنَّمَا وَرَّثُوا الْعِلْمَ، فَمَنْ أَخَذَ بِهِ، أَخَذَ بِحَظٍّ وَافِرٍ. رَوَاهُ أَبُوحَنِيفَةَ وَالتِّرْمِذِيُّ وَاللَّفْظُ لَهُ.

''हज़रत अबी दरदा ﷺ फरमाते हैं कि मैंने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ को फरमाते हुए सुनाः जो आदमी तलबे इल्म में किसी रास्ते पर चलता है तो अल्लाह तआला उसे जन्नत के रास्ते पर चला देता है। और बेशक फ़रिश्ते तालिबे इल्म की रज़ा की हुसूल के लिए उसके पाँव तले अपने पर बिछाते हैं और तालीम के लिए ज़मीनो आसमान की हर चीज़ यहाँ तक कि पानी में मछलियाँ भी मग़फिरत तलब करती हैं और आबिद पर आलिम की फ़ज़ीलत ऐसे ही है जैसे चौदहवीं रात के चाँद की फ़ज़ीलत सितारों पर है और बेशक उलमा अंबिया किराम अलैहिमुस्सलाम के वारिस हैं। बेशक अंबिया किराम की विरासत दिरहमो दीनार नहीं होती बल्कि उन के मीरास इल्म है फिर जिसने उसे पाया उसे (विरासते अंबिया से) बहुत बड़ा हिस्सा मिल गया।''

٤٦٧ / ٧ـ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رضي الله عنهما، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ:

.... والطبراني في مسند الشامين، ٢/ ٢٢٤، الرقم: ١٢٣١، والبيهقي في شعب الإيمان، ٢/ ٢٦٢، الرقم: ١٦٩٦ـ ١٦٩٧، والمحاملي في الأمالي، ١/ ٣٣٠، الرقم: ٣٥٤، والمنذري في الترغيب والترهيب، ١/ ٥١، الرقم: ١٠٦ـ

الحديث رقم ٧: أخرجه الترمذي في السنن، كتاب: العلم عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء في فضل الفقه على العبادة، ٥/ ٤٨، الرقم: ٢٦٨١، وابن ماجه في السنن، المقدمة، باب: فضل العلماء والحث على طلب العلم، ١/ ٨١، الرقم: ٢٢٢، والطبراني في المعجم الأوسط، ٦/ ١٩٤، الرقم: ٦١٦٦، وفي مسند الشاميين، ٢/ ١٦١، الرقم: ١١٠٩، وفي المعجم الكبير، ١١/ ٧٨، الرقم: ١١٠٩٩، والبيهقي في شعب الإيمان، ٢/ ٢٦٦ـ ٢٦٧، الرقم: ١٧١٢ـ ١٧١٥، والمنذري في الترغيب والترهيب، ١/ ٥٧، الرقم: ١٣٦ـ

فَقِيْهٌ أَشَدُّ عَلَى الشَّيْطَانِ مِنْ أَلْفِ عَابِدٍ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَه.

وفي رواية. وَلِكُلِّ شَيءٍ عِمَادٌ وَعِمَادُ هَذَا الدِّيْنِ الْفِقْهُ.

رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ وَالْبَيْهَقِيُّ.

''हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास رضي الله عنهما से मरवी है हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः एक फ़कीहा एक हज़ार आबिद से ज़्यादा शैतान पर सख़्त और भारी है।

और एक रिवायत के अल्फ़ाज़ हैं कि हर एक शै का सुतून होता है और इस दीन का सुतून (इल्मे) फ़िक़्ह है।''

٤٦٨ / ٨. عَنْ أَنَسِ بنِ مَالِكٍ رضي الله عنه قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّ مَثَلَ الْعُلَمَاءِ فِي الْأَرْضِ كَمَثَلِ النُّجُومِ فِي السَّمَاءِ يُهتَدَى بِهَا فِي ظُلُمَاتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ فَإِذَا انْطَمَسَتِ النُّجُوْمُ أَوْشَکَ أَنْ تَضِلَّ الْهُدَاةُ.

رَوَاهُ أَحْمَدُ.

''हज़रत अनस बिन मालिक رضي الله عنه से रिवायत है हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः उलमा–ए–किराम ज़मीन में उन सितारों की तरह हैं जिनके ज़रीये बेहरोबर्र के अन्धेरों में रहनुमाई हासिल की जाती है और अगर सितारे गुरूब हो जाए तो क़रीब है कि (मुसाफ़िरों को रास्ता दिखाने वाले) रहनुमा भटक जाएँ। (यानी उलमा–ए–किराम नहीं होंगे तो अवाम गुमराह हो जाएंगे)।

٤٦٩ / ٩. عَنْ جَابِرٍ رضي الله عنه قَالَ: اَلْعِلْمُ عِلْمَانِ: فَعِلْمٌ فِي الْقَلْبِ فَذَلِکَ الْعِلْمُ النَّافِعُ، وَعِلْمٌ عَلَى اللِّسَانِ فَذَلِکَ حُجَّةُ اللهِ عَلَى ابْنِ آدَمَ.

الحديث رقم ٨: أخرجه أحمد بن حنبل فى المسند، ٣/١٥٧، الرقم: ١٢٦٢١، والديلمى فى مسند الفردوس، ٤/١٣٤، الرقم: ٦٤١٨، وابن رجب فى جامع العلوم والحكم، ١/٣٤٣، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ١/٥٦، الرقم: ١٢٨، و الهيثمى فى مجمع الزوائد، ١/١٢١۔ ١٢٢۔

الحديث رقم ٩: أخرجه الدارمى فى السنن، ١/١١٤، الرقم: ٣٦٤، والبيهقى فى شعب الإيمان، ٢/٢٩٤، الرقم: ١٨٢٥، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ←

رَوَاهُ الدَّارِمِيُّ وَالْمُنْذِرِيُّ بِإِسْنَادٍ صَحِيحٍ.

وفي رواية: اَلْعِلْمُ عِلْمَانِ: فَعِلْمٌ ثَابِتٌ فِي الْقَلْبِ وَعِلْمٌ فِي اللِّسَانِ فَذَلِكَ حُجَّةٌ عَلَى عِبَادِهِ. رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ وَالدَّيْلَمِيُّ.

''हज़रत जाबिर ﷺ से मरवी है हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः इल्म दो (तरह के) हैंः एक इल्म दिल में होता है और यह इल्म नाफेअ़ (नफा देने वाला इल्म) है और एक इल्म ज़बान पर होता है यह (इल्म) बनी आदम पर अल्लाह तआ़ला की हुज्जत (दलील) है।

और एक रिवायत में है कि इल्म दो (तरह के) हैंः एक इल्म दिल में रासिख़ होता है और एक इल्म ज़बान पर (जारी होता) है फिर यह इल्म अल्लाह तआ़ला के बन्दों पर हुज्जत (दलील) है (यानी अगर सही इल्म हासिल नहीं करेंगे तो यह उनके ख़िलाफ़ गवाह होगा।)''

.... ١/٥٨، الرقم: ١٣٩-١٤٠، والديلمي عن عائشة رضى الله عنها فى مسند الفردوس، ٣/٦٨، الرقم: ٤١٩٤، وابن عمر الأزدى فى مسند الربيع، ١/٣٦٥، الرقم: ٩٤٧، وابن المبارك فى الزهد، ١/٤٠٧، الرقم: ١١٤١، والحكيم الترمذي نحوه فى نوادر الأصول، ٣/٤٢، وابن رجب فى جامع العلوم والحكم، ١/٣٤٣، والمناوى فى فيض القدير، ٤/٣٩٠.

فَصْلٌ فِي فَضْلِ الذِّكْرِ وَالذَّاكِرِيْنَ

﴿ज़िक्रे इलाही और ज़ाकिरीन की फ़ज़ीलत का बयान﴾

٤٧٠ / ١٠۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: يَقُوْلُ اللهُ تَعَالَى: أَنَا عِنْدَ ظَنِّ عَبْدِي بِي وَأَنَا مَعَهُ إِذَا ذَكَرَنِي فَإِنْ ذَكَرَنِي فِي نَفْسِهِ ذَكَرْتُهُ فِي نَفْسِي، وَإِنْ ذَكَرَنِي فِي مَلَاءٍ ذَكَرْتُهُ فِي مَلَاءٍ خَيْرٍ مِنْهُمْ وَإِنْ تَقَرَّبَ إِلَيَّ شِبْرًا تَقَرَّبْتُ إِلَيْهِ ذِرَاعًا وَ إِنْ تَقَرَّبَ إِلَيَّ ذِرَاعًا تَقَرَّبْتُ إِلَيْهِ بَاعًا وَ إِنْ أَتَانِي يَمْشِي، أَتَيْتُهُ هَرْوَلَةً. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से रिवायत है हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः अल्लाह तआला फरमाता है कि मेरा बन्दा मेरे मुतअल्लिक़ जैसा ख़याल रखता है मैं उसके साथ वैसा ही मामला करता हूँ । जब वो मेरा ज़िक्र करता है मैं उसके साथ होता हूँ । अगर वो अपने दिल में मेरा ज़िक्र (यानी ज़िक्रे ख़फ़ी) करे तो मैं भी अपनी (शायाने शान) अपने दिल में उसका ज़िक्र करता हूँ, और अगर वो जमाअत में मेरा ज़िक्र (यानी ज़िक्रे जली) करे तो मैं उसकी जमाअत से बेहतर जमाअत (यानी फ़रिश्तों) में उसका ज़िक्र करता हूँ। अगर वो एक बालिश्त मेरे नज़दीक आए तो मैं एक बाज़ू के बराबर उसके नज़दीक हो जाता हूँ। अगर वो एक बाज़ू के बराबर मेरे नज़दीक आए तो मैं दो बाज़ूओं के बराबर उसके नज़दीक हो जाता हूँ और अगर वो मेरी तरफ़ चल कर आए तो मैं उसकी तरफ़ दौड़ कर आता हूँ।

الحديث رقم ١٠: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: التوحيد، باب: قول اللهتعالى: ويحذركم الله نفسه، ٦ / ٢٦٩٤، الرقم: ٦٩٧٠، ومسلم فى الصحيح، كتاب: الذكر والدعاء والتوبة والاستغفار، باب: الحث على ذكر اللهتعالى، ٤ / ٢٠٦١، الرقم: ٢٦٧٥، والترمذى فى السنن، كتاب: الزهد عن رسول الله ﷺ، باب: فى حسن الظن باللهﷻ، ٥ / ٥٨١، الرقم: ٣٦٠٣، وَقَالَ أَبُو عِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ، والنسائى فى السنن الكبرى، ٤ / ٤١٢، الرقم: ٧٧٣٠، وابن ماجه فى السنن، كتاب: الأدب، باب: فضل العمل، ٢ / ١٢٥٥، الرقم: ٣٨٢٢۔

٤٧١ / ١١۔ عَنْ أَبِي مُوْسَى رضي الله عنه قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: مَثَلُ الَّذِي يَذْكُرُ رَبَّهُ وَالَّذِي لَا يَذْكُرُ رَبَّهُ مَثَلُ الْحَيِّ وَالْمَيِّتِ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ.

''हज़रत अबी मूसा رضي الله عنه से रिवायत है हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः अपने रब का ज़िक्र करने वाले और न करने वाले की मिसाल ज़िंदा और मुर्दा (दिलों) की सी है।''

٤٧٢ / ١٢۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ وَ أَبِي سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ رضي الله عنهما أَنَّهُمَا شَهِدَا عَلَى النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ قَالَ: لَا يَقْعُدُ قَوْمٌ يَذْكُرُوْنَ اللهَ عزوجل إِلَّا حَفَّتْهُمُ الْمَلَائِكَةُ وَغَشِيَتْهُمُ الرَّحْمَةُ، وَنَزَلَتْ عَلَيْهِمُ السَّكِيْنَةُ، وَذَكَرَهُمُ اللهُ فِيْمَنْ عِنْدَهُ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَالتِّرْمِذِيُّ.

الحديث رقم ١١: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: الدعوات، باب: فضل ذكر الله عزوجل، ٥ / ٢٣٥٣، الرقم: ٦٠٤٤، ومسلم فى الصحيح، كتاب: صلاة المسافرين وقصرها، باب: استحباب صلاة النافلة فى بيته وجواز ها فى المسجد، ١ / ٥٣٩، الرقم: ٧٧٩، ولفظه: مثل البيت الذي يذكر الله فيه والبيت الذي لا يذكر الله فيه، وابن حبان فى الصحيح، ٣ / ١٣٥، الرقم: ٨٥٤، وأبويعلى فى المسند، ١٣ / ٢٩١۔ ٢٩٢، الرقم: ٧٣٠٦، والبيهقى فى شعب الإيمان، ١ / ٤٠١، الرقم: ٥٣٦۔

الحديث رقم ١٢: أخرجه مسلم فى الصحيح، كتاب: الذكر والدعاء والتوبة والاستغفار، باب: فضل الاجتماع على تلاوة القرآن وعلى الذكر، ٤ / ٢٠٧٤، الرقم: ٢٧٠٠، والترمذى فى السنن، كتاب: الدعوات عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء فى القوم يجلسون فيذكرون الله عزوجل ما لهم من الفضل، ٥ / ٤٥٩، الرقم: ٣٣٧٨، وابن ماجه فى السنن، كتاب: الأدب، باب: فضل الذكر، ٢ / ١٢٤٥، الرقم: ٣٧٩١، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٣ / ٩٢، الرقم: ١١٨٩٣، وابن حبان فى الصحيح، ٣ / ١٣٦، الرقم: ٨٥٥، وأبويعلى فى المسند، ١١ / ٢٠، الرقم: ٦١٥٩، وابن أبى شيبة فى المصنف، ٦ / ٦٠، الرقم: ٢٩٤٧٥، والطبرانى فى المعجم الأوسط، ٢ / ١٣٧، الرقم: ١٥٠٠، والطيالسى فى المسند، ١ / ٢٩٦، الرقم: ٢٢٣٣، والبيهقى فى شعب الإيمان، ١ / ٣٩٨، الرقم: ٥٣٠، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٢ / ٢٦٢، الرقم: ٢٣٢٨۔

وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत अबू हुरैरा और अबी सईद खुदरी رضي الله عنهما दोनों ने गवाही दी कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जब भी लोग अल्लाह तआला के ज़िक्र के लिए बैठते हैं फ़रिश्ते उन्हें ढाँप लेते हैं और रहमते इलाही उन्हें अपनी आगोश में ले लेती है और उन पर सकीना (रहमत) का नज़ूल होता है अल्लाह तआला उनका ज़िक्र अपनी बारगाह के हाज़िरीन में करता है।''

٤٧٣ / ١٣۔ عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ رضي الله عنه أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ سُئِلَ: أَيُّ الْعِبَادِ أَفْضَلُ دَرَجَةً عِنْدَ اللهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ؟ قَالَ: الذَّاكِرُوْنَ اللهَ كَثِيْرًا وَالذَّاكِرَاتُ. قُلْتُ: يَا رَسُوْلَ اللهِ وَمِنَ الْغَازِي فِي سَبِيْلِ اللهِ؟ قَالَ: لَوْ ضَرَبَ بِسَيْفِهِ فِي الْكُفَّارِ وَالْمُشْرِكِيْنَ حَتَّى يَنْكَسِرَ، وَيَخْتَضِبَ دَمًا لَكَانَ الذَّاكِرُوْنَ اللهَ أَفْضَلُ مِنْهُ دَرَجَةً. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَحْمَدُ.

''हज़रत अबू सईद ख़ुदरी رضي الله عنه रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ से दरयाफ़्त किया गयाः (या रसूलल्लाह!) कौन से लोग क़यामत के दिन अल्लाह तआला के यहाँ दर्जे में अफ़ज़ल होंगे ? आप ﷺ ने फरमायाः जो कसरत से अल्लाह तआला का ज़िक्र करने वाले मर्द और औरतें हैं। मैंने अ़र्ज़ कियाः या रसूलल्लाह! क्या अल्लाह तआला की राह में जिहाद करने वाले से भी (ज़्यादा अफ़ज़ल होंगे) ? आप ﷺ ने फरमायाः (हाँ) अगर कोई शख़्स अपनी तलवार काफिरों और मुशरिकों पर इस क़द्र चलाए कि वो टूट जाए और ख़ून आलूद हो जाए फिर भी अल्लाह तआला का ज़िक्र करने वाले उससे एक दर्जा अफ़ज़ल हैं।''

الحديث رقم ١٣: أخرجه الترمذى فى السنن، كتاب: الدعوات عن رسول الله ﷺ، باب: منه (٥)، ٥/ ٤٥٨، الرقم: ٣٣٧٦، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٣/ ٧٥، الرقم: ١١٧٣٨، والبيهقى فى شعب الإيمان، ١/ ٤١٩، الرقم: ٥٨٩، وأبويعلى فى المسند، ٢/ ٥٣٠، الرقم: ١٤٠١، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٢/ ٢٥٤، الرقم: ٢٢٩٦.

٤٧٤ / ١٤. عَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ رضي الله عنه قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: أَلَا أُنَبِّئُكُمْ بِخَيْرِ أَعْمَالِكُمْ وَأَزْكَاهَا عِنْدَ مَلِيْكِكُمْ، وَأَرْفَعِهَا فِي دَرَجَاتِكُمْ، وَخَيْرٍ لَكُمْ مِنْ إِنْفَاقِ الذَّهَبِ وَالْوَرِقِ، وَخَيْرٍ لَكُمْ مِنْ أَنْ تَلْقَوا عَدُوَّكُمْ، فَتَضْرِبُوْا أَعْنَاقَهُمْ وَيَضْرِبُوْا أَعْنَاقَكُمْ؟ قَالُوْا: بَلَى. قَالَ: ذِكْرُ اللهِ تَعَالَى، قَالَ مُعَاذُ بْنُ جَبَلٍ رضي الله عنه: مَا شَيْءٌ أَنْجَى مِنْ عَذَابِ اللهِ مِنْ ذِكْرِ اللهِ.

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَه.

وَقَالَ الْحَاكِمُ: حَدِيْثٌ صَحِيْحُ الإِسْنَادِ.

''हज़रत अबी दरदा रضي الله عنه से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः क्या मैं तुम्हें तुम्हारे आमाल में से सब से अच्छा ऐसा अ़मल न बताऊँ जो तुम्हारे मालिक के यहाँ बेहतर और पाकीज़ा है। तुम्हारे दरजात में सबसे बुलन्द है। तुम्हारे सोने और चाँदी की ख़ैरात से भी अफ़ज़ल है, और तुम्हारे दुश्मन का सामना करने यानी जिहाद से भी बेहतर है इस हाल में कि तुम उनका क़त्ल करो और वो तुम्हें क़त्ल करें? सहाबा किराम رضي الله عنهم ने अ़र्ज़ कियाः क्यों नहीं! आप ﷺ ने फरमायाः वो अ़मल अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र है। हज़रत मुआज رضي الله عنه ने कहाः (ज़िक्रे इलाही से बढ़ कर) कोई चीज़ ऐसी नहीं जो अज़ाबे इलाही से निजात दिलाने वाली है।''

٤٧٥ / ١٥. عَنْ مُعَاذٍ رضي الله عنه قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّ الصَّلَاةَ وَالصِّيَامَ وَالذِّكْرَ تُضَاعَفُ عَلَى النَّفَقَةِ فِي سَبِيْلِ اللهِ بِسَبْعِ مِائَةِ ضِعْفٍ.

الحديث رقم ١٤: أخرجه الترمذي في السنن، كتاب: الدعوات عن رسول الله ﷺ، باب: منه (٦)، ٥/٤٥٩، الرقم: ٣٣٧٧، وابن ماجه في السنن، كتاب: الأدب، باب: فضل الذكر، ٢/١٢٤٥، الرقم: ٣٧٩٠، وأحمد بن حنبل في المسند، ٥/٢٣٩، الرقم: ٢٢١٣٢، والحاكم في المستدرك، ١/٦٧٣، الرقم: ١٨٢٥، والبيهقي في شعب الإيمان، ١/٣٩٤، الرقم: ٥١٩، والمنذري في الترغيب والترهيب، ٢/٢٥٣، الرقم: ٢٢٩٤، وَقَالَ الْمُنْذَرِيُّ: إِسْنَادُهُ جَيِّدٌ.

الحديث رقم ١٥: أخرجه أبو داود في السنن، كتاب: الجهاد، باب: في تضعيف الذكر في سبيل، ٣/٨، الرقم: ٢٤٩٨، وأحمد بن حنبل في المسند، ٣/٤٣٨، الرقم: ١٥٦١٣، والطبراني في المعجم الكبير، ٢٠/١٨٦، الرقم: ٤٠٥، والديلمي ←

رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ وَأَحْمَدُ.

''हज़रत मुआज़ ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः बेशक नमाज़, रोज़ा और ज़िक्रे इलाही अल्लाह तआला की राह में माल ख़र्च करने पर भी सात सौ गुना ज़्यादा फ़ज़ीलत रखता है।''

٤٧٦ / ١٦۔ عَنْ أَبِي سَعِيْدِ الْخُدْرِيِّ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: أَكْثِرُوْا ذِكْرَ اللهِ حَتَّى يَقُوْلُوْا مَجْنُوْنٌ. رَوَاهُ أَحْمَدُ وَابْنُ حِبَّانَ وَأَبُوْيَعْلَى.

وَقَالَ الْحَاكِمُ: صَحِيْحُ الإِسْنَادِ.

''हज़रत अबी सईद ख़ुदरी ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः अल्लाह तआला का ज़िक्र इतनी कसरत से करो कि लोग तुम्हें दीवाना कहें।''

٤٧٧ / ١٧۔ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رضي الله عنهما، قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: أُذْكُرُوا اللهَ ذِكْرًا، يَقُوْلُ الْمُنَافِقُوْنَ: إِنَّكُمْ تُرَاؤُوْنَ. رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ.

''हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास رضي الله عنهما से रिवायत है कि हुज़ूर नबीए अकरम ﷺ ने फरमायाः अल्लाह तआला का ज़िक्र इस कसरत से करो कि मुनाफ़िक़ तुम्हें रियाकार कहें।''

.... فى مسند الفردوس، ٢ / ٢٤٩، الرقم: ٣١٧١، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٢ / ١٦٢، الرقم: ١٩٣٥، والهيثمى فى مجمع الزوائد، ٥ / ٢٨٢، وابن كثير فى تفسير القرآن العظيم، ٣ / ١٣٤۔

الحديث رقم ١٦: أخرجه أحمد بن حنبل فى المسند، ٣ / ٦٨، الرقم: ١١٦٧١، ٣ / ٧١، الرقم: ٣١١٦٩٢، وابن حبان فى الصحيح، ٣ / ٩٩، الرقم: ٨١٧، والحاكم فى المستدرك، ١ / ٦٧٧، الرقم: ١٨٣٩، وأبويعلى فى المسند، ٢ / ٥٢١، الرقم: ١٣٧٦، والبيهقى فى شعب الإيمان، ١ / ٣٩٧، الرقم: ٥٢٦، والديلمى فى مسند الفردوس، ١ / ٧٢، الرقم: ٢١٢، وابن رجب فى جامع العلوم والحكم، ١ / ٤٤٤، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٢ / ٢٥٦، الرقم: ٢٣٠٤۔

الحديث رقم ١٧: أخرجه الطبرانى فى المعجم الكبير، ١٢ / ١٦٩، الرقم: ١٢٧٨٦، وأبو نعيم فى حلية الأولياء، ٣ / ٨١، وابن رجب فى جامع العلوم والحكم، ١ / ٤٤٤، والمناوى فى فيض القدير، ١ / ٤٥٦۔

٤٧٨ / ١٨. عَنْ أَبِي الْجَوْزَاءِ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: أَكْثِرُوْا ذِكْرَ اللهِ حَتَّى يَقُوْلَ الْمُنَافِقُوْنَ: إِنَّكُمْ مُرَاؤُوْنَ. رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ.

''हज़रत अबी जवज़ा ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः अल्लाह तआला का ज़िक्र इतनी कसरत से करो कि मुनाफ़िक तुम्हें रियाकार कहें।''

٤٧٩ / ١٩. عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ: قَالَ: إِنَّ لِلّٰهِ ﷻ: مَلَائِكَةً سَيَّارَةً فُضُلًا يَلْتَمِسُوْنَ مَجَالِسَ الذِّكْرِ، يَجْتَمِعُوْنَ عِنْدَ الذِّكْرِ، فَإِذَا مَرُّوْا بِمَجْلِسٍ عَلَا بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ حَتَّى يَبْلُغُوا الْعَرْشَ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَأَحْمَدُ وَاللَّفْظُ لَهُ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः अल्लाह तआला के कुछ फ़रिश्ते ऐसे हैं जिनकी ज़िम्मेदारी बाक़ायदा यही है कि वो सिर्फ मजालिसे ज़िक्र की तलाश में रहते हैं और मजालिसे ज़िक्र में शामिल हो जाते हैं। फिर जब किसी मजलिसे ज़िक्र के पास से गुजरते हैं तो (उस मजलिस में इतनी कसरत से शिर्कत करते हैं कि) तह दर तह अ़र्श तक पहुँच जाते हैं।''

٤٨٠ / ٢٠. عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: إِذَا

الحديث رقم ١٨: أخرجه البيهقي فى شعب الإيمان، ١/٣٩٧، الرقم: ٥٢٧ والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٢/٢٥٦، الرقم: ٢٣٠٥، والهيثمى فى مجمع الزوائد، ١٠/٧٦، والمناوى فى فيض القدير، ٢/٨٥.

الحديث رقم ١٩: أخرجه مسلم فى الصحيح، كتاب: الذكر والدعاء والتوبة والاستغفار، باب: فضل مجالس الذكر، ٤/٢٠٦٩، الرقم: ٢٦٨٩، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٢/٣٥٨، الرقم: ٨٦٨٩. ٨٧٠٥، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٤/٢٤٤، الرقم: ٥٥٢٣.

الحديث رقم ٢٠: أخرجه الترمذى فى السنن، كتاب: الدعوات عن رسول الله ﷺ، باب: (٨٥)، ٥/٥٣٢، الرقم: ٣٥١٠، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٣/١٥٠، الرقم: ٢٥٤٥، وأبو يعلى فى المسند، ٦/١٥٥، الرقم: ٣٤٣٢، والبيهقى فى ←

مَرَرْتُمْ بِرِيَاضِ الْجَنَّةِ فَارْتَعُوْا، قَالُوْا: وَمَا رِيَاضُ الْجَنَّةِ؟ قَالَ: حِلَقُ الذِّكْرِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَحْمَدُ وَالْبَيْهَقِيُّ.

وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ.

''हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी-ए-अकरम ﷺ ने फरमायाः जब तुम जन्नत की क्यारियों से गुज़रो तो (उनमें से) ख़ूब खाया करो। सहाबा किराम ने अ़र्ज़ किया : (या रसूलल्लाह!) जन्नत की क्यारियाँ कौनसी हैं ? आप ﷺ ने फरमायाः ज़िक्रे इलाही के हल्क़ाजात।''

٤٨١ / ٢١ـ عَنْ أَنَسٍ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: يَقُوْلُ اللهُ ﷻ: أَخْرِجُوْا مِنَ النَّارِ مَنْ ذَكَرَنِي يَوْمًا أَوْ خَافَنِي فِي مَقَامٍ.

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَحَسَّنَهُ.

''हज़रत अनस ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी-ए-अकरम ﷺ ने फरमायाः अल्लाह ﷻ फरमाएगाः दोज़ख़ में से ऐसे शख़्स को निकाल दो जिसने एक दिन भी मुझे याद किया या कभी किसी मुक़ाम पर मुझ से डरा।''

٤٨٢ / ٢٢ـ عَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَيَبْعَثَنَّ اللهُ أَقْوَامًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِي وُجُوْهِهِمُ النُّوْرُ عَلَى مَنَابِرِ اللُّؤْلُوءِ، يَغْبِطُهُمُ

.... شعب الإيمان، ١/ ٣٩٨، الرقم: ٥٢٩، والديلمى فى مسند الفردوس، ١/ ٢٦٨، الرقم: ١٠٤٤، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٢/ ٢٦٢، الرقم: ٢٣٢٩.

الحديث رقم ٢١: أخرجه الترمذى فى السنن، كتاب: صفة جهنم عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء أن للنار نفسين، ٤/ ٧١٢، الرقم: ٢٥٩٤، والحاكم فى المستدرك، ١/ ١٤١، الرقم: ٢٣٤، وقال الحاكم: صَحِيْحُ الإِسْنَادِ، ٥/ ٢٤٤، الرقم: ٨٠٨٤، وابن أبى عاصم فى كتاب السنة، ٢/ ٤٠٠، الرقم: ٨٣٣، والبيهقى فى الاعتقاد، ١/ ٢٠١.

الحديث رقم ٢٢: أخرجه المنذرى فى الترغيب والترهيب، ٢/ ٢٦٢، الرقم: ٢٣٦٢: ٤/ ١٢، الرقم: ٤٥٨٣، وقال المنذرى: رواه الطبرانى بإسنادٍ حَسَنٍ، والهيثمى فى مجمع الزوائد، ١٠/ ٧٧، وَ قَالَ: رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ بِإِسْنَادٍ حَسَنٍ، والسيوطى فى الدر المنثور، ١٠/ ٣٦٨.

النَّاسُ لَيْسُوْا بِأَنْبِيَاءٍ وَلَا شُهَدَاءَ، قَالَ: فَجَثَى أَعْرَابِيٌّ عَلَى رُكْبَتَيْهِ، فَقَالَ: يَا رَسُوْلَ اللهِ حَلِّهِمْ لَنَا نَعْرِفْهُمْ. قَالَ: هُمُ الْمُتَحَابُّوْنَ فِي اللهِ مِنْ قَبَائِلَ شَتَّى وَ بِـلَادٍ شَتَّى يَجْتَمِعُوْنَ عَلَى ذِكْرِ اللهِ يَذْكُرُوْنَهُ.

رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ كَمَا قَالَ الْمُنْذِرِيُّ.

وَقَالَ الْمُنْذِرِيُّ: إِسْنَادُهُ حَسَنٌ.

''हज़रत अबी दरदा ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः क़यामत के दिन अल्लाह तआला कुछ ऐसे लोगों को उठाएगा जिन के चहरे पुरनूर होंगे, वो मोतियों के मिम्बरों पर (बैठे) होंगे, लोग उन्हें देख कर रश्क करेंगे, न तो वो अंबिया होंगे और न ही शोहदा। हज़रत अबी दरदा ﷺ कहते हैं कि एक आ'राबी अपने घुटनों के बल बैठ कर कहने लगा : या रसूलल्लाह ! आप हमारे सामने उनका हुलिया बयान फरमाएं ताकि हम उन्हें जान लें। आप ﷺ ने फरमायाः यह वो लोग हैं जो मुख़्तलिफ़ क़बीलों और मुख़्तलिफ़ इलाक़ों से ता'ल्लुक रखने के बावजूद अल्लाह तआला की ख़ातिर एक दूसरे से मुहब्बत करते हैं, इकट्ठे हो कर अल्लाह तआला का ज़िक्र करते हैं।

٤٨٣ / ٢٣۔ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو رضي الله عنهما قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُوْلَ اللهِ مَا غَنِيمَةُ مَجَالِسِ الذِّكْرِ؟ قَالَ: غَنِيمَةُ مَجَالِسِ الذِّكْرِ الْجَنَّةُ الْجَنَّةُ.

رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالطَّبَرَانِيُّ. إِسْنَادُهُ حَسَنٌ.

''हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र رضي الله عنهما रिवायत करते हैं कि मैंने हुज़ूर नबीए अकरम ﷺ की ख़िदमते अक़दस में अर्ज़ कियाः या रसूलल्लाह! मजालिसे ज़िक्र की ग़नीमत (यानी नफ़ा) क्या है? आप ﷺ ने फरमायाः मजालिसे ज़िक्र की ग़नीमत जन्नत है, जन्नत है।''

٤٨٤ / ٢٤۔ عَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ ﷺ، قَالَ: إِنَّ الَّذِيْنَ لَا تَزَالُ أَلْسِنَتُهُمْ

الحديث رقم ٢٣: أخرجه أحمد بن حنبل، ٢/١٧٧، الرقم: ٦٦٥١، ٦٧٧٧، والطبراني فى مسند الشاميين، ٢/٢٧٣، الرقم: ١٣٢٥، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٢/٢٦١، الرقم: ٢٣٢٤ والهيثمى فى مجمع الزوائد، ١٠/٧٨، المناوى فى فيض القدير، ٤/٤٠٧، والسيوطى فى الدر المنثور، ١/٣٦٦.

الحديث رقم ٢٤: أخرجه ابن أبى شيبة فى المصنف، ٧/١١١، الرقم: ٣٤٥٨٧، ←

رَطَبَةً مِنْ ذِكْرِ اللهِ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ وَهُمْ يَضْحَكُوْنَ. رَوَاهُ ابْنُ أَبِي شَيْبَةَ.

''हज़रत अबी दरदा ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया: जिन लोगों की ज़बानें हमेशा ज़िक्रे इलाही से तर रहती हैं वो मुस्कुराते हुए जन्नत में दाख़िल होंगे।''

٤٨٥ / ٢٥۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ قَالَ: إِنَّ أَهْلَ السَّمَاءِ لَيَرَوْنَ بُيُوْتَ أَهْلِ الذِّكْرِ تَضِيءُ لَهُمْ كَمَا تَضِيءُ الْكَوَاكِبُ لِأَهْلِ الْأَرْضِ.

رَوَاهُ ابْنُ أَبِي شَيْبَةَ وَابْنُ حِبَّانَ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से रिवायत है कि आसमान वाले अहले ज़िक्र के घरों को ऐसे रोशन देखते हैं जैसे ज़मीन वाले सितारों को रोशन देखते हैं।''

٤٨٦ / ٢٦۔ عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ ﷺ عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ، قَالَ: يَقُوْلُ الرَّبُّ ﷻ يَوْمَ الْقِيَامَةِ: سَيُعْلَمُ أَهْلُ الْجَمْعِ مِنْ أَهْلُ الْكَرَمِ؟ فَقِيْلَ: وَمَنْ أَهْلُ الكَرَمِ، يَا رَسُوْلَ اللهِ؟ قَالَ: أَهْلُ مَجَالِسِ الذِّكْرِ فِي الْمَسَاجِدِ.

رَوَاهُ أَحْمَدُ وَابْنُ حِبَّانَ وَصَحَّحَهُ.

.... ٣٥٠٥٢، وأبو نعيم فى حلية الأولياء، ١/ ٢١٩، وابن المبارك فى الزهد، ١/ ٣٩٧، وابن أبى عاصم فى الزهد، ١/ ١٣٦، وابن الجوزى فى صفوة الصفوة، ١/ ٦٣٩، والسيوطى فى الدر المنثور، ١/ ٣٦٦، وابن رجب فى جامع العلوم والحكم، ١/ ٤٤٥۔

الحديث رقم ٢٥: أخرجه ابن أبي شيبة فى المصنف، ٧/ ١٧٠، الرقم: ٣٠٥٥٥، وابن حبان فى طبقات المحدثين، ٤/ ٢٨٢، الرقم: ٦٦٨، والسيوطى فى الدر المنثور، ١/ ٣٦٧۔

الحديث رقم ٢٦: أخرجه أحمد بن حنبل فى المسند، ٣/ ٦٨، الرقم: ١١٦٧٠، ١١٧٤٠، وابن حبان فى الصحيح، ٣/ ٩٨، الرقم: ٨١٦، وأبو يعلى فى المسند، ٢/ ٥٣١، الرقم: ١٤٠٣، والبيهقى فى شعب الإيمان، ١/ ٤٠١، الرقم: ٥٣٥، والديلمى فى مسند الفردوس، ٥/ ٢٥٣، الرقم: ٨١٠٤، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٢/ ٢٥٩، الرقم: ٢٣١٨۔

''हज़रत अबी सईद ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः अल्लाह ﷻ फरमाता हैः क़यामत के दिन इकट्ठा होने वाले को पता चलेगा की बुज़ुर्गी और सख़ावत वाले कौन लोग हैं ? अर्ज़ किया गयाः या रसूलल्लाह! बुज़ुर्गी वाले कौन लोग हैं ? आप ﷺ ने फरमाया : मसाजिद में मजालिसे ज़िक्र मुन्अक़िद करने वाले।''

٤٨٧ / ٢٧ـ عَنْ أَنَسٍ ﷺ عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ قَالَ: مَا مِنْ قَوْمٍ اجْتَمَعُوْا يَذْكُرُوْنَ اللهَ لَا يُرِيْدُوْنَ بِذَلِكَ إِلَّا وَجْهَهُ، إِلَّا نَادَاهُمْ مُنَادٍ مِنَ السَّمَاءِ: أَنْ قُوْمُوْا مَغْفُوْرًا لَكُمْ، قَدْ بُدِّلَتْ سَيِّئَاتُكُمْ حَسَنَاتٍ.

رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالطَّبَرَانِيُّ وَالْبَيْهَقِيُّ.

''हज़रत अनस ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जब कुछ लोग महज़ अल्लाह तआला की रज़ा जूई की ख़ातिर इज्तिमाई तौर पर उसका ज़िक्र करते हैं तो आसमान से एक मुनादी आवाज़ देता हैः खड़े हो जाओ! तुम्हें बख़्श दिया गया है, तुम्हारे गुनाह नेकियों में बदल दिए गए हैं।''

٤٨٨ / ٢٨ـ عَنْ سُهَيْلِ بْنِ حَنْظَلَةَ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَا جَلَسَ قَوْمٌ مَجْلِسًا يَذْكُرُوْنَ اللهَ ﷻ فِيْهِ فَيَقُوْمُوْنَ حَتَّى يُقَالَ لَهُمْ: قُوْمُوْا قَدْ غَفَرَ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ وَبُدِّلَتْ سَيِّئَاتُكُمْ حَسَنَاتٍ.

رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ وَالْبَيْهَقِيُّ.

الحديث رقم ٢٧: أخرجه أحمد بن حنبل فى المسند،٣/١٤٢، الرقم: ١٢٤٧٦، والطبرانى فى المعجم الأوسط، ٢/١٥٤، الرقم: ١٥٥٦، والبيهقى فى شعب الإيمان، ١/٤٠١، الرقم: ٥٣٤، ٦٩٤، وأبو يعلى فى المسند، ٧/١٦٧، الرقم: ٤١٤١، وابن أبى شيبة فى المصنف، ٦/٦٠، الرقم: ٢٩٤٧٧، ٧/٢٤٤، الرقم: ٣٥٧١٣، وابن أبى عاصم فى كتاب الزهد، ١/٢٠٥، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٢/٢٦٠، الرقم: ٢٣٢٠، وقال: رواه أحمد ورواته محتج بهم.

الحديث رقم ٢٨: أخرجه الطبرانى فى المعجم الكبير، ٦/٢١٢، الرقم: ٦٠٣٩، والبيهقى فى شعب الإيمان، ١/٤٥٤، الرقم: ٦٩٥، والمنذرى الترغيب والترهيب، ٢/٢٦٠، الرقم: ٢٣٢١، والهيثمى فى مجمع الزوائد، ١٠/٧٦.

''हज़रत सुहैल बिन हन्ज़ला ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी-ए-अकरम ﷺ ने फरमायाः जब लोग मजलिसे ज़िक्र में बैठ कर अल्लाह तआला का ज़िक्र (करने के बाद उस मजलिस से) उठते हैं तो उन्हें कहा जाता हैः खड़े हो जाओ! अल्लाह तआला ने तुम्हारे गुनाह बख़्श दिए हैं और तुम्हारे गुनाह नेकियों में बदल दिए गए हैं।''

٤٨٩ / ٢٩. عَنْ أَنَسٍ ﷺ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: مَنْ ذَكَرَ اللهَ فَفَاضَتْ عَيْنَاهُ مِنْ خَشْيَةٍ حَتَّى يُصِيْبَ الْأَرْضَ مِنْ دُمُوْعِهِ لَمْ يُعَذِّبْهُ اللهُ تَعَالَى يَوْمَ الْقِيَامَةِ. رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ وَالْحَاكِمُ.

وَقَالَ الْحَاكِمُ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحُ الإِسْنَادِ.

''हज़रत अनस ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी-ए-अकरम ﷺ ने फरमायाः जिसने अल्लाह तआला को याद किया और उसके ख़ौफ़ से उसकी आँखें इस क़द्र अश्कबार हुईं कि ज़मीन तक उसके आँसू पहुँच गए तो अल्लाह तआला उसे क़यामत के दिन अज़ाब नहीं देगा।''

٤٩٠ / ٣٠. عَنْ مُعَاذٍ ﷺ عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ أَنَّ رَجُلًا سَأَلَهُ، فَقَالَ: أَيُّ الْجِهَادِ أَعْظَمُ أَجْرًا؟ قَالَ: أَكْثَرُهُمْ لِلّٰهِ تَبَارَكَ وَتَعَالَى ذِكْرًا، قَالَ: فَأَيُّ الصَّائِمِيْنَ أَعْظَمُ أَجْرًا؟ قَالَ: أَكْثَرُهُمْ لِلّٰهِ تَبَارَكَ وَتَعَالَى ذِكْرًا، ثُمَّ ذَكَرَ لَنَا الصَّلَاةَ وَالزَّكَاةَ وَالْحَجَّ وَالصَّدَقَةَ، كُلُّ ذَلِكَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: أَكْثَرُهُمْ لِلّٰهِ تَبَارَكَ وَتَعَالَى ذِكْرًا. فَقَالَ: أَبُوْبَكْرٍ ﷺ لِعُمَرَ ﷺ: يَاأَبَاحَفْصٍ ذَهَبَ الذَّاكِرُوْنَ بِكُلِّ خَيْرٍ؟ فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: أَجَلْ. رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالطَّبَرَانِيُّ.

الحديث رقم ٢٩: أخرجه الحاكم فى المستدرك، ٤/٢٨٩، الرقم: ٧٦٦٨، والطبرانى فى المعجم الأوسط، ٢/١٧٨، الرقم: ١٦٤١، ٦١٧٠، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٤/١١٣، الرقم: ٥٠٢٣.

الحديث رقم ٣٠: أخرجه أحمد بن حنبل فى المسند، ٣/٤٣٨، الرقم: ١٥٦٩٩، والطبرانى فى المعجم الكبير، ٢٠/١٨٦، الرقم: ٤٠٧، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٢/٢٥٧، الرقم: ٢٣٠٩، والهيثمى فى مجمع الزوائد، ١/٧٤.

''हज़रत मुआज़ ؓ हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ से रिवायत करते हैं कि एक आदमी ने आप ﷺ से सवाल कियाः किस जिहाद का सबसे ज़्यादा अज्र है ? आप ﷺ ने फरमायाः उस बन्दे का जिहाद जो सबसे ज़्यादा अल्लाह तआला का ज़िक्र करने वाला है । उसने सवाल कियाः किस रोज़ादार का अज्र सबसे ज़्यादा है ? आप ﷺ ने फरमायाः उनमें से सबसे ज़्यादा अल्लाह तआला का ज़िक्र करने वाले का, फिर हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने हमारे लिए नमाज़, जकात, हज और सदक़े का ज़िक्र किया और आप ﷺ ने फरमायाः इन सब इबादतों में इसका अज्र सबसे ज़्यादा उसे होगा जो अल्लाह तआला का सबसे ज़्यादा ज़िक्र करने वाला होगा। ज़िक्र करने वाले तमाम भलाई ले गए ? तो हुज़ूर नबी–ए–अकरम ने फरमायाः हाँ (अबू बकर तू सच कह रहा है)।''

فَصْلٌ فِي فَضْلِ الصَّــلَاةِ وَالسَّــلَامِ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ

हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ पर दुरूदो सलाम भेजने की फ़ज़ीलत का बयान

٤٩١ـ /٣١ـ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضي الله عنه أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ صَلَّى عَلَيَّ وَاحِدَةً، صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ عَشْرًا. رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَالتِّرْمِذِيُّ.

وَزَادَ التِّرْمِذِيُّ: وَكَتَبَ لَهُ بِهَا عَشْرَ حَسَنَاتٍ.

وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: حَدِيْثُ أَبِي هُرَيْرَةَ رضي الله عنه حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत अबू हुरैरा रضي الله عنه से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जो शख़्स मुझ पर एक बार दुरूद भेजता है तो अल्लाह तआला उस पर दस बार दुरूद (रहमत) भेजता है और इमाम तिर्मिज़ी ने इन अल्फ़ाज़ का इज़ाफ़ा कियाः और अल्लाह तआला उसके लिए दस नेकियाँ भी उस (दुरूद पढ़ने) के बदले में लिख देता है।''

الحديث رقم ٣١: أخرجه مسلم فى الصحيح، كتاب: الصلاة، باب: الصلاة على النبي ﷺ بعد التشهد، ١/٣٠٦، الرقم: ٤٠٨، والترمذى فى السنن، أبواب: الوتر عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء في فضل الصلاة على النبى ﷺ، ٢/٣٥٣، ٣٥٤، الرقم: ٤٨٤ـ٤٨٥، والنسائى فى السنن، كتاب: السهو، باب: الفضل فى الصلاة على النبى ﷺ، ٣/٥٠، الرقم: ١٢٩٦، وفى السنن الكبرى، ١/٣٨٤، الرقم: ١٢١٩، والدارمى فى السنن، ٢/٤٠٨، الرقم: ٢٧٧٢، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٢/٣٧٥، الرقم: ٨٨٦٩ـ ١٠٢٩٢، وابن حبان فى الصحيح، ٣/١٨٧، الرقم: ٩٠٦، وابن أبى شيبة فى المصنف، ٢/٢٥٣، الرقم: ٨٧٠٢، والطبرانى فى المعجم الصغير، ٢/١٢٦، الرقم: ٨٩٩، وأبويعلى بإسناده فى المسند، ١١/٣٨٠، الرقم: ٦٤٩٥، والبيهقى فى شعب الإيمان، ٢/٢١١، الرقم: ١٥٥٩، وأبو عوانة فى المسند، ١/٥٤٦، الرقم: ٢٠٤٠ـ

الحديث رقم ٣٢: أخرجه النسائى فى السنن، كتاب: السهو، باب: الفضل في الصلاة على النبى ﷺ، ٤/٥٠، الرقم: ١٢٩٧، وفى السنن الكبرى، ١/٣٨٥، الرقم: ←

٤٩٢ـ/٣٢ـ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ ﵁، قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ صَلَّى عَلَيَّ صَلَاةً وَاحِدَةً، صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ عَشْرَ صَلَوَاتٍ، وَحُطَّتْ عَنْهُ عَشْرُ خَطِيْئَاتٍ، وَرُفِعَتْ لَهُ عَشْرُ دَرَجَاتٍ. رَوَاهُ النَّسَائِيُّ وَأَحْمَدُ.

وَقَالَ الْحَاكِمُ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحُ الإِسْنَادِ.

''हज़रत अनस बिन मालिक ﵁ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जो शख़्स मुझ पर एक बार दुरूद भेजता है तो अल्लाह तआला उस पर दस रहमतें नाज़िल फरमाता है, उसके दस गुनाह माफ किए जाते हैं और उसके दस दरजात बुलन्द किए जाते हैं।''

٤٩٣/٣٣ـ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُودٍ ﵁ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: أَوْلَى النَّاسِ بِي يَومَ الْقِيَامَةِ أَكْثَرُهُمْ عَلَيَّ صَلَاةً.

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ حِبَّانَ.

وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद ﵁ से मरवी है हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः क़यामत के दिन लोगों में से मेरे सबसे ज़्यादा क़रीब वो शख़्स होगा जो (इस दुनिया में) उनमें से सबसे ज़्यादा मुझ पर दुरूद भेजता है।''

.... ١٢٢٠/١٠١٩٤، وفى عمل اليوم والليلة، ١/٢٩٦، الرقم: ٣٦٢، والبخارى فى الأدب المفرد، ١/٢٢٤، الرقم: ٦٤٣، وابن أبى شيبة فى المصنف، ٢/٢٥٣، والرقم: ٨٧٠٣، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٣/١٠٢، الرقم: ١٢٠١٧، والبيهقى فى شعب الإيمان، ٢/٢١٠، الرقم: ١٥٥٤، والحاكم فى المستدرك، ١/٧٣٥، الرقم: ٢٠١٨۔

الحديث رقم ٣٣: أخرجه الترمذى فى السنن أبواب: الوتر عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء فى فضل الصلاةعلى النبى ﷺ، ٢/٣٥٤، الرقم: ٤٨٤، وابن حبان فى الصحيح، ٣/١٩٢، الرقم: ٩١١، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٣/٢٤٩، الرقم: ٥٧٩١، وفى شعب الإيمان، ٢/٢١٢، الرقم: ١٥٦٣، وأبويعلى فى المسند، ٨/٤٢٧، الرقم: ٥٠١١، والديلمى فى مسند الفردوس، ١/٨١، الرقم: ٢٥٠، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٢/٣٢٧، الرقم: ٢٥٧٥۔

٤٩٤ / ٣٤۔ عَنْ عَبْدِ اللهِ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّ لِلّٰهِ مَلَائِكَةً سَيَّاحِيْنَ فِي الْأَرْضِ يُبَلِّغُوْنِي مِنْ أُمَّتِي السَّلَامَ.

رَوَاهُ النَّسَائِيُّ وَالدَّارِمِيُّ.

وَقَالَ الْحَاكِمُ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحُ الإِسْنَادِ.

''हज़रत अब्दुल्लाह ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः बेशक अल्लाह तआला की ज़मीन में कुछ गश्त करने वाले फ़रिश्ते हैं जो मुझे मेरी उम्मत का सलाम पहुँचाते हैं।''

٤٩٥ / ٣٥۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ قَالَ: إِنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَا مِنْ أَحَدٍ يُسَلِّمُ عَلَيَّ إِلَّا رَدَّ اللهُ عَلَيَّ رُوْحِي حَتَّى أَرُدَّ عَلَيْهِ السَّلَامَ.

الحديث رقم ٣٤: أخرجه النسائى فى السنن كتاب: السهو، باب: السلام على النبى ﷺ، ٣ / ٤٣، الرقم: ١٢٨٢، وفى السنن الكبرى، ١ / ٣٨٠، الرقم: ١٢٠٥، ٦ / ٢٢، الرقم: ٩٨٩٤، وفي عمل اليوم والليلة، ١ / ٦٧، الرقم: ٦٦، والدارمى فى السنن، ٢ / ٤٠٩، الرقم: ٢٧٧٤، وابن حبان فى الصحيح، ٣ / ١٩٥، الرقم: ٩١٤، والحاكم فى المستدرك، ٢ / ٤٥٦، الرقم: ٣٥٧٦، والبزار فى المسند، ٥ / ٣٠٧، الرقم: ٤٢١٠، ٤٣٢٠، وأبويعلى فى المسند، ٩ / ١٣٧، الرقم: ٥٢١٣، والطبرانى فى المعجم الكبير، ١٠ / ٢١٩، الرقم: ١٠٥٢٨۔ ١٠٥٣٠، والبيهقى فى شعب الإيمان، ٢ / ٢١٧، الرقم: ١٥٨٢، وابن شيبة فى المصنف، ٢ / ٢٥٣، الرقم: ٨٧٠٥، ٣١٧٢١، وعبد الرزاق فى المصنف، ٢ / ٢١٥، الرقم: ٣١١٦، والشاشى فى المسند، ٢ / ٢٥٢، ، الرقم: ٨٢٥۔ ٨٢٦، وابن حيان فى العظمة، ٣ / ٩٩٠، الرقم: ٥١٣، وابن المبارك فى الزهد، ١ / ٣٦٤، الرقم: ١٠٢٨، والديلمى عن أبى هريرة ﷺ فى مسند الفردوس، ١ / ١٨٣، الرقم: ٦٨٦، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٢ / ٣٢٦، الرقم: ٢٥٧٠۔

الحديث رقم ٣٥: أخرجه أبوداود فى السنن، كتاب: المناسك، باب: زيارة القبور، ٢ / ٢١٨، الرقم: ٢٠٤١، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٢ / ٥٢٧، الرقم: ١٠٨٦٧، والطبرانى فى المعجم الأوسط، ٣ / ٢٦٢، الرقم: ٣٠٩٢، ٩٣٢٩، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٥ / ٢٤٥، الرقم: ١٠٠٥٠، وفى شعب الإيمان، ٢ / ٢١٧، الرقم: ٥١٨١۔ ٤١٦١، وابن راهويه فى المسند، ١ / ٤٥٣، الرقم: ٥٢٦، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٢ / ٣٢٦، الرقم: ٢٥٧٣، والهيثمى فى مجمع الزوائد، ١٠ / ١٦٢۔

رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ وَأَحْمَدُ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः (मेरी उम्मत में से कोई शख़्स) ऐसा नहीं जो मुझ पर सलाम भेजे मगर अल्लाह तआला ने मुझ पर मेरी रूह वापस लौटा दी हुई है यहाँ तक कि मैं हर सलाम करने वाले के सलाम का जवाब देता हूँ।''

٤٩٦ / ٣٦۔ عَنِ الْحَسَنِ بْنِ عَلِيٍّ رضي الله عنهما أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: حَيْثُمَا كُنْتُمْ فَصَلُّوْا عَلَيَّ فَإِنَّ صَلَاتَكُمْ تَبْلُغُنِي.

رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالطَّبَرَانِيُّ بِإِسْنَادٍ حَسَنٍ وَاللَّفْظُ لَهُ.

''हज़रत हसन बिन अली رضي الله عنهما से रिवायत है हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः तुम जहाँ कहीं भी हो मुझ पर दुरूद भेजा करो, बेशक तुम्हारा दुरूद मुझे पहुँच जाता है।''

٤٩٧ / ٣٧۔ عَنْ أَبِي طَلْحَةَ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ جَاءَ ذَاتَ يَوْمٍ وَالْبِشْرُ يُرَى فِي وَجْهِهِ، فَقَالَ: إِنَّهُ جَاءَنِي جِبْرِيْلُ عليه السلام، فَقَالَ: إِنَّ رَبَّكَ يَقُوْلُ: أَمَا يُرْضِيْكَ يَا مُحَمَّدُ، أَنْ لَا يُصَلِّيَ عَلَيْكَ أَحَدٌ مِنْ أُمَّتِكَ إِلَّا صَلَّيْتُ عَلَيْهِ عَشْرًا، وَلَا يُسَلِّمُ عَلَيْكَ أَحَدٌ مِنْ أُمَّتِكَ إِلَّا سَلَّمْتُ عَلَيْهِ عَشْرًا. رَوَاهُ النَّسَائِيُّ وَالدَّارِمِيُّ.

''हज़रत अबू तल्हा ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ एक मर्तबा

الحديث رقم ٣٦: أخرجه أحمد بن حنبل عن أبى هريرة ﷺ فى المسند، ٢ / ٣٦٧، الرقم: ٨٧٩٠، والطبرانى فى المعجم الكبير، ٣ / ٨٢، الرقم: ٢٧٢٩، وفى المعجم الأوسط، ١ / ١٧، الرقم: ٣٦٥، والديلمى فى مسند الفردوس، ٥ / ١٥، الرقم: ٧٣٠٧ والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٢ / ٣٢٦، الرقم: ٢٥٧١۔

الحديث رقم ٣٧: أخرجه النسائي في السنن كتاب: السهو، باب: الفضل فى الصلاة على النبى ﷺ ٣ / ٥٠، الرقم ١٢٩٥، والدارمي في السنن ٢ / ٤٠٨، الرقم: ٢٧٧٣، وأحمد بن حنبل في المسند، ٤ / ٣٠، وابن المبارك فى كتاب الزهد، ١ / ٣٦٤، الرقم: ١٠٦٧، والطبرانى فى المعجم الكبير، ٥ / ١٠٠، الرقم: ٤٧٢٠، وابن أبى شيبة فى المصنف، ٢ / ٢٥٢، الرقم: ٨٦٩٥۔

तशरीफ़ लाए। आप ﷺ के चेहरा–ए–अक़दस पर ख़ुशी ज़ाहिर हो रही थी। आप ﷺ ने फरमायाः अभी अभी जिब्राईल عليه السلام मेरे पास आए और उन्होंने कहाः आप का रब फरमाता हैः ऐ मुहम्मद! क्या आप इस बात पर राज़ी नहीं कि आप की उम्मत में से जो शख़्स एक बार आप पर दुरूद भेजे, मैं उस पर दस रहमतें भेजूँ ? और आप की उम्मत में से कोई आप पर एक बार सलाम भेजे तो में उस पर दस बार सलाम भेजूँ ?

٤٩٨ / ٣٨۔ عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رضي الله عنه، قَالَ: إِنَّ الدُّعَاءَ مَوْقُوْفٌ بَيْنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ، لَا يَصْعَدُ مِنْهُ شَيْءٌ حَتَّى تُصَلِّيَ عَلَى نَبِيِّکَ ﷺ.

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ.

''हज़रत उमर बिन ख़त्ताब رضي الله عنه रिवायत फरमाते हैं कि यक़ीनन दुआ उस वक़्त तक ज़मीन और आसमान के दरमियान ठहरी रहती है और उसमें से कोई भी चीज़ ऊपर नहीं जाती जब तक कि तुम अपने नबी–ए–मुकर्रम ﷺ पर दुरूद न पढ़ लो।''

٤٩٩ / ٣٩۔ عَنْ عَلِيٍّ رضي الله عنه قَالَ: كُلُّ دُعَاءٍ مَحْجُوْبٌ حَتَّى يُصَلَّى عَلَى مُحَمَّدٍ ﷺ، وَآلِ مُحَمَّدٍ. رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ بِإِسْنَادٍ جَيِّدٍ وَالْبَيْهَقِيُّ.

وَقَالَ الْهَيْثَمِيُّ: رِجَالُهُ ثِقَاتٌ.

''हज़रत अली رضي الله عنه फरमाते हैं कि हर दुआ उस वक़्त तक पर्दा–ए–हिजाब में रहती है जब तक हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ पर और आप ﷺ के अहले बैत पर दुरूद न भेजा जाए।''

الحديث رقم ٣٨: أخرجه الترمذي في السنن، كتاب: الصلاة عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء فی فضل الصلاة على النبی ﷺ، ٢ / ٣٥٦ الرقم ٤٨٦، والمنذری فی الترغيب والترهيب، ٢ / ٣٣٠، الرقم: ٢٥٩٠۔

الحديث رقم ٣٩: أخرجه الطبرانی فی المعجم الأوسط، ١ / ٢٢٠، الرقم: ٧٢١، والبيهقی فی شعب الإيمان، ٢ / ٢١٦، الرقم: ١٥٧٥، والمنذری فی الترغيب والترهيب، ٢ / ٣٣٠، الرقم: ٢٥٨٩ وقال رواته ثقات، والديلمی فی مسند الفردوس، ٣ / ٢٥٥، الرقم: ٤٧٥٤، والهيثمی فی مجمع الزوائد، ١٠ / ١٦٠۔

٥٠٠ / ٤٠۔ عَنْ عَبْدِ اللهِ بنِ عَمْرٍو رضي الله عنهما، قَالَ: مَنْ صَلَّى عَلَى النَّبِيِّ ﷺ وَاحِدَةً، صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَمَلَائِكَتُهُ سَبْعِيْنَ صَلَاةً. رَوَاهُ أَحْمَدُ. وَإِسْنَادُهُ حَسَنٌ.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رضي الله عنهما फरमाते हैं जो हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ पर एक मर्तबा दुरूद भेजता है, अल्लाह तआ़ला और उसके फ़रिश्ते उस पर 70 मर्तबा (बसूरते रहमत) दुरूद भेजते हैं।''

٥٠١ / ٤١۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَا اجْتَمَعَ قَوْمٌ فِي مَجْلِسٍ فَتَفَرَّقُوْا مِنْ غَيْرِ ذِكْرِ اللهِ وَالصَّلَاةِ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ إِلَّا كَانَ عَلَيْهِمْ حَسْرَةً يَوْمَ الْقِيَامَةِ. رَوَاهُ ابْنُ حِبَّانَ وَأَحْمَدُ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : जो लोग किसी मजलिस में इकट्ठे हुए फिर (उस मजलिस में) अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र और हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ पर दुरूद पढ़े बग़ैर वो मुन्तशिर हो गए तो वो मजलिस उन के लिए क़यामत के रोज़ बाइस हसरत (व बाइसे ख़सारा) बनने के सिवा और कुछ नहीं होगी।''

٥٠٢ / ٤٢۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَا قَعَدَ قَوْمٌ

الحديث رقم ٤٠: أخرجه أحمد بن حنبل فى المسند، ٢/١٧٢،١٨٧، الرقم: ٦٦٠٥۔ ٦٧٥٤، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٢/٣٢٥، الرقم: ٢٥٦٦ وقال: إِسْنَادُهُ حَسَنٌ،والهيثمى فى مجمع الزوائد، ١٠/١٦٠، وقال: رواه أحمد وَإِسْنَادُهُ حَسَنٌ۔

الحديث رقم ٤١: أخرجه ابن حبان فى الصحيح، ٢/٣٥١، الرقم: ٥٩٠، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٢/٤٤٦، الرقم: ٩٧٦٣، وابن المبارك فى الزهد، ١/٣٤٢، الرقم: ٩٦٢، والهيثمى فى مجمع الزوائد، ١٠/٧٩ وقال الهيثمي: رواه أحمد ورجاله رجال الصحيح۔

الحديث رقم ٤٢: أخرجه ابن حبان فى الصحيح، ٢/٣٥٢، الرقم:٥٩١، وابن أبى عاصم فى كتاب الزهد، ١/٢٧، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٢/٢٦٣، ←

مَقْعَدًا لَا يَذْكُرُوْنَ اللهَ فِيْهِ وَيُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ، إِلَّا كَانَ عَلَيْهِمْ حَسْرَةً يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَ إِنْ أُدْخِلُوا الْجَنَّةَ. رَوَاهُ ابْنُ حِبَّانَ وَإِسْنَادُهُ صَحِيْحٌ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : कोई क़ौम किसी बैठने की जगह (यानी मजलिस में) बैठे और उसमें अल्लाह तआला का ज़िक्र करे और हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ पर दुरूद न भेजे तो वो मजलिस रोज़े कयामत उनके लिए हसरत (व खसारे) का बाइस होने के सिवा कुछ नहीं होगी अगरचे वो लोग जन्नत में भी दाख़िल हो जाएं (लेकिन उन्हें हमेशा इस बात का पछतावा रहेगा)।''

٥٠٣ / ٤٣۔ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ صَلَّى عَلَيَّ وَاحِدَةً صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ عَشْرًا وَمَنْ صَلَّى عَلَيَّ عَشْرًا صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ مِائَةً وَمَنْ صَلَّى عَلَيَّ مِائَةً كَتَبَ اللهُ بَيْنَ عَيْنَيْهِ بَرَاءَةً مِنَ النِّفَاقِ وَبَرَاءَةً مِنَ النَّارِ وَأَسْكَنَهُ اللهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مَعَ الشُّهَدَاءِ. رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ.

وَقَالَ الْهَيْثَمِيُّ: رِجَالُهُ ثِقَاتٌ.

''हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जो शख़्स मुझ पर एक मर्तबा दुरूद पढ़ता है अल्लाह तआला उस पर दस रहमतें नाज़िल फरमाता है और जो शख़्स मुझ पर दस मर्तबा दुरूद पढ़ता है अल्लाह तआला उस पर सौ रहमतें नाज़िल फरमाता है और जो शख़्स मुझ पर सौ मर्तबा दुरूद पढ़ता है अल्लाह तआला उसकी दोनों आँखों के दरमियान (यानी पैशानी पर) मुनाफ़िक़त और आग (दोनों) से हमेशा के लिए आज़ादी लिख देता है और क़यामत के दिन उसका क़ियाम (और दर्जा) शहीदों के साथ होगा।''

.... الرقم: ٢٣٣١، والهيثمى فى موارد الظمآن، ١ / ٥٧٧، الرقم: ٢٣٢٢، وفى مجمع الزوائد، ١٠ / ٧٩۔

الحديث رقم ٤٣: أخرجه الطبرانى فى المعجم الأوسط، ٧ / ١٨٨، الرقم: ٧٢٣٥، وفى المعجم الصغير، ٢ / ١٢٦، الرقم: ٨٩٩، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٢ / ٣٢٣، الرقم: ٢٥٦٠، والهيثمى فى مجمع الزوائد، ١٠ / ١٦٣۔

٥٠٤ / ٤٤۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضي الله عنه قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: صَلُّوْا عَلَيَّ فَإِنَّ الصَّلَاةَ عَلَيَّ زَكَاةٌ لَكُمْ. رَوَاهُ ابْنُ أَبِي شَيْبَةَ وَأَبُوْيَعْلَى بِإِسْنَادِهِ.

''हज़रत अबू हुरैरा رضي الله عنه से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः मुझ पर दुरूद पढ़ा करो बेशक (तुम्हारा) मुझ पर दुरूद पढ़ना तुम्हारे लिए (रूहानी व जिस्मानी) पाकीज़गी का बाइस है।''

٥٠٥ / ٤٥۔ عَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ رضي الله عنه قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ صَلَّى عَلَيَّ حِيْنَ يُصْبِحُ عَشْرًا وَحِيْنَ يُمْسِي عَشْرًا أَدْرَكَتْهُ شَفَاعَتِي يَوْمَ الْقِيَامَةِ. رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ بِإِسْنَادٍ جَيِّدٍ كَمَا قَالَ الْمُنْذِرِيُّ وَالْهَيْثَمِيُّ.

''हज़रत अबू दरदा رضي الله عنه से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : जो शख़्स सुबह के वक़्त और शाम के वक़्त मुझ पर दस मर्तबा दुरूद भेजेगा उसे क़यामत के दिन मेरी शफ़ाअत नसीब होगी।''

الحديث رقم ٤٤: أخرجه ابن أبی شيبة فی المصنف، ٢ / ٢٥٣، الرقم: ٨٧٠٤، وأبو يعلی فی المسند، ١١ / ٢٩٨، الرقم: ٦٤١٤، والحارث فی المسند (زوائد الهيثمی)، ٢ / ٩٦٢، الرقم: ١٠٦٢، وهناد فی الزهد، ١ / ١١٧، الرقم: ١٤٧۔

الحديث رقم ٤٥: أخرجه المنذری فی الترغيب والترهيب، ١ / ٢٦١، الرقم: ٩٨٧، والهيثمی فی مجمع الزوائد، ١٠ / ١٢٠، وَقَالَ الْمُنذِرِيُّ وَالْهَيْثَمِيُّ: رواه الطبرانی بإسنادين أحدهما جيد ورجاله وثقوا۔

فَصْلٌ فِي فَضْلِ قِيَامِ اللَّيْلِ

﴿रात को क़ियाम करने की फ़ज़ीलत का बयान﴾

٥٠٦ / ٤٦۔ عَنْ عَبْدِ اللهِ ابْنِ عُمَرَ رضي الله عنهما قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: لَا حَسَدَ إِلَّا عَلَى اثْنَتَيْنِ: رَجُلٌ آتَاهُ اللهُ الْكِتَابَ وَقَامَ بِهِ آنَاءَ اللَّيْلِ، وَرَجُلٌ أَعْطَاهُ اللهُ مَالًا فَهُوَ يَتَصَدَّقُ بِهِ آنَاءَ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ.

مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर رضي الله عنهما से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः हसद (यानी रश्क) सिर्फ दो आदमियों से करना चाहिए : एक वो शख़्स जिसे अल्लाह तआला ने कुरआने पाक अता किया हो और वो रात को नमाज़ में इस की तिलावत करे, दूसरा वो शख़्स है जिसे अल्लाह तआला ने माल व दौलत से नवाज़ा हो वो उसे रात की घड़ियों और दिन के मुख़्तलिफ़ हिस्सों में (राहे इलाही में) ख़र्च करता रहे।''

الحديث رقم ٤٦: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: فضائل القرآن، باب: اغْتِبَاطِ صَاحِبِ القرآنِ، ٤ / ١٩١٩، الرقم: ٤٧٣٧، وفي كتاب: التمني، باب: تَمَنِّي القُرآنِ وَالعِلْمِ، ٦ / ٢٦٤٣، الرقم: ٦٨٠٥، ومسلم في الصحيح، كتاب: صلاة المسافرين وقصرها، باب: فضل من يقوم بالقرآن ويعلمه، وفضل من تعلم حكمة من فقه أوغيره فعمل بها وعلمها، ١ / ٥٥٨۔ ٥٥٩، الرقم: ٨١٥، والترمذي في السنن، كتاب: البر والصلة عن رسول الله ﷺ ، باب: ماجاء في الحسد، ٤ / ٣٣٠، الرقم: ١٩٣٦، وَقَالَ أَبُوعِيْسَى:هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ۔ وابن ماجه في السنن، كتاب: الزهد، باب: الحسد، ٢ / ١٤٠٨، الرقم: ٤٢٠٩، وابن حبان في الصحيح، في الصحيح، ١ / ٣٣٢، الرقم: ١٢٥، ١٢٦، والنسائي في السنن الكبرى، ٥ / ٢٧، الرقم: ٨٠٧٢، وأحمد بن حنبل في المسند، ٢ / ٨، الرقم: ٤٥٥٠، ٤٩٢٤، ٥٦١٨، ٦٤٠٣، والطبراني في المعجم الأوسط، ٢ / ٣٧٥، الرقم: ٢٢٧١۔٢٦٨٨، وابن أبي شيبة في المصنف، ٦ / ١٥٣، الرقم: ٣٠٢٨١۔ ٣٠٢٨٢، والبيهقي في السنن الكبرى، ٤ / ١٨٨، الرقم: ٧٦١٥۔ ٧٦١٦، وأبويعلى في المسند، ٩ / ٢٩١، الرقم: ٥٤١٧۔

٥٠٧/ ٤٧۔ عَنْ جَابِرٍ ﷺ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُوْلُ: إِنَّ فِي اللَّيْلِ لَسَاعَةً، لَا يُوَافِقُهَا رَجُلٌ مُسْلِمٌ يَسْأَلُ اللهَ خَيْرًا مِنْ أَمْرِ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ، إِلَّا أَعْطَاهُ إِيَّاهُ، وَذٰلِكَ كُلَّ لَيْلَةٍ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَأَحْمَدُ.

''हज़रत जाबिर ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ को फरमाते हुए सुनाः रात को एक ऐसी साअ़त भी आती है जिसमें कोई मुसलमान अल्लाह ﷻ से दुनिया व आख़िरत की कोई भी चीज़ माँगे, अल्लाह तआ़ला उसे वही इनायत फरमा देता है और यह साअ़त हर रात आती है।''

٥٠٨/ ٤٨۔ عَنْ أَبِي أُمَامَةَ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: عَلَيْكُمْ بِقِيَامِ اللَّيْلِ، فَإِنَّهُ دَأْبُ الصَّالِحِيْنَ قَبْلَكُمْ، وَهُوَ قُرْبَةٌ لَكُمْ إِلَى رَبِّكُمْ، وَمَكْفَرَةٌ لِلسَّيِّئَاتِ، وَمَنْهَاةٌ عَنِ الْإِثْمِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالْحَاكِمُ.

وَقَالَ أَبُوْ عِيْسَى: هٰذَا حَدِيْثٌ أَصَحُّ، وَقَالَ الْحَاكِمُ: هٰذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत अबू उमामा ﷺ फरमाते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः रात का क़ियाम अपने ऊपर लाज़िम कर लो कि वो तुमसे पहले के नेक लोगों का तरीक़ा है और तुम्हारे लिए क़ुर्बे ख़ुदावन्दी का बाइस है, बुराइयों को मिटाने वाला और गुनाहों से रोकने वाला है।''

٥٠٩/ ٤٩۔ عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ وَأَبِي هُرَيْرَةَ رضي الله عنهما قَالَا: قَالَ رَسُوْلُ

الحديث رقم ٤٧: أخرجه مسلم فى الصحيح، كتاب: : صلاة المسافرين وقصرها، باب: فى الليل ساعة مستجاب فيها الدعاء، ١/ ٥٢١، الرقم: ٧٥٧، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٣/ ٣٣١، الرقم: ١٤٥٨٤، وأبويعلى فى المسند، ٤/ ١٨٩، الرقم: ٢٢٨١، والمنذري فى الترغيب والترهيب، ١/ ٢٤١، الرقم: ٩٧١.

الحديث رقم ٤٨: أخرجه الترمذي فى السنن، كتاب: الدعوات عن رسول الله ﷺ، باب: فى دعاء النبى ﷺ، ٥/ ٥٥٢، الرقم: ٣٥٤٩، والحاكم فى المستدرك، ١/ ٤٥١، الرقم: ١١٥٦، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٢/ ٥٠٢، الرقم: ٤٤٢٣، والطبرانى فى المعجم الكبير، ٨/ ٩٢، الرقم: ٧٧٦٦.

الحديث رقم ٤٩: أخرجه أبوداود فى السنن، كتاب: التطوع، باب: الحث على قيام الليل، ٢/ ٧٠، الرقم: ١٤٥١، وابن ماجه فى السنن، كتاب: إقامة الصلاة والسنة ←

اللهِ ﷺ: مَنِ اسْتَيْقَظَ مِنَ اللَّيْلِ وَأَيْقَظَ أَهْلَهُ فَصَلَّيَا رَكْعَتَيْنِ جَمِيْعًا كُتِبَا مِنَ الذَّاكِرِيْنَ اللهَ كَثِيْرًا وَالذَّاكِرَاتِ.

رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ وَابْنُ مَاجَه وَالنَّسَائِيُّ وَاللَّفْظُ لَهُ.

وَقَالَ الْحَاكِمُ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत अबू सईद ख़ुदरी और हज़रत अबू हुरैरा رضي الله عنهما से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जो शख़्स ख़ुद रात को बेदार हो और अपनी अहलिया को (भी) बेदार करे, दोनों दो रकअत नमाज़ मिल कर अदा करें तो उन का शुमार अल्लाह तआला का कसरत से ज़िक्र करने वाले मर्दों और (कसरत से) ज़िक्र करने वाली औरतों में होगा।''

٥١٠ / ٥٠ . عَنْ عَمْرِو بْنِ عَبَسَةَ ﷺ أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ يَقُوْلُ: أَقْرَبُ مَايَكُوْنُ الرَّبُّ مِنَ الْعَبْدِ فِي جَوْفِ اللَّيْلِ الآخِرِ، فَإِنِ اسْتَطَعْتَ أَنْ تَكُوْنَ مِمَّنْ يَذْكُرُ اللهَ فِي تِلْكَ السَّاعَةِ فَكُنْ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ.

وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ.

.... فيها، باب: ماجاء فيمن أيقظ أهله من الليل، ١/ ٤٢٣، الرقم: ١٣٣٥، والنسائى فى السنن الكبرى، ١/ ٤١٣، الرقم: ١٣١٠، ٦/ ١١٤٠٦، والحاكم فى المستدرك، ١/ ٤٦١، الرقم: ١١٨٩، ٣٥٦١، وعبد الرزاق فى المصنف، ٣/ ٤٨، الرقم: ٤٧٣٨، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٢/ ٥٠١، الرقم: ٤٤٢٠، وفى السنن الصغرى، ١/ ٤٧٣، الرقم: ٨٦٩، وفى شعب الإيمان، ٣/ ١٢٦، الرقم: ٣٠٨٣، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ١/ ٢٤٢، الرقم: ٩٢٢.

الحديث رقم ٥٠: أخرجه الترمذى فى السنن، كتاب: الدعوات عن رسول الله ﷺ، باب: (١١٩)، ٥/ ٥٦٩، الرقم: ٣٥٧٩، والنسائى فى السنن، كتاب: المواقيت، باب: النهي عن الصلاة بعد العصر، ١/ ٢٧٩، الرقم: ٥٧٢، وفى كتاب: التطبيق، باب: أقرب مايكون العبد من الله ﷻ، ٢/ ٢٢٦، الرقم: ١١٣٧، وابن خزيمة فى الصحيح، ٢/ ١٨٢، الرقم: ١١٤٧، والحاكم فى المستدرك، ١/ ٤٥٣، الرقم: ١١٦٢، وَقَالَ الحَاكِمُ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحٌ، والبهيقى فى السنن الكبرى، ٣/ ٤، الرقم: ٤٤٣٩، والطبرانى فى مسند الشامين، ١/ ٣٤٩، الرقم: ٦٠٥، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ١/ ٢٤٥، الرقم: ٩٣٣.

''हज़रत अम्र बिन अबसा ﷺ से मरवी है कि उन्होंने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ से सुना आप ﷺ फरमातेः अल्लाह ﷻ अपने बन्दों के सबसे करीब रात के आख़िरी हिस्से में होता है। अगर तुम उस वक़्त अल्लाह तआला का ज़िक्र करने वालों में शामिल हो सकते हो तो ज़रूर हो जाओ।

٥١١ / ٥١۔ عَنْ أَسْمَاءَ بِنْتِ يَزِيْدَ رضي الله عنها عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ قَالَ: يُحْشَرُ النَّاسُ فِي صَعِيْدٍ وَاحِدٍ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَيُنَادِي مُنَادٍ فَيَقُوْلُ: أَيْنَ الَّذِيْنَ كَانَتْ تَتَجَافَى جُنُوْبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ؟ فَيَقُوْمُوْنَ وَهُمْ قَلِيْلٌ فَيَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ بِغَيْرِ حِسَابٍ ثُمَّ يُؤْمَرُ بِسَائِرِ النَّاسِ إِلَى الْحِسَابِ. رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ.

''हज़रत अस्मा बिन्ते यज़ीद رضي الله عنها से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः लोग क़यामत के दिन एक मैदान में इकट्ठे किए जाएंगे और एक मुनादी ऐलान करेगा, जिन लोगों के पहलू (अपने रब की याद में) बिस्तर से जुदा रहते थे, वो कौन हैं ? वो खड़े हो जाएंगे, उनकी ता'दाद बहुत कम होगी और वो जन्नत में बग़ैर हिसाबो किताब के दाख़िल हो जाएंगे फिर बाक़ी (बच जाने वाले) लोगों के हिसाबो किताब का हुक्म जारी कर दिया जाएगा।''

٥١٢ / ٥٢۔ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رضي الله عنهما قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: أَشْرَافُ أُمَّتِي حَمَلَةُ الْقُرْآنِ وَأَصْحَابُ اللَّيْلِ. رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ.

الحديث رقم ٥١: أخرجه البيهقى فى شعب الإيمان، ٣/١٦٩، الرقم: ٣٢٤٤، ٦٩٣، ٣٢٤٦، ونحوه الحاكم فى المستدرك، ٢/٤٣٣، الرقم: ٣٥٠٨، وابن المبارك فى كتاب الزهد، ١/١٠١، الرقم: ٣٥٣، والقرطبى فى الجامع لأحكام القرآن، ١٤/١٠٢، والطبرى فى جامع البيان، ٣٠/١٨٦، وابن كثير فى تفسير القرآن العظيم، ٣/٤٦١۔

الحديث رقم ٥٢: أخرجه البيهقى فى شعب الإيمان، ٢/٥٥٦، الرقم: ٢٧٠٣، والإسماعيلى فى معجم الشيوخ، ١/٣١٩، الرقم: ٦، والطبرانى فى المعجم الكبير، ١٢/١٢٥، الرقم: ١٢٦٦٢، (إِلَّا وَأَصْحَابُ اللَّيْلِ) والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ١/٢٤٣، الرقم: ٩٣٠، وقال المنذرى: رواه ابن أبى الدنيا فى كتاب التهجد، والهيثمى فى مجمع الزوائد، ٧/١٦١۔

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رضي الله عنهما से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः क़ुरआन के आ़लिम व आ़मिल और शब ज़िन्दादार (लोग) मेरी उम्मत के अशराफ़ (सरदार) हैं ।''

٥١٣ / ٥٣۔ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُودٍ رضی الله عنه قَالَ: مَكْتُوْبٌ فِي التَّوْرَاةِ لَقَدْ أَعَدَّ اللهُ لِلَّذِيْنَ تَتَجَافَى جُنُوْبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ مَا لَمْ تَرَ عَيْنٌ، وَلَمْ تَسْمَعْ أُذُنٌ وَ لَمْ يَخْطُرْ عَلَى قَلْبِ بَشَرٍ، وَلَا يَعْلَمُهُ مَلَكٌ مُقَرَّبٌ، وَلَا نَبِيٌّ مُرْسَلٌ قَالَ: وَنَحْنُ نَقْرَؤُهَا: ﴿فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّا أُخْفِيَ لَهُمْ مِنْ قُرَّةِ أَعْيُنٍ جَزَاءً بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ﴾ [السجدة، ٣٢:١٧]. رَوَاهُ الْحَاكِمُ.

وَقَالَ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحُ الإِسْنَادِ.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद رضی الله عنه से मरवी है कि तौरात में लिखा है कि अल्लाह ने तहज्जुद गुज़ारों के लिए ऐसी नेअ़मतें तैयार कर रखी हैं जो किसी आँख ने देखी नहीं, किसी कान ने सुनी नहीं, किसी इन्सान के दिल में उनका ख़याल (तक) नहीं आया, न ही उन्हें कोई मुक़र्रिब फ़रिश्त जानता है और न ही कोई नबी मुर्सल । इब्ने मसऊद رضی الله عنه फरमाते हैं कि हम भी क़ुरआन पाक में इस (मफ़्हूम) के हम मा'ना आयत तिलावत करते हैं ''जो किसी को मालूम नहीं जो आँखों की ठंडक उन के लिए पोशीदा रखी गई है, यह उन (आमाले सालेहा) का बदला होगा जो वो करते रहे थे ।''

٥١٤ / ٥٤۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضی الله عنه أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: يَنْزِلُ رَبُّنَا تَبَارَكَ وَتَعَالَى كُلَّ لَيْلَةٍ إِلَى السَّمَاءِ الدُّنْيَا حِيْنَ يَبْقَى ثُلُثُ اللَّيْلِ الآخِرُ

الحديث رقم ٥٣: أخرجه الحاكم فى المستدرك، ٢/٤٤٨، الرقم: ٣٥٥٠، وأبن أبى شيبة فى المصنف، ٧/٣٤، ١٠٨، الرقم: ٣٤٠٠٣، ٣٤٥٦٨، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ١/٢٤٦، الرقم: ٩٣٨۔

الحديث رقم ٥٤: أخرجه البخارى فى الصحيح، أبواب: التهجد، باب: الدُّعاءِ وَ الصَّلَاةِ مِن آخِرِ اللَّيْلِ، ١/٣٨٤، الرقم: ١٠٩٤، وفى كتاب: الدعوات، باب: الدُّعاءُ نصفَ اللَّيْلِ، ٥/٢٣٣٠، الرقم: ٥٩٦٢، وفى كتاب: التوحيد، باب: قول ←

فَيَقُوْلُ: مَنْ يَدْعُونِي فَأَسْتَجِيْبَ لَهُ، وَمَنْ يَسْأَلُنِي فَأُعْطِيَهُ، وَمَنْ يَسْتَغْفِرُنِي فَأَغْفِرَ لَهُ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः हमारा रब तबारक व तआला हर रात को जब रात का तिहाई हिस्सा बाक़ी रह जाता है तो आसमाने दुनिया पर नुज़ूले इजलाल फरमाता है और इरशाद फरमाता है : है कोई जो मुझ से दुआ करे ताकि मैं उसकी दुआ क़ुबूल करूँ, है कोई जो मुझ से सवाल करे कि उसे अता करूँ, है कोई जो मुझसे माफी चाहे कि उसे बख़्श दूँ।

٥١٥ / ٥٥۔ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ سَلَامٍ ﷺ قَالَ: وَكَانَ أَوَّلُ مَا سَمِعْتُ مِنْ كَلَامِهِ ﷺ أَنْ قَالَ: أَيُّهَا النَّاسُ أَفْشُوا السَّلَامَ وَأَطْعِمُوْا الطَّعَامَ وَصِلُوا الْأَرْحَامَ وَصَلُّوْا بِاللَّيْلِ وَالنَّاسُ نِيَامٌ تَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ بِسَلَامٍ.

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَه.

.... الله تعالى: يريدونَ أَن يُبَدِّلُوْا كَلَامَ اللهِ [الفتح: ١٥]، ٦/٢٧٢٣، الرقم: ٧٠٥٦، ومسلم في الصحيح، كتاب: صلاة المسافرين وقصرها، باب: الترغيب في الدعاء والذكر في آخر الليل والإجابة فيه، ١/٥٢١، الرقم: ٧٠٥، والترمذي في السنن، كتاب: الصلاة عن رسول الله ﷺ باب: ما جاء في نُزُولِ الرَّبِّ ﷻ إِلَى السَّماءِ الدُّنْيا كُلَّ لَيْلَةٍ، ٢/٣٠٧، الرقم: ٤٤٦، وقال أَبُوْعِيْسَى: وهَذَا أَصحُّ الرِّوَايَاتِ. وفي كتاب: الدعوات عن رسول الله ﷺ، باب: (٧٩)، ٥/٥٢٦، الرقم: ٣٤٩٨، وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ، والنسائي في السنن الكبرى، ٤/٤٢٠، الرقم: ٧٧٦٨، ١٠٣١٣، ١٠٣١٤، وابن ماجه في السنن، كتاب: إقامة الصلاة والسنة فيها، باب: ما جاء في أي ساعات اللّيل أفضل، ١/٤٣٥، الرقم: ١٣٦٦، ومالك في الموطأ، ١/٢١٤، الرقم: ٤٩٨۔

الحديث رقم ٥٥: أخرجه الترمذي في السنن، كتاب: صفة القيامة والرقائق والورع عن رسول الله ﷺ، باب: (٤٢)، ٤/٦٥٢، الرقم: ٢٤٨٥، وابن ماجه في السنن، كتاب: إقامة الصلاة والسنة فيها، باب: ما جاء في قيام الليل، ١/٤٢٣، الرقم: ١٣٣٤، وأحمد بن حنبل في المسند، ٥/٤٥١، الرقم: ٢٣٨٣٥۔

وَقَالَا أَبُوْعِيْسَى وَالْحَاكِمُ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ का सबसे पहला कलाम जो मैंने सुना वो ये था, आप ﷺ ने फरमायाः ऐ लोगों! सलाम फैलाओ (यानी कसरत से एक दूसरे को सलाम किया करो) खाना खिलाया करो, ख़ूनी रिश्तों के साथ भलाई किया करो और रातों को (उठ कर) नमाज़ पढ़ा करो, जब कि लोग सोए हुए हों, तुम सलामती के साथ जन्नत में दाख़िल हो जाओगे।''

فَصْلٌ فِي الْمَدَائِحِ النَّبَوِيَّةِ وَإِنْشَادِهَا

﴾हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की मद्ह और ना’त ख़्वानी का बयान﴿

٥١٦ / ٥٦۔ عَنْ عَائِشَةَ رضي الله عنها قَالَتْ: فَسَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُولُ لِحَسَّانَ: إِنَّ رُوْحَ الْقُدُسِ لَا يَزَالُ يُؤَيِّدُکَ مَا نَافَحْتَ عَنِ اللهِ وَرَسُوْلِهِ، وَقَالَتْ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ، يَقُوْلُ: هَجَاهُمْ حَسَّانُ فَشَفَى وَاشْتَفَى. قَالَ حَسَّانُ:

هَجَوْتَ مُحَمَّدًا فَأَجَبْتُ عَنْهُ وَعِنْدَ اللهِ فِي ذَاکَ الْجَزَاءُ

هَجَوْتَ مُحَمَّدً بَرًّا حَنِيْفًا رَسُوْلَ اللهِ شِيْمَتُهُ الْوَفَاءُ

فَإِنَّ أَبِي وَ وَالِدَهُ وَعِرْضِي لِعِرْضِ مُحَمَّدٍ مِنْكُمْ وِقَاءُ

رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ وَمُسْلِمٌ وَاللَّفْظُ لَهُ.

‘‘हज़रत आइशा رضي الله عنها से मरवी है कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह फरमाते सुना (ऐ हस्सान) जब तक तुम अल्लाह ﷻ और रसूलुल्लाह ﷺ की तरफ़ से उनका दिफ़ाअ

الحديث رقم ٥٦: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: المناقب، باب: من أحب أن لا يسب نسبه، ٣/١٢٩٩، الرقم: ٣٣٣٨، وفي كتاب: المغازي، باب: حديث الإفك، ٤/١٥٢٣، الرقم: ٣٩١٤، وفي كتاب: الأدب، باب: هجاء المشركين، ٥/٢٢٧٨، الرقم: ٥٧٩٨، ومسلم في الصحيح، كتاب: فضائل الصحابة، باب: فضائل حسان بن ثابت ﷺ، ٤/١٩٣٤۔ ١٩٣٥، الرقم: ٢٤٨٩۔٢٤٩٠، وابن حبان في الصحيح، ١٣/١٠٣، الرقم: ٥٧٨٧، وأبويعلى في المسند، ٧/٣٤١، الرقم: ٤٣٧٧، وابن أبي شيبة في المصنف، ٥/٢٧٣، الرقم: ٢٦٠٢١، والحاكم في المستدرك، ٣/٥٥٥، الرقم: ٦٠٦٣، والبيهقي في السنن الكبرى، ١٠/٢٣٨، والطبراني في المعجم الكبير، ٤/٣٨، الرقم: ٣٥٨٢، والبغوى في شرح السنة، ١٢/٣٧٧، الرقم: ٣٤٠٨۔

करते रहोगे रूहुल–कुद्स (जिब्राईल ﷺ) तुम्हारी ताईद करते रहेंगे, नीज़ हज़रत आइशा رضي الله عنها ने फरमाया : रसूलुल्लाह ﷺ से सुना है कि हस्सान ने कुफ़्फ़ारे कुरैश की हिज्व (नज़्म में किसी की बुराई करना) करके मुसलमानों को शिफ़ा दी (यानी उनका दिल ठंडा कर दिया) और अपने आप को शिफ़ा दी (यानी अपना दिल ठंडा किया) हज़रत हस्सान ने (कुफ़्फ़ार की हिज्व में) कहाः ''तुम ने मुहम्मद ﷺ की हिज्व की, तो मैंने आप ﷺ की तरफ़ से जवाब दिया है और उसकी असल जज़ा अल्लाह ﷻ ही के पास है''

''तुम ने मुहम्मद ﷺ की हिज्व की, जो नेक और अदयाने बातिला से एराज़ करने वाले हैं, वो अल्लाह ﷻ के (सच्चे) रसूल हैं और उनकी ख़सलत वफ़ा करना है।''

''बिला शुब्हा मेरा बाप, मेरे अजदाद और मेरी इज़्ज़त (हमारा सब कुछ), मुहम्मद मुस्तफ़ा ﷺ की इज़्ज़तो नामूस के दिफ़ाअ के लिए तुम्हारे ख़िलाफ़ ढाल हैं।''

٥١٧ / ٥٧۔ عَنْ عُرْوَةَ رضي الله عنه قَالَ: كَانَتْ عَائِشَةُ رضي الله عنها تَكْرَهُ أَنْ يُسَبَّ عِنْدَهَا حَسَّانُ وَتَقُوْلُ: فَإِنَّهُ قَالَ:

فَإِنَّ أَبِي وَوَالِدَهُ وَعِرْضِي لِعِرْضِ مُحَمَّدٍ مِنْكُمْ وِقَاءُ

مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत उरवह رضي الله عنه बयान करते हैं कि हज़रत आइशा رضي الله عنها इस बात को (सख़्त) नापसन्द फरमाती थीं कि उनके सामने हज़रत हस्सान رضي الله عنه को बुरा भला कहा जाए (हज़रत हस्सान भी उन पर तोहमत लगाने वालों में शामिल थे) फरमाती थीं (उन्हें बुरा भला मत कहो) उन्होंने (हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की शान में) यह ना'त पढ़ी हैः

الحديث رقم ٥٧: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: المغازي، باب: حديث الإفك، ٤ / ١٥١٨، الرقم: ٣٩١٠، ومسلم في الصحيح، كتاب: التوبة، باب: في حديث الإفك وقبول توبة القاذف، ٤ / ٢١٣٧، الرقم: ٢٧٧٠، والنسائي في السنن الكبرى، ٥ / ٢٩٦، الرقم: ٨٩٣١، وأحمد بن حنبل في المسند، ٦ / ١٩٧، وأبويعلى في المسند، ٨ / ٣٤١، الرقم: ٤٩٣٣، والحاكم في المستدرك، ٣ / ٥٥٥، الرقم: ٦٠٦٠.

''बिला शुब्हा मेरा बाप, मेरे अजदाद और मेरी इज़्ज़त (हमारा सब कुछ), मुहम्मद मुस्तफ़ा ﷺ की इज़्ज़त व नामूस के दिफ़ाअ के लिए तुम्हारे ख़िलाफ़ ढाल हैं।''

٥١٨ / ٥٨۔ عَنْ هِشَامٍ رضي الله عنه عَنْ أَبِيْهِ قَالَ: ذَهَبْتُ أَسُبُّ حَسَّانَ عِنْدَ عَائِشَةَ رضي الله عنها، فَقَالَتْ: لَا تَسُبَّهُ فَإِنَّهُ كَانَ يُنَافِحُ عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ وَهَذَا لَفْظُ الْبُخَارِيِّ.

''हज़रत हिशाम ﷺ ने अपने वालिद (हज़रत उरवह बिन ज़ुबैर ﷺ) से रिवायत किया कि उन्होंने फरमायाः मैं हज़रत आइशा सिद्दीक़ा رضي الله عنها की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और हज़रत हस्सान ﷺ को बुरा भला कहने लगा (क्योंकि वो भी हज़रत आइशा رضي الله عنها पर तोहमत लगाने वालों में शामिल थे) हज़रत आइशा رضي الله عنها ने फरमायाः उन्हें बुरा भला न कहो वो (अपनी शाइरी के ज़रीये) रसूलुल्लाह ﷺ का कुफ़्फ़ार के मुकाबले में दिफ़ाअ किया करते थे।''

٥١٩ / ٥٩۔ عَنِ الْبَرَاءِ رضي الله عنه قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ لِحَسَّانَ: اهْجُهُمْ أَوْهَاجِهِمْ وَجِبْرِيْلُ مَعَكَ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

الحديث رقم ٥٨: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: المغازي، باب، حديث الإفك، ٤ / ١٥٢٣، الرقم: ٣٩١٤، وفي كتاب: الأدب، باب: هجاء المشركين، ٥ / ٢٢٧٨، الرقم: ٥٧٩٨، ومسلم في الصحيح، كتاب: فضائل الصحابة، باب: فضائل حسان بن ثابت رضي الله عنه، ٤ / ١٩٣٣، الرقم: ٢٤٨٧، والبخاري في الأدب المفرد، ١ / ٢٩٩، الرقم: ٨٦٣، والحاكم في المستدرك، ٣ / ٥٥٥، الرقم: ٦٠٦٣، وقال: هذا حديث صحيح، والطبراني في المعجم الكبير، ٢٣ / ١٠٧، الرقم: ١٤٩۔

الحديث رقم ٥٩: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: بدء الخلق، باب: ذكر الملائكة، ٣ / ١١٧٦، الرقم: ٣٠٤١، وفي كتاب: المغازي، باب: مرجع النبي ﷺ من الأحزاب ومخرجه إلى بنى قريظة، ٤ / ١٥١٢، الرقم: ٣٨٩٧، وفي كتاب: الأدب، باب: هجاء المشركين، ٥ / ٢٢٧٩، الرقم: ٥٨٠١، ومسلم في الصحيح، كتاب: فضائل الصحابة رضي الله عنهم، باب: فضائل حسان بن ثابت رضي الله عنه، ٤ / ١٩٣٣، الرقم: ٢٤٨٦، والنسائي في السنن الكبرى، ٣ / ٤٩٣، الرقم: ٦٠٢٤، وأحمد بن حنبل في المسند، ٤ / ٣٠٢، والبيهقي في السنن الكبرى، ١٠ / ٢٣٧، والطحاوي في شرح معاني الآثار، ٤ / ٢٩٨، والطبراني في المعجم الصغير، ١ / ٩٠، الرقم: ١١٩ ←

وفي رواية البخاري: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: يَوْمَ قُرَيْظَةَ لِحَسَّانَ بْنِ ثَابِتٍ ﷺ: اهْجُ الْمُشْرِكِيْنَ فَإِنَّ جِبْرِيْلَ مَعَكَ.

''हज़रत बरा' ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने हज़रत हस्सान ﷺ से फरमायाः मुश्रिकीन की हिज्व करो (यानी उनकी मज़म्मत में अश्आर पढ़ो) और हज़रत जिब्राईल ﷺ भी (इस काम में) तुम्हारे साथ हैं।''

बुख़ारी की एक रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने कुरैज़ा के रोज़ हज़रत हस्सान बिन साबित ﷺ से फरमायाः मुश्रिकीन की हिज्व करो (यानी मज़म्मत) करो यक़ीनन जिब्राईल ﷺ भी (मेरी नामूस के दिफ़ाअ में) तुम्हारे साथ शरीक हैं।''

٥٢٠ / ٦٠. عَنْ مَسْرُوْقٍ قَالَ: دَخَلْنَا عَلَى عَائِشَةَ رضي الله عنها وَعِنْدَهَا حَسَّانُ ابْنُ ثَابِتٍ ﷺ يُنْشِدُهَا شِعْرًا يُشَبِّبُ بِأَبْيَاتٍ لَهُ وَقَالَ:

حَصَانٌ رَزَانٌ مَا تُزَنُّ بِرِيْبَةٍ وَتُصْبِحُ غَرْثَى مِنْ لُحُوْمِ الْغَوَافِلِ

فَقَالَتْ لَهُ عَائِشَةُ رضي الله عنها: لَكِنَّكَ لَسْتَ كَذَلِكَ قَالَ مَسْرُوْقٌ: فَقُلْتُ لَهَا: لِمَ تَأْذَنِيْنَ لَهُ أَنْ يَدْخُلَ عَلَيْكِ وَقَدْ قَالَ اللهُ تَعَالَى: ﴿وَالَّذِي تَوَلَّى كِبْرَهُ مِنْهُمْ لَهُ عَذَابٌ عَظِيْمٌ﴾ [النور، ٢٤:١١] فَقَالَتْ: وَأَيُّ عَذَابٍ أَشَدُّ مِنَ الْعَمَى قَالَتْ لَهُ: إِنَّهُ كَانَ يُنَافِحُ أَوْ يُهَاجِي عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

.... وفي المعجم الأوسط، ٢/٤٩، الرقم: ١٢٠٩، ٣/٢٦٨، الرقم: ٣١٠٨، وفي المعجم الكبير، ٤/٤١، الرقم: ٣٥٨٨. ٣٥٨٩، وابن تيمية في الصارم المسلول، ١/٢١٤.

الحديث رقم ٦٠: أخرجه البخارى في الصحيح، كتاب: المغازي، باب: حديث الإفك، ٤/١٥٢٣، الرقم: ٣٩١٥، ومسلم في الصحيح، كتاب: فضائل الصحابة، باب: فضائل حسان بن ثابت ﷺ، ٤/١٩٣٤، الرقم: ٢٤٨٨، والبيهقي في السنن الكبرى، ١٠/٢٣٨، والطبراني في المعجم الكبير، ٢٣/١٣٥، الرقم: ١٧٥.

''हज़रत मसरूक़ बयान करते हैं कि हम हज़रत आइशा رضي الله عنها की ख़िदमत में हाज़िर हुए, दर'आँ हालांकि उनके पास हज़रत हस्सान ﷺ बैठे उन्हें अपने अश्आर सुना रहे थे, हज़रत हस्सान ﷺ ने कहाः ''वोह पाकीज़ा और दानिशमन्द हैं उन पर किसी के ऐबजूई की तोहमत नहीं है वो सुबह ग़ाफ़िलों के गोश्त से भूखी उठती हैं (यानी किसी की ग़ीबत नहीं करतीं)।'' हज़रत आइशा رضي الله عنها ने उन से (फन के ऐतबार से) फरमाया : लेकिन तुम इस तरह नहीं थे, मसरूक़ ने कहाः आप उन्हें अपने पास आने की क्यों इजाज़त देती हैं हालांकि अल्लाह तआला ने फरमाया हैः ''और उनमें से जिसने इस (बोहतान) में सबसे ज़्यादा हिस्सा लिया उसके लिए ज़बरदस्त अ़ज़ाब है।'' हज़रत आइशा رضي الله عنها ने फरमायाः अन्धे होने से ज़्यादा और कौनसा बड़ा अ़ज़ाब होगा ? हज़रत हस्सान ﷺ तो हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के दिफ़ाअ में कुफ़्फ़ार को जवाब देते थे, या उन (कुफ़्फ़ार) की हिज्व व मज़म्मत करते थे।''

٥٢١ / ٦١۔ عَنْ عَائِشَةَ رضي الله عنها قَالَتْ: كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يَضَعُ لِحَسَّانَ مِنْبَرًا فِي الْمَسْجِدِ يَقُوْمُ عَلَيْهِ قَائِمًا يُفَاخِرُ عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ أَوْ قَالَ: يُنَافِحُ عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ. وَ يَقُوْلُ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّ اللهَ يُؤَيِّدُ حَسَّانَ بِرُوْحِ الْقُدُسِ مَا يُفَاخِرُ أَوْ يُنَافِحُ عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ.

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَحْمَدُ وَالْحَاكِمُ.

وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत आइशा सिद्दीक़ा رضي الله عنها से रिवायत है उन्होंने फरमायाः हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ मस्जिदे नबवी में हज़रत हस्सान बिन साबित ﷺ के लिए मिम्बर रखते थे

الحديث رقم ٦١: أخرجه الترمذي في السنن، كتاب: الأدب عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء في إنشاد الشعر، ٥/١٣٨، الرقم: ٢٨٤٦، وأحمد بن حنبل في المسند، ٦ /٧٢، الرقم: ٢٤٤٨١، والحاكم في المستدرك، ٣/٥٥٤۔ ٥٥٥، الرقم: ٦٠٥٨۔٦٠٥٩، والطحاوي في شرح معاني الآثار، ٤/٢٩٨، وأبو يعلى في المسند، ٨/١٨٩، الرقم: ٤٧٤٦، والطبراني في المعجم الكبير، ٤/٣٧، الرقم: ٣٥٨٠، والخطيب البغدادي في موضح أوهام الجمع والتفريق، ٢/٤٢٣، الرقم: ٤٢٧، وابن كثير في تفسير القرآن العظيم، ١/١٢٣۔

जिस पर वो खड़े होकर हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की तरफ़ से (मुश्रिकीन के मुक़ाबले में) फ़ख़्र या दिफ़ाअ करते थे। हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ फरमातेः बेशक अल्लाह तआला रूहुल क़ुद्स के ज़रीये हस्सान की मदद फरमाता रहेगा। जब तक वो रसूलुल्लाह ﷺ की तरफ़ से फ़ख़्र या दिफ़ाअ करता रहेगा।''

٥٢٢ / ٦٢۔ عَنْ عَائِشَةَ رضي الله عنها قَالَتْ: كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يَضَعُ لِحَسَّانَ مِنْبَرًا فِي الْمَسْجِدِ فَيَقُوْمُ عَلَيْهِ يَهْجُوْ مَنْ قَالَ فِي رَسُوْلِ اللهِ ﷺ، فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّ رُوْحَ الْقُدُسِ مَعَ حَسَّانَ مَا نَافَحَ عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ. رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ.

''हज़रत आइशा رضي الله عنها से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ हज़रत हस्सान ﷺ के लिए मस्जिद में मिम्बर रखवाया करते थे और वो उस पर खड़े हो कर हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की गुस्ताख़ी करने वालों की हिज्व (यानी मज़म्मत) किया करते थे तो आप ﷺ ने फरमायाः बेशक जब तक हस्सान रसूलुल्लाह ﷺ की तरफ़ से दिफ़ाअ करता रहेगा रूहुल क़ुद्स (हज़रत जिब्राईल عليه السلام) भी हज़रत हस्सान ﷺ के साथ (उनके मददगार) होंगे।''

٥٢٣ / ٦٣۔ عَنْ عَائِشَةَ رضي الله عنها أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ بَنَى لِحَسَّانَ بْنِ ثَابِتٍ مِنْبَرًا فِي الْمَسْجِدِ يُنْشِدُ عَلَيْهِ الشِّعْرَ.

وفي رواية: يَهْجُوْ عَلَيْهِ الْمُشْرِكِيْنَ قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اهْجُهُمْ أَوْ هَاجِهِمْ وَجِبْرِيْلُ مَعَكَ.

الحديث رقم ٦٢: أخرجه أبوداود في السنن، كتاب: الأدب، باب: ماجاء في الشعر، ٤ / ٣٠٤، الرقم: ٥٠١٥، والعسقلاني في فتح البارى، ١ / ٥٤٨، الرقم: ٤٤٢، والشوكاني في نيل الأوطار، ٢ / ١٦٩.

الحديث رقم ٦٣: أخرجه الطحاوي في شرح معاني الآثار، ٤ / ٢٩٨، وابن شاهين في ناسخ الحديث ومنسوخه، ١ / ٤٨٤، الرقم: ٦٤٨، وابن عدي في الكامل، ٤ / ٢٧٤، الرقم: ١١٠٦، وابن تيمية في الصارم المسلول، ١ / ٢١٤، والذهبي في ميزان الاعتدال، ٤ / ٣٠٠، الرقم: ٤٩١٣.

رَوَاهُ الطَّحَاوِيُّ وَابْنُ شَاهِيْنَ وَابْنُ عَدِيٍّ وَوَافَقَهُ ابْنُ تَيْمِيَّةَ وَالذَّهَبِيُّ.

''हज़रत आइशा رضي الله عنها से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने हज़रत हस्सान बिन साबित ﷺ के लिए मस्जिद में मिम्बर बनवा रखा था। वो उस पर (हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की शान में) ना'त पढ़ते।

और एक रिवायत में है कि उस पर खड़े होकर (हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के दिफ़ाअ में) मुश्रिकीन की हिज्व करते। आप ﷺ ने फरमायाः ''मुश्रिकीन की हिज्व करो और हज़रत जिब्राईल عليه السلام भी तुम्हारे साथ (इस काम में मददगार) हैं।''

٥٢٤ / ٦٤. عَنِ الْأَسْوَدِ بْنِ سَرِيْعٍ رضي الله عنه قَالَ: قُلْتُ: يَارَسُوْلَ اللهِ إِنِّي قَدْ مَدَحْتُ بِمَدْحَةٍ وَمَدَحْتُكَ بِأُخْرَى فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: هَاتِ وَابْدَأْ بِمَدْحَةِ اللهِ. رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالطَّبَرَانِيُّ وَالْبَيْهَقِيُّ وَالْبُخَارِيُّ فِي الْأَدَبِ.

''हज़रत अस्वद बिन सरीअ ﷺ से मरवी है उन्होंने बयान किया कि मैंने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की बारगाह में अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ﷺ बेशक मैंने अल्लाह तआला की हम्द बयान की है और आप ﷺ की ना'त बयान की है। फिर आप ﷺ ने फरमाया लाओ (मुझे भी सुनाओ) और इब्तिदा अल्लाह तआला की हम्द से करो।''

٥٢٥ / ٦٥. عَنِ الْأَسْوَدِ بْنِ سَرِيْعٍ رضي الله عنه قَالَ: أَتَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ فَقُلْتُ: يَارَسُوْلَ اللهِ، إِنِّي قَدْ حَمِدْتُ رَبِّي تَبَارَكَ وَتَعَالَى بِمَحَامِدَ وَمِدَحٍ،

الحديث رقم ٦٤: أخرجه أحمد بن حنبل في المسند، ٤ / ٢٤، الرقم: ١٥٧١١، والطبراني في العجم الكبير، ١ / ٢٨٧، الرقم: ٨٤٣، والبيهقي في شعب الإيمان، ٤ / ٨٩، الرقم: ٤٣٦٥، والبخاري في الأدب المفرد، ١ / ١٢٦، الرقم: ٣٤٢، والحسيني في البيان والتعريف، ٢ / ٢٥٢، الرقم: ١٦٣٦، وقال: أخرجه البغوى، وابن عدي في الكامل، ٥ / ٢٠٠.

الحديث رقم ٦٥: أخرجه أحمد بن حنبل في المسند، ٣ / ٤٣٥، الرقم: ١٥٠٣٣، ١٥٠٣٨، وفي فضائل الصحابة، ١ / ٢٦٠. ٢٦١، الرقم: ٣٣٤. ٣٣٥، والبخاري في الأدب المفرد، ١ / ١٢٥، الرقم: ٣٤٢، والطبراني في المعجم الكبير، ١ / ٢٨٧ ←

وَإِيَّاكَ، قَالَ: هَاتِ مَاحَمِدْتَ بِهِ رَبَّكَ ﷻ قَالَ: فَجَعَلْتُ أُنْشِدُهُ.

رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالْبُخَارِيُّ فِي الْأَدَبِ وَالطَّبَرَانِيُّ وَأَبُوْنُعَيْمٍ.

وَرِجَالُهُ رِجَالُ الصَّحِيْحِ.

''हज़रत अस्वद बिन सरीअ ﷺ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हुआ और अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह! मैंने अल्लाह तआ़ला की हम्दो सना और आपकी मिदहत व ना'त बयान की है। तो आप ﷺ ने फरमायाः लाओ मुझे भी सुनाओ (और इब्तिदा) अल्लाह तआ़ला की हम्द से करो जो तुम ने बयान की है। रावी ने बयान किया कि मैंने (हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के सामने) पढ़ना शुरू कर दिया।''

٥٢٦ / ٦٦. عَنْ أَنَسٍ ﷺ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ دَخَلَ مَكَّةَ فِي عُمْرَةِ الْقَضَاءِ وَعَبْدُ اللهِ بْنُ رَوَاحَةَ ﷺ بَيْنَ يَدَيْهِ يَمْشِي وَهُوَ يَقُوْلُ:

خَلُّوا بَنِي الْكُفَّارِ عَنْ سَبِيْلِهِ الْيَومَ نَضْرِبْكُمْ عَلَى تَنْزِيْلِهِ

ضَرْبًا يَزِيْلُ الْهَامَ عَنْ مَقِيْلِهِ وَيُذْهِلُ الْخَلِيْلَ عَنْ خَلِيْلِهِ

.... الرقم: ٨٤٤، وأبونعيم في حلية الأولياء، ١/٤٦، والهيثمي في مجمع الزوائد، ٨/١١٨، ٩/٦٦، ١٠/٩٥، وقال: رجال أحمد رجال الصحيح، والحسيني في البيان والتعريف، ١/١٥٤، الرقم: ٤١١، وقال: أخرجه الإمام أحمد والبخاري في الأدب والنسائي والحاكم أحد أسانيد أحمد رجاله رجال الصحيح، والمناوي في فيض القدير، ٢/١٦٢، وقال: أحد أسانيد أحمد رجاله رجال الصحيح.

الحديث رقم ٦٦: أخرجه الترمذي في السنن، كتاب: الأدب عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء في إنشاد الشعر، ٥/١٣٩، الرقم: ٢٨٤٧، والنسائي في السنن، كتاب: مناسك الحج، باب: إنشاد الشعر في الحرم والمشي بين يدي الإمام، ٥/٢٠٢، الرقم: ٢٨٧٣، وفي السنن الكبرى، ٢/٣٨٣، الرقم: ٣٨٥٦، والبغوي في شرح السنة، ١٢/٣٧٤-٣٧٥، الرقم: ٣٤٠٤-٣٤٠٥، وقال: إسناده صحيح، والعسقلاني في فتح الباري، ٧/٥٠٢، والذهبي في سير أعلام النبلاء، ١/٢٣٥، والقرطبي في الجامع لأحكام القرآن، ١٣/١٥١، والقسطلاني في المواهب اللدنية، ١/٢٩٧.

فَقَالَ لَهُ عُمَرُ: يَا ابْنَ رَوَاحَةَ، بَيْنَ يَدَيْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ وَفِي حَرَمِ اللهِ تَقُوْلُ الشِّعْرَ؟ فَقَالَ لَهُ النَّبِيُّ ﷺ: خَلِّ عَنْهُ يَا عُمَرُ، فَلَهِيَ أَسْرَعُ فِيْهِمْ مِنْ نَضْحِ النَّبْلِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ وَالْبَغَوِيُّ.

وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत अनस ﷺ से मरवी है कि उमरह क़ज़ा के मौक़े पर हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ मक्का मुकर्रमा में इस शान से दाख़िल हुए कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन रवाहा ﷺ आप ﷺ के आगे आगे चल रहे थे और अश्आर पढ़ रहे थेः

''काफ़िरों के बेटो! हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के रास्ते से हट जाओ। आज उनके आने पर हम तुम्हारी गर्दनें मारेंगे। ऐसी ज़र्ब जो खोपड़ियों को गर्दन से जुदा कर दे और दोस्त को दोस्त से अलग कर दे।''

इस पर हज़रत उमर ﷺ ने कहाः ऐ अ़ब्दुल्लाह बिन रवाहा! रसूलुल्लाह ﷺ के सामने अल्लाह तआ़ला के हरम में शे'अर कहते हो ? रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमायाः ऐ उमर! उसे छोड़ दो! यह अश्आर उन (दुश्मनों) के हक़ में तीरों से तेज़ असर करते हैं।''

٥٢٧ / ٦٧ ـ عَنْ مُوْسَى بْنِ عُقْبَةَ ﷺ قَالَ: أَنْشَدَ النَّبِيَّ ﷺ كَعْبُ بْنُ زُهَيْرٍ بَانَتْ سُعَادُ فِي مَسْجِدِهِ بِالْمَدِيْنَةِ فَلَمَّا بَلَغَ قَوْلَهُ:

إِنَّ الرَّسُوْلَ لَنُوْرٌ يُسْتَضَاءُ بِهِ ... وَ صَارِمٌ مِنْ سُيُوْفِ اللهِ مَسْلُوْلُ

أَشَارَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ بِكُمِّهِ إِلَى الْخَلْقِ لِيَسْمَعُوْا مِنْهُ ......الحديث.

الحديث رقم ٦٧: أخرجه الحاكم في المستدرك، ٣ / ٦٧٠ـ ٦٧٣، الرقم: ٦٤٧٧ـ ٦٤٧٩، والبيهقي في السنن الكبرى، ١٠ / ٢٤٣، الرقم: ٧٧، والطبراني في المعجم الكبير، ١٩ / ١٧٧ـ١٧٨، الرقم: ٤٠٣، وابن قانع في معجم الصحابة، ٢ / ٣٨١، والعسقلاني في الإصابة، ٥ / ٥٩٤، وابن هشام في السيرة النبوية، ٥ / ١٩١، والكلاعي في الاكتفاء، ٢ / ٢٦٨، وابن كثير في البداية والنهاية (السيرة)، ٤ / ٣٧٣ـ

رَوَاهُ الْحَاكِمُ وَالْبَيْهَقِيُّ وَالطَّبَرَانِيُّ.

وفي رواية: عَنْ سَعِيْدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ رضي الله عنه قَالَ: لَمَّا انْتَهَى خَبَرُ قَتْلِ ابْنِ خَطْلٍ إِلَى كَعْبِ بْنِ زُهَيْرِ بْنِ أَبِي سَلْمَى وَكَانَ بَلَغَهُ أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وآله وسلم أَوْعَدَهُ بِمَا أَوْعَدَهُ ابْنَ خَطْلٍ فَقِيْلَ لِكَعْبٍ إِنْ لَمْ تُدْرِكْ نَفْسَكَ قُتِلْتَ، فَقَدِمَ الْمَدِيْنَةَ فَسَأَلَ عَنْ أَرَقِّ أَصْحَابِ رَسُوْلِ اللهِ صلى الله عليه وآله وسلم فَدُلَّ عَلَى أَبِي بَكْرٍ رضي الله عنه وَأَخْبَرَهُ خَبَرَهُ فَمَشَى أَبُوْبَكْرٍ وَكَعْبٌ عَلَى إِثْرِهِ حَتَّى صَارَ بَيْنَ يَدَي رَسُوْلِ اللهِ صلى الله عليه وآله وسلم فَقَالَ يَعْنِي أَبَابَكْرٍ: الرَّجُلُ يُبَايِعُكَ فَمَدَّ النَّبِيُّ صلى الله عليه وآله وسلم يَدَهُ فَمَدَّ كَعْبٌ يَدَهُ فَبَايَعَهُ وَسَفَرَ عَنْ وَجْهِهِ فَأَنْشَدَهُ:

نُبِّئْتُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ أَوْعَدَنِي ۔۔۔ وَالْعَفْوُ عِنْدَ رَسُوْلِ اللهِ مَأْمُوْلُ

إِنَّ الرَّسُوْلَ لَنُوْرٌ يُسْتَضَاءُ بِهِ ۔۔۔ مُهَنَّدٌ مِنْ سُيُوْفِ اللهِ مَسْلُوْلُ

فَكَسَاهُ النَّبِيُّ صلى الله عليه وآله وسلم بُرْدَةً لَهُ فَاشْتَرَاهَا مُعَاوِيَةُ رضي الله عنه مِنْ وَلَدِهِ بِمَالٍ فَهِيَ الَّتِي تَلْبَسُهَا الْخُلَفَاءُ فِي الْأَعْيَادِ.

رَوَاهُ ابْنُ قَانِعٍ وَالْعَسْقَلَانِيُّ وَابْنُ كَثِيْرٍ فِي الْبِدَايَةِ، وَقَالَ: قُلْتُ: وَرَدَ فِي بَعْضِ الرِّوَايَاتِ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ صلى الله عليه وآله وسلم أَعْطَا بُرْدَتَهُ حِيْنَ أَنْشَدَهُ الْقَصِيْدَةَ ...... وَهَكَذَا الْحَافِظُ أَبُوْالْحَسَنِ ابْنُ الْأَثِيْرِ فِي الْغَابَةِ قَالَ هِيَ الْبُرْدَةُ الَّتِي عِنْدَ الْخُلَفَاءِ، قُلْتُ: وَهَذَا مِنَ الْأُمُوْرِ الْمَشْهُوْرَةِ جِدًّا.

''हज़रत मूसा बिन उक़्बा رضي الله عنه बयान करते हैं कि का'ब बिन ज़ुहैर ने अपने मशहूर क़सीदे ''बानत सुआद'' में हुज़ूर नबी–ए–अकरम صلى الله عليه وآله وسلم की मस्जिदे नबवी में मदह की और जब अपने इस क़ौल पर पहुँचेः

''बेशक (यह) रसूले मुकर्रम صلى الله عليه وآله وسلم वो नूर हैं जिससे रोशनी हासिल की जाती है और

आप ﷺ (कुफ्ऱ व ज़ुल्मत के अलम्बरदारों के ख़िलाफ़) अल्लाह तआला की तेज़ धार तलवार में से एक अज़ीम तेग़े आबदार हैं।''

हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने अपने दस्ते अक़दस से लोगों की तरफ़ इशारा किया कि वो उन्हें (यानी का'ब बिन ज़ुहैर) को (ग़ौर से) सुनें।''

और हज़रत सईद बिन मुसय्यब ؓ की रिवायत में है कि यह जब का'ब बिन ज़ुहैर के पास (गुस्ताखे रसूल) इब्ने ख़तल के क़त्ल की ख़बर पहुँची और उसे यह ख़बर भी पहुँच चुकी थी कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने उसे भी वही धमकी दी है जो आप ﷺ ने इब्ने ख़तल को दी थी तो का'ब से कहा गया कि अगर तू भी हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की हिज्व (नज़्म में किसी की बुराई करना) से बाज़ नहीं आएगा तो क़त्ल कर दिया जाएगा तो उसने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के सबसे ज़्यादा नर्म दिल सहाबी के बारे में मालूमात की तो उसे हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ ؓ के बारे में बताया गया तो वो उनके पास गया और उन्हें अपनी सारी बात बता दी फिर हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ ؓ ने अर्ज़ कियाः (या रसूलल्लाह !) यह एक आदमी है जो आप की बैअ़त करना चाहता है फिर हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने अपना दस्ते अक़दस आगे बढ़ाया तो का'ब बिन ज़ुहैर ने अपना हाथ आगे बढ़ा कर आप ﷺ की बैअ़त कर ली फिर अपने चेहरे से नक़ाब हटा लिया और अपना वो क़सीदा पढ़ा जिस में है।''

''मुझे ख़बर दी गई कि रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे धमकी दी है और रसूलुल्लाह ﷺ के यहाँ अफ़वो दरगुज़र की (ज़्यादा) उम्मीद की जाती है।''

और इसी क़सीदे में हैः

''बेशक (यह) रसूले मुकर्रम ﷺ वो नूर हैं जिससे रोशनी हासिल की जाती है और आप ﷺ (कुफ्ऱ व ज़ुल्मत के अलम्बरदारों के ख़िलाफ़) अल्लाह तआला की तेज़ धार तलवार में से एक अज़ीम तेग़े आबदार हैं।''

फिर हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने (ख़ुश हो कर) उसे अपनी चादर पहनाई जिसको मुआविया ؓ ने उसकी औलाद से माल के बदले में ख़रीद लिया और यही वो चादर है जिसे (बाद में) खुलफ़ा ईदों (और अहम त्यौहारों के मौक़े) पर पहना करते थे।

इस हदीस को इमाम इब्ने क़ाने' और इमाम अस्क़लानी ने रिवायत किया है और इमाम इब्ने कसीर ने ''अल्बदाया'' में रिवायत करने के बाद फरमाया है कि मैं कहता हूँ कि कुछ रिवायात में आया है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने अपनी चादर मुबारक उनको उस वक़्त अ़ता फरमाई जब उन्होंने अपने क़सीदे के ज़रीये आप ﷺ की मद्ह फरमाई .... और इसी तरह हाफ़िज़ अबूल हसन इब्न अल असीर ने ''असदुल ग़ाबा'' में बयान किया है कि यह वही चादर है जो खुलफ़ा के पास रही और यह बहुत ही मशहूर वाक़िआ है।''

٥٢٨ / ٦٨۔ عَنْ خُرَيْمِ بْنِ أَوْسِ بْنِ حَارِثَةَ بْنِ لَامٍ ﷺ قَالَ: كُنَّا عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ لَهُ الْعَبَّاسُ بْنُ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ رضي الله عنهما: يَا رَسُوْلَ اللهِ، إِنِّي أُرِيْدُ أَنْ أَمْدَحَکَ؟ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: هَاتِ لَا يَفْضُضِ اللهُ فَاکَ فَأَنْشَأَ الْعَبَّاسُ ﷺ يَقُوْلُ:

وَأَنْتَ لَمَّا وُلِدْتَ أَشْرَقَتِ الْأَرْضُ وَضَائَتْ بِنُوْرِکَ الْأُفُقُ

فَنَحْنُ فِي الضِّيَاءِ وَفِي النُّوْرِ وَسُبُلُ الرَّشَادِ نَخْتَرِقُ

رَوَاهُ الطَّبَرَانِي وَالْحَاكِمُ وَأَبُوْنُعَيْمٍ.

''हज़र ख़ुरैम बिन औस बिन हारिसा बिन लाम ﷺ बयान करते हैं कि हम हुज़ूर

الحديث رقم ٦٨: أخرجه الطبراني في المعجم الكبير، ٤/٢١٣، الرقم: ٤١٦٧، والحاكم في المستدرك، ٣/٣٦٩، الرقم: ٥٤١٧، وأبونعيم في حلية الأولياء، ١/٣٦٤، والهيثمي في مجمع الزوائد، ٨/٢١٧، والذهبي في سير أعلام النبلاء، ٢/١٠٢، وابن الجوزي في صفوة الصفوة، ١/٥٣، وابن عبد البر في الاستيعاب، ٢/٤٤٧، الرقم: ٦٦٤، والعسقلاني في الإصابة، ٢/٢٧٤، الرقم: ٢٢٤٧، والخطابي في إصلاح غلط المحدثين، ١/١٠١، الرقم: ٥٧، وابن قدامة في المغني، ١٠/١٧٦، والسيوطي في الخصائص الكبرى، ١/٦٦، وابن كثير في البداية والنهاية (السيرة)، ٢/٢٥٨، والقرطبي في الجامع لأحكام القرآن، ١٣/١٤٦، والحلبي في السيرة، ١/٩٢۔

नबी–ए–अकरम ﷺ कि ख़िदमते अक़दस में मौजूद थे तो हज़रत अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब ﷺ ने आप ﷺ की बारगाह में अ़र्ज़ किया: या रसूलल्लाह ! मैं आप की मद्ह व ना'त पढ़ना चाहता हूँ तो हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया: लाओ अल्लाह तआ़ला तुम्हारे दाँत सहीह व सलामत रखे (या'नी तुम इसी तरह का उम्दा कलाम पढ़ते रहो) तो हज़रत अ़ब्बास ﷺ ने यह पढ़ना शुरू किया:

''और आप वो ज़ात हैं कि जब आप की विलादते बा सआ़दत हुई तो (आपके नूर से) सारी ज़मीन चमक उठी और आपके नूर से उफ़क़े आ़लम रोशन हो गया फिर हम हैं और हिदायत के रास्ते हैं और हम आप की अ़ता कर्दह रोशनी और आप ही के नूर में इन (हिदायत की राहों) पर गामज़न हैं।''

٥٢٩ / ٦٩۔ عَنِ الْحَسَنِ بْنِ عُبَيْدِ اللهِ قَالَ: حَدَّثَنِي مَنْ سَمِعَ النَّابِغَةَ الْجَعْدِيَّ (وَإِسْمُهُ قَيْسُ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو ﷺ لَهُ صُحْبَةٌ) يَقُوْلُ: أَتَيْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ فَأَنْشَدْتُهُ قَوْلِي...... فَلَمَّا أَنْشَدْتُهُ فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَا يَفْضُضِ اللهُ فَاكَ. قَالَ: وَكَانَ مِنْ أَحْسَنِ النَّاسِ ثَغْرًا. وَكَانَ إِذَا سَقَطَتْ لَهُ سِنٌّ نَبَتَتْ أُخْرَى.

وفي رواية: عَبْدِ اللهِ بْنِ جَرَّادٍ لِهَذَا لُخَبْرِ، قَالَ: فَنَظَرْتُ إِلَيْهِ كَأَنَّ فَاهُ الْبَرْدُ الْمَنْهَلُ يَتَـلَأْلَأُ وَيُبْرِقُ، مَا سَقَطَتْ لَهُ سِنٌّ وَلَا تَفَلَّتَتْ لِقَوْلِ

الحديث رقم ٦٩: أخرجه ابن عبد البر في الاستيعاب، ٤ / ١٥١٤۔١٥١٧، ١٧٤٣، الرقم: ٢٦٤٨، ٣١٥٤، والعسقلاني في الإصابة، ٥ / ٥٨٨، الرقم: ٧٤٠٧، ٦ / ٣٩٤، وقال: أخرجه البزار وأبونعيم في تاريخ أصبهان، والهيثمي في مجمع الزوائد، ٨ / ١٢٦، وقال: رواه البزار، والحارث في المسند (زوائد الهيثمي)، ٢ / ٨٤٤، الرقم: ٨٩٤، وابن حيان في طبقات المحدثين بأصبهان، ١ / ٢٧٤، ٢٧٦، والسيوطي في الخصائص الكبرى، ٢ / ٢٨٢، وابن كثير في البداية والنهاية (السيرة)، ٦ / ١٦٨، وفي ريح النسرين فيمن عاش من الصحابة، ١ / ٧٧، والقنوجي في أبجد العلوم، ١ / ٣٢٩، وقال: أخرجه السيوطي والبيهقي.

رَسُوْلِ اللهِ ﷺ: أَجَدْتَ لَا يَفْضُضِ اللهُ فَاكَ. قَالَ: وَعَاشَ النَّابِغَةُ بِدَعْوَةِ النَّبِيِّ ﷺ حَتَّى أَتَتْ عَلَيْهِ مِائَةٌ وَاثْنَتَا عَشَرَةَ سَنَةً.

رَوَاهُ ابْنُ عَبْدِ الْبَرِّ وَالْعَسْقَلَانِيُّ وَالْهَيْثَمِيُّ وَقَالَ: رَوَاهُ الْبَزَّارُ.

وَقَالَ السُّيُوْطِيُّ فِي الْخَصَائِصِ: أَخْرَجَ الْبَيْهَقِيُّ وَأَبُوْنُعَيْمٍ مِنْ طَرِيْقِ يَعْلَى بْنِ الْأَشْدَقِ قَالَ: سَمِعْتُ النَّابِغَةَ ﷺ نَابِغَةَ بَنِي جَعْدَةَ ﷺ يَقُوْلُ: أَنْشَدْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ هَذَا الشِّعْرَ فَأَعْجَبَهُ، فَقَالَ: أَجَدْتَ لَا يَفْضُضِ اللهُ فَاكَ. فَلَقَدْ رَأَيْتُهُ وَلَقَدْ أَتَى عَلَيْهِ نَيِّفٌ وَمِائَةٌ سَنَةٍ وَمَا ذَهَبَ لَهُ سِنٌّ ثُمَّ أَخْرَجَهُ الْبَيْهَقِيُّ مِنْ وَجْهٍ آخَرَ عَنِ النَّابِغَةِ وَأَخْرَجَهُ ابْنُ أَبِي أُسَامَةَ مِنْ وَجْهٍ آخَرَ عَنْهُ وَفِيْهِ: فَكَانَ مِنْ أَحْسَنِ النَّاسِ ثَغْرًا فَكَانَ إِذَا سَقَطَتْ لَهُ سِنٌّ نَبَتَتْ لَهُ أُخْرَى وَأَخْرَجَهُ ابْنُ السُّكْنِ مِنْ وَجْهٍ آخَرَ عَنْهُ، وَفِيْهِ: فَرَأَيْتُ أَسْنَانَ النَّابِغَةِ أَبْيَضَ مِنَ الْبَرْدِ لِدَعْوَةِ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ.

''हज़रत हुसैन बिन उबैदुल्लाह रिवायत करते हैं कि मुझे उसने बताया जिसने हज़रत नाबिग़ा जा'दी ﷺ (और उनका पूरा नाम क़ैस बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ है और उन्हें सोहबते रसूलुल्लाह ﷺ का शर्फ हासिल है) से सुना वो फरमाते हैं कि मैं हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की ख़िदमते अक़दस में हाज़िर हुआ और आप ﷺ को अपना कलाम सुनाया फिर जब मैंने आप ﷺ की मद्ह की तो हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया कि अल्लाह तआला तुम्हारे दाँत सलामत रखे (और तुम इसी तरह का उम्दा कलाम पढ़ते रहो) और (इस दुआ के नतीजे में) वो तमाम लोगों में बढ़ कर ख़ूबसूरत दाँतों वाले थे और जब उनका कोई दाँत गिरता तो उस जगह दूसरा दाँत निकल आता था।''

और यही हदीस अ़ब्दुल्लाह बिन जर्राद से भी मरवी है इसमें है कि मैंने आप (नाबिग़ा जा'दी ﷺ) की तरफ़ देखा गोया उन का मुँह (पहाड़ों पर) गिरी हुई बर्फ की तरह रोशन और चमकदार था। उनका कोई दाँत गिरा न ख़राब हुआ। हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के इस फरमान

की बदौलत कि ''तुम ने क्या ख़ूब मेरी मद्ह की है अल्लाह तआला तुम्हारे दाँत सलामत रखे।'' आप बयान करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की दुआ की बदौलत हज़रत नाबिग़ा رضي الله عنه ने तवील जिन्दगी पाई यहाँ तक कि आप 112 साल ज़िन्दा रहे।''

इमाम सुयूती ''अल–ख़साइस'' में बयान करते हैं कि इमाम बैहकी और अबू नुऐम ने या'ला बिन अश्दक़ के तरीक़ से यह हदीस रिवायत की है वो बयान करते हैं कि मैंने नाबिग़ा जो कि नाबिग़ा बनी जा'दह हैं को बयान करते हुए सुना वो फरमाते हैं: मैंने इस शे'र के ज़रीये हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की मद्ह सराई की तो आप ﷺ को यह बहुत पसन्द आया तो आप ﷺ ने फरमायाः तूने क्या खूब कहा है! अल्लाह तआला तुम्हारे दाँत सलामत रखे। फिर मैंने उन्हें देखा कि उन की उम्र सौ और कुछ साल ऊपर हो गई थी लेकिन उनका कोई दाँत नहीं गिरा था और इमाम बैहक़ी ने यह हदीस और एक तरीक़ से हज़रत नाबिग़ा से रिवायत की है और इब्ने अबी उसामा ने भी उन ही से एक और तरीक़ से उसकी रिवायत की है और उसमें यह अल्फ़ाज़ ''हज़रत नाबिग़ा رضي الله عنه तमाम लोगों से बढ़ कर खूबसूरत दाँतों वाले थे और उन का कोई दाँत गिरता तो उसकी जगह दूसरा दाँत निकल आता'' और इमाम इब्ने सुकन ने आप ही से एक तरीक़ से इस को रिवायत किया है और इसमें यह अल्फ़ाज़ हैं: मैंने हज़रत नाबिग़ा رضي الله عنه के दंदान सफेद ओलों से बढ़ कर सफेद देखे और यह हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की उन के लिए दुआ का नतीजा था।''

٥٣٠ / ٧٠۔ عَنْ كَعْبِ بْنِ مَالِكٍ رضي الله عنه أَنَّهُ قَالَ لِلنَّبِيِّ ﷺ: إِنَّ اللهَ عزوجل قَدْ أَنْزَلَ فِي الشِّعْرِ مَا أَنْزَلَ فَقَالَ: إِنَّ الْمُؤْمِنَ يُجَاهِدُ بِسَيْفِهِ وَلِسَانِهِ وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ، لَكَأَنَّ مَا تَرْمُوْنَهُمْ بِهِ نَضْحُ النَّبْلِ.

الحديث رقم ٧٠: أخرجه أحمد بن حنبل في المسند، ٦ / ٣٨٧، الرقم: ٢٧٢١٨، ٣ / ٤٥٦، وابن حبان في الصحيح، ١٣ / ١٠٢، الرقم: ٥٧٨٦، ١١ / ٥، الرقم: ٤٧٠٧، والبخاري في التاريخ الكبير، ٥ / ٣٠٤، والطبراني في المعجم الكبير، ١٩ / ٧٥، الرقم: ١٥١۔١٥٣، والبيهقي في السنن الكبرى، ١٠ / ٢٣٩، والبغوي في شرح السنة، ١٢ / ٣٧٨، الرقم: ٣٤٠٩، وابن عبد البر في الاستيعاب، ٣ / ١٣٢٥، والمزي في تهذيب الكمال، ٢٤ / ١٩٥، والحسيني في البيان والتعريف، ١ / ٢١٦، الرقم: ٥٦٦۔

رَوَاهُ أَحْمَدُ وَابْنُ حِبَّانَ وَالْبُخَارِيُّ فِي الْكَبِيْرِ وَالْبَغوِيُّ.

''हज़रत का'ब बिन मालिक ﷺ से मरवी है कि उन्होंने हुज़ूर नबी-ए-अकरम ﷺ से अ़र्ज़ कियाः बेशक अल्लाह तबारक व तआ़ला ने शे'र के बारे में नाज़िल किया जो नाज़िल किया तो आप ﷺ ने फरमायाः बेशक मोमिन अपनी तलवार और ज़बान दोनों के साथ जिहाद करता है और उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़ए कुदरत में मेरी जान है ! गोया जो अल्फ़ाज़ तुम इन (कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन) की मज़म्मत में कहते हो वो (उनके लिये) तीर बरसाने जैसा है ।''

فَصْلٌ فِي فَضْلِ زِيَارَةِ الْقُبُوْرِ

ज़ियारते क़ुबूर की फ़ज़ीलत का बयान

٥٣١ / ٧١۔ رَوَى أَبُوْحَنِيْفَةَ عَنْ عَلْقَمَةَ بْنِ مَرْثَدٍ عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ بُرَيْدَةَ عَنْ أَبِيْهِ ﷺ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ قَالَ: نَهَيْنَاكُمْ عَنْ زِيَارَةِ الْقُبُوْرِ وَقَدْ أُذِنَ لِمُحَمَّدٍ فِي زِيَارَةِ قَبْرِ أُمِّهِ فَزُوْرُوْهَا وَلَا تَقُوْلُوْا هِجْرًا.

رَوَاهُ أَبُوْحَنِيْفَةَ.

''इमामे आज़म अबू हनीफ़ा अलक़मा बिन मरसद से वो सुलैमान बिन बुरैदो से और वो अपने वालिद हज़रत बुरैदा ﷺ से और वो हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ से रिवायत करते हैं कि आप ﷺ ने फरमायाः हम ने तुम्हें क़ब्रों की ज़ियारत करने से मना किया था, मुहम्मद मुस्तफ़ा (ﷺ) को अपनी वालिदा की क़ब्र की ज़ियारत करने का इज़्न(हुक्म) दे दिया गया है, तो (अब) तुम भी क़ब्रों की ज़ियारत किया करो और बेहूदा बातें मत किया करो।''

٥٣٢ / ٧٢۔ عَنْ بُرَيْدَةَ ﷺ، قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: كُنْتُ نَهَيْتُكُمْ عَنْ زِيَارَةِ الْقُبُوْرِ فَزُوْرُوْهَا. رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَالتِّرْمِذِيُّ وَزَادَ: فَأِنَّهَا تُذَكِّرُكُمُ

الحديث رقم٧١: أخرجه الخوارزمى فى جامع المسانيد للإمام أبى حنيفة، ٢/١٩٩، وأبو يوسف فى كتاب الآثار، ١/٢٢٥، الرقم: ٩٩٦، والنسائى فى السنن، كتاب: الجنائز، باب: زيارة القبور، ٤/٨٩، الرقم: ٢٠٣٣، ومالك فى الموطأ، ٢/٤٨٥، الرقم: ١٠٣١، والشافعى فى المسند، ١/٣٦١، والحاكم فى المستدرك، ١/٥٣٢، الرقم: ١٣٩٣۔

الحديث رقم ٧٢: أخرجه مسلم فى الصحيح، كتاب: الجنائز، باب: استئذان النبى ﷺ ربه عزوجل فى زيارة قبر أمه، ٢/٦٧٢، الرقم: ٩٧٧، وفى كتاب: الأضاحى، باب: بيان ماكان من النهى عن أكل لحوم الأضاحى بعد ثلاث فى أول الإسلام وبيان نسخه وإباحة إلى متى شاء، ٣/١٥٦٣، الرقم: ١٩٧٧، والترمذى فى السنن، كتاب: الجنائزعن رسول الله، باب: ماجاء فى الرخصة فى زيارة القبور،٤، ٣/٣٧٠، الرقم: ١٠٥٤ وزاد: (فَإِنَّهَا تُذَكِّرُكُمُ الْآخِرَةَ)۔ وأبو داود فى السنن،كتاب: الجنائز، باب: فى زيارة القبور، ٣/٢١٨، الرقم: ٣٢٣٥، والنسائى فى السنن، كتاب: الجنائز، باب: زيارة القبور، ٤/٨٩، الرقم: ٢٠٣٢۔

الْآخِرَةَ.

''हज़रत बुरैदा ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः मैं तुम्हें ज़ियारते क़ुबूर से मना' किया करता था, फिर अब तुम जियारते क़ुबूर किया करो।''

इसे इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया और इमाम तिर्मिज़ी ने इन अल्फ़ाज़ का इज़ाफ़ा किया कि ''यह तुम्हें आख़िरत की याद दिलाती हैं।''

٥٣٣ / ٧٣ـ عَنْ عَائِشَةَ رضي الله عنها أَنَّهَا قَالَتْ: كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ (كُلَّمَا كَانَ لَيْلَتُهَا مِنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ) يَخْرُجُ مِنْ آخِرِ اللَّيْلِ إِلَى الْبَقِيْعِ، فَيَقُوْلُ: السَّلَامُ عَلَيْكُمْ دَارَ قَوْمٍ مُؤْمِنِيْنَ، وَأَتَاكُمْ مَا تُوْعَدُوْنَ، غَدًا مُؤَجَّلُوْنَ، وَإِنَّا، إِنْ شَاءَ اللهُ بِكُمْ لَاحِقُوْنَ. اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِأَهْلِ بَقِيْعِ الْغَرْقَدِ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَالنَّسَائِيُّ.

''हज़रत आइशा सिद्दीक़ा رضي الله عنها रिवायत करती हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ (की जब मेरे यहाँ बारी होती तो आप ﷺ) रात के आख़िरी पहर बक़ी के क़ब्रिस्तान में तशरीफ़ ले जाते और (अहलेक़ब्रिस्तान से) फरमातेः तुम पर सलामती हो, ऐ मोमिनों के घर वालों! जिस चीज़ का तुमसे वादा किया गया है वो तुम्हारे पास आ गई कि जिसे कल एक मुद्दत बाद पाओगे और अगर अल्लाह तआला ने चाहा तो हम भी तुमसे मिलने वाले हैं। ऐ अल्लाह ! बक़ीए ग़रक़द (अहले मदीना केक़ब्रिस्तान) वालों की मग़्फ़िरत फरमा।''

٥٣٤ / ٧٤ـ عَنْ بُرَيْدَةَ ﷺ قَالَ: كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يُعَلِّمُهُمْ إِذَا خَرَجُوْا إِلَى الْمَقَابِرِ فَكَانَ قَائِلُهُمْ يَقُوْلُ ...... وفي رواية زُهَيْرٍ: السَّلَامُ

الحديث رقم ٧٣: أخرجه مسلم فى الصحيح، كتاب: الجنائز، باب: ما يقال عند دخول القبور والدعاء لأهلها، ٢ / ٦٦٩، الرقم: ٩٧٤، والنسائى فى السنن، كتاب: الجنائز، باب: الأمر بالاستغفار للمؤمنين، ٤ / ٩٣، الرقم: ٢٠٣٩، وأبويعلى فى المسند، ٨ / ١٩٩، الرقم: ٤٧٥٨، وابن حبان فى الصحيح، ٧ / ٤٤٤، الرقم: ٣١٧٢.

الحديث رقم ٧٤: أخرجه مسلم فى الصحيح، كتاب: الجنائز، باب: ما يقال عند دخول القبور والدعاء لأهلها، ٢ / ٦٧١، الرقم: ٩٧٥، وأحمد بن حنبل فى المسند ←

عَلَيْكُمْ أَهْلَ الدِّيَارِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُسْلِمِيْنَ. وَإِنَّا إِنْ شَاءَ اللهُ، لَلاَحِقُوْنَ. أَسْأَلُ اللهَ لَنَا وَلَكُمُ الْعَافِيَةَ. رواهُ مُسْلِمٌ وَأَحْمَدُ.

''हज़रत बुरैदा رضي الله عنه से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ उन्हें सिखाया करते थे कि जब वो क़ब्रों की ज़ियारत के लिए जाएं तो उनसे कहने वाला कहेः .... और हज़रत ज़ुहैर की रिवायत में है ऐ मोमिनों और मुसलमानों के घर वालों ! तुम पर सलामती हो और अगर अल्लाह तआला ने चाहा तो हम भी ज़रूर ज़रूर तुम से मिलने वाले हैं, हम अल्लाह तआला से अपने लिए और तुम्हारे लिए आफ़ियत के तलबगार हैं।''

٥٣٥ / ٧٥. عَنْ عَائِشَةَ رضي الله عنها، في رواية طويلة قَالَتْ: قُلْتُ: كَيْفَ أَقُوْلُ لَهُمْ يَا رَسُوْلَ اللهِ؟ (تَعْنِي فِي زِيَارَةِ الْقُبُوْرِ) قَالَ: قُوْلِي: السَّلَامُ عَلَى أَهْلِ الدِّيَارِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُسْلِمِيْنَ، وَيَرْحَمُ اللهُ الْمُسْتَقْدِمِيْنَ مِنَّا وَالْمُسْتَأْخِرِيْنَ، وَإِنَّا إِنْ شَاءَ اللهُ بِكُمْ لَلَاحِقُوْنَ.

رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَالنَّسَائِيُّ.

''हज़रत आइशा सिद्दीक़ा رضي الله عنها एक तवील रिवायत में बयान करती हैं कि मैंने हुज़ूर नबीए अकरम ﷺ से अर्ज़ कियाः या रसूलल्लाह! मैं ज़ियारते कुबूर के वक़्त अहले कुबूर से किस तरह मुख़ातिब हुआ करूँ? आप ﷺ ने फरमायाः यूँ कहा करोः ऐ मोमिनों और मुसलमानों के घर वालों ! तुम पर सलामती हो, अल्लाह तआला हमारे अगले और पिछले लोगों

.... المسند، ٥/ ٣٥٣، الرقم: ٢٣٠٣٥، والروياني في المسند، ١/ ٦٧، الرقم: ١٥، وابن حبان في الصحيح، ٧/ ٤٤٥، الرقم: ٣١٧٣، والبيهقي في السنن الكبرى، ٤/ ٧٩، الرقم: ٧٠٠٥.

الحديث رقم ٧٥: أخرجه مسلم في الصحيح، كتاب: الجنائز، باب: ما يقال عند دخول القبر والدعاء لأهلها، ٢/ ٦٦٩، الرقم: ٩٧٤، والنسائي في السنن، كتاب: الجنائز، باب: الأمر بالاستغفار للمؤمنين، ٤/ ٩١، الرقم: ٢٠٣٧، وأحمد بن حنبل في المسند، ٦/ ٢٢١، الرقم: ٢٥٨٩٧، وعبد الرزاق في المصنف، ٣/ ٥٧٦، الرقم: ٦٧٢٢.

पर रहम फरमाए और अगर अल्लाह तआला ने चाहा तो हम भी तुम्हें मिलने वाले हैं।''

٥٣٦ / ٧٦۔ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رضي الله عنهما قَالَ: مَرَّ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ بِقُبُوْرِ الْمَدِيْنَةِ، فَأَقْبَلَ عَلَيْهِمْ بِوَجْهِهِ، فَقَالَ: السَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا أَهْلَ الْقُبُوْرِ يَغْفِرُ اللهُ لَنَا وَلَكُمْ، أَنْتُمْ سَلَفُنَا وَنَحْنُ بِالْأَثَرِ.

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَفِي الْبَابِ: عَنْ بُرَيْدَةَ، وَعَائِشَةَ.

وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: هٰذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ.

''हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास رضي الله عنهما से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ मदीना मुनव्वरा के क़ब्रिस्तान से गुज़रे तो अहले क़ुबूर की तरफ़ मुतवज्जह हो कर फरमायाः ऐ अहले क़ुबूर! तुम पर सलामती हो अल्लाह तआला हमारी और तुम्हारी मग़फ़िरत फरमाए तुम हम से पहले पहुँचे हो और हम भी तुम्हारे पीछे आने वाले हैं।''

٥٣٧ / ٧٧۔ عَنِ ابْنِ مَسْعُوْدٍ رضي الله عنه أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: كُنْتُ نَهَيْتُكُمْ عَنْ زِيَارَةِ الْقُبُوْرِ، فَزُوْرُوْهَا، فَإِنَّهَا تُزَهِّدُ فِي الدُّنْيَا، وَتُذَكِّرُ الْآخِرَةَ. رَوَاهُ ابْنُ مَاجَه.

''हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद رضي الله عنه से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः मैं तुम्हें ज़ियारते क़ुबूर से मना' किया करता था अब ज़ियारते क़ुबूर किया करो क्योंकि यह दुनिया में ज़ाहिद बनाती है (या'नी दुन्यावी लज़्ज़तों से बेरग़बती पैदा करती है) और आख़िरत की याद दिलाती है।''

الحديث رقم ٧٦: أخرجه الترمذى فى السنن، كتاب: الجنائز عن رسول الله ﷺ، باب: ما يقول الرجل إذا دخل المقابر، ٢ / ٣٥٧، الرقم: ١٠٥٣۔

الحديث رقم ٧٧: أخرجه ابن ماجه فى السنن، كتاب: الجنائز، باب: ماجاء فى زيارة القبور، ١ / ٥٠١، الرقم: ١٥٧١۔

فَصْلٌ فِي فَضْلِ إِيْصَالِ الثَّوَابِ إِلَى الْأَمْوَاتِ

﴾फ़ौत शुदगान को सवाब पहुँचाने की फ़ज़ीलत का बयान﴿

٥٣٨ / ٧٨۔ عَنْ عَائِشَةَ رضي الله عنها أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ مَاتَ وَعَلَيْهِ صِيَامٌ صَامَ عَنْهُ وَلِيُّهُ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

وفي رواية: عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رضي الله عنهما وَإِنْ كَانَ عَلَيْهِ نَذْرٌ قَضَى عَنْهُ وَلِيُّهُ. رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ.

''हज़रत आइशा सिद्दीक़ा رضي الله عنها से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जो कोई फ़ौत हो जाए और उसके ज़िम्मे रोज़े (बाक़ी) हों तो उसका वली उसकी तरफ़ से वो रोज़े रखे।''

''हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास رضي الله عنهما से मरवी रिवायत में है कि फरमायाः अगर उस (फ़ौत होने वाले) पर किसी नज़्र का पूरा करना बाक़ी हो (जो उसने मानी थी) तो वो उसकी तरफ़ से उसका वली पूरी करे।''

الحديث رقم ٧٨: أخرجه البخاری فی الصحیح، کتاب: الصوم، باب: من مات وعليه صوم، ٢ / ٦٩٠، الرقم: ١٨٥١، ومسلم فی الصحیح، کتاب: الصيام، باب: قضاء الصيام عن الميت، ٢ / ٨٠٣، الرقم: ١١٤٧، وأبو داود فی السنن، کتاب: الصيام، باب: فيمن مات وعليه صيام، ٢ / ٣١٥، الرقم: ٢٤٠٠، ٢٤٠١، وفی کتاب: الأيمان والنذور، باب: ما جاء فيمن مات وعليه صيام صام عنه وليه، ٣ / ٢٣٧، الرقم: ٣٣١١، والنسائی فی السنن الکبری، ٢ / ١٧٥، الرقم: ٢٩١٩، وابن حبان فی الصحیح، ٨ / ٣٣٤، الرقم: ٣٥٦٩، وأبو يعلی فی المسند، ٧ / ٣٩٠، الرقم:٤٤١٧: ٨ / ٢٠٠، الرقم: ٤٧٦١، والطبرانی فی المعجم الأوسط، ٤ / ٢٥٣، الرقم: ٤١٢١، والبيهقی فی السنن الکبری، ٤ / ٢٥٥، ٢٥٦، الرقم: ٨٠١٠: ٦ / ٢٧٩، الرقم: ١٢٤٢٤، والدار قطنی فی السنن، ٢ / ١٩٤، الرقم: ٧٩۔ ٨٠، وقال الدار قطني:إِسْنَادُهُ صَحِيْحٌ، وابن الجارود فی المنتقی، ١ / ٢٣٧، الرقم: ٩٤٣، وابن أبي شيبة فی المصنف، ٣ / ١١٣، الرقم: ١٢٥٩٨۔

٥٣٩ / ٧٩۔ عَنْ عَائِشَةَ رضي الله عنها أَنَّ رَجُـلًا قَالَ لِلنَّبِيِّ ﷺ: إِنَّ أُمِّي افْتُلِتَتْ نَفْسُهَا، وَأَظُنُّهَا لَوْ تَكَلَّمَتْ تَصَدَّقَتْ، فَهَلْ لَهَا أَجْرٌ إِنْ تَصَدَّقْتُ عَنْهَا؟ قَالَ: نَعَمْ.

رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ وَمُسْلِمٌ فِي بَابِ: وُصُوْلِ ثَوَابِ الصَّدَقَاتِ إِلَى الْمَيِّتِ.

''हज़रत आइशा सिद्दीक़ा رضي الله عنها से रिवायत है कि एक आदमी हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की बारगाह में हाज़िर हुआ और अ़र्ज़ किया : मेरी वालिदा अचानक फ़ौत हो गई है और मेरा ख़याल है कि अगर वो (बवक़्ते नज़अ) गुफ्तगू कर सकती तो सदक़े (की अदायगी का हुक्म) करती। अगर मैं उस की तरफ़ से ख़ैरात करूँ तो क्या उसे सवाब पहुँचेगा आप ﷺ ने फरमायाः हाँ।''

इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है और इमाम मुस्लिम ने ''सदक़ात के सवाब का शुदगान तक पहुँचने'' के उन्वान से बाक़ायदा बाब क़ायम किया है।''

الحديث رقم ٧٩: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: الجنائز، باب: موتِ الفَجْأَةِ البَغْتَةِ، ١/ ٤٦٧، الرقم: ١٣٢٢، وفي كتاب: الوصايا، باب: ما يستحب لمن يتوفى فجأة أن يتصدقوا عنه وقضاء النذور عن الميت، ٣/ ١٠١٥، الرقم: ٢٦٠٩، ومسلم في الصحيح، كتاب: الزكاة، باب: وصول ثواب الصدقة عن الميت إليه، ٢/ ٦٩٦، الرقم: ١٠٠٤، وفي كتاب: الوصية، باب: وصول ثواب الصدقات إلى الميت، ٣/ ١٢٥٤، الرقم: ١٠٠٤، وأبوداود في السنن، كتاب: الوصايا، باب: ما جاء فيمن مات وصية يتصدق عنه، ٣/ ١١٨، الرقم: ٢٨٨١، والنسائي في السنن، كتاب: الوصايا، باب: إذا مات الفجأة هل يستحب لأهله أن يتصدقوا عنه، ٦/ ٢٥٠، الرقم: ٣٦٤٩، وفي السنن الكبرى، ٤/ ١٠٩، الرقم: ٦٤٧٦، وابن ماجه في السنن، كتاب، الوصايا، باب: من مات ولم يوصى هل يتصدق عنه، ٢/ ٩٠٦، الرقم: ٢٧١٧، ومالك في الموطأ، كتاب: الأقضية باب: صدقة الحي عن الميت، ٢/ ٧٦٠، الرقم:١٤٥١، وابن خزيمة في الصحيح، ٤/ ١٢٤، الرقم: ٢٤٩٩، وابن حبان في الصحيح، ٨/ ١٤٠، الرقم: ٣٣٥٣، وأحمد بن حنبل في المسند، ٦/ ٥١، الرقم:٢٤٢٩٦، وأبو يعلى في المسند، ٧/ ٤١٠، الرقم: ٤٤٣٤، والبيهقي في السنن الكبرى، ٤/ ٦٢، الرقم: ٦٨٩٥، ١٢٤٠٩، والطبراني في المعجم الأوسط، ١/ ٢١٨، الرقم: ٧٠٣.

٥٤٠ / ٨٠۔ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رضي الله عنهما أَنَّ امْرَأَةً مِنْ جُهَيْنَةَ، جَاءَتْ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَتْ: إِنَّ أُمِّي نَذَرَتْ أَنْ تَحُجَّ، فَلَمْ تَحُجَّ حَتَّى مَاتَتْ، أَفَأَحُجُّ عَنْهَا؟ قَالَ: نَعَمْ حُجِّي عَنْهَا، أَرَأَيْتِ لَوْ كَانَ عَلَى أُمِّكِ دَيْنٌ أَكُنْتِ قَاضِيَةً؟ اقْضُو اللهَ، فَاللهُ أَحَقُّ بِالْوَفَاءِ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ وَالنَّسَائِيُّ.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رضي الله عنهما से रिवायत है कि (क़बीला) जुहैना की एक औ़रत ने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की बारगाह में हाज़िर हो कर अ़र्ज़ कियाः मेरी वालिदा ने हज की मन्नत मानी थी लेकिन वो हज न कर सकी यहाँ तक कि फ़ौत हो गई। क्या मैं उसकी तरफ़ से हज करूँ ? आप ﷺ ने फरमायाः हाँ तुम उसकी तरफ़ से हज करो। भला बताओ तो अगर तुम्हारी वालिदा पर क़र्ज़ होता तो क्या तुम उसे अदा न करतीं ? फिर अल्लाह तआ़ला का हक़ अदा करो क्योंकि वो ज़्यादा हक़दार है कि उसका क़र्ज़ अदा किया जाए।''

٥٤١ / ٨١۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضي الله عنه أَنَّ رَجُلًا قَالَ لِلنَّبِيِّ ﷺ: إِنَّ أَبِي

الحديث رقم ٨٠: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: الإحصار وجزاء الصيد، باب: الحج والنذور عن الميت، وَ الرَّجُلُ يَحُجُّ عَنِ الْمَرْأَةِ، ٢/ ٦٥٦، الرقم: ١٧٥٤، وفى كتاب: الأيمان والنذور، باب: من مات وعليه نَذْرٌ، ٦/ ٢٤٦٤، الرقم: ٦٣٢١، وفى كتاب: الاعتصام بالكتاب والسنة، باب: مَن شَبَّهَ أَصْلًا مَعْلُومًا بِأَصْلٍ مُبَيَّنٍ وَقد بَيَّنَ النَّبِيُّ ﷺ حُكْمَهُمَا لِيُفْهِمَ السَّائِلَ، ٦/ ٢٦٦٨، الرقم: ٦٨٨٥، والنسائى فى السنن، كتاب: مناسك الحج، باب: الحج عن الميت الذي نذر أن يحج، ٥/ ١١٦، الرقم: ٢٦٣٢، وفى السنن الكبرى، ٢/ ٣٢٢، الرقم: ٣٦١٢، وابن خزيمة فى الصحيح، ٤/ ٣٤٦، الرقم: ٣٠٤١، والطبرانى فى المعجم الكبير، ١٢/ ٥٠، الرقم: ١٢٤٤٣-١٢٤٤٤، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٤/ ٣٣٥، الرقم: ٨٤٥٥: ٥/ ١٧٩، الرقم: ٩٦٣٤، ١٢٣٨٢، ١٢٤٠٧، وابن الجارود فى المنتقى، ١/ ١٣٣، الرقم: ٥٠١، ٩٤٤، وابن جعد فى المسند، ١/ ٢٥٨، الرقم: ١٧١٠.

الحديث رقم ٨١: أخرجه مسلم فى الصحيح، كتاب: الوصية، باب: وصول ثواب الصدقات إلى الميت، ٣/ ١٢٥٤، الرقم: ١٦٣٠، والنسائى فى السنن، كتاب: الوصايا، باب: فضل الصدقة عن الميت، ٦/ ٢٥١، الرقم: ٣٦٥٢، وابن ماجه فى ←

مَاتَ وَتَرَکَ مَالًا وَلَمْ يُوْصِ. فَهَلْ يُكَفِّرُ عَنْهُ أَنْ أَتَصَدَّقَ عَنْهُ؟ قَالَ: نَعَمْ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَه.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की ख़िदमत में एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया: या रसूलल्लाह! मेरा बाप फ़ौत हो गया है और उसने माल छोड़ा है और वसीयत भी नहीं की अगर मैं उसकी तरफ़ से सदक़ा करूँ तो क्या यह (सदक़ा) उसके गुनाहों का क़फ्फ़ारा हो जाएगा ?आप ﷺ ने फरमाया: हाँ।''

٥٤٢ / ٨٢. عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رضي الله عنهما أَنَّ امْرَأَةً أَتَتْ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ فَقَالَتْ: إِنَّ أُمِّي مَاتَتْ وَعَلَيْهَا صَوْمُ شَهْرٍ فَقَالَ: أَرَأَيْتِ لَوْ كَانَ عَلَيْهَا دَيْنٌ، أَكُنْتِ تَقْضِيْنَهُ؟ قَالَتْ: نَعَمْ. قَالَ: فَدَيْنُ اللهِ أَحَقُّ بِالْقَضَاءِ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ.

وفي رواية: فَقَالَتْ: إِنَّ أُخْتِي مَاتَتْ وَعَلَيْهَا صِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ. رَوَاهُ النَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَه.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رضي الله عنهما रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की ख़िदमत में एक औ़रत हाज़िर हुई और अ़र्ज़ किया: मेरी माँ फ़ौत हो गई है और

.... السنن، كتاب: الوصايا، باب: من مات ولم يوصى هل يتصدق عنه، ٢/ ٢٠٦، الرقم: ٢٧١٦، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٢/ ٣٧١، الرقم: ٨٨٢٨، وابن خزيمة فى الصحيح، ٤/ ١٢٣، الرقم: ٢٤٩٨، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٦/ ٢٧٨، الرقم: ١٢٤١٤، وأبو يعلى فى المسند، ١١/ ٣٧٩، الرقم: ٦٤٩٤، وأبو عوانة فى المسند، ٣/ ٤٩٣، الرقم: ٥٨١٦.

الحديث رقم ٨٢: أخرجه مسلم فى الصحيح، كتاب: الصيام، باب: قضاء الصيام عن الميت، ٢/ ٨٠٤، الرقم: ١١٤٨، والنسائى فى السنن الكبرى، ٢/ ١٧٣-١٧٤، الرقم: ٢٩١٢-٢٩١٥، وابن ماجه فى السنن، كتاب: الصيام، باب: من مات وعليه صيام من نذر، ١/ ٥٥٩، الرقم: ١٧٥٨، وابن حبان فى الصحيح، ٨/ ٢٩٩، ٣٣٥، الرقم: ٣٥٣٠، ٣٥٧٠، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٤/ ٢٥٥، الرقم: ٨٠١٢، وابن الجارود فى المنتقى، ١/ ٢٣٧، الرقم: ٩٤٢.

उस पर एक माह के रोज़े वाजिब हैं आप ﷺ ने फरमायाः यह बताओ उस पर कुछ क़र्ज़ होता तो क्या तुम उसकी तरफ़ से वो क़र्ज़ अदा करतीं? उस औ़रत ने अ़र्ज़ कियाः हाँ। आप ﷺ ने फरमायाः फिर अल्लाह तआ़ला ज़्यादा हक़दार है कि उसका क़र्ज़ (पहले) अदा किया जाए।''

''और एक रिवायत में है यह अल्फ़ाज़ मरवी हैं कि उसने अ़र्ज़ कियाः मेरी बहन फ़ौत हो गई है और उस पर दो माह के मुसल्सल रोज़े वाजिब हैं। (तो आप ﷺ ने उसे इसी तरह से अदायगी का हुक्म दिया)।''

٥٤٣ / ٨٣۔ عَنْ بُرَيْدَةَ ﷺ قَالَ: بَيْنَا أَنَا جَالِسٌ عِنْدَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ، إِذَا أَتَتْهُ امْرَأَةٌ. فَقَالَتْ: إِنِّي تَصَدَّقْتُ عَلَى أُمِّي بِجَارِيَةٍ وَإِنَّهَا مَاتَتْ. قَالَ: فَقَالَ: وَجَبَ أَجْرُكِ. وَرَدَّهَا عَلَيْكِ الْمِيْرَاثُ. قَالَتْ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! إِنَّهُ كَانَ عَلَيْهَا صَوْمُ شَهْرٍ. أَفَأَصُوْمُ عَنْهَا؟ قَالَ: صُوْمِي عَنْهَا. قَالَتْ: إِنَّهَا لَمْ تَحُجَّ قَطُّ. أَفَأَحُجُّ عَنْهَا؟ قَالَ: حُجِّي عَنْهَا. رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَالتِّرْمِذِيُّ.
وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से मरवी है कि मैं हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की बारगाहे अक़दस में बैठा हुआ था कि एक औ़रत आई और अ़र्ज़ कियाः मैंने अपनी माँ को एक बान्दी सदक़े में दी थी और अब मेरी माँ फ़ौत हो गई है। आप ﷺ ने फरमायाः तुम्हें सवाब मिल गया और विरासत ने तुम्हें वो बान्दी लौटा दी। उस औ़रत ने अ़र्ज़ कियाः या रसूलल्लाह! मेरी माँ पर एक माह के रोज़े (भी बाक़ी) थे क्या मैं उसकी तरफ़ से रोज़े रखूँ ? आप ﷺ ने फरमाया : हाँ उसकी तरफ़ से रोज़े रखो। उसने अ़र्ज़ कियाः मेरी माँ ने हज भी नहीं किया था क्या मैं उसकी तरफ़

الحديث رقم ٨٣: أخرجه مسلم فى الصحيح، كتاب: الصيام، باب: قضاء الصيام عن الميت، ٢ / ٨٠٥، الرقم: ١١٤٩، والترمذى فى السنن، كتاب: الزكاة عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء في الْمُتَصَدِّقِ يَرِثُ صَدَقَتَهُ، ٣ / ٥٤، الرقم: ٦٦٧، والنسائى فى السنن الكبرى، ٤ / ٦٦-٦٧، الرقم: ٦٣١٤-٦٣١٦، وابن ماجه فى السنن، كتاب: الصدقات، باب: من تصدق بصدقه ثم ورثها، ٢ / ٨٠٠، الرقم: ٢٣٩٤، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٤ / ٢٥٦، الرقم: ٨٠١٩، وابن أبي شيبة فى المصنف، ٤ / ٣٥٦، الرقم: ١٢١، وعبد الرزاق فى المصنف، ٩ / ١٢٠، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٥ / ٣٤٩، ٣٥١، ٣٥٩، ٣٦١، الرقم: ٢٣٠٠٦، ٢٣٠٢١-٢٣٠٨٢، ٢٣١٠٤۔

से हज अदा करूँ ? आप ﷺ ने फरमायाः हाँ, उसकी तरफ़ से हज भी अदा करो (उसे इन सब आमाल का सवाब पहुँचेगा)।''

٥٤٤ / ٨٤۔ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رضي الله عنهما أَنَّ رَجُلًا قَالَ: يَا رَسُوْلَ اللهِ، إِنَّ أُمِّي تُوُفِّيَتْ أَفَيَنْفَعُهَا إِنْ تَصَدَّقْتُ عَنْهَا؟ قَالَ: نَعَمْ، قَالَ: فَإِنَّ لِي مَخْرَفًا فَأُشْهِدُكَ أَنِّي قَدْ تَصَدَّقْتُ بِهِ عَنْهَا. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُوْدَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ.

وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ، وَبِهِ: يَقُوْلُ أَهْلُ الْعِلْمِ يَقُوْلُوْنَ: لَيْسَ شَيءٌ يَصِلُ إِلَى الْمَيِّتِ إِلَّا الصَّدَقَةُ وَ الدُّعَاءُ.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رضي الله عنهما से रिवायत है कि एक शख़्स ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ कियाः या रसूलल्लाह! मेरी वालिदा फ़ौत हो चुकी है अगर में उसकी तरफ़ से सदक़ा दूँ तो क्या वो उसे कोई नफ़ा देगा ? आप ﷺ ने फरमायाः हाँ ! उसने अ़र्ज़ कियाः मेरे पास एक बाग़ है आप गवाह रहें मैंने यह बाग उसकी तरफ़ से सदक़ा कर दिया।''

''इमाम तिर्मिज़ी फरमाते हैं : यह हदीस हसन है और उलमा का यही क़ौल है वो फरमाते हैं : मय्यत को सिर्फ सदक़ा और दुआ पहुँचती है।''

٥٤٥ / ٨٥۔ عَنْ سَعْدِ بْنِ عُبَادَةَ رضي الله عنه أَنَّ أُمَّهُ مَاتَتْ، فَقَالَ: يَا رَسُوْلَ اللهِ إِنَّ أُمِّي مَاتَتْ، أَفَأَتَصَدَّقُ عَنْهَا؟ قَالَ: نَعَمْ، قَالَ: فَأَيُّ الصَّدَقَةِ أَفْضَلُ؟

الحديث رقم ٨٤: أخرجه الترمذي فى السنن، كتاب: الزكاة عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء فى الصدقة عن الميت، ٣/٥٦، الرقم: ٦٦٩، وأبو داود فى السنن، كتاب: الوصايا، باب: ما جاء فيمن مات وصية يتصدق عنه، ٣/١١٨، الرقم: ٢٨٨٢، والنسائى فى السنن، كتاب: الوصايا، باب: فضل الصدقة عن الميت، ٦/٢٥٢، الرقم: ٣٦٥٥، وفى السنن الكبرى، ٤/١١٠، الرقم: ٦٤٨٢، والحاكم فى المستدرك، ١/٥٨١، الرقم: ١٥٣١، وابن خزيمة فى الصحيح، ٤/١٢٥، الرقم: ٢٥٠٢، وأحمد بن حنبل فى المسند، ١/٣٧٠، الرقم: ٣٥٠٤۔

الحديث رقم ٨٥: أخرجه النسائى فى السنن، كتاب: الوصايا، باب: ذكر اختلاف على سفيان، ٦/٢٥٤۔ ٢٥٥، الرقم: ٣٦٦٢۔ ٣٦٦٦، وفى السنن الكبرى، ٤/١١٢، الرقم: ٦٤٩١، وابن ماجه فى السنن، كتاب: الأدب، باب:فضل صدقة ←

قَالَ: سَقْيُ الْمَاءِ. فَتِلْکَ سِقَايَةُ سَعْدٍ أَوْ آلِ سَعْدٍ بِالْمَدِيْنَةِ.

رَوَاهُ النَّسَائِيُّ وَأَحْمَدُ.

''हज़रत सा'द बिन उबादा ﷺ रिवायत करते हैं कि उनकी वालिदा फ़ौत हो गईं। उन्होंने अ़र्ज़ कियाः या रसूलल्लाह! मेरी वालिदा फ़ौत हो गई हैं, क्या मैं उसकी तरफ़ से सदक़ा कर सकता हूँ ? आप ﷺ ने फरमाया : हाँ उन्होंने अ़र्ज़ कियाः तो कौनसा सदक़ा बेहतर रहेगा ? आप ﷺ ने फरमाया : पानी पिलाना। (तो उन्होंने एक कुंआँ ख़रीद कर मुसलमानों के लिए वक़्फ़ कर दिया) फिर यह कुंआँ मदीना मुनव्वरा में सा'द या आले सा'द के पानी की सबील (के नाम से मशहूर था)।''

٥٤٦ / ٨٦. عَنْ سَعْدِ بْنِ عُبَادَةَ ﷺ أَنَّهُ قَالَ: يَا رَسُوْلَ اللهِ، إِنَّ أُمَّ سَعْدٍ مَاتَتْ فَأَيُّ الصَّدَقَةِ أَفْضَلُ؟ قَالَ: الْمَاءُ، قَالَ: فَحَفَرَ بِئْرًا وَقَالَ: هَذِهِ لِأُمِّ سَعْدٍ. رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ.

''हज़रत सा'द ﷺ से मरवी है कि उन्होंने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की ख़िदमत में अ़र्ज़ कियाः या रसूलल्लाह! उम्मे सा'द (यानी उनकी वालिदा माजेदा) का इन्तिक़ाल हो गया है। तो (उनकी तरफ़ से) कौनसा सदक़ा अफ़ज़ल है ? आप ﷺ ने फरमायाः पानी (पिलाना) तो उन्होंने एक कुंआँ खुदवाया और कहाः यह उम्मे सा'द का कुंआँ है।''

٥٤٧ / ٨٧. عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: إِذَا مَاتَ

.... الماء، ٢ / ١٢١٤، الرقم: ٣٦٨٤، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٥ / ٢٨٤، الرقم: ٢٢٥١٢، والطبرانى فى المعجم الكبير، ٦ / ٢٠، الرقم: ٥٣٧٩، والبيقهى فى شعب الإيمان، ٣ / ٢٢١، الرقم: ٣٣٧٩، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٢ / ٤٢، الرقم: ١٤٢٣ـ ١٤٢٤ـ

الحديث رقم ٨٦: أخرجه أبوداود فى السنن، كتاب: الزكاة، باب: فى فضل سقي الماء، ٢ / ١٣٠، الرقم: ١٦٨١، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٢ / ٤١، الرقم: ١٤٢٤، والحسينى فى البيان والتعريف، ١ / ١٢٠، الرقم: ٣٠٧، والخطيب التبريزى فى مشكاة المصابيح، ١ / ٣٦٢، الرقم: ١٩١٢ـ

الإِنْسَانُ انْقَطَعَ عَنْهُ عَمَلُهُ إِلَّا مِنْ ثَـلَاثَةٍ: إِلَّا مِنْ صَدَقَةٍ جَارِيَةٍ. أَوْ عِلْمٍ يُنْتَفَعُ بِهِ. أَوْ وَلَدٍ صَالِحٍ يَدْعُوْ لَهُ.

رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَالْبُخَارِيُّ فِي الْأَدبِ وَأَبُوْدَاوُدَ وَابْنُ مَاجَه.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जब इन्सान मर जाता है तो उसके आमाल का सिलसिला ख़त्म हो जाता है सिवाए तीन चीज़ों के (उन का अज्र उसे बराबर मिलता रहता हैः) एक वो सदक़ा जिसका नफ़ा जारी रहे, दूसरा वो इल्म जिससे फ़ायदा उठाया जाए, तीसरा वो नेक औलाद जो उसके लिए दुआ करे।''

٥٤٨ / ٨٨۔ عَنْ سُفْيَانَ قَالَ: قَالَ طَاوُوْسُ ﷺ: إِنَّ الْمَوْتَى يُفْتَنُوْنَ فِي قُبُوْرِهِمْ سَبْعًا فَكَانُوْا يَسْتَحِبُّوْنَ أَنْ يُطْعَمَ عَنْهُمْ تِلْكَ الْأَيَّامِ.

الحديث رقم ٨٧: أخرجه مسلم فى الصحيح، كتاب: الوصية، باب: ما يلحق الإنسان من الثواب بعد وفاته، ٣/ ١٢٥٥، الرقم: ١٦٣١، والبخارى فى الأدب المفرد، ١/ ٢٨، الرقم: ٣٨، وأبوداود فى السنن، كتاب: الوصايا، باب: ماجاء فى الصدقة عن الميت، ٣/ ١١٧، الرقم: ٢٨٨٠، وابن ماجه فى السنن، المقدمة، باب: ثواب معلم الناس الخير، ١/ ٨٨، الرقم: ٢٣٩، وابن خزيمة فى الصحيح، ٤/ ١٢٢، الرقم: ٢٤٩٤، وابن حبان فى الصحيح، ٧/ ٢٨٦، الرقم: ٣٠١٦: ١١/ ٢٦٦، الرقم: ٤٩٠٢، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٢/ ٣٧٢، الرقم: ٨٨٣١، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٦/ ٢٧٨، الرقم: ١٢٤١٥، وفى شعب الإيمان، ٣/ ٢٤٧، الرقم: ٣٤٤٧، والطبرانى فى المعجم الأوسط، ٤/ ٨، الرقم: ٣٤٧٢، وفى المعجم الصغير، ١/ ٢٤٢، الرقم: ٣٩٥، وأبويعلى فى المسند، ١١/ ٣٤٣، الرقم: ٦٤٥٧، وابن الجارود فى المنتقى، ١/ ١٠١، الرقم: ٣٧٠، وأبو عوانة فى المسند، ٣/ ٣٩٤۔٣٩٥، الرقم: ٥٨٢٤، وأبو المحاسن فى معتصر المختصر، ٢/ ٣٠٦، والديلمى فى مسند الفردوس، ١/ ٢٨٣، الرقم: ١١٠٩، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ١/ ٥٥، الرقم: ١٢٤۔١٢٥،١٥٦،١٨٨۔

الحديث رقم ٨٨: أخرجه أبونعيم فى حلية الأولياء، ٤/ ١١، والسيوطى فى الديباج على صحيح مسلم، ٢/ ٤٩١، الرقم: ٩٠٥، وفى شرحه على سنن النسائى، ٤/ ١٠٤، ونور الدين السندى فى حاشية السندى على النسائى، ٤/ ١٠٣، الرقم: ←

رَوَاهُ أَبُوْنُعَيْمٍ وَأَحْمَدُ.

وَقَالَ السُّيُوْطِيُّ: إِسْنَادُهُ صَحِيْحٌ وَلَهُ حُكْمُ الرَّفْعِ.

''हज़रत सुफ़्यान ﷺ बयान करते हैं कि हज़रत ताऊस ﷺ ने फरमायाः बेशक सात दिन तक मुर्दों को क़ब्रों में आज़माया जाता है इसलिए लोग इन दिनों में उनकी तरफ़ से खाना खिलाने को मुस्तहब समझते थे।''

.... ٢٠٦٠، وابن الجوزى فى صفوة الصفوة، ٢/ ٢٨٩.

बाब 9 : اَلْبَابُ التَّاسِعُ:

عَظَمَةُ الرِّسَالَةِ وَشَرَفُ الْمُصْطَفٰى ﷺ

अ़ज़मते रिसालत और शरफ़े मुस्तफ़ा ﷺ

1. فَصْلٌ فِي شَرَفِ النُّبُوَّةِ الْمُحَمَّدِيَّةِ ﷺ

﴾नबुव्वते मुहम्मदी ﷺ और शरफ़ का बयान﴿

2. فَصْلٌ فِي مَنَاقِبِ النَّبِيِّ ﷺ

﴾हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के मनाक़िब का बयान﴿

3. فَصْلٌ فِي أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ حَيٌّ فِي قَبْرِهٖ بِرُوْحِهٖ وَجَسَدِهٖ

﴾हुज़ूर ﷺ का रौज़ए अनवर में अपनी रूह मुबारक और जसदे अक़दस के साथ ज़िन्दा होने का बयान﴿

4. فَصْلٌ فِي سَعَةِ عِلْمِ النَّبِيِّ ﷺ وَكَمَالِ مَعْرِفَتِهٖ

﴾हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की वुस्अ़ते इल्म व कमाले म'रेफ़त का बयान﴿

5. فَصْلٌ فِي أَنَّ الْأُمَّةَ تُسْئَلُ عَنْ مَكَانَةِ النَّبِيِّ ﷺ فِي الْقُبُوْرِ

﴾उम्मत से क़ब्र में मुक़ामे मुस्तफ़ा ﷺ से मुतअ़ल्लिक़ पूछे जाने का बयान﴿

6. فَصْلٌ فِي الشَّفَاعَةِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

﴾रोज़े क़यामत शफ़ाअ़त का बयान﴿

7. فَصْلٌ فِي أَجْرِ حُبِّ النَّبِيِّ ﷺ وَالصُّحْبَةِ الصَّالِحَةِ

﴿हुज़ूर ﷺ से मुहब्बत करने और सोहबते सालेहीन के अज्र का बयान﴾

8. فَصْلٌ فِي التَّبَرُّكِ بِالنَّبِيِّ ﷺ وَبِآثَارِهِ

﴿हुज़ूर ﷺ की ज़ाते अक़दस और आप ﷺ के आसार मुबारका से हुसूले बरकत का बयान﴾

9. فَصْلٌ فِي التَّوَسُّلِ بِالنَّبِيِّ ﷺ وَالصَّالِحِيْنَ

﴿हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ और सालेहीन से तवस्सुल का बयान﴾

10. فَصْلٌ فِي عَدَمِ نَظِيْرِ النَّبِيِّ ﷺ فِي الْكَوْنِ

﴿कायनात में हुज़ूर ﷺ की मिस्ल न होने का बयान﴾

11. فَصْلٌ فِي تَعْظِيْمِ النَّبِيِّ ﷺ وَتَوْقِيْرِهِ

﴿हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की ताज़ीमो तौक़ीर का बयान﴾

فَصْلٌ فِي شَرَفِ النُّبُوَّةِ الْمُحَمَّدِيَّةِ ﷺ

﴾नबुव्वते मुहम्मदी ﷺ और शरफ़ का बयान﴿

١/٥٤٩۔ عَنْ جُبَيْرِ بْنِ مُطْعِمٍ رضي الله عنه قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لِي خَمْسَةُ أَسْمَاءٍ: أَنَا مُحَمَّدٌ وَأَحْمَدُ، وَأَنَا الْمَاحِي الَّذِي يَمْحُو اللهُ بِيَ الْكُفْرَ وَأَنَا الْحَاشِرُ الَّذِي يُحْشَرُ النَّاسُ عَلَى قَدَمِي وَأَنَا الْعَاقِبُ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत ज़ुबैर बिन मुतइम रضي الله عنه रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः मेरे पाँच नाम हैं। मैं मुहम्मद और अहमद हूँ और मैं माही (यानी मिटानेवाला) हूँ कि अल्लाह तआला मेरे ज़रीये से कुफ़्र को मिटा देगा और मैं हाशिर हूँ। सब लोग मेरे पैरों में ही (रोज़े हश्र) जमा किए जाएंगे और आक़िब (यानी सब से आख़िर में आने वाला) हूँ।''

٢/٥٥٠۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضي الله عنه أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: إِنَّ مَثَلِي

الحديث رقم ١: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: المناقب، باب: ما جاء في أسماء رسول الله ﷺ، ٣/١٢٩٩، الرقم: ٣٣٣٩، وأيضًا في كتاب: التفسير، باب: تفسير سورة الصف، ٤/١٨٥٨، الرقم: ٤٦١٤، ومسلم في الصحيح، كتاب: الفضائل، باب: في أسمائه ﷺ، ٤/٨٢٨، الرقم: ٢٣٥٤، والترمذي في السنن، كتاب: الأدب، باب: ما جاء في أسماء النبي ﷺ، ٥/١٣٥، الرقم: ٢٨٤٠، وقال الترمذي: هذا حديث حسن صحيح، ومالك في الموطأ، كتاب: أسماء النبي ﷺ، باب: أسماء النبي ﷺ، ٢/١٠٠٤، وأحمد بن حنبل في المسند، ٤/٨٠، ٨٤، والنسائي في السنن الكبرى، ٦/٤٨٩، الرقم: ١١٥٩٠، والدارمي في السنن، ٢/٤٠٩، الرقم: ٢٧٧٥، وابن حبان في الصحيح، ١٤/٢١٩، الرقم: ٦٣١٣، وأبو يعلى في المسند، ١٣/٣٨٨، الرقم: ٧٣٩٥، والطبراني في المعجم الأوسط، ٤/٤٤، الرقم: ٣٥٧٠، وأيضًا في المعجم الكبير، ٢/١٢٠، الرقم: ١٥٢٠-١٥٢٩، والبيهقي في شعب الإيمان، ٢/١٤٠، الرقم: ١٣٩٧.

الحديث رقم ٢: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: المناقب، باب: خَاتَم ــــ

وَمَثَلِ الْأَنْبِيَاءِ مِنْ قَبْلِي، كَمَثَلِ رَجُلٍ بَنَى بَيْتًا فَأَحْسَنَهُ وَأَجْمَلَهُ إِلَّا مَوْضِعَ لَبِنَةٍ مِنْ زَاوِيَةٍ فَجَعَلَ النَّاسُ يَطُوْفُوْنَ بِهِ وَيَعْجَبُوْنَ لَهُ وَيَقُوْلُوْنَ: هَلَّا وُضِعَتْ هَذِهِ اللَّبِنَةُ قَالَ: فَأَنَا اللَّبِنَةُ وَأَنَا خَاتَمُ النَّبِيِّيْنَ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः मेरी मिसाल और गुज़िश्ता अंबियाए किराम की मिसाल ऐसी है, जैसे किसी ने एक बहुत खूबसूरत मकान बनाया और उसे ख़ूब आरास्ता किया, लेकिन एक गोशे में एक ईंट की जगह छोड़ दी। लोग आ आ कर इस मकान को देखने लगे और इस पर ता'ज्जुब का इज़्हार करते हुए कहने लगेः ईंट क्यों नहीं रखी गई ? हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः और मैं वही ईंट हूँ और मैं ख़ातिमुन्नबिय्यीन हूँ (यानी मेरे बाद बाबे नुबुव्वत हमेशा के लिए बन्द हो गया है)।''

٥٥١ / ٣۔ عَنْ أَبِي مُوْسَى الْأَشْعَرِيِّ ﷺ قَالَ: كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يُسَمِّي لَنَا نَفْسَهُ أَسْمَاءً. فَقَالَ: أَنَا مُحَمَّدٌ، وَأَحْمَدُ، وَالْمُقَفِّي وَالْحَاشِرُ وَنَبِيُّ التَّوْبَةِ وَنَبِيُّ الرَّحْمَةِ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَأَحْمَدُ وَابْنُ أَبِي شَيْبَةَ.

''हज़रत अबू मूसा अश्अरी ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने हमें अपने कई अस्माए गिरामी बयान फरमाए। आप ﷺ ने फरमायाः मैं मुहम्मद हूँ और मैं अहमद हूँ और मुक़फ़्फ़ी (बाद में आने वाला) और हाशिर हूँ (जिसकी पैरवी में रोज़े हश्र सब जमा किए

.... النَّبِينَ ﷺ، ٣ / ١٣٠٠، الرقم: ٣٣٤١-٣٣٤٢، ومسلم في الصحيح، كتاب: الفضائل، باب: ذكر كونه ﷺ خاتم النبين، ٤ / ١٧٩١، الرقم: ٢٢٨٦، وأحمد بن حنبل في المسند، ٢ / ٣٩٨، الرقم: ٩١٥٦، والنسائي في السنن الكبرى، ٦ / ٤٣٦، الرقم: ١١٤٢٢، وابن حبان في الصحيح، ١٤ / ٣١٥، الرقم: ٦٤٠٥.

الحديث رقم ٣: أخرجه مسلم في الصحيح، كتاب: الفضائل، باب: في أسمائه ﷺ، ٤ / ١٨٢٨، الرقم: ٢٣٥٥، وأحمد بن حنبل في المسند، ٤ / ٣٩٥، ٤٠٤، ٤٠٧، وابن أبي شيبة في المصنف، ٦ / ٣١١، الرقم: ٣١٦٩٢-٣١٦٩٣، والحاكم في المستدرك، ٢ / ٦٥٩، الرقم: ٤١٨٥-٤١٨٦، وَقَالَ الْحَاكِمُ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحُ الْإِسْنَادِ، والطبراني في المعجم الأوسط، ٤ / ٣٢٧، الرقم: ٤٣٣٨، ٤٤١٧، وابن الجعد في المسند، ١ / ٤٧٩، الرقم: ٣٣٢٢.

जाएंगे) और नबी–उत–तौबा और नबी–उर–रहमा हूँ।

٤/ ٥٥٢. عَنْ وَاثِلَةَ بْنِ الْأَسْقَعِ رضي الله عنه يَقُوْلُ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: إِنَّ اللهَ اصْطَفَى كِنَانَةَ مِنْ وَلَدِ إِسْمَاعِيْلَ، وَاصْطَفَى قُرَيْشًا مِنْ كِنَانَةَ، وَاصْطَفَى مِنْ قُرَيْشٍ بَنِي هَاشِمٍ، وَاصْطَفَانِي مِنْ بَنِي هَاشِمٍ.

رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَالتِّرْمِذِيُّ وَأَحْمَدُ وَابْنُ أَبِي شَيْبَةَ.

وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ.

''हज़रत वासिला बिन अल अस्क़ा رضي الله عنه से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः अल्लाह तआला ने औलादे इस्माईल عليه السلام बनी किनाना को और औलादे किनाना में से कुरैश को और कुरैश में से बनी हाशिम और बनी हाशिम में से मुझे शरफ़े इन्तिख़ाब बख़्शा और पसन्दीदा क़रार दिया।''

٥/ ٥٥٣. عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ رضي الله عنه قَالَ: بَيْنَا النَّبِيُّ ﷺ يَقْسِمُ، جَاءَ عَبْدُ

الحديث رقم ٤: أخرجه مسلم في الصحيح، كتاب: الفضائل، باب: فضل نسب النبي ﷺ، ٤/ ١٧٨٢، الرقم: ٢٢٧٦، والترمذي في السنن، كتاب: المناقب عن رسول الله ﷺ: باب: ما جاء في فضل النبي ﷺ، ٥/ ٥٨٣، الرقم: ٣٦٠٥، وأحمد بن حنبل في المسند، ٤/ ١٠٧، وابن أبي شيبة في المصنف، ٦/ ٣١٧، الرقم: ٣١٧٣١، وابن حبان في الصحيح، ١٤/ ١٣٥، الرقم: ٦٢٤٢، والطبراني في المعجم الكبير، ٢٢/ ٦٦، الرقم: ١٦١، وأبو يعلى في المسند، ١٣/ ٤٦٩، الرقم: ٧٤٨٥، والبيهقي في السنن الكبرى، ٦/ ٣٦٥، الرقم: ١٢٨٥٢، ٣٥٤٢، وأيضًا في شعب الإيمان، ٢/ ١٣٩، الرقم: ١٣٩١، واللالكائي في اعتقاد أهل السنة، ٤/ ٧٥١، الرقم: ١٤٠٠.

الحديث رقم ٥: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: استتابة المرتدين والمعاندين، باب: مَن ترك قتال الخوارج لِلتَّألُّفِ، ولئلا ينفر الناس عنه، ٦/ ٢٥٤٠، الرقم: ٦٥٣٤، ٦٥٣٢، وأيضًا في كتاب: المناقب، باب: علامات النبوة في الإسلام، ٣/ ١٣٢١، الرقم: ٣٤١٤، وأيضًا في كتاب: فضائل القرآن، باب: البكاء عند قراءة القرآن، ٤/ ١٩٢٨، الرقم: ٤٧٧١، وأيضًا في كتاب: الأدب، باب: ما جاء في قول الرَّجل: ويلك، ٥/ ٢٢٨١، الرقم: ٥٨١١، وأيضًا عن جابر رضي الله عنه في الأدب المفرد/ ٢٧٠، الرقم: ٧٧٤، ومسلم في الصحيح، كتاب: الزكاة، باب: ذكر

اللهِ بْنُ ذِي الْخُوَيْصِرَةِ التَّمِيْمِيُّ فَقَالَ: اعْدِلْ يَا رَسُوْلَ اللهِ، قَالَ: وَيْحَکَ، وَمَنْ يَعْدِلُ إِذَا لَمْ أَعْدِلْ. قَالَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ: ائْذَنْ لِي فَأَضْرِبَ عُنُقَهُ، (أَوْ قَالَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ ﷺ: يَا رَسُوْلَ اللهِ، دَعْنِي أَقْتُلْ هَذَا الْمُنَافِقَ الْخَبِيثَ.)، قَالَ: دَعْهُ، فَإِنَّ لَهُ أَصْحَابًا، يَحْقِرُ أَحَدُكُمْ صَلَاتَهُ مَعَ صَلَاتِهِ وَصِيَامَهُ مَعَ صِيَامِهِ، يَمْرُقُوْنَ مِنَ الدِّيْنِ كَمَا يَمْرُقُ السَّهْمُ مِنَ الرَّمِيَّةِ، يُنْظَرُ فِي قُذَذِهِ فَلَا يُوْجَدُ فِيْهِ شَيءٌ ثُمَّ يُنْظَرُ فِي نَصْلِهِ فَلَا يُوْجَدُ فِيْهِ شَيءٌ ثُمَّ يُنْظَرُ فِي رِصَافِهِ فَلَا يُوْجَدُ فِيْهِ شَيءٌ، ثُمَّ يُنْظَرُ فِي نَضِيِّهِ فَلَا يُوْجَدُ فِيْهِ شَيءٌ، قَدْ سَبَقَ الْفَرْثَ وَالدَّمَ......الحديث. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ माले ग़नीमत तक़्सीम फरमा रहे थे कि अ़ब्दुल्लाह बिन जिल्खुवैसरा तमीमी आया और कहने लगाः या रसूलल्लाह! अ़द्ल से तक़्सीम कीजिये। (उसके इस ता'न पर) हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः कमबख़्त! अगर मैं अ़द्ल नहीं करता तो और कौन अ़द्ल करेगा? हज़रत उमर ﷺ ने अ़र्ज़ कियाः या रसूलल्लाह! इजाज़त अ़ता फरमाएं कि मैं इस (खारिजी मुनाफ़िक़) की गर्दन उड़ा

.... الخوارج وصفاتهم، ٢/٧٤٤، الرقم: ١٠٦٤، ونحوه النسائي عن أبي برزة ﷺ في السنن، كتاب: تحريم الدم، باب: من شهر سيفه ثم وضعه في الناس، ٧/١١٩، الرقم: ٤١٠٣، وأيضًا في السنن الكبرى، ٦/٣٥٥، الرقم: ١١٢٢٠، وابن ماجه في السنن، المقدمة، باب: في ذكر الخوارج، ١/٦١، الرقم: ١٧٢، وأحمد بن حنبل في المسند، ٣/٥٦، الرقم: ١١٥٥٤، ١٤٨٦١، وابن الجارود في المنتقى، ١/٢٧٢، الرقم: ١٠٨٣، وابن حبان في الصحيح، ١٥/١٤٠، الرقم: ٦٧٤١، وابن أبي شيبة في المصنف، ٧/٥٦٢، الرقم: ٣٧٩٣٢، وعبد الرزاق في المصنف، ١٠/١٤٦، وأبو يعلى في المسند، ٢/٢٩٨، الرقم: ١٠٢٢، ونحوه البزار عن أبي برزة ﷺ في المسند، ٩/٣٠٥، الرقم: ٣٨٤٦، والحاكم عن أبي برزة ﷺ في المستدرك، ٢/١٦٠، الرقم: ٢٦٤٧، وقال: هَذَا حَدِيثٌ صَحِيْحٌ، والطبراني في المعجم الأوسط، ٩/٣٥، الرقم: ٩٠٦٠، والبيهقي في السنن الكبرى، ٨/١٧١.

दूँ (या अ़र्ज़ किया: या रसूलल्लाह! मुझे इजाज़त दें कि मैं इस ख़बीस मुनाफ़िक़ की गर्दन उड़ा दूँ?) आप ﷺ ने फरमाया: रहने दो। इस के कुछ साथी ऐसे हैं (या होंगे) कि उनकी नमाज़ों के सामने तुम अपनी नमाज़ों को और उनके रोज़ों के सामने तुम अपने रोज़ों को हक़ीर जानोगे। लेकिन वो लोग दीन से इस तरह ख़ारिज होंगे जिस तरह तीर शिकार से पार निकल जाता है। (तीर फेंकने के बाद) तीर के पर को देखा जाएगा तो उसमें भी ख़ून का कोई असर न होगा। तीर की बाड़ को देखा जाएगा तो उसमें भी ख़ून का कोई निशान न होगा और तीर (जानवर के) गोबर और ख़ून से पार निकल चुका होगा। (ऐसी ही इन ख़बीसों की मिसाल है कि दीन के साथ उन का सिरे से कोई ता'ल्लुक़ ही न होगा)।''

٥٥٤ /٦ـ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضي الله عنه، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَا مِنْ مُؤْمِنٍ إِلَّا وَأَنَا أَوْلَى النَّاسِ بِهِ فِي الدُّنْيَا وَالآخِرَةِ، اقْرَؤُوا إِنْ شِئْتُمْ: ﴿النَّبِيُّ أَوْلَى بِالْمُؤْمِنِيْنَ مِنْ أَنْفُسِهِمْ﴾ [الأحزاب، ٣٣: ٦]، فَأَيُّمَا مُؤْمِنٍ تَرَكَ مَالًا فَلْيَرِثْهُ عَصَبَتُهُ مَنْ كَانُوا، فَإِنْ تَرَكَ دَيْنًا، أَوْ ضَيَاعًا فَلْيَأْتِنِي وَأَنَا مَوْلَاهُ.

مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अबू हुरैरा رضي الله عنه से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया: कोई मोमिन ऐसा नहीं कि मैं दुनिया व आख़िरत में जिस की जान से भी ज़्यादा क़रीब न हूँ। अगर तुम चाहो तो यह आयत पढ़ लो: ''नबी–ए–अकरम ﷺ मोमिनों के लिए उनकी जानों से भी ज़्यादा क़रीब हैं।'' फिर जो मुसलमान माल छोड़ कर मरे तो जो भी उसका ख़ानदान होगा वही उसका वारिस होगा लेकिन अगर क़र्ज या बच्चे छोड़ कर मरे तो वो (क़र्ज़ ख़्वाह या बच्चे) मेरे पास आएं मैं उनका सरपरस्त हूँ। (और आप ﷺ के बाद इस्लामी रिवायत यह दोनों ज़िम्मेदारियाँ निभाएगी)।''

الحديث رقم ٦: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: التفسير، باب: النّبيّ أولى بالمؤمنين من أنفسهم، ٤/١٧٩٥، الرقم: ٤٥٠٣، ومسلم في الصحيح، كتاب: الجمعة، باب: تخفيف الصلاة والخطبة،٢/٥٩٢، الرقم: (٤٣)٨٦٧، والنسائي في السنن، كتاب: صلاة العيدين، باب: كيف الخطبة، ٣/١٨٨،الرقم: ١٥٧٨، والدارمي في السنن، ٢/٣٤١، الرقم: ٢٥٩٤، وابن خزيمة في الصحيح، ٣/١٤٣، الرقم: ١٧٨٥، والبيهقي في السنن الكبرى، ٦/٢٣٨، الرقم: ١٢١٤٨.

٧/٥٥٥. عَنِ الْمُطَّلِبِ بْنِ أَبِي وَدَاعَةَ رضي الله عنه قَالَ: جَاءَ الْعَبَّاسُ رضي الله عنه إِلَى رَسُوْلِ اللهِ ﷺ فَكَأَنَّهُ سَمِعَ شَيْئًا، فَقَامَ النَّبِيُّ ﷺ عَلَى الْمِنبَرِ فَقَالَ: مَنْ أَنَا؟ قَالُوْا: أَنْتَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ عَلَيْكَ السَّلَامُ قَالَ: أَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ إِنَّ اللهَ خَلَقَ الْخَلْقَ فَجَعَلَنِي فِي خَيْرِهِمْ فِرْقَةً، ثُمَّ جَعَلَهُمْ فِرْقَتَيْنِ فَجَعَلَنِي فِي خَيْرِهِمْ فِرْقَةً، ثُمَّ جَعَلَهُمْ قَبَائِلَ فَجَعَلَنِي فِي خَيْرِهِمْ قَبِيْلَةً، ثُمَّ جَعَلَهُمْ بُيُوْتًا فَجَعَلَنِي فِي خَيْرِهِمْ بَيْتًا وَخَيْرِهِمْ نَسَبًا. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَحْمَدُ.

وَقَالَ أَبُوْ عِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ.

''हज़रत मुत्तलिब बिन अबू वदाआ رضي الله عنه रिवायत करते हैं कि एक बार हज़रत अ़ब्बास رضي الله عنه, हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की ख़िदमते अक़दस में हाज़िर हुए और वो उस वक़्त (काफ़िरों से कुछ नाशाइस्ता कलिमात) सुन कर (गुस्से की हालत में थे। फिर वाक़िए पर मुत्तला' हो कर) हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ मिम्बर पर तशरीफ़ फरमा हुए और फरमायाः मैं कौन हूँ ? सहाबा किराम رضي الله عنهم ने अ़र्ज़ कियाः (या रसूलल्लाह!) आप पर सलामती हो आप रसूलुल्लाह हैं। आप ﷺ ने फरमायाः मैं मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब हूँ। ख़ुदा ने मख़्लूक़ को पैदा किया तो मुझे बेहतरीन ख़ल्क़ (यानी इन्सानों) में पैदा किया, फिर मख़्लूक़ को दो हिस्सों में तक़्सीम कर दिया (यानी अ़रब व अ़जम), तो मुझे बेहतरीन तबक़ा (यानी अ़रब) में दाख़िल किया। फिर उनके मुख़्तलिफ़ क़बीले बनाए तो मुझे बेहतरीन क़बीले (यानी क़ुरैश) में दाख़िल फरमाया। फिर उनके घराने बनाए तो मुझे बेहतरीन घराने (यानी बनी हाशिम) में दाख़िल किया और बेहतरीन नसब वाला बनाया, (इसलिए मैं ज़ाती शरफ़ और हसब व नसब हर एक लिहाज़ से तमाम मख़्लूक़ से अफ़ज़ल हूँ।)''

الحديث رقم ٧: أخرجه الترمذي في السنن، كتاب: الدعوات عن رسول الله ﷺ باب: (٩٩)، ٥/٥٤٣الرقم: ٣٥٣٢، وفي كتاب: المناقب عن رسول الله ﷺ باب: في فضل النبي ﷺ، ٥/٥٨٤، الرقم: ٣٦٠٧-٣٦٠٨، وأحمد بن حنبل في المسند، ١/٢١٠، الرقم: ١٧٨٨، والبيهقي في دلائل النبوة، ١/١٤٩، والديلمي في مسند الفردوس، ١/٤١، الرقم: ٩٥، والحسيني في البيان والتعريف، ١/١٧٨، الرقم: ٤٦٦، والهندي في كنز العمال، ١١/٤١٥، الرقم: ٣١٩٥٠.

٨/٥٥٦. عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضي الله عنه قَالَ: قَالُوْا: يَا رَسُوْلَ اللهِ، مَتَى وَجَبَتْ لَكَ النُّبُوَّةُ قَالَ: وَآدَمُ بَيْنَ الرُّوْحِ وَالْجَسَدِ.

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالْحَاكِمُ.

الحديث رقم ٨: أخرجه الترمذي في السنن، كتاب: المناقب، باب: في فضل النبي ﷺ، ٥/٥٨٥، الرقم: ٣٦٠٩، وأحمد بن حنبل في المسند، ٤/٦٦، ٥/٥٩،٣٧٩، الرقم: ٢٣٦٢٠، والحاكم في المستدرك، ٢/٦٦٥-٦٦٦، الرقم: ٤٢٠٩-٤٢١٠، وابن أبي شيبة في المصنف، ٧/٣٦٩، الرقم: ٣٦٥٥٣، وأبو سعد النيشابوري في شرف المصطفى ﷺ، ١/٢٨٦، الرقم: ٧٥، والطبراني في المعجم الأوسط، ٤/٢٧٢، الرقم: ٤١٧٥، وأيضًا في المعجم الكبير، ١٢/٩٢،١١٩، الرقم: ١٢٥٧١، ١٢٦٤٦، ٢٠/٣٥٣، الرقم: ٨٣٣، وأبو نعيم في حلية الأولياء، ٧/١٢٢، ٩/٥٣، وأيضاً في دلائل النبوة، ١/١٧، والبخاري في التاريخ الكبير، ٧/٣٧٤، الرقم: ١٦٠٦، والخلال في السنة، ١/١٨٨، الرقم: ٢٠٠، إسناده صحيح، وابن أبي عاصم في السنة، ١/١٧٩، الرقم: ٤١١، إسناده صحيح، وأيضًا في الآحاد والمثاني، ٥/٣٤٧، الرقم: ٢٩١٨، وعبد الله بن أحمد في السنة، ٢/٣٩٨، الرقم: ٨٦٤، إسناده صحيح، وابن سعد في الطبقات الكبرى، ١/١٤٨، ٧/٦٠، وابن حبان في الثقات، ١/٤٧، وابن قانع في معجم الصحابة، ٢/١٢٧، الرقم: ٥٩١، ٣/١٢٩، ١١٠٣، وابن خياط في الطبقات، ١/٥٩،١٢٥، واللالكائي في اعتقاد أهل السنة، ٤/٧٥٣، الرقم: ١٤٠٣، والمقدسي في الأحاديث المختارة، ٩/١٤٢-١٤٣، الرقم: ١٢٣-١٢٤، وأبو المحاسن في معتصر المختصر، ١/١٠، وأيضًا في الإكمال، ١/٤٢٨، الرقم: ٨٩٨، والديلمي في مسند الفردوس، ٣/٢٨٤، الرقم: ٤٨٤٥، وابن عساكر في تاريخ مدينة دمشق، ٢٦/٣٨٢، ٤٥/٤٨٨-٤٨٩، والخطيب البغدادي في تاريخ بغداد، ٣/٧٠، الرقم: ١٠٣٢، ٥/٨٢، الرقم: ٢٤٧٢، ١٠/١٤٦، الرقم: ٥٢٩٢، والقزويني في التدوين في أخبار قزوين، ٢/٢٤٤، والعسقلاني في تهذيب التهذيب، ٥/١٤٧، الرقم: ٢٩٠، وأيضًا في الإصابة، ٦/٢٣٩، وأيضًا في تعجيل المنفعة، ١/٥٤٢، الرقم: ١٥١٨، وابن عبد البر في الاستيعاب، ٤/١٤٨٨، الرقم: ٢٥٨٢، والذهبي في سير أعلام النبلاء، ٧/٣٨٤، ١١/١١٠، وقال: هذا حديث صالح السند، وابن كثير في البداية والنهاية، ٢/٣٠٧، ٣٢٠-٣٢١، والجرجاني في تاريخ جرجان، ←

وَقَالَ أَبُوْ عِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ.

وَقَالَ الْهَيْثَمِيُّ: رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالطَّبَرَانِيُّ وَرِجَالُهُ رِجَالُ الصَّحِيْحِ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ रिवायत फरमाते हैं कि सहाबा किराम ﷺ ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह ! आप के लिए नुबुव्वत कब वाजिब हुई ? हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः (मैं उस वक़्त भी नबी था) जबकि हज़रत आदम ﷺ की तख़्लीक़ अभी रूह और जिस्म के दरमियानी मरहले में थी (यानी रूह और जिस्म का बाहमी ता'ल्लुक़ भी अभी क़ायम ना हुआ था)।''

وفي رواية: عَنْ مَيْسَرَةَ الْفَجْرِ ﷺ قَالَ: قُلْتُ لِرَسُوْلِ اللهِ ﷺ: مَتَى كُنْتَ نَبِيًّا؟ قَالَ: وَآدَمُ بَيْنَ الرُّوْحِ وَالْجَسَدِ.

رَوَاهُ الْحَاكِمُ وَالطَّبَرَانِيُّ وَالْبُخَارِيُّ فِي الْكَبِيْرِ.

وَقَالَ الْحَاكِمُ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحُ الإِسْنَادِ.

''हज़रत मैसरह–फ़ज्र ﷺ रिवायत फरमाते हैं कि मैंने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ से पूछाः (या रसूलल्लाह!) आप कब नुबुव्वत से सरफ़राज़ किए गए? आप ﷺ ने फरमायाः (मैं उस वक़्त भी नबी था) जब हज़रत आदम ﷺ की तख़्लीक़ अभी रूह और मिट्टी के मरहले में थी।''

وفي رواية: عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رضي الله عنهما قَالَ : قِيْلَ: يَا رَسُوْلَ اللهِ، مَتَى كُتِبْتَ نَبِيًّا؟ قَالَ: وَآدَمُ بَيْنَ الرُّوْحِ وَالْجَسَدِ.

رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالطَّبَرَانِيُّ وَاللَّفْظُ لَهُ وَابْنُ أَبِي عَاصِمٍ. إِسْنَادُهُ صَحِيْحٌ وَرِجَالُهُ كُلُّهُمْ ثِقَاتٌ رِجَالُ الصَّحِيْحِ. وَقَالَ الذَّهَبِيُّ: هَذَا حَدِيْثٌ صَالِحُ السَّنَدِ.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رضي الله عنهما से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ से पूछाः (या रसूलल्लाह!) आप के लिए नुबुव्वत कब फ़र्ज की गई? आप ﷺ ने फरमायाः (मैं उस वक़्त भी नबी था जबकि) हज़रत आदम ﷺ की तख़्लीक़ अभी रूह और मिट्टी के मरहले में थी।''

.... ١/٣٩٢، الرقم: ٦٥٣، والسيوطي في الخصائص الكبرى، ١/٧-٨،١٨، وأيضاً في الحاوي للفتاوى، ٢/١٠٠، والقسطلاني في المواهب اللدنية، ١/٦٠، والهيثمي في مجمع الزوائد، ٨/٢٢٣، وقال: رواه الطبراني والبزار، وذكره الألباني في سلسلة الأحاديث الصحيحة، ٤/٤٧١، الرقم: ١٨٥٦.

وفي رواية عنه: قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُوْلَ اللهِ، مَتَى أُخِذَ مِيْثَاقُکَ؟ قَالَ: وَآدَمُ بَيْنَ الرُّوْحِ وَالْجَسَدِ. رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ.

''और एक रिवायत में हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رضي الله عنهما से मरवी है वो बयान करते हैं कि मैंने अ़र्ज़ किया: (या रसूलल्लाह!) आप कब नबी बनाए गए? आप ﷺ ने फरमाया: (मैं उस वक़्त भी नबी था) जबकि हज़रत आदम عليه السلام की तख़्लीक़ अभी रूह और जिस्म के दरमियानी मरहले में थी।''

وفي رواية: عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ شَقِيْقٍ عَنْ رَجُلٍ، قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُوْلَ اللهِ، مَتى جُعِلْتَ نَبِيًّا؟ قَالَ: وَآدَمَ بَيْنَ الرُّوْحِ وَالْجَسَدِ.

رَوَاهُ أَحْمَدُ وَ رِجَالُهُ رِجَالُ الصَّحِيْحِ.

''और एक रिवायत में हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन शक़ीक़ رضي الله عنه ने एक सहाबी से रिवायत किया, वो बयान करते हैं कि मैंने अ़र्ज़ किया (या रसूलल्लाह!) आप कब नबी बनाए गए? आप ﷺ ने फरमाया: (मैं उस वक़्त भी नबी था) जबकि हज़रत आदम عليه السلام की तख़्लीक़ अभी रूह और जिस्म के दरमियानी मरहले में थी।''

وفي رواية: عَنْ عُمَرَ رضي الله عنه قَالَ: يَا رَسُوْلَ اللهِ، مَتَى جُعِلْتَ نَبِيًّا؟ قَالَ: وَآدَمُ مُنْجَدِلٌ فِي الطِّيْنِ.

رَوَاهُ أَبُوْ نُعَيْمٍ كَمَا ذَكَرَ السُّيُوْطِيُّ وَابْنُ كَثِيْرٍ.

''एक और रिवायत में हज़रत उमर رضي الله عنه से मरवी है कि उन्होंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! आप कब नबी बनाए गए? आप ﷺ ने फरमाया: (मैं उस वक़्त भी नबी था) जबकि हज़रत आदम عليه السلام (का जिस्म) अभी मिट्टी में गुंधा हुआ था।''

وفي رواية: عَنْ عَامِرٍ رضي الله عنه قَالَ: قَالَ رَجُلٌ لِلنَّبِيِّ ﷺ: مَتَى اسْتُنْبِئْتَ؟ فَقَالَ: وَآدَمُ بَيْنَ الرُّوْحِ وَالْجَسَدِ حِيْنَ أُخِذَ مِنِّي الْمِيْثَاقُ.

رَوَاهُ ابْنُ سَعْدٍ.

''एक और रिवायत में हज़रत आमिर ﷺ से मरवी है कि एक शख़्स ने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की ख़िदमत में अ़र्ज़ कियाः (या रसूलल्लाह!) आप कब शरफ़े नबी से सरफ़राज़ किए गए? आप ﷺ ने फरमायाः जब मुझ से मीसाक़े नुबुव्वत लिया गया था उस वक़्त हज़रत आदम عليه السلام रूह और जिस्म के दरमियानी मरहले में थे।''

٥٥٧ / ٩۔ عَنْ عَائِشَةَ رضي الله عنها، عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ، عَنْ جِبْرِيْلَ عليه السلام قَالَ: قَلَّبْتُ مَشَارِقَ الْأَرْضِ وَمَغَارِبَهَا فَلَمْ أَجِدْ رَجُلًا أَفْضَلَ مِنْ مُحَمَّدٍ ﷺ، وَلَمْ أَرَ بَيْتًا أَفْضَلَ مِنْ بَيْتِ بَنِي هَاشِمٍ.

رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ وَاللَّالْكَائِيُّ.

''उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा رضي الله عنها हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ से और आप ﷺ, हज़रत जिब्राईल عليه السلام से रिवायत करते हैं कि उन्होंने अ़र्ज़ कियाः (या रसूलल्लाह!) मैंने तमाम ज़मीन के अतराफ़ व अकनाफ़ और गोशे गोशे को छान मारा, मगर न तो मैंने मुहम्मद मुस्तफ़ा ﷺ से बेहतर किसी को पाया और न ही मैंने बनी हाशिम के घर से बढ़ कर बेहतर कोई घर देखा।''

٥٥٨ / ١٠۔ عَنْ عَلِيٍّ رضي الله عنه أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: خَرَجْتُ مِنْ نِكَاحٍ وَلَمْ أَخْرُجْ مِنْ سِفَاحٍ، مِنْ لَدُنْ آدَمَ إِلَى أَنْ وَلَدَنِي أَبِي وَأُمِّي.

رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ وَابْنُ أَبِي شَيْبَةَ وَالْبَيْهَقِيُّ.

الحديث رقم ٩: أخرجه الطبراني في المعجم الأوسط، ٦ / ٢٣٧، الرقم: ٦٢٨٥، واللالكائي في اعتقاد أهل السنة، ٤ / ٧٥٢، الرقم: ١٤٠٢، والهيثمي في مجمع الزوائد، ٨ / ٢١٧۔

الحديث رقم ١٠: أخرجه الطبراني في المعجم الأوسط، ٥ / ٨٠، الرقم: ٤٧٢٨، وابن أبي شيبة في المصنف، ٦ / ٣٠٣، الرقم: ٣١٦٤١، والبيهقي عن ابن عباس رضي الله عنهما في السنن الكبرى، ٧ / ١٩٠، والديلمي في مسند الفردوس، ٢ / ١٩٠، الرقم: ٢٩٤٩، والحسيني في البيان والتعريف، ١ / ٢٩٤، الرقم: ٧٨٤، والهندي في كنز العمال، ١١ / ٤٠٢، الرقم: ٣١٨٧٠، والهيثمي في مجمع الزوائد، ٨ / ٢١٤۔

''हज़रत अली ؓ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः मैं निकाह के साथ मुतवल्लिद हुआ न कि ग़ैर शरई तरीक़े पर, और मेरा (ये निस्बती तक़द्दुस) हज़रत आदम ؑ से शुरू होकर हज़रत अ़ब्दुल्लाह और हज़रत आमिना رضي الله عنهما के मुझे जनने तक बरक़रार रहा (और ज़माना–ए–जाहिलियत की बदकिरदारियों और आवारगियों की ज़र्रा भर भी मिलावट मेरे नसब में नहीं पाई गई)।''

٥٥٩ / ١١ـ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رضي الله عنهما قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُوْلَ اللهِ بِأَبِي أَنْتَ وَأُمِّي، أَخْبِرْنِي عَنْ أَوَّلِ شَيءٍ خَلَقَهُ اللهُ تَعَالَى قَبْلَ الْأَشْيَاءِ؟ قَالَ: يَا جَابِرُ، إِنَّ اللهَ تَعَالَى قَدْ خَلَقَ قَبْلَ الْأَشْيَاءِ نُوْرَ نَبِيِّکَ مِنْ نُوْرِهِ، فَجَعَلَ ذَلِکَ النُّوْرَ يَدُوْرُ بِالْقُدْرَةِ حَيْثُ شَاءَ اللهُ تَعَالَى، وَلَمْ يَکُنْ فِي ذَلِکَ الْوَقْتِ لَوْحٌ وَلَا قَلَمٌ، وَلَا جَنَّةٌ وَلَا نَارٌ، وَلَا مَلَکٌ وَلَا سَمَاءٌ، وَلَا أَرْضٌ وَلَا شَمْسٌ وَلَا قَمَرٌ، وَلَا جِنِّيٌّ، وَلَا إِنْسِيٌّ، فَلَمَّا أَرَادَ اللهُ تَعَالَى أَنْ يَخْلُقَ الْخَلْقَ قَسَمَ ذَلِکَ النُّورَ أَرْبَعَةَ أَجْزَاءٍ: فَخَلَقَ مِنَ الْجُزْءِ الْأَوَّلِ الْقَلَمَ، وَمِنَ الثَّانِيِّ: اللَّوْحَ وَمِنَ الثَّالِثِ: الْعَرْشَ، ثُمَّ قَسَمَ الْجُزْءَ الرَّابِعَ أَرْبَعَةَ أَجْزَاءٍ فَخَلَقَ مِنَ الْأَوَّلِ: حَمَلَةَ الْعَرْشِ، وَمِنَ الثَّانِيِّ: الْکُرْسِيَّ وَمِنَ الثَّالِثِ: بَاقِيَ الْمَلَائِکَةِ، ثُمَّ قَسَمَ الْجُزْءَ الرَّابِعَ أَرْبَعَةَ أَجْزَاءٍ، فَخَلَقَ مِنَ الْأَوَّلِ: السَّمَوَاتِ، وَمِنَ الثَّانِيِّ: الْأَرْضِيْنَ وَمِنَ الثَّالِثِ: اَلْجَنَّةَ وَالنَّارَ ...... الحديث. رَوَاهُ عَبْدُ الرَّزَّاقِ.

الحديث رقم ١١: أخرجه القسطلاني في المواهب اللدنية، ١ / ٧١، وقال: أخرجه عبد الرزاق بسنده، والزرقاني في شرح المواهب اللدنية، ١ / ٨٩ـ٩١، والعجلوني في کشف الخفاء، ١ / ٣١١، الرقم: ٨٢٧، وقال: رواه عبد الرزاق بسنده عن جابر بن عبد الله رضي الله عنهما، والعيدروسي في تاريخ النور السافر، ١ / ٨، وقال: رواه عبد الرزاق بسنده، والحلبي في السيرة، ١ / ٥٠، والتهانوي في نشر الطيب / ١٣.

''हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह رضي الله عنهما से मरवी है कि उन्होंने बयान फरमायाः मैंने बारगाहे रिसालत मआब ﷺ में अ़र्ज़ कियाः या रसूलल्लाह! मेरे माँ बाप आप पर कुरबान ! मुझे बताएं कि अल्लाह तआ़ला ने सब से पहले किस शै को पैदा फरमाया ? आप ﷺ ने फरमायाः ऐ जाबिर! बेशक अल्लाह तआ़ला ने तमाम मख़्लूक़ (को पैदा करने) से पहले तेरे नबी का नूर अपने नूर (के फैज़) से पैदा फरमाया, यह नूर अल्लाह तआ़ला की मशिय्यत से जहाँ उसने चाहा सैर करता रहा। उस वक़्त न लौह थी न क़लम, न जन्नत थी न दोज़ख़, न (कोई) फ़रिश्ता था, न आसमान था न जमीन, न सूरज था न चाँद, न जिन थे और न इन्सान, जब अल्लाह तआ़ला ने इरादा फरमाया कि मख़्लूक़ को पैदा करे तो उसने उस नूर को चार हिस्सों में तक़्सीम कर दिया। पहले हिस्से से क़लम बनाया, दूसरे हिस्से से लौह और तीसरे हिस्से से अ़र्श बनाया। फिर चौथे हिस्से को (मज़ीद) चार हिस्सों में तक़्सीम किया तो पहले हिस्से से अ़र्श उठाने वाले फ़रिश्ते बनाए और दूसरे हिस्से से कुर्सी और तीसरे हिस्से से बाक़ी फ़रिश्ते पैदा किए। फिर चौथे हिस्से को मज़ीद चार हिस्सों में तक़्सीम किया तो पहले हिस्से से आसमान बनाए, दूसरे हिस्से से जमीन और तीसरे हिस्से से जन्नत और दोज़ख़ बनाई .....।''

فَصْلٌ فِي مَنَاقِبِ النَّبِيِّ ﷺ

हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के मनाक़िब का बयान

٥٦٠ / ١٢ـ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: بُعِثْتُ بِجَوَامِعِ الْكَلِمِ، وَنُصِرْتُ بِالرُّعْبِ، وَبَيْنَا أَنَا نَائِمٌ رَأَيْتُنِي أُتِيتُ بِمَفَاتِيحِ خَزَائِنِ الْأَرْضِ فَوُضِعَتْ فِي يَدِي. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः मैं जामे' कलिमात के साथ मबऊस किया गया हूँ और रो'ब के साथ मेरी मदद की गई है और जब मैं सोया हुआ था उस वक़्त मैंने ख़ुद को देखा कि ज़मीन के ख़ज़ानों की कुंजियाँ मेरे लिए लाई गईं और मेरे हाथ में थमा दी गईं।''

٥٦١ / ١٣ـ عَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنِّي

الحديث رقم ١٢: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: الاعتصام بالكتاب والسنة، باب: قول النبي ﷺ: بعثت بجوامع الكلم، ٦ / ٢٦٥٤، الرقم: ٦٨٤٥، وفي كتاب: الجهاد، باب: قول النبي ﷺ: نُصِرْتُ بِالرُّعْبِ مسيرة شهر، ٣ / ١٠٨٧، الرقم: ٢٨١٥، وفي كتاب: التعبير، باب: المفاتيح في اليد، ٦ / ٢٥٧٣، الرقم: ٦٦١١، ومسلم في الصحيح، كتاب: المساجد ومواضع الصلاة، ١ / ٣٧١، الرقم: ٥٢٣، والنسائي في السنن، كتاب: الجهاد، باب: وجوب الجهاد، ٦ / ٣ـ٤، الرقم: ٣٠٨٧ـ٣٠٨٩، وفي السنن الكبرى، ٣ / ٣، الرقم: ٤٢٩٥، وأحمد بن حنبل في المسند، ٢ / ٢٦٤، ٤٥٥، الرقم: ٧٥٧٥، ٩٨٦٧، وابن حبان في الصحيح، ١٤ / ٢٧٧، الرقم: ٦٣٦٣.

الحديث رقم ١٣: أخرجه مسلم في الصحيح، كتاب: الفضائل، باب: فضل نسب النبي وتسليم الحجر عليه ﷺ قبل النبوة، ٤ / ١٧٨٢، الرقم: ٢٢٧٧، والترمذي في السنن، كتاب: المناقب، باب: في آيات إثبات نبوة النبي ﷺ وما قد خصه الله ﷻ، ٥ / ٥٩٢، الرقم: ٣٦٢٤، والدارمي في السنن، ١ / ٢٤، الرقم: ٢٠، وأحمد بن حنبل في المسند، ٥ / ٨٩، ٩٥، ١٠٥، الرقم: ٢٠٨٦٠، ٢٠٩٣١، ←

لَأَعْرِفُ حَجَرًا بِمَكَّةَ كَانَ يُسَلِّمُ عَلَيَّ قَبْلَ أَنْ أُبْعَثَ إِنِّي لَأَعْرِفُهُ الْآنَ.

رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَالتِّرْمِذِيُّ وَالدَّارِمِيُّ وَأَحْمَدُ.

''हज़रत जाबिर बिन समुरा ﷺ बयान करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः मैं मक्का मुकर्रमा के उस पत्थर को बहुत अच्छी तरह से जानता हूँ जो मेरी बेअ़सत (रिसालत के ज़माने) से पहले मुझ पर सलाम भेजा करता था यक़ीनन मैं उसे अब भी (उसी तरह) पहचानता हूँ।''

٥٦٢ / ١٤. عَنْ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ ﷺ قَالَ: كُنْتُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ بِمَكَّةَ، فَخَرَجْنَا فِي بَعْضِ نَوَاحِيهَا، فَمَا اسْتَقْبَلَهُ جَبَلٌ وَلَا شَجَرٌ إِلَّا وَهُوَ يَقُوْلُ: اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللهِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالدَّارِمِيُّ وَالْحَاكِمُ.

وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ. وَقَالَ الْحَاكِمُ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحُ الإِسْنَادِ.

وفي رواية: عَنْ عَبَّادٍ قَالَ: سَمِعْتُ عَلِيًّا ﷺ يَقُوْلُ: لَقَدْ رَأَيْتُنِي أَدْخُلُ مَعَهُ يَعْنِي النَّبِيَّ ﷺ الْوَادِيَّ. فَلَا يَمُرُّ بِحَجَرٍ وَلَا شَجَرٍ إِلَّا قَالَ:

.... ٢١٠٤٣، وأبو يعلى في المسند، ١٣ / ٤٥٩، الرقم: ٧٤٦٩، وابن حبان في الصحيح، ١٤ / ٤٠٢، الرقم: ٦٤٨٢، وابن أبي شيبة في المصنف، ٦ / ٣١٣، الرقم: ٣١٧٠٥، ومالك في المدونة الكبرى، ١ / ١٤٤، والطبراني في المعجم الأوسط، ٢ / ٢٩١، الرقم: ٢٠١٢، وأيضًا في المعجم الصغير، ١ / ١١٥، الرقم: ١٦٧، وأيضًا في المعجم الكبير، ٢ / ٢٢٠، ٢٣١، ٢٣٨، الرقم: ١٩٠٧، ١٩٦١، ١٩٩٥، والطيالسي في المسند، ١ / ١٠٦، الرقم: ٧٨١، والديلمي في مسند الفردوس، ١ / ٥٨، الرقم: ١٦١، والعسقلاني في فتح الباري، ٢ / ٨٩.

الحديث رقم ١٤: أخرجه الترمذي في السنن، كتاب: المناقب، باب: (٦)، ٥ / ٥٩٣، الرقم: ٣٦٢٦، والدارمي في السنن، باب ما أكرم الله به نبيه من إيمان الشجر به والبهائم والجن، ١ / ٣١، الرقم: ٢١، والحاكم في المستدرك، ٢ / ٦٧٧، الرقم: ٤٢٣٨، والمقدسي في الأحاديث المختارة، ٢ / ١٣٤، الرقم: ٥٠٢، والمنذري في الترغيب والترهيب، ٢ / ١٥٠، الرقم: ١٨٨٠، والمزي في تهذيب الكمال، ١٤ / ١٧٥، الرقم: ٣١٠٣، والجرجاني في تاريخ جرجان، ١ / ٣٢٩، الرقم: ٦٠٠.

السَّلَامُ عَلَيْکَ، يَا رَسُوْلَ اللهِ، وَأَنَا أَسْمَعُهُ. رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ.(1)

''हज़रत अ़ली बिन अबू तालिब ﷺ से मरवी है कि मैं मक्का मुकर्रमा में हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के हमराह था। हम मक्का मुकर्रमा की एक जानिब चले तो जो पहाड़ और दरख़्त भी आप ﷺ के सामने आता (वो आप ﷺ की ख़िदमत में यूँ सलाम) अ़र्ज़ करताः ﴿اَلسَّلَامُ عَلَيْکَ يَا رَسُوْلَ اللهِ﴾ (या रसूलल्लाह! आप पर सलाम हो)।''

''एक रिवायत में हज़रत अ़ब्बास ﷺ बयान करते हैं कि मैंने हज़रत अ़ली ﷺ से सुना, फरमायाः मैंने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के साथ फ़लाँ फ़लाँ वादी का सफ़र किया और देखा कि आप ﷺ जिस किसी पत्थर या दरख़्त के पास से गुजरते तो वो यूँ अ़र्ज़ करताः ﴿اَلسَّلَامُ عَلَيْکَ يَا رَسُوْلَ اللهِ﴾ (या रसूलल्लाह! आप पर सलाम हो) और मैं भी यह तमाम (आवाजें) सुन रहा था।''

٥٦٣ / ١٥. عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رضي الله عنهما قَالَ: جَلَسَ نَاسٌ مِنْ أَصْحَابِ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ يَنْتَظِرُوْنَهُ قَالَ: فَخَرَجَ، حَتَّى إِذَا دَنَا مِنْهُمْ سَمِعَهُمْ يَتَذَاكَرُوْنَ فَسَمِعَ حَدِيْثَهُمْ، فَقَالَ بَعْضُهُمْ: عَجَبًا إِنَّ اللهَ ﷻ اتَّخَذَ مِنْ خَلْقِهِ خَلِيْلًا، إِتَّخَذَ إِبْرَاهِيْمَ خَلِيْلًا، وَقَالَ آخَرُ: مَاذَا بِأَعْجَبَ مِنْ كَلَامِ مُوْسَى: كَلَّمَهُ تَكْلِيْمًا، وَقَالَ آخَرُ: فَعِيْسَى كَلِمَةُ اللهِ وَرُوْحُهُ، وَقَالَ آخَرُ: آدَمُ اصْطَفَاهُ اللهُ، فَخَرَجَ عَلَيْهِمْ فَسَلَّمَ وَقَالَ: قَدْ سَمِعْتُ كَلَامَكُمْ وَعَجَبَكُمْ أَنَّ إِبْرَاهِيْمَ خَلِيْلُ اللهِ وَهُوَ كَذَلِکَ وَمُوْسَى نَجِيُّ اللهِ وَهُوَ كَذَلِکَ، وَعِيْسَى رُوْحُ اللهِ وَكَلِمَتُهُ وَهُوَ كَذَلِکَ، وَآدَمُ

---

(١): أخرجه البيهقي في دلائل النبوة، ٢/١٥٤، وابن كثير في شمائل الرسول، ١/٢٥٩، ٢٦٠، وأيضًا في البداية والنهاية، ٣/١٦.

الحديث رقم ١٥: أخرجه الترمذي في السنن، كتاب: المناقب عن رسول الله ﷺ، باب: في فضل النبي ﷺ، ٥/٥٨٧، الرقم: ٣٦١٦، والدارمي في السنن، باب: (٨)، ما أعطي النبي ﷺ من الفضل، ١/٣٩، الرقم: ٤٧.

اصْطَفَاهُ اللهُ وَهُوَ كَذٰلِكَ، أَلا وَأَنَا حَبِيبُ اللهِ وَلَا فَخْرَ، وَأَنَا حَامِلُ لِوَاءِ الْحَمْدِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَلَا فَخْرَ وَأَنَا أَوَّلُ شَافِعٍ وَأَوَّلُ مُشَفَّعٍ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَلَا فَخْرَ وَأَنَا أَوَّلُ مَنْ يُحَرِّكُ حِلَقَ الْجَنَّةِ فَيَفْتَحُ اللهُ لِي فَيُدْخِلُنِيهَا وَمَعِي فُقَرَاءُ الْمُؤْمِنِينَ وَلَا فَخْرَ، وَأَنَا أَكْرَمُ الْأَوَّلِينَ وَالْآخِرِينَ وَلَا فَخْرَ.

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالدَّارِمِيُّ.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رضی اللہ عنہما से मरवी है कि चन्द सहाबा किराम ﷺ हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के इन्तिज़ार में बैठे हुए थे। इतने में हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ तशरीफ़ ले आए जब उनके क़रीब पहुँचे तो उन्हें कुछ गुफ़्तगू करते हुए सुना, उनमें से कुछ ने कहाः क्या ख़ूब! अल्लाह तआ़ला ने अपनी मख़्लूक़ में से हज़रत इब्राहीम عليه السلام को अपना ख़लील बनाया। दूसरे ने कहाः यह हज़रत मूसा عليه السلام के अल्लाह तआ़ला से हम कलाम होने से ज़्यादा बड़ी बात तो नहीं। एक ने कहाः हज़रत ईसा عليه السلام कलीमुल्लाह और रूहुल्लाह हैं। किसी ने कहाः अल्लाह तआ़ला ने हज़रत आदम عليه السلام को चुन लिया। हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ उन के पास तशरीफ़ लाए सलाम किया और फरमायाः मैंने तुम्हारी गुफ्तगू और तुम्हारा इज़्हारे ता'ज्जुब सुना कि हज़रत इब्राहीम عليه السلام ख़लीलुल्लाह हैं। बेशक वो ऐसे ही हैं। हज़रत मूसा नजीउल्लाह हैं, बेशक वो इसी तरह हैं, हज़रत ईसा عليه السلام रूहुल्लाह और कलीमुल्लाह हैं। वाक़ई वो इसी तरह हैं हज़रत आदम عليه السلام को अल्लाह तआ़ला ने चुन लिया। वो भी यक़ीनन ऐसे ही (शरफ़ वाले) हैं। सुन लो! मैं अल्लाह तआ़ला का हबीब हूँ और मुझे इस पर कोई फ़ख़्र नहीं। मैं क़यामत के दिन हम्द का झण्डा उठाने वाला हूँ और मुझे उस पर कोई फ़ख़्र नहीं। क़यामत के दिन सबसे पहला शफ़ाअ़त करने वाला भी मैं ही हूँ और सबसे पहले मेरी ही शफ़ाअ़त क़ुबूल की जाएगी और मुझे इस पर कोई फ़ख़्र नहीं। सबसे पहले जन्नत का कुण्डा खटखटाने वाला भी मैं ही हूँ। अल्लाह तआ़ला मेरे लिए उसे खोलेगा और मुझे उसमें दाख़िल फरमाएगा। मेरे साथ फ़क़ीर और ग़रीब मोमिन होंगे और मुझे इस बात पर कोई फ़ख़्र नहीं। मैं अव्वलीन व आख़िरीन में सब से ज़्यादा इज़्ज़त वाला हूँ लेकिन मुझे इस बात पर कोई फ़ख़्र नहीं।''

٥٦٤ / ١٦. عَنْ أُبَيِّ بْنِ كَعْبٍ ﷺ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: إِذَا كَانَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ كُنْتُ إِمَامَ النَّبِيِّينَ، وَخَطِيبَهُمْ، وَصَاحِبَ شَفَاعَتِهِمْ غَيْرَ فَخْرٍ.

الحديث رقم ١٦: أخرجه الترمذي في السنن، كتاب: المناقب عن رسول الله ﷺ، ←

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَه وَأَحْمَدُ.

وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ.

وَقَالَ الْحَاكِمُ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحُ الْإِسْنَادِ.

''हज़रत अबी बिन का'ब ؓ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया: क़यामत के दिन मैं अंबियाए किराम अ़लैहिस्सलाम का इमाम व ख़तीब और शफ़ी हूँगा और इस पर (मुझे) फ़ख़्र नहीं।''

٥٦٥ / ١٧. عَنْ أَبِي مُوْسَى الْأَشْعَرِيِّ ؓ قَالَ: خَرَجَ أَبُوْ طَالِبٍ إِلَى الشَّامِ، وَخَرَجَ مَعَهُ النَّبِيُّ ﷺ فِي أَشْيَاخٍ مِنْ قُرَيْشٍ، فَلَمَّا أَشْرَفُوْا عَلَى الرَّاهِبِ هَبَطُوْا، فَحَلُّوْا رِحَالَهُمْ، فَخَرَجَ إِلَيْهِمُ الرَّاهِبُ، وَكَانُوْا قَبْلَ ذَلِكَ يَمُرُّوْنَ بِهِ فَلَا يَخْرُجُ إِلَيْهِمْ وَلَا يَلْتَفِتُ، قَالَ: فَهُمْ يَحُلُّوْنَ رِحَالَهُمْ، فَجَعَلَ يَتَخَلَّلُهُمُ الرَّاهِبُ، حَتَّى جَاءَ فَأَخَذَ بِيَدِ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ، فَقَالَ: هَذَا سَيِّدُ الْعَالَمِيْنَ، هَذَا رَسُوْلُ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ، يَبْعَثُهُ اللهُ رَحْمَةً لِّلْعَالَمِيْنَ، فَقَالَ لَهُ أَشْيَاخٌ مِنْ قُرَيْشٍ: مَا عِلْمُكَ؟ فَقَالَ: إِنَّكُمْ حِيْنَ أَشْرَفْتُمْ مِنَ الْعَقَبَةِ لَمْ يَبْقَ شَجَرٌ وَلَا حَجَرٌ إِلَّا خَرَّ سَاجِدًا، وَلَا يَسْجُدَانِ

.... باب: في فضل النبي ﷺ، ٥/ ٥٨٦، الرقم: ٣٦١٣، وابن ماجه في السنن، كتاب: الزهد، باب: ذكر الشفاعة، ٢/ ١٤٤٣، الرقم: ٤٣١٤، وأحمد بن حنبل في المسند، ٥/ ١٣٧،١٣٨، الرقم: ٢١٢٨٣، ٢١٢٩٠، والحاكم في المستدرك، ١/ ١٤٣، الرقم: ٢٤٠، ٦٩٦٩، وعبد بن حميد في المسند، ١/ ٩٠، الرقم: ١٧١، والمقدسي في الأحاديث المختارة، ٣/ ٣٨٥، الرقم: ١١٧٩، والمزي في تهذيب الكمال، ٣/ ١١٨.

الحديث رقم ١٧: أخرجه الترمذي في السنن، كتاب: المناقب عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء في نبوة النبي ﷺ، ٥/ ٥٩٠، الرقم: ٣٦٢٠، وابن أبي شيبة في المصنف، ٦/ ٣١٧، الرقم: ٣١٧٣٣، ٣٦٥٤١، وابن حبان في الثقات، ١/ ٤٢، والأصبهاني في دلائل النبوة، ١/ ٤٥، الرقم: ١٩، والطبري في تاريخ الأمم والملوك، ١/ ٥١٩.

إِلَّا لِنَبِيٍّ، وَإِنِّي أَعْرِفُهُ بِخَاتَمِ النُّبُوَّةِ أَسْفَلَ مِنْ غُضْرُوْفِ كَتِفِهِ مِثْلَ التُّفَاحَةِ، ثُمَّ رَجَعَ فَصَنَعَ لَهُمْ طَعَامًا، فَلَمَّا أَتَاهُمْ بِهِ، وَكَانَ هُوَ فِي رِعْيَةِ الْإِبِلِ، قَالَ: أَرْسِلُوْا إِلَيْهِ، فَأَقْبَلَ وَعَلَيْهِ غَمَامَةٌ تُظِلُّهُ. فَلَمَّا دَنَا مِنَ الْقَوْمِ وَجَدَهُمْ قَدْ سَبَقُوْهُ إِلَى فَيْءِ الشَّجَرَةِ، فَلَمَّا جَلَسَ مَالَ فَيْءُ الشَّجَرَةِ عَلَيْهِ، فَقَالَ: انْظُرُوْا إِلَى فَيْءِ الشَّجَرَةِ مَالَ عَلَيْهِ...... قَالَ: أَنْشُدُكُمْ بِاللهِ أَيُّكُمْ وَلِيُّهُ؟ قَالُوْا: أَبُوْ طَالِبٍ. فَلَمْ يَزَلْ يُنَاشِدُهُ حَتَّى رَدَّهُ أَبُوْ طَالِبٍ.

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ أَبِي شَيْبَةَ وَابْنُ حِبَّانَ.

''हज़रत अबू मूसा अश्अरी ﷺ से मरवी है कि हज़रत अबू तालिब रुअसाए क़ुरैश (क़ुरैश के अमीर लोग) के हमराह शाम के सफ़र पर रवाना हुए तो हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ भी आप के हमराह थे। जब राहिब के पास पहुँचे वो सवारियों से उतरे और उन्होंने अपने कजावे खोल दिए राहिब उनकी तरफ़ आ निकला हालांकि (रुअसाए क़ुरैश) इससे पहले भी उसके पास से गुजरा करते थे लेकिन वो उन के पास नहीं आता था और न ही उनकी तरफ़ कोई तवज्जोह करता था। हज़रत अबू मूसा ﷺ फरमाते हैं कि लोग अभी कजावे (ऊँटों की काठियाँ) खोल ही रहे थे कि वो राहिब उनके दरमियान चलने लगा यहाँ तक कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के क़रीब पहुँचा और आप ﷺ का दस्ते अक़दस पकड़ कर कहाः यह तमाम जहानों के सरदार और रब्बुल आलमीन के रसूल हैं। अल्लाह तआला इन्हें तमाम जहानों के लिए रहमत बना कर मबऊस फरमाएगा। रुअसाए क़ुरैश ने उससे पूछा कि आप यह सब कैसे जानते हैं ? उसने कहाः जब तुम लोग घाटी से नुमूदार हुए तो कोई पत्थर और दरख़्त ऐसा नहीं था जो सज्दे में न गिर पड़ा हो। और वो सिर्फ नबी ही को सज्दा करते हैं नीज़ मैं इन्हें मुहरे नबुव्वत से भी पहचानता हूँ जो इनके कंधे की हड्डी के नीचे सेब की मिस्ल है। फिर वो वापस चला गया और उसने उन लोगों के लिए खाना तैयार किया। जब वो खाना ले आया तो आप ﷺ ऊँटों की चरागाह में थे। राहिब ने कहा उन्हें बुला लो। आप ﷺ तशरीफ़ लाए तो आप के सरे अनवर पर बादल साया फ़िगन था और जब आप लोगों के क़रीब पहुँचे तो देखा कि तमाम लोग (पहले से ही) दरख़्त के साए में पहुँच चुके हैं लेकिन जैसे ही आप ﷺ तशरीफ़ फरमा हुए तो साया आप ﷺ की तरफ़ झुक गया। राहिब ने कहा : दरख़्त के साए को देखो वो आप ﷺ पर झुक गया है। फिर राहिब ने कहाः मैं तुम्हें ख़ुदा की क़सम दे कर पूछता हूँ कि इनके सरपरस्त कौन हैं? उन्होंने कहा : अबू

तालिब! चुनान्चे वो हज़रत अबू तालिब को मुसल्सल वास्ता देता रहा (कि उन्हें वापस भेज दें) यहाँ तक कि हज़रत अबू तालिब ने आप ﷺ को वापस (मक्का मुकर्रमा) भिजवा दिया।''

٥٦٦ / ١٨۔ عَنْ أَنَسٍ رضي الله عنه أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ أُتِيَ بِالْبُرَاقِ لَيْلَةَ أُسْرِيَ بِهِ مُلْجَمًا مُسْرَجًا، فَاسْتَصْعَبَ عَلَيْهِ، فَقَالَ لَهُ جِبْرِيْلُ: أَبِمُحَمَّدٍ تَفْعَلُ هٰذَا؟ قَالَ: فَمَا رَكِبَكَ أَحَدٌ أَكْرَمُ عَلَى اللهِ مِنْهُ. قَالَ: فَارْفَضَّ عَرَقًا.

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَحْمَدُ وَأَبُوْيَعْلَى وَابْنُ حِبَّانَ.

وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هٰذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ.

''हज़रत अनस रضي الله عنه रिवायत फरमाते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की ख़िदमत में शबे मेअ़राज बुर्राक़ लाया गया जिस पर ज़ीन कसी हुई थी और लगाम डाली हुई थी। (हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की सवारी बनने की ख़ुशी में) इस बुर्राक़ के रक़्स की वजह से आप ﷺ का उस पर सवार होना मुश्किल हो गया तो हज़रत जिब्राईल عليه السلام ने उसे कहा! तू हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के साथ क्या इस तरह कर रहा है? हालांकि आज तक तुझ पर कोई ऐसा शख़्स सवार नहीं हुआ जो अल्लाह तआ़ला की बारगाह में आप ﷺ जैसा मुअ़ज़्ज़ज़ व मुहतरम हो, यह सुन कर वो बुर्राक़ शर्म से पसीना–पसीना हो गया।''

٥٦٧ / ١٩۔ عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ رضي الله عنه قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: أَنَا سَيِّدُ

الحديث رقم ١٨: أخرجه الترمذي في السنن، كتاب: تفسير القرآن عن رسول الله ﷺ، باب: ومن سورة بني اسرائيل، ٥ / ٣٠١، الرقم: ٣١٣١، وأحمد بن حنبل في المسند، ٣ / ١٦٤، الرقم: ١٢٦٩٤، وابن حبان في الصحيح، ١ / ٢٣٤، وأبو يعلى في المسند، ٥ / ٤٥٩، الرقم: ٣١٨٤، وعبد بن حميد في المسند، ١ / ٣٥٧، الرقم: ١١٨٥، والمقدسي في الأحاديث المختارة، ٧ / ٢٣، الرقم: ٢٤٠٤، والخطيب البغدادي في تاريخ بغداد، ٣ / ٤٣٥، الرقم: ١٥٧٤، والعسقلاني في فتح الباري، ٧ / ٢٠٦۔

الحديث رقم ١٩: أخرجه الترمذي في السنن، كتاب: تفسير القرآن عن رسول الله ﷺ، باب: ومن سورة بني إسرائيل، ٥ / ٣٠٨، الرقم: ٣١٤٨، وابن ماجه في السنن، كتاب: الزهد، باب: ذكر الشفاعة، ٢ / ١٤٤٠، الرقم: ٤٣٠٨، وأحمد بن حنبل في المسند، ٣ / ٢، الرقم: ١١٠٠٠، واللالكائي في اعتقاد أهل السنة، ٤ / ٧٨٨، الرقم: ١٤٥٥، والمنذري في الترغيب والترهيب، ٤ / ٢٣٨، الرقم: ٥٥٠٩۔

وَلَدِ آدَمَ يَومَ الْقِيَامَةِ وَلَا فَخْرَ، وَبِيَدِي لِوَاءُ الْحَمْدِ وَلَا فَخْرَ، وَمَا مِنْ نَبِيٍّ يَوْمَئِذٍ آدَمَ فَمَنْ سِوَاهُ إِلَّا تَحْتَ لِوَائِي، وَأَنَا أَوَّلُ مَنْ تَنْشَقُّ عَنْهُ الْأَرْضُ وَلَا فَخْرَ، قَالَ: فَيَفْزَعُ النَّاسُ ثَلَاثَ فَزَعَاتٍ فَيَأْتُونَ آدَمَ ......فذكر الحديث إلى أن قَالَ: فَيَأْتُونَنِي فَأَنْطَلِقُ مَعَهُمْ، قَالَ ابْنُ جُدْعَانَ: قَالَ أَنَسٌ ﷺ: فَكَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَى رَسُوْلِ اللهِ ﷺ قَالَ: فَآخُذُ بِحَلْقَةِ بَابِ الْجَنَّةِ فَأُقَعْقِعُهَا فَيُقَالُ: مَنْ هَذَا؟ فَيُقَالُ: مُحَمَّدٌ فَيَفْتَحُوْنَ لِي وَيُرَحِّبُوْنَ بِي فَيَقُولُونَ: مَرْحَبًا فَأَخِرُّ سَاجِدًا فَيُلْهِمُنِيَ اللهُ مِنَ الثَّنَاءِ وَالْحَمْدِ فَيُقَالُ لِي: ارْفَعْ رَأْسَكَ وَسَلْ تُعْطَ وَاشْفَعْ تُشَفَّعْ وَقُلْ يُسْمَعْ لِقَوْلِكَ وَهُوَ الْمَقَامُ الْمَحْمُودُ الَّذِي قَالَ اللهُ: ﴿عَسٰى أَنْ يَّبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَحْمُوْدًا﴾ [الإسراء، ١٧: ٧٩]. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ.

وَقَالَ أَبُوْ عِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ.

وروى ابن ماجه عنه قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: أَنَا سَيِّدُ وَلَدِ آدَمَ وَلَا فَخْرَ، وَأَنَا أَوَّلُ مَنْ تَنْشَقُّ الْأَرْضُ عَنْهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَلَا فَخْرَ، وَأَنَا أَوَّلُ شَافِعٍ، وَأَوَّلُ مُشَفَّعٍ وَلَا فَخْرَ، وَلِوَاءُ الْحَمْدِ بِيَدِي يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَلَا فَخْرَ.

''हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः रोज़े क़यामत (तमाम) औलादे आदम का क़ाइद हूँगा और मुझे (इस पर) फ़ख्र नहीं, हम्द का झण्डा मेरे हाथ में होगा और कोई फ़ख्र नहीं। हज़रत आदम ﷺ और दीगर तमाम अंबियाए किराम उस दिन मेरे झण्डे के नीचे होंगे और मुझे इस पर फ़ख्र नहीं, और मैं पहला शख़्स हूँगा जिससे जमीन शक़ होगी (फटेगी) और कोई फ़ख्र नहीं। आप ﷺ ने फरमायाः लोग तीन बार खौफ़ज़दा होंगे फिर वो हज़रत आदम ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हो कर शफ़ाअत की दरख़्वास्त करेंगे। फिर मुकम्मल हदीस बयान की यहाँ तक कि फरमायाः फिर लोग मेरे पास आएंगे (और) मैं उनके साथ (उनकी शफ़ाअत के लिए) चलूँगा। इब्ने जुदआन (रावी) कहते हैं कि

हज़रत अनस ﷺ ने फरमायाः गोया कि मैं अब भी हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ को देख रहा हूँ। आप ﷺ ने फरमायाः मैं जन्नत के दरवाज़े की ज़ंजीर खटखटाऊँगा, पूछा जाएगाः कौन ? जवाब दिया जाएगाः हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा ﷺ। चुनान्चे वो मेरे लिए दरवाज़ा खोलेंगे और मरहबा कहेंगे। मैं (बारगाहे इलाही में) सज्दा रेज़ हो जाऊँगा तो अल्लाह तआ़ला मुझ पर अपनी हम्द व सना का कुछ हिस्सा इल्हाम फरमाएगा। मुझे कहा जाएगाः सर उठाइये, माँगें अ़ता किया जाएगा। शफ़ाअ़त कीजिये, क़ुबूल की जाएगी, और कहें आप की बात सुनी जाएगी। (आप ﷺ ने फरमायाः) यही वो मक़ाम महमूद है जिसके बारे में अल्लाह तआ़ला ने फरमायाः ''यकीनन आप का रब आप को मक़ामे महमूद पर फ़ाइज़ फरमाएगा।''

और इमाम इब्ने माजा ने भी हज़रत अबू सईद खुदरी ﷺ से रिवायत किया उन्होंने बयान फरमाया कि आप ﷺ ने फरमायाः मैं औलादे आदम का सरदार हूँगा और इस पर भी फ़ख्र नहीं, क़यामत के रोज़ सब से पहले मेरी ज़मीन शक़ होगी (फटेगी) उस पर भी फ़ख्र नहीं, सबसे पहले मैं शफ़ाअ़त करूँगा और उस पर पहले मेरी शफ़ाअ़त क़ुबूल होगी इस पर भी फ़ख्र नहीं और हम्दे बारी तआ़ला का झण्डा क़यामत के दिन मेरे ही हाथ में होगा और इस पर भी फ़ख्र नहीं।''

٥٦٨ / ٢٠ـ عَنْ أَبِي أُمَامَةَ ﷺ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: إِنَّ اللهَ فَضَّلَنِي عَلَى الْأَنْبِيَاءِ أَوْ قَالَ: أُمَّتِي عَلَى الْأُمَمِ وَأَحَلَّ لِيَ الْغَنَائِمَ.

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالطَّبَرَانِيُّ وَالْبَيْهَقِيُّ.

وَقَالَ أَبُوْ عِيْسَى: حَدِيْثُ أَبِي أُمَامَةَ حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ.

''इमाम अबू उमामा ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः अल्लाह तआ़ला ने मुझे तमाम अंबिया से ज़्यादा फ़ज़ीलत अ़ता फरमाई या फरमायाः मेरी उम्मत को दीगर तमाम उम्मतों पर फ़ज़ीलत अ़ता की और मेरे लिए माले ग़नीमत को हलाल फरमा दिया।''

الحديث رقم ٢٠: أخرجه الترمذي في السنن، كتاب: السير عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء في الغنيمة، ٤ / ١٢٣، الرقم: ١٥٥٣، والطبراني نحوه في المعجم الكبير، ٨ / ٢٥٧، الرقم: ٨٠٠١، والروياني في المسند، ٢ / ٣٠٨، الرقم: ١٢٦٠، والبيهقي في السنن الكبرى، ١ / ٢٢٢، الرقم: ٩٩٩، وفي السنن الصغرى، ١ / ١٨٠، الرقم: ٢٤٥، والهيثمي في مجمع الزوائد، ١٠ / ١٦.

٥٦٩ / ٢١۔ عَنْ أَنَسٍ رضي الله عنه قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: أَنَا أَوَّلُهُمْ خُرُوْجًا وَأَنَا قَائِدُهُمْ إِذَا وَفَدُوْا، وَأَنَا خَطِيْبُهُمْ إِذَا أَنْصَتُوْا، وَأَنَا مُشَفِّعُهُمْ إِذَا حُبِسُوْا، وَأَنَا مُبَشِّرُهُمْ إِذَا أَيِسُوْا. اَلْكَرَامَةُ وَالْمَفَاتِيْحُ يَوْمَئِذٍ بِيَدِي وَأَنَا أَكْرَمُ وَلَدِ آدَمَ عَلَى رَبِّي، يَطُوْفُ عَلَيَّ أَلْفُ خَادِمٍ كَأَنَّهُمْ بَيْضٌ مَكْنُوْنٌ أَوْ لُؤْلُؤٌ مَنْثُوْرٌ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالدَّارِمِيُّ وَاللَّفْظُ لَهُ.

''हज़रत अनस रضي الله عنه से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः सबसे पहले मैं (अपनी क़ब्रे अनवर से) निकलूँगा और जब लोग वफ़्द (नुमाइन्दों की जमाअ़त) बन कर जाएंगे तो मैं ही उन का क़ाइद हूँगा और जब वो ख़ामोश होंगे तो मैं ही उनका ख़तीब हूँगा। मैं ही उनकी शफ़ाअ़त करने वाला हूँ जब वो रोक दिए जाएंगे, और मैं ही उन्हें ख़ुशख़बरी देने वाला हूँ। जब वो मायूस हो जाएंगे। बुज़ुर्गी और जन्नत की चाबियाँ उस रोज़ मेरे हाथ में होंगी। मैं अपने रब के यहाँ औलादे आदम में सबसे ज्यादा मुकर्रम हूँ मेरे इर्द गिर्द उस रोज़ हज़ार ख़ादिम फिरेंगे गोया की वो पोशीदा हुस्न हैं या बिखरे हुए मोती हैं।''

٥٧٠ / ٢٢۔ عَنْ عَمْرِو بْنِ قَيْسٍ رضي الله عنه أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: نَحْنُ الْآخِرُوْنَ، وَنَحْنُ السَّابِقُوْنَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، وَإِنِّي قَائِلٌ قَوْلًا غَيْرَ فَخْرٍ: إِبْرَاهِيْمُ خَلِيْلُ اللهِ، وَمُوْسَى صَفِيُّ اللهِ، وَأَنَا حَبِيْبُ اللهِ، وَمَعِي لِوَاءُ الْحَمْدِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، وَإِنَّ اللهَ عزوجل وَعَدَنِي فِي أُمَّتِي، وَأَجَارَهُمْ مِنْ ثَلَاثٍ: لَا

الحديث رقم ٢١: أخرجه الترمذي في السنن، كتاب: المناقب عن رسول الله ﷺ، باب: في فضل النبي ﷺ، ٥ / ٥٨٥، الرقم: ٣٦١٠، والدارمي في السنن، باب: ما أعطي النبي ﷺ من الفضل، ١ / ٣٩، الرقم: ٤٨، والخلال في السنة، ١ / ٢٠٨، الرقم: ٢٣٥، والديلمي في مسند الفردوس، ١ / ٤٧، الرقم: ١١٧، والقزويني في التدوين في أخبار قزوين، ١ / ٢٣٥، وابن الجوزي في صفة الصفوة، ١ / ١٨٢، والمناوي في فيض القدير، ٣ / ٤٠.

الحديث رقم ٢٢: أخرجه الدارمي في السنن باب: ما أعطي النبي ﷺ من الفضل، ١ / ٤٢، الرقم: ٥٤، والمباركفوري في تحفة الأحوذي، ٦ / ٣٢٣.

يَعُمُّهُمْ بِسَنَةٍ، وَلَا يَسْتَأْصِلُهُمْ عَدُوٌّ، وَلَا يَجْمَعُهُمْ عَلَى ضَلَالَةٍ. رَوَاهُ الدَّارِمِيُّ.

''ह़ज़रत अ़म्र बिन क़ैस ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः हम आख़िर में आने वाले और क़यामत के दिन सबसे सबक़त ले जाने वाले हैं। मैं बग़ैर किसी फ़ख़्र के यह बात कहता हूँ कि ह़ज़रत इब्राहीम ﷺ ख़लीलुल्लाह हैं और ह़ज़रत मूसा ﷺ सफ़ीउल्लाह हैं और मैं हबीबुल्लाह हूँ। क़यामत के दिन हम्द का झण्डा मेरे हाथ में होगा। अल्लाह तआ़ला ने मुझसे मेरी उम्मत के मुतअ़ल्लिक़ वादा कर रखा है और तीन बातों से उसे (उम्मत को) बचाया है। ऐसा क़हत उन पर नहीं आएगा जो पूरी उम्मत का अहाता कर ले और कोई दुश्मन उसे जड़ से नहीं उखाड़ सकेगा और (अल्लाह तआ़ला) उन्हें कभी गुमराही पर जमा नहीं फरमाएगा।

٥٧١ / ٢٣۔ عَنْ جَابِرٍ ﷺ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: أَنَا قَائِدُ الْمُرْسَلِيْنَ وَلَا فَخْرَ، وَأَنَا خَاتَمُ النَّبِيِّيْنَ وَلَا فَخْرَ، وَأَنَا أَوَّلُ شَافِعٍ وَمُشَفَّعٍ وَلَا فَخْرَ.

رَوَاهُ الدَّارِمِيُّ وَالطَّبَرَانِيُّ وَالْبَيْهَقِيُّ.

''ह़ज़रत जाबिर ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः मैं (तमाम) रसूलों का क़ाइद हूँ और यह (कि मुझे इस पर) फ़ख़्र नहीं और मैं ख़ातिमुन–नबिय्यीन हूँ और (मुझे इस पर) कोई फ़ख़्र नहीं है। मैं पहला शफ़ाअ़त करने वाला हूँ और मैं ही वो पहला (शख़्स) हूँ जिसकी शफ़ाअ़त क़ुबूल होगी और (मुझे इस पर) कोई फ़ख़्र नहीं है।''

٥٧٢ / ٢٤۔ عَنْ نُبَيْهِ بْنِ وَهْبٍ ﷺ أَنَّ كَعْبًا دَخَلَ عَلَى عَائِشَةَ رضي الله عنها، فَذَكَرُوْا رَسُوْلَ اللهِ ﷺ فَقَالَ كَعْبٌ: مَا مِنْ يَوْمٍ يَطْلُعُ إِلَّا نَزَلَ

الحديث رقم ٢٣: أخرجه الدارمي في السنن، باب: ما أعطي النبي ﷺ من الفضل، ١ / ٤٠، الرقم: ٤٩، والطبراني في المعجم الأوسط، ١ / ٦١، الرقم: ١٧٠، والبيهقي في كتاب الاعتقاد، ١ / ١٩٢، والهيثمي في مجمع الزوائد، ٨ / ٢٥٤، والذهبي في سير أعلام النبلاء، ١٠ / ٢٢٣، والمناوي في فيض القدير، ٣ / ٤٣۔

الحديث رقم ٢٤: أخرجه الدارمي في السنن، (٥) باب: ما أكرم الله تعالى نبيه بعد موته، ١ / ٥٧، الرقم: ٩٤، وأبو نعيم في حلية الأولياء، ٥ / ٣٩٠، والبيهقي في شعب الإيمان، ٣ / ٤٩٢، الرقم: ٤١٧٠، وابن حيان في العظمة، ٣ / ١٠١٨، الرقم: ٥٣٧، وابن كثير في تفسير القرآن العظيم، في قول الله تعالى: هو الذي يصلي عليكم وملائكته...الخ، ٣ / ٥١٨۔

سَبْعُوْنَ أَلْفًا مِنَ الْمَلَائِكَةِ حَتَّى يَحُفُّوْا بِقَبْرِ النَّبِيِّ ﷺ يَضْرِبُوْنَ بِأَجْنِحَتِهِمْ، وَيُصَلُّوْنَ عَلَى رَسُوْلِ اللهِ ﷺ، حَتَّى إِذَا أَمْسَوْا عَرَجُوْا وَهَبَطَ مِثْلُهُمْ فَصَنَعُوْا مِثْلَ ذَلِكَ، حَتَّى إِذَا انْشَقَّتْ عَنْهُ الْأَرْضُ خَرَجَ فِي سَبْعِيْنَ أَلْفًا مِنَ الْمَلَائِكَةِ يَزِفُّوْنَهُ. رَوَاهُ الدَّارِمِيُّ وَأَبُوْ نُعَيْمٍ وَالْبَيْهَقِيُّ.

''हज़रत नबीह बिन वहब ﷺ से मरवी है कि हज़रत का'ब अहबार ﷺ हज़रत आइशा رضي الله عنها की ख़िदमत में हाज़िर हुए और उन्होंने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ का ज़िक्र किया। हज़रत का'ब ﷺ ने कहा: जब भी दिन निकलता है सत्तर हज़ार फ़रिश्ते उतरते हैं और वो हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की क़ब्रे अक़दस को घेर लेते हैं और क़ब्रे अक़दस पर अपने पर मारते हैं (यानी अपने परों से झाड़ू देते हैं) और हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ पर दुरूद (व सलाम) भेजते हैं और शाम होते ही वापस आसमानों पर चले जाते हैं और इतने ही मज़ीद उतरते हैं और वो भी दिन वाले फ़रिश्तों की तरह का अमल दोहराते हैं। हत्ता कि जब हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की कब्रे मुबारक (रोज़े क़यामत) शक़ होगी (फटेगी) तो आप ﷺ सत्तर हज़ार फ़रिश्तों के झुरमुट में (मैदाने हश्र में) तशरीफ़ लाएंगे।''

٥٧٣ / ٢٥۔ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رضي الله عنهما قَالَ: أَوْحَى اللهُ إِلَى عِيْسَى عليه السلام، يَا عِيْسَى، آمِنْ بِمُحَمَّدٍ وَأْمُرْ مَنْ أَدْرَكَهُ مِنْ أُمَّتِكَ أَنْ يُؤْمِنُوْا بِهِ فَلَوْلَا مُحَمَّدٌ مَا خَلَقْتُ آدَمَ وَلَوْلَا مُحَمَّدٌ مَا خَلَقْتُ الْجَنَّةَ وَلَا النَّارَ. وَلَقَدْ خَلَقْتُ الْعَرْشَ عَلَى الْمَاءِ فَاضْطَرَبَ فَكَتَبْتُ عَلَيْهِ لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ مُحَمَّدٌ رَسُوْلُ اللهِ فَسَكَنَ. رَوَاهُ الْحَاكِمُ وَالْخَلَّالُ.

وَقَالَ الْحَاكِمُ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحُ الإِسْنَادِ وَ وَافَقَهُ الذَّهَبِيُّ.

الحديث رقم ٢٥: أخرجه الحاكم في المستدرك، ٢ / ٦٧١، الرقم: ٤٢٢٧، والخلال في السنة، ١ / ٢٦١، الرقم: ٣١٦، والذهبي في ميزان الاعتدال، ٥ / ٢٩٩، الرقم: ٦٣٣٦، والعسقلاني في لسان الميزان، ٤ / ٣٥٤، الرقم: ١٠٤٠، و ابن حيان في طبقات المحدثين بأصبهان، ٣ / ٢٨٧۔

"हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رضي الله عنهما से रिवायत है कि अल्लाह तबारक व तआ़ला ने हज़रत ईशा عليه السلام पर वही नाज़िल फरमाई ऐ ईसा! हज़रत मुहम्मद ﷺ पर ईमान ले आओ और अपनी उम्मत को भी हुक्म दो कि जो भी उनका ज़माना पाए तो (ज़रूर) उन पर ईमान लाए (जान लो!) अगर मुहम्मद ﷺ न होते तो मैं हज़रत आदम عليه السلام को भी पैदा न करता। और अगर मुहम्मद मुस्तफ़ा ﷺ ना होते तो मैं ना जन्नत पैदा करता और ना दोज़ख़, जब मैंने पानी पर अ़र्श बनाया तो उसमें लरज़िश पैदा हो गई, लिहाज़ा मैंने उस पर "لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَسُوْلُ اللّٰهِ" लिख दिया तो वो ठहर गया।"

فَصْلٌ فِي أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ حَيٌّ فِي قَبْرِهٖ بِرُوْحِهٖ وَجَسَدِهٖ

हुज़ूर ﷺ का रोज़ए अनवर में अपनी रूह मुबारक और जसदे अक़्दस के साथ ज़िन्दा होने का बयान

٥٧٤ / ٢٦۔ عَنْ أَوْسِ بْنِ أَوْسٍ رضي الله عنه قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّ مِنْ أَفْضَلِ أَيَّامِكُمْ يَوْمَ الْجُمُعَةِ، فِيْهِ خُلِقَ آدَمُ، وَفِيْهِ قُبِضَ، وَفِيْهِ النَّفْخَةُ، وَفِيْهِ الصَّعْقَةُ، فَأَكْثِرُوْا عَلَيَّ مِنَ الصَّلَاةِ فِيْهِ، فَإِنَّ صَلَاتَكُمْ مَعْرُوْضَةٌ

الحديث رقم ٢٦: أخرجه أبو داود في السنن، كتاب: الصلاة، باب: فضل يوم الجمعة وليلة الجمعة، ١ / ٢٧٥، الرقم: ١٠٤٧، وأيضًا في باب: في الاستغفار، ٢ / ٨٨، الرقم: ١٥٣١، والنسائي في السنن، كتاب: الجمعة، باب: بإكثار الصلاة على النبي ﷺ يوم الجمعة، ٣ / ٩١، الرقم: ١٣٧٤، وأيضًا في السنن الكبرى، ١ / ٥١٩، الرقم: ١٦٦٦، وابن ماجه في السنن، كتاب: إقامة الصلاة، باب: في فضل الجمعة، ١ / ٣٤٥، الرقم: ١٠٨٥، والدارمي في السنن، ١ / ٤٤٥، الرقم: ١٥٧٢، وأحمد بن حنبل في المسند، ٤ / ٨، الرقم: ١٦٢٠٧، وابن أبي شيبة في المصنف، ٢ / ٢٥٣، الرقم: ٨٦٩٧، وابن خزيمة في الصحيح، ٣ / ١١٨، الرقم: ١٧٣٣-١٧٣٤، وابن حبان في الصحيح، ٣ / ١٩٠، الرقم: ٩١٠، والحاكم في المستدرك، ١ / ٤١٣، الرقم: ١٠٢٩، والبزار في المسند، ٨ / ٤١١، الرقم: ٣٤٨٥، والطبراني في المعجم الأوسط، ٥ / ٩٧، الرقم: ٤٧٨٠، وأيضًا في المعجم الكبير، ١ / ٢٦١، الرقم: ٥٨٩، والبيهقي في السنن الصغرى، ١ / ٣٧١، الرقم: ٦٣٤، وأيضًا في السنن الكبرى، ٣ / ٢٤٨، الرقم: ٥٧٨٩، وأيضًا في شعب الإيمان، ٣ / ١٠٩، الرقم: ٣٠٢٩، وأيضًا في فضائل الأوقات / ٤٩٧، ٢٧٥، والجهضمي في فضل الصلاة على النبي ﷺ، ١ / ٣٧، الرقم: ٢٢، والوادياشي في تحفة المحتاج، ١ / ٥٢٤، الرقم: ٦٦١، والعسقلاني في فتح الباري، ١١ / ٣٧٠، والعجلوني في كشف الخفاء، ١ / ١٩٠، الرقم: ٥٠١.

عَلَيَّ، قَالَ: قَالُوْا: يَا رَسُوْلَ اللهِ، كَيْفَ تُعْرَضُ صَلَاتُنَا عَلَيْکَ وَقَدْ أَرِمْتَ؟ قَالَ: يَقُوْلُوْنَ: بَلِيْتَ. قَالَ: إِنَّ اللهَ ﷻ حَرَّمَ عَلَى الْأَرْضِ أَجْسَادَ الْأَنْبِيَاءِ.

وفي رواية: فَقَالَ: إِنَّ اللهَ جَلَّ وَعَلَا حَرَّمَ عَلَى الْأَرْضِ أَنْ تَأْكُلَ أَجْسَامَنَا.

رَوَاهُ أَبُوْ دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجه وَالدَّارِمِيُّ وَأَحْمَدُ وَابْنُ خُزَيْمَةَ.

وَقَالَ الْحَاكِمُ: هٰذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحٌ عَلَى شَرْطِ الْبُخَارِيِّ. وَقَالَ الْوَادِيَاشِيُّ: صَحَّحَهُ ابْنُ حِبَّانَ. وَقَالَ الْعَسْقَلَانِيُّ: وَصَحَّحَهُ ابْنُ خُزَيْمَةَ. وَقَالَ الْعَجْلُوْنِيُّ: رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ بِإِسْنَادٍ جَيِّدٍ. وَقَالَ ابْنُ كَثِيْرٍ: تَفَرَّدَ بِهِ أَبُوْ دَاوُدَ وَصَحَّحَهُ النَّوَوِيُّ فِي الْأَذْكَارِ. وَقَالَ الشَّوْكَانِيُّ: رَوَاهُ الْخَمْسَةُ إِلَّا التِّرْمِذِيُّ.

''हज़रत औस बिन औस ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः बेशक तुम्हारे दिनों में से जुम्आ का दिन सबसे बेहतर है इस दिन हज़रत आदम ﷺ पैदा हुए और इसी दिन उन्होंने वफ़ात पाई और इसी दिन सूर फूँका जाएगा और इसी दिन सख़्त आवाज़ ज़ाहिर होगी। पस इस दिन मुझ पर कसरत से दुरूद भेजा करो क्योंकि तुम्हारा दुरूद मुझ पर पेश किया जाता है। सहाबा किराम ﷺ ने अ़र्ज़ कियाः या रसूलल्लाह! हमारा दुरूद आप के विसाल के बाद आप को कैसे पेश किया जाएगा ? जबकि आप का जसदे मुबारक ख़ाक़ में मिल चुका होगा ? तो आप ﷺ ने फरमायाः (नहीं ऐसा नहीं है) बेशक अल्लाह तआला ने ज़मीन पर अंबिया–ए–किराम (عليهم السلام) के जिस्मों को (खाना या किसी भी क़िस्म का नुक़सान पहुँचाना) हराम कर दिया है।''

''और एक रिवायत में है कि आप ﷺ ने फरमायाः बेशक अल्लाह तआला बुज़ुर्गो बरतर ने ज़मीन पर हराम क़रार दिया है कि वो हमारे जिस्मों को खाए।''

٥٧٥ / ٢٧۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَا مِنْ أَحَدٍ

الحديث رقم ٢٧: أخرجه أبو داود في السنن، كتاب: المناسك، باب زيارة القبور، ٢/ ٢١٨، الرقم: ٢٠٤١، وأحمد بن حنبل في المسند، ٢/ ٥٢٧، الرقم: ١٠٨٦٧، ــــ

يُسَلِّمُ عَلَيَّ إِلَّا رَدَّ اللهُ عَلَيَّ رُوْحِي، حَتَّى أَرُدَّ عَلَيْهِ السَّلَامَ.

رَوَاهُ أَبُوْ دَاوُدَ وَأَحْمَدُ وَالطَّبَرَانِيُّ وَالْبَيْهَقِيُّ. وَقَالَ الْعَسْقَلَانِيُّ: رَوَاهُ أَبُوْ دَاوُدَ وَرُوَاتُهُ ثِقَاتٌ. وَقَالَ الْهَيْثَمِيُّ: وَفِيْهِ عَبْدُ اللهِ بْنُ يَزِيْدَ الإِسْكَنْدَرَانِيُّ وَلَمْ أَعْرِفْهُ وَمَهْدِيُّ بْنُ جَعْفَرٍ ثِقَةٌ......وَبَقِيَّةُ رِجَالِهِ ثِقَاتٌ.

''हज़रत अबू हुरैरा ؓ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः कोई भी शख़्स मुझ पर सलाम भेजता है तो बेशक अल्लाह तआला ने मुझ पर मेरी रूह लौटा दी हुई है। (और मेरी तवज्जोह उसकी तरफ़ मबज़ूल फरमाता है) यहाँ तक कि मैं उसके सलाम का जवाब देता हूँ।''

٥٧٦ / ٢٨۔ عَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ ؓ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: أَكْثِرُوْا الصَّلَاةَ عَلَيَّ يَوْمَ الْجُمُعَةِ فَإِنَّهُ مَشْهُوْدٌ تَشْهَدُهُ الْمَلَائِكَةُ وَإِنَّ أَحَدًا لَنْ يُصَلِّيَ عَلَيَّ إِلَّا عُرِضَتْ عَلَيَّ صَلَاتُهُ حَتَّى يَفْرُغَ مِنْهَا قَالَ: قُلْتُ: وَبَعْدَ الْمَوْتِ؟ قَالَ: وَبَعْدَ الْمَوْتِ إِنَّ اللهَ حَرَّمَ عَلَى الْأَرْضِ أَنْ تَأْكُلَ أَجْسَادَ الْأَنْبِيَاءِ فَنَبِيُّ اللهِ حَيٌّ يُرْزَقُ. رَوَاهُ ابْنُ مَاجَه بِإِسْنَادٍ صَحِيْحٍ.

وَقَالَ الْمُنْذِرِيُّ: رَوَاهُ ابْنُ مَاجَه بِإِسْنَادٍ جَيِّدٍ. وَقَالَ الْمُنَاوِيُّ: قَالَ

.... والطبراني في المعجم الأوسط، ٣/٢٦٢، الرقم: ٣٠٩٢، ٩٣٢٩، والبيهقي في السنن الكبرى، ٥/٢٤٥، الرقم: ١٠٠٥٠، وأيضًا في شعب الإيمان، ٢/٢١٧، الرقم: ٥١٨١۔ ٤١٦١، وابن راهويه في المسند، ١/٤٥٣، الرقم: ٥٢٦، والمنذري في الترغيب والترهيب، ٢/٣٢٦، الرقم: ٢٥٧٣، والهيثمي في مجمع الزوائد، ١٠/١٦٢۔

الحديث رقم ٢٨: أخرجه ابن ماجه في السنن، كتاب: الجنائز، باب: ذكر وفاته ودفنه ﷺ، ١/٥٢٤، الرقم: ١٦٣٧، والمنذري في الترغيب والترهيب، ٢/٣٢٨، الرقم: ٢٥٨٢، والمزي في تهذيب الكمال، ١٠/٢٣، الرقم: ٢٠٩٠، وابن كثير في تفسير القرآن العظيم، ٣/٥١٥، ٤/٤٩٣، والمناوي في فيض القدير، ٢/٨٧، والعجلوني في كشف الخفاء، ١/١٩٠، الرقم: ٥٠١، والشوكاني في نيل الأوطار، ٣/٣٠٤۔

الدَّمِيرِيُّ: رِجَالُهُ ثِقَاتٌ. وَقَالَ الْعَجْلُونِيُّ: حَسَنٌ.

''हज़रत अबू दरदा ﷺ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जुम्आ के दिन मुझ पर निहायत कसरत से दुरूद भेजा करो, यह यौमे मश्हूद (यानी मेरी बारगाह में फ़रिश्तों की ख़ुसूसी हाज़िरी का दिन) है। इस दिन फ़रिश्ते (ख़ुसूसी तौर पर कसरत से मेरी बारगाह में) हाज़िर होते हैं, जब कोई शख़्स मुझ पर दुरूद भेजता है तो उसके फ़ारिग़ होने तक उसका दुरूद मेरे सामने पेश कर दिया जाता है। हज़रत अबू दरदा ﷺ बयान करते हैं कि मैंने अ़र्ज़ किया (या रसूलल्लाह!) और आप के विसाल के बाद (क्या होगा) ? आप ﷺ ने फरमायाः हाँ (मेरी ज़ाहिरी) वफ़ात के बाद भी (मेरे सामने इसी तरह पेश किया जाएगा क्योंकि) अल्लाह तआ़ला ने ज़मीन के लिए अंबिया–ए–किराम عليهم السلام के जिस्मों का खाना हराम कर दिया है। फिर अल्लाह तआ़ला का नबी ज़िन्दा होता है और उसे रिज़्क़ भी अ़ता किया जाता है।''

٥٧٧ / ٢٩. عَنِ ابْنِ عُمَرَ رضي الله عنهما قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ زَارَ قَبْرِي بَعْدَ مَوْتِي كَانَ كَمَنْ زَارَنِي فِي حَيَاتِي.

رَوَاهُ الدَّارَ قُطْنِيُّ وَالطَّبَرَانِيُّ وَاللَّفْظُ لَهُ.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर رضي الله عنهما से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जिसने मेरी वफ़ात के बाद मेरी क़ब्र की ज़ियारत की गोया उसने मेरी हयात में मेरी ज़ियारत की।''

٥٧٨ / ٣٠. عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَقَدْ

الحديث رقم ٢٩: أخرجه الطبراني في المعجم الكبير، ١٢ / ٤٠٦، الرقم: ١٣٤٩٦، والدارقطني عن حاطب ﷺ في السنن، ٢ / ٢٧٨، الرقم: ١٩٣ والبيهقي في شعب الإيمان، ٣ / ٤٨٩، الرقم: ٤١٥٤، والهيثمي في مجمع الزوائد، ٤ / ٢.

الحديث رقم ٣٠: أخرجه مسلم في الصحيح، كتاب: الإيمان، باب: ذكر المسيح ابن مريم والمسيح الدجال، ١ / ١٥٦، الرقم: ١٧٢، والنسائي في السنن الكبرى، ٦ / ٤٥٥، الرقم: ١١٤٨٠، وأبو عوانة في المسند، ١ / ١١٦ الرقم: ٣٥٠، وأبو نعيم في المسند المستخرج، ١ / ٢٣٩، الرقم: ٤٣٣، والعسقلاني في فتح الباري، ٦ / ٤٨٧.

رَأَيْتُنِي فِي الْحِجْرِ، وَقُرَيْشٌ تَسْأَلُنِي عَنْ مَسْرَايَ، فَسَأَلَتْنِي عَنْ أَشْيَاءَ مِنْ بَيْتِ الْمَقْدِسِ لَمْ أُثْبِتْهَا، فَكَرِبْتُ كُرْبَةً مَا كَرِبْتُ مِثْلَهُ قَطُّ، قَالَ: فَرَفَعَهُ اللهُ لِي أَنْظُرُ إِلَيْهِ. مَا يَسْأَلُوْنِي عَنْ شَيْءٍ إِلَّا أَنْبَأْتُهُمْ بِهِ. وَقَدْ رَأَيْتُنِي فِي جَمَاعَةٍ مِنَ الْأَنْبِيَاءِ، فَإِذَا مُوْسَى عليه السلام قَائِمٌ يُصَلِّي، فَإِذَا رَجُلٌ ضَرْبٌ جَعْدٌ كَأَنَّهُ مِنْ رِجَالِ شَنُوْءَةَ. وَإِذَا عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ عليه السلام قَائِمٌ يُصَلِّي، أَقْرَبُ النَّاسِ بِهِ شَبَهًا عُرْوَةُ بْنُ مَسْعُوْدٍ الثَّقَفِيُّ. وَإِذَا إِبْرَاهِيْمُ عليه السلام قَائِمٌ يُصَلِّي، أَشْبَهُ النَّاسِ بِهِ صَاحِبُكُمْ (يَعْنِي نَفْسَهُ) فَحَانَتِ الصَّلَاةُ فَأَمَمْتُهُمْ فَلَمَّا فَرَغْتُ مِنَ الصَّلَاةِ، قَالَ قَائِلٌ: يَا مُحَمَّدُ، هَذَا مَالِكٌ صَاحِبُ النَّارِ فَسَلِّمْ عَلَيْهِ. فَالْتَفَتُّ إِلَيْهِ فَبَدَأَنِي بِالسَّلَامِ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَالنَّسَائِيُّ.

''हज़रत अबू हुरैरा رضي الله عنه से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः मैंने खुद को हतीमे का'बा में पाया और क़ुरैश मुझ से सफ़रे मेअ़राज के बारे में सवालात कर रहे थे। उन्होंने मुझसे बैतुल मुक़द्दस की कुछ चीजें पूछी जिन्हें मैंने (याददाश्त में) महफ़ूज़ नहीं रखा था जिसकी वजह से मैं इतना परेशान हुआ कि उस से पहले कभी इतना परेशान नहीं हुआ था, तब अल्लाह तआ़ला ने बैतुल मुक़द्दस को उठा कर मेरे सामने रख दिया। वो मुझसे बैतुल मुक़द्दस के मुतअ़ल्लिक़ जो भी चीज पूछते मैं (उसे देख–देख कर) उन्हें बता देता और मैंने खुद को गिरोहे अंबिया–ए–किराम عليهم السلام में पाया। मैंने देखा की हज़रत मूसा عليه السلام खड़े मसरूफे सलात थे, और वो क़बीलए शनोअह के लोगों की तरह घुंघराले बालों वाले थे और फिर (देखा कि) हज़रत ईसा बिन मरयम (عليه السلام) खड़े मसरूफे सलात थे और उरवह बिन मसऊद सक़फ़ी उनसे बहुत मुशाबह हैं, और फिर देखा कि हज़रत इब्राहीम عليه السلام खड़े मसरूफे सलात थे और तुम्हारे आक़ा (यानी खुद हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ) उनके साथ सबसे ज़्यादा मुशाबह हैं फिर नमाज़ का वक़्त आया, और मैंने सब अंबिया–ए–किराम عليهم السلام की इमामत कराई। जब मैं नमाज़ से फ़ारिग़ हुआ तो मुझे एक कहने वाले ने कहाः यह मालिक हैं जो जहन्नम के दारोग़ा हैं, इन्हें सलाम कीजिए। पस मैं उनकी तरफ़ मुतवज्जोह हुआ तो उन्होंने (मुझसे) पहले मुझे सलाम किया।''

٥٧٩ / ٣١۔ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: أَتَيْتُ، (وفي رواية هدّاب:) مَرَرْتُ عَلَى مُوْسَى لَيْلَةَ أُسْرِيَ بِي عِنْدَ الْكَثِيْبِ الْأَحْمَرِ وَهُوَ قَائِمٌ يُصَلِّي فِي قَبْرِهِ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَالنَّسَائِيُّ وَأَحْمَدُ.

''हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः मेअ्राज की शब, मैं हज़रत मूसा ﷺ के पास आया (और हद्दाब की एक रिवायत है कि फरमायाः) सुर्ख टीले के पास से मेरा गुज़र हुआ (तो मैंने देखा कि) हज़रत मूसा ﷺ अपनी कब्र में खड़े मसरूफे सलात थे।''

٥٨٠ / ٣٢۔ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ عَبْدِ الْعَزِيْزِ ﷺ قَالَ: لَمَّا كَانَ أَيَّامُ الْحَرَّةِ لَمْ يُؤَذَّنْ فِي مَسْجِدِ النَّبِيِّ ﷺ ثَلَاثًا وَلَمْ يُقَمْ وَلَمْ يَبْرَحْ سَعِيْدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ ﷺ مِنَ الْمَسْجِدِ، وَكَانَ لَا يَعْرِفُ وَقْتَ الصَّلَاةِ إِلَّا بِهَمْهَمَةٍ يَسْمَعُهَا مِنْ قَبْرِ النَّبِيِّ ﷺ فَذَكَرَ مَعْنَاهُ. رَوَاهُ الدَّارِمِيُّ وَانْفَرَدَ بِهِ.

الحديث رقم ٣١: أخرجه مسلم في الصحيح، كتاب الفضائل، باب: من فضائل موسى ﷺ، ٤ / ١٨٤٥، الرقم: ٢٣٧٥، والنسائي في السنن، كتاب: قيام الليل وتطوع النهار، باب: ذكر صلاة نبي الله موسى ﷺ، ٣ / ٢١٥، الرقم: ١٦٣١-١٦٣٢، وفي السنن الكبرى، ١ / ٤١٩، الرقم: ١٣٢٨، وأحمد بن حنبل في المسند، ٣ / ١٤٨، الرقم: ١٢٥٢٦-١٣٦١٨، وابن حبان في الصحيح، ١ / ٢٤٢، الرقم: ٥٠، والطبراني في المعجم الأوسط، ٨ / ١٣، الرقم: ٧٨٠٦، وابن أبي شيبة في المصنف، ٧ / ٣٣٥، الرقم: ٣٦٥٧٥، وأبو يعلى في المسند، ٦ / ٧١، الرقم: ٣٣٢٥، وعبد بن حميد في المسند، ١ / ٣٦٢، الرقم: ١٢٠٥، والديلمي في مسند الفردوس، ٤ / ١٧٠، الرقم: ٦٥٢٩، والهيثمي في مجمع الزوائد، ٨ / ٢٠٥، والعسقلانس فس فتح الباري، ٦ / ٤٤٤.

الحديث رقم ٣٢: أخرجه الدارمي في السنن، باب: (١٥)، ما أكرم الله تعالى نبيه ﷺ بعد موته، ١ / ٥٦، الرقم: ٩٣، والخطيب التبريزي في مشكاة المصابيح، ٢ / ٤٠٠، الرقم: ٥٩٥١، والسيوطي في شرح سنن ابن ماجه، ١ / ٢٩١، الرقم: ٤٠٢٩.

''हज़रत सईद बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ ﷺ से रिवायत है कि जब अय्यामे हुर्रा (जिन दिनों यज़ीद ने मदीना मुनव्वरा पर हमला करवाया था) का वाक़िआ पेश आया तो हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की मस्जिद में तीन दिन तक अजान और इक़ामत नहीं कही गई और हज़रत सईद बिन मुसय्यब ﷺ (जो कि जलीलुल्क़द्र ताबई हैं उन्होंने मस्जिदे नबवी में पनाह ली हुई थी और) उन्होंने (तीन दिन तक) मस्जिद नहीं छोड़ी थी और वो नमाज़ का वक़्त नहीं जानते थे मगर एक धीमी सी आवाज़ के ज़रीये जो वो हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की क़ब्रे अनवर से सुनते थे।''

٥٨١ / ٣٣. عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَلْأَنْبِيَاءُ أَحْيَاءٌ فِي قُبُوْرِهِمْ يُصَلُّوْنَ.

رَوَاهُ أَبُوْ يَعْلَى وَرِجَالُهُ ثِقَاتٌ وَابْنُ عَدِيٍّ وَالْبَيْهَقِيُّ وَالدَّيْلَمِيُّ. وَقَالَ ابْنُ عَدِيٍّ: وَأَرْجُوْ أَنَّهُ لَا بَأْسَ بِهِ. وَقَالَ الْهَيْثَمِيُّ: رِجَالُ أَبِي يَعْلَى ثِقَاتٌ. وَقَالَ الشَّوْكَانِيُّ: فَقَدْ صَحَّحَهُ الْبَيْهَقِيُّ وَأَلَّفَ فِي ذَلِكَ جُزْءًا. وَقَالَ الزَّرْقَانِيُّ: وَجَمَعَ الْبَيْهَقِيُّ كِتَابًا لَطِيْفًا فِي حَيَاةِ الْأَنْبِيَاءِ وَرَوَى فِيْهِ بِإِسْنَادٍ صَحِيْحٍ عَنْ أَنَسٍ ﷺ مَرْفُوْعًا.

الحديث رقم ٣٣: أخرجه أبو يعلى في المسند، ٦ / ١٤٧، الرقم: ٣٤٢٥، وابن عدي في الكامل، ٢ / ٣٢٧، الرقم: ٤٦٠، وقال: هذا أحاديث غرائب حسان وأرجو أنه لا بأس به، والديلمي في مسند الفردوس، ١ / ١١٩، الرقم: ٤٠٣، والعسقلاني في فتح الباري، ٦ / ٤٨٧، وأيضًا في لسان الميزان، ٢ / ١٧٥، ٢٤٦، الرقم: ٧٨٧، ١٠٣٣، وقال: رواه البيهقي، وقال: ابن عدي: أرجو أنه لا بأس به، والذهبي في ميزان الاعتدال، ٢ / ٢٠٠، ٢٧٠، وقال: رواه البيهقي، والهيثمي في مجمع الزوائد، ٨ / ٢١١، وقال: رواه أبو يعلى والبزار، ورجال أبي يعلى ثقات، والسيوطي في شرحه على سنن النسائي، ٤ / ١١٠، والعظيم آبادي في عون المعبود، ٦ / ١٩، وقال: وألفت عن ذالك تأليفا سميته: انتباه الأذكياء بحياة الأنبياء، والمناوي في فيض القدير، ٣ / ١٨٤، والشوكاني في نيل الأوطار، ٥ / ١٧٨، وقال: فقد صححه البيهقي وألف في ذلك جزءا، والزرقاني في شرحه على موطأ الإمام مالك، ٤ / ٣٥٧، وقال: وجمع البيهقي كتابا لطيفا في حياة الأنبياء وروى فيه بإسناد صحيح عن أنس ﷺ مرفوعا.

وقال العسقلاني في "الفتح": قَدْ جَمَعَ الْبَيْهَقِيُّ كِتَابًا لَطِيْفًا فِي حَيَاةِ الْأَنْبِيَاءِ فِي قُبُوْرِهِمْ أَوْرَدَ فِيْهِ حَدِيْثَ أَنَسٍ ﷺ: اَ لْأَنْبِيَاءُ أَحْيَاءٌ فِي قُبُوْرِهِمْ يُصَلُّوْنَ. أَخْرَجَهُ مِنْ طَرِيْقِ يَحْيَى بْنِ أَبِي كَثِيْرٍ وَهُوَ مِنْ رِجَالِ الصَّحِيْحِ عَنِ الْمُسْتَلِمِ بْنِ سَعِيْدٍ وَقَدْ وَثَّقَهُ أَحْمَدُ وَابْنُ حِبَّانَ عَنِ الْحَجَّاجِ الْأَسْوَدِ وَهُوَ ابْنُ أَبِي زِيَادِ الْبَصْرِيُّ وَقَدْ وَثَّقَهُ أَحْمَدُ وَابْنُ مَعِيْنٍ عَنْ ثَابِتٍ عَنْهُ وَأَخْرَجَهُ أَيْضًا أَبُوْ يَعْلٰى فِي مُسْنَدِهِ مِنْ هٰذَا الْوَجْهِ وَأَخْرَجَهُ الْبَزَّارُ وَصَحَّحَهُ الْبَيْهَقِيُّ.

''हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ बयान करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः अंबिया–ए–किराम عليهم السلام अपनी–अपनी कब्रों में जिन्दा हैं और नमाज़ पढ़ते हैं।''

''इमाम अस्क़लानी फ़त्हुलबारी में बयान करते हैं कि इमाम बैहक़ी ने अंबिया–ए–किराम عليهم السلام के अपनी क़ब्रों में ज़िन्दा होने के बारे में (सही अहादीस पर मुश्तमिल) एक ख़ूबसूरत किताब लिखी है जिस में उन्होंने हज़रत अनस ﷺ की यह हदीस भी वारिद की है कि अंबिया–ए–किराम عليهم السلام अपने क़ब्रों में (हयाते ज़ाहिरी की तरह ही) ज़िन्दा होते हैं और सलात भी अदा करते हैं। यह हदीस उन्होंने यह्या बिन अबू कसीर के तरीक़ से रिवायत की है और वो सही हदीस के रावियों में से हैं। उन्होंने मुस्तलिम बिन सईद से रिवायत की और इमाम अहमद बिन हंबल ने भी उन्हें सिक़ा क़रार दिया है। इमाम इब्ने हिब्बान ने यह हदिस हुज्जाजे अस्वद से रिवायत की है और वो इब्ने अबी ज़ियाद अल्बसरी हैं और उन्हें भी इमाम अहमद बिन हंबल ने सिक़ा क़रार दिया है। इमाम इब्ने मुईन ने भी हज़रत साबित से यह हदीस रिवायत की है। इमाम अबू या'ला ने भी अपनी मुस्नद में इसी तरीक़ से यह हदीस रिवायत की है और इमाम बज़्ज़ार ने भी इस की तख़रीज की है और इमाम बैहक़ी ने इसे सही क़रार दिया है।''

فَصْلٌ فِي سَعَةِ عِلْمِ النَّبِيِّ ﷺ وَكَمَالِ مَعْرِفَتِهِ

हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की वुस्अते इल्म और कमाले मा'रेफ़त का बयान

٥٨٢ / ٣٤۔ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رضي الله عنه أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ خَرَجَ حِيْنَ زَاغَتِ الشَّمْسُ، فَصَلَّى الظُّهْرَ، فَلَمَّا سَلَّمَ قَامَ عَلَى الْمِنْبَرِ، فَذَكَرَ السَّاعَةَ، وَذَكَرَ أَنَّ بَيْنَ يَدَيْهَا أُمُوْرًا عِظَامًا، ثُمَّ قَالَ: مَنْ أَحَبَّ أَنْ يَسْأَلَ عَنْ شَيءٍ فَلْيَسْأَلْ عَنْهُ: فَوَاللهِ لَا تَسْأَلُوْنِي عَنْ شَيءٍ إِلَّا أَخْبَرْتُكُمْ بِهِ مَا دُمْتُ فِي مَقَامِي هَذَا، قَالَ أَنَسٌ: فَأَكْثَرَ النَّاسُ الْبُكَاءَ، وَأَكْثَرَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ أَنْ يَقُوْلَ: سَلُوْنِي. فَقَالَ أَنَسٌ: فَقَامَ إِلَيْهِ رَجُلٌ فَقَالَ: أَيْنَ مَدْخَلِي يَا رَسُوْلَ اللهِ؟ قَالَ: النَّارُ. فَقَامَ عَبْدُ اللهِ بْنُ حُذَافَةَ فَقَالَ: مَنْ أَبِي يَا رَسُوْلَ اللهِ؟ قَالَ: أَبُوْكَ حُذَافَةُ. قَالَ: ثُمَّ أَكْثَرَ أَنْ يَقُوْلَ: سَلُوْنِي، سَلُوْنِي. فَبَرَكَ عُمَرُ عَلَى رُكْبَتَيْهِ فَقَالَ: رَضِيْنَا بِاللهِ رَبًّا، وَبِالإِسْلَامِ دِيْنًا، وَبِمُحَمَّدٍ ﷺ رَسُوْلاً. قَالَ: فَسَكَتَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ حِيْنَ قَالَ عُمَرُ: ذَلِكَ، ثُمَّ قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ، لَقَدْ عُرِضَتْ عَلَيَّ الْجَنَّةُ وَالنَّارُ

الحديث رقم ٣٤: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: الاعتصام بالكتاب والسنة، باب: ما يكره من كثرة السؤال وتكلف ما لايعنيه ، ٦ / ٢٦٦٠، الرقم: ٦٨٦٤، وفي كتاب: مواقيت الصلاة، باب: وقت الظهر عند الزوال، ١ / ٢٠٠، الرقم: ٢٠٠١، ٢٢٧٨، وفي كتاب: العلم، باب: حسن برك على ركبتيه عند الإمام أو المحدث، ١ / ٤٧، الرقم: ٩٣، وفي الأدب المفرد / ٤٠٤، الرقم: ١١٨٤، ومسلم في الصحيح، كتاب: الفضائل، باب: توقيره ﷺ وترك إكثار سؤال عما لا ضرورة إليه ، ٤ / ١٨٣٢، الرقم: ٢٣٥٩، وأحمد بن حنبل في المسند، ٣ / ١٦٢، الرقم: ١٢٦٨١، وأبو يعلى في المسند، ٦ / ٢٨٦، الرقم: ٣٢٠١، وابن حبان في الصحيح، ١ / ٣٠٩، الرقم: ١٠٦، والطبراني في المعجم الأوسط، ٩ / ٧٢، الرقم: ٩١٥٥.

آنِفًا فِي عُرْضِ هَذَا الْحَائِطِ، وَأَنَا أُصَلِّي، فَلَمْ أَرَ كَالْيَوْمِ فِي الْخَيْرِ وَالشَّرِّ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ फरमाते हैं कि जब आफ़ताब ढला तो हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ तशरीफ़ लाए और ज़ुहर की नमाज़ पढ़ाई फिर सलाम फेरने के बाद आप ﷺ मिम्बर पर जल्वा अफ़रोज़ हुए और क़यामत का ज़िक्र किया और फिर फरमायाः इससे पहले बड़े बड़े वाक़ियात व हादिसात हैं, फिर फरमायाः जो शख़्स किसी भी क़िस्म की कोई बात पूछना चाहता है तो वो पूछे, ख़ुदा की क़सम! मैं जब तक यहाँ खड़ा हूँ तुम जो भी पूछोगे उस का जवाब दूँगा। हज़रत अनस ﷺ बयान करते हैं कि लोगों ने ज़ारोक़तार रोना शुरू कर दिया। हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ जलाल के सबब बार बार यह ऐलान फरमा रहे थे कि कोई सवाल करो, मुझ से (जो चाहो) पूछ लो। हज़रत अनस ﷺ कहते हैं कि फिर एक शख़्स खड़ा हुआ और कहने लगाः या रसूलल्लाह ! मेरा ठिकाना कहाँ है ? आप ﷺ ने फरमायाः दोज़ख़ में (क्योंकि वो मुनाफ़िक़ था)। फिर हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा ﷺ खड़े हुए और अ़र्ज़ कियाः या रसूलल्लाह! मेरा बाप कौन है ? आप ﷺ ने फरमायाः तेरा बाप हुज़ाफ़ा है। हज़रत अनस ﷺ फरमाते हैं कि फिर आप ﷺ बार बार फरमाते रहे मुझसे सवाल करो, मुझसे सवाल करो। चुनान्चे हज़रत उमर ﷺ ने घुटनों के बल बैठ कर अ़र्ज़ किया : (या रसूलल्लाह!) हम अल्लाह तआला के रब होने पर इस्लाम के दीन होने पर और मुहम्मद मुस्तफ़ा ﷺ के रसूल होने पर राज़ी हैं (और हमें कुछ नहीं पूछना)। रावी कहते हैं कि जब हज़रत उमर ﷺ ने यह गुज़ारिश की तो हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ख़ामोश हो गए फिर आप ﷺ ने फरमायाः क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है! अभी अभी इस दीवार के सामने मुझ पर जन्नत और दोज़ख़ पेश की गईं जबकि मैं नमाज़ पढ़ रहा था तो आज की तरह मैंने ख़ैर और शर्र को कभी नहीं देखा।''

٥٨٣ / ٣٥۔ عَنْ حُذَيفَةَ ﷺ قَالَ: قَامَ فِيْنَا رَسُوْلُ اللهِ ﷺ مَقَامًا مَا تَرَکَ شَيْئًا يَکُوْنُ فِي مَقَامِهِ ذَلِکَ إِلَى قِيَامِ السَّاعَةِ، إِلَّا حَدَّثَ بِهِ

الحديث رقم ٣٥: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: القدر، باب: وكان أمر الله قدرا مقدورا، ٦ / ٢٤٣٥، الرقم: ٦٢٣٠، ومسلم في الصحيح، كتاب: الفتن وأشراط الساعة، باب: إخبار النبي ﷺ فيما يكون إلى قيام الساعة، ٤ / ٢٢١٧، الرقم: ٢٨٩١، والترمذي مثله عن أبي سعيد الخدري ﷺ في السنن، كتاب: الفتن ←

حَفِظَهُ مَنْ حَفِظَهُ وَنَسِيَهُ مَنْ نَسِيَهُ قَدْ عَلِمَهُ أَصْحَابِي هَؤُلَاءِ وَإِنَّهُ لَيَكُوْنُ مِنْهُ الشَّيءُ قَدْ نَسِيْتُهُ فَأَرَاهُ فَأَذْكُرُهُ كَمَا يَذْكُرُ الرَّجُلُ وَجْهَ الرَّجُلِ إِذَا غَابَ عَنْهُ ثُمَّ إِذَا رَآهُ عَرَفَهُ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ وَاللَّفْظُ لِمُسْلِمٍ.

''हज़रत हुज़ैफ़ा ﷺ रिवायत बयान करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने हमारे दरमियान एक मुक़ाम पर खड़े हो कर ख़ुत्बा फरमायाः आप ﷺ ने अपने उस दिन के क़ियाम फरमा होने से ले कर क़यामत तक की कोई ऐसी चीज़ न छोड़ी, जिसको आप ﷺ ने बयान न फरमा दिया हो। जिसने उसे याद रखा याद रखा और जो उसे भूल गया वो भूल गया। इस वाक़िये को मेरे दोस्तो अहबाब जानते हैं, कई चीज़ों को मैं भूल गया था लेकिन जब मैंने उन्हें देखा तो वो याद आ गईं। जिस तरह कोई शख़्स किसी शख़्स का चेहरा भूल जाता है और जब वो सामने आता है तो उसे पहचान लेता है।''

٥٨٤ / ٣٦ـ عَنْ عُمَرَ رضي الله عنه يَقُوْلُ: قَامَ فِيْنَا النَّبِيُّ ﷺ مَقَامًا، فَأَخْبَرَنَا عَنْ بَدْءِ الْخَلْقِ حَتَّى دَخَلَ أَهْلُ الْجَنَّةِ مَنَازِلَهُمْ وَأَهْلُ النَّارِ مَنَازِلَهُمْ، حَفِظَ ذٰلِکَ مَنْ حَفِظَهُ وَنَسِيَهُ مَنْ نَسِيَهُ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ.

''हज़रत उमर ﷺ रिवायत बयान करते हैं कि एक रोज़ हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ हमारे दरमियान क़ियाम फरमा हुए और आप ﷺ ने मख़्लूक़ात की इब्तिदा से ले कर जन्नतियों के जन्नत में दाख़िल हो जाने और दोज़ख़ियों के दोज़ख़ में दाख़िल हो जाने तक हमें सब कुछ बता

.... عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء أخبر النبي ﷺ أصحابه بما هو كائن إلى يوم القيامة، ٤/٤٨٣، الرقم: ٢١٩١، وأبو داود في السنن، كتاب: الفتن والملاحم، باب: ذكر الفتن ودلائلها، ٤/٩٤، الرقم:٤٢٤٠، وأحمد بن حنبل في المسند، ٥/٣٨٥، الرقم: ٢٣٣٢٢، والبزار في المسند، ٧/٢٣١، الرقم: ٨٤٩٩، وقال: هَذَا حَدِيُثٌ صَحِيُحٌ، والطبراني مثله عن أبي سعيد الخدري رضي الله عنه في مسند الشاميين، ٢/٢٤٧، الرقم: ١٢٧٨، والخطيب التبريزي في مشكوة المصابيح، ٢/٢٧٨، الرقم: ٥٣٧٩ـ

الحديث رقم ٣٦: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: بدء الخلق، باب: ما جاء في قول الله تعالى: وهو الذي يبدأ الخلق ثم يعيده وهوأهون عليه، ٣/١١٦٦، الرقم: ٣٠٢٠ـ

दिया। जिसने उसे याद रखा, याद रखा और जो उसे भूल गया तो वो भूल गया।''

٥٨٥ / ٣٧۔ عَنْ عَمْرِو بْنِ أَخْطَبَ ﷺ قَالَ: صَلَّى بِنَا رَسُوْلُ اللهِ ﷺ الْفَجْرَ. وَصَعِدَ الْمِنْبَرَ فَخَطَبَنَا حَتَّى حَضَرَتِ الظُّهْرُ، فَنَزَلَ فَصَلَّى ثُمَّ صَعِدَ الْمِنْبَرَ. فَخَطَبَنَا حَتَّى حَضَرَتِ الْعَصْرُ، ثُمَّ نَزَلَ فَصَلَّى ثُمَّ صَعِدَ الْمِنْبَرَ. فَخَطَبَنَا حَتَّى غَرَبَتِ الشَّمْسُ، فَأَخْبَرَنَا بِمَا كَانَ وَبِمَا هُوَ كَائِنٌ قَالَ: فَأَعْلَمُنَا أَحْفَظُنَا. رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَالتِّرْمِذِيُّ.

''हज़रत अ़म्र बिन अख़्तब अन्सारी ﷺ फरमाते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने नमाज़े फ़ज्र में हमारी इमामत फरमाई और मिम्बर पर जल्वा अफ़रोज़ हुए और हमें ख़िताब फरमाया यहाँ तक कि ज़ुहर का वक़्त हो गया। फिर आप ﷺ नीचे तशरीफ़ ले आए नमाज़ पढ़ाई इसके बाद फिर मिम्बर पर तशरीफ़ फरमा हुए और हमें ख़िताब फरमाया हत्ता कि अ़स्र का वक़्त हो गया फिर मिम्बर से नीचे तशरीफ़ लाए और नमाज़ पढ़ाई फिर मिम्बर पर तशरीफ़ फरमा हुए। यहाँ तक कि सूरज डूब गया फिर आप ﷺ ने हमें हर उस बात की ख़बर दी जो जो आज तक वुक़ूअ़ पज़ीर हो चुकी (गुज़र चुकी) थी और जो क़यामत तक होने वाली थी। हज़रत अ़म्र बिन अख़्तब ﷺ फरमाते हैं हम में ज़्यादा जानने वाला वही है जो हम में सबसे ज़्यादा हाफ़िज़े वाला था।''

٥٨٦ / ٣٨۔ عَنْ حُذَيْفَةَ ﷺ أَنَّهُ قَالَ: أَخْبَرَنِي رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: بِمَا

الحديث رقم ٣٧: أخرجه مسلم في الصحيح، كتاب: الفتن وأشراط الساعة، باب: إخبار النبي ﷺ فيما يكون إلى قيام الساعة، ٤ / ٢٢١٧، الرقم: ٢٨٩٢، والترمذي فى السنن، كتاب: الفتن عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء ما أخبر النبي ﷺ أصحابه بما هو كائن إلى يوم القيامة، ٤ / ٤٨٣، الرقم: ٢١٩١، وابن حبان في الصحيح، ١٥ / ٩، الرقم: ٦٦٣٨، والحاكم في المستدرك، ٤ / ٥٣٣، الرقم: ٨٤٩٨، وأبو يعلى في المسند، ١٢ / ٢٣٧، الرقم: ٢٨٤٤، والطبراني في المعجم الكبير، ١٧ / ٢٨، الرقم: ٤٦، وابن أبي عاصم في الأحاد والمثاني، ٤ / ١٩٩، الرقم: ٢١٨٣۔

الحديث رقم ٣٨: أخرجه مسلم في الصحيح، كتاب: الفتن وأشراط الساعة، باب إخبار النبي ﷺ فيما يكون إلى قيام الساعة، ٤ / ٢٢١٧، الرقم: ٢٨٩١، وأحمد ـــــ

هُوَ كَائِنٌ إِلَى أَنْ تَقُوْمَ السَّاعَةُ. فَمَا مِنْهُ شَيءٌ إِلَّا قَدْ سَأَلْتُهُ إِلَّا أَنِّي لَمْ أَسْأَلْهُ مَا يُخْرِجُ أَهْلَ الْمَدِيْنَةِ مِنَ الْمَدِيْنَةِ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَأَحْمَدُ وَابْنُ مَنْدَه.

''हज़रत हुज़ैफ़ा ﷺ फरमाते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने मुझे क़यामत तक रूनुमा होने वाली हर एक बात बता दी और कोई ऐसी बात न रही जिसे मैंने आप ﷺ से न पूछा हो अल्बत्ता मैंने यह न पूछा कि अहले मदीना को कौन सी चीज़ मदीना से निकालेगी ?''

٥٨٧ / ٣٩۔ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رضي الله عنهما عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: أَتَانِي رَبِّي فِي أَحْسَنِ صُورَةٍ، فَقَالَ: يَا مُحَمَّدُ، قُلْتُ: لَبَّيْكَ وَسَعْدَيْكَ. قَالَ: فِيْمَ يَخْتَصِمُ الْمَلَأُ الْأَعْلَى؟ قُلْتُ: رَبِّي لَا أَدْرِي، فَوَضَعَ يَدَهُ بَيْنَ كَتِفَيَّ، حَتَّى وَجَدْتُ بَرْدَهَا بَيْنَ ثَدْيَيَّ، فَعَلِمْتُ مَا بَيْنَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ.

.... بن حنبل في المسند، ٥/٣٨٦، الرقم: ٢٣٣٢٩، والبزار في المسند، ٧/٢٢٢، الرقم: ٢٧٩٥، والطيالسي في المسند، ١/٥٨، الرقم: ٤٣٣، وابن منده في كتاب الإيمان، ٢/٩١٢، الرقم: ٩٩٦، وإسناده صحيح، والحاكم في المستدرك، ٤/٤٧٢، الرقم: ٨٣١١، والمقري في السنن الواردة في الفتن، ٤/٨٨٩، الرقم: ٤٥٨۔

الحديث رقم ٣٩: أخرجه الترمذي في السنن، كتاب: تفسير القرآن عن رسول الله ﷺ، باب: ومن سورة ص، ٥/٣٦٦۔٣٦٨، الرقم: ٣٢٣٣۔٣٢٣٥، والدارمي في السنن، كتاب الرؤيا، باب: في رؤية الرب تعالى فى النوم، ٢/١٧٠، الرقم: ٢١٤٩، وأحمد بن حنبل في المسند، ١/٣٦٨، الرقم: ٣٤٨٤، ٤/٦٦، ٥/٢٤٣، الرقم: ٢٢١٦٢، ٢٣٢٥٨، والطبراني في المعجم الكبير، ٨/٢٩٠، الرقم: ٨١١٧، وأيضًا، ٢٠/١٠٩، ١٤١، الرقم: ٢١٦، ٦٩٠، والروياني في المسند، ١/٤٢٩، الرقم: ٦٥٦، ٢/٢٩٩، الرقم: ١٢٤١، وأبو يعلى في المسند، ٤/٤٧٥، الرقم: ٢٦٠٨، و ابن أبي شيبة في المصنف، ٦/٣١٣، الرقم: ٣١٧٠٦، وابن أبي عاصم في الآحاد والمثاني، ٥/٤٩، الرقم: ٢٥٨٥، وأيضًا في السنة، ١/٢٠٣، الرقم: ٤٦٥، إِسْنَادُهُ حَسَنٌ، وَرِجَالُهُ ثِقَاتٌ، وعبد بن حميد في المسند، ١/٢٢٨، الرقم: ٦٨٢، وعبد الله بن أحمد في السنة، ٢/٤٨٩، الرقم: ١١٢١، والحكيم الترمذي في نوادر الأصول، ٣/١٢٠، والمنذري في الترغيب والترهيب، ١/١٥٩، الرقم: ٥٩١، وابن عبد البر في التمهيد، ٢٤/٣٢٣، وابن النجاد في الرّد على من يقول القرآن مخلوق، ١/٥٨٥٦، الرقم: ٧٦۔٧٨، والهيثمي في مجمع الزوائد، ٧/١٧٦۔١٧٨۔

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُوْ يَعْلَى. وَقَالَ أَبُوْ عِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ.

وفي رواية عنه: قَالَ: فَعَلِمْتُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَتَلاَ: ﴿وَكَذٰلِكَ نُرِيْ إِبْرَاهِيْمَ مَلَكُوْتَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلِيَكُوْنَ مِنَ الْمُوْقِنِيْنَ﴾ [الأنعام، ٦:٧٥]. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَحْمَدُ وَالدَّارِمِيُّ وَاللَّفْظُ لَهُ.

وفي رواية: عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ رضي الله عنه قَالَ: فَتَجَلَّى لِي كُلُّ شَيءٍ وَعَرَفْتُ.

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَحْمَدُ وَالطَّبَرَانِيُّ.

وَقَالَ أَبُوْ عِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ.

وفي رواية: عَنْ أَبِي أُمَامَةَ رضي الله عنه قَالَ: فَعَلِمْتُ فِي مَقَامِي ذٰلِكَ مَا سَأَلَنِي عَنْهُ مِنْ أَمْرِ الدُّنْيَا وَالآخِرَةِ. رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ وَالرُّوْيَانِيُّ.

وفي رواية: فَعَلِمْتُ مِنْ كُلِّ شَيءٍ وَبَصَرْتُهُ. رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ.

وفي رواية: عَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ رضي الله عنه قَالَ: فَمَا سَأَلَنِي عَنْ شَيءٍ إِلَّا عَلِمْتُهُ. رَوَاهُ ابْنُ أَبِي شَيْبَةَ وَابْنُ أَبِي عَاصِمٍ.

إِسْنَادُهُ حَسَنٌ وَرِجَالُهُ ثِقَاتٌ.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رضي الله عنهما से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः (मेअ़राज की रात) मेरा रब मेरे पास (अपनी शान के लायक़) निहायत हसीन सूरत में आया और फरमायाः या मुहम्मद! मैंने अ़र्ज़ कियाः मेरे परवरदिगार! मैं हाज़िर हूँ बार–बार हाज़िर हूँ। फरमायाः आलमे बाला के फ़रिश्ते किस बात में झगड़ते हैं ? मैंने अ़र्ज़ कियाः ऐ मेरे परवरदिगार! मैं नहीं जानता। फिर अल्लाह तआ़ला ने अपना दस्ते क़ुदरत मेरे दोनों कन्धों के दरमियान रखा और मैंने अपने सीने में उसकी ठण्डक महसूस की। और मैं वो सब कुछ जान गया जो कुछ मश्रिक़ व मग़्रिब के दरमियान है।''

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رضي الله عنهما से ही मरवी एक और रिवायत के

अल्फ़ाज़ कुछ यूँ हैं कि आप ﷺ ने फरमायाः और मैं जान गया जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है। फिर आप ﷺ ने यह आयत तिलावत फरमाईः ''और इसी तरह हम इब्राहीम (ﷺ) को आसमानों और ज़मीन की तमाम बादशाहतें (यानी अजाइबाते ख़ल्क़) दिखा रहे हैं और (यह) इसलिए की वो ऐनुल यक़ीन वालों में से हो जाएं।'' [الانعام، ٦:٧٥]

''और हज़रत मुआज़ बिन हंबल ﷺ से मरवी रिवायत में हैं कि आप ﷺ ने फरमायाः और मुझ पर हर शै की हक़ीक़त ज़ाहिर कर दी गई जिससे मैंने (सब कुछ) जान लिया।''

''हज़रत अबू उमामा ﷺ से मरवी रिवायत में हैं कि आप ﷺ ने फरमायाः फिर मुझसे दुनिया व आखिरत के बारे में किए जाने वाले सवालात के जवाबात मैंने उसी मुक़ाम पर जान लिए।''

''और एक रिवायत के अल्फ़ाज़ हैं कि आप ﷺ ने फरमायाः और मैंने दुनिया व आख़िरत की हर शै की हक़ीक़त जान भी ली और देख भी ली।''

''हज़रत जाबिर बिन समुरह ﷺ से मरवी अल्फ़ाज़ हैं कि आप ﷺ ने फरमायाः फिर मुझसे जब भी किसी चीज़ के मुतअल्लिक़ सवाल किया गया तो मैंने उसे जान लिया फिर उसके बाद कभी ऐसा नहीं हुआ कि मुझसे किसी शै के मुतअल्लिक़ सवाल किया गया हो और मैं उसे ना जानता हूँ।''

٥٨٨ / ٤٠ـ عَنْ أَنَسٍ ﷺ في رواية طويلة أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ شَاوَرَ، حِيْنَ بَلَغَنَا إِقْبَالُ أَبِي سُفْيَانَ، وَقَامَ سَعْدُ بْنُ عُبَادَةَ ﷺ فَقَالَ: وَالَّذِي

الحديث رقم ٤٠: أخرجه مسلم فى الصحيح، كتاب: الجهاد والسير، باب: غزوة بدر، ٣/١٤٠٣، الرقم: ١٧٧٩، ونحوه فى كتاب: الجنة وصفة نعيمها وأهلها، باب: عرض مقعد الميت من الجنة أو النار عليه وإثبات عذاب القبر والتعوذ منه، ٤/٢٢٠٢، الرقم: ٢٨٧٣، وأبو داود فى السنن، كتاب: الجهاد، باب: فى الأسير ينال منه ويضرب ويقرن، ٣/٥٨، الرقم: ٢٠٧١، والنسائى فى السنن، كتاب: الجنائز، باب: أرواح المؤمنين، ٤/١٠٨، الرقم: ٢٠٧٤، وفى السنن الكبرى، ١/٦٦٥، الرقم: ٢٢٠١، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٣/٢١٩، الرقم: ١٣٣٢٠، وابن حبان فى الصحيح، ١١/٢٤، الرقم: ٤٧٢٢، والبزار فى المسند، ١/٣٤٠، الرقم: ٢٢٢، وابن أبى شيبة فى المصنف، ٧/٣٦٢، الرقم: ٣٦٧٠٨، والطبرانى ←

نَفْسِي بِيَدِهِ، لَوْ أَمَرْتَنَا أَنْ نُخِيْضَهَا الْبَحْرَ لَأَخَضْنَاهَا. وَلَوْ أَمَرْتَنَا أَنْ نَضْرِبَ أَكْبَادَهَا إِلَى بَرْكِ الْغِمَادِ لَفَعَلْنَا. قَالَ: فَنَدَبَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ النَّاسَ، فَانْطَلَقُوْا حَتَّى نَزَلُوْا بَدْرًا، فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: هَذَا مَصْرَعُ فُلَانٍ قَالَ: وَيَضَعُ يَدَهُ عَلَى الْأَرْضِ، هَاهُنَا وَهَاهُنَا. قَالَ: فَمَا مَاتَ أَحَدُهُمْ عَنْ مَوْضِعِ يَدِ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَأَبُوْ دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ.

''हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ बयान फरमाते हैं कि जब हमें अबू सुफ़्यान के (क़ाफ़िले की शाम से वापस) आने की ख़बर पहुँची तो हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने सहाबा किराम से मश्विरा फरमायाः हज़रत सा'द बिन उबादह ﷺ ने खड़े होकर अ़र्ज़ कियाः या रसूलल्लाह! आप हमारी राय जानना चाहते हैं तो (अ़र्ज़ है कि) उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! अगर आप हमें समन्दर में घोड़े डालने का हुक्म दें तो हम समन्दर में भी घोड़े डाल देंगे, अगर आप हमें बरकिल ग़िमाद पहाड़ से घोड़ों के सीने टकराने का हुक्म दें तो हम ऐसा भी करेंगे। तब आप ﷺ ने लोगों को बुलाया, लोग आए और वादी–ए–बद्र में उतरे। फिर हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः यह फ़लाँ काफ़िर के (क़त्ल हो कर) गिरने की जगह है, आप ﷺ ज़मीन पर इस जगह और कभी उस जगह दस्ते अक़दस रखते। हज़रत अनस ﷺ कहते हैं कि फिर (दूसरे दिन) कोई काफ़िर हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की बताई हुई जगह से ज़र्रा बराबर भी इधर–उधर नहीं मरा।''

٥٨٩ / ٤١. عَنْ أَنَسٍ ﷺ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ نَعَى زَيْدًا وَجَعْفَرًا وَابْنَ

.... في المعجم الأوسط، ٨ / ٢١٩، الرقم: ٨٤٥٣، وفي المعجم الصغير، ٢ / ٢٣٣، الرقم: ١٠٨٥، وأبو يعلى في المسند، ٦ / ٦٩، الرقم: ٣٣٢٢، وابن الجوزي في صفوة الصفوة، ١ / ١٠٢، والخطيب التبريزي في مشكاة المصابيح، ٢ / ٣٨١، الرقم: ٥٨٧١.

الحديث رقم ٤١: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: المغازي، باب: غزوة مؤته من أرض الشام، ٤ / ١٥٥٤، الرقم: ٤٠١٤، وفي كتاب: الجنائز، باب: الرجل ينعى إلى أهل الميت بنفسه، ١ / ٤٢٠، الرقم: ١١٨٩، وفي كتاب: الجهاد، باب: تمنى الشهادة، ٣ / ١٠٣٠، الرقم: ٢٦٤٥، وفي باب: من تأمر في الحرب من غير إمرة إذا ←

رَوَاحَةَ ﷺ لِلنَّاسِ قَبْلَ أَنْ يَأْتِيَهُمْ خَبَرُهُمْ، فَقَالَ: أَخَذَ الرَّايَةَ زَيْدٌ فَأُصِيبَ، ثُمَّ أَخَذَ جَعْفَرٌ فَأُصِيبَ، ثُمَّ أَخَذَ ابْنُ رَوَاحَةَ فَأُصِيبَ. وَعَيْنَاهُ تَذْرِفَانِ حَتَّى أَخَذَ الرَّايَةَ سَيْفٌ مِنْ سُيُوفِ اللهِ، حَتَّى فَتَحَ اللهُ عَلَيْهِمْ.

رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ وَالنَّسَائِيُّ وَأَحْمَدُ.

''हज़रत अनस ﷺ रिवायत फरमाते हैं कि (जंगे मौतह के मौक़े पर) हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने हज़रत ज़ैद, हज़रत जा'फ़र और हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन रवाहा ﷺ के मुतअ़ल्लिक़ ख़बर आने से पहले ही उनके शहीद हो जाने के मुतअ़ल्लिक़ लोगों को बता दिया था चुनान्चे आप ﷺ ने फरमायाः अब झण्डा ज़ैद ने संभाला हुआ है लेकिन वो शहीद हो गए। अब जा'फ़र ने झण्डा संभाल लिया है और वो भी शहीद हो गए। अब इब्ने रवाहा ने झण्डा संभाला है और वो भी जामे शहादत नोश कर गए। यह फरमाते हुए आप ﷺ की चश्माने मुबारक अश्क बार थीं। (फ़िर आप ﷺ ने फरमायाः) यहाँ तक कि अब अल्लाह तआ़ला की तलवारों में से एक तलवार (यानी ख़ालिद बिन वलीद) ने झण्डा संभाल लिया है उसके हाथों अल्लाह तआ़ला ने काफ़िरों पर फ़तह अ़ता फरमाई है।''

٥٩٠ / ٤٢۔ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ ﷺ قَالَ: إِنَّ رَجُلًا كَانَ يَكْتُبُ

.... خاف العدو، ٣/١١١٥، الرقم: ٢٨٩٨، وفي كتاب: المناقب، باب: علامات النبوة في الإسلام،٣/١٣٢٨، الرقم: ٣٤٣١، وفي كتاب: فضائل الصحابة، باب: مناقب خالد بن الوليد ﷺ، ٣/١٣٧٢، الرقم: ٣٥٤٧، ونحوه النسائي في السنن الكبرى، ٥/١٨٠، الرقم: ٨٦٠٤، وأحمد بن حنبل في المسند، ١/٢٠٤، الرقم: ١٧٥٠، والحاكم في المستدرك، ٣/٣٣٧، الرقم: ٥٢٩٥، وقال: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحُ ألإِسْنَادِ، والطبراني في المعجم الكبير، ٢/١٠٥، الرقم: ١٤٥٩-١٤٦١، والخطيب التبريزي في مشكاة المصابيح، كتاب: أحوال القيامة وبدء الخلق، باب: في المعجزات، الفصل الأول، ٢/٣٨٤، الرقم: ٥٨٨٧۔

الحديث رقم ٤٢: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: المناقب، باب: علامات النبوة في الإسلام، ٣/١٣٢٥، الرقم:٣٤٢١، ومسلم في الصحيح، كتاب: صفات المنافقين وأحكامهم، ٤/٢١٤٥، الرقم: ٢٧٨١، وأحمد بن حنبل في المسند، ٣/١٢٠، ٢٤٥، الرقم: ١٢٢٣٦، ١٣٣٤٨، وأبو يعلى في المسند، ٧/٢٢، الرقم: ٣٩١٩، ←

لِلنَّبِيِّ ﷺ وَقَدْ قَرَأَ الْبَقَرَةَ، وَآلَ عِمْرَانَ، وَكَانَ الرَّجُلُ إِذَا قَرَأَ الْبَقَرَةَ، وَآلَ عِمْرَانَ جَدَّ فِيْنَا يَعْنِي عَظُمَ ...... فَارْتَدَّ ذَالِکَ الرَّجُلِ عَنِ الإِسْلَامِ، فَلَحِقَ بِالْمُشْرِكِيْنَ، وَقَالَ: أَنَا أَعْلَمُكُمْ إِنْ كُنْتُ لَأَكْتُبُ مَا شِئْتُ فَمَاتَ ذَالِکَ الرَّجُلُ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: إِنَّ الْأَرْضَ لَمْ تَقْبَلْهُ، وَقَالَ أَنَسٌ ﷺ: فَحَدَّثَنِي أَبُوْ طَلْحَةَ ﷺ أَنَّهُ أَتَى الْأَرْضَ الَّتِي مَاتَ فِيْهَا ذَالِکَ الرَّجُلُ فَوَجَدَهُ مَنْبُوْذًا، فَقَالَ أَبُوْ طَلْحَةَ: مَا شَأْنُ هٰذَا الرَّجُلِ؟ فَقَالُوْا: قَدْ دَفَنَّاهُ مِرَارًا فَلَمْ تَقْبَلْهُ الْأَرْضُ.

رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ وَمُسْلِمٌ وَأَحْمَدُ وَاللَّفْظُ لَهُ.

''हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ रिवायत बयान करते हैं कि एक आदमी जो हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के लिए किताबत किया करता था और उस आदमी ने सूरह बक़रह और आल इमरान पढ़ रखी थी, और जिस किसी आदमी ने सूरह बक़रह और आल इमरान पढ़ रखी होती थी, तो वो हम में निहायत मुअज़्ज़ज माना जाता था ... वो शख़्स इस्लाम से मुर्तद हो गया और मुश्रिकों से जा मिला और उनसे कहने लगा कि मैं तुम में सबसे ज़्यादा जानने वाला हूँ मैं मुहम्मद मुस्तफ़ा (ﷺ) के लिए जो चाहता लिख देता था तो जब वो शख़्स मर गया तो हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः उसको ज़मीन भी कुबूल नहीं करेगी। हज़रत अनस ﷺ फरमाते हैं कि उन्हें हज़रत अबू तलहा ﷺ ने बताया कि वो उस जगह आए जहाँ वो शख़्स मरा था तो देखा उसकी लाश ज़मीन पर बाहर पड़ी थी। उन्होंने लोगों से पूछा की इस शख़्स का क्या मामला है ? तो लागों ने बताया कि हमने इसे कई बार दफ़न किया है मगर ज़मीन ने उसे कुबूल नहीं किया (और जब भी उसे दफन किया गया तो ज़मीन ने हर बार इसे बाहर निकाल फैंका)।''

.... وابن حبان في الصحيح، ٣/١٩، الرقم: ٧٤٤، وعبد بن حميد في المسند، ١/٣٨١، الرقم: ١٢٧٨، والبيهقي في السنن الصغرى،١/٥٦٨، الرقم: ١٠٥٤، وأيضًا في إثبات عذاب القبر، ١/٥٦، الرقم: ٥٤، والخطيب التبريزي في مشكاة المصابيح، ٢/٣٨٧، الرقم: ٥٧٩٨، وأبو المحاسن في معتصر المختصر، ٢/١٨٨، والعيني في عمدة القاري، ١٦/١٥٠، الرقم: ١٢١.

فَصْلٌ فِي أَنَّ الأُمَّةَ تُسْئَلُ عَنْ مَكَانَةِ النَّبِيِّ ﷺ فِي الْقُبُوْرِ

﴾उम्मत से क़ब्र में मक़ामे मुस्तफ़ा ﷺ से मुतअल्लिक़ पूछे जाने का बयान﴿

٥٩١ / ٤٣۔ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رضي الله عنه، قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّ الْعَبْدَ إِذَا وُضِعَ فِي قَبْرِهِ، وَتَوَلَّى عَنْهُ أَصْحَابُهُ وَ إِنَّهُ لَيَسْمَعُ قَرْعَ نِعَالِهِمْ أَتَاهُ مَلَكَانِ فَيُقْعِدَانِهِ، فَيَقُوْلاَنِ: مَا كُنْتَ تَقُوْلُ فِي هَذَا الرَّجُلِ؟ لِمُحَمَّدٍ ﷺ، فَأَمَّا الْمُؤْمِنُ فَيَقُوْلُ: أَشْهَدُ أَنَّهُ عَبْدُ اللهِ وَرَسُوْلُهُ. فَيُقَالُ لَهُ: انْظُرْ إِلَى مَقْعَدِكَ مِنَ النَّارِ، قَدْ أَبْدَلَكَ اللهُ بِهِ مَقْعَدًا مِنَ الْجَنَّةِ، فَيَرَاهُمَا جَمِيْعًا. قَالَ: وَأَمَّا الْمُنَافِقُ وَالْكَافِرُ فَيُقَالُ لَهُ: مَاكُنْتَ تَقُوْلُ فِي هَذَا الرَّجُلِ؟ فَيَقُوْلُ: لَا أَدْرِي! كُنْتُ أَقُوْلُ مَا يَقُوْلُ النَّاسُ! فَيُقَالُ: لَا دَرَيْتَ وَلَا تَلَيْتَ، وِيُضْرَبُ بِمَطَارِقَ مِنْ حَدِيْدٍ ضَرْبَةً، فَيَصِيْحُ صَيْحَةً يَسْمَعُهَا مَنْ يَلِيْهِ غَيْرَ الثَّقَلَيْنِ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अनस बिन मालिक رضي الله عنه से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः बन्दे को (मरने के बाद) जब उसकी क़ब्र में रखा जाता है और उसके साथी (दफनाने के बाद वापस) लौटते हैं तो वो उनके जूतों की आवाज़ सुन रहा होता है तो उस वक़्त उसके पास दो

الحديث رقم ٤٣: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: الجنائز، باب: ما جاء فى عذاب القبر، ١ / ٤٦٢، الرقم: ١٣٠٨، وفى كتاب: الجنائز، باب: الميت يسمع خفق النعال، ١ / ٤٤٨، الرقم: ١٦٧٣، ومسلم فى الصحيح، كتاب: الجنة وصفة نعيمها وأهلها، باب: التى يصرف بها فى الدنيا أهل الجنة وأهل النار، ٤ / ٢٢٠٠، الرقم: ٢٨٧٠، وأبو داود في السنن، كتاب: السنة، باب: فى المسألة في القبر وعذاب القبر، ٤ / ٢٣٨، الرقم: ٤٧٥٢، والنسائى فى السنن كتاب: الجنائز، باب: المسألة فى القبر ٤ / ٩٧، الرقم: ٢٠٥١، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٣ / ١٢٦، الرقم: ١٢٢٩٣۔

फ़रिश्ते आते हैं और उसे बैठा कर कहते हैं, तू इस शख़्स यानी (सय्यदना मुहम्मद मुस्तफ़ा ﷺ) के मुतअ़ल्लिक़ (दुनिया में) क्या कहा करता था ? अगर वो मोमिन हो तो कहता हैः मैं गवाही देता हूँ कि यह अल्लाह तआ़ला के (कामिल) बन्दे और उसके (सच्चे) रसूल हैं। उससे कहा जाएगाः (अगर तू इन्हें पहचान न पाता तो तेरा जो ठिकाना होता) जहन्नम में अपने उस ठिकाने की तरफ़ देख कि अल्लाह तआ़ला ने तुझे उस (मा'रेफ़त मक़ामे मुस्तफ़ा ﷺ) के बदले में जन्नत में ठिकाना दे दिया है। फिर वो दोनों को देखेगा और अगर मुनाफ़िक़ या काफ़िर हो तो उससे पूछा जाएगा तू इस शख़्स (यानी सय्यदना मुहम्मद ﷺ) के मुतअ़ल्लिक़ (दुनिया में) क्या कहा करता था ? वो कहता है कि मुझे तो मालूम नहीं, मैं वही कहता था जो लोग कहते थे। उससे कहा जाएगा तूने न जाना और न पढ़ा। उसे लोहे के गुर्ज़ से मारा जाएगा तो वो (शिद्दत तकलीफ़) से चीख़ता चिल्लाता है जिसे सिवाय जिन्नात और इन्सान के सब क़रीब वाले सुनते हैं।''

٥٩٢ / ٤٤ـ عَنْ أَسْمَاءَ بِنْتِ أَبِي بَكْرٍ رضي الله عنهما أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: فِي خُطْبَتِهِ يَوْمَ خَسَفَتِ الشَّمْسُ فَلَمَّا انْصَرَفَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ حَمِدَ اللهَ وَأَثْنَى عَلَيْهِ ثُمَّ قَالَ: مَا مِنْ شَيءٍ كُنْتُ لَمْ أَرَهُ إِلَّا قَدْ رَأَيْتُهُ فِي مَقَامِي هَذَا، حَتَّى الْجَنَّةَ وَالنَّارَ، وَلَقَدْ أُوْحِيَ إِلَيَّ أَنَّكُمْ تُفْتَنُوْنَ فِي الْقُبُوْرِ مِثْلَ أَوْ قَرِيْبَ مِنْ فِتْنَةِ الدَّجَّالِ لَا أَدْرِي أَيَّ ذٰلِكَ قَالَتْ أَسْمَاءُ، يُؤْتَى أَحَدُكُمْ فَيُقَالُ: مَا عِلْمُكَ بِهٰذَا الرَّجُلِ؟ فَأَمَّا الْمُؤْمِنُ أَوِ الْمُوْقِنُ فَيَقُوْلُ: هُوَ مُحَمَّدٌ رَسُوْلُ اللهِ، جَاءَنَا بِالْبَيِّنَاتِ وَالْهُدَى، فَأَجَبْنَا وَآمَنَّا وَاتَّبَعْنَا

الحديث رقم ٤٤: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: الوضوء، باب: مَنْ لَمْ يَتَوَضَّأْ إِلَّا مِنَ الْغَشْيِ الْمُثْقِلِ، ١/ ٧٩، الرقم: ١٨٢، وفي كتاب: الجمعة، باب: صلاة النساء مع الرجال في الكسوف، ١/ ٣٥٨، الرقم: ١٠٠٥، وفي كتاب: الاعتصام بالكتاب والسنة، باب: الاقتداء بسنن رسول الله ﷺ، ٦/ ٢٦٥٧، الرقم: ٦٨٥٧، ومسلم في الصحيح، كتاب: الكسوف، باب: ما عرض على النبي ﷺ في صلاة الكسوف من أمر الجنة والنار، ٢/ ٦٢٤، الرقم: ٩٠٥، ومالك في الموطأ، ١/ ١٨٩، الرقم: ٤٤٧، وأحمد بن حنبل في المسند، ٦/ ٣٤٥، الرقم: ٢٦٩٧٠۔

فَيُقَالُ: نَمْ صَالِحًا فَقَدْ عَلِمْنَا إِنْ كُنْتَ لَمُؤْمِنًا وَأَمَّا الْمُنَافِقُ أَوِ الْمُرْتَابُ،لَا أَدْرِي أَيَّ ذَلِكَ قَالَتْ أَسْمَاءُ، فَيَقُوْلُ: لَا أَدْرِي سَمِعْتُ النَّاسَ يَقُوْلُوْنَ شَيْئًا فَقُلْتُهُ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अस्मा बिन्ते अबू बकर رضی اللہ عنہما से मरवी है कि सूरज ग्रहण के रोज़ हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ (नमाज़े कुसूफ़ से) फ़ारिग़ हो गए तो आप ﷺ ने अल्लाह तआला की हम्दो सना बयान की फिर आप ﷺ ने फरमायाः कोई ऐसी चीज़ नहीं जिसे मैंने उस जगह पर देख न लिया हो यहाँ तक कि जन्नत और दोज़ख़ भी और मुझ पर वही की गई है कि क़ब्रों में तुम्हारा इम्तिहान होगा। दज्जाल के फ़ितने जैसी आज़माइश या उसके क़रीबतर कोई शै। (रावी कहते हैं मुझे नहीं मालूम कि हज़रत अस्मा ने इनमें से कौनसी बात फरमाई) तुम में से हर एक शख़्स के पास फ़रिश्ता आएगा उससे कहा जाएगा कि इस शख़्स (हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ) के मुतअल्लिक़ तू क्या जानता है? जो ईमान वाला या यक़ीन वाला होगा वो कहेगा कि यह अल्लाह तआला के रसूल मुहम्मद मुस्तफ़ा ﷺ हैं जो हमारे पास निशानियाँ और हिदायत के साथ तशरीफ़ लाए। हमने इनकी बात मानी, इन पर ईमान लाए और इन की पैरवी की। उसे कहा जाएगाः आराम से सो जा, हमें मालूम था कि तू ईमान वाला है। अगर वो मुनाफ़िक़ या शक करने वाला होगा (रावी कहते हैं मुझे नहीं मालूम की हज़रत अस्मा ने इनमें से कौनसी बात फरमाई) तो कहेगाः मुझे नहीं मालूम मैं लोगों को जो कुछ कहते हुए सुनता था वही कह देता था।''

٥٩٣ / ٤٥. عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضی الله عنه قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِذَا قُبِرَ الْمَيِّتُ أَوْ قَالَ أَحَدُكُمْ، أَتَاهُ مَلَكَانِ أَسْوَدَانِ أَزْرَقَانِ، يُقَالُ لِأَحَدِهِمَا: الْمُنْكَرُ، وَالآخَرُ: النَّكِيْرُ، فَيَقُوْلَانِ: مَا كُنْتَ تَقُوْلُ فِي هَذَا الرَّجُلِ؟

الحديث رقم ٤٥: أخرجه الترمذي في السنن، كتاب: الجنائز، باب: ما جاء في عذاب القبر، ٣/٣٨٣، الرقم: ١٠٧١، وابن حبان في الصحيح، ٧/٣٨٦، الرقم: ٣١١٧، وابن أبي شيبة في المصنف، ٣/٥٦، الرقم: ١٢٠٦٢، وابن أبي عاصم في السنة، ٢/٤١٦، الرقم: ٨٦٤، والمنذري في الترغيب والترهيب، ٤/١٩٩، الرقم: ٥٣٩٩، والمباركفوري في تحفة الأحوذي، ٤/١٥٦، والمناوي في فيض القدير، ٢/٣٣١.

فَيَقُوْلُ: مَاكَانَ يَقُوْلُ: هُوَ عَبْدُ اللهِ وَرَسُوْلُهُ، أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَ رَسُوْلُهُ، فَيَقُوْلَانِ: قَدْ كُنَّا نَعْلَمُ أَنَّكَ تَقُوْلُ هَذَا، ثُمَّ يُفْسَحُ لَهُ فِي قَبْرِهِ سَبْعُوْنَ ذِرَاعًا فِي سَبْعِيْنَ، ثُمَّ يُنَوَّرُ لَهُ فِيْهِ، ثُمَّ يُقَالُ لَهُ: نَمْ، فَيَقُوْلُ: أَرْجِعُ إِلَى أَهْلِي فَأُخْبِرُهُمْ؟ فَيَقُوْلَانِ: نَمْ كَنَوْمَةِ الْعَرُوْسِ الَّذِي لَا يُوْقِظُهُ إِلَّا أَحَبُّ أَهْلِهِ إِلَيْهِ، حَتَّى يَبْعَثَهُ اللهُ مِنْ مَضْجَعِهِ ذَلِكَ وَإِنْ كَانَ مُنَافِقًا قَالَ: سَمِعْتُ النَّاسَ يَقُوْلُوْنَ فَقُلْتُ مِثْلَهُ لَا أَدْرِي فَيَقُوْلَانِ: قَدْ كُنَّا نَعْلَمُ أَنَّكَ تَقُوْلُ ذَلِكَ، فَيُقَالُ لِلْأَرْضِ الْتَئِمِي عَلَيْهِ فَتَلْتَئِمُ عَلَيْهِ فَتَخْتَلِفُ فِيْهَا أَضْلَاعُهُ فَلَا يَزَالُ فِيْهَا مُعَذَّبًا حَتَّى يَبْعَثَهُ اللهُ مِنْ مَضْجَعِهِ ذَلِكَ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَحَسَّنَهُ وَابْنُ حِبَّانَ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जब मय्यत को या तुम में से किसी एक को (मरने के बाद) क़ब्र में दाख़िल किया जाता है तो उसके पास स्याह रंग के नीलगूँ आँखों वाले दो फ़रिश्ते आते हैं। एक का नाम मुन्कर और दूसरे का नाम नकीर है। वो दोनों उस मय्यत से पूछते हैं तू इस अ़ज़ीम हस्ती (रसूले मुकर्रम ﷺ) के बारे में (दुनिया में) क्या कहता था ? वो शख़्स वही बात कहता है जो दुनिया में कहा करता था कि वो अल्लाह तआला के बन्दे और रसूल हैं। मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह तआला के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं और बेशक़ हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ उसके (ख़ास) बन्दे और (सच्चे) रसूल हैं । वो कहते हैं हमें मालूम था कि तू यही कहेगा फिर उसकी क़ब्र को लम्बाई व चौड़ाई में सत्तर–सत्तर हाथ कुशादा कर दिया जाता है और नूर से भर दिया जाता है फिर उसे कहा जाता हैः (सुकून व इत्मिनान से) सो जा, वो कहता है मैं वापस जा कर घर वालों को बताऊँ। वो कहते हैं नहीं (नई नवेली) दुल्हन की तरह सो जाओ। जिसे घर वालों में से जो उसे मेहबूब तरीन होता है वही उठाता है। यहाँ तक कि अल्लाह तआला (रोज़े महशर) उसे उसकी ख़्वाबगाह से (उसी हाल में) उठाएगा और अगर वो शख़्स मुनाफ़िक़ हो तो (इन सवालात के जवाब में) कहेगाः मैंने ऐसा ही कहा जैसा मैंने लोगों से कहते हुए सुना, मैं नहीं जानता (वो सही था या ग़लत)। फिर वो दोनों फ़रिश्ते कहेंगे कि हम जानते थे कि तुम ऐसा ही कहोगे। फिर ज़मीन से कहा

जाएगा कि उस पर मिल जा फिर वो उस पर इकट्ठी हो जाएगी (यानी इसे दबाएगी) यहाँ तक कि उसकी पसलियाँ एक दूसरे में दाख़िल हो जाएंगी वो मुसल्सल अ़ज़ाब में मुब्तिला रहेगा यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ला उसे इसी हालते (अ़ज़ाब) में उस जगह से उठाएगा।''

٥٩٤ / ٤٦ ۔ عَنْ عَائِشَةَ وَأَبِي هُرَيْرَةَ رضي الله عنهما عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: وَأَمَّا فِتْنَةُ الْقَبْرِ فَبِي تُفْتَنُوْنَ وَعَنِّي تُسْأَلُوْنَ فَإِذَا كَانَ الرَّجُلُ الصَّالِحُ أُجْلِسَ فِي قَبْرِهِ غَيْرَ فَزِعٍ وَلَا مَشْعُوْفٍ ثُمَّ يُقَالُ لَهُ: فِيْمَ كُنْتَ؟ فَيَقُوْلُ: فِي الإِسْلَامِ فَيُقَالُ: مَا هَذَا الرَّجُلُ الَّذِي كَانَ فِيْكُمْ؟ فَيَقُوْلُ: مُحَمَّدٌ رَسُوْلُ اللهِ جَاءَنَا بِالْبَيِّنَاتِ مِنْ عِنْدِ اللهِ ﷻ فَصَدَّقْنَاهُ فَيُقَالُ لَهُ: هَلْ رَأَيْتَ اللهَ؟ فَيَقُوْلُ: مَا يَنْبَغِي لِأَحَدٍ أَنْ يَرَى اللهَ فَيُفْرَجُ لَهُ فُرْجَةٌ قِبَلَ النَّارِ فَيَنْظُرُ إِلَيْهَا يَحْطِمُ بَعْضُهَا بَعْضًا فَيُقَالُ لَهُ: اُنْظُرْ إِلَى مَا وَقَاكَ اللهُ ﷻ ثُمَّ يُفْرَجُ لَهُ فُرْجَةٌ إِلَى الْجَنَّةِ فَيَنْظُرُ إِلَى زَهْرَتِهَا وَمَا فِيْهَا فَيُقَالُ لَهُ: هَذَا مَقْعَدُكَ وَيُقَالُ لَهُ: عَلَى الْيَقِيْنِ كُنْتَ وَعَلَيْهِ مِتَّ وَعَلَيْهِ تُبْعَثُ إِنْ شَاءَ اللهُ تَعَالَى.

رَوَاهُ ابْنُ مَاجه وَأَحْمَدُ وَإِسْنَادُهُ صَحِيْحٌ.

''हज़रत आइशा رضي الله عنهما से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः क़ब्र का इम्तिहान मेरे ही बारे में होगा और (क़ब्र में) तुम से मेरी ही मुतअ़ल्लिक़ पूछा जाएगा। फिर अगर कोई नेक आदमी होगा तो उसे बग़ैर किसी डर और ख़ौफ़ के उसकी क़ब्र में बैठाया जाएगा, फिर उसे कहा जाएगा तू किस मिल्लत से था ? तो वो कहेगा दीने इस्लाम पर, फिर उससे कहा जाएगाः यह कौन शख़्स हैं जो तुम में मौजूद थे ? फिर वो कहेगा यह मुहम्मद ﷺ अल्लाह के रसूल हैं, यह अल्लाह की तरफ़ से हमारे पास वाज़ेह निशानियाँ ले कर मबऊस हुए। फिर हमने उन की तस्दीक़ की फिर उससे कहा जाएगा क्या तूने अल्लाह को देख रखा है ?

الحديث رقم ٤٦: أخرجه ابن ماجه فی السنن، کتاب: الزهد، باب: ذکر القبر والبلی، ٢/١٤٢٦، الرقم: ٤٢٦٨، وأحمد بن حنبل فی المسند، ٦/١٣٩، الرقم: ٢٥١٣٣، وابن منده فی الإيمان، ٢/٩٦٧، الرقم: ١٠٦٧، وعبد الله بن أحمد فی السنة، ١/٣٠٨، الرقم: ٦٠٢، والعسقلانی فی فتح الباری، ٣/٢٤٠.

तो वो कहेगा कि कोई शख़्स अल्लाह को नहीं देख सकता फिर जहन्नम की तरफ़ से उसकी क़ब्र में सूराख़ कर दिया जाएगा फिर वो उसकी तरफ़ देखेगा कि उसका बा'ज़ उसके बा'ज़ को तबाह कर रहा है फिर उसे कहा जाएगा उसकी तरफ़ देख जिससे अल्लाह ﷻ ने तुम्हें बचा लिया फिर जन्नत की तरफ़ से उसकी क़ब्र में एक सूराख़ कर दिया जाएगा तो वो उसकी रौनक़ और जमाल की तरफ़ देखेगा फिर उसे कहा जाएगा यह है तेरा जन्नत का ठिकाना, और फिर उसे कहा जाएगा कि तू यक़ीन पर ज़िन्दा रहा उसी पर मरा और उसी पर अगर अल्लाह तआला ने चाहा तो तुझे ज़िन्दा किया जाएगा।''

٥٩٥ / ٤٧. عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ رضي الله عنه قَالَ: شَهِدْتُ مَعَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ جنَازَةً. فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: أَيُّهَا النَّاسُ، إِنَّ هَذِهِ الْأُمَّةَ تُبْتَلَى فِي قُبُوْرِهَا، فَإِذَا الإِنْسَانُ دُفِنَ فَتَفَرَّقَ عَنْهُ أَصْحَابُهُ، جَاءَهُ مَلَكٌ فِي يَدِهِ مِطْرَاقٌ فَأَقْعَدَهُ قَالَ: مَا تَقُوْلُ فِي هَذَا الرَّجُلِ؟ فَإِنْ كَانَ مُؤْمِنًا قَالَ: أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ، فَيَقُوْلُ: صَدَقْتَ ثُمَّ يُفْتَحُ لَهُ بَابٌ إِلَى النَّارِ فَيَقُوْلُ: هَذَا كَانَ مَنْزِلُكَ لَوْ كَفَرْتَ بِرَبِّكَ، فَأَمَّا إِذَا آمَنْتَ فَهَذَا مَنْزِلُكَ فَيُفْتَحُ لَهُ بَابٌ إِلَى الْجَنَّةِ، فَيُرِيْدُ أَنْ يَنْهَضَ إِلَيْهِ فَيَقُوْلُ لَهُ: اسْكُنْ، وَيُفْسَحُ لَهُ فِي قَبْرِهِ......الحديث.

رَوَاهُ أَحْمَدُ وَابْنُ أَبِي عَاصِمٍ.

''हज़रत अबू सईद ख़ुदरी رضي الله عنه रिवायत करते हैं कि मैं हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के साथ एक जनाज़े में शामिल हुआ। हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः ऐ लोगो! इस उम्मत (के लोगों) की क़ब्र में आज़माइश होगी। फिर जब इन्सान दफ़न कर दिया जाता है और उसके साथी (उसके पास से) मुन्तशिर हो जाते हैं तो उसके पास फ़रिश्ता जिसके हाथ में गुर्ज़ होता है, उसे वो बिठाता है और कहता हैः इस हस्ती (मुहम्मद मुस्तफ़ा ﷺ) के बारे में तुम क्या कहते हो ? फिर अगर वो मोमिन होगा तो कहता हैः मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह तआला के सिवा

الحديث رقم ٤٧: أخرجه أحمد بن حنبل فى المسند، ٣/٣، الرقم: ١١٠١٣، ١٤٨٦٤، وابن أبى عاصم فى السنة، ٢/٤١٧، الرقم: ٥٦٥، وعبد الله بن أحمد فى السنة، ٢/٦١٢، الرقم: ١٤٥٦.

कोई माबूद नहीं और बेशक मुहम्मद मुस्तफ़ा ﷺ उसके (ख़ास) बन्दे और (अफ़ज़ल तरीन) रसूल हैं। फिर वो (फ़रिश्ता) उसे कहता हैः तूने सच कहा फिर उसके लिए दोज़ख़ की तरफ़ एक दरवाजा खोला जाता है और (फ़रिश्ता) कहता है तेरा यह ठिकाना होता अगर तू अपने रब के साथ कुफ़्र करता लेकिन तू ईमान लाया फिर तेरा यह (जन्नत) ठिकाना है। फिर उसके लिए जन्नत की तरफ़ दरवाज़ा खोला जाता है। वो शख़्स (फ़रहत व ख़ुशी के मारे बे इख़्तियार हो कर) उस दरवाज़े की तरफ़ बढ़ता है तो फ़रिश्ता उससे कहता हैः ठहर जाओ और उसके लिए उसकी क़ब्र में ही वुस्अत पैदा कर दी जाती है।

٥٩٦ / ٤٨ـ عَنْ أَسْمَاءَ بِنْتِ أَبِي بَكْرٍ رضي الله عنهما في رواية طويلة قَالَتْ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّهُ لَمْ يَبْقَ شَيءٌ لَمْ أَكُنْ رَأَيْتُهُ إِلَّا وَقَدْ رَأَيْتُهُ فِي مَقَامِي هَذَا وَقَدْ أُرِيْتُكُمْ تُفْتَنُوْنَ فِي قُبُوْرِكُمْ يُسْأَلُ أَحَدُكُمْ: مَا كُنْتَ تَقُوْلُ؟ وَمَا كُنْتَ تَعْبُدُ؟ فَإِنْ قَالَ: لَا أَدْرِي رَأَيْتُ النَّاسَ يَقُوْلُوْنَ شَيْئًا فَقُلْتُهُ وَيَصْنَعُوْنَ شَيْئًا فَصَنَعْتُهُ قِيْلَ لَهُ: أَجَلْ عَلَى الشَّكِّ عِشْتَ وَعَلَيْهِ مِتَّ هَذَا مَقْعَدُكَ مِنَ النَّارِ وَإِنْ قَالَ: أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا رَسُوْلُ اللهِ قِيْلَ لَهُ: عَلَى الْيَقِيْنِ عِشْتَ وَعَلَيْهِ مِتَّ هَذَا مَقْعَدُكَ مِنَ الْجَنَّةِ. رَوَاهُ أَحْمَدُ وَإِسْنَادُهُ حَسَنٌ.

''हज़रत अस्मा बिन्ते अबू बकर رضي الله عنهما एक तवील रिवायत में बयान करती हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः ऐ लोगो! कोई भी चीज़ ऐसी नहीं जिसे मैंने न देखा हो लेकिन यह कि अब मैं उसे अपनी उस जगह से देख रहा हूँ और तहक़ीक मुझे तुम्हें अपनी क़ब्रों में आज़माइश में मुब्तिला होते दिखाया गया है। तुम में से हर किसी से सवाल किया जाएगाः तू (दुनिया में) इस हस्ती (यानी हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के) बारे में क्या कहा करता था ? और तू (दुनिया में) किसकी इबादत किया करता था ? फिर अगर उसने कहा कि मैं नहीं जानता मैंने जिस तरह लोगों को (इनके बारे में) कहते सुना मैंने भी उसी तरह कह दिया और जो कुछ उन्हें करते हुए देखा उसी तरह कर दिया तो उससे कहा जाएगा कि यहाँ तो शक पर ज़िन्दा रहा और उसी पर मरा फिर अब यह रहा तेरा आग का ठिकाना और अगर उसने कहा कि मैं गवाही देता हूँ कि

الحديث رقم ٤٨: أخرجه أحمد بن حنبل فى المسند، ٦/ ٣٥٤، وسنده حسن.

अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं है और मुहम्मद ﷺ अल्लाह तआ़ला के रसूल हैं तो उससे कहा जाएगा कि तू यक़ीन पर ज़िन्दा रहा और उसी पर मरा लिहाज़ा तेरा ठिकाना यह जन्नत है।''

٥٩٧ / ٤٩۔ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ ﷺ في رواية طويلة قَالَ: إِنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: إِنَّ الْمُؤْمِنَ إِذَا وُضِعَ فِي قَبْرِهِ أَتَاهُ مَلَكٌ، فَيَقُوْلُ لَهُ: مَا كُنْتَ تَعْبُدُ؟ فَإِنَّ اللهَ هَدَاهُ قَالَ: كُنْتُ أَعْبُدُ اللهَ فَيُقَالُ لَهُ: مَا كُنْتَ تَقُوْلُ فِي هَذَا الرَّجُلِ؟ فَيَقُوْلُ: هُوَ عَبْدُ اللهِ وَرَسُوْلُهُ فَمَا يُسْأَلُ عَنْ شَيءٍ غَيْرِهَا فَيَقُوْلُ: دَعُوْنِي حَتَّى أَذْهَبَ فَأُبَشِّرَ أَهْلِي فَيُقَالُ لَهُ: اسْكُنْ.

رَوَاهُ أَبُوْ دَاوُدَ وَأَحْمَدُ.

''ह़ज़रत अनस बिन मालिक ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः मोमिन को जब उसकी क़ब्र में रखा जाता है तो उसके पास एक फ़रिश्ता आता है जो पूछता है तू किसकी इबादत किया करता था ? फिर अल्लाह तआ़ला उसे हिदायत अ़ता फरमाता है और वो कहता है मैं अल्लाह तआ़ला की इबादत किया करता था। फिर उससे पूछा जाता है कि तू इस अ़ज़ीम हस्ती (सय्यदना मुहम्मद मुस्तफ़ा ﷺ) के मुतअ़ल्लिक़ क्या कहा करता था ? वो कहता है कि यह अल्लाह तआ़ला के बन्दे और उसके रसूल हैं। फिर उसके सिवा उससे किसी और शै के मुतअ़ल्लिक़ नहीं पूछा जाता और इसी रिवायत में है कि वो कहता है कि मुझे छोड़ दो ताकि मैं अपने घर वालों को बशारत दूँ, उसे कहा जाता है कि यहीं (ऐशो इशरत से) रहो।''

٥٩٨ / ٥٠۔ عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ ﷺ قَالَ: خَرَجْنَا مَعَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ

الحديث رقم ٤٩: أخرجه أبو داود فى السنن، كتاب: السنة، باب: فى المسألة فى القبر وعذاب القبر، ٤/٢٣٨، الرقم: ٤٧٥١، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٣/٢٣٣، الرقم: ١٣٤٧٢، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٤/١٩٤، الرقم: ٥٣٩٤، والعسقلانى فى فتح البارى، ٣/٢٣٧۔

الحديث رقم ٥٠: أخرجه أبو داود فى السنن، كتاب السنة، باب فى المسألة فى القبر وعذاب القبر، ٤/٢٣٨، الرقم: ٤٧٥١، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٣/٢٣٣، الرقم: ٢۔

فِي جِنَازَةِ رَجُلٍ مِنَ الْأَنْصَارِ فَانْتَهَيْنَا إِلَى الْقَبْرِ وَلَمَّا يُلْحَدْ، فَجَلَسَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ وَجَلَسْنَا حَوْلَهُ كَأَنَّمَا عَلَى رُءُوْسِنَا الطَّيْرُ وَفِي يَدِهِ عُوْدٌ يَنْكُتُ بِهِ فِي الْأَرْضِ فَرَفَعَ رَأْسَهُ فَقَالَ: اسْتَعِيْذُوْا بِاللهِ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ مَرَّتَيْنِ أَوْ ثَلَاثًا وَقَالَ: وَإِنَّهُ لَيَسْمَعُ خَفْقَ نِعَالِهِمْ إِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِيْنَ حِيْنَ يُقَالُ لَهُ: يَا هَذَا مَنْ رَبُّکَ؟ وَمَا دِيْنُکَ؟ وَمَنْ نَبِيُّکَ؟

وفي رواية له قَالَ: وَيَأْتِيهِ مَلَكَانِ فَيُجْلِسَانِهِ فَيَقُوْلَانِ لَهُ: مَنْ رَبُّکَ؟ فَيَقُوْلُ: رَبِّيَ اللهُ، فَيَقُوْلَانِ لَهُ: مَا دِيْنُکَ؟ فَيَقُوْلُ: دِيْنِيَ الإِسْلَامُ، فَيَقُوْلَانِ لَهُ: مَا هَذَا الرَّجُلُ الَّذِي بُعِثَ فِيْكُمْ؟ قَالَ: فَيَقُوْلُ: هُوَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ فَيَقُوْلَانِ: وَمَا يُدْرِيْکَ؟ فَيَقُوْلُ: قَرَأْتُ كِتَابَ اللهِ فَآمَنْتُ بِهِ وَصَدَّقْتُ.

وفي رواية له: فَذَلِکَ قَوْلُ اللهِ ﷻ: ﴿يُثَبِّتُ اللهُ الَّذِيْنَ آمَنُوْا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ﴾، [إبراهيم،١٤ :٢٧] قَالَ: فَيُنَادِي مُنَادٍ مِنَ السَّمَاءِ أَنْ قَد صَدَقَ عَبْدِي فَأَفْرِشُوْهُ مِنَ الْجَنَّةِ وَافْتَحُوْا لَهُ بَابًا إِلَى الْجَنَّةِ وَأَلْبِسُوْهُ مِنَ الْجَنَّةِ قَالَ: فَيَأْتِيهِ مِنْ رُوْحِهَا وَطِيْبِهَا قَالَ: وَيُفْتَحُ لَهُ فِيْهَا مَدَّ بَصَرِهِ. رَوَاهُ أَبُوْ دَاوُدَ وَأَحْمَدُ.

''हज़रत बरा' बिन आ़ज़िब ﷺ रिवायत फरमाते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के साथ हम एक अन्सारी के जनाज़े के लिए गए और क़ब्र के क़रीब जा कर रुक गए, जब तक वो दफन नहीं कर दिया गया हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ वहीं तशरीफ़ फरमा रहे और आप ﷺ के इर्दगिर्द हम भी यूँ ख़ामोश हो कर बैठ गए गोया हमारे सरों पर परिन्दे बैठे हों। आप ﷺ के दस्ते अक़्दस में एक लकड़ी थी जिससे आप ﷺ ज़मीन को कुरैदने लगे और सरे मुबारक को उठाया और दो या तीन बार फरमायाः अज़ाबे क़ब्र से अल्लाह तआला की पनाह माँगो फिर आप ﷺ ने फरमायाः मुर्दा उनके जूतों की आवाज़ सुनता है जब वो (उसके साथी) पीठ फेर कर जाते

हैं । उस वक़्त उससे पूछा जाता हैः ऐ इन्सान! तेरा रब कौन है ? तेरा दीन क्या है? और तेरा नबी कौन है ?

''और एक रिवायत में है कि उसके पास दो फ़रिश्ते आते हैं, फिर उसे बैठाकर उसे पूछते हैं कि तेरा रब कौन है ? वो कहता है कि मेरा रब अल्लाह तआ़ला है। दोनों फ़रिश्ते उससे पूछते हैं कि तेरा दीन क्या है ? वो कहता है कि मेरा दीन इस्लाम है। दोनों उससे पूछते हैं कि यह हस्ती कौन है जो तुम्हारी तरफ़ मबऊस की गई थी ? वो कहता है कि यह तो हमारे आक़ा मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह ﷺ है। दोनों पूछते हैं तुम्हें कैसे मालूम हुआ ? वो कहता है कि मैंने अल्लाह तआ़ला की किताब पढ़ी लिहाज़ा इन पर ईमान लाया और इनकी तसदीक़ की।''

''और एक रिवायत में है कि इरशादे बारी तआ़ला हैः अल्लाह तआ़ला ईमान वालों को (इस) मज़बूत बात (की बरकत) से दुन्यावी ज़िन्दगी में भी साबित क़दम रखता है और आख़िरत में (भी)।'' का यही मतलब है फिर आसमान से एक पुकारने वाले की आवाज़ आती है, मेरे बन्दे तूने सच कहा, लिहाज़ा जन्नत में इसका बिस्तर लगा दो और इसे जन्नती लिबास पहना दो और इसके लिए जन्नत का एक दरवाज़ा खोल दो। फिर इसके ज़रीये इसे जन्नत की हवा और ख़ुशबू आती है और ता हद्दे नज़र उसकी क़ब्र फ़राख़ कर दी जाती है।''

فَصْلٌ فِي الشَّفَاعَةِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

रोज़े क़यामत शफ़ाअत का बयान

٥٩٩ / ٥١۔ عَنْ آدَمَ بْنِ عَلِيٍّ رضي الله عنه قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ عُمَرَ رضي الله عنهما يَقُوْلُ: إِنَّ النَّاسَ يَصِيْرُوْنَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ جُثًا، كُلُّ أُمَّةٍ تَتْبَعُ نَبِيَّهَا يَقُوْلُوْنَ: يَا فُلَانُ اشْفَعْ، يَا فُلَانُ اشْفَعْ، حَتَّى تَنْتَهِيَ الشَّفَاعَةُ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَذَلِكَ يَوْمَ يَبْعَثُهُ اللهُ الْمَقَامَ الْمَحْمُوْدَ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ وَالنَّسَائِيُّ.

''हज़रत आदम बिन अ़ली रضي الله عنه से रिवायत है कि मैंने हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर رضي الله عنهما को फरमाते हुए सुनाः रोज़े क़यामत सब लोग गिरोह दर गिरोह हो जाएंगे। हर उम्मत अपने–अपने नबी के पीछे होगी और अ़र्ज़ करेगीः ऐ फ़लाँ! शफ़ाअ़त फरमाएं, ऐ फ़लाँ! शफ़ाअ़त कीजिए। यहाँ तक कि शफ़ाअ़त की बात हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ पर आ कर ख़त्म होगी। फिर उस रोज़ शफ़ाअ़त के लिए अल्लाह तआला आप ﷺ को मक़ामे महमूद पर फ़ाइज़ फरमाएगा।''

٦٠٠ / ٥٢۔ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رضي الله عنهما قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: إِنَّ الشَّمْسَ تَدْنُوْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ حَتَّى يَبْلُغَ الْعَرَقُ نِصْفَ الْأُذُنِ، فَبَيْنَاهُمْ

الحديث رقم ٥١: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: تفسير القرآن، باب: قوله: عسى أن يبعثك ربك مقاما محمودا، ٤ / ١٧٤٨، الرقم: ٤٤٤١، والنسائي في السنن الكبرى، ٦ / ٣٨١، الرقم: ٢٩٥، وابن منده في الإيمان، ٢ / ٨٧١، الرقم: ٩٢٧۔

الحديث رقم ٥٢: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: الزكاة، باب: مَنْ سأل الناس تَكَثُّرًا، ٢ / ٥٣٦، الرقم: ١٤٠٥، وابن منده في كتاب الإيمان، ٢ / ٨٥٤، الرقم: ٨٨٤، والطبراني في المعجم الأوسط، ٨ / ٣٠، الرقم: ٨٧٢٥، والبيهقي في شعب الإيمان، ٣ / ٢٦٩، الرقم: ٣٥٠٩، والديلمي في مسند الفردوس، ٢ / ٣٧٧، الرقم: ٣٦٧٧، والهيثمي في مجمع الزوائد، ١٠ / ٣٧١، ووثّقه۔

كَذَلِكَ اسْتَغَاثُوْا بِآدَمَ، ثُمَّ بِمُوْسَى، ثُمَّ بِمُحَمَّدٍ ﷺ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर رضي الله عنهما से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः क़यामत के दिन सूरज लोगों के बहुत क़रीब आ जाएगा यहाँ तक कि (उसकी तपिश के बाइस लोगों के) निस्फ़ कानों तक पसीना पहुँच जाएगा लोग इस हालत में (पहले) हज़रत आदम عليه السلام से मदद माँगने जाएंगे, फिर हज़रत मूसा عليه السلام से, फिर आख़िर में (हर एक के इन्कार पर) हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा ﷺ से मदद माँगेंगे।

٦٠١ / ٥٣۔ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رضي الله عنه قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: شَفَاعَتِي لِأَهْلِ الْكَبَائِرِ مِنْ أُمَّتِي. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُوْ دَاوُدَ.

وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत अनस رضي الله عنه से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः मेरी शफ़ाअ़त मेरी उम्मत के उन अफ़राद के लिए है जिन्होंने कबीरा गुनाह किए।''

٦٠٢ / ٥٤۔ عَنْ أَبِي مُوْسَى الْأَشْعَرِيِّ رضي الله عنه قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: خُيِّرْتُ بَيْنَ الشَّفَاعَةِ وَبَيْنَ أَنْ يُّدْخَلَ نِصْفُ أُمَّتِي الْجَنَّةَ. فَاخْتَرْتُ الشَّفَاعَةَ لِأَنَّهَا أَعَمُّ وَأَكْفَى أَتَرَوْنَهَا لِلْمُتَّقِيْنَ؟ لَا. وَلَكِنَّهَا لِلْمُذْنِبِيْنَ،

الحديث رقم ٥٣: أخرجه الترمذی فی السنن، كتاب: صفة القيامة والرقائق والورع عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء فی الشفاعة، ٤ / ٦٢٥، الرقم: ٢٤٣٥، وأبوداود فی السنن، كتاب: السنة، باب: فی الشفاعة، ٤ / ٢٣٦، الرقم: ٤٧٣٩، وابن ماجه عن جابر رضي الله عنه فی السنن، كتاب: الزهد، باب: ذكر الشفاعة، ٢ / ١٤٤١، الرقم: ٤٣١٠، والحاكم فی المستدرك، ١ / ١٣٩، الرقم: ٢٢٨، وقال الحاكم: هذا حديث صحيح على شرط الشيخين، وأبو يعلى فی المسند، ٦ / ٤٠، الرقم: ٣٢٨٤، والطبرانی فی المعجم الصغير، ١ / ٢٧٢، الرقم: ٤٤٨، والطيالسی فی المسند، ١ / ٢٣٣، الرقم: ١٦٦٩۔

الحديث رقم ٥٤: أخرجه ابن ماجه فی السنن، كتاب: الزهد، باب: ذكر الشفاعة، ٢ / ١٤٤١، الرقم: ٤٣١١، وأحمد بن حنبل عن ابن عمر رضی الله عنهما فی المسند، ٢ / ٧٥، الرقم: ٥٤٥٢، والبيهقی فی الاعتقاد، ١ / ٢٠٢، والهيثمی فی مجمع الزوائد، ١٠ / ٣٧٨۔

الْخَطَّائِيْنَ الْمُتَلَوِّثِيْنَ. رَوَاهُ ابْنُ مَاجه وَأَحْمَدُ.

''हज़रत अबू मूसा अश्अरी ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः मुझे यह इख़्तियार दिया गया है ख़्वाह मैं क़यामत के दिन शफ़ाअत को चुन लूँ या मेरी आधी उम्मत को (बिना हिसाब किताब) जन्नत में दाख़िल कर दिया जाए तो मैंने उसमें से शफ़ाअत को इख़्तियार किया है क्योंकि आम और (पूरी उम्मत के लिए) काफ़ी होगी और तुम शायद यह ख़याल करो कि वो परहेज़गारों के लिए होगी ? नहीं बल्कि वो (मेरी शफ़ाअत) बहुत ज़्यादा गुनाहगारों, ख़ताकारों और बुराइयों में मुब्तिला होने वालों के लिए होगी।''

٦٠٣ / ٥٥۔ عَنْ عَوْفِ بْنِ مَالِكٍ الْأَشْجَعِيِّ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: أَتَدْرُوْنَ مَا خَيَّرَنِي رَبِّيَ اللَّيْلَةَ؟ قُلْنَا: اللهُ وَرَسُوْلُهُ أَعْلَمُ قَالَ: فَإِنَّهُ خَيَّرَنِي بَيْنَ أَنْ يُدْخَلَ نِصْفُ أُمَّتِي الْجَنَّةَ، وَبَيْنَ الشَّفَاعَةِ. فَاخْتَرْتُ الشَّفَاعَةَ قُلْنَا: يَا رَسُوْلَ اللهِ، ادْعُ اللهَ أَنْ يَجْعَلَنَا مِنْ أَهْلِهَا، قَالَ: هِيَ لِكُلِّ مُسْلِمٍ. رَوَاهُ ابْنُ مَاجه وَالْحَاكِمُ وَالطَّبَرَانِيُّ.

وَقَالَ الْحَاكِمُ: هٰذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحٌ عَلَى شَرْطِ مُسْلِمٍ.

''हज़रत औफ़ बिन मालिक अश्जई ﷺ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः तुम जानते हो रात मेरे रब ने मुझे क्या इख़्तियार दिया है ? हमने अ़र्ज़ कियाः अल्लाह तआला और उसका रसूल सबसे बेहतर जानते हैं। आप ﷺ ने फरमायाः उसने मुझे यह इख़्तियार दिया है कि अगर मैं चाहूँ तो मेरी निस्फ़ उम्मत को (बिला हिसाबो किताब) जन्नत में दाख़िल कर दिया जाए या यह कि मैं शफ़ाअत करूँ, मैंने शफ़ाअत को पसन्द किया सहाबा ﷺ ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह! अल्लाह तआला से हमारे लिए दुआ फरमाएँ कि अल्लाह तआला हमें (भी) शफ़ाअत के हक़दारों में (शामिल) कर दे। आप ﷺ ने फरमायाः वो हर

الحديث رقم ٥٥: أخرجه ابن ماجه في السنن، كتاب: الزهد، باب: ذكر الشفاعة، ٢/ ١٤٤٤، الرقم: ٤٣١٧، وابن منده في الإيمان، ٢٠/ ٨٧٣، الرقم: ٩٣٢، والحاكم في المستدرك، ١/ ١٣٥، الرقم: ٢٢١، والطبراني في المعجم الكبير، ١٨/ ٦٨، الرقم: ١٢٦، وفي مسند الشاميين، ١/ ٣٢٦، الرقم: ٥٧٥.

मुसलमान के लिए है।''

٦٠٤ / ٥٦۔ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رضي الله عنهما قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ زَارَ قَبْرِي وَجَبَتْ لَهُ شَفَاعَتِي. رَوَاهُ الدَّارَ قُطْنِيُّ وَالْبَيْهَقِيُّ.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर رضي الله عنهما से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जिसने मेरी क़ब्र की ज़ियारत की (रोज़े क़यामत) उसके हक़ में मेरी शफ़ाअ़त वाजिब हो गई।''

٦٠٥ / ٥٧۔ عَنْ أَبِي حَازِمٍ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ رضي الله عنه أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: لَيَدْخُلَنَّ الْجَنَّةَ مِنْ أُمَّتِي سَبْعُوْنَ أَلْفًا، أَوْسَبْعُ مِائَةِ أَلْفٍ (لَا يَدْرِي أَبُوْحَازِمٍ أَيُّهُمَا قَالَ): مُتَمَاسِكُونَ آخِذٌ بَعْضُهُمْ بَعْضًا، لَايَدْخُلُ أَوَّلُهُمْ حَتَّى يَدْخُلَ آخِرُهُمْ، وُجُوْهُهُمْ عَلَى صُورَةِ الْقَمَرِ لَيْلَةَ الْبَدْرِ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''इमाम अबू हाज़िम हज़रत सहल बिन सा'द رضي الله عنه से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः मेरी उम्मत के सत्तर हज़ार या सात लाख अफ़राद जन्नत में दाख़िल होंगे (अबू हाज़िम को याद नहीं रहा कि उनमें से कौनसी तादाद मरवी है) वो एक दूसरे को मज़बूती से थामे हुए होंगे उनमें से पहला शख़्स उस वक्त तक जन्नत में दाख़िल नहीं होगा जब तक उन का आख़िरी फ़र्द भी दाख़िल न हो जाए (यानी वो अपने हज़ारों लाखों अफराद की निगरानी

الحديث رقم ٥٦: أخرجه الدار قطني في السنن، ٢/ ٢٧٨، الرقم: ١٩٤، والبيهقي في شعب الإيمان، ٣/ ٤٩٠، الرقم: ٤١٥٩، والحكيم الترمذي في نوادر الأصول، ٢/ ٦٧، والهيثمي في مجمع الزوائد، ٤/ ٢، وقال الهيثمي: رَوَاهُ الْبَزَّارُ.

الحديث رقم ٥٧: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: الرّقاق، باب: صفة الجنة والنار، ٥/ ٢٣٩٩، الرقم: ٦١٨٧، وفى باب: يدخل الجنة سبعون ألفا بغير حساب، ٥/ ٢٣٩٦، الرقم: ٦١٧٧، ومسلم فى الصحيح، كتاب: الإيمان، باب: الدليل على دخول طوائف من المسلمين الجنة بغير حساب ولا عذاب، ١/ ١٩٨، الرقم: ٢١٩.

कर रहा होगा) उनके चेहरे चौदहवीं रात के चाँद की तरह रोशन होंगे।''

٦٠٦ / ٥٨ـ عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَا مُجَادَلَةُ أَحَدِكُمْ فِي الْحَقِّ يَكُوْنُ لَهُ فِي الدُّنْيَا بِأَشَدَّ مُجَادَلَةً مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ لِرَبِّهِمْ فِي إِخْوَانِهِمُ الَّذِيْنَ أُدْخِلُوْا النَّارَ قَالَ: يَقُوْلُوْنَ: رَبَّنَا إِخْوَانُنَا كَانُوْا يُصَلُّوْنَ مَعَنَا وَيَصُوْمُوْنَ مَعَنَا وَيَحُجُّوْنَ مَعَنَا فَأَدْخَلْتَهُمُ النَّارَ قَالَ: فَيَقُوْلُ: اذْهَبُوْا فَأَخْرِجُوْا مَنْ عَرَفْتُمْ مِنْهُمْ، قَالَ: فَيَأْتُوْنَهُمْ فَيَعْرِفُوْنَهُمْ بِصُوَرِهِمْ فَمِنْهُمْ مَنْ أَخَذَتْهُ النَّارُ إِلَى أَنْصَافِ سَاقَيْهِ وَمِنْهُمْ مَنْ أَخَذَتْهُ إِلَى كَعْبَيْهِ، فَيُخْرِجُوْنَهُمْ، فَيَقُوْلُوْنَ: رَبَّنَا قَدْ أَخْرَجْنَا مَنْ أَمَرْتَنَا قَالَ: وَيَقُوْلُ: أَخْرِجُوْا مَنْ كَانَ فِي قَلْبِهِ وَزْنُ دِيْنَارٍ مِنَ الْإِيْمَانِ ثُمَّ قَالَ: مَنْ كَانَ فِي قَلْبِهِ وَزْنُ نِصْفِ دِينَارٍ حَتَّى يَقُوْلَ: مَنْ كَانَ فِي قَلْبِهِ وَزْنُ ذَرَّةٍ. قَالَ أَبُوْسَعِيْدٍ: فَمَنْ لَمْ يُصَدِّقْ فَلْيَقْرَأْ هَذِهِ الْآيَةَ: ﴿إِنَّ اللهَ لَا يَغْفِرُ أَنْ يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذَلِكَ لِمَنْ يَّشَاءُ﴾ إِلَى ﴿عَظِيْمًا﴾. [النساء، ٤:٤٨]. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ وَالنَّسَائِيُّ وَاللَّفْظُ لَهُ وَابْنُ مَاجَه.

''हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः तुम्हारे किसी एक शख़्स का भी दुनिया में किसी हक़ बात के लिए तकरार करना इस क़द्र सख़्त नहीं होगा जो तकरार मोमिनीन कामिलीन अपने परवरदिगार से अपने उन भाइयों के

الحديث رقم ٥٨: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: التوحيد، باب: في قول الله تعالى: وجوه يومئذ ناضرة إلى ربها ناظرة، ٦/٢٧٠٧، الرقم: ٧٠٠١، والنسائى فى السنن، كتاب: الإيمان وشرائعه، باب: زيادة الإيمان، ٨/١١٢، الرقم: ٥٠١٠، وابن ماجه فى السنن، المقدمة، باب: فى الإيمان، ١/٢٣، الرقم: ٦٠، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٣/٩٤، الرقم: ١١٧، والحاكم فى المستدرك، ٤/٦٢٦، الرقم: ٨٧٣٦، وَقَالَ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحُ الإِسْنَادِ، وابن راشد فى الجامع، ١١/٤١٠.

लिए करेंगे जो जहन्नम में दाख़िल किए जा चुके होंगे। वो अ़र्ज़ करेंगेः ऐ हमारे परवरदिगार! हमारे यह भाई हमारे साथ नमाज़ें पढ़ते थे और हमारे साथ रोज़े रखते थे और हमारे ही साथ हज करते थे और तूने इन्हें दोज़ख़ में डाल दिया है। इस पर अल्लाह तआ़ला फरमाएगाः अच्छा तुम जिन्हें पहचानते हो उन्हें जा कर खुद ही दोज़ख़ से निकाल लो। कहते हैंः वो उनके पास जाएंगे और उनकी शक्लें देख कर उन्हें पहचान लेंगे। उन में से कुछ को तो आग ने आधी पिण्डलियों तक और कुछ को टख़नों तक पकड़ा होगा। वो उन्हें निकालेंगे और फिर अ़र्ज़ करेंगे। ऐ हमारे परवरदिगार! तूने हमें जिनके निकालने का हुक्म फरमाया था उन्हें हमने निकाल लिया है, फिर अल्लाह तआ़ला फरमाएगाः उन्हें भी जाकर निकाल लो जिनके दिल में एक दीनार के बराबर भी ईमान है। (फिर) यहाँ तक फरमाएगाः उसे भी (निकाल लाओ) जिसके दिल में ज़र्रा बराबर ईमान है। हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ ने फरमायाः अब जिस शख़्स को यक़ीन न आए तो वो यह आयते करीमा पढ़ लेः ''बेशक अल्लाह इस बात को नहीं बख़्शता कि उसके साथ शिर्क किया जाए और इससे कमतर (जो गुनाह भी हो) जिसके लिए चाहता है बख़्श देता है।''

٦٠٧ / ٥٩۔ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رضي الله عنه قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: يَصُفُّ النَّاسُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ صُفُوْفًا (وَقَالَ ابْنُ نُمَيْرٍ: أَهْلُ الْجَنَّةِ) فَيَمُرُّ الرَّجُلُ مِنْ أَهْلِ النَّارِ عَلَى الرَّجُلِ، فَيَقُوْلُ: يَا فُـلَانُ، أَمَا تَذْكُرُ يَوْمَ اسْتَسْقَيْتَ فَسَقَيْتُكَ شَرْبَةً؟ قَالَ: فَيَشْفَعُ لَهُ، وَيَمُرُّ الرَّجُلُ، فَيَقُوْلُ: أَمَا تَذْكُرُ يَوْمَ نَاوَلْتُكَ طَهُوْرًا؟ فَيَشْفَعُ لَهُ، وَيَقُوْلُ: يَا فُـلَانُ، أَمَا تَذْكُرُ يَوْمَ بَعَثْتَنِي فِي حَاجَةِ كَذَا وَكَذَا؟ فَذَهَبْتُ لَكَ، فَيَشْفَعُ لَهُ.

رَوَاهُ ابْنُ مَاجَه وَأَبُوْيَعْلَى.

''हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने

الحديث رقم ٥٩: أخرجه ابن ماجه فى السنن، كتاب: الأدب، باب: فضل صدقة الماء، ٢/ ١٢١٥، الرقم: ٣٦٨٥، وأبو يعلى فى المسند، ٧/ ٧٨، الرقم: ٤٠٠٦، والطبراني فى المعجم الأوسط، ٦/ ٣١٧، الرقم: ٦٥١١، والمنذري فى الترغيب والترهيب، ٢/ ٣٩، الرقم: ١٤١٥، والهيثمي فى مجمع الزوائد، ١٠/ ٣٨٢، والقرطبي فى الجامع لأحكام القرآن، ٣/ ٢٧٥۔

फरमायाः क़यामत के दिन लोग सफ़ें बनाएंगे (इब्ने नमीर ने कहा यानी की अहले जन्नत) तो दोज़ख़ियों में से एक शख़्स जन्नतियों में से एक शख़्स के पास से गुज़रेगा और कहेगाः ऐ फ़लाँ! तुझे याद है कि एक दिन तूने पानी माँगा था और मैंने तुझे पानी पिलाया था? रावी फरमाते हैंः फिर वो जन्नती उस दोज़ख़ी के लिए शफ़ाअत करेगा। एक और आदमी दूसरे आदमी के पास से गुज़रेगा तो कहेगाः तुझे याद है कि मैंने तुझे तहारत के लिए पानी दिया था? चुनान्चे वो उसके लिए शफ़ाअत करेगा। एक और आदमी कहेगाः ऐ फ़लाँः तुझे याद है कि एक दिन तूने मुझे इस काम के लिए भेजा था चुनान्चे मैं तेरी ख़ातिर चला गया था? फिर वो उसकी शफ़ाअत करेगा।''

فَصْلٌ فِي أَجْرِ حُبِّ النَّبِيِّ ﷺ وَالصُّحْبَةِ الصَّالِحَةِ

﴿हुज़ूर ﷺ से मुहब्बत और सोहबते सालेहीन के अज्र का बयान﴾

٦٠٨ / ٦٠. عَنْ أَنَسٍ ؓ أَنَّ رَجُلًا سَأَلَ النَّبِيَّ ﷺ عَنِ السَّاعَةِ، فَقَالَ: مَتَى السَّاعَةُ؟ قَالَ: وَمَاذَا أَعْدَدْتَ لَهَا؟ قَالَ: لَا شَيءَ (وفي رواية أحمد: قَالَ: مَا أَعْدَدْتُ لَهَا مِنْ كَثِيرِ عَمَلٍ لَا صَلَاةٍ وَلَا صِيَامٍ) إِلَّا أَنِّي أُحِبُّ اللهَ وَرَسُوْلَهُ ﷺ. فَقَالَ: أَنْتَ مَعَ مَنْ أَحْبَبْتَ. قَالَ أَنَسٌ: فَمَا فَرِحْنَا بِشَيءٍ فَرَحَنَا بِقَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: أَنْتَ مَعَ مَنْ أَحْبَبْتَ. قَالَ أَنَسٌ: فَأَنَا أُحِبُّ النَّبِيَّ ﷺ وَأَبَابَكْرٍ وَعُمَرَ وَأَرْجُوْ أَنْ أَكُوْنَ مَعَهُمْ بِحُبِّي إِيَّاهُمْ وَإِنْ لَمْ أَعْمَلْ بِمِثْلِ أَعْمَالِهِمْ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अनस ؓ फरमाते हैं कि किसी आदमी ने हुज़ूर नबी-ए-अकरम ﷺ से क़यामत के मुतअल्लिक़ सवाल किया कि (या रसूलल्लाह!) क़यामत कब आएगी ? आप ﷺ

الحديث رقم ٦٠: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: المناقب، باب: مناقب عمر بن الخطاب أبي حفص القرشي العدوي، ٣/ ١٣٤٩، الرقم: ٣٤٨٥، وفي كتاب: الأدب، باب: ما جاء في قول الرجل ويلك، ٥/ ٢٢٨٥، الرقم: ٥٨١٥، وأيضًا في الأدب المفرد/ ١٢٩، الرقم: ٣٥٢، ومسلم في الصحيح، كتاب: البر والصلة والآداب، باب: المرء مع من أحب، ٤/ ٢٠٣٢، الرقم: ٢٦٣٩، والترمذي في السنن، كتاب: الزهد عن رسول الله ﷺ باب: ما جاء أن المرء مع من أحب، ٤/ ٥٩٥، الرقم: ٢٣٨٥، وقال أبو عيسى: هذا حديث صحيح، وأبو داود في السنن، كتاب: الأدب، باب: إخبار الرجل الرجل بمحبته إياه، ٤/ ٣٣٣، الرقم: ٥١٢٧، وأحمد بن حنبل في المسند، ٣/ ١٠٤، ١٦٨، ١٧٨، الرقم: ١٢٠٣٢، ١٢٧٣٨، ١٢٨٤٦، وابن حبان في الصحيح، ١٠/ ٣٠٨، الرقم: ١٠٥، وأبو يعلى في المسند، ٥/ ٣٧٢، الرقم: ٣٠٢٣، والطبراني في المعجم الأوسط، ٨/ ٢٥٤، الرقم: ٨٥٥٦.

ने फरमायाः तूने उसके लिए क्या तैयारी कर रखी है ? उसने अ़र्ज़ कियाः मेरे पास तो कोई तैयारी नहीं। (इमाम अहमद की रिवायत में है कि उसने अ़र्ज़ कियाः मैंने तो इसके लिए बहुत से आमाल तैयार नहीं किए, न बहुत सी नमाज़ें और न बहुत से रोज़े) सिवाए इसके कि अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल ﷺ से मुहब्बत रखता हूँ। आप ﷺ ने फरमायाः तुम (क़यामत के रोज़) उसी के साथ होगे जिससे तुम मुहब्बत रखते हो। हज़रत अनस ﷺ फरमाते हैं कि हमें (यानी तमाम सहाबा को) कभी किसी ख़बर से इतनी ख़ुशी नहीं हुई जितनी ख़ुशी हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के इस फरमाने अक़दस से हुई कि तुम उसके साथ होगे जिससे मुहब्बत करते हो। हज़रत अनस ﷺ ने फरमायाः मैं हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ से मुहब्बत करता हूँ और हज़रत अबू बकर व उमर ﷺ से मुहब्बत करता हूँ लिहाज़ा उम्मीद करता हूँ कि उनकी मुहब्बत के बाइस मैं भी इन हज़रात के साथ ही रहूँगा अगर चे मेरे आमाल तो उन के आमाल जैसे नहीं।''

٦٠٩ / ٦١۔ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ ﷺ أَنَّ أَعْرَابِيًّا قَالَ لِرَسُوْلِ اللهِ ﷺ: مَتَى السَّاعَةُ يَا رَسُوْلَ اللهِ؟ قَالَ لَهُ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَا أَعْدَدْتَ لَهَا؟ قَالَ: حُبَّ اللهِ وَرَسُوْلِهِ. قَالَ: أَنْتَ مَعَ مَنْ أَحْبَبْتَ.

مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ وَاللَّفْظُ لِمُسْلِمٍ.

''हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ रिवायत करते हैं कि एक देहाती शख़्स ने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ से दरयाफ्त कियाः (या रसूलल्लाह!) क़यामत कब आएगी ? आप ﷺ ने फरमायाः तूने उसके लिए क्या तैयारी कर रखी है ? उसने अ़र्ज़ कियाः अल्लाह ﷻ और उसके रसूल ﷺ की मुहब्बत (यही मेरा सरमायए हयात है)। आप ﷺ ने फरमायाः तू उसी के साथ होगा जिससे तुझे मुहब्बत है।''

الحديث رقم ٦١: أخرجه البخاري في صحيح، كتاب: الأدب، باب: علامة الحب فى الله، ٣/١٣٤٩، الرقم: ٣٤٨٥، ومسلم فى الصحيح، كتاب: البر والصلة والآداب، باب: المرء مع من أحب، ٤/٢٠٣٢، الرقم: ٢٦٣٩، والترمذى فى السنن، كتاب: الزهد عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء أن المرء مع من أحب، ٤/٥٩٥، الرقم: ٢٣٨٥۔

٦١٠ / ٦٢۔ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ ﷺ قَالَ: بَيْنَمَا أَنَا وَالنَّبِيُّ ﷺ خَارِجَانِ مِنَ الْمَسْجِدِ فَلَقِيَنَا رَجُلٌ عِنْدَ سُدَّةِ الْمَسْجِدِ، فَقَالَ: يَا رَسُوْلَ اللهِ، مَتَى السَّاعَةُ؟ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: مَا أَعْدَدْتَ لَهَا؟ فَكَأَنَّ الرَّجُلَ اسْتَكَانَ ثُمَّ قَالَ: يَا رَسُوْلَ اللهِ، مَا أَعْدَدْتُ لَهَا كَبِيْرَ صِيَامٍ وَلاَ صَلاَةٍ وَلاَ صَدَقَةٍ وَلَكِنِّي أُحِبُّ اللهَ وَرَسُوْلَهُ قَالَ: أَنْتَ مَعَ مَنْ أَحْبَبْتَ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ और मैं एक मर्तबा मस्जिद से निकल रहे थे कि मस्जिद के दरवाज़े पर एक आदमी मिला उसने अर्ज़ किया: या रसूलल्लाह क़यामत कब आएगी ? हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया: तूने उसके लिए क्या तैयारी कर रखी है ? वो आदमी कुछ देर .खामोश रहा फिर उसने अर्ज़ किया: या रसूलल्लाह! मैंने उसके लिए (फ़राईज़ से) ज्यादा रोज़ा, नमाज़ और सदक़ा वगैरह (आमाल) तो नहीं किए लेकिन (इतना है कि) मैं अल्लाह तआला और उसके रसूल ﷺ से मुहब्बत रखता हूँ। आप ﷺ ने फरमाया: तो तुम उसी के साथ होगे जिससे तुम मुहब्बत रखते हो।''

الحديث رقم ٦٢: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: الأحكام، باب: القضاء والفتيا فى الطريق، ٦ / ٢٦١٥، الرقم: ٦٧٣٤، وفى كتاب: الأدب، باب: ما جاء في قول الرّجل ويلك، ٥ / ٢٢٨٢، الرقم: ٥٨١٥، وفى كتاب: الأدب، باب: علامة حبّ الله ﷻ لقوله: (وَإِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللهَ فَاتَّبِعُوْنِي يُحْبِبْكُمُ اللهُ)، [آل عمران: ٣١]، ٥ / ٢٢٨٥، الرقم: ٥٨١٦-٥٨١٩، وفى كتاب: فضائل أصحاب النّبي ﷺ، باب: مناقب عمر بن الخطاب، ٣ / ١٣٤٩، الرقم: ٣٤٨٥، ومسلم فى الصحيح، كتاب: البرو الصلة والآداب، باب: المرء مع من أحبّ ٤ / ٢٠٣٢-٢٠٣٣، الرقم: ٢٦٣٩، والترمذى نحوه فى السنن، كتاب: الزهد عن رسول الله ﷺ ، باب: ما جاء أن المرء مع من أحب، ٤ / ٥٩٥، الرقم: ٢٣٨٥ وَصَحَّحَهُ، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٣ / ٤٦٥ الرقم: ١٢٧١٥، وابن خزيمة فى الصحيح، ٣ / ١٤٩، الرقم: ١٧٩٦، وابن حبان فى الصحيح، ١ / ١٨٢، الرقم: ٨، والطبرانى فى المعجم الأوسط، ٧ / ٢٦٧، الرقم: ٧٤٦٥، والطيالسى فى المسند، ١ / ٢٨٤، الرقم: ٢١٣١، وأبو يعلى فى المسند، ٥ / ٣٧٢، الرقم: ٣٠٢٣، والبيهقى فى شعب الإيمان، ١ / ٣٨٧، الرقم: ٤٩٨۔

٦١١ / ٦٣. عَنْ أَبِي ذَرٍّ رضي الله عنه أَنَّهُ قَالَ: يَا رَسُوْلَ اللهِ، الرَّجُلُ يُحِبُّ الْقَوْمَ وَلَا يَسْتَطِيْعُ أَنْ يَعْمَلَ كَعَمَلِهِمْ قَالَ: أَنْتَ يَا أَبَا ذَرٍّ مَعَ مَنْ أَحْبَبْتَ قَالَ: فَإِنِّي أُحِبُّ اللهَ وَرَسُوْلَهُ قَالَ: فَإِنَّكَ مَعَ مَنْ أَحْبَبْتَ. قَالَ: فَأَعَادَهَا أَبُوْ ذَرٍّ فَأَعَادَهَا رَسُوْلُ اللهِ ﷺ. رَوَاهُ أَبُوْ دَاوُدَ وَأَحْمَدُ وَالْبَزَّارُ بِإِسْنَادٍ جَيِّدٍ.

''हज़रत अबू ज़र رضي الله عنه से मरवी है कि उन्होंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! एक आदमी कुछ लोगों से मुहब्बत करता है लेकिन उन जैसा अ़मल नहीं कर सकता ? आप ﷺ ने फरमायाः ऐ अबू ज़र ! तू उसके साथ होगा जिससे तुझे मुहब्बत है। उन्होंने अ़र्ज़ कियाः मैं तो अल्लाह तआला और उसके रसूल ﷺ से मुहब्बत करता हूँ। आप ﷺ ने दो बार फरमायाः ऐ अबू ज़र ! तू यक़ीनन उनके साथ होगा जिन से तुझे मुहब्बत है। रावी का बयान है कि हज़रत अबू ज़र رضي الله عنه ने अपना सवाल दोहराया तो रसूलुल्लाह ﷺ ने भी उसे दोहरा कर बयान फरमाया।''

٦١٢ / ٦٤. عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مُغَفَّلٍ رضي الله عنه قَالَ: قَالَ رَجُلٌ لِلنَّبِيِّ ﷺ: يَا رَسُوْلَ اللهِ، وَاللهِ إِنِّي لَأُحِبُّكَ. فَقَالَ: انْظُرْ مَاذَا تَقُوْلُ. قَالَ: وَاللهِ إِنِّي لَأُحِبُّكَ. فَقَالَ: انْظُرْ مَاذَا تَقُوْلُ. قَالَ: وَاللهِ إِنِّي لَأُحِبُّكَ، ثَلَاثَ

الحديث رقم ٦٣: أخرجه أبو داود فى السنن، كتاب: الأدب، باب: أخبار الرجل الرجل بمحبته إليه، ٤ / ٣٣٣، الرقم: ٥١٢٦، والبزار فى المسند، ٩ / ٣٧٣، الرقم: ٣٩٥، والدارمى فى السنن، ٢ / ٤١٤، الرقم: ٢٧٨٧، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٥ / ١٥٦، الرقم: ٢١٤١٦، ٢١٥٠١، وابن حبان فى الصحيح، ٢ / ٣١٥، الرقم: ٥٥٦، والبخارى فى الأدب المفرد / ١٢٨، الرقم: ٣٥١، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٤ / ١٥، الرقم: ٤٥٩٨.

الحديث رقم ٦٤: أخرجه الترمذي في السنن، كتاب: الزهد عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء في فضل الفقر، ٤ / ٥٧٦، الرقم: ٢٣٥٠، وابن حبان في الصحيح، ٧ / ١٨٥، الرقم: ٢٩٢٢، والبيهقي في شعب الإيمان، ٢ / ١٧٣، الرقم: ١٤٧١، والروياني في المسند، ٢ / ٨٨، الرقم: ٨٧٢، والهيثمي في موارد الظمآن، ١ / ٦٢٠، الرقم: ٢٥٠٥، والحسيني في البيان والتعريف، ١ / ٢٩٢، الرقم: ٧٧٧، والمزي في تهذيب الكمال، ١٢ / ٣٩٨.

مَرَّاتٍ. فَقَالَ: إِنْ كُنْتَ تُحِبُّنِي فَأَعِدَّ لِلْفَقْرِ تِجْفَافًا، فَإِنَّ الْفَقْرَ أَسْرَعُ إِلَى مَنْ يُحِبُّنِي مِنَ السَّيْلِ إِلَى مُنْتَهَاهُ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ حِبَّانَ.

وَقَالَ أَبُوْ عِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ.

''हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुग़फ्फ़ल ﷺ से रिवायत है कि एक शख़्स ने बारगाहे रिसालत मआब ﷺ में अर्ज़ कियाः या रसूलल्लाह! अल्लाह की क़सम! मैं आप से मुहब्बत करता हूँ। आप ﷺ ने फरमायाः सोचो ! क्या कह रहे हो ? उसने फिर अर्ज़ कियाः अल्लाह की क़सम! मैं आपसे मुहब्बत करता हूँ। आप ﷺ ने फरमायाः (फ़िर) सोचो ! क्या कह रहे हो ? उसने फिर अर्ज़ कियाः अल्लाह की क़सम! मैं आपसे मुहब्बत करता हूँ। उसने तीन बार यह बात दोहराई। आप ﷺ ने फरमायाः अगर तू मुझसे मुहब्बत करता है तो फ़क़र के लिए तैयार हो जा क्योंकि मुझसे मुहब्बत करने वालों की तरफ़ फ़क़र उससे भी ज्यादा तेज़ी से बढ़ता है जितनी तेज़ी से सैलाब अपनी मन्ज़िल की तरफ़ बढ़ता है।''

٦١٣ / ٦٥. عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ ﷺ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ قَالَ: لَا يُؤْمِنُ أَحَدُكُمْ حَتَّى يَكُوْنَ اللهُ وَرَسُوْلُهُ أَحَبَّ إِلَيْهِ مِمَّا سِوَاهُمَا، وَحَتَّى يُقْذَفَ فِي النَّارِ أَحَبَّ إِلَيْهِ مِنْ أَنْ يَعُوْدَ فِي الْكُفْرِ، (وفي رواية: أَنْ يَرْجِعَ يَهُودِيًّا أَوْ نَصْرَانِيًّا) بَعْدَ أَنْ نَجَّاهُ اللهُ مِنْهُ، وَلَا يُؤْمِنُ أَحَدُكُمْ حَتَّى أَكُوْنَ أَحَبَّ إِلَيْهِ مِنْ وَلَدِهِ وَوَالِدِهِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِيْنَ. رَوَاهُ أَحْمَدُ وَابْنُ حِبَّانَ.

''हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ से रिवायत करते हैं कि आप ﷺ ने फरमायाः तुम में से कोई मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि अल्लाह ﷻ और उसका रसूल ﷺ उसे बाक़ी हर एक से महबूब तर न हो जाएँ, और उस वक़्त तक जब कि वो

الحديث رقم ٦٥: أخرجه أحمد بن حنبل في المسند، ٣/٢٠٧، الرقم: ١٣١٧٤، ٣/٢٧٨، الرقم: ١٣٩٩١-١٣٩٩٢، ٣/٢٣٠، الرقم: ١٣٤٣١، وابن حبان في الصحيح، ١/٤٧٣، الرقم: ٢٣٧، وعبد بن حميد في المسند، ١/٣٩٤، الرقم: ١٣٢٨، وابن منده في الإيمان، ١/٤٣٣، الرقم: ٢٨٣، وابن رجب في جامع العلوم والحكم، ١/٣٣.

कुफ्र से निजात पाने के बाद दोबारा (हालते) कुफ्र (और एक रिवायत में है कि यहूदियत और नसरानियत) की तरफ़ लौटने को वो इस तरह नापसन्द करता हो कि उसके बदले उसे आग में फेंका जाना पसन्द हो। और तुम में से कोई मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि मैं उसकी औलाद और उसके वालिद (यानी वालिदैन) और तमाम लोगों से महबूब तर न हो जाऊँ।''

٦١٤/٦٦. عَنْ عَائِشَةَ رضي الله عنها قَالَتْ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى رَسُوْلِ اللهِ ﷺ فَقَالَ: يَا رَسُوْلَ اللهِ، إِنَّكَ لَأَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ نَفْسِي وَإِنَّكَ لَأَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ أَهْلِي وَأَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ وَلَدِي، وَإِنِّي لَأَكُوْنُ فِي الْبَيْتِ، فَأَذْكُرُكَ فَمَا أَصْبِرُ حَتَّى آتِيَكَ فَأَنْظُرُ إِلَيْكَ وَإِذَا ذَكَرْتُ مَوْتِي وَمَوْتَكَ عَرَفْتُ أَنَّكَ إِذَا دَخَلْتَ الْجَنَّةَ رُفِعْتَ مَعَ النَّبِيِّيْنَ، وَأَنِّي إِذَا دَخَلْتُ الْجَنَّةَ حَسِبْتُ أَنْ لَا أَرَاكَ، فَلَمْ يَرُدَّ إِلَيْهِ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ شَيْئًا حَتَّى نَزَلَ جِبْرِيْلُ عليه السلام بِهَذِهِ الْآيَةِ: ﴿وَمَنْ يُطِعِ اللهَ وَالرَّسُولَ فَأُولٰئِكَ مَعَ الَّذِيْنَ أَنْعَمَ اللهُ عَلَيْهِمْ......﴾ [النساء، ٤:٦٩] فَدَعَا بِهِ فَقَرَأَهَا عَلَيْهِ.

رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ وَأَبُوْ نُعَيْمٍ.

''हज़रत आइशा सिद्दीक़ा رضي الله عنها से रिवायत है कि एक सहाबी ने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अर्ज़ कियाः या रसूलल्लाह आप मुझे मेरी जान और मेरे अहलो अयाल और मेरी औलाद से भी ज़्यादा महबूब हैं। जब मैं अपने घर में होता हूँ तो भी आप को ही याद करता हूँ और उस वक़्त तक चैन नहीं आता जब तक हाज़िर हो कर आपकी ज़ियारत न कर लूँ। लेकिन जब मुझे अपनी मौत और आप के विसाल मुबारक का ख़याल आता है तो सोचता हूँ कि आप तो जन्नत में अंबियाए किराम عليهم السلام के साथ बुलन्द तरीन मक़ाम पर जलवा अफ़रोज़ होंगे और अगर मैं जन्नत में दाख़िल हूँगा तो ख़दशा (डर) है कि कहीं आप की

الحديث رقم ٦٦: أخرجه الطبراني في المعجم الأوسط، ١/١٥٢، الرقم: ٤٧٧، وفي المعجم الصغير، ١/٥٣، الرقم: ٥٢، وأبو نعيم في حلية الأولياء، ٤/٢٤٠، ٨/١٢٥، والهيثمي في مجمع الزوائد، ٧/٧، وابن كثير في تفسير القرآن العظيم، ١/٥٢٤، والسيوطي في الدر المنثور، ٢/١٨٢.

ज़ियारत से महरूम न हो जाऊँ। हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने उस सहाबी के जवाब में ख़ामोश रहे : यहाँ तक कि हज़रत जिब्राईल عليه السلام यह आयते मुबारका ले कर उतरे: ''और जो कोई अल्लाह तआला और रसूल (ﷺ) की इताअत करे तो यही लोग (रोज़े क़यामत) इन (हस्तियों) के साथ होंगे जिन पर अल्लाह तआला ने (ख़ास) इन्आम फरमाया है।'' फिर आप ﷺ ने उस शख़्स को बुलाया और उसे यह आयत पढ़कर सुनाई।''

٦١٥ / ٦٧۔ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ سَعْدٍ رضي الله عنه قَالَ: خَدِرَتْ رِجْلُ ابْنِ عُمَرَ رضي الله عنهما فَقَالَ لَهُ رَجُلٌ: اذْكُرْ أَحَبَّ النَّاسِ إِلَيْكَ. فَقَالَ: (يَا) مُحَمَّدَاهُ .رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ فِي الْأَدَبِ.

''हज़रत अब्दुर्रहमान बिन सा'द رضي الله عنه बयान करते हैं कि हज़रत अब्दुलल्लाह बिन उमर رضي الله عنهما का पाँव सुन्न हो गया तो एक आदमी ने उनसे कहा कि लोगों में से जो आप को सब से ज़्यादा महबूब हो उसे याद करें, तो उन्होंने या मुहम्मद (ﷺ) का नारा बुलन्द किया।''

٦١٦ / ٦٨۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضي الله عنه عَنِ النَّبِيِّ ﷺ، قَالَ: إِذَا أَحَبَّ اللهُ الْعَبْدَ نَادَى جِبْرِيْلَ: إِنَّ اللهَ يُحِبُّ فُلَانًا فَأَحْبِبْهُ. فَيُحِبُّهُ جِبْرِيْلُ، فَيُنَادِي

الحديث رقم ٦٧: أخرجه البخاري في الأدب المفرد/٣٣٥، الرقم: ٩٦٤، وابن الجعد في المسند،١/٣٦٩، الرقم: ٢٥٣٩، وابن سعد في الطبقات الكبرى، ٤/١٥٤، وابن السني في عمل اليوم والليلة/١٤١، الرقم: ١٦٨، ١٧٠، ١٧٢، والقاضي عياض في الشفا/٤٩٨، الرقم: ١٢١٨، ويحيى بن معين في التاريخ، ٤/٢٤، الرقم: ٢٩٥٣، والمناوي في فيض القدير، ١/٣٩٩، والمزي في تهذيب الكمال، ١٧/١٤٢.

الحديث رقم ٦٨: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: بدء الخلق، باب: ذِكرِ المَلاَئِكَةِ، ٣/١١٧٥، الرقم: ٣٠٣٧، وفى كتاب: الأدب، باب: المِقَةِ مِن اللّٰهِ تَعَالَى، ٥/٢٢٤٦، الرقم: ٥٦٩٣، وفى كتاب: التوحيد، باب: كَلَامِ الرَّبِّ مَعَ جِبْرِيْلَ، ونِداءِ اللّٰهِ الملائِكَةَ، ٦/٢٧٢١، الرقم: ٧٠٤٧، وفى مسلم فى الصحيح، كتاب: البر والصلة والآداب، باب: إذا أحب الله عبداً حببه إلى عباده، ٤/٢٠٣٠، الرقم: ٢٦٣٧، ومالك فى الموطأ، كتاب: الشعر، باب: ماجاء فى المتحابين فى الله، ٢/٩٥٣، الرقم: ١٧١٠، —

جِبْرِيْلُ فِي أَهْلِ السَّمَاءِ: إِنَّ اللهَ يُحِبُّ فُلَانًا فَأَحِبُّوْهُ، فَيُحِبُّهُ أَهْلُ السَّمَاءِ، ثُمَّ يُوضَعُ لَهُ الْقَبُوْلُ فِي الْأَرْضِ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अबू हुरैरा ؓ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जब अल्लाह तआला किसी बन्दे से मुहब्बत करता है तो हज़रत जिब्राईल ؑ को बुलाता है (और हुक्म देता है) कि अल्लाह तआला फलाँ बन्दे से मुहब्बत रखता है लिहाज़ा तुम भी उससे मुहब्बत करो तो हज़रत जिब्राईल ؑ उससे मुहब्बत करते हैं। फिर हज़रत जिब्राईल ؑ आसमानी मख़्लूक़ में निदा देते हैं कि अल्लाह तआला फलाँ शख़्स से मुहब्बत करता है लिहाज़ा तुम भी उससे मुहब्बत करो फिर आसमान वाले भी उससे मुहब्बत करने लगते हैं फिर ज़मीन वालों (के दिलों) में भी उसकी मक़बूलियत रख दी जाती है।''

٦١٧/ ٦٩۔ عَنْ أَبِي مُوْسَى ؓ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَثَلُ الْجَلِيْسِ الصَّالِحِ وَالسُّوْءِ كَحَامِلِ الْمِسْكِ وَنَافِخِ الْكِيْرِ، فَحَامِلُ الْمِسْكِ: إِمَّا أَنْ يُحْذِيَكَ، وَإِمَّا أَنْ تَبْتَاعَ مِنْهُ، وإِمَّا أَنْ تَجِدَ مِنْهُ رِيْحًا طَيِّبَةً. وَنَافِخُ الْكِيرِ: إِمَّا أَنْ يُحْرِقَ ثِيَابَكَ، وَإِمَّا أَنْ تَجِدَ رِيْحًا خبِيْثَةً. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

.... وابن حبان فى الصحيح، ٢/ ٨٦، الرقم: ٣٦٥، وأحمدبن حنبل فى المسند، ٢/ ٤١٣، الرقم: ٩٣٤١، ١٠٦٨٥، والطبرانى فى المعجم الأوسط، ٣/ ١٦٠، الرقم: ٢٨٠٠، والبيهقى فى كتاب الزهد الكبير، ٢/ ٣٠١، الرقم: ٨٠٥، والأزدى فى مسند الربيع، ١/ ٤٥، الرقم: ٦٧، وابن راهويه فى المسند، ١/ ٣٦٦، الرقم: ٣٧٥، وأبو المحاسن فى معتصر المختصر، ٢/ ٢٢٨۔

الحديث رقم ٦٩: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: الذبائح والصيد، باب: المِسكِ، ٥/ ٢١٠٤، الرقم: ٥٢١٤، وفى كتاب: البيوع، باب: فى العَطّارِ وبيع المِسكِ، ٢/ ٧٤١، الرقم: ١٩٩٥، ومسلم فى الصحيح، كتاب: البر والصلة والآداب، باب: استحباب مجالسة الصالحين، ومجانبة قرناء السوء، ٤/ ٢٠٢٦، الرقم: ٧٢٧٠، ٧٣٠٧، والبيهقى فى شعب الإيمان، ٧/ ٥٤، الرقم: ٩٤٣٥، والقضاعى فى مسند الشهاب، ٢/ ٢٨٨، الرقم: ١٣٨٠، والرويانى فى المسند، ١/ ٣١٨، الرقم: ٩٧٤، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٤/ ٢٤، الرقم: ٤٦٣٨۔

''हज़रत अबू मूसा (अश्अ़री) ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी-ए-अकरम ﷺ ने फरमायाः अच्छे और बुरे साथी की मिसाल मुश्क वाले और भट्टी धौंकने वाले जैसी है क्योंकि मुश्क वाला यूँ तो तोहफ़तन तुम्हें (थोड़ी बहुत खुश्बू) दे देगा या तुम उससे ख़रीद लोगे वरना उम्दा ख़ुश्बू तो तुम पा ही लोगे, रही भट्टी वाले (लौहार) की बात तो (उसकी भट्टी की आग) या तुम्हारे कपड़े जला देगी वरना तुम्हें (भट्टी की) बदबू तो ज़रूर पहुँचेगी।''

٦١٨ / ٧٠۔ عَنْ أَبِي هَرَيْرَةَ ﷺ قَالَ: قُلْنَا: يَارَسُوْلَ اللهِ، مَالَنَا إِذَا كُنَّا عِنْدَكَ رَقَّتْ قُلُوْبُنَا، وَزَهِدْنَا فِي الدُّنْيَا، وَكُنَّا مِنْ أَهْلِ الآخِرَةِ، فَإِذَا خَرَجْنَا مِنْ عِنْدِكَ فَآنَسْنَا أَهَالِيْنَا، وَشَمَمْنَا أَوْلَادَنَا أَنْكَرْنَا أَنْفُسَنَا، فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَوْ أَنَّكُمْ تَكُوْنُوْنَ إِذَا خَرَجْتُمْ مِنْ عِنْدِي كُنْتُمْ عَلَى حَالِكُمْ ذَلِكَ لَزَارَتْكُمُ الْمَـلَائِكَةُ فِي بُيُوْتِكُمْ، وَلَوْ لَمْ تُذْنِبُوْا لَجَاءَ اللهُ بِخَلْقٍ جَدِيْدٍ كَي يُذْنِبُوْا فَيَغْفِرَ لَهُمْ ......الحديث.

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ حِبَّانَ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ रिवायत करते हैं कि हमने अ़र्ज़ कियाः या रसूलल्लाह! हमें क्या हो गया है कि जब हम आप की बारगाहे अक़दस में होते हैं तो हमारे दिल नर्म होते हैं हम दुनिया से बेरग़बत और आख़िरत के बासी (बाशिन्दे) हो जाते हैं और जब आप की बारगाह से चले जाते हैं और अपने घरों में घुलमिल जाते हैं और अपनी औलाद से मिलते जुलते रहते हैं तो हमारे दिल बदल जाते हैं, हुज़ूर नबी-ए-अकरम ﷺ ने फरमायाः अगर तुम इसी हालत में रहो जिस तरह मेरे पास से उठ कर जाते हो तो फ़रिश्ते तुम्हारे घरों में तुम्हारी ज़ियारत करें और अगर

الحديث رقم ٧٠: أخرجه الترمذى فى السنن، كتاب: صفة الجنة عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء فى صفة الجنة ونعيمها، ٤ / ٦٧٢، الرقم: ٢٥٢٦، وابن حبان فى الصحيح، ١٦ / ٣٩٦، الرقم، ٣٧٨٧، والطيالسى فى المسند، ١ / ٣٣٧، الرقم: ٢٥٨٣، والبيهقى فى شعب الإيمان، ٥ / ٤٠٩، الرقم: ٧١٠١، وعبد بن حميد فى المسند، ١ / ٤١٥، الرقم: ١٤٢٠، وابن المبارك فى الزهد، ١ / ٣٨٠، الرقم: ١٠٧٥.

तुम गुनाह न करो तो अल्लाह तआला ज़रूर एक नई मख़्लूक़ ले आएगा ताकि वो गुनाह करें (और फिर तौबा कर लें) और फिर अल्लाह तआला उन्हें बख़्श दे।''

٦١٩ / ٧١۔ عَنْ أَبِي مُوْسَى ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَثَلُ الْجَلِيْسِ الصَّالِحِ مَثَلُ الْعَطَّارِ إِنْ لَمْ يُصِبْکَ مِنْهُ أَصَابَکَ رِيْحُهُ، وَمَثَلُ الْجَلِيْسِ السُّوْءِ مَثَلُ الْقَيْنِ إِنْ لَمْ يُحرِقْکَ بِشَرَرِهِ عَلَقَ بِکَ مِنْ رِيْحِهِ. رَوَاهُ ابْنُ حِبَّانَ وَأَحْمَدُ وَالْبَزَّارُ.

وَقَالَ الْحَاكِمُ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحُ الإِسْنَادِ.

''हज़रत अबू मूसा अश्अरी ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः अच्छे साथी की मिसाल अत्तार (इत्र बेचने वाले) की सी है और उससे अगर तुम्हें और कुछ भी न मिले तो उसकी (अच्छी) खुश्बू तो पहुँच ही जाएगी और बुरे साथी की मिसाल लौहार की सी है अगर उस की (भट्टी के) शोले तुझे न भी जलाएँ तो उसकी (भट्टी की) बदबू तो तुम्हें ज़रूर पहुँचेगी।''

٦٢٠ / ٧٢۔ عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ ﷺ أَنَّهُ سَمِعَ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: لَا

الحديث رقم ٧١: أخرجه ابن حبان في الصحيح، ٢ / ٣٤١، الرقم: ٥٧٩، وأحمد بن حنبل في المسند، ٤ / ٤٠٤، الرقم: ١٩٦٢٤، والبزار في المسند، ٨ / ٤٤، الرقم: ٣٠٢٧، ٣١٩٠، والحاكم في المستدرك، ٤ / ٣١٢، الرقم: ٧٧٤٩، وأبو يعلى في المسند، ٧ / ٢٧٤، الرقم: ٤٢٩٥، والمقدسي في الأحاديث المختارة، ٦ / ١٩٩، الرقم: ٢٢١٥، ٢٢١٦، وقال المقدسي: إِسْنَادُهُ صَحِيْحٌ، والقضاعي في مسند الشهاب، ٢ / ٢٨٧، الرقم: ١٣٧٧، وابن خلاد في أمثال الحديث، ١ / ١١٣، الرقم: ٧٧-٧٨، وابن أبي عاصم في كتاب الزهد، ١ / ٢٧٤، والهيثمي في مجمع الزوائد، ٨ / ٦١، وقال الهيثمي: إِسْنَادُهُ حَسَنٌ۔

الحديث رقم ٧٢: أخرجه الترمذي في السنن، كتاب: الزهد عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء في صُحْبَةِ الْمُؤْمِنِ، ٤ / ٦٠٠، الرقم: ٢٣٩٥، وأبو داود في السنن، كتاب: الأدب، باب: مَن يؤمر أن يجالس، ٤ / ٢٥٩، الرقم: ٤٨٣٢، والدارمي في السنن، ٢ / ١٤٠، الرقم: ٢٠٥٧، وابن حبان في الصحيح، ٢ / ٣١٤، الرقم: ٥٥٤-٥٥٥-٥٦٠، والحاكم في المستدرك، ٤ / ١٤٣، الرقم: ٧١٦٩، وَقَالَ الْحَاكِمُ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحُ الإِسْنَادِ، والطبراني في المعجم الأوسط، ٣ / ٢٧٧، الرقم: ٣١٣٦، ←

تُصَاحِبْ إِلَّا مُؤْمِنًا، وَلَا يَأْكُلْ طَعَامَکَ إِلَّا تَقِيٌّ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُوْ دَاوُدَ.
وَقَالَ أَبُوْ عِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ.

''हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः (सच्चे) मोमिन की सोहबत ही इख़्तियार करो और तुम्हारा खाना सिर्फ परहेज़गार (दोस्त) ही खाए।''

.... وأبو يعلى فى المسند، ٢/٤٨٤، الرقم: ١٣١٥، والبيهقى فى شعب الإيمان، ٧/٤٢، الرقم: ٩٣٨٣، وابن المبارك فى الزهد، ١/١٢٤، الرقم: ٣٦٤، والديلمى فى مسند الفردوس، ٥/٣٥١، الرقم: ٨٤٠٣، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٤/١٥، الرقم: ٤٥٩٩.

فَصْلٌ فِي التَّبَرُّکِ بِالنَّبِيِّ ﷺ وَبِآثَارِهِ

﴿हुज़ूर ﷺ की ज़ाते अक़्दस और आप ﷺ के आसारे मुबारका से हुसूले बरकत का बयान﴾

٦٢١ / ٧٣۔ عَنِ السَّائِبِ ابْنِ يَزِيْدَ رضي الله عنه يَقُوْلُ: ذَهَبَتْ بِي خَالَتِي إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَتْ: يَا رَسُوْلَ اللهِ، إِنَّ ابْنَ أُخْتِي وَجِعٌ فَمَسَحَ رَأْسِي وَدَعَا لِي بِالْبَرَكَةِ، ثُمَّ تَوَضَّأَ، فَشَرِبْتُ مِنْ وَضُوْئِهِ، ثُمَّ قُمْتُ خَلْفَ ظَهْرِهِ، فَنَظَرْتُ إِلَى خَاتَمِ النُّبُوَّةِ بَيْنَ کَتِفَيْهِ، مِثْلَ زِرِّ الْحَجَلَةِ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत साइब बिन यज़ीद رضي الله عنه से मरवी है कि मेरी ख़ाला जान मुझे हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की ख़िदमते अक़्दस में ले जाकर अ़र्ज़ गुज़ार हुईं : या रसूलल्लाह! मेरा भांजा बीमार है। आप ﷺ ने मेरे सर पर अपना दस्ते अक़्दस फेरा और मेरे लिए बरकत की दुआ फरमाई फिर वुज़ू फरमाया तो मैंने आप ﷺ के वुज़ू का पानी पिया फिर आप ﷺ के पीछे खड़ा हो गया तो आप ﷺ के दोनों मुबारक शानों के दौरान मुहरे नबुव्वत की ज़ियारत की जो कबूतर (या उसकी मिस्ल किसी परिन्दे) के अण्डे जैसी थी।''

الحديث رقم ٧٣: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: الوَضُوء، باب: اسْتِعْمَالِ فَضْلِ وَضُوءِ النَّاسِ، ١ / ٨١، الرقم: ١٨٧، وفى كتاب: المناقب، باب: كُنْيَةِ النَّبِيِّ ﷺ، ٣ / ١٣٠١، الرقم: ٣٣٤٧، وفى باب: خَاتَمِ النُّبُوَّةِ، ٣ / ١٣٠١، الرقم: ٣٣٤٨، وفى كتاب: المرضى، باب: مَن ذَهبَ بِالصَّبِيِّ المَرِيْضِ لِيُدْعى لَهُ، ٥ / ٢١٤٦، الرقم: ٥٣٤٦، وفى كتاب: الدعوات، باب: الدُّعَاءِ لِلصِّبْيَانِ بِالْبَرَكَةِ وَمَسَحِ رَؤُوسِهِمْ، ٥ / ٢٣٣٧، الرقم: ٥٩٩١، ومسلم فى الصحيح، كتاب: الفضائل، باب: إثبات خاتَم النُّبُوَةِ وصفته ومحله من جسده ﷺ، ٤ / ١٨٢٣، الرقم: ٢٣٤٥، والنسائى فى السنن الكبرى، ٤ / ٣٦١، الرقم: ٧٥١٨، والطبرانى فى المعجم الكبير، ٧ / ١٥٧، الرقم: ٦٦٨٢، وابن أبي عاصم فى الآحاد والمثانى، ٤ / ٣٧٩، الرقم: ٢٤٢٠، ٣٤٣٠۔

٦٢٢ / ٧٤. عَنْ أَبِي جُحَيْفَةَ رضي الله عنه يَقُوْلُ: خَرَجَ عَلَيْنَا رَسُوْلُ اللهِ ﷺ بِالْهَاجِرَةِ، فَأُتِيَ بِوَضُوْءٍ فَتَوَضَّأَ، فَجَعَلَ النَّاسُ يَأْخُذُوْنَ مِنْ فَضْلِ وَضُوْئِهِ فَيَتَمَسَّحُوْنَ بِهِ، فَصَلَّى النَّبِيُّ ﷺ الظُّهْرَ رَكْعَتَيْنِ، وَالْعَصْرَ رَكْعَتَيْنِ، وَبَيْنَ يَدَيْهِ عَنَزَةٌ. وَقَالَ أَبُوْ مُوْسَى: دَعَا النَّبِيُّ ﷺ بِقَدَحٍ فِيْهِ مَاءٌ، فَغَسَلَ يَدَيْهِ وَوَجْهَهُ فِيْهِ وَمَجَّ فِيْهِ، ثُمَّ قَالَ لَهُمَا: اشْرَبَا مِنْهُ، وَأَفْرِغَا عَلَى وُجُوْهِكُمَا وَنُحُوْرِكُمَا. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

وفي رواية عنه: قَالَ: رَأَيْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ فِي قُبَّةٍ حَمْرَاءَ مِنْ أَدَمٍ، وَرَأَيْتُ بِلَالًا أَخَذَ وَضُوْءَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ، وَرَأَيْتُ النَّاسَ يَبْتَدِرُوْنَ ذَاكَ الْوَضُوْءَ، فَمَنْ أَصَابَ مِنْهُ شَيْئًا تَمَسَّحَ بِهِ، وَمَنْ لَمْ يُصِبْ مِنْهُ شَيْئًا أَخَذَ مِنْ بَلَلِ يَدِ صَاحِبِهِ، ثُمَّ رَأَيْتُ بِلَالًا أَخَذَ عَنَزَةً فَرَكَزَهَا، وَخَرَجَ النَّبِيُّ ﷺ فِي حُلَّةٍ حَمْرَاءَ مُشَمِّرًا، صَلَّى إِلَى الْعَنَزَةِ بِالنَّاسِ

الحديث رقم ٧٤: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: الوضوء، باب: اسْتِعْمَالِ فَضْلِ وَضُوْءِ النَّاسِ، ١ / ٨٠، الرقم: ١٨٥، وفي كتاب: الصلاة في الثياب، باب: الصلاةِ فِي الثَّوبِ الأَحْمَرِ، ١ / ١٤٧، الرقم: ٣٦٩، وفي كتاب: الصلاة، باب: سترة الإمام سترة من خلفه، ١ / ١٨٧، الرقم: ٤٧٣، وفي باب: الصلاة إلى العَنَزَةِ، ١ / ١٨٨، الرقم: ٤٧٧، وفي باب: السُّتْرَةُ بِمَكَّةَ وَغَيْرِهَا، ١ / ١٨٨، الرقم: ٤٧٩، وفي كتاب: الأذان، باب: الأذان لِلْمُسَافِرِ، إذا كانوا جماعةً، والإقامة، وكذلك بِعَرَفَةَ وَ جَمْعٍ، ١ / ٢٢٧، الرقم: ٦٠٧، وفي كتاب: المناقب، باب: صِفَةِ النَّبِيِّ ﷺ، ٣ / ١٣٠٤، الرقم: ٣٣٧٣، وفي كتاب: المغازي، باب: غَزْوَة الطَّائِفِ، ٤ / ١٥٧٣، الرقم: ٤٠٧٣، وفي كتاب: اللباس، باب: التَّشْمِيْر فِي الثِّيَابِ، ٥ / ٢١٨٢، الرقم: ٥٤٤٩، وفي كتاب: الوضوء، باب: الغسل والوضوء في المخضب والقدح، والخشب والحجارة، ١ / ٨٣، الرقم: ١٩٣، ومسلم في الصحيح، كتاب: فضائل الصحابة، باب: من فضائل أبي موسى وأبي عامر الأشعريين رضى الله عنهما، ٤ / ١٩٤٣، الرقم: ٢٤٩٧، وأبو يعلى في المسند، ١٣ / ٣٠١، الرقم: ٣٠١.

رَكْعَتَيْنِ، وَرَأَيْتُ النَّاسَ وَالدَّوَابَّ، يَمُرُّوْنَ مِنْ بَيْنَ يَدَيِ الْعَنَزَةِ.

مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अबू जुहैफ़ा ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ दोपहर के वक़्त हमारे पास तशरीफ़ लाए, पानी लाया गया तो आप ﷺ ने वुज़ू फरमाया। लोग आप ﷺ के वुज़ू के बचे हुए पानी को लेने लगे और उसे अपने ऊपर मलने लगे। फिर हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने ज़ुहर की दो रकअतें और अस्र की दो रकअतें अदा फरमाई और आप ﷺ के सामने नेज़ा (बरछी) था। हज़रत अबू मूसा ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने पानी का एक प्याला मँगवाया। फिर अपने हाथों और चेहरे अक़्दस को उसमें धोया और उसी में कुल्ली की फिर उन दोनों (यानी हज़रत अबू मूसा अश्अरी और अबू आमिर अश्अरी) से फरमायाः इसमें से पी लो और अपने चेहरों और सीनों पर भी डाल लो।''

''हज़रत अबू जुहैफ़ा ﷺ से ही मरवी रिवायत है कि मैंने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ को चमड़े के एक सुर्ख़ ख़ैमे में देखा और हज़रत बिलाल ﷺ को हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ का इस्तिमाल शुदा पानी लेते देखा और मैंने लोगों को आप ﷺ के इस्तिमाल शुदा पानी की तरफ़ लपकते देखा जिसे कुछ मिल गया उसने उसे अपने ऊपर मल लिया और जिसे इसमें से ज़रा भी न मिला उसने अपने साथी के हाथ से तरी हासिल की (और आपने जिस्म पर मल लिया), फिर मैंने देखा की हज़रत बिलाल ﷺ ने नेज़ा लेकर गाड़ दिया तो हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ सुर्ख़ लिबास में जोड़े को समेटते हुए बाहर तशरीफ़ लाए और नेज़े की तरफ़ मुँह करके लोगों को दो रकअतें पढ़ाई और मैंने देखा कि नेज़े से परे आदमी और जानवर गुज़र रहे हैं।''

٦٢٣ / ٧٥۔ عَنْ مَحْمُوْدِ بْنِ الرَّبِيْعِ ﷺ قَالَ: وَهُوَ الَّذِي مَجَّ رَسُوْلُ

الحديث رقم ٧٥: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: الوضوء، باب: اسْتِعْمَالِ فضلِ وَضُوءِ النَّاسِ، ١ / ٨١، الرقم: ١٨٦، وفي كتاب: العلم، باب: متى يَصِحُّ سمَاعُ الصَّغِيْرِ، ١ / ٤١، الرقم: ٧٧، وفي كتاب: الدعوات، باب: الدُّعَاءِ لِلصِّبيَانِ بالبركةِ ومسح رُؤُوسِهِمْ، ٥ / ٢٣٣٨، الرقم: ٥٩٩٣، وأحمد بن حنبل في المسند، ٤ / ٣٢٩، وابن حبان في الصحيح، ١١ / ٢٢١، الرقم: ٤٨٧٢، وعبد الرزاق في المصنف، ٥ / ٣٣٦، الرقم: ٩٧٢٠، والطبراني في المعجم الكبير، ٢٠ / ١٢، الرقم: ١٣، والبيهقي في السنن الكبرى، ٩ / ٢٢٠، وفي شعب الإيمان، ٥ / ٣٣٣، الرقم: ٦٨٢٩، والعسقلاني في فتح الباري، ١١ / ١٥١، الرقم: ٥٩٩٣.

اللهِ ﷺ فِي وَجْهِهِ وَهُوَ غُلَامٌ مِنْ بِئْرِهِمْ. وَقَالَ عُرْوَةُ، عَنِ الْمِسْوَرِ وَغَيْرِهِ، يُصَدِّقُ كُلُّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا صَاحِبَهُ: وَإِذَا تَوَضَّأَ النَّبِيُّ ﷺ كَادُوْا يَقْتَتِلُوْنَ عَلَى وَضُوْئِهِ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ وَأَحْمَدُ وَابْنُ حِبَّانَ.

''हज़रत महमूद बिन रबी' ﷺ से रिवायत है यह वही बुज़ुर्ग हैं जिनके चेहरे पर जब यह बच्चे थे उनके कुँए के पानी से हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने कुल्ली फरमाई थी और उरवह ने हज़रत मिस्वर बिन मख़रमा ﷺ से रिवायत की जिनमें से हर एक अपने साथी की तस्दीक़ करता है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ जब वुज़ू फरमाते तो क़रीब था कि लोग वुज़ू के पानी पर आपस में लड़ मरते।''

٦٢٤ / ٧٦۔ عَنِ الْمِسْوَرِ بْنِ مَخْرَمَةَ وَمَرْوَانَ رضي الله عنهما قَالَا: إِنَّ عُرْوَةَ جَعَلَ يَرْمُقُ أَصْحَابَ النَّبِيِّ ﷺ بِعَيْنَيْهِ قَالَ: فَوَاللهِ مَا تَنَخَّمَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ نُخَامَةً إِلَّا وَقَعَتْ فِي كَفِّ رَجُلٍ مِنْهُمْ فَدَلَكَ بِهَا وَجْهَهُ وَجِلْدَهُ، وَإِذَا أَمَرَهُمُ ابْتَدَرُوْا أَمْرَهُ، وَإِذَا تَوَضَّأَ كَادُوْا يَقْتَتِلُوْنَ عَلَى وَضُوْئِهِ وَإِذَا تَكَلَّمَ خَفَضُوْا أَصْوَاتَهُمْ عِنْدَهُ وَمَا يُحِدُّوْنَ إِلَيْهِ النَّظَرَ تَعْظِيْمًا لَهُ. فَرَجَعَ عُرْوَةُ إِلَى أَصْحَابِهِ فَقَالَ: أَي قَوْمِ وَاللهِ لَقَدْ وَفَدْتُ عَلَى الْمُلُوْكِ، وَفَدْتُ عَلَى قَيْصَرَ وَكِسْرَى وَالنَّجَاشِيِّ وَاللهِ إِنْ رَأَيْتُ مَلِكًا قَطُّ يُعَظِّمُهُ أَصْحَابُهُ مَا يُعَظِّمُ أَصْحَابُ مُحَمَّدٍ ﷺ مُحَمَّدًا. وَاللهِ، إِنْ تَنَخَّمَ نُخَامَةً إِلَّا وَقَعَتْ فِي كَفِّ رَجُلٍ مِنْهُمْ فَدَلَكَ بِهَا وَجْهَهُ وَجِلْدَهُ، وَ إِذَا أَمَرَهُمُ ابْتَدَرُوْا أَمْرَهُ وَ إِذَا تَوَضَّأَ كَادُوْا يَقْتَتِلُوْنَ عَلَى

الحديث رقم ٧٦: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: الشروط، باب: الشروط في الجهاد والمصالحة مع أهل الحرب وكتابة، ٢ / ٩٧٤، الرقم: ٢٥٨١، وأحمد بن حنبل في المسند، ٤ / ٣٢٩، وابن حبان في الصحيح، ١١ / ٢١٦، الرقم: ٤٨٧٢، والطبراني في المعجم الكبير، ٢٠ / ٩، الرقم: ١٣، والبيهقي في السنن الكبرى، ٩ / ٢٢٠.

وَضُوْئِهِ، وَإِذَا تَكَلَّمَ خَفَضُوْا أَصْوَاتَهُمْ عِنْدَهُ وَمَا يُحِدُّوْنَ إِلَيْهِ النَّظَرَ تَعْظِيْمًا لَهُ......الحديث. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ وَأَحْمَدُ.

''हज़रत मिस्वर बिन मखरमा और मरवान رضي الله عنهما से रिवायत है, उरवह बिन मस्ऊद (जब बारगाहे रिसालत मआब ﷺ में कुफ्फ़ार का वकील बन कर आया तो) सहाबा किराम ﷺ (के मामूलाते ताज़ीमे मुस्तफ़ा ﷺ) को देखता रहा कि जब भी आप ﷺ अपना लुआबे दहन फेंकते तो कोई न कोई सहाबी उसे अपने हाथ पर ले लेता था जिसे वो अपने चेहरे और बदन पर मल लेता था। जब आप ﷺ किसी बात का हुक्म देते हैं तो उसकी फ़ौरन तामील की जाती थी। जब आप ﷺ वुज़ू फरमाते हैं तो लोग आप ﷺ के इस्तिमाल शुदा पानी को हासिल करने के लिए एक दूसरे पर टूट पड़ते थे। (और एक दूसरे पर सब्क़त ले जाने की कोशिश करते थे हर एक की कोशिश होती थी कि यह पानी मैं हासिल करूँ) जब आप ﷺ गुफ़्तगू फरमाते हैं तो सहाबा किराम अपनी आवाज़ों को आप ﷺ के सामने पस्त रखते थे और इन्तिहाई ताज़ीम के बाइस आप ﷺ की तरफ़ नज़र जमा कर भी नहीं देखते थे। उसके बाद उरवह अपने साथियों की तरफ़ लौट गया और उनसे कहने लगाः ऐ क़ौम! अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की क़सम! मैं (बड़े–बड़े अ़ज़ीमुश्शान) बादशाहों के दरबारों में वफ़्द (नुमाइन्दों की जमाअ़त) ले गया हूँ, मैं क़ैसर व किस्रा और नज्जाशी जैसे बादशाहों के दरबारों में हाज़िर हुआ हूँ। लेकिन ख़ुदा की क़सम! मैंने कोई ऐसा बादशाह नहीं देखा कि उसके दरबारी उसकी इस तरह ताज़ीम करते हों जैसे मुहम्मद ﷺ के सहाबा किराम मुहम्मद ﷺ की ताज़ीम करते हैं। ख़ुदा की क़सम! जब वो थूकते हैं तो उनका लुआबे दहन किसी न किसी शख़्स की हथेली पर ही गिरता है, जिसे वो अपने चेहरे और बदन पर मल लेता है। जब वो कोई हुक्म देते हैं तो फ़ौरन उनके हुक्म की तामील होती है, जब वो वुज़ू फरमाते हैं तो यूँ मेहसूस होने लगता है कि लोग वुज़ू का इस्तिमाल शुदा पानी हासिल करने के लिए एक दूसरे के साथ लड़ने मरने पर आमादा हो जाएंगे वो उनकी बारगाह में अपनी आवाज़ों को पस्त रखते हैं और ताज़ीमन वो उनकी तरफ़ आँख भर कर देख नहीं सकते।''

٦٢٥ / ٧٧- عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ ﷺ قَالَ: لَمَّا رَمَى رَسُوْلُ اللهِ ﷺ

الحديث رقم ٧٧: أخرجه مسلم في الصحيح، كتاب: الحج، باب: بيان أن السنة يوم النحر أن يرمى ثم ينحر ثم يحلق، ٢ / ٩٤٨، الرقم: ١٣٠٥، والترمذي في السنن، ←

الْجَمْرَةَ وَنَحَرَ نُسُكَهُ وَحَلَقَ، نَاوَلَ الْحَالِقَ شِقَّهُ الْأَيْمَنَ فَحَلَقَهُ، ثُمَّ دَعَا أَبَا طَلْحَةَ الْأَنْصَارِيَّ فَأَعْطَاهُ إِيَّاهُ، ثُمَّ نَاوَلَهُ الشِّقَّ الْأَيْسَرَ، فَقَالَ: احْلِقْ فَحَلَقَهُ، فَأَعْطَاهُ أَبَا طَلْحَةَ، فَقَالَ: اقْسِمْهُ بَيْنَ النَّاسِ.

رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَالتِّرْمِذِيُّ وَأَبُوْ دَاوُدَ وَأَحْمَدُ.

وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ रिवायत करते हैं कि जब हुज़ूर नबी-ए-अकरम ﷺ ने मक़ामे जमरह पर कंकरियाँ मारीं और अपनी क़ुर्बानी का फ़रीज़ा अदा फरमा लिया तो आप ﷺ ने सरे अनवर का दायाँ हिस्सा हज्जाम के सामने कर दिया, उसने बाल मुबारक मूंडे फिर आप ﷺ ने हज़रत अबू तल्हा ﷺ को बुलाया और उनको वो बाल अ़ता फरमाए, इसके बाद हज्जाम के सामने (सरे अनवर की) बायीं जानिब की और फरमायाः यह भी मूंडो, उसने उधर के बाल मुबारक भी मूंड दिए, आप ﷺ ने वो बाल भी हज़रत तल्हा ﷺ को अ़ता फरमाए और फरमायाः यह बाल लोगों में तक़्सीम कर दो।''

٦٢٦ / ٧٨. عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ ﷺ قَالَ: لَقَدْ رَأَيْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ، وَالْحَلَّاقُ يَحْلِقُهُ وَأَطَافَ بِهِ أَصْحَابُهُ، فَمَا يُرِيْدُوْنَ أَنْ تَقَعَ شَعْرَةٌ إِلَّا فِي يَدِ رَجُلٍ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَأَحْمَدُ.

.... كتاب: الحج عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء بأي جانب الرأس يبدأ في الحلق، ٣/ ٢٥٥، الرقم: ٩١٢، وأبو داود في السنن، كتاب: المناسك، باب: الحلق والتقصير، ٢/ ٢٠٣،الرقم: ١٩٨١، والنسائي في السنن الكبرى، ٢/ ٤٤٩، الرقم: ٤١١٤، وأحمد بن حنبل في المسند، ٣/ ١١١، الرقم: ١٢١١٣، وابن حبان في الصحيح، ٩/ ١٩١، الرقم: ١٧٤٣، وابن خزيمة في الصحيح، ٤/ ٢٩٩، الرقم: ٢٩٢٨، والحاكم في المستدرك، ١/ ٦٤٧، الرقم: ١٧٤٣، وَقَالَ الْحَاكِمُ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحٌ.

الحديث رقم ٧٨: أخرجه مسلم في الصحيح، كتاب: الفضائل، باب: قرب النبي ﷺ من الناس وتبركهم به، ٤/ ١٨١٢، الرقم: ٢٣٢٥، وأحمد بن حنبل في المسند، ٣/ ١٣٣،١٣٧، الرقم: ١٢٤٢٣، وعبد بن حميد في المسند، ١/ ٣٨٠، الرقم: ١٢٧٣.

''हज़रत अनस ﷺ ने बयान किया कि मैंने देखाः हज्जाम आप ﷺ के सर मुबारक की हजामत बना रहा था और आप ﷺ के सहाबा किराम ﷺ आप ﷺ के इर्दगिर्द घूम रहे थे और उन (में से हर एक) की यह कोशिश थी कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ का कोई एक बाल मुबारक भी ज़मीन पर गिरने न पाए बल्कि उनमें से किसी न किसी के हाथ में आ जाए।''

٦٢٧ / ٧٩۔ عَنِ ابْنِ سِيْرِيْنَ قَالَ: قُلْتُ لِعُبَيْدَةَ: عِنْدَنَا مِنْ شَعَرِ النَّبِيِّ ﷺ، أَصَبْنَاهُ مِنْ قِبَلِ أَنَسٍ ﷺ، أَوْ مِنْ قِبَلِ أَهْلِ أَنَسٍ ﷺ، فَقَالَ: لَأَنْ تَكُوْنَ عِنْدِي شَعَرَةٌ مِنْهُ أَحَبُّ إِلَيَّ مِنَ الدُّنْيَا وَمَا فِيْهَا. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ.

''हज़रत इब्ने सीरीन ﷺ फरमाते हैं कि मैंने हज़रत उबैदा से कहाः हमारे पास हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के कुछ मूए मुबारक हैं जिन्हें हमने हज़रत अनस ﷺ से या हज़रत अनस के घर वालों से हासिल किया है। हज़रत उबैदा ने फरमायाः अगर उनमें से एक मूए मुबारक भी मेरे पास होता तो वो मुझे दुनिया और जो कुछ इस (दुनिया) में है उन सबसे कहीं ज्यादा महबूब होता।''

٦٢٨ / ٨٠۔ عَنْ عَبْدِ اللهِ ﷺ مَوْلَى أَسْمَاءَ بِنْتِ أَبِي بَكْرٍ رضي الله عنهما في رواية طويلة قَالَ: أَخْبَرَتْنِي أَسْمَاءُ بِنْتُ أَبِي بَكْرٍ رضي الله عنهما عَنْ جُبَّةِ النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَتْ: هَذِهِ جُبَّةُ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ فَأَخْرَجَتْ إِلَيَّ جُبَّةَ طَيَالِسَةٍ كِسْرَوَانِيَّةٍ لَهَا لِبْنَةُ دِيْبَاجٍ فَرْجَيْهَا مَكْفُوْفَيْنِ بِالدِّيْبَاجِ فَقَالَتْ: هَذِهِ

الحديث رقم ٧٩: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: الوضوء، باب: الماء الذي يغسل به شعرا الإنسان وكان عطاء لا يرى، ١ / ٧٥، الرقم: ١٦٨، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٧ / ٦٧، الرقم: ١٣١٨٨۔

الحديث رقم ٨٠: أخرجه مسلم فى الصحيح، كتاب: اللباس والزينة، باب: تحريم استعمال إناء الذهب والفضة على الرجال، ٣ / ١٦٤١، الرقم: ٢٠٦٩، وأبو داود فى السنن، كتاب: اللباس، باب: الرخصة فى العلم وخيط الحرير، ٤ / ٤٩، الرقم: ٤٠٥٤، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٢ / ٤٢٣، الرقم: ٤٠١٠، وفى شعب الإيمان ٥ / ١٤١، الرقم: ٦١٠٨، وأبو عوانة فى المسند، ١ / ٢٣٠، الرقم: ٥١١، وابن راهويه فى المسند، ١ / ١٣٣، الرقم: ٣٠۔

كَانَتْ عِنْدَ عَائِشَةَ حَتَّى قُبِضَتْ، فَلَمَّا قُبِضَتْ قَبَضْتُهَا وَكَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَلْبَسُهَا، فَنَحْنُ نَغْسِلُهَا لِلْمَرْضَى يُسْتَشْفَى بِهَا. رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَأَبُوْ دَاوُدَ.

''हज़रत अस्मा बिन्ते अबू बकर رضي الله عنها के ग़ुलाम हज़रत अ़ब्दुल्लाह एक तवील रिवायत में बयान करते हैं कि मुझे हज़रते अस्मा رضي الله عنها ने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के जुब्बा मुबारक के मुतअ़ल्लिक़ बताया और फरमायाः यह हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ का जुब्बा मुबारक है और फिर उन्होंने एक जुब्बा निकाल कर दिखाया जो मोटा धारीदार किसरवानी (किसरा के बादशाह की तरफ़ मन्सूब है) जुब्बा था जिसका गिरेबान दीबाज (क़ीमती कपड़े) का था और उसके दामनों पर दीबाज के सिन्जाफ़ (क़ीमती कपड़े की झालर) थे हज़रत अस्मा رضي الله عنها ने फरमायाः यह मुबारक जुब्बा हज़रत आइशा رضي الله عنها के पास उनकी वफ़ात तक महफूज रहा, जब उनकी वफ़ात हुई तो यह मैंने ले लिया। यही वो मुबारक जुब्बा है जिसे हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ पहनते थे। तो हम उसे धो कर उसका पानी बीमारों को पिलाते हैं और उसके ज़रीये शिफ़ा तलब की जाती है।

٦٢٩ / ٨١. عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ ﷺ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَدْخُلُ بَيْتَ أُمِّ سُلَيْمٍ رضي الله عنها فَيَنَامُ عَلَى فِرَاشِهَا. وَلَيْسَتْ فِيْهِ. قَالَ: فَجَاءَ ذَاتَ يَوْمٍ فَنَامَ عَلَى فِرَاشِهَا. فَأُتِيَتْ فَقِيْلَ لَهَا: هَذَا النَّبِيُّ ﷺ نَامَ فِي بَيْتِكِ، عَلَى فِرَاشِكِ. قَالَ: فَجَاءَتْ وَقَدْ عَرِقَ، وَاسْتَنْقَعَ عَرَقُهُ عَلَى قِطْعَةِ أَدِيْمٍ، عَلَى الْفِرَاشِ. فَفَتَحَتْ عَتِيْدَتَهَا فَجَعَلَتْ تُنَشِّفُ ذٰلِكَ الْعَرَقَ فَتَعْصِرُهُ فِي قَوَارِيرِهَا. فَفَزِعَ النَّبِيُّ ﷺ فَقَالَ: مَا تَصْنَعِيْنَ يَا أُمَّ سُلَيْمٍ؟ فَقَالَتْ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! نَرْجُو بَرَكَتَهُ لِصِبْيَانِنَا قَالَ: أَصَبْتِ.

رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَأَحْمَدُ.

''हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ हज़रत

الحديث رقم ٨١: أخرجه مسلم فى الصحيح، كتاب: الفضائل، باب: طيب عرق النبي ﷺ والتبرك به، ٤ / ١٨١٥، الرقم: ٢٣٣١، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٣ / ٢٢١، الرقم: ١٣٣٤ / ١٣٣٩.

उम्मे सुलैम رضي الله عنها के घर तशरीफ़ ले जाते और उनके बिछौने पर सो जाते जबकि वो घर में नहीं होती थीं। एक दिन आप ﷺ तशरीफ़ लाए और उनके बिछौने पर सो गए, वो आईं तो उनसे कहा गयाः हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ तुम्हारे घर में तुम्हारे बिछौने पर आराम फरमाँ हैं। यह सुन कर वो (फ़ौरन) घर आईं देखा तो आप ﷺ को पसीना मुबारक आया हुआ है और आप ﷺ का पसीना मुबारक चमड़े के बिस्तर पर जमा हो गया है। हज़रत उम्मे सुलेम ने अपनी बोतल खोली और पसीना मुबारक पौंछ–पौंछ कर बोतल में जमा करने लगीं। हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ अचानक उठ बैठे और फरमायाः ऐ उम्मे सुलैम! क्या कर रही हो ? उन्होंने अ़र्ज़ कियाः या रसूलल्लाह! हम इस (पसीने मुबारक) से अपने बच्चों के लिए बरकत हासिल करेंगे (और इसे बतौरे ख़ुश्बू इस्तिमाल करेंगे)। आप ﷺ ने फरमायाः तूने ठीक किया है।''

فَصْلٌ فِي التَّوَسُّلِ بِالنَّبِيِّ ﷺ وَالصَّالِحِيْنَ

﴿हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ और सालेहीन से तवस्सुल का बयान﴾

٦٣٠ / ٨٢۔ عَنْ أَنَسٍ رضي الله عنه أَنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ رضي الله عنه كَانَ إِذَا قُحِطُوْا اسْتَسْقَى بِالْعَبَّاسِ بْنِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ رضي الله عنهما فَقَالَ: اَللّٰهُمَّ إِنَّا كُنَّا نَتَوَسَّلُ إِلَيْكَ بِنَبِيِّنَا فَتَسْقِيْنَا، وَإِنَّا نَتَوَسَّلُ إِلَيْكَ بِعَمِّ نَبِيِّنَا فَاسْقِنَا، قَالَ: فَيُسْقَوْنَ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ وَابْنُ خُزَيْمَةَ وَابْنُ حِبَّانَ.

''हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ से रिवायत है कि जब क़हत (अकाल) पड़ जाता तो उमर बिन ख़त्ताब ﷺ हज़रत अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब ﷺ के वसीले से बारिश की दुआ करते और अ़र्ज़ करते – ऐ अल्लाह! हम तेरी बारगाह में अपने नबी–ए–मुकर्रम ﷺ का वसीला पकड़ा करते थे तो तू हम पर बारिश बरसा देता था और अब हम तेरी बारगाह में अपने नबी–ए–मुकर्रम ﷺ के मुअ़ज़्ज़ज़ चचा जान को वसीला बनाते हैं कि तू हम पर बारिश बरसा। फरमायाः तो उन पर बारिश बरसा दी जाती।''

الحديث رقم ٨٢: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: الاستسقاء، باب: سُؤَالِ النَّاسِ الإمام الاستسقاء إذا قَحَطُوا، ١/ ٣٤٢، الرقم: ٩٦٤، وفى كتاب: فضائل الصحابة، باب: ذكر العَبَّاسِ بنِ عَبْدِ المُطَّلِبِ رضى الله عنهما، ٣/ ١٣٦٠، الرقم: ٣٥٠٧، وابن خزيمة فى الصحيح، ٢/ ٣٣٧، الرقم: ١٤٢١، وابن حبان فى الصحيح، ٧/ ١١٠، الرقم: ٢٨٦١، والطبرانى فى المعجم الأوسط، ٣/ ٤٩، الرقم: ٢٤٣٧، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٣/ ٣٥٢، الرقم: ٦٢٢٠، وابن أبي عاصم فى الآحاد والمثانى، ١/ ٢٧٠، الرقم: ٣٥١، واللالكائي فى كرامات الأولياء، ١/ ١٣٥، الرقم: ٨٧ وابن عبد البر فى الاستيعاب، ٢/ ٨١٤، وابن جرير الطبرى فى تاريخ الأمم والملوك، ٤/ ٤٣٣۔

الحديث رقم ٨٣: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: الاستسقاء، باب: سُؤَالِ النَّاسِ الإِمَامَ الإستسقاءَ إذا قَحَطُوا، ١/ ٣٤٢، الرقم: ٩٦٣، وابن ماجه فى السنن، كتاب: إقامة الصلاة والسنة فيها، باب: ما جاء فى الدعاء فى الاستسقاء، ١/ ٤٠٥، الرقم: ١٢٧٢، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٢/ ٩٣، الرقم: ٥٦٧٣، ٢٦، ←

٦٣١ / ٨٣۔ عَنْ عَبْدِ اللهِ ابْنِ دِيْنَارٍ رضي الله عنه قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ عُمَرَ رضي الله عنهما يَتَمَثَّلُ بِشِعْرِ أَبِي طَالِبٍ:

وَأَبْيَضَ يُسْتَسْقَى الْغَمَامُ بِوَجْهِهِ
ثِمَالُ الْيَتَامَى عِصْمَةٌ لِلْأَرَامِلِ

وَقَالَ عُمَرُ بْنُ حَمْزَةَ: حَدَّثَنَا سَالِمٌ، عَنْ أَبِيْهِ: رُبَّمَا ذَكَرْتُ قَوْلَ الشَّاعِرِ، وَأَنَا أَنْظُرُ إِلَى وَجْهِ النَّبِيِّ ﷺ يَسْتَسْقِي، فَمَا يَنْزِلُ حَتَّى يَجِيْشَ كُلُّ مِيْزَابٍ.

وَأَبْيَضَ يُسْتَسْقَى الْغَمَامُ بِوَجْهِهِ
ثِمَالُ الْيَتَامَى عِصْمَةٌ لِلْأَرَامِلِ

وَهُوَ قَوْلُ أَبِي طَالِبٍ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ وَابْنُ مَاجَه وَأَحْمَدُ.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार رضي الله عنه फरमाते हैं कि मैंने हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर رضی اللہ عنہما को हज़रत अबू तालिब का यह शेर पढ़ते हुए सुना:

वो गोरे (मुखड़े वाले ﷺ) जिनके चेहरे के तवस्सुल से बारिश माँगी जाती है, यतीमों के वाली, बेवाओं के सहारा हैं।''

''हज़रत उमर बिन हमज़ा कहते हैं कि हज़रते सालिम (बिन अब्दुल्लाह बिन उमर رضي الله عنهم) ने अपने वालिदे माजिद से रिवायत की कि कभी मैं शाइर की इस बात को याद करता और कभी हुज़ूर नबी–ए– अकरम ﷺ के चेहरए अक़दस को तकता कि इस (रुख़े ज़ैबा) के तवस्सुल से बारिश माँगी जाती तो आप ﷺ (मिम्बर से) उतरने भी न पाते के सारे परनाले बहने लगते – ऊपर दिया गया शे'र हज़रत अबू तालिब का है।''

.... والبيهقى فى السنن الكبرى، ٣ / ٣٥٢، الرقم: ٦٢١٨۔٦٢١٩، والخطيب البغدادى فى تاريخ بغداد، ١٤ / ٣٨٦، الرقم: ٧٧٠٠، والعسقلانى فى تغليق التعليق، ٢ / ٣٨٩، الرقم: ١٠٠٩، وابن كثير فى البداية والنهاية، ٤ / ٢، ٤٧١، والمزى فى تحفة الأشراف، ٥ / ٣٥٩، الرقم: ٦٧٧٥۔

٨٤/٦٣٢۔ عَنْ عُثْمَانَ بْنِ حُنَيْفٍ رضي الله عنه أَنَّ رَجُلًا ضَرِيرَ الْبَصَرِ أَتَى النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَ: ادْعُ اللهَ لِي أَنْ يُعَافِيَنِي. فَقَالَ: إِنْ شِئْتَ أَخَّرْتُ لَکَ وَهُوَ خَيْرٌ. وَإِنْ شِئْتَ دَعَوْتُ. فَقَالَ: ادْعُهُ. فَأَمَرَهُ أَنْ يَتَوَضَّأَ فَيُحْسِنَ وُضُوءَهُ وَيُصَلِّيَ رَکْعَتَيْنِ. وَيَدْعُوَ بِهَذَا الدُّعَاءِ: ﴿اَللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُکَ وَأَتَوَجَّهُ إِلَيْکَ بِمُحَمَّدٍ نَبِيِّ الرَّحْمَةِ. يَا مُحَمَّدُ، إِنِّي قَدْ تَوَجَّهْتُ بِکَ إِلَى رَبِّي فِي حَاجَتِي هَذِهِ لِتُقْضَى. اَللَّهُمَّ فَشَفِّعْهُ فِيَّ﴾.

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَه وَاللَّفْظُ لَهُ.

وَقَالَ أَبُوْعِيسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ، وَقَالَ أَبُوْ إِسْحَاقَ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيحٌ، وَقَالَ الْحَاكِمُ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحٌ عَلَى شَرْطِ الشَّيْخَيْنِ، وَقَالَ الْهَيْثَمِيُّ: حَدِيْثٌ صَحِيْحٌ، وَقَالَ الْأَلْبَانِيُّ: صَحِيْحٌ.

''हज़रत उस्मान बिन हुनैफ़ رضي الله عنه रिवायत करते हैं कि एक नाबीना शख़्स हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ कि ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अ़र्ज़ किया ''या रसूलल्लाह मेरे लिए ख़ैरो आ़फ़ियत (यानी बीनाई के लौट आने) की दुआ़ फरमाइये आप ﷺ ने फरमायाः अगर तू चाहे तो तेरे लिए दुआ में ताख़ीर (देर) करूँ जो तेरे लिए बेहतर है और अगर तू चाहे तो तेरे लिए अभी

الحديث رقم ٨٤: أخرجه الترمذى فى السنن، كتاب: الدعوات عن رسول الله ﷺ، باب: في دعاء الضعيف، ٥/٥٦٩، الرقم: ٣٥٧٨، والنسائى فى السنن الكبرى، ٦/١٦٨، الرقم: ١٠٤٩٤،١٠٤٩٥، وابن ماجه فى السنن، كتاب: إقامة الصلاة والسنة فيها، باب: ما جاء فى صلاة الحاجة، ١/٤٤١، الرقم: ١٣٨٥، وابن خزيمة فى الصحيح، ٢/٢٢٥، الرقم: ١٢١٩، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٤/١٣٨، الرقم: ١٧٢٤٠۔١٧٢٤٢، والحاكم فى المستدرك، ١/٤٥٨، ٧٠٠، ٧٠٧، الرقم: ١١٨٠، ١٩٠٩، ١٩٢٩، والطبرانى فى المعجم الصغير، ١/٣٠٦، الرقم: ٥٠٨، وفى المعجم الكبير، ٩/٣٠، الرقم: ٨٣١١، والبخارى فى التاريخ الكبير، ٦/٢٠٩، الرقم: ٢١٩٢، وعبد بن حميد فى المسند، ١/١٤٧، الرقم: ٣٧٩، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ١/٢٧٢، الرقم: ١٠١٨، والهيثمى فى مجمع الزوائد، ٢/٢٧٩۔

दुआ कर दूँ। उसने अ़र्ज़ किया आका दुआ फरमा दीजिए आप ﷺ ने उसे अच्छी तरह वुज़ू करने और दो रकअ़त नमाज पढ़ने का हुक्म दिया और फरमाया ये दुआ करना ﴿اَللّٰهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُکَ وَأَتَوَجَّهُ إِلَيْکَ بِمُحَمَّدٍ نَبِيِّ الرَّحْمَةِ. يَا مُحَمَّدُ، إِنِّي قَدْ تَوَجَّهْتُ بِکَ إِلَى رَبِّي فِي حَاجَتِي هَذِهِ لِتُقْضَى. اَللّٰهُمَّ فَشَفِّعْهُ فِيَّ﴾ ''ऐ अल्लाह मैं तुझ से सवाल करता हूँ और तेरी तरफ़ तवज्जो करता हूँ नबी–ए–रहमत मुहम्मद मुस्तफ़ा ﷺ के वसीले से, ऐ मुहम्मद ﷺ मैं आपके वसीले से अपने रब की बारगाह में अपनी हाजत पेश करता हूँ ताकि पूरी हो, ऐ अल्लाह मेरे हक में सरकारे दो आलम ﷺ की शफ़ाअ़त कुबूल फरमा।''

٦٣٣ / ٨٥. عَنْ أَبِي الْجَوْزَاءِ أَوْسِ بْنِ عَبْدِ اللهِ ﷺ قَالَ: قُحِطَ أَهْلُ الْمَدِيْنَةِ قَحْطًا شَدِيْدًا، فَشَكَوْا إِلَى عَائِشَةَ رضي الله عنها فَقَالَتْ: انْظُرُوْا قَبْرَ النَّبِيِّ ﷺ فَاجْعَلُوا مِنْهُ كِوًى إِلَى السَّمَاءِ حَتَّى لَا يَكُوْنَ بَيْنَهُ وَبَيْنَ السَّمَاءِ سَقْفٌ، قَالَ فَفَعَلُوْا، فَمُطِرْنَا مَطَرًا حَتَّى نَبَتَ الْعُشْبُ، وَسَمِنَتِ الْإِبِلُ حَتَّى تَفَتَّقَتْ مِنَ الشَّحْمِ فَسُمِّيَ عَامَ الْفَتْقِ. رَوَاهُ الدَّارِمِيُّ.

''हज़रत अबू जौज़ा औस बिन अ़ब्दुल्लाह ﷺ से मरवी है कि एक मर्तबा मदीना मुनव्वरा के लोग सख़्त कहत (अकाल) में मुब्तिला हो गए तो उन्होंने हज़रत आइशा رضی اللہ عنہا से शिकायत की। उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा رضی اللہ عنہا ने फरमायाः हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की क़ब्रे अनवर (यानी रौज़ए अक़दस) के पास जाओ और वहाँ से एक खिड़की आसमान की तरफ़ इस तरह खोलो कि क़ब्रे अनवर और आसमान के दरमियान कोई पर्दा बीच में न रहे। रिवायत करने वाले कहते हैं कि लोगों ने ऐसा ही किया तो बहुत ज़्यादा बारिश हुई यहाँ तक कि ख़ूब सब्ज़ा उग आया और ऊँट इतने मोटे हो गए कि (महसूस होता था) जैसे वो चर्बी से फट पड़ेंगे। लिहाज़ा उस साल का नाम ही ''عَامُ الْفَتْق'' (पेट) फ़टने का साल रख दिया गया।''

الحديث رقم ٨٥: أخرجه الدارمى فى السنن، باب: (١٥): ما أكرم الله تعالى نبيّه ﷺ بعد موته، ١ / ٥٦، الرقم: ٩٢، والخطيب التبريزى فى مشكاة المصابيح، ٤ / ٤٠٠، الرقم: ٥٩٥٠، وابن الجوزى فى الوفاء بأحوال المصطفى ﷺ، ٢ / ٨٠١، وتقى الدين السبكى فى شفاء السقام، ١ / ١٢٨، والقسطلانى فى المواهب اللدنية، ٤ / ٢٧٦، وفى شرحه الزرقانى، ١١ / ١٥٠.

٦٣٤ / ٨٦۔ عَنْ مَالِكِ الدَّارِ رضي الله عنه قَالَ: أَصَابَ النَّاسَ قَحْطٌ فِيْ زَمَنِ عُمَرَ رضي الله عنه، فَجَاءَ رَجُلٌ إِلَى قَبْرِ النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! اسْتَسْقِ لِأُمَّتِكَ فَإِنَّهُمْ قَدْ هَلَكُوْا، فَأَتَي الرَّجُلَ فِي الْمَنَامِ فَقِيْلَ لَهُ: ائْتِ عُمَرَ فَأَقْرِئْهُ السَّلَامَ، وَأَخْبِرْهُ أَنَّكُمْ مَسْقِيُّوْنَ وَقُلْ لَهُ: عَلَيْكَ الْكَيْسُ! عَلَيْكَ الْكَيْسُ! فَأَتَى عُمَرَ فَأَخْبَرَهُ فَبَكَى عُمَرُ ثُمَّ قَالَ: يَا رَبِّ لَا آلُوْ إِلَّا مَا عَجَزْتُ عَنْهُ. رَوَاهُ ابْنُ أَبِي شَيْبَةَ بِإِسْنَادٍ صَحِيْحٍ وَالْبَيْهَقِيُّ فِي الدَّلَائِلِ.

''हज़रत मालिक दार ﷺ रिवायत करते हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब ﷺ के ज़माने में लोग क़हत (अकाल) में मुब्तिला हो गए फ़िर एक सहाबी हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की क़ब्रे अतहर पर हाज़िर हुए और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह आप (अल्लाह तआला से) अपनी उम्मत के लिए सैराबी माँगे क्योंकि वो (क़हत साली के बाइस) हलाक हो गई है। फ़िर ख़्वाब में हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ उस सहाबी के पास तशरीफ़ लाए और फरमाया उमर के पास जा कर उसे मेरा सलाम कहो और उसे बताओ के तुम सैराब किए जाओगे और उमर से (यह भी) कह दो (दीन के दुश्मन (सामराजी) तुम्हारी जान लेने के दर पर हैं) अक़्लमंदी इख़्तियार करो, अक़्लमंदी इख़्तियार करो। फ़िर वो सहाबी हज़रत उमर ﷺ के पास आए और उन्हें ख़बर दी तो हज़रत उमर ﷺ रो पड़े और फरमाया ऐ अल्लाह मैं कोताही नहीं करता मगर यह कि आजिज़ हो जाऊँ।''

٦٣٥ / ٨٧۔ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رضي الله عنهما أَنَّهُ قَالَ: اسْتَسْقَى عُمَرُ بْنُ

الحديث رقم ٨٦: أخرجه ابن أبي شيبة في المصنف، ٦/٣٥٦، الرقم: ٣٢٠٠٢، والبيهقي في دلائل النبوة، ٧/٤٧، وابن عبد البر في الاستيعاب، ٣/١١٤٩، والسبكي في شفاء السقام، ١/١٣٠، والهندي في كنزل العمال، ٨/٤٣١، الرقم: ٢٣٥٣٥، وابن تيمية في اقتضاء الصراط المستقيم/٣٧٣، وابن كثير في البداية والنهاية، ٥/١٦٧، وقال: إسناده صحيح، والعسقلاني في الإصابة، ٣/٤٨٤ وقال: رَوَاهُ ابْنُ أَبِي شيبةَ بِإِسْنَادٍ صَحِيحٍ۔

الحديث رقم ٨٧: أخرجه الحاكم في المستدرك، ٣/٣٧٧، الرقم: ٥٤٣٨، وابن عبد البر في الاستيعاب، ٣/٩٨، والسيوطي في الجامع الصغير، ١/٣٠٥، الرقم: ٥٥٩، والذهبي في سير أعلام النبلاء، ٢/٩٢، والعسقلاني في فتح الباري، ٢/٤٩٧، ←

الْخَطَّابِ رضي الله عنه عَامَ الرَّمَادَةِ بِالْعَبَّاسِ بْنِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ رضي الله عنهما فَقَالَ: اللَّهُمَّ، هَذَا عَمُّ نَبِيِّكَ الْعَبَّاسُ نَتَوَجَّهُ إِلَيْكَ بِهِ فَاسْقِنَا فَمَا بَرِحُوْا حَتَّى سَقَاهُمُ اللهُ. قَالَ: فَخَطَبَ عُمَرُ النَّاسَ فَقَالَ: أَيُّهَا النَّاسُ، إِنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ كَانَ يَرَى لِلْعَبَّاسِ مَا يَرَى الْوَلَدُ لِوَالِدِهِ يُعَظِّمُهُ وَيُفَخِّمُهُ وَيَبِرُّ قَسَمَهُ فَاقْتَدُوْا أَيُّهَا النَّاسُ، بِرَسُوْلِ اللهِ فِي عَمِّهِ الْعَبَّاسِ وَاتَّخِذُوْهُ وَسِيْلَةً إِلَى اللهِ عزوجل فِيْمَا نَزَلَ بِكُمْ. رَوَاهُ الْحَاكِمُ.

''हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उमर رضی اللہ عنہما से मरवी है कि हज़रते उमर बिन ख़त्ताब رضی اللہ ने आमर्रिमादा (क़हत व हलाकत के साल) में हज़रत अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब رضی اللہ عنہما को वसीला बनाया और अल्लाह तआला से बारिश की दुआ माँगी और अ़र्ज़ किया कि ऐ अल्लाह यह तेरे नबी–ए–मुकर्रम ﷺ के मुअ़ज़्ज़ज़ चचा हज़रत अ़ब्बास हैं हम इनके वसीले से तेरी नज़रे करम के तलबगार हैं हमें पानी से सेराब कर दे'' वो दुआ कर ही रहे थे कि अल्लाह तआला ने उन्हें पानी से सेराब कर दिया। रिवायत करने वाले ने बयान किया कि फ़िर हज़रते उ़मर رضی اللہ عنہ ने लोगों से ख़िताब फरमाया – ऐ लोगो! हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ हज़रत अ़ब्बास رضی اللہ عنہ वैसा ही समझते थे जैसे बेटा बाप को समझता है (यानी हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ हज़रते अ़ब्बास رضی اللہ عنہ को बमंज़िल वालिद समझते थे) आप ﷺ उनकी ताज़ीमो तौक़ीर करते और उनकी क़समों को पूरा करते थे। ऐ लोगो तुम भी हज़रते अ़ब्बास رضی اللہ عنہ के बारे में हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की पैरवी करो और इन्हें अल्लाह तआला की बारगाह में वसीला बनाओ (ताकि वो तुम पर बारिश बरसाए)''

٦٣٦ / ٨٨۔ عَنْ مُصْعَبِ ابْنِ سَعْدٍ رضي الله عنه قَالَ: رَأَى سَعْدٌ رضي الله عنه أَنَّ لَهُ

.... والقسطلانى فى المواهب اللدنية، ٤ / ٢٧٧، والسبكى فى شفاء السقام / ١٢٨، والمباركفورى فى تحفة الأحوذى، ٩ / ٣٤٨، والمناوى فى فيض القدير، ٥ / ٢١٥.

الحديث رقم ٨٨: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: الجهاد، باب: مَنِ اسْتَعَانَ بِالضُّعَفَاءِ وَ الصَّالِحِين في الْحَرْبِ، ٣ / ١٠٦١، الرقم: ٢٧٣٩، والترمذى فى السنن، كتاب: الجهاد عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء فى الاستفتاح بصعاليك المسلمين، ٤ / ٢٠٦، الرقم: ١٧٠٢، وأبو داود فى السنن، كتاب: الجهاد، باب: فى ـــ

فَضْلًا عَلَى مَنْ دُوْنَهُ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: هَلْ تُنْصَرُوْنَ وَتُرْزَقُوْنَ إِلَّا بِضُعَفَائِكُمْ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ وَالتِّرْمِذِيُّ.

وفي رواية: عَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ رضي الله عنه قَالَ سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُوْلُ: ابْغُوْنِي فِي ضُعَفَائِكُمْ، فَإِنَّمَا تُرْزَقُوْنَ وَتُنْصَرُوْنَ بِضُعَفَائِكُمْ.

رَوَاهُ التِّرمِذِيُّ وَأَبُوْ دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ.

وَقَالَ أَبُوْ عِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रते मुस्अब बिन सा'द रضي الله عنه से रिवायत है कि (एक मर्तबा) हज़रते सा'द बिन अबि वक़्क़ास رضي الله عنه के दिल में ख़याल आया कि इन्हें उन लोगों पर फ़ज़ीलत है जो माली लिहाज़ से कमज़ोर हैं तो हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : याद रखो तुम्हारे कमज़ोर और ज़ईफ़ लोगों के वसीले से ही तुम्हें नुसरत (मदद) अ़ता की जाती है और उनके वसीले से ही तुम्हें रिज़्क़ दिया जाता है।''

और एक रिवायत में हज़रते अबू दरदा رضي الله عنه बयान करते हैं कि मैंने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ से सुनाः आप ﷺ ने फरमायाः मुझे अपने कमज़ोर लोगों में तलाश करो बेशक तुम्हें अपने कमज़ोर लोगों की वजह से ही रिज़्क़ दिया जाता है और उन्हीं की वजह से तुम्हारी मदद की जाती है।''

٦٣٧ / ٨٩۔ عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رضي الله عنه، قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ:

.... الانتصار برزل الخيل والضعفة، ٣ / ٣٢، الرقم: ٢٥٩٤، والنسائى فى السنن، كتاب: الجهاد، باب: الاستنصار بالضعيف، ٦ / ٤٥، الرقم: ٣١٧٩، وفى السنن الكبرى، ٣ / ٣٠، الرقم: ٤٣٨٨، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٥ / ١٩٨، الرقم: ٢١٧٧٩، وابن حبان فى الصحيح، ١١ / ٨٥، الرقم: ٤٧٦٧، والحاكم فى المستدرك، ٢ / ١١٦، ١٥٧، الرقم: ٢٥٠٩، ٢٦٤١، وَقَالَ الحاكمُ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحُ الإِسْنَادِ، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٣ / ٣٤٥، الرقم: ٦١٨١: ٦ / ٣٣١، الرقم: ١٢٦٨٤، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٤ / ٧١، الرقم: ٤٨٤٢-٤٨٤٣۔

الحديث رقم ٨٩: أخرجه الطبراني في المعجم الصغير، ٢ / ١٨٢، الرقم: ٩٩٢، وفي المعجم الأوسط، ٦ / ٣١٣، الرقم: ٦٥٠٢، والهيثمي في مجمع الزوائد، ٨ / ٢٥٣، ⟵

لَمَّا أَذْنَبَ آدَمُ عليه السلام الذَّنْبَ الَّذِي أَذْنَبَهُ رَفَعَ رَأْسَهُ إِلَى الْعَرْشِ فَقَالَ: أَسْأَلُکَ بِحَقِّ مُحَمَّدٍ ﷺ إِلَّا غَفَرْتَ لِي فَأَوْحَى اللهُ إِلَيْهِ: وَمَا مُحَمَّدٌ؟ وَمَنْ مُحَمَّدٌ؟ فَقَالَ: تَبَارَکَ اسْمُکَ، لَمَّا خَلَقْتَنِي رَفَعْتُ رَأْسِي إِلَى عَرْشِکَ فَرَأَيْتُ فِيْهِ مَکْتُوْبًا: لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ، مُحَمَّدٌ رَسُوْلُ اللهِ، فَعَلِمْتُ أَنَّهُ لَيْسَ أَحَدٌ أَعْظَمَ عِنْدَکَ قَدْرًا مِمَّنْ جَعَلْتَ اسْمَهُ مَعَ اسْمِکَ، فَأَوْحَى اللهُ عزوجل إِلَيْهِ: يَا آدَمُ، إِنَّهُ آخِرُ النَّبِيِّيْنَ مِنْ ذُرِّيَّتِکَ، وَإِنَّ أُمَّتَهُ آخِرُ الْأُمَمِ مِنْ ذُرِّيَّتِکَ، وَلَوْلَاهُ يَا آدَمُ مَا خَلَقْتُکَ. رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ.

''हज़रत उमर बिन ख़त्ताब ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जब हज़रत आदम عليه السلام से लग़्ज़िश सरज़द हुई तो उन्होंने अपना सर आसमान की तरफ़ उठाया और अ़र्ज़ गुज़ार हुए (या अल्लाह) अगर तूने मुझे माफ नहीं किया है तो मैं (तेरे महबूब) मुहम्मद मुस्तफ़ा ﷺ के वसीले से तुझ से सवाल करता हूँ (कि मुझे तू माफ फरमा दे) तो अल्लाह तआला ने वही नाज़िल फरमाई मुहम्मद मुस्तफ़ा कौन है ? पस हज़रत आदम عليه السلام ने अ़र्ज़ किया (ऐ मौला) तेरा नामे पाक है जब तूने मुझे पैदा किया तो मैंने अपना सर तेरे अ़र्श की तरफ़ उठाया वहां मैंने **لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ مُحَمَّدٌ رَسُوْلُ اللهِ** लिखा हुआ देखा लिहाज़ा मैं जान गया कि यह ज़रूर कोई बड़ी हस्ती हैं जिसका नाम तूने अपने नाम के साथ मिलाया है पस अल्लाह तआला ने वही नाज़िल फरमाई ऐ आदम ! वो (मुहम्मद ﷺ) तेरी नस्ल में से आख़िरी नबी हैं और उनकी उम्मत में भी तेरी नस्ल की आख़िरी उम्मत होगी और अगर वो न होते तो मैं तुझे भी पैदा न करता।''

٦٣٨ / ٩٠۔ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُوْدٍ رضي الله عنه قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِذَا انْفَلَتَتْ دَابَّةُ أَحَدِکُمْ بِأَرْضِ فَلَاةٍ فَلْيُنَادِ يَا عِبَادَ اللهِ، احْبِسُوْا عَلَيَّ،

.... والسيوطي في جامع الأحاديث، ١١ / ٩٤۔

الحديث رقم ٩٠: أخرجه الطبراني فى المعجم الكبير، ١٠ / ٢١٧، الرقم: ١٠٥١٨، و ١٧ / ١١٧، الرقم: ٢٩٠، وأبو يعلى فى المسند، ٩ / ١٧٧، الرقم: ٥٢٦٩، والديلمى فى مسند الفردوس، ١ / ٣٣٠، الرقم: ١٣١١، والهيثمى فى مجمع الزوائد، ١٠ / ١٣٢۔

يَا عِبَادَ اللهِ، احْبِسُو

ا عَلَيَّ، فَإِنَّ لِلّٰهِ فِي الْأَرْضِ حَاضِرًا سَيَحْبِسُهُ عَلَيْكُمْ.

رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ وَأَبُوْ يَعْلَى.

وفي رواية: عَنْ عَتَبَةَ بْنِ غَزْوَانَ ﷺ عَنْ نَبِيِّ اللهِ ﷺ قَالَ: إِذَا أَضَلَّ أَحَدُكُمْ شَيْئًا أَوْ أَرَادَ أَحَدُكُمْ عَوْنًا وَهُوَ بِأَرْضٍ لَيْسَ بِهَا أَنِيْسٌ فَلْيَقُلْ: يَا عِبَادَ اللهِ أَغِيْثُوْنِي يَا عِبَادَ اللهِ أَغِيْثُوْنِي فَإِنَّ لِلّٰهِ عِبَادًا لَا نَرَاهُمْ وَقَدْ جُرِّبَ ذَلِكَ. رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : जब तुम में से किसी की सवारी जंगल बयाबान में छूट जाए तो उस (शख़्स) को (यह) पुकारना चाहिए 'ऐ अल्लाह के बंदों ! मेरी सवारी पकड़ा दो, ऐ अल्लाह के बंदों ! मेरी सवारी पकड़ा दो' क्योंकि अल्लाह तआ़ला के बहुत से (ऐसे) बंदे इस ज़मीन में होते हैं वो तुम्हें (तुम्हारी सवारी) पकड़ा देंगे।''

''और एक रिवायत में है हज़रते अ़तबा बिन गज़्वान ﷺ हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ से रिवायत करते हैं कि आप ﷺ ने फरमाया : जब तुम में से किसी की कोई चीज़ गुम हो जाए या वो कोई मदद चाहे और वो ऐसी जगह हो कि जहाँ उसका कोई मददगार भी न हो तो उसे चाहिए कि कहेः ऐ अल्लाह के बंदों ! मेरी मदद करो, ऐ अल्लाह के बंदों ! मेरी मदद करो। यक़ीनन अल्लाह तआ़ला के ऐसे भी बंदे हैं जिन्हें हम देख तो नहीं सकते (लेकिन वो लोगों की मदद करने के लिये मुक़र्रर किये गये हैं) और यह तजुर्बा शुदा बात है।''

فَصْلٌ فِي عَدَمِ نَظِيْرِ النَّبِيِّ ﷺ فِي الْكَوْنِ

कायनात में हुज़ूर ﷺ की मिस्ल ना होने का बयान

٦٣٩ / ٩١۔ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رضي الله عنهما قَالَ: نَهَی رَسُوْلُ اللهِ ﷺ عَنِ الْوِصَالِ، قَالُوْا: إِنَّکَ تُوَاصِلُ، قَالَ: إِنِّي لَسْتُ مِثْلَکُمْ إِنِّي أُطْعَمُ وَأُسْقَی. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर رضي الله عنهما रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने सौमे विसाल (यानी सहरी व इफ़्तारी के बग़ैर मुसल्सल रोज़े रखने) से मना फरमाया। सहाबा किराम ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह! आप तो विसाल के रोज़े रखते हैं आप ﷺ ने फरमायाः मैं हरगिज़ तुम्हारी मिस्ल नहीं हूँ मुझे तो (अपने रब के हाँ) खिलाया और पिलाया जाता है।''

٦٤٠ / ٩٢۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضي الله عنه قَالَ: نَهَی رَسُوْلُ اللهِ ﷺ عَنِ الْوِصَالِ

الحديث رقم ٩١: أخرجه البخاري فی الصحيح، کتاب: الصوم، باب: الوصال ومن قال: ليس فی اللّيل صيام، ٢ / ٦٩٣، الرقم: ١٨٦١، ومسلم فی الصحيح، کتاب: الصيام، باب: النهی عن الوصال فی الصوم، ٢ / ٧٧٤، الرقم: ١١٠٢، وأبوداود فی السنن، کتاب: الصوم، باب: فی الوصال، ٢ / ٣٠٦، الرقم: ٢٣٦٠، والنسائی فی السنن الکبری، ٢ / ٢٤١، الرقم: ٣٢٦٣، ومالك فی الموطأ، ١ / ٣٠٠، الرقم: ٦٦٧، وأحمد بن حنبل فی المسند، ٢ / ١٠٢، الرقم: ٥٧٩٥، وابن حبان فی الصحيح، ٨ / ٣٤١، الرقم: ٣٥٧٥، وابن أبی شيبة فی المصنف، ٢ / ٣٣٠، الرقم: ٩٥٨٧، وعبد الرزاق فی المصنف، ٤ / ٢٦٨، الرقم: ٧٧٥٥، والبيهقی فی السنن الکبری، ٤ / ٢٨٢، الرقم: ٨١٥٧۔

الحديث رقم ٩٢: أخرجه البخاري في الصحيح، کتاب: الحدود، باب: حُکم التعزير والأدب، ٦ / ٢٥١٢، رقم: ٦٤٥٩، وفي کتاب: التمني، باب ما يجوز من اللو، ٦ / ٢٦٤٦، رقم: ٦٨١٥، ومسلم في الصحيح، کتاب: الصيام، باب: النهي عن الوصال في الصوم، ٢ / ٧٧٤، رقم: ١١٠٣، والنسائي في السنن الکبری، ٢ / ٢٤٢، رقم: ٣٢٦٤، والدارمي في السنن، کتاب: الصوم، باب: النهي عن ←

فِي الصَّوْمِ فَقَالَ لَهُ رَجُلٌ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ: إِنَّکَ تُوَاصِلُ يَا رَسُوْلَ اللهِ. قَالَ: وَأَيُّکُمْ مِثْلِي؟ إِنِّي أَبِيْتُ يُطْعِمُنِي رَبِّي وَيَسْقِيْنِ...... الحديث. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ बयान करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने सहाबा किराम ﷺ को सौमे विसाल से मना फरमाया तो बाज़ सहाबा ने आप ﷺ से अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह ﷺ! आप ख़ुद तो सौमे विसाल रखते हैं आप ﷺ ने फरमायाः तुम में से कौन मेरी मिस्ल हो सकता है मैं तो इस हाल में रात बसर करता हूँ कि मेरा रब मुझे खिलाता भी है और पिलाता भी है।''

٦٤١ / ٩٣۔ عَنْ عائِشَةَ رضي الله عنها قَالَتْ: نَهَى رَسُوْلُ اللهِ ﷺ عَنِ الْوِصَالِ رَحْمَةً لَهُمْ، فَقَالُوْا: إِنَّکَ تُوَاصِلُ! قَالَ: إِنِّي لَسْتُ کَهَيْئَتِکُمْ، إِنِّي يُطْعِمُنِي رَبِّي وَيَسْقِيْنِ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत आइशा رضی اللہ عنہا से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने लोगों पर शफ़क़त के बाइस उन्हें विसाल के रोज़े रखने से मना फरमाया तो सहाबा किराम ने अर्ज़ कियाः (या रसूलल्लाह) आप तो विसाल के रोज़े रखते हैं आप ﷺ ने फरमाया : मैं तुम जैसा नहीं हूँ मुझे तो मेरा रब खिलाता भी है और पिलाता भी है।''

.... الوصال في الصوم، ٢ / ١٥، رقم: ١٧٠٦، والطبراني في المعجم الأوسط، ٢ / ٦٨، الرقم: ١٢٧٤۔

الحديث رقم ٩٣: أخرجه البخاری فی الصحيح، کتاب: الصوم، باب: الوصال ومن قال: ليس فی اللّيل صيامٌ، ٢ / ٦٩٣، الرقم: ١٨٦٣، وفی کتاب: التمنی، باب: ما يَجُوْزُ مِنَ اللَّوْ، ٦ / ٢٦٤٥، الرقم: ٦٨١٥، ومسلم فی الصحيح، کتاب: الصيام، باب: النهی عن الوصال في الصوم، ٢ / ٧٧٦، الرقم: ١١٠٥، وأحمد بن حنبل فی المسند، ٢ / ١٥٣، الرقم: ٦٤١٣، والبيهقی فی السنن الکبری، ٤ / ٢٨٢، الرقم: ٨١٦١، وابن راهويه فی المسند، ٢ / ١٦٨، الرقم: ٦٦٩، وأبوالمحاسن فی معتصر المختصر، ١ / ١٥٠، وابن رجب فی جامع العلوم والحکم، ١ / ٤٣٧۔

٦٤٢ / ٩٤۔ عَنْ أَنَسٍ رضی الله عنه قَالَ: وَاصَلَ النَّبِيُّ ﷺ آخِرَ الشَّهْرِ، وَوَاصَلَ أُنَاسٌ مِنَ النَّاسِ، فَبَلَغَ النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَ: لَوْ مُدَّ بِيَ الشَّهْرُ، لَوَاصَلْتُ وِصَالاً يَدَعُ الْمُتَعَمِّقُوْنَ تَعَمُّقَهُمْ، إِنِّي لَسْتُ مِثْلَكُمْ، إِنِّي أَظَلُّ يُطْعِمُنِي رَبِّي وَيَسْقِينِ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अनस رضی الله عنه रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने महीने के आख़िर में सहरी, इफ़्तारी के बग़ैर मुसल्सल रोज़े रखने शुरू कर दिए तो बाज़ दीगर लोगों ने भी विसाल के रोज़े रखे हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ तक जब यह बात पहुँची तो आप ﷺ ने फरमायाः अगर यह रमज़ान का महीना मेरे लिए और लम्बा हो जाता तो मैं ज़्यादा विसाल के रोज़े रखता ताकि मेरी बराबरी करने वाले मेरी बराबरी करना छोड़ देते, मैं क़तअन (ज़रा भी) तुम्हारी मिस्ल नहीं हूँ मुझे तो मेरा रब (अपने हाँ) खिलाता भी है और पिलाता भी है।''

٦٤٣ / ٩٥۔ عَنْ أَنَسٍ رضی الله عنه عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ قَالَ: أَتِمُّوا الرُّكُوْعَ

الحديث رقم ٩٤: أخرجه البخاری فی الصحيح، کتاب: التمنی، باب: ما يجوز من اللَّوْ، وقوله تعالی: لَوْ أَنَّ لِیْ بِكُمْ قُوَّةً، [هود:٨٠]، ٦ / ٢٦٤٥، الرقم: ٦٨١٤، ومسلم فی الصحيح، کتاب: الصيام، باب: النهی عن الوصال فی الصوم، ٢ / ٧٧٦، الرقم: ١١٠٤، وأحمد بن حنبل فی المسند، ٣ / ١٢٤، الرقم: ١٢٢٧٠، ١٣٠٣٥، ١٣٠٩٢، ١٣٦٨١، وابن حبان فی الصحيح، ١٤ / ٣٢٥، الرقم: ٦٤١٤، وابن أبی شيبة فی المصنف، ٢ / ٣٣٠، الرقم: ٩٥٨٥، وأبويعلی فی المسند، ٦ / ٣٦، الرقم: ٣٢٨٢، ٣٥٠١، والبيهقی فی السنن الكبری، ٤ / ٢٨٢، الرقم: ٨١٦٠، وعبد بن حميد فی المسند، ١ / ٤٠٠، الرقم: ١٣٥٣۔

الحديث رقم ٩٥: أخرجه البخاري في الصحيح، کتاب: الأيمان والنذور، باب: كيف كانت يمين النبي ﷺ، ٦ / ٢٤٤٩، الرقم: ٦٢٦٨، ومسلم فی الصحيح، کتاب: الصلاة، باب: الأمر بتحسين الصلاة و إتمامها والخشوع فيها، ١ / ٣٢٠، الرقم: ٤٢٥، والنسائي في السنن، کتاب: التطبيق، باب: الأمر بإتمام السجود، ٢ / ٢١٦، الرقم: ١١١٧، وفي السنن الكبری، ١ / ٢٣٥، الرقم: ٧٠٤، وأحمد بن حنبل فی المسند، ٣ / ١١٥، الرقم: ١٢١٦٩، وأبو يعلی في المسند، ٥ / ٣٤١، الرقم: ٢٩٧١، وعبد بن حميد في المسند، ١ / ٣٥٤، الرقم: ١١٧٠۔

وَالسُّجُوْدَ فَوَاللهِ إِنِّي لَأَرَاكُمْ مِنْ بَعْدِ ظَهْرِي إِذَا مَا رَكَعْتُمْ وَإِذَا مَا سَجَدْتُمْ. وفي حديث سعيد: إِذَا رَكَعْتُمْ وَإِذَا سَجَدْتُمْ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अनस ﷺ से मरवी है कि रसूलल्लाह ﷺ ने फरमाया रुकूअ और सुजूद को अच्छी तरह से अदा किया करो अल्लाह की क़सम बिला शक–व–शुब्हा मैं अपनी पुश्त के पीछे से भी तुम्हारे रुकूअ और सुजूद को देखता हूँ और हज़रत सईद के अल्फ़ाज़ हैं कि मैं तुम्हें रुकूअ और सज्दे की हालत में भी देखता हूँ।''

٦٤٤ / ٩٦. عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: هَلْ تَرَوْنَ قِبْلَتِي هَاهُنَا؟ فَوَاللهِ! مَا يَخْفَى عَلَيَّ خُشُوْعُكُمْ وَلَا رُكُوْعُكُمْ، إِنِّي لَأَرَاكُمْ مِنْ وَرَاءِ ظَهْرِي. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया क्या तुम यही देखते हो कि मेरा मुँह उधर है अल्लाह कि क़सम मुझसे तुम्हारे (दिलों की हालत और उनका) खुशूअ–व–खुज़ूअ पौशीदा है न तुम्हारे (जाहिरी हालत के) रुकूअ, मैं तुम्हें अपनी पुश्त पीछे से भी (उसी तरह) देखता हूँ (जैसे अपने सामने से देखता हूँ)।''

٦٤٥ / ٩٧. عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ قَالَ: صَلَّى بِنَا رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يَوْمًا

الحديث رقم ٩٦: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: الصلاة، باب: عظة الإمام الناس في إتمام الصلاة وذكر القبلة، ١ / ١٦١، الرقم: ٤٠٨، وفي كتاب: الأذان، باب: الخشوع في الصلاة، ١ / ٢٥٩، الرقم: ٧٠٨، ومسلم في الصحيح، كتاب: الصلاة، باب: الأمر بتحسين الصلاة وإتمامها والخشوع فيها، ١ / ٢٥٩، الرقم: ٤٢٤، وأحمد بن حنبل في المسند، ٢ / ٣٠٣، ٣٦٥، ٣٧٥، الرقم: ٨٠١١، ٨٧٥٦، ٨٨٦٤.

الحديث رقم ٩٧: أخرجه مسلم في الصحيح، كتاب: الصلاة، باب: الأمر بتحسين الصلاة وإتمامها والخشوع فيها، ١ / ٣١٩، الرقم: ٤٢٣، والنسائي في السنن، كتاب: الإمامة، باب: الركوع دون الصف، ٢ / ١١٨، الرقم: ٨٧٢، وفي السنن الكبرى، ١ / ٣٠٣، الرقم: ٩٤٤، وأبو عوانة في المسند، ٢ / ١٠٥، والبيهقي في ـــ

ثُمَّ انْصَرَفَ، فَقَالَ: يَا فُلَانُ! أَلاَ تُحْسِنُ صَلَاتَكَ؟ أَلاَ يَنْظُرُ الْمُصَلِّي إِذَا صَلَّى كَيْفَ يُصَلِّي؟ فَإِنَّمَا يُصَلِّي لِنَفْسِهِ، إِنِّي وَاللهِ! لَأُبْصِرُ مِنْ وَرَائِي كَمَا أُبْصِرُ مِنْ بَيْنِ يَدَيَّ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَالنَّسَائِيُّ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने एक दिन हमें जमाअत कराने के बाद रुख़े–अनवर फेरा, फिर एक शख़्स की तरफ़ मुतवज्जह होकर फरमायाः ऐ शख़्स तुमने नमाज़ अच्छी तरह क्यूँ नहीं अदा की? क्या नमाज़ी नमाज़ अदा करते वक़्त यह ग़ौर नहीं करता कि वो किस तरह नमाज़ पढ़ रहा है। वो महज़ अपने लिए नमाज़ पढ़ता है ख़ुदा की क़सम मैं तुम्हें अपनी पुश्त पीछे भी ऐसे ही देखता हूँ जैसा कि सामने से देखता हूँ।''

٦٤٦ / ٩٨ـ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ قَالَ: صَلَّى بِنَا رَسُوْلُ اللهِ ﷺ الظُّهْرَ وَفِي مُؤَخَّرِ الصُّفُوْفِ رَجُلٌ، فَأَسَاءَ الصَّلَاةَ، فَلَمَّا سَلَّمَ نَادَاهُ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: يَا فُلَانُ! أَلاَ تَتَّقِي اللهَ؟ أَلَا تَرَى كَيْفَ تُصَلِّي؟ إِنَّكُمْ تَرَوْنَ أَنَّهُ يَخْفَى عَلَيَّ شَيْءٌ مِمَّا تَصْنَعُوْنَ؟ وَاللهِ إِنِّي لَأَرَى مِنْ خَلْفِي كَمَا أَرَى مِنْ بَيْنِ يَدَيَّ. رَوَاهُ أَحْمَدُ وَابْنُ خُزَيْمَةَ.

''हज़रत अबू हूरैरा ﷺ ने बयान किया कि एक मर्तबा हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने हमें नमाज़े ज़ुहर पढ़ाई, आख़िरी सफ़ों में एक शख़्स था जिसने अपनी नमाज़ ख़राब कर दी। जब हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने सलाम फेरा तो उसे पुकारा ऐ फ़लाँ क्या तू अल्लाह से नहीं डरता? क्या तू नहीं देखता कि तू किस तरह नमाज़ पढ़ रहा है? तुम यह समझते हो जो तुम करते

.... السنن الكبرى، ٢/ ٢٩٠، الرقم: ٣٣٩٨، وفي السنن الصغرى، ١/ ٤٩٥، الرقم: ٨٧٨، وفي شعب الإيمان، ٣/ ١٣٤، الرقم: ٣١١٣، والمنذري في الترغيب والترهيب، ١/ ٢٠٢، الرقم: ٧٦٨.

الحديث رقم ٩٨: أخرجه أحمد بن حنبل في المسند، ٢/ ٤٤٩، الرقم: ٩٧٩٥، وابن خزيمة في الصحيح، ١/ ٣٣٢، الرقم: ٦٦٤، والعسقلاني في فتح البارى، ٢/ ٢٢٦.

हो उसमें से मुझ पर कुछ पौशीदा रह जाता है? अल्लाह की क़सम मैं अपनी पुश्त पीछे भी इसी तरह देखता हूँ जिस तरह अपने सामने देखता हूँ।''

٦٤٧ / ٩٩۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضی الله عنه عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: أَنَا أَوَّلُ مَنْ تَنْشَقُّ عَنْهُ الْأَرْضُ فَأُكْسَى حُلَّةً مِنْ حُلَلِ الْجَنَّةِ، ثُمَّ أَقُوْمُ عَنْ يَمِيْنِ الْعَرْشِ لَيْسَ أَحَدٌ مِنَ الْخَلَائِقِ يَقُوْمُ ذٰلِکَ الْمَقَامَ غَيْرِي. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ.

وَقَالَ أَبُوْ عِيْسَى: هٰذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ.

''हज़रत अबू हुरैरा رضی الله عنه रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः मैं सबसे पहला शख़्स हूँ जिसकी ज़मीन (यानी क़ब्र) खुलेगी फिर मुझे ही जन्नत के जोड़ों में से एक जोड़ा पहनाया जाएगा फिर मैं अर्श की दाईं तरफ़ (मक़ामे महमूद पर) खड़ा हूँगा, उस मक़ाम पर मख़्लूक़ में से मेरे सिवाए कोई नहीं खड़ा होगा।''

الحديث رقم ٩٩: أخرجه الترمذي في السنن، كتاب: المناقب عن رسول الله ﷺ، باب: في فضل النبي ﷺ، ٥ / ٥٨٥، الرقم: ٣٦١١، والمباركفوري في تحفة الأحوذي، ٧ / ٩٢، والمناوي في فيض القدير، ٣ / ٤١.

فَصْلٌ فِي تَعْظِيمِ النَّبِيِّ ﷺ وَتَوْقِيرِهِ

हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की ताज़ीमो–तौक़ीर का बयान

٦٤٨ / ١٠٠ـ عَنْ أَبِي قَتَادَةَ رضي الله عنه قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِذَا أُقِيْمَتِ الصَّلَاةُ، فَلَا تَقُوْمُوْا حَتَّى تَرَوْنِي. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अबू क़तादा رضي الله عنه से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जब नमाज़ के लिए इक़ामत (तकबीर) कही जाए तो खड़े न हुआ करो यहाँ तक कि तुम मुझे देख लो (यानी मेरे अदबो ताज़ीम में खड़े हुआ करो)।''

الحديث رقم ١٠٠: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: الأذان، باب: متى يقومُ الناسُ إذا رأوا الإمام عند الإقامة، ١ / ٢٢٨، الرقم: ٦١١، وفى باب: لا يسعى إلى الصلاة مستعجلاً، وليَقُم بالسكينة والوقار، ١/ ٢٢٨، الرقم: ٦١٢، وفى كتاب: الجمعة، باب: المشّي إلى الجُمُعَةِ، ١ / ٣٠٨، الرقم: ٨٦٧، ومسلم فى الصحيح، كتاب: المساجد، باب: متى يقوم الناس للصلاة، ١ / ٤٢٢، الرقم: ٦٠٤-٦٠٦، والترمذى فى السنن، كتاب: الجمعة عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء فى الكلام بعد نزول الإمام من المنبر، ٢ / ٣٩٤، الرقم: ٥١٧، وفى أبواب: العيدين، باب: كراهية أن يَنْتَظِر النَّاسُ الإمامَ وهم قيام، عند افتتاح الصلاة، ٢ / ٤٨٧، الرقم: ٥٩٢، وأبو داود فى السنن، كتاب: الصلاة، باب: فى الصلاة تقام ولم يأت الإمام ينتظرونه قعودا، ١ / ١٤٨، الرقم: ٥٣٩، والنسائى فى السنن، كتاب: الأذان، باب: إقامة المؤذن عند خروج الإمام، ٢ / ٣١، الرقم: ٦٨٧، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٥ / ٣٠٤، الرقم: ٢٢٦٤٠، ٢٢٦٤٩، ٢٢٦٦٦، ٢٢٦٧٥، ٢٢٧٠٢، والدارمى فى السنن، ١ / ٣٢٣، الرقم: ١٢٦٢، وابن حبان فى الصحيح، ٥ / ٥١، الرقم: ١٧٥٥، وابن خزيمة فى الصحيح، ٣ / ١٤، الرقم: ١٥٢٦، وعبد الرزاق فى المصنف، ١ / ٥٠٤، الرقم: ١٩٣٢، وأبو يعلى فى المسند، ١ / ١٨١، الرقم: ٢٠٧، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٢ / ٢٠، الرقم: ٢١١٩.

٦٤٩ / ١٠١ ـ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ الْأَنْصَارِيِّ ﷺ وَكَانَ تَبِعَ النَّبِيَّ ﷺ، وَخَدَمَهُ وَصَحِبَهُ أَنَّ أَبَا بَكْرٍ كَانَ يُصَلِّي لَهُمْ فِي وَجَعِ النَّبِيِّ ﷺ الَّذِي تُوُفِّيَ فِيهِ، حَتَّى إِذَا كَانَ يَوْمُ الْإِثْنَيْنِ وَهُمْ صُفُوْفٌ فِي الصَّلَاةِ، فَكَشَفَ النَّبِيُّ ﷺ سِتْرَ الْحُجْرَةِ، يَنْظُرُ إِلَيْنَا وَهُوَ قَائِمٌ، كَأَنَّ وَجْهَهُ وَرَقَةُ مُصْحَفٍ، ثُمَّ تَبَسَّمَ يَضْحَكُ فَهَمَمْنَا أَنْ نَفْتَتِنَ مِنَ الْفَرَحِ بِرُؤْيَةِ النَّبِيِّ ﷺ، فَنَكَصَ أَبُوْبَكْرٍ عَلَى عَقِبَيْهِ لِيَصِلَ الصَّفَّ، وَظَنَّ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ خَارِجٌ إِلَى الصَّلَاةِ، فَأَشَارَ إِلَيْنَا النَّبِيُّ ﷺ: أَنْ أَتِمُّوْا صَلَاتَكُمْ وَأَرْخَى السِّتْرَ، فَتُوُفِّيَ مِنْ يَوْمِهِ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अनस बिन मालिक अन्सारी ﷺ जो कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के सहाबी और ख़ादिमे ख़ास थे फरमाते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के मरज़ुल विसाल में हज़रत अबू बकर ﷺ लोगों को नमाज़ पढ़ाते थे चुनांचे पीर के दिन लोग सफ़ें बनाए नमाज़ अदा कर रहे थे कि इतने में हुज़ूर ﷺ ने हुजरए मुबारक का पर्दा उठाया और खड़े–खड़े हमें देखने लगे। उस वक़्त हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ का चेहरए अनवर क़ुरआन के अवराक़ की तरह

الحديث رقم ١٠١: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: الأذان، باب: أَهْلُ الْعِلْمِ وَالْفَضْلِ أَحَقُّ بِالإِمَامَةِ، ١ / ٢٤٠، الرقم: ٦٤٨، وفى كتاب: الأذان، باب: هل يلتفت لأمر ينزل به، ١ / ٢٦٢، الرقم: ٧٢١، وفى كتاب: التهجد، باب: من رجع القهقرى فى صلاته، ١ / ٤٠٣، الرقم: ١١٤٧، وفى كتاب: المغازى، باب: مرض النبى ﷺ وفاقه، ٤ / ١٦١٦، الرقم: ٤١٨٣، ومسلم فى الصحيح، كتاب: الصلاة، باب: استخلاف الإمام إذا عرض له عذر من مرض وسفر وغيرهما من يصلى بالناس، ١ / ٣١٦، الرقم: ٤١٩، والنسائى نحوه فى السنن، كتاب: الجنائز، باب: الموت يوم الاثنين، ٤ / ٧، الرقم: ١٨٣١، وابن ماجه نحوه فى السنن، كتاب: الجنائز، باب: ما جاء فى ذكر مرض رسول الله ﷺ، ١ / ٥١٧، الرقم: ١٦٢٤، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٣ / ١٦٣، ١٩٦ـ١٩٧، ٢١١، وابن حبان فى الصحيح، ١٤ / ٥٨٧، الرقم: ٥٨٧، وابن خزيمة فى الصحيح، ٢ / ٣٧٢، الرقم: ١٤٨٨.

मालूम होता था जमाअत को देख कर आप ﷺ मुस्कराए आप ﷺ के दीदारे पुर अनवार की ख़ुशी में करीब था कि हम नमाज़ तोड़ दे। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ ﷺ को ख़याल हुआ कि शायद आप ﷺ नमाज़ में तशरीफ़ ला रहे हैं। इसलिए उन्होंने एड़ियों के बल पीछे हट कर सफ़ में मिल जाना चाहा, लेकिन हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने हमें इशारे से फरमाया कि तुम लोग नमाज़ पूरी करो फिर आप ﷺ ने पर्दा गिरा दिया और उसी दिन आप ﷺ का विसाल हो गया।''

٦٥٠ / ١٠٢ ـ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ السَّاعِدِيِّ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ ذَهَبَ إِلَى بَنِي عَمْرِو بْنِ عَوْفٍ لِيُصْلِحَ بَيْنَهُمْ فَحَانَتِ الصَّلَاةُ، فَجَاءَ الْمُؤَذِّنُ إِلَى أَبِي بَكْرٍ، فَقَالَ: أَ تُصَلِّي لِلنَّاسِ فَأُقِيْمَ؟ قَالَ: نَعَمْ، فَصَلَّى أَبُوْ بَكْرٍ، فَجَاءَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ وَالنَّاسُ فِي الصَّلَاةِ فَتَخَلَّصَ حَتَّى وَقَفَ فِي الصَّفِّ فَصَفَّقَ النَّاسُ، وَكَانَ أَبُوْ بَكْرٍ لَا يَلْتَفِتُ فِي صَلَاتِهِ، فَلَمَّا أَكْثَرَ النَّاسُ التَّصْفِيقَ، الْتَفَتَ، فَرَأَى رَسُوْلَ اللهِ ﷺ، فَأَشَارَ إِلَيْهِ رَسُوْلُ

الحديث رقم ١٠٢: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: الأذان، باب: من دَخَلَ لِيَؤُمَّ النَّاسَ فجاء الإمام الأول فَتَأَخَّرَ الأَوّلُ أو لَمْ يَتَأَخَّرْ جازت صلاته فيه عائشة عن النبي ﷺ، ١/ ٢٤٢، الرقم: ٦٥٢، وفي أبواب: العمل في الصلاة، باب: ما يجوز من التسبيح والحمد في الصلاة للرجال، ١/ ٤٠٢، الرقم: ١١٤٣، وفي باب: التصفيق للنساء، ١/ ٤٠٣، الرقم: ١١٤٦، وفي باب: الأيدي في الصلاة، ١/ ٤٠٧، الرقم: ١١٦٠، وفي أبواب: السهو، باب: الإشارة في الصلاة، ١/ ٤١٤، الرقم: ١١٧٧، ٢٥٤٤، ٢٥٤٧، ٦٧٦٧، ومسلم في الصحيح، كتاب: الصلاة، باب: تقديم الجماعة من يصلي بهم إذا تأخر الإمام، ١/ ٣١٦، الرقم: ٤٢١، وأبو داود في السنن، كتاب: الصلاة، باب: التصفيق في الصلاة، ١/ ٢٤٧، الرقم: ٩٤٠، والنسائي في السنن، كتاب: آداب القضاة، باب: مصير الحاكم إلى رعيته للصلح بينهم، ٨/ ٢٤٣، الرقم: ٥٤١٣، وفي كتاب: الإمامة، باب: إذ تقدم الرجل من الرعية ثم جاء الوالي هل يتأخر، ٢/ ٧٧، الرقم: ٧٨٤، ومالك في الموطأ، كتاب: قصر الصلاة في السفر، باب: الإلتفات والتصفيق عند الحاجة في الصلاة، ١/ ١٦٣، الرقم: ٦١.

اللهِ ﷺ: أَنِ امْكُثْ مَكَانَكَ. فَرَفَعَ أَبُوْ بَكْرٍ ﷺ يَدَيْهِ، فَحَمِدَ اللهَ عَلَى مَا أَمَرَهُ بِهِ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ مِنْ ذَلِكَ، ثُمَّ اسْتَأْخَرَ أَبُوْبَكْرٍ حَتَّى اسْتَوَى فِي الصَّفِّ، وَتَقَدَّمَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ، فَلَمَّا انْصَرَفَ، قَالَ: يَا أَبَابَكْرٍ! مَا مَنَعَكَ أَنْ تَثْبُتَ إِذْ أَمَرْتُكَ. فَقَالَ أَبُوْ بَكْرٍ: مَا كَانَ لِابْنِ أَبِي قُحَافَةَ أَنْ يُصَلِّيَ بَيْنَ يَدَي رَسُوْلِ اللهِ ﷺ، فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَا لِي رَأَيْتُكُمْ أَكْثَرْتُمُ التَّصْفِيقَ، مَنْ رَابَهُ شَيءٌ فِي صَلَاتِهِ فَلْيُسَبِّحْ، فَإِنَّهُ إِذَا سَبَّحَ الْتُفِتَ إِلَيْهِ، وَ إِنَّمَا التَّصْفِيقُ لِلنِّسَاءِ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत सहल बिन सा'द साइदी ﷺ फरमाते हैं कि एक मर्तबा हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ क़बीलए बनी अम्र बिन औफ़ में (किसी मस्अले पर) सुलह कराने तशरीफ़ ले गए इतने में नमाज़ का वक़्त हो गया। मुअज़्जिन ने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया आप नमाज़ पढ़ा देंगे ताकि मैं इक़ामत (तकबीर) कहूँ ? उन्होंने फरमायाः हाँ। चुनांचे हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ ﷺ ने लोगों को नमाज़ पढ़ाना शुरू कर दी, दौराने नमाज़ हुज़ूर ﷺ भी तशरीफ़ ले आए और सफ़ों को चीरते हुए पहली सफ़ में जा कर खड़े हो गए। लोगों ने (हज़रत अबू बकर को मुतवज़्जह करने के लिए) तालियाँ बजाईं लेकिन हज़रत अबू बकर ﷺ नमाज़ में किसी और जानिब इल्तेफ़ात (तवज्जोह) नहीं फरमाया करते थे जब तालियों की आवाज़ ज़्यादा हो गई तो हज़रत अबू बकर ﷺ मुतवज्जेह हुए तो देखा कि रसूलुल्लाह ﷺ (तशरीफ़ ले आए हैं तो उन्होंने अपनी जगह से पीछे हटने का इरादा किया) लेकिन हुज़ूर ﷺ ने फरमाया अपनी जगह पर खड़े रहो हज़रत अबू बकर ﷺ ने दोनों हाथ उठाकर ख़ुदा का शुक्र अदा किया कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इन्हें इमामत का हुक्म दिया है उसके बाद हज़रत अबू बकर पीछे हटे हत्ता कि (यहाँ तक कि) पहली सफ़ के बराबर आ गए और हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने आगे (बढ़ कर इमामत कराई)। नमाज़ से फ़ारिग़ होने के बाद हुज़ूर ﷺ ने फरमाया : ऐ अबू बकर जब मैंने हुक्म दिया था तो तुम मुसल्ले पर क्यों नहीं ठहरे रहे। हज़रत अबू बकर ﷺ ने अर्ज़ कियाः (या

रसूलल्लाह!) अबू कहाफ़ा के बेटे की क्या मजाल कि वो हुज़ूर के सामने इमामत कराए। उसके बाद हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने सहाबा किराम की तरफ़ मुतवज्जेह होकर फरमायाः इसकी क्या वजह है कि मैंने तुम्हें तालियाँ बजाते देखा अगर किसी को नमाज़ में कोई हादसा पेश आए तो (बुलन्द आवाज़ से) सुब्हानल्लाह कहें चुनांचे जब कोई सुब्हानल्लाह कहे तो उसकी तरफ़ तवज्जोह दी जाए और तालियाँ बजाना तो सिर्फ औरतों के लिए ख़ास है।''

٦٥١ / ١٠٣۔ عَنِ الْمِسْوَرِ بْنِ مَخْرَمَةَ وَمَرْوَانَ رضي الله عنهما قَالَا: إِنَّ عُرْوَةَ جَعَلَ يَرْمُقُ أَصْحَابَ النَّبِيِّ ﷺ بِعَيْنَيْهِ قَالَ: فَوَاللهِ مَا تَنَخَّمَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ نُخَامَةً إِلَّا وَقَعَتْ فِي كَفِّ رَجُلٍ مِنْهُمْ فَدَلَكَ بِهَا وَجْهَهُ وَجِلْدَهُ، وَإِذَا أَمَرَهُمُ ابْتَدَرُوْا أَمْرَهُ، وَإِذَا تَوَضَّأَ كَادُوْا يَقْتَتِلُوْنَ عَلَى وَضُوْئِهِ وَإِذَا تَكَلَّمَ خَفَضُوْا أَصْوَاتَهُمْ عِنْدَهُ وَمَا يُحِدُّوْنَ إِلَيْهِ النَّظَرَ تَعْظِيْمًا لَهُ. فَرَجَعَ عُرْوَةُ إِلَى أَصْحَابِهِ فَقَالَ: أَي قَوْمِ وَاللهِ لَقَدْ وَفَدْتُ عَلَى الْمُلُوْكِ، وَفَدْتُ عَلَى قَيْصَرَ وَكِسْرَى وَالنَّجَاشِيِّ وَاللهِ إِنْ رَأَيْتُ مَلِكًا قَطُّ يُعَظِّمُهُ أَصْحَابُهُ مَا يُعَظِّمُ أَصْحَابُ مُحَمَّدٍ ﷺ مُحَمَّدًا. وَاللهِ، إِنْ تَنَخَّمَ نُخَامَةً إِلَّا وَقَعَتْ فِي كَفِّ رَجُلٍ مِنْهُمْ فَدَلَكَ بِهَا وَجْهَهُ وَجِلْدَهُ، وَ إِذَا أَمَرَهُمُ ابْتَدَرُوْا أَمْرَهُ وَ إِذَا تَوَضَّأَ كَادُوْا يَقْتَتِلُوْنَ عَلَى وَضُوْئِهِ، وَإِذَا تَكَلَّمَ خَفَضُوْا أَصْوَاتَهُمْ عِنْدَهُ وَمَا يُحِدُّوْنَ إِلَيْهِ النَّظَرَ تَعْظِيْمًا لَهُ ......الحديث. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ وَأَحْمَدُ وَابْنُ حِبَّانَ.

''हज़रत मिसवर बिन मख़रमां और मरवान رضی اللہ عنہما से रिवायत है उरवा बिन

الحديث رقم ١٠٣: أخرجه البخاري فى الصحيح، كتاب: الشروط، باب: الشروط فى الجهاد والمصالحة مع أهل الحرب وكتابة، ٢/ ٩٧٤، الرقم: ٢٥٨١، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٤/ ٣٢٩، وابن حبان فى الصحيح، ١١/ ٢١٦، الرقم: ٤٨٧٢، والطبراني فى المعجم الكبير، ٢٠/ ٩، الرقم: ١٣، والبيهقي فى السنن الكبرى، ٩/ ٢٢٠.

मस्ऊद (जब बारगाहे रिसालत में काफ़िरों का वकील बन कर आया तो) सहाबा किराम ﷺ (के मामूलात ताज़ीमे मुस्तफ़ा ﷺ) को देखता रहा कि जब भी आप ﷺ अपना लुआबे दहन फैंकते तो कोई न कोई सहाबी उसे अपने हाथ पर ले लेता था जिसे वो अपने चेहरे और बदन पर मल लेता था जब आप ﷺ किसी बात का हुक्म देते तो उसकी फ़ौरन तामील की जाती थी। जब आप ﷺ वुज़ू फरमाते तो लोग आप ﷺ के इस्तेमाल शुदा पानी को हासिल करने के लिए एक दूसरे पर टूट पड़ते थे (और एक दूसरे पर सबक़त ले जाने की कोशिश करते थे हर एक की कोशिश होती थी कि यह पानी मैं हासिल करूं) जब आप ﷺ गुफ्तगू फरमाते तो सहाबा किराम अपनी आवाजों को आप ﷺ के सामने पस्त रखते थे और इन्तेहाई ताज़ीम के बाइस आप ﷺ की तरफ़ नजर जमा कर भी नहीं देखते थे उसके बाद उरवह अपने साथियों की तरफ़ लौट गया और उनसे कहने लगाः ऐ क़ौम अल्लाह रब्बुल इज्जत की क़सम मैं (बड़े बड़े अ़ज़ीमुश्शान) बादशाहों के दरबाारों में वफ़्द ले कर गया हूँ मैं क़ैसरो किसरा और नज्जासी जैसे बादशाहों के दरबारों में हाज़िर हुआ हूँ, लेकिन ख़ुदा की क़सम! मैंने कोई ऐसा बादशाह नहीं देखा कि उसके दरबारी उसकी इस तरह ताज़ीम करते हों। जैसे मुहम्मद ﷺ के सहाबा किराम मुहम्मद ﷺ की ताज़ीम करते हैं ख़ुदा की क़सम! जब वो थूकते हैं तो उनका लुआबे दहन किसी न किसी शख़्स की हथेली पर ही गिरता है, जिसे वो अपने चेहरे और बदन पर मल लेता है। जब वो कोई हुक्म देते हैं तो फ़ौरन उनके हुक्म की तामील होती है, जब वो वुज़ू फरमाते हैं तो यूँ महसूस होने लगता है कि लोग वुज़ू का इस्तेमाल शुदा पानी हासिल करने के लिए एक दूसरे के साथ लड़ने मरने पर आमादा हो जाएँगे वो उनकी बारग़ाह में अपनी आवाज़ों को पस्त रखते हैं और ताज़ीमन वो उनकी तरफ़ आँख भरकर देख नहीं सकते।''

٦٥٢ / ١٠٤. عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ ﷺ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ افْتَقَدَ ثَابِتَ بْنَ قَيْسٍ ﷺ فَقَالَ رَجُلٌ: يَا رَسُوْلَ اللهِ، أَنَا أَعْلَمُ لَکَ عِلْمَهُ فَأَتَاهُ فَوَجَدَهُ

الحديث رقم ١٠٤: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: المناقب، باب: علامات النبوة في الإسلام ٣/١٣٢٢، الرقم: ٣٤١٧، وفي كتاب: تفسير القرآن، باب: لاترفعوا أصواتكم فوق صوت النبى ﷺ، الآية، ٤/١٨٣٣، الرقم: ٤٥٦٥.

جَالِسًا فِي بَيْتِهِ مُنَكِّسًا رَأْسَهُ فَقَالَ: مَا شَأْنُکَ؟ فَقَالَ: شَرٌّ، كَانَ يَرْفَعُ صَوْتَهُ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ ﷺ، فَقَدْ حَبِطَ عَمَلُهُ وَهُوَ مِنْ أَهْلِ النَّارِ فَأَتَى الرَّجُلُ فَأَخْبَرَهُ أَنَّهُ قَالَ: كَذَا وَكَذَا فَقَالَ مُوْسَى بْنُ أَنَسٍ: فَرَجَعَ الْمَرَّةَ الآخِرَةَ بِبِشَارَةٍ عَظِيْمَةٍ، فَقَالَ: اذْهَبْ إِلَيْهِ، فَقُلْ لَهُ: إِنَّکَ لَسْتَ مِنْ أَهلِ النَّارِ، وَلَكِنْ مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ.

''हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया (तुम में से) कोई ऐसा है जो साबित बिन कैस की ख़बर लाकर दे। एक आदमी ने अ़र्ज़ कियाः या रसूलल्लाह मैं आपको उनकी ख़बर ला कर दूँगा सो वो गए तो उन्हें देखा कि वो अपने घर में सर झुकाए बैठे हैं, पूछा क्या हाल है ? उन्होंने जवाब दिया बुरा हाल है, क्योंकि मैं हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की आवाज़ से अपनी आवाज़ ऊँची कर बैठा था। लिहाज़ा मेरे तमाम अमल ज़ाया (बेकार) हो चुके और दोज़ख़ियों में मेरा शुमार हो गया। उस आदमी ने आ कर आप ﷺ की ख़िदमत में उनकी तमाम सूरते हाल अ़र्ज़ की। हज़रत मूसा बिन अनस फरमाते हैं कि वो आदमी बहुत बड़ी बशारत ले कर दोबारा गया। आप ﷺ ने फरमाया : उनके पास जाओ और कहो कि तुम जहन्नमी नहीं बल्कि जन्नतियों में से हो।''

٦٥٣ / ١٠٥ ـ عَنِ السَّائِبِ بْنِ يَزِيْدَ ﷺ قَالَ: كُنْتُ قَائِمًا فِي الْمَسْجِدِ فَحَصَبَنِي رَجُلٌ فَنَظَرْتُ فَإِذَا عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ ﷺ فَقَالَ: اذْهَبْ فَأْتِنِي بِهَذَيْنِ فَجِئْتُهُ بِهِمَا قَالَ: مَنْ أَنْتُمَا أَوْمِنْ أَيْنَ أَنْتُمَا قَالَا: مِنْ أَهْلِ الطَّائِفِ قَالَ: لَوْكُنْتُمَا مِنْ أَهْلِ الْبَلَدِ لَأَوْجَعْتُكُمَا تَرْفَعَانِ أَصْوَاتَكُمَا فِي مَسْجِدِ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ.

''हज़रत साइब बिन यज़ीद ﷺ से रिवायत है कि मैं मस्जिद में खड़ा था कि किसी ने

الحديث رقم ١٠٥: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: الصلاة، باب: رفع الصوت في المساجد، ١/ ١٧٩، الرقم: ٤٥٨، والبيهقي في السنن الكبرى، ٢/ ٤٤٧، الرقم: ٤١٤٣، وابن كثير في تفسير القرآن العظيم، ٣/ ٢٩٤.

मुझे कंकरी मारी। मैंने नज़र उठा कर देखा तो वो हज़रत उमर बिन ख़त्ताब ﷺ थे उन्होंने फरमाया कि जाओ और उन दोनों आदमियों को मेरे पास ले आओ। मैं दोनों को ले आया। आप ने फरमायाः तुम कौन लोग हो? या तुम किस इलाके से हो? दोनों ने अ़र्ज़ किया (हम) अहले ताइफ़ (में) से हैं, फरमायाः अगर तुम इस शहर (मदीना मुनव्वरा) के रहने वाले होते तो मैं तुम्हें सजा देता कि तुम रसूलुल्लाह ﷺ की मस्जिद में आवाज बुलन्द करते हो।''

٦٥٤ / ١٠٦۔ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رضي الله عنه قَالَ: لَقَدْ رَأَيْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ، وَالْحَلَّاقُ يَحْلِقُهُ وَأَطَافَ بِهِ أَصْحَابُهُ، فَمَا يُرِيْدُوْنَ أَنْ تَقَعَ شَعْرَةٌ إِلَّا فِي يَدِ رَجُلٍ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَأَحْمَدُ.

''हज़रत अनस ﷺ फरमाते हैं कि मैंने देखा हज्जाम आपके सरे मुबारक के बाल काट रहा था और आप ﷺ के सहाबा आप ﷺ के गिर्द घूम रहे थे और उनमें से हर एक की यह कोशिश थी कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ का कोई एक मूए मुबारक भी ज़मीन पर गिरने न पाए बल्कि उनमें से किसी न किसी के हाथ में आ जाए।''

٦٥٥ / ١٠٧۔ عَنِ ابْنِ شِمَاسَةَ الْمَهْرِيِّ رضي الله عنه قَالَ: حَضَرْنَا عَمْرَو بْنَ الْعَاصِ رضي الله عنه وَهُوَ فِي سِيَاقَةِ الْمَوْتِ فَبَكَى طَوِيْلًا، وَقَالَ: وَمَا كَانَ أَحَدٌ أَحَبَّ إِلَيَّ مِنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ، وَلَا أَجَلَّ فِي عَيْنِي مِنْهُ، وَمَا كُنْتُ أُطِيْقُ

الحديث رقم ١٠٦: أخرجه مسلم فى الصحيح، كتاب: الفضائل، باب: قرب النبى ﷺ من الناس وتبركهم به، ٤/ ١٨١٢، الرقم: ٢٣٢٥، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٣/ ١٣٣، ١٣٧، الرقم: ١٢٤٢٣، وعبد بن حميد فى المسند، ١/ ٣٨٠، الرقم: ١٢٧٣۔

الحديث رقم ١٠٧: أخرجه مسلم في الصحيح، كتاب: الإيمان، باب: كون الإسلام يهدم ما قبله وكذا الهجرة والحج، ١/ ١١٢، الرقم: ١٢١، وابن منده في الإيمان، ١/ ٤٢٠، الرقم: ٢٧٠، وأبو عوانة في المسند، ١/ ٧٠، الرقم: ٢٠٠، وابن سعد في الطبقات الكبرى، ٤/ ٢٥٩، والحسيني في البيان والتعريف، ١/ ١٥٧، الرقم: ٤١٨، والمناوي في فيض القدير، ٢/ ١٦٧۔

أَنْ أَمْلَأَ عَيْنَيَّ مِنْهُ إِجْلَالًا لَهُ، وَلَو سُئِلْتُ أَنْ أَصِفَهُ مَا أَطَقْتُ لِأَنِّي لَمْ أَكُنْ أَمْلَأُ عَيْنَيَّ مِنْهُ ...... الحديث. رَوَاهُ مُسْلِمٌ.

''हज़रत इब्ने शिमासा महरी बयान करते हैं हज़रत अ़म्र बिन आस ﷺ मरज़ुल मौत (आख़िरी वक़्त) में मुब्तिला थे, हम उनकी इयादत (हाल पूछने) के लिए गए। हज़रत अ़म्र बिन आस ﷺ काफ़ी देर तक रोते रहे, फ़िर फरमाने लगे मुझे हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ से ज्यादा कोई शख़्स महबूब न था न मेरी नज़र में आप ﷺ से बढ़ कर कोई बुज़ुर्ग था न ही आप ﷺ की जलालत के पेशे नज़र मैं आप ﷺ को जी भर कर देख सका और अगर मुझे कहा जाए कि रसूलुल्लाह ﷺ का हुलिया बयान करो तो मैं आप ﷺ का हुलिया बयान नहीं कर सकता क्योंकि मैं आप ﷺ को कभी आँख भर कर नहीं देख सका।''

٦٥٦ / ١٠٨ ـ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ ابْنِ أَبِي لَيْلَى ﷺ أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ عُمَرَ رضي الله عنهما حَدَّثَهُ وَذَكَرَ قِصَّةً، قَالَ: فَدَنَوْنَا يَعْنِي مِنَ النَّبِيِّ ﷺ، فَقَبَّلْنَا يَدَهُ. رَوَاهُ أَبُوْ دَاوُدَ وَالْبَيْهَقِيُّ.

''हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन अबी लैला ﷺ से रिवायत है कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर رضي الله عنهما ने मुझसे गुफ़्तगू फरमाई और एक वाक़िया बयान करते हुए फरमायाः हम हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के क़रीब हुए और हमने आप ﷺ के दस्ते अक़दस (हाथ मुबारक) को बोसा दिया।''

٦٥٧ / ١٠٩ ـ عَنْ زَارِعٍ ﷺ (وَكَانَ فِي وَفْدِ عَبْدِ الْقَيْسِ) قَالَ: لَمَّا قَدِمْنَا

الحديث رقم ١٠٨: أخرجه أبوداود فى السنن، كتاب: الأدب، باب: فى قبلة اليد، ٤ / ٣٥٦، الرقم: ٥٢٢٣، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٧ / ١٠١، الرقم: ١٣٣٦٢، وفى شعب الإيمان، ٦ / ٤٧٦، الرقم: ٨٩٦٥.

الحديث رقم ١٠٩: أخرجه أبو داود فى السنن، كتاب: الأدب، باب: قبلة الجسد، ٤ / ٣٥٧، الرقم: ٥٢٢٥، والبخارى فى الأدب المفرد / ٣٣٩، الرقم: ٩٧٥، والطبرانى فى المعجم الكبير، ٥ / ٢٧٥، الرقم: ٥٣١٣، والبيهقي في شعب الإيمان، ٦ / ١٤١، الرقم: ٧٧٢٩، والهيثمى فى مجمع الزوائد، ٩ / ٢، والحسينى فى البيان والتعريف، ١ / ٢٤١، والمقرى فى تقبيل اليد، ١ / ٨٠، الرقم: ٢٠.

الْمَدِيْنَةَ فَجَعَلْنَا نَتَبَادَرُ مِنْ رَوَاحِلِنَا، فَنُقَبِّلُ يَدَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ وَرِجْلَيْهِ.
رَوَاهُ أَبُوْ دَاوُدَ وَالْبُخَارِيُّ فِي الْأَدَبِ.

''ह़ज़रत ज़ारअ़ ﷺ जो कि वफ़्द अ़ब्दुल क़ैस में शामिल थे बयान करते हैं कि जब हम मदीना मुनव्वरा हाज़िर हुए तो तेज़ी से अपनी सवारियों से उतर कर रसूलुल्लाह ﷺ के दस्ते अक़्दस (हाथ मुबारक) और क़दम मुबारक चूमने लगे।''

٦٥٨ / ١١٠۔ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رضي الله عنهما قَالَ: كُنَّا فِي غَزْوَةٍ، فَحَاصَ النَّاسُ حَيْصَةً، قُلْنَا: كَيْفَ نَلْقِي النَّبِيَّ ﷺ وَقَدْ فَرَرْنَا؟ فَنَزَلَتْ: ﴿إِلَّا مُتَحَرِّفًا لِّقِتَالٍ﴾ [الأنفال،٨: ١٦] فَقُلْنَا: لَا نَقْدِمُ الْمَدِيْنَةَ فَلَا يَرَانَا أَحَدٌ. فَقُلْنَا: لَوْ قَدِمْنَا. فَخَرَجَ النَّبِيُّ ﷺ مِنْ صَلَاةِ الْفَجْرِ، قُلْنَا: نَحْنُ الْفَرَّارُوْنَ، قَالَ: أَنْتُمُ الْعَكَّارُوْنَ، قَالَ: فَدَنَوْنَا فَقَبَّلْنَا يَدَهُ، فَقَالَ: أَنَا فِئَةُ الْمُسْلِمِيْنَ. رَوَاهُ أَبُوْ دَاوُدَ وَأَحْمَدُ وَالْبُخَارِيُّ فِي الْأَدَبِ وَاللَّفْظُ لَهُ.

''ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर رضی اللہ عنہما रिवायत करते हैं कि हम एक गज़वे में थे कि लोग बुरी तरह बिखर कर महाज (मुक़ाबले की जगह) से पीछे हट गए तो हमने कहा कि अब रसूलुल्लाह ﷺ को क्या मुँह दिखाएंगे। हम लोग (जंग से) भाग गए। उस पर आयत नाज़िल हुई : ''उनके अ़लावा के जो जंगी चाल के तौर पर रुख़ बदल दें।'' हमने कहा : अब मदीना मुनव्वरा नहीं जाएंगे ताकि हमें कोई न देखे। फिर सोचा कि मदीना में चले जाएँ। रसूलुल्लाह ﷺ सुबह की नमाज़ के लिए बाहर तशरीफ़ लाए। हमने अ़र्ज़ किया: हम भगोड़े हैं। आप ﷺ ने फरमाया: नहीं, बल्कि तुम पलट कर हमला करने वाले हो। पस हम क़रीब हुए और हमने आप ﷺ का दस्ते अक़्दस (हाथ मुबारक) चूम लिया।

الحديث رقم ١١٠: أخرجه أبو داود في السنن، كتاب: الجهاد، باب: في التولى يوم الزحف، ٣ / ٤٦، الرقم: ٢٦٤٧، وأحمد بن حنبل في المسند، ٢ / ٧٠، الرقم: ٥٣٨٤، وابن أبي شيبة في المصنف، ٦ / ٥٤١، الرقم: ٣٣٦٨٦، البخاري في الأدب المفرد / ٣٣٨، الرقم: ٩٧٢، والحسيني في البيان والتعريف، ١ / ٢٩٥، الرقم: ٧٨٦۔

आप ﷺ ने फरमायाः मैं हर मुसलमान की पनाहगाह हूँ।''

٦٥٩ / ١١١ ـ عَنْ مُوْسَى بْنِ عُقْبَةَ رضي الله عنه في رواية طويلة أَرْسَلَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ عُثْمَانَ بْنَ عَفَّانَ رضي الله عنه إِلَى قُرَيْشٍ ...... فَدَعُوْا عُثْمَانَ بْنَ عَفَّانَ رضي الله عنه لِيَطُوْفَ بِالْبَيْتِ فَأَبَى أَنْ يَطُوْفَ وَقَالَ: كُنْتُ لَا أَطُوْفُ بِهِ حَتَّى يَطُوْفَ بِهِ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ فَرَجَعَ إِلَى رَسُوْلِ اللهِ ﷺ. رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ.

''हज़रत मूसा बिन उक़्बा रضي الله عنه से तवील वाक़िया मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रضي الله عنه को (सुल्हे हुदैबिया के मौक़े पर) काफ़िरों की तरफ़ (सफ़ीर बना कर) रवाना किया। (मुज़ाकरात के बाद) उन्होंने हज़रत उस्मान रضي الله عنه को तवाफे काबा की दावत दी। तो उन्होंने फ़ौरन इन्कार कर दिया और फरमायाः मैं उस वक़्त तक तवाफ़ नहीं करूँगा जब तक कि रसूलुल्लाह ﷺ तवाफ़ नहीं कर लेते और फिर (बिना तवाफ़ किए) पलट कर हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की ख़िदमत में आ गए।''

٦٦٠ / ١١٢ ـ عَنْ أَسْمَاءَ بِنْتِ عُمَيْسٍ رضي الله عنها قَالَتْ: كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يُوْحَى إِلَيْهِ وَرَأْسُهُ فِي حِجْرِ عَلِيٍّ رضي الله عنه فَلَمْ يُصَلِّ الْعَصْرَ حَتَّى

الحديث رقم ١١١: أخرجه البيهقى فى السنن الكبرى، ٩ / ٢٢١، وأبو المحاسن فى معتصر المختصر، ٢ / ٣٦٩.

الحديث رقم ١١٢: أخرجه الطبرانى فى المعجم الكبير، ٢٤ / ١٤٧، الرقم: ٣٩٠، والهيثمى فى مجمع الزوائد، ٨ / ٢٩٧، وابن كثير فى البداية والنهاية، ٦ / ٨٣، والقاضى عياض فى الشفاء، ١ / ٤٠٠، والسيوطى فى الخصائص الكبرى، ٢ / ١٣٧، والحلبى فى السيرة الحلبية، ٢ / ١٠٣، والقرطبى فى الجامع لأحكام القرآن، ١٥ / ١٩٧.

رواه الطبرانى بأسانيد، ورجال أحدهما رجال الصحيح غير إبراهيم بن حسن، وهو ثقة، وثّقهُ ابن حبان، ورواه الطحاوى في مشكل الآثار (٢ / ٩، ٤ / ٣٨٨ ـ ٣٨٩) وللحديث طرق أخرى عن أسماء، وعن أبي هريرة، وعليّ ابن أبي طالب، وأبي سعيد الخدري رضي الله عنهم.

←

غَرَبَتِ الشَّمْسُ فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اللَّهُمَّ! إِنَّ عَلِيًّا كَانَ فِي طَاعَتِکَ وَطَاعَةِ رَسُوْلِکَ فَارْدُدْ عَلَيْهِ الشَّمْسَ. قَالَتْ أَسْمَاءُ رضي الله عنها: فَرَأَيْتُهَا غَرَبَتْ وَرَأَيْتُهَا طَلَعَتْ بَعْدَ مَا غَرَبَتْ. رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ.

''हज़रत अस्मा बिन्ते उमैस رضی اللہ عنہا से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ पर वही नाज़िल हो रही थी और आप ﷺ का सरे अक़दस हज़रत अ़ली ﷺ की गोद में था। वो अ़स्र की नमाज़ नहीं पढ़ सके यहाँ तक कि सूरज ग़ुरूब हो गया। हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने दुआ कि 'ऐ अल्लाह अली तेरी और तेरे रसूल की इताअ़त में था उस पर सूरज वापस लौटा दे' हज़रत अस्मा फरमाती है: मैंने उसे ग़ुरूब होते हुए भी देखा और यह भी देखा कि वो ग़ुरूब होने के बाद दुबारा तुलूअ़ हुआ।''

٦٦١ / ١١٣۔ عَنْ قَيْسِ بْنِ مَخْرَمَةَ ﷺ قَالَ: وُلِدْتُ أَنَا وَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ عَامَ الْفِيْلِ قَالَ: وَسَأَلَ عُثْمَانُ بْنُ عَفَّانَ ﷺ قُبَاثَ بْنَ أَشْيَمَ أَخَا بَنِي يَعْمَرَ بْنِ لَيْثٍ أَأَنْتَ أَكْبَرُ أَمْ رَسُوْلُ اللهِ؟ فَقَالَ: رَسُوْلُ اللهِ ﷺ أَكْبَرُ مِنِّي وَأَنَا

.... وقد جمع طرقه أبو الحسن الفضلي، وعبيد الله بن عبد الله الحسكا المتوفى سنة (٤٧٠هـ) في (مسألة في تصحيح حديث ردّ الشمس)، والسيوطي في (كشف اللبس عن حديث الشمس)۔ وقال السيوطي فى الخصائص الكبرى (١٣٧/٢): أخرجه ابن منده، وابن شاهين، والطبرانى بأسانيد بعضها على شرط الصحيح۔ وقال الشيباني في حدائق الأنوار (١٩٣/١): أخرجه الطحاوي في مشكل الحديث ۔ الآثار۔ بإسنادين صحيحين۔

وقال الإمام النووي فى شرح مسلم (٥٢/١٢): ذكر القاضى ﷺ: أن نبينا ﷺ حبست له الشمس مرّتين...... ذكر ذلك الطحاوي وقال: رواته ثقات۔ وحسّنه الحافظ أبوزرعة العراقى في تكملة الكتاب والده ''طرح التثريب'' (٢٧٤/٧)۔

الحديث رقم ١١٣: أخرجه الترمذى فى السنن، كتاب: المناقب عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء في ميلاد النبى ﷺ، ٥٨٩/٥، الرقم: ٣٦١٩، والحاكم فى المستدرك، ٧٢٤/٣، الرقم: ٦٦٢٤، والطبرانى فى المعجم الكبير، ٣٧/١٩، الرقم: ٧٥، وابن أبي عاصم فى الآحاد والمثانى، ٤٠٧/١، الرقم: ٥٦٦، ٩٢٧۔

أَقْدَمُ مِنْهُ فِي الْمِيلَادِ...... الحديث. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالْحَاكِمُ.

وَقَالَ أَبُوْ عِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ.

''हज़रत क़ैस बिन मख़्रमा ﷺ रिवायत करते हैं कि मैं और हुज़ूर नबी–अकरम ﷺ आमुलफ़ील में पैदा हुए। हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान ﷺ ने बनी यामर बिन लैस के भाई क़ुबास बिन अशैम से पूछा आप बड़े हैं या हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ बड़े हैं ? उन्होंने कहा : रसूलल्लाह ﷺ मुझसे बड़े है और मेरी तो (सिर्फ) विलादत पहले है।''

٦٦٢/١١٤. عَنْ مُغِيْرَةَ بْنِ أَبِي رَزِيْنَ ﷺ قَالَ: قِيْلَ لِلْعَبَّاسِ بْنِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ رضي الله عنهما أَيُّمَا أَكْبَرُ أَنْتَ أَمِ النَّبِيُّ ﷺ فَقَالَ: هُوَ أَكْبَرُ مِنِّي وَأَنَا وَلِدْتُ قَبْلَهُ. رَوَاهُ الْحَاكِمُ وَابْنُ أَبِي شَيْبَةَ. وَرِجَالُهُ رِجَالُ الصَّحِيْحِ.

''हज़रत मुग़ीरा बिन अबी रज़ीन ﷺ रिवायत करते हैं कि हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब رضی الله عنهما से पूछा गया : कौन बड़ा है, आप या हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ? तो उन्होंने फरमाया हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ मुझसे बड़े है और मेरी तो (सिर्फ) पैदाइश आपसे पहले हुई है।''

الحديث رقم ١١٤: أخرجه الحاكم فى المستدرك، ٣/ ٣٦٢، الرقم: ٥٣٩٨، وابن أبي شيبة فى المصنف، ٥/٢٩٦، الرقم: ٢٦٢٥٦، ٧/١٨، الرقم: ٣٣٩٢١، وابن أبي عاصم فى الآحاد والمثانى، ١/ ٢٦٩، الرقم: ٣٥٠، والهيثمى فى مجمع الزوائد، ٩/ ٢٧٠، وقال: رواه الطبرانى ورجاله رجال الصحيح.

बाब 10 : اَلْبَابُ الْعَاشِرُ:

جَامِعُ الْمَنَاقِبِ

जामेअ़ मनाक़िब

1. فَصْلٌ فِي مَنَاقِبِ أَهْلِ الْبَيْتِ وَقَرَابَةِ الرَّسُوْلِ ﷺ

﴾हुज़ूर ﷺ के अहले बैत और क़राबतदारों के मनाक़िब का बयान﴿

2. فَصْلٌ فِي مَنَاقِبِ الْخُلَفَاءِ وَصَحَابَةِ الرَّسُوْلِ ﷺ

﴾खुलफ़ाए राशिदीन और सहाबा किराम ﷺ के मनाक़िब का बयान﴿

3. فَصْلٌ فِي مَنَاقِبِ الإِمَامِ الْمَهْدِيِّ الْمُنْتَظَرِ عليه السلام

﴾मनाक़िबे इमाम महदी मुन्तज़िर عليه السلام का बयान﴿

4. فَصْلٌ فِي مَنَاقِبِ الْأَئِمَّةِ الْفُقَهَاءِ الْمُجْتَهِدِيْنَ ﷺ

﴾अइम्मए फ़ुक़हाए मुजतहिदीन ﷺ के मनाक़िब का बयान﴿

5. فَصْلٌ فِي مَنَاقِبِ الْأَوْلِيَاءِ وَالصَّالِحِيْنَ ﷺ

﴾औलिया और सालेहीन ﷺ के मनाक़िब का बयान﴿

6. فَصْلٌ فِي مَا أَعَدَّهُ اللهُ مِنْ قُرَّةِ أَعْيُنٍ لِعِبَادِهِ الصَّالِحِيْنَ

﴾सालेहीन के लिए अल्लाह तआला की तरफ़ से तैयार कर्दह तस्कीने चश्मो जाँ का बयान﴿

فَصْلٌ فِي مَنَاقِبِ أَهْلِ الْبَيْتِ وَقَرَابَةِ الرَّسُوْلِ سلام الله عليهم

हुज़ूर ﷺ के अहले बैत औ क़राबतदारों के मनाक़िब का बयान

٦٦٣ / ١۔ عَنْ زَيْدِ بْنِ أَرْقَمَ ﷺ قَالَ: قَامَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يَوْمًا فِيْنَا خَطِيْباً. بِمَاءٍ يُدْعَى خُمًّا. بَيْنَ مَكَّةَ وَالْمَدِيْنَةِ. فَحَمِدَ اللهَ وَأَثْنَى عَلَيْهِ، وَ وَعَظَ وَذَكَّرَ ثُمَّ قَالَ: أَمَّا بَعْدُ . أَلَا أَيُّهَاالنَّاسُ، فَإِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ يُوْشِكُ أَنْ يَأْتِيَ رَسُوْلُ رَبِّي فَأُجِيْبُ، وَأَنَا تَارِكٌ فِيْكُمْ ثَقَلَيْنِ: أَوَّلُهُمَا كِتَابُ اللهِ فِيْهِ الْهُدَى وَالنُّوْرُ فَخُذُوْا بِكِتَابِ اللهِ. وَاسْتَمْسِكُوْا بِهِ. فَحَثَّ عَلَى كِتَابِ اللهِ وَرَغَّبَ فِيْهِ. ثُمَّ قَالَ: وَأَهْلُ بَيْتِي. أُذَكِّرُكُمُ اللهَ فِي أَهْلِ بَيْتِي أُذَكِّرُكُمُ اللهَ فِي أَهْلِ بَيْتِي، أُذَكِّرُكُمُ اللهَ فِي أَهْلِ بَيْتِي. رَوَاهُ مُسْلِمٌ.

''हज़रत ज़ैद बिन अरकम ﷺ से मरवी है कि एक दिन हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ हमें ख़ुत्बा देने के लिए मक्का और मदीना मुनव्वरा के दरमियान उस तालाब पर ख़ड़े हुए जिसे ख़ुम कहते हैं । आप ﷺ ने अल्लाह तआला की हम्दो सना और वाज़ो नसीहत के बाद फरमायाः ऐ लोगो! मैं तो बस एक आदमी हूँ अनक़रीब मेरे रब का पैग़ाम लाने वाला फ़रिश्ता (यानी फ़रिश्ता ए अज़ल) मेरे पास आएगा और मैं उसे लब्बैक कहूँगा । मैं तुम में दो अज़ीम चीज़ें छोड़े जा रहा हूँ उनमें से पहली अल्लाह तआला की किताब है जिसमें हिदायत और नूर है । अल्लाह तआला की किताब पर अमल करो और उसे मज़बूती से थाम लो । फिर आप ﷺ ने किताबुल्लाह (की तालीमात पर अमल करने) की तरग़ीब दी और उसकी तरफ़ राग़िब किया फिर फरमायाः और (दूसरे) मेरे अहले बैत हैं। मैं तुम्हें अपने अहले बैत के मुतअल्लिक़ अल्लाह की

الحديث رقم ١: أخرجه مسلم فى الصحيح، كتاب: فضائل الصحابة، باب: من فضائل علي بن أبي طالب ﷺ، ٣ / ١٨٧٣، الرقم: ٢٤٠٨، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٤ / ٣٦٦، الرقم: ١٩٢٦٥، وابن حبان فى الصحيح، ١ / ١٤٥، الرقم: ١٢٣، وابن خزيمة فى الصحيح، ٤ / ٦٢، الرقم: ٢٣٥٧، واللالكائي فى اعتقاد أهل السنة، ١ / ٧٩، الرقم: ٨٨، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٢ / ١٤٨، الرقم: ٢٦٧٩، وابن كثير فى تفسير القرآن العظيم، ٣ / ٤٨٧.

याद दिलाता हूँ। मैं तुम्हें अपने अहले बैत के मुतअ़ल्लिक़ अल्लाह की याद दिलाता हूँ। मैं तुम्हें अपने अहले बैत के मुतअ़ल्लिक़ अल्लाह की याद दिलाता हूँ।''

٢/٦٦٤۔ عَنْ زَيْدِ بْنِ أَرْقَمَ رضي الله عنه قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنِّي تَارِكٌ فِيْكُم مَا إِنْ تَمَسَّكْتُمْ بِهِ لَنْ تَضِلُّوْا بَعْدِي أَحَدُهُمَا أَعْظَمُ مِنَ الآخَرِ: كِتَابُ اللهِ حَبْلٌ مَمْدُوْدٌ مِنَ السَّمَاءِ إِلَى الْأَرْضِ وَعِتْرَتِي: أَهْلُ بَيْتِي وَلَنْ يَتفَرَّقَا حَتَّى يَرِدَا عَلَيَّ الْحَوْضَ فَانْظُرُوْا كَيْفَ تَخْلُفُوْنِي فِيْهِمَا. رَوَاهُ التِّرمِذِيُّ وَحَسَنَّهُ وَالنَّسَائِيُّ وَأَحْمَدُ.

''हज़रत ज़ैद बिन अरकम रضي الله عنه से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः मैं तुम में ऐसी दो चीजें छोड़े जा रहा हूँ कि अगर तुमने उन्हें मज़बूती से थामे रखा तो मेरे बाद हरगिज़ गुमराह न होगे उनमें से एक दूसरी से बड़ी है अल्लाह तआ़ला की किताब आसमान से ज़मीन तक लटकी हुई रस्सी है और मेरी इतरत यानी अहले बैत और यह दोनों हरगिज़ जुदा न होंगी, यहाँ तक कि दोनों मेरे पास (इकट्ठे) हौज़े कौसर पर आएंगी। पस देखो कि तुम मेरे बाद उनसे क्या सुलूक करते हो ?''

٣/٦٦٥۔ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رضي الله عنهما قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ

الحديث رقم ٢: أخرجه الترمذى فى السنن، كتاب: المناقب عن رسول الله ﷺ، باب: فى مناقب أهل بيت النبى ﷺ، ٥/٦٦٣، الرقم: ٣٧٨٨/٣٧٨٦، والنسائى فى السنن الكبرى، ٥/٤٥، الرقم: ٨١٤٨، ٨٤٦٤، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٣/١٤، ٢٦، ٥٩، الرقم: ١١١١٩، ١١٢٢٧، ١١٥٧٨، والحاكم فى المستدرك، ٣/١١٨، الرقم: ٤٥٧٦، وأبو يعلى فى المسند، ٢/٣٠٣، الرقم: ١٠٢٦٧، ١١٤٠، والطبرانى عن أبي سعيد رضي الله عنه فى المعجم الأوسط، ٣/٣٧٤، الرقم: ٣٤٣٩، وفى المعجم الصغير، ١/٢٢٦، الرقم: ٣٢٣، وفى المعجم الكبير، ٣/٦٥، الرقم: ٢٦٧٨، وابن أبى شيبة فى المصنف، ٦/١٣٣، الرقم: ٣٠٠٨١، وابن أبى عاصم فى السنة، ٢/٦٤٤، الرقم: ١٥٥٣۔

الحديث رقم ٣: أخرجه الترمذى فى السنن، كتاب: المناقب عن رسول الله ﷺ، باب: فى مناقب أهل بيت النبى ﷺ، ٥/٦٦٢، الرقم: ٣٧٨٦، والطبرانى فى ←

اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنِّي قَدْ تَرَكْتُ فِيْكُمْ مَا إِنْ أَخَذْتُمْ بِهِ لَنْ تَضِلُّوْا: كِتَابَ اللهِ، وَعِتْرَتِي أَهْلَ بَيْتِي. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَحَسَّنَهُ وَالطَّبَرَانِيُّ.

''हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رضی اللہ عنہما फरमाते हैं कि मैंने सुना हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ फरमा रहे थे: ऐ लोगो! मैं तुम्हारे दरमियान ऐसी चीजें छोड़ रहा हूँ कि अगर तुम इन्हें पकड़े रखोगे तो हरग़िज गुमराह न होंगे (उनमें से एक) अल्लाह की किताब और (दूसरी) मेरे अहले बैत हैं।''

٦٦٦ / ٤ ۔ عَنْ عَائِشَةَ رضي الله عنها قَالَتْ خَرَجَ النَّبِيُّ ﷺ غَدَاةً وَعَلَيْهِ مِرْطٌ مُرَحَّلٌ، مِنْ شَعَرٍ أَسْوَدَ. فَجَاءَ الْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ رضي الله عنهما فَأَدْخَلَهُ، ثُمَّ جَاءَ الْحُسَيْنُ رضي الله عنه فَدَخَلَ مَعَهُ، ثُمَّ جَاءَتْ فَاطِمَةُ رضي الله عنها فَأَدْخَلَهَا، ثُمَّ جَاءَ عَلِيٌّ رضي الله عنه فَأَدْخَلَهُ، ثُمَّ قَالَ: ﴿إِنَّمَا يُرِيْدُ اللهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ أَهْلَ الْبَيْتِ وَ يُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيْرًا﴾ [الأحزاب، ٣٣:٣٣]. رَوَاهُ مُسْلِمٌ.

''हज़रत आइशा सिद्दीक़ा رضی اللہ عنہا बयान करती हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ सुबह के वक़्त एक ऊनी मुनक़्क़श चादर ओढ़े हुए बाहर तशरीफ़ लाए तो आपके पास हज़रत हसन बिन अ़ली رضی اللہ عنہ आए तो आप ﷺ ने उन्हें उस चादर में दाख़िल कर लिया फिर हज़रत हुसैन رضی اللہ عنہ आए और वो भी उनके हमराह चादर में दाख़िल हो गए फिर सय्यदा फ़ातिमा رضی اللہ عنہا आईं और आप ﷺ उन्हें भी उस चादर में दाख़िल कर लिया। फिर हज़रत अ़ली رضی اللہ عنہ आए तो आप ﷺ ने उन्हें भी चादर में ले लिया फिर आप ﷺ ने यह आयते मुबारका पढ़ी:

.... المعجم الأوسط، ٥/٨٩، الرقم: ٤٧٥٧، وفي المعجم الكبير، ٣/٦٦، الرقم: ٢٦٨٠، وابن كثير في تفسير القرآن العظيم، ٤/١١٤۔

الحديث رقم ٤: أخرجه مسلم في الصحيح، كتاب: فضائل الصحابة، باب: فضائل أهل بيت النّبي ﷺ، ٤/١٨٨٣، ٢٤٢٤، وابن أبي شيبة في المصنف، ٦/٣٧٠، الرقم: ٣٢١٠٢، والحاكم في المستدرك، ٣/١٥٩، الرقم: ٤٧٠٧۔ ٤٧٠٩، وَقَالَ الْحَاكِمُ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحٌ، والبيهقي في السنن الكبرى، ٢/١٤٩، الرقم: ٢٦٨٠۔

''अहले बैत! तुमसे हर क़िस्म के गुनाह का मैल (और शको–नुक़्स की गर्द तक) दूर कर दे और तुम्हें (कामिल) तहारत से नवाज़ कर बिल्कुल पाक साफ़ कर दे।''

٦٦٧ / ٥۔ عَنْ عُمَرَ بْنِ أَبِي سَلَمَةَ رَبِيْبِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: لَمَّا نَزَلَتْ هَذِهِ الْآيَةُ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ ﴿إِنَّمَا يُرِيْدُ اللهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ أَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيْرًا﴾ [الأحزاب، ٣٣:٣٣] فِي بَيْتِ أُمِّ سَلَمَةَ فَدَعَا فَاطِمَةَ، وَحَسَنًا، وَحُسَيْنًا، فَجَلَّلَهُمْ بِكِسَاءٍ، وَعَلِيٌّ خَلْفَ ظَهْرِهِ فَجَلَّلَهُ بِكِسَاءٍ، ثُمَّ قَالَ: اللَّهُمَّ، هَؤُلَاءِ أَهْلُ بَيْتِي، فَأَذْهِبْ عَنْهُمُ الرِّجْسَ وَطَهِّرْهُمْ تَطْهِيْرًا، قَالَتْ أُمُّ سَلَمَةَ: وَأَنَا مَعَهُمْ يَا نَبِيَّ اللهِ، قَالَ: أَنْتِ عَلَى مَكَانِكِ وَأَنْتِ عَلَى خَيْرٍ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالطَّبَرَانِيُّ.

وَقَالَ أَبُوْ عِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ.

''हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के परवरदा (परवरिश किये हुए) हज़रत उमर बिन अबू सलमा ﷺ फरमाते हैं कि जब उम्मुल मोमिनीन उम्मे सलमा رضی اللہ عنہا के घर हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ पर यह आयत 'पस अल्लाह यही चाहता है कि (रसूलुल्लाह के) अहले बैत तुम से हर क़िस्म के गुनाह का मैल (और शको–नुक़्स की गर्द तक) दूर कर दे और तुम्हें (कामिल) तहारत से नवाज़ कर बिल्कुल पाक साफ़ कर दे' नाज़िल हुई तो आप ﷺ ने सय्यदा फ़ातिमा और हस्नैन करीमैन **سلام الله علیهم** को बुलाया और उन्हें एक कमली में ढाँप लिया हज़रत अली ﷺ आप ﷺ के पीछे थे। आप ﷺ ने उन्हें भी कमली में ढाँप लिया फिर फरमाया: ''ऐ अल्लाह! यह मेरे अहले बैत हैं पस इनसे हर क़िस्म की आलूदगी दूर फरमा और इन्हें ख़ूब पाको–साफ़ कर दे। सय्यदा उम्मे सलमा ने अ़र्ज़ किया: ऐ अल्लाह के नबी! मैं (भी) इनके साथ हूँ। फरमाया तुम अपनी जगह रहो और तुम तो बेहतर मक़ाम पर फ़ाइज़ हो।''

الحديث رقم ٥: أخرجه الترمذى فى السنن، كتاب: تفسير القرآن عن رسول الله ﷺ، باب: ومن سورة الأحزاب، ٥/ ٣٥١، الرقم: ٣٢٠٥، وفى كتاب: المناقب عن رسول الله ﷺ، باب: فضل فاطمة بنت محمد ﷺ، ٥/ ٦٩٩، الرقم: ٣٨٧١، والطبرانى فى المعجم الأوسط، ٤/ ١٣٤، الرقم: ٣٧٩٩۔

٦٦٨ / ٦۔ عَنْ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ ﷺ قَالَ: لَمَّا نَزَلَتْ هَذِهِ الْآيَةُ: ﴿فَقُلْ تَعَالَوْا نَدْعُ أَبْنَآءَنَا وَ أَبْنَآءَكُم﴾ [آل عمران، ٣:٦١] دَعَا رَسُوْلُ اللهِ ﷺ عَلِيًّا وَفَاطِمَةَ وَحَسَنًا وَحُسَيْنًا فَقَالَ: اللَّهُمَّ هَؤُلَاءِ أَهْلِي.

رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَالتِّرْمِذِيُّ وَأَحْمَدُ وَالنَّسَائِيُّ.

وَقَالَ أَبُوْ عِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ.

''हज़रत सईद बिन अबी वक़्क़ास ﷺ बयान करते हैं कि जब आयते मुबाहिला नाज़िल हुईः ''आप फरमा दें कि आ जाओ हम (मिल कर) अपने बेटों को और तुम्हारे बेटों को और अपनी औ़रतों को और तुम्हारी औ़रतों को और अपने आपको भी और तुम्हें भी (एक जगह पर) बुला लेते हैं।'' तो हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने हज़रत अ़ली, हज़रत फ़ातिमा, हज़रत हसन और हुसैन عليهم السلام को बुलाया फिर फरमायाः या अल्लाह! यह मेरे अहले बैत हैं।''

٦٦٩ / ٧۔ عَنِ الْعَبَّاسِ بْنِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ ﷺ قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُوْلَ اللهِ، إِنَّ قُرَيْشًا إِذَا لَقِيَ بَعْضُهُمْ بَعضًا لَقُوْهُمْ بِبَشْرٍ حَسَنٍ، وَإِذَا لَقُوْنَا لَقُوْنَا بِوُجُوْهٍ لَا نَعْرِفُهَا. قَالَ: فَغَضِبَ النَّبِيُّ ﷺ غَضَبًا شَدِيْدًا، وَقَالَ:

الحديث رقم ٦: أخرجه مسلم فى الصحيح، كتاب: فضائل الصحابة، باب: من فضائل علي بن أبى طالب ﷺ، ٤ / ١٨٧١، الرقم: ٢٤٠٤، والترمذى فى السنن، كتاب: تفسير القرآن عن رسول الله ﷺ، باب: ومن سورة آل عمران، ٥ / ٢٢٥، الرقم: ٢٩٩٩، وفى كتاب: المناقب عن رسول الله ﷺ، باب: (٢١)، ٥ / ٦٣٨، الرقم: ٣٧٢٤، وأحمد بن حنبل فى المسند، ١ / ١٨٥، الرقم: ١٦٠٨، والنسائى فى السنن الكبرى، ٥ / ١٠٧، الرقم: ٨٣٩٩، والحاكم فى المستدرك، ٣ / ١٦٣، الرقم: ٤٧١٩، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٧ / ٦٣، الرقم: ١٣١٦٩۔١٣١٧٠۔

الحديث رقم ٧: أخرجه أحمد بن حنبل فى المسند، ١ / ٢٠٧، الرقم: ١٧٧٢، ١٧٧٧، ١٧٦٥٦، ١٧٦٥٧، ١٧٦٥٨، والحاكم فى المستدرك، ٣ / ٣٧٦، الرقم: ٥٤٣٣، ٢٩٦٠، والنسائى فى السنن الكبرى، ٥ / ٥١ الرقم: ٨١٧٦، والبزار فى المسند، ٦ / ١٣١، الرقم: ٢١٧٥، والبيهقى فى شعب الإيمان، ٢ / ١٨٨، الرقم: ١٥٠١، والديلمى فى مسند الفردوس، ٤ / ٣٦١، الرقم: ٧٠٣٧۔

وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ، لَا يَدْخُلُ قَلْبَ رَجُلٍ الإِيْمَانُ حَتَّى يُحِبَّكُمْ لِلّٰهِ وَلِرَسُوْلِهِ وَلِقَرَابَتِي. رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالنَّسَائِيُّ وَالْحَاكِمُ وَالْبَزَّارُ.

وفي رواية: قَالَ: وَاللهِ لَا يَدْخُلُ قَلْبَ امْرِءٍ إِيْمَانٌ حَتَّى يُحِبَّكُمْ لِلّٰهِ، وَلِقَرَابَتِي.

''हज़रत अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब رضی اللہ عنہما से मरवी है कि मैंने बारगाहे रिसालत ﷺ में अ़र्ज़ किया: या रसूलल्लाह ﷺ कुरैश जब आपस में मिलते हैं तो हसीन मुस्कराते चेहरों से मिलते हैं और जब हमसे मिलते है तो (जज़्बात से आ़री) ऐसे चेहरों के साथ मिलते है जिन्हें हम नहीं जानते। हज़रत अ़ब्बास ﷺ फरमाते हैं हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ यह सुन कर शदीद (सख़्त) जलाल में आ गए और फरमाया: उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़ए कुदरत में मेरी जान है किसी भी शख्स के दिल में उस वक़्त तक ईमान दाख़िल नहीं हो सकता, जब तक अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल ﷺ और मेरी क़राबत की ख़ातिर तुमसे मुहब्बत न करे।''

एक और रिवायत में है कि फरमाया: ख़ुदा की क़सम किसी शख़्स के दिल में उस वक़्त तक ईमान दाख़िल न होगा जब तक अल्लाह तआ़ला, उसके रसूले अकरम ﷺ और मेरी क़राबत की वजह से तुमसे मुहब्बत न करे।''

٦٧٠ / ٨۔ عَنِ الْعَبَاسِ بْنِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ رضي الله عنهما قَالَ: كُنَّا نَلْقَى النَّفَرَ مِنْ قُرَيْشٍ، وَهُمْ يَتَحَدَّثُوْنَ فَيَقْطَعُوْنَ حَدِيْثَهُمْ فَذَكَرْنَا ذٰلِكَ لِرَسُوْلِ اللهِ ﷺ، فَقَالَ: مَا بَالُ أَقْوَامٍ يَتَحَدَّثُوْنَ فَإِذَا رَأَوُا الرَّجُلَ مِنْ أَهْلِ بَيْتِي قَطَعُوْا حَدِيْثَهُمْ وَاللهِ، لَا يَدْخُلُ قَلْبَ رَجُلٍ الإِيْمَانُ حَتَّى يُحِبَّهُمْ لِلّٰهِ وَلِقَرَابَتِهِمْ مِنِّي. رَوَاهُ ابْنُ مَاجَه وَالْحَاكِمُ.

الحديث رقم ٨: أخرجه ابن ماجه فى السنن، المقدمة، باب: فضل العباس بن عبد المطلب ﷺ، ١ / ٥٠، الرقم: ١٤٠، والحاكم فى المستدرك، ٤ / ٨٥، الرقم: ٦٩٦٠، والمقدسى فى الأحاديث المختارة، ٨ / ٣٨٢، الرقم: ٤٧٢، والديلمى فى مسند الفردوس، ٤ / ١١٣، الرقم: ٦٣٥٠.

''हज़रत अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब رضی اللہ عنہما बयान करते हैं कि हम जब क़ुरैश की ज़माअ़त से मिलते और वो बाहम गुफ़्तगू कर रहे होते तो गुफ़्तगू रोक देते। हमने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की बारगाह में इस बात की शिकायत की तो आप ﷺ ने फरमायाः लोगों को क्या हो गया है जब मेरे अहले बैत से किसी को देखते हैं तो गुफ़्तगू रोक देते है? अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की क़सम किसी शख्स के दिल में उस वक़्त तक ईमान दाख़िल नहीं होगा जब तक इन (यानी मेरे अहले बैत) से अल्लाह तआ़ला के लिए और मेरी क़राबत (रिश्तेदारी) की वजह से मुहब्बत न करे।''

٦٧١ / ٩۔ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رضي الله عنهما قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَثَلُ أَهْلِ بَيْتِي مَثَلُ سَفِيْنَةِ نُوْحٍ، مَنْ رَكِبَ فِيْهَا نَجَا، وَمَنْ تَخَلَّفَ عَنْهَا غَرِقَ.

رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ وَالْبَزَّارُ وَالْحَاكِمُ.

وفي رواية: عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ الزُّبَيْرِ رضي الله عنهما قَالَ: مَنْ رَكِبَهَا سَلِمَ، وَمَنْ تَرَكَهَا غَرِقَ.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رضی اللہ عنہما से मरवी है हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः मेरे अहले बैत की मिसाल हज़रत नूह عليه السلام की कश्ती की तरह है जो उसमें सवार हो गया वो निजात पा गया और जो उससे पीछे रह गया वो ग़र्क हो गया (डूब गया)।''

''और एक रिवायत में हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رضی اللہ عنہما से मरवी है कि फरमायाः जो उसमें सवार हुआ वो सलामती पा गया और जिसने उसे छोड़ दिया वो ग़र्क हो गया (डूब गया)।''

الحديث رقم ٩: أخرجه الطبراني في المعجم الكبير، ١٢ / ٣٤، الرقم: ٢٣٨٨، ٢٦٣٨، ٢٦٣٨، ٢٦٣٦، وفي المعجم الأوسط، ٤ / ١٠، الرقم: ٣٤٧٨: ٥ / ٣٥٥، الرقم: ٥٥٣٦: ٦ / ٨٥، الرقم: ٥٨٧٠، وفي المعجم الصغير، ١ / ٢٤٠، الرقم: ٣٩١: ٢ / ٨٤، الرقم: ٨٢٥، والحاكم في المستدرك، ٣ / ١٦٣، الرقم: ٤٧٢٠، والبزار في المسند، ٩ / ٣٤٣، الرقم: ٣٩٠٠، والديلمي في مسند الفردوس، ١ / ٢٣٨، الرقم: ٩١٦۔

٦٧٢ / ١٠۔ عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رضي الله عنه قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: كُلُّ سَبَبٍ وَنَسَبٍ يَنْقَطِعُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِلَّا مَا كَانَ مِنْ سَبَبِي وَنَسَبِي. رَوَاهُ عَبْدُ الرَّزَّاقِ وَالْحَاكِمُ وَاللَّفْظُ لَهُ وَالطَّبَرَانِيُّ وَإِسْنَادُهُ حَسَنٌ.

''हज़रत उमर बिन ख़त्ताब رضي الله عنه फरमाते हैं कि मैंने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ से सुना कि आप ﷺ फरमाते : क़यामत के दिन मेरे हसुबो नसब के सिवाए हर सिलसिला–ए–नसब मुनक़ता' (अलग) हो जाएगा।''

٦٧٣ / ١١۔ عَنْ جَابِرٍ رضي الله عنه قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لِكُلِّ بَنِي أُمٍّ عُصْبَةٌ يَنْتَمُوْنَ إِلَيْهِمْ إِلَّا ابْنَي فَاطِمَةَ فَأَنَا وَلِيُّهُمَا وَعُصْبَتُهُمَا.

رَوَاهُ الْحَاكِمُ وَأَبُوْ يَعْلَى. وَقَالَ الْحَاكِمُ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحُ الإِسْنَادِ.

''हज़रत जाबिर رضي الله عنه से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः हर माँ के बेटों का आबाई खानदान (वालिद की तरफ़ से) होता है जिसकी तरफ़ वो मन्सूब होते हैं सिवाए फ़ातिमा के बेटों के, पस मैं ही उनका वली हूँ और मैं ही उनका नसब हूँ।''

٦٧٤ / ١٢۔ عَنْ عُمَرَ رضي الله عنه قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: كُلُّ

الحديث رقم ١٠: أخرجه الحاكم فى المستدرك، ٣ / ١٥٣، الرقم: ٤٦٨٤، والطبراني فى المعجم الكبير، ٣ / ٤٤، الرقم: ٢٦٣٣، ٢٦٣٤-٢٦٣٥، وفى المعجم الأوسط، ٥ / ٣٧٦، الرقم: ٥٦٠٦، وعبد الرزاق فى المصنف، ٦ / ١٦٣، الرقم: ١٠٣٥٤، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٧ / ٦٣، الرقم: ١٣١٧١، والمقدسى فى الأحاديث المختارة، ١ / ١٩٧، الرقم: ١٠١، وَقَالَ: إِسْنَادَهُ حَسَنٌ، والديلمى فى مسند الفردوس، ٣ / ٢٥٥، الرقم: ٤٧٥٥، والهيثمى فى مجمع الزوائد، ٩ / ١٧٣، وقال: إِسنادُهُ حَسَنٌ.

الحديث رقم ١١: أخرجه الحاكم فى المستدرك، ٣ / ١٧٩، الرقم: ٤٧٧٠، وأبو يعلى فى المسند، ٢ / ١٠٩، الرقم: ٦٧٤١، والطبرانى فى المعجم الكبير، ٣ / ٤٤، الرقم: ٢٦٣١-٢٦٣٢.

الحديث رقم ١٢: أخرجه الديلمى فى مسند الفردوس، ٣ / ٢٣٤، الرقم: ٤٧٨٧، والهيثمى فى مجمع الزوائد، ٤ / ٢٢٤.

بَنِي أُنْثَى فَإِنَّ عُصْبَتَهُمْ لِأَبِيهِمْ مَا خَلَا بَنِي فَاطِمَةَ، فَإِنِّي أَنَا عُصْبَتُهُمْ وَأَنَا أَبُوهُمْ. رَوَاهُ الدَّيْلَمِيُّ.

''हज़रत उमर ﷺ से मरवी है कि मैंने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ से यह सुनाः 'आप ﷺ फरमातेः हर औरत की औलाद का नसब अपने बाप की तरफ़ होता है सिवाए औलादे फ़ातिमा के, क्योंकि मैं ही उनका नसब और मैं ही उनका बाप हूँ।''

٦٧٥ / ١٣۔ عَنْ جَابِرٍ ﷺ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ : إِنَّ اللهَ ﷻ جَعَلَ ذُرِّيَّةَ كُلِّ نَبِيٍّ فِي صُلْبِهِ، وَإِنَّ اللهَ جَعَلَ ذُرِّيَّتِي فِي صُلْبِ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ ﷺ. رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ.

''हज़रत जाबिर ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः यक़ीनन अल्लाह तआला ने हर नबी की औलाद उसकी सुल्ब (पुश्त) में रखी और बेशक अल्लाह तआला ने मेरी औलाद अ़ली इब्ने अबी तालिब के सुल्ब में रखी है।''

٦٧٦ / ١٤۔ عَنْ أَبِي مَسْعُوْدٍ الْأَنْصَارِيِّ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ صَلَّى صَلَاةً لَمْ يُصَلِّ فِيْهَا عَلَيَّ وَعَلَى أَهْلِ بَيْتِي، لَمْ تُقْبَلْ مِنْهُ. وَقَالَ أَبُوْ مَسْعُوْدٍ ﷺ: لَوْ صَلَّيْتُ صَلَاةً لَا أُصَلِّي فِيْهَا عَلَى مُحَمَّدٍ، مَا رَأَيْتُ أَنَّ صَلَاتِي تَتِمُّ. رَوَاهُ الدَّارَ قُطْنِيُّ وَالْبَيْهَقِيُّ.

''हज़रत अबू मस्ऊद अन्सारी ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जिसने नमाज़ पढ़ी और मुझ पर और मेरे अहले बैत पर दुरूद न पढ़ा उसकी नमाज़

الحديث رقم ١٣: أخرجه الطبرانى فى المعجم الكبير، ٣ / ٤٣، الرقم: ٢٦٣٠، والديلمى فى مسند الفردوس، ١ / ١٧٢، الرقم: ٦٤٣، والهيثمى فى مجمع الزوائد، ٩ / ١٧٢، والمناوى فى فض القدير، ٢ / ٢٢٣۔

الحديث رقم ١٤: أخرجه الدار قطنى فى السنن، ١ / ٣٥٥، الرقم: ٦-٧، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٢ / ٥٣٠، الرقم: ٣٩٦٩، وابن الجوزي فى التحقيق في أحاديث الخلاف، ١ / ٤٠٢، الرقم: ٥٤٤، والشوكانى فى نيل الأوطار، ٢ / ٣٢٢۔

क़ुबूल न होगी। हज़रत अबू मस्ऊद अन्सारी ﷺ फरमाते हैं: अगर मैं नमाज़ पढ़ूँ और उसमें हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ पर दुरूद पाक न पढ़ूँ तो मैं नहीं समझता कि मेरी नमाज़ कामिल होगी।''

٦٧٧/١٥۔ عَنْ حُذَيْفَةَ رضي الله عنه قَالَ: قَالَ: رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّ هَذَا مَلَكٌ لَمْ يَنْزِلِ الْأَرْضَ قَطُّ قَبْلَ هَذِهِ اللَّيْلَةِ اسْتَأْذَنَ رَبَّهُ أَنْ يُسَلِّمَ عَلَيَّ وَ يُبَشِّرَنِي بِأَنَّ فَاطِمَةَ سَيِّدَةُ نِسَاءِ أَهْلِ الْجَنَّةِ وَأَنَّ الْحَسَنَ وَالْحُسَيْنَ سَيِّدَا شَبَابِ أَهْلِ الْجَنَّةِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ وَأَحْمَدُ.

وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ.

''हज़रत हुज़ैफ़ा ﷺ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया: एक फ़रिश्ता जो इस रात से पहले कभी ज़मीन पर न उतरा था उसने अपने परवरदिगार से इजाज़त माँगी कि मुझे सलाम करे और मुझे यह ख़ुशख़बरी दे कि हज़रत फ़ातिमा رضی اللہ عنہا अहले जन्नत की तमाम औरतों की सरदार हैं और हसन व हुसैन رضی اللہ عنہما जन्नत के तमाम जवानों के सरदार हैं।''

٦٧٨/١٦۔ عَنْ عَلِيٍّ رضي الله عنه أَنَّهُ دَخَلَ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ، وَقَدْ بَسَطَ شَمْلَةً، فَجَلَسَ عَلَيْهَا هُوَ وَفَاطِمَةُ وَعَلِيٌّ وَالْحَسَنُ وَالْحُسَيْنُ، ثُمَّ أَخَذَ النَّبِيُّ ﷺ بِمَجَامِعِهِ فَقَعَدَ عَلَيْهِمْ ثُمَّ قَالَ: اللَّهُمَّ ارْضَ عَنْهُمْ كَمَا أَنَا

الحديث رقم ١٥: أخرجه الترمذى فى السنن، كتاب: المناقب عن رسول الله ﷺ، باب: مناقب الحسن والحسين عليهما السلام، ٥/٦٦٠، الرقم: ٣٧٨١، والنسائى فى السنن الكبرى، ٨٠، ٩٥، الرقم: ٨٢٩٨، ٨٣٦٥، وفي فضائل الصحابة، ١/٥٨، ٧٦، الرقم: ١٩٣، ٢٦٠، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٥/٣٩١، الرقم: ٢٣٣٦٩، وفى فضائل الصحابة، ٢/٧٨٨، الرقم: ١٤٠٦، وابن أبى شيبة فى المصنف، ٦/٣٨٨، الرقم: ٣٢٢٧١، والحاكم فى المستدرك ، ٣/١٦٤، الرقم: ٤٧٢١۔ ٤٧٢٢، والطبرانى فى المعجم الكبير، ٢٢/٤٠٢، الرقم: ١٠٠٥، وأبو نعيم فى حلية الأولياء، ٤/١٩٠، والبيهقى فى الاعتقاد : ٣٢٨۔

الحديث رقم ١٦: أخرجه الطبرانى فى المعجم الأوسط، ٥/٣٤٨، الرقم: ٥٥١٤، والهيثى فى مجمع الزوائد، ٩/١٦٩۔

عَنْهُمْ رَاضٍ. رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ.

''हज़रत अली ﷺ बयान करते हैं कि वो हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की बारगाहे अक़्दस में हाज़िर हुए उस वक़्त आप ﷺ ने चादर बिछाई हुई थी पस उस पर हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ (ब नफ़्से नफ़ीस) हज़रत अली, हज़रत फ़ातिमा, हज़रत हसन और हज़रत हुसैन علیہم السلام बैठ गए फिर आप ﷺ ने उस चादर के किनारे पकड़े और उन पर डाल कर उसमें गिरह (गांठ लगाना) लगा दी फिर फरमायाः ऐ अल्लाह! तू भी इनसे राज़ी हो जा। जिस तरह मैं इनसे राज़ी हूँ।''

٦٧٩ / ١٧. عَنْ عُمَرَ ﷺ أَنَّهُ دَخَلَ عَلَى فَاطِمَةَ بِنْتِ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ فَقَالَ: يَا فَاطِمَةُ، وَاللهِ، مَارَأَيْتُ أَحَدًا أَحَبَّ إِلَى رَسُوْلِ اللهِ ﷺ مِنْکِ، وَاللهِ! مَا کَانَ أَحَدٌ مِنَ النَّاسِ بَعْدَ أَبِيْکِ ﷺ أَحَبَّ إِلَيَّ مِنْکِ.

رَوَاهُ الْحَاکِمُ وَابْنُ أَبِي شَيْبَةَ.

''हज़रत उमर बिन ख़त्ताब ﷺ बयान करते हैं कि वो रसूलल्लाह ﷺ की साहबज़ादी सय्यदा फ़ातिमा رضی اللہ عنہا के यहाँ गए और कहाः ऐ फ़ातिमा! ख़ुदा की क़सम मैंने आपके सिवाए किसी शख़्स को हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के नजदीक मेहबूब तर नहीं देखा और ख़ुदा की क़सम! लोगो में से मुझे भी आपके वालिद मोहतरम के बाद आपसे ज़्यादा महबूब नहीं।''

٦٨٠ / ١٨. عَنْ عَلِيٍّ ﷺ قَالَ: الْحَسَنُ أَشْبَهُ بِرَسُوْلِ اللهِ ﷺ مَا بَيْنَ الصَّدْرِ إِلَى الرَّأْسِ، وَالْحُسَيْنُ أَشْبَهُ بِالنَّبِيِّ ﷺ مَا کَانَ أَسْفَلَ مِنْ

الحديث رقم ١٧: أخرجه الحاکم فی المستدرک، ٣ / ١٦٨، الرقم: ٤٧٣٦، وابن أبی شيبة فی المصنف، ٧ / ٤٣٢، الرقم: ٣٧٠٤٥، وأحمد بن حنبل فی فضائل الصحابة، ١ / ٣٦٤، وابن أبي عاصم فی الآحاد والمثانی، ٥ / ٣٦٠، الرقم: ٢٩٥٢، والخطيب البغدادی فی تاريخ بغداد، ٤ / ٤٠١.

الحديث رقم ١٨: أخرجه الترمذی فی السنن، کتاب: المناقب عن رسول الله ﷺ، باب: مناقب الحسن والحسين، ٥ / ٦٦٠، الرقم: ٣٧٧٩، وأحمد بن حنبل فی المسند، ١ / ٩٩، الرقم: ٧٧٤، ٨٥٤، وابن حبان فی الصحيح، ١٥ / ٤٣٠، الرقم: ٦٩٧٤، والطيالسي فی المسند، ١ / ٩١، الرقم: ١٣٠، والمقدسی فی الأحاديث المختارة، ٢ / ٣٩٤، الرقم: ٧٨٠.

ذَلِکَ. رَوَاهُ التِّرمِذِيُّ وَأَحْمَدُ وَابْنُ حِبَّانَ.

وَقَالَ أَبُوْ عِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत अली ﷺ फरमाते हैं कि हज़रत हसन ﷺ सीने से सर तक रसूलुल्लाह ﷺ की मिस्ल हैं और हज़रत हुसैन ﷺ सीने से नीचे तक हुज़ूर ﷺ के की मिस्ल हैं।''

٦٨١ / ١٩۔ عَنْ شُعْبَةَ عَنْ سَلَمَةَ بْنِ کُهَيْلٍ، قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا الطُّفَيْلِ يُحَدِّثُ عَنْ أَبِي سَرِيْحَةَ...... أَوْ زَيْدِ بْنِ أَرْقَمَ، (شَکَّ شُعْبَةُ)...... عَنِ النَّبِيِّ ﷺ، قَالَ: مَنْ کُنْتُ مَوْلَاهُ فَعَلِيٌّ مَوْلَاهُ. رَوَاهُ التِّرمِذِيُّ.

الحديث رقم ١٩: أخرجه الترمذی فی السنن، کتاب: المناقب عن رسول الله ﷺ، باب: فی مناقب علي بن أبی طالب ﷺ، ٥ / ٦٣٣، الرقم: ٣٧١٣، والطبرانی فی المعجم الکبير، ٥ / ١٩٥، ٢٠٤، الرقم: ٥٠٧١، ٥٠٩٦۔

رُوِيَ هَذَا الْحَدِيْثُ عَنْ حُبْشَی بْنِ جَنَادَةَ فِي الْکُتُبِ الْآتِيَةِ:

الحاکم فی المستدرک، ٣ / ١٣٤، الرقم: ٤٦٥٢، والطبرانی فی المعجم الکبير، ١٢ / ٧٨، الرقم: ١٢٥٩٣، والخطيب البغدادی فی تاريخ بغداد، ١٢ / ٣٤٣، وابن عساکر فی تاريخ دمشق الکبير، ٤٥ / ٧٧، ١٤٤، وابن کثير فی البداية والنهاية، ٥ / ٤٥١، والهيثمی فی مجمع الزوائد، ٩ / ١٠٨۔

رُوِيَ هَذَا الْحَدِيْثُ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا فِي الْکُتُبِ الآتِيَةِ:

ابن أبی عاصم فی السنة: ٦٠٢، الرقم: ١٣٥٥، وابن ابی شيبه فی المصنف، ٦ / ٣٦٦، الرقم: ٣٢٠٧٢۔

وَ قَدْ رُوِيَ هَذَ الْحَدِيْثُ عَنْ أَيُّوْبِ الْأَنْصَارِيِّ فِي الْکُتُبِ الآتِيَةِ:

إبن أبی عاصم فی السنة: ٦٠٢، الرقم: ١٣٥٤، والطبرانی فی المعجم الکبير، ٤ / ١٧٣، الرقم: ٤٠٥٢، والطبرانی فی المعجم الأوسط، ١ / ٢٢٩، الرقم: ٣٤٨۔

وَرُوِيَ هَذَا لْحَدِيْثُ عَنْ بُرَيْدَةَ فِي الْکُتُبِ الْآتِيَةِ:

عبد الرزاق فی المصنف، ١١ / ٢٢٥، الرقم: ٢٠٣٨٨، والطبرانی فی المعجم الصغير، ١: ٧١، وابن عساکرفی تاريخ دمشق الکبير، ٤٥ / ١٤٣۔

وَرُوِيَ هَذَالْحَدِيْثُ عَنْ بُرَيْدَةَ فِي الْکُتُبِ الْآتِيَةِ:

إبن أبی عاصم فی السنة: ٦٠١، الرقم: ١٣٥٣، وابن عساکر فی تاريخ دمشق الکبير، ٤٥ / ١٤٦، وابن کثيرفی البداية والنهاية، ٥ / ٤٥٧، وحسام الدين هندی فی کنز العمال، ١١ / ٦٠٢، رقم: ٣٢٩٠٤۔

وَقَالَ: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ.

وقد روى شعبة هذا الحديث عن ميمون أبي عبد الله عن زيد بن أرقم عن النبي ﷺ.

''हज़रत शुअ़बा बिन कुहैल से रिवायत करते हैं कि मैंने अबू तुफ़ैल से सुना कि अबू सरीहा .... या ज़ैद बिन अरकम رضی الله عنهما ..... (हज़रत शुअ़बा को रावी के मुतअ़ल्लिक़ शक है) से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : जिसका मैं मौला हूँ उसका अ़ली मौला है। हज़रत शुअ़बा ने इस हदीस को मैमून अबू अ़ब्दुल्लाह से, उन्होंने ज़ैद बिन अरकम से और उन्होंने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ से रिवायत किया।''

٦٨٢ / ٢٠. عَنْ جُمَيْعِ بْنِ عُمَيْرٍ التَّمِيْمِيِّ رضی الله عنه قَالَ: دَخَلْتُ مَعَ عَمَّتِي عَلَى عَائِشَةَ رضي الله عنها فَسُئِلَتْ أَيُّ النَّاسِ كَانَ أَحَبَّ إِلَى رَسُوْلِ اللهِ ﷺ؟ قَالَتْ: فَاطِمَةُ، فَقِيْلَ: مِنَ الرِّجَالِ؟ قَالَتْ: زَوْجُهَا، إِنْ كَانَ مَا عَلِمْتُ صَوَّامًا قَوَّامًا. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُوْ يَعْلَى وَالْحَاكِمُ.

وَقَالَ أَبُوْ عِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ.

''हज़रत जुमैअ़ बिन उमर तैमी बयान करते हैं कि मैं अपनी फूफ़ी के हमराह हज़रत आइशा رضی الله عنها की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। सय्यदा आइशा सिद्दीका رضی الله عنها से पूछा गया कि लोगों में से हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के हाँ कौन ज़्यादा नज़दीक था। उम्मुल मोमिनीन رضی الله عنها ने फरमायाः फ़ातिमा (سلام الله عليها), अ़र्ज़ किया गयाः मर्दों में से (कौन ज़्यादा महबूब था) फरमायाः उनके शौहर और जहाँ तक मैं जानती हूँ वो बहुत ज़्यादा रोज़े रखने वाले और रातों को इबादत के लिए बहुत क़ियाम करने वाले थे।''

.... وَرُوِيَ هَذَاالْحَدِيْثُ عَنْ مَالِكِ بْنِ حُوَيْرِثٍ فِي الْكُتُبِ الْآتِيَةِ:

الطبرانی فی المعجم الكبير، ١٩ / ٢٥٢، الرقم: ٦٤٦، وابن عساكر، تاريخ دمشق الكبير، ٤٥: ١٧٧، والهيثمی فی مجمع الزوائد، ٩ / ١٠٦.

الحديث رقم ٢٠: أخرجه الترمذی فی السنن، كتاب: المناقب عن رسول الله ﷺ، باب: فضل فاطمة بنتِ محمد ﷺ، ٥ / ٧٠١، الرقم: ٣٨٧٤، وأبو يعلى فی المعجم، ١ / ١٢٨، الرقم: ٢٣٥، والحاكم فی المستدرك، ٣ / ١٧١، الرقم: ٤٧٤٤، والطبرانی فی المعجم الكبير، ٢٢ / ٤٠٣-٤٠٤، الرقم: ١٠٠٨-١٠٠٩.

٦٨٣ / ٢١۔ عَنْ زَيْدِ بْنِ أَرْقَمَ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: لِعَلِيٍّ وَفَاطِمَةَ وَالْحَسَنِ وَالْحُسَيْنِ ﷺ: أَنَا حَرْبٌ لِمَنْ حَارَبْتُمْ، وَسِلْمٌ لِمَنْ سَالَمْتُمْ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَه وَالْحَاكِمُ.

''हज़रत ज़ैद बिन अरकम ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने हज़रत अ़ली, हज़रत फ़ातिमा, हज़रत हसन और हज़रत हुसैन ﷺ से फरमायाः तुम जिससे लड़ोगे मैं उसके साथ हालते जंग में हूँ और जिससे तुम सुलह करने वाले हो मैं भी उससे सुलह करने वाला हूँ।''

٦٨٤ / ٢٢۔ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي لَيْلَى عَنْ أَبِيْهِ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لاَ يُؤْمِنُ عَبْدٌ حَتَّى أَكُوْنَ أَحَبَّ إِلَيْهِ مِنْ نَفْسِهِ وَأَهْلِي أَحَبَّ إِلَيْهِ مِنْ أَهْلِهِ وَعِتْرَتِي أَحَبَّ إِلَيْهِ مِنْ عِتْرَتِهِ. وَذَاتِي أَحَبَّ إِلَيْهِ مِنْ ذَاتِهِ. رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ وَالْبَيْهَقِيُّ.

''हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन अबू लैला ﷺ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः कोई बन्दा उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि मैं उसके नज़दीक उसकी जान से भी महबूबतर न हो जाऊँ और मेरे अहले बैत उसे उसके अहले ख़ाना से महबूबतर न हो जाएं और मेरी औलाद उसे अपनी औलाद से बढ़कर महबूब न हो जाए और मेरी ज़ात उसे अपने ज़ात से महबूबतर न हो जाए।''

الحديث رقم ٢١: أخرجه الترمذى فى السنن، كتاب: المناقب عن رسول الله ﷺ، باب: فضل فاطمة بنت محمد ﷺ، ٥ / ٦٩٩، الرقم: ٣٨٧٠، وابن ماجه فى السنن، المقدمة، باب: فضل الحسن والحسين ابنَيْ عَلِيِّ بْنِ أَبي طَالِبٍ ﷺ، ١ / ٥٢، الرقم: ١٤٥، والحاكم فى المستدرك، ٣ / ١٦١، الرقم: ٤٧١٤، والطبرانى فى المعجم الأوسط، ٥ / ١٨٢، الرقم: ٥٠١٥، وفى المعجم الكبير، ٣ / ٤٠، الرقم: ٢٦٢٠، والصيداوى فى معجم الشيوخ، ١ / ١٣٣، الرقم: ٨٥۔

الحديث رقم ٢٢: أخرجه الطبرانى فى المعجم الكبير، ٧ / ٧٥، الرقم: ٦٤١٦، وفى المعجم الأوسط، ٦ / ٥٩، الرقم: ٥٧٩٠، والبيهقى فى شعب الإيمان، ٢ / ١٨٩، الرقم: ١٥٠٥، والديلمى فى مسند الفردوس، ٥ / ١٥٤، الرقم: ٧٧٩٥، والهيثمى فى مجمع الزوائد، ١ / ٨٨۔

فَصْلٌ فِي مَنَاقِبِ الْخُلَفَاءِ وَصَحَابَةِ الرَّسُوْلِ ﷺ

ख़ुलफ़ाए राशिदीन और सहाबा किराम ﷺ के मनाक़िब का बयान

٦٨٥ / ٢٣۔ عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ ﷺ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: لَا تَسُبُّوْا أَصْحَابِي، فَلَوْ أَنَّ أَحَدَكُمْ أَنْفَقَ مِثْلَ أُحُدٍ ذَهَبًا، مَا بَلَغَ مُدَّ أَحَدِهِمْ وَلَا نَصِيْفَهُ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ.

ورواه مسلم عن أبي هريرة ﷺ وزاد فيه: (لَا تَسُبُّوْا أَصْحَابِي لَا تَسُبُّوْا أَصْحَابِي فَوَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ) ثُمَّ سَاقَ الْحَدِيْثَ بِنَحْوِهِ.

''हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी-ए-अकरम ﷺ ने फरमायाः मेरे सहाबा को बुरा मत कहो, अगर तुम में से कोई उहद पहाड़ के बराबर भी सोना ख़र्च कर दे तो फिर भी वो उनके सेर भर या उससे आधे के बराबर भी नहीं पहुँच सकता।''

इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है और इमामे मुस्लिम ने हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से इन अल्फ़ाज़ के इज़ाफ़े के साथ रिवायत किया हैः ''मेरे सहाबा को बुरा मत कहो, मेरे सहाबा को बुरा मत कहो (दो मर्तबा फरमाया) क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है फिर

الحديث رقم ٢٣: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: فضائل الصحابة، باب: قول النبي ﷺ: لو كنت متخذاً خليلا، ٣/١٣٤٣، الرقم: ٣٤٧٠، ومسلم في الصحيح، كتاب: فضائل الصحابة، باب: تحريم سب الصحابة، ٤/١٩٦٧، الرقم: ٢٥٤٠، والترمذي في السنن، كتاب: المناقب عن رسول الله ﷺ، باب: (٥٩)، ٥/٦٩٥، الرقم: ٣٨٦١ وقال: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ، وأبو داود في السنن، كتاب: السنة، باب: في النهي عن سب أصحاب رسول الله ﷺ، ٤/٢١٤، الرقم: ٤٦٥٨، وابن ماجه في السنن، باب: فضائل أصحاب رسول الله ﷺ، فضل أهل بدر، ١/٥٧، الرقم: ١٦١، والنسائي في السنن الكبرى، ٥/٨٤، الرقم: ٨٣٠٨، وأحمد بن حنبل في المسند، ٣/١١، الرقم: ١١٠٩٤، ١١٥٣٤، ١١٥٣٥، ١١٦٢٦، وابن حبان في الصحيح، ١٦/٢٣٨، الرقم: ٧٢٥٣، وأبو يعلى في المسند، ٢/٣٤٢، الرقم: ١٠٨٧، وابن أبي شيبة في المصنف، ٦/٤٠٤، الرقم: ٣٢٤٠٤، والطبراني في المعجم الأوسط، ١/٢١٢، الرقم: ٦٨٧.

उसी तरह पूरी हदीस बयान की।''

٦٨٦ / ٢٤۔ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مُغَفَّلٍ ﷺ، قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اللهَ اللهَ فِي أَصْحَابِي، لَا تَتَّخِذُوْهُمْ غَرَضًا بَعْدِي، فَمَنْ أَحَبَّهُمْ فَبِحُبِّي أَحَبَّهُمْ، وَمَنْ أَبْغَضَهُمْ فَبِبُغْضِي أَبْغَضَهُمْ، وَمَنْ آذَاهُمْ فَقَدْ آذَانِي، وَمَنْ آذَانِي فَقَدْ آذَى اللهَ، وَمَنْ آذَى اللهَ فَيُوْشِكُ أَنْ يَأْخُذَهُ.

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَحْمَدُ وَابْنُ أَبِي عَاصِمٍ. وَقَالَ أَبُوْ عِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ.

''हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः ''मेरे सहाबा ﷺ के बारे में अल्लाह तआला से डरो, अल्लाह से डरो और मेरे बाद इन्हें तनक़ीद का निशाना ना बनाना, क्योंकि जिसने इनसे मुहब्बत की उसने मेरी वजह से उनसे मुहब्बत की और जिसने उनसे बुग़्ज़ रखा उसने मेरे बुग़्ज़ की वजह से उनसे बुग़्ज़ रखा और जिसने उन्हें तकलीफ़ पहुँचाई उसने मुझे तकलीफ़ पहुँचाई और जिसने मुझे तकलीफ़ पहुँचाई उसने अल्लाह तआला को तकलीफ़ पहुँचाई और जिसने अल्लाह तआला को तकलीफ़ पहुँचाई अनक़रीब अल्लाह तआला उसे पकड़ेगा।''

٦٨٧ / ٢٥۔ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رضی الله عنهما، قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِذَا رَأَيْتُمُ الَّذِيْنَ يَسُبُّوْنَ أَصْحَابِي فَقُوْلُوْا: لَعْنَةُ اللهِ عَلَى شَرِّكُمْ.

الحديث رقم ٢٤: أخرجه الترمذى في السنن، كتاب: المناقب عن رسول الله ﷺ، باب: فيمن سبّ أصحاب النبى ﷺ، ٥/٦٩٦، الرقم: ٣٨٦٢، وأحمد بن حنبل في المسند، ٥/٥٤، ٥٧، الرقم: ٢٠٥٤٩۔٢٠٥٧٨، وابن أبي عاصم فى السنة، ٢/٤٧٩، الرقم: ٩٩٢، والبيهقى فى شعب الإيمان، ٢/١٩١، الرقم: ١٥١١، والرويانى في المسند ٢/٩٢، الرقم: ٨٨٢، والديلمى في مسند الفردوس، ١/١٤٦، الرقم: ٥٢٥، والهيثمى فى موارد الظمآن، ١/٥٦٨، الرقم: ٢٢٨٤۔

الحديث رقم ٢٥: أخرجه الترمذى فيالسنن، كتاب: المناقب عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء فى فضل من رَأَى النَّبِيَّ ﷺ وَ صَحِبَهُ، ٥/٦٩٧، الرقم: ٣٨٦٦، والطبرانى فى المعجم الأوسط، ٨/١٩١، الرقم: ٨٣٦٦، والديلمى في مسند الفردوس، ١/٢٦٣، الرقم: ١٠٢٢۔

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالطَّبَرَانِيُّ.

''हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर رضی اللہ عنہما से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमायाः जब तुम उन लोगों को देखो जो मेरे सहाबा को बुरा भला कहते हैं तो तुम (उन्हें) कहो तुम्हारे शर्र (बुराई) पर अल्लाह तआला की लानत हो।''

٦٨٨ / ٢٦۔ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رضي الله عنهما قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ سَبَّ أَصْحَابِي فَعَلَيْهِ لَعْنَةُ اللهِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِيْنَ.

رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ وَابْنُ أَبِي شَيْبَةَ.

''हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास رضی اللہ عنہما से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जिसने मेरे सहाबा को गाली दी तो उस पर अल्लाह तआला की, तमाम फ़रिश्तों की और तमाम इन्सानों की लानत है।''

٦٨٩ / ٢٧۔ عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ رضي الله عنهما يَقُوْلُ: قَالَ رَسُوْلُ

الحديث رقم ٢٦: أخرجه الطبراني في المعجم الكبير، ١٢ / ١٤٢، الرقم: ١٢٧٠٩، وعن أبي سعيد ﷺ في المعجم الأوسط، ٥ / ٩٤، الرقم: ٤٧٧١، وابن أبي شيبة عن عطا بن أبي رباح في المصنف، ٦ / ٤٠٥، الرقم: ٣٢٤١٩، والخلال في السنة، ٣ / ٥١٥، الرقم: ٨٣٣، وابن أبي عاصم في السنة، ٢ / ٤٨٣، الرقم: ١٠٠١، وابن الجعد في المسند، ١ / ٢٩٦، الرقم: ٢٠١٠، والديلمي في مسند الفردوس، ٥ / ١٤، الرقم: ٧٣٠٢، والهيثمي في مجمع الزوائد، ١٠ / ٢١، والمناوي في فيض القدير، ٥ / ٢٧٤.

الحديث رقم ٢٧: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: فضائل الصحابة، باب: فضائل أصحاب النبي ﷺ، ٣ / ١٣٣٥، الرقم: ٣٤٥٠، وفي كتاب: الرقاق، باب: ما يحذر من زهرة الدنيا والتنافس فيها، ٥ / ٢٣٦٢، الرقم: ٦٠٦٤، وفي كتاب: الأيمان والنذور، باب: إثم مَن لا يَفِي بِالنَّذرِ، ٦ / ٢٤٦٣، الرقم: ٦٣١٧، ومسلم في الصحيح، كتاب: فضائل الصحابة، باب: فضل الصحابة ثم الذين يلونهم ثم الذين يلونهم، ٤ / ١٩٦٤، الرقم: ٢٥٣٥، والترمذي في السنن، كتاب: الفتن عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء في القرن الثالث، ٤ / ٥٠٠، الرقم: ٢٣٠٢۔ ٢٣٠٣، وفي كتاب: المناقب عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء في فضل من رأى النبي وفضل ﷺ وصَحِبَه، ٥ / ٦٩٥، الرقم: ٣٨٥٩، والنسائي في السنن، كتاب: الأيمان والنذور، باب: الوفاء بالنذر، ٧ / ١٧، الرقم: ٣٨٠٩، وابن ماجه في ـــــ

اللهِ ﷺ: خَيْرُ أُمَّتِي قَرْنِي، ثُمَّ الَّذِيْنَ يَلُوْنَهُمْ. ثُمَّ الَّذِيْنَ يَلُوْنَهُمْ، قَالَ عِمْرَانُ: فَلَا أَدْرِي: أَذَكَرَ بَعْدَ قَرْنِهِ قَرْنَيْنِ أَوْ ثَلَاثاً. ثُمَّ إِنَّ بَعْدَكُمْ قَوْمًا يَشْهَدُوْنَ وَلَا يُسْتَشْهَدُوْنَ، وَيَخُوْنُوْنَ وَلَا يُؤْتَمَنُوْنَ، وَيَنْذُرُوْنَ وَلَا يَفُوْنَ، وَيَظْهَرُ فِيْهِمُ السِّمَنُ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत इमरान बिन हुसैन رضي الله عنهما रिवायत करते हैं हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः मेरी बेहतरीन उम्मत मेरे ज़माने की है फिर उनके ज़माने के बाद के लोग, फिर उनके ज़माने के बाद के लोग (हज़रत इमरान ﷺ फरमाते हैं कि मुझे याद नहीं कि आप ﷺ ने अपने ज़माने के बाद दो ज़मानो का ज़िक्र फरमाया या तीन ज़मानों का) फिर तुम्हारे बाद ऐसी क़ौम आएगी कि वो गवाही देंगे हालांकि उनसे गवाही तलब नहीं की जाएगी वो ख़यानत करेंगे और उन पर यक़ीन नहीं किया जाएगा, वो नज़रें मानेंगे मगर उनको पूरा नहीं करेंगे और उनमें मोटापा ज़ाहिर होगा।''

٦٩٠ / ٢٨۔ عَنْ عَبْدِ اللهِ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: خَيْرُ أُمَّتِي

.... السنن، كتاب: الأحكام، باب: كراهية الشهادة لمن لم يستشهد، ٢/ ٧٩١، الرقم: ٢٣٦٢، والبيهقى فى السنن الكبرى، كتاب: النذور، باب: الوفاء بالنذر، ١٠/ ٧٤، والبزار فى المسند، ٩/ ١٨، الرقم: ٣٥٢١، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٤/ ٤٢٧، الرقم: ١٩٨٣٥، والطبرانى فى المعجم الكبير، ١٨/ ٢٣٣، الرقم: ٥٨١، والطيالسى فى المسند، ١/ ١١٣، الرقم: ٨٤١، والطحاوى فى شرح معانى الآثار، ٤/ ١٥١، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٤/ ٥، الرقم: ٤٥٤٦۔

الحديث رقم ٢٨: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: الشهادت، باب: لا يشهد على شهادة جور إذا شهد، ٢/ ٩٣٨، الرقم: ٢٥٠٩، وفى كتاب: فضائل الصحابة، باب: فضائل أصحاب النبي ﷺ، ٣/ ١٣٣٥، الرقم: ٣٤٥١، وفى كتاب: الرقاق، باب: ما يحذر من زهرة الدنيا والتنافس فيها، ٥/ ٢٣٦٢، الرقم: ٦٠٦٥، وفى كتاب: الأيمان والنذور، باب:إذا قال أشهد بالله أو شهدت بالله، ٦/ ٢٤٥٢، الرقم: ٢٦٨٢، ومسلم فى الصحيح، كتاب: فضائل الصحابة، باب: فضل الصحابة ثم الذين يلونهم ثم الذين يلونهم، ٤/ ١٩٦٢، الرقم: ٢٥٣٣، وابن أبى شيبة فى المصنف، ٦/ ٤٠٤، الرقم: ٣٢٤٠٠، وأبو يعلى فى المسند، ٩/ ٤٠، الرقم: ٥١٠٣۔

الْقَرْنُ الَّذِيْنَ يَلُوْنِي ثُمَّ الَّذِيْنَ يَلُوْنَهُمْ ثُمَّ الَّذِيْنَ يَلُوْنَهُمْ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद ﷺ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः मेरी उम्मत के बेहतरीन लोग वो हैं जो मेरे क़रीब हैं, फिर वो लोग हैं जो उनके क़रीब हैं, फिर वो लोग हैं जो उनके क़रीब हैं।''

٦٩١ / ٢٩۔ عَنْ عَائِشَةَ رضي الله عنها قَالَتْ: سَأَلَ رَجُلٌ النَّبِيَّ ﷺ: أَيُّ النَّاسِ خَيْرٌ؟ قَالَ الْقَرْنُ الَّذِي أَنَا فِيْهِ ثُمَّ الثَّانِيُّ ثُمَّ الثَّالِثُ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ.

''हज़रत आइशा رضي الله عنها से रिवायत है कि एक शख़्स ने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ से सवाल किया कि (या रसूलल्लाह) कौनसे लोग बेहतर हैं? हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः सबसे बेहतर लोग उस ज़माने के हैं जिस जमाने में, मैं मौजूद हूँ उसके बाद दूसरे ज़माने के लोग, उसके बाद तीसरे ज़माने के लोग।''

٦٩٢ / ٣٠۔ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رضي الله عنهما قَالَ: قَالَ لَنَا رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يَومَ الْحُدَيْبِيَةِ: أَنْتُمْ خَيْرُ أَهْلِ الْأَرْضِ، وَكُنَّا أَلْفاً وَأَرْبَعَ مِائَةٍ، وَلَوْ كُنْتُ أُبْصِرُ الْيَوْمَ لَأَرَيْتُكُمْ مَكَانَ الشَّجَرَةِ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह رضي الله عنهما से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम

الحديث رقم ٢٩: أخرجه مسلم فى الصحيح، كتاب: فضائل الصحابة، باب: فضل الصحابة ثم الذين يلونهم ثم الذين يلونهم، ٤ / ١٩٦٥، الرقم: ٢٥٣٦، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٦/ ١٥٦، الرقم: ٢٥٢٧٢، وابن أبى شيبة فى المصنف، ٦/ ٤٠٤، الرقم: ٣٢٤٠٩، وابن أبى عاصم فى السنة، ٢/ ٦٢٩، الرقم: ١٤٧٥۔

الحديث رقم ٣٠: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: المغازى، باب: غزوة الحديبية، ٤ / ١٥٢٦، الرقم: ٣٩٢٣، ومسلم فى الصحيح ،كتاب: الامارة، باب: استحباب مبايعة الإمام الجيش، عند إرادة القتال، وبيان بيعة الرضوان تحت الشجرة، ٣ / ١٤٨٤،الرقم: ١٨٥٦، والشافعى فى المسند/ ٢١٧، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٣/ ٣٠٨، الرقم: ١٤٣٥٢، وأبوعوانة فى المسند، ٤/ ٣٠١، الرقم: ٦٨١٨، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٥/ ٢٣٥، الرقم: ٩٩٨١، والخراسانى فى كتاب السنن، ٢/ ٣٦٧، الرقم: ٢٨٨٥، وابن أبى شيبة فى المصنف، ٧/ ٣٨٥، الرقم: ٣٦٨٤٩۔

ﷺ ने हुदैबिया के दिन हमें फरमायाः तुम ज़मीन पर बसने वालों में सबसे बेहतर हो और हम चौदह सौ अफ़राद थे और अगर आज मैं देख सकता तो तुम्हें उस दरख़्त की जगह दिखा देता (उस वक़्त हज़रत जाबिर ﷺ नाबीना हो चुके थे)''

٦٩٣ / ٣١۔ عَنْ عَلِيٍّ ﷺ قَالَ: فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ لِأَهْلِ بَدْرٍ: فَلَعَلَّ اللهَ اطَّلَعَ إِلَى أَهْلِ بَدْرٍ فَقَالَ: اعْمَلُوْا مَا شِئْتُمْ فَقَدْ وَجَبَتْ لَكُمُ الْجَنَّةُ، أَوْ فَقَدْ غَفَرْتُ لَكُمْ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अ़ली ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने अस्हाबे बद्र के लिए फरमायाः अल्लाह तआ़ला ने अहले बद्र की तरफ़ तवज्जोह फरमाई और फरमायाः तुम जो अ़मल करना चाहते हो करो, बेशक़ तुम्हारे लिए जन्नत लाज़िम हो गई है या फरमायाः मैंने तुम्हें माफ कर दिया।''

٦٩٤ / ٣٢۔ عَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ ﷺ قَالَ: خَطَبَنَا عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ بِالْجَابِيَةِ فَقَالَ: إِنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَامَ فِيْنَا مِثْلَ مُقَامِي فِيْكُمْ فَقَالَ: احْفَظُوْنِي فِي أَصْحَابِي. ثُمَّ الَّذِيْنَ يَلُوْنَهُمْ ثُمَّ الَّذِيْنَ يَلُوْنَهُمْ.

الحديث رقم ٣١: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: المغازى، باب: فضل مَن شَهِدَ بدراً، ٤ / ١٤٦٣، الرقم: ٣٧٦٢، وفى كتاب: الجهاد، باب: الجلسوس، ٣ / ١٠٩٥، الرقم: ٢٨٤٥، وفى كتاب: المغازى، باب: وَمَا بَعَثَ بِهِ حَاطِبُ بْنُ أَبِي بلتعة إلى أهل مكة يُخْبِرُهُمْ بِغَزْوِ النَّبِيِّ ﷺ، ٤ / ١٥٥٧، الرقم: ٤٠٢٥، ومسلم فى الصحيح، كتاب: فضائل الصحابة، باب: من فضائل أهل بدر ﷺ، وقصة حاطب بن أبي بلتعة ﷺ، ٤ / ١٩٤١، الرقم: ٢٤٩٤، والترمذى فى السنن، كتاب: تفسير القرآن عن رسول الله ﷺ، باب: ومن سورة الممتحنة، ٥ / ٤٠٩، الرقم: ٣٣٠٥، والدارمى فى السنن، ٢ / ٤٠٤، الرقم: ٢٧٦١۔

الحديث رقم ٣٢: أخرجه ابن ماجه فى السنن، كتاب: الأحكام، باب: كراهية الشهادة لمن لم يستشهد، ٢ / ٧٩١، الرقم: ٢٣٦٣، وأحمد بن حنبل فى المسند، ١ / ١٨، الرقم: ١١٤، والحاكم فى المستدرك، ١ / ١٩٨۔ ١٩٩، الرقم: ٣٨٨، ٣٩٠، والطبرانى فى المعجم الأوسط، ٦ / ٣٠٦، الرقم: ٦٤٨٣، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٧ / ٩١، الرقم: ١٣٢٩٩، واللالكائي فى اعتقاد أهل السنة، ١ / ١٠٦، الرقم: ١٥٥، والحسينى فى البيان والتعريف، ٢ / ٢١٩، الرقم: ١٥٤٦۔

رَوَاهُ ابْنُ مَاجه وَأَحْمَدُ وَالْحَاكِمُ.

وفي رواية: عَنِ ابْنِ عُمَرَ رضي الله عنهما: فَقَالَ: اسْتَوْصَوْا بِأَصْحَابِي خَيْرًا.

''हज़रत जाबिर बिन समुरह ﷺ से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि हज़रत उमर ﷺ ने जाबिया के मक़ाम पर हमें ख़ुत्बा दिया, फिर फरमायाः हमारे दरमियान हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ यूं क़ियाम फरमाते थे जैसे मैं तुम्हारे दरमियान खड़ा हूँ और आप ﷺ ने फरमायाः मेरे सहाबा के बारे में मेरी हिफ़ाजत करो (यानी उनकी इज़्ज़तो एहतराम करो।) (और उन लोगों की इज़्ज़तो एहतराम करो) जो इनके बाद आने वाले हैं। फिर (उन लोगों की) जो इनके बाद आने वाले हैं।

और हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर رضی اللہ عنہما से मरवी एक रिवायत में फरमायाः मेरे सहाबा से अच्छा सुलूक करना।''

٦٩٥ / ٣٣۔ عَنْ جَابِرٍ ﷺ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: لَا تَمُسُّ النَّارُ مُسْلِمًا رَانِي أَوْ رَآى مَنْ رَآنِي. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالطَّبَرَانِيُّ.

وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ.

''हज़रत जाबिर ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः उस मुसलमान को जहन्नम की आग हरगिज़ नहीं छूएगी जिसने मुझे देखा या मुझे देखने वाले (यानी मेरे सहाबी) को देखा।''

٦٩٦ / ٣٤۔ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ:

الحديث رقم ٣٣: أخرجه الترمذى فى السنن، كتاب: المناقب عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء فى فضل من رأى النبى ﷺ وصحبه، ٥/٦٩٤، الرقم: ٣٨٥٨، والطبرانى فى المعجم الكبير، ١٧/٣٥٧، الرقم: ٩٨٣، وفى المعجم الأوسط، ١/٣٠٨، الرقم: ١٠٣٦، وابن أبى عاصم فى السنة، ٢/٦٣٠، الرقم: ١٤٨٤، والديلمى فى مسند الفردوس، ٥/١١٦، الرقم: ٧٦٥٩، والهيثمى فى المجمع الزوائد، ١٠/٢١۔

الحديث رقم ٣٤: أخرجه الترمذى فى السنن، كتاب: المناقب عن رسول الله ﷺ، باب: فى مناقب أبى بكر وعمر رضى الله عنهما كليهما، ٥/٦١٦، الرقم: ٣٦٨٠، والحاكم ـــــ

مَا مِنْ نَبِيٍّ إِلَّا لَهُ وَزِيْرَانِ مِنْ أَهْلِ السَّمَاءِ وَ وَزِيْرَانِ مِنْ أَهْلِ الْأَرْضِ، فَأَمَّا وَزِيْرَايَ مِنْ أَهْلِ السَّمَاءِ فَجِبْرِيْلُ وَمِيكَائِيْلُ، وَأَمَّا وَزِيْرَايَ مِنْ أَهْلِ الْأَرْضِ فَأَبُوبَكْرٍ وَعُمَرُ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ. وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ. وَقَالَ الْحَاكِمُ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحُ الإِسْنَادِ.

''हज़रते अबू सईद ख़ुदरी ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः हर नबी के लिए दो वज़ीर आसमान वालों में से और दो वज़ीर ज़मीन वालों में से होते हैं तो आसमान वालों में से मेरे दो वज़ीर जिब्राईल और मीकाईल عليهما السلام हैं और ज़मीन वालों मे से मेरे दो वज़ीर अबू बकर और उमर رضی اللّٰہ عنہما हैं।''

٦٩٧ / ٣٥. عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ حَنْطَبٍ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ رَآى أَبَابَكْرٍ وَ عُمَرَ فَقَالَ: هَذَانِ السَّمْعُ وَالْبَصَرُ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन हन्तब ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने हज़रत अबू बकर और हज़रत उमर رضی اللّٰہ عنہما को देखा तो फरमायाः यह दोनों (मेरे लिए) कान और आँख की हैसियत रखते हैं।''

٦٩٨ / ٣٦. عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ ﷺ قَالَ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ صَعِدَ أُحُدًا، وَأَبُوْبَكْرٍ وَعُمَرُ وَعُثْمَانُ، فَرَجَفَ بِهِمْ، فَقَالَ: اثْبُتْ أُحُدُ! فَإِنَّمَا عَلَيْكَ

.... فى المستدرك، ٢ / ٢٩٠، الرقم: ٣٠٤٧، وابن الجعد فى المسند، ١ / ٢٩٨، الرقم: ٢٠٢٦، والديلمى فى مسند الفردوس، ٤ / ٣٨٢، الرقم: ٧١١١، والمباركفورى فى تحفة الأحوذى، ١٠ / ١١٤.

الحديث رقم ٣٥: أخرجه الترمذى فى السنن، كتاب: المناقب عن رسول الله ﷺ، باب: فى مناقب أبى بكر وعمر رضى الله عنهما كليهما، ٥ / ٦١٣، الرقم: ٣٦٧١.

الحديث رقم ٣٦: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: فضائل الصحابة، باب: قول النبى ﷺ: لو كنت متخذا خليلا، ٣ / ١٣٤٤، الرقم:٣٤٧٢، وفى باب: مناقب عثمان بن عفان أبي عمرو القرشى ﷺ، ٣ / ١٣٤٤، الرقم: ٣٤٩٦، وفى مناقب عمر بن الخطاب أبي حفص القرشى العدوى ﷺ، ٣ / ١٣٤٦، الرقم: ٣٤٨٣،—

نَبِيٌّ وَصِدِّيْقٌ، وَشَهِيْدَانِ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ وَالتِّرْمِذِيُّ وَأَبُوْ دَاوُدَ.

''हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ से रिवायत है हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ उहद पहाड़ पर तशरीफ़ ले गए और आप ﷺ के हमराह हज़रत अबू बकर, हज़रत उमर और हज़रत उस्मान ﷺ भी थे अचानक पहाड़ उनके (आने की ख़ुशी के) बाइस (जोशे मुसर्रत से) झूमने लगा तो आप ﷺ ने फरमायाः ऐ उहद! ठहर जा, तुझ पर एक नबी, एक सिद्दीक़ और दो शहीद हैं।''

٦٩٩ / ٣٧. عَنْ أَنَسٍ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لِأَبِي بَكْرٍ وَعُمَرَ رضي الله عنهما: هَذَانِ سَيِّدَا كُهُوْلِ أَهْلِ الْجَنَّةِ مِنَ الْأَوَّلِيْنَ وَالْآخِرِيْنَ إِلَّا النَّبِيِّيْنَ وَالْمُرْسَلِيْنَ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَحَسَّنَهُ وَأَحْمَدُ وَابْنُ حِبَّانَ.

''हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने हज़रत अबू बकर ﷺ और हज़रत उमर ﷺ के बारे में फरमाया यह दोनों अम्बिया व मुर्सलीन عليهم السلام के अलावा अव्वलीन व आख़िरीन में से तमाम उम्र रसीदा जन्नतियों के सरदार हैं।''

.... والترمذي في السنن، كتاب: المناقب عن رسول الله ﷺ، باب: في مناقب عثمان بن عفان ﷺ، ٥ / ٦٢٤، الرقم: ٣٦٩٧، وأبو داود في السنن، كتاب: السنة، باب: في الخلفاء، ٤ / ٢١٢، الرقم: ٤٦٥١، والنسائي في السنن الكبرى، ٥ / ٤٣، الرقم: ٨١٣٥، وأحمد بن حنبل في المسند، ٣ / ١١٢، الرقم: ١٢١٢٧، ٢٢٨٦٢، والطبراني في المعجم الأوسط، ٦ / ٣٣٨، الرقم: ٦٥٦٦، وابن حبان في الصحيح، ١٤ / ٤١٥، الرقم: ٦٤٩٢، وأبو يعلى في المسند، ٥ / ٢٨٩، الرقم: ٢٩١٠.

الحديث رقم ٣٧: أخرجه الترمذي في السنن، كتاب: المناقب عن رسول الله ﷺ، باب: في مناقب أبي بكر وعمر رضي الله عنهما كليهما، ٥ / ٦١٠، الرقم: ٣٦٦٤-٣٦٦٥، وابن ماجه في السنن، المقدمة، باب: في فضائل أصحاب رسول الله ﷺ، ١ / ٣٦، الرقم: ٩٥-١٠٠، وأحمد بن حنبل في المسند، ١ / ٨٠، الرقم: ٦٠٢، وابن حبان في الصحيح، ١٥ / ٣٣٠، الرقم: ٦٩٠٤، والبزار في المسند، ٢ / ١٣٢، الرقم: ٤٩٠، وأبو يعلى في المسند، ١ / ٤٠٥، الرقم: ٥٣٣، وابن أبي عاصم في السنة، ٢ / ٦١٧، الرقم: ١٤١٩، والطبراني في المعجم الأوسط، ٢ / ٩١، الرقم: ١٣٤٨، ٧ / ٦٨، الرقم: ٦٨٧٣، وفي المعجم الصغير، ٢ / ١٧٣، الرقم: ٩٧٦.

٧٠٠/ ٣٨۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ كَانَ عَلَى حِرَاءٍ هُوَ وَأَبُوْبَكْرٍ وَعُمَرُ وَعُثْمَانُ وَعَلِيٌّ وَطَلْحَةُ وَالزُّبَيْرُ فَتَحَرَّكَتِ الصَّخْرَةُ. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: اهْدَأْ، فَمَا عَلَيْكَ إِلَّا نَبِيٌّ أَوْ صِدِّيْقٌ أَوْ شَهِيْدٌ.

رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَالتِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ وَأَحْمَدُ.

وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ हिरा पहाड़ पर तशरीफ़ फरमा थे और आप ﷺ के साथ हज़रत अबू बकर, हज़रत उमर, हज़रत उस्मान, हज़रत अली, हज़रत तलहा और हज़रत ज़ुबैर ﷺ थे इतने में पहाड़ ने हरकत की, तो आप ﷺ ने फरमायाः ठहर जा क्योंकि तेरे ऊपर नबी, सिद्दीक़ और शहीद के सिवा कोई नहीं है।''

٧٠١/ ٣٩۔ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُوْدٍ ﷺ قَالَ: إِنَّ اللهَ نَظَرَ فِي قُلُوْبِ الْعِبَادِ، فَوَجَدَ قَلْبَ مُحَمَّدٍ ﷺ، خَيْرَ قُلُوْبِ الْعِبَادِ، فَاصْطَفَاهُ لِنَفْسِهِ، فَابْتَعَثَهُ اللهُ بِرِسَالَتِهِ، ثُمَّ نَظَرَ فِي قُلُوْبِ الْعِبَادِ بَعْدَ قَلْبِ مُحَمَّدٍ، فَوَجَدَ قُلُوْبَ أَصْحَابِهِ خَيْرَ قُلُوْبِ الْعِبَادِ، فَجَعَلَهُمْ وُزَرَاءَ نَبِيِّهِ، يُقَاتِلُوْنَ عَلَى دِيْنِهِ (وَفِي رِوَايَةٍ: فَجَعَلَهُمْ أَنْصَارَ دِيْنِهِ) فَمَا رَأَى الْمُسْلِمُوْنَ حَسَنًا،

الحديث رقم ٣٨: أخرجه مسلم في الصحيح، كتاب: فضائل الصحابة، باب: من فضائل طلحة والزبير ﷺ، ٤/ ١٨٨٠، الرقم: ٢٤١٧، والترمذى في السنن، كتاب: المناقب عن رسول الله ﷺ، باب: فى مناقب عثمان بن عفان ﷺ، ٥/ ٦٢٤، الرقم: ٣٦٩٦، والنسائى في السنن الكبرى، ٥/ ٥٩، الرقم: ٨٢٠٧، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٢/ ٤١٩، الرقم: ٩٤٢٠، وابن حبان في الصحيح، ١٥/ ٤٤١، الرقم: ٦٩٨٣، وابن أبى عاصم فى السنة، ٢/ ٦٢١، الرقم: ١٤٤١۔

الحديث رقم ٣٩: أخرجه أحمد بن حنبل فى المسند، ١/ ٣٧٩، الرقم: ٣٦٠٠، والبزار فى المسند، ٥/ ٢١٢، الرقم: ١٨١٦، ١٧٠٢، والطبرانى فى المعجم الأوسط، ٤/ ٥٨، الرقم: ٣٦٠٢، وفى المعجم الكبير، ٩/ ١١٢، ١١٥، الرقم: ٨٥٨٢، ٨٥٩٣، والبيهقى فى الاعتقاد، ١/ ٣٢٢، والهيثمى فى مجمع الزوائد، ١/ ١٧٧، ٨/ ٢١٢۔

فَهُوَ عِنْدَ اللهِ حَسَنٌ، وَمَا رَأَوْا سَيِّئًا، فَهُوَ عِنْدَ اللهِ سَيِّءٌ.

رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالْبَزَّارُ وَالطَّبَرَانِيُّ. وَقَالَ الْهَيْثَمِيُّ: وَرِجَالُهُ مُوَثَّقُوْنَ.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद ﷺ से मरवी है कि उन्होंने फरमायाः अल्लाह तआला ने तमाम बन्दो के दिलों की तरफ़ नज़र की तो क़ल्बे (दिल) मुहम्मद ﷺ तमाम लोगों के दिलों से बेहतर क़ल्ब (दिल) पाया तो उसे अपने लिए चुन लिया (और ख़ास कर लिया) और उन्हें अपनी रिसालत के साथ मबऊस फरमाया। फिर हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के दिल को (सिर्फ अपने लिए) मुन्तख़ब करने के बाद दुबारा क़ुलूबे इन्सानी (इंसानों के दिल) को देखा तो आप ﷺ के सहाबा किराम के दिलों को सब बंदो के दिलों से बेहतर पाया। उन्हें अपने नबी–ए–मुकर्रम ﷺ का वज़ीर बना दिया। वो उनके दीन के लिए जिहाद करते हैं (और एक रिवायत में है कि उन्हें आप ﷺ के दीन का मददगार बना दिया) पस जिस चीज़ को मुसलमान अच्छा जाने तो वो अल्लाह तआला के नज़दीक (भी) अच्छी और जिसे बुरा समझे वो अल्लाह तआला के नज़दीक बुरी है।''

٧٠٢ / ٤٠۔ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رضي الله عنهما قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَهْمَا أُوْتِيْتُمْ مِنْ كِتَابِ اللهِ فَالْعَمَلُ بِهِ لَا عُذْرَ لِأَحَدٍ فِي تَرْكِهِ فَإِن لَمْ يَكُنْ فِي كِتَابِ اللهِ فَسُنَّةٌ مِنِّي مَاضِيَةً فَإِنْ لَمْ يَكُنْ سُنَّتِي فَمَا قَالَ أَصْحَابِي إِنَّ أَصْحَابِي بِمَنْزِلَةِ النُّجُوْمِ فِي السَّمَاءِ فَأَيُّمَا أَخَذْتُمْ بِهِ اهْتَدَيْتُمْ وَاخْتِلَافُ

الحديث رقم ٤٠: أخرجه البيهقى فى المدخل إلى السنن الكبرى، ١/ ١٦٢، الرقم: ١٥٢، وعبد بن حميد نحوه فى المسند، ١/ ٢٥٠، الرقم: ٧٨٣، والقضاعى فى مسند الشهاب، باب: مثل أصحابى مثل النجوم، ٢/ ٢٧٥، الرقم: ١٣٤٦، والديلمى فى مسند الفردوس، ٤/ ١٦٠، الرقم: ٦٤٩٧، والذهبى فى ميزان الاعتدال، ٢/ ١٤٢: ٨/ ٧٣، وفى لسان الميزان، ٢/ ١١٨، ١٣٧، الرقم: ٥٩٤، والخطيب البغدادى فى الكفاية فى علم الرواية، ١/ ٤٨، والسيوطى فى مفتاح الجنة، ١/ ٤٥، وابن كثير فى تحفة الطالب، ١/ ٤٥١، الرقم: ٣٤١، وابن الملقن فى خلاصة البدر المنير، ٢/ ٤٣١، الرقم: ٢٨٦٨ والزرقانى فى شرحه، ٢/ ٣٠٢، وابن عبد البر فى التمهيد، ٤/ ٢٦٣، والعسقلانى فى فتح البارى، ٤/ ٥٧، وابن قدامة فى المغنى، ٣/ ٢١٠٩، وآمدى فى الإحكام، ١/ ٢٩٠، وابن حزم فى الإحكام، ٥/ ٦١۔

أَصْحَابِي لَكُمْ رَحْمَةٌ. رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ وَابْنُ حُمَيْدٍ وَالْقُضَاعِيُّ.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رضی اللہ عنہما से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जब भी तुम्हें किताबुल्लाह का हुक्म दिया जाए तो उस पर अ़मल लाज़िम है। उस पर अ़मल न करने पर किसी का उज़्र क़ाबिले कुबूल नहीं। अगर वो (मस्अला) किताबुल्लाह में न हो तो मेरी सुन्नत में उसे तलाश करो जो तुम में मौजूद हो और अगर मेरी सुन्नत से भी न हो तो (उस मस्अले का हल) मेरे सहाबा के अक़्वाल के मुताबिक़ (तलाश) करो। आप ﷺ ने फरमायाः मेरे सहाबा की मिसाल यूं है जैसे आसमान पर सितारे (जो कि यकसां रोशनी देते हैं) उनमें से जिसका दामन पकड़ लोगे हिदायत पा जाओगे और मेरे सहाबा का इख़्तिलाफ़ (भी) तुम्हारे लिए रहमत है।''

٧٠٣ / ٤١ ـ عَنْ نُسَيْرِ بْنِ ذُعْلُوْقٍ ﷺ قَالَ: كَانَ ابْنُ عُمَرَ رضي الله عنهما يَقُوْلُ: لَا تَسُبُّوا أَصْحَابَ مُحَمَّدٍ ﷺ فَلَمُقَامُ أَحَدِهِمْ سَاعَةً، خَيْرٌ مِنْ عَمَلِ أَحَدِكُمْ عُمُرَهُ. رَوَاهُ ابْنُ مَاجَه وَابْنُ أَبِي شَيْبَةَ.

''हज़रत नुसैर बिन जु'लूक ﷺ रिवायत करते हैं कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर رضي الله عنهما फरमाया करते थे कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के सहाबा किराम को बुरा मत कहो क्योंकि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की सोहबत में गुज़रा हुआ उनका एक लम्हा तुम्हारे जिंदगी भर के आ'माल से बेहतर है।''

٧٠٤ / ٤٢ ـ عَنِ الْعِرْبَاضِ بْنِ سَارِيَةَ ﷺ قَالَ: وَعَظَنَا رَسُوْلُ اللهِ ﷺ

الحديث رقم ٤١: أخرجه ابن ماجه فى السنن، المقدمة، باب: فضل أهل بدر، ١ / ٥٧، الرقم: ١٦٢، وابن أبي شيبة فى المصنف، ٦ / ٤٠٥، الرقم: ٣٢٤١٥، وابن أبى عاصم فى كتاب السنة، ٢ / ٤٨٤، الرقم: ١٠٠٦.

الحديث رقم ٤٢: أخرجه الترمذى فى السنن، كتاب: العلم عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء فى الأخذ بالسنة واجتناب البدع، ٥ / ٤٤، الرقم: ٢٦٧٦، وأبو داود فى السنن، كتاب: السنة، باب: فى لزوم السنة ٤ / ٢٠٠، الرقم: ٤٦٠٧، وابن ماجه فى السنن، المقدمة، باب: اتباع سنة الخلفاء الراشدين المهديين، ١ / ١٥، الرقم: ٤٢، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٤ / ١٢٦، وابن حبان فى الصحيح، ١ / ١٧٨، الرقم: ٥، والحاكم فى المستدرك، ١ / ١٧٤، الرقم: ٣٢٩، وقال: هذا حديث صحيح ليس له علة، والطبرانى فى المعجم الكبير، ١٨ / ٢٤٦، الرقم: ٦١٨.

يَوْمًا بَعْدَ صَلَاةِ الْغَدَاةِ مَوْعِظَةً بَلِيْغَةً ذَرَفَتْ مِنْهَا الْعُيُوْنُ وَ وَجِلَتْ مِنْهَا الْقُلُوْبُ، فَقَالَ رَجُلٌ: إِنَّ هَذِهِ مَوْعِظَةُ مُوَدِّعٍ فَمَاذَا تَعْهَدُ إِلَيْنَا يَارَسُوْلَ اللهِ؟ قَالَ: أُوْصِيْكُمْ بِتَقْوَى اللهِ وَالسَّمْعِ وَالطَّاعَةِ وَإِنْ عَبْدٌ حَبَشِيٌّ، فَإِنَّهُ مَنْ يَعِشْ مِنْكُمْ يَرَى اخْتِلَافًا كَثِيْرًا، وَإِيَّاكُمْ وَمُحْدَثَاتِ الْأُمُوْرِ، فَإِنَّهَا ضَلَالَةٌ، فَمَنْ أَدْرَكَ ذَلِكَ مِنْكُمْ، فَعَلَيْهِ بِسُنَّتِي وَسُنَّةِ الْخُلَفَاءِ الرَّاشِدِيْنَ الْمَهْدِيِّيْنَ، عَضُّوْا عَلَيْهَا بِالنَّوَاجِذِ.

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُوْ دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَه وَأَحْمَدُ.

وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत इरबाज़ बिन सारिया ﷺ से रिवायत है कि एक दिन हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फ़ज्र की नमाज़ के बाद हमें निहायत फ़सीह व बलीग़ वाज़ फरमायाः जिससे आँखो में आँसू जारी हो गए और दिल (खशिय्यते इलाही से) काँपने लगे। एक शख़्स ने कहा यह तो अलविदा कहने वाले शख़्स के वाज़ जैसा (ख़िताब) है। या रसूलल्लाह! आप हमें क्या वसीयत फरमाते है? आप ﷺ ने फरमायाः मैं तुम्हें परहेज़गारी और सुनने और मानने की वसीयत करता हूँ, चाहे तुम्हारा हाकिम हबशी गुलाम ही क्यों न हो। इसलिए कि तुम में से जो ज़िंदा रहेगा वो बहुत से इख़्तिलाफ़ देखेगा ख़बरदार (शरीअत के खिलाफ़) बातों से बचना क्योंकि यह गुमराही का रास्ता है। लिहाज़ा तुम में से जो शख़्स ये जमाना पाए उसे चाहिए कि मेरी और मेरे हिदायत याफ़्ता ख़ुलफा की सुन्नत इख़्तियार करे, तुम लोग उसे (सुन्नत को) दाँतो से मज़बूती से पकड़ लेना।''

٧٠٥ / ٤٣۔ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رضي الله عنهما أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: إِنَّ اللهَ

الحديث رقم ٤٣: أخرجه الترمذی السنن، كتاب: المناقب عن رسول الله ﷺ، باب: فی مناقب عمر بن الخطاب ﷺ، ٥/ ٦١٧، الرقم: ٣٦٨٢، وأبو داود فی السنن، كتاب: الخراج والإمارة والفيء، باب: فی تدوين العطاء، ٣/ ١٣٨، الرقم: ٢٩٦١، ٢٩٦٢، وابن ماجه فی السنن، المقدمة، باب: فی فضائل أصحاب رسول الله ﷺ، ١/ ٤٠، الرقم: ١٠٨، وأحمد بن حنبل فی المسند، ٢/ ٥٣، الرقم: ٥١٤٥، وابن حبان فی الصحيح، ١٥/ ٣١٢، الرقم: ٦٨٨٩، والحاكم فی المستدرك، ٣/ ٩٣، الرقم: ٤٥٠١، والبيهقی فی السنن الكبری، ٦/ ٢٩٥، الرقم: ١٢٥٠٣۔

جَعَلَ الْحَقَّ (وفي رواية: وَضَعَ الْحَقَّ) عَلَى لِسَانِ عُمَرَ وَقَلْبِهِ. وَقَالَ ابْنُ عُمَرَ رضي الله عنهما: مَا نَزَلَ بِالنَّاسِ أَمْرٌ قَطُّ فَقَالُوْا فِيْهِ وَقَالَ فِيْهِ عُمَرُ أَوْ قَالَ ابْنُ الْخَطَّابِ فِيْهِ، (شَکَّ خَارِجَةٌ) إِلَّا نَزَلَ فِيْهِ الْقُرْآنُ عَلَى نَحْوِ مَا قَالَ عُمَرُ. رَوَاهُ التِّرمِذِيُّ وَأَبُوْ دَاوُدَ وَابْنُ مَاجه وَأَحْمَدُ.

وَقَالَ أَبُوْ عِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ. وَقَالَ الْحَاكِمُ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर رضی اللہ عنہما से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया: अल्लाह तआला ने हक़ को उमर की ज़बान और दिल पर जारी कर दिया है। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर رضی اللہ عنہما फरमाते हैं: जब कभी लोगों को कोई मस्अला दरपेश हुआ और लोगों ने उसमें बात की और हज़रत उमर ﷺ ने भी उस मस्अले पर कुछ कहा तो क़ुरआने हकीम हज़रत उमर फ़ारूक़ ﷺ के क़ौल के मुवाफ़िक़ नाज़िल हुआ।''

فَصْلٌ فِي مَنَاقِبِ الإِمَامِ الْمَهْدِيِّ الْمُنْتَظِرِ عليه السلام

《मनाक़िबे इमाम महदी मुन्तज़िर عليه السلام का बयान》

٧٠٦ / ٤٤۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضي الله عنه قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صلى الله عليه وآله وسلم: كَيْفَ أَنْتُمْ إِذَا نَزَلَ ابْنُ مَرْيَمَ فِيْكُمْ وَ إِمَامُكُمْ مِنْكُمْ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अबू हुरैरा رضي الله عنه से रिवायत है कि हुज़ूर नबी-ए-अकरम صلى الله عليه وآله وسلم ने फरमायाः तुम लोगों का उस वक़्त (ख़ुशी से) क्या हाल होगा जब तुम में ईसा इब्ने मरियम عليه السلام (फ़िर आसमान से) उतरेंगे और तुम्हारा इमाम तुम्हीं में से होगा।''

٧٠٧ / ٤٥۔ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ الْأَنْصَارِيِّ رضي الله عنهما قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ صلى الله عليه وآله وسلم يَقُوْلُ: لَا تَزَالُ طَائِفَةٌ مِنْ أُمَّتِي يُقَاتِلُوْنَ عَلَى الْحَقِّ ظَاهِرِيْنَ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ، قَالَ: فَيَنْزِلُ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ عليهما السلام فَيَقُوْلُ أَمِيْرُهُمْ: تَعَالَ صَلِّ لَنَا. فَيَقُوْلُ: لَا، إِنَّ بَعْضَكُمْ عَلَى بَعْضٍ أُمَرَاءُ تَكْرِمَةَ اللهِ هَذِهِ الْأُمَّةَ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَأَحْمَدُ وَابْنُ حِبَّانَ.

الحديث رقم ٤٤: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: الأنبياء، باب: نُزُول عيسى بن مريم عليهما السلام، ٣ / ١٢٧٢،الرقم:٣٢٦٥، ومسلم فى الصحيح، كتاب: الإيمان، باب: نزول عيسى بن مريم حاكما بشريعة نبيّنا محمد صلى الله عليه وآله وسلم، ١ / ١٣٦، الرقم: ١٥٥، وابن حبان فى الصحيح، ١٥ / ٢١٣، الرقم: ٦٨٠٢، والعسقلانى فى فتح البارى، ٦ / ٤٩٣۔

الحديث رقم ٤٥: أخرجه مسلم فى الصحيح، كتاب: الإيمان، باب: نزول عيسى بن مريم حاكماً بشريعة نبينا محمد صلى الله عليه وآله وسلم، ١ / ١٣٧، الرقم: ١٥٦، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٣ / ٣٤٥، الرقم: ١٤٧٦٢۔ ١٥١٦٧، وابن حبان فى الصحيح، ١٥ / ٢٣١، الرقم:٦٨١٩، وابن الجارود فى المنتقى، ١ / ٢٥٧، الرقم: ١٠٣١، وأبو عوانة فى المسند، ١ / ٩٩، الرقم:٣١٧، وابن منده فى الإيمان،١ / ٥١٧، الرقم: ٥١٨، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٩ / ١٨٠۔

''हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अन्सारी رضي الله عنهما रिवायत करते हैं कि मैंने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ से सुनाः मेरी उम्मत में से एक जमाअ़त क़ियामे हक़ (हक़ क़ायम करने) के लिए कामयाब जंग क़यामत तक करती रहेगी। हज़रत जाबिर ﷛ फरमाते है कि इन मुबारक कलिमात के बाद आप ﷺ ने फरमायाः आख़िर में हज़रत ईसा इब्ने मरयम عليه السلام आसमान से उतरेंगे तो मुसलमानों का अमीर उनसे अ़र्ज़ करेगाः तशरीफ़ लाएं, हमें नमाज़ पढ़ाएं उसके जवाब में हज़रत ईसा عليه السلام फरमाएंगेः (इस वक़्त) मैं इमामत नहीं कराऊँगा तुम एक दूसरे पर अमीर हो (यानी हज़रत ईसा عليه السلام उस वक़्त इमामत से इन्कार फरमा देंगे) उस फ़ज़ीलत व बुज़ुर्गी की बिना पर जो अल्लाह तआ़ला ने इस उम्मत को अ़ता की है।''

٧٠٨ / ٤٦۔ عَنْ عَبْدِ اللهِ ﷛ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: يَلِي رَجُلٌ مِنْ أَهْلِ بَيْتِي يُوَاطِئُ اسْمُهُ إِسْمِي قَالَ عَاصِمٌ وَحَدَّثَنَا أَبُوْ صَالِحٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷛ قَالَ: لَوْ لَمْ يَبْقَ مِنَ الدُّنْيَا إِلَّا يَوْمٌ لَطَوَّلَ اللهُ ذَلِكَ الْيَوْمَ حَتَّى يَلِيَ.

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُوْ دَاوُدَ وَأَحْمَدُ.

وَقَالَ أَبُوْ عِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद ﷛ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः मेरे अहले बैत से एक शख़्स ख़लीफ़ा होगा, जिसका नाम मेरे नाम के मुवाफ़िक़ होगा। हज़रत अबू हुरैरा ﷛ से मरवी एक रिवायत में है कि अगर दुनिया का एक ही दिन बाक़ी रह जाए तो अल्लाह तआ़ला उसी एक दिन को इतना दराज़ (लम्बा) फरमा देगा कि वो शख़्स (यानी मेहदी عليه السلام) ख़लीफ़ा हो जाए।''

٧٠٩ / ٤٧۔ عَنْ عَبْدِ اللهِ ﷛ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَا تَذْهَبُ

الحديث رقم ٤٦: أخرجه الترمذى فى السنن، كتاب: الفتن عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء في المهدي، ٤/٥٠٥، الرقم: ٢٢٣١، وأبو داود فى السنن، كتاب: المهدى، ٤/٢٣٦، الرقم:٤٢٨٢، وأحمد بن حنبل فى المسند، ١/٣٧٦، الرقم: ٣٥٧١، والطبرانى فى المعجم الكبير، ١٠/١٣٣، الرقم: ١٠٢١٥، والمقري فى السنن الواردة فى الفتن، ٥/١٠٤٠، الرقم: ٥٦٢، والهيثمى فى موارد الظمآن، ١/٤٦٤، الرقم: ١٨٧٧۔

الحديث رقم ٤٧: أخرجه الترمذى فى السنن، كتاب: الفتن عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء في المهدي، ٤/٥٠٥، الرقم:٢٢٣٠، وأبو داود فى السنن، كتاب: ←

الدُّنْيَا حَتَّى يَمْلِکَ الْعَرَبَ رَجُلٌ مِنْ أَهْلِ بَيْتِي يُوَاطِئُ اسْمُهُ إِسْمِي.

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُوْ دَاوُدَ وَأَحْمَدُ.

وَقَالَ أَبُوْ عِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः दुनिया उस वक़्त तक ख़त्म न होगी, जब तक कि मेरे अहले बैत में से एक शख़्स अ़रब का बादशाह न हो जाए, जिसका नाम मेरे नाम के मुताबिक (यानी मुहम्मद) होगा।''

٧١٠ / ٤٨۔ عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: الْمَهْدِيُّ مِنِّي، أَجْلَى الْجَبْهَةِ، أَقْنَى الْأَنْفِ يَمْلَأُ الْأَرْضَ قِسْطًا وَعَدْلًا كَمَا مُلِئَتْ ظُلْمًا وَجَوْرًا، وَيَمْلِکُ سَبْعَ سِنِيْنَ. رَوَاهُ أَبُوْ دَاوُدَ وَالْحَاكِمُ.

''हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः मेहदी मुझसे (यानी मेरी नसल से) होंगे। उनका चेहरा ख़ूब नूरानी, चमकदार और नाज़ुक नाक बुलंद होगी। ज़मीन को अदलो इन्साफ़ से भर देंगे। जिस तरह पहले वो ज़ुल्म और ज़ोर से भरी होगी (मतलब यह है कि इमामे मेहदी की खिलाफ़त से पहले दुनिया में ज़ुल्म व ज़्यादती की हुक्मरानी होगी और अ़द्लो इन्साफ़ का नामो निशान तक न होगा) और वो सात साल तक बादशाहत (ख़िलाफ़त) करेंगे।''

٧١١ / ٤٩۔ عَنْ عَلِيٍّ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: الْمَهْدِيُّ مِنَّا

.... المهدي، ٤ / ١٠٦، الرقم: ٤٢٨٢، وأحمد بن حنبل في المسند، ١ / ٤٤٨، الرقم: ٤٢٧٩، والحاكم في المستدرك، ٤ / ٤٨٨، الرقم: ٨٣٦٤، والبزار في المسند، ٥ / ٢٠٤، الرقم: ١٨٠٤، والطبراني في المعجم الكبير، ١٠ / ٤٣٥، الرقم: ١٠٢٢٣، والشاشي في المسند، ٢ / ١١٠، الرقم: ٢٣٥۔

الحديث رقم ٤٨: أخرجه أبوداود في السنن، كتاب: المهدي، ٤ / ١٠٧، الرقم: ٤٢٨، والحاكم في المستدرك، ٤ / ٥١٢، الرقم: ٨٤٣٨، والطبراني المعجم الأوسط، ٩ / ١٧٦، الرقم: ٩٤٦٠۔

الحديث رقم ٤٩: أخرجه ابن ماجه في السنن، كتاب: الفتن، باب: خروج المهدي، ٢ / ١٣٦٧، الرقم: ٤٠٨٥، وأحمد بن حنبل في المسند، ١ / ٨٤، الرقم: ٦٤٥، ←

أَهْلَ الْبَيْتِ يُصْلِحُهُ اللهُ تَعَالَى فِي لَيْلَةٍ. رَوَاهُ ابْنُ مَاجَه وَأَحْمَدُ وَأَبُوْ يَعْلَى.

''हज़रत अ़ली ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः (इमाम) मेहदी मेरे अहले बैत से होंगे, अल्लाह तआ़ला उन्हें एक रात में मुत्तक़ी और परहेज़गार बना देगा (यानी अपनी तौफ़ीक़ व हिदायत से एक ही रात में विलायत के उस बुलंद मक़ाम पर पहुँचा देगा जो उनके लिए मतलूब होगा)।''

٧١٢ / ٥٠. عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ رضي الله عنها قَالَتْ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: الْمَهْدِيُّ مِنْ عِتْرَتِي مِنْ وَلَدِ فَاطِمَةَ. رَوَاهُ أَبُوْ دَاوُدَ.

''उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा رضي الله عنها फरमाती हैं कि मैंने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ को फरमाते हुए सुनाः मेहदी मेरी नसल और फ़ातिमा رضي الله عنها की औलाद में से होगा।''

٧١٣ / ٥١. عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ قَالَ: قَالَ عَلِيٌّ ﷺ: وَنَظَرَ إِلَى ابْنِهِ الْحَسَنِ فَقَالَ: إِنَّ ابْنِي هَذَا سَيِّدٌ كَمَا سَمَّاهُ النَّبِيُّ ﷺ، وَسَيَخْرُجُ مِنْ صُلْبِهِ رَجُلٌ يُسَمَّى بِإِسْمِ نَبِيِّكُمْ ﷺ يُشْبِهُهُ فِي الْخُلُقِ وَلَا يُشْبِهُهُ فِي الْخَلْقِ ثُمَّ ذَكَرَ قِصَّةَ يَمْلَأُ الْأَرْضَ عَدْلًا. رَوَاهُ أَبُوْ دَاوُدَ.

''हज़रत अबू इस्हाक़ रिवायत करते हैं कि हज़रत अ़ली ﷺ ने अपने बेटे इमामे हसन عليه السلام को देख कर फरमायाः बेशक़ मेरा यह बेटा सरदार होगा जैसा कि रसूलुल्लाह ﷺ ने उसका नाम रखा है और अ़नक़रीब इसकी नसल से एक ऐसा शख़्स पैदा होगा उसका नाम तुम्हारे नबी ﷺ के नाम पर होगा। वो अख़्लाक़ में तुम्हारे नबी ﷺ से मुशाबहत रखता होगा और

.... وأبو يعلى فى المسند، ١/٣٥٩، الرقم: ٤٦٥، وابن أبى شيبة فى المصنف، ٧/٥١٣، الرقم: ٣٧٦٤٤.

الحديث رقم ٥٠: أخرجه أبوداود فى السنن، كتاب: المهدى، ٤/١٠٧، الرقم: ٤٢٨٤، والمقري فى السنن الواردة فى الفتن، ٥/١٠٥٧، الرقم: ٥٧٥، والعظيم آبادى فى عون المعبود، ١١/٢٥١، والمناوى فى فيض القدير، ٦/٢٧٧.

الحديث رقم ٥١: أخرجه أبو داود فى السنن، كتاب: المهدى، ٤/١٠٨، الرقم: ٤٢٩٠، والعظيم آبادى فى عون المعبود، ١١/٢٥٧، والمباركفورى فى تحفة الأحوزى، ٦/٤٠٣، والسيوطى فى شرحه سنن ابن ماجه، ١/٣٠٠، الرقم: ٤٠٨٥.

सूरत में आप ﷺ के मुशाबह न होगा। फिर हज़रत अली ؓ ने क़िस्सा बयान फरमाया कि वो ज़मीन को अद्लो इन्साफ़ से भर देगा।''

٧١٤ / ٥٢. عَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ ؓ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: لَا يَزَالُ الإِسْلَامُ عَزِيْزًا إِلَى اثْنَي عَشَرَ خَلِيْفَةً ثُمَّ قَالَ: كَلِمَةٌ لَمْ أَفْهَمْهَا. فَقُلْتُ لِأَبِي: مَا قَالَ؟ فَقَالَ: كُلُّهُمْ مِنْ قُرَيْشٍ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَأَحْمَدُ.

''हज़रत जाबिर बिन समुरह ؓ से रिवायत है कि मैंने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ को फरमाते हुए सुनाः 12 खलीफ़ा होने तक इस्लाम ग़ालिब रहेगा। फिर आप ﷺ ने एक बात फरमाई जिसे मैं नहीं समझ सका, मैंने अपने वालिद से पूछा हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने क्या फरमायाः उन्होंने कहा कि आप ﷺ ने फरमायाः वो (तमाम ख़ुलफ़ा) क़ुरैश से होंगे।''

٧١٥ / ٥٣. عَنْ أَبِي سَعِيْدِ الْخُدْرِيِّ ؓ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَا تَقُوْمُ السَّاعَةُ حَتَّى تُمْلَأَ الْأَرْضُ ظُلْمًا وَجَوْرًا وَعُدْوَانًا ثُمَّ يَخْرُجُ مِنْ أَهْلِ بَيْتِي مَنْ يَمْلَأُهَا قِسْطًا وَ عَدْلًا. رَوَاهُ الْحَاكِمُ.

وَقَالَ: صَحِيْحٌ عَلَى شَرْطِهِمَا.

''हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ؓ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः क़यामत क़ायम नहीं होगी जब तक कि ज़मीन ज़ुल्मो ज़ोर और सरकशी से भर न जाए। इसके बाद मेरे अहले बैत से एक शख़्स (मेहदी) पैदा होगा जो ज़मीन को अद्लो इन्साफ़ से भर

الحديث رقم ٥٢: أخرجه مسلم فى الصحيح، كتاب: الإمارة، باب: الناس تبع لقريش والخلافة من قريش، ٣ / ١٤٥٣، الرقم: ١٨٢١، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٥ / ١٠٦، الرقم: ٢١٠٥٨، وابن حبان فى الصحيح، ١٥ / ٤٤، الرقم: ٦٦٦٢، وأبو عوانة فى المسند، ٤ / ٣٧٠، الرقم: ٦٩٨٢، والطبرانى فى المعجم الكبير، ٢ / ١٩٥، الرقم: ١٧٩٢، وابن أبي عاصم فى الأحاد والمثانى، ٣ / ١٢٦، الرقم: ١٤٤٨، والعسقلانى فى فتح البارى، ١٣ / ٢١١.

الحديث رقم ٥٣: أخرجه الحاكم فى المستدرك، ٤ / ٦٠٠، الرقم: ٨٦٦٩، والهيثمى فى موارد الظمآن، ١ / ٤٦٤، الرقم: ١٨٨٠.

देगा (यानी ख़लीफ़ा मेहदी के ज़हूर से पहले क़यामत नहीं आएगी)।''

٧١٦ / ٥٤۔ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رضي الله عنه قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: نَحْنُ وَلَدُ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ، سَادَةُ أَهْلِ الْجَنَّةِ: أَنَا وَحَمْزَةُ وَعَلِيٌّ وَجَعْفَرٌ وَالْحَسَنُ وَالْحُسَيْنُ وَالْمَهْدِيُّ. رَوَاهُ ابْنُ مَاجَه.

''हज़रत अनस رضي الله عنه बयान करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को ख़ुद फरमाते हुए सुना हैः हम अ़ब्दुल मुत्तलिब की औलाद अहले जन्नत के सरदार होंगे यानी मैं, हमज़ा, अ़ली, जाफ़र, हसन, हुसैन और मेहदी।''

٧١٧ / ٥٥۔ عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ رضي الله عنها قَالَتْ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: يُبَايَعُ رَجُلٌ مِنْ أُمَّتِي بَيْنَ الرُّكْنِ وَالْمَقَامِ كَعِدَّةِ أَهْلِ بَدْرٍ، فَيَأْتِيْهِ عَصَبُ الْعِرَاقِ وَأَبْدَالُ الشَّامِ. رَوَاهُ الْحَاكِمُ وَابْنُ أَبِي شَيْبَةَ.

''हज़रत उम्मे सलमा رضی اللہ عنہا रिवायत करती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमायाः मेरी उम्मत के एक शख़्स (मेहदी) की रुक्न और मक़ामे इब्राहीम के दरमियान अहले बद्र की तादाद (313 अफ़राद) की मिस्ल बैत की जाएगी। इसके बाद उस इमाम के पास इराक़ के औलिया और शाम के अबदाल (बैत के लिए) आएंगे।''

الحديث رقم ٥٤ : أخرجه ابن ماجه في السنن، كتاب: الفتن، باب: خروج المهدي، ٢/١٣٦٨، الرقم: ٤٠٨٧۔

الحديث رقم ٥٥: أخرجه الحاكم في المستدرك، ٤/٤٧٨، الرقم: ٨٣٢٨، وابن أبي شيبة في المصنف، ٧/٤٦٠، الرقم: ٣٧٢٢٣۔

فَصْلٌ فِي مَنَاقِبِ الْأَئِمَّةِ الْفُقَهَاءِ الْمُجْتَهِدِيْنَ ﷺ

अइम्मए फ़ुक़हाए मुजतहिदीन ﷺ के मनाक़िब का बयान

٧١٨ / ٥٦۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ قَالَ: كُنَّا جُلُوْسًا عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ فَأُنْزِلَتْ عَلَيْهِ سُوْرَةُ الْجُمُعَةِ: ﴿وَآخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ﴾. [الجمعة، ٦٢:٣] قَالَ: قُلْتُ: مَنْ هُمْ يَارَسُوْلَ اللهِ؟ فَلَمْ يُرَاجِعْهُ حَتَّى سَأَلَ ثَلَاثًا، وَفِيْنَا سَلْمَانُ الْفَارِسِيُّ، وَضَعَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يَدَهُ عَلَى سَلْمَانَ، ثُمَّ قَالَ: لَوْكَانَ الْإِيْمَانُ عِنْدَ الثُّرَيَّا، لَنَالَهُ رِجَالٌ، أَوْ رَجُلٌ، مِنْ هَؤُلَاءِ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ बयान करते हैं कि हम हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की ख़िदमते अक़दस में बैठे हुए थे कि आप ﷺ पर सूरहः जुम्आ(की यह आयत) नाज़िल हुई और इनमें से दूसरे लोगों में भी (इस रसूल ﷺ को तज़किया व तालीम के लिए भेजा है) जो अभी उन लोगों से नहीं मिले। हज़रत अबू हुरैरा ﷺ फरमाते हैं कि या रसूलल्लाह! वो कौन हज़रात हैं? आप ﷺ ने जवाब इर्शाद न फरमाया तो मैंने तीन मर्तबा पूछा और हज़रत सलमान फ़ारसी ﷺ

الحديث رقم ٥٦: أخرجه البخارى فى الصحيح، ١٦ / ٢٩٨، كتاب: التفسير / الجمعة، باب: قوله: وَآخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ: ٣، ٤ / ١٨٥٨، الرقم: ٤٦١٥، ومسلم فى الصحيح، كتاب: فضائل الصحابة، باب: فضل فارس، ٤ / ١٩٧٢، الرقم: ٢٥٤٦، والترمذى فى السنن، كتاب: المناقب عن رسول الله ﷺ، باب: فِى فضل العجم، ٥ / ٧٢٥، الرقم: ٣٩٤٢، وفى كتاب: تفسير القرآن عن رسول الله ﷺ، باب: وَمِنْ سُوْرَةِ محمد ﷺ، ٥ / ٣٨٤، الرقم: ٣٢٦٠۔ ٣٢٦١، وفى باب: ومِنْ سُوْرَةِ الْجُمُعَةِ، ٥ / ٤١٣، الرقم: ٣٣١٠، وابن حبان فى الصحيح، ١٦ / ٢٩٨، الرقم: ٧٣٠٨، وأبو نعيم فى حلية الأولياء، ٦ / ٦٤، والديلمى فى مسند الفردوس، ٤ / ٣٦٧، الرقم: ٧٠٦٠، والعسقلانى فى فتح البارى، ٨ / ٦٤٢، الرقم: ٤٦١٥، والحسينى فى البيان والتعريف، ٢ / ١٧٠، الرقم: ١٣٩٩، وابن كثير فى تفسير القرآن العظيم، ٤ / ٣٦٤، الرقم: ٤٧٩٧، والطبرى فى جامع البيان، ٢٨ / ٩٦، والقرطبى فى الجامع لأحكام القرآن، ١٨ / ٩٣۔

भी हमारे दरमियान मौजूद थे। रसूलुल्लाह ﷺ ने अपना दस्ते अक़दस (हाथ मुबारक) हज़रत सलमान ﷺ (के कन्धों) पर रखकर फरमाया: अगर ईमान सुरैया (यानी आसमाने दुनिया के सबसे ऊँचे मक़ाम) के क़रीब भी हुआ तो इन (फ़ारसियों) में से कुछ लोग या एक आदमी (रावी को शक है) उसे वहाँ से भी हासिल कर लेगा।''

٧١٩ / ٥٧۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَوْ كَانَ الدِّيْنُ عِنْدَ الثُّرَيَّا لَذَهَبَ بِهِ رَجُلٌ مِنْ فَارِسَ أَوْ قَالَ: مِنْ أَبْنَاءِ فَارِسَ، حَتَّى يَتَنَاوَلَهُ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ रिवायत करते है कि रसूलल्लाह ﷺ ने फरमायाः अगर दीन सुरैया पर भी होता तब भी फ़ारस का एक शख़्स उसे हासिल कर लेता या फरमायाः फ़ारस वालों की औलाद में से एक शख़्स उसे हासिल कर लेता।''

٧٢٠ / ٥٨۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَوْ كَانَ الدِّيْنُ عِنْدَ الثُّرَيَّا لَذَهَبَ رَجُلٌ مِنْ فَارِسَ أَوْ أَبْنَاءِ فَارِسَ حَتَّى يَتَنَاوَلَهُ.رَوَاهُ أَحْمَدُ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलल्लाह ﷺ ने फरमायाः अगर दीन सुरैया पर भी होता, तब भी फ़ारस का एक शख़्स उसे हासिल कर लेता या फ़ारस (वालों) की औलाद में से एक शख़्स उसे हासिल कर लेता।''

٧٢١ / ٥٩۔ عَنْ عَبْدِ اللهِ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَوْكَانَ الدِّيْنُ

الحديث رقم ٥٧: أخرجه مسلم فى الصحيح، كتاب: فضائل الصحابة، باب: فضل فارس، ٤ / ١٩٧٢، الرقم: ٢٥٤٦، والهيثمى فى مجمع الزوائد، باب: ما جاء فى ناس من أبناء فارس، ١٠ / ٦٤، والمقري في السنن الواردة فى الفتن، ٣ / ٧٤٤، الرقم: ٣٦٦، وابن عساكر فى تاريخ دمشق الكبير، ٢٣ / ٢١٨، والحسينى فى البيان والتعريف، ٢ / ١٧٠، الرقم: ١٣٩٩، والمناوى فى فيض القدير، ٥ / ٣٢٢، والقرطبى فى الجامع لأحكام القرآن، ١٨ / ٩٣۔

الحديث رقم ٥٨: أخرجه أحمد بن حنبل فى المسند، ٢ / ٣٠٨، الرقم: ٨٠٦٧۔

الحديث رقم ٥٩: أخرجه الطبرانى فى المعجم الكبير، ١٠ / ٢٠٤، الرقم: ١٠٤٧٠، ـــ

مُعَلَّقاً بِالثُّرَيَّا لَتَنَاوَلَهُ نَاسٌ مِنْ أَبْنَاءِ فَارِسَ. رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ وَابْنُ أَبِي شَيْبَةَ.

''हज़रत अब्दुल्लाह ﷺ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः अगर दीन सुरैया के साथ भी मुअल्लक हुआ तो अहले फ़ारस में से एक शख़्स उसे ज़रूर पा लेगा।''

٧٢٢/ ٦٠. عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ، لَوْ كَانَ الْعِلْمُ بِالثُّرَيَّا لَتَنَاوَلَهُ نَاسٌ مِنْ أَهْلِ (أَبْنَاءِ) فَارِسَ. رَوَاهُ أَحْمَدُ وَابْنُ حِبَّانَ. وَقَالَ الْهَيْثَمِيُّ: رَوَاهُ أَبُوْ يَعْلَى وَالْبَزَّارُ وَالطَّبَرَانِيُّ وَرِجَالُهُمْ رِجَالُ الصَّحِيْحِ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से मरवी है कि अगर इल्म सुरैया के साथ भी मुअल्लक़ हुआ तो अहले फ़ारस में से कुछ लोग उसे ज़रूर पा लेंगे।''

٧٢٣/ ٦١. عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: وَيْلٌ لِلْعَرَبِ مِنْ شَرٍّ قَدِ اقْتَرَبَ، أَفْلَحَ مَنْ كَفَّ يَدَهُ، تَقَرَّبُوْا يَا بَنِي فَرُّوْخَ إِلَى اللهِ، فَإِنَّ

.... وابن أبي شيبة في المصنف، باب: ماجاء في العجم، ٦/ ٤١٥، الرقم: ٣٢٥١٥- ٣٢٥١٦، والديلمي في مسند الفردوس، ٣/ ٣٦٠، الرقم: ٥٠٨٤، وابن عساكر في تاريخ دمشق الكبير، ٢٣/ ٢١٨، والواسطي في تاريخ واسط، ١/ ٢٢٠، والخطيب البغدادي في تاريخ بغداد، ١٠/ ٣١٢، الرقم: ٥٤٦٠، وفي تالي تلخيص المتشابه، ١/ ٢٠٩، الرقم: ١٠٨، وابن قانع في معجم الصحابة، ٣/ ١٢٩، الرقم: ١١٠٢، والعسقلاني في الإصابة، ٦/ ٢١٣، الرقم: ٨٢١٧، والهيثمي في مجمع الزوائد، باب: ما جاء في ناس من أبناء فارس، ١٠/ ٦٥.

الحديث رقم ٦٠: أخرجه أحمد بن حنبل في المسند، ٢/ ٤٢٠، الرقم: ٩٤٣٠، ٧٩٣٧، ٩٤٥٤، ١٠٠٥٩، والبزار في المسند، ٩/ ١٩٥، الرقم: ٣٧٤١، وابن حبان في الصحيح، باب: ذكر ﷺ لأهل الفارس بقول الإيمان والحق، ١٦/ ٢٩٩، الرقم: ٧٣٠٩، والهيثمي في موارد الظمآن، باب: في ناس من أبناء فارس، ١/ ٥٧٤، الرقم: ٢٣٠٩، وفي مجمع الزوائد، باب: ما جاء في ناس من أبناء فارس، ١٠/ ٦٤، والحارث في مسند زوائد الهيثمي، ٢/ ٩٤٣، والقيسراني في تذكرة الحفاظ، ٣/ ٩٧٢، الرقم: ٩١٢، والذهبي في سير أعلام النبلاء، ١٠/ ٢١٠، وابن عساكر في تاريخ دمشق الكبير، ٥١/ ١٤٠.

الحديث رقم ٦١: أخرجه الطحاوي في مشكل الآثار، ٣/ ٩٤.

الْعَرَبَ قَدْ أَعْرَضَتْ، وَوَاللهِ، إِنَّ مِنْكُمْ لَرِجَالاً لَوْ كَانَ الْعِلْمُ بِالثُّرَيَّا لَنَالُوْهُ. رَوَاهُ الطَّحَاوِيُّ.

''हज़रत अबू हुरैरा ؓ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः बर्बादी है अ़रबों के लिए उस शर्र (बुराई) से जो अ़नक़रीब आने वाला है। वो फलाह पा गया जिसने उससे अपना हाथ रोक लिया। ऐ बनी फ़र्रूख अल्लाह तआ़ला का क़ुर्ब हासिल करो। यक़ीनन अ़रबों ने उससे तर्के तअ़ल्लुक कर लिया और अल्लाह की क़सम यक़ीनन तुम में से ज़रूर ऐसे लोग भी होंगे, अगर इल्म सुरैया पर भी हुआ तो वो उसे ज़रूर पा लेंगे।''

٧٢٤ / ٦٢. عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ؓ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: اقْتَرِبُوْا يَا بَنِي فَرُّوْخَ إِلَى الذِّكْرِ، وَاللهِ! إِنَّ مِنْكُمْ لَرِجَالًا لَوْ أَنَّ الْعِلْمَ كَانَ مُعَلَّقًا بِالثُّرَيَّا لَتَنَاوَلُوْهُ. رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ.

''हज़रत अबू हुरैरा ؓ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः ऐ बनी फ़र्रूख़ (अल्लाह तआ़ला के) ज़िक्र के क़रीब हो जाओ। अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की क़सम! यक़ीनन तुम में से ऐसे लोग होंगे अगर इल्म सुरैया के साथ भी मुअ़ल्लक हुआ तो वो ज़रूर उसे पा लेंगे।''

٧٢٥ / ٦٣. عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ؓ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: ادْنُوْا يَا مَعْشَرَ الْمَوَالِيِّ إِلَى الذِّكْرِ، فَإِنَّ الْعَرَبَ قَدْ أَعْرَضَتْ، وَإِنَّ الإِيْمَانَ لَوْ كَانَ مُعَلَّقًا بِالْعَرْشِ كَانَ مِنْكُمْ مَنْ يَطْلُبُهُ. رَوَاهُ أَبُوْ نُعَيْمٍ فِي تَارِيْخِهِ.

''हज़रत अबू हुरैरा ؓ से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमायाः ऐ गिरोहे मवाली (यानी अ़जम) ज़िक्र के क़रीब हो जाओ यक़ीनन अ़रबों ने इससे मुँह मोड़ लिया और यक़ीनन अगर ईमान अ़र्श के साथ भी मुअ़ल्लक़ हुआ तब भी तुम में से एक शख़्स उसे ज़रूर पा लेगा।''

الحديث رقم ٦٢: أخرجه البيهقي في شعب الإيمان، ٤ / ٣٤٢، الرقم: ٥٣٣٠.
الحديث رقم ٦٣: أخرجه أبو نعيم فى تاريخ أصبهان، ١ / ٦.

٧٢٦ / ٦٤۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ رواية: يُوْشِکُ أَنْ يَضْرِبَ النَّاسُ (الرَّجُلُ) أَکْبَادَ الإِبِلِ يَطْلُبُوْنَ الْعِلْمِ. وفي رواية: يَخْرُجُ النَّاسُ مِنَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ، فَـلَا يَجِدُوْنَ أَحَدًا أَعْلَمَ مِنْ عَالِمِ الْمَدِيْنَةِ.

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ وَالْحَاکِمُ.

وَقَالَ أَبُوْ عِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ. وَقَالَ الْحَاکِمُ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः अ़नक़रीब लोग तलबे इल्म में ऊँटों की सीना कोबी करेंगे (यानी निहायत तेज़ी से सफ़र करेंगे) और एक रिवायत में है मश्‌रिक़ व मग़्‌रिब से लोग इल्म की तलाश में निकल खड़े होंगे लेकिन वो आ़लिमे मदीना से ज़्यादा साहिबे इल्म किसी को नहीं पाएंगे।''

٧٢٧ / ٦٥۔ عَنْ عَبْدِ اللهِ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَا تَسُبُّوْا قُرَيْشًا، فَإِنَّ عَالِمَهَا يَمْـلأُ طِبَاقَ الْأَرْضِ عِلْمًا. رَوَاهُ الطَّيَالِسِيُّ وَابْنُ أَبِي عَاصِمٍ.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह ﷺ से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमायाः क़ुरैश को गाली मत दो अहले क़ुरैश का आ़लिम तमाम दुनिया को इल्म (की रोशनी) से भर देगा।''

الحديث رقم ٦٤: أخرجه الترمذی فی السنن، کتاب: العلم عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء فی عالم المدينة، ٥ / ٤٧، الرقم: ٢٦٨٠، والنسائی فی السنن الکبری، باب: عالم المدينة، ٢ / ٤٨٩، الرقم: ٤٢٩١، والحاکم فی المستدرک، ١ / ١٦٨، الرقم: ٢٣٠٨، والبيهقی فی السنن الکبری، ١ / ٣٨٥، الرقم: ١٦٨١، وأبو المحاسن فی معتصر المختصر، ٢ / ٣٣٩، والحميدی فی المسند، ٢ / ٤٨٥، الرقم: ١١٤٧، والخطيب البغدادی فی تاريخ بغداد، ٥ / ٣٠٦، الرقم، ١ / ١٩٥، الرقم: ٩٠، والهيثمی فی مجمع الزوائد، ١ / ١٣٤، وابن عبد البر فی التمهيد، ١ / ٨٤۔

الحديث رقم ٦٥: أخرجه الطيالسی فی المسند، ١ / ٣٩، الرقم: ٣٠٩، وابن أبی عاصم فی السنة، ٢ / ٦٣٧، الرقم: ١٥٢٣، وأبو نعيم فی حلية الأولياء، ٦ / ٢٩٥، ٩ / ٦٥، والشاشی فی المسند، ٢ / ١٦٩، الرقم: ٧٢٨، والخطيب البغدادی فی تاريخ بغداد، ٢ / ٦١، والديلمی فی مسند الفردوس، ٥ / ١٢، الرقم: ٧٢٩٥، والبيهقی فی بيان من أخطأ علی الشافعی، ١ / ٩٤، والعسقلانی فی تهذيب التهذيب، ٩ / ٢٤، والمزی فی تهذيب الکمال، ٢٤ / ٣٦٤۔

فَصْلٌ فِي مَنَاقِبِ الْأَوْلِيَاءِ وَالصَّالِحِيْنَ رضي الله عنهم

﴾औलिया और सालेहीन रضي الله عنهم के मनाक़िब का बयान﴿

٧٢٨/ ٦٦۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضي الله عنه عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: إِذَا أَحَبَّ اللهُ الْعَبْدَ نَادَى جِبْرِيْلَ: إِنَّ اللهَ يُحِبُّ فُـلَانًا، فَأَحْبِبْهُ، فَيُحِبُّهُ جِبْرِيْلُ، فَيُنَادِي جِبْرِيْلُ فِي أَهْلِ السَّمَاءِ: إِنَّ اللهَ يُحِبُّ فُـلَانًا، فَأَحِبُّوْهُ، فَيُحِبُّهُ أَهْلُ السَّمَاءِ، ثُمَّ يُوْضَعُ لَهُ الْقَبُوْلُ فِي الْأَرْضِ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अबू हुरैरा رضي الله عنه रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जब अल्लाह तआला किसी बन्दे से मुहब्बत करता है तो हज़रत जिब्राईल عليه السلام को आवाज़ देता है कि अल्लाह तआला फ़लां बंदे से मुहब्बत रखता है, लिहाज़ा तुम भी उससे मुहब्बत करो फिर हज़रत जिब्राईल عليه السلام उससे मुहब्बत करते हैं। फिर हज़रत जिब्राईल عليه السلام आसमानी मख़्लूक़ में निदा (आवाज़) देते हैं कि अल्लाह तआला फ़लां बन्दे से मुहब्बत करता है। लिहाज़ा तुम भी उससे मुहब्बत करो। पस आसमान वाले भी उससे मुहब्बत करने लगते है। फिर ज़मीन वालों (के दिलों) में उसकी मक़बूलियत रख दी जाती है।''

٧٢٩/ ٦٧۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضي الله عنه قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّ اللهَ

الحديث رقم ٦٦: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: بدء الخلق، باب: ذكر الملائكة، ٣/ ١١٧٥، الرقم: ٣٠٣٧، وفى كتاب: الأدب، باب: المِقَةِ من الله تعالى، ٥/ ٢٢٤٦، الرقم: ٥٦٩٣، وفى كتاب: التوحيد، باب: كلام الرب مع جبريل ونداء الله الملائكة، ٦/ ٢٧٢١، الرقم: ٧٠٤٧، ومسلم فى الصحيح، كتاب: البر والصلة والآداب، باب: إذا أحب الله عبدا حببه إلى عباده، ٤/ ٢٠٣٠، الرقم: ٢٦٣٧، ومالك فى الموطأ، ٢/ ٩٥٣، الرقم: ١٧١٠۔

الحديث رقم ٦٧: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: الرقاق، باب: التواضع، ٥/ ٢٣٨٤، الرقم: ٦١٣٧، وابن حبان فى الصحيح، ٢/ ٥٨، الرقم: ٣٤٧، والبيهقى فى السنن الكبرى، ١٠/ ٢١٩، باب (٦٠)، وفى كتاب الزهد الكبير، ٢/ ٢٦٩، الرقم: ٦٩٦۔

قَالَ: مَنْ عَادَى لِي وَلِيّاً، فَقَدْ آذَنْتُهُ بِالْحَرْبِ، وَمَا تَقَرَّبَ إِلَيَّ عَبْدِي بِشَيءٍ أَحَبَّ إِلَيَّ مِمَّا افْتَرَضْتُ عَلَيْهِ، وَمَا يَزَالُ عَبْدِي، يَتَقَرَّبُ إِلَيَّ بِالنَّوَافِلِ حَتَّى أُحِبَّهُ، فَإِذَا أَحْبَبْتُهُ: كُنْتُ سَمْعَهُ الَّذِي يَسْمَعُ بِهِ، وَبَصَرَهُ الَّذِي يُبْصِرُ بِهِ، وَيَدَهُ الَّتِي يَبْطِشُ بِهَا، وَرِجْلَهُ الَّتِي يَمْشِي بِهَا، وإِنْ سَأَلَنِي، لَأُعْطِيَنَّهُ، وَلَئِنِ اسْتَعَاذَنِي، لَأُعِيذَنَّهُ، وَمَا تَرَدَّدْتُ عَنْ شَيءٍ أَنَا فَاعِلُهُ تَرَدُّدِي عَنْ نَفْسِ الْمُؤْمِنِ، يَكْرَهُ الْمَوْتَ وَأَنَا أَكْرَهُ مَسَاءَتَهُ.

رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः अल्लाह तआला फरमाता हैः जो मेरे किसी वली से दुश्मनी रखे मैं उससे ऐलाने जंग करता हूँ और मेरा बन्दा ऐसी किसी चीज के ज़रीये मेरा क़ुर्ब नहीं पाता जो मुझे फ़र्ज़ों से ज़्यादा मेहबूब हो और मेरा बन्दा नफ़्ली इबादत के ज़रीये बराबर मेरा क़ुर्ब हासिल करता रहता है। यहाँ तक कि मैं उससे मुहब्बत करने लगता हूँ और जब मैं उससे मुहब्बत करता हूँ तो मैं उसका कान बन जाता हूँ जिससे वो सुनता है और उसकी आँख बन जाता हूँ जिससे वो देखता है और उसका हाथ बन जाता हूँ जिससे वो पकड़ता है और उसका पाँव बन जाता हूँ जिससे वो चलता है। अगर वो मुझसे सवाल करता है तो मैं उसे ज़रूर अ़ता करता हूँ और अगर वो मेरी पनाह मांगता है तो मैं ज़रूर उसे पनाह देता हूँ। मैंने जो काम करना होता है उसमें कभी इस तरह मुतरद्दिद (फिक्रमन्द) नहीं होता जैसे बन्दा–ए–मोमिन की जान लेने में होता हूँ, उसे मौत पसंद नहीं और मुझे उसकी तकलीफ़ पसन्द नहीं।''

٧٣٠/٦٨۔ عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ ﷺ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: إِنَّ مِنْ عِبَادِ اللهِ لَأُنَاسًا مَا هُمْ بِأَنْبِيَاءَ وَلَا شُهَدَاءَ يَغْبِطُهُمُ الْأَنْبِيَاءُ وَالشُّهَدَاءُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ بِمَكَانِهِمْ مِنَ اللهِ. قَالُوا: يَا رَسُوْلَ اللهِ! تُخْبِرُنَا مَنْ هُمْ؟ قَالَ: هُمْ قَوْمٌ تَحَابُّوْا بِرُوْحِ اللهِ عَلَى غَيْرِ أَرْحَامٍ بَيْنَهُمْ، وَلَا أَمْوَالٍ يَتَعَاطُوْنَهَا،

الحديث رقم ٦٨: أخرجه أبو داود في السنن، كتاب: البيوع، باب: في الرهن، ٣: ٢٨٨، الرقم: ٣٥٢٧، والنسائي في السنن الكبرى، سورة يونس، ٦/٣٦٢، الرقم: ١١٢٣٦، والبيهقي في شعب الايمان، ٦/٤٨٦، الرقم: ٨٩٩٨۔

فَوَاللهِ إِنَّ وُجُوْهَهُمْ لَنُوْرٌ وَإِنَّهُمْ لَعَلَى نُوْرٍ، لَا يَخَافُوْنَ إِذَا خَافَ النَّاسُ، وَلَا يَحْزَنُوْنَ إِذَا حَزِنَ النَّاسُ، وَقَرَأَ هَذِهِ الْآيَةَ: ﴿أَلَاَ إِنَّ أَوْلِيَآءَ اللهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ٥﴾. [يونس، ١٠:٦٢].

رَوَاهُ أَبُوْ دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ.

''हज़रत उमर बिन ख़त्ताब ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः बेशक अल्लाह तआला के कुछ ऐसे बरगुज़ीदा बन्दे हैं जो न अम्बिया किराम हैं न शोहदा, क़यामत के दिन अम्बिया किराम علیہم السلام और शोहदा इन्हें अल्लाह तआला की तरफ़ से अ़ता कर्दह मक़ाम देख कर उन पर रश्क करेंगे। सहाबा–ए–किराम ﷺ ने अ़र्ज़ कियाः या रसूलल्लाह! आप हमें उनके बारे में बताएँ कि वो कौन हैं ? आप ﷺ ने फरमायाः वो ऐसे लोग हैं जिनकी एक दूसरे से मुहब्बत सिर्फ़ अल्लाह तआला की ख़ातिर होती है न कि रिश्तेदारी और माली लेन-देन की वजह से। अल्लाह तआला की क़सम! उनके चेहरे नूर होंगे और वो नूर (के मिम्बरों) पर होंगे, उन्हें कोई ख़ौफ़ नहीं होगा, जब लोग ख़ौफ़ ज़दा होंगे उन्हें कोई ग़म नहीं होगा, जब लोग ग़मज़दा होंगे। फिर आप ﷺ ने यह आयत तिलावत फरमाई 'ख़बरदार औलिया अल्लाह पर न कोई ख़ौफ़ है न वो रंजीदा व ग़मगीन होंगे'।''

٧٣١/ ٦٩۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّ مِنْ عِبَادِ اللهِ عِبَادًا لَيْسُوْا بِأَنْبِيَاءَ، يَغْبِطُهُمُ الْأَنْبِيَاءُ وَالشُّهَدَاءُ. قِيْلَ: مَنْ هُمْ لَعَلَّنَا نُحِبُّهُمْ؟ قَالَ: هُمْ قَوْمٌ تَحَابُّوْا بِرُوْحِ اللهِ مِنْ غَيْرِ أَرْحَامٍ وَلَا إِنْتِسَابٍ، وُجُوْهُهُمْ نُوْرٌ عَلَى مَنَابِرَ مِنْ نُوْرٍ، لَا يَخَافُوْنَ إِذَا خَافَ النَّاسُ، وَلَا يَحْزَنُوْنَ إِذَا حَزِنَ النَّاسُ، ثُمَّ قَرَأَ: ﴿أَلَا إِنَّ أَوْلِيَاءَ اللهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ٥﴾ [يونس، ١٠:٦٢].

رَوَاهُ ابْنُ حِبَّانَ وَأَبُوْ يَعْلَى وَالْبَيْهَقِيُّ.

الحديث رقم ٦٩: أخرجه ابن حبان فى الصحيح، ٢/ ٣٣٢، الرقم: ٥٧٣، وأبو يعلى فى المسند، ١٠/ ٤٩٥، الرقم: ٦١١٠، والبيقهى فى شعب الإيمان، ٦/ ٤٨٥، الرقم: ٨٩٩٧، ٨٩٩٩، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٤/ ١٢، الرقم: ٤٥٨٠.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः अल्लाह तआला के कुछ बन्दे ऐसे हैं जो अम्बिया नहीं लेकिन अम्बिया–ए–किराम और शोहदा भी उन पर रश्क करेंगे। अर्ज़ किया गयाः (या रसूलल्लाह) वो कौन लोग हैं (हमें उनकी सिफ़ात बताइए) ताकि हम भी उनसे मुहब्बत करें। आप ﷺ ने फरमायाः वो ऐसे बन्दे हैं जो आपस में बग़ैर किसी क़राबतदारी और वास्ते के महज़ अल्लाह तआला की ख़ातिर मुहब्बत करते हैं उनके चेहरे पुरनूर होंगे और वो नूर के मिम्बरों पर जलवा अफ़रोज़ होंगे। उन्हें कोई ख़ौफ़ नहीं होगा, जब लोग ख़ौफ़ज़दा होंगे और उन्हें कोई ग़म न होगा जब लोग ग़मज़दा होंगे। फिर आप ﷺ ने यह आयात तिलावत फरमाई, ''ख़बरदार बेशक औलिया अल्लाह पर न कोई ख़ौफ़ है और न वो रंजीदा व ग़मगीन होंगे।''

٧٣٢/ ٧٠۔ عَنْ أَسْمَاءَ بِنْتِ يَزِيْدَ رضي الله عنها قَالَتْ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: أَلاَ أُنَبِّئُكُمْ بِخِيَارِكُمْ؟ قَالُوْا: بَلَى، يَارَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: خِيَارُكُمُ الَّذِيْنَ إِذَا رُؤُوْا، ذُكِرَ اللهُ ﷻ.

رَوَاهُ ابْنُ مَاجه وَأَحْمَدُ وَالْبُخَارِيُّ فِي الأَدَبِ.

''हज़रत अस्मा बिन्ते यजीद رضی اللہ عنہا से रिवायत है कि मैंने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ को फरमाते सुना कि क्या मैं तुम्हें तुम में से सबसे बेहतर लोगों के बारे मे ख़बर न दूं, सहाबा किराम ﷺ ने अर्ज़ कियाः या रसूलल्लाह! क्यों नहीं ? आप ﷺ ने फरमायाः तुम में से बेहतर लोग वो हैं जब उन्हें देखा जाए तो अल्लाह याद आ जाए।''

٧٣٣/ ٧١۔ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رضي الله عنهما، قَالَ: سُئِلَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ عَنْ أَوْلِيَاءِ اللهِ؟ فَقَالَ: الَّذِيْنَ إِذَا رُؤُوْا ذُكِرَ اللهُ ﷻ.

الحديث رقم ٧٠: أخرجه ابن ماجه فى السنن، كتاب: الزهد، باب: من لا يؤبه له، ٢/ ١٣٧٩، الرقم: ٤١١٩، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٦/ ٤٥٩، الرقم: ٢٧٦٤٠، والبخارى فى الأدب المفرد/ ١١٩، الرقم: ٣٢٣، والطبرانى فى المعجم الكبير، ٢٤/ ١٦٧، الرقم: ٤٢٣۔

الحديث رقم ٧١: أخرجه النسائى فى السنن الكبرى، سورة يونس، ٦/ ٣٦٢، الرقم: ١١٢٣٥، وابن المبارك فى كتاب الزهد، ١/ ٧٢، الرقم: ٢١٧، والمقدسى فى الأحاديث المختارة، ١٠/ ١٠٨، الرقم: ١٠٥، والحكيم الترمذى فى نوادر الأصول، ٢/ ٣٩، والهيثمى فى مجمع الزوائد، ١٠/ ٧٨۔

رَوَاهُ النَّسَائِيُّ وَابْنُ الْمُبَارَكِ. وَقَالَ الْهَيْثَمِيُّ: رَوَاهُ الْبَزَّارُ وَوَثَّقَهُ.

''हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास رضی اللہ عنہما से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ से औलिया अल्लाह के बारे में पूछा गया तो आप ﷺ ने फरमायाः वो लोग (औलिया अल्लाह हैं) जिन्हें देखने से अल्लाह ﷻ याद आ जाए।''

٧٣٤/٧٢۔ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُوْدٍ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّ مِنَ النَّاسِ مَفَاتِيْحُ لِذِكْرِ اللهِ إِذَا رُؤُوْا ذُكِرَ اللهُ.

رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ وَالْبَيْهَقِيُّ وَابْنُ أَبِي الدُّنْيَا.

''हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः यक़ीनन बाज़ लोग अल्लाह तआला के ज़िक्र की कुंजियाँ होते हैं, उन्हें देख कर अल्लाह तआला याद आ जाता है।''

٧٣٥/٧٣۔ عَنْ عَمْرِو بْنِ الْحَمِقِ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَا يُحِقُّ الْعَبْدُ حَقِيقَةَ الإِيْمَانِ حَتَّى يَغْضَبَ ِللهِ وَيَرْضَى ِللهِ، فَإِذَا فَعَلَ ذٰلِكَ، اسْتَحَقَّ حَقِيْقَةَ الإِيْمَانِ، وَإِنَّ أَحِبَّائِي وَأَوْلِيَائِي الَّذِيْنَ يُذْكَرُوْنَ بِذِكْرِي وَأُذْكَرُ بِذِكْرِهِمْ. رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ وَأَحْمَدُ وَابْنُ أَبِي الدُّنْيَا.

''हज़रत अम्र बिन हमिक़ ﷺ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः बन्दा उस वक़्त तक ईमान की हक़ीक़त को नहीं पा सकता जब तक कि वो अल्लाह तआला के लिए ही (किसी से) नाराज़ और अल्लाह तआला के लिए ही (किसी से) राज़ी न हो

الحديث رقم ٧٢: أخرجه الطبرانى فى المعجم الكبير، ١٠/٢٠٥، الرقم: ١٠٤٧٦، والبيهقى فى شعب الإيمان، ١/٤٥٥، الرقم: ٤٩٩، وابن أبى الدنيا فى كتاب الأولياء/١٧، الرقم: ٢٦، والهيثمى فى مجمع الزوائد، ١٠/٧٨، وَصَحَّحَهُ.

الحديث رقم ٧٣: أخرجه الطبرانى فى المعجم الأوسط، ١/٢٠٣، الرقم: ٦٥١، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٣/٤٣٠، الرقم: ١٥٦٣٤، وابن أبي الدنيا فى كتاب الأولياء/١٥، الرقم: ١٩، وابن رجب فى جامع العلوم والحكم، ١/٣٦٥، والديلمى فى مسند الفردوس، ٥/١٥٢، الرقم: ٧٧٨٩، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٤/١٤، الرقم: ٤٥٨٩، والهيثمى فى مجمع الزوائد، ١/٥٨.

(यानी उसकी रज़ा का मर्कज़ो मेहवर सिर्फ ज़ाते इलाही हो) और जब उसने यह काम कर लिया तो उसने ईमान की हक़ीक़त को पा लिया और बेशक मेरे अहबाब और औलिया वो लोग हैं कि मेरे ज़िक्र से उनकी याद आ जाती है और उनके ज़िक्र से मेरी याद आ जाती है (यानी मेरा ज़िक्र उनका ज़िक्र है और उनका ज़िक्र मेरा ज़िक्र है)।''

٧٣٦ / ٧٤۔ عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رضي الله عنه عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ رضي الله عنه قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ صلى الله عليه وآله وسلم يَقُوْلُ: إِنَّ يَسِيْرَ الرِّيَاءِ شِرْكٌ، وَ إِنَّ مَنْ عَادَى ِللهِ وَلِيًّا، فَقَدْ بَارَزَ اللهَ بِالْمُحَارَبَةِ. إِنَّ اللهَ يُحِبُّ الْأَبْرَارَ الْأَتْقِيَاءَ الْأَخْفِيَاءَ، الَّذِيْنَ إِذَا غَابُوْا لَمْ يُفْتَقَدُوْا، وَإِنْ حَضَرُوْا لَمْ يُدْعَوْا وَلَمْ يُعْرَفُوْا. قُلُوْبُهُمْ مَصَابِيْحُ الْهُدَى يَخْرُجُوْنَ مِنْ كُلِّ غَبْرَاءَ مُظْلِمَةٍ.

رَوَاهُ ابْنُ مَاجَه وَالْحَاكِمُ وَالطَّبَرَانِيُّ. وَقَالَ الْحَاكِمُ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत उमर बिन ख़त्ताब رضي الله عنه हज़रत मुआज़ बिन जबल رضي الله عنه से रिवायत करते हैं कि उन्होंने हुज़ूर नबी–ए–अकरम صلى الله عليه وآله وسلم को फरमाते हुए सुनाः बेशक मामूली दिखावा भी शिर्क है और जिसने औलिया अल्लाह से दुश्मनी की तो उसने अल्लाह तआला से ऐलाने जंग किया बेशक अल्लाह तआला उन नेक मुत्तक़ी लोगों को महबूब रखता है जो छुपे रहते हैं। अगर वो गायब हो जाएं तो उन्हें तलाश नहीं किया जाता, अगर वो मौजूद हों तो उन्हें (किसी भी मज्लिस में या काम के लिए) बुलाया नहीं जाता और न ही उन्हें पहचाना जाता है। उनके दिल हिदायत के चराग़ हैं, ऐसे लोग हर तरह की आज़माइश और तारीक (अंधेरे) फ़ितने से बख़ैरो आफ़ियत निकल जाते हैं।''

٧٣٧ / ٧٥۔ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رضي الله عنهما قَالَ: قِيْلَ يَا رَسُوْلَ اللهِ، أَيُّ

الحديث رقم ٧٤: أخرجه ابن ماجه في السنن، كتاب: الفتن، باب: من ترجى له السلامة من الفتن، ٢ / ١٣٢٠، الرقم: ٣٩٨٩، والحاكم في المستدرك، ١ / ٤٤، الرقم: ٤، ٤ / ٣٦٤، الرقم: ٧٩٣٣، والطبراني في المعجم الصغير، ٢ / ١٢٢، الرقم: ٨٩٢، والديلمي في مسند الفردوس، ٥ / ٥٤٨، الرقم: ٩٠٤٩، والمنذري في الترغيب والترهيب، ١ / ٣٤، الرقم: ٤٩.

الحديث رقم ٧٥: أخرجه أبو يعلى في المسند، ٤ / ٣٢٦، الرقم: ٢٤٣٧، وعبد بن ←

جُلَسَائِنَا خَيْرٌ؟ قَالَ: مَنْ ذَكَّرَكُمُ اللهَ رُؤْيَتُهُ وَزَادَ فِي عِلْمِكُمْ مَنْطِقُهُ وَذَكَّرَكُمْ بِالْآخِرَةِ عَمَلُهُ. رَوَاهُ أَبُوْ يَعْلَى وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ وَنَحْوَهُ أَبُوْ نُعَيْمٍ.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رضی اللہ عنہما से रिवायत हैं कि अ़र्ज़ किया गयाः या रसूलल्लाह! हमारे बेहतरीन हमनशीन कौन लोग हैं ? आप ﷺ ने फरमायाः ऐसा हमनशीन जिसका देखना तुम्हें अल्लाह तआला की याद दिलाए और जिसकी गुफ़्तगू तुम्हारे इल्म में इज़ाफ़ा करे और जिसका अ़मल तुम्हें आख़िरत की याद दिलाए।''

.... حميد فى المسند، ١/٢١٣، الرقم: ٦٣١، وأبو نعيم فى حلية الأولياء، ٧/٤٦، وابن المبارك فى الزهد، ١/١٢١، الرقم: ٣٥٥، وابن أبى الدنيا فى الأولياء/١٧، الرقم: ٢٥، والمنذرى فى الترغيب والترهيب،١/٦٣، الرقم: ١٦٣، والهندى فى كنز العمال، ٩/٢٨،٣٧، الرقم: ٢٤٧٦٤، ٢٤٨٢٠، والحسينى فى البيان والتعريف، ٢/٣٩، الرقم: ٩٩٤، والزرقانى في شرحه، ٤/٥٥٣، والمناوى فى فيض القدير، ٣/٤٦٧.

فَصْلٌ فِي مَا أَعَدَّهُ اللهُ مِنْ قُرَّةِ أَعْيُنٍ لِعِبَادِهِ الصَّالِحِيْنَ

सालेहीन के लिए अल्लाह तआला की तरफ़ से तैयार कर्दह तस्कीने चश्मो जाँ का बयान

٧٣٨ / ٧٦ـ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: قَالَ اللهُ ﷻ: أَعْدَدْتُ لِعِبَادِيَ الصَّالِحِيْنَ: مَا لَا عَيْنٌ رَأَتْ، وَلَا أُذُنٌ سَمِعَتْ، وَلَا خَطَرَ عَلَى قَلْبِ بَشَرٍ فَاقْرَؤُوْا إِنْ شِئْتُمْ: ﴿فَلاَ تَعْلَمُ نَفْسٌ مَا أُخْفِيَ لَهُمْ مِّنْ قُرَّةِ أَعْيُنٍ جَزَاءً بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ﴾ [السجدة، ٣٢:١٧].

مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ बयान करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया: अल्लाह ﷻ का फरमान है: मैंने अपने नेक बन्दों के लिए ऐसी नेअमतें तैयार की हैं जिन्हें न

الحديث رقم ٧٦: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: بدء الخلق، باب: ماجاء فى صفة الجنة وأنها مخلوقة، ٣/١١٨٥، الرقم: ٣٠٧٢، وفى كتاب: التفسير/ السجدة، باب: قوله: فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَا أُخْفِيَ لَهُمْ مِّنْ قُرَّةِ أَعْيُنٍ:[١٧]، ٤/١٧٩٤، الرقم: ٤٥٠١ـ ٤٥٠٢، وفى كتاب: التوحيد، باب: قوله تعالى: يُرِيْدُوْنَ أَنْ يُبَدِّلُوْا كَلَامَ اللهِ: [الفتح: ١٥]، ٦/٢٧٢٣، الرقم: ٧٠٥٩، ومسلم فى الصحيح، كتاب: الجنة وصفة نعيمها، باب: (٥١)، ٤/١٢٧٤ـ٢١٧٥، الرقم: ٢٨٢٤، والترمذى فى السنن، كتاب: تفسير القرآن عن رسول الله ﷺ، باب: ومن سورة السجدة، ٥/٣٤٦، الرقم: ٣١٩٧، وفى باب: ومن سورة الواقعة، ٥/٤٠٠، الرقم: ٣٢٩٢، وقال أبو عيسى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ، وابن ماجه فى السنن، كتاب: الزهد، باب: صفة الجنة، ٢/١٤٤٧، الرقم: ٤٣٢٨، والنسائى فى السنن الكبرى، ٦/٣١٧، الرقم: ١١٠٨٥، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٢/٤٣٨، الرقم: ١٠٤٢٨، ٩٦٤٧، ٢٢٨٧٧، وابن حبان فى الصحيح، ٢/٩١، الرقم: ٣٦٩، والحاكم فى المستدرك، ٢/٤٤٨، الرقم: ٣٥٤٩ـ ٣٥٥٠، وقال الحاكم: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحُ الإِسْنَادِ.

किसी आँख ने देखा है न किसी कान ने सुना है और न किसी फ़र्दे बशर के दिल में उनका ख़याल आया है। चाहते हो तो पढ़ो सो किसी को मालूम नहीं जो आँखों की ठंडक उनके लिए पोशीदा रखी गई है। यह उन (आमाले सालेहा) का बदला होगा जो वो करते रहे थे।''

٧٣٩ / ٧٧۔ عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ رضي الله عنه قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّ اللهَ عزوجل يَقُوْلُ لِأَهْلِ الْجَنَّةِ: يَا أَهْلَ الْجَنَّةِ؟ فَيَقُوْلُوْنَ: لَبَّيْکَ رَبَّنَا وَسَعْدَيْکَ، وَالْخَيْرُ فِي يَدَيْکَ، فَيَقُوْلُ: هَلْ رَضِيْتُمْ؟ فَيَقُوْلُوْنَ: وَمَا لَنَا لَا نَرْضَى يَا رَبِّ وَقَدْ أَعْطَيْتَنَا مَا لَمْ تُعْطِ أَحَدًا مِنْ خَلْقِکَ، فَيَقُوْلُ: أَلَا أُعْطِيْکُمْ أَفْضَلَ مِنْ ذٰلِکَ، فَيَقُوْلُوْنَ: يَا رَبِّ، وَأَيُّ شَيْءٍ أَفْضَلُ مِنْ ذٰلِکَ؟ فَيَقُوْلُ: أُحِلُّ عَلَيْکُمْ رِضْوَانِي؟ فَلَا أَسْخَطُ عَلَيْکُمْ بَعْدَهُ أَبَدًا.

مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अबू सईद ख़ुदरी رضي الله عنه रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः अल्लाह عزوجل जन्नतियों से फरमाएगाः ऐ जन्नतियों! वो कहेंगे, ऐ हमारे परवरदिगार! हम तेरे हुक्म के सामने बार–बार सरे तस्लीम ख़म करके दोहरी सआदत चाहते हैं और हर क़िस्म की भलाई तेरे इख़्तियार में है तो अल्लाह तआला फरमाएगा 'क्या तुम ख़ुश हो?' वो कहेंगे ऐ रब! हम ख़ुश क्यों न हों तूने हमें वो कुछ अता किया है जो मख़्लूक़ में से किसी को नहीं दिया। अल्लाह तआला फरमाएगाः क्या मैं तुम्हें इससे बेहतर न अता करूं, वो कहेंगे, इससे बेहतर क्या हो सकता है। अल्लाह तआला फरमाएगाः मैंने अपनी रज़ा व ख़ुशनूदी तुम्हें दे दी, आज के बाद मैं तुम पर कभी नाराज़ नहीं होऊँगा।''

الحديث رقم ٧٧: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: الرقاق، باب: صفة الجنة والنار، ٥/٢٣٩٨، الرقم: ٦١٨٣، وفى كتاب: التوحيد، باب: كلام الرب مع أهل الجنة، ٦/٢٧٣٢، الرقم: ٧٠٨٠، ومسلم فى الصحيح، كتاب: الجنة وصفة نعيمها، باب: إحلال الرضوان على أهل الجنة، ٤/٢١٧٦، الرقم: ٢٨٢٩، والترمذي فى السنن، كتاب: صفة الجنة عن رسول الله ﷺ، باب: (١٨)، والنسائى فى السنن الكبرى، ٤/٤١٦، الرقم: ٧٧٤٩، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٣/٨٨، الرقم: ١١٨٥٣، وابن حبان فى الصحيح، ١٦/٤٧٠، الرقم: ٧٤٤٠، وابن المبارك فى الزهد، ١/١٢٩، الرقم: ٤٣٠، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٤/٣١٣، الرقم: ٥٧٥٠۔

٧٤٠ / ٧٨۔ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: إِنَّ فِي الْجَنَّةِ لَسُوْقًا يَأْتُوْنَهَا كُلَّ جُمُعَةٍ فَتَهُبُّ رِيْحُ الشِّمَالِ فَتَحْثُوْ فِي وُجُوْهِهِمْ وَثِيَابِهِمْ. فَيَزْدَادُوْنَ حُسْنًا وَجَمَالًا، فَيَرْجِعُوْنَ إِلَى أَهْلِيْهِمْ وَقَدِ ازْدَادُوْا حُسْنًا وَجَمَالاً. فَيَقُوْلُ لَهُمْ أَهْلُوْهُمْ: وَاللهِ، لَقَدِ ازْدَدْتُمْ بَعْدَنَا حُسْنًا وَجَمَالًا. فَيَقُوْلُوْنَ: وَأَنْتُمْ، وَاللهِ لَقَدْ ازْدَدْتُمْ بَعْدَنَا حُسْنًا وَجَمَالًا.

رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَالدَّارِمِيُّ.

''हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जन्नत में एक ऐसा बाज़ार है जिसमें लोग हर जुम्आ के रोज़ आएंगे। शिमाली जानिब से हवा चलेगी और उनके कपड़ों और चेहरों पर लगेगी जिससे उनका हुस्नो जमाल बढ़ जाएगा। जब वो अपने घर वालों के पास वापस जाएंगे तो उनका हुस्नो जमाल बढ़ा हुआ देख कर वो कहेंगेः अल्लाह की क़सम! हमसे दूर जा कर तुम्हारा हुस्नो जमाल बढ़ गया है और यह उनसे कहेंगे कि अल्लाह तआला की क़सम हमारे बाद तुम्हारा भी हुस्नो जमाल बढ़ गया है।''

٧٤١ / ٧٩۔ عَنْ صُهَيْبٍ ﷺ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: إِذَا دَخَلَ أَهْلُ الْجَنَّةِ الْجَنَّةَ، قَالَ: يَقُوْلُ اللهُ ﷻ: تُرِيْدُوْنَ شَيْئًا أَزِيْدُكُمْ؟ فَيَقُوْلُوْنَ: أَلَمْ تُبَيِّضْ وُجُوْهَنَا؟ أَلَمْ تُدْخِلْنَا الْجَنَّةَ وَتُنَجِّنَا مِنَ النَّارِ؟ قَالَ: فَيُكْشِفُ الْحِجَابَ

الحديث رقم ٧٨: أخرجه مسلم فى الصحيح، كتاب: صفة الجنة ونعيمها، باب: فى سوق الجنة وما ينالون فيها من النعيم والجمال، ٤ / ٢١٧٨، الرقم: ٢٨٣٣، والدارمى فى السنن، ٢ / ٤٣٦، الرقم: ٢٨٤١، وابن المبارك فى الزهد، ١ / ٥٢٤، الرقم: ١٤٩١، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٤ / ٣٠١، الرقم: ٥٧٢٧۔

الحديث رقم ٧٩: أخرجه مسلم فى الصحيح، كتاب: الإيمان، باب: إثبات رؤية المؤمنين فى الآخرة ربهم، ١ / ١٦٣، الرقم: ١٨١، والترمذي فى السنن، كتاب: تفسير القرآن عن رسول الله ﷺ، باب: ومن سورة يونس، ٥ / ٢٨٦، الرقم: ٣١٠٥، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٤ / ٣٣٢، وعبد الله بن أحمد فى السنة، ١ / ٢٤٥، الرقم: ٤٤٩، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٤ / ٣٠٩، الرقم: ٥٧٤٤۔

فَمَا أُعْطُوْا شَيْئًا أَحَبَّ إِلَيْهِمْ مِنَ النَّظَرِ إِلَى رَبِّهِمْ ﷻ ثُمَّ تَلاَ هَذِهِ الآيَةَ: ﴿لِلَّذِيْنَ أَحْسَنُوا الْحُسْنَى وَ زِيَادَةٌ﴾ [يونس، ١٠:٢٦].

رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَالتِّرْمِذِيُّ وَأَحْمَدُ.

''हज़रत सुहैब ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जब जन्नती जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे अल्लाह ﷻ फरमाएगाः तुम कुछ और चाहते हो तो मैं तुम्हें दूँ, वो अ़र्ज़ करेंगे (ऐ हमारे रब) क्या तूने हमारे चेहरे मुनव्वर नहीं कर दिए? क्या तूने हमें जन्नत में दाख़िल नहीं कर दिया और हमें दोज़ख़ से नज़ात नहीं दी? फरमायाः उसके बाद अल्लाह तआ़ला पर्दा उठा देगा उन्हें अपने परवरदिगार से बेहतर कोई चीज़ नहीं मिली होगी। फिर आप ﷺ ने यह आयत तिलावत फरमाईः 'ऐसे लोगों के लिए जो नेक काम करते हैं नेक जज़ा है' (बल्कि इस पर भी इज़ाफ़ा है)।''

٧٤٢ / ٨٠. عَنْ سَعِيْدِ بْنِ الْمُسَيِّبِ أَنَّهُ لَقِيَ أَبَا هُرَيْرَةَ ﷺ فَقَالَ أَبُوْ هُرَيْرَةَ ﷺ: أَسْأَلُ اللهَ أَنْ يَجْمَعَ بَيْنِي وَبَيْنَكَ فِي سُوْقِ الْجَنَّةِ، فَقَالَ سَعِيْدٌ: أَوَ فِيْهَا سُوْقٌ؟ قَالَ: نَعَمْ أَخْبَرَنِي رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: أَنَّ أَهْلَ الْجَنَّةِ إِذَا دَخَلُوْهَا نَزَلُوْا فِيْهَا بِفَضْلِ أَعْمَالِهِمْ، فَيُؤْذَنُ لَهُمْ فِي مِقْدَارِ يَومِ الْجُمُعَةِ مِنْ أَيَّامِ الدُّنْيَا فَيَزُوْرُوْنَ رَبَّهُمْ، وَ يُبْرِزُ لَهُمْ عَرْشَهُ.

قَالَ أَبُوهُرَيْرَةَ: قُلْتُ: يَا رَسُوْلَ اللهِ، وَهَلْ نَرَى رَبَّنَا؟ قَالَ: نَعَمْ، هَلْ تَتَمَارَوْنَ فِي رُؤْيَةِ الشَّمْسِ وَالْقَمَرِ لَيْلَةَ الْبَدْرِ قُلْنَا: لَا، قَالَ: كَذَلِكَ لَا تَتَمَارَوْنَ فِي رُؤْيَةِ رَبِّكُمْ ﷻ وَلَا يَبْقَى فِي ذَلِكَ الْمَجْلِسِ

الحديث رقم ٨٠: أخرجه الترمذى، كتاب: صفة الجنة عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء فى سوق الجنة، ٤ / ٦٨٥، الرقم: ٢٥٤٩، وابن ماجه فى السنن، كتاب: الزهد، باب: صفة الجنة، ٢ / ١٤٥٠، الرقم: ٤٣٣٦، وابن حبان فى الصحيح، ١٦ / ٤٦٤ـ ٤٦٧، الرقم: ٧٤٣٧، وابن أبى عاصم فى السنة، ١ / ٢٥٨، الرقم: ٥٨٥ـ ٥٨٦، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٤ / ٣٠١، الرقم: ٥٧٢٨ـ

رَجُلٌ إِلَّا حَاضَرَهُ اللهُ مُحَاضَرَةً......

ثُمَّ نَنْصَرِفُ إِلَى مَنَازِلِنَا، فَيَتَلَقَّانَا أَزْوَاجُنَا فَيَقُلْنَ: مَرْحَبًا وَأَهْلًا لَقَدْ جِئْتَ وَإِنَّ بِكَ مِنَ الْجَمَالِ وَالطِّيبِ أَفْضَلُ مِمَّا فَارَقْتَنَا عَلَيْهِ، فَيَقُولُ: إِنَّا جَالَسْنَا الْيَوْمَ رَبَّنَا الْجَبَّارَ (ﷻ)، وَيَحِقُّ لَنَا أَنْ نَنْقَلِبَ بِمِثْلِ مَا انْقَلَبْنَا.

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَه وَابْنُ حِبَّانَ.

''हज़रत सईद बिन मुसय्यिब ﷺ से रिवायत है कि उनकी मुलाक़ात हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से हुई तो उन्होंने फरमायाः मैं अल्लाह तआला से दुआ करता हूँ कि अल्लाह तआला मुझे आपको जन्नत के बाज़ार में इकट्ठा कर दे। सईद कहने लगेः क्या जन्नत में कोई बाज़ार भी हैं? उन्होंने कहाः हाँ। मुझे रसूलुल्लाह ﷺ ने बताया है कि जब जन्नती जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे तो वो अपने आ'माल की बरतरी के लिहाज़ से मर्तबे हासिल करेंगे। दुनिया के जुम्आ के दिन के बराबर उन्हें इजाज़त दी जाएगी कि वो अल्लाह तआला का दीदार करेंगे और वो उनके लिए अपना अ़र्श ज़ाहिर करेगा ....।''

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ ने कहा कि मैंने अ़र्ज़ कियाः या रसूलल्लाह! क्या हम अपने परवरदिगार का दीदार करेंगे ? आप ﷺ ने फरमायाः हाँ क्या तुम सूरज और चौहदवीं के चाँद को देखने में कोई शक करते हो ? हमने अ़र्ज़ कियाः नहीं। आप ﷺ ने फरमायाः इसी तरह तुम अपने परवरदिगार के दीदार में कोई शक नहीं करोगे। उस महफ़िल में कोई ऐसा शख्स नहीं होगा जिससे अल्लाह तआला बराहे रास्त गुफ़्तगू न फरमाए .....।''

''उन्होंने कहा कि फिर हम अपने घरों में आ जाएंगे हमारी बीवियां हमारा इस्तक़बाल करेंगी और कहेंगीः ख़ुश आमदीद, ख़ुश आमदीद, तुम वापस आए हो तो तुम्हारा हुस्नो जमाल हमसे जुदा होते वक़्त से बढ़ गया है। वो कहेगा आज हमारी मजलिस हमारे रब्बे जब्बार से हुई है। हम इसी (ख़ूबसूरत) शक्लो सूरत में तब्दील होने के हक़दार थे।''

٧٤٣ / ٨١۔ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ:

الحديث رقم ٨١: أخرجه أحمد بن حنبل فى المسند، ٢/٣٦٢، والطبرانى فى ـــــ

إِنَّ اللهَ ﷻ أَحَاطَ حَائِطَ الْجَنَّةِ لَبِنَةً مِنْ ذَهَبٍ وَلَبِنَةً مِنْ فِضَّةٍ ثُمَّ شَقَّقَ فِيْهَا الْأَنْهَارَ وَغَرَسَ الْأَشْجَارَ فَلَمَّا نَظَرَتِ الْمَلَائِكَةُ إِلَى حُسْنِهَا قَالَتْ: طُوْبَى لَكِ مَنَازِلَ الْمُلُوْكِ. رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ وَالْبَزَّارُ وَأَحْمَدُ مُخْتَصَرًا.

''हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ से रिवायत है हुज़ूर नबी—ए—अकरम ﷺ ने फरमायाः अल्लाह ﷻ ने जन्नत की बैरूनी (बाहरी) दीवार इस तरह बनाई है कि उसकी एक ईंट सोने की है और एक चाँदी की। फिर उसमें नहरें चलाईं और दरख़्त लगाए। जब फ़रिश्तों ने इसकी ख़ूबसूरती को देखा तो उन्होंने कहाः 'ऐ (रूहानियत और विलायत के) बादशाहों की जाए क़रार! तुझे मुबारक हो।''

٧٤٤/٨٢ـ عَنْ حُذَيْفَةَ ﷺ في رواية طويلة قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: فَيَكُونُ أَوَّلُ مَا يَسْمَعُوْنَ مِنْهُ أَنْ يَقُوْلَ أَيْنَ عِبَادِيَ الَّذِيْنَ أَطَاعُوْنِي بِالْغَيْبِ وَلَمْ يَرَوْنِي وَصَدَّقُوْا رُسُلِي وَاتَّبَعُوْا امْرِي فَسَلُوْنِي فَهَذَا يَوْمُ الْمَزِيْدِ قَالَ: فَيَجْتَمِعُوْنَ عَلَى كَلِمَةٍ وَاحِدَةٍ رَبِّ! رَضِيْنَا عَنْكَ فَارْضَ عَنَّا قَالَ: فَيَرْجِعُ اللهُ تَعَالَى فِي قَوْلِهِمْ أَنْ يَا أَهْلَ الْجَنَّةِ إِنِّي لَوْ لَمْ أَرْضَ عَنْكُمْ لَمَا أَسْكَنْتُكُمْ جَنَّتِي فَسَلُونِي فَهَذَا يَوْمُ الْمَزِيْدِ قَالَ: فَيَجْتَمِعُوْنَ عَلَى كَلِمَةٍ وَاحِدَةٍ رَبِّ وَجْهَكَ أَرِنَا نَنْظُرُ إِلَيْهِ قَالَ: فَكَشَفَ اللهُ تَبَارَكَ وَ

.... المعجم الأوسط، ٣/٧٤، الرقم: ٢٥٣٢، والحميدى مختصرا فى المسند، ٢/٤٨٦، الرقم: ١١٥٠، والبزار فى المسند، ٤/١٨٩، والهيثمى فى مجمع الزوائد، ١٠/٣٩٧، وقال: رواه البزار مرفوعا وموقوفا، والطبراني في الأوسط ورجال الموقوف رجال الصحيح، والديلمى فى مسند الفردوس، ١/١٧٨، الرقم: ٦٦٤: ٢/١١٥، الرقم: ٢٦٠٥، وابن المبارك فى الزهد، ١/٥١٢، الرقم: ١٤٥٧، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٤/٢٨٢، الرقم: ٥٦٥٠. وقال: أخرجه البيهقى.

الحديث رقم ٨٢: أخرجه البزار فى المسند، ٧/٢٨٨، الرقم: ٢٨٨١، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٤/٣١١، الرقم: ٥٧٤٨، والهيثمى فى مجمع الزوائد، ١٠/٤٢٢.

تَعَالٰی تِلْکَ الْحُجُبَ وَيَتَجَلّٰى لَهُمْ شَيْءٌ لَوْ لَا أَنَّهُ قَضٰى عَلَيْهِمْ أَنْ لَا يَحْتَرِقُوْا لَاحْتَرَقُوْا مِمَّا غَشِيَهُمْ مِنْ نُوْرِهٖ فَيَغْشَاهُمْ مِنْ نُوْرِهٖ.

قَالَ: فَيَرْجِعُوْنَ إِلٰى مَنَازِلِهِمْ وَقَدْ خَفُوْا عَلٰى أَزْوَاجِهِمْ وَخَفِيْنَ عَلَيْهِمْ مِمَّا غَشِيَهُمْ مِنْ نُوْرِهٖ تبارك وتعالى فَإِذَا صَارُوْا إِلٰى مَنَازِلِهِمْ تَرَادَّ النُّوْرُ وَأَمْكَنَ وَتَرَادَّ وَأَمْكَنَ حَتّٰى يَرْجِعُوْا إِلٰى صُوَرِهِمُ الَّتِي كَانُوْا عَلَيْهَا قَالَ: فَيَقُوْلُ لَهُمْ أَزْوَاجُهُمْ: لَقَدْ خَرَجْتُمْ مِنْ عِنْدِنَا عَلٰى صُوْرَةٍ وَ رَجَعْتُمْ عَلٰى غَيْرِهَا قَالَ: فَيَقُوْلُوْنَ: ذٰلِكَ بِأَنَّ اللهَ تَبَارَكَ وَتَعَالٰى تَجَلّٰى لَنَا فَنَظَرْنَا مِنْهُ إِلٰى مَا خَفِيْنَا بِهٖ عَلَيْكُمْ قَالَ: فَلَهُمْ فِي كُلِّ سَبْعَةِ أَيَّامِ الضِّعْفُ عَلٰى مَا كَانُوْا قَالَ: وَذٰلِكَ قَوْلُهُ ﷻ: ﴿فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَا أُخْفِيَ لَهُمْ مِنْ قُرَّةِ أَعْيُنٍ جَزَاءً بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝﴾[السجدة، ٣٢:١٧]. رَوَاهُ الْبَزَّارُ.

''हज़रत हुज़ैफ़ा ﷺ से एक तवील रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः अल्लाह तआला की तरफ़ से जो सबसे पहली बात सुनेंगे वो यह होगी कि अल्लाह तआला फरमाएगाः मेरे वो बन्दे कहाँ है जिन्होंने मुझे देखे बग़ैर मेरी इताअत की और मेरे रसूलों की तस्दीक़ की और मेरा हुक्म माना? तुम मुझसे माँगो यह यौमुल मज़ीद (यानी मेरे लुत्फ़ो करम की बे बहा बारिशों का दिन) है। वो तमाम लोग एक बात पर इत्तेफ़ाक़ करेंगे कि ऐ रब! हम तुझसे ख़ुश हैं, तू हमसे ख़ुश हो जा। अल्लाह तआला उनसे दुबारा फरमाएगा! ऐ जन्नतियों अगर मैं तुमसे राज़ी न होता तो मैं तुम्हें जन्नत में न ठहराता, तुम मुझसे माँगो यह यौमुल मज़ीद है वो एक आवाज़ हो कर कहेंगेः ऐ रब हमें अपना चेहरा–ए–अनवर दिखा, हम तेरा दीदार कर लें। अल्लाह तआला वो पर्दे उठा देगा और उनके सामने एक चीज़ जलवा अफ़रोज़ होगी अगर अल्लाह तआला ने उनके मुतअल्लिक़ यह फैसला न किया होता कि वो जलेंगे नहीं तो वो उसके नूर की वजह से जल भी जाएं, उसके बाद उसका नूर उन पर साया फ़िगन हो जाएगा।''

''वो अपने ठिकानों की तरफ़ आ जाएंगे अल्लाह तबारक–व–तआला की तरफ़ से

हासिल होने वाले नूर से उनकी बीवियाँ उनके मुतअ़ल्लिक़ ला इल्म होंगी और वो उनके मुतअ़ल्लिक़ ला इल्म होंगे। जब वो घर पहुँचेंगे तो नूर बढ़ता जाएगा और पुख़्ता होता जाएगा। यहाँ तक कि वो अपनी उन शक्लों की तरफ़ लौट आएंगे जिनमें वो पहले थे, उनकी बीवियाँ उनसे कहेंगी तुम जिस शक्लो सूरत में हमारे यहाँ से गए थे उसके अ़लावा शक्लो सूरत में वापस हुए। वो कहेंगे उसकी वजह यह है कि अल्लाह तबारक–व–तआला हमारे सामने जलवा अफ़रोज़ हुआ और हमने उसका दीदार किया तो हमारी शक्लें तुमसे मख़्फ़ी (पोशीदा) रह गईं। आप ﷺ ने फरमायाः हर सात दिन में उन्हें इससे दोगुना (दीदार) नसीब होगा और यही बात अल्लाह तआला के फरमान में है : सो किसी को मालूम नहीं जो आँखों की ठंडक उनके लिए पोशीदा रखी गई है, यह उन (आ़माले सालेहा) का बदला होगा जो वो करते रहे थे।''

बाब 11 : اَلْبَابُ الْحَادِي عَشَرَ:

اَلْمُعْجِزَاتُ وَالْكَرَامَاتُ

मु'जिज़ात और करामात

1. فَصْلٌ فِي مُعْجِزَاتِ النَّبِيِّ ﷺ

﴾हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के मु'जिज़ात का बयान﴿

2. فَصْلٌ فِي كَرَامَاتِ الْأَوْلِيَاءِ وَالصَّالِحِيْنَ رضي الله عنهم

﴾औलिया और सालेहीन رضي الله عنهم की करामात﴿

فَصْلٌ فِي مُعْجِزَاتِ النَّبِيِّ ﷺ

हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के मु'जिज़ात का बयान

١/٧٤٥۔ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُودٍ رضي الله عنه قَالَ: انْشَقَّ الْقَمَرُ عَلَى عَهْدِ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ فِلْقَتَيْنِ. فَسَتَرَ الْجَبَلُ فِلْقَةً وَكَانَتْ فِلْقَةٌ فَوْقَ الْجَبَلِ. فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اللّٰهُمَّ اشْهَدْ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ وَ هَذَا لَفْظُ مُسْلِمٍ.

وفي رواية: عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رضي الله عنه أَنَّ أَهْلَ مَكَّةَ سَأَلُوْا رَسُوْلَ اللهِ ﷺ أَنْ يُرِيَهُمْ آيَةً، فَأَرَاهُمُ انْشِقَاقَ الْقَمَرِ مَرَّتَيْنِ.

مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ وَهَذَا لَفْظُ مُسْلِمٍ.

''हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद رضي الله عنه रिवायत करते हैं कि चाँद के दो टुकड़े होने का वाक़िया हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के ज़मानए मुबारक में पेश आया। एक टुकड़ा पहाड़ में

الحديث رقم ١: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: المناقب، باب: سؤال المشركين أن يريهم النبي ﷺ آية، فأراهم انشقاق القمر، ٣/١٣٣٠، الرقم: ٣٤٣٧-٣٤٣٩، وفى كتاب: التفسير/القمر، باب: وَانْشَقَّ الْقَمَرُ: وَإِنْ يَرَوْا آيَةً يُعْرِضُوْا، [٢،١]، ٤/١٨٤٣، الرقم: ٤٥٨٣-٤٥٨٧، ومسلم فى الصحيح، كتاب: صفات المنافقين وأحكامهم، باب: انشقاق القمر، ٤/٢١٥٨-٢١٥٩، الرقم: ٢٨٠٠-٢٨٠١، والترمذى فى السنن، كتاب: تفسير القرآن عن رسول الله ﷺ، باب: من سورة القمر، ٥/٣٩٨، الرقم: ٣٢٨٥-٣٢٨٩، والنسائى فى السنن الكبرى، ٦/٤٧٦، الرقم: ١٥٥٢-١٥٥٣، وأحمد بن حنبل فى المسند، ١/٣٧٧، الرقم: ٣٥٨٣، ٣٩٢٤، ٤٣٦٠، وابن حبان فى الصحيح، ٤/٤٢٠، الرقم: ٦٤٩٥، والحاكم فى المستدرك، ٢/٥١٣، الرقم: ٣٧٥٨-٣٧٦١، وَ قَالَ الْحَاكِمُ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحٌ۔ والبزار فى المسند، ٥/٢٠٢، الرقم: ١٨٠١-١٨٠٢، وأبويعلى فى المسند، ٥/٣٠٦، الرقم: ٢٩٢٩، والطبرانى فى المعجم الكبير، ٢/١٣٢، الرقم: ١٥٥٩-١٥٦١، والطيالسى فى المسند، ١/٣٧، الرقم: ٢٨٠، والشاشى فى المسند، ١/٤٠٢، الرقم: ٤٠٤۔

छुप गया और एक टुकड़ा ऊपर था तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमायाः ऐ अल्लाह तआला तू गवाह रहना।''

''और हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ से मरवी एक रिवायत में है कि अहले मक्का ने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ से मो'जिज़ा दिखाने का मुतालबा किया तो आप ﷺ ने उन्हें दो मर्तबा चाँद के दो टुकड़े कर के दिखाए।''

٧٤٦/٢۔ عَنْ أَنَسٍ ﷺ أَنَّ رَجُلًا جَاءَ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ يَوْمَ الْجُمُعَةِ وَهُوَ يَخْطُبُ بِالْمَدِيْنَةِ، فَقَالَ: قَحَطَ الْمَطَرُ، فَاسْتَسْقِ رَبَّکَ. فَنَظَرَ إِلَى السَّمَاءِ وَمَا نَرَى مِنْ سَحَابٍ، فَاسْتَسْقَى، فَنَشَأَ السَّحَابُ بَعْضُهُ إِلَى بَعْضٍ، ثُمَّ مُطِرُوْا حَتَّى سَالَتْ مَثَاعِبُ الْمَدِيْنَةِ، فَمَا زَالَتْ إِلَى الْجُمُعَةِ الْمُقْبِلَةِ مَا تُقْلِعُ، ثُمَّ قَامَ ذٰلِکَ الرَّجُلُ أَوْ غَيْرُهُ وَالنَّبِيُّ ﷺ يَخْطُبُ، فَقَالَ: غَرِقْنَا، فَادْعُ رَبَّکَ يَحْبِسْهَا عَنَّا، فَضَحِکَ ثُمَّ قَالَ: اللّٰهُمَّ حَوَالَيْنَا وَلَا عَلَيْنَا. مَرَّتَيْنِ أَوْ ثَلَاثًا، فَجَعَلَ السَّحَابُ يَتَصَدَّعُ عَنِ الْمَدِيْنَةِ يَمِيْنًا وَشِمَالًا، يُمْطَرُ مَا حَوَالَيْنَا وَلَا يُمْطَرُ مِنْهَا شَيْءٌ، يُرِيْهِمُ اللهُ کَرَامَةَ نَبِيِّهِ ﷺ وَإِجَابَةَ دَعْوَتِهِ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अनस ﷺ रिवायत करते हैं कि एक शख़्स हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की

الحديث رقم ٢: أخرجه البخاری فی الصحيح، کتاب: الأدب، باب: التبسم والضحك، ٥/٢٢٦١، الرقم: ٥٧٤٢، وفی کتاب: الدعوات، باب: الدعاء غير مستقبل القبلة، ٥/٢٣٣٥، الرقم: ٥٩٨٢، وفی کتاب: الجمعة، باب: الاستسقاء فی الخطبة يوم الجمعة، ١/٣١٥، الرقم: ٨٩١، وفی کتاب: الاستسقاء، باب: الاستسقاء فی المسجد الجامع، ١/٣٤٣، الرقم: ٩٦٧، وفی باب: الاستسقاء فی خطبة مستقبل القبلة، ١/٣٤٤، الرقم: ٩٦٨، وفی باب: إذا استشفع المشرکون بالمسلمين عند القحط، ١/٣٤٦، الرقم: ٩٧٤، وفی باب: من تمطر فی المطر حتی يتحادر علی لحيته، ١/٣٤٩، الرقم: ٩٨٦، وفی کتاب: المناقب، باب: علامات النبوة فی الإسلام، ٣/١٣١٣، الرقم: ٣٣٨٩، ومسلم فی الصحيح، کتاب: الاستسقاء، باب: الدعاء فی الاستسقاء، ٢/٦١٢-٦١٤، الرقم: ٨٩٧، وأبوداود فی السنن، کتاب: ←

ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हुआ। आप ﷺ मदीना मुनव्वरा में जुमा का ख़ुत्बा इर्शाद फरमा रहे थे। उसने अ़र्ज़ किया (या रसूलल्लाह!) बारिश न होने के बाइस क़हत पड़ गया है, लिहाज़ा अपने रब से बारिश माँगिए, तो आप ﷺ ने आसमान की तरफ़ निगाह उठाई और हमें कोई बादल नज़र नहीं आ रहा था। आप ﷺ ने बारिश माँगी तो फ़ौरन बादलों के टुकड़े आ कर आपस में मिलने लगे फिर बारिश होने लगी यहाँ तक कि मदीना मुनव्वरा की गलियाँ बह निकलीं और बारिश बराबर अगले जुमे तक होती रही। फिर वही या कोई दूसरा शख़्स खड़ा हुआ और अ़र्ज़ किया जबकि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ख़ुत्बा इर्शाद फरमा रहे थे (या रसूलल्लाह!) हम तो ग़र्क़ होने लगे अपने रब से दुआ कीजिए कि इस बारिश को हमसे रोक दे। आप ﷺ मुस्कुराए और दुआ कीः ऐ अल्लाह! हमारे इर्द गिर्द बरसा और हमारे ऊपर न बरसा ऐसा दो या तीन मर्तबा फरमाया, सो बादल छटने लगे, मदीना मुनव्वरा के दाएँ–बाएँ जानिब जाने लगे चुनांचे हमारे इर्द–गिर्द (खेतियों और फ़सलों पर) बारिश होने लगी। हमारे ऊपर बंद हो गई यूं ही अल्लाह तआला अपने नबी की बरकत और उनकी क़ुबूलियते दुआ दिखाता है।''

٣/٧٤٧۔ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَبَّاسٍ رضي الله عنهما قَالَ: خَسَفَتِ الشَّمْسُ

...... صلاة الاستسقاء، باب: رفع اليدين فى الاستسقاء، ١/٣٠٤، الرقم: ١١٧٤، والنسائى فى السنن، كتاب: الاستسقاء، باب: كيف يرفع، ٣/١٥٩-١٦٦، الرقم: ١٥١٥، ١٥١٧، ١٥٢٧-١٥٢٨، وابن ماجه فى السنن، كتاب: إقامة الصلاة والسنة فيها، باب: ماجاء فى الدعاء فى الاستسقاء، ١/٤٠٤، الرقم: ١٢٦٩، والنسائى فى السنن الكبرى، ١/٥٥٨، الرقم: ١٨١٨، وابن الجارود فى المنتقى، ١/٧٥، الرقم: ٢٥٦، وابن خزيمة فى الصحيح، ٢/٣٣٨، الرقم: ١٤٢٣، وابن حبان فى الصحيح، ٣/٢٧٢، الرقم: ٩٩٢، وعبد الرزاق فى المصنف، ٣/٩٢، الرقم: ٤٩١١، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٣/١٠٤، الرقم: ١٢٠٣٨، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٣/٢٢١، الرقم: ٥٦٣٠، وابن أبى شيبة فى المصنف، ٦/٢٨، الرقم: ٢٩٢٢٥، والطحاوى فى شرح معانى الآثار، ١/٣٢١، والطبرانى فى المعجم الأوسط، ١/١٨٧، الرقم: ٥٩٢، وفى المعجم الكبير، ١٠/٢٨٥، الرقم: ١٠٦٧٣، وأبويعلى فى المسند، ٦/٨٢، الرقم: ٣٣٣٤۔

الحديث رقم ٣: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: صفة الصلاة، باب: رفع البصر إلى الإمام فى الصلاة، ١/٢٦١، الرقم: ٧١٥، وفى كتاب: الكسوف، باب: صلاة ←

عَلَى عَهْدِ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ فَصَلَّى، قَالُوْا: يَا رَسُوْلَ اللهِ، رَأَيْنَاكَ تَنَاوَلُ شَيْئًا فِي مَقَامِكَ، ثُمَّ رَأَيْنَاكَ تَكَعْكَعْتَ؟ فَقَالَ: إِنِّي أُرِيْتُ الْجَنَّةَ، فَتَنَاوَلْتُ مِنْهَا عُنْقُوْدًا، وَلَوْ أَخَذْتُهُ لَأَكَلْتُمْ مِنْهُ مَا بَقِيَتِ الدُّنْيَا.

مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رضی اللہ عنہما फरमाते हैं कि (एक मर्तबा) हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के ज़मानए मुबारक में सूरज ग्रहण हुआ और आप ﷺ ने नमाज़े कुसूफ़ पढ़ाई। सहाबा किराम ﷺ ने अ़र्ज़ कियाः या रसूलल्लाह ﷺ! हमने देखा कि आपने अपनी जगह पर खड़े–खड़े कोई चीज़ पकड़ी फिर हमने देखा कि आप किसी क़द्र पीछे हट गए हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः मुझे जन्नत नज़र आई थी मैंने उस से एक ख़ूशा (गुच्छा) पकड़ लिया अगर उसे तोड़ लेता तो तुम रहती दुनिया तक उसे खाते रहते (और वो ख़त्म न होता)।''

٧٤٨ / ٤۔ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رضي الله عنهما قَالَ: عَطِشَ النَّاسُ يَوْمَ الْحُدَيْبِيَةِ، وَالنَّبِيُّ ﷺ بَيْنَ يَدَيْهِ رِكْوَةٌ فَتَوَضَّأَ، فَجَهِشَ النَّاسُ نَحْوَهُ، فَقَالَ:

.... الكسوف جماعة، ١/٣٥٧، الرقم: ١٠٠٤، وفي كتاب: النكاح، باب: كفران العشير، ٥/١٩٩٤، الرقم: ٤٩٠١، ومسلم في الصحيح، كتاب: الكسوف، باب: ما عرض على النبي ﷺ في صلاة الكسوف من أمر الجنة والنار، ٢/٦٢٧، الرقم: ٩٠٤، والنسائي في السنن، كتاب: الكسوف، باب: قدر قراءة في صلاة الكسوف، ٣/١٤٧، الرقم: ١٤٩٣، وفي السنن الكبرى، ١/٥٧٨، الرقم: ١٨٧٨، ومالك في الموطأ، ١/١٨٦، الرقم: ٤٤٥، وأحمد بن حنبل في المسند، ١/٢٩٨، الرقم: ٢٧١١، ٣٣٧٤، وابن حبان في الصحيح، ٧/٧٣، الرقم: ٢٨٣٢، ٢٨٥٣، وعبد الرزاق في المصنف، ٣/٩٨، الرقم: ٤٩٢٥، والبيهقي في السنن الكبرى، ٣/٣٢١، الرقم: ٦٠٩٦، والشافعي في السنن المأثورة، ١/١٤٠، الرقم: ٤٧۔

الحديث رقم ٤: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: المناقب، باب: علامات النبوة في الإسلام، ٣/١٣١٠، الرقم: ٣٣٨٣، وفي كتاب: المغازي، باب: غزوة الحديبية، ٤/١٥٢٦، الرقم: ٣٩٢١-٣٩٢٣، وفي كتاب: الأشربة، باب: شرب البركة والماء المبارك، ٥/٢١٣٥، الرقم: ٥٣١٦، وفي كتاب: التفسير/الفتح، باب: إِذْ يُبَايِعُوْنَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ: (١٨)، ٤/١٨٣١، الرقم: ٤٥٦٠، وأحمد بن ـــــ

مَالَكُمْ؟ قَالُوْا: لَيْسَ عِنْدَنَا مَاءٌ نَتَوَضَّأُ وَلَا نَشْرَبُ إِلَّا مَابَيْنَ يَدَيْكَ، فَوَضَعَ يَدَهُ فِي الرِّكْوَةِ، فَجَعَلَ الْمَاءُ يَثُوْرُ بَيْنَ أَصَابِعِهِ كَأَمْثَالِ الْعُيُوْنِ، فَشَرِبْنَا وَتَوَضَّأْنَا قُلْتُ: كَمْ كُنْتُمْ؟ قَالَ: لَوْكُنَّا مِائَةَ أَلْفٍ لَكَفَانَا، كُنَّا خَمْسَ عَشْرَةَ مِائَةً. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ وَأَحْمَدُ.

''हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رضی اللہ عنہما फरमाते हैं कि हुदैबिया के दिन लोगों को प्यास लगी हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के सामने पानी की एक छागल (मिट्टी का बर्तन जिसमें मुसाफिर पानी भरते हैं) रखी हुई थी आप ﷺ ने उससे वुज़ू फरमाया। लोग आप ﷺ की तरफ़ झपटे तो आप ﷺ ने फरमायाः तुम्हें क्या हुआ है, सहाबा किराम رضی اللہ عنہم ने अ़र्ज़ कियाः या रसूलल्लाह! हमारे पास न वुज़ू के लिए पानी है न पीने के लिए सिर्फ यही पानी है जो आपके सामने रखा है। हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने (यह सुनकर) मुबारक हाथ छागल के अन्दर रखा तो फ़ौरन चश्मों की तरह पानी उंगलियों के दरमियान से जोश मार कर निकलने लगा चुनांचे हम सबने (खूब पानी) पिया और वुज़ू भी कर लिया (सालिम रावी कहते हैं) मैंने हज़रत जाबिर رضی اللہ عنہ से पूछाः उस वक़्त आप कितने आदमी थे ? उन्होंने कहाः अगर हम एक लाख भी होते तब भी वो पानी सबके लिए काफ़ी हो जाता जबकि हम तो पन्द्रह सौ थे।''

٧٤٩ / ٥. عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رضي الله عنهما أَنَّ امْرَأَةً مِنَ الْأَنْصَارِ،

.... حنبل فى المسند، ٣ / ٣٢٩، الرقم: ١٤٥٦٢، وابن خزيمة فى الصحيح، ١ / ٦٥، الرقم: ١٢٥، وابن حبان فى الصحيح، ١٤ / ٤٨٠، الرقم: ٦٥٤٢، والدارمى فى السنن، ١ / ٢١، الرقم: ٢٧، وأبويعلى فى المسند، ٤ / ٨٢، الرقم: ٢١٠٧، والبيهقى فى الاعتقاد، ١ / ٢٧٢، وابن جعد فى المسند، ١ / ٢٩، الرقم: ٨٢.

الحديث رقم ٥: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: البيوع، باب: النجار، ٢ / ٣٧٨، الرقم: ١٩٨٩، وفى كتاب: المناقب، باب: علامات النبوة فى الإسلام، ٣ / ١٣١٤، الرقم: ٣٣٩١-٣٣٩٢، وفى كتاب: المساجد، باب: الاستعانة بالنجار والصناع فى أعواد المنبر والمسجد، ١ / ١٧٢، الرقم: ٤٣٨، والترمذى فى السنن، كتاب: المناقب عن رسول الله ﷺ، باب: (٦)، ٥ / ٥٩٤، الرقم: ٣٦٢٧، والنسائى فى السنن، كتاب: الجمعة، باب: مقام الإمام فى الخطبة، ٣ / ١٠٢، الرقم: ١٣٩٦، وابن ماجه فى السنن، كتاب: إقامة الصلاة والسنة فيها، باب: ماجاء فى بدء شأن ←

قَالَتْ لِرَسُوْلِ اللهِ ﷺ، يَا رَسُوْلَ اللهِ، أَ لَا أَجْعَلُ لَکَ شَيْئًا تَقْعُدُ عَلَيْهِ، فَإِنَّ لِي غُـلَامًا نَجَّارًا. قَالَ: إِنْ شِئْتِ قَالَ: فَعَمِلَتْ لَهُ الْمِنْبَرَ، فَلَمَّا کَانَ يَوْمُ الْجُمُعَةِ، قَعَدَ النَّبِيُّ ﷺ عَلَى الْمِنْبَرِ الَّذِي صُنِعَ فَصَاحَتِ النَّخْلَةُ الَّتِي کَانَ يَخْطُبُ عِنْدَهَا، حَتَّى کَادَتْ أَنْ تَنْشَقَّ، فَنَزَلَ النَّبِيُّ ﷺ حَتَّى أَخَذَهَا فَضَمَّهَا إِلَيْهِ، فَجَعَلَتْ تَئِنُّ أَنِيْنَ الصَّبِيِّ الَّذِي يُسَكَّتُ، حَتَّى اسْتَقَرَّتْ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ وَالتِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَه.

وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رضی اللہ عنہما फरमाते हैं कि एक अन्सारी औ़रत ने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की ख़िदमत में अ़र्ज़ कियाः या रसूलल्लाह! क्या मैं आपके तशरीफ़ फरमा होने के लिए कोई चीज़ न बनवां दूँ, क्योंकि मेरा गुलाम बढ़ई है? आप ﷺ ने फरमायाः अगर तुम चाहो तो (बनवा दो) उस औ़रत ने आप ﷺ के लिए एक मिम्बर बनवा दिया जुमा का दिन आया तो हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ उसी मिम्बर पर तशरीफ़ फरमा हुए जो तैयार किया गया था लेकिन (हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के तशरीफ़ रखने की वजह से) ख़जूर का वो तना जिससे टेक लगा कर आप ﷺ ख़ुत्बा इर्शाद फरमाते थे रसूलुल्लाह ﷺ के (हिज्रो फ़िराक में) चिल्ला कर रो पड़ा यहाँ तक कि फ़टने के करीब हो पड़ा यह देख कर हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ मिम्बर से उतर आए और खजूर के सुतून को गले से लगा लिया। सुतून उस बच्चे की तरह रोने लगा, जिसे थपकी दे कर चुप कराया जाता है यहाँ तक कि उसे सुकून आ गया।''

٧٥٠ /٦۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ قَالَ: أَتَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ، بِتَمَرَاتٍ،

المنبر، ١/٤٥٤، الرقم: ١٤١٤۔١٤١٧، وأحمد بن حنبل فی المسند، ٣/٢٢٦، والدارمی نحوه فی السنن، ١/٢٣، الرقم: ٤٢، وابن خزيمة فی الصحيح، ٣/١٣٩، الرقم: ١٧٧٦۔١٧٧٧، وعبد الرزاق فی المصنف، ٣/١٨٦، الرقم: ٥٢٥٣، وابن حبان فی الصحيح ١٤/٤٣،٤٨، الرقم: ٦٥٠٦، وأبويعلى فی المسند، ٦/١١٤، الرقم: ٣٣٨٤۔

الحديث رقم ٦: أخرجه الترمذی فی السنن، کتاب: المناقب عن رسول الله ﷺ، باب: مناقب لأبي هريرة ﷺ، ٥/٦٨٥، الرقم: ٣٨٣٩، وأحمد بن حنبل فی ←

فَقُلْتُ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! ادْعُ اللهَ فِيْهِنَّ بِالْبَرَكَةِ فَضَمَّهُنَّ ثُمَّ دَعَا لِي فِيْهِنَّ بِالْبَرَكَةِ، فَقَالَ: خُذْهُنَّ وَاجْعَلْهُنَّ فِي مِزْوَدِکَ هَذَا أَوْ فِي هَذَا الْمِزْوَدِ، كُلَّمَا أَرَدْتَ أَنْ تَأْخُذَ مِنْهُ شَيْئًا فَأَدْخِلْ فِيْهِ يَدَکَ فَخُذْهُ وَلَا تَنْثُرْهُ نَثْرًا، فَقَدْ حَمَلْتُ مِنْ ذَلِکَ التَّمْرِ كَذَا وَ كَذَا مِنْ وَسْقٍ فِي سَبِيْلِ اللهِ، فَكُنَّا نَأْكُلُ مِنْهُ وَنُطْعِمُ، وَكَانَ لَا يُفَارِقُ حِقْوِي حَتَّى كَانَ يَوْمُ قَتْلِ عُثْمَانَ رضي الله عنه فَإِنَّهُ انْقَطَعَ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَحْمَدُ وَابْنُ حِبَّانَ.

وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ.

''हज़रत अबू हुरैरा رضي الله عنه रिवायत फरमाते हैं कि मैं हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की ख़िदमत में कुछ खजूरें लेकर हाज़िर हुआ और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह ﷺ! इनमें अल्लाह तआला से बरकत की दुआ फरमाएँ। हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने उन्हें इकट्ठा किया और मेरे लिए उनमें दुआए बरकत फरमाई। फिर मुझे फरमायाः इन्हें ले लो और अपने उस तोशादान में रख दो और जब इन्हें लेना चाहो तो अपना हाथ उसमें डाल कर ले लिया करो उसे झाड़ना नहीं, सो मैंने उनमें से इतने–इतने (यानी कई) वसक (एक वसक दो सौ चालीस किलोग्राम के बराबर होता है) खजूरें अल्लाह तआला के रास्ते में खर्च कीं हम खुद उसमें से खाते और दूसरों को भी खिलाते कभी वो तोशादान मेरी कमर से जुदा न हुआ (यानी ख़जूरें खत्म न हुई) यहाँ तक कि जिस दिन हज़रत उस्मान رضي الله عنه शहीद हुए तो वो मुझसे कहीं गिर गया।''

٧٥١ / ٧. عَنْ عَبْدِ اللهِ رضي الله عنه قَالَ: كُنَّا نَعُدُّ الآيَاتِ بَرَكَةً، وَأَنْتُمْ تَعُدُّوْنَهَا

المسند، ٢/٣٥٢، الرقم: ٨٦١٣، وابن حبان فى الصحيح، ١٤/٤٦٧، الرقم: ٦٥٣٢، وابن راهوية فى المسند، ١/٧٥، الرقم: ٣، والهيثمى فى موارد الظمآن، ١/٥٢٧، الرقم: ٢١٥٠، وابن كثير فى البداية والنهاية، ٦/١١٧، والذهبى فى سير أعلام النبلاء، ٢/٢٣١، والسيوطى فى الخصائص الكبرى، ٢/٨٥.

الحديث رقم ٧: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: المناقب، باب: علامات النبوة فى الإسلام، ٣/١٣١٢، الرقم: ٣٣٨٦، والترمذى فى السنن، كتاب: المناقب عن رسول الله ﷺ، باب: (٦)، ٥/٥٩٧، الرقم: ٣٦٣٣، وأحمد بن حنبل فى ←

تَخْوِيْفًا، كُنَّا مَعَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ فِي سَفَرٍ، فَقَلَّ الْمَاءُ، فَقَالَ: اطْلُبُوا فَضْلَةً مِنْ مَاءٍ. فَجَاؤُوْا بِإِنَاءٍ فِيْهِ مَاءٌ قَلِيْلٌ، فَأَدْخَلَ يَدَهُ فِي الْإِنَاءِ ثُمَّ قَالَ: حَيَّ عَلَى الطَّهُوْرِ الْمُبَارَكِ، وَالْبَرَكَةُ مِنَ اللهِ. فَلَقَدْ رَأَيْتُ الْمَاءَ يَنْبُعُ مِنْ بَيْنِ أَصَابِعِ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ، وَلَقَدْ كُنَّا نَسْمَعُ تَسْبِيْحَ الطَّعَامِ وَهُوَ يُؤْكَلُ.

رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ وَالتِّرْمِذِيُّ.

وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह (बिन मस्ऊद) ﷺ से रिवायत है कि हम तो मु'जिज़ात को बरकत शुमार करते थे तुम उन्हें खौफ़ दिलाने वाले शुमार करते हो। हम एक सफ़र में हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के साथ थे कि पानी की कमी हो गई। आप ﷺ ने फरमायाः कुछ बचा हुआ पानी ले आओ। लोगों ने एक बरतन आप ﷺ की ख़िदमते अक़्दस में पेश किया, जिसमें थोड़ा सा पानी था। आप ﷺ ने अपना दस्ते अक़्दस उस बरतन में डाला और फरमाया : पाक बरकत वाले पानी की तरफ आओ और बरकत अल्लाह तआला की तरफ़ से है। मैंने देखा कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की मुबारक उंगलियों से (चश्मे की तरह) पानी उबल रहा था। इसके अ़लावा हम खाना खाते वक़्त खाने से तस्बीह की आवाज़ सुना करते थे।''

٧٥٢ / ٨. عَنْ أَنَسٍ ﷺ قَالَ: أُتِيَ النَّبِيُّ ﷺ بِإِنَاءٍ، وَهُوَ بِالزَّوْرَاءِ،

.... المسند، ١/ ٤٦٠، الرقم: ٤٣٩٣، وابن خزيمة فى الصحيح، ١/ ١٠٢، الرقم: ٢٠٤، والدارمى فى السنن، ١/ ٢٨، الرقم: ٢٩، وابن أبى شيبة فى المصنف، ٦/ ٣١٦، الرقم: ٣١٧٢٢، والبزار فى المسند، ٤/ ٣٠١، الرقم: ١٩٧٨، والطبرانى فى المعجم الأوسط، ٤/ ٣٨٤، الرقم: ٤٥٠١، وأبويعلى فى المسند، ٩/ ٢٥٣، الرقم: ٥٣٧٢، والشاشى فى المسند، ١/ ٣٥٨، الرقم: ٣٤٦، واللالكائى فى اعتقاد أهل السنة، ٤/ ٨٠٣، الرقم: ١٤٧٩، وأبو المحاسن فى معتصر المختصر، ١/ ٨، والبيهقى فى الاعتقاد، ١/ ٢٧٢.

الحديث رقم ٨: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: المناقب، باب: علامات النبوة فى الإسلام، ٣/ ١٣٠٩-١٣١٠، الرقم: ٣٣٧٩-٣٣٨٠، ٥٣١٦، ومسلم فى الصحيح، كتاب: الفضائل، باب: فى معجزات النبى ﷺ، ٤/ ١٧٨٣، الرقم: ←

فَوَضَعَ يَدَهُ فِي الإِنَاءِ، فَجَعَلَ الْمَاءُ يَنْبُعُ مِنْ بَيْنِ أَصَابِعِهِ، فَتَوَضَّأَ الْقَوْمُ. قَالَ قَتَادَةُ: قُلْتُ لِأَنَسٍ: كَمْ كُنْتُمْ؟ قَالَ: ثَلاثَ مِائَةٍ، أَوْ زُهَاءَ ثَلاثِ مِائَةٍ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अनस ﷺ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की ख़िदमते अक़दस में पानी का एक बरतन पेश किया गया और आप ﷺ जौरा (एक जगह का नाम) के मक़ाम पर थे। आप ﷺ ने बरतन के अन्दर अपना मुबारक हाथ रख दिया तो आप ﷺ की मुबारकउंगलियों के दरमियान से पानी के चश्मे फूट निकले और तमाम लोगों ने वुज़ू कर लिया। हज़रत क़तादा कहते हैं कि मैंने हज़रत अनस ﷺ से पूछा आप कितने (लोग) थे ? उन्होंने जवाब दिया तीन सौ या तीन सौ के लगभग।''

٩/٧٥٣۔ عَنِ الْبَرَاءِ ﷺ قَالَ: كُنَّا يَوْمَ الْحُدَيْبِيَةِ أَرْبَعَ عَشْرَةَ مِائَةً وَالْحُدَيْبِيَةُ بِئْرٌ، فَنَزَحْنَاهَا حَتَّى لَمْ نَتْرُكْ فِيْهَا قَطْرَةً، فَجَلَسَ النَّبِيُّ ﷺ عَلَى شَفِيْرِ الْبِئْرِ فَدَعَا بِمَاءٍ، فَمَضْمَضَ وَمَجَّ فِي الْبِئْرِ، فَمَكَثْنَا غَيْرَ بَعِيْدٍ، ثُمَّ اسْتَقَيْنَا حَتَّى رَوِيْنَا، وَرَوَتْ أَوْ صَدَرَتْ رَكَائِبُنَا. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ.

''हज़रत बरा' बिन आज़िब ﷺ फरमाते हैं कि वाक़िया–ए–हुदैबिया के दिन हमारी तादाद चौदह सौ थी हम हुदैबिया के कुँए से पानी निकालते रहे यहाँ तक कि हमने उसमें पानी का एक क़तरा भी न छोड़ा (सहाबा किराम पानी ख़त्म होने से परेशान हो कर बारगाहे रिसालत ﷺ

.... ٢٢٧٩، والترمذي في السنن، كتاب: المناقب عن رسول الله ﷺ، باب: (٦)، ٥/٥٩٦، الرقم: ٣٦٣١، ومالك في الموطأ، ١/٣٢، الرقم: ٦٢، والشافعي في المسند، ١/١٥، وأحمد بن حنبل في المسند، ٣/١٣٢، الرقم: ١٢٣٧٠، والبيهقي في السنن الكبرى، ١/١٩٣، الرقم: ٨٧٨، وابن أبي شيبة في المصنف، ٦/٣١٦، الرقم: ٣١٧٢٤۔

الحديث رقم ٩: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: المناقب، باب: علامات النبوة في الإسلام، ٣/١٣١١، الرقم: ٣٣٨٤۔

में हाज़िर हुए) सो हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ कुँए के मुंडेर पर आ बैठे और पानी तलब फरमाया, उससे कुल्ली फरमाई और वो पानी कुँए में डाल दिया थोड़ी ही देर बाद (पानी इस क़द्र ऊपर आ गया कि) हम उससे पानी पीने लगे यहाँ तक कि ख़ूब सैराब हुए और हमारी सवारियों के जानवर भी सैराब हो गए।''

٧٥٤ / ١٠ـ عَنْ جَابِرٍ رضي الله عنه أَنَّ أَبَاهُ تُوُفِّيَ وَعَلَيْهِ دَيْنٌ، فَأَتَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ فَقُلْتُ: إِنَّ أَبِي تَرَکَ عَلَيْهِ دَيْنًا، وَلَيْسَ عِنْدِي إِلَّا مَا يُخْرِجُ نَخْلُهُ، وَلَا يَبْلُغُ مَا يُخْرِجُ سِنِيْنَ مَا عَلَيْهِ، فَانْطَلِقْ مَعِي لِكَي لَا يُفْحِشَ عَلَيَّ الْغُرَمَاءُ، فَمَشَى حَوْلَ بَيْدَرٍ مِنْ بَيَادِرِ التَّمْرِ فَدَعَا، ثُمَّ آخَرَ، ثُمَّ جَلَسَ عَلَيْهِ، فَقَالَ: انْزِعُوْهُ فَأَوْفَاهُمُ الَّذِي لَهُمْ، وَبَقِيَ مِثْلُ مَا أَعْطَاهُمْ.

رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ وَأَحْمَدُ.

''हज़रत जाबिर رضي الله عنه से रिवायत है कि मेरे वालिदे मुहतरम (हज़रत अ़ब्दुल्लाह رضي الله عنه) वफ़ात पा गए और उनके ऊपर क़र्ज़ था सो मैं हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अ़र्ज़ किया मेरे वालिद ने (वफ़ात के बाद) पीछे क़र्ज़ा छोड़ा है और मेरे पास (उसकी अदायगी के लिए) कुछ भी नहीं, सिवाए ख़जूरों के (चंद) दरख़्तों से पैदावार हासिल होती है और उनसे कई साल भी क़र्ज़ अदा नहीं होगा। आप ﷺ मेरे साथ तशरीफ़ ले चलें ताकि क़र्ज़ माँगने वाले मुझ पर सख़्ती न करें, सो आप ﷺ (उनके साथ तशरीफ़ ले चले) उनके खजूरों के ढेरों में से एक ढेर के गिर्द फिरे और दुआ की फिर दूसरे ढेर (के साथ भी ऐसा ही किया) उसके बाद आप ﷺ एक ढेर पर बैठ गए और फरमाया क़र्ज़ माँगने वालों को माप कर देते जाओ सो सब क़र्ज़ माँगने वालो का पूरा क़र्ज़ अदा कर दिया गया और उतनी ही खजूरें बच भी गई जितनी कि

الحديث رقم ١٠: أخرجه البخارى فى الصحيح، کتاب: المناقب، باب: علامات النبوة فى الإسلام، ٣ / ١٣١٢، الرقم: ٣٣٨٧، وفى کتاب: البيوع، باب: الکيل على البائع والمعطي، ٢ / ٧٤٨، الرقم: ٢٠٢٠، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٣ / ٣٦٥، الرقم: ١٤٩٧٧.

क़र्ज़ में दी थीं।''

٧٥٥/١١۔ عَنْ أَسْمَاءَ بِنْتِ عُمَيْسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يُوحَى إِلَيْهِ وَرَأْسُهُ فِي حِجْرِ عَلِيٍّ رضی الله عنه فَلَمْ يُصَلِّ الْعَصْرَ حَتَّى غَرَبَتِ الشَّمْسُ فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اللَّهُمَّ إِنَّ عَلِيًّا فِي طَاعَتِكَ وَطَاعَةِ رَسُوْلِكَ فَارْدُدْ عَلَيْهِ الشَّمْسَ قَالَتْ أَسْمَاءُ رضي الله عنها: فَرَأَيْتُهَا غَرَبَتْ وَرَأَيْتُهَا طَلَعَتْ بَعْدَ مَا غَرَبَتْ.

رَوَاهُ الطَّحَاوِيُّ وَالطَّبَرَانِيُّ وَاللَّفْظُ لَهُ وَرِجَالُهُ رِجَالُ الصَّحِيْحِ.

''हज़रत अस्मा बिन्ते उमैश رضی اللہ عنہا से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ पर वही नाज़िल हो रही थी और आप ﷺ का सरे अक़्दस हज़रत अली رضی الله عنه की गोद में

الحديث رقم ١١: أخرجه الطبرانى فى المعجم الكبير، ١٤٧/٢٤، الرقم: ٣٩٠، والهيثمى فى مجمع الزوائد، ٢٩٧/٨، والذهبى فى ميزان الاعتدال، ٢٠٥/٥، وابن كثير فى البداية والنهاية، ٨٣/٦، والقاضى عياض فى الشفاء، ٤٠٠/١، والسيوطى فى الخصائص الكبرى، ١٣٧/٢، والحلبى فى السيرة الحلبية، ١٠٣/٢، والقرطبى فى الجامع لأحكام القرآن، ١٩٧/١٥۔

رواه الطبرانى بأسانيد، ورجال أحدهما رجال الصحيح غير إبراهيم بن حسن، وهو ثقة، وثّقهٔ ابن حبان، ورواه الطحاوى في مشكل الآثار (٩/٢، ٣٨٨/٤۔ ٣٨٩) وللحديث طرق أخرى عن أسماء، وعن أبي هريرة، وعليّ ابن أبي طالب، وأبي سعيد الخدري رضی الله عنهم۔

وقد جمع طرقه أبو الحسن الفضلي، وعبيد الله بن عبد الله الحسكا المتوفى سنة (٤٧٠) في (مسألة في تصحيح حديث ردّ الشمس)، والسيوطي في (كشف اللبس عن حديث الشمس)۔ وقال السيوطي: فى الخصائص الكبرى (١٣٧/٢): أخرجه ابن منده، وابن شاهين، والطبرانى بأسانيد بعضها على شرط الصحيح۔ وقال الشيباني في حدائق الأنوار (١٩٣/١): أخرجه الطحاوي في مشكل الحديث والآثار۔ بإسنادين صحيحين۔

وقال الإمام النووي فى شرح مسلم (٥٢/١٢): ذكر القاضى رحمه الله: أن نبينا ﷺ حبست له الشمس مرّتين...... ذكر ذلك الطحاوي وقال: رواته ثقات۔

था वो अस्र की नमाज़ न पढ़ सके यहाँ तक कि सूरज गुरूब हो गया। हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने दुआ कीः ऐ अल्लाह! अ़ली तेरी और तेरे रसूल की इताअ़त में था उस पर सूरज वापस लौटा दे। हज़रत अस्मा رضی اللہ عنہا फरमाती हैः मैंने उसे गुरूब होते हुए भी देखा और यह भी देखा कि वो गुरूब होने के बाद दोबारा तुलूअ़ हुआ।''

٧٥٦ / ١٢ـ عَنْ أَنَسٍ رضي الله عنه قَالَ: كَانَ أَهْلُ بَيْتٍ مِنَ الْأَنْصَارِ لَهُمْ جَمَلٌ يَسْنُوْنَ عَلَيْهِ، وَإِنَّ الْجَمَلَ اسْتُصْعِبَ عَلَيْهِمْ فَمَنَعَهُمْ ظَهْرَهُ، وَإِنَّ الْأَنْصَارَ جَاؤُوْا إِلَى رَسُوْلِ اللهِ ﷺ فَقَالُوْا: إِنَّهُ كَانَ لَنَا جَمَلٌ نُسْنِي عَلَيْهِ وَإِنَّهُ اسْتُصْعِبَ عَلَيْنَا وَمَنَعَنَا ظَهْرَهُ، وَقَدْ عَطِشَ الزَّرْعُ وَالنَّخْلُ، فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ لِأَصْحَابِهِ: قُوْمُوْا فَقَامُوْا فَدَخَلَ الْحَائِطَ وَالْجَمَلُ فِي نَاحِيَةٍ، فَمَشَى النَّبِيُّ ﷺ نَحْوَهُ. فَقَالَتِ الْأَنْصَارُ: يَا نَبِيَّ اللهِ، إِنَّهُ قَدْ صَارَ مِثْلَ الْكَلْبِ، وَإِنَّا نَخَافُ عَلَيْكَ صَوْلَتَهُ، فَقَالَ: لَيْسَ عَلَيَّ مِنْهُ بَأْسٌ، فَلَمَّا نَظَرَ الْجَمَلُ إِلَى رَسُوْلِ اللهِ ﷺ أَقْبَلَ نَحْوَهُ حَتَّى خَرَّ سَاجِدًا بَيْنَ يَدَيْهِ، فَأَخَذَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ بِنَاصِيَتِهِ أَذَلَّ مَا كَانَتْ قَطُّ حَتَّى أَدْخَلَهُ فِي الْعَمَلِ، فَقَالَ لَهُ أَصْحَابُهُ: يَا رَسُوْلَ اللهِ، هَذِهِ بَهِيْمَةٌ لَا تَعْقِلُ تَسْجُدُ لَكَ وَنَحْنُ نَعْقِلُ فَنَحْنُ أَحَقُّ أَنْ نَسْجُدَ لَكَ؟ وفي رواية: قَالُوْا: يَا رَسُوْلَ اللهِ، نَحْنُ أَحَقُّ بِالسُّجُوْدِ لَكَ مِنَ الْبَهَائِمِ. فَقَالَ: لَا يَصْلُحُ

الحديث رقم ١٢: أخرجه أحمد بن حنبل في المسند، ٣ / ١٥٨، الرقم: ١٢٦٣٥، والدارمي في السنن، باب: (٤)، ما أكرم الله به نبيه من إيمان الشجر به والبهائم والجن، ١ / ٢٢، الرقم: ١٧، والطبراني في المعجم الأوسط، ٩ / ٨١، الرقم: ٩١٨٩، وعبد بن حميد في المسند، ١ / ٣٢٠، الرقم: ١٠٥٣، والمقدسي في الأحاديث المختارة، ٥ / ٢٦٥، الرقم: ١٨٩٥، والمنذري في الترغيب والترهيب، ٣ / ٣٥، الرقم: ٢٩٧٧، والحسيني في البيان والتعريف، ٢ / ١٧١، والهيثمي في مجمع الزوائد، ٩ / ٤، ٩، والمناوي في فيض القدير، ٥ / ٣٢٩.

لِبَشَرٍ أَنْ يَسْجُدَ لِبَشَرٍ وَلَوْ صَلَحَ لِبَشَرٍ أَنْ يَسْجُدَ لِبَشَرٍ لَأَمَرْتُ الْمَرْأَةَ أَنْ تَسْجُدَ لِزَوْجِهَا مِنْ عِظَمِ حَقِّهِ عَلَيْهَا...... الحديث.

رَوَاهُ أَحْمَدُ وَنَحْوَهُ الدَّارِمِيُّ وَالطَّبَرَانِيُّ وَإِسْنَادُهُ حَسَنٌ.

''हज़रत अनस ﷺ से रिवायत है कि एक अन्सारी घराने में एक ऊँट था जिस पर (वो खेती बाड़ी के लिए) पानी भरा करते थे और वो उनके काबू में न रहा और उन्हें अपनी पुश्त (पानी लाने के लिए) इस्तिमाल करने से रोक दिया। अन्सार सहाबा हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की ख़िदमते अक़दस में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया हमारा एक ऊँट था हम उसे खेती बाड़ी के लिए पानी लाने का काम लेते थे और वो हमारे काबू में नहीं रहा और अब वो ख़ुद से कोई काम नहीं लेने देता हमारे खेत, खलिहान और बाग़ पानी की कमी की वजह से सूख गए हैं। हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने सहाबा किराम से फरमायाः उठो, पस सारे उठ खड़े हुए (और उस अन्सारी के घर तशरीफ़ ले गए) आप ﷺ अहाते में दाख़िल हुए तो ऊँट जो एक कोने में खड़ा था हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ऊँट की तरफ़ चल पड़े तो अन्सार कहने लगे (या रसूलल्लाह!) यह ऊँट कुत्ते की तरह बावला हो चुका है और हमें इसकी तरफ़ से आप पर हमले का ख़तरा है। हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः मुझे इससे कोई नुक़सान नहीं होगा। ऊँट ने जैसे ही हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ को देखा तो आपकी तरफ़ बढ़ा यहाँ तक (क़रीब आ कर) आप ﷺ के सामने सज्दे में गिर पड़ा। हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने उसे पेशानी से पकड़ा और पहले की तरह दुबारा काम पर लगा दिया। सहाबा किराम ने यह देख कर आप ﷺ की ख़िदमत में अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! यह तो बे–अक़्ल जानवर होते हुए भी आपको सज्दा कर रहा है और हम तो अक़्लमन्द हैं। इससे ज़्यादा हक़दार हैं कि आपको सज्दा करें और एक रिवायत में है कि सहाबा किराम ने अर्ज़ कियाः या रसूलल्लाह! जानवरों से ज़्यादा हम आपको सज्दा करने के हक़दार हैं, आप ﷺ ने फरमायाः किसी बशर के लिए जाइज़ नहीं कि वो किसी बशर को सज्दा करे और अगर किसी बशर को सज्दा करना जाइज़ होता तो मैं बीवी को हुक्म देता कि वो अपने शौहर को उसकी क़द्रो मंज़िलत की वजह से सज्दा करे जो कि उसे बीवी पर हासिल है।''

٧٥٧/١٣۔ عَنْ جَابِرٍ ﷺ أَنَّ أُمَّ مَالِكٍ كَانَتْ تُهْدِي لِلنَّبِيِّ ﷺ فِي

الحديث رقم ١٣: أخرجه مسلم في الصحيح، كتاب: الفضائل، باب: في معجزات النبي ﷺ، ٤/١٧٨٤، الرقم: ٢٢٨٠، وأحمد بن حنبل في المسند، ٣/٣٤٠، ←

عُكَّةٍ لَهَا سَمْنًا. فَيَأْتِيهَا بَنُوهَا فَيَسْأَلُونَ الْأُدْمَ. وَلَيْسَ عِنْدَهُمْ شَيْءٌ، فَتَعْمِدُ إِلَى الَّذِي كَانَتْ تُهْدِي فِيهِ لِلنَّبِيِّ ﷺ، فَتَجِدُ فِيهِ سَمْنًا. فَمَا زَالَ يُقِيمُ لَهَا أُدْمَ بَيْتِهَا حَتَّى عَصَرَتْهُ، فَأَتَتِ النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَ: عَصَرْتِيهَا؟ قَالَتْ: نَعَمْ. قَالَ: لَوْ تَرَكْتِيهَا مَا زَالَ قَائِمًا. رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَأَحْمَدُ.

''हज़रत जाबिर ﷺ से रिवायत है कि हज़रत उम्म मालिक رضی الله عنها हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की ख़िदमत में एक चमड़े के बरतन में घी भेजा करती थीं, उनके बेटे आ कर उनसे सालन माँगते, उनके पास कोई चीज़ नहीं होती थी तो जिस चमड़े के बरतन में वो हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के लिए घी भेजा करतीं, उसका रूख़ करतीं, उसमें उन्हें घी मिल जाता उनके घर में सालन का मस्अला इसी तरह हल होता रहा यहाँ तक कि उन्होंने एक दिन उस चमड़े के बरतन को निचौड़ लिया फिर वो हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुईं आप ﷺ ने फरमायाः तुमने चमड़े के बरतन को निचौड़ लिया, उन्होंने अ़र्ज़ कियाः हाँ या रसूलल्लाह! आप ﷺ ने फरमायाः अगर तुम उसे उसी तरह रहने देतीं तो उससे हमेशा (घी) मिलता रहता।''

٧٥٨ / ١٤ـ عَنْ جَابِرٍ ﷺ أَنَّ رَجُلًا أَتَى النَّبِيَّ ﷺ يَسْتَطْعِمُهُ، فَأَطْعَمَهُ شَطْرَ وَسْقِ شَعِيرٍ. فَمَا زَالَ الرَّجُلُ يَأْكُلُ مِنْهُ وَامْرَأَتُهُ وَضَيْفُهُمَا، حَتَّى كَالَهُ. فَأَتَى النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَ: لَوْ لَمْ تَكِلْهُ لَأَكَلْتُمْ مِنْهُ وَلَقَامَ لَكُمْ.

رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَأَحْمَدُ.

''हज़रत जाबिर ﷺ रिवायत करते हैं कि एक शख़्स ने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की ख़िदमते अक़दस में हाज़िर हो कर कुछ खाना तलब किया आप ﷺ ने उसे आधा वसक

.... ٣٤٧، الرقم: ١٤٧٠٥، ١٤٧٨٢، والعسقلاني في تهذيب التهذيب، ١٢ / ٥٠٥، الرقم: ٢٩٨٤، وفي فتح الباري، ١١ / ٢٨١، وفي الإصابة، ٨ / ٢٩٨، الرقم: ١٢٢٣٩.

الحديث رقم ١٤: أخرجه مسلم في الصحيح، كتاب: الفضائل، باب: في معجزات النبي ﷺ، ٤ / ١٧٨٤، الرقم: ٢٢٨١، وأحمد بن حنبل في المسند، ٣ / ٣٣٧، ٣٤٧، الرقم: ١٤٦٦١، ١٤٧٨٣.

(एक सौ बीस किलोग्राम) जौ दे दिए। वो शख़्स उसकी बीवी और उन दोनों के (हाँ आने वाले) मेहमान भी (एक ज़माने तक) वही जौ खाते रहे यहाँ तक कि एक दिन उसने वो जौ माप लिए फिर वो हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की ख़िदमत में आया तो आप ﷺ ने फरमायाः अगर तुम उसको न मापते तो तुम वो जौ खाते रहते और वो यूं ही (हमेशा) बाक़ी रहते।''

٧٥٩/ ١٥۔ عَنْ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ ﷺ قَالَ: رَأَيْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَوْمَ أُحُدٍ، وَمَعَهُ رَجُلَانِ يُقَاتِلَانِ عَنْهُ، عَلَيْهِمَا ثِيَابٌ بِيْضٌ، كَأَشَدِّ الْقِتَالِ، مَا رَأَيْتُهُمَا قَبْلُ وَلَا بَعْدُ يَعْنِي جِبْرِيْلَ وَمِيْكَائِيْلَ عليهما السلام. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत साद इब्ने अबी वक़्क़ास ﷺ रिवायत करते हैं कि जंगे उहद के दिन मैंने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के पास दो ऐसे हज़रात को देखा जो आप ﷺ की जानिब से लड़ रहे थे तो उन्होंने सफेद कपड़े पहने हुए थे बड़ी बहादुरी से लड़ रहे थे मैंने उन्हें उससे पहले न देखा था न बाद में यानी वो जिब्राईल व मीकाईल عليهما السلام थे।''

٧٦٠/ ١٦۔ عَنْ أَنَسٍ ﷺ: في رواية طويلة أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ شَاوَرَ، حِيْنَ بَلَغَنَا إِقْبَالُ أَبِي سُفْيَانَ، وَقَامَ سَعْدُ بْنُ عُبَادَةَ ﷺ فَقَالَ: وَالَّذِي

الحديث رقم ١٥: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: المغازي، باب: إِذْ هَمَّتْ طَائِفَتَانِ مِنْكُمْ أَنْ تَفْشَلَا وَاللهُ وَلِيُّهُمَا وَعَلَى اللهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ، [آل عمران، ٣: ١٢٢]، ١٤٨٩/٤، الرقم: ٣٨٢٨، وفي كتاب: اللباس، باب: الثياب البيض، ٢١٩٢/٥، الرقم: ٥٤٨٨، ومسلم في الصحيح، كتاب: الفضائل، باب: في قتال جبريل وميكائيل عن النبي ﷺ يوم أحد، ١٨٠٢/٤، الرقم: ٢٣٠٦، وأحمد بن حنبل في المسند، ١٧١/١، الرقم: ١٤٦٨، والشاشي في المسند، ١٨٥/١، الرقم: ١٣٣، والأصبهاني في دلائل النبوة، ٥١/١، الرقم: ٣٤، والخطيب التبريزي في مشكاة المصابيح، ٣٨٢/٢، الرقم: ٥٧٥٧، والذهبي في سير أعلام النبلاء، ١٠٧/١.

الحديث رقم ١٦: أخرجه مسلم في الصحيح، كتاب: الجهاد والسير، باب: غزوة بدر، ١٤٠٣/٣، الرقم: ١٧٧٩، ونحوه في كتاب: الجنة وصفة نعيمها وأهلها، باب: عرض مقعد الميت من الجنة أو النار عليه وإثبات عذاب القبر والتعوذ منه، ٢٢٠٢/٤، الرقم: ٢٨٧٣، وأبو داود في السنن، كتاب الجهاد، باب: في الأسير ←

نَفْسِي بِيَدِهِ، لَوْ أَمَرْتَنَا أَنْ نُخِيْضَهَا الْبَحْرَ لَأَخَضْنَاهَا. وَلَوْ أَمَرْتَنَا أَنْ نَضْرِبَ أَكْبَادَهَا إِلَى بَرْكِ الْغِمَادِ لَفَعَلْنَا. قَالَ: فَنَدَبَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ النَّاسَ، فَانْطَلَقُوْا حَتَّى نَزَلُوْا بَدْرًا، فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: هَذَا مَصْرَعُ فُلَانٍ قَالَ: وَيَضَعُ يَدَهُ عَلَى الْأَرْضِ، هَاهُنَا وَهَاهُنَا. قَالَ: فَمَا مَاتَ أَحَدُهُمْ عَنْ مَوْضِعِ يَدِ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَأَبُوْدَاوُدَ.

''हज़रत अनस बिन मालिक ؓ रिवायत करते हैं कि जब हमें अबू सुफ़्यान (के क़ाफ़िले की शाम से) आने की ख़बर पहुँची तो हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने सहाबा किराम से मश्विरा फरमाया। हज़रत सा'द बिन उबादा ؓ ने खड़े हो कर अ़र्ज़ किया: या रसूलल्लाह! उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्जए कुदरत में मेरी जान है अगर आप हमें समन्दर में घोड़े डालने का हुक्म दें तो हम समन्दर में घोड़े डाल देंगे और अगर आप हमें बरकिल ग़िमाद (पहाड़ का नाम) पहाड़ से घोड़ों के सीने टकराने का हुक्म दें तो हम ऐसा भी करेंगे। तब रसूलुल्लाह ﷺ ने लोगों को बुलाया, लोग आए और वादिए बद्र में उतरे फिर हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया: यह फ़लां काफ़िर के गिरने की जगह है, आप ﷺ ज़मीन पर उस जगह और इस जगह अपना मुबारक हाथ रखते। हज़रत अनस ؓ फरमाते हैं कि फिर दूसरे दिन दौराने जंग कोई काफ़िर हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की बताई हुई जगह से ज़र्रा बराबर भी इधर–उधर नहीं मरा।''

.... ينال منه ويضرب ويقرن، ٣/٥٨، الرقم: ٢٠٧١، والنسائى فى السنن، كتاب: الجنائز، باب: أرواح المؤمنين، ٤/١٠٨، الرقم: ٢٠٧٤، وفى السنن الكبرى، ١/٦٦٥، الرقم: ٢٢٠١، وابن حبان فى الصحيح، ١١/٢٤، الرقم: ٤٧٢٢، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٣/٢١٩، الرقم: ١٣٣٢٠، والبزار فى المسند، ١/٣٤٠، الرقم: ٢٢٢، وابن أبى شيبة فى المصنف، ٧/٣٦٢، الرقم: ٣٦٧٠٨، والطبرانى فى المعجم الأوسط، ٨/٢١٩، الرقم: ٨٤٥٣، وفى المعجم الصغير، ٢/٢٣٣، الرقم: ١٠٨٥، وأبو يعلى فى المسند، ٦/٦٩، الرقم: ٣٣٢٢، وابن الجوزى فى صفوة الصفوة، ١/١٠٢، والخطيب التبريزي فى مشكاة المصابيح، ٢/٣٨١، الرقم: ٥٨٧١.

٧٦١/١٧. عَنْ جَابِرٍ ﷺ في رواية طويلة قَالَ: سِرْنَا مَعَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ حَتَّى نَزَلَ وَادِيًا أَفْيَحَ. فَذَهَبَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يَقْضِي حَاجَتَهُ. فَاتَّبَعْتُهُ بِإِدَاوَةٍ مِنْ مَاءٍ. فَنَظَرَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ فَلَمْ يَرَ شَيْئًا يَسْتَتِرُ بِهِ فَإِذَا شَجَرَتَانِ بِشَاطِئِ الْوَادِي. فَانْطَلَقَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ إِلَى إِحْدَاهُمَا فَأَخَذَ بِغُصْنٍ مِنْ أَغْصَانِهَا. فَقَالَ: انْقَادِي عَلَيَّ بِإِذْنِ اللهِ. فَانْقَادَتْ مَعَهُ كَالْبَعِيْرِ الْمَخْشُوْشِ، الَّذِي يُصَانِعُ قَائِدَهُ. حَتَّى أَتَى الشَّجَرَةَ الْأُخْرَى. فَأَخَذَ بِغُصْنٍ مِنْ أَغْصَانِهَا. فَقَالَ: انْقَادِي عَلَيَّ بِإِذْنِ اللهِ فَانْقَادَتْ مَعَهُ كَذَلِكَ، حَتَّى إِذَا كَانَ بِالْمُنْصَفِ مِمَّا بَيْنَهُمَا، قَالَ: الْتَئِمَا عَلَيَّ بِإِذْنِ اللهِ فَالْتَأَمَتَا. فَجَلَسْتُ أُحَدِّثُ نَفْسِي. فَحَانَتْ مِنِّي لَفْتَةٌ، فَإِذَا أَنَا بِرَسُوْلِ اللهِ ﷺ مُقْبِلًا. وَإِذَا الشَّجَرَتَانِ قَدِ افْتَرَقَتَا. فَقَامَتْ كُلُّ وَاحِدَةٍ مِنْهُمَا عَلَى سَاقٍ. فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: يَا جَابِرُ، هَلْ رَأَيْتَ مَقَامِي؟ قُلْتُ: نَعَمْ، يَا رَسُوْلَ اللهِ! قَالَ: فَانْطَلِقْ إِلَى الشَّجَرَتَيْنِ فَاقْطَعْ مِنْ كُلِّ وَاحِدَةٍ مِنْهُمَا غُصْنًا. فَأَقْبِلْ بِهِمَا. حَتَّى إِذَا قُمْتَ مَقَامِي فَأَرْسِلْ غُصْنًا عَنْ يَمِيْنِكَ وَعَنْ يَسَارِكَ. قَالَ جَابِرٌ: فَقُمْتُ فَأَخَذْتُ حَجَرًا فَكَسَرْتُهُ وَحَسَرْتُهُ. فَانْذَلَقَ لِي. فَأَتَيْتُ الشَّجَرَتَيْنِ فَقَطَعْتُ مِنْ كُلِّ وَاحِدَةٍ مِنْهُمَا غُصْنًا. ثُمَّ أَقْبَلْتُ أَجُرُّهُمَا حَتَّى قُمْتُ مَقَامَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ، أَرْسَلْتُ غُصْنًا عَنْ

الحديث رقم ١٧: أخرجه مسلم فى الصحيح، كتاب: الزهد والرقائق، باب: حديث جابر الطويل، وقصة أبي اليَسَر، ٤/٢٣٠٦، الرقم: ٣٠١٢، وابن حبان فى الصحيح، ١٤/٤٥٥-٤٥٦، الرقم: ٦٥٢٤، والبيهقى فى السنن الكبرى، ١/٩٤، الرقم: ٤٥٢، والأصبهاني فى دلائل النبوة، ١/٥٣-٥٥، الرقم: ٣٧، وابن عبد البر فى التمهيد، ١/٢٢٢، والخطيب التبريزى فى مشكاة المصابيح، ٢/٣٨٣، الرقم: ٥٨٨٥.

يَمِيْنِي وَغُصْنًا عَنْ يَسَارِي، ثُمَّ لَحِقْتُهُ فَقُلْتُ: قَدْ فَعَلْتُ يَا رَسُوْلَ اللهِ! فَعَمَّ ذَاکَ؟ قَالَ: إِنِّي مَرَرْتُ بِقَبْرَيْنِ يُعَذَّبَانِ. فَأَحْبَبْتُ: بِشَفَاعَتِي، أَنْ يُرَفَّهَ عَنْهُمَا مَا دَامَ الغُصْنَانِ رَطْبَيْنِ......الحديث. رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَابْنُ حِبَّانَ.

''हज़रत जाबिर ﷺ रिवायत करते हैं कि हम नबी–ए–अकरम ﷺ के साथ (एक ग़जवह) के सफ़र पर रवाना हुए यहाँ तक कि हम एक कुशादा वादी में पहुँचे। हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ रफ़अ हाजत के लिए तशरीफ़ ले गए। मैं पानी वग़ैरह ले कर आप ﷺ के पीछे गया। हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने (इर्द-गिर्द) देखा लेकिन आप ﷺ को पर्दा के लिए कोई चीज़ नज़र न आई, वादी के किनारे दो दरख़्त थे, हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ उनमें से एक दरख़्त के पास गए। आप ﷺ ने उसकी शाख़ों में से एक शाख़ पकड़ी और फरमायाः अल्लाह तआला के हुक्म से मेरी इताअत कर। वो दरख़्त उस ऊँट की तरह आप ﷺ का फरमाबरदार हो गया जिस की नाक में नकेल हो और वो अपने हाँकने वाले के ताबे होता है, फिर आप ﷺ दूसरे दरख़्त के पास गए और उस की शाख़ों में से एक शाख़ पकड़ कर फरमायाः अल्लाह के इज़्न से मेरी इताअत कर, वो दरख़्त भी पहले दरख़्त की तरह आप ﷺ के ताबे हो गया यहाँ तक कि आप ﷺ दोनों दरख़्तों के दरमियान पहुँचे तो आप ﷺ ने दोनों दरख़्तों को मिला दिया और फरमायाः अल्लाह के इज़्न से जुड़ जाओ, सो वो दोनों दरख़्त जुड़ गए, मैं वहाँ बैठा अपने आप से बातें कर रहा था, मैंने अचानक देखा कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ तशरीफ़ ला रहे हैं और वो दोनों दरख़्त अपने-अपने साबिक़ा अस्ल मुक़ाम पर खड़े थे। आप ﷺ ने फरमायाः ऐ जाबिर ! तुम ने वो मुक़ाम देखा था जहाँ मैं खड़ा था। मैंने अर्ज़ कियाः जी! या रसूलल्लाह! फरमायाः उन दोनों दरख़्तो के पास जाओ और उन में से हर एक की एक-एक शाख़ काट कर लाओ और जब उस जगह पहुँचो जहाँ मैं खड़ा था तो एक शाख़ अपनी दाएं ज़ानिब और एक शाख़ अपनी बाएं जानिब डाल देना। हज़रत जाबिर कहते हैं कि मैंने खड़े होकर एक पत्थर तोड़ा और तेज किया, फिर मैं उन दरख़्तों के पास गया और हर एक से एक शाख़ तोड़ी, फिर मैं उन्हें घ़सीट कर हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के खड़े होने की ज़गह लाया उस ज़गह एक शाख दायीं ज़ानिब और एक शाख़ बायीं जानिब डाल दी और रसूलल्लाह ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अर्ज़ कियाः या रसूलल्लाह ! मैंने आप के हुक्म पर अ़मल कर दिया है। मगर इस अ़मल

का सबब क्या है ? आप ﷺ ने फरमायाः मैं उस ज़गह दो कब्रों के पास से गुजरा जिन में क़ब्र वालों को अ़ज़ाब हो रहा था, मैंने चाहा कि मेरी शफ़ाअत के सबब जब तक वो शाखें सरसब्ज़ व ताज़ा रहें उन के अ़ज़ाब मे कमी रहे।''

٧٦٢/١٨۔ عَنْ أَنَسٍ رضي الله عنه أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ نَعَى زَيْدًا وَجَعْفَرًا وَابْنَ رَوَاحَةَ لِلنَّاسِ قَبْلَ أَنْ يَأْتِيَهُمْ خَبَرُهُمْ، فَقَالَ: أَخَذَ الرَّايَةَ زَيْدٌ فَأُصِيْبَ، ثُمَّ أَخَذَ جَعْفَرٌ فَأُصِيْبَ، ثُمَّ أَخَذَ ابْنُ رَوَاحَةَ فَأُصِيْبَ. وَعَيْنَاهُ تَذْرِفَانِ: حَتَّى أَخَذَ الرَّايَةَ سَيْفٌ مِنْ سُيُوْفِ اللهِ، حَتَّى فَتَحَ اللهُ عَلَيْهِمْ.

رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ وَالنَّسَائِيُّ وَأَحْمَدُ.

''हज़रत अनस رضي الله عنه रिवायत फरमाते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने हज़रत ज़ैद, हज़रत जाफ़र और हज़रत इब्ने रवाहा رضي الله عنه के मुतअ़ल्लिक़ ख़बर आने से पहले ही उन के शहीद हो जाने के मुतअ़ल्लिक़ लोगों को बता दिया था चुनांचे आप ﷺ ने फरमाया : अब झण्डा ज़ैद ने संभाला हुआ है लेकिन वो शहीद हो गए। अब जाफ़र ने झण्डा संभाल लिया है और वो भी शहीद हो गए। अब इब्ने रवाहा ने झण्डा संभाला है और वो भी जामे शहादत नोश कर गए। यह फरमाते हुए आप ﷺ की चश्माने मुबारक अश्क बार थीं। (फरमाया) यहाँ तक कि अब अल्लाह की तलवारों में से एक तलवार (हज़रत ख़ालिद बिन वलीद) ने झण्डा संभाल लिया है

الحديث رقم ١٨: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: المغازى، باب: غزوة مؤته من أرض الشام، ١٥٥٤/٤، الرقم: ٤٠١٤، وفى كتاب: الجنائز، باب: الرجل ينعى إلى أهل الميت بنفسه، ٤٢٠/١، الرقم: ١١٨٩، وفى كتاب: الجهاد، باب: تمنى الشهادة، ١٠٣٠/٣، الرقم: ٢٦٤٥، وفى باب: من تأمر فى الحرب من غير إمرة إذا خاف العدو، ١١١٥/٣، الرقم: ٢٨٩٨، وفى كتاب: المناقب، باب علامات النبوة فى الإسلام،١٣٢٨/٣، الرقم: ٣٤٣١، وفى كتاب: فضائل الصحابة، باب: مناقب خالد بن الوليد رضي الله عنه، ١٣٧٢/٣، الرقم: ٣٥٤٧، ونحوه النسائى فى السنن الكبرى، ١٨٠/٥، الرقم: ٨٦٠٤، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٢٠٤/١، الرقم: ١٧٥٠، والحاكم فى المستدرك، ٣٣٧/٣، الرقم: ٥٢٩٥، وقال: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحُ الْإِسْنَادِ، والطبرانى فى المعجم الكبير، ١٠٥/٢، الرقم: ١٤٥٩۔١٤٦١، والخطيب التبريزى فى مشكاة المصابيح، ٣٨٤/٢، الرقم: ٥٨٨٧۔

और उसके हाथों अल्लाह तआला ने काफ़िरो पर फ़तह अ़ता फरमाई।''

٧٦٣ / ١٩۔ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ ﷺ في رواية طويلة قَالَ: إِنَّ رَجُلًا كَانَ يَكْتُبُ لِرَسُوْلِ اللهِ ﷺ فَارْتَدَّ عَنِ الإِسْلَامِ، وَلَحِقَ بِالْمُشْرِكِيْنَ، وَقَالَ: أَنَا أَعْلَمُكُمْ بِمُحَمَّدٍ إِنْ كُنْتُ لَأَكْتُبُ مَاشِئْتُ فَمَاتَ ذٰلِكَ الرَّجُلُ فَقَالَ النَّبِيّ ﷺ: إِنَّ الْأَرْضَ لَمْ تَقْبَلْهُ وَقَالَ أَنَسٌ: فَأَخْبَرَنِي أَبُوْطَلْحَةَ أَنَّهُ أَتَى الْأَرْضَ الَّتِي مَاتَ فِيْهَا فَوَجَدَهُ مَنْبُوْذًا، فَقَالَ: مَا شَأْنُ هٰذَا؟ فَقَالُوْا: دَفَنَّاهُ مِرَارًا فَلَمْ تَقْبَلْهُ الْأَرْضُ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَأَحْمَدُ وَاللَّفْظُ لَهُ وَالْبَيْهَقِيُّ.

''हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ एक तवील रिवायत में बयान करते हैं कि एक आदमी जो हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की लिए किताबत किया करता था वो इस्लाम से मुरतद हो गया और मुश्रिकों से जा कर मिल गया और कहने लगाः मैं तुम में सब से ज़्यादा मुहम्मद मुस्तफ़ा को जानने वाला हूँ मैं उन के लिए जो चाहता था लिखता था सो वो शख़्स जब मर गया तो हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः उसे ज़मीन कुबूल नहीं करेगी। हज़रत अनस ﷺ फरमाते हैं कि उन्हें हज़रत अबू तलहा ﷺ ने बताया वो उस जगह आए जहाँ वो मरा था तो देखा उसकी लाश कब्र से बाहर पड़ी थी। पूछा इस (लाश) का क्या मामला है? लोगों ने कहाः हम ने इसे कई बार दफ़न किया मगर ज़मीन ने इसे कुबूल नहीं किया।''

٧٦٤ / ٢٠۔ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رضي الله عنهما قَالَ: جَاءَ أَعْرَابِيٌّ إِلَى رَسُوْلِ اللهِ ﷺ فَقَالَ: بِمَ أَعْرِفُ أَنَّكَ نَبِيٌّ؟ قَالَ: إِنْ دَعَوْتُ هٰذَا الْعِذْقَ مِنْ

الحديث رقم ١٩: أخرجه مسلم نحوه فى الصحيح، كتاب: صفات المنافقين وأحكامهم، ٤ / ٢١٤٥، الرقم: ٢٧٨١، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٣ / ١٢٠، الرقم: ١٢٢٣٦، ١٣٣٤٨، والبيهقى فى السنن الصغرى، ١ / ٥٦٨، الرقم: ١٠٥٤، وعبد بن حميد فى المسند، ١ / ٣٨١، الرقم: ١٢٧٨، وأبو المحاسن فى معتصر المختصر، ٢ / ١٨٨، والخطيب التبريزى فى مشكاة المصابيح، ٢ / ٣٨٧، الرقم: ٥٧٩٨.

الحديث رقم ٢٠: أخرجه الترمذي في السنن، كتاب: المناقب عن رسول الله ﷺ، باب: في آيات إثبات نبوة النبي ﷺ وما قد خصه الله ﷻ، ٥ / ٥٩٤، الرقم: ٣٦٢٨، والحاكم في المستدرك، ٢ / ٦٧٦، الرقم: ٤٢٣٧، والطبراني في المعجم ←

هَذِهِ النَّخْلَةِ، أَتَشْهَدُ أَنِّي رَسُوْلُ اللهِ؟ فَدَعَاهُ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ فَجَعَلَ يَنْزِلُ مِنَ النَّخْلَةِ حَتَّى سَقَطَ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ ثُمَّ قَالَ: ارْجِعْ. فَعَادَ، فَأَسْلَمَ الْأَعْرَابِيُّ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالْحَاكِمُ وَالطَّبَرَانِيُّ.

وَقَالَ أَبُوْ عِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رضی اللہ عنہما से रिवायत है। वो बयान करते हैं कि एक अ'राबी हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अ़र्ज़ किया: मुझे कैसे इल्म होगा कि आप अल्लाह तआ़ला के नबी है? आप ﷺ ने फरमाया: अगर मैं ख़जूर के उस दरख़्त पर लगे हुए उस के गुच्छे को बुलाऊँ तो क्या तू गवाही देगा कि मैं अल्लाह तआ़ला का रसूल हूँ? फिर आप ﷺ ने उसे बुलाया तो वो दरख़्त से उतरने लगा यहाँ तक कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के क़दमो में आ गिरा। फिर आप ﷺ ने उसे फरमाया: वापस चले जाओ। तो वो वापस चला गया। उस अ'राबी ने (नबातात की इताअ़ते रसूल का यह मंज़र) देख कर इस्लाम क़ुबूल कर लिया।''

٧٦٥ / ٢١. عَنْ أَبِي زَيْدِ بْنِ أَخْطَبَ ﷺ قَالَ: مَسَحَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يَدَهُ عَلَى وَجْهِي وَدَعَا لِي، قَالَ عَزْرَةُ: إِنَّهُ عَاشَ مِائَةً وَعِشْرِيْنَ سَنَةً وَلَيْسَ فِي رَأْسِهِ إِلَّا شَعَرَاتٌ بِيْضٌ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالطَّبَرَانِيُّ.

وَقَالَ أَبُوْ عِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ.

'' हज़रत अबू ज़ैद अख़्तब ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने अपना दस्ते अक़दस मेरे चेहरे पर फेरा और मेरे लिए दुआ फरमाई, अज़रह (रावी) कहते हैं कि अबू ज़ैद एक सौ बीस साल ज़िन्दा रहे और उनके सर में सिर्फ़ चंद बाल सफ़ेद थे।''

.... الكبير، ١٢ / ١١٠، الرقم: ١٢٦٢٢، والبخاري في التاريخ الكبير، ٣ / ٣، الرقم: ٦، والمقدسي في الأحاديث المختارة، ٩ / ٥٣٨، ٥٣٩، الرقم: ٥٢٧، والبيهقي في الاعتقاد، ١ / ٤٨، والخطيب التبريزى في مشكاة المصابيح، ٢ / ٣٩٤، الرقم: ٥٩٢٤.

الحديث رقم ٢١: أخرجه الترمذى فى السنن، كتاب: المناقب عن رسول الله ﷺ، باب: (٦)، ٥ / ٥٩٤، الرقم: ٣٦٢٩، والطبرانى المعجم الكبير، ١٧ / ٢٧، الرقم: ٤٥، ونحوه فى المعجم الكبير، ١٨ / ٢١، الرقم: ٣٥، الشيبانى فى الآحاد والمثانى، ٤ / ١٩٩، الرقم: ٢١٨٢، والهيثمى فى مجمع الزوائد، ٩ / ٤١٢.

٧٦٦ / ٢٢۔ عَنْ قَتَادَةَ بْنِ النُّعْمَانَ ﷺ أَنَّهُ أُصِيْبَتْ عَيْنُهُ يَوْمَ بَدْرٍ، فَسَالَتْ حَدَقَتُهُ عَلَى وَجْنَتِهِ، فَأَرَادُوْا أَنْ يَقْطَعُوْهَا، فَسَأَلُوْا رَسُوْلَ اللهِ ﷺ فَقَالَ: لاَ، فَدَعَا بِهِ، فَغَمَزَ حَدَقَتَهُ بِرَاحَتِهِ، فَكَانَ لاَ يُدْرَى أَيُّ عَيْنَيْهِ أُصِيْبَتْ. رَوَاهُ أَبُوْيَعْلَى.

''हज़रत क़तादा बिन नो'मान ﷺ से मरवी है कि ग़जवा बद्र के दिन (तीर लगने से) उनकी आँख ज़ाया हो गई और ढेला निकल कर चेहरे पर बह गया। दीगर सहाबा ने उसे काट देना चाहा। तो रसूलल्लाह ﷺ से दरयाफ़्त किया गया तो आप ﷺ ने मना फरमा दिया। फिर आप ﷺ ने दुआ फरमाई और आँख को दोबारा उसके मुक़ाम पर रख दिया। सो हज़रत क़तादा ﷺ की आँख इस तरह ठीक हो गई कि मालूम भी नहीं होता था कि कौनसी आँख ख़राब है।''

٧٦٧ / ٢٣۔ عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ ﷺ قَالَ: بَعَثَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ إِلَى أَبِي رَافِعٍ الْيَهُوْدِيِّ رِجَالاً مِنَ الْأَنْصَارِ، فَأَمَّرَ عَلَيْهِمْ عَبْدَ اللهِ بْنَ عَتِيْكٍ ﷺ، وَكَانَ أَبُوْ رَافِعٍ يُؤْذِي رَسُوْلَ اللهِ ﷺ وَيُعِيْنُ عَلَيْهِ، وَكَانَ فِي حِصْنٍ لَهُ بِأَرْضِ الْحِجَازِ...... (قَالَ: عَبْدُ اللهِ بْنُ عَتِيْكٍ ﷺ فِي قِصَّةِ قَتْلِ أَبِي

الحديث رقم ٢٢: أخرجه أبويعلى فى المسند، ٣/ ١٢٠، الرقم: ١٥٤٩، وأبوعوانة فى المسند، ٤/ ٣٤٨، الرقم: ٦٩٢٩، والهيثمى فى مجمع الزوائد، ٨/ ٢٩٧، وابن سعد فى الطبقات الكبرى، ١/ ١٨٧، والذهبى فى سير أعلام النبلاء، ٢/ ٣٣٣، والعسقلانى فى تهذيب التهذيب، ٧/ ٤٣٠، الرقم: ٨١٤، وفى الإصابة، ٤/ ٢٠٨، الرقم: ٤٨٨٨، وابن قانع فى معجم الصحابة، ٢/ ٣٦١، وابن كثير فى البداية والنهاية، ٣/ ٢٩١۔

الحديث رقم ٢٣: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: المغازى، باب: قتل أبى رافع عبدالله بن أبى الحُقَيْق، ٤/ ١٤٨٢، الرقم: ٣٨١٣، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٩/ ٨٠، والأصبهانى فى دلائل النبوة، ١/ ١٢٥، وابن عبد البر فى الاستيعاب، ٣/ ٩٤٦، والطبرى فى تاريخ الأمم والملوك، ٢/ ٥٦، وابن كثير فى البداية والنهاية: ٤/ ١٣٩، وابن تيمية فى الصارم المسلول، ٢/ ٢٩٤۔

رَافِعٍ) فَعَرَفْتُ أَنِّي قَتَلْتُهُ: فَجَعَلْتُ أَفْتَحُ الْأَبْوَابَ بَابًا بَابًا، حَتَّى انْتَهَيْتُ إِلَى دَرَجَةٍ لَهُ فَوَضَعْتُ رِجْلِي وَأَنَا أُرَى قَدْ انْتَهَيْتُ إِلَى الْأَرْضِ، فَوَقَعْتُ فِي لَيْلَةٍ مُقْمِرَةٍ فَانْكَسَرَتْ سَاقِي فَعَصَبْتُهَا بِعِمَامَةٍ...... فَانْتَهَيْتُ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَحَدَّثْتُهُ، فَقَالَ: ابْسُطْ رِجْلَكَ. فَبَسَطْتُ رِجْلِي فَمَسَحَهَا، فَأَنَّهَا لَمْ أَشْتَكِهَا قَطُّ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ.

''हज़रत बराअ बिन आ़ज़िब ؓ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने अबू राफ़े' यहूदी की (सरकोबी के लिए उस) तरफ़ चंद अन्सारी मर्दों को भेजा हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़तीक ؓ को उन पर अमीन मुक़र्रर किया। अबू राफ़े' आप ﷺ को तकलीफ़ पहुँचाता था और आप ﷺ के (दीन के) ख़िलाफ़ (कुफ़्फ़ार की) मदद करता था और सर ज़मीने हिजाज़ में अपने किले में रहता था ... (हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़तीक ؓ ने अबू राफ़े' यहूदी के क़त्ल की कार्रवाई बयान करते हुए फरमाया) मुझे यक़ीन हो गया कि मैंने उसे क़त्ल कर दिया है। फिर मैंने एक–एक करके तमाम दरवाज़े खोल दिए यहाँ तक कि जमीन पर आ रहा। चाँदनी रात थी मैं गिर गया और मेरी पिण्डली टूट गई तो मैंने उसे अ़मामे से बाँध दिया... फिर मैं हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हुआ और सारा वाक़िया अ़र्ज़ कर दिया। आप ﷺ ने फरमायाः पाँव आगे करो। मैंने पाँव फैला दिया। आप ﷺ ने उस पर दस्ते करम फेरा तो (टूटी हुई पिण्डली जुड़ गई और) फिर कभी दर्द तक न हुआ।''

٧٦٨ / ٢٤۔ عَنْ عَائِشَةَ رضي الله عنها قَالَتْ: كَانَ لِآلِ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ وَحْشٌ. فَإِذَا خَرَجَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ لَعِبَ وَاشْتَدَّ وَأَقْبَلَ وَأَدْبَرَ. فَإِذَا أَحَسَّ بِرَسُوْلِ اللهِ ﷺ قَدْ دَخَلَ، رَبَضَ فَلَمْ يَتَرَمْرَمْ، مَا دَامَ رَسُوْلُ

الحديث رقم ٢٤: أخرجه أحمد بن حنبل في المسند، ٦/ ١١٢، ١٥٠، الرقم: ٢٤٨٦٢، ٢٥٢١٠، وأبويعلى في المسند، ٨/ ١٢١، الرقم: ٤٦٦٠، وابن راهويه في المسند، ٣/ ٦١٧، الرقم: ١١٩٢، والطحاوي في شرح معاني الآثار، ٤/ ١٩٥، والبيهقي في دلائل النبوة، ٦/ ٣١، وابن عبد البر في التمهيد، ٦/ ٣١٤، والهيثمي في مجمع الزوائد، ٩/ ٣۔

اللهِ ﷺ فِي الْبَيْتِ، كَرَاهِيَةَ أَنْ يُؤْذِيَهُ. رَوَاهُ أَحْمَدُ وَأَبُوْيَعْلَى.

''हज़रत आइशा सिद्दीक़ा رضی اللہ عنہا बयान करती हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की आल (यानी अहले बैत) के लिए एक बैल रखा गया। जब हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ बाहर तशरीफ़ लाते तो वो खेलता कूदता और (ख़ुशी से) जोश में आ जाता और (हालते वज्द में) कभी आगे बढ़ता और कभी पीछे आता और जब वो यह महसूस करता कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ अन्दर तशरीफ़ ले गए हैं तो फिर साकित खड़ा हो जाता और कोई हरकत न करता जब तक कि आप ﷺ घर में मौजूद रहते इस डर से कि कहीं आप ﷺ को तकलीफ़ न हो।''

٧٦٩/ ٢٥۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ قَالَ: قُلْتُ: يَارَسُوْلَ اللهِ، إِنِّي أَسْمَعُ مِنْكَ حَدِيْثًا كَثِيْرًا أَنْسَاهُ؟ قَالَ: ابْسُطْ رِدَائَكَ. فَبَسَطْتُهُ، قَالَ: فَغَرَفَ بِيَدَيْهِ، ثُمَّ قَالَ: ضُمَّهُ. فَضَمَمْتُهُ، فَمَا نَسِيْتُ شَيْئًا بَعْدَهُ.

مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ وَهَذَا لَفْظُ الْبُخَارِيِّ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ रिवायत करते हैं कि मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! मैं आपसे बहुत कुछ सुनता हूँ मगर भूल जाता हूँ तो आप ﷺ ने फरमायाः अपनी चादर फैलाओ। मैंने अपनी चादर फैला दी। आप ﷺ ने (फ़िज़ा में) चुल्लू भर–भर कर उसमें डाल दिए और फरमायाः इसे सीने से लगा लो मैंने ऐसा ही किया बस उसके बाद मैं कभी कुछ नहीं भूला।''

٧٧٠/ ٢٦۔ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رضي الله عنهما أَنَّ يَهُوْدِيَّةً مِنْ أَهْلِ خَيْبَرَ

الحديث رقم ٢٥: أخرجه البخاری فی الصحيح، كتاب: العلم، باب: حفظ العلم، ١/ ٥٦، الرقم: ١١٩، ومسلم فی الصحيح، كتاب: فضائل الصحابة، باب: من فضائل أبی هريرة الدوسی ﷺ، ٤/ ١٩٣٩، الرقم: ٢٤٩١، والترمذی فی السنن، كتاب: المناقب عن رسول الله ﷺ، باب: مناقب لأبی هريرة ﷺ، ٥/ ٦٨٤، الرقم: ٣٨٣٤۔٣٨٣٥، والطبرانی فی المعجم الأوسط، ١/ ٢٤٧، الرقم: ٨٨١، وأبو يعلى فی المسند، ١١/ ١٢١، الرقم: ٦٢٤٨۔

الحديث رقم ٢٦: أخرجه أبوداود فی السنن، كتاب: الديات، باب: فيمن سقى رجلا سماً أو اطعمه فمات أيقاظ منه، ٤/ ١٧، الرقم: ٤٥١٠، والدارمی فی السنن، ١/ ٤٦، الرقم: ٦٨، والبيهقی فی السنن الكبرى، ٨/ ٤٦۔

سَمَّتْ شَاةً مَصْلِيَةً ثُمَّ أَهْدَتْهَا لِرَسُوْلِ اللهِ ﷺ فَأَخَذَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ الذِّرَاعَ فَأَكَلَ مِنْهَا وَأَكَلَ رَهْطٌ مِنْ أَصْحَابِهِ مَعَهُ، ثُمَّ قَالَ لَهُمْ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: ارْفَعُوْا أَيْدِيَكُمْ، وَأَرْسَلَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ إِلَى الْيَهُوْدِيَّةِ فَدَعَاهَا فَقَالَ لَهَا: أَ سَمَمْتِ هَذِهِ الشَّاةَ؟ قَالَتِ الْيَهُوْدِيَّةُ: مَنْ أَخْبَرَكَ؟ قَالَ: أَخبَرَتْنِي هَذِهِ فِي يَدِي لِلذِّرَاعِ. قَالَتْ: نَعَمْ. قَالَ: فَمَا أَرَدْتِ إِلَى ذَلِكَ؟ قَالَتْ: إِنْ كَانَ نَبِيًّا فَلَنْ يَضُرَّهُ وَإِنْ لَمْ يَكُنْ نَبِيًّا اسْتَرَحْنَا مِنْهُ، فَعَفَا عَنْهَا رَسُوْلُ اللهِ ﷺ وَلَمْ يُعَاقِبْهَا ...... الحديث.

رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ وَالدَّارِمِيُّ.

''हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह ﷺ से रिवायत है कि अहले ख़ैबर में से एक यहूदी औ़रत ने बकरी के भुने हुए गोश्त में ज़हर मिलाया फिर वो (ज़हर आलूद गोश्त) रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में बतौर तोहफ़ा पेश कर दिया। सो रसूलुल्लाह ﷺ ने उसकी दस्ती (रान) ली और उसे खाने लगे और चंद दीगर सहाबा भी खाने लगे। (उसी वक़्त) रसूलुल्लाह ﷺ ने उनसे फरमायाः अपने हाथ (खाने से) रोक लो और आप ﷺ ने उस औरत की तरफ़ एक आदमी भेजा जो उसे बुला कर लाया। आप ﷺ ने पूछाः क्या तुमने इस गोश्त में ज़हर मिलाया है। यहूदी औरत ने कहाः आपको किसने बताया। आप ﷺ ने फरमायाः मुझे इस दस्ती (यानी बकरी की रान) ने बताया है जो मेरे हाथ में है। औरत ने कहाः 'हाँ'। आप ﷺ ने फरमायाः तुम्हारा इस फ़े'ल (काम) से क्या इरादा था? उसने कहाः (मैंने सोचा) अगर आप नबी हैं तो ज़हर हरगिज़ आपको कोई नुक़सान नहीं देगा और अगर नबी नहीं हैं तो हमें आपसे नजात मिल जाएगी। रसूलुल्लाह ﷺ ने उसे माफ फरमा दिया और कोई सज़ा नहीं दी।''

٧٧١/٢٧۔ عَنْ أَبِي زَيْدٍ الْأَنْصَارِيِّ ﷺ قَالَ: قَالَ لِي رَسُوْلُ اللهِ

الحديث رقم ٢٧: أخرجه أحمد بن حنبل فى المسند، ٥/ ٧٧، الرقم: ٢١٠١٣، والعسقلانى فى الإصابة، ٤/ ٥٩٩، الرقم: ٥٧٦٣، والمزى فى تهذيب الكمال، ٢١/ ٥٤٢، الرقم: ٤٣٢٦۔

ﷺ: ادْنُ مِنِّي قَالَ: فَمَسَحَ بِيَدِهِ عَلَى رَأْسِهِ وَلِحْيَتِهِ. قَالَ: ثُمَّ قَالَ: اللَّهُمَّ جَمِّلْهُ وَأَدِمْ جَمَالَهُ. قَالَ: فَلَقَدْ بَلَغَ بِضْعًا وَمِئَةَ سَنَةٍ، وَمَا فِي رَأْسِهِ وَلِحْيَتِهِ بَيَاضٌ إِلَّا نَبْذٌ يَسِيرٌ وَلَقَدْ كَانَ مُنْبَسِطَ الْوَجْهِ وَلَمْ يَنْقَبِضْ وَجْهُهُ حَتَّى مَاتَ. رَوَاهُ أَحْمَدُ.

''हज़रत अबू ज़ैद अंसारी ﷺ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने मुझे फरमायाः मेरे क़रीब हो जाओ। फिर मेरे सर और दाढ़ी पर अपना दस्ते मुबारक फेरा और दुआ फरमाईः इलाही! इसे ज़ीनत बख़्श और इसके हुस्नो जमाल को दवाम अ़ता फरमा। (रावी कहते हैं कि) उन्होंने सौ साल से ज़्यादा उम्र पाई लेकिन उनके सर और दाढ़ी के चंद ही बाल सफेद हुए थे। उनका चेहरा साफ़ और रोशन रहा और आख़िरी दम तक एक ज़र्रा भर शिकन भी चेहरे पर नमूदार न हुई।''

فَصْلٌ فِي كَرَامَاتِ الْأَوْلِيَاءِ وَالصَّالِحِيْنَ رضي الله عنهم

﴿औलिया और सालेहीन رضي الله عنهم की करामात का बयान﴾

٧٧٢/٢٨۔ عَنْ عَائِشَةَ رضي الله عنها زَوْجِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وآله وسلم أَنَّهَا قَالَتْ: إِنَّ أَبَابَكْرٍ الصِّدِّيْقَ رضي الله عنه كَانَ نَحَلَهَا جَادَّ عِشْرِيْنَ وَسْقًا مِنْ مَالِهِ بِالْغَابَةِ. فَلَمَّا حَضَرَتْهُ الْوَفَاةُ قَالَ: وَاللهِ يَا بُنَيَّةُ مَامِنَ النَّاسِ أَحَدٌ أَحَبُّ إِلَيَّ غِنًى بَعدِي مِنْكِ وَلاَ أَعَزُّ عَلَيَّ فَقْرًا بَعْدِي مِنْكِ. وَإِنِّي كُنْتُ نَحَلْتُكِ جَادَّ عِشْرِيْنَ وَسْقًا. فَلَوْكُنْتِ جَدَدْتِيْهِ وَاحْتَزْتِيْهِ كَانَ لَكِ وَإِنَّمَا هُوَ الْيَوْمَ مَالُ وَارِثٍ. وَإِنَّمَا هُوَ أَخَوَاكِ وأُخْتَاكِ. فَاقْتَسِمُوْهُ عَلَى كِتَابِ اللهِ. قَالَتْ عَائِشَةُ رضي الله عنها: فَقُلْتُ: يَاأَبَتِ، وَاللهِ لَوْكَانَ كَذَا وَكَذَا لَتَرَكْتُهُ إِنَّمَا هِيَ أَسْمَاءُ فَمَنِ الْأُخْرَى؟ فَقَالَ أَبُوْبَكْرٍ رضي الله عنه: ذُوْبَطْنِ بِنْتِ خَارِجَةَ أَرَاهَا جَارِيَةً فَوَلَدَتْ أُمَّ كُلْثُوْمٍ. رَوَاهُ مَالِكٌ وَالطَّحَاوِيُّ وَالْبَيْهَقِيُّ.

''हुज़ूर नबी-ए-अकरम صلى الله عليه وآله وسلم की ज़ौजा मुबारका हज़रत आइशा सिद्दीक़ा رضی اللہ عنہا बयान करती हैं कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ رضي الله عنه गाबा (नामी वादी) में उन्हें खजूर के चंद दरख़्त हिबा किए जिनमें से बीस वसक़ खजूरें आती थीं। जब हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ رضي الله عنه की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो उन्होंने फरमायाः ऐ मेरी प्यारी बेटी! ऐसा दूसरा कोई नहीं जिसका अपने बाद ग़नी होना मुझे तुम से ज़्यादा पसंद हो और अपने बाद मुझे किसी की मुफ़लिसी ज़्यादा गरां

الحديث رقم ٢٨: أخرجه ملك في الموطأ، كتاب: الأقضية، باب: مالايجوز من النحل، ٢/٧٥٢، الرقم: ١٤٣٨، والبيهقي في السنن الكبرى، ٦/١٦٩، الرقم: ١١٧٢٨، ١٢٢٦٧، والطحاوي في شرح معاني الآثار، ٤/٨٨، واللالكائي في كرامات الأولياء، ١/١٧٧، الرقم: ٦٢، والعسقلاني في الإصابة، ٧/٥٧٥، الرقم: ١١٠٢٣، والنووي في تهذيب الأسماء، ٢/٥٧٤، الرقم: ١٠٣٠، ١٢٣٩، والزيلعي في نصب الراية، ٤/١٢٢، وأبو جعفر الطبري في الرياض النضرة، ٢/١٢٣، ٢٥٧، وابن سعد في الطبقات الكبرى، ٣/١٩٤۔

नहीं। मैंने तुम्हें कुछ दरख़्त दिए थे जिनसे बीस वसक खजूरें आती थीं अगर तुमने उन पर क़ब्जा किया होता तो वो तुम्हारे हो जाते। अब वो मीरास का माल है और तुम्हारे दो भाई और दो बहनें हैं। सो सारे माल को अल्लाह की किताब (के हुक्म) के मुताबिक़ तक़्सीम कर लेना। हज़रत आइशा رضی اللہ عنہا फरमाती हैं : मैंने अ़र्ज़ कियाः अब्बा जान! माल ख़्वाह कितना ही ज़्यादा होता मैं छोड़ देती लेकिन मेरी बहन तो सिर्फ हज़रत अस्मा हैं दूसरी कौन है ? हज़रत अबू बकर ﷺ ने फरमाया वो बिन्ते ख़ारिजा के पेट में है और मेरे ख़याल में वो लड़की है फिर उन्होंने उम्मे कुलसूम (नामी) बेटी को जन्म दिया।''

٧٧٣ / ٢٩ ـ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي بَكْرٍ رضي الله عنهما في رواية طويلة فَدَعَا: (أي أَبُوْبَكْرٍ ﷺ) بِالطَّعَامِ فَأَكَلَ وَأَكَلُوْا فَجَعَلُوْا لَا يَرْفَعُوْنَ لُقْمَةً إِلَّا رَبَا مِنْ أَسْفَلِهَا أَكْثَرُ مِنْهَا، فَقَالَ يَا أُخْتَ بَنِي فِرَاسٍ، مَاهَذَا؟ قَالَتْ: لَا وَقُرَّةِ عَيْنِي، لَهِيَ الآنَ أَكْثَرُ مِنْهَا قَبْلَ ذَلِكَ بِثَلَاثِ مَرَّاتٍ، فَأَكَلُوْا وَبَعَثَ بِهَا إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَذَكَرَ أَنَّهُ أَكَلَ مِنْهَا. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अ़ब्दुर्ररहमान बिन अबू बकर رضی اللہ عنہما से एक तवील वाक़िये में मरवी है कि एक मर्तबा हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ ﷺ ने सहाबा किराम (अस्हाबे सुफ़्फ़ा) की दावत की (और उनके साथ) आप ने ख़ुद भी खाना खाया और दूसरों ने भी। हर लुक़्मा उठाने के बाद खाना पहले से भी ज़्यादा बढ़ जाता। सय्यदना सिद्दीक़ अकबर ﷺ ने अपनी बीवी से (जो बनी फ़रास के क़बीले से थी) फरमायाः ऐ हमशीरा बनी फ़रास! यह क्या मामला है ? उन्होंने अर्ज कियाः ऐ मेरी आँखों की ठंडक (मेरे सरताज) इस वक़्त तो यह खाना पहले से तीन गुना ज्यादा है चुनांचे

الحديث رقم ٢٩: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: مواقيت الصلاة، باب: السَّمَرِ مَعَ الضَّيفِ وَالأهلِ، ١ / ٢١٦، الرقم: ٥٧٧، وفى كتاب: المناقب، باب: علامات النبوة فى الإسلام، ٣ / ١٣١٢، الرقم: ٣٣٨٨، وفى كتاب: الأدب، باب: مايُكره من الغضب والجزع عند الضيف، ٥ / ٢٢٧٤، الرقم: ٥٧٨٩، وفى كتاب: الأدب، باب: قول الضيف لصاحبه: لَا آكُلُ حَتَّى تَأكُلَ، ٥ / ٢٢٧٤، الرقم: ٥٧٩٠، ومسلم فى الصحيح، كتاب: الأشربة، باب: إكرام الضيف وفضل إيثاره، ٣ / ١٦٢٧، الرقم: ٢٠٥٧، والبزار فى المسند، ٦ / ٢٢٨، الرقم: ٢٢٦٣، وأحمد بن حنبل فى المسند، ١ / ١٩٧، الرقم: ١٧٠٢، ١٧١٢.

उन सब सहाबा ने भी ख़ूब खाया और हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की ख़िदमते अक़दस में भी रवाना किया, नबी–ए–अकरम ﷺ ने भी तनावुल फरमाया।''

٧٧٤ / ٣٠ـ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رضي الله عنهما قَالَ: مَا سَمِعْتُ عُمَرَ لِشَيءٍ قَطُّ يَقُوْلُ: إِنِّي لَأَظُنُّهُ كَذَا إِلَّا كَانَ كَمَا يَظُنُّ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ.

''हज़रत अब्दुल्लाह उमर رضی اللہ عنہما से मरवी है कि मैंने हज़रत उमर ﷺ से कोई ऐसी बात नहीं सुनी जिसके मुतअल्लिक उन्होंने फरमाया हो कि मेरे ख़याल में यह इस तरह है और वो उनके ख़याल के मुताबिक़ न निकली हो।''

٧٧٥ / ٣١ـ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَقَدْ كَانَ فِيْمَا قَبْلَكُمْ مِنَ الْأُمَمِ نَاسٌ مُحَدَّثُوْنَ، فَإِنْ يَکُ فِي أُمَّتِي أَحَدٌ فَإِنَّهُ عَمَرُ أَي مُلْهَمُوْنَ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ وَرَوَاهُ مُسْلِمٌ مِنْ رِوَايَةِ عَائِشَةَ رضي الله عنها.

وقَالَ أَبُوْعِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحٌ.

وفي رواية: عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ ﷺ قَالُوْا: يَا رَسُوْلَ اللهِ! كَيْفَ مُحَدَّثٌ؟ قَالَ: تَتَكَلَّمُ الْمَلَائِكَةُ عَلَى لِسَانِهِ. رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ وَإِسْنَادُهُ حَسَنٌ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः पहली उम्मतों में ऐसे लोग थे जिनके दिल में अल्लाह तआला की तरफ़ से बातें इल्क़ा की जाती

الحديث رقم ٣٠: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: فضائل الصحابة، باب: إسلامُ عمرَ بنَ الخطابِ ﷺ، ٣/١٤٠٣، الرقم: ٣٦٥٣، والحاكم فى المستدرك، ٣/٩٤، الرقم: ٤٥٠٣، واللالكائي فى كرامات الأولياء، ١/١١٩، الرقم: ٦٥، والنووى فى رياض الصالحين، ١/٥٦٨، الرقم: ١٥١٠.

الحديث رقم ٣١: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: فضائل الصحابة، باب: مناقب عمر بنَ الخطَّابِ ﷺ، ٣/١٣٤٩، الرقم: ٣٤٨٦، وفى كتاب: الأنبياء، باب: أَمْ حَسِبْتَ أَنَّ أَصْحَابَ الْكَهْفِ وَالرَّقِيْمِ: [الكهف: ٩]، ٣/١٢٧٩، الرقم: ٣٢٨٢، ومسلم فى الصحيح، كتاب: فضائل الصحابة، باب: من فضائل عمر ﷺ، ٤/١٨٦٤، الرقم: ٢٣٩٨، والترمذى فى السنن، كتاب: المناقب عن رسول ←

(ग़ैब से दिल में डाली जाती) थीं (यानी उन्हें इल्हाम होता था) और मेरी उम्मत में अगर कोई ऐसा शख़्स है तो वो उमर है।''

''और हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ से मरवी रिवायत में बयान किया कि सहाबा किराम ने पूछा (या रसूलल्लाह!) इस इल्हाम की कैफ़ियत क्या होती है? हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः उसकी ज़ुबान पर फ़रिश्ते बोलते हैं।''

٧٧٦ / ٣٢۔ عَنْ عَائِشَةَ رضي الله عنها قَالَتْ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنِّي لَأَنْظُرُ إِلَى شَيَاطِيْنِ الإِنْسِ وَالْجِنِّ قَدْ فَرُّوْا مِنْ عُمَرَ.

وفي رواية: قَالَ: إِنَّ الشَّيْطَانَ لَيَخَافُ (أَوْ لَيَفْرَقُ) مِنْکَ يَا عُمَرُ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ وَأَحْمَدُ.

وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत आइशा رضی اللہ عنہا से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः मैं जिन्नात व इन्सानों के शयातीन को देखता हूँ कि वो उमर के ख़ौफ़ से भाग गए हैं और एक

.... الله ﷺ، باب: فى مناقب عمر بن الخطاب ﷺ، ٥ / ٦٢٢، الرقم: ٣٦٩٣، وابن حبان فى الصحيح، ١٥ / ٣١٧، الرقم: ٦٨٩٤، والحاكم فى المستدرك، ٣ / ٩٢، الرقم: ٤٤٩٩، وقال: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحُ الإِسْنَادِ، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٦ / ٥٥، الرقم: ٢٤٣٣٠، والبيهقى فى شعب الإيمان، ٥ / ٤٨، الرقم: ٥٧٣٤، والطبرانى فى المعجم الأوسط، ٧ / ١٨، الرقم: ٦٧٢٦، والديلمى فى مسند الفردوس، ٣ / ٢٧٨، الرقم: ٤٨٣٩، وابن راهويه فى المسند، ٢ / ٤٧٩، الرقم: ١٠٥٨، والحكيم الترمذي في نوادر الأصول، ٣ / ١٣٨، والنووى فى رياض الصالحين، ١ / ٥٦٤، الرقم: ١٥٠٤، والهيثمى فى مجمع الزوائد، ٩ / ٦٩،والبيهقى فى الاعتقاد، ١ / ٣١٥، والعسقلانى فى فتح البارى، ٧ / ٥٠، والمباركفورى فى تحفة الأهوذى، ١٠ / ١٢٥۔

الحديث رقم ٣٢: أخرجه الترمذى فى السنن، كتاب: المناقب عن رسول الله ﷺ، باب: فى مناقب عمر بن الخطاب ﷺ، ٥ / ٦٢١، الرقم: ٣٦٩٠، ٣٦٩١، والنسائى فى السنن الكبرى، ٥ / ٣٠٩، الرقم: ٥٩٥٧، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٥ / ٣٥٣، الرقم: ٢٣٠٣٩، وفى فضائل الصحابة، ١ / ٣٣٣، الرقم: ٤٨٠، وابن حبان فى الصحيح، ١٠ / ٢٣١، الرقم: ٤٣٨٦، والبيهقى فى السنن الكبرى، ١٠ / ٧٧۔

रिवायत में फरमायाः ऐ उमर! तुम से शैतान डरता है।''

٣٣/٧٧٧۔ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رضي الله عنهما أَنَّ عُمَرَ بَعَثَ جَيْشًا وَأَمَّرَ عَلَيْهِمْ رَجُلًا يُدْعَى سَارِيَةَ، فَبَيْنَمَا عُمَرُ يَخْطُبُ فَجَعَلَ يَصِيْحُ: يَاسَارِيُّ الْجَبَلَ. فَقَدِمَ رَسُوْلٌ مِنَ الْجَيْشِ فَقَالَ: يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ! لَقِيْنَا عَدُوَّنَا فَهَزَمُوْنَا فَإِذَا بِصَائِحٍ يَصِيْحُ: يَا سَارِيُّ الْجَبَلَ. فَأَسْنَدْنَا ظُهُوْرَنَا إِلَى الْجَبَلِ فَهَزَمَهُمُ اللهُ تَعَالَى. رَوَاهُ أَحْمَدُ فِي الْفَضَائِلِ وَالْبَيْهَقِيُّ وَأَبُوْنُعَيْمٍ.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर رضی اللہ عنہما से मरवी है कि हज़रत उमर ﷺ ने एक लश्कर रवाना फरमाया और उसका सालार एक शख़्स को मुक़र्रर किया जिसका नाम सारिया था। एक दिन आप खुत्बा दे रहे थे कि अचानक दौराने खुत्बा आपने पुकाराः ऐ सारिया पहाड़ की ओट लो। (जंग के बाद) लश्कर से एक क़ासिद आया और कहने लगाः ऐ अमीर–उल–मोमिनीन हम दुश्मन से लड़ रहे थे और करीब था कि वो हमें शिकस्त दे दे फिर अचानक किसी पुकारने वाले ने पुकाराः ऐ सारिया पहाड़ की ओट लो हमने अपनी पीठें पहाड़ की तरफ़ कर लीं तो अल्लाह तआ़ला ने उन्हें शिकस्त और हमें फ़तह अ़ता की।''

٣٤/٧٧٨۔ عَنْ قَيْسِ بْنِ الْحَجَّاجِ عَمَّنْ حَدَّثَهُ قَالَ: لَمَّا فُتِحَتْ مِصْرُ أَتَى أَهْلُهَا إِلَى عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ ﷺ حِيْنَ دَخَلَ بُوْنَةَ مِنْ أَشْهُرِ الْعَجَمِ. فَقَالُوْا: أَيُّهَا الْأَمِيْرُ إِنَّ لِنِيْلِنَا هَذَا سُنَّةً لاَ يَجْرِي إِلَّا بِهَا. فَقَالَ: وَمَا ذَاكَ؟ قَالُوْا: إِذَا كَانَ ثِنْتَا عَشْرَةَ لَيْلَةً خَلَوْنَ مِنْ هَذَا الشَّهْرِ عَمَدْنَا

الحديث رقم ٣٣: أخرجه أحمد بن حنبل في فضائل الصحابة، ١/٢١٩، الرقم: ٣٥٥، والبيهقي في دلائل النبوة، ٦/٣٧٠، وفي الإعتقاد، ١/٣١٤، وأبونعيم في دلائل النبوة، ٣/٢١٠-٢١١، والخطيب التبريزي في مشكاة المصابيح، ٢/٤١٠، الرقم: ٥٩٥٤، والرازي في التفسير الكبير، ٢١/٨٧۔

الحديث رقم ٣٤: أخرجه اللالكائي في كرامات الأولياء، ١/١١٩، الرقم: ٦٦، والقرطبي في الجامع لأحكام القرآن، ١٣/١٠٣، وابن كثير في تفسير القرآن العظيم، ٣/٤٦٥، والرازي في التفسير الكبير، ٢١/٨٨، والحموي في معجم البلدان، ٥/٣٣٥۔

إِلَى جَارِيَةٍ بِكْرٍ مِنْ أَبَوَيْهَا فَأَرْضَيْنَا أَبَوَيْهَا وَجَعَلْنَا عَلَيْهَا مِنَ الْحُلِيِّ وَالثِّيَابِ أَفْضَلُ مَا يَكُوْنُ ثُمَّ أَلْقَيْنَاهَا فِي هَذَا النِّيْلِ. فَقَالَ لَهُمْ عَمْرٌو رضي الله عنه: إِنَّ هَذَا مِمَّا لاَ يَكُوْنُ فِي الإِسْلاَمِ إِنَّ الإِسْلاَمَ يَهْدِمُ مَا كَانَ قَبْلَهُ. قَالَ: فَأَقَامُوْا بُوْنَةَ وَأَبِيْبَ وَمَسْرَى وَالنِّيْلُ لَا يَجْرِي قَلِيْلًا وَلَا كَثِيْرًا حَتَّى هَمُّوْا بِالْجَلَاءِ فَلَمَّا رَأَى ذَلِكَ عَمْرٌو رضي الله عنه كَتَبَ بِذَلِكَ إِلَى عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رضي الله عنه، فَكَتَبَ إِنَّكَ قَدْ أَصَبْتَ بِالَّذِي فَعَلْتَ وَإِنَّ الإِسْلَامَ يَهْدِمُ مَا قَبْلَهُ وَإِنِي قَدْ بَعَثْتُ إِلَيْكَ بِبِطَاقَةٍ دَاخِلَ كِتَابِي هَذَا فَأَلْقِهَا فِي النِّيْلِ. فَلَمَّا قَدِمَ كِتَابُ عُمَرَ رضي الله عنه إِلَى عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ رضي الله عنه، وأَخَذَ الْبِطَاقَةَ فَفَتَحَهَا فَإِذَا فِيْهَا: مِنْ عَبْدِ اللهِ عُمَرَ أَمِيْرِ الْمُؤْمِنِيْنَ إِلَى نِيْلِ مِصْرَ أَمَّا بَعْدُ! فَإِنْ كُنْتَ إِنَّمَا تَجْرِي مِنْ قِبَلِكَ فَلَا تَجْرِ وَإِنْ كَانَ اللهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ هُوَ الَّذِي يُجْرِيْكَ فَنَسْأَلَ اللهَ الْوَاحِدَ الْقَهَّارَ أَنْ يُجْرِيَكَ. قَالَ: فَأَلْقَى الْبِطَاقَةَ فِي النِّيْلِ فَلَمَّا أَلْقَى الْبِطَاقَةَ أَصْبَحُوْا يَوْمَ السَّبْتِ وَقَدْ أَجْرَاهُ اللهُ تَعَالَى سِتَّةَ عَشَرَ ذِرَاعًا فِي لَيْلَةٍ وَاحِدَةٍ وَقَطَعَ اللهُ تَعَالَى تِلْكَ السُّنَّةَ عَنْ أَهْلِ مِصْرَ إِلَى الْيَوْمِ.

رَوَاهُ اللَّالَكَائِيُّ وَالْقُرْطَبِيُّ وَابْنُ كَثِيْرٍ وَأَبُوْ الشَّيْخِ فِي كِتَابِ الْعَظَمَةِ.

''हज़रत क़ैस बिन हज्जाज रिवायत करते हैं उससे जिसने उन्हें बताया कि मिस्र फ़तह होने के बाद अहले मिस्र (गर्वनर मिस्र) हज़रत अ़म्र बिन आ़स رضي الله عنه की ख़िदमत में हाज़िर हुए जब अजमी महीना बूना शुरू हुआ। और अ़र्ज़ किया: ऐ अमीर! हमारे इस दरियाए नील का एक मामूल है जिसकी तामील के बग़ैर उसमें रवानी नहीं आती। हज़रत अ़म्र बिन आ़स رضي الله عنه ने फरमाया: बताओ वह क्या मामूल है। उन लोगो ने जवाब दिया: जब उस महीने बारह तारीख़ आती है तो हम एक कुँवारी लड़की उसके वालिदैन की रज़ामंदी से हासिल करते हैं और फिर उसे उम्दा से उम्दा ज़ेवरात और कपड़े पहना कर दरियाए नील की नज़र कर देते हैं हज़रत अ़म्र बिन आ़स رضي الله عنه ने फरमाया: यह सब इस्लाम में नहीं होगा। इस्लाम ज़मानए जाहिलियत की तमाम

(बेहूदा) रस्मों को ख़त्म करता है। (रावी ने) कहाः अहले मिस्र बूना, और मिस्री तीन माह तक इस हुक्म पर क़ायम रहे नील की रवानी रूकी रही पानी का क़तरा न रहा। दरियाए नील की रवानी को बंद देख कर लोगों ने तर्के वतन का इरादा किया। हज़रत अ़म्र बिन अ़ास ﷺ ने तमाम हालात की अमीर उल मोमिनीन हज़रत उमर बिन ख़त्ताब ﷺ को इत्तिला दी। हज़रत उमर ﷺ ने जवाब में लिखा कि ऐ अ़म्र बिन अ़ास तुमने जो कुछ किया दुरस्त किया इस्लाम ने साबिका (बेहूदा) रुसूम को जड़ से उखाड़ फैंका है। मैं अपने इस ख़त के अन्दर एक रूक़्आ भेज रहा हूँ उसे दरियाए नील में डाल देना। बस जब हज़रत उमर फ़ारूक़ ﷺ का ख़त हज़रत अ़म्र बिन अ़ास ﷺ तक पहुँचा तो उन्होंने उस ख़त को खोला तो उसमें दर्ज ज़ेल इबारत थीः ''अल्लाह तआ़ला के बंदे अमीर–उल–मोमिनीन उमर की तरफ़ से मिस्र के दरियाए नील के नाम। हम्दो सलात के बाद (ऐ दरिया) अगर तू अपनी मर्ज़ी से बहता है तो बह। और अगर अल्लाह वाहिद व क़हहार ही तुझे रवां करता है तो हम ख़ुदावन्दे वाहिद व क़ह्हार से सवाल करते हैं कि वो तुझे जारी कर दे। चुनांचे अ़म्र बिन अ़ास ﷺ ने वो रूक़्आ दरियाए नील में डाल दिया। जब रूक़्आ डाला हफ़्ते के दिन सुबह लोगों ने देखा कि एक रात में अल्लाह तआ़ला ने सोलह हाथ (पहले से भी) ऊँचा पानी दरियाए नील में जारी फरमा कर अहले मिस्र से उसी दिन से आज तक इस क़दीम ज़ालिमाना रस्म को हमेशा के लिए ख़त्म फरमा दिया।''

٧٧٩ / ٣٥۔ عَنْ مَالِكٍ ﷺ قَالَ في رواية طويلة قُتِلَ عُثْمَانُ ﷺ وَإِنَّ رَأْسَهُ عَلَى الْبَابِ لَيَقُوْلُ: طُقْ طُقْ حَتَّى صَارُوْا بِهِ إِلَى حَشِّ كَوْكَبٍ فَاحْتَفَرُوا لَهُ. رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ وَابْنُ عَسَاكِرَ.

''हज़रत इमाम मालिक ﷺ से एक तवील रिवायत में मरवी है फरमाते हैं कि हज़रत उस्मान ﷺ को शहीद किया गया और दरवाजे पर ही उनका सरे मुबारक पुकार रहा थाः मुझे दफ़न करो। चुनांचे उनके साथी उनकी ना'श मुबारक (जनाज़े) को बाग़े कौकब में ले गए जहाँ उन्होंने आपकी तदफ़ीन की।''

الحديث رقم ٣٥: أخرجه الطبراني في المعجم الكبير، ١/ ٧٨، الرقم: ١٠٩، وابن عساكر في تاريخ دمشق الكبير، ٣٩/ ٥٣٢، والهيثمي في مجمع الزوائد، ٩/ ٩٥، وابن عبد البر في الاستيعاب، ٣/ ١٠٤٧، وابن سعد في الطبقات الكبرى، ٣/ ٧٧، والمزي في تهذيب الكمال، ١٩/ ٤٥٧، والعسقلاني في تلخيص الحبير، ٢/ ١٤٥.

٧٨٠ / ٣٦۔ عَنْ مَالِكٍ رضي الله عنه قَالَ: وَكَانَ عُثْمَانُ رضي الله عنه يَمُرُّ بِحَشِّ كَوْكَبٍ فَيَقُوْلُ لَيُدْفَنُ رَجُلٌ صَالِحٌ. رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ وَابْنُ عَسَاكِرَ.

''हज़रत इमाम मालिक رضي الله عنه से मरवी है कि हज़रत उस्मान رضي الله عنه बाग़े कौकब के पास से गुज़रते तो फरमाते कि यहाँ एक नेक इन्सान दफ़न किया जाएगा (चुनांचे वो ख़ुद उसी जगह दफ़न किए गए)''

٧٨١ / ٣٧۔ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رضي الله عنهما قَالَ: إِنَّ عُثْمَانَ رضي الله عنه أَصْبَحَ فَحَدَّثَ فَقَالَ: إِنِّي رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ فِي الْمَنَامِ اللَّيْلَةَ فَقَالَ: يَا عُثْمَانُ أَفْطِرْ عِنْدَنَا فَأَصْبَحَ عُثْمَانُ رضي الله عنه صَائِمًا فَقُتِلَ مِنْ يَوْمِهِ. رَوَاهُ الْحَاكِمُ وَابْنُ أَبِي شَيْبَةَ.

وَقَالَ الْحَاكِمُ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحُ الإِسْنَادِ.

٧٨٢ / ٣٨۔ وفي رواية: عَنِ امْرَأَةِ عُثْمَانَ قَالَتْ: قَالَ: رَأَيْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ وَأَبَا بَكْرٍ وَعُمَرَ رضي الله عنهما قَالُوْا: إِنَّكَ تُفْطِرُ عِنْدَنَا اللَّيْلَةَ.

رَوَاهُ ابْنُ أَبِي شَيْبَةَ وَابْنُ سَعْدٍ.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर رضی اللہ عنہما रिवायत करते हैं कि हज़रत उस्मान رضي الله عنه ने (अपनी शहादत के दिन) सुबह हुई तो फरमाया: मैंने रात को देखा कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम

الحديث رقم ٣٦: أخرجه الطبراني في المعجم الكبير، ١ / ٧٨، الرقم: ١٠٩، وابن عساكر في تاريخ دمشق الكبير، ٣٩ / ٥٣٢، والهيثمي في مجمع الزوائد، ٩ / ٩٥، وابن عبدالبر في الاستيعاب، ٣ / ١٠٤٧، وابن سعد في الطبقات الكبرى، ٣ / ٧٧، والمزي في تهذيب الكمال، ١٩ / ٤٥٧.

الحديث رقم٣٧ / ٣٨: أخرجه الحاكم في المستدرك، ٣ / ١١٠، الرقم: ٤٥٥٤، وابن أبي شيبة في المصنف، ٦ / ١٨١، الرقم: ٣٠٥١٠۔ ٣٠٥١١: ٧ / ٤٤٢، الرقم: ٣٧٠٨٥، والهيثمي في مجمع الزوائد، ٧ / ٢٣٢، وابن سعد في الطبقات الكبرى، ٣ / ٧٤، وابن حيان في طبقات المحدثين بأصبهان، ٢ / ٢٩٨، الرقم: ١٨٢، وابن عساكر في تاريخ دمشق الكبير، ٣٩، ٣٨٤.

ﷺ ने फरमायाः ऐ उस्मान! आज का रोज़ा तुम हमारे पास इफ़्तार करो। सो उस दिन हज़रत उस्मान ؓ ने रोज़ा रखा और उसी दिन उन्हें शहीद कर दिया गया।''

''एक रिवायत में हज़रत उस्मान ؓ की जौज़ा मोहतरमा से मरवी है कि हज़रत उस्मान ؓ ने फरमायाः मैंने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ और हज़रत अबू बकर और उमर رضی اللہ عنہما को देखा वो सब मुझे कह रहे थे (ऐ उस्मान!) आज रात तुम्हारी इफ़्तारी हमारे साथ है।''

٧٨٣ / ٣٩۔ عَنْ سُلَيْمَانَ ابْنِ يَسَارٍ ؓ أَنَّ جَهْجَاهَ الْغِفَارِيَّ أَخَذَ عَصَا عُثْمَانَ الَّتِي يَتَخَصَّرُ بِهَا فَكَسَرَهَا عَلَى رُكْبَتِهِ فَوَقَعَتْ فِي رُكْبَتِهِ الآكِلَةُ.

رَوَاهُ ابْنُ عَسَاكِرَ وَاللَّالْكَائِيُّ.

''हज़रत सुलैमान बिन यसार ؓ से मरवी है कि जहजाह अल ग़फ़ारी ने हज़रत उस्मान ؓ का असा जिस पर टेक लगाते थे अपने घुटने पर रख कर (गुस्ताख़ी के साथ) तोड़ दिया तो उसके घुटने पर फोड़ा निकल आया।''

٧٨٤ / ٤٠۔ عَنْ أَبِي رَافِعٍ ؓ مَوْلَى رَسُوْلِ اللهِ ﷺ، قَالَ: خَرَجْنَا مَعَ عَلِيٍّ ؓ حِيْنَ بَعَثَهُ رَسُوْلُ اللهِ بِرَأْيَتِهِ، فَلَمَّا دَنَا مِنَ الْحِصْنِ، خَرَجَ إِلَيْهِ أَهْلُهُ فقَاتَلَهُمْ، فَضَرَبَهُ رَجُلٌ مِنْ يَهُوْدٍ فَطَرَحَ تُرْسَهُ مِنْ يَدِهِ، فَتَنَاوَلَ عَلِيٌّ ؓ بَابًا كَانَ عِنْدَ الْحِصْنِ، فَتَرَّسَ بِهِ نَفْسَهُ، فَلَمْ يَزَلْ فِي يَدِهِ وَهُوَ يُقَاتِلُ حَتَّى فَتَحَ اللهُ عَلَيْهِ،ثُمَّ أَلْقَاهُ مِنْ يَدَيْهِ حِيْنَ فَرَغَ فَلَقَدْ رَأَيْتُنِي فِي نَفَرٍ مَعِي سَبْعَةٌ أَنَا ثَامِنُهُمْ، نَجْهَدُ عَلَى أَنْ نَقْلِبَ ذَلِكَ الْبَابَ فَمَا نَقْلِبُهُ.

الحديث رقم ٣٩: أخرجه ابن عساكر فی تاريخ دمشق الكبير، ٣٩ / ٣٢٩، واللالكائي فی كرامات الأولياء، ١ / ١٢٤، الرقم: ٧٠، وابن عبد البر فی الاستيعاب، ١ / ٢٦٩، والرازی فی التفسير الكبير، ٢١ / ٨٨۔

الحديث رقم ٤٠: أخرجه أحمد بن حنبل فی المسند، ، ٦ / ٨، الرقم: ٢٣٩٠٩، والهيثمی فی مجمع الزوائد، ٦ / ١٥٢، والطبري فی تاريخ الأمم والملوك، ٢ / ١٣٧، وابن هشام فی السيرة النبوية، ٤ / ٣٠٦۔

رَوَاهُ أَحْمَدُ.

''हज़रत अबू राफे' ﷺ जो हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के आज़ाद कर्दह गुलाम थे रिवायत फरमाते हैं कि जब हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने हज़रत अ़ली ﷺ को अपना झंडा दे कर ख़ैबर की तरफ़ रवाना किया तो हम भी उनके साथ थे जब हम क़िला–ए–ख़ैबर के पास पहुँचे जो मदीना मुनव्वरा के क़रीब है तो ख़ैबर वाले अचानक हज़रत अ़ली ﷺ पर टूट पड़े आप बेमिसाल बहादुरी का मुजाहिरा कर रहे थे कि अचानक उन पर एक यहूदी ने चोट करके उनके हाथ से ढाल गिरा दी। उस पर हज़रत अ़ली ﷺ ने किले का एक दरवाज़ा उख़ेड़ कर अपनी ढाल बना लिया और उसे ढाल की हैसियत से अपने हाथ में लिये जंग में शरीक रहे। बिल आख़िर दुश्मनों पर फ़तह हासिल हो जाने के बाद उस ढाल नुमा दरवाजे को अपने हाथ से फैंक दिया उस सफ़र में मेरे साथ सात आदमी और भी थे और हम आठ के आठ मिल कर उस दरवाज़े को उलटने की कोशिश करते रहे लेकिन हम वो दरवाज़ा (जिसे हज़रत अ़ली ﷺ ने तन्हा उखेड़ा था) न उलट सके।''

٧٨٥ / ٤١ـ عَنْ جَابِرٍ ﷺ أَنَّ عَلِيًّا ﷺ حَمَلَ الْبَابَ يَوْمَ خَيْبَرٍ حَتَّى صَعِدَ الْمُسْلِمُوْنَ فَفَتَحُوْهَا وَأَنَّهُ جُرِّبَ فَلَمْ يَحْمِلْهُ إِلَّا أَرْبَعُوْنَ رَجُلًا.

رَوَاهُ ابْنُ أَبِي شَيْبَةَ. وَقَالَ الْعَسْقَلَانِيُّ: رَوَاهُ الْحَاكِمُ.

''हज़रत जाबिर ﷺ ने बयान किया है कि ग़ज़वए ख़ैबर के रोज़ हज़रत अ़ली ﷺ ने क़िला–ए–ख़ैबर का दरवाजा उठा लिया यहाँ तक कि मुसलमान क़िले पर चढ़ गए और उसे फ़तह कर लिया और यह तजुर्बाशुदह बात है कि उस दरवाज़े को चालीस आदमी मिल कर ही उठा सकते थे।''

٧٨٦ / ٤٢ـ عَنْ زَاذَانَ ﷺ أَنَّ عَلِيًّا ﷺ حَدَّثَ حَدِيْثًا فَكَذَّبَهُ رَجُلٌ فَقَالَ لَهُ عَلِيٌّ ﷺ: أَدْعُوْ عَلَيْكَ إِنْ قُلْتَ كَاذِبًا قَالَ: أُدْعُ فَدَعَا عَلَيْهِ فَلَمْ

الحديث رقم ٤١: أخرجه ابن أبي شيبة في المصنف، ٦/٣٧٤، الرقم: ٣٢١٣٩، والعسقلاني في فتح الباري، ٧/٤٧٨، والطبري في تاريخ الأمم والملوك، ٢/١٣٧، وابن هشام في السيرة النبوية، ٤/٣٠٦.

الحديث رقم ٤٢: أخرجه الطبراني في المعجم الأوسط، ٢/٢١٩، الرقم: ١٧٩١، والهيثمي في مجمع الزوائد، ٩/١١٦، واللالكائي في كرامات الأولياء، ١/١٢٦، الرقم: ٧٣.

يَبْرَحْ حَتَّى ذَهَبَ بَصَرُهُ. رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ.

''हज़रत ज़ादान ﷺ से रिवायत है कि हज़रत अ़ली ﷺ ने गुफ़्तगू फरमाई तो एक शख़्स ने उन्हें झुठलाया उस पर हज़रत अ़ली ﷺ ने फरमायाः अगर तूने झूठ बोला हो तो मैं तुझे बद्दुआ दूँ? उसने कहा हाँ बद्दुआ करें। चुनांचे हज़रत अ़ली ﷺ ने उसके लिए बद्दुआ की तो वो शख़्स अभी उस मजलिस से उठने भी न पाया था कि अंधा हो गया।''

٧٨٧ / ٤٣ـ عَنْ عَاصِمِ بْنِ ضَمْرَةَ ﷺ قَالَ: خَطَبَ الْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ رضي الله عنهما حِيْنَ قُتِلَ عَلِيٌّ ﷺ فَقَالَ: يَا أَهْلَ الْكُوفَةِ أَوْ يَا أَهْلَ الْعِرَاقِ لَقَدْ كَانَ بَيْنَ أَظْهُرِكُمْ رَجُلٌ قُتِلَ اللَّيْلَةَ أَوْ أُصِيْبَ الْيَوْمَ لَمْ يَسْبِقْهُ الْأَوَّلُوْنَ بِعِلْمٍ وَلَا يُدْرِكُهُ الآخَرُوْنَ كَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا بَعَثَهُ فِي سَرِيَّةٍ كَانَ جِبْرِيْلُ عليه السلام عَنْ يَمِيْنِهِ وَمِيْكَايِلُ عليه السلام عَنْ يَسَارِهِ فَلَا يَرْجِعُ حَتَّى يَفْتَحَ اللهُ عَلَيْهِ. رَوَاهُ ابْنُ أَبِي شَيْبَةَ.

''हज़रत आ़सिम बिन ज़मरा ﷺ से मरवी है कि जब हज़रत अ़ली ﷺ को शहीद कर दिया गया तो हज़रत इमामे हसन ﷺ ने एक ख़ुत्बे में इर्शाद फरमायाः ऐ अहले कूफ़ा (या फरमाया) ऐ अहले इराक़ आज तुम्हारे दरमियान वो शख़्स शहीद कर दिया गया जिससे इल्म में (उम्मत के) अव्वलीन भी सबक़त नहीं कर सके और आख़िरीन में से भी कोई उनके मुक़ाम (मर्तबे) को न पहुँच सकेगा। हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ जब हज़रत अ़ली ﷺ को किसी जिहाद की मुहिम पर रवाना फरमाते तो उनकी दाईं तरफ़ हज़रत जिब्राईल और बाईं तरफ़ हज़रत मिकाइल عليهما السلام रहा करते थे और वो कभी भी फ़तह हासिल किए बग़ैर नहीं लौटते थे।''

٧٨٨ / ٤٤ـ عَنْ أُمِّ سَلَمَى رضي الله عنها قَالَتْ: اشْتَكَتْ فَاطِمَةُ سلام الله عليها

الحديث رقم ٤٣: أخرجه ابن أبي شيبة فى المصنف، ٦ / ٣٦٩، الرقم: ٣٢٠٩٤، والهندى فى كنز العمال، ٦ / ٤١٢.

الحديث رقم ٤٤: أخرجه أحمد بن حنبل فى المسند، ٦ / ٤٦١، الرقم: ٢٧٦٥٦ـ ٢٧٦٥٧، والدولابى فى الذرية الطاهرة، ١ / ١١٣، والزيلعى فى نصب الراية، ←

شَكْوَاهَا الَّتِي قُبِضَتْ فِيهِ، فَكُنْتُ أُمَرِّضُهَا فَأَصْبَحَتْ يَوْمًا كَأَمْثَلِ مَارَأَيْتُهَا فِي شَكْوَاهَا تِلْكَ. قَالَتْ: وَخَرَجَ عَلِيٌّ رضي الله عنه لِبَعْضِ حَاجَتِهِ، فَقَالَتْ: يَا أُمَّهْ اسْكُبِي لِي غُسْلًا، فَسَكَبْتُ لَهَا غُسْلًا فَاغْتَسَلَتْ كَأَحْسَنِ مَا رَأَيْتُهَا تَغْتَسِلُ، ثُمَّ قَالَتْ: يَا أُمَّهْ أَعْطِينِي. ثِيَابِي الْجُدُدَ، فَأَعْطَيْتُهَا، فَلَبِسَتْهَا، ثُمَّ قَالَتْ: يَا أُمَّهْ قَدِّمِي لِي فِرَاشِي وَسَطَ الْبَيْتِ، فَفَعَلْتُ وَاضْطَجَعَتْ وَاسْتَقْبَلَتِ الْقِبْلَةَ، وَجَعَلَتْ يَدَهَا تَحْتَ خَدِّهَا، ثُمَّ قَالَتْ: يَا أُمَّهْ إِنِّي مَقْبُوضَةٌ الآنَ، وَقَدْ تَطَهَّرْتُ فَلاَ يَكْشِفُنِي أَحَدٌ، فَقُبِضَتْ مَكَانَهَا، قَالَتْ: فَجَاءَ عَلِيٌّ رضي الله عنه فَأَخْبَرْتُهُ. رَوَاهُ أَحْمَدُ.

''हज़रत उम्मे सलमा رضی اللہ عنہا रिवायत करती हैं कि जब हज़रत फ़ातिमा سلام اللہ علیہا अपने मर्ज़े विसाल में मुब्तिला हुईं तो मैं उनकी तीमारदारी करती थी। बीमारी के उस पूरे अर्से के दौरान जहाँ तक मेरा ख़याल है एक सुबह उनकी हालत क़द्रे बेहतर थी (कुछ ठीक थी) हज़रत अ़ली رضي الله عنه किसी काम से बाहर गए सय्यदा–ए–क़ाइनात ने कहाः ऐ अम्मा मेरे ग़ुस्ल के लिए पानी लाएं, मैं पानी लाई जहाँ तक मेरा ख़याल है (उस दिन) उन्होंने बेहतरीन ग़ुस्ल किया। फिर बोलीं: अम्मा जी मुझे नया लिबास दें। मैंने ऐसा ही किया। फिर वो क़िब्ला रूख हो कर लेट गईं हाथ रुखसार मुबारक के नीचे कर लिया फिर फरमायाः अम्मा जी अब मेरी वफ़ात हो जाएगी मैं (ग़ुस्ल करके) पाक हो चुकी हूँ लिहाज़ा मुझे कोई न खोले पस उसी जगह उनकी वफ़ात हो गई। हज़रत उम्मे सलमा फरमाती हैं कि फिर हज़रत अ़ली رضي الله عنه तशरीफ़ लाए तो मैंने उन्हें सारी बात बताई।''

٧٨٩ / ٤٥۔ عَنْ عُمَّارَةَ بْنِ عُمَيْرٍ رضي الله عنه قَالَ: لَمَّا جِيءَ بِرَأْسِ عُبَيْدِ اللهِ

.... ٢ / ٢٥٠، ومحب الدين فى ذخائر العقبى، ١ / ١٠٣، والهيثمى فى مجمع الزوائد، ٩ / ٢١٠، وابن الأثير فى أسد الغابة، ٧ / ٢٢١۔

الحديث رقم ٤٥: أخرجه الترمذى فى السنن، كتاب: المناقب عن رسول الله ﷺ، باب: مناقب الحسن والحسين عليهما السلام، ٥ / ٦٦٠، الرقم: ٣٧٨٠، والطبرانى فى المعجم الكبير، ٣ / ١١٢، الرقم: ٢٨٣٢، والمباركفورى فى تحفة الأحوذى، ١٠ / ١٩٣۔

بْنِ زِيَادٍ وَأَصْحَابِهِ نُضِّدَتْ فِي الْمَسْجِدِ فِي الرَّحْبَةِ فَانْتَهَيْتُ إِلَيْهِمْ وَهُمْ يَقُوْلُوْنَ: قَدْ جَاءَتْ قَدْ جَاءَتْ، فَإِذَا حَيَّةٌ قَدْ جَاءَتْ تَخَلَّلُ الرُّؤُوْسَ حَتَّى دَخَلَتْ فِي مِنْخَرَي عُبَيْدِ اللهِ بْنِ زِيَادٍ فَمَكَثَتْ هُنَيْهَةً ثُمَّ خَرَجَتْ فَذَهَبَتْ حَتَّى تَغَيَّبَتْ. ثُمَّ قَالُوْا: قَدْ جَاءَتْ قَدْ جَاءَتْ، فَفَعَلَتْ ذٰلِكَ مَرَّتَيْنِ أَوْ ثَلَاثاً. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالطَّبَرَانِيُّ.

وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: هٰذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत उम्मारा बिन उमैर ﷺ बयान करते हैं कि जब (इमाम हुसैन ﷺ के क़ातिल) उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद और उसके साथियों के सर ला कर मस्जिद के बरामदे में रखे गए और मैं उस वक़्त उन लोगों के पास पहुँचा जब वो लोग कह रहे थे वो आ गया, वो आ गया। इतनी देर में एक साँप कहीं से आया और उनके सरों पर घुसना शुरू किया और उबेदुल्लाह बिन ज़ियाद के नथने में घुसा और उसमें थोड़ी देर ठहर कर फिर बाहर आ गया और कहीं चला गया यहाँ तक कि वो कहीं ग़ायब हो गया। फिर अचानक वो कहने लगे वो आ गया, वो आ गया। वो साँप फिर आया और यही अमल उसने दो या तीन बार दोहराया।''

٧٩٠ / ٤٦۔ عَنْ قُرَّةَ بْنِ خَالِدٍ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا رِجَاءَ الْعَطَارِدِيّ ﷺ يَقُوْلُ: لَا تَسُبُّوْا عَلِيًّا ﷺ وَلَا أَهْلَ هٰذَا الْبَيْتِ فَإِنَّ جَارًا لَنَا مِنْ بِلْهَجِيْمِ قَالَ: أَلَمْ تَرَوْا إِلَى هٰذَا الْفَاسِقِ الْحُسَيْنِ بْنِ عَلِيٍّ قَتَلَهُ اللهُ، فَرَمَاهُ اللهُ بِكَوْكَبَيْنِ فِي عَيْنَيْهِ فَطَمَسَ اللهُ بَصَرَهُ. رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ.

إِسْنَادُهُ حَسَنٌ وَرِجَالُهُ رِجَالُ الصَّحِيْحِ.

''हज़रत क़ुर्रा बिन ख़ालिद फरमाते हैं कि मैंने सुना है कि हज़रत अबू रिजा अतारिदी फरमा रहे थेः हज़रत अली ﷺ और उस ख़ानवादए (नबुव्वत) को गालियाँ मत दो हमारा एक पड़ोसी जो

الحديث رقم ٤٦: أخرجه الطبراني في المعجم الكبير، ٣ / ١١٢، الرقم: ٢٨٣٠، والهيثمي في مجمع الزوائد، ٩ / ١٩٦، وقال: وَرِجَالُهُ رِجَالُ الصَّحِيْحِ۔

कि बिल हजीम से था कहने लगाः क्या तुम यह नहीं देखते (मआज़ल्लाह) कि उस फ़ासिक हुसैन इब्ने अ़ली को अल्लाह तआ़ला ने क़त्ल कर दिया (उसका यह कहना ही था कि) उसी वक़्त अल्लाह तआ़ला ने (आसमान से) उसकी दोनों आँखों में दो सितारे मारे और वो अंधा हो गया।''

٧٩١ / ٤٧۔ عَنْ خَيْثَمَةَ رضي الله عنه قَالَ: أُتِيَ خَالِدُ بْنُ الْوَلِيْدِ رضي الله عنه بِرَجُلٍ وَمَعَهُ زِقُّ خَمٍ فَقَالَ: اللّٰهُمَّ اجْعَلْهُ عَسَلاً، فَصَارَ عَسَلاً.

وفي رواية: لَمَّا قَدِمَ خَالِدُ بْنُ الْوَلِيْدِ الْحُرَّةَ أُتِيَ بِسَمٍّ فَوَضَعَهُ فِي رَاحَتِهِ ثُمَّ سَمَّى وَشَرِبَهُ.

رَوَاهُ اللَّالْكَائِيُّ وَالذَّهَبِيُّ وَالْعَسْقَلَانِيُّ.

وَقَالَ: رَوَاهُ أَبُوْيَعْلَى وَابْنُ سَعْدٍ وَابْنُ أَبِي الدُّنْيَا بِإِسْنَادٍ صَحِيْحٍ.

''हज़रत ख़ैसमा رضي الله عنه से रिवायत है कि हज़रत ख़ालिद बिन वलीद رضي الله عنه के पास एक आदमी लाया गया उसके पास शराब की सुराही थी, आपने फरमायाः ऐ अल्लाह इसे शहद बना दे। तो वो शराब फ़ौरन शहद में तब्दील हो गई।''

''और एक रिवायत में है कि जब हज़रत ख़ालिद बिन वलीद رضي الله عنه हुर्रा के मक़ाम पर आए तो उनके पास ज़हरे क़ातिल लाया गया, उन्होंने उसे हथेली पर डाला और बिस्मिल्लाह कर के पी गए (मगर उस ज़हर ने उन पर कोई असर नहीं किया)।''

٧٩٢ / ٤٨۔ عَنْ أَبِي خَلدَةَ قَالَ: قُلْتُ لِأَبِي الْعَالِيَةِ: سَمِعَ أَنَسٌ رضي الله عنه مِنَ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: خَدَمَهُ عَشْرَ سِنِينَ وَدَعَا لَهُ النَّبِيُّ ﷺ وَكَانَ لَهُ

الحديث رقم ٤٧: أخرجه اللالكائي فى كرامات الأولياء، ٢ / ٢٥٤، الرقم: ٩٤-٩٧، والذهبى فى سير أعلام النبلاء، ١ / ٣٧٥، ٣٧٦، والعسقلانى فى الإصابة، ٢ / ٢٥٤، والرازى فى التفسير الكبير، ٢١ / ٨٩۔

الحديث رقم ٤٨: أخرجه الترمذى فى السنن، كتاب: المناقب عن رسول الله ﷺ، باب: مناقب لأنس بن مالك رضي الله عنه، ٥ / ٦٨٣، الرقم: ٣٨٣٣، والذهبى فى سير أعلام النبلاء، ٣ / ٤٠٠، والعسقلانى فى الإصابة، ١ / ١٢٧، والخطيب التبريزى فى مشكاة المصابيح، ٢ / ٤٠١، الرقم: ٥٩٥٢۔

بُسْتَانٌ يَحْمَلُ فِي السَّنَةِ الْفَاكِهَةَ مَرَّتَيْنِ، وَكَانَ فِيْهَا رَيْحَانٌ، كَانَ يَجِيءُ مِنْهُ رِيحُ الْمِسْكِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ.

''हज़रत अबू ख़ल्दा ताबई से रिवायत है कि मैंने हज़रत अबू आलिया से पूछाः क्या हज़रत अनस ﷺ ने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ से हदीसों की समाअत की हैं? अबू आलिया ने फरमायाः हज़रत अनस ﷺ ने दस साल हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की ख़िदमत की और रसूलुल्लाह ﷺ ने उनके लिए दुआ फरमाई जिसकी वजह से हज़रत अनस का बाग़ साल में दो मर्तबा फ़ल देता था और उनके बाग़ में एक खुशबूदार पौदा था जिससे उन्हें कस्तूरी की ख़ुशबू आती थी।''

٧٩٣ / ٤٩. عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ في رواية طويلة وَكَانَ خُبَيْبٌ هُوَ قَتَلَ الْحَارِثَ يَوْم بَدْرٍ، فَمَكَثَ عِنْدَهُمْ أَسِيْرًا. وَكَانَتْ تَقُوْلُ مِنْ بَعْضِ بَنَاتِ الْحَارِثِ: مَارَأَيْتُ أَسِيْرًا قَطُّ خَيْرًا مِنْ خُبَيْبٍ، لَقَدْ رَأَيْتُهُ يَأْكُلُ مِنْ قِطْفِ عِنَبٍ وَمَا بِمَكَّةَ يَوْمَئِذٍ ثَمَرَةٌ، وَإِنَّهُ لَمُوْثَقٌ فِي الْحَدِيْدِ، وَمَاكَانَ إِلَّا رَزَقَهُ اللهُ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ وَأَحْمَدُ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से मरवी एक तवील रिवायत में है कि हज़रत ख़ुबैब ﷺ ने ग़ज़वए बद्र में (सरदारे क़ुरैश) हारिस को क़त्ल किया था (बाद के एक वाक़िए में) हज़रत ख़ुबैब (गिरफ़्तार हो कर) उनके क़ैदी बन गए। हारिस (जिसे हज़रत ख़ुबैब ﷺ ने क़त्ल किया था की एक बेटी कहा करती थी कि मैंने हज़रत ख़ुबैब ﷺ से ज़्यादा अच्छा और नेक कोई क़ैदी नहीं देखा और बेशक मैंने हज़रत ख़ुबैब ﷺ को (दौराने क़ैद) अंगूर का ख़ूसा (गुच्छा) खाते हुए देखा

الحديث رقم ٤٩: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: المغازي، باب: غَزْوَةُ الرَّجِيعِ، وَرِعْلٍ، وَذَكوان، وبِئر مَعُونة، ٤ / ١٤٩٩، الرقم: ٣٨٥٨، وفى كتاب: الجهاد، باب: هل يَسْتَاسِر الرَّجُلُ وَمَنَ لَم يَسْتَأْسِرُ وَمَن رَكع رَكْعَتَين عند القَتلِ، ٣ / ١١٠٨، الرقم: ٢٨٨٠، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٢ / ٣١٠، الرقم: ٨٠٨٢، وعبد الرزاق فى المصنف، ٥ / ٣٥٣، الرقم: ٩٧٣٠، والطبرانى فى المعجم الكبير، ٤ / ٢٢١، الرقم: ٤١٩١، واللالكائي فى كرامات الأولياء، ١ / ١٠١، الرقم: ٥٣، والعسقلانى فى فتح البارى، ٧ / ٣٨٤، وابن عبد البر فى الاستيعاب، ٢ / ٧٧٩، الرقم: ١٣٠٥، والطبرى فى تاريخ الأمم والملوك، ٢ / ٧٨.

हालांकि उन दिनों मक्का में कोई फ़ल नहीं मिलता था (यानी फ़लों का मौसम भी नहीं था) और वैसे भी वो जंजीरों में जकड़े हुए थे। सो यह वो रोज़ी थी जो अल्लाह तआला उन्हें (ग़ैब से) अ़ता फरमाता था।''

٧٩٤ / ٥٠۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ في رواية طويلة وَبَعَثَ قُرَيْشٌ إِلَى عَاصِمٍ لِيُؤْتُوا بِشَيءٍ مِنْ جَسَدِهِ يَعْرِفُوْنَهُ وَكَانَ عَاصِمٌ قَتَلَ عَظِيْمًا مِنْ عُظَمَائِهِمْ يَوْمَ بَدْرٍ فَبَعَثَ اللهُ عَلَيْهِ مِثْلَ الظُّلَّةِ مِنَ الدَّبْرِ،فَحَمَتْهُ مِنْ رُسُلِهِمْ فَلَمْ يَقْدِرُوْا مِنْهُ عَلَى شَيءٍ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ وَأَحْمَدُ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से एक लम्बी रिवायत में मरवी है कि कुफ़्फ़ारे कुरैश ने (धोखे से शहीद करने के बाद) एक दस्ते को शिनाख़्त के लिए हज़रत आ़सिम ﷺ की लाश में से टुकड़ा काट कर लाने के लिए भेजा। हज़रत आ़सिम ﷺ ने ग़ज़वए बद्र में उनके बड़े सरदारों में से एक को क़त्ल किया था सो (उस दस्ते के पहुँचते ही) अल्लाह तआला ने उनकी लाश के पास भिड़ों (लाल रंग के ततैयों) की तरह कोई जानवर भेज दिए जिन्होंने किसी को उनके लाश के पास भी आने नहीं दिया और वो उनके जिस्म का कोई हिस्सा ले जाने में कामयाब न हो सके।''

٧٩٥ / ٥١۔ عَنْ جَابِرٍ ﷺ قَالَ: لَمَّا حَضَرَ أُحُدٌ، دَعَانِي أَبِي مِنَ

الحديث رقم ٥٠: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: المغازي، باب: غَزْوَةُ الرَّجِيعِ، وَرِعْلٍ، وَذَكوان، وبِئر مَعُونة، ٤/١٤٩٩، الرقم: ٣٨٥٨، وفى كتاب: الجهاد، باب: هل يَسْتَاسِرُ الرَّجُلُ ومَنَ لَم يَسْتَأْسِر وَمَن رَكع رَكْعَتَين عند القتل، ٣/١١٠٨، الرقم: ٢٨٨٠، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٢/٣١٠، الرقم: ٨٠٨٢، وعبد الرزاق فى المصنف، ٥/٣٥٣، الرقم: ٩٧٣٠، والطبرانى فى المعجم الكبير، ٤/٢٢١، الرقم: ٤١٩١، واللالكائي فى كرامات الأولياء، ١/١٠١، الرقم: ٥٣۔

الحديث رقم ٥١: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: الجنائز، باب: هل يُخْرِجُ المَيّتُ منَ القبر واللّحد لِعلّةٍ، ١/٤٥٣، الرقم: ١٢٨٦، والحاكم فى المستدرك، ٣/٢٢٤، الرقم: ٤٩١٣، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٦/٢٨٥، الرقم: ١٢٤٥٩، والعسقلانى فى مقدمة فتح البارى، ١/٢٧٠، والخطيب التبريزى فى مشكاة المصابيح، ٢/٣٩٩، الرقم: ٥٩٤٥۔

اللَّيْلِ، فَقَالَ: مَا أَرَانِي إِلَّا مَقْتُوْلاً فِي أَوَّلِ مَنْ يُقْتَلُ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ ﷺ، وَإِنِّي لاَ أَتْرُكُ بَعْدِي أَعَزَّ عَلَيَّ مِنْكَ غَيْرَ نَفْسِ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ، فَإِنَّ عَلَيَّ دَيْنًا، فَاقْضِ، وَاسْتَوْصِ بِأَخَوَاتِكَ خَيْرًا. فَأَصْبَحْنَا، فَكَانَ أَوَّلَ قَتِيْلٍ، وَدُفِنَ مَعَهُ آخَرُ فِي قَبْرٍ، ثُمَّ لَمْ تَطِبْ نَفْسِي أَنْ أَتْرُكَهُ مَعَ الآخَرِ، فَاسْتَخْرَجْتُهُ بَعْدَ سِتَّةِ أَشْهُرٍ، فَإِذَا هُوَ كَيَوْمٍ وَضَعْتُهُ هُنَيَّةً، غَيْرَ أُذُنِهِ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ.

وَقَالَ الْحَاكِمُ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحٌ عَلَى شَرْطِ مُسْلِمٍ.

''हज़रत जाबिर ﷺ से रिवायत है कि जब ग़जवए उहद का वक़्त आ गया तो मेरे वालिद (हज़रत अ़ब्दुल्लाह ﷺ) ने मुझे रात के वक़्त बुलाया और फरमायाः मैं यही देखता हूँ कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के अस्हाब में सबसे पहले मैं शहीद किया जाऊँगा और मैं अपने बाद किसी को नहीं छोड़ रहा हूँ जो रसूलुल्लाह ﷺ के अ़लावा मुझे तुम से ज़्यादा अ़ज़ीज़ हो मुझ पर क़र्ज़ हैं इसे अदा कर देना और अपनी बहनों के साथ अच्छा सुलूक करना। सुबह हुई तो सबसे पहले वही शहीद किए गए। और एक दूसरे (शहीद) के साथ दफ़न किये गये। फिर मेरा दिल उस पर रजामंद न हुआ कि उन्हें दूसरों के साथ छोड़े रखूँ लिहाज़ा (तदफ़ीन के बाद) छः महीनों के बाद मैंने उन्हें निकाला तो वो उसी तरह (तरोताज़ा) थे जैसे दफ़न करने के दिन थे, सिवाए एक कान के जो कि जंग के दौरान शहीद हो गया था।''

٧٩٦ / ٥٢۔ عَنْ أَنَسٍ ﷺ أَنَّ رَجُلَيْنِ خَرَجَا مِنْ عِنْدِ النَّبِيِّ ﷺ فِي لَيْلَةٍ مُظْلِمَةٍ، وَإِذَا نُوْرٌ بَيْنَ أَيْدِيْهِمَا حَتَّى تَفَرَّقَا فَتَفَرَّقَ النُّوْرُ مَعَهُمَا عَنْ

الحديث رقم ٥٢: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: فضائل الصحابة، باب: منقبة أُسَيدِ بنِ حُضَيرٍ وَعبَّادِ بن بِشْرٍ رضي الله عنهما، ٣ / ١٣٨٤، الرقم: ٣٥٩٤، أبواب: المساجد، باب: إدْخال البَعير فى المسجد للعلّة، ١ / ١٧٧، الرقم: ٤٥٣، وفى كتاب: المناقب، باب: سؤال المشركين أن يريهم النبيّ ﷺ آية فأراهم انشقاق القمر، ٣ / ١٣٣١، الرقم: ٣٤٤٠، وأبو يعلى فى المسند، ٥ / ٣٦١، الرقم: ٣٠٠٧، والبيهقى فى الاعتقاد، ١ / ٣١٠، والنووى فى رياض الصالحين، ١ / ٥٦٦، الرقم: ١٥٠٦، والخطيب التبريزى فى مشكاة المصابيح، ٢ / ٣٩٩، الرقم: ٥٩٤٤

أَنَسٍ رضي الله عنه كَانَ أُسَيْدُ بْنُ حُضَيْرٍ وَعَبَّادُ بْنُ بِشْرٍ عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ.

رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ وَأَبُوْيَعْلَى.

''हज़रत अनस रضي الله عنه रिवायत फरमाते हैं कि दो आदमी हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की बारगाह से (मजलिस ख़त्म होने के बाद) अंधेरी रात में (घर जाने के लिए) निकले तो (उस अंधेरी रात में) अचानक एक नूर उनके सामने आ गया (और वो उनके साथ-साथ रोशनी के लिए रहा) और जब वो दोनों आदमी (अपने-अपने घर जाने की वजह से) अलग-अलग राह पर चल पड़े तो वो नूर भी उन दोनों के साथ (दो हिस्सो में बंट कर) अलग-अलग हो गया। हज़रत अनस रضي الله عنه से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की बारगाह से (अंधेरी रात में घर जाने वाले वो दो आदमी हज़रत उसैद बिन हुज़ैर और अ़ब्बाद बिन बिश्र थे)''

٧٩٧ / ٥٣۔ عَنْ عَائِشَةَ رضي الله عنها قَالَتْ: لَمَّا مَاتَ النَّجَاشِيُّ كُنَّا نَتَحَدَّثُ أَنَّهُ لَا يَزَالُ يُرَى عَلَى قَبْرِهِ نُورٌ. رَوَاهُ أَبُودَاوُدَ.

''हज़रत आइशा सिद्दीक़ा رضی اللہ عنہا रिवायत फरमाती हैं कि जब हज़रत नज्जाशी रضي الله عنه (शाहे हबशा) फ़ौत हो गए तो हम बयान करते थे कि उनकी क़ब्र पर हमेशा नूर (बरसता) देखा जाता है।''

٧٩٨ / ٥٤۔ عَنْ سَفِينَةَ رضي الله عنه قَالَ: رَكِبْتُ الْبَحْرَ فِي سَفِيْنَةٍ فَانْكَسَرَتْ

الحديث رقم ٥٣: أخرجه أبو داود فى السنن، كتاب: الجهاد، باب: فى النور يُرى عند قبر الشهيد، ٣/١٦، الرقم: ٢٥٢٣، والذهبى فى سير أعلام النبلاء، ١/٤٣٠، والعسقلانى فى الإصابة، ١/٢٠٦، والخطيب التبريزى فى مشكاة المصابيح، ٢/٤٠٠، الرقم: ٥٩٤٧، وابن كثير فى تفسير القرآن العظيم، ١/٤٤٤۔

الحديث رقم ٥٤: أخرجه الحاكم فى المستدرك، ٢/٦٧٥، الرقم: ٤٢٣٥: ٣/٧٠٢، الرقم: ٦٥٥٠، والبخارى فى التاريخ الكبير، ٣/١٩٥، الرقم: ٦٦٣، والطبرانى فى المعجم الكبير، ٧/٨٠، الرقم: ٦٤٣٢، وابن راشد فى الجامع ، ١١/٢٨١، واللالكائي فى كرامات الأولياء، ١/١٥٨، الرقم: ١١٤، والبغوى فى شرح السنة، ١٣، ٣١٣، الرقم: ٣٧٣٢، والخطيب التبريزى فى مشكاة المصابيح، ٢/٤٠٠، الرقم: ٥٩٤٩۔

فَرَكِبْتُ لَوْحًا مِنْهَا فَطَرَحَنِي فِي أَجَمَةٍ فِيْهَا أَسَدٌ فَلَمْ يَرُعْنِي إِلَّا بِهِ فَقُلْتُ: يَا أَبَا الْحَارِثِ أَنَا مَوْلَى رَسُوْلِ اللهِ ﷺ فَطَأْطَأَ رَأْسَهُ وَغَمَزَ بِمَنْكِبِهِ شِقِّي فَمَا زَالَ يَغْمِزُنِي وَيَهْدِيْنِي إِلَى الطَّرِيْقِ حَتَّى وَضَعَنِي عَلَى الطَّرِيْقِ فَلَمَّا وَضَعَنِي هَمْهَمَ فَظَنَنْتُ أَنَّهُ يُوَدِّعُنِي.

رَوَاهُ الْحَاكِمُ وَالْبُخَارِيُّ فِي الْكَبِيْرِ وَالطَّبَرَانِيُّ وَالْبَغَوِيُّ فِي شَرْحِ السُّنَّةِ.
وَقَالَ الْحَاكِمُ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحُ الإِسْنَادِ.

''हज़रत सफ़ीना ﷺ से मरवी है कि मैं समन्दर में कश्ती पर सवार हुआ। वो कश्ती टूट गई तो मैं उसके एक तख़्ते पर सवार हो गया उसने मुझे एक ऐसी जगह फैंक दिया जो शेर की कच्छहार (शेर के रहने की जगह) थी। वही हुआ जिसका डर था (अचानक) वो शेर सामने था, मैंने कहा ऐ अबुल हारिस (शेर) मैं रसूलुल्लाह ﷺ का गुलाम हूँ तो उसने फ़ौरन अपना सर ख़म कर दिया और अपने कंधे से मुझे इशारा किया और वो उस वक़्त तक मुझे इशारा और रहनुमाई करता रहा जब तक कि उसने मुझे सही राह पर न डाल दिया। फिर जब उसने मुझे सही राह पर डाल दिया तो वो धीमी आवाज़ में गुर गुराया। सो मैं समझ गया कि वो मुझे अलविदा कह रहा है।''

٧٩٩ / ٥٥۔ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رضي الله عنهما عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ قَالَ: هَذَا الَّذِي تَحَرَّكَ لَهُ الْعَرْشُ، وَفُتِحَتْ لَهُ أَبْوَابُ السَّمَاءِ، وَشَهِدَهُ سَبْعُوْنَ أَلْفًا مِنَ الْمَلَائِكَةِ لَقَدْ ضُمَّ ضَمَّةً ثُمَّ فُرِّجَ عَنْهُ.

الحديث رقم ٥٥: أخرجه النسائي في السنن، كتاب: الجنائز، باب: ضمة القبر وضغطته، ٤ / ١٠٠، الرقم: ٢٠٥٥، وفي السنن الكبرى، ١ / ٦٦٠، الرقم: ٨١٨٢، والطبراني في المعجم الأوسط، ٢ / ١٩٩، الرقم: ١٧٠٧، وفي المعجم الكبير، ٦ / ١٠، الرقم: ٥٣٣٣، ونحوه ابن راهوية في المسند، ٢ / ٥٥٢، الرقم: ١١٢٧، والزيلعي في نصب الراية، ٢ / ٢٨٦، والسيوطي في شرح على سنن النسائي، ٤ / ١٠١، الرقم: ٢٠٥٥ والعسقلاني في القول المسدد، ١ / ٨١.

وفي رواية: قَالَ: الْحَمْدُ لِلّٰهِ لَوْ نَجَا أَحَدٌ مِنْ ضُمَّةِ الْقَبْرِ لَنَجَا مِنْهَا سَعْدُ بْنُ مُعَاذٍ رضي الله عنه. رَوَاهُ النَّسَائِيُّ وَالطَّبَرَانِيُّ.

وَقَالَ الْعَسْقَلَانِيُّ: وَرِجَالُهُ ثِقَاتٌ مُحْتَجٌّ بِهِمْ فِي الصَّحِيْحِ.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर رضی اللہ عنہما से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने (हज़रत सा'द बिन मुआज़ अन्सारी رضي الله عنه के मुतअ़ल्लिक़) फरमायाः यह वो हस्ती है जिसकी वफ़ात से अ़र्श भी हिल गया, आसमान के दरवाज़े खोल दिए गए और सत्तर हजार फ़रिश्ते उसके जनाज़े में शरीक़ हुए। एक दफ़ा क़ब्र ने उसे दबाया फिर कुशादा (चौड़ी) कर दी गई''

''और एक रिवायत में आप ﷺ ने फरमायाः तमाम तारीफ़े अल्लाह के लिए ही है अगर कोई क़ब्र के दबाने से बच सकता तो सा'द बिन मुआज़ भी ज़रूर उसके दबाने से बच जाते। (मोमिनीन और सालिहीन के लिए क़ब्र का दबाना बाइसे राहत होता है जैसे माँ बच्चे को गोद में लेकर मुहब्बत से दबाती है।)''

٨٠٠ / ٥٦ـ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رضي الله عنهما قَالَ: ضَرَبَ بَعْضُ أَصْحَابِ النَّبِيِّ ﷺ خِبَاءَهُ عَلَى قَبْرٍ وَهُوَ لَا يَحْسِبُ أَنَّهُ قَبْرٌ، فَإِذَا فِيْهِ إِنْسَانٌ يَقْرَأُ سُوْرَةَ تَبَارَكَ الَّذِي بِيَدِهِ الْمُلْكُ حَتَّى خَتَمَهَا، فَأَتَى النَّبِيَّ ﷺ فقَالَ: يَا رَسُوْلَ اللهِ إِنِّي ضَرَبْتُ خِبَائِي عَلَى قَبْرٍ وَأَنَا لَا أَحْسِبُ أَنَّهُ قَبْرٌ، فَإِذَا فِيْهِ إِنْسَانٌ يَقْرَأُ سُورَةَ الْمُلْكِ حَتَّى خَتَمَهَا، فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: هِيَ الْمَانِعَةُ، هِيَ الْمُنْجِيَةُ تُنْجِيْهِ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالْبَيْهَقِيُّ.

وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ.

الحديث رقم ٥٦: أخرجه الترمذى فى السنن، كتاب: فضائل القرآن عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء فى فضل سورة الملك، ٥ / ١٦٤، الرقم: ٢٨٩٠، والبيهقى فى شعب الإيمان، ٢ / ٤٩٥، الرقم: ٢٥١٠، والخطيب التبريزى فى مشكاة المصابيح، ١ / ٤٠٥، الرقم: ٢١٥٣، والمنذرى فى الترغيب الترهيب، ٢ / ٢٤٧، الرقم: ٢٢٦٦، وابن كثير فى تفسير القرآن العظيم، ٤ / ٣٩٦، والقرطبى فى الجامع لأحكام القرآن، ١٨ / ٢٠٥ـ

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رضی اللہ عنہما रिवायत फरमाते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के किसी सहाबी ने एक क़ब्र पर ख़ैमा लगाया उन्हें मालूम न था कि यह क़ब्र है अचानक पता चला कि यह क़ब्र है और उसके अन्दर कोई आदमी सूरह मुल्क पढ़ रहा है यहाँ तक (उस सहाबी ने सुना कि) उसे पढ़ने वाले ने (क़ब्र के अन्दर) मुकम्मलसूरह मुल्क पढ़ी (यह सुनकर) वो सहाबी हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! मैंने (भूलकर) एक क़ब्र पर ख़ैमा लगाया और मुझे यह ख़याल नहीं था कि यह क़ब्र है अचानक सुना कि एक आदमी क़ब्र में सूरह मुल्क पढ़ रहा है यहाँ तक कि मैंने सुना उसने मुकम्मल सूरह मुल्क पढ़ी। हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः यह (सूरह मुल्क अ़ज़ाबे क़ब्र को) रोकने वाली है औरअ़ज़ाबे क़ब्र से निज़ात देने वाली है।''

बाब 12 :

اَلْبَابُ الثَّانِي عَشَرَ:

شَرَفُ هَذِهِ الْأُمَّةِ

उम्मते मुहम्मदिया का इज़्ज़ो शरफ़

1. فَصْلٌ فِي شَرَفِ الْأُمَّةِ الْمُحَمَّدِيَّةِ

उम्मते मुहम्मदिया के शरफ़ का बयान

2. فَصْلٌ فِي فَضْلِ آخِرِ الْأُمَّةِ الْمُحَمَّدِيَّةِ

आख़िरी ज़माने में उम्मते मुहम्मदिया की फ़ज़ीलत का बयान

3. فَصْلٌ فِي أَنَّ هَذِهِ الْأُمَّةَ لَا تَجْتَمِعُ عَلَى الضَّلَالَةِ

इस उम्मत के कभी भी गुमराही पर जमा न होने का बयान

4. فَصْلٌ فِي أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ لَا يَخْشَى عَلَى أُمَّتِهِ أَنْ تُشْرِكَ بَعْدَهُ

हुज़ूर (ﷺ) को अपने बाद उम्मत के शिर्क में मुब्तिला होने का अन्देशा न था

5. فَصْلٌ فِي بَعْثِ الْأَئِمَّةِ الْمُجَدِّدِيْنَ لِهَذِهِ الْأُمَّةِ

इस उम्मत में अइम्म–ए–मुजद्दिदीन के भेजे जाने का बयान

فَصْلٌ فِي شَرَفِ الْأُمَّةِ الْمُحَمَّدِيَّةِ

﴿उम्मते मुहम्मदिया के शरफ़ का बयान﴾

٨٠١ / ١۔ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رضي الله عنهما قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: عُرِضَتْ عَلَيَّ الْأُمَمُ، فَأَجِدُ النَّبِيَّ يَمُرُّ مَعَهُ الْأُمَّةُ، وَالنَّبِيُّ يَمُرُّ مَعَهُ النَّفَرُ، وَالنَّبِيُّ يَمُرُّ مَعَهُ الْعَشَرَةُ، وَالنَّبِيُّ يَمُرُّ مَعَهُ الْخَمْسَةُ، وَالنَّبِيُّ يَمُرُّ وَحْدَهُ، فَنَظَرْتُ فَإِذَا سَوَادٌ كَثِيْرٌ، قُلْتُ: يَا جِبْرِيْلُ، هَؤُلَاءِ أُمَّتِي؟ قَالَ: لَا، وَلَكِنِ انْظُرْ إِلَى الْأُفُقِ، فَنَظَرْتُ فَإِذَا سَوَادٌ كَثِيْرٌ، قَالَ: هَؤُلَاءِ أُمَّتُکَ، وَهَؤُلَاءِ سَبْعُوْنَ أَلْفًا قُدَّامَهُمْ لَا حِسَابَ عَلَيْهِمْ وَلَا عَذَابَ، قُلْتُ: وَلِمَ؟ قَالَ: كَانُوْا لَا يَكْتَوُوْنَ، وَلَا يَسْتَرْقُوْنَ، وَلَا يَتَطَيَّرُوْنَ وَعَلَى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ. فَقَامَ إِلَيْهِ عُكَّاشَةُ بْنُ مِحْصَنٍ فَقَالَ: ادْعُ اللهَ أَنْ يَجْعَلَنِي مِنْهُمْ، قَالَ: اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهُ مِنْهُمْ. ثُمَّ

الحديث الرقم ١: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: الرقاق، باب: يدخل الجنّة سبعون ألفا بغير حسابٍ، ٥ / ٢٣٩٦، الرقم: ٦١٧٥، وفى كتاب: الطب، باب: مَنِ اكْتَوَى أو كَوَى غيرَهُ، وفضل من لم يَكْتَوِ، ٥ / ٢١٥٧، الرقم: ٥٣٧٨، وفى كتاب: الطب، باب: من لَمْ يَرْقِ، ٥ / ٢١٧٠، الرقم: ٥٤٢٠، وفى كتاب: الأنبياء، باب: وفاة موسى وذكرِهِ بعدُ، ٣ / ١٢٥١، الرقم: ٣٢٢٩، ومسلم فى الصحيح، كتاب: الإيمان، باب: الدليل على دخول طوائف من المسلمين الجنة بغير حساب ولا عذاب، ١ / ١٧٩۔ ١٩٩، الرقم: ٢١٦۔ ٢٢٠، والترمذى فى السنن، كتاب: صفة القيامة والرقائق والورع عن رسول الله ﷺ، باب: (١٦)، ٤ / ٦٣١، الرقم: ٢٤٤٦، والنسائى فى السنن الكبرى، ٤ / ٣٧٨، الرقم: ٧٦٠٤، وابن حبان فى الصحيح، ١٣ / ٤٤٧۔ ٤٤٨، الرقم: ٦٠٨٤، ٦٤٣٠، والدارمى فى السنن، ٢ / ٤٢٢، الرقم: ٢٨٠٧، وأحمد بن حنبل فى المسند، ١ / ٢٧١، الرقم: ٢٤٤٨، وأبو يعلى فى المسند، ٩ / ٢٣٣، الرقم: ٥٣٤٠، والطبراني فى المعجم الكبير، ١٨ / ٢٤١، الرقم: ٦٠٥۔

قَامَ إِلَيْهِ رَجُلٌ آخَرُ قَالَ: ادْعُ اللهَ أَنْ يَّجْعَلَنِي مِنْهُمْ قَالَ: سَبَقَکَ بِهَا عُكَّاشَةُ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास رضی اللہ عنہما से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः मुझ पर (तमाम) उम्मतें पेश की गईं पस एक नबी गुज़रने लगा और उसके साथ उसकी उम्मत थी। एक नबी ऐसा भी गुज़रा कि उसके साथ चन्द अफ़राद थे, एक नबी के साथ दस आदमी, एक नबी के साथ पाँच आदमी, एक नबी सिर्फ तन्हा, मैंने नज़र दौड़ाई तो एक बड़ी जमाअत नज़र आई। मैंने पूछा : ऐ जिब्राईल! क्या यह मेरी उम्मत है? अर्ज़ कियाः नहीं, बल्कि (या रसूलल्लाह !) आप उफ़क़ की जानिब तवज्जोह फरमाएँ, मैंने देखा तो वो बहुत ही बड़ी जमाअत थी। अर्ज़ कियाः यह आपकी उम्मत है और यह जो सत्तर हज़ार उनके आगे हैं उनके लिए न हिसाब है न अजाब। मैंने पूछाः किस वजह से, उन्होंने कहाः यह लोग दाग़ नहीं लगवाते थे, ग़ैर शरई झाड़–फूँक नहीं करते थे, शगुन नहीं लेते थे और अपने रब पर (कामिल) भरोसा रखते थे। हज़रत उक्काशा बिन मुहसिन ﷺ ने खड़े होकर अर्ज़ कियाः (या रसूलल्लाह !) अल्लाह तआला से दुआ कीजिए के वो मुझे भी उन लोगों में शामिल फरमा ले। आप ﷺ ने दुआ फरमाईः ऐ अल्लाह, इसे उन लोगों में शामिल फरमा। फिर दूसरा आदमी खड़ा हो कर अर्ज़ गुज़ार हुआ : (या रसूलल्लाह!) अल्लाह तआला से दुआ कीजिए कि मुझे भी उनमें शामिल फरमा ले। आप ﷺ ने फरमाया : उक्काशा तुमसे सबक़त ले गया।''

٢/٨٠٢. عَنْ عَبْدِ اللهِ ﷺ قَالَ: كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فِي قُبَّةٍ، فَقَالَ:

الحديث الرقم ٢: أخرجه البخاری فی الصحیح، کتاب: الرقاق، باب: کیف الحشر، ٥/٢٣٩٢، الرقم: ٦١٦٣، وفی کتاب: الأیمان والنذور، باب: کیف کانت یمین النبي ﷺ، ٦/٢٤٤٨، الرقم: ٦٢٦٦، ومسلم فی الصحیح، کتاب: الإیمان، باب: کون هذه الأمة نصف أهل الجنة، ١/٢٠٠، الرقم: ٢٢١، والترمذی فی السنن، کتاب: صفة الجنة عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء فی صف أهل الجنة، ٤/٦٨٤، الرقم: ٢٥٤٧، وَ قَالَ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ صَحِيحٌ، وابن ماجه فی السنن، کتاب: الزهد، باب: صفة أمة محمد ﷺ، ٢/١٤٣٢، الرقم: ٤٢٨٣، والنسائی فی السنن الکبری، ٦/٤٠٩، الرقم: ١١٣٣٩، وأحمد بن حنبل فی المسند، ١/٣٨٦، الرقم: ٣٦٦١، والبزار فی المسند، ٥/٢٣٧، الرقم: ١٨٥٠.

أَتَرْضَوْنَ أَنْ تَكُوْنُوْا ثُلُثَ أَهْلِ الْجَنَّةِ. قُلْنَا: نَعَمْ، قَالَ: وَالَّذِي نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهِ، إِنِّي لَأَرْجُوْ أَنْ تَكُوْنُوْا نِصْفَ أَهْلِ الْجَنَّةِ، وَذٰلِكَ أَنَّ الْجَنَّةَ لَا يَدْخُلُهَا إِلَّا نَفْسٌ مُسْلِمَةٌ، وَمَا أَنْتُمْ فِي أَهْلِ الشِّرْكِ إِلَّا كَالشَّعْرَةِ الْبَيْضَاءِ فِي جِلْدِ الثَّوْرِ الْأَسْوَدِ، أَوْ كَالشَّعْرَةِ السَّوْدَاءِ فِي جِلْدِ الثَّوْرِ الْأَحْمَرِ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के हमराह हम एक क़ुब्बा (यानी मकान) में थे कि आप ﷺ ने फरमायाः क्या तुम इस बात पर राज़ी हो कि अहले जन्नत का तिहाई हिस्सा तुम (में से) हो, हमने अ़र्ज़ किया : हाँ। फरमायाः उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़ए क़ुदरत में मुहम्मद मुस्त़फ़ा की जान है! मुझे उम्मीद है कि तुम (तादाद में) अहले जन्नत में ऐसे निस्फ़ होंगे और वो यूं कि जन्नत में मुसलमान के सिवा कोई दाख़िल नहीं होगा और मुशरिक़ों के मुक़ाबले में तुम यूं हो जैसे काले बैल की जिल्द पर एक सफ़ेद बाल या सुर्ख़ बैल की जिल्द पर एक काला बाल।''

٣/٨٠٣۔ عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ بُرَيْدَةَ رضي الله عنهما عَنْ أَبِيْهِ، قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: أَهْلُ الْجَنَّةِ عِشْرُوْنَ وَمِائَةُ صَفٍّ، ثَمَانُوْنَ مِنْهَا مِنْ هٰذِهِ الْأُمَّةِ، وَأَرْبَعُوْنَ مِنْ سَائِرِ الْأُمَمِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَه.

وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: هٰذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ. وَقَالَ الْحَاكِمُ: هٰذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحٌ.

الحديث الرقم ٣: أخرجه الترمذى فى السنن، كتاب: صفة الجنة عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء فى كم صَفّ أهل الجنّة، ٤/٦٨٣، الرقم: ٢٥٤٦، وابن ماجه فى السنن، كتاب: الزهد، باب: صفة أمة محمد ﷺ، ٢/١٤٣٤، الرقم: ٤٢٨٩، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٥/٣٤٧، الرقم: ٢٢٩٩٠، ٢٣٠٥٢، ٢٣١١١، والدارمى فى السنن، ٢/٤٣٤، الرقم: ٢٨٣٥، وابن حبان فى الصحيح، ١٦/٤٩٨، الرقم: ٧٤٥٩، والبزار فى المسند، ٥/٣٦٨، الرقم: ١٩٩٩، وابن أبى شيبة فى المصنف، ٦/٣١٥، الرقم: ٣١٧١٣، والحاكم فى المستدرك، ١/١٥٥، الرقم: ٢٧٣، والطبرانى فى المعجم الصغير، ١/٦٧، الرقم: ٨٢، فى المعجم الأوسط، ٢/٧٧، الرقم: ١٣١٠، وفى المعجم الكبير، ١٠/١٨٤، الرقم: ١٠٣٩٨، وأبويعلى فى المعجم، ١/١٨٣، الرقم: ٢١١۔

'' हज़रत सुलैमान बिन बुरैदा رضی اللہ عنہما ने अपने वालिद से रिवायत किया है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जन्नतियों की एक सौ बीस सफें होंगी। जिनमें से अस्सी (80) सफें मेरी उम्मत की होंगी और बाक़ी तमाम उम्मतों की सिर्फ चालीस (40) सफें होंगी।''

٨٠٤ / ٤۔ عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رضي الله عنه عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ قَالَ: الْجَنَّةُ حُرِّمَتْ عَلَى الْأَنْبِيَاءِ حَتَّى أَدْخُلَهَا، وَحُرِّمَتْ عَلَى الْأُمَمِ حَتَّى تَدْخُلَهَا أُمَّتِي. رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ.

''हज़रत उमर बिन ख़त्ताब رضي الله عنه से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जन्नत तमाम अम्बिया–ए–किराम علیہم السلام पर उस वक़्त तक हराम कर दी गई है जब तक मैं उसमें दाख़िल न हो जाऊँ और तमाम उम्मतों पर उस वक़्त तक हराम है जब तक कि मेरी उम्मत उसमें दाख़िल न हो जाए।''

٨٠٥ / ٥۔ عَنْ أَبِي ذَرٍّ الْغِفَارِيِّ رضي الله عنه قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّ اللهَ تَجَاوَزَ عَنْ أُمَّتِي الْخَطَأَ وَالنِّسْيَانَ، وَمَا اسْتُكْرِهُوْا عَلَيْهِ.

رَوَاهُ ابْنُ مَاجَه وَابْنُ حِبَّانَ وَالْبَيْهَقِيُّ وَالطَّبَرَانِيُّ فِي الثَّلَاثَةِ.

وَقَالَ الْحَاكِمُ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحٌ.

الحديث الرقم ٤: أخرجه الطبراني في المعجم الأوسط، ١/٢٨٩، الرقم: ٩٤٢، والهيثمي في مجمع الزوائد، ١٠/٦٩، والهندي في كنزل العمال، ١١/٤١٦، الرقم: ٣١٩٥٣۔

الحديث الرقم ٥: أخرجه ابن ماجه في السنن، كتاب: الطلاق، باب: طلاق المكره والناسي، ١/٦٥٩، الرقم: ٢٠٤٣، وابن حبان عن بن عباس رضی اللہ عنہما في الصحيح، ١٦/٢٠٢، الرقم: ٧٢١٩، والحاكم في المستدرك، ٢/٢١٦، الرقم: ٢٨٠١، والدارقطني في السنن، ٤/١٧٠، الرقم: ٣٣، وابن أبي شيبة في المصنف، ٤/١٧٢، الرقم: ٢٠٤، وعبد الرزاق نحوه في المصنف، ٦/٤١٠، الرقم: ١١٤١٧، والطحاوي في شرح معاني الآثار، ٣/٩٥، والبيهقي في السنن الكبرى، ٧/٣٥٦، الرقم: ١٤٨٧١، والطبراني في المعجم الصغير، ٢/٥٢، الرقم: ٧٦٦ وفي المعجم الأوسط، ٨/١٦١، الرقم: ٨٢٧٣، وفي المعجم الكبير، ٢/٩٧، الرقم: ١٤٣٠، وفي مسند الشاميين، ٢/١٥٢، الرقم: ١٠٩٠۔

''हज़रत अबू ज़र ग़िफ़ारी ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः अल्लाह तआला ने मेरी उम्मत से ख़ता, निस्यान और जब्रो इकराह माफ फरमा दिया है।''

٨٠٦ / ٦۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّ اللهَ ﷻ تَجَاوَزَ لِأُمَّتِي عَمَّا حَدَّثَتْ بِهِ أَنْفُسُهَا مَا لَمْ تَعْمَلْ أَوْ تَكَلَّمْ بِهِ.

رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَه.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः अल्लाह तआला ने मेरी उम्मत से उनके दिल की बातों (यानी वसाविसो ख़यालात) को माफ फरमा दिया है, जब तक वो उस पर अमल न करे या ज़बान से न कहे।''

٨٠٧ / ٧۔ عَنْ مِحْجَنِ بْنِ الْأَدْرَعِ السُّلَمِيِّ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّ اللهَ رَضِيَ لِهَذِهِ الْأُمَّةِ الْيُسْرَ وَكَرِهَ لَهَا الْعُسْرَ قَالَهَا ثَـلَاثًا.

رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ بِرِجَالِ الصَّحِيْحِ.

''हज़रत मेहजन बिन अदरअ सुलमी ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः अल्लाह तआला ने इस उम्मत (मुहम्मदिया) के लिए आसानी को पसन्द फरमाया है और इसके लिए तंगी को न पसन्द फरमाया है। आप ﷺ ने यह जुमला तीन मर्तबा बयान फरमाया।''

الحديث الرقم ٦: أخرجه مسلم فى الصحيح، كتاب: الإيمان، باب: تجاوز الله عن حديث النفس والخواطر بالقلب إذا لم تستقر، ١ / ١١٦، الرقم: ١٢٧، وابن ماجه فى السنن، كتاب: الطلاق، باب: من طلّق فى نفسه ولم يتكلم به، ١ / ٦٥٨، الرقم: ٢٠٤٠، والنسائى فى السنن الكبرى، ٣ / ٣٦٠، الرقم: ٥٦٢٨، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٢ / ٢٥٥، الرقم: ٧٤٦٤، وابن خزيمة فى الصحيح، ٢ / ٥٢، الرقم: ٨٩٨، وابن حبان فى الصحيح، ١٠ / ١٧٩، الرقم: ٤٣٣٥، وابن أبى شيبة فى المصنف، ٤ / ٨٥، وأبويعلى فى المسند، ١١ / ٢٧٦، الرقم: ٦٣٨٩، والبيهقى فى شعب الإيمان ١ / ٢٩٩، الرقم: ٣٣٢۔

الحديث الرقم ٧: أخرجه الطبرانى فى المعجم الكبير، ٢٠ / ٢٩٨، الرقم: ٧٠٧، والهيثمى فى مجمع الذوائد، ٤ / ١٥، والحارث فى المسند (زوائد الهيثمى)، ١ / ٣٤٣، الرقم: ٢٣٧۔

٨٠٨ / ٨۔ عَنْ حُذَيْفَةَ رضي الله عنه قَالَ: يَوْمًا سَجَدَ النَّبِيُّ ﷺ فَلَمْ يَرْفَعْ رَأْسَهُ حَتَّى ظَنَنَّا أَنْ نَفْسَهُ قُبِضَتْ فَلَمَّا فَرَغَ قَالَ: رَبِّي اسْتَشَارَنِي...... وَفِيْهِ: وَأَحَلَّ لَنَا كَثِيْرًا مِمَّا شَدَّدَ عَلَى مَنْ قَبْلَنَا وَلَمْ يَجْعَلْ عَلَيْنَا فِي الدُّنْيَا مِنْ حَرَجٍ. رَوَاهُ أَحْمَدُ.

''हज़रत हुज़ैफ़ा रضي الله عنه से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने इतना त़वील सज्दा फरमाया कि हमने गुमान किया शायद आप ﷺ का विसाले अक़्दस हो गया है। फिर जब आप ﷺ सज्दे से फ़ारिग़ हुए तो फरमाया : मेरे रब ने मुझसे मेरी उम्मत के बारे में मशवरह त़लब किया उसमें बयान फरमाया : और हमारे लिए वो बहुत सी चीजें हलाल कर दीं जो हमसे क़ब्ल (उम्मतो पर) मना थीं और हम पर इस दुनिया में कोई तंगी (रवा) नहीं रखी।''

٨٠٩ / ٩۔ عَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ رضي الله عنه قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: أَنَا أَوَّلُ مَنْ يُؤْذَنُ لَهُ بِالسُّجُوْدِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، وَأَنَا أَوَّلُ مَنْ يُؤْذَنُ لَهُ أَنْ يَرْفَعَ رَأْسَهُ، فَأَنْظُرَ إِلَى بَيْنَ يَدَيَّ، فَأَعْرِفَ أُمَّتِي مِنْ بَيْنِ الْأُمَمِ، وَمِنْ خَلْفِي مِثْلُ ذَلِكَ، وَعَنْ يَمِيْنِي مِثْلُ ذَلِكَ. فَقَالَ لَهُ رَجُلٌ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! كَيْفَ تَعْرِفُ أُمَّتَكَ مِنْ بَيْنِ الْأُمَمِ فِيْمَا بَيْنَ نُوْحٍ إِلَى أُمَّتِكَ؟ قَالَ: هُمْ غُرٌّ مُحَجَّلُوْنَ مِنْ أَثَرِ الْوُضُوْءِ، لَيْسَ أَحَدٌ كَذَلِكَ غَيْرُهُمْ، وَأَعْرِفُهُمْ أَنَّهُمْ يُؤْتُوْنَ كُتُبَهُمْ بِأَيْمَانِهِمْ، وَأَعْرِفُهُمْ يَسْعَى بَيْنَ أَيْدِيْهِمْ ذُرِّيَّتُهُمْ.

الحديث الرقم ٨: أخرجه أحمد بن حنبل فی المسند، ٥ / ٣٩٣، الرقم: ٢٣٣٨٤، والهيثمی فی مجمع الزوائد، ١٠ / ٦٨۔

الحديث الرقم ٩: أخرجه أحمد بن حنبل فی المسند، ٥ / ١٩٩، الرقم: ٢١٧٨٥، والحاكم فی المستدرك، ٢ / ٥٢٠، الرقم: ٣٧٨٤، وابن حبان نحوه فی الصحيح، ٣ / ٣٢٤، الرقم: ١٠٤٩، والبيهقی فی شعب الإيمان، ٣ / ١٧، الرقم: ٢٧٤٥، والطيالسی فی المسند، ١ / ٤٨، الرقم: ٣٦١، والمنذری فی الترغيب والترهيب، ١ / ٩١، الرقم: ٢٨٦، والهيثمی فی مجمع الزوائد، ١ / ٢٢٥: ٢ / ٢٥٠: ١٠ / ٣٤٤ وقال: رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ۔

رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالْحَاكِمُ وَالْبَيْهَقِيُّ.

وَقَالَ الْحَاكِمُ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحُ الإِسْنَادِ.

''हज़रत अबू दरदा ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : मैं ही सबसे पहला शख़्स हूँगा जिसे क़ियामत के दिन (बारगाहे इलाही में) सज्दा करने की इजाज़त दी जाएगी और मैं ही हूँगा जिसे सबसे पहले सर उठाने की इजाज़त होगी। सो मैं अपने सामने देखूंगा और अपनी उम्मत को दूसरी उम्मतों के दरमियान पहचान लूँगा इसी तरह अपने पीछे और अपनी दाहिनी तरफ़ भी उन्हें देख कर पहचान लूँगा। एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह! आप अपनी उम्मत को दूसरी उम्मतों के दरमियान कैसे पहचानेंगे जब कि उनमें हज़रत नूह ؑ की उम्मत से लेकर आप ﷺ की उम्मत तक के लोग शामिल होंगे ? ... आप ﷺ ने फरमायाः उनके जिस्म के हिस्से वुज़ू के असर से चमक रहे होंगे और उनके सिवा किसी और (उम्मत) के साथ ऐसा नहीं होगा और मैं उन्हें पहचान लूँगा कि उनका नाम–ए–आमाल उनके दाएँ हाथ में दिया जाएगा और उन्हें पहचान लूँगा कि उनके आगे उनकी औलाद दौड़ती होगी।''

٨١٠ / ١٠. عَنْ أَبِي ذَرٍّ وَأَبِي الدَّرْدَاءِ رضي الله عنهما أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: إِنِّي لَأَعْرِفُ أُمَّتِي يَوْمَ الْقِيَامَةِ مِنْ بَيْنِ الْأُمَمِ. قَالُوْا: يَا رَسُوْلَ اللهِ، وَكَيْفَ تَعْرِفُ أُمَّتَکَ؟ قَالَ: أَعْرِفُهُمْ يُؤْتَوْنَ كُتُبَهُمْ بِأَيْمَانِهِمْ. وَأَعْرِفُهُمْ بِسِيْمَاهُمْ فِي وُجُوْهِهِمْ مِنْ أَثَرِ السُّجُوْدِ، وَأَعْرِفُهُمْ بِنُوْرِهِمْ يَسْعَى بَيْنَ أَيْدِيْهِمْ. رَوَاهُ أَحْمَدُ بِإِسْنَادٍ جَيِّدٍ.

''हज़रत अबू ज़र और हज़रत अबू दरदा رضی اللہ عنہما से मरवी एक रिवायत में है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः मैं क़ियामत के रोज़ जरूर अपनी उम्मत को दूसरी उम्मतों के दरमियान पहचान लूँगा। सहाबा ने अ़र्ज़ कियाः या रसूलल्लाह! आप अपनी उम्मत को कैसे पहचानेंगे, फरमायाः मैं उन्हें पहचान लूँगा कि उनको नाम–ए–अमाल दाएँ हाथ में दिया जाएगा और उनकी पेशानियों पर सज्दों का असर होगा और मैं उन्हें उनके नूर से पहचान लूँगा जो उनके आगे–आगे दौड़ रहा होगा।''

الحديث الرقم ١٠: أخرجه أحمد بن حنبل في المسند، ٥ / ١٩٩، الرقم: ٢١٧٨٨.

٨١١ / ١١. عَنْ أَبِي أُمَامَةَ الْبَاهِلِيِّ رضي الله عنه يَقُوْلُ: تَخْرُجُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ثُلَّةٌ غُرٌّ مُحَجَّلُوْنَ يَسُدُّ الْأُفُقَ نُوْرُهُمْ مِثْلُ الشَّمْسِ فَيُنَادِي مُنَادٍ: النَّبِيُّ الْأُمِّيُّ فَيَتَحَسَّسُ لَهَا كُلُّ نَبِيٍّ أُمِّيٍّ، فَيُقَالُ: مُحَمَّدٌ وَأُمَّتُهُ، فَيَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ لَيْسَ عَلَيْهِمْ حَسَابٌ وَلَا عَذَابٌ، ثُمَّ تَخْرُجُ ثُلَّةٌ أُخْرَى غُرٌّ مُحَجَّلُوْنَ نُوْرُهُم مِثْلُ الْقَمَرِ لَيْلَةَ الْبَدْرِ يَسُدُّ الْأُفُقَ نُوْرُهُمْ، فَيُنَادِي مُنَادٍ: النَّبِيُّ الْأُمِّيُّ فَيَتَحَسَّسُ لَهَا كُلُّ نَبِيٍّ أُمِّيٍّ، فَيُقَالُ: مُحَمَّدٌ وَأُمَّتُهُ، فَيَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ بِغَيْرِ حِسَابٍ وَلَا عَذَابٍ، ثُمَّ تَخْرُجُ ثُلَّةٌ أُخْرَى غُرٌّ مُحَجَّلُوْنَ نُوْرُهُمْ مِثْلُ أَعْظَمِ كَوْكَبٍ فِي السَّمَاءِ يَسُدُّ الْأُفُقَ نُوْرُهُمْ، فَيُنَادِي مُنَادٍ: النَّبِيُّ الْأُمِيُّ، فَيَتَحَسَّسُ لَهَا كُلُّ نَبِيٍّ أُمِّيٍّ فَيُقَالُ: مُحَمَّدٌ وَأُمَّتُهُ فَيَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ بِغَيْرِ حِسَابٍ وَلَا عَذَابٍ، ثُمَّ يَجِيءُ رَبُّكَ عز وجل ثُمَّ يُوْضَعُ الْمِيْزَانُ وَالْحِسَابُ. رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ.

''हज़रत अबू उमामा बाहिली ﷺ रिवायत फरमाते हैं कि क़ियामत के रोज़ रोशन पेशानियों और चमकते हाथ–पाँव वाले लोगों की एक जमाअ़त नमूदार होगी जो उफ़क़ पर छा जाएगी। उनका नूर सूरज की तरह होगा सो एक निदा देने वाला निदा देगा ''نبی اُمّی'' पस इस निदा पर हर उम्मीए नबी मुतवज्जेह होगा लेकिन कहा जाएगा (कि इससे मुराद) मुहम्मद ﷺ और उनकी उम्मत है सो वो जन्नत में दाख़िल होंगे उन पर कोई हिसाब और अ़ज़ाब नहीं होगा फिर इस तरह की एक और जमाअ़त नमूदार होगी जिनकी पेशानियाँ और हाथ–पाँव चमक रहे होंगे। उनका नूर चौदहवीं के चाँद की तरह का होगा और उनका नूर उफ़क़ पर छा जाएगा सो फिर निदा देने वाला निदा देगा और कहेगा ''نبی اُمّی'' पस इस निदा पर हर उम्मी नबी मुतवज्जेह हो जाएगा लेकिन कहा जाएगा : इस निदा से मुराद नबी–ए–अकरम ﷺ और उनकी उम्मत है पस

الحديث الرقم ١١: أخرجه الطبراني في المعجم الكبير، ٨ / ١٧٣، الرقم: ٧٧٢٣، وفي مسند الشاميين، ٢ / ٢٠١، الرقم: ١١٨٥، والهيثمي في مجمع الزوائد، ١٠ / ٤٠٩.

वो बग़ैर हिसाबो अज़ाब के जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे फिर इसी तरह की एक और जमाअत नमूदार होगी उनकी (भी) पेशानियाँ और हाथ–पाँव चमकते होंगे उनका नूर आसमान में बड़े सितारे की तरह होगा उनका नूर उफ़क़ पर छा जाएगा पस निदा देने वाला आवाज़ देगाः نبی اُمّی पस इस पर हर नबी मुतवज्जेह हो जाएगा, कहा जाएगाः (इससे मुराद भी) मुहम्मद और उनकी उम्मत है। पस वो बग़ैर हिसाबो अ़ज़ाब के जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे। फिर आप ﷺ का रब (अपनी शान के लायक़) तशरीफ़ लाएगा फिर मीज़ानो हिसाब क़ायम किया जाएगा।''

٨١٢ / ١٢ ۔ عَنْ بَهْزِ بْنِ حَكِيْمٍ، عَنْ أَبِيْهِ عَنْ جَدِّهِ، أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ يَقُوْلُ فِي قَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿كُنْتُمْ خَيْرَ أُمَّةٍ أُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ﴾ [آل عمران، ٣: ١١٠]، قَالَ: إِنَّكُمْ تُتِمُّوْنَ سَبْعِيْنَ أُمَّةً، أَنْتُمْ خَيْرُهَا وَأَكْرَمُهَا عَلَى اللهِ.

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَه وَأَحْمَدُ.

وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ. وَقَالَ الْحَاكِمُ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحُ الإِسْنَادِ.

''हज़रत बहज़ बिन हकीम बवास्ता अपने वालिद अपने दादा से रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाने इलाही : तुम बेहतरीन उम्मत हो जो सब लोगों (की रहनुमाई) के लिए ज़ाहिर की गई है। के बारे में फरमाया : तुम सत्तर (70) उम्मतों को मुकम्मल करने वाले हो और अल्लाह तआला के नज़दीक उन सबसे बहतर और मुअ़ज़्ज़िज़ हो।''

الحديث الرقم ١٢: أخرجه الترمذى فى السنن، كتاب: تفسير القرآن عن رسول الله ﷺ، باب: ومن سورةِ آلِ عمران، ٥ / ٢٢٦، الرقم: ٣٠٠١، وابن ماجه فى السنن، كتاب: الزهد، باب: صفة أمة محمد ﷺ، ٢ / ١٤٣٣، الرقم: ٤٢٨٧، ٤٢٨٨، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٣ / ٦١، الرقم: ١١٦٠٤: ٤ / ٤٤٧: ٥ / ٣، والحاكم فى المستدرك، ٤ / ٩٤، الرقم: ٦٩٨٧، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٩ / ٥، والطبرانى فى معجم الكبير، ١٩ / ٤١٩، الرقم: ١٠١٢، ١٠٢٣، وعبد بن حميد فى المسند، ١ / ١٥٦، الرقم: ٤١١، والرويانى فى المسند، ٢ / ١١٥، الرقم: ٩٢٤، وابن المبارك فى الزهد، ١ / ١١٤، الرقم: ٣٨٢۔

٨١٣ / ١٣۔ عَنْ بَهْزِ بْنِ حَكِيمٍ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ، نُكَمِّلُ، يَوْمَ الْقِيَامَةِ، سَبْعِيْنَ أُمَّةً. نَحْنُ آخِرُهَا وَخَيْرُهَا.

رَوَاهُ ابْنُ مَاجَه.

''हज़रत बहज़ बिन हकीम बवास्ता अपने वालिद अपने दादा से रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : हम क़ियामत के दिन सत्तर (70) उम्मतों की तकमील करेंगे और हम सबसे आख़िरी और सबसे बेहतर होंगे।''

٨١٤ / ١٤۔ عَنْ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ ﷺ يَقُوْلُ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: أُعْطِيْتُ مَا لَمْ يُعْطَ أَحَدٌ مِنَ الْأَنْبِيَاءِ. فَقُلْنَا: يَا رَسُوْلَ اللهِ! مَا هُوَ؟ قَالَ: نُصِرْتُ بِالرُّعْبِ وَأُعْطِيْتُ مَفَاتِيْحَ الْأَرْضِ وَسُمِّيْتُ أَحْمَدَ وَجُعِلَ التُّرَابُ لِي طَهُوْرًا وَجُعِلَتْ أُمَّتِي خَيْرَ الْأُمَمِ.

رَوَاهُ ابْنُ أَبِي شَيْبَةَ وَأَحْمَدُ بِإِسْنَادٍ جَيِّدٍ.

''हज़रत अ़ली ﷺ से मरवी है कि नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : मुझे वो कुछ अ़ता किया गया जो (साबिक़ा) अम्बिया–ए–किराम عليهم السلام में से किसी को भी नहीं अ़ता किया गया। हमने अ़र्ज़ किया : (या रसूलल्लाह!) वो क्या है? आप ﷺ ने फरमाया : मेरी रोअ़बो दबदबे से मदद की गई और मुझे ज़मीन (के तमाम ख़ज़ानों) की कुंजियाँ अ़ता की गईं और मेरा नाम अहमद रखा गया और मिट्टी को भी मेरे लिए पाकीज़ा क़रार किया गया और मेरी उम्मत को बेहतरीन उम्मत बनाया गया।''

الحديث الرقم ١٣: أخرجه ابن ماجه فى السنن، كتاب: الزهد، باب: صفة أمة محمد ﷺ، ٢ / ١٤٣٣، الرقم: ٤٢٨٧۔

الحديث الرقم ١٤: أخرجه ابن أبى شيبة فى المصنف، ٦ / ٣٠٤، الرقم: ٣١٦٤٧، وأحمد بن حنبل فى المسند، ١ / ٩٨، الرقم: ٧٦٣، ١٣٦١، والبيهقى فى السنن الكبرى، ١ / ٢١٣، الرقم: ٩٦٥، واللالكائي فى اعتقاد أهل السنة، ٤ / ٧٨٣، الرقم: ١٤٤٣، ١٤٤٧، والمقدسى فى الأحاديث المختارة، ٢ / ٣٤٨، الرقم: ٧٢٨۔ ٧٢٩، والهيثمى فى مجمع الزوائد، ١ / ٢٦٠، ٨ / ٢٦٩۔

٨١٥ / ١٥۔ عَنْ ثَوْبَانَ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّ اللهَ زَوَى لِيَ الْأَرْضَ. فَرَأَيْتُ مَشَارِقَهَا وَمَغَارِبَهَا. وَإِنَّ أُمَّتِي سَيَبْلُغُ مُلْكُهَا مَا زُوِيَ لِي مِنْهَا وَأُعْطِيْتُ الْكَنْزَيْنِ الْأَحْمَرَ وَالْأَبْيَضَ. وَإِنِّي سَأَلْتُ رَبِّي لِأُمَّتِي أَنْ لَا يُهْلِكَهَا بِسَنَةٍ عَامَّةٍ، وَأَنْ لَا يُسَلِّطَ عَلَيْهِمْ عَدُوًّا مِنْ سِوَى أَنْفُسِهِمْ، فَيَسْتَبِيْحَ بَيْضَتَهُمْ وَإِنَّ رَبِّي قَالَ: يَا مُحَمَّدُ! إِنِّي إِذَا قَضَيْتُ فَإِنَّهُ لَا يُرَدُّ وَإِنِّي أَعْطَيْتُكَ لِأُمَّتِكَ أَنْ لَا أُهْلِكَهُمْ بِسَنَةٍ عَامَّةٍ وَأَنْ لَا أُسَلِّطَ عَلَيْهِمْ عَدُوًّا مِنْ سِوَى أَنْفُسِهِمْ يَسْتَبِيْحُ بَيْضَتَهُمْ وَلَوِ اجْتَمَعَ عَلَيْهِمْ مَنْ بِأَقْطَارِهَا أَوْ قَالَ: مَنْ بَيْنَ أَقْطَارِهَا حَتَّى يَكُوْنَ بَعْضُهُمْ يُهْلِكُ بَعْضًا وَيَسْبِي بَعْضُهُمْ بَعْضًا. رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَالتِّرْمِذِيُّ وَأَبُوْ دَاوُدَ.

وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ. وَقَالَ الْحَاكِمُ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत सौबान ﷺ से मरवी है कि नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः बेशक अल्लाह तआला ने ज़मीन को मेरे लिए लपेट दिया और मैंने उसके मशारिक़ो मग़ारिब को देखा। अन क़रीब मेरी उम्मत की हुकूमत वहाँ तक पहुँचेगी जहाँ तक मेरे लिए ज़मीन लपेटी गई। मुझे

الحديث الرقم ١٥: أخرجه مسلم فى الصحيح، كتاب: الفتن وأشراط الساعة، باب: هلاك هذه الأمة بعضهم ببعض، ٤/٢٢١٥، الرقم: ٢٨٨٩، والترمذى فى السنن،كتاب: الفتن عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء فى سوال النبي ﷺ ثلاثا فى أمته، ٤/٤٧٢، الرقم: ٢١٧٦، وأبو داود فى السنن، كتاب: الفتن والملاحم، باب: ذكر الفتن ودلائلها، ٤/٩٧، الرقم: ٤٢٥٢، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٥/٢٧٨، الرقم: ٢٢٤٤٨، ٢٢٥٠٥، والبزار فى المسند، ٨/٤١٣، الرقم: ٣٤٨٧، والحاكم فى المستدرك، ٤/٤٩٦، الرقم: ٨٣٩٠، وابن أبى شيبة فى المصنف، ٦/٣١١، الرقم: ٣١٦٩٤، وابن حبان فى الصحيح، ١٥/١٠٩، الرقم: ٦٧١٤، والبيهقى فى السنن الكبرى،٩/١٨١، والديلمى فى مسند الفردوس، ٢/٢٩٦، الرقم: ٣٣٤٧.

(क़ैसरो किसरा के) दो ख़ज़ाने सुर्ख़ और सफ़ेद दिए गए। मैंने अपने रब से अपनी उम्मत के बारे में सवाल किया कि उन्हें क़हत़ साली से हलाक न किया जाए और न उन पर उनके ग़ैर से दुश्मन मुसल्लत़ करे जो उन्हें मुकम्मल तौर पर नेस्तो नाबूद कर दे और बेशक मेरे रब ने मुझे फरमायाः ऐ मुहम्मद मुस्त़फ़ा! मैं जब एक फैसला कर लेता हूँ तो उसे वापस नहीं लौटाया जा सकता और बेशक मैंने आपको आपकी उम्मत के लिए यह चीज़ अ़ता फरमा दी है कि मैं उन्हें क़हत़ साली से नहीं मारूँगा और न ही उनके अ़लावा किसी और को उन पर दुश्मन मुसल्लत करूँगा जो उन्हें नेस्तो नाबूद कर दे अगरचे (वो दुश्मन उनके खिलाफ़ हर तरफ़ से इकट्ठे) हो जाएँ यहाँ तक कि उनमे से खुद बा'ज़ बा'ज़ को हलाक न करे और बा'ज़ बा'ज़ को क़ैदी न बनाएँ।''

٨١٦ / ١٦۔ عَنْ عَمْرِو بْنِ قَيْسٍ رضي الله عنه أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: إِنَّ اللهَ أَدْرَکَ بِيَ الْأَجَلَ الْمَرْحُومَ وَاخْتَصَرَ لِي اخْتِصَارًا، فَنَحْنُ الْآخِرُوْنَ وَنَحْنُ السَّابِقُوْنَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، وَإِنِّي قَائِلٌ قَوْلًا غَيْرَ فَخْرٍ، إِبْرَاهِيْمُ خَلِيْلُ اللهِ وَمُوْسَی صَفِيُّ اللهِ وَأَنَا حَبِيْبُ اللهِ وَمَعِي لِوَاءُ الْحَمْدِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ. وَإِنَّ اللهَ وَعَدَنِي فِي أُمَّتِي وَأَجَارَهُمْ مِنْ ثَلَاثٍ: لَا يَعُمُّهُمْ بِسَنَةٍ وَلَا يَسْتَأْصِلُهُمْ عَدُوٌّ، وَلَا يَجْمَعُهُمْ عَلَی ضَلَالَةٍ. رَوَاهُ الدَّارِمِيُّ.

''हज़रत उमर बिन क़ैस رضي الله عنه से मरवी है कि नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः अल्लाह तआ़ला ने मेरी उम्मत को मरहूम क़रार दिया और उसकी उम्र मुख़्तसर रखी। सो हम ही आख़िरी हैं और हम ही क़ियामत के दिन अव्वल होगें। और मैं बग़ैर किसी फ़ख़्र के कह रहा हूँ कि हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह हैं और हज़रत मूसा सफ़ीउल्लाह हैं और मैं ही हबीबुल्लाह हूँ और रोज़े क़ियामत मेरे पास ही हम्द का झण्डा होगा और अल्लाह तआ़ला ने मेरी उम्मत के बारे में मुझसे तीन वादे फरमाए और तीन चीज़ों से उन्हें नजात अ़ता की। उन पर आम क़हत़ साली मुसल्लत़ नहीं करेगा और कोई दुश्मन उन्हें ख़त्म नहीं कर सकेगा और उन्हें गुमराही पर कभी जमा नहीं करेगा।''

الحديث الرقم ١٦: أخرجه الدارمی فی السنن، باب: (٨)، مَا أُعطِيَ النَّبِيُّ ﷺ مِنَ الفَضْلِ، ١ / ٤٢، الرقم: ٥٤، والمبارکفوری فی تحفة الأحوذی، ٦ / ٣٢٣۔

٨١٧ / ١٧۔ عَنْ أَبِي مَالِكٍ الْأَشْعَرِيِّ رضي الله عنه قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صلى الله عليه وآله وسلم: إِنَّ اللهَ أَجَارَكُمْ مِنْ ثَلَاثِ خِلَالٍ: أَنْ لَا يَدْعُوَ عَلَيْكُمْ نَبِيُّكُمْ فَتَهْلِكُوْا جَمِيْعًا، وَأَنْ لَا يَظْهَرَ أَهْلُ الْبَاطِلِ عَلَى أَهْلِ الْحَقِّ، وَأَنْ لَا تَجْتَمِعُوْا عَلَى ضَلَالَةٍ. رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ وَالطَّبَرَانِيُّ.

''हज़रत अबू मालिक अश्अरी रضي الله عنه से मरवी है कि नबी–ए–अकरम صلى الله عليه وآله وسلم ने फरमायाः बेशक अल्लाह तआला ने तुम्हें तीन आफ़तो से बचा लियाः एक यह कि तुम्हारा नबी तुम्हारे लिए ऐसी बदुआ न करेगा कि तुम सारे हलाक हो जाओ, दूसरा यह कि (मजमूई तौर पर) अहले बातिल अहले हक़ पर ग़ालिब न हों। तीसरा यह कि तुम (मजमूई तौर पर कभी) गुमराही पर जमा नहीं होगे।''

٨١٨ / ١٨۔ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رضي الله عنه قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ صلى الله عليه وآله وسلم: إِنَّ هَذِهِ الْأُمَّةَ مَرْحُومَةٌ. عَذَابُهَا بِأَيْدِيْهَا. فَإِذَا كَانَ يَوْمُ الْقِيَامَةِ، دُفِعَ إِلَى كُلِّ رَجُلٍ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ رَجُلٌ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ. فَيُقَالُ: هَذَا فِدَاؤُكَ مِنَ النَّارِ. رَوَاهُ أَبُوْحَنِيْفَةَ وَابْنُ مَاجَه وَاللَّفْظُ لَهُ.

''हज़रत अनस बिन मालिक رضي الله عنه से मरवी है कि नबी–ए–अकरम صلى الله عليه وآله وسلم ने फरमायाः (उम्मते मुस्लिमा) वो (ख़ुशनसीब) उम्मत है जिस पर (अल्लाह तआला की ख़ुसूसी) रहमत नाज़िल की गई है। उसका अज़ाब उसके हाथ में है। जब क़ियामत का दिन होगा तो हर एक मुसलमान को एक काफ़िर दे कर कहा जाएगा, यह तुम्हारा दोज़ख़ का फ़िदया है।''

الحديث الرقم ١٧: أخرجه أبو داود فى السنن، كتاب: الفتن، باب: ذكر الفتن ودلائلها، ٤ / ٩٨، الرقم: ٤٢٥٣، والطبرانى فى المعجم الكبير، ٣ / ٢٩٢، الرقم: ٣٤٤٠، وفى مسند الشاميين، ٢ / ٤٤٢، الرقم: ١٦٦٣۔

الحديث الرقم ١٨: أخرجه ابن ماجه فى السنن، كتاب: الزهد، باب: فى صفة أمة محمد صلى الله عليه وآله وسلم، ٢ / ١٤٣٤، الرقم: ٤٢٩٢، وأبوحنيفة عن أبى موسى رضي الله عنه فى المسند، ١ / ١٥٥، وعبد بن حميد فى المسند، ١ / ١٩٠، الرقم: ٥٣٧، والمروزى فى الفتن، ٢ / ٦١٨، الرقم: ١٧٢٢۔

فَصْلٌ فِي فَضْلِ آخِرِ الْأُمَّةِ الْمُحَمَّدِيَّةِ

आख़िरी ज़माने में उम्मते मुहम्मदिया की फ़ज़ीलत का बयान

٨١٩ / ١٩۔ عَنْ مُعَاوِيَةَ ﷺ، قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُوْلُ: لَا يَزَالُ مِنْ أُمَّتِي أُمَّةٌ قَائِمَةٌ بِأَمْرِ اللهِ لَا يَضُرُّهُمْ مَنْ خَذَلَهُمْ وَلَا مَنْ خَالَفَهُمْ حَتَّى يَأْتِيَهُمْ أَمْرُ اللهِ وَهُمْ عَلَى ذَلِکَ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत मुआविया ﷺ से रिवायत है कि मैंने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ से सुना आप ﷺ फरमाते हैं : मेरी उम्मत में से एक जमाअत हमेशा अल्लाह तआला के हुक्म पर क़ायम रहेगी जो उनकी मदद नहीं करेगा या उनकी मुख़ालिफ़त करेगा वो उन्हें कुछ नुक़सान नहीं पहुँचा सकेगा यहाँ तक अल्लाह तआला का अम्र (यानी रोज़े क़ियामत) आएगा वो इसी हालत में होंगे।''

٨٢٠۔ / ٢٠۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: وَالَّذِي

الحديث رقم ١٩: أخرجه البخاری فی الصحيح،كتاب: المناقب، باب: سؤال المشركين أن يريهم النبی ﷺ آية فأراهم انشقاق القمر، ٣ / ١٣٣١، الرقم: ٣٤٤٢، وفی كتاب: التوحيد، باب: قول الله تعالی: إنما قولنا لشیء، ٦ / ٢٧١٤، الرقم: ٧٠٢٢، ومسلم فی الصحيح، كتاب: الإمارة، باب: قوله ﷺ: لا تزال طائفة من أمتی ظاهرين علی الحق لا يضرهم من خالفهم، ٣ / ١٥٢٤، الرقم: ١٠٣٧، وأحمد بن حنبل فی المسند، ٤ / ١٠١، وأبو يعلی فی المسند، ١٣ / ٣٧٥، الرقم: ٧٣٨٣، والطبرانی فی المعجم الكبير، ١٩ / ٣٨٠، الرقم: ٨٩٣، واللالكائی فی اعتقاد أهل السنة، ١ / ١١٠، الرقم: ١٤٤۔

الحديث رقم ٢٠: أخرجه البخاری فی الصحيح، كتاب: المناقب، باب: علاماتِ النبوة في الإسلام، ٣ / ٣١٥، الرقم: ٣٣٩٤، ومسلم فی الصحيح، كتاب: الفضائل، باب: فضل النظر إليه ﷺ وتمنيه، ٤ / ١٨٣٦، الرقم: ٢٣٦٤، وابن حبان فی الصحيح، ١٥ / ١٦٧، الرقم: ٦٧٦٥، وأحمد بن حنبل فی المسند، ٢ / ٣١٣، الرقم: ٨١٢٦، والعسقلانی فی فتح الباری، ٦ / ٦٠٧، والنووی فی شرحه علی صحيح مسلم، ١٥ / ١١٨، والسيوطی فی الديباج، ٦ / ٣٤٨، الرقم: ٢٣٦٤.

نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهِ، لَيَأْتِيَنَّ عَلَى أَحَدِكُمْ يَوْمٌ وَلَا يَرَانِي، ثُمَّ لَأَنْ يَرَانِي أَحَبُّ إِلَيْهِ مِنْ أَهْلِهِ وَمَالِهِ مَعَهُمْ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ وَهَذَا لَفْظُ مُسْلِمٍ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़ए–कुदरत में मुहम्मद मुस्तफ़ा की जान है! तुम लोगों पर एक दिन ऐसा ज़रूर आएगा तुम मुझे देख नहीं सकोगे, लेकिन मेरी ज़ियारत करना (उस वक़्त) हर मोमिन के नज़दीक उसके अहल और माल से ज़्यादा महबूब होगा।''

٨٢١ / ٢١۔ عَنْ بَهْزِ بْنِ حَكِيْمٍ، عَنْ أَبِيْهِ، عَنْ جَدِّهِ، أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ: يَقُوْلُ فِي قَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿كُنْتُمْ خَيْرَ أُمَّةٍ أُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ﴾ [آل عمران، ٣: ١١٠]، قَالَ: إِنَّكُمْ تُتِمُّوْنَ سَبْعِيْنَ أُمَّةً أَنْتُمْ خَيْرُهَا وَأَكْرَمُهَا عَلَى اللهِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَه وَأَحْمَدُ وَالْحَاكِمُ.

وَقَالَ الْحَاكِمُ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحُ الْإِسْنَادِ.

''हज़रत बहज़ बिन हकीम ﷺ बवास्ता अपने वालिद, अपने दादा से रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने अल्लाह तआला के इस फरमानः ''तुम बेहतरीन उम्मत हो जो सब लोगों (की रहनुमाई) के लिए ज़ाहिर की गई है।'' के बारे में फरमाया तुम सत्तर (70) उम्मतों को मुकम्मल करने वाले हो और अल्लाह तआला के नज़दीक उन सबसे बेहतर और मुअज़्ज़िज़ हो।''

الحديث رقم ٢١: أخرجه الترمذي فى السنن، كتاب: التفسير عن رسول الله ﷺ، باب: ومن سورة آل عمران، ٥ / ٢٢٦، الرقم: ٣٠٠١، وابن ماجه فى السنن، كتاب: الزهد، باب: صفة أمّة محمد ﷺ، ٢ / ١٤٣٣، الرقم: ٤٢٨٨، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٥ / ٣، والحاكم فى المستدرك، ٤ / ٩٤، الرقم: ٦٩٨٧، والطبرانى فى المعجم الكبير، ١٩ / ٤٢٢، الرقم: ١٠٢٣، والبيهقي في السنن الكبرى، ٩ / ٥، والرويانى فى المسند، ٢ / ١١٥، الرقم: ٩٢٤، وعبد بن حميد فى المسند، ١ / ١٥٦، الرقم: ٤١١، وابن المبارك فى الزهد، ١ / ١١٤، الرقم: ٣٨٢، والحكيم الترمذي في نوادر الأصول، ١ / ١٥٣۔

٨٢٢/٢٢. عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مِنْ أَشَدِّ أُمَّتِي لِي حُبًّا، نَاسٌ يَكُوْنُوْنَ بَعْدِي، يَوَدُّ أَحَدُهُمْ لَوْ رَآنِي، بِأَهْلِهِ وَمَالِهِ.

رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَأَحْمَدُ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः मेरी उम्मत में से मेरे साथ शदीद मुहब्बत करने वाले वो लोग हैं जो मेरे बाद आएँगे और उनमें से हर एक की तमन्ना यह होगी कि काश वो अपने सब अहलो अ़याल और मालो असबाब के बदले में मुझे (एक मर्तबा) देख लें।''

٨٢٣/٢٣. عَنْ أَنَسٍ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَثَلُ أُمَّتِي مَثَلُ الْمَطَرِ، لَا يُدْرَى أَوَّلُهُ خَيْرٌ أَمْ آخِرُهُ.

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَحَسَّنَهُ وَأَحْمَدُ وَالْبَزَّارُ.

''हज़रत अनस ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः मेरी उम्मत की मिसाल बारिश की मानिन्द है मालूम नहीं उसका अव्वल बेहतर है या आख़िर।''

٨٢٤/٢٤. عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّ أُنَاسًا

الحديث رقم ٢٢: أخرجه مسلم في الصحيح، كتاب: الجنة وصفة نعيمها وأهلها، باب: فيمن يود رؤية النبي ﷺ بأهله وماله، ٤/٢١٧٨، الرقم: ٢٨٣٢، وأحمد بن حنبل في المسند، ٢/٤١٧، الرقم: ٩٣٨٨، وابن حبان في الصحيح، ١٦/٢١٤، الرقم: ٧٢٣١.

الحديث رقم ٢٣: أخرجه الترمذي في السنن، كتاب: الأمثال عن رسول الله ﷺ، باب: مثل الصلوات الخمس، ٥/١٥٢، الرقم: ٢٨٦٩، والبزار في المسند، ٩/٢٣، الرقم: ٣٥٢٧، وأحمد بن حنبل في المسند، ٣/١٣٠، ١٤٣، الرقم: ١٢٣٤٩، ١٢٤٨٣، والطيالسي في المسند، ١/٩٠، الرقم: ٦٤٧، والقضاعي في مسند الشهاب، ٢/٢٧٧، الرقم: ١٣٥٢، وأبو يعلى في المسند، ٦/٣٨٠، الرقم: ٣٧١٧.

الحديث رقم ٢٤: أخرجه الحاكم في المستدرك، ٤/ ٩٥، الرقم: ٦٩٩١.

مِنْ أُمَّتِي يَأْتُوْنَ بَعْدِي يَوَدُّ أَحَدُهُمْ لَوِ اشْتَرَى رُؤْيَتِي بِأَهْلِهِ وَمَالِهِ.

رَوَاهُ الْحَاكِمُ.

وَقَالَ الْحَاكِمُ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحُ الْإِسْنَادِ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः यक़ीनन मेरी उम्मत में मेरे बाद ऐसे लोग भी आएंगे जिनमें से हर एक की ख़्वाहिश यह होगी कि वो अपने अहलो माल के बदले (अगर) मेरा दीदार (मिले तो वो) ख़रीद ले (यानी अपने अहलो माल की क़ुर्बानी दे कर एक मर्तबा मुझे देख ले)।''

٨٢٥ / ٢٥ـ عَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ، عَنْ أَبِيْهِ، عَنْ جَدِّهِ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: أَيُّ الْخَلْقِ أَعْجَبُ إِلَيْكُمْ إِيْمَانًا؟ قَالُوْا: الْمَلَائِكَةُ. قَالَ: وَمَا لَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ وَهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ؟ قَالُوْا: فَالنَّبِيُّوْنَ. قَالَ: وَمَا لَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ وَالْوَحْيُ يَنْزِلُ عَلَيْهِمْ؟ قَالُوْا: فَنَحْنُ. قَالَ: وَمَا لَكُمْ لَا تُؤْمِنُوْنَ وَأَنَا بَيْنَ أَظْهُرِكُمْ؟ فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّ أَعْجَبَ الْخَلْقِ إِلَيَّ إِيْمَانًا لَقَوْمٌ يَكُوْنُوْنَ مِنْ بَعْدِي يَجِدُوْنَ صُحُفًا فِيْهَا كِتَابٌ يُؤْمِنُوْنَ بِمَا فِيْهَا.

رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ وَأَبُوْيَعْلَى وَالْحَاكِمُ.

وَقَالَ الْحَاكِمُ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحُ الْإِسْنَادِ.

''हज़रत उमर बिन शुऐब ﷺ बवास्ता अपने वालिद, अपने दादा से रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने सहाबा–ए–किराम से फरमायाः कौन सी मख़लूक़ तुम्हारे

الحديث رقم ٢٥: أخرجه الطبراني في المعجم الكبير، ١٢/ ٨٧، الرقم: ١٢٥٦٠، وأبو يعلى عن عمر بن الخطاب ﷺ في المسند، ١/ ١٤٧، الرقم: ١٦٠، والحاكم في المستدرك، ٤/ ٩٦، الرقم: ٦٩٩٣، والخطيب التبريزي في مشكاة المصابيح، ٣/ ٤٠٣، الرقم: ٦٢٨٨، والحسيني في البيان والتعريف، ١/ ١٣٠، الرقم: ٣٤٦، والهيثمي عن عمر بن الخطاب ﷺ في مجمع الزوائد، ٨/ ٣٣٠، ٦/ ٦٥، وقال: رواه البزار وأحمد.

नज़दीक ईमान के लिहाज़ से सबसे अ़जीबतर है ? सहाबा ने अ़र्ज़ कियाः फ़रिश्ते। आप ﷺ ने फरमायाः फ़रिश्ते क्यूँ ईमान न लाएँ जब कि वो हर वक़्त अपने रब की हुज़ूरी में रहते हैं। उन्होंने अ़र्ज़ कियाः फिर अम्बिया–ए–किराम عليهم السلام आप ﷺ ने फरमायाः और अम्बिया–ए–किराम عليهم السلام क्यों ईमान न लाएँ जब कि उन पर तो वही नाज़िल होती है। उन्होंने अ़र्ज़ कियाः तो फिर हम (ही होंगे)। फरमाया : तुम ईमान क्यों नहीं लाओगे जबकि बनफ्से नफ़ीस मैं ख़ुद तुम में जलवा अफ़रोज़ हूँ। हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः मख़लूक़ में मेरे नज़दीक पसन्दीदा और अ़जीबतर ईमान उन लोगों का है जो मेरे बाद पैदा होंगे। कई किताबों को पाएंगे मगर (सिर्फ मेरी) किताब में जो कुछ लिखा होगा (बिन देखे) उस पर ईमान लाएंगे।''

٨٢٦ / ٢٦. عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: وَدِدْتُ أَنِّي لَقِيْتُ إِخْوَانِي، قَالَ: فَقَالَ أَصْحَابُ النَّبِيِّ ﷺ: أَوَ لَيْسَ نَحْنُ إِخْوَانَكَ؟ قَالَ: أَنْتُمْ أَصْحَابِي، وَلَكِنْ إِخْوَانِي الَّذِيْنَ آمَنُوْا بِي وَلَمْ يَرَوْنِي. رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالطَّبَرَانِيُّ.

''हज़रत अनस ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः मैंने यह ख़्वाहिश की कि मैं अपने भाईयों से मिलूँ। सहाबा–ए–किराम ﷺ ने अ़र्ज़ कियाः (या रसूलल्लाह!) क्या हम आपके भाई नहीं है ? आप ﷺ ने फरमायाः तुम मेरे सहाबा हो लेकिन मेरे भाई वो होंगे जो मुझ पर ईमान लाएँगे हालांकि उन्होंने मुझे देखा भी नहीं होगा।''

٨٢٧ / ٢٧. عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي عُمْرَةَ الْأَنْصَارِيِّ ﷺ عَنْ أَبِيْهِ أَنَّهُ قَالَ لِرَسُوْلِ اللهِ ﷺ: (يَا رَسُوْلَ اللهِ) أَ رَأَيْتَ مَنْ آمَنَ بِكَ وَلَمْ يَرَكَ وَصَدَّقَكَ وَلَمْ يَرَكَ؟ قَالَ: طُوْبَى لَهُمْ طُوْبَى لَهُمْ أُوْلَئِكَ مِنَّا. رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ.

الحديث رقم ٢٦: أخرجه أحمد بن حنبل في المسند، ٣ / ١٥٥، الرقم: ١٢٦٠١، والطبراني في المعجم الكبير، ١ / ٢١٢، الرقم: ٥٧٦، والهيثمي في مجمع الزوائد، ١٠ / ٦٧، والحسيني في البيان والتعريف، ١ / ٣٢، الرقم: ٦٠: ٢ / ٩٤، الرقم: ١١٦١.

الحديث رقم ٢٧: أخرجه الطبراني في المعجم الأوسط، ٨ / ٢٧٦، الرقم: ٨٦٢٤.

''हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन अबी उमर अन्सारी ﷺ से रिवायत करते हैं कि उन्होंने बारगाहे रिसालत मआब ﷺ में अ़र्ज़ किया: (या रसूल्लाह!) आप उन लोगों के बारे में क्या फरमाते है जो आप पर ईमान लाए हालांकि उन्होंने आपको देखा तक नहीं आपकी तस्दीक़ की हालांकि आपको देखा तक नहीं। आप ﷺ ने फरमाया: उनके लिए ख़ुशख़बरी है उनके लिए ख़ुशख़बरी है वो हममें से ही हैं।''

٨٢٨ / ٢٨. عَنْ أَبِي أُمَامَةَ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: طُوْبَى لِمَنْ رَآنِي وَآمَنَ بِي وَطُوْبَى سَبْعَ مَرَّاتٍ لِمَنْ لَمْ يَرَنِي وَآمَنَ بِي.

رَوَاهُ أَحْمَدُ وَابْنُ حِبَّانَ.

''हज़रत अबू उमामा ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया: ख़ुशख़बरी और मुबारकबाद हो उसके लिए जिसने मुझे देखा और मुझ पर ईमान लाया और सात बार ख़ुशख़बरी और मुबारकबाद हो उसके लिए जिसने मुझे देखा भी नहीं और मुझ पर ईमान लाया।''

٨٢٩ / ٢٩. عَنْ أَبِي جُمُعَةَ ﷺ قَالَ: تَغَدَّيْنَا مَعَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ وَ مَعَنَا أَبُوْ عُبَيْدَةَ بْنُ الْجَرَّاحِ، قَالَ: قَالَ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! هَلْ أَحُدٌ خَيْرٌ مِنَّا؟ أَسْلَمْنَا مَعَکَ، وَجَاهَدْنَا مَعَکَ، قَالَ: نَعَمْ، قَوْمٌ يَكُوْنُوْنَ مِنْ بَعْدِكُمْ

الحديث رقم ٢٨: أخرجه أحمد بن حنبل فى المسند، ٥ / ٢٥٧، الرقم: ٢٢٢٦٨، ٢٢١٩٢، ٢٢٣٣١، وابن حبان فى الصحيح، ١٦ / ٢١٦، الرقم: ٧٢٣٣، والحاكم عن عبدالله بن بُسر ﷺ، فى المستدرك، ٤ / ٩٦، الرقم: ٦٩٩٤، والطبرانى فى المعجم الكبير، ٨ / ٢٥٩، الرقم: ٨٠٠٩، وفى المعجم الصغير، ٢ / ١٠٤، الرقم: ٨٥٨، وأبويعلى عن أنس بن مالك ﷺ فى المسند، ٦ / ١١٩، الرقم: ٣٣٩١، والمقدسى فى الأحاديث المختارة، ٩ / ٩٩، الرقم: ٨٧، والرويانى فى المسند، ٢ / ٣١١، الرقم: ١٢٦٦.

الحديث رقم ٢٩: أخرجه الدارمي في السنن، ٢ / ٣٩٨، الرقم: ٢٨٤٤، وأحمد بن حنبل في المسند، ٤ / ١٠٦، الرقم: ١٧٠١٧، والطبرانى فى المعجم الكبير، ٤ / ٢٢، الرقم: ٣٥٣٧، وأبويعلى فى المسند، ٣ / ١٢٨، الرقم: ١٥٥٩، وابن منده فى الإيمان، ١ / ٣٧٢، الرقم: ٢١٠، والهيثمى فى مجمع الزوائد، ١٠ / ٦٦.

يُؤْمِنُوْنَ بِي وَلَمْ يَرَوْنِي. رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالدَّارِمِيُّ وَالطَّبَرَانِيُّ.
وَقَالَ الْهَيْثَمِيُّ: رِجَالُهُ ثِقَاتٌ.

''हज़रत अबू जुम्आ ﷺ से मरवी है कि हमने एक मर्तबा हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के साथ दिन का खाना खाया, हमारे साथ हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह ﷺ भी थे। उन्होंने अ़र्ज़ कियाः(या रसूलल्लाह!) हमसे भी कोई बेहतर होगा? हम आपके साथ ईमान लाए और आपके साथ मिल कर हमने जिहाद किया। आप ﷺ ने फरमायाः हाँ वो लोग जो तुम्हारे बाद आएंगे वो मुझ पर ईमान लाएँगे हालांकि उन्होंने मुझे देखा भी नहीं होगा (वो इस जहत से तुमसे भी बेहतर होंगे)।''

٨٣٠ / ٣٠. عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْعُلاَءِ الْحَضْرَمِيِّ ﷺ قَالَ: حَدَّثَنِي مَنْ سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ يَقُوْلُ: إِنَّهُ سَيَكُوْنُ فِي آخِرِ هَذِهِ الْأُمَّةِ قَوْمٌ لَهُمْ مِثْلُ أَجْرِ أَوَّلِهِمْ، يَأْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ، وَيُقَاتِلُوْنَ أَهْلَ الْفِتَنِ.
رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ.

''हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन उला हज़रमी ﷺ रिवायत करते हैं कि मुझे उस (सहाबी) ने बताया जिसने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ से सुना कि आप ﷺ फरमाते हैंः बेशक इस उम्मत के आख़िरी (दौर) में ऐसे लोग होंगे जिनके लिए अज्र इस उम्मत के अव्वलीन (दौर के लोगों) के बराबर होगा, वो नेकी का हुक्म देगें और बुराई से रोकेंगे और फ़ितना परवर लोगों से जिहाद करेंगे।''

الحديث رقم ٣٠: أخرجه البيهقي في دلائل النّبوّة، ٦ / ٥١٣، والسّيوطى فى مفتاح الجنة، ١ / ٦٨.

فَصْلٌ فِي أَنَّ هَذِهِ الْأُمَّةَ لا تَجْتَمِعُ عَلَى الضَّلالَةِ

﴾इस उम्मत के कभी भी गुमराही पर जमा न होने का बयान﴿

٨٣١ / ٣١۔ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رضي الله عنهما قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ : إِنَّ اللهَ لا يَجْمَعُ أُمَّتِي (أَوْ قَالَ أَمَّةَ مُحَمَّدٍ) عَلَى ضَلالَةٍ، وَيَدُ اللهِ مَعَ الْجَمَاعَةِ، وَمَنْ شَذَّ شَذَّ إِلَى النَّارِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالْحَاكِمُ.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर رضی اللہ عنہما से रिवायत है कि हुज़ूर नबी-ए-अकरम ﷺ ने फरमायाः अल्लाह तआला मेरी उम्मत को गुमराही पर जमा नहीं करेगा (या फरमायाः उम्मते मुहम्मदिया को गुमराही पर जमा नहीं करेगा) और जमाअ़त पर अल्लाह तआ़ला (की हिफ़ाज़त) का हाथ है और जो शख़्स जमाअ़त से जुदा हो वो आग की तरफ़ जुदा हो।''

٨٣٢ / ٣٢۔ عَنِ الْحَارِثِ الْأَشْعَرِيِّ رضي الله عنه قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: بِخَمْسِ كَلِمَاتٍ أَمَرَنِي اللهُ بِهِنَّ: الْجَمَاعَةِ وَالسَّمْعِ وَالطَّاعَةِ وَالْهِجْرَةِ وَالْجِهَادِ فِي سَبِيْلِ اللهِ، فَمَنْ خَرَجَ مِنِ الْجَمَاعَةِ قِيْدَ شِبْرٍ فَقَدْ خَلَعَ رِبْقَةَ الْإِسْلَامِ مِنْ رَأْسِهِ إِلَّا أَنْ يَرْجِعَ. رَوَاهُ الْحَاكِمُ وَابْنُ خُزَيْمَةَ.

وَقَالَ الْحَاكِمُ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحٌ.

الحديث رقم ٣١: أخرجه الترمذي فى السنن، كتاب: الفتن عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء فى لزوم الجماعة، ٤ / ٤٦٦، الرقم: ٢١٦٧، والحاكم فى المستدرك، ١ / ٢٠١، الرقم: ٣٩٧، والمناوى فى فيض القدير، ٢ / ٢٧١۔

الحديث رقم ٣٢: أخرجه الحاكم فى المستدرك، ١ / ٢٠٤، ٥٨٢، الرقم: ٤٠٤، ١٥٣٤، وابن خزيمة فى الصحيح، ٣ / ١٩٥، الرقم: ١٨٩٥، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٨ / ١٥٧، والطبرانى فى المعجم الكبير، ٣ / ٢٨٦، ٢٨٧، ٢٨٩، الرقم: ٣٤٢٧، ٣٤٣٠، ٣٤٣١، وأبو يعلى فى المسند، ٣ / ١٤٠، الرقم: ١٥٧١۔

''हज़रत हारिस अश्अ़री ﷺ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः अल्लाह तआ़ला ने मुझे पाँच बातों का हुक्म दिया है (और वो पाँच बातें यह हैं) जमाअ़त के साथ होने, नसीहत सुनने, फरमांबरदारी इख़्तियार करने, हिजरत करने और अल्लाह तआ़ला की राह में जिहाद करने का। पस जो जमाअ़त से एक बालिश्त बराबर भी अलग हुआ पस उसने इस्लाम का क़लादा (यानी पट्टा) अपने गले से उतार दिया जब तक कि वो (जमाअ़त की तरफ़) लौट नहीं आता।''

٨٣٣ / ٣٣۔ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رضي الله عنهما في رواية طويلة قَالَ: خَطَبَنَا عُمَرُ بِالْجَابِيَةِ فَقَالَ: يَأَيُّهَا النَّاسُ، إِنِّي قُمْتُ فِيْكُمْ كَمَقَامِ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ فِيْنَا فَقَالَ: عَلَيْكُمْ بِالْجَمَاعَةِ، وَإِيَّاكُمْ وَالْفُرْقَةَ، فَإِنَّ الشَّيْطَانَ مَعَ الْوَاحِدِ، وَهُوَ مِنَ الاِثْنَيْنِ أَبْعَدُ مَنْ أَرَادَ بُحْبُوحَةَ الْجَنَّةِ فَلْيَلْزَمِ الْجَمَاعَةَ، مَنْ سَرَّتْهُ حَسَنَتُهُ وَسَاءَتْهُ سَيِّئَتُهُ فَذَلِكُمُ الْمُؤْمِنُ.

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ وَأَحْمَدُ.

وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत अ़ब्दुलल्लाह बिन उमर رضی اللہ عنہما से मरवी है जाबिया के मक़ाम पर हज़रत उमर ﷺ ने हमें ख़िताब फरमाया कि मैं तुम्हारे दरमियान इस जगह पर खड़ा हूँ जहाँ हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने हमारे दरमियान क़ियाम फरमाया। फिर उन्होंने फरमायाः जमाअ़त को लाज़िम पकड़ो और अलग होने से बचो क्यों कि शैतान एक के साथ होता है और दो आदमियों से दूर रहता है। जो शख़्स जन्नत का वस्त चाहता है उसके लिए जमाअ़त से वाबस्तगी लाज़मी है जिस शख़्स को उसकी नेकी ख़ुश करे और बुराई परेशान करे पस वही मोमिन है।''

الحديث رقم ٣٣: أخرجه الترمذي في السنن، كتاب: الفتن عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء في لزوم الجماعة، ٤ / ٤٦٥، الرقم: ٢١٦٥، والنسائي في السنن الكبرى، ٥ / ٣٨٨، الرقم: ٩٢٢٥، وأحمد بن حنبل في المسند، ٥ / ٣٧٠، الرقم: ٢٣١٩٤، وابن أبي عاصم في السنة، ١ / ٤٢، الرقم: ٨٨، والعسقلاني في فتح الباري، ١٣ / ٣١٦، والمباركفوري في تحفة الأحوذي، ٦ / ٣٢٠.

٨٣٤ / ٣٤. عَنِ ابْنِ عُمَرَ رضي الله عنهما قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَا يَجْمَعُ اللهُ هَذِهِ الْأُمَّةَ عَلَى الضَّلَالَةِ أَبَدًا وَقَالَ: يَدُ اللهِ عَلَى الْجَمَاعَةِ فَاتَّبِعُوْا السَّوَادَ الْأَعْظَمَ فَإِنَّهُ مَنْ شَذَّ شُذَّ فِي النَّارِ.

رَوَاهُ الْحَاكِمُ وَابْنُ أَبِي عَاصِمٍ.

''हज़रत अब्दुलल्लाह बिन उमर رضی اللہ عنہما से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : अल्लाह तआला इस उम्मत को कभी भी गुमराही पर इकट्ठा नहीं फरमाएगा और फरमाया : अल्लाह तआला का दस्ते क़ुदरत जमाअत पर होता है। पस सबसे बड़ी जमाअत की इत्तिबा करो और जो इस जमाअत से अलग हुआ है वो आग में डाल दिया गया।''

٨٣٥ / ٣٥. عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّ أُمَّتِي لَا تَجْتَمِعُ عَلَى ضَلَالَةٍ فَإِذَا رَأَيْتُمُ اخْتِلَافًا فَعَلَيْكُمْ بِالسَّوَادِ الْأَعْظَمِ.

رَوَاهُ ابْنُ مَاجَه وَالطَّبَرَانِيُّ.

''हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः बेशक मेरी उम्मत (मजमूई तौर पर) कभी गुमराही पर जमा नहीं होगी पस अगर तुम इनमें इख़्तिलाफ़ देखो तो तुम पर लाज़िम है कि सबसे बड़ी जमाअत (का साथ) इख़्तियार करो।''

٨٣٦ / ٣٦. عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّ

الحديث رقم ٣٤: أخرجه الحاكم في المستدرك، ١ / ١٩٩-٢٠١، الرقم: ٣٩١-٣٩٧، وابن أبي عاصم في كتاب السنة، ١ / ٣٩، الرقم: ٨٠، واللالكائي في اعتقاد أهل السنة، ١ / ١٠٦، الرقم: ١٥٤، وأبو نعيم في حلية الأولياء، ٣ / ٣٧، والديلمي في مسند الفردوس، ٥ / ٢٥٨، الرقم: ٨١١٦، والحكيم الترمذي في نوادر الأصول، ١ / ٤٢٢، والمناوي في فيض القدير، ٢ / ٢٧١.

الحديث رقم ٣٥: أخرجه ابن ماجه في السنن، كتاب: الفتن، باب: السَّوَادِ الأَعْظَمِ، ٤ / ٣٦٧، الرقم: ٣٩٥٠، والطبراني في المعجم الكبير، ١٢، ٤٤٧، الرقم: ١٣٦٢٣، والكناني في مصابح الزجاجة، ٤ / ١٦٩، الرقم: ١٣٩٥.

الحديث رقم ٣٦: أخرجه ابن ماجه في السنن، كتاب: الفتن، باب: افتراق الأمم، ٢ / ١٣٢٢، الرقم: ٣٩٩١-٣٩٩٣، وأحمد بن حنبل في المسند، ٣ / ١٤٥، الرقم: ←

بَنِي إِسْرَائِيْلَ افْتَرَقَتْ عَلَى إِحْدَى وَسَبْعِيْنَ فِرْقَةً. وَإِنَّ أُمَّتِي سَتَفْتَرِقُ عَلَى ثِنْتَيْنِ وَسَبْعِيْنَ فِرْقَةً. كُلُّهَا فِي النَّارِ، إِلَّا وَاحِدَةً. وَهِيَ الْجَمَاعَةُ.

رَوَاهُ ابْنُ مَاجَه وَأَحْمَدُ وَأَبُوْيَعْلَى.

''हज़रत अनस बिन मालिक ؓ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः यक़ीनन बनी इसराईल इक्हत्तर (71) फ़िरक़ों में तक़सीम हो गए थे और मेरी उम्मत यक़ीनन बहत्तर (72) फ़िरक़ों में तक़सीम हो जाएगी वो सबके सब दोज़ख़ में जाएंगे। सिवाए एक के और वो जमाअत है।''

٨٣٧/ ٣٧. عَنْ أَبِي ذَرٍّ ؓ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ قَالَ: اثْنَانِ خَيْرٌ مِنْ وَاحِدٍ، وَثَلَاثَةٌ خَيْرٌ مِنِ اثْنَيْنِ، وَأَرْبَعَةٌ خَيْرٌ مِنْ ثَلَاثَةٍ، فَعَلَيْكُمْ بِالْجَمَاعَةِ، فَإِنَّ اللهَ ﷻ لَنْ يَّجْمَعَ أُمَّتِي إِلَّا عَلَى هُدًى. رَوَاهُ أَحْمَدُ.

''हज़रत अबू ज़र ؓ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः दो (शख़्स) एक से बेहतर हैं और तीन (शख़्स) दो से बेहतर हैं, और चार (शख़्स) तीन से बेहतर हैं, पस तुम पर लाज़िम है कि जमाअत के साथ रहो, यक़ीनन अल्लाह तआला मेरी उम्मत को कभी हिदायत के सिवा किसी शै पर इकट्ठा नहीं करेगा।''

.... ١٢٥٠١، وأبويعلى فى المسند، ٧/ ٣٦، الرقم: ٣٩٤٤، والمقدسى فى الأحاديث المختارة، ٧/ ٩٠، الرقم: ٢٤٩٩، وابن أبى عاصم فى السنة، ١/ ٣٢، الرقم: ٦٤، والمروزى فى السنة، ١/ ٢١، الرقم: ٥٣.

الحديث رقم ٣٧: أخرجه أحمد بن حنبل فى المسند، ٥/ ١٤٥، الرقم: ٢١٣٣١، والهيثمى فى مجمع الزوائد، ١/ ١٧٧: ٥/ ٢١٨، والمباركفورى فى تحفة الأحوذى، ٦/ ٣٢٣.

فَصُلٌ فِي أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ لَا يَخْشَى عَلَى أُمَّتِهِ أَنْ تُشْرِكَ بَعْدَهُ

﴿हुज़ूर ﷺ को अपने बाद उम्मत के शिर्क में मुब्तिला होने का अन्देशा न था﴾

٨٣٨ / ٣٨۔ عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ رضي الله عنه، قَالَ: صَلَّى رَسُوْلُ اللهِ ﷺ عَلَى قَتْلَى أُحُدٍ، بَعْدَ ثَمَانِي سِنِينَ كَالْمُوَدِّعِ لِلْأَحْيَاءِ وَالْأَمْوَاتِ، ثُمَّ طَلَعَ الْمِنْبَرَ، فَقَالَ: إِنِّي بَيْنَ أَيْدِيكُمْ فَرَطٌ وَأَنَا عَلَيْكُمْ شَهِيدٌ، وَإِنَّ مَوْعِدَكُمُ الْحَوْضُ، وَإِنِّي لَأَنْظُرُ إِلَيْهِ مِنْ مَقَامِي هٰذَا، وَإِنِّي لَسْتُ أَخْشَى عَلَيْكُمْ أَنْ تُشْرِكُوْا، وَلَكِنِّي أَخْشَى عَلَيْكُمُ الدُّنْيَا أَنْ تَنَافَسُوْهَا قَالَ: فَكَانَتْ آخِرَ نَظْرَةٍ نَظَرْتُهَا إِلَى رَسُوْلِ اللهِ ﷺ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत उक़बा बिन आमिर رضي الله عنه रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ से शुहदाए उहद पर (दोबारा) आठ साल बाद इस तरह नमाज़ पढ़ी गोया ज़िन्दों और मुर्दों को अलविदा कह रहे हैं। फिर आप ﷺ मिम्बर पर जलवा अफ़रोज़ हुए और फरमायाः मैं तुम्हारा पेशरव हूँ, मैं तुम्हारे ऊपर गवाह हूँ, हमारी मुलाक़ात की जगह हौज़े कौसर है और मैं इस जगह से हौज़े कौसर को देख रहा हूँ और मुझे तुम्हारे मुतअल्लिक़ इस बात का डर नहीं कि तुम (मेरे बाद) शिर्क में मुब्तिला हो जाओगे बल्कि तुम्हारे मुतअल्लिक़ मुझे दुनियादारी की मुहब्बत में मुब्तिला

الحديث رقم ٣٨: أخرجه البخاری فی الصحيح، كتاب: المغازی، باب: غزوة أحد، ٤ / ١٤٨٦، الرقم: ٣٨١٦، ومسلم فی الصحيح، كتاب: الفضائل، باب: إثبات حوض نبينا ﷺ وصفاته، ٤ / ١٧٩٦، الرقم: ٢٢٩٦، وأبوداود فی السنن، كتاب: الجنائز، باب: الميت يصلی علی قبره بعد حين، ٣ / ٢١٦، الرقم ٣٢٢٤، وأحمد بن حنبل فی المسند، ٤ / ١٥٤، والطبرانی فی المعجم الكبير، ١٧ / ٢٧٩، الرقم: ٧٦٨، والبيهقی فی السنن الكبری، ٤ / ١٤، الرقم: ٦٦٠١، والشيبانی فی الآحاد والمثانی، ٥ / ٤٥، الرقم: ٢٥٨٣۔

हो जाने का अंदेशा है। हज़रत उक़बा फरमाते हैं कि यह मेरा हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ का आख़िरी दीदार था (यानी उसके बाद जल्द ही आप ﷺ का विसाल हो गया।)''

٨٣٩ / ٣٩. عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ رضی الله عنه قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ إِنِّي فَرَطٌ لَكُمْ وَأَنَا شَهِيدٌ عَلَيْكُمْ وَإِنِّي وَاللهِ لَأَنْظُرُ إِلَى حَوْضِي الآنَ، وَإِنِّي أُعْطِيْتُ مَفَاتِيحَ خَزَآئِنِ الْأَرْضِ، أَوْمَفَاتِيحَ الْأَرْضِ، وَإِنِّي وَاللهِ مَا أَخَافُ عَلَيْكُمْ أَنْ تُشْرِكُوْا بَعْدِي وَلَكِنْ أَخَافُ عَلَيْكُمْ أَنْ تَنَافَسُوْا فِيهَا.

مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत उक़बा बिन आमिर रضی الله عنه रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : बेशक मैं तुम्हारा पेशरव और तुम पर गवाह हूँ। बेशक ख़ुदा की क़सम! मैं अपने हौज़ (कौसर) को इस वक़्त भी देख रहा हूँ और बेशक मुझे ज़मीन के ख़ज़ानों की कुंजियाँ (या फरमायाः) ज़मीन की कुंजियाँ अता कर दी गई हैं और ख़ुदा की क़सम ! मुझे यह डर नहीं कि मेरे बाद तुम शिर्क करने लगोगे बल्कि मुझे डर इस बात का है कि तुम दुनिया की मुहब्बत में मुब्तिला हो जाओगे।''

٨٤٠ / ٤٠. عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ رضی الله عنه قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنِّي لَسْتُ أَخْشَى عَلَيْكُمْ أَنْ تُشْرِكُوْا بَعْدِي، وَلَكِنِّي أَخْشَى عَلَيْكُمُ الدُّنْيَا أَنْ تَنَافَسُوْا فِيْهَا، وَتَقْتَتِلُوْا فَتَهْلِكُوْا كَمَا هَلَكَ مَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ قَالَ

الحديث رقم ٣٩: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: المناقب، باب: علامات النُّبُوَّةِ فِي الإِسلام، ٣ / ١٣١٧، الرقم: ٣٤٠١، وفى كتاب: الرقاق، باب: مَا يُحْذَرُ مِنْ زَهْرَةِ الدُّنْيَا وَالتَّنَافُسِ فِيها، ٥ / ٢٣٦١، الرقم: ٦٠٦١، ومسلم فى الصحيح، كتاب: الفضائل، باب: إثبات حوض نبينا ﷺ وصفاته، ٤ / ١٧٩٥، الرقم: ٢٢٩٦ وأحمد بن حنبل فى المسند، ٤ / ١٥٣.

الحديث رقم ٤٠: أخرجه مسلم فى الصحيح، كتاب: الفضائل، باب: اثبات حوض نبينا ﷺ وصفاته، ٤ / ١٧٩٦، الرقم: ٢٢٩٦، والطبرانى فى المعجم الكبير، ١٧ / ٢٧٩، الرقم: ٧٦٩، والشيباني في الآحاد والمثاني، ٥ / ٤٥، الرقم: ٢٥٨٣.

عُقْبَةُ: فَكَانَ آخِرَ مَا رَأَيْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ عَلَى الْمِنبَرِ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ.

''हज़रत उक़बा बिन आमिर ﷺ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः मुझे तुम्हारे मुतअल्लिक़ इस बात का तो डर ही नहीं है कि तुम मेरे बाद शिर्क करोगे बल्कि मुझे डर है कि तुम दुनिया की मुहब्बत में गिरफ्तार हो जाओगे और लड़ोगे और हलाक होगे जैसा कि तुमसे पहले लोग हुए। हज़रत उक़बा ﷺ फरमाते हैं कि यह आख़िरी बार थी जब मैंने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ को मिम्बर पर जलवा अफ़रोज़ देखा (यानी उसके बाद जल्द ही आप ﷺ का विसाल हो गया)।''

فَصْلٌ فِي بَعْثِ الْأَئِمَّةِ الْمُجَدِّدِيْنَ لِهَذِهِ الْأُمَّةِ

इस उम्मत में अइम्म–ए–मुजद्दिदीन के भेजे जाने का बयान

٨٤١ / ٤١۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضي الله عنه فِيْمَا أَعْلَمُ عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ قَالَ: إِنَّ اللهَ عزوجل يَبْعَثُ لِهَذِهِ الْأُمَّةِ عَلَى رَأْسِ كُلِّ مِائَةِ سَنَةٍ مَنْ يُّجَدِّدُ لَهَا دِيْنَهَا. رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ وَالْحَاكِمُ وَالطَّبَرَانِيُّ.

''हज़रत अबू हुरैरा رضي الله عنه उस (इल्म) में से जो उन्होंने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ से सीखा रिवायत करते हैं कि आप ﷺ ने फरमाया : अल्लाह तआ़ला इस उम्मत के लिए हर सदी के आख़िर में किसी ऐसे शख़्स (या अशख़ास) को पैदा फरमाएगा जो इस (उम्मत) के लिए उसके दीन की तजदीद करेगा।''

٨٤٢ / ٤٢۔ عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ رضي الله عنه قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّ أَدْنَى الرِّيَاءِ شِرْكٌ وَأَحَبَّ الْعَبِيْدِ إِلَى اللهِ تَبَارَکَ وَتَعَالَى الْأَتْقِيَاءُ الْأَخْفِيَاءُ الَّذِيْنَ إِذَا غَابُوْا لَمْ يُفْتَقَدُوْا وَإِذَا شَهِدُوْا لَمْ يُعْرَفُوْا أُوْلَئِکَ أَئِمَّةُ الْهُدَى وَمَصَابِيْحُ الْعِلْمِ. رَوَاهُ الْحَاكِمُ وَالطَّبَرَانِيُّ.

الحديث رقم ٤١: أخرجه أبوداود فى السنن، كتاب: الملاحم، باب: مايذكر فى قرن المائة، ٤/١٠٩، الرقم: ٤٢٩١، والحاكم فى المستدرك، ٤/٥٦٧، ٥٦٨، الرقم: ٨٥٩٢، ٨٥٩٣، والطبرانى فى المعجم الأوسط، ٦/٢٢٣، الرقم: ٦٥٢٧، والديلمى فى مسند الفردوس، ١/١٤٨، الرقم: ٥٣٢، والمقرئ فى السنن الوردة فى الفتن، ٣/٧٤٢، الرقم: ٣٦٤، وابن عساكر فى تاريخ دمشق الكبير، ٥١/٣٣٨، ٣٤١، والخطيب البغدادى فى تاريخ بغداد، ٢/٦١۔

الحديث الرقم ٤٢: أخرجه الحاكم فى المستدرك، ٣/٣٠٣، الرقم: ٥١٨٢، والطبرانى فى المعجم الأوسط، ٥/ ١٦٣، الرقم: ٤٩٥٠، وفى المعجم الكبير، ٢٠/٣٦، الرقم: ٥٣، والقضاعى فى مسند الشهاب، ٢/٢٥٢، الرقم: ١٢٩٨، والبيهقى فى كتاب الزهد، ٢/١١٢۔

وَقَالَ الْحَاكِمُ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत मुआज़ बिन जबल ﷺ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः मामूली सा दिखावा भी शिर्क है और बन्दों में से महबूब तरीन बन्दे अल्लाह तआला के नज़दीक मुत्तक़ी और ख़शिय्यते इलाही रखने वाले वो लोग हैं जो मौजूद न हों तो तलाश न किए जाएँ और मौजूद हों तो पहचाने न जाएँ, वही लोग हिदायत के इमाम और इल्म के चराग़ हैं। ''

٨٤٣ / ٤٣۔ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رضي الله عنهما قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ تَمَسَّکَ بِسُنَّتِي عِنْدَ فَسَادِ أُمَّتِي فَلَهُ أَجْرُ مِائَةِ شَهِيْدٍ.

رَوَاهُ أَبُوْنُعَيْمٍ وَالْبَيْهَقِيُّ وَالدَّيْلَمِيُّ.

''हज़रत अ़ब्दुलल्लाह बिन अ़ब्बास رضی اللہ عنہما से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जिसने उस वक़्त मेरी सुन्नत को मज़बूती से थामा जब मेरी उम्मत फ़साद में मुब्तिला हो चुकी होगी तो उसके लिए सौ शहीदों के बराबर सवाब है।''

٨٤٤ / ٤٤۔ عَنِ الْحَسَنِ بْنِ عَلِيٍّ رضي الله عنهما قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ جَاءَهُ الْمَوْتُ وَهُوَ يَطْلُبُ الْعِلْمَ لِيُحْيِيَ بِهِ الإِسْلَامَ فَبَيْنَهُ وَبَيْنَ النَّبِيِّيْنَ دَرَجَةٌ وَاحِدَةٌ فِي الْجَنَّةِ.

الحديث الرقم ٤٣: أخرجه أبونعيم فى حلية الأولياء، ٨ / ٢٠٠، والبيهقى فى كتاب الزهد الكبير، ٢: ١١٨، الرقم: ٢٠٧، والديلمى فى مسند الفردوس، ٤ / ١٩٨، الرقم: ٦٦٠٨، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ١: ٤١ / الرقم: ٦٥، والمزى فى تهذيب الكمال، ٢٤ / ٣٦٤، والذهبى فى ميزان الاعتدال، ٢ / ٢٧٠۔

الحديث الرقم ٤٤: أخرجه الدارمى فى السنن، باب: فى فضل العلم والعالم، ١ / ١١٢، الرقم: ٣٥٤، والطبرانى فى المعجم الأوسط، ٩ / ١٧٤، الرقم: ٩٤٥٤، وابن عساكر فى تاريخ دمشق الكبير، ٥١ / ٦١، والهيثمى فى مجمع الزوائد، ١ / ١٢٣، وابن عبد البر فى جامع بيان العلم وفضله، ١ / ٤٦، والزبيدى فى اتحاف سادة المتقين، ١ / ١٠٠، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ١ / ٥٣، الرقم: ١١٠۔

رَوَاهُ الدَّارِمِيُّ وَالطَّبَرَانِيُّ.

''हज़रत हसन बिन अ़ली رضی اللہ عنہما से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः दौराने हुसूले इल्म अगर किसी शख़्स को मौत आ जाए और वो इसलिए इल्म हासिल कर रहा हो कि उसके ज़रीये से इस्लाम को ज़िन्दा करेगा तो उसके और अम्बिया–ए–किराम के दरमियान जन्नत में सिर्फ एक दर्जे का फ़र्क़ होगा।''

٨٤٥ / ٤٥۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ، عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ أَنَّهُ قَالَ: لَا نَبِيَّ بَعْدِي. قَالُوْا: فَمَا يَكُوْنُ يَا رَسُوْلَ اللهِ، قَالَ: يَكُوْنُ خُلَفَاءٌ بَعْضُهُمْ عَلَى أَثْرِ بَعْضٍ فَمَنِ اسْتَقَامَ مِنْهُمْ فَفُوْا لَهُمْ بَيْعَتَهُمْ، وَمَنْ لَمْ يَسْتَقِمْ فَأَدُّوْا إِلَيْهِمْ حَقَّهُمْ وَسَلُوا اللهَ الَّذِي لَكُمْ. رَوَاهُ ابْنُ رَاهَوَيْهِ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः (जान लो !) मेरे बाद कोई नबी नहीं होगा। सहाबा किराम ﷺ ने अ़र्ज़ कियाः या रसूलल्लाह! कौन होगा ? आप ﷺ ने फरमायाः (मेरे) खुलफ़ा होंगे और फिर उनके खुलफ़ा होंगे। सो जिसे तुम सीधे रास्ते पर पाओ उसके साथ बैअत (अ़हदो वफ़ा) निभाओ, और जो सीधी राह पर न रहें उन्हें उनका हक़ दे दो और अपना हक़ अल्लाह तआ़ला से माँगो।''

٨٤٦ / ٤٦۔ عَنْ كَثِيْرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ الْمُزَنِيِّ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ جَدِّهِ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّ الدِّيْنَ (أَوْ قَالَ: إِنَّ الإِسْلَامَ) بَدَأَ غَرِيْبًا وَسَيَعُوْدُ غَرِيْبًا كَمَا بَدَأَ فَطُوْبَى لِلْغُرَبَاءِ قِيْلَ: يَا رَسُوْلَ اللهِ، مَنِ الْغُرَبَاءُ؟ قَالَ: الَّذِيْنَ يُحْيُوْنَ سُنَّتِي وَيُعَلِّمُوْنَهَا عِبَادَ اللهِ. رَوَاهُ الْقُضَاعِيُّ وَالْبَيْهَقِيُّ.

''हज़रत कसीर बिन अ़ब्दुल्लाह मुज़नी बवास्ता वालिद अपने दादा से रिवायत करते हैं

الحديث الرقم ٤٥: أخرجه ابن راهويه فى المسند، ١ / ٢٥٧، الرقم: ٢٢٣۔

الحديث الرقم ٤٦: أخرجه القضاعى فى مسند الشهاب، ٢ / ١٣٨، الرقم: ١٠٥٢۔ ١٠٥٣، والبيهقى فى كتاب الزهد الكبير، ٢ / ١١٧، الرقم: ٢٠٥، والسيوطى فى مفتاح الجنة، ١ / ٦٧۔

कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : बेशक दीन (या फरमायाः इस्लाम) की इब्तिदा अजनबिय्यत से हुई (यानी दीन की इत्तिबा करने वाले मुआशरे में अजनबी लगते थे या उसका दूसरा मफ़हूम यह है कि दीन के फैलने की इब्तिदा सफ़र और हिजरत से हुई) और (एक ज़माना फिर ऐसा आएगा कि) यह दीन (मुआशरे में) दोबारा अजनबी लगेगा। जिस तरह शुरू में लगता था और (दीन फैलाने की ख़ातिर) अलग थलग होने वाले (गुरबा यानी अजनबी लोगों) के लिए ख़ुशख़बरी है। अर्ज़ किया गया : या रसूलल्लाह ! गुरबा (अजनबी) कौन हैं ? फरमाया : वो लोग जो मेरी सुन्नतों को ज़िन्दा करते और अल्लाह के बन्दों को इनकी तालीम देते है।''

٨٤٧ / ٤٧۔ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ تَعَلَّمَ الْعِلْمَ يُحْيِي بِهِ الإِسْلَامَ لَمْ يَكُنْ بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْأَنْبِيَاءِ إِلَّا دَرَجَةٌ.

رَوَاهُ ابْنُ عَبْدِ الْبَرِّ.

''हज़रत सईद बिन मुसय्यब ﷺ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जिसने इल्म हासिल किया ताकि उससे इस्लाम को ज़िन्दा कर सके तो उसके और अम्बिया–ए–किराम के दरमियान सिवाए एक दर्जे के कोई फ़र्क़ नहीं होगा।''

٨٤٨ / ٤٨۔ عَنِ الْحَسَنِ ابْنِ عَلِيٍّ رضي الله عنهما قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: رَحْمَةُ اللهِ عَلَى خُلَفَائِي ثَـلَاثَ مَرَّاتٍ، قَالُوْا: وَمَنْ خُلَفَاؤُكَ يَا رَسُوْلَ اللهِ؟ قَالَ: الَّذِيْنَ يُحْيُوْنَ سُنَّتِي وَيُعَلِّمُوْنَهَا النَّاسَ.

رَوَاهُ ابْنُ عَسَاكِرَ وَابْنُ عَبْدِ الْبَرِّ وَالْهِنْدِيُّ.

''हज़रत हसन बिन अली رضی اللہ عنهما से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने तीन मर्तबा फरमायाः मेरे खुलफ़ा पर अल्लाह तआला की रहमत हो। सहाबा–ए–किराम ने

الحديث الرقم ٤٧: أخرجه ابن عبدالبر فی جامع بيان العلم وفضله، ١ / ٤٦۔

الحديث الرقم ٤٨: أخرجه ابن عساكر فی تاريخ دمشق الكبير، ٥١ / ٦١، وابن عبد البر فی جامع بيان العلم وفضله، ١ / ٤٦، والهندی فی كنز العمال، ١٠ / ٢٢٩، الرقم: ٢٩٢٠٩۔

अ़र्ज़ किया: या रसूलल्लाह ! आपके ख़ुलफ़ा कौन लोग हैं ? आप ﷺ ने फरमाया: (वो लोग) जो मेरी सुन्नतों को ज़िन्दा करते हैं और (दूसरे) लोगों को भी इनकी तालीम देते हैं (मेरे ख़ुलफ़ा हैं)।''

٨٤٩ / ٤٩ـ عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ الْفَرْيَابِيِّ رضي الله عنه قَالَ: قَالَ أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ رضي الله عنه: إِنَّ اللهَ يُقَيِّضُ لِلنَّاسِ فِي كُلِّ رَأْسِ مِائَةِ سَنَةٍ مَنْ يُعَلِّمُهُمُ السُّنَنَ وَيَنْفِي عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ الْكِذْبَ. رَوَاهُ الْمِزِّيُّ وَالْخَطِيْبُ وَالْعَسْقَلَانِيُّ.

''हज़रत अबू सईद फ़रयाबी رضي الله عنه रिवायत करते हैं कि इमाम अहमद बिन हम्बल رضي الله عنه ने फरमाया: अल्लाह तआ़ला हर सदी के आख़िर पर लोगों के लिए एक ऐसी शख़्सियत को भेजता है जो लोगों को सुन्नत की तालीम देती है और हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की तरफ़ मन्सूब झूट की नफ़ी करती है।''

الحديث الرقم ٤٩: أخرجه المزى فى تهذيب الكمال، ٢٤ / ٣٦٥، والعسقلاني فى تهذيب التهذيب، ٩ / ٢٥، والخطيب البغدادي فى تاريخ بغداد، ٢ / ٦٢، والعظيم آبادى فى عون المعبود، ١١ / ٢٦١.

बाब 13 : اَلْبَابُ الثَّالِثُ عَشَرَ:

الاِعْتِصَامُ بِالسُّنَّةِ

﴾सुन्नते नबवी ﷺ को मज़बूती से थामे रखना﴿

1. فَصْلٌ فِي التَّمَسُّكِ بِالسُّنَّةِ النَّبَوِيَّةِ

﴿हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की सुन्नते मुतहहरा को मज़बूती से थामे रखने का बयान﴾

2. فَصْلٌ فِي التَّجَنُّبِ عَنِ الْبِدْعَةِ السَّيِّئَةِ

﴿बुरी बिदअत से बचते रहने का बयान﴾

3. فَصْلٌ فِي الْبِدْعَةِ الْحَسَنَةِ وَإِثْبَاتِ أَصْلِهَا مِنَ السُّنَّةِ

﴿बिदअते हसना और सुन्नत से उसकी अस्ल के सबूत का बयान﴾

فَصْلٌ فِي التَّمَسُّكِ بِالسُّنَّةِ النَّبَوِيَّةِ

﴿हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की सुन्नते मुतह्हरा को मज़बूती से थामे रखने का बयान﴾

٨٥٠ / ١۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضي الله عنه أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ: قَالَ: مَنْ أَطَاعَنِي فَقَدْ أَطَاعَ اللهَ، وَمَنْ عَصَانِي فَقَدْ عَصَى اللهَ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अबू हुरैरा رضي الله عنه रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जिसने मेरी इताअत की सो उसने अल्लाह तआला की इताअत की, और जिसने मेरी नाफरमानी की सो उसने अल्लाह तआला की नाफरमानी की।''

٨٥١ / ٢۔ عَنْ حُذَيْفَةَ رضي الله عنه قَالَ: حَدَّثَنَا رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: أَنَّ الْأَمَانَةَ نَزَلَتْ مِنَ السَّمَاءِ فِي جَذْرِ قُلُوْبِ الرِّجَالِ، وَنَزَلَ الْقُرْآنُ فَقَرَؤُوْا الْقُرْآنَ،

الحديث رقم ١: أخرجه البخاری فی الصحيح، كتاب: الأحكام، باب: قول الله تعالى: أَطِيْعُوا اللهَ وَ أَطِيْعُوا الرَّسُولَ وَ أُوْلِي الْأَمْرِ مِنْكُمْ: [النساء: ٥٩]، ٦/ ٢٦١١، وفی كتاب: الجهاد، باب: يقاتل مِن وراء الإمام ويُتّقَى به، ٣/ ١٠٨٠، الرقم: ٢٧٩٧، ومسلم في الصحيح، كتاب: الإمارة، باب: وجوب طاعة الأمراء معصية وتحريمها فی المعصية، ٣/ ١٤٦٦، الرقم: ١٨٣٥، والنسائی فی السنن، كتاب: البيعة، باب: الترغيب فی طاعة الإمام، ٧/ ١٥٤، الرقم: ٤١٩٣، ٥٥١٠، وابن ماجه فی السنن، المقدمة، باب: اتباع سنة رسول الله ﷺ، ١/ ٤، الرقم: ٣، وفی كتاب: الجهاد، باب: طاعة الإمام، الرقم: ٢٨٥٩، ٢٨٥٩، وابن خزيمة فی الصحيح، ٣/ ٤٦، الرقم: ١٥٩٧، وابن حبان فی الصحيح، ١٠/ ٤٢٠، الرقم: ٤٥٥٦، وأحمد بن حنبل فی المسند، ٢/ ٢٥٢، الرقم: ٧٤٢٨۔

الحديث رقم ٢: أخرجه البخاری فی الصحيح، كتاب: الاعتصام بالكتاب والسنة، باب: الاقتداء بسنن رسول الله ﷺ، ٦/ ٢٦٥٥، الرقم: ٦٨٤٨، ومسلم فی الصحيح، كتاب: الإيمان، باب: رفع الأمانة والإيمان من بعض القلوب، وعرض الفتن على القلوب، ١/ ١٢٦، الرقم: ١٤٣، والترمذی فی السنن، كتاب: الفتن عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء فی رفع الأمانة، ٤/ ٤٧٤، الرقم: ٢١٧٩، وأحمد بن حنبل فی المسند، ٥/ ٣٨٣، الرقم: ٢٣٣٠٣۔

وَعَلِمُوْا مِنَ السُّنَّةِ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत हुज़ैफ़ा ﷺ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने हमसे बयान फरमायाः (वही–ए–इलाही की) अमानत आसमान से लोगों के दिलों की तह में नाज़िल फरमाई गई और क़ुरआने करीम नाज़िल हुआ। सो उन्होंने क़ुरआने करीम पढ़ा और सुन्नत सीखी।''

٨٥٢ / ٣ـ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: كُلُّ أُمَّتِي يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ إِلَّا مَنْ أَبَي. قَالُوْا: يَا رَسُوْلَ اللهِ، وَمَنْ يَأْبَى؟ قَالَ: مَنْ أَطَاعَنِي دَخَلَ الْجَنَّةَ، وَمَنْ عَصَانِي فَقَدْ أَبَى. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः मेरी सारी उम्मत जन्नत में दाख़िल होगी सिवाए उसके जिसने इन्कार किया। सहाबा ने अ़र्ज़ कियाः या रसूलल्लाह ! किसने इन्कार किया ? आप ﷺ ने फरमायाः जिसने मेरी इताअ़त की वो जन्नत में दाख़िल हुआ और जिसने मेरी नाफरमानी की उसने इन्कार किया।''

٨٥٣ / ٤ـ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رضي الله عنهما قَالَ: جَاءَتْ مَلَائِكَةٌ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ وَهُوَ نَائِمٌ...... فَقَالَ بَعْضُهُمْ: إِنَّهُ نَائِمٌ، وَقَالَ بَعْضُهُمْ: إِنَّ الْعَيْنَ نَائِمَةٌ وَالْقَلْبَ يقْظَانُ، فَقَالُوْا: فَالدَّارُ الْجَنَّةُ، وَالدَّاعِي مُحَمَّدٌ ﷺ، فَمَنْ أَطَاعَ مُحَمَّدًا فَقَدْ أَطَاعَ اللهَ، وَمَنْ عَصَى مُحَمَّدًا فَقَدْ عَصَى اللهَ، وَمُحَمَّدٌ فَرَّقَ بَيْنَ النَّاسِ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ.

الحديث رقم ٣: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: الاعتصام بالكتاب والسنة، باب: الاقتداء بسنن رسول الله ﷺ، ٦ / ٢٦٥٥، الرقم: ٦٨٥١، وابن حبان فى الصحيح، ١ / ١٩٦، الرقم: ١٧، والحاكم فى المستدرك، ١ / ١٢٢، الرقم: ١٨٢، ٤ / ٢٧٥، الرقم: ٨٦٢٦، وقال: صحيح الإسناد، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٢ / ٣٦١، الرقم: ٨٧١٣.

الحديث رقم ٤: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: الاعتصام بالكتاب والسنة، باب: الاقتداء بِسُنَنِ رسول الله ﷺ، ٦ / ٢٦٥٥، الرقم: ٦٨٥٢.

''हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رضی اللہ عنہما से मरवी है कि कुछ फ़रिश्ते हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की ख़िदमते अक़दस में हाजिर हुए जबकि आप ﷺ इस्तिराहत फरमा रहे थे तो उनमें से एक ने कहाः यह तो सोए हुए हैं। दूसरे ने कहा (इनकी) आँख सोती है मगर दिल बेदार रहता है। फिर उन्होंने कहाः हक़ीक़ी घर जन्नत ही है और मुहम्मद ﷺ (हक़ की तरफ़) बुलाने वाले हैं। जिसने मुहम्मद ﷺ की इताअ़त की (दर हक़ीक़त) उसने अल्लाह तआ़ला की इताअ़त की और जिसने मुहम्मद ﷺ की नाफरमानी की उसने अल्लाह तआ़ला की नाफरमानी की, मुहम्मद ﷺ अच्छे और बुरे लोगों में फ़र्क़ करने वाले हैं।''

٨٥٤ / ٥۔ عَنْ مَالِكٍ رضی الله عنه أَنَّهُ بَلَغَهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: تَرَكْتُ فِيْكُمْ أَمْرَيْنِ لَنْ تَضِلُّوْا مَا تَمَسَّكْتُمْ بِهِمَا: كِتَابَ اللهِ وَسُنَّةَ نَبِيِّهِ.

رَوَاهُ مَالِكٌ وَالْحَاكِمُ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضی الله عنه.

''हज़रत इमाम मालिक رضی الله عنه रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः मैं तुम्हारे पास दो चीज़े छोड़े जा रहा हूँ अगर तुम उन्हें थामे रखोगे तो कभी गुमराह नहीं होगे। यानी अल्लाह तआ़ला की किताब और उसके नबी ﷺ की सुन्नत।''

٨٥٥ / ٦۔ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رضی الله عنهما أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ خَطَبَ النَّاسَ فِي حَجَّةِ الْوَدَاعِ فَقَالَ: يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنِّي قَدْ تَرَكْتُ فِيْكُمْ مَا إِنِ اعْتَصَمْتُمْ بِهِ فَلَنْ تَضِلُّوْا أَبَدًا: كِتَابَ اللهِ وَسُنَّةَ نَبِيِّهِ.

رَوَاهُ الْحَاكِمُ وَالْبَيْهَقِيُّ.

الحديث رقم ٥: أخرجه مالك في الموطأ، كتاب: القدر، باب: النهي عن القول بالقدر، ٢ / ٨٩٩، الرقم: ١٥٩٤، والحاكم في المستدرك، ١ / ١٧٢، الرقم: ٣١٩، وابن عبد البر في التمهيد، ٢٤ / ٣٣١، الرقم: ١٢٨، والواسطي في تاريخ واسط، ١ / ٥٠۔

الحديث رقم ٦: أخرجه الحاكم في المستدرك، ١ / ١٧١، الرقم: ٣١٨، والبيهقي في السنن الكبرى، ١٠ / ١١٤، وفي الاعتقاد، ١ / ٢٢٨، والمروزي في السنة، ١ / ٢٦، الرقم: ٦٨، والمنذري في الترغيب والترهيب، ١ / ٤١، الرقم: ٦٦، والسيوطي في مفتاح الجنة، ١ / ٢١، وابن حزم في الأحكام، ٦ / ٢٤٣، والطبري في تاريخ الأمم والملوك، ٢ / ٢٠٦، وابن هشام في السيرة النبوية، ٦ / ١٠۔

وَقَالَ الْحَاكِمُ: صَحِيْحُ الإِسْنَادِ.

''हज़रत इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ عنہما से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने हज्जतुल विदाअ़ के मौके पर लोगों से ख़िताब फरमायाः ऐ लोगो ! यक़ीनन मैं तुम्हारे दरमियान ऐसी शै छोड़े जा रहा हूँ अगर तुम उसे मज़बूती से थामे रखोगे तो कभी गुमराह नहीं होगे। यानी अल्लाह तआला की किताब और उसके नबी ﷺ की सुन्नत।''

٨٥٦ / ٧. عَنِ الْعِرْبَاضِ بْنِ سَارِيَةَ رضی الله عنه قَالَ: وَعَظَنَا رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يَوْمًا بَعْدَ صَلَاةِ الْغَدَاةِ مَوْعِظَةً بَلِيْغَةً ذَرَفَتْ مِنْهَا الْعُيُوْنُ وَ وَجِلَتْ مِنْهَا الْقُلُوْبُ، فَقَالَ رَجُلٌ: إِنَّ هَذِهِ مَوْعِظَةُ مُوَدِّعٍ فَمَاذَا تَعْهَدُ إِلَيْنَا يَا رَسُوْلَ اللهِ؟ قَالَ: أُوْصِيْكُمْ بِتَقْوَى اللهِ وَالسَّمْعِ وَالطَّاعَةِ وَإِنْ عَبْدٌ حَبَشِيٌّ، فَإِنَّهُ مَنْ يَعِشْ مِنْكُمْ يَرَى اخْتِلَافًا كَثِيْرًا، وَإِيَّاكُمْ وَمُحْدَثَاتِ الْأُمُوْرِ، فَإِنَّهَا ضَلَالَةٌ، فَمَنْ أَدْرَكَ ذَلِكَ مِنْكُمْ، فَعَلَيْكُمْ بِسُنَّتِي وَسُنَّةِ الْخُلَفَاءِ الرَّاشِدِيْنَ الْمَهْدِيِّيْنَ، عَضُّوْا عَلَيْهَا بِالنَّوَاجِذِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَه.

وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत इरबाज़ बिन सारिया رضی الله عنه रिवायत करते हैं कि एक दिन हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फ़ज्र की नमाज़ के बाद हमें निहायत फ़सीहो बलीग़ वा'ज़ फरमाया, जिससे आँखों में आँसू जारी हो गए और दिल काँपने लगे। एक शख़्स ने कहाः यह तो अल विदअ़ होनेवाले शख़्स के वा'ज़ जैसा (ख़िताब) है। या रसूलल्लाह ! आप हमें क्या वसीयत फरमाते हैं? आप ﷺ ने

الحديث رقم ٧: أخرجه الترمذى فى السنن، كتاب: العلم عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء فى الأخذ بالسنة واجتناب البدع، ٥ / ٤٤، الرقم: ٢٦٧٦، وأبوداود فى السنن، كتاب: السنة، باب: فى لزوم السنة، ٤ / ٢٠٠، الرقم: ٤٦٠٧، وابن ماجه فى السنن، المقدمة، باب: اتباع سنة الخلفاء الراشدين المهديين، ١ / ١٥، الرقم: ٤٢، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٤ / ١٢٦، وابن حبان فى الصحيح، ١ / ١٧٨، الرقم: ٥، والحاكم فى المستدرك، ١ / ١٧٤، الرقم: ٣٢٩، وقال: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحٌ لَيْسَ لَهُ عِلَّةٌ، والطبرانى فى المعجم الكبير، ١٨ / ٢٤٦، الرقم: ٦١٨.

फरमायाः मैं तुम्हे परहेज़गारी और सुनने और मानने की वसीयत करता हूँ, ख़्वाह तुम्हारा हाकिम हब्शी गुलाम ही क्यों न हो। इसलिए कि तुममें से जो ज़िन्दा रहेगा वो बहुत से इख़्तिलाफ़ देखेगा। ख़बरदार (शरीअत के ख़िलाफ़) नई बातों से बचना क्यों कि यह गुमराही का रास्ता है लिहाजा तुममें से जो यह ज़माना पाए तो वो मेरी और मेरे हिदायत याफ़्ता खुलफ़ा–ए–राशिदीन की सुन्नत को लाज़िम पकड़े, तुम लोग (मेरी सुन्नत को) दांतों से मजबूती से पकड़ लेना (यानी इस पर सख़्ती से कारबन्द रहना)।''

٨٥٧ / ٨۔ عَنِ ابْنِ عَوْنٍ ﷺ قَالَ: ثَـلاثٌ أُحِبُّهُنَّ لِنَفْسِي وَلِإِخْوَانِي. هَذِهِ السُّنَّةُ أَنْ يَتَعَلَّمُوْهَا وَيَسْأَلُوْا عَنْهَا، وَالْقُرْآنُ أَنْ يَتَفَهَّمُوْهُ وَيَسْأَلُوْا عَنْهُ، وَيَدَعُوا النَّاسَ إِلَّا مِنْ خَيْرٍ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ.

''हज़रत इब्ने औन ﷺ का क़ौल है कि तीन चीज़ें मैं अपने लिए और अपने भाई के लिए पसन्द करता हूँ एक यह कि वो इस सुन्नत को सीखें और उसके मुतअल्लिक़ सवाल करें। दूसरा क़ुरआने करीम, कि उसे समझें और उसके मुतअल्लिक़ पूछें, तीसरा यह कि भलाई के सिवा लोगों से किनारा कश रहे।''

٨٥٨ / ٩۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: الْمُتَمَسِّكُ بِسُنَّتِي عِنْدَ فَسَادِ أُمَّتِي لَهُ أَجْرُ شَهِيْدٍ.

رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ بِإِسْنَادٍ لَا بَأْسَ بِهِ وَأَبُوْنُعَيْمٍ.

وفي رواية لأبي نعيم: عَنِ ابْنِ فَارِسٍ ﷺ عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ مِثْلَهُ

الحديث رقم ٨: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: الاعتصام بالكتاب والسنة، باب: الاقتداء بسنن رسول الله ﷺ، ٦ / ٢٦٥٤، والبيهقى فى كتاب الزهد الكبير، ٢ / ٩٦، الرقم: ١٣٢، واللالكائي فى اعتقاد أهل السنة، ١ / ٦١، الرقم: ٣٦.

الحديث رقم ٩: أخرجه الطبراني في المعجم الأوسط، ٥ / ٣١٥، الرقم: ٥٤١٤، وأبو نعيم في حلية الأولياء، ٨ / ٢٠٠، والديلمي عن ابن عباس رضي الله عنهما في مسند الفردوس، ٤ / ١٩٨، الرقم: ٦٦٠٨، والمنذري في الترغيب والترهيب، ١ / ٤١، الرقم: ٦٥، وقال: رواه الطبراني بإسناد لا بأس به، والهيثمي في مجمع الزوائد، ١ / ١٧٢، وقال: رجاله ثقات، وابن عدي عن بن عباس رضي الله عنهما ←

وَقَالَ: لَهُ أَجْرُ مِائَةِ شَهِيدٍ.

''हज़रत अबू हुरैरा ؓ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः मेरी सुन्नत को उस वक़्त मज़बूती से थामे रखने वाले के लिए जबकि मेरी उम्मत फ़साद में मुब्तिला हो गई, शहीद के बराबर सवाब है।

और इमाम अबू नईम की रिवायत है कि ''हज़रत इब्ने फ़ारिस ؓ ने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ से इस तरह रिवायत की और उसमें आप ﷺ ने फरमायाः तो उसके लिए सौ शहीदों के बराबर सवाब है।''

٨٥٩ / ١٠ـ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ؓ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ قَالَ: سَيَأْتِيكُمْ عَنِّي أَحَادِيثُ مُخْتَلِفَةٌ فَمَا جَاءَكُمْ مُوَافِقًا لِكِتَابِ اللهِ وَسُنَّتِي فَهُوَ مِنِّي وَمَا جَاءَكُمْ مُخَالِفًا لِكِتَابِ اللهِ وَسُنَّتِي فَلَيْسَ مِنِّي.

رَوَاهُ الدَّيْلَمِيُّ وَالْخَطِيبُ.

''हज़रत अबू हुरैरा ؓ हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ से रिवायत करते हैं कि आप ﷺ ने फरमायाः तुम्हारे पास मेरी तरफ़ (मन्सूब शुदा) मुख़्तलिफ़ अहादीस पहुँचेंगी, सो जो तुम्हारे पास क़ुरआने पाक और मेरी सुन्नत के मुवाफ़िक पहुँचे तो (जान लो कि) वो मेरी तरफ़ से (ही) है और जो तुम्हारे पास क़ुरआने पाक और मेरी सुन्नत से मुतसादिम क़ौल पहुँचे तो (जान लो कि) वो मेरी तरफ़ से नहीं है।''

.... في الكامل، ٢/ ٣٢٧، الرقم: ٤٦٠، وقال: وأرجو أنه لا بأس به، والذهبي في ميزان الاعتدال، ٢/ ٢٧٠، والعسقلاني في لسان الميزان، ٢/ ٢٤٦، الرقم: ١٠٣٣، والسيوطي في مفتاح الجنة، ١/ ١٣.

الحديث رقم ١٠: أخرجه الديلمي في مسند الفردوس، ٢/ ٣٢١، الرقم: ٣٤٥٦، والخطيب الغدادى في الكفاية في علم الرواية، ١/ ٤٣٠، والذهبي في ميزان الاعتدال، ٣/ ٣١٥، والسيوطي في مفتاح الجنة، ١/ ٢٣، وابن عدي في الكامل، ٤/ ٦٩.

فَصْلٌ فِي التَّجَنُّبِ عَنِ الْبِدْعَةِ السَّيِّئَةِ

﴾बुरी बिदअत से बचते रहने का बयान﴿

٨٦٠ / ١١ـ عَنْ عَائِشَةَ رضي الله عنها قَالَتْ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ أَحْدَثَ فِي أَمْرِنَا هَذَا مَالَيْسَ فِيْهِ فَهُوَ رَدٌّ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

٨٦١ / ١٢ـ وفي روايةٍ لهما: وَمَنْ عَمِلَ عَمَلًا لَيْسَ عَلَيْهِ أَمْرُنَا فَهُوَ رَدٌّ.

''हज़रत आइशा رضی اللہ عنہا रिवायत करती हैं कि एक दिन हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जो हमारे इस दीन में कोई ऐसी नई बात पैदा करे जो इसमें न हो तो वो रद्द है।''

''बुख़ारी और मुस्लिम की एक रिवायत में हैः जो कोई ऐसा काम करे जिसके मुतअल्लिक हमारा हुक्म न हो तो वो मरदूद है।''

الحديث رقم ١١: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: الصلح، باب: إذا اصطلحوا على جور فالصلح مردود، ٢ / ٩٥٩، الرقم: ٢٥٥٠، ومسلم فى الصحيح، كتاب: الأقضية، باب: نقض الأحكام الباطلة ورد محدثات الأمور، ٣ / ١٣٤٣، الرقم: ١٧١٨، وأبوداود في السنن، كتاب: السنة، باب: فى لزوم السنة، ٥ / ١٢ الرقم: ٤٦٠٦، وابن ماجه في السنن، المقدمة، باب: تعظيم حديث رسول الله ﷺ والتغليظ على من عارضه، ١ / ٧ الرقم: ١٤.

الحديث رقم ١٢: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: البيوع، (٤٠) باب: النجش ومن قال لايجوزذلك البيع، ٢ / ٧٥٣، وفى الصحيح، كتاب: الاعتصام بالكتاب والسنة، باب: إذا اجتهد العامل أو الحاكم فأخطا خلاف الرسول علم فحكمه مردود، ٦ / ٢٦٧٥، ومسلم فى الصحيح، كتاب: الأقضية، باب: نقض الأحكام الباطلة ورد محدثات الأمور، ٣ / ١٣٤٣، الرقم: ١٧١٨، وأبو عوانة فى المسند، ٤ / ١٧١، الرقم: ٦٤٠٨، والدارقطنى فى السنن، ٤ / ٢٢٧،الرقم: ٨٠ـ ٨٢، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٦ / ١٨٠، الرقم: ٢٥٥١١ـ

٨٦٢ / ١٣. عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رضي الله عنهما قَالَ: كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ إِذَا خَطَبَ احْمَرَّتْ عَيْنَاهُ، وَعَلَا صَوْتُهُ، وَاشْتَدَّ غَضَبُهُ. حَتَّى كَأَنَّهُ مُنْذِرُ جَيْشٍ، يَقُوْلُ: صَبَّحَكُمْ وَمَسَّاكُمْ. وَيَقُوْلُ: بُعِثْتُ أَنَا وَالسَّاعَةُ كَهَاتَيْنِ وَيَقْرُنُ بَيْنَ إِصْبَعَيْهِ السَّبَّابَةِ وَالْوُسْطَى. وَيَقُوْلُ: أَمَّا بَعْدُ فَإِنَّ خَيْرَ الْحَدِيْثِ كِتَابُ اللهِ. وَخَيْرُ الْهُدَى هُدَى مُحَمَّدٍ. وَشَرُّ الْأُمُوْرِ مُحْدَثَاتُهَا. وَكُلُّ بِدْعَةٍ ضَلَالَةٌ ثُمَّ يَقُوْلُ: أَنَا أَوْلَى بِكُلِّ مُؤْمِنٍ مِنْ نَفْسِهِ. مَنْ تَرَكَ مَالًا فَلِأَهْلِهِ وَمَنْ تَرَكَ دَيْنًا أَوْ ضَيَاعًا فَإِلَيَّ وَعَلَيَّ.

رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَه.

''हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह رضی اللہ عنہما रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ जब ख़ुत्बा देते तो आप ﷺ की चश्माने मुक़द्दस सुर्ख़ हो जातीं, आवाज बुलन्द होती और जलाल ज़्यादा हो जाता और यूँ लगता जैसे आप किसी ऐसे लश्कर से डरा रहे हों जो सुब्हो शाम में हमला करने वाला हो। और फरमातेः मैं और क़यामत इन दो उंगलियों की तरह साथ–साथ भेजे गए है। फिर आप ﷺ अंगुश्ते शहादत और दरमियानी उंगुली को मिलाते और हम्दो सना के बाद फरमाते याद रखो बेहतरीन बात अल्लाह तआला की किताब है और बेहतरीन

الحديث رقم ١٣: أخرجه مسلم فی الصحيح، كتاب: الجمعة، باب: تخفيف الصلاة والخطبة، ٢ / ٥٩٢، الرقم: ٨٦٧، والنسائی فی السنن، كتاب: صلاة العيدين، باب: كيف الخطبة، ٣ / ١٨٨، الرقم: ١٥٧٨، وفی السنن الكبری، ١ / ٥٥٠، الرقم: ١٧٨٦، وابن ماجه فی السنن، المقدمة، باب: اجتناب البدع والجدل، ١ / ١٧، الرقم: ٤٥، وأحمد بن حنبل فی المسند، ٣ / ٣١٠، الرقم: ١٤٣٧٣، وابن حبان فی الصحيح، ١ / ١٨٦، الرقم: ١٠، والدارمی فی السنن، ١ / ٨٠، الرقم: ٢٠٦، وابن راشد فی الجامع، ١١ / ١٥٩، والطبرانی فی المعجم الأوسط، ٣ / ١٦٠، الرقم: ٩٤١٨، وفی المعجم الكبير، ٣ / ١٠٠، الرقم: ٨٥٣١، والبيهقی فی السنن الكبری، ٣ / ٢٠٦، الرقم: ٥٥٤٤، وأبو يعلی فی المسند، ٤ / ٨٥، ٩٠، الرقم: ٢١١١، ٢١١٩، وابن الجارود فی المنتقی، ١ / ٨٣، الرقم: ٢٩٧، والمنذری فی الترغيب والترهيب، ١ / ٤٤، الرقم: ٧٨، والرمهرمزی فی أمثال الحديث، ١ / ٢٢، الرقم: ٨.

सीरत मुहम्मद मुस्तफ़ा की सीरत है और बद तरीन काम इबादत के नए तरीक़े (निकालना) हैं और इबादत का हर नया तरीका है फिर फरमाते : हर मोमिन की जान पर तसर्रुफ़ का सबसे ज़्यादा हक़दार मैं हूँ। जिस शख़्स ने माल छोड़ा वो इसके वारिसों का है और जिसने क़र्ज़ या अहलो अयाल को छोड़ा वो मेरे ज़िम्मे हैं।''

٨٦٣ / ١٤۔ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رضي الله عنهما قَالَ: خَطَبَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ فَقَالَ: يَا أَيُّهَا النَّاسُ، إِنَّكُمْ مَحْشُوْرُوْنَ إِلَى اللهِ تَعَالَى حُفَاةً عُرَاةً غُرْلًا، ثُمَّ قَالَ: ﴿كَمَا بَدَأْنَا أَوَّلَ خَلْقٍ نُعِيْدُهُ وَعْدًا عَلَيْنَا إِنَّا كُنَّا فَاعِلِيْنَ﴾ [الأنبياء، ٢١:١٠٤] إِلَى آخِرِ الآيَةِ، ثُمَّ قَالَ: أَلاَ وَإِنَّ أَوَّلَ الْخَلاَئِقِ يُكْسَى يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِبْرَاهِيْمُ عليه السلام، أَلَا وَإِنَّهُ يُجَاءُ بِرِجَالٍ مِنْ أُمَّتِي فَيُؤْخَذُ بِهِمْ ذَاتَ الشِّمَالِ، فَأَقُوْلُ: يَا رَبِّ أُصَيْحَابِي فَيُقَالُ: إِنَّکَ لَا تَدْرِي مَا أَحْدَثُوْا بَعْدَکَ، فَأَقُوْلُ كَمَا قَالَ الْعَبْدُ الصَّالِحُ: ﴿وَكُنْتُ عَلَيْهِمْ شَهِيْدًا مَا دُمْتُ فِيْهِمْ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي كُنْتَ أَنْتَ الرَّقِيْبَ عَلَيْهِمْ﴾ [المائدة، ٥:١١٧] فَيُقَالُ: إِنَّ هَؤُلَاءِ لَمْ يَزَالُوْا مُرْتَدِّيْنَ عَلَى أَعْقَابِهِمْ مُنْذُ فَارَقْتَهُمْ.

مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رضی اللہ عنہما से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम

الحديث رقم ١٤: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: تفسير القرآن، باب: وكنت عليهم شهيدا مادمت فيهم فلما توفيتني كنت أنت الرقيب عليهم وأنت على كل شيء شهيد، ٤ / ١٦٩١، الرقم: ٤٣٤٩، وفي كتاب: تفسير القرآن، باب: كما بدأنا أول خلق نعيده وعدا علينا، ٤ / ١٧٦٦، الرقم: ٤٤٦٣، و في كتاب: الرقاق، باب: كيف الحشر، ٥ / ٢٣٩١، الرقم: ٦١٦١، ومسلم في الصحيح، كتاب: الجنة وصفة نعيمها وأهلها، باب: فناء الدنيا وبيان الحشر يوم القيامة، ٤ / ٢١٩٤، الرقم: ٢٨٦٠، والترمذي في السنن، كتاب: الجنائز عن رسول الله ﷺ، باب: ذكر أول من يكسى، ٤ / ١١٧، الرقم: ٢٠٨٧، وأحمد بن حنبل في المسند، ١ / ٢٣٥، الرقم: ٢٠٩٦۔

ﷺ ने एक रोज़ ख़ुत्बा देते हुए फरमायाः ऐ लोगो! तुम बरोज़े हश्र अल्लाह तआला की बारगाह में यूँ हाजिर किए जाओगे कि बरहना पा, नंगे जिस्म और बग़ैर ख़तना के होगे। फिर आप ﷺ ने यह आयत पढ़ीः ''जिस तरह हमने (कायनात को) पहली बार पैदा किया था हम (उसके खत्म हो जाने के बाद) इसी अमले तख़लीक को दोहराएंगे। यह वादा पूरा करना हमने लाज़िम कर लिया है। हम (इआदा) ज़रूर करने वाले हैं। फिर आप ﷺ ने फरमाया : सारी मख़लूक़ में सबसे पहले जिन्हें लिबास पहनाया जाएगा वो हज़रत इब्राहीम عليه السلام हैं। ख़बरदार हो जाओ कि फिर मेरी उम्मत के कुछ लोगों को लाया जाएगा फ़रिश्ते उन्हें जहन्नम की तरफ़ हाँकेंगे। मैं अर्ज़ करूँगा : ऐ रब ! यह तो मेरे साथी हैं। फरमाया जाएगा ! आपको मालूम नहीं कि आपके बाद यह क्या गुल खिलाते रहे। पस मैं भी वही कहूँगा जो अल्लाह तआला के एक नेक बन्दे हज़रत ईसा عليه السلام ने कहा : ''और मैं इन (के अक़ाइदो अमाल) पर (उस वक़्त तक) ख़बरदार रहा जब तक मैं उन लोगों में मौजूद रहा। फिर जब तूने मुझे उठा लिया तो तू ही (उनके हालात) पर निगेहबान था''। पस कहा जाएगा जैसे ही आप इनसे जुदा हुए थे यह उसी वक़्त मुरतद हो गए थे।''

٨٦٤ / ١٥۔ عَنْ حُذَيْفَةَ رضي الله عنه قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَا يَقْبَلُ اللهُ لِصَاحِبِ بِدْعَةٍ صَوْمًا وَلَا صَلَاةً وَلَا صَدَقَةً وَلَا حَجًّا وَلَا عُمْرَةً وَلَا جِهَادًا وَلَا صَرْفًا وَلَا عَدْلًا يَخْرُجُ مِنَ الْإِسْلَامِ كَمَا تَخْرُجُ الشَّعْرَةُ مِنَ

الحديث رقم ١٥: أخرجه ابن ماجه في السنن، المقدمة، باب: اجتناب البدع والجدل، ١/ ١٩، الرقم: ٤٩-٥٠، وابن أبي عاصم في السنة، ١/ ٢١-٢٢، والطبراني في المعجم الأوسط، ٤/ ٢٨١، الرقم: ٤٢٠٢، والبيهقي في شعب الإيمان، ٥/ ٤٤٩، الرقم: ٧٢٣٨، ٧/ ٥٩، الرقم: ٩٤٥٦، وابن راهويه في المسند، ١/ ٣٧٧، الرقم: ٣٩٧، والمقدسي في الأحاديث المختارة، ٦/ ٧٢، الرقم: ٢٠٥٤-٢٠٥٥، إسناده حسن، والديلمي في الفردوس بمأثور الخطاب، ٢/ ١٤٣، الرقم: ٢٧٣٢، والمنذري في الترغيب والترهيب، ١/ ٤٥، الرقم: ٨٧، وقال: إسناده حسن، وابن حبان في طبقات المحدثين بأصبهان، ٣/ ٦٠٩، والمزي في تهذيب الكمال، ٢٦/ ٣٧٤، والعسقلاني في تهذيب التهذيب، ٩/ ٣٨١، والهيثمي في مجمع الزوائد، ١٠/ ١٨٩، وقال: ورجاله موثقون، والمناوي في فيض القدير، ٢/ ٢٠٠، والقرطبي في الجامع لأحكام القرآن، ١٨/ ١٩٩، والكناني في مصباح الزجاجة، ١/ ١١، الرقم: ١٩۔

الْعَجِيْنِ. رَوَاهُ ابْنُ مَاجَه.

ورواه ابن ماجه وابن أبي عاصم في كتاب السنة من حديث ابن عباس رضي الله عنهما ولفظهما: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: أَبَى اللهُ أَنْ يَقْبَلَ عَمَلَ صَاحِبِ بِدْعَةٍ حَتَّى يَدَعَ بِدْعَتَهُ.

وفي رواية: عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رضي الله عنه قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّ اللهَ حَجَبَ التَّوبَةَ عَنْ صَاحِبِ كُلِّ بِدْعَةٍ.

رَوَاهُ ابْنُ أَبِي عَاصِمٍ وَالطَّبَرَانِيُّ بِإِسْنَادٍ حَسَنٍ وَالْبَيْهَقِيُّ.

''हज़रत हुज़ैफ़ा رضي الله عنه हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ से रिवायत करते हैं कि आप ﷺ ने फरमायाः अल्लाह तआला बिदअती का रोज़ा, नमाज़, हज, उमरा, जिहाद और कोई फ़र्जो नफ़्ल (इबादत कुबूल नहीं फरमाता, वो इस्लाम से यूँ ख़ारिज हो जाता है जैसे आटे से बाल ख़ारिज हो जाता है।''

और इमाम इब्ने माजा और इमाम इब्ने अबी आसिम ने ''किताबुस्सुन्नहु'' में हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رضی اللہ عنہما की रिवायत बयान की। उनके अल्फ़ाज़ यह हैः हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः अल्लाह तआला ने किसी बिदअती के अ़मल को कुबूल करने से इन्कार कर दिया है जब तक कि वो बिदअत न छोड़ दे।

और एक रिवायत में हज़रत अनस رضي الله عنه ने बयान किया कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः बेशक अल्लाह तआला किसी बिदअती की तौबा कुबूल नहीं फरमाता जब तक कि वो उस (इर्तिकाबे बिदअत) से बाज़ नहीं आ जाता।''

فَصْلٌ فِي الْبِدْعَةِ الْحَسَنَةِ وَإِثْبَاتِ أَصْلِهَا مِنَ السُّنَّةِ

﴿बिदअ़ते हसना और सुन्नत से उसकी अस्ल के सबूत का बयान﴾

٨٦٥ / ١٦۔ عَنْ عَائِشَةَ رضي الله عنها قَالَتْ: كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يُكْثِرُ أَنْ يَقُوْلَ قَبْلَ أَنْ يَمُوْتَ: سُبْحَانَکَ وَبِحَمْدِکَ، أَسْتَغْفِرُکَ وَأَتُوْبُ إِلَيْکَ. قَالَتْ: قُلْتُ: يَا رَسُوْلَ اللهِ، مَا هَذِهِ الْكَلِمَاتُ الَّتِي أَرَاکَ أَحْدَثْتَهَا تَقُوْلُهَا؟ قَالَ: جُعِلَتْ لِي عَـلَامَةٌ فِي أُمَّتِي إِذَا رَأَيْتُهَا قُلْتُهَا ﴿إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللهِ وَالْفَتْحُ﴾ [النصر، ١١٠:١] إلى آخِرِ السُّوْرَةِ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ.

''हज़रत आइशा رضي الله عنها से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ विसाल से पहले बकसरत यह कलिमात फरमाते थे ﴿سُبْحَانَکَ اللَّهُمَّ رَبَّنَا وَبِحَمْدِکَ﴾ (أَسْتَغْفِرُکَ وَأَتُوْبُ إِلَيْکَ﴾ मैने अ़र्ज़ किया: या रसूलल्लाह! अब आपने यह नए कलिमात क्यों पढ़ने शुरू कर दिए जिन्हें मैं आपको पढ़ते हुए देखती हूँ। आप ﷺ ने फरमाया: अल्लाह तआला ने मेरी उम्मत की एक अ़लामत मुक़र्रर कर रखी है जब मैं उम्मत में इस अ़लामत को देखता हूँ तो सूरह ﴿إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللهِ وَالْفَتْحُ﴾ पढ़ता हूँ (इस सूरत में जो हुक्म है उस पर अ़मल करता हूँ)।''

٨٦٦ / ١٧۔ عَنْ رَافِعِ بْنِ خُدِيْجٍ رضي الله عنه قَالَ: كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ إِذَا اجْتَمَعَ إِلَيْهِ أَصْحَابُهُ فَأَرَادَ أَنْ يَنْهَضَ قَالَ: ﴿سُبْحَانَکَ اللَّهُمَّ وَ

الحديث رقم ١٦: أخرجه مسلم فى الصحيح، كتاب: الصلاة، باب: ما يقال فى الركوع والسجود، ١/ ٣٥١، الرقم: ٤٨٤، وابن أبي شيبة فى المصنف، ٦/ ٤٢، الرقم: ٢٩٣٣٢، وأبو نعيم فى المسند المستخرج، ٢/ ٩٨، الرقم: ١٠٧٦، والطبرى فى جامع البيان، ٣٠/ ٣٣٤۔

الحديث رقم ١٧: أخرجه النسائى فى السنن الكبرى، ٦/ ١١٣، الرقم: ١٠٢٠، وفى عمل اليوم والليلة، ١/ ٣٢٠، الرقم: ٤٢٧، والحاكم فى المستدرك، ١/ ٧٢١، الرقم: ١٩٧٢، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٢/ ٢٦٤، الرقم: ٢٣٣٩۔

بِحَمْدِكَ أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ أَسْتَغْفِرُكَ وَأَتُوْبُ إِلَيْكَ عَمِلْتُ سُوْءًا وَظَلَمْتُ نَفْسِي فَاغْفِرْ لِي فَإِنَّهُ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ إِلَّا أَنْتَ﴾. فَقُلْنَا: يَا رَسُوْلَ اللهِ، هَذِهِ كَلِمَاتٌ أَحْدَثْتَهُنَّ قَالَ: أَجَلْ جَاءَنِي جِبْرَئِيْلُ فَقَالَ لِي: يَا مُحَمَّدُ هُنَّ كَفَّارَةُ الْمَجَالِسِ. رَوَاهُ النَّسَائِيُّ وَالْحَاكِمُ وَصَحَّحَهُ.

وَقَالَ الْمُنْذِرِيُّ: رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ فِي الثَّلَاثَةِ بِاخْتِصَارٍ بِإِسْنَادٍ جَيِّدٍ.

''हज़रत राफे' बिन खुदीज ﷺ से मरवी है कि सहाबा क़िराम ﷺ जब हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के गिर्द जमा होते और आप ﷺ (मजलिस ख़त्म होने के बाद) उठने लगते तो फरमातेः ''ऐ अल्लाह! तेरे लिए ही पाकी है और तेरी लिए ही तमाम तारीफ़ें हैं। मैं गवाही देता हूँ कि तेरे सिवा कोई माबूद नहीं। मैं तुझसे मग़फ़िरत तलब करता हूँ और तेरी तरफ़ ही रूजूअ करता हूँ, ख़्वाह मैंने कोई बुरा अ़मल किया है या अपने ऊपर ज़ुल्म किया है। फिर तू मुझे बख़्श दे यक़ीनन तेरे सिवा कोई भी गुनाह माफ नहीं कर सकता। तो हमने अ़र्ज़ कियाः या रसूलल्लाह! आपने यह नए कलिमात पढ़े हैं। फरमाया ''हाँ ! अभी मेरे पास जिब्राईल आए थे, मुझसे कहाः ऐ मुहम्मद मुस्तफ़ा! यह अल्फ़ाज़ मजालिस का कफ़्फ़ारा हैं।''

٨٦٧/١٨۔ عَنْ مُجَاهِدٍ قَالَ: دَخَلْتُ أَنَا وَعُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ الْمَسْجِدَ، فَإِذَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عُمَرَ رضي الله عنهما جَالِسٌ إِلَى حُجْرَةِ عَائِشَةَ رضي الله عنها، وَإِذَا نَاسٌ يُصَلُّوْنَ فِي الْمَسْجِدِ صَلَاةَ الضُّحَى. قَالَ: فَسَأَلْنَاهُ عَنْ

الحديث رقم ١٨: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: العمرة، باب: كم اعتمر النبي ﷺ، ٢/٦٣٠، الرقم: ١٦٨٥، ومسلم في الصحيح، كتاب: الحج، باب: بيان عدد عمر النبي ﷺ وزمانهن، ٢/٩١٧، الرقم: ١٢٥٥، وابن خزيمة في الصحيح، ٤/٣٥٨، الرقم: ٣٠٧٠، وابن حبان في الصحيح، ٩/٢٦٩، الرقم: ٣٩٤٥، وأحمد بن حنبل في المسند، ٢/١٢٨، الرقم: ٦١٢٦، وابن أبي شيبة في المصنف، ٢/١٧٢، الرقم: ٦١٦، وابن راهويه في المسند، ٣/٦١٤، الرقم: ١١٨٧، والعسقلاني في فتح الباري، ٣/٥٢، الرقم: ١١٢١، والمباركفوري في تحفة الأحوذي، ٤/٥، وفي شرح النووي على صحيح مسلم، ٨/٢٣٧، والزيلعي في نصب الراية، ٣/٩٤۔

صَلَاتِهِمْ، فَقَالَ: بِدْعَةٌ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत मुजाहिद ﷺ से रिवायत है कि मैं और हज़रत उरवा बिन ज़ुबैर رضی اللہ عنہما मस्जिद में दाख़िल हुए तो वहाँ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رضی اللہ عنہما हज़रत आइशा رضی اللہ عنہا हुजरे के पास बैठे हुए थे और लोग मस्जिद में चाश्त की नमाज़ पढ़ रहे थे। हमने उन लोगों की नमाज़ के मुतअ़ल्लिक़ पूछा तो उन्होंने फरमाया : बिदअ़त (हसना) है।''

٨٦٨ / ١٩۔ عَنِ الْأَعْرَجِ ﷺ قَالَ: سَأَلْتُ مُحَمَّدًا عَنْ صَلَاةِ الضُّحَى وَهُوَ مُسْنِدٌ ظَهْرَهُ إِلَى حُجْرَةِ النَّبِيِّ ﷺ، فَقَالَ: بِدْعَةٌ وَنِعْمَتِ الْبِدْعَةُ.

رَوَاهُ ابْنُ أَبِي شَيْبَةَ بِإِسْنَادٍ صَحِيْحٍ.

''हज़रत आरिज ﷺ रिवायत करते हैं कि मैंने हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर رضی اللہ عنہما से नमाज़े चाश्त के मुतअ़ल्लिक़ सवाल किया जब वो हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के हुजरए मुबारक की पुश्त से टेक लगाए बैठे थे। तो उन्होने फरमायाः बिदअ़त और बहुत अच्छी बिदअ़त है।''

٨٦٩ / ٢٠۔ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَبْدِ الْقَارِيِّ أَنَّهُ قَالَ: خَرَجْتُ مَعَ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ ﷺ لَيْلَةً فِي رَمَضَانَ إِلَى الْمَسْجِدِ، فَإِذَا النَّاسُ أَوْزَاعٌ مُتَفَرِّقُوْنَ يُصَلِّي الرَّجُلُ لِنَفْسِهِ، وَيُصَلِّي الرَّجُلُ فَيُصَلِّي بِصَلَاتِهِ الرَّهْطُ، فَقَالَ عُمَرُ: إِنِّي أَرَى لَوْ جَمَعْتُ هَؤُلَاءِ عَلَى قَارِئٍ وَاحِدٍ لَكَانَ أَمْثَلَ، ثُمَّ عَزَمَ فَجَمَعَهُمْ عَلَى أُبَيِّ بْنِ كَعْبٍ، ثُمَّ خَرَجْتُ مَعَهُ لَيْلَةً أُخْرَى

الحديث رقم ١٩: أخرجه ابن أبي شيبة في المصنف، ٢/١٧٢، الرقم: ٧٧٧٥، والعسقلاني في فتح الباري، ٣/٥٢، الرقم: ١١٢١.

الحديث رقم ٢٠: أخرجه البخاري في صحيح، كتاب: صلاة التراويح، باب: فضل من قام رمضان، ٢/٧٠٧، الرقم: ١٩٠٦، ومالك في الموطا، كتاب: الصلاة في رمضان، باب: ماجاء في قيام رمضان، ١/١١٤، الرقم: ٦٥٠، وابن خزيمة في الصحيح، ٢/١٥٥، الرقم: ١٥٥، وعبد الرزاق في المصنف، ٤/٢٥٨، الرقم: ٧٧٢٣، والبيهقي في السنن الكبرى، ١٢، ٤٩٣، الرقم: ٤٣٧٨، وفي شعب الإيمان، ٣/١٧٧، الرقم: ٣٢٦٩.

وَالنَّاسُ يُصَلُّوْنَ بِصَلَاةِ قَارِءِهِمْ، قَالَ عُمَرُ: نِعْمَ الْبِدْعَةُ هَذِهِ، وَالَّتِي يَنَامُوْنَ عَنْهَا أَفْضَلُ مِنَ الَّتِي يَقُوْمُوْنَ، يُرِيْدُ آخِرَ اللَّيْلِ، وَكَانَ النَّاسُ يَقُوْمُوْنَ أَوَّلَهُ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ وَمَالِكٌ.

''हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन अ़ब्दुल क़ारी रिवायत करते हैं कि मैं हज़रत उमर ﷺ के साथ रमज़ान की एक रात मस्जिद की तरफ़ निकला तो लोग मुतफ़र्रिक़ थे कोई तन्हा नमाज़ पढ़ रहा था और कोई गिरोह के साथ। हज़रत उमर ﷺ ने फरमायाः मेरे ख़याल में उन्हें एक क़ारी के पीछे जमा कर दिया जाए तो अच्छा होगा पस हज़रत अबी बिन क़अब ﷺ के पीछे सबको जमा कर दिया गया फिर मैं एक दूसरी रात को उनके साथ निकला और लोग अपने क़ारी के पीछे नमाज़ पढ़ रहे थे। हज़रत उमर ﷺ ने फरमायाः यह कितनी अच्छी बिदअ़त है, और जिस नमाज़ (तहज्जुद) से यह सोए रहते हैं उससे बेहतर है जिसका क़याम करते है (यानी तरावीह से)। मुराद है आख़िर रात जबकि लोग रात के पहले पहर क़याम करते थे। (यानी तहज्जुद की नमाज़ तरावीह से अफ़ज़ल है।)''

٨٧٠ / ٢١. عَنْ جَرِيْرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ سَنَّ فِي الإِسْلَامِ سُنَّةً حَسَنَةً فَلَهُ أَجْرُهَا، وَأَجْرُ مَنْ عَمِلَ بِهَا بَعْدَهُ. مِنْ غَيْرِ أَنْ يُنْقَصَ مِنْ أُجُورِهِمْ شَيءٌ. وَمَنْ سَنَّ فِي الإِسْلَامِ سُنَّةً سَيِّئَةً، كَانَ عَلَيْهِ وِزْرُهَا وَوِزْرُ مَنْ عَمِلَ بِهَا مِنْ بَعْدِهِ. مِنْ غَيْرِ أَنْ يُنْقَصَ مِنْ أَوْزَارِهِمْ شَيءٌ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَه.

الحديث رقم ٢١: أخرجه مسلم فى الصحيح، كتاب: الزكاة، باب: الحث على الصدقة ولو بشق تمرة أو كلمة طيبة وأنها حجاب من النار، ٢/ ٧٠٤، الرقم: ١٠١٧، وفى كتاب: العلم، باب: من سن سنة حسنة أو سيئة ومن دعا إلى هدى أوضلالة، ٤/ ٢٠٥٩، الرقم: ١٠١٧، والنسائى فى السنن، كتاب: الزكاة، باب: التحريض على الصدقة، ٥/ ٧٥، الرقم: ٢٥٥٤، وابن ماجه فى السنن، المقدمة، باب: من سن سنة حسنة أو سيئة، ١/ ٧٤-٧٥، الرقم: ٢٠٣، ٢٠٦، ٢٠٧، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٤/ ٣٥٨، والدارمى فى السنن، ١/ ١٤٠، الرقم: ٥١٢، والبزار فى المسند، ٧/ ٣٦٦، الرقم: ٢٩٦٣.

''हज़रत जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह ﷺ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जो शख़्स इस्लाम में किसी नेक काम की बुनियाद डाले तो उसके लिए उसके अपने आमाल का भी सवाब है और जो लोग उसके बाद उस पर अ़मल करेंगे उनका सवाब भी है। बग़ैर इसके कि उनके सवाब में कोई कमी की जाए और जिसने इस्लाम में किसी बुरी बात की इब्तिदा की तो उस पर उसके अपने अमल का भी गुनाह है और जो लोग उसके बाद उस पर अ़मल करेंगे उस पर उनका गुनाह भी है बग़ैर इसके कि उनके गुनाह में कुछ कमी हो।''

٨٧١ / ٢٢۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ دَعَا إِلَى هُدًى، كَانَ لَهُ مِنَ الْأَجْرِ مِثْلَ أُجُوْرِ مَنْ يَتَّبِعُهُ، لَا يَنْقُصُ ذَلِكَ مِنْ أُجُوْرِهِمْ شَيْئًا. وَمَنْ دَعَا إِلَى ضَلَالَةٍ، كَانَ عَلَيْهِ مِنَ الإِثْمِ مِثْلُ آثَامِ مَنْ يَتَّبِعُهُ، لَا يَنْقُصُ ذَلِكَ مِنْ آثَامِهِمْ شَيْئًا. رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَالتِّرْمِذِيُّ.

وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जिसने हिदायत की तरफ़ बुलाया उसके लिए उस रास्ते पर चलने वालों की मिस्ल सवाब है और उनके सवाब में से कुछ भी कम न होगा और जिसने गुनाह की दावत दी उसके लिए भी उतना गुनाह है जितना उस बद अ़मली का मुर्तकिब होने वालों पर है और उनके गुनाहों में भी कोई कमी नहीं होगी।''

الحديث رقم ٢٢: أخرجه مسلم فى الصحيح، كتاب: العلم، باب: من سن سنة حسنة أو سيئة، ومن دعا إلى هدى أو ضلالة، ٤ / ٢٠٦٠، الرقم: ٢٦٧٤، والترمذي فى السنن، كتاب: العلم عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء فيمن دعا إلى هدى فاتبع أو إلى ضلالة، ٥ / ٤٣، الرقم: ٢٦٧٤، وأبوداود فى السنن كتاب: السنة، باب: لزوم السنة، ٤ / ٢٠١، الرقم: ٤٦٠٩، وابن ماجه فى السنن، المقدمة، باب: من سن سنة حسنة أو سيئة، ١ / ٧٥، الرقم: ٢٠٥۔٢٠٦، وابن حبان فى الصحيح، باب: ذكر الحكم فيمن دعا إلى هدى أو ضلالة فاتبع عليه، ١ / ٣١٨، الرقم: ١١٢، والدرمى فى السنن، ١ / ١٤١، الرقم: ٥١٣، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٢ / ٣٩٧، الرقم: ٩١٤٩، وأبو عوانة فى المسند، ٣ / ٤٩٤، الرقم: ٥٨٢٣، وأبويعلى فى المسند، ١١ / ٣٧٣، الرقم: ٦٤٨٩، واللالكائي فى اعتقاد أهل السنة، ١ / ٥٢، الرقم: ٦، وابن أبي عاصم فى السنة، ١ / ٥٢، الرقم: ١١٣۔

٨٧٢ / ٢٣۔ عَنْ جَرِيْرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ سَنَّ سُنَّةَ خَيْرٍ فَاتُّبِعَ عَلَيْهَا، فَلَهُ أَجْرُهُ، وَمِثْلُ أُجُوْرِ مَنِ اتَّبَعَهُ غَيْرَ مَنْقُوْصٍ مِنْ أُجُوْرِهِمْ شَيْئًا، وَمَنْ سَنَّ سُنَّةَ شَرٍّ فَاتُّبِعَ عَلَيْهَا، كَانَ عَلَيْهِ وِزْرُهُ، وَمِثْلُ أَوْزَارِ مَنِ اتَّبَعَهُ غَيْرَ مَنْقُوْصٍ مِنْ أَوْزَارِهِمْ شَيْئًا. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ.

وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जिसने कोई अच्छा तरीक़ा जारी किया फिर उस पर अ़मल किया गया तो उसके लिए अपना सवाब भी है और उसे अ़मल करने वालों के बराबर सवाब भी मिलेगा। जबकि उनके सवाब में कोई कमी (भी) न होगी और जिसने कोई बुरा तरीका जारी किया। फिर वो तरीक़ा अपनाया गया तो उसके लिए अपना गुनाह भी है और लोगों के गुनाह के बराबर भी जो उस पर अमल पैरा हुए। बग़ैर उसके कि उनके गुनाहों में कुछ कमी हो।''

٨٧٣ / ٢٤۔ عَنْ بِلَالِ بْنِ الْحَارِثِ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: أَنَّهُ مَنْ أَحْيَا سُنَّةً مِنْ سُنَّتِي قَدْ أُمِيْتَتْ بَعْدِي، فَإِنَّ لَهُ مِنَ الْأَجْرِ مِثْلَ مَنْ عَمِلَ بِهَا، مِنْ غَيْرِ أَنْ يَنْقُصَ مِنْ أُجُوْرِهِمْ شَيْئًا، وَمَنِ ابْتَدَعَ بِدْعَةَ

الحديث رقم ٢٣: أخرجه الترمذي فى السنن، كتاب: العلم عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء فيمن دعا إلى هدى فاتبع أو إلى ضلالة، ٥ / ٤٣، الرقم: ٢٦٧٥، والعسقلانى فى فتح البارى، ١٣ / ٣٠٢، والمباركفورى فى تحفة الأحوذى، ٧ / ٣٦٥، وابن حزم فى المحلى، ٨ / ١١٦، وفى الإحكام فى أصول الأحكام، ١ / ١١۔

الحديث رقم٢٤: أخرجه الترمذى فى السنن، كتاب: العلم عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء فى الأخذ بالسنة واجتناب البدع، ٥ / ٤٥، الرقم: ٢٦٧٧، وابن ماجه فى السنن، المقدمة، باب: مَن أحيا سنّة قد أميتت، ١ / ٧٦، الرقم: ٢٠٩۔٢١٠، والبزار فى المسند، ٨ / ٣١٤، الرقم: ٣٣٨٥، والطبرانى فى المعجم الكبير، ١٧ / ١٦، الرقم: ١٠، والبيهقى فى الاعتقاد، ١ / ٢٣١، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ١ / ٤٩، الرقم: ٩٧۔

ضَلَالَةٍ لَا تُرْضِى اللهَ وَرَسُوْلَهُ، كَانَ عَلَيْهِ مِثْلُ آثَامِ مَنْ عَمِلَ بِهَا، لَا يَنْقُصُ ذٰلِكَ مِنْ أَوْزَارِ النَّاسِ شَيْئًا. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَه.

وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هٰذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ.

''हज़रत बिलाल बिन हारिस ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जिसने मेरे बाद कोई ऐसी सुन्नत ज़िन्दा की जो मुर्दा हो चुकी थी। तो उसके लिए भी उतना ही अज्र होगा जितना उस पर दीगर अ़मल करने वालों के लिए। बावजूद इसके उनके अज्रो सवाब में कोई कमी नहीं आएगी और जिसने गुमराही की बिदअ़त निकाली जिसे अल्लाह ﷻ और उसका रसूल ﷺ पसन्द नहीं करते तो उस पर उतना ही गुनाह है जितना उस बुराई का दीगर इर्तिकाब करने वालों पर है और उससे उनके गुनाहों के बोझ में बिल्कुल कमी नहीं आएगी।''

٨٧٤ / ٢٥ـ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُوْدٍ ﷺ قَالَ: فَمَا رَآهُ الْمُؤْمِنُ حَسَنًا فَهُوَ عِنْدَ اللهِ حَسَنٌ وَمَا رَآهُ الْمُؤْمِنُوْنَ قَبِيْحًا فَهُوَ عِنْدَ اللهِ قَبِيْحٌ.

رَوَاهُ الْبَزَّارُ وَالطَّبَرَانِيُّ وَأَحْمَدُ.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद ﷺ से रिवायत है कि उन्होंने फरमायाः जिस (अ़मल) को कोई (एक) मोमिन अच्छा जाने वो (अ़मल) अल्लाह तआ़ला के नज़दीक भी अच्छा है और जिस अ़मल को मोमिनीन बुरा जानें वो ख़ुदा के नज़दीक भी बुरा है।''

الحديث رقم٢٥: أخرجه البزار فى المسند، ٥/٢١٢، الرقم: ١٨١٦، والطبرانى فى المعجم الكبير، ٩/١١٢، الرقم: ٨٥٨٣، وأحمد بن حنبل فى المسند، ١/٣٧٩، الرقم: ٣٦٠٠، والحاكم فى المستدرك، ٣/٨٣، الرقم: ٤٤٦٥، وأبونعيم فى حلية الأولياء، ١/٣٧٥، والبيهقى فى المدخل إلى السنن الكبرى، ١/١١٤، وفى الاعتقاد، ١/٣٢٢، والطيالسى فى المسند، ١/٣٣، الرقم: ٢٤٦، وابن رجب فى جامع العلوم والحكم، ١/٢٥٤.

बाब 14 :

اَلْبَابُ الرَّابِعُ عَشَرَ:

الْبِرُّ وَالصِّلَةُ وَالْحُقُوقُ

नेकी, सिला रहमी और हुक़ूक़

1. فَصْلٌ فِي حُسْنِ الْخُلُقِ

हुस्ने अख़लाक़ का बयान

2. فَصْلٌ فِي ثَوَابِ مَنْ قَضَى حَوَائِجَ النَّاسِ

मुश्किलात में लोगों के काम आने पर अज्र का बयान

3. فَصْلٌ فِي بِرِّ الْوَالِدَيْنِ وَصِلَةِ الْأَرْحَامِ

वालिदैन के साथ नेक सुलूक और सिला रहमी का बयान

4. فَصْلٌ فِي حُقُوقِ الْأَكَابِرِ وَالْأَصَاغِرِ

बड़ों और छोटों के हुक़ूक़ का बयान

5. فَصْلٌ فِي حُقُوقِ الْأُسْرَةِ وَالْأَوْلَادِ

ख़ानदान और औलाद के हुक़ूक़ का बयान

6. فَصْلٌ فِي جَامِعِ الْحُقُوقِ

जामेअ हुक़ूक़ का बयान

فَصْلٌ فِي حُسْنِ الْخُلُقِ

हुस्ने अख़्लाक़ का बयान

١/٨٧٥ـ عَنْ عَائِشَةَ رضي الله عنها قَالَتْ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّ مِنْ أَكْمَلِ الْمُؤْمِنِيْنَ إِيْمَانًا أَحْسَنُهُمْ خُلُقًا وَأَلْطَفُهُمْ بِأَهْلِهِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ.

وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحٌ، وَقَال الْحَاكِمُ: صَحِيْحٌ.

''हज़रत आइशा رضی اللہ عنہا रिवायत करती हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः मोमिनो में से कामिल तरीन मोमिन वो है जो बेहतरीन अख़्लाक़ का मालिक है और अपने अहलो अयाल के साथ निहायत नर्म है।''

٢/٨٧٦ـ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ، قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: أَكْمَلُ الْمُؤْمِنِيْنَ إِيْمَانًا أَحْسَنُهُمْ خُلُقًا وَخِيَارُكُمْ خِيَارُكُمْ لِنِسَائِهِمْ.

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ حِبَّانَ.

وَقَالَ التِّرمِذِيُّ: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः

الحديث رقم ١: أخرجه الترمذى فى السنن، كتاب: الإيمان عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء فى استكمال الإيمان وزيادته ونقصانه، ٥/٩، الرقم: ٢٦١٢، والحاكم فى المستدرك، ١/١١٩، الرقم: ١٧٣، وقال الحاكم: رواة هذا الحديث عن آخرهم ثقات على شرط الشيخين، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٦/٤٧، الرقم: ٢٤٥٠٠، ٢٤٢١، وابن أبى شيبة فى المصنف، ٥/٢١٠، الرقم: ٢٥٣١٩، والبيهقى فى شعب الإيمان، ٦/٤١٥، الرقم: ٨٧١٩.

الحديث رقم ٢: أخرجه الترمذى فى السنن، كتاب: الرضاع عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء فى حق المرأة على زوجها، ٣/٤٦٦، الرقم: ١١٦٢، وابن حبان فى الصحيح، ٢/٢٢٧، الرقم: ٤٧٩، والحاكم فى المستدرك، ١/٤٣، الرقم: ٢، وَقَالَ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحٌ، والدارمى فى السنن، ٢/٤١٥، الرقم: ٢٧٩٢، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٢/٤٧٢، الرقم: ١٠١١٠، وأبو يعلى فى المسند، ٧/٢٣٧، الرقم: ٤٢٤٠.

मोमिनों में से कामिल तरीन ईमान उसका है जो उनमें से बेहतरीन अख़्लाक़ का मालिक है और तुमसे बेहतरीन अशख़ास वो हैं जो अपनी बीवियों के साथ हुस्ने सुलूक करने वाले हैं।''

٨٧٧ / ٣۔ عَنْ جَابِرٍ رضي الله عنه أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: إِنَّ مِنْ أَحَبِّكُمْ إِلَيَّ وَأَقْرَبِكُمْ مِنِّي مَجْلِسًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ أَحَاسِنَكُمْ أَخْلَاقًا.

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ حِبَّانَ وَأَحْمَدُ.

وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ.

''हज़रत जाबिर رضي الله عنه से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः तुम में सबसे ज़्यादा महबूब और क़यामत के दिन मेरे नज़दीक तरीन बैठने वाले वो लोग हैं जो तुम में से अख़्लाक़ में अच्छे हैं।''

٨٧٨ / ٤۔ عَنْ عَائِشَةَ رضي الله عنها قَالَتْ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: إِنَّ الْمُؤْمِنَ لَيُدْرِكُ بِحُسْنِ خُلُقِهِ دَرَجَةَ الصَّائِمِ الْقَائِمِ.

رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ وَابْنُ حِبَّانَ وَأَحْمَدُ.

الحديث رقم ٣: أخرجه الترمذی فی السنن، كتاب: البر والصلة عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء فی معالی الأخلاق، ٤ / ٣٧٠، الرقم: ٢٠١٨، وابن حبان فی الصحيح، ٢ / ٢٣٥، الرقم: ٤٨٥، وأحمد بن حنبل عن عبد الله بن عمرو رضی الله عنهما فی المسند، ٢ / ١٨٥، ٢١٧، الرقم: ٦٧٣٥، ٧٠٣٥، والبيهقی فی شعب الإيمان، ٦ / ٢٣٤، الرقم: ٧٩٩۔

الحديث رقم ٤: أخرجه أبو داود فی السنن، كتاب: الأدب، باب: فی حسن الخلق، ٤ / ٢٥٢، الرقم: ٤٧٩٨، وابن حبان فی الصحيح، ٢ / ٢٢٨، الرقم: ٤٨٠، وأحمد بن حنبل فی المسند، ٦ / ٩٠، الرقم: ٢٤٦٣٩، والحاكم فی المستدرك، ١ / ١٢٨، الرقم: ١٩٩، والبيهقی فی شعب الإيمان، ٦ / ٢٣٦، الرقم: ٧٩٩٧، والهيثمی فی موارد الظمآن، ١ / ٤٧٥، الرقم: ١٩٢٧، وأبو المحاسن فی معتصر المختصر، ٢ / ٢٠٩، والمنذری فی الترغيب والترهيب، ٣ / ٢٧١، الرقم: ٤٠٠٤۔٤٠٠٦، وابن رجب فی جامع العلوم والحكم، ١ / ١٨٢، وابن عبد البر فی التمهيد، ٢٤ / ٨٥، والديلمی فی مسند الفردوس، ١ / ١٩٤، الرقم: ٧٣١۔

وَقَالَ الْحَاكِمُ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत आइशा رضی اللہ عنہا रिवायत करती हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ को फरमाते हुए सुनाः यक़ीनन मोमिन हुस्ने अख़्लाक़ के ज़रीये दिन को रोज़ा रखने वाले और रातों को क़ियाम करने वाले का दर्जा हासिल कर लेता है।''

٨٧٩ / ٥۔ عَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ رضي الله عنه عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَا مِنْ شَيءٍ أَثْقَلُ فِي الْمِيْزَانِ مِنْ حُسْنِ الْخُلُقِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُوْدَاوُدَ وَاللَّفْظُ لَهُ.

وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत अबू दरदा رضي الله عنه से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः हुस्ने अख़्लाक़ से बढ़ कर मीज़ान में भारी चीज़ कोई नहीं होगी।''

٨٨٠ / ٦۔ عَنِ ابْنِ مَسْعُوْدٍ رضي الله عنه أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: حُرِّمَ عَلَى النَّارِ كُلُّ هَيِّنٍ سَهْلٍ قَرِيْبٍ مِنَ النَّاسِ. رَوَاهُ أَحْمَدُ وَابْنُ حِبَّانَ.

''हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद رضي الله عنه से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : बेशक वो शख़्स आग पर हराम कर दिया गया जो नेक मिज़ाज, ख़ुश अख़्लाक़ और

الحديث رقم ٥: أخرجه الترمذي فى السنن، كتاب: البر والصلة عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء فى حسن الخلق، ٤ / ٣٦٢، الرقم: ٢٠٠٢، وأبوداود فى السنن، كتاب: الأدب، باب: فى حسن الخلق، ٤ / ٢٥٣، الرقم: ٤٧٩٩، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٦ / ٤٤٨، ٤٥١، الرقم: ٢٧٥٧٢، ٢٧٥٩٣، وابن حبان فى الصحيح، ٢ / ٢٣٠، الرقم: ٤٨١، والبيهقى فى شعب الإيمان، ٦ / ٢٣٨، ٢٣٩، الرقم: ٨٠٠٣ ۔ ٨٠٠٤، وابن أبي عاصم فى السنة، ٢ / ٣٦٣، الرقم: ٧٨٣، والطبرانى فى مسند الشاميين، ٢ / ١٠٣، الرقم: ٩٩٣، وعبد بن حميد فى المسند، ١ / ٩٩، الرقم: ٢٠٤، وابن أبي شيبة فى المصنف، ٥ / ٢١١، الرقم: ٢٥٢٣، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٣ / ٢٧٠، الرقم: ٤٠٠٣۔

الحديث رقم ٦: أخرجه أحمد بن حنبل فى المسند، ١ / ٤١٥، الرقم: ٣٩٣٨، وابن حبان فى الصحيح، ٢ / ٢١٥، الرقم: ٤٦٩، والطبرانى فى المعجم الكبير، ١٠ / ٢٣١، الرقم: ١٠٥٦٢، وأبو يعلى فى المسند، ٨ / ٤٦٧، الرقم: ٥٠٥٣، والبيهقى فى شعب الإيمان، ٧ / ٣٥٣، الرقم: ٢٦٩٧۔

(नेक मजालिस में) लोगों के क़रीब है।''

٨٨١ / ٧۔ عَنْ أَبِي ذَرٍّ رضي الله عنه قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: تَبَسُّمُکَ فِي وَجْهِ أَخِيْکَ لَکَ صَدَقَةٌ.

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ مُطَوَّلًا وَحَسَّنَهُ، وَابْنُ حِبَّانَ وَالطَّبَرَانِيُّ وَالْبَزَّارُ.

''हज़रत अबू ज़र रضي الله عنه से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया: तुम्हारा अपने मुसलमान भाई के लिए मुस्कुराना भी सदक़ा है।''

٨٨٢ / ٨۔ عَنْ عَائِشَةَ رضي الله عنها قَالَتْ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّ اللهَ يُحِبُّ الرِّفْقَ فِي الْأَمْرِ كُلِّهِ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत आइशा رضی اللہ عنہا रिवायत करती हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : यक़ीनन अल्लाह तआला हर एक मामले में नरमी बरतने को पसन्द करता है।''

الحديث رقم ٧: أخرجه الترمذي فى السنن، كتاب: البر والصلة عن رسول الله ﷺ، باب: مَا جَاء فى صَنَائِعِ الْمَعْرُوفِ، ٤ / ٣٣٩، الرقم: ١٩٥٦، وابن حبان فى الصحيح، ٢ / ٢٢١، الرقم: ٤٧٤، والطبرانى فى المعجم الأوسط، ٨ / ١٨٣، الرقم: ٨٣٤٢، والبزار فى المسند، ٩ / ٤٥٢، الرقم: ٤٠٧٠، والديلمى فى مسند الفردوس، ٢ / ٧٠، الرقم: ٢٣٩٦، وابن عبد البر فى التمهيد، ٢٢ / ١٢، والمروزى فى تعظيم قدر الصلاة، ٢ / ٨١٧، الرقم: ٨١٣، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٣ / ٢٨٢، الرقم: ٤٠٧٤۔

الحديث رقم ٨: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: الأدب، باب: الرِّفْقِ فِى الْأَمْرِ كُلِّهِ، ٥ / ٢٢٤٢، الرقم: ٥٦٧٨، وفى كتاب: الاستئذان، باب: كيفَ الرّدُّ على أهل الذِّمّةِ بالسّلامِ، ٥ / ٢٣٠٨، الرقم: ٥٩٠١، وفى كتاب: الدعوات، باب: الدُّعَاءِ عَلَى الْمُشْرِكِيْنَ، ٥ / ٢٣٤٩، الرقم: ٦٠٣٢، ومسلم فى الصحيح، كتاب: السلام، باب: النهي عن ابتداء أهل الكتاب بالسلام وكيف يرد عليهم، ٤ / ١٧٠٦، الرقم: ٢١٦٥، والترمذي فى السنن، كتاب: الاستئذان عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء فى التسليم على أهل الذمة، ٥ / ٦٠، الرقم: ٢٧٠١، والنسائى فى السنن الكبرى، ٦ / ١٠٢، الرقم: ١٠٢١٣، وعبد الرزاق فى المصنف، ٦ / ١١، الرقم: ٩٨٣٩، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٦ / ٣٧، الرقم: ٢٤١٣٦، والبخارى فى الأدب المفرد، ١ / ١٦٤، الرقم: ٤٦٢، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٣ / ٢٧٨، الرقم: ٤٠٤٧۔

٨٨٣/ ٩۔ عَنْ عَائِشَةَ رضي الله عنها قَالَتْ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: يَا عَائِشَةُ! إِنَّ اللهَ رَفِيْقٌ يُحِبُّ الرِّفْقَ فِي الْأَمْرِ كُلِّهِ.

وفي رواية: إِنَّ اللهَ رَفِيْقٌ وَ يُحِبُّ الرِّفْقَ وَيُعْطِي عَلَى الرِّفْقِ مَا لَا يُعْطِي عَلَى الْعُنُفِ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत आइशा رضی الله عنہا रिवायत करती हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः ऐ आइशा! बेशक अल्लाह तआला नरमी से सुलूक करने वाला है और हर एक मामले में नरमी को पसन्द करता है और एक रिवायत में है कि फरमायाः अल्लाह तआला नरमी करने वाला है और नरमी को पसन्द करता है और नरमी पर इतना अता फरमाता है कि उतना सख़्ती पर भी अता नहीं करता।''

٨٨٤/ ١٠۔ عَنْ جَرِيْرٍ ﷺ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَنْ يُحْرَمِ الرِّفْقَ يُحْرَمِ الْخَيْرَ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَأَبُوْدَاوُدَ وَابْنُ مَاجَه.

''हज़रत जरीर ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जो नरमी से महरूम हुआ वो ख़ैर से महरूम हो गया।''

الحديث رقم ٩: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: استتابة المرتدين والمعاندين وقتالهم، باب: إِذَا عرَّضَ الذِّمِّيُ وَ غَيْرُهُ بِسَبِّ النَّبِيِّ ﷺ وَ لَمْ يُصَرِّحْ نحو قوله: السّام عليكم، ٦/ ٢٥٣٩، الرقم: ٦٥٢٨، ومسلم في الصحيح، كتاب: البر والصلة والآداب، باب: فضل الرفق، ٤/ ٢٠٠٣، الرقم: ٢٥٩٣، وأبوداود في السنن، كتاب: الأدب، باب: في الرفق، ٤/ ٢٥٤، الرقم: ٤٨٠٧، وابن ماجه في السنن، كتاب: الأدب، باب: الرفق، ٢/ ١٢١٦، الرقم: ٣٦٨٨، ومالك في الموطأ، ٢/ ٩٧٩، الرقم: ١٧٦٧، وأحمد بن حنبل في المسند، ١/ ١١٢، الرقم: ٩٠٢۔

الحديث رقم ١٠: أخرجه مسلم في الصحيح، كتاب: البر والصلة والآداب، باب: فضل الرفق، ٤/ ٢٠٠٣، الرقم: ٢٥٩٢، وأبو داود في السنن، كتاب: الأدب، باب: في الرفق، ٤/ ٢٥٥، الرقم: ٤٨٠٩، وابن ماجه في السنن، كتاب: الأدب، باب: الرفق، ٢/ ١٢١٦، الرقم: ٣٦٨٧، وأحمد بن حنبل في المسند، ٤/ ٣٦٢، وابن حبان في الصحيح، ٢/ ٣٠٨، الرقم: ٥٩٨۔

فَصْلٌ فِي ثَوَابِ مَنْ قَضَى حَوَائِجَ النَّاسِ

मुश्किलात में लोगों के काम आने पर अज्र का बयान

٨٨٥ / ١١. عَنِ ابْنِ عُمَرَ رضي الله عنهما أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: الْمُسْلِمُ أَخُو الْمُسْلِمِ لَا يَظْلِمُهُ وَلَا يُسْلِمُهُ مَنْ كَانَ فِي حَاجَةِ أَخِيْهِ كَانَ اللهُ فِي حَاجَتِهِ وَمَنْ فَرَّجَ عَنْ مُسْلِمٍ كُرْبَةً فَرَّجَ اللهُ عَنْهُ بِهَا كُرْبَةً مِنْ كُرُبَاتِ يَوْمِ الْقِيَامَةِ وَمَنْ سَتَرَ مُسْلِمًا سَتَرَهُ اللهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर رضی اللہ عنہما से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः एक मुसलमान दूसरे मुसलमान का भाई है न वो उस पर ज़ुल्म करता है न उसे बेयारो मददगार छोड़ता है। जो शख़्स अपने किसी (मुसलमान) भाई की हाजत रवाई करता है अल्लाह तआला उसकी हाजत रवाई फरमाता है और जो शख़्स किसी मुसलमान की दुन्यावी मुश्किल हल करता है अल्लाह तआला उसकी क़यामत की मुश्किलात में से कोई मुश्किल हल फरमाएगा और जो शख़्स किसी मुसलमान की पर्दा पोशी करता है अल्लाह तआला क़यामत के दिन उसकी सतर पोशी करेगा।''

٨٨٦ / ١٢. عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضي الله عنه عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَنْ نَفَّسَ عَنْ

الحديث رقم ١١: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: المظالم، باب: لا يظلم المسلم المسلم ولا سلمه، ٢/ ٨٦٢، الرقم: ٢٣١٠، ومسلم فى الصحيح، كتاب: البر والصلة والآداب، باب: تحريم الظلم، ٤/ ١٩٩٦، الرقم: ٢٥٨٠، والترمذى فى السنن، كتاب: الحدود عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء فى الستر على المسلم، ٤/ ٣٤، الرقم: ١٤٢٦، وأبوداود فى السنن، كتاب: الأدب، باب: المؤاخاة، ٤/ ٢٧٣، الرقم: ٤٨٩٣، والنسائى فى السنن الكبرى، ٤/ ٣٠٨، الرقم: ٧٢٨٦، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٢/ ٩١، الرقم: ٥٦٤٦، وابن حبان فى الصحيح، ٢/ ٢٩١، الرقم: ٥٣٣، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٦/ ٩٤، الرقم: ١١٢٩٢.

الحديث رقم ١٢: أخرجه مسلم فى الصحيح، كتاب: الذكر والدعاء والاستغفار، باب: فضل الاجتماع على تلاوة القرآن، ٤/ ٢٠٧٤، الرقم: ٢٦٩٩، والترمذى فى السنن، كتاب: الحدود عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء في الستر على المسلم، ٤/ ٣٤، الرقم: ١٤٢٥، ١٩٣٠، ٢٩٤٥، وأبو داود فى السنن، كتاب: الأدب، باب: ←

مُؤْمِنٍ كُرْبَةً مِنْ كُرَبِ الدُّنْيَا نَفَّسَ اللهُ عَنْهُ كُرْبَةً مِنْ كُرَبِ يَوْمِ الْقِيَامَةِ وَمَنْ يَسَّرَ عَلَى مُعْسِرٍ يَسَّرَ اللهُ عَلَيْهِ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَمَنْ سَتَرَ مُسْلِمًا سَتَرَهُ اللهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ، وَاللهُ فِي عَوْنِ الْعَبْدِ مَا كَانَ الْعَبْدُ فِي عَوْنِ أَخِيْهِ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَالتِّرْمِذِيُّ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जो शख़्स किसी मुसलमान की कोई दुन्यावी तकलीफ़ दूर करेगा अल्लाह तआला उसकी क़यामत की मुश्किलात में से कोई मुश्किल हल करेगा। जो शख़्स दुनिया में किसी तंग दस्त के लिए आसानी पैदा करेगा अल्लाह तआला दुनिया और आख़िरत में उसके लिए आसानी फरमाएगा और जो शख़्स दुनिया में किसी मुसलमान की पर्दा पोशी करेगा अल्लाह तआला दुनिया और आख़िरत में उसकी पर्दा पोशी फरमाएगा। अल्लाह तआला (उस वक़्त तक) अपने बन्दे की मदद करता रहता है जब तक बन्दा अपने भाई की मदद में लगा रहता है।''

٨٨٧ / ١٣ـ عَنْ زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ ﷺ عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ قَالَ: لَا يَزَالُ اللهُ فِي حَاجَةِ الْعَبْدِ مَا دَامَ فِي حَاجَةِ أَخِيْهِ. رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ بِإِسْنَادٍ جَيِّدٍ.

''हज़रत ज़ैद बिन साबित ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः अल्लाह तआला उस वक़्त तक अपने बन्दे के काम में (मदद करता) रहता है जब तक बन्दा अपने (मुसलमान) भाई के काम में (मदद करता) रहता है।''

.... في المعونة للمسلم، ٤ / ٢٨٧، الرقم: ٤٩٤٦، والنسائى فى السنن الكبرى، ٤ / ٣٠٨، الرقم: ٧٢٨٤ـ٧٢٨٦، وابن ماجه فى السنن، المقدمة، باب: فضل العلماء والحث على طلب العلم، ١ / ٨٢، الرقم: ٢٢٥، والحاكم فى المستدرك، ٤ / ٤٢٥، الرقم: ٨١٥٩، وَقَالَ الْحَاكِمُ: صَحِيْحُ الإِسْنَادِ.

الحديث رقم ١٣: أخرجه الطبرانى فى المعجم الكبير، ٥ / ١١٨، الرقم: ٤٨٠١ـ ٤٨٠٢، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٣ / ٢٦٤، الرقم: ٣٩٧٤، وقال المنذرى: رواته ثقات، والديلمى فى مسند الفردوس، ٥ / ٩١، الرقم: ٧٥٦٠، والهيثمى فى مجمع الزوائد، ٨ / ١٩٣.

٨٨٨ / ١٤۔ عَنْ عَبْدِ اللهِ بنِ عُمَرَ رضي الله عنهما قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّ لِلّٰهِ خَلْقًا خَلَقَهُمْ لِحَوَائِجِ النَّاسِ يَفْزَعُ النَّاسُ إِلَيْهِمْ فِي حَوَائِجِهِمْ أُوْلَئِکَ الْآمِنُوْنَ مِنْ عَذَابِ اللهِ. رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर رضی اللہ عنہما से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः अल्लाह तआला की एक ऐसी मख़्लूक़ है जिन्हें उसने लोगों की हाजत रवाई के लिए पैदा फरमाया है लोग अपनी हाजात (के सिलसिले) में दौड़े–दौड़े उनके पास आते है (यह वो लोग हैं जो) अल्लाह तआला के अ़ज़ाब से महफ़ूज रहेंगे।''

٨٨٩ / ١٥۔ عَنِ ابْنِ عُمَرَ وَأَبِي هُرَيْرَةَ رضي الله عنهم قَالَا: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ مَشَى فِي حَاجَةِ أَخِيْهِ الْمُسْلِمِ حَتَّى يُتِمَّهَا لَهُ أَظَلَّهُ اللهُ عزوجل بِخَمْسَةِ آلَافٍ. وفي رواية: بِخَمْسَةٍ وَسَبْعِيْنَ أَلْفَ مَلَکٍ يَدْعُوْنَ وَيُصَلُّوْنَ عَلَيْهِ إِنْ کَانَ صَبَاحًا حَتَّى يُمْسِي وَإِن کَانَ مَسَاءً حَتَّى يُصْبِحَ وَلَا يَرْفَعُ قَدَمًا إِلَّا کُتِبَتْ لَهُ بِهَا حَسَنَةٌ وَلَا يَضَعُ قَدَمًا إِلَّا حَطَّ اللهُ عَنْهُ بِهَا خَطِيْئَةً.

رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ وَالطَّبَرَانِيُّ.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर और हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہم दोनों रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जो शख़्स अपने (किसी मुसलमान) भाई के काम के

الحديث رقم ١٤: أخرجه الطبراني في المعجم الكبير، ٢ / ٣٥٨، الرقم: ١٣٣٣٤، والقضاعي في مسند الشهاب، ٢ / ١١٧، الرقم: ١٠٠٧-١٠٠٨، والمنذري في الترغيب والترهيب، ٣ / ٢٦٢، الرقم: ٣٩٦٦، وقال: ورواه أبو الشيخ ابن حبان في كتاب الثواب وابن أبي الدنيا في كتاب اصطناع المعروف، والهيثمي في مجمع الزوائد، ٨ / ١٩٢۔

الحديث رقم ١٥: أخرجه البيهقي في شعب الإيمان، ٦ / ١١٩، الرقم: ٧٦٦٩، والطبراني في المعجم الأوسط، ٤ / ٣٤٧، الرقم: ٤٣٩٦، والمنذري في الترغيب والترهيب، ٤ / ١٦٥، الرقم: ٥٢٧٤، ٣ / ٢٦٣، الرقم: ٣٩٧٣ ورواه ابن حبان في كتاب الثواب، والهيثمي في مجمع لزوائد، ٢ / ٢٩٩۔

सिलसिले में चल पड़ा यहाँ तक कि उसे पूरा कर दे अल्लाह ﷻ उस पर पाँच हजार, और एक रिवायत में है 75 हजार फ़रिश्तों का साया फरमा देता है वो उसके लिए दिन हो तो रात होने तक और रात हो तो दिन होने तक दुआएँ करते रहते हैं और उस पर रहमत भेजते रहते हैं और उसके उठने वाले हर क़दम के बदले उसके लिए नेकी लिख दी जाती है और उसके (अपने मुसलमान भाई की मुश्किल को हल करने के लिए) उठने वाले हर क़दम के बदले अल्लाह तआला उसका एक गुनाह मिटा देता है।''

فَصْلٌ فِي بِرِّ الْوَالِدَيْنِ وَصِلَةِ الْأَرْحَامِ

वालिदैन के साथ नेक सुलूक और सिला रहमी का बयान

٨٩٠/١٦. عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُودٍ رضي الله عنه قَالَ: سَأَلْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ أَيُّ الْعَمَلِ أَحَبُّ إِلَى اللهِ؟ قَالَ: الصَّلَاةُ عَلَى وَقْتِهَا قَالَ: ثُمَّ أَيٌّ؟ قَالَ: بِرُّ الْوَالِدَيْنِ قَالَ: ثُمَّ أَيٌّ؟ قَالَ: اَلْجِهَادُ فِي سَبِيْلِ اللهِ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद رضي الله عنه से रिवायत है कि मैंने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ से दरयाफ़्त कियाः अल्लाह तआला को कौनसा अ़मल सबसे ज़्यादा पसन्द है? आप ﷺ ने फरमायाः वक़्त पर नमाज़ पढ़ना। मैंने अ़र्ज़ कियाः फिर कौनसा? आप ﷺ ने फरमायाः वालिदैन से हुस्ने सुलूक (अच्छा सुलूक) करना। मैंने अ़र्ज़ कियाः फिर कौनसा? आप ﷺ ने फरमाया : अल्लाह तआला की राह में जिहाद करना।''

٨٩١/١٧. عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضي الله عنه قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى رَسُوْلِ اللهِ ﷺ فَقَالَ: يَارَسُوْلَ اللهِ مَنْ أَحَقُّ النَّاسِ بِحُسْنِ صَحَابَتِي؟ قَالَ: أُمُّکَ، قَالَ:

الحديث رقم ١٦: أخرجه البخاری فی الصحيح، کتاب: الأدب، باب: البر والصلة، ٥/٢٢٢٧، الرقم: ٥٦٢٥، وفی کتاب: مواقيت الصلاة، باب: فضل الصلاة لوقتها، ١/١٩٧، الرقم: ٥٠٤، ومسلم فی الصحيح، کتاب: الإيمان، باب: بيان کون الإيمان بالله تعالی أفضل الأعمال، ١/٨٩، الرقم: ٨٥، والنسائی فی السنن، کتاب: المواقيت، باب: فضل الصلاة لمواقيتها، ١/٢٩٢، الرقم: ٦١٠، وأحمد بن حنبل فی المسند، ١/٤٠٩، الرقم: ٣٨٩٠، والبيهقی فی السنن الکبری، ٢/٢١٥، الرقم: ٢٩٨٤، والطبرانی فی المعجم الکبير، ١٠/١٩، الرقم: ٩٨٠٥.

الحديث رقم ١٧: أخرجه البخاری فی الصحيح، کتاب: الأدب، باب: من أحق الناس بحسن الصحبة، ٥/٢٢٢٧، الرقم: ٥٦٢٦، ومسلم فی الصحيح، کتاب: البر والصلة والآداب، باب: بر الوالدين وأنهما أحق به، ٤/١٩٧٤، الرقم: ٢٥٤٨، وابن ماجه فی السنن، کتاب: الأدب، باب: بر الوالدين، ٢/١٢٠٧، الرقم: ٦٠٩٤، وأحمد بن حنبل فی المسند، ٥/٥، وابن حبان فی الصحيح، ٢/١٧٥، الرقم: ٤٣٣، وأبو يعلی فی المسند، ١٠/٤٨٢، الرقم: ٦٠٩٤.

ثُمَّ مَنْ؟ قَالَ: ثُمَّ أُمُّکَ قَالَ: ثُمَّ مَنْ؟ قَالَ: ثُمَّ أُمُّکَ قَالَ: ثُمَّ مَنْ؟ قَالَ: ثُمَّ أَبُوْکَ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से मरवी है कि एक आदमी हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की बारगाहे अक़दस में हाजिर हुआ और अर्ज़ किया: या रसूलल्लाह! लोगों में से मेरे हुस्ने सुलूक का सबसे ज़्यादा हक़दार कौन है? आप ﷺ ने फरमाया: तुम्हारी वालिदा। उन्होंने अर्ज़ किया: फिर कौन है? आप ﷺ ने फरमाया : तुम्हारी वालिदा। उन्होंने अर्ज़ किया फिर कौन है? आप ﷺ ने फरमाया: फिर तुम्हारी वालिदा है। उन्होंने अर्ज़ किया: फिर कौन है? आप ﷺ ने फरमाया: फिर तुम्हारा वालिद है।''

٨٩٢ / ١٨۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: رَغِمَ أَنْفٌ، ثُمَّ رَغِمَ أَنْفٌ، ثُمَّ رَغِمَ أَنْفٌ. قِيْلَ مَنْ يَا رَسُوْلَ اللهِ؟ قَالَ: مَنْ أَدْرَکَ أَبَوَيْهِ عِنْدَ الْكِبَرِ، أَحَدَهُمَا أَوْ كِلَيْهِمَا، فَلَمْ يَدْخُلِ الْجَنَّةَ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया: उसकी नाक ख़ाक आलूद हो, फिर उसकी नाक ख़ाक आलूद हो फिर उसकी नाक ख़ाक आलूद हो। पूछा गया: या रसूलल्लाह! वो कौन शख़्स है? फरमाया: जिसने अपने माँ–बाप में से किसी एक को या दोनों को बुढ़ापे की हालत में पाया और फिर (उनकी ख़िदमत करके) जन्नत में दाख़िल नहीं हुआ।''

٨٩٣ / ١٩۔ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو رضي الله عنهما قَالَ: أَقْبَلَ رَجُلٌ إِلَى رَسُوْلِ اللهِ ﷺ فَقَالَ: أُبَايِعُکَ عَلَى الْهِجْرَةِ وَالْجِهَادِ أَبْتَغِي الْأَجْرَ مِنَ

الحديث رقم ١٨: أخرجه مسلم فى الصحيح، كتاب: البر والصلة والآداب، باب: رغم أنف من أدرك أبويه أو أحدهما عند الكبر فلم يدخل الجنة، ٤ / ١٩٧٨، الرقم: ٢٥٥١، والديلمى فى مسند الفردوس، ٢ / ٢٧٦، الرقم: ٣٢٨٠، والبيهقى فى شعب الإيمان، ٦ / ١٩٥، الرقم: ٧٨٨٤.

الحديث رقم ١٩ / ٢٠: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: الأدب، باب: لا يجاهد إلا باذن الأبوين، ٥ / ٢٢٢٧، الرقم: ٥٦٢٧، ومسلم فى الصحيح، كتاب: البر والصلة والآداب، باب: بر الوالدين وأنهما أحق به، ٤ / ١٩٧٥، الرقم: ٢٥٤٩، ←

اللهِ، قَالَ: فَهَلْ مِنْ وَالِدَيْکَ أَحَدٌ حَيٌّ؟ قَالَ: نَعَمْ، بَلْ كِلَاهُمَا حَيٌّ قَالَ: فَتَبْتَغِي الْأَجْرَ مِنَ اللهِ؟ قَالَ: نَعَمْ قَالَ: فَارْجِعْ إِلَى وَالِدَيْکَ فَأَحْسِنْ صُحْبَتَهُمَا. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

٨٩٤ / ٢٠۔ وفي رواية لهما: جَاءَ رَجُلٌ فَاسْتَأْذَنَهُ فِي الْجِهَادِ فَقَالَ: أَحَيٌّ وَالِدَاکَ؟ قَالَ: نَعَمْ، قَالَ: فَفِيهِمَا فَجَاهِدْ.

''हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर رضی اللہ عنہما से रिवायत है कि एक शख़्स ने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की ख़िदमत में हाजिर होकर अर्ज़ कियाः (या रसूलल्लाह!) मैं अज्रो सवाब के लिए आपसे जिहाद और हिजरत की बैअत करना चाहता हूँ। आप ﷺ ने फरमाया : क्या तुम्हारे वालिदैन में से कोई ज़िन्दा है? उसने अर्ज़ कियाः हाँ बल्कि दोनों जिन्दा हैं। आप ﷺ ने फरमाया : क्या तू (वाक़ई) अल्लाह तआला से अज्रो सवाब चाहता है ? उसने अर्ज़ किया : जी हाँ। आप ﷺ ने फरमाया : अपने वालिदैन के पास जा और उनसे अच्छा सुलूक कर।''

''और बुख़ारी व मुस्लिम की रिवायत में है कि एक शख़्स ने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की ख़िदमते अक़दस में हाजिर होकर जिहाद पर जाने की इजाज़त चाही। आप ﷺ ने फरमाया : तेरे माँ–बाप ज़िन्दा है? उसने अर्ज़ किया : जी हाँ। आप ﷺ ने फरमाया : तू उनकी ख़िदमत में ही जिहाद कर।''

٨٩٥ / ٢١۔ عَنْ أَبِي أُمَامَةَ رضي الله عنه أَنَّ رَجُلًا قَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ! مَا حَقُّ الْوَالِدَيْنِ عَلَى وَلَدِهِمَا؟ قَالَ: هُمَا جَنَّتُکَ وَنَارُکَ. رَوَاهُ ابْنُ مَاجَه.

.... وأبوداود فی السنن، كتاب: الجهاد، باب: فی الرجل يغزو وأبواه كارهان، ١٧/٣، الرقم: ٢٥٢٨۔٢٥٢٩، والنسائی فی السنن، كتاب: البيعة، باب: البيعة علی الهجرة، ١٤٣/٧، الرقم: ٤١٦٣۔

الحديث رقم ٢١: أخرجه ابن ماجه فی السنن، كتاب: الأدب، باب: بر الوالدين، ١٢٠٨/٢، الرقم: ٣٦٦٢، والمنذری فی الترغيب والترهيب، ٢١٦/٣، الرقم: ٣٧٤٩۔

''हज़रत अबू उमामा ﷺ से रिवायत है कि एक आदमी आया और उसने अ़र्ज़ किया: या रसूलल्लाह! वालिदैन का अपनी औलाद पर कितना हक़ है ? आप ﷺ ने फरमाया: वो दोनों तेरी जन्नत (भी) हैं और दोज़ख़ (भी)। (यानी उनकी ख़िदमत करके जन्नत हासिल कर लो या नाफरमानी कर के दोज़ख़ के मुस्तहिक़ हो जाओ।)''

٨٩٦ / ٢٢۔ عَنْ عَائِشَةَ رضي الله عنها قَالَتْ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: الرَّحِمُ مُعَلَّقَةٌ بِالْعَرْشِ تَقُوْلُ: مَنْ وَصَلَنِي وَصَلَهُ اللهُ، وَمَنْ قَطَعَنِي قَطَعَهُ اللهُ.

رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَابْنُ أَبِي شَيْبَةَ.

''हज़रत आइशा رضی اللہ عنہا रिवायत करती हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया: रहम अ़र्श से मुअ़ल्लक़ (वाबस्ता) है और यह कह रहा है जिसने मुझे मिलाया अल्लाह तआ़ला उसे मिलाए, और जिसने मुझे काटा अल्लाह तआ़ला उसे काटे।''

٨٩٧ / ٢٣۔ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رضي الله عنهما قَالَ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: أَبَرُّ الْبِرِّ أَنْ يَصِلَ الرَّجُلُ وُدَّ أَبِيهِ.

وفي رواية: إِنَّ مِنْ أَبَرِّ الْبِرِّ صِلَةَ الرَّجُلِ أَهْلَ وُدِّ أَبِيهِ بَعدَ أَنْ يُوَلِّيَ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर رضی اللہ عنہما से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम

الحديث رقم ٢٢: أخرجه مسلم فى الصحيح، كتاب: البر والصلة والآداب، باب: صلة الرحم وتحريم وقطيعتها، ٤ / ١٩٨١، الرقم: ٢٥٥٥، وابن أبى شيبة فى المصنف، ٥ / ٢١٧، الرقم: ٢٥٣٨٨، وأبو يعلى فى المسند، ٧ / ٤٢٣، الرقم: ٤٤٤٦، والبيهقى فى شعب الإيمان، ٦ / ٢١٥، الرقم: ٧٩٣٥، والديلمى فى مسند الفردوس، ٢ / ٢٨٦، الرقم: ٣٣٢٢.

الحديث رقم ٢٣: أخرجه مسلم فى الصحيح، كتاب: البر والصلة والآداب، باب: فضل صلة أصدقاء الأب والأم ونحوهما، ٤ / ١٩٧٩، الرقم: ٢٥٥٢، والطبرانى فى المعجم الأوسط، ٨ / ٧٢، الرقم: ٧٩٩٧، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٤ / ١٨٠، الرقم: ٧٥٥٧.

ﷺ ने फरमायाः सबसे बड़ी नेकी यह है कि कोई शख़्स अपने वालिद के दोस्तों से नेकी करे।

और एक रिवायत में है कि कोई शख़्स अपने बाप के वफ़ात पा जाने के बाद उसके दोस्तों से नेकी करे।''

٨٩٨/٢٤۔ عَنْ جَاهِمَةَ ﷺ قَالَ: أَتَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ أَسْتَشِيْرُهُ فِي الْجِهَادِ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: أَلَکَ وَالِدَانِ؟ قُلْتُ: نَعَمْ قَالَ: إِلْزَمْهُمَا فَإِنَّ الْجَنَّةَ تَحْتَ أَرْجُلِهِمَا. رَوَاهُ النَّسَائِيُّ وَالطَّبَرَانِيُّ.

''हज़रत जाहिमा ﷺ रिवायत करते हैं कि मैं जिहाद का मश्विरा लेने के लिए हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः क्या तुम्हारे माँ–बाप ज़िन्दा हैं ? मैंने अ़र्ज़ किया : जी हाँ (ज़िन्दा है) आप ﷺ ने फरमायाः उन्हीं के साथ रहो कि जन्नत उनके पाँव तले है।''

الحديث رقم ٢٤: أخرجه النسائى فى السنن، كتاب: الجهاد، باب: الرخصة فى التخلف لمن له والدة، ٦/١١، الرقم: ٣١٠٤، والطبرانى فى المعجم الكبير، ٢/٢٨٩، الرقم: ٢٢٠٢، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٣/٢١٦، الرقم: ٣٧٥٠، والهيثمى فى مجمع الزوائد، ٨/١٣٨۔ وَقَالَ: وَرِجَالُهُ الثِّقَاتُ.

فَصْلٌ فِي حُقُوْقِ الْأَكَابِرِ وَالْأَصَاغِرِ

बड़ों और छोटों के हुक़ूक़ का बयान

٨٩٩ / ٢٥۔ عَنْ أُمِّ الْمُؤْمِنِيْنَ عَائِشَةَ رضي الله عنها قَالَتْ: مَا رَأَيْتُ أَحَدًا كَانَ أَشْبَهَ سَمْتًا وَدَلًّا وَهَدْيًا (وفي رواية:) حَدِيْثًا وَكَلَامًا بِرَسُوْلِ اللهِ ﷺ مِنْ فَاطِمَةَ رضي الله عنها، كَانَتْ إِذَا دَخَلَتْ عَلَيْهِ قَامَ إِلَيْهَا فَأَخَذَ بِيَدِهَا فَقَبَّلَهَا وَأَجْلَسَهَا فِي مَجْلِسِهِ، وَكَانَ إِذَا دَخَلَ عَلَيْهَا قَامَتْ إِلَيْهِ فَأَخَذَتْ بِيَدِهِ فَقَبَّلَتْهُ وَأَجْلَسَتْهُ فِي مَجْلِسِهَا.

رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ وَالْبُخَارِيُّ فِي الْأَدَبِ وَالنَّسَائِيُّ.

''उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा رضی اللہ عنہا फरमाती हैं कि मैंने चाल ढाल, शक्लो शबाहत और बातचीत में सय्यिदा फ़ातिमा سلام اللہ علیہا से बढ़ कर किसी को हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ से मुशाबह नहीं देखा और जब सय्यिदा फ़ातिमा سلام اللہ علیہا आप ﷺ की बारगाह में हाज़िर होतीं तो आप ﷺ उनके इस्तिक़बाल के लिए खड़े हो जाते, उनका हाथ पकड़ कर बोसा देते और उन्हें अपनी जगह पर बैठाते और जब नबी–ए–अकरम ﷺ उनके पास तशरीफ़ ले जाते तो वो आप ﷺ के लिए खड़ी हो जातीं, आप ﷺ के दस्ते अक़दस को पकड़ कर बोसा देतीं और अपनी जगह बिठातीं।''

٩٠٠ / ٢٦۔ عَنِ الشَّعْبِيِّ رضي الله عنه أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ تَلَقَّى جَعْفَرَ بْنَ أَبِي

الحديث رقم ٢٥: أخرجه أبوداود فى السنن، كتاب: الأدب، باب: ماجاء فى القيام، ٤ / ٣٥٥، الرقم: ٥٢١٧، والبخارى فى الأدب المفرد، ١ / ٣٣٧، الرقم: ٩٧١، والنسائى فى السنن الكبرى، ٥ / ٩٦، الرقم: ٨٣٦٩۔

الحديث رقم ٢٦: أخرجه أبوداود فى السنن، كتاب: الأدب، باب: فى قبلة ما بين العينين، ٤ / ٣٥٦، الرقم: ٥٢٢٠، وابن أبى شيبة في المصنف، ٦ / ٥٤١، الرقم: ٣٣٦٨٢، ٧ / ٣٥١، الرقم: ٣٦٦٤٣، والمقرى فى تقبيل اليد، ١ / ٨١، الرقم: ٢١۔

طَالِبٍ رضی الله عنه فَالْتَزَمَهُ وَقَبَّلَ مَا بَيْنَ عَيْنَيْهِ. رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ وَابْنُ أَبِي شَيْبَةَ.

''हज़रत शअ़बी ﷺ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ हज़रत जाफ़र बिन अबू तालिब ﷺ से (हिजरत के बाद) मिले तो उनसे मुआनक़ा फरमाया और आप ﷺ ने उनकी दोनों आँखों के दरमियान बोसा दिया।''

٩٠١ / ٢٧. عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ رَزِيْنَ، قَالَ: مَرَرْنَا بِالرَّبْذَةِ، فَقِيْلَ لَنَا: هَاهُنَا سَلَمَةُ بْنُ الْأَكْوَعِ. فَأَتَيْتُهُ فَسَلَّمْنَا عَلَيْهِ. فَأَخْرَجَ يَدَيْهِ، فَقَالَ: بَايَعْتُ بِهَاتَيْنِ نَبِيَّ اللهِ ﷺ، فَأَخْرَجَ كَفًّا لَهُ ضَخْمَةً كَأَنَّهَا كَفُّ بَعِيْرٍ، فَقُمْنَا إِلَيْهَا فَقَبَّلْنَاهَا. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ فِي الْأَدَبِ.

''हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन रज़ीन ﷺ बयान करते हैं कि एक बार हम रब्ज़ा (जगह का नाम) गए तो हमें बताया गया कि यहाँ (सहाबिए रसूल) हज़रत सलमा बिन अकवअ़ ﷺ रहते हैं। हम उनकी ख़िदमत में (ज़ियारत के लिए) गए और उन्हें सलाम किया। उन्होंने अपने दोनों हाथ कपड़ों से बाहर किए और फरमायाः मैंने इन हाथों से रसूलुल्लाह ﷺ की बैअ़त की है उनका हाथ बड़ा और ज़ख़ीम था जैसे ऊँट के हाथ हों, हम लोग उनके एहतिराम में खड़े हो गए और हमने उनके हाथों का बोसा लिया।''

٩٠٢ / ٢٨. عَنِ ابْنِ جُدْعَانَ قَالَ ثَابِتٌ لِأَنَسٍ رضی الله عنه: أَمَسَسْتَ النَّبِيَّ ﷺ بِيَدِكَ؟ قَالَ: نَعَمْ، فَقَبَّلَهَا. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ فِي الْأَدَبِ.

''हज़रत इब्ने जुदआन ﷺ से रिवायत है कि हज़रत साबित ने हज़रत अनस ﷺ से अ़र्ज़ कियाः क्या आपने अपने इन हाथों से रसूलुल्लाह ﷺ को मस किया था? उन्होंने फरमायाः हाँ, तो इस पर उन्होंने उन (यानी हज़रत अनस ﷺ) के हाथों को चूम लिया।''

الحديث رقم ٢٧: أخرجه البخاري في الأدب المفرد، ١ / ٣٣٨، الرقم: ٩٧٣.
الحديث رقم ٢٨: أخرجه البخاري في الأدب المفرد، ١ / ٣٣٨، الرقم: ٩٧٤، والمقري في تقبيل اليد، ١ / ٧٩، الرقم: ١٩.

٩٠٣ / ٢٩۔ عَنْ صُهَيْبٍ ﷺ مَوْلَى الْعَبَّاسِ ﷺ قَالَ: رَأَيْتُ عَلِيًّا ﷺ يُقَبِّلُ يَدَ الْعَبَّاسِ وَرِجْلَيْهِ وَيَقُوْلُ: يَا عَمِّ ارْضَ عَنِّي.

رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ وَالذَّهَبِيُّ وَاللَّفْظُ لَهُ.

''हज़रत सुहैब ﷺ जो कि हज़रत अ़ब्बास ﷺ के गुलाम थे, रिवायत करते हैं कि मैंने हज़रत अ़ली ﷺ को हज़रत अ़ब्बास ﷺ के हाथ और पाँव चूमते हुए देखा और साथ–साथ कहते जाते थेः ऐ चचा ! मुझसे राज़ी हो जाएँ।''

٩٠٤ / ٣٠۔ عَنْ إِيَاسِ بْنِ دَغْفَلٍ ﷺ قَالَ: رَأَيْتُ أَبَا نَضْرَةَ قَبَّلَ خَدَّ الْحَسَنِ بْنِ عَلِيٍّ عليهما السلام. رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ وَابْنُ أَبِي شَيْبَةَ.

''हज़रत इयास बिन दग़फ़ल ﷺ रिवायत करते हैं कि मैंने हज़रत अबू नज़रा को देखा कि उन्होंने हज़रत हसन बिन अ़ली عليهما السلام के रुख़सारे मुबारक पर बोसा दिया।''

٩٠٥ / ٣١۔ عَنْ عُمَرَ ﷺ أَنَّهُ كُلَّمَا قَدِمَ الشَّامَ اسْتَقْبَلَهُ أَبُوْعُبَيْدَةَ بْنُ الجَرَّاحِ ﷺ، فَقَبَّلَ يَدَهُ. رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ.

''हज़रत उमर ﷺ बयान करते हैं कि वो जब भी शाम आते तो हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह ﷺ उनका इस्तिक़बाल करते और उनकी दस्त बोसी करते।''

٩٠٦ / ٣٢۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ قَالَ: قَبَّلَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ الْحَسَنَ بْنَ

الحديث رقم ٢٩: أخرجه البخاري في الأدب المفرد، ١ / ٣٣٩، الرقم: ٩٧٦، والذهبي في سير أعلام النبلاء، ٢ / ٩٤، والمزي في تهذيب الكمال، ١٣ / ٢٤٠، الرقم: ٢٩٠٥، والمقري في تقبيل اليد، ١ / ٧٦، الرقم: ١٥۔

الحديث رقم ٣٠: أخرجه أبوداود في السنن، كتاب: الأدب، باب: في قبلة الخدّ، ٤ / ٣٥٦، الرقم: ٥٢٢١، وابن أبي شيبة في المصنف، ٥ / ٢٤٧، الرقم: ٢٥٧٣٣۔

الحديث رقم ٣١: أخرجه البيهقي في شعب الإيمان، ٦ / ٤٧٦، الرقم: ٨٩٦٥، وفي السنن الكبرى، ٧ / ١٠١، الرقم: ١٣٣٦١۔

الحديث رقم ٣٢: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: الأدب، باب: رَحمة الولد وتقبيله ومعانقته، ٥ / ٢٢٣٥، الرقم: ٥٦٥١، ومسلم في الصحيح، كتاب: ←

عَلِيٍّ رضي الله عنهما وَعِنْدَهُ الأَقْرَعُ بْنُ حَابِسٍ التَّمِيْمِيُّ جَالِسًا، فَقَالَ الْأَقْرَعُ: إِنَّ لِي عَشَرَةً مِنَ الْوَلَدِ مَا قَبَّلْتُ مِنْهُمْ أَحَدًا فَنَظَرَ إِلَيْهِ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ، ثُمَّ قَالَ: مَنْ لاَ يَرْحَمُ لاَ يُرْحَمُ. مُتَّفقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने हज़रत हसन बिन अ़ली رضی الله عنهما को चूमा तो आप ﷺ के पास उस वक़्त अक़रा बिन हाबिस तमीमी भी बैठा था वो बोला : मेरे दस बेटे हैं मैंने तो उन्हें कभी नहीं चूमा। इस पर हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने उसकी तरफ़ देख फरमाया : जो रहम नहीं करता उस पर रहम नहीं किया जाता।''

٩٠٧/٣٣. عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ الْأَقْرَعَ بْنَ حَابِسٍ أَبْصَرَ النَّبِيَّ ﷺ وَهُوَ يُقَبِّلُ حُسَيْنًا، فَقَالَ: إِنَّ لِي عَشَرَةً مِنَ الْوَلَدِ مَا فَعَلْتُ هَذَا بِوَاحِدٍ مِنْهُمْ، فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ لَا يَرْحَمُ لَا يُرْحَمُ.

رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ وَأَبُوْدَاوُدَ وَاللَّفْظُ لَهُ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से मरवी है कि अक़रा बिन हाबिस तमीमी ﷺ ने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ को हज़रत हुसैन ﷺ को बोसा देते हुए देखा, तो अ़र्ज़ कियाः मेरे दस बेटे है लेकिन मैंने आज तक उनमें किसी के साथ भी ऐसा (प्यार भरा बर्ताव) नहीं किया।

.... الفضائل، باب: رحمة والعيال وتواضع هو فضل لك، ٤/١٨٠٨، الرقم: ٢٣١٥، وابن حبان فى الصحيح،٢/٢٠٢، الرقم: ٤٥٧، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٢/٢٤١، الرقم: ٧٢٨٧، والبخارى فى الأدب المفرد، ١/٤٦، الرقم: ٩١، ٩٩، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٧/١٠٠، الرقم: ١٣٣٥٤،والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٣/١٤٢، الرقم: ٣٤١٩.

الحديث رقم ٣٣: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: الأدب باب: رحمة الولد وتقبيله ومعانقته، ٥/٢٢٣٥، الرقم: ٥٦٥١، وأبوداود فى السنن، كتاب: الأدب، باب: فى قبلة الرجل ولده، ٤/٣٥٥، الرقم: ٥٢١٨، وابن حبان فى الصحيح، ٢/٢٠٢، الرقم: ٤٥٧، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٢/٢٤١، الرقم: ٧٢٨٧، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٧/١٠٠، الرقم: ١٣٣٥٤، والبخارى فى الأدب المفرد، ١/٤٦، الرقم: ٩١.

रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया : जो रहम नहीं करता उस पर रहम नहीं किया जाता।''

٩٠٨ / ٣٤ـ عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ رضي الله عنه قَالَ: لَمَّا نَزَلَتْ بَنُوْ قُرَيْظَةَ عَلَى حُكْمِ سَعْدٍ، هُوَ ابْنُ مُعَاذٍ، بَعَثَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ، وَكَانَ قَرِيْبًا مِنْهُ، فَجَاءَ عَلَى حِمَارٍ، فَلَمَّا دَنَا قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: قُوْمُوْا إِلَى سَيِّدِكُمْ.

مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अबू सईद ख़ुदरी رضي الله عنه से मरवी है कि जब हज़रत सअ़द बिन मुआ़ज़ رضي الله عنه के हुक्म पर बनू क़ुरैज़ा (क़िले से) नीचे उतर आए तो रसूलुल्लाह ﷺ ने उन्हें बुलाने के लिए एक आदमी भेजा और वो क़रीब ही थे। सो वो गधे पर सवार हो कर आए, नज़दीक पहुँचे तो रसूलुल्लाह ﷺ ने लोगों से फरमाया : अपने सरदार के लिए (ताज़ीमन) खड़े हो जाओ।''

الحديث رقم ٣٤: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: الجهاد، باب: إذا نزل العدو على حكم رجل، ٣/١١٠٧، الرقم: ٢٨٧٨، وفى كتاب: المغازى، باب: مرجع النبي ﷺ من الأحزاب ومخرجه إلى بنى قريظة ومحاصرته إياهم، ٤/١٥١١، الرقم: ٣٨٩٥، وفى كتاب: الاستئذان، باب: قول النبي ﷺ: قوموا إلى سيدكم، ٥/٢٣١ـ، الرقم: ٥٩٠٧، ومسلم فى الصحيح، كتاب: الجهاد والسير، باب: جواز قتال من نقض العهد وجواز إزال أهل الحصن على حكم حاكم عدل أهل للحكم، ٣/١٣٨٨، الرقم: ١٧٦٨، وأبو داود فى السنن، كتاب: الأدب، باب: ما جاء فى القيام، ٤/٣٥٥، الرقم: ٥٢١٥، والنسائى فى السنن الكبرى، ٥/٦٢، الرقم: ٨٢٢٢، وابن حبان فى الصحيح، ١٥/٤٩٨ـ ٥٠٠، الرقم: ٧٠٢٨، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٣/٢٢، الرقم: ١١١٨١، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٦/٥٧، الرقم: ١١٠٩٦، والطبرانى فى المعجم الكبير، ٦/٦، الرقم: ٥٣٢٣ـ

فَصْلٌ فِي حُقُوقِ الْأُسْرَةِ وَالْأَوْلَادِ

﴿ख़ानदान और औलाद के हुक़ूक़ का बयान﴾

٩٠٩ / ٣٥. عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو رضي الله عنهما قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّ مِنْ أَكْبَرِ الْكَبَائِرِ أَنْ يَلْعَنَ الرَّجُلُ وَالِدَيْهِ. قِيْلَ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! وَكَيْفَ يَلْعَنُ الرَّجُلُ وَالِدَيْهِ؟ قَالَ: يَسُبُّ الرَّجُلُ أَبَا الرَّجُلِ، فَيَسُبُّ أَبَاهُ، وَيَسُبُّ أُمَّهُ فَيَسُبُّ أُمَّهُ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र رضی اللہ عنهما से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : कबीरा गुनाहों में से एक यह भी है कि आदमी अपने वालिदैन पर लानत करे। अर्ज़ किया गया : या रसूलल्लाह ! कोई आदमी अपने वालिदैन पर किस तरह लानत करता है ? आप ﷺ ने फरमाया : एक आदमी दूसरे आदमी के वालिद को गाली देता है तो वो (जवाबन) उसके वालिद को गाली देता है और जब कोई किसी की माँ को गाली देता है तो वो (जवाबन) उसकी माँ को गाली देता है (यह ख़ुद अपने माँ–बाप को गाली देना है)।''

٩١٠ / ٣٦. عَنْ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ رضي الله عنه أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ لَهُ: إِنَّكَ لَنْ تُنْفِقَ نَفَقَةً تَبْتَغِي بِهَا وَجْهَ اللهِ إِلَّا أُجِرْتَ عَلَيْهَا، حَتَّى مَا تَجْعَلُ

الحديث رقم ٣٥: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: الأدب، باب: لا يَسُبُّ الرَّجل والديه، ٥/ ٢٢٢٨، الرقم: ٥٦٢٨، ومسلم في الصحيح، كتاب: الإيمان، باب: بيان الكبائر وأكبرها، ١/ ٩٢، الرقم: ٩٠، والترمذي في السنن، كتاب: البر والصلة عن رسول الله ﷺ، باب: في عقوق الوالدين، ٤/ ٣١٢، الرقم: ١٩٠٢، وقال أبو عِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ، وأحمد بن حنبل في المسند، ٢/ ١٦٤، الرقم: ٦٥٢٩، ٦٨٤٠، والبزار في المسند، ٦/ ٤٤٥، الرقم: ٢٤٨٣.

الحديث رقم ٣٦: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: الإيمان، باب: ما جاء أن الأعمال بالنية والحِسبة، ولكل امرئ ما نوى، ١/ ٣٠، الرقم: ٥٦، وفي كتاب: الجنائز، باب: رِثَاء النبي ﷺ سعد بن خولة، ١/ ٤٣٥، الرقم: ١٢٣٣، وفي ←

فِي فَمِ امْرَأَتِکَ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास ﷛ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः तुम जो कुछ ख़र्च करते हो कि जिससे तुम्हारा मक़सूद रज़ा–ए–इलाही हो तो तुम्हें उस पर अज्र दिया जाता है यहाँ तक कि तुम अपनी बीवी के मुँह में जो लुक़मा डालते हो (उस पर भी तुम्हें अज्र दिया जाता है)।''

٩١١ / ٣٧۔ عَنْ بَهْزِ بْنِ حَکِيْمٍ، عَنْ أَبِيْهِ عَنْ جدِّهِ، قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُوْلَ اللهِ، عَوْرَاتُنَا مَا نَأْتِي مِنْهَا وَمَا نَذَرُ؟ قَالَ: احْفَظْ عَوْرَتَکَ إِلَّا مِنْ زَوْجَتِکَ، أَوْ مَا مَلَکَتْ يَمِيْنُکَ، فَقَالَ: الرَّجُلُ يَکُوْنُ مَعَ الرَّجُلِ؟ قَالَ: إِنِ اسْتَطَعْتَ أَلَا يَرَاهَا أَحَدٌ فَافْعَلْ، قُلْتُ: وَالرَّجُلُ يَکُوْنُ خَالِيًا، قَالَ فَاللهُ أَحَقُّ أَنْ يُسْتَحْيَا مِنْهُ.

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُوْدَاوُدَ وَابْنُ مَاجه وَذَکَرَهُ الْبُخَارِيُّ فِي التَّرْجَمَةِ مُخْتَصَرًا. وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ. وَقَالَ الْحَاکِمُ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحٌ

.... کتاب: الوصايا، باب: أن يترك ورثته أغنياء خير من أن يتکفّفوا الناس، ٣/ ١٠٠٦، الرقم: ٢٥٩١،٢٥٩٣، وفی کتاب: فضائل الصحابة، باب: قول النبی ﷺ: اللّهم أمضِ لأصحابي هجرتهم، ٣/ ١٤٣١، الرقم: ٣٧٢١، ونحوه الرقم: ٤١٤٧، ٥٠٣٩، ٥٣٣٥، ٥٣٤٤، ٦٠١٢، ٦٣٥٢، ومسلم فی الصحيح، کتاب: الوصية، باب: الوصية بالثلث، ٣/ ١٢٥٠، الرقم: ١٦٢٨، والنسائی فی السنن الکبری، ٥/ ٣٨٣، الرقم: ٩٢٠٦، ومالك فی الموطأ، ٢/ ٧٦٣، الرقم: ١٤٥٦، وعبد الرزاق فی المصنف، ٩/ ٦٤، والطبرانی فی المعجم الکبير، ٧/ ٢٩٢، الرقم: ٧١٧١۔

الحديث رقم ٣٧: أخرجه الترمذی فی السنن، کتاب: الآداب عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء فی حفظ العورة، ٥/ ٩٧، الرقم: ٢٧٦٩، وأبوداود فی السنن، کتاب: الحمام، باب: ما جاء فی التعری، ٤/ ٤٠، الرقم: ٤٠١٧، وابن ماجه فی السنن، کتاب: النکاح، باب: التستر عند الجماع، ١/ ٦١٨، الرقم: ١٩٢٠، والنسائی فی السنن الکبری، ٥/ ٣١٣، الرقم: ٨٩٧٢، وأحمد بن حنبل فی المسند، ٥/ ٣، والبيهقی فی السنن الکبری، ١/ ١٩٩، الرقم: ٩١٠۔

الإِسْنَادِ.

''हज़रत बहज़ बिन हकीम बवास्ता अपने वालिद अपने दादा से रिवायत करते हैं, वो फरमाते हैं कि मैंने अ़र्ज़ किया: या रसूलल्लाह! हम अपने सतर में से क्या छुपाएँ और क्या न छुपाएँ ? हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया: अपनी बीवी और लौंडी के सिवा सबसे अपनी शर्मगाह महफ़ूज़ रखो, उन्होंने अ़र्ज़ किया : अगर मर्द, मर्द के साथ हो तो ? आप ﷺ ने फरमाया: अगर सतर छुपाना मुमकिन हो तो ऐसा ही करो (यानी न दिखाओ)। मैंने अ़र्ज़ किया: इन्सान तन्हा भी होता है। आप ﷺ ने फरमाया: अल्लाह तआ़ला का हक़ सबसे ज़्यादा है कि उससे हया की जाए।''

٩١٢ / ٣٨ـ عَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ جَدِّهِ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مُرُوْا أَوْلَادَكُمْ بِالصَّلَاةِ وَهُمْ أَبْنَاءُ سَبْعِ سِنِيْنَ، وَاضْرِبُوْهُمْ عَلَيْهَا وَهُمْ أَبْنَاءُ عَشْرِ سِنِيْنَ، وَفَرِّقُوْا بَيْنَهُمْ فِي الْمَضَاجِعِ.

رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ بِإِسْنَادٍ جَيِّدٍ وَالْحَاكِمُ وَالدَّارُقُطْنِيُّ وَأَحْمَدُ.

''हज़रत अ़म्र बिन शुऐब बवास्ता अपने वालिद अपने दादा से रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया: जब तुम्हारी औलाद सात साल की हो जाए तो उन्हें नमाज़ का हुक्म दो। और जब वो दस साल की हो जाए तो उन्हें उस (नमाज़ न पढ़ने) पर मारो और (इस उम्र में) उन्हें अलग–अलग सुलाया करो।''

٩١٣ / ٣٩ـ عَنْ مُعَاوِيَةَ بْنِ حَيْدَةَ ﷺ قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! مَا حَقُّ

الحديث رقم ٣٨: أخرجه أبوداود فى السنن، كتاب: الصلاة، باب: متى يؤمر الغلام بالصلاة، ١ / ١٣٣، الرقم: ٤٩٥، والحاكم فى المستدرك، ١ / ٣١١، الرقم: ٧٠٨، والدارقطنى فى السنن، ١ / ٢٣٠، الرقم: ٣،٦، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٢ / ١٨٧، الرقم: ٦٧٥٦، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٢ / ٢٢٨، الرقم: ٣٠٥٠.

الحديث رقم ٣٩: أخرجه أبوداود فى السنن، كتاب: النكاح، باب: فى حق المرأة على زوجها، ٢ / ٢٤٤، الرقم: ٢١٤٢، والنسائى فى السنن الكبرى، ٥ / ٣٧٣، الرقم: ٩١٧١، ١١١٠٤ وعبد الرزاق فى المصنف، ٧ / ١٤٨، الرقم: ١٢٥٨٣، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٤ / ٤٤٧: ٥ / ٣، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٧ / ٣٠٥، الرقم: ١٤٥٥٦، والطبرانى فى المعجم الكبير، ١٩ / ٤٢٧، الرقم: ١٠٣٨، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٣ / ٣٢، الرقم: ٢٩٦٨.

زَوْجَةِ أَحَدِنَا عَلَيْهِ؟ قَالَ: أَنْ تُطْعِمَهَا إِذَا طَعِمْتَ، وَتَكْسُوْهَا إِذَا اكْتَسَيْتَ أَوِ اكْتَسَبْتَ، وَلَا تَضْرِبِ الْوَجْهَ، وَلَا تُقَبِّحْ، وَلَا تَهْجُرْ إِلَّا فِي الْبَيْتِ. رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ وَأَحْمَدُ.

''हज़रत मुआविया बिन हैदा ﷺ से रिवायत है कि मैंने अ़र्ज़ किया: या रसूलल्लाह! हम में से किसी पर उसकी बीवी का क्या हक़ है ? आप ﷺ ने फरमाया: जब तुम खाओ तो उसे भी खिलाओ, जब तुम पहनो या कमाओ तो उसे भी पहनाओ, उसके मुँह पर न मारो, उससे बुरे लफ़्ज़ न कहो और उसे ख़ुद से अलग न करो मगर घर के अन्दर ही।''

٩١٤ / ٤٠۔ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رضي الله عنهما، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ، سَوُّوْا بَيْنَ أَوْلَادِكُمْ فِي الْعَطِيَّةِ، فَلَوْ كُنْتُ مُفَضِّلاً أَحَدًا لَفَضَّلْتُ النِّسَاءَ.

رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ وَالْبَيهَقِيُّ ذَكَرَهَ الْبُخَارِيُّ فِي التَّرْجَمَةِ مُخْتَصَرًا.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رضی اللہ عنہما से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया: तौहफों की तक़सीम में अपनी औलाद में बराबरी रखो और अगर मैं किसी को किसी पर फ़ज़ीलत देता तो औ़रतों को (यानी बेटियों को बेटों पर फ़जीलत देता)।''

٩١٥ / ٤١۔ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رضي الله عنهما قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَا مِنْ

الحديث رقم ٤٠: أخرجه الطبرانى فى المعجم الكبير، ١١/ ٣٥٤، الرقم: ١١٩٩٧، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٦/ ١٧٧، الرقم: ١١٧٨٠، والطحاوى فى شرح معانى الآثار، ٤/ ٨٦، والهيثمى فى مجمع الزوائد، ٤/ ١٥٣، والحارث فى المسند (زوائد الهيثمى)، ١/ ٥١٢، الرقم: ٤٥٤، والبخارى فى الصحيح، كتاب: الهبة وفضلها، باب: (١١)، الهبة للولد وإذا أعطى بعض ولده شيئا لم يجز حتى يعدل بينهم ويعطى الآخرين مثله ولا يشهد عليه وقال النبى ﷺ: اعدلوا بين أولادكم فى العطية، ٢/ ٩١٣۔

الحديث رقم ٤١: أخرجه ابن ماجه في السنن، كتاب: الأدب، باب: بر الوالد والإحسان إلى البنات، ٢/ ١٢١٠، الرقم: ٣٦٧٠، وابن حبان فى الصحيح، ٧/ ٢٠٧، الرقم: ٢٩٤٥، والحاكم فى المستدرك، ٤/ ١٩٦، الرقم: ٧٣٥١، وأحمد بن حنبل فى المسند، ١/ ٣٦٣، الرقم: ٣٤٢٤، وأبويعلى فى المسند، ٤/ ٤٤٥، الرقم: ٢٥٧١، والطبرانى فى المعجم الكبير، ١٠/ ٣٣٧، الرقم: ١٠٨٣٦۔

رَجُلٍ تُدْرِکُ لَهُ ابْنَتَانِ فَيُحْسِنُ إِلَيْهِمَا، مَا صَحِبَتَاهُ أَوْ صَحِبَهُمَا، إِلَّا أَدْخَلَتَاهُ الْجَنَّةَ. رَوَاهُ ابْنُ مَاجَه وَابْنُ حِبَّانَ.

وَقَالَ الْحَاكِمُ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيحُ الإِسْنَادِ.

''हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास رضی اللہ عنہما से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जिस शख़्स की दो बेटियाँ हों और जब तक वो उसके पास रहें या वो उनके साथ रहा व (इस दौरान) वो उनके साथ हुस्ने सुलूक करता रहा तो वो दोनों उसे जन्नत में ले जाएँगी।''

٩١٦ / ٤٢۔ عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ عَالَ ثَلَاثَ بَنَاتٍ فَأَدَّبَهُنَّ وَزَوَّجَهُنَّ وَأَحْسَنَ إِلَيْهِنَّ فَلَهُ الْجَنَّةُ.

وفي رواية: قَالَ: ثَلَاثُ أَخَوَاتٍ أَوْ ثَلَاثُ بَنَاتٍ أَوْ بِنْتَانِ أَوْ أُخْتَانِ. رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ وَأَحْمَدُ.

''हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जिसने तीन बेटियों की परवरिश की, उन्हें अच्छा अदब सिखाया, उनकी शादी की और उनके साथ अच्छा सुलूक करता रहा तो उसके लिए जन्नत है और एक और रिवायत में है कि आप ﷺ ने फरमायाः तीन बहनें या तीन बेटियाँ, दो बेटियाँ या दो बहनें।''

٩١٧ / ٤٣۔ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو رضي الله عنهما عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: رِضَى الرَّبِّ فِي رِضَى الْوَالِدِ، وَسَخَطُ الرَّبِّ فِي سَخَطِ الْوَالِدِ.

الحديث رقم ٤٢: أخرجه أبوداود فى السنن، كتاب: الأدب، باب: فى فضل من عال يتيما، ٤ / ٣٣٨، الرقم: ٥١٤٧، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٣ / ٩٧، الرقم: ١١٩٤٣، وأبويعلى فى المسند، ٤ / ٣٤٢، الرقم: ٢٤٥٧، والطبرانى فى المعجم الكبير، ١١ / ٢١٦، الرقم: ١١٥٤٢، وابن أبى شيبة فى المصنف، ٥ / ٢٢١، الرقم: ٢٥٤٣٤، والهيثمى فى مجمع الزوائد، ٨ / ١٦٢۔

الحديث رقم ٤٣: أخرجه الترمذى فى السنن، كتاب: البر والصلة عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء من الفضل فى رضا الوالدين، ٤ / ٣١٠، الرقم: ١٨٩٩، والحاكم فى المستدرك، ٤ / ١٦٨، الرقم: ٧٢٤٩۔

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالْحَاكِمُ.

وَقَالَ الْحَاكِمُ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيحٌ.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رضی اللہ عنہما से मरवी है कि हुज़ूर नबीए अकरम ﷺ ने फरमायाः रब की रज़ा वालिद की रज़ा में है और रब की नाराज़गी वालिद की नाराज़गी में है।''

٩١٨/ ٤٤۔ عَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ رضي الله عنه قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّكُمْ تُدْعَوْنَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ بِأَسْمَائِكُمْ وَأَسْمَاءِ آبَائِكُمْ فَأَحْسِنُوْا أَسْمَاءَكُمْ.

رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ وَالدَّارِمِيُّ.

''हज़रत अबू दरदा رضي الله عنه से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः तुम क़यामत के रोज़ अपने नामों और अपने बापों के नामों से पुकारे जाओगे। लिहाजा अपने (और अपने बच्चों के) नाम ख़ूबसूरत रखा करो।''

٩١٩/ ٤٥۔ عَنْ عَائِشَةَ رضي الله عنها أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يُغَيِّرُ الإِسْمَ الْقَبِيْحَ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ.

''हज़रत आइशा رضی اللہ عنہا रिवायत करती हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ (जब किसी शख़्स या बच्चे का बुरा नाम देखते तो उसका वो) बुरा नाम तब्दील फरमा दिया करते थे।''

الحديث رقم ٤٤: أخرجه أبوداود فى السنن، كتاب: الأدب، باب: فى تغيير الأسماء، ٤/ ٢٨٧، الرقم: ٤٩٤٨، والدارمى فى السنن، ٢/ ٣٨٠، الرقم: ٢٦٩٤، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٥/ ١٩٤، الرقم: ٢٢٠٣٥، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٩/ ٣٠٦، وفى شعب الإيمان، ٦/ ٣٩٣، الرقم: ٨٦٣٣، وابن جعد فى المسند، ١/ ٣٦٠، الرقم: ٢٤٩٢، والهيثمى فى موارد الظمآن، ١/ ٤٧٩، الرقم: ١٩٤٤۔

الحديث رقم ٤٥: أخرجه الترمذى فى السنن، كتاب المناقب عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء في تغيير الأَسْمَاءِ، ٥/ ١٣٥، الرقم: ٢٨٣٩، وابن أبى شيبة فى المصنف، ٥/ ٢٦١، الرقم: ٢٥٨٩٦، والسيوطى فى الجامع الصغير، ١/ ٣٤٤، الرقم: ٦٥٠، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٣/ ٤٩، الرقم: ٣٠٣٣۔

فَصْلٌ فِي جَامِعِ الْحُقُوْقِ

﴿जामेअ हुक़ूक़ का बयान﴾

٩٢٠ / ٤٦۔ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رضي الله عنهما أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ حَمَلَ عَلَيْنَا السِّلَاحَ فَلَيْسَ مِنَّا.

مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ وَهَذَا لَفْظُ مُسْلِمٍ.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर رضی اللہ عنہما से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जिस शख़्स ने हम (यानी मुसलमानों) पर हथियार उठाया वो हम में से नहीं।''

٩٢١ / ٤٧۔ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رضي الله عنهما قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: أَلَا كُلُّكُمْ رَاعٍ، وَكُلُّكُمْ مَسْؤُوْلٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ، الإِمَامُ رَاعٍ، وَمَسْؤُولٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ، وَالرَّجُلُ رَاعٍ فِي أَهْلِهِ وَمَسْؤُوْلٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ، وَالْمَرْأَةُ

الحديث رقم ٤٦: أخرجه البخاری فی صحيح، کتاب: الديات، باب: قول الله تعالی: ومن أحياها، ٦ / ٢٥٢٠، الرقم: ٦٤٨٠، وفی کتاب: الفتن، باب: قول النبی ﷺ: من حمل علينا السلاح فليس منا، ٦ / ٢٥٩١، الرقم: ٦٦٥٩، ومسلم فی الصحيح، کتاب: الإيمان، باب: قول النبی ﷺ: من حمل علينا السلاح فليس منا، ١ / ٩٨، الرقم: ٩٨، والترمذی عن أبی موسی فی السنن، کتاب: الحدود عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء فيمن شهر السلاح، ٤ / ٥٩، الرقم: ١٤٥٩، وَ قَالَ أبوعيسی: حَدِيْثُ أَبِي مُوْسَی حَدِيْثٌ حَسَنٌ، والنسائی فی السنن، کتاب: تحريم الدم، باب: من شهر سيفه ثم وضعه فی الناس، ٧ / ١١٧، الرقم: ٤١٠٠، وابن ماجه فی السنن، کتاب: الحدود، باب: من شهر السلاح، ٢ / ٨٦٠، الرقم: ٢٥٧٥، وأحمد بن حنبل فی المسند، ٢ / ٣، الرقم: ٤٤٦٧، وإبراهيم الطرطوسی فی مسند عبدالله بن عمر رضي الله عنه، ١ / ٣٨، الرقم: ٦٣.

الحديث رقم ٤٧: أخرجه البخاری فی الصحيح، کتاب: الجمعة، باب: الجمعة فی القری والمدن، ١ / ٣٠٤، الرقم: ٨٥٣، وفی کتاب: فی الاستقراض وأداء الديون والحجر والتفليس، باب: العبد راع فی مال سيده ولا يعمل إلا بإذنه، ٢ / ٨٤٨، الرقم: ٢٢٧٨، وفی کتاب: العتق، باب: کراهية التطاول علی الرقيق وقوله عبدی ←

رَاعِيَةٌ فِي بَيْتِ زَوْجِهَا وَمَسْؤُوْلَةٌ عَنْ رَعِيَّتِهَا، وَالْخَادِمُ رَاعٍ فِي مَالِ سَيِّدِهِ وَمَسْؤُوْلٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ، قَالَ وَحَسِبْتُ أَنْ قَدْ قَالَ: وَالرَّجُلُ رَاعٍ فِي مَالِ أَبِيْهِ وَمَسْؤُوْلٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ، وَكُلُّكُمْ رَاعٍ وَمَسْؤُوْلٌ عَنْ رَعِيَّتِه. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर رضی اللّٰہ عنہما रिवायत करते हैं कि मैंने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ से सुना आप ﷺ फरमातेः सुन लो! तुम में से हर एक निगरां है और हर एक से उसकी रइय्यत के मुतअल्लिक़ सवाल किया जाएगा । हुक्मरान निगरां है और उससे उसकी रिआया के मुतअल्लिक़ सवाल किया जाएगा। आदमी अपने घर बार का निगरां है और उससे उसकी रिआया (यानी घरवालों) के मुतअल्लिक़ सवाल किया जाएगा । औरत अपने शौहर के घर की निगरां है और उससे उसकी रिआया (शौहर के घर) के मुतअल्लिक़ सवाल किया जाएगा। नौकर अपने मालिक के माल का निगरां है और उससे उसकी रिआया के मुतअल्लिक़ सवाल किया जाएगा । (रावी कहते हैं कि मेरे ख़याल में यह भी फरमाया कि) आदमी अपने बाप के माल का निगरां है और उससे उसकी रिआया के मुतअल्लिक़ सवाल किया जाएगा और तुम में से हर एक निगरां है और हर एक से मुतअल्लिक़ सवाल किया जाएगा ।''

۹۲۲ / ٤٨ ـ عَنْ عَائِشَةَ رضي الله عنها قَالَتْ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَازَالَ

.... أو أمتي، ۲ / ۹۰۱، الرقم: ۲٤۱٦، وفی كتاب: العتق، باب: العبد راع في مال سيده، ۲ / ۹۰۲، الرقم: ۲٤۱۹، وفی كتاب: النكاح، باب: قوا أنفسكم وأهليكم نارا، ٥ / ۱۹۸۸، الرقم: ٤۸۹۲، وفی كتاب: النكاح، باب: المرأة راعية في بيت زوجها، ٥ / ۱۹۹٦، الرقم: ٤۹۰٤، وفی كتاب: الأحكام، باب: قول الله تعالی: أطيعوا الله وأطيعوا الرسول وأولی الأمر منكم، ٦ / ۲٦۱۱، الرقم: ٦۷۱۹، ومسلم فی كتاب: الإمارة، باب: فضيلة الإمام العادل وعقوبة الجائر والحث علی الرفق بالرعية والنهي عن إدخال المشقة عليهم، ۳ / ۱٤٥۹، الرقم: ۱۸۲۹، والترمذی فی السنن، كتاب: الجهاد عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء فی الإمام، ٤ / ۲۰۸، الرقم: ۱۷۰٥، وقال أبوعيسی: حديث ابن عمر حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ، وأبو داود فی السنن، كتاب: الخراج والإمارة والفيء، باب: ما يلزم الإمام من حق الرعية، ۳ / ۱۳۰، الرقم: ۲۹۲۸، والنسائی فی السنن الكبری، ٥ / ۳۷٤، الرقم: ۹۱۷۳، والبخاری فی الأدب المفرد، ۱ / ۸۱-۸٤، الرقم: ۲۰٦، ۲۱۲، ۲۱٤.

الحديث رقم ٤٨: أخرجه البخاری فی الصحيح، كتاب: الأدب، باب: الوصاة بالجار، ←

جِبْرِيلُ يُوصِيْنِي بِالْجَارِ حَتَّى ظَنَنْتُ أَنَّهُ سَيُوَرِّثُهُ. مُتَّفقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत आइशा رضي الله عنها रिवायत करती हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः हज़रत जिब्राईल عليه السلام हमेशा मुझ हमसाए के हुक़ूक़ के बारे में इस क़द्र ताकीद करते रहे यहाँ तक कि मुझे ख़याल आने लगा कि यह उसे (यानी पड़ौसी को) माले विरासत में हिस्सेदार बना देंगे।''

٩٢٣ / ٤٩۔ عَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ ﷺ، عَنْ أَبِيْهِ عَنْ جَدِّهِ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَيْسَ مِنَّا مَنْ لَمْ يَرْحَمْ صَغِيرَنَا، وَيَعْرِفْ شَرَفَ كَبِيْرِنَا.

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُوْدَاوُدَ.

وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत अम्र बिन शुऐब ﷺ बवास्ता अपने वालिद अपने दादा से रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : वो शख़्स हम में से नहीं है जो छोटों पर रहम नहीं करे और हमारे बड़ों की क़द्रो मंज़िलत न पहचाने।''

.... ٥ / ٢٢٣٩، الرقم: ٥٦٦٨۔٥٦٦٩، ومسلم فی الصحيح، كتاب: البر والصلة والآداب، باب: الوصية بالجار والإحسان إليه، ٤ / ٢٠٢٥، الرقم: ٢٦٢٤۔٢٦٢٥، والترمذی فی السنن، كتاب: البر والصلة عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء فی حق الجوار، ٤ / ٣٣٣، الرقم: ١٩٤٢۔١٩٤٣، وَ حَسَّنَهُ، وأبو داود فی السنن، كتاب: الأدب، باب: فی حق الجوار، ٤ / ٣٣٨، الرقم: ٥١٥١۔٥١٥٢، وابن ماجه فی السنن، كتاب: الأدب، باب: حق الجوار، ٢ / ١٢١١، الرقم: ٣٦٧٣۔٣٦٧٤، وأحمد بن حنبل فی المسند، ٢ / ٨٥، الرقم: ٥٥٧٧۔

الحديث رقم ٤٩: أخرجه الترمذی فی السنن، كتاب: البر والصلة عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء فی رحمة الصبيان، ٤ / ٣٢٢، الرقم: ١٩٢٠، وأبو داود فی السنن، كتاب: الأدب، باب: فی الرحمة، ٤ / ٢٨٦، الرقم: ٤٩٤١، وأحمد بن حنبل فی المسند، ٢ / ٢٢٢، الرقم: ٧٠٧٣، وسنده حسن، وفي الباب: عن ابن عباس رضی الله عنهما عند أحمد، ١ / ٢٥٧، وعن أنس ﷺ عند الترمذی (١٩٢٠)، وعن عبادة بن الصامت ﷺ عند أحمد، ٥ / ٣٢٣، وزادفيه: (و يعرف لعالمنا) وسَنَدُهُ حَسَنٌ، والحاكم فی المستدرك، ١ / ١٣١، الرقم: ٢٠٩، والبخاری عن أبی هريرة ﷺ فی الأدب المفرد، ١ / ١٢٩، الرقم: ٣٥٣۔

٩٢٤ / ٥٠۔ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ ﷺ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: إِذَا رَأَيْتُمُ الْجَنَازَةَ فَقُوْمُوْا، فَمَنْ تَبِعَهَا فَلَا يَقْعُدْ حَتَّى تُوْضَعَ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जब तुम जनाज़ा देखो तो खड़े हो जाओ जो जनाज़े के साथ जाए तो उस वक़्त तक न बैठे जब तक जनाज़ा रख न दिया जाए।''

٩٢٥ / ٥١۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: رُبَّ أَشْعَثَ مَدْفُوْعٍ بِالْأَبْوَابِ، لَوْ أَقْسَمَ عَلَى اللهِ لَأَبَرَّهُ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः कितने ऐसे लोग होते हैं जो (ज़ाहिरन) परागन्दह हाल होते हैं जिन्हें दरवाज़ों (के बाहर ही) से धुतकार दिया जाता है (लेकिन अल्लाह तआला के हाँ उनका यह मक़ाम होता है कि) अगर वो किसी मामले में अल्लाह तआला की क़सम खा लें तो वो उसे ज़रूर पूरा फरमा देता है।''

٩٢٦ / ٥٢۔ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: أَنَا وَ

الحديث رقم ٥٠: أخرجه البخاری فی الصحيح، كتاب: الجنائز، باب: من تبع جنازة فلا يَقْعُدُ حتی توضع عن مناكب الرجال فإن قعد أمر بالقيام، ١ / ٤٤١، الرقم: ١٢٤٨، ومسلم فی الصحيح، كتاب: الجنائز، باب: القيام للجنازة، ٢ / ٦٦٠، الرقم: ٩٥٩، والنسائی فی السنن، كتاب: الجنائز، باب: السرعة بالجنازة، ٤ / ٤٣، الرقم: ١٩١٤، وأحمد بن حنبل فی المسند، ٣ / ٥١، الرقم: ١١٤٩٤، وأبو يعلی فی المسند، ٢٠ / ٣٨٦، الرقم: ١١٥٧، والديلمی فی مسند الفردوس، ١ / ٢٦٢، الرقم: ١٠١٨۔

الحديث رقم ٥١: أخرجه مسلم فی الصحيح، كتاب: البر والصلة والأداب، باب: فضل الضعفاء والخاملين، ٤ / ٢٠٢٤، الرقم: ٢٦٢٢، وفی كتاب: الجنة وصفة نعيمها وأهلها، باب: النار يدخلها الجبارون والجنة يدخلها الضعفاء، ٤ / ٢١٩١، الرقم: ٢٨٥٤، والبيهقی فی شعب الإيمان، ٧ / ٣٣١، الرقم: ١٠٤٨٢، وابن رجب فی جامع العلوم والحكم، ١٠ / ١٠٥، والمنذری فی الترغيب والترهيب، ٤ / ٧٣، الرقم: ٤٨٤٩۔

الحديث رقم ٥٢: أخرجه البخاری فی الصحيح، كتاب: الطلاق، باب: اللِّعَانِ، ←

كَافِلُ الْيَتِيمِ فِي الْجَنَّةِ هَكَذَا وَأَشَارَ بِالسَّبَابَةِ وَالْوُسْطَى، وَفَرَّجَ بَيْنَهُمَا شَيْئًا. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ وَمُسْلِمٌ نَحْوَهُ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضي الله عنه.

''हज़रत सहल बिन सअ्द رضي الله عنه से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः मैं और यतीम की कफ़ालत करने वाला जन्नत में इस तरह होंगे और अपनी शहादत और दरमियान उंगली से इशारा किया और दोनों के दरमियान कुछ फ़ासला रखा।''

٩٢٧ / ٥٣. عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضي الله عنه عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: السَّاعِي عَلَى الْأَرْمَلَةِ وَالْمِسْكِينِ كَالْمُجَاهِدِ فِي سَبِيلِ اللهِ وَأَحْسَبُهُ، قَالَ: وَكَالْقَائِمِ الَّذِي لَا يَفْتُرُ، وَكَالصَّائِمِ الَّذِي لَا يُفْطِرُ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ وَهَذَا لَفْظُ مُسْلِمٍ.

''हज़रत अबू हुरैरा رضي الله عنه से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : बेवा औरत और मिस्कीन के लिए कोशिश करने वाला ख़ुदा के रास्ते में जिहाद करने वाले की तरह है।

.... ٥/ ٢٠٣٢، الرقم: ٤٩٩٨، وفى كتاب: الأدب، باب: فضل مَنْ يَعُولُ يتيمًا، ٥/ ٢٢٣٧، الرقم: ٥٦٥٩، ومسلم فى الصحيح، كتاب: الزهد والرقائق، باب: الإحسان إلى الأرملة والمسكين واليتيم، ٤/ ٢٢٨٧، الرقم: ٢٩٨٣، والترمذي فى السنن، كتاب: البر والصلة عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء فى رحمة اليتيم وكفالته، ٤/ ٣٢١، الرقم: ١٩١٨، وأبوداود فى السنن، كتاب: النوم، باب: فى من ضم اليتيم، ٤/ ٣٣٨، الرقم: ٥١٥٠، ومالك فى الموطأ، ٢/ ٩٤٨، الرقم: ١٧٠٠، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٥/ ٣٣٣، الرقم: ٢٢٨٧١.

الحديث رقم ٥٣: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: النفقات، باب: فَضلِ النَّفقَةِ علَى الأَهْلِ، ٥/ ٢٠٤٧، الرقم: ٥٠٣٨، وفى كتاب: الأدب، باب: الساعى على الأرملة، ٥/ ٢٢٣٧، الرقم: ٥٦٦٠، ومسلم فى الصحيح، كتاب: الزهد والرقائق، باب: الإحسان إلى الأرملة والمسكين واليتيم، ٤/ ٢٢٨٦، الرقم: ٢٩٨٢، والترمذي فى السنن، كتاب: البر والصلة عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء فى السعى على الأرملة واليتيم، ٤/ ٣٤٦، الرقم: ١٩٦٩، والنسائى فى السنن، كتاب: الزكاة، باب: فضل الساعى على الأرملة، ٥/ ٨٦، الرقم: ٢٥٧٧، وابن ماجه فى السنن، كتاب: التجارت، باب: الحث على المكاسب، ٢/ ٧٢٤، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٢/ ٣٦١، الرقم: ٨٧١٧.

(रावी कहते हैं कि) मेरा ख़याल है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः वो उस क़ियाम करने वाले की तरह है जो थकता नहीं और उस रोज़ेदार की तरह है जो इफ़्तार नहीं करता।''

٩٢٨ / ٥٤۔ عَنْ أَنَسٍ ﷺ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَنْ عَالَ جَارِيَتَيْنِ حَتَّى تَبْلُغَا، جَاءَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ أَنَا وَهُوَ وَضَمَّ أَصَابِعَهُ.

رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَالتِّرْمِذِيُّ.

وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ.

''हज़रत अनस ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जिस शख़्स ने दो बेटियों की परवरिश की यहाँ तक कि वो बालिग़ हो गईं क़यामत के दिन आएगा तो वो (शख़्स) और मैं इस तरह होंगे और अपनी उंगलियों को मिला दिया।''

٩٢٩ / ٥٥۔ عَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ ﷺ قَالَ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ:

الحديث رقم ٥٤: أخرجه مسلم فى الصحيح، كتاب: البر والصلة والآداب، باب: فضل الإحسان إلى البنات، ٤ / ٢٠٢٧، الرقم: ٢٦٣١، والترمذى فى السنن، كتاب: البر والصلة عن رسول الله ﷺ ، باب: ماجاء فى النفقة على البنات والأخوات، ٤ / ٣١٩، الرقم: ١٩١٤، والبخارى فى الأدب المفرد، ١ / ٣٠٨، الرقم: ٨٩٤، والحاكم فى المستدرك، ٤ / ١٩٦، الرقم: ٧٣٥٠، وقال الحاكم: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحٌ الإِسْنَادِ، والطبرانى فى المعجم الأوسط، ١ / ١٧٦، الرقم: ٥٥٧، والبيهقى فى شعب الإيمان، ٦ / ٤٠٤، الرقم: ٨٦٧٤۔

الحديث رقم ٥٥: أخرجه الترمذى فى السنن، كتاب: الجهاد عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء فى الاستفتاح بصعاليك المسلمين، ٤ / ٢٠٦، الرقم: ١٧٠٢، وأبو داود فى السنن، كتاب: الجهاد ، باب: فى الإِنْتِصَارِ بِرَذْلِ الْخَيْلِ والضعفة، ٣ / ٣٢، الرقم: ٢٥٩٤، والنسائى فى السنن، كتاب: الجهاد، باب: الِاستنصار بالضعيف، ٦ / ٤٥، الرقم: ٣١٧٩، وفى السنن الكبرى، ٣ / ٣٤٥، الرقم: ٥٩٠، والحاكم فى المستدرك، ٢ / ١٥٧، الرقم: ٢٦٤١، وقال الحاكم: هذا حديثٌ صحيح الإِسْنَادِ، وابن حبان فى الصحيح، ١١ / ٨٥، الرقم: ٤٧٦٧، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٥ / ١٩٨، الرقم: ٢١٧٧٩، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٤ / ٧١، الرقم: ٤٨٤٣۔

ابْغُونِي الضُّعَفاءَ، فَإِنَّمَا تُنْصَرُوْنَ، وَتُرْزَقُوْنَ بِضُعَفَائِكُمْ.

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُوْدَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ.

وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत अबू दरदा ﷺ से मरवी है कि मैंने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ से सुना कि आप ﷺ फरमाते: मुझे कमज़ोर लोगों में तलाश करो, क्यों कि तुम्हें कमज़ोर लोगों की बदौलत ही मदद दी जाती है और उन्हीं की बदौलत तुम्हें रिज़्क़ अ़ता किया जाता है।''

٩٣٠ / ٥٦۔ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ رضي الله عنهما أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: الدُّنْيَا مَتَاعٌ وَخَيْرُ مَتَاعِ الدُّنْيَا الْمَرْأَةُ الصَّالِحَةُ.

رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَالنَّسَائِيُّ.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स رضی اللہ عنہما से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया: दुनिया साज़ो सामान की जगह है और इस दुनिया का बेहतरीन सरमाया (व दौलत) नेक औ़रत है।''

٩٣١ / ٥٧۔ عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ رضي الله عنها قَالَتْ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: أَيُّمَا

الحديث رقم ٥٦: أخرجه مسلم فى الصحيح، كتاب: الرضاع، باب: خير متاع الدنيا المرأة الصالحة، ٢/ ١٠٩٠، الرقم: ١٤٦٧، والنسائى فى السنن، كتاب: النكاح، باب: المرأة الصالحة، ٦/ ٦٩، الرقم: ٣٢٣٢، وابن حبان فى الصحيح، ٩/ ٣٤٠، الرقم: ٤٠٣١، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٢/ ١٦٨، الرقم: ٦٥٦٧، والطبرانى فى المعجم الأوسط، ٨/ ٢٨١، الرقم: ٨٦٣٩.

الحديث رقم ٥٧: أخرجه الترمذى فى السنن، كتاب: الرضاع عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء فى حق الزوج على المرأة، ٣/ ٤٦٦، الرقم: ١١٦١، وابن ماجه فى السنن، كتاب: النكاح، باب: حق الزوج على المرأة، ١/ ٥٩٥، الرقم: ١٨٥٤، والحاكم فى المستدرك، ٤/ ١٩١، الرقم: ٧٣٢٨، وقال الحاكم: هَذَاحَدِيْثٌ صَحِيْحٌ الْإِسْنَادِ، وابن أبى شيبة فى المصنف، ٣/ ٥٥٧، الرقم: ١٥٠، وأبو يعلى فى المسند، ١٢/ ٣٣١، الرقم: ٦٩٠٣، والطبرانى فى المعجم الكبير، ٢٣/ ٤٢١، الرقم: ٨٧٤٤، وعبد بن حميد فى المسند، ١/ ٤٤٥، الرقم: ١٥٤١، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٣/ ٣٣، الرقم: ٢٩٦٩.

امْرَأَةٍ مَاتَتْ، وَزَوْجُهَا عَنْهَا رَاضٍ دَخَلَتِ الْجَنَّةَ.

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجه.

وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ.

''हज़रत उम्मे सलमा رضی اللہ عنہا से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जो औरत इस हालत में फ़ौत हुई कि उसका ख़ाविन्द उससे राज़ी था, वो जन्नत में दाख़िल हो गई।''

٩٣٢/ ٥٨. عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضی الله عنه قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: أَكْمَلُ الْمُؤْمِنِيْنَ إِيْمَانًا أَحْسَنُهُمْ خُلُقًا وَخِيَارُكُمْ خِيَارُكُمْ لِنِسَائِهِمْ.

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَحْمَدُ وَابْنُ حِبَّانَ.

وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ، وَقَالَ الْحَاكِمُ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत अबू हुरैरा رضی الله عنه से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः मोमिनीन में से कामिल मोमिन वो है जो उन में से बेहतरीन अख़्लाक़ का मालिक है और तुम में से बेहतरीन शख़्स वो है जो अपनी बीवी के लिए बेहतरीन है।''

٩٣٣/ ٥٩. عَنْ عَائِشَةَ رضي الله عنها أَنَّهَا قَالَتْ: أَمَرَنَا رَسُوْلُ اللهِ ﷺ أَنْ نُنَزِّلَ النَّاسَ مَنَازِلَهُمْ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ.

الحديث رقم ٥٨: أخرجه الترمذى فى السنن، كتاب: الرضاع عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء فى حق المرأة على زوجها، ٣/ ٤٦٦، الرقم: ١١٦٢، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٢/ ٤٧٢، الرقم: ١٠١١٠، وابن حبان فى الصحيح، ٢/ ٢٢٧، الرقم: ٤٧٩، والحاكم فى المستدرك، ١/ ٤٣، الرقم: ٢، والدارمى فى السنن، ٢/ ٤١٥، الرقم: ٢٧٩٢، وأبو يعلى فى المسند، ٧/ ٢٣٧، الرقم: ٤٢٤٠.

الحديث رقم ٥٩: أخرجه مسلم فى الصحيح، المقدمة، ١/ ٦، وأبو يعلى فى المسند، ٨/ ٢٤٦، الرقم: ٤٨٢٦، والبيهقى فى شعب الإيمان، ٧/ ٤٦٢، الرقم: ١٠٩٩٩، وأحمد بن حنبل فى الزهد، ١/ ٥٠، الرقم: ٩١، والحكيم الترمذى فى نوادر الأصول، ١/ ٤٠٩.

''हज़रत आइशा सिद्दीक़ा رضي الله عنها फरमाती हैं कि हमें हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने हुक्म दिया है कि हम लोगों को उनके मक़ामो मर्तबे के मुताबिक जगह दें।''

٩٣٤ / ٦٠ ـ عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ رضي الله عنه أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: إِيَّاكُمْ وَالْجُلُوْسَ بِالطُّرُقَاتِ. فَقَالُوْا يَا رَسُوْلَ اللهِ، مَا لَنَا مِنْ مَجَالِسِنَا بُدٌّ نَتَحَدَّثُ فِيْهَا، فَقَالَ: إِذْ أَبَيْتُمْ إِلَّا الْمَجْلِسَ، فَأَعْطُوا الطَّرِيقَ حَقَّهُ. قَالُوْا: وَمَا حَقُّ الطَّرِيْقِ يَا رَسُوْلَ اللهِ؟ قَالَ: غَضُّ الْبَصَرِ، وَكَفُّ الْأَذَى، وَرَدُّ السَّلَامِ، وَالْأَمْرُ بِالْمَعْرُوْفِ، وَالنَّهْيُ عَنِ الْمُنْكَرِ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अबू सईद ख़ुदरी رضي الله عنه से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः रास्तों में बैठने से बचते रहना। सहाबा ने अ़र्ज़ कियाः या रसूलल्लाह ! हमें ऐसी जगहों पर बैठने के सिवा चारएकार नहीं। क्योंकि हम बातचीत करते हैं। आप ﷺ ने फरमायाः अगर तुम्हारा (रास्तों की) मजालिस में बैठना ज़रूरी है तो रास्ते का हक़ अदा कर दिया करो। अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! रास्ते का हक़ क्या है ? आप ﷺ ने फरमाया : नज़र नीचे रखना, तकलीफ़ देने वाली चीज़ का रास्ते से हटा देना, सलाम का जवाब देना, अच्छी बातों का हुक्म देना और बुरी बातों से मना करना (रास्ते का हक़ है)।''

الحديث رقم ٦٠: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: : الاستئذان، باب: (٢)، ٥/ ٢٣٠٠، الرقم: ٥٨٧٥، وفى كتاب: المظالم، باب: أَفنِيَةِ الدُّورِ والجُلُوسِ فِيها والجُلُوسِ عَلَى الصُّعُدَاتِ، ٢/ ٨٧٠، الرقم: ٢٣٣٣، ومسلم فى الصحيح، كتاب: اللباس والزينة، باب: النهى عن الجلوس فى الطرقات واعطاء الطريق حقه، ٤/ ١٧٠٤، الرقم: ٢١٢١، وأبوداود فى السنن، كتاب: الأدب، باب: فى الجلوس بالطرقات، ٤/ ٢٥٦، الرقم: ٤٨١٥، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٣/ ٤٧، الرقم: ١١٤٥٤، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٧/ ٨٩، الرقم: ١٣٢٩١، وفى شعب الإيمان، ٤/ ٣٦٤، الرقم: ٥٤٢٣، ٩٠٨٦.

बाब 15 :

اَلْبَابُ الْخَامِسُ عَشَرَ:

الآدَابُ وَالْمُعَامَلَةُ

आदाब और मुआमलात

1. فَصْلٌ فِي آدَابِ اللِّقَاءِ وَالسَّلَامِ

मुलाक़ात और सलाम के आदाब का बयान

2. فَصْلٌ فِي آدَابِ حُسْنِ الْكَلَامِ

आदाबे गुफ़्तगू का बयान

3. فَصْلٌ فِي آدَابِ الشُّرْبِ وَالطَّعَامِ

खाने–पीने के आदाब का बयान

4. فَصْلٌ فِي مُعَامَلَةِ الْمُؤْمِنِ بِالْمُؤْمِنِ

मोमिन के मोमिन के साथ मुआमलात का बयान

5. فَصْلٌ فِي آدَابِ اللِّبَاسِ

आदाबे लिबास का बयान

6. فَصْلٌ فِي آدَابِ الْمَجْلِسِ وَالْجُلُوسِ

मजलिस में बैठने के आदाब का बयान

7. فَصْلٌ فِي آدَابِ السَّفَرِ

आदाबे सफ़र का बयान

8. فَصْلٌ فِي آدَابِ الْأَمْوَاتِ وَالْجَنَائِزِ

मरहूमीन और जनाज़े के आदाब का बयान

9. فَصْلٌ فِي جَامِعِ الآدَابِ

जामेअ आदाब का बयान

فَصْلٌ فِي آدَابِ اللِّقَاءِ وَالسَّلَامِ

﴾मुलाक़ात और सलाम के आदाब का बयान﴿

١/٩٣٥۔ عَنْ عَائِشَةَ رضي الله عنها أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ لَهَا: يَا عَائِشَةُ! هَذَا جِبْرِيْلُ يَقْرَأُ عَلَيْکِ السَّـلَامُ. فَقَالَتْ: وَعَلَيْهِ السَّـلَامُ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهُ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत आइशा सिद्दीक़ा رضي الله عنها बयान करती हैं कि मुझे हुज़ूर नबी-ए-अकरम ﷺ ने फरमायाः ऐ आइशा! यह जिब्राईल तुम्हें सलाम कहते हैं। हज़रत आइशा رضي الله عنها फरमाती हैं कि मैंने अ़र्ज़ किया: और तुम पर भी सलाम हो और अल्लाह तआ़ला की रहमत और

الحديث رقم ١: أخرجه البخاری فی الصحيح، كتاب : بدء الخلق،باب: ذكر الملائكة، ١١٧٧/٣، الرقم: ٣٠٤٥، وفی كتاب: فضائل الصحابة، باب: فضل عائشة رضی الله عنها، ١٣٧٤/٣، الرقم: ٣٥٥٧، وفی كتاب: الأدب، باب: مَن دعا صاحبه فنقص من اسمه حرفا، ٢٢٩١/٥، الرقم: ٥٨٤٨: وفی كتاب: الاستئذان، باب: تسليم الرجال على النساء، والنساء على الرجال، ٢٣٠٦/٥، الرقم: ٥٨٩٥، وفی باب: إذا قال: فلانٌ يُقرئك السلام، ٢٣٠٧/٥، الرقم: ٥٨٩٨، ومسلم فی الصحيح، كتاب: فضائل الصحابة، باب: فی فضل عائشة رضی الله عنها، ١٨٩٥/٤، الرقم: ٢٤٤٧، والترمذی فی السنن، كتاب: المناقب عن رسول الله ﷺ ،باب: فضل عائشة رضی الله عنها، ٧٠٥/٥، الرقم: ٣٨٨٢، وقال أبوعيسى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ، وأبوداود فی السنن، كتاب: الأدب، باب: فی الرجل يقول فلان يقرئك السلام، ٣٥٩/٤، الرقم: ٥٢٣٢، والنسائی فی السنن، كتاب: عشرة النساء، باب: حب الرجل بعض نسائه أكثر من بعض، ٦٩/٧، الرقم:٣٩٥٣، وابن حبان فی الصحيح، ١١/١٦، الرقم: ٧٠٩٨، والدارمی فی السنن، ٣٥٩/٢، الرقم: ٢٦٣٨۔

الحديث رقم ٢: أخرجه البخاری فی الصحيح، كتاب: الإيمان، باب: إطعام الطعام مِنَ الإسلام، ١٣/١، الرقم: ١٢، وفی باب: إفشاء السلام مِن الإسلام، ١٩/١، الرقم: ٢٨، وفی كتاب: الاستئذان، باب: السلام للمعرفة وغير المعرفة، ←

बरकतें नाज़िल हों।''

٢/٩٣٦۔ عَنْ عَبْدِ اللهِ ابْنِ عَمْرٍو رضي الله عنهما أَنَّ رَجُلًا سَأَلَ النَّبِيَّ ﷺ: أَيُّ الإِسْلَامِ خَيْرٌ؟ قَالَ: تُطْعِمُ الطَّعَامَ، وَتَقْرَأُ السَّلَامَ عَلَى مَنْ عَرَفْتَ وَمَنْ لَمْ تَعْرِفْ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رضی اللہ عنہما से मरवी है कि एक आदमी ने सवाल किया: या रसूलल्लाह! सबसे बेहतर इस्लाम (में अ़मल) क्या है? आप ﷺ ने फरमाया: (बेहतर इस्लाम यह है कि तुम) दूसरों को खाना खिलाओ और (हर एक को) सलाम करो, चाहे तुम उसे जानते हो या नहीं जानते हो।''

٣/٩٣٧۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ، قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: يُسَلِّمُ الرَّاكِبُ عَلَى الْمَاشِي، وَالْمَاشِي عَلَى الْقَاعِدِ، وَالْقَلِيْلُ عَلَى الْكَثِيرِ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

.... ٥/٢٣٠٢، الرقم: ٥٨٨٢، ومسلم في الصحيح، كتاب: الإيمان، باب: بيان تفاضل الإسلام ونصف أموره أفضل، ١/٦٥، الرقم: ٣٩، وأبو داود في السنن، كتاب: الأدب، باب: في إفشاء السلام، ٤/٣٥٠، الرقم: ٥١٩٤، والنسائي في السنن، كتاب: الإيمان وشرائعه، باب: أي الإسلام خير، ٨/١٠٧، الرقم: ٥٠٠٠، وابن ماجه في السنن، كتاب: الأطعمة، باب: سنان الطعام، ٢/١٠٨٣، الرقم: ٣٢٥٣۔

الحديث رقم ٣: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: الاستئذان، باب: تسليم القليل على الكثير، ٥/٢٣٠١، الرقم: ٥٨٧٧۔٥٨٧٨، وفي باب: يسلم الماشي على القاعد، ١٥/٢٣٠٢، الرقم: ٥٨٧٩۔٥٨٨٠، ومسلم في الصحيح، كتاب: السلام، باب: يسلم الراكب على الماشي والقليل على الكثير، ٤/١٧٠٣، الرقم: ٢١٦٠، والترمذي في السنن، كتاب: الاستئذان والآداب عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء في تسليم الراكب على الماشي، ٥/٦١۔٦٢، الرقم: ٢٧٠٣۔٢٧٠٥، وقال أبوعيسى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ، وأبو داود في السنن، كتاب: الأدب ،باب: من أولى بالسلام، ٤/٣٥١، الرقم: ٥١٩٨۔٥١٩٩، وابن حبان في الصحيح، ٢/٢٥١، الرقم: ٤٩٨، وأحمد بن حنبل في المسند، ٢/٣٢٥، الرقم: ٨٢٩٥۔

وفي رواية للبخاري: وَالصَّغِيْرُ عَلَى الْكَبِيْرِ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः सवार पैदल चलने वाले को सलाम करे, पैदल चलने वाला बैठे हुए को सलाम करे, और थोड़े आदमी ज़्यादा तादाद वालों को सलाम करें।''

और इमाम बुख़ारी की एक और रिवायत में यह अल्फ़ाज़ भी हैं, ''छोटा बड़े को सलाम करे।''

٩٣٨ / ٤. عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَا تَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ حَتَّى تُؤْمِنُوْا وَلَا تُؤْمِنُوْا حَتَّى تَحَابُّوْا، أَوَلَا أَدُلُّكُمْ عَلَى شَيءٍ إِذَا فَعَلْتُمُوْهُ تَحَابَبْتُمْ؟ أَفْشُوْا السَّلَامَ بَيْنَكُمْ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَالتِّرْمِذِيُّ.

وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : तुम जन्नत में उस वक़्त तक दाखिल नहीं होगे जब तक तुम ईमान न लाओ, और तुम उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकते जब तक तुम एक–दूसरे से मुहब्बत न करो। क्या मैं तुम्हें ऐसी चीज़ न बताऊँ जिस पर तुम अ़मल करो तो एक–दूसरे से मुहब्बत करने लगो? (और वो अ़मल यह है

الحديث رقم ٤: أخرجه مسلم في الصحيح، كتاب:الإيمان،باب:بيان أنه لا يدخل الجنة إلا المؤمنون وأن محبة المؤمنين من الإيمان وأن إفشاء السلام سبب لحصولها، ١/ ٧٤، الرقم: ٥٤، والترمذي في السنن، كتاب: الاستئذان والآداب عن رسول الله ﷺ ،باب: ماجاء في إفشاء السلام، ٥/ ٥٢، الرقم: ٢٦٨٨، وأبوداود في السنن، كتاب: الأدب، باب: في إفشاء السلام، ٤/ ٣٥٠، الرقم: ٥١٩٣، وابن ماجه في السنن، المقدمة، باب: في الإيمان، ١/ ٢٦، الرقم: ٦٨، وفي كتاب: الأدب، باب: إفشاء السلام، ٢/ ١٢١٧، الرقم: ٣٦٩٢، وابن حبان في الصحيح، ١/ ٤٧،الرقم: ٢٣٦، وأحمد بن حنبل في المسند، ٢/ ٥١٢، الرقم: ١٠٦٥٨، وأبوعوانة في المسند،١/ ٣٨، الرقم: ٨٣، وابن أبي شيبة في المصنف، ٥/ ٢٤٨، الرقم: ٢٥٧٤٢، والبيهقي في شعب الإيمان، ٦/ ٤٢٣، الرقم: ٨٧٤٥، وابن منده في الإيمان، ١/ ٤٦٣، الرقم: ٣٣٠.

الحديث رقم ٥: أخرجه الترمذي في السنن، كتاب:الاستئذان والآداب عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء في كراهية أن يقول: عليك السلام مبتدئا، ٥/ ٧١، الرقم: ←

कि) अपने दरमियान सलाम को फैलाया करो (यानी कसरत से एक–दूसरे को सलाम किया करो)।''

٩٣٩ / ٥۔ عَنْ جَابِرِ بْنِ سُلَيْمٍ رضي الله عنه قَالَ: أَتَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ، فَقُلْتُ: عَلَيْكَ السَّلَامُ يَا رَسُوْلَ اللهِ! قَالَ: لَا تَقُلْ عَلَيْكَ السَّلَامُ، فَإِنَّ عَلَيْكَ السَّلَامُ تَحِيَّةُ الْمَوْتَى. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُوْدَاوُدَ وَاللَّفْظُ لَهُ.

وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत जाबिर बिन सुलैम रضي الله عنه से रिवायत करते हैं कि मैं हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अ़र्ज़ किया: अ़लैकस्सलाम या रसूलल्लाह! आप ﷺ ने फरमाया: अ़लैकस्सलाम न कहो, यह मुर्दों का सलाम है (बल्कि अस्सलामु अ़लैकुम कहा करो)।''

٩٤٠ / ٦۔ عَنْ أَبِي أُمَامَةَ رضي الله عنه قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: أَنَّ أَوْلَى النَّاسِ بِاللهِ تَعَالَى مَنْ بَدَأَهُمْ بِالسَّلَامِ. رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ وَالْبَيْهَقِيُّ.

.... ٢٧٢١، وأبوداود فی السنن، کتاب: الأدب، باب: کراهية أن يقول عليك السلام، ٤ / ٣٥٣، الرقم: ٥٢٠٩، والنسائی فی السنن الکبری، ٦ / ٨٧، الرقم: ١٠١٤٩، والحاکم فی المستدرک، ٤ / ٢٠٦، الرقم: ٧٣٨٢، وقال: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحٌ، وأحمد بن حنبل فی المسند، ٣ / ٤٨٢، وابن أبی شيبة فی المصنف، ٥ / ١٦٦، الرقم: ٢٤٨٢٢۔

الحديث رقم ٦: أخرجه أبوداود فی السنن، کتاب: الأدب، باب: فی فضل من بدأ بالسلام، ٤ / ٣٥١، الرقم: ٥١٩٧، والبيهقی فی شعب الإيمان، ٦ / ٤٣٣، الرقم: ٨٧٨٧، والمنذری فی الترغيب والترهيب، ٣ / ٢٨٦، الرقم: ٤٠٩٤۔

الحديث رقم ٧: أخرجه البخاری فی الصحيح، کتاب: الاستئذان، باب: التسليم فی مجلس فيه أخلاط من المسلمين والمشرکين، ٥ / ٢٣٠٧، الرقم: ٥٨٩٩، وفی کتاب: تفسير آل عمران، باب: وَلَتَسْمَعُنَّ مِنَ الَّذِيْنَ أُوتُوْا الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَمِنَ الَّذِيْنَ أَشْرَكُوْا أَذًى كَثِيْرًا: (١٨٦)، ٤ / ١٦٦٣، الرقم: ٤٢٩٠، وفی کتاب: المرضی، باب: عيادة المريض راکبا وماشيا وردفا علی الحمار، ٥ / ٢١٤٣، الرقم: ٥٣٣٩، وفی کتاب: الأدب، باب: کنية المشرک، ٥ / ٢٢٩٢، الرقم: ٥٨٥٤، ومسلم فی الصحيح، کتاب: الجهاد والسير، باب: فی دعاء النبی ﷺ وصبره علی ←

''हज़रत अबू उमामा ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः लोगों में से अल्लाह तआला के ज़्यादा करीब वो शख़्स है जो लोगों को सलाम करने में पहल करे।''

٩٤١ / ٧۔ عَنْ أُسَامَةَ ﷺ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ مَرَّ عَلَى مَجْلِسٍ فِيْهِ أَخْلَاطٌ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُشْرِكِيْنَ ...... عَبَدَةِ الْأَوْثَانِ وَالْيَهُوْدِ ...... فَسَلَّمَ عَلَيْهِمُ النَّبِيُّ ﷺ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत उसामा ﷺ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ एक ऐसी मजलिस के पास से गुज़रे जिसमें मुसलमान, मुशरिक, बुत परस्त और यहूदी सभी जमा थे तो हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने उन्हें सलाम किया।''

٩٤٢ / ٨۔ عَنْ كَلَدَةَ بْنِ حَنْبَلٍ ﷺ، قَالَ: أَتَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ فَدَخَلْتُ عَلَيْهِ وَلَمْ أُسَلِّمْ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ارْجِعْ، فَقُلْ: السَّلَامُ عَلَيْكُمْ أَ أَدْخُلُ؟

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُوْدَاوُدَ.

وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ.

''हज़रत कलदा बिन हम्बल ﷺ रिवायत करते हैं कि मैं हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। मैं आप ﷺ के पास अन्दर दाख़िल हुआ और सलाम न किया तो

...... أذى المنافقين، ٣/١٤٢٢، الرقم: ١٧٩٨، والترمذى فى السنن، كتاب: الاستئذان والآداب عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء فى السلام على مجلس فيه المسلمون وغيرهم، ٥/٦١، الرقم: ٢٧٠٢، وَقَالَ أَبوعِيسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ، والنسائى فى السنن الكبرى، ٤/٣٥٦، الرقم: ٧٥٠٢، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٥/٢٠٣، الرقم: ٢١٨١٥۔

الحديث رقم ٨: أخرجه الترمذى فى السنن، كتاب: الاستئذان والآداب عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء فى التسليم قبل الاستئذان، ٥/٦٤، الرقم: ٢٧١٠، وأبو داود فى السنن، كتاب: الأدب، باب: كيف الاستئذان، ٤/٣٤٤، الرقم: ٥١٧٦، والنسائى فى السنن الكبرى، ٤/١٦٩، الرقم: ٦٧٣٥: ٦/٨٧، الرقم: ١٠١٤٧، والبخارى فى الأدب المفرد، ١/٣٧١، الرقم: ١٠٨١، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٣/٤١٤، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٨/٣٣٩، والشيبانى فى الآحاد والمثانى، ٢/٩٦، الرقم: ٧٩٤۔

الحديث رقم ٩: أخرجه الترمذي فى السنن، كتاب: الاستئذان والآداب عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء فى التسليم إذا دخل بيته، ٥/٥٩، الرقم: ٢٦٩٨، ←

हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : लौट जाओ और कहोः अस्सलामु अलैकुम, क्या मैं दाख़िल हो सकता हूँ ?''

٩٤٣ / ٩. عَنْ أَنَسٍ رضي الله عنه قَالَ: قَالَ لِي رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: يَا بُنَيَّ! إِذَا دَخَلْتَ عَلَى أَهْلِكَ، فَسَلِّمْ، يَكُنْ بَرَكَةً عَلَيْكَ وَعَلَى أَهْلِ بَيْتِكَ.

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ.

وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत अनस रضي الله عنه रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने उन्हें फरमायाः बेटे! जब घर में दाख़िल हो तो घर वालों को सलाम किया करो, यह तुम्हारे अहले ख़ाना के लिए बाइसे बरकत होगा।''

٩٤٤ / ١٠. عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رضي الله عنه قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: إِذَا سَلَّمَ عَلَيْكُمْ أَهْلُ الْكِتَابِ فَقُوْلُوْا: وَعَلَيْكُمْ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अनस रضي الله عنه से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : अहले किताब में से कोई तुम्हें सलाम कहे तो तुम यूँ कहो ﴿وَ عَلَيْكُمْ﴾ और तुम पर भी।''

٩٤٥ / ١١. عَنْ جَرِيْرٍ رضي الله عنه قَالَ: مَرَّ النَّبِيُّ ﷺ عَلَى نِسْوَةٍ فَسَلَّمَ عَلَيْهِنَّ. رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالطَّبَرَانِيُّ.

.... والطبراني في المعجم الأوسط، ٦/ ١٢٣، الرقم: ٥٩٩١، وفي المعجم الصغير، ٢/ ١٠٢، الرقم: ٨٥٦، والمنذري في الترغيب والترهيب، ٢/ ٣٠٥، الرقم: ٢٤٠٩.

الحديث رقم ١٠: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: الاستئذان، باب: كيف الردّ على أهل الذمة بالسلام، ٥/ ٢٣٠٩، الرقم: ٥٩٠٣، ومسلم في الصحيح، كتاب: السلام، باب: النهي عن ابتداء أهل الكتاب بالسلام وكيف يرد عليهم، ٤/ ١٧٠٥، الرقم: ٢١٦٣، وأحمد بن حنبل في المسند، ٣/ ٩٩، الرقم: ١١٩٤٤، وأبو يعلى في المسند، ٥/ ٢٩٥، الرقم: ٢٩١٦، والبيهقي في شعب الإيمان، ٦/ ٥١٢، الرقم: ٩١٠٢، والمنذري في الترغيب والترهيب، ٣/ ٢٩٢، الرقم: ٤١٢٧.

الحديث رقم ١١: أخرجه أحمد بن حنبل في المسند، ٣/ ٣٥٨، الرقم: ١٩٣٦٧: ٣/ ٣٦٣، الرقم: ١٩٤٢٦، والطبراني نحوه في المعجم الأوسط، ٤/ ١١٨، الرقم: ٣٧٥٩، والخطيب التبريزي في مشكاة المصابيح، ٢/ ١٦٤، الرقم: ٤٦٤٧.

''हज़रत जरीर ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ कुछ औरतों के पास से गुज़रे तो आप ﷺ ने उन्हें सलाम किया।''

٩٤٦ / ١٢۔ عَنْ قَتَادَةَ قَالَ: قُلْتُ لِأَنَسٍ ﷺ: أَكَانَتِ الْمُصَافَحَةُ فِي أَصْحَابِ النَّبِيِّ ﷺ؟ قَالَ: نَعَمْ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ وَابْنُ حِبَّانَ.

''हज़रत क़तादा ﷺ से रिवायत है कि उन्होंने हज़रत अनस ﷺ से अर्ज़ किया : क्या हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के सहाबा में मुसाफ़हा मुरव्विज था ? उन्होंने फरमाया : हाँ।''

٩٤٧ / ١٣۔ عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَا مِنْ مُسْلِمَيْنِ يَلْتَقِيَانِ فَيَتَصَافَحَانِ، إِلَّا غُفِرَ لَهُمَا قَبْلَ أَنْ يَفْتَرِقَا.

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُوْدَاوُدَ.

وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ.

''हज़रत बरा बिन आज़िब ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : जब भी दो मुसलमान आपस में मिलते हैं और मुसाफ़हा करते हैं तो अलैहदा होने से पहले ही उनके गुनाह बख़्श दिए जाते हैं।''

الحديث رقم ١٢: أخرجه البخاری فی الصحيح، کتاب: الاستئذان، باب: المصافحة، ٥ / ٢٣١١، الرقم: ٥٩٠٨، وابن حبان فی الصحيح، ٢ / ٢٤٥، الرقم: ٤٩٢، وأبويعلی فی المسند، ٥ / ٢٥٢، الرقم: ٢٨٧١، والبيهقی فی السنن الکبری، ٧ / ٩٩، الرقم: ١٣٣٤٦، وفی شعب الإيمان، ٦ / ٤٧١، الرقم: ٨٩٤٢، والمنذری فی الترغيب والترهيب، ٣ / ٢٩١، الرقم: ٤١٢١.

الحديث رقم ١٣: أخرجه الترمذي فی السنن، کتاب: الاستئذان والآداب عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء فی المصافحة، ٥ / ٧٤، الرقم: ٢٧٢٧، وأبوداود فی السنن، کتاب: الأدب، باب: فی المصافحة، ٤ / ٣٥٤، الرقم: ٥٢١١۔٥٢١٢، وابن ماجه فی السنن، کتاب الأدب، باب: المصافحة، ٢ / ١٢٢٠، الرقم: ٣٧٠٣، وأحمد بن حنبل فی المسند، ٤ / ٢٨٩،٣٠٣، وابن أبی شيبة فی المصنف، ٥ / ٢٤٦، الرقم: ٢٥٧١٧، والبيهقی فی السنن الکبری، ٧ / ٩٩، الرقم: ١٣٣٤٩، والمنذری فی الترغيب والترهيب، ٣ / ٢٨٩، الرقم: ٤١١٠.

الحديث رقم ١٤: أخرجه البخاری فی الصحيح، کتاب: الأدب، باب: التبسم والضَّحِكِ، ٥ / ٢٢٦١، الرقم: ٥٧٤١، وفی کتاب: التفسير / الأحقاف، باب: قوله: ←

٩٤٨ / ١٤۔ عَنْ عَائِشَةَ رضي الله عنها قَالَتْ: مَا رَأَيْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ مُسْتَجْمِعًا قَطُّ ضَاحِكًا حَتَّى أَرَى مِنْهُ لَهَوَاتِهِ، إِنَّمَا كَانَ يَتَبَسَّمُ.

مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत आइशा رضی الله عنها से रिवायत है कि मैंने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ को कभी इस तरह खुलकर (यानी क़हक़हा लगा कर) हँसते नहीं देखा कि आप ﷺ का हलक़ मुबारक भी देख लेती, आप ﷺ सिर्फ़ मुस्कुराया करते थे।''

٩٤٩ / ١٥۔ عَنْ جَرِيْرٍ ﷺ قَالَ: مَا حَجَبَنِي النَّبِيُّ ﷺ مُنْذُ أَسْلَمْتُ، وَلاَ رَآنِي إِلاَّ تَبَسَّمَ فِي وَجْهِي. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत जरीर ﷺ बयान करते हैं कि जब से मैं दायर–ए–इस्लाम में दाख़िल हुआ उस वक़्त से हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ मुझसे जब भी पर्दे में हुए या मुझे देखा, मेरे सामने ज़रूर मुस्कुराए। (यानी किसी क़िस्म का कोई हिजाब नहीं रखा, जबकि आप ﷺ मुझे देखते तो

.... فَلَمَّا رَأَوْهُ عَارِضًا مُسْتَقْبِلَ أَوْدِيَتِهِمْ قَالُوا هَذَا عَارِضٌ مُمْطِرُنَا بَلْ هُوَ مَا اسْتَعْجَلْتُمْ بِهِ رِيحٌ فِيهَا عَذَابٌ أَلِيمٌ: [٢٤]، ٤ / ١٨٢٧، الرقم: ٤٥٥١، ومسلم فى الصحيح، كتاب: صلاة الاستسقاء، باب: التعوذ عند رؤية الريح والغيم والفرح بالمطر، ٢ / ٦١٦، الرقم: ٨٩٩، وأبوداود فى السنن، كتاب: الأدب، باب: مايقول إذا هاجت الريح، ٤ / ٣٢٦، الرقم: ٥٠٩٨، والبخارى فى الأدب المفرد، ١ / ٩٧، الرقم: ٢٥١، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٦ / ٦٦، الرقم: ٢٤٤١٤، والحاكم فى المستدرك، ٢ / ٤٩٥، الرقم: ٣٧٠٠۔

الحديث رقم ١٥: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: الجهاد، باب: مَن لا يَثْبُتُ على الخَيْلِ، ٣ / ١١٠٤، الرقم: ٢٨٧١، وفى كتاب: الأدب، باب: التبسم والضحك، ٥ / ٢٢٦٠، الرقم: ٥٧٣٩، ومسلم فى الصحيح، كتاب: فضائل الصحابة ﷺ، باب: من فضائل جرير بن عبد الله ﷺ، ٤ / ١٩٢٥، الرقم: ٢٤٧٥، والترمذى فى السنن، كتاب: المناقب عن رسول الله ﷺ، باب: مناقب جرير بن عبد الله البجلى ﷺ، ٥ / ٦٧٩، الرقم: ٣٨٢١، وقال أبوعيسى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ، وابن ماجه فى السنن، المقدمة، باب: فضل جرير بن عبد الله البجلى، ١ / ٥٦، الرقم: ١٥٩، والطبرانى فى المعجم الكبير، ٢ / ٢٩٣، الرقم: ٢٢١٩۔

चेहर–ए–अनवर तबस्सुम रेज़ हो जाता)।''

٩٥٠/١٦۔ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ الْحَارِثِ بْنِ جَزْءٍ ﷺ قَالَ: مَا رَأَيْتُ أَحَدًا أَكْثَرَ تَبَسُّمًا مِنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَحْمَدُ.

وَقَالَ أَبُوْعِيسَى: هٰذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ.

''हज़रत अब्दुल्लाह बिन हारिस इब्ने जज़ ﷺ बयान करते हैं कि मैंने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ से ज़्यादा (ख़ूबसूरत) मुस्कुराने वाला कोई नहीं देखा।''

الحديث رقم ١٦: أخرجه الترمذي فى السنن، كتاب: المناقب عن رسول الله ﷺ، باب: فى بشاشة النبي ﷺ، ٥/٦٠١، الرقم: ٣٦٤١، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٤/١٩١، والبيهقى فى شعب الإيمان، ٦/٢٥١، الرقم: ٨٠٤٧، والمقدسى فى الأحاديث المختارة، ٩/٢٠٥، الرقم: ١٨٩، وابن المبارك فى الزهد، ١/٤٧، الرقم: ١٤٥۔

فَصْلٌ فِي آدَابِ حُسْنِ الكَلَامِ

﴿आदाबे गुफ़्तगू का बयान﴾

١٧/٩٥١۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ وَعَلِيِّ بْنِ حُسَيْنٍ رضي الله عنهما قَالَا: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مِنْ حُسْنِ إِسْلَامِ الْمَرْءِ تَرْكُهُ مَا لَا يَعْنِيْهِ.

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَه وَمَالِكٌ.

''हज़रत अबू हुरैरा और हज़रत अ़ली बिन हुसैन (यानी इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन) रज़ि. रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः किसी शख़्स के इस्लाम की ख़ूबसूरती यह है कि वो बे फ़ायदा चीज़ों को तर्क कर दे।''

١٨/٩٥٢۔ عَنْ عَبْدِ اللهِ رضي الله عنه قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَيْسَ الْمُؤْمِنُ بِالطَّعَّانِ وَلَا اللَّعَّانِ وَلَا الْفَاحِشِ وَلَا الْبَذِيءِ.

رَوَهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ حِبَّانَ وَالْحَاكِمُ.

وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ.

الحديث رقم ١٧: أخرجه الترمذى فى السنن، كتاب: الزهد، باب: فيمن تكلم بكلمة يضحك بها الناس، ٤/٥٥٨، الرقم: ٢٣١٧-٢٣١٨، وابن ماجه فى السنن، كتاب: الزهد، باب: كف اللسان فى الفتنة، ٢/١٣١٥، الرقم: ٣٩٧٦، ومالك فى الموطأ، ٢/٩٠٣، الرقم: ١٦٠٤، وابن حبان فى الصحيح، ١/٤٦٦، الرقم: ٢٢٩، وأحمد بن حنبل فى المسند، ١/٢٠١، الرقم: ١٧٣٧۔

الحديث رقم ١٨: أخرجه الترمذى فى السنن، كتاب: البر والصلة عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء فى اللعنة، ٤/٣٥٠، الرقم: ١٩٧٧، والبخارى فى الأدب المفرد، ١/١١٦، الرقم: ٣١٢، ٣٣٢، وابن حبان فى الصحيح، ١/٤٢١، الرقم: ١٩٢، والحاكم فى المستدرك، ١/٥٧، الرقم: ٢٩: وَ قَالَ الْحَاكِمُ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحٌ، والبزار فى المسند، ٤/٣٣٠، الرقم: ١٥٢٣، والبيهقى فى السنن الكبرى، ١٠/١٩٣۔

''हज़रत अब्दुल्लाह (बिन मस्ऊद) ﷺ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः कोई भी मोमिन बहुत ज़्यादा ता'ना ज़नी करने वाला, बहुत ज़्यादा लानत करने वाला, बहुत ज़्यादा बद अख़्लाक़, फ़हशगोई करने वाला नहीं होता।''

٩٥٣ / ١٩۔ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رضي الله عنهما قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: لَا يَكُوْنُ الْمُؤْمِنُ لَعَّانًا. وفي رواية: لَا يَنْبَغِي لِلْمُؤْمِنِ أَنْ يَكُوْنَ لَعَّانًا.

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالْبُخَارِيُّ فِي الْأَدَبِ وَالْحَاكِمُ.

وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: هٰذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ.

''हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर رضی اللہ عنہما से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः मोमिन ला'नत करने वाला नहीं होता। एक रिवायत में है कि मोमिन की यह शान नहीं की वो ज़्यादा ला'नत करने वाला हो।''

٩٥٤ / ٢٠۔ عَنِ الْمِقْدَادِ بْنِ الْأَسْوَدِ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِذَا رَأَيْتُمُ الْمَدَّاحِيْنَ، فَاحْثُوْا فِي وُجُوْهِهِمُ التُّرَابَ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَالتِّرْمِذِيُّ.

''हज़रत मिक़दाद बिन अस्वद ﷺ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जब तुम ख़ुशामद करने वालों को देखो तो उनके मुँह में मिट्टी डाल दो।''

الحديث رقم ١٩: أخرجه الترمذى فى السنن، كتاب: البر والصلة عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء فى اللعن والطعن، ٤ / ٣٧١، الرقم: ٢٠١٩، والبخارى فى الأدب المفرد، ١ / ١١٦، الرقم: ٣٠٩، والحاكم فى المستدرك، ١ / ١١٠، الرقم: ١٤٥، والبيهقى فى شعب الإيمان، ٤ / ٢٩٣، الرقم: ٥١٥١، وابن أبى عاصم فى السنة، ٢ / ٤٨٨۔

الحديث رقم ٢٠: أخرجه مسلم فى الصحيح، كتاب: الزهد والرقائق، باب: النهى عن المدح إذا كان فيه إفراط وخيف منه فتنة على الممدوح، ٤ / ٢٢٩٧، الرقم: ٣٠٠٢، والترمذى فى السنن، كتاب: الزهد عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء فى كراهية المدحة والمداحين، ٤ / ٥١٨، الرقم: ٢٣٩٣، وأبو داود فى السنن، كتاب: الأدب، باب: فى كراهية التمادح، ٤ / ٢٥٤، الرقم: ٤٨٠٤، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٢ / ٩٤، الرقم: ٥٦٨٤، والبزار فى المسند، ٦ / ٣٧، الرقم: ٢١٠٦، وابن أبى شيبة فى المصنف، ٥ / ٢٩٧، الرقم: ٢٦٢٦٠۔

٩٥٥ / ٢١۔ عَنْ أَنَسٍ رضي الله عنه عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ كَانَ إِذَا تَكَلَّمَ بِكَلِمَةٍ أَعَادَهَا ثَـلَاثًا حَتَّى تُفْهَمَ عَنْهُ، وَإِذَا أَتَى عَلَى قَوْمٍ فَسَلَّمَ عَلَيْهِمْ ثَـلَاثًا.

رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ وَالتِّرْمِذِيُّ.

وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत अनस रضي الله عنه से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ जब कलाम फरमाते तो अपनी बात को तीन मर्तबा दोहराते थे ताकि लोग आप ﷺ की बात (अच्छी तरह) समझ सकें और जब आप ﷺ किसी जमाअत के पास तशरीफ़ ले जाते और उन्हें सलाम कहते तो तीन मर्तबा सलाम कहते (यह सलाम घर में दाख़िल होने की इजाज़त लेने के लिए होता वैसे किसी शख़्स को सलाम कहना हो तो एक मर्तबा ही काफ़ी है)।''

٩٥٦ / ٢٢۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضي الله عنه أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: لَا يَنْبَغِي لِصِدِّيْقٍ أَنْ يَكُوْنَ لَعَّانًا. رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَالتِّرْمِذِيُّ.

''हज़रत अबू हुरैरा रضي الله عنه से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः किसी

الحديث رقم ٢١: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: العلم، باب: مَن أعاد الحديث ثلاثا لِيُفْهَمَ عَنه، ١/ ٤٨، الرقم: (٩٥)، وفى كتاب: الاستئذان، باب: التسليم والاستئذان ثلاثا، ٥/ ٢٣٠٥، الرقم: ٥٨٩٠، والترمذى فى السنن، كتاب: الاستئذان والآداب عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء فى كراهية أن يقول عليك السلام مبتدئا، ٥/ ٧٢، الرقم: ٢٧٢٣، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٣/ ٢١٣، الرقم: ١٣٢٤٤، والحاكم فى المستدرك، ٤/ ٣٠٤، الرقم: ٧٧١٦، وَقَالَ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحٌ۔

الحديث رقم ٢٢: أخرجه مسلم فى الصحيح، كتاب: البر والصلة والآداب، باب: النهى عن لعن الدوابّ وغيرها، ٤/ ٢٠٠٥، الرقم: ٢٥٩٧، والترمذى نحوه فى السنن، كتاب: البر والصلة عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء فى اللّعن والطّعن، ٤/ ٣٢٥، الرقم: ٢٠١٩، والبيهقى فى السنن الكبرى، ١٠/ ١٩٣، وفى شعب الإيمان، ٤/ ٢٩٣، الرقم: ٥١٥١، والديلمى فى مسند الفردوس، ٥/ ١٣٦، الرقم: ٧٧٣٥، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٣/ ٣١٢، الرقم: ٤٢١١۔

(अच्छे) दोस्त को बहुत ला'न ता'न करने वाला नहीं होना चाहिए।''

٩٥٧ / ٢٣۔ عَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ ﷺ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: إِنَّ اللَّعَّانِيْنَ لَا يَكُوْنُوْنَ شُهَدَاءَ وَلَا شُفَعَاءَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ.

رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَأَحْمَدُ.

''हज़रत अबू दरदा ﷺ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : बहुत ज़्यादा ला'न ता'न करने वाले लोग क़ियामत के दिन न गवाही देने वाले होंगे और न शफ़ाअत करने वाले होंगे।''

٩٥٨ / ٢٤۔ عَنْ أُمِّ كُلْثُوْمٍ بِنْتِ عُقْبَةَ رضي الله عنها قَالَتْ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ: لَيْسَ الْكَذَّابُ الَّذِي يُصْلِحُ بَيْنَ النَّاسِ، فَيَنْمِي خَيْرًا أَوْ يَقُوْلُ خَيْرًا.

مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत उम्मे कुलसूम बिन्ते उक़्बा رضی اللہ عنہا से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः वो शख़्स झूठा नहीं जो (झूठ बोल कर) लोगों के दरमियान सुलह करवाता है पस (इस सुलह के लिए वो फ़रीक़ैन को एक–दूसरे के बारे में) भलाई की बात कहता है।''

الحديث رقم ٢٣: أخرجه مسلم فى الصحيح، كتاب: البر والصلة والآداب، باب: النهى عن لعن الدواب وغيرها، ٤ / ٢٠٠٦، الرقم: ٢٥٩٨، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٦ / ٤٤٨، الرقم: ٢٧٥٦٩، والبخارى فى الأدب المفرد، ١ / ١١٧، الرقم: ٣١٦، وابن حبان فى الصحيح، ١٣ / ٥٦، الرقم: ٥٧٤٦، والبيهقى فى السنن الكبرى، ١٠ / ١٩٣.

الحديث رقم ٢٤: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: الصلح، باب: ليس الكاذب الذي يصلح بين الناس، ٥ / ٩٥٨، الرقم: ٢٥٤٦، ومسلم فى الصحيح، كتاب: البر والصلة والآداب، باب: تحريم الكذب وبيان المباح منه، ٤ / ٢٠١١، الرقم: ٢٦٠٥، وابن حبان فى الصحيح، ١٣ / ٤٠، الرقم: ٥٧٣٣، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٦ / ٤٠٣، الرقم: ٢٧٣١٣، والطبرانى فى المعجم الكبير، ٢٥ / ٧٦، الرقم: ١٨٨.

٩٥٩ / ٢٥۔ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ رضی الله عنه عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ يَضْمَنْ لِي مَا بَيْنَ لَحْيَيْهِ وَمَا بَيْنَ رِجْلَيْهِ أَضْمَنْ لَهُ الْجَنَّةَ.

رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ وَالتِّرْمِذِيُّ.

''हज़रत सहल बिन सा'द رضی الله عنه से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जो मुझे दोनों जबड़ों के दरमियान (यानी अपनी ज़बान) और दोनों टाँगों के दरमियान (यानी अपनी शर्मगाह की हिफ़ाज़त) की जमानत दे तो मैं उसे जन्नत की ज़मानत देता हूँ।''

٩٦٠ / ٢٦۔ عَنْ عَبْدِ اللهِ رضی الله عنه أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: سِبَابُ الْمُسْلِمِ فُسُوْقٌ، وَقِتَالُهُ كُفْرٌ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अब्दुल्लाह (बिन मस्ऊद) رضی الله عنه से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : मुसलमान को गाली देना गुनाहे (कबीरा) और उसे क़त्ल करना कुफ़्र है।''

الحديث رقم ٢٥: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: الرقاق، باب: حفظ اللسان، ٥ / ٢٣٧٦، الرقم: ٦١٠٩، والترمذى فى السنن، كتاب: الزهد عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء فى حفظ اللسان، ٤ / ٦٠٦، الرقم: ٢٤٠٨، ومالك فى الموطأ، ٢ / ٩٨٧، الرقم: ١٧٨٧، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٥ / ٣٣٣، الرقم: ٢٢٨٧٤۔

الحديث رقم ٢٦: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: الإيمان، باب: خوف المؤمن من أن يحبط عمله وهولا يشهر، ١ / ٢٧، الرقم: ٤٨، وفى كتاب: الأدب: باب: ما ينهى من السباب واللعن، ٥ / ٢٢٤٧، الرقم: ٥٦٩٧، وفى كتاب: الفتن، باب: قول النبي ﷺ: لا ترجعوا بعدي كفارا يضرب بعضكم رقاب بعض، ٦ / ٢٥٩٢، الرقم: ٦٦٦٥، ومسلم فى الصحيح، كتاب: الإيمان، باب: بيان قول النبي ﷺ: سباب المسلم فسوق وقتاله كفر، ١ / ٨١، الرقم: ٦٤، والترمذى فى السنن، كتاب: البر والصلة عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء في الشتم، ٤ / ٣٥٣، الرقم: ١٩٨٣، والنسائى فى السنن، كتاب: تحريم الدم، باب: قتال المسلم، ٧ / ١٢١، الرقم: ٤١٠٥، وابن ماجه فى السنن، المقدمة، باب: فى الإيمان، ١ / ٢٧، الرقم: ٦٩۔

٩٦١ / ٢٧۔ عَنْ أَبِي ذَرٍّ رضي الله عنه أَنَّهُ سَمِعَ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ دَعَا رَجُلًا بِالْكُفْرِ، أَوْ قَالَ: عَدُوَّ اللهِ، وَلَيْسَ كَذٰلِكَ إِلَّا حَارَ عَلَيْهِ.

رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَأَحْمَدُ.

''हज़रत अबू ज़र رضي الله عنه से मरवी है कि उन्होंने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ को यह फरमाते हुए सुनाः जिसने किसी शख़्स को काफ़िर या दुश्मने ख़ुदा कहकर पुकारा हालांकि वो ऐसा नहीं है तो यह कुफ्र उस (कहने वाले) की तरफ़ लौट आएगा।''

٩٦٢ / ٢٨۔ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو رضي الله عنهما قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ صَمَتَ نَجَا. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالدَّارِمِيُّ وَأَحْمَدُ.

''हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र رضی اللہ عنہما से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : जिसने (बुरी बात से) ख़ामोशी इख़्तियार की वो निजात पा गया।''

٩٦٣ / ٢٩۔ عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ رضي الله عنه قَالَ: قُلْتُ: يَارَسُوْلَ اللهِ! مَا النَّجَاةُ؟ قَالَ: أَمْسِکْ عَلَيْکَ لِسَانَکَ، وَلْيَسَعْکَ بَيْتُکَ، وَابْکِ

الحديث رقم ٢٧: أخرجه مسلم فی الصحيح، کتاب: الإيمان، باب: حال إيمان من رغب عن أبيه وهو يعلم، ١ / ٧٩، الرقم: ٦١، وأحمد بن حنبل فی المسند، ٥ / ١٦٦، الرقم: ٢١٥٠٣، والبخاری فی الأدب المفرد، ١ / ١٥٥، الرقم: ٤٣٣، والمنذری فی الترغيب والترهيب، ٣ / ٥١، الرقم: ٣٠٤٠۔

الحديث رقم ٢٨: أخرجه الترمذی فی السنن، کتاب: صفة القيامة والرقائق والورع عن رسول الله ﷺ، باب: (٥٠)، ٤ / ٦٦٠، الرقم: ٢٥٠١، والدارمی فی السنن، ٢ / ٣٨٧، الرقم: ٢٧١٢، وأحمد بن حنبل فی المسند، ٢ / ١٥٩، الرقم: ٦٤٨١، ٦٦٥٤، والطبرانی فی المعجم الأوسط، ٢ / ٢٦٤، الرقم: ١٩٣٣، والبيهقی فی شعب الإيمان، ٤ / ٢٥٤، الرقم: ٤٩٨٣۔

الحديث رقم ٢٩: أخرجه الترمذی فی السنن، کتاب: الزهد عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء فی حفظ اللسان، ٤ / ٦٠٥، الرقم: ٢٤٠٦، وأحمد بن حنبل فی المسند، ٥ / ٢٥٩، الرقم: ٢٢٢٨٩، والطبرانی فی المعجم الکبير، ١٧ / ٢٧٠، الرقم: ٧٤١۔

عَلٰی خَطِيْئَتِکَ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَحْمَدُ وَالطَّبَرَانِيُّ.

وَقَالَ أَبُوْعِيْسَی: هٰذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ.

''हज़रत उक़्बा बिन आ़मिर ؓ बयान करते हैं कि मैंने अ़र्ज़ किया: या रसूलल्लाह! निजात क्या है? (यानी कैसे मिलती है?) आप ﷺ ने फरमाया : अपनी ज़बान को (बुरी बातों से) रोके रखो और चाहिए कि तुम्हारा घर तुम पर कुशादा हो (यानी अपने घर को अल्लाह तआ़ला की इबादत में मश्गूल होने और ग़ैरुल्लाह से ख़िलवत इख़्तियार करने के लिए लाज़िम पकड़ो) और अपने गुनाहों पर (नादिम हो कर) रोया करो।''

٩٦٤ / ٣٠. عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ؓ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: أَ تَدْرُوْنَ مَا الْغِيْبَةُ؟ قَالُوْا: اللهُ وَرَسُوْلُهُ أَعْلَمُ. قَالَ: ذِکْرُکَ أَخَاکَ بِمَا يَکْرَهُ. قِيْلَ: أَفَرَأَيْتَ إِنْ کَانَ فِي أَخِي مَا أَقُوْلُ؟ قَالَ: إِنْ کَانَ فِيْهِ مَا تَقُوْلُ فَقَدِ اغْتَبْتَهُ. وَإِنْ لَمْ يَکُنْ فِيْهِ، فَقَدْ بَهَتَّهُ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَالتِّرْمِذِيُّ.

وَقَالَ أَبُوْعِيْسَی: هٰذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत अबू हुरैरा ؓ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : तुम जानते हो कि ग़ीबत क्या है? सहाबा–ए–किराम ؓ ने अ़र्ज़ किया : अल्लाह तआ़ला और उसका रसूल ﷺ ही बेहतर जानते हैं। आप ﷺ ने फरमाया : (ग़ीबत यह है कि) तुम अपने (मुसलमान) भाई का इस तरह ज़िक्र करो कि जिसे वो ना पसन्द करता है। अ़र्ज़ किया गया : (या रसूलल्लाह!) अगर वो बात मेरे भाई में पाई जाती हो जो मैं कह रहा हूँ (तो क्या फिर भी ग़ीबत है?) आप ﷺ ने फरमाया : अगर वो बात उसमें है जो तुम कह रहे हो तो यही तो ग़ीबत है और अगर (वो बात) उसमें नहीं तब तो तुमने उस पर बोहतान लगाया।''

الحديث رقم ٣٠: أخرجه مسلم فی الصحيح، کتاب: البر والصلة والآداب، باب: تحريم الغيبة، ٤/ ٢٠٠١، الرقم: ٢٥٨٩، والترمذی فی السنن، کتاب: البر والصلة عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء فی الغيبة، ٤/ ٣٢٩، الرقم: ١٩٣٤، وأبوداود فی السنن، کتاب: الأدب، باب: فی الغيبة، ٤/ ٢٦٩، الرقم: ٤٨٧٤، النسائی فی السنن الکبری، ٦/ ٤٦٧، الرقم: ١١٥١٨، وأحمد بن حنبل فی المسند، ٢/ ٢٣٠، الرقم: ٧١٤٦،٨٩٧٣، والدارمی فی السنن، ٢/ ٣٨٧، الرقم: ٢٧١٤.

٣١/٩٦٥۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ قَالَ: سُئِلَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ عَنْ أَكْثَرِ مَا يُدْخِلُ النَّاسَ الْجَنَّةَ؟ فَقَالَ: تَقْوَى اللهِ، وَحُسْنُ الْخُلُقِ، وَسُئِلَ عَنْ أَكْثَرِ مَا يُدْخِلُ النَّاسَ النَّارَ؟ فَقَالَ: الْفَمُ وَالْفَرْجُ.

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَه.

وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ बयान करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ से दरयाफ़्त किया गयाः (या रसूलल्लाह!) कौनसे आमाल हैं जो लोगों को बकसरत जन्नत में ले जाएँगे? आप ﷺ ने फरमायाः अल्लाह तआला का खौफ़ (यानी तक़्वा) और अच्छे अख़्लाक़। (फिर) उन चीज़ों के बारे में पूछा गया जो ज़्यादा लोगों को जहन्नम में ले जाने का बाइस है? तो आप ﷺ ने फरमायाः मुँह (यानी ज़बान) और शर्मगाह (यानी इन दोनों का ग़लत इस्तेमाल करना)।''

الحديث رقم ٣١: أخرجه الترمذى فى السنن، كتاب: البر والصلة عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء فى حُسنِ الْخُلق، ٤/٣٦٣، الرقم: ٢٠٠٤، وابن ماجه فى السنن، كتاب: الزهد، باب: ذكر الذنوب، ٢/١٤١٨، الرقم: ٤٢٤٦، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٢/٢٩١، الرقم: ٧٨٩٤، وابن حبان فى الصحيح، ٢/٢٢٤، الرقم: ٤٧٦، والحاكم فى المستدرك، ٤/٣٦٠، الرقم: ٧٩١٩، والبخارى فى الأدب المفرد، ١/١١٠، الرقم: ٢٩٤۔

فَصْلٌ فِي آدَابِ الشُّرْبِ وَالطَّعَامِ

खाने–पीने के आदाब का बयान

٩٦٦ / ٣٢۔ عَنْ عُمَرَ بْنِ أَبِي سَلَمَةَ رضي الله عنهما يَقُوْلُ: كُنْتُ غُلَامًا فِي حَجْرِ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ وَكَانَتْ يَدِي تَطِيْشُ فِي الصَّحْفَةِ، فَقَالَ لِي رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: يَا غُلَامُ! سَمِّ اللهَ وَكُلْ بِيَمِيْنِكَ وَكُلْ مِمَّا يَلِيْكَ فَمَا زَالَتْ تِلْكَ طِعْمَتِي بَعْدُ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत उमर बिन अबू सलमा رضی اللہ عنہما रिवायत करते हैं कि मैं लड़कपन में रसूलुल्लाह ﷺ के ज़ेरे कफ़ालत था (आप ﷺ के साथ खाना खाते वक़्त) मेरा हाथ प्याले में हर तरफ़ चलता रहता था। (एक मर्तबा जब मैं हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के साथ दस्तरख़्वान पर बैठा था) तो आप ﷺ ने फरमायाः बरख़ुरदार ! बिस्मिल्लाह पढ़ो, दाहिने हाथ से खाओ और अपने सामने से खाया करो। उसके बाद से मैं इसी तरीक़े से खाता हूँ।''

٩٦٧ / ٣٣۔ عَنْ حُذَيْفَةَ ﷺ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُوْلُ: لَا

الحديث رقم ٣٢: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: الأطعمة، باب: التسمية على الطعام والأكل باليمين، ٥ / ٢٠٥٦، الرقم: ٥٠٦١۔ ٥٠٦٣، ومسلم فى الصحيح، كتاب: الأشربة، باب: آداب الطعام والشراب وأحكامهما، ٣ / ١٥٩٩، الرقم: ٢٠٢٢، وابن ماجه فى السنن كتاب: الأطعمة، باب: الأكل باليمين، ٢ / ١٠٨٧، الرقم: ٣٢٦٧، والنسائى فى السنن الكبرى، ٤ / ١٧٥، الرقم: ٦٧٥٩، وفى عمل اليوم والليلة، ١ / ٢٥٩، الرقم: ٢٧٤، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٤ / ٢٦، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٧ / ٢٧٧، الرقم: ٤٣٨٩۔

الحديث رقم ٣٣: أخرجه البخارى في الصحيح، كتاب: الأطعمة، باب: الأكل في إناء مُفَضَّضٍ، ٥ / ٢٠٦٩، الرقم: ٥١١٠، ٥٣٠٩۔ ٥٣١٠، وفى كتاب: اللباس، باب: لبس الحرير وافتراشه للرجال، وقدر ما يجوز، ٥ / ٢١٩٤، الرقم: ٥٤٩٣، ٥٤٩٩، ومسلم فى الصحيح، كتاب: اللباس والزينة، باب: تحريم استعمال إناء الذهب والفضة، ٣ / ١٦٣٨، الرقم: ٢٠٦٧، ٢٠٦٩، وابن حبان فى الصحيح، ١٢ / ١٥٥، الرقم: ٥٣٣٩، والنسائى فى السنن، الكبرى، ٤ / ١٤٩، الرقم: ٦٦٣١، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٥ / ٣٩٠، الرقم: ٢٣٣٦٢۔

تَلْبَسُوا الْحَرِيْرَ وَلَا الدِّيْبَاجَ، وَلَا تَشْرَبُوْا فِي آنِيَةِ الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ، وَلَا تَأْكُلُوْا فِي صِحَافِهَا، فَإِنَّهَا لَهُمْ فِي الدُّنْيَا وَلَنَا فِي الْآخِرَةِ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत हुज़ैफ़ा ﷺ रिवायत करते हैं कि मैंने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ को फरमाते हुए सुनाः रेशम और दीबाज़ के कपड़े न पहनो, सोने–चांदी के बरतनों में न पियो और न ही सोने–चांदी की प्लेटों में खाओ। क्योंकि यह उन (कुफ्फ़ार) के लिए दुनिया में है और हमारे लिए आख़िरत में है।''

٩٦٨ / ٣٤۔ عَنْ أَنَسٍ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ أَكَلَ طَعَامًا فَقَالَ: ﴿اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِي أَطْعَمَنِي هٰذَا وَرَزَقَنِيْهِ مِنْ غَيْرِ حَوْلٍ مِنِّي وَلَا قُوَّةٍ﴾ غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَحْمَدُ وَالْحَاكِمُ.

وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: هٰذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ. وَقَالَ الْحَاكِمُ: هٰذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحُ الإِسْنَادِ.

''हज़रत अनस ﷺ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जो शख़्स खाना खा कर यह कलिमात कहे (﴿اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِي أَطْعَمَنِي هٰذَا وَرَزَقَنِيْهِ مِنْ غَيْرِ حَوْلٍ مِنِّي وَلَا قُوَّةٍ﴾) ''तमाम तारीफ़े अल्लाह तआला के लिए हैं, जिसने मुझे यह खाना खिलाया और किसी हरकतो कुव्वत के बग़ैर मुझे अता फरमाया।'' उस शख़्स के गुज़िशता गुनाह माफ कर दिए जाते हैं।''

٩٦٩ / ٣٥۔ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رضي الله عنهما قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَا

الحديث رقم ٣٤: أخرجه الترمذى فى السنن، كتاب: الدعوت عن رسول الله ﷺ، باب: ما يقول إذا فَرَغَ من الطعام، ٥ / ٥٠٨، الرقم: ٣٤٥٨، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٣ / ٤٣٩، والحاكم فى المستدرك، ٤ / ٢١٣، الرقم: ٧٤٠٩، والطبرانى فى مسند الشاميين، ١ / ١٥٠، الرقم: ٢٤١، وفى المعجم الكبير، ٢٠ / ١٨١، الرقم: ٣٨٩، وأبويعلى فى المسند، ٣ / ٦٢، الرقم: ١٤٨٨۔

الحديث رقم ٣٥: أخرجه الترمذي فى السنن، كتاب: الأشربة عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء فى التنفس في الإناء، ٤ / ٣٠٢، الرقم: ١٨٨٥، والطبرانى فى المعجم الكبير، ١١ / ١٦٦، الرقم: ١١٣٧٨، والبيهقى فى شعب الإيمان، ٥ / ١١٦، الرقم: ٦٠١٥۔

تَشْرَبُوْا وَاحِدًا كَشُرْبِ الْبَعِيْرِ، وَلَكِنِ اشْرَبُوْا مَثْنَى وَثُـلَاثَ، وَسَمُّوْا إِذَا أَنْتُمْ شَرِبْتُمْ، وَاحْمَدُوْا إِذَا أَنْتُمْ رَفَعْتُمْ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالطَّبَرَانِيُّ.

''हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास رضی اللہ عنہما से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः ऊँट की तरह एक ही साँस में (पानी) मत पियो, बल्कि दो या तीन मर्तबा (साँस लेकर) पियो व पानी पीने से पहले ﴿بِسْمِ اللهِ﴾ पढ़ो और फ़राग़त पर ﴿اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ﴾ कहा करो।''

٩٧٠ / ٣٦۔ عَنْ مِقْدَامِ بْنِ مَعْدِي كَرِبَ رضي الله عنه قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَا مَـلَأَ آدَمِيٌّ وِعَاءً شَرًّا مِنْ بَطْنٍ بِحَسْبِ ابْنِ آدَمَ أُكُـلَاتٌ يُقِمْنَ صُلْبَهُ، فَإِنْ كَانَ لَا مَحَالَةَ، فَثُلُثٌ لِطَعَامِهِ، وَثُلُثٌ لِشَرَابِهِ، وَثُلُثٌ لِنَفْسِهِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَه.

وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत मिक़दाम बिन मअ़दी करिब رضي الله عنه रिवायत करते हैं कि मैंने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ को फरमाते हुए सुनाः इन्सान ने पेट से ज़्यादा बुरा बर्तन नहीं भरा। इन्सान के लिए चन्द लुक़मे खाना काफ़ी है जो उसकी पीठ को सीधा रख सके, अगर ज़्यादा खाना ज़रूरी हो तो (पेट के तीन हिस्से करे) एक तिहाई खाने के लिए, एक पानी के लिए और एक तिहाई साँस लेने के लिए रखे।''

٩٧١ / ٣٧۔ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رضي الله عنهما قَالَ: لَمْ يَكُنْ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ

الحديث رقم ٣٦: أخرجه الترمذي في السنن، كتاب: الزهد عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء في كراهية كثرة الأكل، ٤ / ٥٩٠، الرقم: ٢٣٨٠، وابن ماجه في السنن، كتاب: الأطعمة، باب: الاقتصاد في الأكل وكراهة الشبع، ٢ / ١١١١، الرقم: ٣٣٤٩، والنسائي في السنن الكبرى، ٤ / ١٧٧، الرقم: ٦٧٦٨، وأحمد بن حنبل في المسند، ٤ / ١٣٢، والحاكم في المستدرك، ٤ / ٣٦٧، الرقم: ٧١٣٩،٧١٤٥، وقال الحاكم: هذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحٌ. وابن حبان في الصحيح، ٢ / ٤٤٩، الرقم: ٦٧٤۔

الحديث رقم ٣٧ / ٣٨: أخرجه ابن ماجه في السنن، كتاب: الأطعمة، باب: النفخ في ـــــ

يَنفُخُ فِي طَعَامٍ وَلَا شَرَابٍ وَلَا يَتَنَفَّسُ فِي الإِنَاءِ. رَوَاهُ ابْنُ مَاجه وَأَحْمَدُ.

''हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास رضی اللہ عنہما से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ न तो खाने और पीने में फूँक मारते थे और न बर्तन में साँस लेते थे।''

٩٧٢ / ٣٨۔ وَفِي رواية عنه: نَهَى رَسُوْلُ اللهِ ﷺ عَنِ النَّفْخِ فِي الطَّعَامِ وَالشَّرَابِ. رَوَاهُ أَحْمَدُ.

وفي رواية: عَنْ عَائِشَةَ رضي الله عنها النَّفْخُ فِي الطَّعَامِ يَذْهَبُ بِالْبَرَكَةِ.

''हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास رضی اللہ عنہما से ही मरवी रिवायत में है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ खाने और पीने की चीज़ों में फूँक मारने से मना करते थे।

और हज़रत आइशा رضی اللہ عنہا से मरवी है कि खाने में फूँक मारना उसकी बरकत को ख़त्म कर देता है।''

٩٧٣ / ٣٩۔ عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ ﷺ يَقُوْلُ: قَالَ: رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: كُلُوْا جَمِيْعًا وَلَا تَفَرَّقُوْا، فَإِنَّ الْبَرَكَةَ مَعَ الْجَمَاعَةِ. رَوَاهُ ابْنُ مَاجه.

''हज़रत उमर बिन ख़त्ताब ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः मिल कर खाया करो अलग–अलग न खाओ। क्योंकि बरकत मिल कर (और इकट्ठे) खाने से हासिल होती है।''

.... الطعام، ٢/١٠٩٤، الرقم: ٣٢٨٨، وأحمد بن حنبل فى المسند، ١/٣٠٩، الرقم: ٢٨١٨، ٣٣٦٦، وابن أبي شيبة فى المصنف، ٥/١٠٧، الرقم: ٢٤١٨٠۔

الحديث رقم ٣٩: أخرجه ابن ماجه فى السنن، كتاب: الأطعمة، باب: الاجتماع على الطعام، ٢/١٠٩٣، الرقم: ٣٣٨٧، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٣/٩٧، الرقم: ٣٢٢٨۔

فَصْلٌ فِي مُعَامَلَةِ الْمُؤْمِنِ بِالْمُؤْمِنِ

मोमिन के मोमिन के साथ मुआमलात का बयान

٩٧٤ / ٤٠۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضي الله عنه عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ قَالَ: لَا يُلْدَغُ الْمُؤْمِنُ مِنْ جُحْرٍ وَاحِدٍ مَرَّتَيْنِ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अबू हुरैरा رضي الله عنه से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया: मोमिन एक सुराख़ से दो बार नहीं डसा जाता (यानी एक ही मामले में उसे दोबारा धोखा नहीं दिया जा सकता)।''

٩٧٥ / ٤١۔ عَنْ عَمَّارٍ رضي الله عنه قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ كَانَ لَهُ وَجْهَانِ فِي الدُّنْيَا كَانَ لَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ لِسَانَانِ مِنْ نَارٍ.

رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ وَابْنُ حِبَّانَ وَالدَّارِمِيُّ.

''हज़रत अम्मार (बिन यासिर) رضي الله عنه से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : जो दुनिया में दो मुँह रखे (यानी जिसमें दोगलापन हो) तो क़यामत के दिन उसके मुँह

الحديث رقم ٤٠: أخرجه البخاری فی الصحيح، كتاب: الأدب، باب: لا يلدغ المؤمن من جحر واحد مرتين، ٥ / ٢٢٧١، الرقم: ٥٧٥٢، ومسلم فی الصحيح، كتاب: الزهد والرقائق، باب: لا يلدغ المؤمن من جحر مرتين، ٤ / ٢٢٩٥، الرقم: ٢٩٩٨، وأبو داود فی السنن، كتاب: الأدب، باب: فی الحذر من الناس، ٤ / ٢٦٦، الرقم: ٤٨٦٢، وابن ماجه فی السنن، كتاب: الفتن، باب: العزلة، ٢ / ١٣١٨، الرقم: ٣٩٨٢-٣٩٨٣، وابن حبان فی الصحيح، ٢ / ٤٣٧، الرقم: ٦٦٣، والدارمی فی السنن، ٢ / ٤١١، الرقم: ٢٧٨١، وأحمد بن حنبل فی المسند، ٢ / ١١٥، الرقم: ٥٩٦٤۔

الحديث رقم ٤١: أخرجه أبو داود فی السنن، كتاب: الأدب، باب: فی ذی وجهين، ٤ / ٢٦٨، الرقم: ٤٨٧٣، وابن حبان فی الصحيح، ١٣ / ٦٨، الرقم: ٥٧٥٦، والدارمی فی السنن، ٢ / ٤٠٥، الرقم: ٢٧٦٤، وابن أبی شيبة فی المصنف، ٥ / ٢٢٣، الرقم: ٢٥٤٦٣، والبيهقی فی السنن الكبری، ١٠ / ٢٤٦، وأبويعلی فی المسند، ٣ / ٢٠٤، الرقم: ١٦٣٧۔

में दो आग की ज़बानें होंगी।''

٤٢/٩٧٦۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّهُ سَمِعَ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: إِنَّ شَرَّ النَّاسِ ذُو الْوَجْهَيْنِ، الَّذِي يَأْتِي هَؤُلَاءِ بِوَجْهٍ وَهَؤُلَاءِ بِوَجْهٍ.

مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः दो मुँह रखने वाला शख़्स इन्तिहाई बुरे लोगों में से है जो एक के मुँह पर कुछ कहता है और दूसरे के मुँह पर कुछ।''

٤٣/٩٧٧۔ عَنْ عِيَاضِ بْنِ حِمَارٍ الْمُجَاشِعِيِّ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: إِنَّ اللهَ أَوْحَى إِلَيَّ أَنْ تَوَاضَعُوْا حَتَّى لَا يَفْخَرَ أَحَدٌ عَلَى أَحَدٍ، وَلَا يَبْغِ أَحَدٌ عَلَى أَحَدٍ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَابْنُ مَاجَه.

''हज़रत इयाज बिन हिमार ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने

الحديث رقم ٤٢: أخرجه البخاری فی الصحيح، كتاب: الأحكام، باب: ما يكره من ثناء السلطان، وإذا خرج قال غير ذلك، ٦/٢٦٢٦، الرقم: ٦٧٥٧، وفی كتاب: المناقب، باب: قول الله تعالى: يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّا خَلَقْنَاكُمْ مِنْ ذَكَرٍ وَ أُنْثٰى وَ جَعَلْنَكُمْ شُعُوْبًا وَ قَبَائِلَ لِتَعَارَفُوْا... الخ، ٣/١٢٨٨، الرقم: ٣٣٠٤، ومسلم فی الصحيح، كتاب: البر والصلة والآداب، باب: ذم ذی الوجهين وتحريم فعله، ٤/٢٠١١، الرقم: ٢٥٢٦، والترمذی فی السنن، كتاب: البر والصلة عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء فی ذی الوجهين، ٤/٣٧٤، الرقم: ٢٠٢٥، وأبوداود فی السنن، كتاب: الأدب، باب: فی ذي الوجهين، ٤/٢٦٨، الرقم: ٤٨٧٢، ومالك فی الموطأ، ٢/٩٩١، الرقم: ١٧٩٧۔

الحديث رقم ٤٣: أخرجه مسلم فی الصحيح، كتاب: الجنة وصفة نعيمها وأهلها، باب: الصفات التي يعرف بها في الدنيا أهل الجنة وأهل النار، ٤/٢١٩٨، الرقم: ٢٨٦٥، وابن ماجه فی السنن، كتاب: الزهد، باب: البراء ة من الكبر والتواضع، ٢/١٣٩٩، الرقم: ٤١٧٩، والبزار فی المسند، ٨/٤٢٤، الرقم: ٣٤٩٥، والبيهقی فی السنن الكبری، ١٠/٢٣٤، والطبرانی فی المعجم الكبير، ١٧/٣٦٤ الرقم: ١٠٠٠۔

फरमायाः अल्लाह तआला ने मेरी तरफ़ वह़ी की है कि तवाज़ोअ (बे इनकिसारी) इख़्तियार करो और कोई शख़्स (अपने आप को बेहतर समझते हुए) किसी दूसरे पर फ़ख़्र न करे और न कोई किसी पर ज़ुल्म करे।''

٩٧٨ / ٤٤۔ عَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ رضي الله عنه عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: حُبُّکَ الشَّيءَ يُعْمِي وَيُصِمُّ. رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ وَالطَّبَرَانِيُّ.

''ह़ज़रत अबू दरदा رضي الله عنه से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः तुम्हारी किसी शै से मुहब्बत तुम्हें अंधा और बहरा कर देती है (यानी अपने महबूब के ख़िलाफ़ इन्सान कुछ देखना, सुनना गवारा नहीं करता)।''

٩٧٩ / ٤٥۔ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَبَّاسٍ رضي الله عنهما أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ نَظَرَ فِي كِتَابِ أَخِيْهِ بِغَيْرِ إِذْنِهِ فَإِنَّمَا يَنْظُرُ فِي النَّارِ.

وفي رواية عنه: مَنْ يَتَحَقَّقُ فِي كِتَابِ أَخِيْهِ بِغَيْرِ أَمْرِهِ فَكَأَنَّمَا يَتَحَقَّقُ فِي النَّارِ. رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ وَالطَّبَرَانِيُّ وَالْحَاكِمُ.

وَقَالَ الْحَاكِمُ: هٰذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحٌ.

''ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رضی الله عنهما से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : जिसने अपने भाई का ख़त उसकी इजाज़त के बग़ैर (खोल कर) देखा तो

الحديث رقم ٤٤: أخرجه أبو داود فى السنن، كتاب: الأدب، باب: فى الهوى، ٤/ ٣٣٤، الرقم: ٥١٣٠، والطبرانى فى المعجم الأوسط، ٤/ ٣٣٤، الرقم: ٤٣٥٩، وفى مسند الشاميين، ٢/ ٣٤٠، الرقم: ١٤٥٤، والبيهقى فى شعب الإيمان، ١/ ٣٦٨، الرقم: ٤١١، والديلمى فى مسند الفردوس، ٢/ ١٤٣، الرقم: ٢٧٢٨۔

الحديث رقم ٤٥: أخرجه أبوداود فى السنن، كتاب: الوتر، باب: الدعاء، ٢/ ٧٨، الرقم: ١٤٨٥، والحاكم فى المستدرك، ٤/ ٣٠٠۔ ٣٠١، الرقم: ٧٧٠٦۔ ٧٧٠٧، والطبرانى فى مسند الشاميين، ٢/ ٣٢٨، الرقم: ١٤٣٢، وفى المعجم الكبير، ١٠/ ٣٢٠، الرقم: ١٠٧٨١، والقضاعى فى مسند الشهاب، ١/ ٢٨٤، الرقم: ٤٦٤، وعبد بن حميد فى المسند، ١/ ٢٢٥، الرقم: ٦٧٥۔

बेशक उसने (दोज़ख़ की) आग में देखा।''

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رضی اللہ عنہما से मरवी है कि एक और रिवायत में है कि आप ﷺ ने फरमाया : जो अपने (मुसलमान) भाई के ख़त में उसकी इजाज़त के बगैर ग़ौरो फ़िक्र करता है (यानी उसे पढ़ता है या उसकी जुस्तजू करता है तो) वो तो बस (दोज़ख़ की) आग में झाँक रहा है।''

فَصْلٌ فِي آدَابِ اللِّبَاسِ

﴿आदाबे लिबास का बयान﴾

٩٨٠ / ٤٦۔ عَنْ حُذَيْفَةَ رضي الله عنه قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُوْلُ: لَا تَلْبَسُوا الْحَرِيْرَ وَلَا الدِّيْبَاجَ، وَلَا تَشْرَبُوْا فِي آنِيَةِ الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ، وَلَا تَأْكُلُوْا فِي صِحَافِهَا، فَإِنَّهَا لَهُمْ فِي الدُّنْيَا وَلَنَا فِي الآخِرَةِ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत हुजैफ़ा رضي الله عنه से रिवायत है कि मैंने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ को फरमाते हुए सुनाः रेशम और दीबाज़ के कपड़े न पहनो, सोने–चाँदी के बरतनों में न पियो और न ही सोने–चांदी की प्लेटों में खाओ। क्योंकि यह उन (कुफ्फ़ार) के लिए दुनिया में हैं और हमारे लिए आख़िरत में है।''

٩٨١ / ٤٧۔ عَنْ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ رضي الله عنه يَقُوْلُ: إِنَّ نَبِيَّ اللهِ أَخَذَ حَرِيْرًا

الحديث رقم ٤٦: أخرجه البخارى في الصحيح، كتاب: الأطعمة، باب: الأكل في إناء مُفَضَّضٍ، ٥ / ٢٠٦٩، الرقم: ٥١١٠، ٥٣٠٩۔٥٣١٠، وفى كتاب: اللباس، باب: لبس الحرير وافتراشه للرجال، وقدر ما يجوز، ٥ / ٢١٩٤، الرقم: ٥٤٩٣، ٥٤٩٩، ومسلم فى الصحيح، كتاب: اللباس والزينة، باب: تحريم استعمال إناء الذهب والفضة، ٣ / ١٦٣٨، الرقم: ٢٠٦٧، ٢٠٦٩، وابن حبان فى الصحيح، ١٢ / ١٥٥، الرقم: ٥٣٣٩، والنسائى فى السنن، الكبرى، ٤ / ١٤٩، الرقم: ٦٦٣١، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٥، ٣٩٠، الرقم: ٢٣٣٦٢۔

الحديث رقم ٤٧ / ٤٨: أخرجه الترمذي فى السنن، كتاب: اللباس عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء فى الحرير والذهب، ٤ / ٢١٧، الرقم: ١٧٢٠، وأبوداود فى السنن، كتاب: الحمام، باب: فى الحرير للنساء، ٤، ٥٠، الرقم: ٤٠٥٧، والنسائى فى السنن، كتاب: الزينة، باب: تحريم الذهب على الرجال، ٨ / ١٦٠، الرقم: ٥١٤٤، وابن ماجه فى السنن، كتاب: اللباس ، باب: لبس الحرير والذهب للنساء، ٢ / ١١٨٩، الرقم: ٣٥٩٥، ٣٥٩٧، وأحمد بن حنبل فى المسند، ١ / ٩٦، الرقم: ٧٥٠: ٤ / ٣٩٤، وأبو يعلى فى المسند، ١ / ٢٣٥، الرقم:٢٧٢، ٣٢٥، والطبرانى فى المعجم الكبير، ١١ / ١٥، الرقم: ١٠٨٨٩، ٢٣٤، والبيهقى فى شعب الإيمان ٥ / ١٣٣، الرقم: ٦٠٨٢۔

فَجَعَلَهُ فِي يَمِيْنِهِ، وَأَخَذَ ذَهَبًا فَجَعَلَهُ فِي شِمَالِهِ، ثُمَّ قَالَ: إِنَّ هَذَيْنِ حَرَامٌ عَلَى ذُكُوْرِ أُمَّتِي. رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ بِإِسْنَادٍ جَيِّدٍ.

٩٨٢/٤٨. وفي رواية: عَنْ أَبِي مُوْسَى الْأَشْعَرِيِّ رضي الله عنه أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ صلى الله عليه وآله وسلم قَالَ: حُرِّمَ لِبَاسُ الْحَرِيْرِ وَالذَّهَبِ عَلَى ذُكُوْرِ أُمَّتِي وَأُحِلَّ لِإِنَاثِهِمْ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ.

وَقَالَ: أَبُوْعِيْسَى: حَدِيْثٌ حَسَنٌ.

''हज़रत अ़ली रज़ि. रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम सल्ल. ने अपने दाहिने दस्ते मुबारक में रेशमी कपड़ा पकड़ा और बाएँ दस्ते मुबारक में सोना थामा फिर फरमायाः यह दोनों चीज़ें मेरी उम्मत के मर्दों पर हराम हैं।

और एक रिवायत में हज़रत अबू मूसा अशअ़री रज़ि. से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम सल्ल. ने फरमाया : रेशम का लिबास और सोना मेरी उम्मत के मर्दों पर हराम कर दिया गया है और उनकी औ़रतों पर हलाल है।''

٩٨٣/٤٩. رَوَى أَبُوْحَنِيْفَةَ رضي الله عنه عَنْ عَطَاءِ بْنِ أَبِي رِبَاحٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضي الله عنه قَالَ: كَانَ لِرَسُوْلِ اللهِ صلى الله عليه وآله وسلم قَلَنْسُوَةٌ شَامِيَّةٌ بَيْضَاءُ.

رَوَاهُ أَبُوْحَنِيْفَةَ.

''हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ि. बवास्ता हज़रत अ़ता बिन अबी रिबाह हज़रत अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत करते हैं कि उन्होंने फरमायाः हुज़ूर नबी–ए–अकरम सल्ल. के पास एक सफेद शामी टोपी मुबारक थी।''

٩٨٤/٥٠. عَنِ ابْنِ عُمَرَ رضي الله عنهما قَالَ: كَانَ رَسُوْلُ اللهِ صلى الله عليه وآله وسلم يَلْبَسُ

الحديث رقم ٤٩: أخرجه الخوارزمی فی جامع المسانيد للإمام أبي حنيفة، ١/١٩٨.
الحديث رقم ٥٠: أخرجه البيهقی فی شعب الإيمان، ٥/١٧٥، الرقم: ٦٢٥٩، والهيثمی فی مجمع الزوائد، ٥/١٢١، وقال: رواه الطبراني ورواته ثقات، والسيوطی فی الجامع الصغير، ١/٣٦٦، الرقم: ٦٩٧.

قَلَنْسُوَةً بَيْضَاءَ. رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ وَالطَّبَرَانِيُّ كَمَا قَالَ الْهَيْثَمِيُّ.

''हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर رضی اللہ عنہما से रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ सफेद टोपी मुबारक पहना करते थे।''

٩٨٥ / ٥١۔ عَنْ عَائِشَةَ رضي الله عنها قَالَتْ: كَانَ لِرَسُوْلِ اللهِ ﷺ قَلَنْسُوَةٌ بَيْضَاءُ لَاطِئَةٌ يَلْبَسُهَا. رَوَاهُ ابْنُ عَسَاكِرَ.

''हज़रत आइशा رضی اللہ عنہا रिवायत करती हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के पास सफेद टोपी थी जिसे आप ﷺ पहना करते थे जो आप ﷺ के सरे अक़दस पर जमी रहती थी।''

٩٨٦ / ٥٢۔ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ ضَرَارٍ، قَالَ: رَأَيْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ رضي الله عنه أَتَى الْخَلَاءَ ثُمَّ خَرَجَ وَعَلَيْهِ قَلَنْسُوَةٌ بَيْضَاءُ مَزْرُوْرَةٌ فَمَسَحَ عَلَى الْقَلَنْسُوَةِ ...... قَالَ الثَّوْرِيُّ: وَالْقَلَنْسُوَةُ بِمَنْزِلَةِ الْعِمَامَةِ.
رَوَاهُ عَبْدُ الرَّزَّاقِ.

''हज़रत सईद बिन अब्दुल्लाह बिन दरार से रिवायत है कि मैंने हज़रत अनस बिन मालिक رضي الله عنه को देखा कि वो बैतुलख़ला में दाख़िल हुए फिर निकले और उनके सर पर बटन लगी हुई सफेद टोपी थी तो उन्होंने अपनी टोपी पर मसह किया। इमाम सुफ़ियान सौरी رضي الله عنه ने फरमायाः कि टोपी बमन्ज़िला इमामा है।''

٩٨٧ / ٥٣۔ عَنْ أَشْعَثَ عَنْ أَبِيْهِ أَنَّ أَبَا مُوْسَى رضي الله عنه خَرَجَ مِنَ الْخَلَاءِ وَعَلَيْهِ قَلَنْسُوَةٌ فَمَسَحَ عَلَيْهَا. رَوَاهُ ابْنُ أَبِي شَيْبَةَ.

''हज़रत अश्अस अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि हज़रत अबू मुसा (अशअरी) رضي الله عنه बैतुलख़ला से बाहर तशरीफ़ लाए और उन्होंने टोपी पहनी हुई थी, फिर उन्होंने उस टोपी पर मसह किया।''

الحديث رقم ٥١: أخرجه ابن عساكر فى تاريخ دمشق الكبير، ٤ / ١٩٣، والهندى فى كنز العمال، ٧ / ١٢١، الرقم: ١٨٢٨٥۔

الحديث رقم ٥٢: أخرجه عبد الرزاق فى المصنف، باب: المسح على القلنسوة، ١ / ١٩٠، الرقم: ٧٤٥۔

الحديث رقم ٥٣: أخرجه ابن أبى شيبة فى المصنف، ٥ / ١٧٠، الرقم: ٢٤٨٥٩۔

٩٨٨ / ٥٤۔ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ سَعِيْدٍ ﷺ قَالَ: رَأَيْتُ عَلَى عَلِيِّ بْنِ الْحُسَيْنِ رضي الله عنهما قَلَنْسُوَةً بَيْضَاءَ مِصْرِيَّةً. رَوَاهُ ابْنُ أَبِي شَيْبَةَ.

''हज़रत अब्दुल्लाह बिन सईद ﷺ रिवायत करते हैं कि मैंने इमाम अली बिन हुसैन رضی اللہ عنهما (यानी इमाम ज़ैनुल आबिदीन) को सफेद मिसरी टोपी पहने हुए देखा।''

٩٨٩ / ٥٥۔ عَنْ هِشَامٍ، قَالَ: رَأَيْتُ عَلَى ابْنِ الزُّبَيْرِ رضي الله عنهما قَلَنْسُوَةً لَهَا رِبٌّ كَانَ يَسْتَظِلُّ بِهَا إِذَا طَافَ بِالْبَيْتِ. رَوَاهُ ابْنُ أَبِي شَيْبَةَ.

''हज़रत हिशाम बयान करते हैं कि मैंने हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رضی اللہ عنهما को छज्जेदार टोपी पहने हुए देखा, बसा औक़ात वो बैतुल्लाह का तवाफ़ करते वक़्त (आँखों के सामने) उसका साया कर लेते थे।''

٩٩٠ / ٥٦۔ عَنِ ابْنِ مَسْعُوْدٍ ﷺ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: كَانَ عَلَى مُوْسَى عليه السلام يَوْمَ كَلَّمَهُ رَبُّهُ، كِسَاءُ صُوفٍ وَجُبَّةُ صُوْفٍ، وَكُمَّةُ صُوفٍ، وَسَرَاوِيْلُ صُوْفٍ، وَكَانَتْ نَعْلَاهُ مِنْ جِلْدِ حِمَارٍ مَيِّتٍ. وَالْكُمَّةُ: الْقَلَنْسُوَةُ الصَّغِيْرَةُ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ.

''हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद ﷺ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : जिस दिन मूसा عليه السلام ने अपने रब से कलाम किया उस दिन उन्होंने एक ऊन की चादर, ऊन का जुब्बा, ऊन की टोपी और ऊन की शलवार और एक मुर्दा दराज़ गोश (यानी गधे) की खाल से बने जूते पहने हुए थे।''

الحديث رقم ٥٤: أخرجه ابن أبي شيبة فى المصنف، ٥ / ١٦٩، الرقم: ٢٤٨٥٥۔

الحديث رقم ٥٥: أخرجه ابن أبي شيبة فى المصنف، ٥ / ١٦٩، الرقم: ٢٤٨٥٦۔

الحديث رقم ٥٦: أخرجه الترمذي فى السنن، كتاب: اللباس عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء فى لبس الصوف، ٤ / ٢٢٤، الرقم: ١٧٣٤، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٣ / ٧٨، الرقم: ٣١٥٤، وقال: رواه الحاكم وقال الحاكم: صَحِيْحٌ عَلَى شَرْطِ الْبُخَارِيِّ۔

٩٩١ / ٥٧. عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رضي الله عنه يَقُوْلُ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: الشُّهَدَاءُ أَرْبَعَةٌ: رَجُلٌ مُؤْمِنٌ جَيِّدُ الإِيْمَانِ لَقِيَ الْعَدُوَّ فَصَدَقَ اللهَ حَتَّى قُتِلَ، فَذَالِكَ الَّذِي يَرْفَعُ النَّاسُ إِلَيْهِ أَعْيُنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ هَكَذَا وَرَفَعَ رَأْسَهُ حَتَّى وَقَعَتْ قَلَنْسُوَتُهُ، قَالَ: فَمَا أَدْرِي أَ قَلَنْسُوَةَ عُمَرَ أَرَادَ أَمْ قَلَنْسُوَةَ النَّبِيِّ ﷺ ......الحديث.

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَحْمَدُ وَلَفْظُهُ: وَرَفَعَ رَأْسَهُ حَتَّى سَقَطَتْ قَلَنْسُوَةُ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ أَوْ قَلَنْسُوَةُ عُمَرَ رضي الله عنه.

وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ.

''हज़रत उमर बिन खत्ताब रज़ि. रिवायत करते हैं कि मैंने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ को फरमाते हुए सुनाः शुहदा की चार क़िस्में हैंः वो मोमिन शख़्स जिसका ईमान मजबूत हो, वो दुश्मन से मुक़ाबला करे और अल्लाह तआला की तस्दीक़ करे। यहाँ तक कि शहीद हो जाए। यही वो शख़्स है कि क़यामत के दिन लोग उसकी तरफ़ आँख उठा–उठा कर देखेंगे, आपने सर मुबारक ऊपर उठाया, यहाँ तक कि आपकी टोपी गिर गई। रावी कहते हैं कि मुझे मालूम नहीं उससे हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की टोपी मुराद है या हज़रत उमर रज़ि. की।''

''हज़रत इमाम अहमद बिन हम्बल की रिवायत के अल्फ़ाज हैं कि आप ﷺ ने सरे अनवर इतना ऊपर उठाया हत्ता कि आप ﷺ की टोपी गिर गई या हज़रत उमर रज़ि. की।''

الحديث رقم ٥٧: أخرجه الترمذي فى السنن، كتاب: الجهاد عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء فى فضل الشهداء عند الله، ٤ / ١٧٧، الرقم: ١٦٤٤، وأحمد بن حنبل فى المسند، ١ / ٢٣، الرقم: ١٥٠، وأبو يعلى فى المسند، ١ / ٢١٦، الرقم: ٢٥٢، والطيالسى فى المسند، ١ / ١٠، ٢٠، الرقم: ٤٥، ١٣٣، والبزار فى المسند، ١ / ٣٦٦، الرقم: ٢٤٦، وعبد بن حميد فى المسند، ١ / ٣٩، الرقم: ٢٧، وابن المبارك فى الجهاد، ١ / ١٠٥، الرقم: ١٢٦، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٢ / ٢١٢، الرقم: ٢١٣٨.

۹۹۲ / ۵۸۔ عَنْ هِلَالِ بْنِ يَسَافٍ رضي الله عنه قَالَ: قَدِمْتُ الرَّقَّةَ، فَقَالَ لِي بَعْضُ أَصْحَابِي: هَلْ لَکَ فِي رَجُلٍ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وآله وسلم؟ قَالَ: قُلْتُ: غَنِيمَةٌ. فَدَفَعْنَا إِلَى وَابِصَةَ، قُلْتُ لِصَاحِبِي: نَبْدَأُ فَنَنْظُرُ إِلَى دَلِّهِ، فَإِذَا عَلَيْهِ قَلَنْسُوَةٌ لَاطِيَةٌ ذَاتُ أُذُنَيْنِ وَبُرْنُسُ خَزٍّ أَغْبَرُ وَإِذَا هُوَ مُعْتَمِدٌ عَلَى عَصًا فِي صَلَاتِهِ. رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ وَالْحَاكِمُ وَالْبَيْهَقِيُّ.

وَقَالَ الْحَاكِمُ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत हिलाल बिन यसाफ़ रضي الله عنه रिवायत करते हैं कि मैं (शाम के एक शहर) रिक़्क़ा गया, मेरे किसी साथी ने कहाः तुम्हारा क्या ख़याल है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम صلى الله عليه وآله وسلم के किसी सहाबी से मुलाक़ात करें ? मैंने कहाः यह तो बड़ी ग़नीमत है । फिर हम हज़रत वाबिसा رضي الله عنه के पास गए । मैंने अपने साथी से कहाः देखो पहले हम उनके तौर तरीक़े देखते हैं । फिर हम क्या देखते हैं कि उनके सर से दो कानों वाली एक टोपी चिमटी हुई है और एक ऊनी गुबार आलूद लम्बी टोपी (उसके ऊपर) पहनी हुई है और वो अपने असा के सहारे नमाज़ पढ़ रहे हैं ।''

۹۹۳ / ۵۹۔ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رضي الله عنهما قَالَ: کَانَ رَسُوْلُ اللهِ صلى الله عليه وآله وسلم يَلْبَسُ الْقَلَانِسَ تَحْتَ الْعَمَائِمِ وَبِغَيْرِ الْعَمَائِمِ وَيَلْبَسُ الْعَمَائِمَ بِغَيْرِ الْقَلَانِسِ وَکَانَ يَلْبَسُ الْقَلَانِسَ الْيَمَانِيَّةَ وَيَلْبَسُ ذَوَاتَ الْآذَانِ فِي الْحَرْبِ وَکَانَ رُبَّمَا نَزَعَ قَلَنْسُوَتَهُ فَجَعَلَهَا سُتْرَةً بَيْنَ يَدَيْهِ وَهُوَ يُصَلِّي......الحديث.

رَوَاهُ السُّيُوْطِيُّ وَالْهِنْدِيُّ.

الحديث رقم ۵۸: أخرجه أبوداود فی السنن، کتاب: الصلاة، باب: الرجل يعتمد فی الصلاة علی عصًا، ۱ / ۲۴۹، الرقم: ۹۴۸، والحاکم فی المستدرک، ۱ / ۳۹۷، الرقم: ۹۷۵، والبيهقی فی السنن الکبری، ۲ / ۲۸۸، الرقم: ۳۳۸۶۔

الحديث رقم ۵۹: أخرجه السيوطی فی الجامع الصغير، ۱ / ۳۶۷، والهندی فی کنز العمال، ۷ / ۱۲۱، الرقم: ۱۸۲۸۶، والعظيم آبادی فی عون المعبود، ۱۱ / ۸۸، والمبارکفوری فی تحفة الأحوذی، ۵ / ۳۹۳، والمناوی فی فيض القدير، ۵ / ۲۴۷، وعبدالحق محدث الدهلوی فی شرح سفر السعادة، ۱ / ۴۳۶۔

''हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास رضی اللہ عنهما बयान करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ इमामे के नीचे टोपी पहनते थे और इमामे के बग़ैर भी टोपी पहनते थे और इमामा बग़ैर टोपी के भी पहनते थे और आप यमनी टोपी पहनते थे और जंग में कानों वाली टोपी पहनते थे और बा'ज औक़ात अपनी टोपी उतार कर उसको सुतरा बना कर नमाज़ अदा करते थे।''

٩٩٤ / ٦٠۔ عَنْ نَافِعٍ رضي الله عنه قَالَ: رَآنِي ابْنُ عُمَرَ رضي الله عنهما وَأَنَا أُصَلِّي فِي ثَوْبٍ وَاحِدٍ فَقَالَ: أَلَمْ أَكْسُكَ قُلْتُ: بَلَى، قَالَ: فَلَوْ بَعَثْتُكَ كُنْتَ تَذْهَبُ هَكَذَا قُلْتُ: لَا، قَالَ: فَاللهُ أَحَقُّ أَنْ تَزَيَّنَ لَهُ.

رَوَاهُ ابْنُ خُزَيْمَةَ وَالْبَيْهَقِيُّ وَاللَّفْظُ لَهُ.

''हज़रत नाफ़ेअ رضي الله عنه (हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर के आज़ाद कर्दह ग़ुलाम) बयान करते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर رضی اللہ عنهما ने मुझे एक कपड़े में नमाज़ पढ़ते हुए देखा तो उन्होंने फरमायाः क्या मैंने तुम्हे कपड़े नहीं पहनाए? मैंने अर्ज़ कियाः क्यों नहीं। उन्होंने फरमायाः अगर मैं तुम्हे किसी (ख़ास) जगह भेजूँ तो क्या तुम इसी हालत में चले जाओगे? मैंने अर्ज़ कियाः नहीं, तो फरमायाः फिर अल्लाह तआला उसका ज़्यादा हक़दार है कि उसके लिए मुज़य्यन (व तैयार) हुआ जाए।''

٩٩٥ / ٦١۔ عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ رضي الله عنه قَالَ: كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ

الحديث رقم ٦٠: أخرجه ابن خزيمة فى الصحيح، ١ / ٣٧٦، الرقم: ٧٦٦، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٢ / ٢٣٦، الرقم: ٣٠٨٩، والمقدسى فى الأحاديث المختارة، ١ / ٣٠٩، الرقم: ٢٠٠، والطحاوى نحوه فى شرح معانى الآثار، ١ / ٣٧٧، وابن عبد البر فى التمهيد، ٦ / ٣٧١.

الحديث رقم ٦١: أخرجه أبو داود فى السنن، كتاب: اللباس، باب: (١)، ٤ / ٤١، الرقم: ٤٠٢٠، والترمذى فى السنن، كتاب: اللباس عن رسول الله ﷺ، باب: ما يقول إذا لبس ثوبا جديدا، ٤ / ٢٣٩، الرقم: ١٧٦٧، والبيهقى فى شعب الإيمان، ٥ / ١٨٠، الرقم: ٦٢٨٤، والعسقلانى فى فتح البارى، ١٠ / ٢٦٧، والسيوطى فى الجامع الصغير، ١ / ٧٨، الرقم: ٩٣، والعظيم آبادى فى عون المعبود، ١١ / ٤٣، والمناوى فى فيض القدير، ٥ / ٩٨، والمباركفورى فى تحفة الأحوذى، ٥ / ٣٧٥.

إِذَا اسْتَجَدَّ ثَوْبًا سَمَّاهُ بِاسْمِهِ، إِمَّا قَمِيْصًا أَوْ عِمَامَةً، ثُمَّ يَقُوْلُ: ﴿اللّٰهُمَّ! لَکَ الْحَمْدُ، أَنْتَ کَسَوْتَنِيْهِ، أَسْأَلُکَ مِنْ خَيْرِهِ وَخَيْرِ مَا صُنِعَ لَهُ، وَأَعُوْذُ بِکَ مِنْ شَرِّهِ وَشَرِّ مَا صُنِعَ لَهُ﴾. رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ.

''हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ बयान करते हैं कि जब हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ कोई नया कपड़ा पहनते तो ﴿بسم الله﴾ पढ़ते ख़्वाह कमीज हो या इमामा, फिर अ़र्ज़ करते ﴿اللّٰهُمَّ! لَکَ الْحَمْدُ، أَنْتَ کَسَوْتَنِيْهِ، أَسْأَلُکَ مِنْ خَيْرِهِ وَخَيْرِ مَا صُنِعَ لَهُ، وَأَعُوْذُ بِکَ مِنْ شَرِّهِ وَشَرِّ مَا صُنِعَ لَهُ﴾ ''ऐ अल्लाह! तेरा शुक्र है कि तूने मुझे यह कपड़ा पहनाया, मैं तुझसे इसकी ख़ैर और जिस लिए यह बनाया गया है उसकी ख़ैर का सवाल करता हूँ और इसके शर्र और जिसके लिए यह बनाया गया उसके शर्र से तेरी पनाह माँगता हूँ।''

٩٩٦ / ٦٢۔ عَنِ الْمُغِيْرَةِ بْنِ شُعْبَةَ ﷺ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ لَبِسَ جُبَّةً رُوْمِيَّةً ضَيِّقَةَ الْکُمَّيْنِ. رَوَاهُ أَبُوْحَنِيْفَةَ وَالتِّرْمِذِيُّ وَاللَّفْظُ لَهُ وَالنَّسَائِيُّ.

وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत मुग़ीरा बिन शो'बा ﷺ से रिवायत है कि बेशक हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने तंग आस्तीनों वाला रूमी जुब्बा ज़ेबेतन फरमाया।''

٩٩٧ / ٦٣۔ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ سَمِعَ الْبَرَاءَ ﷺ يَقُوْلُ: کَانَ النَّبِيُّ ﷺ

الحديث رقم ٦٢: أخرجه أبو نعيم في مسند أبي حنيفة، ١ / ٧٦-٧٧، والترمذي في السنن، کتاب: اللباس عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء لُبْسِ الجبّة والخُفَّيْن، ٤ / ٢٣٩، الرقم: ١٧٦٨، والنسائي في السنن، کتاب: الطهارة، باب: المسح على الخفين في السفر، ١ / ٨٣، الرقم: ١٢٥، وفي السنن الکبرى، ١ / ٨٧، الرقم: ١١٠، وأحمد بن حنبل في المسند، ٤ / ٢٥٥، والمبارکفوري في تحفة الأحوذي، ٥ / ٣٩١.

الحديث رقم ٦٣: أخرجه البخاري في الصحيح، کتاب: اللباس، باب: الثوب الأحمر، ٥ / ٢١٩٨، الرقم: ٥٥١٠، ومسلم في الصحيح، کتاب: الفضائل، باب: في صفة النبي ﷺ أنه کان أحسن الناس وجها، ٤ / ١٨١٨، الرقم: ٢٣٣٧، وأبو داود في السنن، کتاب: اللباس، باب: في الرخصة ذلک، ٤ / ٥٤، الرقم: ٤٠٧٢، ←

مَرْبُوْعًا، وَقَدْ رَأَيْتُهُ فِي حُلَّةٍ حَمْرَاءَ، مَا رَأَيْتُ شَيْئًا أَحْسَنَ مِنْهُ.
مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ وَهَذَا لَفْظُ الْبُخَارِيِّ.

''हज़रत बरा' ﷺ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ का क़द मुबारक मुतवस्सत (दरमियानी) था, मैंने आप ﷺ को सुर्ख़ रंग के हुल्ला यानी दो चादरों में लिपटा हुआ देखा, मैंने आप ﷺ से ज़्यादा किसी शै को हसीन नहीं देखा।''

٩٩٨ / ٦٤۔ عَنْ هِلَالِ بْنِ عَامِرٍ ﷺ قَالَ: رَأَيْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ، بِمِنًى يَخْطُبُ عَلَى بَغْلَةٍ وَعَلَيْهِ بُرْدٌ أَحْمَرُ وَعَلِيٌّ ﷺ أَمَامَهُ يُعَبِّرُ عَنْهُ.
رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ وَالْبَيْهَقِيُّ.

''हज़रत आमिर ﷺ बयान करते हैं कि मैंने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ को मिना के मकाम पर एक ख़च्चर पर ख़ुत्बा देते हुए देखा और आप ﷺ के ऊपर एक सुर्ख़ चादर थी और हज़रत अली ﷺ आपके आगे खड़े हुए आप ﷺ के अल्फ़ाज़ (लोगों तक) पहुँचा रहे थे।''

٩٩٩ / ٦٥۔ عَنْ عُبَيْدِ بْنِ جُرَيْجٍ أَنَّهُ قَالَ لِعَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رضي الله عنهما:

.... والنسائي في السنن، كتاب: الزينة، باب: اتخاذ الجمة، ٨ / ١٨٣، الرقم: ٥٢٣٢۔ ٥٢٣٣، وفي السنن الكبرى، ٥ / ٤١٢، الرقم: ٩٣٢٨، وأحمد بن حنبل في المسند، ٤ / ٢٨١، وأبو يعلى في المسند، ٣ / ٢٦٢، الرقم: ١٧١٤۔

الحديث رقم ٦٤: أخرجه أبو داود في السنن، كتاب: اللباس، باب: في الرخصة ذلك، ٤ / ٥٤، الرقم: ٤٠٧٣، والبيهقي في السنن الكبرى، ٣ / ٢٤٧، الرقم: ٥٧٧٧۔

الحديث رقم ٦٥: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: الوضوء، باب: غَسل الرِّجْلَين في النَّعلين ولا يمسح على النعلين، ١ / ٧٣، الرقم: ١٦٤، وفي كتاب: اللباس، باب: النعال السبتية وغيرها، ٥ / ٢١٩٩، الرقم: ٥٥١٣، ومسلم في الصحيح، كتاب: الحج، باب: الإهلال من حيث تنبعث الراحلة، ٢ / ٨٤٤، الرقم: ١١٨٧، وأبو داود في السنن، كتاب: المناسك، باب: في وقت الإحرام، ٢ / ١٥٠، الرقم: ١٧٧٢، ومالك في الموطأ، ١ / ٣٣٣، الرقم: ٧٣٣، وأحمد بن حنبل في المسند، ٢ / ٦٦، الرقم: ٥٣٣٨، وابن حبان في الصحيح، ٩ / ٧٨، الرقم: ٣٧٦٣۔

يَا أَبَا عَبْدِ الرَّحْمَنِ ...... رَأَيْتُكَ تَصْبُغُ بِالصُّفْرَةِ. قَالَ: وَأَمَّا الصُّفْرَةُ، فَإِنِّي رَأَيْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَصْبُغُ بِهَا، فَأَنَا أُحِبُّ أَنْ أَصْبُغَ بِهَا.

مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत उबैद बिन जुरैज बयान करते हैं कि मैंने हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर رضی اللہ عنہما से पूछाः ऐ अबू अब्दुर्रहमान! मैंने आप को देखा है कि आप कपड़ों को ज़र्द रंग से रंगते हैं? उन्होंने फरमायाः ज़र्द रंग से रंगने की वजह यह है कि मैंने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ को ज़र्द रंग से रंगते देखा है। सो मैं भी उन्हें ज़र्द रंग से रंगना पसंद करता हूँ।''

١٠٠٠ / ٦٦. عَنْ عَمْرِو بْنِ مَيْمُوْنٍ رضي الله عنه أَنَّ عُمَرَ رضي الله عنه كَانَ عَلَيْهِ يَوْمَ أُصِيْبَ ثَوْبٌ أَصْفَرُ. رَوَاهُ ابْنُ أَبِي شَيْبَةَ.

١٠٠١ / ٦٧. وفي رواية: عَنْ أَبِي ظِبْيَانَ قَالَ: رَأَيْتُ عَلَى عَلِيٍّ رضي الله عنه قَمِيْصًا وَإِزَارًا أَصْفَرَ. رَوَاهُ ابْنُ أَبِي شَيْبَةَ.

''हज़रत अ़म्र बिन मैमून رضي الله عنه बयान करते हैं कि जिस दिन हज़रत उमर رضي الله عنه शहीद हुए उन्होंने ज़र्द रंग के कपड़े पहने हुए थे।

एक रिवायत में अबू ज़िबयान बयान करते हैं कि मैंने हज़रत अ़ली رضي الله عنه को ज़र्द रंग की क़मीज़ और इज़ार (तहबन्द) पहने हुए देखा।''

١٠٠٢ / ٦٨. عَنْ أَبِي رِمْثَةَ رضي الله عنه قَالَ: رَأَيْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ وَعَلَيْهِ

الحديث رقم ٦٦/٦٧: أخرجه ابن أبي شيبة في المصنف، ٥/١٦٠، الرقم: ٢٤٧٥١-٢٤٧٥٢.

الحديث رقم ٦٨: أخرجه الترمذي في السنن، كتاب: الآداب عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء في الثوب الأخضر، ٥/١١٩، الرقم: ٢٨١٢، وأبو داود في السنن، كتاب: الترجل، باب: في الخضاب، ٤/٨٦، الرقم: ٤٢٠٦، والنسائي في السنن، كتاب: صلاة العيدين، باب: الزينة للخطبة للعيدين، ٣/١٨٥، الرقم: ١٥٧٢، والحاكم في المستدرك، ٢/٦٦٤، الرقم: ٤٢٠٣، وأحمد بن حنبل في المسند، ٢/٢٢٨، الرقم: ٧١١٧.

بُرْدَانِ أَخْضَرَانِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُوْدَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ.

وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ. وَقَالَ الْحَاكِمُ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحُ الإِسْنَادِ.

''हज़रत अबू रिमसा ﷺ रिवायत करते हैं कि मैंने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ को दो सब्ज़ चादरें ज़ेबेतन फरमाए हुए देखा।''

١٠٠٣ / ٦٩ـ عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ أَبِي عَبْدِ اللهِ ﷺ قَالَ: أَدْرَكْتُ الْمُهَاجِرِيْنَ الْأَوَّلِيْنَ يَعْتَمُّوْنَ بِعَمَائِمِ كَرَابِيْسَ سُوْدٌ وَبِيْضٌ وَحُمْرٌ وَخُضْرٌ وَصُفْرٌ يَضَعُ أَحَدُهُمَا الْعِمَامَةَ عَلَى رَأْسِهِ وَيَضَعُ الْقَلَنْسُوَةَ فَوْقَهَا ثُمَّ الْعِمَامَةَ هَكَذَا يَعْنِي عَلَى كُوْرِهِ. رَوَاهُ ابْنُ أَبِي شَيْبَةَ.

''हज़रत सुलैमान बिन अबी अ़ब्दुल्लाह ﷺ रिवायत करते हैं कि मैंने मुहाजिरीन अव्वलीन को देखा है कि वो स्याह, सफेद, सुर्ख़, सब्ज़ या ज़र्द रंग के खुरदुरे कपड़ों के इमामे बाँधते थे, उनमें से कोई इमामा अपने सर पर रखता और उसके ऊपर टोपी रखता फिर टोपी के गिर्द इस तरह इमामे को लपेट देते थे।''

١٠٠٤ / ٧٠ـ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ زَيْدٍ ﷺ قَالَ: اسْتَسْقَى رَسُوْلُ اللهِ ﷺ وَعَلَيْهِ خَمِيْصَةٌ لَهُ سَوْدَاءُ. رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَأَحْمَدُ.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ैद ﷺ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने

الحديث رقم ٦٩: أخرجه ابن أبي شيبة في المصنف، ٥/١٨١، الرقم: ٢٤٩٨٧، وابن راهوية في المسند، ٣/٨٨٢، الرقم: ١٥٥٦.

الحديث رقم ٧٠: أخرجه أبو داود في السنن، كتاب: صلاة الاستسقاء، باب: في أي وقت يحول رداء ه إذا استسقى، ١/٣٠٢، الرقم: ١١٦٣، والنسائي في السنن، كتاب: الاستسقاء، باب: الحال التي يستحب للإمام أن يكون عليها إذا خرج، ٣/١٥٦، الرقم: ١٥٠٧، وأحمد بن حنبل في المسند، ٤/٤١، وعبد الرزاق في المصنف، ١/٢٠١، الرقم: ٧٨٦، والشافعي في المسند، ١/٨٠، والمقدسي في الأحاديث المختارة، ٩/٣٦٠، الرقم: ٢٢٥.

नमाज़े इस्तिस्क़ा पढ़ाई और आप ﷺ अपनी सियाह चादर मुबारक ज़ेबेतन किए हुए थे।''

١٠٠٥ / ٧١۔ عَنْ أُمِّ خَالِدٍ بِنْتِ خَالِدٍ رضي الله عنها أُتِيَ النَّبِيُّ ﷺ بِثِيَابٍ فِيهَا خَمِيصَةٌ سَوْدَاءُ صَغِيرَةٌ، فَقَالَ: مَنْ تَرَوْنَ أَنْ نَكْسُوَ هَذِهِ. فَسَكَتَ الْقَوْمُ: قَالَ: ائْتُونِي بِأُمِّ خَالِدٍ. فَأُتِيَ بِهَا تُحْمَلُ، فَأَخَذَ الْخَمِيصَةَ بِيَدِهِ فَأَلْبَسَهَا، وَقَالَ أَبْلِي وَأَخْلِقِي. وَكَانَ فِيهَا عَلَمٌ أَخْضَرُ أَوْ أَصْفَرُ، فَقَالَ: يَا أُمَّ خَالِدٍ. هَذَا سَنَاهُ. وَ سَنَاهُ بِالْحَبَشِيَّةِ حَسَنٌ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ.

''हज़रत उम्मे ख़ालिद बिन्ते ख़ालिद رضی اللہ عنہا रिवायत करती हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के पास (माले ग़नीमत में) कपड़े लाए गए जिनमें छोटी सियाह चादर भी थी, आप ﷺ ने फरमाया : तुम्हारे ख़याल में हम किसको यह पहनाएँ? सहाबा ख़ामोश रहे, आप ﷺ ने फरमाया : उम्मे ख़ालिद को मेरे पास लाओ, (फरमाती हैं) फिर उन्हें सवार करके लाया गया, हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने मुझे अपने हाथों से वो चादर पहनाई और फरमाया (इसे इस्तेमाल कर करके) पुराना और बोसीदा कर दो। उस पर सब्ज़ और ज़र्द रंग के नुक़ूश बने हुए थे, पस आप ﷺ ने फरमाया : ऐ उम्मे ख़ालिद ! यह ''सनाह'' है। सनाह हब्शी ज़बान में निहायत खूबसूरत को कहते है।''

١٠٠٦ / ٧٢۔ عَنْ أَبِي ذَرٍّ رضي الله عنه قَالَ: أَتَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ وَعَلَيْهِ ثَوْبٌ أَبْيَضُ وَهُوَ نَائِمٌ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ.

''हज़रत अबू ज़र رضی اللہ عنہ रिवायत करते हैं कि मैं हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की ख़िदमते अक़दस में हाज़िर हुआ तो आप ﷺ सफेद कपड़ा औढ़े हुए आराम फरमा रहे थे।''

الحديث رقم ٧١: أخرجه البخاری فی الصحيح، کتاب: اللباس، باب: الخميصة السوداء، ٥ / ٢١٩١، الرقم: ٥٤٨٥، وفی باب: ما يدعی لمن لبس ثوبا جديدا، ٥ / ٢١٩٨، الرقم: ٥٥٠٧، والبيهقی فی شعب الإيمان، ٥ / ١٨٢، الرقم: ٦٢٨٩، والحاکم فی المستدرک، ٢ / ٧٢، الرقم: ٢٣٦٧، وقال الحاکم: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحٌ.

الحديث رقم ٧٢: أخرجه البخاری فی الصحيح، کتاب: اللباس، باب: الثياب البيض، ٥ / ٢١٩٣، الرقم: ٥٤٨٩، وابن منده فی الإيمان، ١ / ٢٢٤، الرقم: ٨٧، وابن أبی عاصم فی السنة، ٢ / ٤٦٤، الرقم: ٩٥٧.

١٠٠٧ / ٧٣. عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رضي الله عنهما قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِلْبَسُوْا مِنْ ثِيَابِكُمُ الْبَيَاضَ فَإِنَّهَا مِنْ خَيْرِ ثِيَابِكُمْ، وَكَفِّنُوْا فِيْهَا مَوْتَاكُمْ.

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُوْدَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَه.

وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رضی اللّٰہ عنہما रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः सफ़ेद कपड़े पहना करो क्योंकि यह तुम्हारा बेहतरीन लिबास है और इन्हीं कपड़ों में अपने मुर्दों को भी कफ़न दिया करो।''

١٠٠٨ / ٧٤. عَنْ سَمُرَةَ بْنِ جُنْدُبٍ رضي الله عنه قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِلْبَسُوا الْبَيَاضَ، فَإِنَّهَا أَطْهَرُ وَأَطْيَبُ، وَكَفِّنُوْا فِيْهَا مَوْتَاكُمْ.

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ.

الحديث رقم ٧٣: أخرجه الترمذى فى السنن، كتاب: الجنائز عن رسول الله ﷺ، باب: ما يستحب من الأكفان، ٣ / ٣١٩، الرقم: ٩٩٤، وأبو داود فى السنن، كتاب: الطب، باب: فى الأمر بالكحل، ٤ / ٨، الرقم: ٣٨٧٨، وفى كتاب: اللباس، باب: فى البياض، ٤ / ٥١، الرقم: ٤٠٦١، والنسائى فى السنن، كتاب: اللباس، باب: الأمر يلبس البيض من الثياب، ٨ / ٢٠٥، الرقم: ٥٣٢٣، وابن ماجه فى السنن، كتاب: الجنائز، باب: ما جاء فيها يستحب من الكفن، ١ / ٤٧٣، الرقم: ١٤٧٢، وفى كتاب: اللباس، باب: البياض من الثياب، ٢ / ١١٨١، الرقم: ٣٥٦٦، وأحمد بن حنبل فى المسند، ١ / ٢٤٧، الرقم: ٢٢١٩، والحاكم فى المستدرك، ١ / ٢٠٦، الرقم: ١٣٠٨، وقال: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحٌ.

الحديث رقم ٧٤: أخرجه الترمذى فى السنن، كتاب: الآداب عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء فى لبس البياض، ٥ / ١١٧، الرقم: ٢٨١٠، والنسائى فى السنن، كتاب: الجنائز، باب: أي الكفن خيرا، ٤ / ٣٤، الرقم: ١٨٩٦، وفى كتاب: اللباس، باب: الأمر يلبس البيض من الثياب، ٨ / ٢٠٥، الرقم: ٥٣٢٢-٥٣٢٣، وفى السنن الكبرى، ١ / ٦٢١، الرقم: ٢٠٢٣، وعبد الرزاق فى المصنف، ٣ / ٤٢٩، الرقم: ٦١٩٩، والطبرانى فى المعجم الأوسط، ٤ / ١٨٢، الرقم: ٣٩١٩.

وَقَالَ أَبُوعِيسَى: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ صَحِيحٌ.

''हज़रत समुरा बिन जुन्दुब ﷺ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः सफ़ेद लिबास पहना करो क्यों कि यह ज़्यादा साफ़ और पाकीज़ा है और उसी में अपने मुर्दों को कफ़न दिया करो।''

فَصْلٌ فِي آدَابِ الْمَجْلِسِ وَالْجُلُوْسِ

मजलिस में बैठने के आदाब का बयान

١٠٠٩ / ٧٥. عَنِ ابْنِ عُمَرَ رضي الله عنهما عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ نَهَى أَنْ يُقَامَ الرَّجُلُ مِنْ مَجلِسِهِ وَيَجْلِسَ فِيْهِ آخَرُ، وَلَكِنْ تَفَسَّحُوْا وَتَوَسَّعُوْا. وَكَانَ ابْنُ عُمَرَ رضي الله عنهما يَكْرَهُ أَنْ يَقُوْمَ الرَّجُلُ مِنْ مَجْلِسِهِ ثُمَّ يَجْلِسَ مَكَانَهُ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर رضی اللہ عنهما रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने इस बात से मना फरमाया है कि किसी शख़्स को उसकी मजलिस से उठाया जाए और कोई और उसकी जगह पर बैठ जाए बल्कि खुल जाया करो और अपनी मजालिस में कुशादगी पैदा किया करो और हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर رضی اللہ عنهما इस बात को नापसंद फरमाते थे कि कोई आदमी अपनी जगह से उठे और वो उसकी जगह पर बैठें।''

١٠١٠ / ٧٦. عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضي الله عنه أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: إِذَا قَامَ أَحَدُكُمْ

الحديث رقم ٧٥: أخرجه البخاری فی الصحيح، كتاب: الاستئذان، باب: إذا قِيْلَ لَكُمْ تَفَسَّحُوا فِي الْمَجَالِسِ فَافْسَحُوا يَفْسَحِ اللهُ لَكُمْ وَإِذَا قِيْلَ انْشُزُوْا فَانْشُزُوا [المجادلة:١١]، ٥/ ٢٣١٣، الرقم: ٥٩١٠- ٥٩١٤، وفی كتاب: الجمعة، باب: لايقيم الرجل أخاه يوم الجمعة ويقعد مكانه، ١/ ٣٠٩، الرقم: ٨٦٩، ومسلم فی الصحيح، كتاب: السلام، باب: تحريم إقامة الإنسان من موضعه المباح الذی سبق إليه، ٤/ ١٧١٤، الرقم: ٢١٧٧، والترمذی فی السنن، كتاب: الأدب عن رسول الله ﷺ، باب: كراهية أن يقام الرجل من مجلسه ثم يجلس فيه، ٥/ ٨٨، الرقم: ٢٧٤٩- ٢٧٥٠، وَقَالَ أَبُو عِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ، والبخاری فی الأدب المفرد، ١/ ٣٨٩، الرقم: ١١٤٠، وابن حبان فی الصحيح، ٢/ ٣٤٩، الرقم: ٥٨٧.

الحديث رقم ٧٦: أخرجه مسلم فی الصحيح، كتاب: السلام، باب: إذا قام من مجلسه ثم عاد فهو أحق به، ٤/ ١٧١٥، الرقم: ٢١٧٩، والترمذي نحو فی السنن، كتاب: الأدب عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء إذا قام الرجل من مجلسه ثم رجع إليه فهو أحق به، ٥/ ٨٩، الرقم: ٢٧٥١، وأبو داود فی السنن، كتاب: الأدب، باب: إذا قام من مجلس ثم رجع، ٤/ ٢٦٤، الرقم: ٤٨٥٣، والبخاری فی ←

(وفي حديث) مَنْ قَامَ مِنْ مَجْلِسِهِ ثُمَّ رَجَعَ إِلَيْهِ فَهُوَ أَحَقُّ بِهِ.

رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَالتِّرْمِذِيُّ.

وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: هٰذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जब तुम में से कोई (अपनी नशिस्त से) उठा (या फरमायाः) जो कोई अपनी जगह से उठ कर गया फिर लौट के आया तो वो उस जगह पर बैठने का ज़्यादा हक़दार है (जहाँ वो पहले बैठा हुआ था)।''

١٠١١ / ٧٧. عَنْ مُعَاوِيَةَ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ سَرَّهُ أَنْ يَتَمَثَّلَ لَهُ الرِّجَالُ قِيَامًا فَلْيَتَبَوَّأْ مَقْعَدَهُ مِنَ النَّارِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُوْدَاوُدَ.

وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: هٰذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ.

''हज़रत मुआविया ﷺ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जिसे यह बात पसंद हो कि लोग उसके लिए बुत की तरह (एहतिरामन) खड़े हों तो वो अपना ठिकाना जहन्नम में तैयार रखे।''

١٠١٢ / ٧٨. عَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ جَدِّهِ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ

.... الأدب المفرد، ١/ ٣٨٨، الرقم: ١١٣٨، وابن حبان فى الصحيح، ٢/ ٣٤٩، الرقم: ٥٨٨، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٢/ ٢٦٣، الرقم: ٧٥٥٨، والطحاوى فى مشكل الآثار، ٢/ ١١٠.

الحديث رقم ٧٧: أخرجه الترمذي فى السنن، كتاب: الآدب عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء فى كراهية قيام الرجل للرجل، ٥/ ٩٠، الرقم: ٢٧٥٥، وأبو داود فى السنن، كتاب: الأدب، باب: فى قيام الرجل للرجل، ٤/ ٣٥٨، الرقم: ٥٢٢٩، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٤/ ٩٣، ١٠٠، والطبرانى فى المعجم الأوسط، ٤/ ٢٨٢، الرقم: ٤٢٠٨، وفى المعجم الكبير، ١٩/ ٣٥١، الرقم: ٨١٩، والبخارى فى الأدب المفرد، ١/ ٣٣٩، الرقم: ٩٧٧.

الحديث رقم ٧٨: أخرجه أبوداود فى السنن، كتاب: الأدب، باب: فى الرجل يجلس بين الرجلين بغير إذنهما، ٤/ ٢٦٢، الرقم: ٤٨٤٤، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٤/ ٢٦، الرقم: ٤٦٤٩، والخطيب التبريزى فى مشكاة المصابيح، ٢/ ١٧٣، الرقم: ٤٧٠٤.

قَالَ: لَا تَجْلِسْ بَيْنَ رَجُلَيْنِ إِلَّا بِإِذْنِهِمَا. رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ.

''हज़रत उमर बिन शुऐब बवास्ता अपने वालिद अपने दादा से रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः दो आदमियों के दरमियान उनकी इजाज़त के बग़ैर न बैठो।''

١٠١٣ / ٧٩. عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ قَالَ: كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يَجْلِسُ مَعَنَا فِي الْمَسْجِدِ يُحَدِّثُنَا، فَإِذَا قَامَ قُمْنَا قِيَامًا حَتَّى نَرَاهُ قَدْ دَخَلَ بَعْضَ بُيُوْتِ أَزْوَاجِهِ. رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ وَالْبَيْهَقِيُّ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ मस्जिद में हमारे साथ गुफ़्तगू फरमाने के लिए तशरीफ़ फरमा हुआ करते थे जब आप ﷺ (तशरीफ़ ले जाने के लिए) क़ियाम फरमा होते तो हम भी (ताज़ीमन) खड़े हो जाते (और उस वक़्त तक खड़े रहते) यहाँ तक कि हम देखते कि आप ﷺ अपनी किसी ज़ौजा मुतह्हरा के घर में दाख़िल हो गए हैं।''

١٠١٤ / ٨٠. عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ ﷺ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: خَيْرُ الْمَجَالِسِ أَوْسَعُهَا. رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ وَأَحْمَدُ وَالْحَاكِمُ. وَقَالَ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ रिवायत करते हैं कि मैंने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ को फरमाते हुए सुनाः बेहतरीन मजलिस वो है जिसमें बैठने की ज़्यादा से ज़्यादा गुंजाइश हो।''

الحديث رقم ٧٩: أخرجه أبو داود فى السنن، كتاب: الأدب، باب: فى الحلم وأخلاق النبي ﷺ، ٤ / ٢٤٧، الرقم: ٤٧٧٥، والبيهقى فى شعب الإيمان، ٦ / ٤٦٧، الرقم: ٨٩٣٠، والخطيب التبريزى فى مشكاة المصابيح، ٢ / ١٧٣، الرقم: ٤٧٠٥.

الحديث رقم ٨٠: أخرجه أبوداود فى السنن، كتاب: الأدب، باب: فى سعة المجلس، ٤ / ٢٥٧، الرقم: ٤٨٢٠، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٣ / ٦٩، الرقم: ١١٦٨١، ١١١٥٣، والحاكم فى المستدرك، ٤ / ٣٠٠، الرقم: ٧٧٠٥، ٧٧٠٤، والطبرانى عن أنس ﷺ فى المعجم الأوسط، ١ / ٢٥٥، الرقم: ٨٣٦، والبيهقى فى شعب الإيمان، ٦ / ٣٠٠، الرقم: ٨٢٥٠.

فَصْلٌ فِي آدَابِ السَّفَرِ

आदाबे सफ़र का बयान

١٠١٥ / ٨١. عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ رضي الله عنه أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ صلى الله عليه وآله وسلم قَالَ: إِذَا خَرَجَ ثَلَاثَةٌ فِي سَفَرٍ فَلْيُؤَمِّرُوْا أَحَدَهُمْ. وفي رواية: فَلْيَؤُمَّهُمْ أَقْرَؤُهُمْ.

رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ وَابْنُ حِبَّانَ وَالْبَزَّارُ. إِسْنَادُهُ حَسَنٌ.

''हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रضي الله عنه रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी-ए-अकरम صلى الله عليه وآله وسلم ने फरमाया : जब तीन आदमी सफ़र पर रवाना हों तो अपने में से एक शख़्स को अमीर बना लें और एक रिवायत में है कि उनकी इमामत वो करे जो उनमें सबसे ज़्यादा पढ़ा हुआ हो।''

١٠١٦ / ٨٢. عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو رضي الله عنهما قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صلى الله عليه وآله وسلم: خَيْرُ الْأَصْحَابِ عِنْدَ اللهِ خَيْرُهُمْ لِصَاحِبِهِ وَخَيْرُ الْجِيْرَانِ عِنْدَ اللهِ خَيْرُهُمْ لِجَارِهِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَحْمَدُ وَالدَّارِمِيُّ وَالْحَاكِمُ.

الحديث رقم ٨١: أخرجه أبو داود في السنن، كتاب: الجهاد، باب: في القوم يسافرون يؤمرون أحدهم، ٣/٣٦، الرقم: ٢٦٠٨، وابن حبان في الصحيح، ٥/٥٠٤، الرقم:٢١٣٢، والبزار في المسند، ١/٤٦٢، الرقم: ٣٢٩، وعبد الرزاق في المصنف، ٢/٣٩٠، الرقم: ٣٨١٢، ٩٢٥٦، والبيهقي في السنن الكبرى، ٣/١١٩، الرقم: ٥٠٧١، والطبراني في المعجم الأوسط، ٨/٩٩، الرقم: ٨٠٩٣، وفي المعجم الكبير، ٩/١٨٥، الرقم:٨٩١٥، وأبو يعلى في المسند، ٢/٣١٩، الرقم: ١٠٥٤، والطيالسي في المسند، ١/٢٨٦، الرقم: ٢١٥٢، وابن الجعد في المسند، ١/٧٨، الرقم: ٤٣٠.

الحديث رقم ٨٢: أخرجه الترمذي في السنن، كتاب: البر والصلة عن رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم، باب: ما جاء في حق الجوار، ٤/٣٣٣، الرقم: ١٩٤٤، وأحمد بن حنبل في المسند، ٢/١٦٧، الرقم: ٦٥٦٦، والدارمي في السنن، ٢/٢٨٤، الرقم: ٢٤٣٧، والحاكم في المستدرك، ١/٦١٠، الرقم: ١٦٢٠، وابن خزيمة في الصحيح، ٤/١٤٠، الرقم: ٢٥٣٩، والبخاري في الأدب المفرد، ١/٥٣، الرقم: ١١٥.

وَقَالَ أَبُوْعِيْسى: هٰذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ. وَقَالَ الْحَاكِمُ: هٰذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رضی اللہ عنہما से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः अल्लाह तआ़ला के हाँ बेहतरीन साथी वो है जो अपने साथियों के हक़ में बेहतर है और अल्लाह तआ़ला की हाँ बेहतरीन हमसाया वो है जो अपने हमसाए के हक़ में बेहतर है।''

١٠١٧ / ٨٣. عَنْ زَيْدِ بْنِ أَرْقَمَ ﷺ عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ قَالَ: إِذَا أَرَادَ أَحَدُكُمْ سَفَرًا فَلْيُوَدِّعْ إِخْوَانَهُ، فَإِنَّ اللهَ ﷻ جَاعِلٌ لَهُ فِي دُعَائِهِمُ الْبَرَكَةَ. وفي رواية: خَيْرًا. رَوَاهُ الدَّيْلَمِيُّ.

''हज़रत ज़ैद बिन अरक़म ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जब तुम में से कोई सफ़र का इरादा करे तो उसे चाहिए कि अपने भाईयों को अलविदा कहे, (और उनसे ख़ैरो आ़फ़ियत की दुआ़ कराए) बेशक अल्लाह तआ़ला उनकी दुआ़ओं से उसे ख़ैरो बरकत से नवाज़ने वाला है।''

١٠١٨ / ٨٤. عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ ﷺ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ لَا يَنْزِلُ (وفي رواية: لَا يَتْرُكُ) مَنْزِلًا إِلَّا وَدَّعَهُ بِرَكْعَتَيْنِ.

رَوَاهُ ابْنُ خُزَيْمَةَ وَالْحَاكِمُ.

وَقَالَ الْحَاكِمُ: هٰذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ किसी मुक़ाम पर क़ियाम फरमाते थे न किसी मंज़िल से रुख़्सत होते थे जब तक वहाँ दो रकअ़त नमाज़ अदा न फरमा लेते।''

الحديث رقم ٨٣: أخرجه الديلمى فى مسند الفردوس، ١ / ٢٩٩، الرقم: ١١٨١، والخطيب البغدادى فى الجامع لأخلاق الراوى، ٢ / ٢٣٨، الرقم: ١٧٢٠.

الحديث رقم ٨٤: أخرجه ابن خزيمة، ٢ / ٢٤٨، الرقم: ١٢٦٠، ٢٥٦٨، والحاكم فى المستدرك، ١ / ٤٦٠، الرقم: ١١٨٨، ١٦٣٥، ٢٤٩٢، والسيوطى فى الجامع الصغير، ١ / ٢٥٩، الرقم: ٤٥٤.

١٠١٩ / ٨٥. عَنْ كَعْبِ بْنِ مَالِكٍ ﷺ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ خَرَجَ يَوْمَ الْخَمِيْسِ فِي غَزْوَةِ تَبُوْكَ، وَكَانَ يُحِبُّ أَنْ يَخْرُجَ يَوْمَ الْخَمِيْسِ.

رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ وَأَبُوْدَاوُدَ.

١٠٢٠ / ٨٦. وفي رواية للبخاري: لَقَلَّمَا كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يَخْرُجُ إِذَا خَرَجَ فِي سَفَرٍ إِلَّا يَوْمَ الْخَمِيْسِ.

''हज़रत का'ब बिन मालिक ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ग़ज़्व–ए–तबूक के लिए जुमेरात के दिन रवाना हुए और आप ﷺ जुमेरात के दिन सफ़र के लिए रवाना होना पसंद फरमाते थे।''

और इमाम बुख़ारी की बयान कर्दह एक और रिवायत में है कि बहुत कम ऐसा हुआ कि हुज़ूर नबीए अकरम ﷺ जुमेरात के अलावा किसी और दिन (सफ़र के लिए रवाना हुए हों)।''

١٠٢١ / ٨٧. عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: ثَلَاثُ

الحديث رقم ٨٥ / ٨٦: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: الجهاد، باب: من أراد غزوة فَوَرَّى بغيرها، ومن أحب الخروج يوم الخميس، ٣ / ١٠٧٨، الرقم: ٢٧٨٩. ٢٧٩٠، وأبو داود في السنن، كتاب: الجهاد، باب: في أي يوم يستحب السفر، ٣ / ٣٥، الرقم: ٢٦٠٥، وابن حبان في الصحيح، ٨ / ١٥٥، الرقم: ٣٣٧٠، وعبد الرزاق في المصنف، ٥ / ١٦٩. ١٧٠، الرقم: ٩٢٧٠، والطبراني في المعجم الأوسط، ٢ / ٧٤، الرقم: ١٢٩١: ٨ / ١٨١، الرقم: ٨٣٣٥، وفي المعجم الكبير، ١٩ / ٤٢، الرقم: ٩٠.

الحديث رقم ٨٧: أخرجه الترمذي في السنن، كتاب البر والصلة عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء في دعوةِ الوالدين، ٤ / ٣١٤، الرقم: ١٩٠٥، وفي كتاب: الدعوات عن رسول الله ﷺ، باب: ما ذكر في دعوة المسافر، ٥ / ٥٠٢، الرقم: ٣٤٤٨، وأبو داود في السنن، كتاب: الصلاة، باب: الدعاء بظهر الغيب، ٢ / ٨٩، الرقم: ١٥٣٦، وأحمد بن حنبل في المسند، ٢ / ٢٥٨، الرقم: ٧٥٠١، ٨٥٦٤، ١٠١٩٩، ١٠٧١٩، ١٠٧٨١، وابن حبان في الصحيح، ٦ / ٤١٦، الرقم: ٢٦٩٩، وابن أبي شيبة في المصنف، ٦ / ١٠٥، الرقم: ٢٩٨٣٠، والبخاري في الأدب المفرد، ١ / ٢٥، الرقم: ٣٢، والطبراني في المعجم الأوسط، ١ / ١٢، الرقم: ٢٤، ←

دَعَوَاتٍ مُسْتَجَابَاتٌ لَا شَكَّ فِيْهِنَّ: دَعْوَةُ الْمَظْلُوْمِ وَدَعْوَةُ الْمُسَافِرِ وَدَعْوَةُ الْوَالِدِ عَلَى وَلَدِهِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُوْدَاوُدَ وَأَحْمَدُ.

وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: هٰذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः तीन (क़िस्म के लोगों की) दुआएँ बिला शको शुबह मक़बूल हैं : मज़लूम की दुआ, मुसाफ़िर की दुआ और वालिद की अपनी औलाद के हक़ में बद्दुआ (सो वालिदैन की बद्दुआ से बचो)।''

.... والبيهقى فى شعب الإيمان، ٣/ ٣٠٠، الرقم: ٣٥٩٤، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٤/ ٤٣، الرقم: ٤٧٣٥.

فَصْلٌ فِي آدَابِ الْأَمْوَاتِ وَالْجَنَائِزِ

मरहूमीन और जनाज़े के आदाब का बयान

١٠٢٢ / ٨٨. عَنْ أَنَسٍ رضي الله عنه قَالَ: مَرُّوْا بِجَنَازَةٍ فَأَثْنَوْا عَلَيْهَا خَيْرًا، فَقَالَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وآله وسلم: وَجَبَتْ، ثُمَّ مَرُّوْا بِأُخْرَى فَأَثْنَوْا عَلَيْهَا شَرًّا، فَقَالَ: وَجَبَتْ. فَقَالَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ رضي الله عنه: مَا وَجَبَتْ؟ قَالَ: هَذَا أَثْنَيْتُمْ عَلَيْهِ خَيْرًا، فَوَجَبَتْ لَهُ الْجَنَّةُ، وَهَذَا أَثْنَيْتُمْ عَلَيْهِ شَرًّا، فَوَجَبَتْ لَهُ النَّارُ، أَنْتُمْ شُهَدَاءُ اللهِ فِي الْأَرْضِ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

''हज़रत अनस रضي الله عنه से रिवायत है कि (कुछ लोग) एक ज़नाज़े के साथ (सहाबा किराम के सामने से) गुज़रे तो उन्होंने उस (मय्यत) की तारीफ़ की, हुज़ूर नबी-ए-अकरम صلى الله عليه وآله وسلم ने फरमायाः वाजिब हो गई। फिर (कुछ लोग) दूसरे जनाज़े के साथ (सहाबा किराम के सामने से) गुज़रे तो उन्होंने उस (मय्यत) की बुराई बयान की तो हुज़ूर नबी-ए-अकरम صلى الله عليه وآله وسلم ने फरमायाः वाजिब हो गई। हज़रत उमर बिन ख़त्ताब رضي الله عنه ने अर्ज़ किया : (या रसूलल्लाह!) क्या वाजिब हो गई ? आप صلى الله عليه وآله وسلم ने फरमाया : जिस शख़्स की तुमने तारीफ़ की है तो उसके लिए जन्नत वाजिब हो गई और जिसकी तुमने बुराई बयान की तो उसके लिए दोज़ख़ वाजिब हो गई। तुम ज़मीन पर अल्लाह तआला के गवाह हो।''

الحديث رقم ٨٨: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: الجنائز، باب: ثناء الناس على الميت، ١ / ٤٦٠، الرقم: ١٣٠١، وفي كتاب: الشهادات، باب: تعديل كم يَجُوزُ، ٢ / ٩٣٤، الرقم: ٢٤٩٩، ومسلم في الصحيح، كتاب: الجنائز، باب: فيمن يثنى عليه خير أو شر من الموتى، ٢ / ٦٥٥، الرقم: ٩٤٩، والنسائي في السنن، كتاب: الجنائز، باب: الثناء، ٤ / ٤٩، الرقم: ١٩٣٢، وفي السنن الكبرى، ١ / ٦٢٩، الرقم: ٢٠٥٩، وأحمد بن حنبل في المسند، ٣ / ١٨٦، الرقم: ١٢٩٦١، وابن أبي شيبة في المصنف، ٣ / ٤٦، الرقم: ١١٩٩٣، والبيهقي في السنن الكبرى، ٤ / ٧٤، الرقم: ٦٩٧٤، والمنذري في الترغيب والترهيب، ٤ / ١٨١، الرقم: ٥٣٣٦.

١٠٢٣ / ٨٩ـ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضي الله عنه عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: أَسْرِعُوْا بِالْجَنَازَةِ، فَإِنْ تَکُ صَالِحَةً فَخَيْرٌ تُقَدِّمُوْنَهَا، وَإِنْ يَکُ سِوَى ذٰلِکَ، فَشَرٌّ تَضَعُوْنَهُ عَنْ رِقَابِکُمْ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

وفي رواية لمسلم: فَخَيْرٌ تُقَدِّمُوْنَهَا عَلَيْهِ.

''हज़रत अबू हुरैरा रضي الله عنه हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ से रिवायत करते हैं कि आप ﷺ ने फरमायाः जनाज़ा जल्दी उठाओ क्योंकि अगर जनाज़ा नेक आदमी का है तो यह एक ख़ैर है जिसे तुम भेज रहे हो और अगर जनाज़ा उसके सिवा (यानी किसी गुनाहगार शख़्स) का है तो तुम एक बुराई को अपनी गर्दन से उतार रहे हो। और मुस्लिम की एक रिवायत के अल्फ़ाज़ हैंः तुम उस पर भलाई पेश कर रहे हो।''

١٠٢٤ / ٩٠ـ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رضي الله عنه قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ:

الحديث رقم ٨٩: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: الجنائز، باب: السرعة بالجنازة، ١/٤٤٢، الرقم: ١٢٥٢، ومسلم فى الصحيح، كتاب: الجنائز، باب: الإسراع فى الجنازة، ٢/٦٥١، الرقم: ٩٤٤، وأبوداود فى السنن، كتاب: الجنائز، باب: الإسراع بالجنازة، ٣/٢٠٥، الرقم: ٣١٨١، والنسائى فى السنن، كتاب الجنائز، باب: السرعة بالجنازة، ٤/٤١، الرقم: ١٩١٠، وفى السنن الكبرى، ١/٦٢٤، الرقم: ٢٠٣٧، وابن ماجه فى السنن، كتاب: الجنائز، باب: ما جاء فى شهود الجنازة، ١/٤٧٤، الرقم: ١٤٧٧، وابن أبى شيبة فى المصنف، ٢/٤٧٩، الرقم: ١١٢٦٣، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٤/٢١، الرقم: ٦٦٣٥، والحميدى فى المسند، ٢/٤٤٤، الرقم: ١٠٢٢، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ٤/١٧٩، الرقم:٣٣١.

الحديث رقم ٩٠: أخرجه مسلم فى الصحيح، كتاب: الجنائز، باب: تلقين الموتى لا إله إلا الله، ٢/٦٣١، الرقم: ٩١٦، والترمذى فى السنن، كتاب: الجنائز عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء فى تلقين المريض عند الموت والدعاء له عنده، ٣/٣٠٦، الرقم: ٩٧٦، وأبو دواد فى السنن، كتاب: الجنائز، باب: فى التلقين، ٣/١٩٠، الرقم: ٣١١٧، والنسائى فى السنن، كتاب الجنائز، باب: تلقين الميت، ٤/٥، الرقم: ١٨٢٦، وفى السنن الكبرى، ١/٦٠١، الرقم: ١٩٥٢، وابن ماجه ←

لَقِّنُوا مَوْتَاكُمْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَالتِّرْمِذِيُّ.

وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः अपने मरने वालों को (बवक़्ते नज़अ) ﴿لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ﴾ की तलक़ीन किया करो (यानी उनके पास कलिमए तय्यबा का विर्द किया करो)।''

١٠٢٥ / ٩١۔ عَنْ عَائِشَةَ رضي الله عنها عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَا مِنْ مَيِّتٍ تُصَلِّي عَلَيْهِ أُمَّةٌ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ يَبْلُغُوْنَ مِئَةً، كُلُّهُمْ يَشْفَعُوْنَ لَهُ إِلَّا شُفِّعُوْا فِيْهِ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَالتِّرْمِذِيُّ.

وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा رضی اللہ عنہا से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जिस मय्यत पर भी मुसलमानों की एक ऐसी जमाअत नमाज़े जनाज़ा पढ़े जिनकी तादाद सौ तक पहुँचती हो और वो तमाम उस मय्यत की शफ़ाअत की (दुआ) करें तो उस (मय्यत) के हक़ में उनकी शफ़ाअत क़ुबूल होती है।''

.... فى السنن، كتاب: الجنائز، باب: ماجاء فى تلقين الميت لا إله إلا الله، ١ / ٤٦٤، ٤٦٥، الرقم: ١٤٤٤-١٤٤٦، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٣ / ٣، الرقم: ١٠٠٦، والبزار فى المسند، ٦ / ٢٠٨، الرقم: ٢٢٤٨۔

الحديث رقم ٩١: أخرجه مسلم فى الصحيح، كتاب: الجنائز، باب: من صلى عليه مائة شفعوا فيه، ٢ / ٦٥٤، الرقم: ٩٤٧، والترمذى فى السنن، كتاب: الجنائز عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء في الصلاة على الجنازة والشفاعة للميت، ٣ / ٣٤٨، الرقم: ١٠٢٩، والنسائى فى السنن، كتاب: الجنائز، باب: فضل من صلى عليه مائة، ٤ / ٧٥، الرقم: ١٩٩١، وفى السنن الكبرى، ١ / ٦٤٤، الرقم: ٢١١٨، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٣ / ٢٦٦، الرقم: ١٣٨٣٠، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٤ / ٣٠، الرقم: ٦٦٩٤، وفى شعب الإيمان، ٧ / ٤، الرقم: ٩٢٤٨، وأبو يعلى فى المسند، ٧ / ٣٦٤، الرقم: ٤٣٩٨، ٨ / ٢٨٦، الرقم: ٤٨٧٤۔

١٠٢٦ / ٩٢۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضي الله عنه قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: إِذَا صَلَّيْتُمْ عَلَى الْمَيِّتِ فَأَخْلِصُوْا لَهُ الدُّعَاءَ.

رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ وَابْنُ مَاجَه وَصَحَّحَهُ ابْنُ حِبَّانَ.

''हज़रत अबू हुरैरा رضي الله عنه से मरवी है कि मैंने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ को यह फरमाते सुनाः जब तुम मय्यत की नमाज़े जनाज़ा पढ़ चुको तो उसके लिए ख़ुलूसे दिल से (बख़्शिश की) दुआ किया करो।''

١٠٢٧ / ٩٣۔ عَنْ عُثْمَانَ بْنِ عَفَّانَ رضي الله عنه قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا فَرَغَ مِنْ دَفْنِ الْمَيِّتِ وَقَفَ عَلَيْهِ، فَقَالَ: اسْتَغْفِرُوْا لِأَخِيْكُمْ وَسَلُوا لَهُ التَّثْبِيْتَ فَإِنَّهُ الآنَ يُسْأَلُ. رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ وَالْبَزَّارُ.

وَقَالَ الْحَاكِمُ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान رضي الله عنه से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ जब किसी मय्यत की तदफ़ीन से फ़ारिग़ हो जाते तो उसकी क़ब्र पर ठहरते और फरमाते : अपने भाई के लिए मग़फ़िरत तलब करो और (अल्लाह तआला से) उसके लिए (हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की ज़ाते अक़दस के बारे में पूछे जाने वाले सवालात में) साबित क़दमी की इल्तिजा करो, क्योंकि अब उससे सवाल किए जाएंगे।''

الحديث رقم ٩٢: أخرجه أبوداود فى السنن، كتاب: الجنائز، باب: الدعاء للميت، ٣ / ٢١٠، الرقم: ٣١٩٩، وابن ماجه فى السنن، كتاب: الجنائز، باب: ما جاء فى الدعاء فى الصلاة على الجنازة، ١ / ٤٨٠، الرقم: ١٤٩٧، وابن حبان فى الصحيح، ٧ / ٣٤٥، الرقم: ٣٠٧٦، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٤ / ٤٠، الرقم: ٦٧٥٥۔

الحديث رقم ٩٣: أخرجه أبو داود فى السنن، كتاب: الجنائز، باب الاستغفار عند القبر للميت فى وقت الإنصراف، ٣ / ٢١٥، الرقم: ٣٢٢١، والبزار فى المسند، ٢ / ٩١، الرقم: ٤٤٥، والحاكم فى المستدرك، ١ / ٥٢٦، الرقم: ١٣٧٢، والمقدسى فى الأحاديث المختارة، ١ / ٥٢٢، الرقم: ٣٧٨۔ وقال: إِسْنَادُهُ حَسَنٌ۔

١٠٢٨ / ٩٤. عَنْ أَبِي رَافِعٍ أَسْلَمَ مَوْلَى رَسُوْلِ اللهِ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ غَسَّلَ مَيِّتًا فَكَتَمَ عَلَيْهِ، غَفَرَ اللهُ لَهُ أَرْبَعِيْنَ مَرَّةً.

رَوَاهُ الْحَاكِمُ وَالطَّبَرَانِيُّ وَالْبَيْهَقِيُّ.

وَقَالَ الْحَاكِمُ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحٌ عَلَى شَرْطِ مُسْلِمٍ.

''हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के (आज़ाद कर्दह ग़ुलाम हज़रत अबू राफ़ेअ असलम) ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जिस आदमी ने किसी मय्यत को ग़ुस्ल दिया और उसका (कोई राज़ पाया और फिर वो) राज़ पोशीदा रखा तो अल्लाह तआला चालीस मर्तबा उसकी मग़्फ़िरत फरमाएगा।''

الحديث رقم ٩٤: أخرجه الحاكم في المستدرك، ١/٥٠٥، الرقم: ١٣٠٧، ١/٥١٦، الرقم: ١٣٤٠، والطبراني في المعجم الكبير، ١/٣١٥، الرقم: ٩٢٩: ٨/٢٨١، الرقم: ٨٠٧٨، والبيهقي في شعب الإيمان، ٢/٩، الرقم: ٩٢٦٥، ٩٢٦٧، والمنذري في الترغيب والترهيب، ٤/١٧٤، الرقم: ٥٣٠٥، والهيثمي في مجمع الزوائد، ٣/٢١، وقال: رِجَالُهُ رِجَالُ الصَّحِيحِ.

فَصْلٌ فِي جَامِعِ الآدَابِ

जामेअ आदाब का बयान

١٠٢٩ / ٩٥۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضي الله عنه عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: إِذَا عَطَسَ أَحَدُكُمْ، فَلْيَقُلِ: الْحَمْدُ لِلّٰهِ، وَلْيَقُلْ لَهُ أَخُوْهُ أَوْ صَاحِبُهُ: يَرْحَمُکَ اللهُ، فَإِذَا قَالَ لَهُ: يَرْحَمُکَ اللهُ، فَلْيَقُلْ: يَهْدِيْكُمُ اللهُ وَيُصْلِحُ بَالَكُمْ.

رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ وَالتِّرْمِذِيُّ.

''हज़रत अबू हुरैरा रضي الله عنه से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : जब तुम में से कोई शख़्स छींके तो ﴿اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ﴾ कहे, और उसका भाई या दोस्त (जो भी सुने) वो जवाब में ﴿يَرْحَمُکَ اللهُ﴾ कहे और उसका भाई ﴿يَرْحَمُکَ اللهُ﴾ कहे तो फिर वो कहे ﴿يَهْدِيْكُمُ اللهُ وَيُصْلِحُ بَالَكُمْ﴾ ''अल्लाह तआला तुम्हें हिदायत दे और तुम्हारे हालात को संवारे।''

١٠٣٠ / ٩٦۔ عَنْ أَبِي مُوْسَى رضي الله عنه قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: إِذَا

الحديث رقم ٩٥: أخرجه البخاری فی الصحيح، كتاب: الأدب، باب: إذا عطس كيف يُشَمِّتُ، ٥ / ٢٢٩٨، الرقم: ٥٨٧٠، والترمذی فی السنن، كتاب: الأدب عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء كيف تشميت العاطس، ٥ / ٨٣، الرقم: ٢٧٣٩-٢٧٤١، وَقَالَ أَبُوعِيسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ، وأبوداود فی السنن، كتاب: الأدب، باب: ما جاء فی تشميت العاطس، ٤ / ٣٠٧، الرقم: ٥٠٣٣، والنسائي فی السنن الكبری، ٦ / ٦١، الرقم: ١٠٠٤٠، وابن ماجه فی السنن، كتاب: الأدب، باب: تشميت العاطس، ٢ / ١٢٢٤، الرقم: ٣٧١٥۔

الحديث رقم ٩٦: أخرجه مسلم فی الصحيح، كتاب: الزهد والرقائق، باب: تشميت العاطس وكراهة التثاؤب، ٤ / ٢٢٩٢، الرقم: ٢٩٩١، والبخاری فی الأدب المفرد، ١ / ٣٢٣، الرقم: ٩٤١، وأحمد بن حنبل فی المسند، ٤ / ٤١٢، والحاكم فی المستدرك، ٤ / ٢٩٤، الرقم: ٧٦٩٠، وَقَالَ الحاكم: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحُ الإِسْنَادِ، والبزار فی المسند، ٨ / ١٢١، الرقم: ٣١٢٥، وابن أبی شيبة فی المصنف، ٥ / ٢٦٨، الرقم: ٩٣٣٠-٩٣٣١، والديلمی فی مسند الفردوس، ١ / ٢٩٧، الرقم: ١١٧٤۔

عَطَسَ أَحَدُكُمْ فَحَمِدَ اللهَ فَشَمِّتُوهُ، فَإِنْ لَمْ يَحْمَدِ اللهَ فَلَا تُشَمِّتُوهُ.

رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَأَحْمَدُ.

''हज़रत अबू मूसा ﷺ से मरवी है, वो बयान करते हैं कि उन्होंने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ को यह फरमाते हुए सुना : जब तुम में से कोई शख़्स छींके और ﴿اَلحَمْدُ لِلّٰهِ﴾ कहे तो तुम उसके लिए ﴿يَرْحَمُكَ اللهُ﴾ कहो और अगर वो ﴿اَلحَمْدُ لِلّٰهِ﴾ न कहे तो तुम भी ﴿يَرْحَمُكَ اللهُ﴾ न कहो।''

١٠٣١ / ٩٧. عَنْ أَبِي مُوسَى الْأَشْعَرِيِّ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: الاِسْتِئْذَانُ ثَلَاثٌ، فَإِنْ أُذِنَ لَكَ وَإِلَّا فَارْجِعْ.

رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَالتِّرْمِذِيُّ وَمَالِكٌ.

''हज़रत अबू मूसा अशअरी ﷺ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः (किसी घर में दाख़िल होने के लिए) तीन मर्तबा इजाज़त तलब करो, अगर इजाज़त मिल जाए तो ठीक है वरना वापस लौट जाओ।''

١٠٣٢ / ٩٨. عَنْ ثَوْبَانَ ﷺ مَوْلَى رَسُوْلِ اللهِ ﷺ عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ

الحديث رقم ٩٧: أخرجه مسلم في الصحيح، كتاب الآداب، باب: الاستئذان، ٣/١٦٩٤، الرقم: ٢١٥٣، والترمذي في السنن، كتاب: الاستئذان والآداب عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء في الاستئذان ثلاثة، ٥/٥٤، الرقم: ٢٦٩١، ومالك في الموطأ، ٢/٩٦٣، الرقم: ١٧٣٠، ١٧٣١، وابن أبي شيبة في المصنف، ٥/٢٦٨، الرقم: ٢٥٩٧، والبيهقي في شعب الإيمان، ٦/٤٤١، الرقم: ٨٨١٧، وأبو المحاسن في معتصر المختصر، ٢/٢٣٣.

الحديث رقم ٩٨: أخرجه مسلم في الصحيح، كتاب: البر والصلة والآداب، باب: فضل عيادة المريض، ٤/١٩٨٩، الرقم: ٢٥٦٨، والترمذي في السنن، كتاب: الجنائز، باب: ما جاء في عيادة المريض، ٣/٢٩٩. ٣٠٠، الرقم: ٩٦٧. ٩٦٨، والبخاري في الأدب المفرد، ١/١٨٤، الرقم: ٥٢١، وأحمد بن حنبل في المسند، ٥/٢٧٧، الرقم: ٢٢٤٤٣، وابن أبي شيبة في المصنف، ٢/٤٤٣، الرقم: ١٠٨٣٢، والبيهقي في السنن الكبرى، ٣/٣٨٠، الرقم: ٦٣٧١، والطبراني في المعجم الكبير، ٢/١٠١، الرقم: ١٤٤٥، والطيالسي في المسند، ١/١٣٢، الرقم: ٩٨٨.

قَالَ: مَنْ عَادَ مَرِيْضًا، لَمْ يَزَلْ فِي خُرْفَةِ الْجَنَّةِ. قِيْلَ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! وَمَا خُرْفَةُ الْجَنَّةِ؟ قَالَ: جَنَاهَا. رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَالتِّرْمِذِيُّ.

وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: حَدِيْثُ ثَوْبَانَ حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ.

''हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के ग़ुलाम हज़रत सौबान ﷺ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जिस शख़्स ने मरीज़ की इयादत की वो हमेशा ख़ुर्फ़ा जन्नत में रहेगा, अर्ज़ किया गयाः या रसूलल्लाह! ख़ुर्फ़ा जन्नत से क्या मुराद है? आप ﷺ ने फरमायाः ख़ुर्फ़ा जन्नत का एक बाग़ है।''

١٠٣٣ / ٩٩. عَنْ عَلِيٍّ ﷺ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَا مِنْ مُسْلِمٍ يَعُوْدُ مُسْلِمًا غُدْوَةً إِلَّا صَلَّى عَلَيْهِ سَبْعُوْنَ أَلْفَ مَلَكٍ حَتَّى يُمْسِيَ، وَإِنْ عَادَهُ عَشِيَّةً إِلَّا صَلَّى عَلَيْهِ سَبْعُوْنَ أَلْفَ مَلَكٍ حَتَّى يُصْبِحَ، وَكَانَ لَهُ خَرِيْفٌ فِي الْجَنَّةِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُوْدَاوُدَ وَابْنُ مَاجَه.

وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ.

''हज़रत अली ﷺ से रिवायत है कि उन्होंने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ से सुना कि आप ﷺ फरमाते हैः जो मुसलमान भी सुबह के वक़्त किसी मुसलमान की बीमार पुर्सी करता है तो सत्तर हजार फ़रिशते शाम तक उसके लिए दुआ करते रहते हैं और अगर वो शाम के वक़्त

الحديث رقم ٩٩: أخرجه الترمذى فى السنن، كتاب: الجنائز عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء فى عيادة المريض، ٣/ ٣٠٠، الرقم: ٩٦٩، وأبوداود فى السنن،كتاب: الجنائز، باب: فى فضل العيادة على وضوء، ٣/ ١٨٥، الرقم: ٣٠٩٨، وابن ماجه فى السنن، كتاب: الجنائز، باب: ما جاء فى ثواب من عاد مريضا، ١/ ٤٦٣، الرقم: ١٤٤٢، وابن حبان فى الصحيح، ٧/ ٢٢٤، الرقم: ٢٩٥٨، وأحمد بن حنبل فى المسند، ١/ ١١٨، الرقم: ٩٥٥، والبزار فى المسند، ٣/ ٢٨، الرقم: ٧٧٧، والطبرانى فى المعجم الأوسط، ٧/ ٢٦٦، الرقم: ٧٤٦٤، والمقدسى فى الأحاديث المختارة، ٢/ ٣١٩، الرقم: ٦٩٨.

उसकी बीमार पुर्सी करे तो सत्तर हज़ार फ़रिशते सुबह तक उसके लिए दुआ करते रहते हैं, और जन्नत में उसके लिए बाग़ होगा।''

١٠٣٤ / ١٠٠۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ قَالَ: كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ إِذَا عَطَسَ وَضَعَ يَدَهُ أَوْ ثَوْبَهُ عَلَى فِيْهِ وَخَفَضَ أَوْ غَضَّ بِهَا صَوْتَهُ.

رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ.

وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से मरवी है कि जब हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ को छींक आती तो आप ﷺ अपना दस्ते मुबारक या कपड़ा मुँह मुबारक पर रखते और आवाज़ को (निहायत) पस्त रखते।''

١٠٣٥ / ١٠١۔ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ نَفْسُ الْمُؤْمِنِ مُعَلَّقَةٌ بِدَيْنِهِ، حَتَّى يُقْضَى عَنْهُ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَه.

الحديث رقم ١٠٠: أخرجه الترمذي في السنن، كتاب: الأدب عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء في خفض الصوت وتخمير الوجه عند العطاس، ٥/٨٦، الرقم: ٢٧٤٥، وأبو داود في السنن، كتاب: الأدب، باب: في العطاس، ٤/٣٠٧، الرقم: ٥٠٢٩، وأحمد بن حنبل في المسند، ٢/٤٣٩، الرقم: ٩٦٦٠، والحاكم في المستدرك، ٤/٣٢٥، الرقم: ٧٧٩٦، وقال الحاكم: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحُ الإِسْنَادِ، ونحوه الطبراني في المعجم الأوسط، ٢/٢٣٧، الرقم: ١٨٤٩، وأبو يعلى في المسند، ١٢/١٧، الرقم: ٦٦٦٣۔

الحديث رقم ١٠١: أخرجه الترمذي في السنن، كتاب: الجنائز عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء عن النبي ﷺ أنه قال: إنَّ نفسَ المؤمن معلقة بدينه حتى يقضى عنه، ٣/٣٨٩، الرقم: ١٠٧٨-١٠٧٩، وابن ماجه في السنن، كتاب: الصدقات، باب: التشديد في الدين، ٢/٨٠٦، الرقم: ٢٤١٣، والحاكم في المستدرك، ٢/٣٢، الرقم: ٢٢١٩، وابن حبان في الصحيح، ٧/٣٣١، الرقم: ٣٠٦١، وأحمد بن حنبل في المسند، ٢/٤٤٠، الرقم: ٩٦٧٧، والدارمي في السنن، ٢/٣٤٠، الرقم: ٢٥٩١، والشافعي في المسند، ١/٣٦١، والبيهقي في السنن الكبرى، ٤/٦١، الرقم: ٦٨٩١۔

وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ. وَقَالَ الْحَاكِمُ: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحٌ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः मोमिन की रूह क़र्ज़ (के बोझ) की वजह से लटकी रहती है यहाँ तक कि उसका क़र्ज़ अदा कर दिया जाए।''

١٠٣٦ / ١٠٢۔ عَنْ أَبِي مُوْسَى ﷺ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: كُلُّ عَيْنٍ زَانِيَةٌ، وَالْمَرْأَةُ إِذَا اسْتَعْطَرَتْ، فَمَرَّتْ بِالْمَجْلِسِ، فَهِيَ كَذَا وَكَذَا، يَعْنِي زَانِيَةً. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ.

وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيحٌ.

١٠٣٧ / ١٠٣۔ وفي رواية عنه: أَيُّمَا امْرَأَةٍ اسْتَعْطَرَتْ فَمَرَّتْ عَلَى قَوْمٍ لِيَجِدُوْا مِنْ رِيْحِهَا فَهِيَ زَانِيَةٌ. رَوَاهُ النَّسَائِيُّ وَالْحَاكِمُ وَأَحْمَدُ.

وَقَالَ الْحَاكِمُ: حَدِيْثٌ صَحِيْحُ الإِسْنَادِ.

''हज़रत अबू मूसा ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः हर (वो) आँख (जो किसी ग़ैर मेहरम को देखती है) ज़िनाकार है और औरत जब खुशबू लगा कर किसी मजलिस के पास से गुज़रती है तो वो ऐसी और ऐसी है यानी ज़ानिया है।''

''और हज़रत अबू मूसा ﷺ से ही मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जब कोई औरत इसलिए खुशबू लगा कर (यानी ख़ुद को मुअत्तर करके) किसी मजलिस के पास से गुज़रती है कि लोग उसकी खुशबू महसूस करें तो वो ज़ानिया है।''

الحديث رقم ١٠٢ / ١٠٣: أخرجه الترمذى فى السنن، كتاب: الآداب عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء فى كراهية المرأة متعطرة، ٥ / ١٠٦، الرقم: ٢٧٨٦، والنسائى فى السنن، كتاب: الزينة، باب: ما يكره للنساء من الطيب، ٨ / ١٥٣، الرقم: ٥١٢٦، وفى السنن الكبرى، ٥ / ٤٣٠، الرقم: ٩٤٢٢، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٤ / ٤١٣، والحاكم فى المستدرك، ٢ / ٤٣٠، الرقم: ٣٤٩٧، وابن حبان فى الصحيح، ١٠ / ٢٧٠، الرقم: ٤٤٢٤، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٣ / ٢٤٦، الرقم: ٥٧٦٩.

١٠٣٨ / ١٠٤۔ عَنْ أَبِي ذَرٍّ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَا عَقْلَ كَالتَّدْبِيْرِ. وَلَا وَرَعَ كَالْكَفِّ. وَلَا حَسَبَ كَحُسْنِ الْخُلُقِ.

رَوَاهُ ابْنُ مَاجَه وَابْنُ حِبَّانَ وَالطَّبَرَانِيُّ.

''हज़रत अबू ज़र ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः तदबीर के बराबर कोई अक़्ल मन्दी नहीं, हराम से इज्तिनाब करने से बढ़ कर कोई परहेज़गारी नहीं और उम्दा अख़लाक़ से आला कोई हसबो नसब नहीं।''

١٠٣٩ / ١٠٥۔ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ ﷺ عَنْ سَلْمَانَ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَا مِنْ مُسْلِمٍ يَدْخُلُ عَلَى أَخِيْهِ الْمُسْلِمِ فَيُلْقِي إِلَيْهِ وِسَادَةً إِكْرَامًا لَهُ وَإِعْظَامًا لَهُ إِلَّا غَفَرَ اللهُ لَهُ. رَوَاهُ الْحَاكِمُ وَالطَّبَرَانِيُّ.

''हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ हज़रत सलमान ﷺ से रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः कोई मुसलमान भाई अपने मुसलमान भाई के पास जाए और वो उसके इकराम और ताज़ीम में उसे (टेक लगाने के लिए) तकिया पेश करे (और उसके साथ अच्छा सुलूक करे) तो अल्लाह तआला उसकी मग़्फ़िरत फरमा दिया करता है।''

١٠٤٠ / ١٠٦۔ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رضي الله عنهما قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ:

الحديث رقم ١٠٤: أخرجه ابن ماجه فى السنن، كتاب: الزهد، باب: الورع والتقوى، ٢ / ١٤١٠، الرقم: ٤٢١٨، وابن حبان فى الصحيح، ٢ / ٧٩، الرقم: ٣٦١، والطبرانى فى المعجم الكبير، ٢ / ١٥٧، الرقم: ١٦٥١، والبيهقى فى شعب الإيمان، ٤ / ١٥٧، الرقم: ٤٦٤٦، والقضاعى فى مسند الشهاب، ٢ / ٣٩، الرقم: ٨٣٧، والديلمى فى مسند الفردوس، ٥ / ١٧٩، الرقم: ٧٨٨٩۔

الحديث رقم ١٠٥: أخرجه الحاكم فى المستدرك، ٣ / ٦٩٢، الرقم: ٦٥٤٢، والطبرانى فى المعجم الصغير، ٢ / ٥٠، الرقم: ٧٦١، وفى المعجم الكبير، ٦ / ٢٢٧، الرقم: ٦٠٦٨، والهيثمى فى مجمع الزوائد، ٨ / ١٧٤۔

الحديث رقم ١٠٦: أخرجه الطبرانى فى المعجم الأوسط، ٧ / ٢٥، الرقم: ٦٧٤٤، والبيهقى فى شعب الإيمان، ٥ / ٢٥٤، الرقم: ٦٥٦٨، والديلمى فى مسند الفردوس، ٢ / ٧٥، الرقم: ٣٤٢١، والهيثمى فى مجمع الزوائد، ١ / ١٦٠۔

الاِقْتِصَادُ فِي النَّفَقَةِ نِصْفُ الْمَعِيْشَةِ، وَالتَّوَدُّدُ إِلَى النَّاسِ نِصْفُ الْعَقْلِ، وَحُسْنُ السُّؤَالِ نِصْفُ الْعِلْمِ. رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ وَالْبَيْهَقِيُّ.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर رضی اللہ عنہما से मरवी है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः ख़र्च में मियानारवी निस्फ़ (आधी) मईशत (रोज़ी) है और लोगों से मुहब्बत (से पेश आना) निस्फ़ अ़क़्ल है और अच्छे तरीक़े से सवाल करना भी निस्फ़ इल्म है।''

बाब 16 :

اَلْبَابُ السَّادِسُ عَشَرَ:

اَلْأُحَادِيَّاتُ وَالثُّنَائِيَّاتُ وَالثُّلَاثِيَّاتُ

उहादियात, सुनाइय्यात और सुलासियात

1. فَصْلٌ فِي أُحَادِيَّاتِ الإِمَامِ أَبِي حَنِيْفَةَ ﷺ

इमाम अबू हनीफ़ा ﷺ से मरवी एक वास्ते की रिवायात का बयान

2. فَصْلٌ فِي ثُنَائِيَّاتِ الإِمَامِ أَبِي حَنِيْفَةَ ﷺ

इमाम अबू हनीफ़ा ﷺ से मरवी दो वास्तों की रिवायात का बयान

3. فَصْلٌ فِي ثُلَاثِيَّاتِ الإِمَامِ الْبُخَارِيِّ ﷺ

इमाम बुख़ारी ﷺ से मरवी तीन वास्तों की रिवायात का बयान

فَصْلٌ فِي أُحَادِيَّاتِ الإِمَامِ أَبِي حَنِيْفَةَ رضي الله عنه

﴿इमाम अबू हनीफ़ा रضي الله عنه से मरवी एक वास्ते की रिवायात का बयान﴾

١٠٤١ / ١۔ رَوَى أَبُوْحَنِيْفَةَ رضي الله عنه قَالَ سَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ رضي الله عنه قَالَ سَمِعْتُ النَّبِيَّ صلى الله عليه وآله وسلم يَقُوْلُ: طَلَبُ الْعِلْمِ فَرِيْضَةٌ عَلَى كُلِّ مُسْلِمٍ.
رَوَاهُ أَبُوْحَنِيْفَةَ.

''हज़रत अबू हनीफ़ा رضي الله عنه रिवायत करते हैं कि मैंने हज़रत अनस बिन मालिक رضي الله عنه से सुना उन्होंने हुज़ूर नबी–ए–अकरम صلى الله عليه وآله وسلم को फरमाते हुए सुनाः इल्म हासिल करना हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है।''

١٠٤٢ / ٢۔ رَوَى أَبُوْحَنِيْفَةَ رضي الله عنه عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رضي الله عنه عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وآله وسلم

الحديث رقم ١: أخرجه الخوارزمي فى جامع المسانيد للإمام أبي حنيفة، ١/٨٣، وأخرج المحدثون هذا الحديث بأسانيدهم منهم: ابن ماجه فى السنن، المقدمة، باب: فضل العلماء والحث على طلب العلم، ١/٨١، الرقم: ٢٢٤، وأبويعلى فى المسند، ٥/٢٢٣، الرقم: ٢٨٣٧، وفى المعجم، ١/٢٥٧، الرقم: ٣٢٠، والطبراني في المعجم الأوسط، ٢/٢٨٩، الرقم: ٢٠٠٨، وفي المعجم الكبير، ١٠/١٩٥، الرقم: ١٠٤٣٩، والقضاعي فى مسند الشهاب، ١/١٣٦، الرقم: ١٧٥، والصيداوي فى معجم الشيوخ، ١/١٧٧۔

الحديث رقم ٢: أخرجه الخوارزمي فى جامع المسانيد للإمام أبي حنيفة، ١/٨٥، وأخرج المحدثون هذا الحديث بأسانيدهم منهم: أبو نعيم الأصبهانى فى مسند أبى حنيفة برواية أبى حنيفة من ثلاثياته عن بريدةرضي الله عنه، ١/١٥٠، ١٥١، والرويانى فى المسند برواية أبى حنيفة من ثلاثياته عن بريدةرضي الله عنه، ١/٦٣، الرقم: ٦، والترمذي فى السنن، كتاب: العلم عن رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم، باب: ما جاء الدال على الخير كفاعله، ٥/٤١، رقم: ٢٦٧٠، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٥/٣٥٧، وأبو يعلى فى المسند، ٧/٢٧٥، الرقم: ٤٢٩٦، والبزار فى المسند، ٥/١٥٠، الرقم: ١٧٤٢، والطبراني فى المعجم الأوسط، ٣/٣٤، الرقم: ٢٣٨٤، وفى المعجم الكبير، ١٧/٢٢٨، الرقم: ٦٣١، ٦٣٢، والقضاعي فى مسند الشهاب، ١/٨٥، الرقم: ٨٦، وأبو بكر الإسماعيلى فى معجم شيوخ أبى بكر، ١/٤٦٦، والصيداوي فى معجم الشيوخ، ١/١٨٤۔

أَنَّهُ قَالَ: اَلدَّالُ عَلَى الْخَيْرِ كَفَاعِلِهِ. رَوَاهُ أَبُوْحَنِيْفَةَ.

''हज़रत अबू हनीफ़ा رضي الله عنه रिवायत करते हैं कि मैंने हज़रत अनस बिन मालिक رضي الله عنه से सुना उन्होंने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ से सुना कि आप ﷺ ने फरमायाः नेकी की तरफ़ रहनुमाई करने वाला (अज्रो सवाब के हुसूल में) उस नेकी करने वाले की तरह ही है।''

١٠٤٣/٣. رَوَى أَبُوْحَنِيْفَةَ رضي الله عنه عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رضي الله عنه عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: إِنَّ اللهَ يُحِبُّ إِغَاثَةَ اللَّهْفَانِ. رَوَاهُ أَبُوْحَنِيْفَةَ.

''हज़रत अबू हनीफ़ा رضي الله عنه रिवायत करते हैं कि मैंने हज़रत अनस बिन मालिक رضي الله عنه से सुना उन्होंने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ से सुना कि आप ﷺ ने फरमायाः बेशक अल्लाह तआला मुसीबत ज़दा की मदद करने वाले को पसंद फरमाता है।''

١٠٤٤/٤. رَوَى أَبُوْحَنِيْفَةَ رضي الله عنه قَالَ سَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ رضي الله عنه قَالَ سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ تَفَقَّهَ فِي دِيْنِ اللهِ كَفَاهُ اللهُ هَمَّهُ وَرَزَقَهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ. رَوَاهُ أَبُوْحَنِيْفَةَ.

''हज़रत अबू हनीफ़ा رضي الله عنه रिवायत करते हैं कि मैंने हज़रत अनस बिन मालिक رضي الله عنه से सुना उन्होंने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ से सुना कि आप ﷺ ने फरमायाः जो शख़्स अल्लाह तआला के दीन में तफ़क़्क़ोह (समझबूझ हासिल) करता है अल्लाह तआला उसके ग़मों को काफ़ी हो जाता है और उसे वहाँ से रिज़्क़ देता है जहाँ से वो सोच भी नहीं सकता।''

الحديث رقم ٣: أخرجه الخوارزمي فى جامع المسانيد للإمام أبي حنيفة، ١/٨٥، وأخرج المحدثون هذا الحديث بأسانيدهم منهم: أبو يعلى فى المسند، ٧/٢٧٥، الرقم: ٤٢٩٦، والبيهقى فى شعب الإيمان، ٢/٢٥٤، الرقم: ١٦٦٤، والصيداوى فى معجم الشيوخ، ١/١٨٤، وأبو نعيم فى مسند أبى حنيفة، ١/١٥١، وفى حلية الأولياء، ٣/٤٢، والمنذرى فى الترغيب والترهيب، ١/٧٠، الرقم: ١٩٥.

الحديث رقم ٤: أخرجه القزويني فى التدوين فى أخبار قزوين، ٣/٢٦١، وأبو نعيم فى مسند أبي حنيفة عن عبد الله بن الحارث رضي الله عنه، ١/٢٥.

١٠٤٥ / ٥۔ رَوَى أَبُوْحَنِيْفَةَ ﷺ قَالَ سَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ ﷺ يَقُوْلُ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ قَالَ لَا إِلَـهَ إِلَّا اللهُ خَالِصًا مُخْلِصًا بِهَا قَلْبَهُ دَخَلَ الْجَنَّةَ، وَلَوْ تَوَكَّلْتُمْ عَلَى اللهِ حَقَّ تَوَكُّلِهِ لَرُزِقْتُمْ كَمَا تُرْزَقُ الطَّيْرُ تَغْدُوْ خِمَاصًا وَتَرُوْحُ بِطَانًا. رَوَاهُ أَبُوْحَنِيْفَةَ.

''हज़रत अबू हनीफ़ा ﷺ रिवायत करते हैं कि मैंने हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ से सुना उन्होंने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ से सुना कि आप ﷺ ने फरमायाः जो शख़्स ख़ुलूसे दिल के साथ ﴿ لَا إِلَـهَ إِلَّا اللهُ ﴾ कहता है वो जन्नत में दाख़िल होगा और अगर तुमने अल्लाह तआला पर इस तरह तवक्कुल (भरोसा) किया जिस तरह तवक्कुल (भरोसा) करने का हक़ है तो तुम्हें इस तरह रिज़्क़ दिया जाएगा जिस तरह परिन्दों को रिज़्क़ दिया जाता है वो ख़ाली पेट सुबह करते हैं और शाम को सेर हो कर (वापस अपने घरों को) लौटते हैं।''

١٠٤٦ / ٦۔ رَوَى أَبُوْحَنِيْفَةَ ﷺ قَالَ: سَمِعْتُ عَبْدَ اللهِ بْنَ أُنَيْسٍ ﷺ صَاحِبَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ أَنَّهُ قَالَ: حُبُّكَ لِلشَّيْءِ يُعْمِي وَيُصِمُّ. رَوَاهُ أَبُوْحَنِيْفَةَ.

الحديث رقم ٥: أخرجه الموفق فى مناقب الإمام الأعظم أبى حنيفة، ١/٣٦، وأخرج المحدثون هذا الحديث بأسانيدهم منهم: الترمذي فى السنن، كتاب: الزهد عن رسول الله ﷺ، باب: فى التوكل على الله، ٤/٥٧٣، الرقم: ٢٣٤٤، وابن ماجه فى السنن، كتاب: الزهد، باب: التوكل واليقين، ٢/١٣٩٤، الرقم: ٤١٦٤، وأحمد بن حنبل فى المسند، ١/٣٠،٥٢: ٥/٢٢٩، والطيالسي فى المسند، ١/١١، الرقم: ٥١، والحميدي فى المسند، ١/١٨١، الرقم: ٣٦٩، وأبو يعلى فى المسند، ١/٢١٢، الرقم: ٢٤٧، والشيباني فى الآحاد والمثاني، ٤/٢٢٩، الرقم: ٢٢١٣، والقضاعي فى مسند الشهاب، ٢/٣١٩، الرقم: ١٤٤٤۔

الحديث رقم ٦: أخرجه الخوارزمي فى جامع المسانيد للإمام أبي حنيفة، ١/٧٨، وأخرج المحدثون هذا الحديث بأسانيدهم منهم: أبوداود فى السنن، كتاب: الأدب، باب: فى الهوى، ٤/٣٣٤، الرقم: ٥١٣٠، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٥/١٩٤، والطبراني فى المعجم الأوسط، ٤/٣٣٤، الرقم: ٤٣٥٩، وعبد بن حميد فى المسند، ١/٩٩، الرقم: ٢٠٥، والقضاعي فى مسند الشهاب، ١/١٥٧، الرقم: ٢١٩، والبيهقي فى شعب الإيمان، ١/٣٦٨، الرقم: ٤١١۔

''हज़रत अबू हनीफ़ा ؓ रिवायत करते हैं कि मैंने हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उनैस ؓ से सुना उन्होंने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ से सुना कि आप ﷺ ने फरमाया : तुम्हारी किसी चीज़ से मुहब्बत तुम्हें अंधा और बहरा कर देती है (यानी इन्सान अपने महबूब के ख़िलाफ़ कुछ देखना और सुनना गवारा नहीं करता)।''

١٠٤٧ / ٧۔ رَوَى أَبُوْحَنِيْفَةَ ؓ قَالَ: سَمِعْتُ عَبْدَ اللهِ بْنَ أُنَيْسٍ ؓ يَقُوْلُ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: رَأَيْتُ فِي عَارِضِي الْجَنَّةِ مَكْتُوْبًا ثَـلَاثَةَ أَسْطُرٍ بِالذَّهَبِ الْأَحْمَرِ لَا بِمَاءِ الذَّهَبِ: ﴿اَلسَّطْرُ الْأَوَّلُ﴾ لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللهِ، ﴿وَالسَّطْرُ الثَّانِيُّ﴾ الإِمَامُ ضَامِنٌ وَالْمُؤَذِّنُ مُؤْتَمَنٌ فَأَرْشَدَ اللهُ الْأَئِمَّةَ وَغَفَرَ لِلْمُؤَذِّنِيْنَ ﴿وَالسَّطْرُ الثَّالِثُ﴾ وَجَدْنَا مَا عَمِلْنَا، رَبِحْنَا مَا قَدِمْنَا، خَسِرْنَا مَا خَلَفْنَا، قَدِمْنَا عَلَى رَبٍّ غَفُوْرٍ. رَوَاهُ أَبُوْحَنِيْفَةَ.

''हज़रत अबू हनीफ़ा ؓ रिवायत करते हैं कि मैंने हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उनैस ؓ से सुना उन्होंने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ से सुना कि आप ﷺ ने फरमाया : मैंने जन्नत के उफ़क़ में सुर्ख़ सोने (यानी ख़ालिस सोने) के साथ न कि सोने के पानी के साथ तीन सतरें (लकीरें) लिखी हुई देखीं : पहली सतर (लकीर) में लिखा हुआ था ﴿لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ مُحَمَّدٌ رَسُوْلُ اللهِ﴾ ''अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई मअ़बूद नहीं, मुहम्मद ﷺ अल्लाह तआ़ला के रसूल हैं'' और दूसरी सतर में लिखा हुआ था कि इमाम ज़ामिन है और मुअज़्ज़िन अमानतदार, पस अल्लाह तआ़ला अइम्मा को हिदायत दे और मुअज़्ज़िनीन की मग़्फ़िरत फरमाए और तीसरी सत़र में लिखा हुआ था कि हमने जो अ़मल किया (उसका सिला) हमने पा लिया हमने जो कुछ आगे भेजा उसका नफ़ा पा लिया और जो पीछे छोड़ आए उसको हमने खो दिया और हम रब्बेग़फ़ूर की तरफ़ आ गए हैं।''

الحديث رقم ٧: أخرجه الموفق فى مناقب الإمام الأعظم أبى حنيفة، ١ / ٣٥۔ ٣٦، وأخرج المحدثون هذا الحديث بأسانيدهم منهم: القزويني فى التدوين فى أخبار قزوين، ٣ / ٩١، والمناوي فى فيض القدير، ٣ / ٥٢١۔

١٠٤٨ / ٨۔ رَوَى أَبُوْحَنِيْفَةَ ﷺ قَالَ: وُلِدْتُ سَنَةَ ثَمَانِيْنَ وَحَجَجْتُ مَعَ أَبِي سَنَةَ سِتٍّ وَتِسْعِيْنَ وَأَنَا ابْنُ سِتَّ عَشْرَةَ سَنَةً فَلَمَّا دَخَلْتُ الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ رَأَيْتُ حَلَقَةً عَظِيْمَةً فَقُلْتُ لِأَبِي: حَلَقَةُ مَنْ هٰذِهِ؟ قَالَ: حَلَقَةُ عَبْدِ اللهِ بْنِ جَزْءٍ الزُّبَيْدِيِّ ﷺ صَاحِبِ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ فَتَقَدَّمْتُ فَسَمِعْتُهُ يَقُوْلُ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ تَفَقَّهَ فِي دِيْنِ اللهِ كَفَاهُ اللهُ هَمَّهُ وَرَزَقَهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ. رَوَاهُ أَبُوْحَنِيْفَةَ.

''हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा ﷺ फरमाते हैं कि मैं 80 हिजरी में पैदा हुआ और मैंने अपने वालिद के साथ 96 हिजरी में 16 साल की उम्र में हज किया पस जब मैं मस्जिदे हराम में दाख़िल हुआ मैंने एक बहुत बड़ा हल्क़ा देखा तो मैंने अपने वालिदे मोहतरम से पूछा : यह किस का हल्क़ा है ? तो उन्होंने फरमाया : यह रसूलुल्लाह ﷺ के सहाबी हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन जज़ ज़ुबैदी ﷺ का हल्क़ा (–ए–दर्स) है पस मैं आगे बढ़ा और उन्हें फरमाते हुए सुना कि मैंने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ को फरमाते हुए सुना : जो अल्लाह तआला के दीन की समझबूझ को हासिल करता है अल्लाह तआला उसके ग़मों को काफ़ी हो जाता है और उसे वहाँ–वहाँ से रिज़्क़ देता है जहाँ से वो सोच भी नहीं सकता।''

١٠٤٩ / ٩۔ رَوَى أَبُوْحَنِيْفَةَ ﷺ قَالَ: لَقِيْتُ عَبْدَ اللهِ بْنَ الْحَارِثِ جَزْءَ الزُّبَيْدِيَّ ﷺ صَاحِبَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ، فَقُلْتُ: أُرِيْدُ أَنْ أَسْمَعَ مِنْهُ فَحَمَلَنِي أَبِي عَلَى عَاتِقِهِ وَذَهَبَ بِي إِلَيْهِ. فَقَالَ: مَا تُرِيْدُ؟ فَقُلْتُ: أُرِيْدُ أَنْ تُحَدِّثَنِي حَدِيْثًا سَمِعْتَهُ مِنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ: فَقَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: إِغَاثَةُ الْمَلْهُوْفِ فَرْضٌ عَلَى كُلِّ مُسْلِمٍ، مَنْ تَفَقَّهَ فِي دِيْنِ اللهِ كَفَاهُ اللهُ هَمَّهُ وَرَزَقَهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ. رَوَاهُ أَبُوْحَنِيْفَةَ.

الحديث رقم ٨: أخرجه الخوارزمي فى جامع المسانيد للإمام أبي حنيفة، ١ / ٨٠، والخطيب البغدادي فى تاريخ بغداد، ٣ / ٣٢، الرقم: ٩٥٦۔

الحديث رقم ٩: أخرجه الموفق فى مناقب الإمام الأعظم أبى حنيفة، ١ / ٣٥۔

''हज़रत अबू हनीफ़ा ﷺ फरमाते हैं कि मैं हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन हारिस जज़ ज़ुबैदी ﷺ सहाबी–ए–रसूल ﷺ से मिला और मैंने अ़र्ज़ कियाः मैं चाहता हूँ कि उनसे सुनूँ तो मेरे वालिदे गिरामी ने मुझे अपने कंधे पर उठा लिया और मुझे उनके पास ले गए तो उन्होंने मुझसे पूछा : आप क्या चाहते हैं ? मैंने उनसे अ़र्ज़ किया : मैं चाहता हूँ कि आप मुझे वो हदीस सुनाएं जो आपने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ से सुनी हो तो उन्होंने फरमायाः मैंने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ को फरमाते हुए सुना : मुसीबत ज़दा की मदद करना हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है और जो शख़्स दीन में समझबूझ पैदा करता है अल्लाह तआ़ला उसके ग़मों को काफ़ी हो जाता है और उसे वहाँ–वहाँ से रिज़्क़ देता है जहाँ से वो तसव्वुर भी नहीं कर सकता।''

١٠٥٠ / ١٠. رَوَى أَبُوْ حَنِيْفَةَ ﷺ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا مَعَاوِيَّةَ عَبْدَ اللهِ بْنَ أَبِي أَوْفَى ﷺ أَنَّهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ بَنَى لِلّٰهِ مَسْجِدًا وَلَوْ كَمَفْحَصِ قَطَاةٍ بَنَى اللهُ لَهُ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ. رَوَاهُ أَبُوْ حَنِيْفَةَ.

''हज़रत अबू हनीफ़ा ﷺ फरमाते हैं कि मैंने हज़रत अबू मुआविया अ़ब्दुल्लाह बिन अबी औफा ﷺ को फरमाते हुए सुना कि मैंने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ को फरमाते हुए सुनाः जो शख़्स मस्जिद बनाता है चाहे वो तीतर के अण्डे देने के बराबर ही क्यों न हो अल्लाह तआ़ला उसके लिए जन्नत में घर बना देता है।''

١٠٥١ / ١١. رَوَى أَبُوْ حَنِيْفَةَ ﷺ قَالَ: سَمِعْتُ عَبْدَ اللهِ بْنَ أَبِي أَوْفَى ﷺ

الحديث رقم ١٠: أخرجه الخوارزمي فى جامع المسانيد للإمام أبي حنيفة، ١/٨٢، والقزويني فى التدوين فى أخبار قزوين، ١/٤٣٨، وأخرج المحدثون هذا الحديث بأسانيدهم منهم: ابن ماجه فى السنن، كتاب: المساجد والجماعات، باب: من بنى لله مسجدا، ١/٢٤٤، الرقم: ٧٣٨، وأحمد بن حنبل فى المسند، ١/٢٤١، وابن حبان فى الصحيح، ٤/٤٩٠، الرقم: ١٦١٠، وابن خزيمة فى الصحيح، ٢/٢٦٩، الرقم: ١٢٩٢، والطيالسي فى المسند، ١/٦٢، الرقم: ٤٦١، وأبو يعلى فى المسند، ٧/٨٥، الرقم: ٤٠١٨، والطبراني فى المعجم الأوسط، ٢/٢٤٠، الرقم: ١٨٥٧، والبيهقي فى شعب الإيمان، ٣/٨١، الرقم: ٢٩٤٢، والبخاري فى التاريخ الكبير، ١/٣٣١، الرقم: ١٠٤٦.

الحديث رقم ١١: أخرجه الموفق فى مناقب الإمام الأعظم أبى حنيفة، ١/٣٦.

يَقُوْلُ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: حُبُّكَ الشَّيءَ يُعْمِي وَيُصِمُّ، وَالدَّالُ عَلَى الْخَيْرِ كَفَاعِلِهِ وَالدَّالُ عَلَى الشَّرِّ كَمِثْلِهِ، إِنَّ اللهَ يُحِبُّ إِغَاثَةَ اللَّهْفَانِ.

رَوَاهُ أَبُوْحَنِيْفَةَ.

''हज़रत अबू हनीफ़ा ﷺ फरमाते हैं कि मैंने हज़रत अब्दुल्लाह बिन औफा ﷺ को फरमाते हुए सुना कि मैंने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया: तुम्हारी किसी चीज़ से मुहब्बत (तुम्हें उसके बारे में) अंधा और बेहरा कर देती है और नेकी की तरफ़ राहनुमाई करनेवाला नेकी करने वाले की तरह होता है और बुराई की तरफ़ रहनुमाई करने वाला बुराई करने वाले की तरह होता है और बेशक अल्लाह तआला मुसीबत ज़दा की मदद करने को पसंद फरमाता है।''

١٠٥٢ / ١٢. رَوَى أَبُوْحَنِيْفَةَ ﷺ قَالَ: سَمِعْتُ عَائِشَةَ بِنْتَ عَجْرَدٍ رضي الله عنها قَالَتْ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ: أَكْثَرُ جُنْدِ اللهِ فِي الْأَرْضِ: الْجَرَادُ لَا آكُلُهُ وَلَا أُحَرِّمُهُ. رَوَاهُ أَبُوْحَنِيْفَةَ.

''हज़रत अबू हनीफ़ा ﷺ फरमाते हैं कि मैंने आइशा बिन्ते अजरद رضی اللہ عنہا को फरमाते हुए सुना कि मैंने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ को फरमाते हुए सुना है: ज़मीन में अल्लाह तआला का ज़्यादा ता'दाद में लश्कर टिड्डी दल है, न तो मैं उसे खाता हूँ और न उसे हराम ठहराता हूँ।''

الحديث رقم ١٢: أخرجه الخوارزمي فی جامع المسانيد للإمام أبي حنيفة، ١ / ٧٩، والقزويني فی التدوين فی أخبار قزوين، ١ / ٤٣٨، وأخرج المحدثون هذا الحديث بأسانيدهم منهم: أبوداود فی السنن، كتاب: الأطعمة، باب: فی أكل الجراد، ٣ / ٣٥٧، الرقم: ٣٨١٣، وابن ماجه فی السنن، كتاب: الصيد، باب: صيد الحيتان والجراد، ٢ / ١٠٧٣، الرقم: ٣٢١٩، والبيهقي فی السنن الكبرى، ٩ / ٢٥٧، وعبد الرزاق فی المصنف، ٤ / ٥٣١، الرقم: ٨٧٥٧، والبزار فی المسند، ٦ / ٤٧٧، الرقم: ٢٥٠٩، والطبراني فی المعجم الكبير، ٦ / ٢٥٦، الرقم: ٦١٤٩، وابن قانع فی معجم الصحابة، ١ / ٢٨٥.

١٠٥٣ / ١٣. رَوَى أَبُوْحَنِيْفَةَ رضي الله عنه قَالَ: سَمِعْتُ وَاثِلَةَ بْنَ الْأَسْقَعِ رضي الله عنه قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ أَنَّهُ قَالَ: لَا تُظْهِرَنَّ شَمَاتَةً لِأَخِيْکَ فَيُعَافِيَهُ اللهُ وَيَبْتَلِيَکَ. رَوَاهُ أَبُوْحَنِيْفَةَ.

''हज़रत अबू हनीफ़ा रضي الله عنه रिवायत करते हैं कि मैंने हज़रत वासिला बिन अस्क़ा' رضي الله عنه को फरमाते हुए सुना कि मैंने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ को फरमाते हुए सुना : तुम अपने भाई की मुसीबत पर ख़ुशी का इज़हार न करो अगर तुम ऐसा करोगे तो अल्लाह तआला उसे मुसीबत से नजात दे देगा और तुम्हें उस मुसीबत में डाल देगा।''

١٠٥٤ / ١٤. رَوَى أَبُوْحَنِيْفَةَ رضي الله عنه قَالَ: سَمِعْتُ وَاثِلَةَ بْنَ الْأَسْقَعِ رضي الله عنه قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ أَنَّهُ قَالَ: دَعْ مَا يَرِيْبُکَ إِلَى مَا لَا يَرِيْبُکَ. رَوَاهُ أَبُوْحَنِيْفَةَ.

الحديث رقم ١٣: أخرجه الخوارزمي فی جامع المسانيد للإمام أبي حنيفة، ١ / ٨٦، وأخرج المحدثون هذا الحديث بأسانيدهم منهم: الترمذي فی السنن، کتاب: صفة القيامة والرقائق عن رسول الله ﷺ، باب: (٥٤)، ٤ / ٦٦٢، الرقم: ٢٥٠٦، والطبراني فی المعجم الأوسط، ٤ / ١١١، الرقم: ٣٧٣٩، وفی المعجم الکبير، ٢٢ / ٥٣، الرقم: ١٢٧، وفی مسند الشاميين، ١ / ٢١٤، الرقم: ٣٨٤، والقضاعي فی مسند الشهاب، ٢ / ٧٧، الرقم: ٩١٧، والبيهقي فی شعب الإيمان، ٥ / ٣١٥، الرقم: ٦٧٧٧، والمنذري فی الترغيب والترهيب، ٣ / ٢١٢، الرقم: ٣٧٢٦، والخطيب البغدادي فی تاريخ بغداد، ٩ / ٩٥، الرقم: ٤٦٧٩.

الحديث رقم ١٤: أخرجه السيوطی فی تبييض الصحيفة بمناقب أبي حنيفة: ٣٦، وأخرج المحدثون هذا الحديث بأسانيدهم منهم: الترمذي فی السنن، کتاب: صفة القيامة والرقائق عن رسول الله ﷺ، باب: (٦٠)، ٤ / ٦٦٨، الرقم: ٢٥١٨، والنسائي فی السنن، کتاب: الأشربة، باب: الحث علی ترک الشبهات، ٨ / ٣٢٧، الرقم: ٥٧١١، وأحمد بن حنبل فی المسند، ٣ / ١٥٣، وابن حبان فی الصحيح، ٢ / ٤٩٨، الرقم: ٧٢٢، والحاکم فی المستدرک، ٢ / ١٦: ٤ / ١١٠، الرقم: ٢١٧٠، ٧٠٤٦، والدارمي فی السنن، ٢ / ٣١٩، الرقم: ٢٥٣٢، والبيهقي فی السنن الکبری، ٥ / ٣٣٥، الرقم: ١٠٦٠١، وعبد الرزاق فی المصنف، ٣ / ١١٧، الرقم: ٤٩٨٤، وأبو يعلی فی المسند، ١٢ / ١٣٢، الرقم: ٦٧٦٢، والطبراني فی المعجم الکبير، ٣ / ٧٦، الرقم: ٢٧١١.

''हज़रत अबू हनीफ़ा ﷺ ने फरमाया कि मैंने हज़रत वासिला बिन अस्क़ा' ﷺ को फरमाते हुए सुना कि मैंने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ को फरमाते हुए सुना कि आप ﷺ ने फरमायाः तू उस चीज़ को छोड़ दे जो तुझे शक में डाले उस चीज़ को ले जो तुझे शक में न डाले।''

١٠٥٥ / ١٥۔ رَوَى أَبُوْحَنِيْفَةَ ﷺ قَالَ: سَمِعْتُ وَاثِلَةَ بْنَ الْأَسْقَعِ ﷺ يَقُوْلُ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَا يَظُنُّ أَحَدُكُمْ أَنَّهُ يَتَقَرَّبُ إِلَى اللهِ بِأَقْرَبِ مِنْ هَذِهِ الرَّكْعَاتِ يَعْنِي الصَّلَوَاتِ الْخَمْسَ. رَوَاهُ أَبُوْحَنِيْفَةَ.

''हज़रत अबू हनीफ़ा ﷺ ने फरमाया कि मैंने हज़रत वासिला बिन अस्क़ा' ﷺ को फरमाते हुए सुना कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः तुम में से कोई यह गुमान न कर ले कि वो इन रकआत यानी पांच वक़्त की फ़र्ज़ नमाज़ों से बढ़ कर (दिन के अलावा) किसी और शै से अल्लाह तआला का क़ुर्ब हासिल कर सकता है।''

١٠٥٦ / ١٦۔ رَوَى أَبُوْحَنِيْفَةَ ﷺ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي حَبِيْبَةَ ﷺ (الصَّحَابِيِّ) قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا الدَّرْدَاءِ ﷺ يَقُوْلُ: كُنْتُ رَدِيْفَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ فَقَالَ: يَا أَبَا الدَّرْدَاءِ! مَنْ شَهِدَ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ وَأَنِّي رَسُوْلُ اللهِ مُخْلِصًا وَجَبَتْ لَهُ الْجَنَّةُ، قَالَ: فَقُلْتُ لَهُ: وَإِنْ زَنَى وَإِنْ سَرَقَ؟ فَسَارَ سَاعَةً ثُمَّ عَادَ لِكَلَامِهِ، قَالَ: فَقُلْتُ: وَإِنْ زَنَى وَإِنْ سَرَقَ؟ فَسَارَ سَاعَةً

الحديث رقم ١٥: أخرجه الموفق فى مناقب الإمام الأعظم أبى حنيفة، ١/ ٣٦.

الحديث رقم ١٦: أخرجه أبو يوسف فى كتاب الآثار، ١/ ١٩٧، الرقم: ٨٩١، وأبو نعيم فى مسند الإمام أبي حنيفة، ١/ ١٧٥، وأخرج المحدثون هذا الحديث بأسانيدهم منهم: البخاري فى الصحيح، كتاب: اللباس، باب: الثياب البيض، ٥/ ٢١٩٣، الرقم: ٥٤٨٩، ومسلم فى الصحيح، كتاب: الإيمان، باب: من مات لا يشرك بالله شيئا، ١/ ٩٥، الرقم: ٩٤، وابن حبان فى الصحيح، ١/ ٣٩٢، الرقم: ١٦٩، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٥/ ١٦٦، وأبو عوانة فى المسند، ١/ ٢٨، الرقم: ٣٦، والنسائى فى السنن الكبرى، ٦/ ٢٧٦، الرقم: ١٠٩٦٤، والبزار فى المسند، ٩/ ٣٥٤، الرقم: ٣٩٢٠.

ثُمَّ عَادَ لِكَلَامِهِ، فَقُلْتُ: وَإِنْ زَنَى وَإِنْ سَرَقَ؟ فَقَالَ: وَإِنْ زَنَى وَإِنْ سَرَقَ وَإِنْ رَغِمَ أَنْفُ أَبِي الدَّرْدَاءِ. فَكَانَ أَبُوالدَّرْدَاءِ يُحَدِّثُ بِهَذَا الْحَدِيْثِ عِنْدَ كُلِّ جُمُعَةٍ عِنْدَ مِنْبَرِ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ وَيَضَعُ إِصْبَعَهُ عَلَى أَنْفِهِ وَيَقُوْلُ: وَإِنْ زَنَى وَإِنْ سَرَقَ وَإِنْ رَغِمَ أَنْفُ أَبِي الدَّرْدَاءِ. رَوَاهُ أَبُوْحَنِيْفَةَ.

''हज़रत अबू हनीफ़ा ﷺ सहाबी–ए–रसूलल्लाह हज़रत अब्दुल्लाह बिन हबीबा ﷺ से रिवायत करते हैं कि मैं हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के साथ था सो आप ﷺ ने फरमाया : ऐ अबू दरदा ! जो शख़्स इख़्लास के साथ यह गवाही देता है कि ''अल्लाह तआला के सिवा कोई मा'बूद नहीं और यह कि मैं अल्लाह तआला का रसूल हूँ'' तो उसके लिए जन्नत वाजिब हो जाती है। मैंने अर्ज़ किया: या रसूलल्लाह! अगरचे वो ज़िना और चोरी भी कर ले ? आप ﷺ थोड़ी देर खामोश रहे फिर अपने कलाम की तरफ़ लौटे तो मैंने अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह! अगरचे वो ज़िना और चोरी भी कर ले ? आप ﷺ थोड़ी देर खामोश रहे फिर आप ﷺ ने फरमाया : अगरचे वो ज़िना और चोरी ही क्यों न करे और अगरचे अबू दरदा की नाक ख़ाक आलूद ही क्यों न हो हज़रत अबू दरदा ﷺ हर जुम्अतुल मुबारक को यह हदीस हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के मिम्बर के क़रीब बयान फरमाते थे और अपनी उंगली अपनी नाक पर रख कर कहते थे अगरचे वो ज़िना और चोरी ही क्यों न करे और अगरचे अबू दरदा की नाक ख़ाक आलूद ही क्यों न हो।''

فَصْلٌ فِي ثُنَائِيَّاتِ الإِمَامِ أَبِي حَنِيْفَةَ رضي الله عنه

﴿इमाम अबू हनीफ़ा रضي الله عنه से मरवी दो वास्तों की रिवायात का बयान﴾

١٠٥٧ / ١٧. رَوَى أَبُوْحَنِيْفَةَ رضي الله عنه عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رضي الله عنه قَالَ: قَرَأَ رَسُوْلُ اللهِ صلى الله عليه وآله وسلم قَوْلُهُ تَعَالَى: ﴿وَصَدَّقَ بِالْحُسْنَى﴾ قَالَ: بِـلا إِلَهَ إِلَّا اللهُ ﴿وَكَذَّبَ بِالْحُسْنَى﴾ قَالَ: بِلَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ.

أَخْرَجَهُ فِي مُسْنَدِهِ.

''हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह رضي الله عنه रिवायत करते हुए फरमाते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम صلى الله عليه وآله وسلم ने आयते मुबारका तिलावत फरमाई : ''और उसने अच्छाई की तस्दीक़ की'' आप صلى الله عليه وآله وسلم ने फरमाया : इससे मुराद لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ की तस्दीक़ करना है। ''और उसने अच्छाई को झुठलाया''। आप صلى الله عليه وآله وسلم ने फरमाया (इससे मुराद) لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ को झुठलाना है।''

١٠٥٨ / ١٨. رَوَى أَبُوْحَنِيْفَةَ رضي الله عنه عَنْ عَطَاءِ بْنِ أَبِي رِبَاحٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضي الله عنه عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وآله وسلم قَالَ: مَنْ سُئِلَ عَنْ عِلْمٍ فَكَتَمَهُ، أُلْجِمَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ بِلِجَامٍ مِنْ نَارٍ. أَخْرَجَهُ فِي مُسْنَدِهِ.

''हज़रत अबू हुरैरा رضي الله عنه से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम صلى الله عليه وآله وسلم ने फरमाया : जिससे इल्म के बारे में सवाल किया गया और उसने (जानते हुए भी उसे) छुपाया तो क़ियामत के दिन उसे आग की लगाम दी जाएगी।''

الحديث رقم ١٧: أخرجه الخوارزمي في جامع المسانيد للإمام أبي حنيفة، ١/ ٩٥.
الحديث رقم ١٨: أخرجه الخوارزمي في جامع المسانيد للإمام أبي حنيفة، ١/ ٩٦، وأخرج المحدثون هذا الحديث بأسانيدهم منهم: الترمذي في السنن، كتاب: العلم عن رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم، باب: ماجاء في كتمان العلم، ٥/ ٢٩، الرقم: ٢٦٤٩، وأبوداود في السنن، كتاب: العلم، باب: كراهية منع العلم، ٣/ ٣٢١، الرقم: ٣٦٥٨، وابن ماجه في السنن، كتاب: المقدمة، باب: من سئل عن علم فكتمه، ١/ ٩٧، الرقم: ٢٦٤.

١٠٥٩ / ١٩۔ رَوَى أَبُوحَنِيْفَةَ ﷺ عَنْ عَطَاءٍ عَنْ جَابِرٍ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: كُلُّ مَعْرُوْفٍ فَعَلْتَهُ إِلَى غَنِيٍّ أَوْ فَقِيْرٍ صَدَقَةٌ.

أَخْرَجَهُ فِي مُسْنَدِهِ.

''हज़रत जाबिर ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : हर नेकी जिसे तुम ख़्वाह अमीर के साथ करो या ग़रीब के साथ करो वो सदक़ा है।''

١٠٦٠ / ٢٠۔ رَوَى أَبُوحَنِيْفَةَ ﷺ عَنْ عَطَاءِ بْنِ أَبِي رِبَاحٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رضي الله عنهما قَالَ: اَلْأَمْرُ بِالْمَعْرُوْفِ وَالنَّهْيُ عَنِ الْمُنْكَرِ فَرِيْضَةٌ. قُلْتُ: فَمَنْ تَرَكَهُ كُفْرٌ؟ قَالَ: لَا. أَخْرَجَهُ فِي مُسْنَدِهِ.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर رضی اللہ عنہما ने रिवायत करते हुए फरमाया : नेकी का हुक्म देना और बुराई से मना करना फ़र्ज़ है। (रावी कहते हैं कि) मैंने पूछा : क्या उसको तर्क करना कुफ़्र है ? उन्होंने फरमाया : नहीं।''

١٠٦١ / ٢١۔ رَوَى أَبُوحَنِيْفَةَ ﷺ عَنْ عَبْدِ الْكَرِيْمِ بْنِ مَعْقِلٍ عَنْ عَبْدِ

الحديث رقم ١٩: أخرجه الخوارزمى فى جامع المسانيد للإمام أبى حنيفة، ١/ ٩٦، وأخرج المحدثون هذا الحديث بأسانيدهم منهم: أبويعلى فى المسند، ٤/ ٦٦، الرقم: ٢٠٨٥، والبزار فى المسند، ٥/ ٢٥، الرقم: ١٥٨٢، والديلمى فى الفردوس بمأثور الخطاب، ٣/ ٢٤٨، الرقم: ٤٧٢٩۔

الحديث رقم ٢٠: أخرجه الخوارزمى فى جامع المسانيد للإمام أبى حنيفة، ١/ ٩٦، وأخرج المحدثون هذا الحديث بأسانيدهم منهم: مسلم فى الصحيح، ١/ ٤٩٨، كتاب: صلاة المسافرين وقصرها، باب: استحباب صلاة الضحى، الرقم: ٧٢٠، والترمذى فى السنن، كتاب: البر والصلة عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء فى صنائع المعروف، ٤/ ٣٣٩، الرقم: ١٩٥٦، وأبوداود فى السنن، كتاب: الصلاة، باب: صلاة الضحى، ٢/ ٢٦، الرقم: ١٢٨٥۔

الحديث رقم ٢١: أخرجه الخوارزمى فى جامع المسانيد للإمام أبى حنيفة، ١/ ٩٨، وأخرج المحدثون هذا الحديث بأسانيدهم منهم: ابن ماجه فى السنن، كتاب: الزهد، باب: ذكر التوبة، ٢/ ١٤٢٠، الرقم: ٤٢٥٢، وأحمد بن حنبل فى المسند، ١/ ٣٧٦، وابن حبان فى الصحيح، ٢/ ٣٧٧، الرقم: ٦١٢۔

اللهِ بْنِ مَسْعُودٍ ﷺ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ النَّدَمُ تَوْبَةٌ. أَخْرَجَهُ فِي مُسْنَدِهِ.

''हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद ﷺ से रिवायत है कि बेशक हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : (गुनाह पर) नादिम (शर्मिन्दा) होना ही तौबा है।''

١٠٦٢ / ٢٢. رَوَى أَبُوْحَنِيْفَةَ ﷺ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رضي الله عنهما قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَلْبِرُّ لَا يُبْلَى وَالإِثْمُ لَا يُنْسَى.

أَخْرَجَهُ فِي مُسْنَدِهِ.

''हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर رضی اللہ عنہما से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : नेकी कभी पुरानी नहीं होती (कि उसका अज्र मिल कर रहता है) और गुनाह कभी भुलाया नहीं जाता (उसकी गिरफ्त होती है)।''

١٠٦٣ / ٢٣. رَوَى أَبُوْحَنِيْفَةَ ﷺ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ كَذَبَ عَلَيَّ مُتَعَمِّدًا فَلْيَتَبَوَّأْ مَقْعَدَهُ مِنَ النَّارِ.

أَخْرَجَهُ فِي مُسْنَدِهِ.

١٠٦٤ / ٢٤. وَرَوَى أَبوحَنِيْفَةَ ﷺ عَنْ عَطِيَّةَ الْعَوْفِيِّ عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ ﷺ نَحْوَهُ. أَخْرَجَهُ فِي مُسْنَدِهِ.

الحديث رقم ٢٢: أخرجه الخوارزمى فى جامع المسانيد للإمام أبى حنيفة، ١/٩٩، وأخرج المحدثون هذا الحديث بأسانيدهم منهم: البيهقى فى كتاب الزهد الكبير، ٢/٢٧٧، الرقم: ٧١٠، وابن راشد فى الجامع، ١١/١٧٨، والديلمى فى مسند الفردوس، ٢/٣٣، الرقم: ٢٢٠٣.

الحديث رقم ٢٣/٢٤: أخرجه الخوارزمى فى جامع المسانيد للإمام أبى حنيفة، ١/٩٩، ١٠٣، وأخرج المحدثون هذا الحديث بأسانيدهم منهم: البخارى فى الصحيح، كتاب: الجنائز، باب: ما يكره من النياحة على الميت، ١/٤٣٤، الرقم: ١٢٢٩، ومسلم فى الصحيح، المقدمة، باب: تغليظ الكذب على رسول الله ﷺ، ١/١٠، الرقم: ٣، والترمذي فى السنن، كتاب: العلم عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء فى تعظيم الكذب على رسول الله ﷺ، ٥/٣٥، الرقم: ٢٦٥٩.

''हज़रत अनस बिन मालिक ؓ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : जिसने मुझ पर जानबूझ कर झूठ बाँधा वो अपना ठिकाना दोज़ख़ में बना ले।''

एक दूसरी रिवायत में हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ؓ से भी इसी तरह मरवी है।

١٠٦٥ / ٢٥۔ رَوَى أَبُوْحَنِيْفَةَ ؓ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ حَزْمٍ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ ؓ أَنَّهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَا زَالَ جِبْرِيْلُ يُوْصِيْنِي بِالْجَارِ حَتَّى ظَنَنْتُ أَنَّهُ سَيُوَرِّثُهُ، وَمَا زَالَ جِبْرِيْلُ يُوْصِيْنِي بِقِيَامِ اللَّيْلِ حَتَّى ظَنَنْتُ أَنَّ خِيَارَ أُمَّتِي لَنْ يَّنَامُوْا إِلَّا قَلِيْـلًا. أَخْرَجَهُ فِي مُسْنَدِهِ.

''हज़रत अनस बिन मालिक ؓ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : हज़रत ज़िब्राईल ؑ हमेशा हमसाए (के हुक़ूक़) के बारे में मुझे वसीयत करते रहे यहाँ तक कि मैंने गुमान किया कि वो अनक़रीब उसे वारिस बना देंगे, और ज़िब्राईल मुझे रात की इबादत की वसीयत करते रहे। हत्ता कि मैंने गुमान किया कि मेरे (नेको सालेह) बेहतरीन उम्मती रात को कम ही सोएंगे।''

١٠٦٦ / ٢٦۔ رَوَى أَبُوْحَنِيْفَةَ ؓ عَنْ عَطِيَّةَ الْعَوْفِيِّ عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ ؓ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَا يَشْكُرُ اللهَ مَنْ لَا يَشْكُرُ

الحديث رقم ٢٥: أخرجه الخوارزمی فی جامع المسانيد للإمام أبی حنيفة، ١/ ١٠٠، وأخرج المحدثون هذا الحديث بأسانيدهم منهم: البخاری فی الصحيح، كتاب: الأدب، باب: الوصاة بالجار، ٥/ ٢٢٣٩، الرقم: ٥٦٦٨، ومسلم فی الصحيح، كتاب: البر والصلة والآداب، ٤/ ٢٠٢٥، الرقم: ٢٦٢٥، والترمذی، فی السنن، كتاب: البر والصلة عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء فی حق الجوار، ٤/ ٣٣٢، الرقم: ١٩٤٢۔

الحديث رقم ٢٦: أخرجه الخوارزمی فی جامع المسانيد للإمام أبی حنيفة، ١/ ١٠٩، وأخرج المحدثون هذا الحديث بأسانيدهم منهم۔ والترمذی فی السنن، كتاب: البر والصلة عن رسول الله ﷺ ، باب: ماجاء فی الشكر لمن أحسن إليك، ٤/ ٣٣٩، الرقم: ١٩٥٤، وأبوداود فی السنن، كتاب: الأدب، باب: فی شكر المعروف، ٤/ ٢٥٥، الرقم: ٤٨١١، وابن حبان فی الصحيح، ٨/ ١٩٨، الرقم: ٣٤٠٧۔

النَّاسَ. أَخْرَجَهُ فِي مُسْنَدِهِ.

''हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जो लोगों का शुक्रिया अदा नहीं करता वो अल्लाह तआला का भी शुक्र अदा नहीं करता।''

١٠٦٧ / ٢٧. رَوَى أَبُوحَنِيْفَةَ ﷺ عَنْ لَاحِقِ بْنِ الْعِيْزَارِ الْيَمَانِيِّ عَنْ أَبِي ذَرٍّ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ قَالَ: ﴿اسْتَغْفِرُ اللهَ الْعَظِيْمَ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ﴾ غَفَرَ اللهُ لَهُ مَا سَلَفَ مِنْ جُرْمِهِ إِنْ كَانَ مُخْلِصًا. أَخْرَجَهُ فِي مُسْنَدِهِ.

''हज़रत अबू ज़र ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः जिस शख़्स ने पढ़ा ﴿اَسْتَغْفِرُ اللهَ الْعَظِيْمَ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ﴾ ''मैं, अल्लाह बुलन्दो बरतर से मग़्फ़िरत तलब करता हूँ वो ज़ात जिसके सिवा कोई मा'बूद नहीं वो हमेशा ज़िन्दा रहने वाला, सबको अपनी तदबीर से क़ायम रखने वाला है?'' अगर उसने इख़्लास (से यह पढ़ा तो) अल्लाह तआला उसके साबिक़ा (पिछले) गुनाह बख़्श देगा।''

١٠٦٨ / ٢٨. رَوَى أَبُوحَنِيْفَةَ ﷺ عَنْ إِبْرَاهِيْمَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ السَّكْسَكِيِّ الدِّمَشْقِيِّ عَنْ عَبْدِ اللهِ ابْنِ أَبِي أَوْفَى ﷺ أَنَّ رَجُلًا أَتَى النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَ: إِنِّي لَا أَسْتَطِيْعُ أَنْ أَتَعَلَّمَ الْقُرْآنَ فَعَلِّمْنِي مَا يُجْزِيْنِي عَنْهُ، فَقَالَ لَهُ: قُلْ: سُبْحَانَ اللهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ وَاللهُ أَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ. فَقَالَ: هَذَا لِرَبِّي ﷻ فَمَا لِي: فَقَالَ: قُلْ اَللَّهُمَّ ارْحَمْنِي وَاغْفِرْلِي وَاهْدِنِي وَارْزُقْنِي وَعَافِنِي.

الحديث رقم ٢٧: أخرجه الخوارزمى فى جامع المسانيد للإمام أبى حنيفة، ١/ ١١١.

الحديث رقم ٢٨: أخرجه الخوارزمى فى جامع المسانيد للإمام أبى حنيفة، ١/ ١١٧، وأخرج المحدثون هذا الحديث بأسانيدهم منهم: الدار قطنى فى السنن، ١: ٣١٤، الرقم: ٢، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٢: ٣٨١، وابن أبى شيبة فى المصنف، ٦/ ١٠٠، الرقم: ٢٩٧٩٧.

أَخْرَجَهُ فِي مُسْنَدِهِ.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा ﷛ से रिवायत है कि एक शख़्स ने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की बारगाह में हाज़िर होकर अ़र्ज़ कियाः मैं कुरआन सीखने की इस्तिताअ़त नहीं रखता लिहाज़ा आप मुझे वो (कलिमात) सिखाएं जो मेरे लिए उसके क़ायम मुक़ाम हो जाएँ। पस आप ﷺ ने उससे फरमाया : तू कहा कर ﴿سُبْحَانَ اللهِ وَ الْحَمْدُ لِلهِ﴾ (وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ وَ اللهُ أَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ﴾ ''अल्लाह पाक है, अल्लाह के लिए तमाम तारीफ़ें हैं और अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं और अल्लाह सबसे बड़ा है और कुदरतो ताक़त सिर्फ अल्लाह अज़ीमो बरतर की मशिय्यत से ही है।'' उसने अ़र्ज़ कियाः यह (कलिमाते हम्द तो) मेरे रब के लिए हो गए तो मेरे लिए क्या है ? पस आप ﷺ ने फरमाया : तू कहा कर ﴿اَللّٰهُمَّ ارْحَمْنِي وَاغْفِرْلِي وَاهْدِنِي وَارْزُقْنِي وَعَافِنِي﴾ ''ऐ अल्लाह! तू मुझ पर रहम फरमा और मुझे बख़्शश दे और मुझे हिदायत अ़ता कर, मुझे रिज़्क़ से नवाज़ और आफ़ियत अ़ता फरमा।''

١٠٦٩ / ٢٩. رَوَى أَبُوْحَنِيْفَةَ ﷺ عَنْ عَطِيَّةَ الْعَوْفِيِّ عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ ﷺ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ فِي قَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿عَسَى أَنْ يَّبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَحْمُوْدًا﴾ [الإسراء، ١٧:٧٩] قَالَ: الْمَقَامُ الْمَحْمُوْدُ الشَّفَاعَةُ، يُعَذِّبُ اللهُ تَعَالَى قَوْمًا مِنْ أَهْلِ الْإِيْمَانِ بِذُنُوْبِهِمْ ثُمَّ يُخْرِجُهُمْ بِشَفَاعَةِ مُحَمَّدٍ ﷺ فَيُؤْتَى بِهِمْ نَهْرًا يُقَالُ لَهُ الْحَيْوَانُ، فَيَغْتَسِلُوْنَ فِيْهِ ثُمَّ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ. فَيُسَمَّوْنَ الْجَهَنَّمِيُّوْنَ، ثُمَّ يَطْلُبُوْنَ مِنَ اللهِ تَعَالَى فَيُذْهِبُ عَنْهُمْ ذَلِكَ الْإِسْمَ. أَخْرَجَهُ فِي مُسْنَدِهِ.

الحديث رقم ٢٩: أخرجه الخوارزمى فى جامع المسانيد للإمام أبى حنيفة، ١/١٤٧، ١٤٨، وأخرج المحدثون هذا الحديث بأسانيدهم مختصراً منهم: البخارى فى الصحيح، كتاب: الرقاق، باب: صفة الجنة والنار، ٥/٢٤٠١، الرقم: ٦١٩٨، وأبو داود فى السنن، كتاب: السنة، باب: فى الشفاعة، ٤/٢٣٦، الرقم: ٤٧٤٠، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٤/٤٣٤.

''हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ से अल्लाह तआला के फरमान के बारे में रिवायत करते हैं : ''यक़ीनन आपका रब आपको मक़ामे महमूद पर फ़ाइज़ फरमाएगा (यानी वो मक़ामे शफ़ाअते उ़ज़्मा जहाँ जुम्ला अव्वलीनो आख़िरीन आप ﷺ की तरफ़ रूजूअ और आपकी हम्द करेंगे)'' आप ﷺ ने फरमाया : मक़ामे महमूद से मुराद शफ़ाअत है, अल्लाह तआला अहले ईमान में से एक क़ौम को उनके गुनाहों के सबब अज़ाब देगा, फिर उन्हें मुहम्मद ﷺ की शफ़ाअत के वास्ते से (जहन्नम से) निकालेगा तो उन्हें नहरे हयात पर लाया जाएगा, पस वो उसमें गुस्ल कर के जन्नत में दाख़िल होंगे तो (वहाँ) उन्हें जहन्नमी के नाम से पुकारा जाएगा, फिर वो अल्लाह तआला से (उस नाम के ख़ातमे की) गुज़ारिश करेंगे तो वो उनसे उस नाम को भी ख़त्म कर देगा।''

١٠٧٠ / ٣٠. رَوَى أَبُوْحَنِيْفَةَ ﷺ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ هُرْمُزَ الْأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: كُلُّ مَوْلُوْدٍ يُوْلَدُ عَلَى الْفِطْرَةِ فَأَبَوَاهُ يُهَوِّدَانِهِ وَيُنَصِّرَانِهِ وَيُمَجِّسَانِهِ، قِيْلَ: فَمَنْ مَاتَ صَغِيْرًا يَا رَسُوْلَ اللهِ؟ قَالَ: اَللهُ أَعْلَمُ بِمَا كَانُوْا عَامِلِيْنَ. أَخْرَجَهُ فِي مُسْنَدِهِ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : हर पैदा होने वाला बच्चा (अस्ल) फ़ित़रत पर पैदा होता है। फिर उसके वालिदैन उसे यहूदी, ईसाई और मजूसी बना देते हैं। अ़र्ज़ किया गया : या रसूलल्लाह ! जो बचपन में ही फ़ौत हो जाता है (उसका मामला क्या होगा ?) आप ﷺ ने फरमाया : अल्लाह तआ़ला सबसे ज़्यादा जानने वाला है जो वो (दुनिया में रहकर) करने वाले थे।''

١٠٧١ / ٣١. رَوَى أَبُوْحَنِيْفَةَ ﷺ عَنْ عَطِيَّةَ الْعَوْفِيِّ عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ

الحديث رقم ٣٠: أخرجه الخوارزمى فى جامع المسانيد للإمام أبى حنيفة، ١/١٨٨، وأخرج المحدثون هذا الحديث بأسانيدهم منهم: البخارى فى الصحيح، كتاب: الجنائز، باب: ما قيل فى أولاد المشركين، ١/٤٦٥، الرقم: ١٣١٩، ومسلم فى الصحيح، كتاب: القدر، باب: معنى كل مولود يولد على الفطرة، ٤/٢٠٤٧، الرقم: ٢٦٥٨، والترمذى فى السنن، كتاب: القدر عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء كل مولود يولد على الفطرة، ٤/٤٤٧، الرقم: ٢١٣٨.

الحديث رقم ٣١: أخرجه الخوارزمى فى جامع المسانيد للإمام أبى حنيفة، ١/١٨٩، وأخرج المحدثون هذا الحديث بأسانيدهم منهم: الترمذى فى السنن، ←

الْخُدْرِيِّ رضي الله عنه عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ قَالَ: اِتَّقُوْا فِرَاسَةَ الْمُؤْمِنِ فَإِنَّهُ يَنْظُرُ بِنُوْرِ اللهِ ثُمَّ قَرَأَ: ﴿إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّلْمُتَوَسِّمِيْنَ﴾ [الحجر، ١٥:٧٥] أي الْمُتَفَرِّسِيْنَ. أَخْرَجَهُ فِي مُسْنَدِهِ.

''हज़रत अबू सईद ख़ुदरी رضي الله عنه से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः मोमिन की फ़िरासत से डरो क्योंकि वो अल्लाह तआला के नूर से देखता है फिर आप ﷺ ने आयते मुबारका तिलावत की : ''बेशक उसमें अहले फ़िरासत के लिए निशानियाँ हैं।''

١٠٧٢ / ٣٢. رَوَى أَبُوْحَنِيْفَةَ رضي الله عنه عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ دِيْنَارٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رضي الله عنهما قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ إِنَّ اللهَ جَعَلَ الشِّفَاءَ فِي أَرْبَعَةٍ: الْحَبَّةِ السَّوْدَاءِ وَالْحِجَامَةِ وَالْعَسَلِ وَمَاءِ السَّمَاءِ. أَخْرَجَهُ فِي مُسْنَدِهِ.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर رضی اللہ عنہما से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः बेशक अल्लाह तआला ने चार चीज़ों में शिफ़ा रखी है : स्याह दाना (यानी कलौंजी), पछने लगवाना (यानी सर्जरी), शहद और बारिश का पानी।''

١٠٧٣ / ٣٣. رَوَى أَبُوْحَنِيْفَةَ رضي الله عنه عَنْ أَبِي بُرْدَةَ بْنِ أَبِي مُوْسَى عَنْ أَبِيْهِ أَبِي مُوْسَى عَامِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ قَيْسٍ رضي الله عنه قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: أُمَّتِي أُمَّةٌ مَرْحُوْمَةٌ عَذَابُهَا بِأَيْدِيْهَا فِي الدُّنْيَا. أَخْرَجَهُ فِي مُسْنَدِهِ.

''हज़रत अबू मूसा अ़ामिर बिन अ़ब्दुल्लाह बिन क़ैस رضي الله عنه से रिवायत है कि हुज़ूर

.... كتاب: تفسير القرآن عن رسول الله ﷺ، باب: من سورة الحجر، ٥ / ٢٩٨، الرقم: ٣١٢٧، والطبراني في المعجم الأوسط، ٨ / ٢٣، الرقم: ٧٨٤٣، والقضاعى فى مسند الشهاب، ١ / ٣٨٧، الرقم: ٦٦٣.

الحديث رقم ٣٢: أخرجه الخوارزمى فى جامع المسانيد للإمام أبى حنيفة، ١ / ١٨٩.

الحديث رقم ٣٣: أخرجه الخوارزمى فى جامع المسانيد للإمام أبى حنيفة، ١ / ١٩٥، وأخرج المحدثون هذا الحديث بأسانيدهم منهم: الطبرانى فى المعجم الأوسط، ١ / ٢٩٤، الرقم: ٩٧٤، وعبد بن حميد فى المسند، ١ / ١٩٠، الرقم: ٥٣٧، والبخارى فى التاريخ الكبير، ١ / ٣٨، الرقم: ٦٠.

नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : मेरी उम्मत रहमत से नवाज़ी जाने वाली उम्मत है, उसका अज़ाबे दुनिया अपने हाथों से होगा।''

١٠٧٤ / ٣٤. رَوَى أَبُوْحَنِيْفَةَ ﷺ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رضي الله عنهما قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَلْكَافِرُ يَأْكُلُ فِي سَبْعَةِ أَمْعَاءٍ وَالْمُؤْمِنُ يَأْكُلُ فِي مِعًا وَاحِدٍ. أَخْرَجَهُ فِي مُسْنَدِهِ.

''हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर رضی اللہ عنہما से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : काफ़िर सात आंतों में (खाना) भरता है और मोमिन एक आंत में।''

١٠٧٥ / ٣٥. رَوَى أَبُوْحَنِيْفَةَ ﷺ عَنْ أَبِي عَبْدِ اللهِ مُسْلِمِ بْنِ كَيْسَانَ الْمُلَائِيِّ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ ﷺ قَالَ: كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: يُجِيْبُ دَعْوَةَ الْمَمْلُوْكِ وَيَعُوْدُ الْمَرِيْضَ وَيَرْكَبُ الْحِمَارَ. أَخْرَجَهُ فِي مُسْنَدِهِ.

''हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ रिवायत करते हुए फरमाते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ खादिमो गुलाम की दावत भी क़ुबूल फरमाते थे, मरीज़ की इयादत किया करते और दराज़ गोश (यानी गधे की) सवारी किया करते थे।''

الحديث رقم ٣٤: أخرجه الخوارزمى فى جامع المسانيد للإمام أبى حنيفة، ١/١٩٥، وأخرج المحدثون هذا الحديث بأسانيدهم منهم: البخارى فى الصحيح، كتاب: الأطعمة، باب: المؤمن يأكل فى معى واحد، ٥/٢٠٦١، الرقم: ٥٠٧٨- ٥٠٧٩، والترمذى فى السنن، كتاب: الأطعمة عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء أن المؤمن يأكل فى معى واحد والكافر يأكل فى سبعة أمعاء، ٤/٢٦٦، الرقم: ١٨١٨، ومسلم فى الصحيح، كتاب: الأشربة، باب: المؤمن يأكل فى معى واحد والكافر يأكل فى سبعة أمعاء، ٣/١٦٣١، الرقم: ٢٠٦٠.

الحديث رقم ٣٥: أخرجه الخوارزمى فى جامع المسانيد للإمام أبى حنيفة، ١/٧٧، وأخرج المحدثون هذا الحديث بأسانيدهم منهم: الترمذي فى السنن، كتاب: الجنائز عن رسول الله ﷺ، ٣/٣٣٧، الرقم: ١٠١٧، وابن ماجه فى السنن، كتاب: الزهد، باب: البراءة من الكبر والتواضع، ٢/١٣٩٨، الرقم: ٤١٧٨، وأبو يعلى فى المسند، ٧/٢٣٨، الرقم: ٤٢٤٣.

١٠٧٦ / ٣٦۔ رَوَى أَبُوحَنِيْفَةَ ﷺ عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رضي الله عنهما قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يُعْرَفُ بِرِيْحِ الطِّيْبِ إِذَا أَقْبَلَ بِاللَّيْلِ.

أَخْرَجَهُ فِي مُسْنَدِهِ.

''हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رضی اللہ عنہما ने रिवायत करते हुए फरमायाः हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ जब रात को तशरीफ़ लाते तो (फ़िज़ा में) खुशबू के फैलने से आप ﷺ की पहचान होती।''

١٠٧٧ / ٣٧۔ رَوَى أَبُوحَنِيْفَةَ ﷺ عَنْ عَطَاءِ بْنِ أَبِي رِبَاحٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ قَالَ: كَانَ لِرَسُوْلِ اللهِ ﷺ قَلَنْسُوَةٌ شَامِيَّةٌ بَيْضَاءُ.

أَخْرَجَهُ فِي مُسْنَدِهِ.

''हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से रिवायत है फरमाते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की सफेद शामी टोपी थी।''

١٠٧٨ / ٣٨۔ رَوَى أَبُوحَنِيْفَةَ ﷺ عَنِ الْحَسَنِ بْنِ الْحَسَنِ عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ ﷺ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ قَالَ: التَّاجِرُ الصَّدُوقُ مَعَ النَّبِيِّيْنَ

الحديث رقم ٣٦: أخرجه الخوارزمى فى جامع المسانيد للإمام أبى حنيفة، ١ / ٩٨، وأخرج المحدثون هذا الحديث بأسانيدهم منهم:ابن أبى شيبة فى المصنف، ٥ / ٣٠٤، الرقم: ٢٦٣٢، والدارمى فى السنن، ١ / ٤٥، الرقم: ٦٥، وابن سعد فى الطبقات الكبرى،١ / ٣٩٩۔

الحديث رقم ٣٧: أخرجه الخوارزمى فى جامع المسانيد للإمام أبى حنيفة، ١ / ١٩٨۔

الحديث رقم ٣٨: أخرجه الخوارزمي في جامع المسانيد للإمام أبي حنيفة، ٢ / ٢، وأخرج المحدثون هذا الحديث بأسانيدهم منهم: الترمذي في السنن، كتاب: البيوع عن رسول الله ﷺ، باب: ما جاء في التجار وتسمية النبي ﷺ، ٣ / ٥١٥، الرقم: ١٢٠٩، والدارمي في السنن، ٢ / ٣٢٢، الرقم: ٢٥٣٩، والدارقطني في السنن، ٣ / ٧، الرقم: ١٧۔ ١٨، وابن أبي شيبة في المصنف، ٤ / ٥٥٥، الرقم: ٢٣٠٨٨۔٢٣٠٨٩، والحاكم في المستدرك، ٢ / ٧، الرقم: ←

وَالصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَاءِ وَالصَّالِحِيْنَ يَومَ الْقِيَامَةِ. أَخْرَجَهُ فِي مُسْنَدِهِ.
وَقَالَ أَبُوْعِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ.

''हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ ने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ से रिवायत किया कि आप ﷺ ने फरमाया : सच्चा (ईमानदार) ताजिर क़ियामत के दिन अम्बिया–ए–किराम, सिद्दीक़ीन, शुहदा और सालिहीन के साथ (उनकी रफ़ाक़तो सोहबत में) होगा।''

.... ٢١٤٢، وعبد بن حميد في المسند، ١/٢٩٩، الرقم، ٩٦٦، والبيهقي في السنن الكبرى، ٥/٢٦٦، الرقم: ١٠١٩٦، والبيهقي في شعب الإيمان، ٢/٨٦، الرقم: ١٢٣٠، ٤/٢٢١، الرقم: ٤٨٥٥، والطبراني عن ابن عمر رضي الله عنهما في المعجم الأوسط، ٧/٢٤٣، الرقم: ٧٣٩٤.

فَصْلٌ فِي ثُـلَاثِيَاتِ الإِمَامِ الْبُخَارِيِّ رضي الله عنه

﴿इमाम बुख़ारी रضي الله عنه से मरवी तीन वास्तों की रिवायात का बयान﴾

١٠٧٩ / ٣٩ـ حَدَّثَنَا مَكِّيُّ بْنُ إِبْرَاهِيْمَ قَالَ: حَدَّثَنَا يَزِيْدُ بْنُ أَبِي عُبَيْدٍ عَنْ سَلَمَةَ رضي الله عنه قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ يَقُلْ عَلَيَّ مَالَمْ أَقُلْ فَلْيَتَبَوَّأْ مَقْعَدَهُ مِنَ النَّارِ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ.

''हज़रत सलमा बिन अक्वा' रضي الله عنه से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : जो मेरे मुतअल्लिक़ ऐसी बात कहे जो मैंने न कहीं हो तो वो जहन्नम के अन्दर अपना ठिकाना तैयार रखे।''

١٠٨٠ / ٤٠ـ حَدَّثَنَا الْمَكِّيُّ قَالَ: حَدَّثَنَا يَزِيْدُ بْنُ أَبِي عُبَيْدٍ عَنْ سَلَمَةَ رضي الله عنه

الحديث رقم ٣٩: أخرجه البخارى في الصحيح، كتاب: العلم، باب: إثم من كذب على النبي ﷺ، ١ / ٥٢، الرقم: ١٠٩، وابن ماجه عن أبي هريرة رضي الله عنه فى السنن، المقدمة، باب: التغليظ فى الكذب على رسول الله ﷺ، ١ / ١٣، الرقم: ٣٤، وابن حبان عن أبى هريرة رضي الله عنه فى الصحيح، ١ / ٢١٠، الرقم: ٢٨، والحاكم عن أبي قتادة رضي الله عنه فى المستدرك، ١ / ١٩٤، الرقم: ٣٧٩، وَقَالَ الحَاكِمُ: هَذَا حَدِيْثٌ عَلَى شَرْطِ مُسْلِمٍ، وأحمد بن حنبل عن عثمان بن عفان رضي الله عنه فى المسند ، ١ / ٦٥، الرقم: ٤٦٩، والبيهقى فى السنن الكبرى، ١٠ / ١١٢، والشافعى فى المسند، ١ / ٢٣٩، وابن أبي شيبة فى المصنف، ٥ / ٢٩٦، الرقم: ٢٦٢٤٩، والبزار فى المسند، ٦ / ٣١، الرقم: ٢١٠٠، والشاشى فى المسند، ١ / ٢٤٩، الرقم: ٢١٥، والطيالسى فى المسند، ١ / ١٤، الرقم: ٨٠، وأبويعلى فى المسند، ١٠ / ٥٠٦، الرقم: ٦١٢٣، والطبرانى فى المعجم الكبير، ١ / ١٧١، الرقم: ٤٢٦.

الحديث رقم ٤٠: أخرجه البخارى في الصحيح، أبواب: سترة المصلي، باب: قدر كم ينبغي أن تكون بين المصلي والسترة، ١ / ١٨٨، الرقم: ٤٧٥، ومسلم فى الصحيح، كتاب: الصلاة باب: دنو المصلى من السترة، ١ / ٣٦٤، الرقم: ٥٠٨- ٥٠٩، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٤ / ٥٤، وأبوعوانة فى المسند، ١ / ٣٩٤، الرقم: ١٤٣٦: ٢ / ٥٦، وابن حبان فى الصحيح، ٥ / ٥٨، الرقم:١٧٦٢، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٢ / ٢٧٢، الرقم: ٣٢٨٧.

قَالَ: كَانَ جِدَارُ الْمَسْجِدِ. عِنْدَ الْمِنبَرِ مَا كَادَتُ الشَّاةُ تَجُوْزُهَا.

رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ.

''हज़रत यज़ीद बिन अबि उबैद से रिवायत है कि हज़रत सलमा बिन अक्वा' ﷺ ने फरमाया : मस्जिद की दीवार मिम्बर के इतना क़रीब थी कि जिसमें से बकरी न गुज़र सके।''

١٠٨١ / ٤١- حَدَّثَنَا الْمَكِّيُّ بْنُ إِبْرَاهِيمَ قَالَ: حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ أَبِي عُبَيْدٍ قَالَ: كُنْتُ آتِي مَعَ سَلَمَةَ بْنِ الْأَكْوَعِ ﷺ، فَيُصَلِّي عِنْدَ الْأُسْطُوَانَةِ الَّتِي عِنْدَ الْمُصْحَفِ فَقُلْتُ: يَا أَبَا مُسْلِمٍ، أَرَاکَ تَتَحَرَّى الصَّلَاةَ عِنْدَ هَذِهِ الْأُسْطُوَانَةِ قَالَ: فَإِنِّي رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَتَحَرَّى الصَّلَاةَ عِنْدَهَا.

رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ.

''हज़रत यज़ीद बिन अबी उबैद से रिवायत है कि मैं हज़रत सलमा बिन अक्वा' ﷺ के साथ आ कर सुतून के पास नमाज़ पढ़ता जो मुस्हफ़ के पास है। मैंने अ़र्ज़ कियाः ऐ अबू मुस्लिम! मैं देखता हूँ कि आप उस सुतून के पास नमाज़ पढ़ने की कोशिश करते हैं? उन्होंने फरमायाः मैंने हुज़ूर नबी-ए-अकरम ﷺ को उसके पास ख़ास तौर पर नमाज़ पढ़ते हुए देखा है।''

١٠٨٢ / ٤٢- حَدَّثَنَا الْمَكِّيُّ بْنُ إِبْرَاهِيمَ قَالَ: حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ أَبِي عُبَيْدٍ

الحديث رقم ٤١: أخرجه البخارى في الصحيح، أبواب: سترة المصلي، باب: الصلاة إلى الأسطوانة، ١/١٨٩، الرقم: ٤٨٠، ومسلم فى الصحيح، كتاب: الصلاة، باب: دنو المصلى من السترة، ١/٣٦٤، الرقم: ٥٠٩، وابن ماجه فى السنن، كتاب: إقامة الصلاة والسنة فيها، باب: ماجاء فى توطين المكان في المسجد يصلي فيه، ١/٤٥٩، الرقم: ١٤٣٠، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٤/٤٨، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٢/٢٧١، الرقم: ٣٢٨٤.

الحديث رقم ٤٢: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: مواقيت الصلاة، باب: وقت المغرب وقال عطاء يجمع المريض بين المغرب والعشاء، ١/٢٠٥، الرقم: ٥٣٦، والترمذى فى السنن، كتاب: الصلاة عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء فى وقت المغرب، ١/٣٠٤، الرقم: ١٦٤، وأبو داود فى السنن، كتاب: الصلاة، باب: فى وقت المغرب، ١/١١٣، الرقم: ٤١٧، وابن ماجه، فى السنن، كتاب: الصلاة، باب: ←

عَنْ سَلَمَةَ ﷺ قَالَ: كُنَّا نُصَلِّي مَعَ النَّبِيِّ ﷺ المَغْرِبَ إِذَا تَوَارَتْ بِالْحِجَابِ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ.

''हज़रत यज़ीद बिन अबी उबैद से रिवायत है कि हज़रत सलमा बिन अक्वा' ﷺ ने फरमाया : हम हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के साथ नमाज़े मग़्रिब पढ़ा करते थे जब कि सूरज पर्दे में हो जाता।''

١٠٨٣ / ٤٣ـ حَدَّثَنَا الْمَكِّيُّ بْنُ إِبْرَاهِيمَ: حَدَّثَنَا يَزِيْدُ، عَنْ سَلَمَةَ بْنِ الْأَكْوَعِ ﷺ قَالَ: أَمَرَ النَّبِيُّ ﷺ رَجُلاً مِنْ أَسْلَمَ أَنْ أَذِّنْ فِي النَّاسِ أَنَّ مَنْ كَانَ أَكَلَ فَلْيَصُمْ بَقِيَّةَ يَوْمِهِ، وَمَنْ لَمْ يَكُنْ أَكَلَ فَلْيَصُمْ، فَإِنَّ الْيَوْمَ عَاشُوْرَاءَ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ.

''हज़रत सलमा बिन अक्वा' ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने क़बील–ए–अस्लम के एक शख़्स को लोगों में यह ऐलान करने का हुक्म दिया कि जिसने जो

.... وقت صلاة المغرب، ١/ ٢٢٥، الرقم: ٦٨٨، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٤/ ٥٤، والبيهقى فى السنن الكبرى، ١/ ٣٦٩، الرقم: ١٦٠٣، والطحاوى فى شرح معانى الآثار، ١/ ١٥٤، وأبوعوانة فى المسند، ١/ ٣٠١، الرقم: ١٠٦٣، والبغوى فى شرح السنة، الرقم: ٣٧٢.

الحديث رقم ٤٣: أخرجه البخارى في الصحيح، كتاب: الصوم، باب: صيام يوم عاشوراء، ٢/ ٧٠٥، الرقم: ١٩٠٣، وفي باب: إذا نوى بالنهار صوما، ٢/ ٦٧٩، الرقم: ١٨٢٤، وفى كتاب: التمني، باب: ماكان يبعث النبي ﷺ من الأمراء والرسل واحدًا بعدُ واحدٍ، ٦/ ٢٦٥١، الرقم: ٦٨٣٧، ومسلم فى الصحيح، كتاب: الصيام ، باب: من أكل فى عاشوراء فليكف بقية يومه، ٢/ ٧٩٨، الرقم: ١١٣٥، والنسائى فى السنن، كتاب: الصيام، باب:أذا لم يجمع من الليل هل يصوم ذلك اليوم من التطوع، ٤/ ١٩٢، الرقم: ٢٣٢١، وابن حبان فى الصحيح، ٨/ ٣٨٤، الرقم: ٣٦١٩، والدارمى فى السنن، ٢/ ٣٦، الرقم: ١٧٦١، والحاكم فى المستدرك، ٣/ ٦٠٨، الرقم: ٦٢٥٣، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٤/ ٤٧، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٤/ ٢٢٠، الرقم: ٧٨٢٤، وابن أبى شيبة فى المصنف، ٢/ ٣١٢، الرقم: ٩٣٦٧.

कुछ खा लिया तो वो बाक़ी दिन का रोज़ा रखे (यानी बक़िया दिन रोज़ेदार की तरह गुज़ारे) और जिसने कुछ नहीं खाया वो (आज) रोज़ा रखे क्योंकि आज आ़शूरा का दिन है।''

١٠٨٤ / ٤٤۔ حَدَّثَنَا الْمَكِّيُّ بْنُ إِبْرَاهِيمَ: حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ أَبِي عُبَيْدٍ عَنْ سَلَمَةَ بْنِ الْأَكْوَعِ ﷺ قَالَ: كُنَّا جُلُوسًا عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ إِذْ أُتِيَ بِجَنَازَةٍ، فَقَالُوا: صَلِّ عَلَيْهَا، فَقَالَ: هَلْ عَلَيْهِ دَيْنٌ؟ قَالُوا: لَا، قَالَ: فَهَلْ تَرَكَ شَيْئًا، قَالُوا: لَا، فَصَلَّى عَلَيْهِ، ثُمَّ أُتِيَ بِجَنَازَةٍ أُخْرَى، فَقَالُوا: يَا رَسُوْلَ اللهِ، صَلِّ عَلَيْهَا، قَالَ: هَلْ عَلَيْهِ دَيْنٌ، قِيلَ: نَعَمْ، قَالَ فَهَلْ تَرَكَ شَيْئًا قَالُوا: ثَلَاثَةَ دَنَانِيرَ، فَصَلَّى عَلَيْهَا ثُمَّ أُتِيَ بِالثَّالِثَةِ، فَقَالُوا: صَلِّ عَلَيْهَا، قَالَ: هَلْ تَرَكَ شَيْئًا قَالُوا: لَا، قَالَ: فَهَلْ عَلَيْهِ دَيْنٌ، قَالُوا: ثَلَاثَةَ دَنَانِيرَ، قَالَ: صَلُّوا عَلَى صَاحِبِكُمْ، قَالَ أَبُوقَتَادَةَ: صَلِّ عَلَيْهِ يَا رَسُوْلَ اللهِ! وَعَلَيَّ دَيْنُهُ، فَصَلَّى عَلَيْهِ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ.

''हज़रत सलमा बिन अक्वा' ﷺ से रिवायत है कि हम हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की बारगाहे अक़दस में बैठे हुए थे कि एक जनाज़ा लाया गया और अ़र्ज़ की गई कि इस पर नमाज़े

الحديث رقم ٤٤: أخرجه البخارى في الصحيح، كتاب: الحوالات، باب: إن إحال دين الميت على رجل جاز، ٢/ ٧٩٩، الرقم: ٢١٦٨، وفى كتاب: الكفالة، باب: من تكفل عن ميت دينا، فليس له يرجع، ٢/ ٨٠٣، الرقم: ٢١٧٣، وفى كتاب: النفقات، باب: قول النبي ﷺ: من ترك كلاًّ أوضياعاً فإليّ، ٥/ ٢٠٥٤، الرقم: ٥٠٥٦، ومسلم فى الصحيح، كتاب: الفرائض، باب: من ترك مالا فلورثته، ٣/ ١٢٣٧، الرقم: ١٦١٩، والترمذى فى السنن، كتاب: الجنائز عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء فى الصلاة على المديون، ٣/ ٣٨٨، الرقم: ١٠٧٠، وَقَالَ أَبُو عيسى: حَدِيثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ، والنسائى فى السنن الكبرى، ١/ ٦٣٧، الرقم: ٢٠٨٩، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٢/ ٣٨٠، الرقم: ٨٩٣٧، والبغوى فى شرح السنة، الرقم: ٢١٥٣، وابن حبان فى الصحيح، ٧/ ٣٢٩، الرقم: ٣٠٥٩، وابن الجارود فى المنتقى، ١/ ٢٨٠، الرقم: ١١١١، وأبوعوانة فى المسند، ٣/ ٤٤٣، الرقم: ٥٦٢٤، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٦/ ٧٢، الرقم: ١١١٧٧۔

जनाज़ा पढ़िए। आप ﷺ ने फरमाया : क्या इस पर क़र्ज़ है ? लोगों ने अ़र्ज़ किया: नहीं, आप ﷺ ने फरमाया : क्या इसने कुछ (तर्कह) छोड़ा है ? अ़र्ज़ किया : नहीं। सो आप ﷺ ने इस पर नमाज़े (जनाज़ा) पढ़ी फिर दूसरा जनाज़ा आया और सहाबा ने अ़र्ज़ किया: या रसूलल्लाह! इस पर नमाज़े (जनाज़ा) पढ़िए। आप ﷺ ने फरमाया : क्या इस पर क़र्ज़ है? अ़र्ज़ किया : हाँ, फरमाया : क्या इसने कुछ छोड़ा है? सहाबा ने अ़र्ज़ किया: तीन दीनार (छोड़े हैं) सो इस पर आप ﷺ ने नमाज़ पढ़ी। फिर तीसरा जनाज़ा लाया गया और अ़र्ज़ किया गया: इस पर नमाज़े (जनाज़ा) पढ़िए। फरमाया क्या इसने कुछ (तर्कह) छोड़ा है ? सहाबा ने अ़र्ज़ किया: नहीं, फरमाया: क्या इस पर क़र्ज़ है ? सहाबा ने अ़र्ज़ किया: तीन दीनार (क़र्ज हैं), फरमाया: तुम अपने साथी पर नमाज़े (जनाज़ा) पढ़ लो। हज़रत अबू क़तादा ने अ़र्ज़ किया: या रसूलल्लाह ! इस पर नमाज़ पढ़िए और इसका क़र्ज़ मैं अदा करूँगा। सो आप ﷺ ने उस पर भी नमाज़े जनाज़ा पढ़ी।''

١٠٨٥ /٤٥۔ حَدَّثَنَا الْمَكِّيُّ بْنُ إِبْرَاهِيْمَ: حَدَّثَنَا يَزِيْدُ بْنُ عُبَيْدٍ عَنْ سَلَمَةَ رضي الله عنه: قَالَ بَايَعْتُ النَّبِيَّ ﷺ ثُمَّ عَدَلْتُ إِلَى ظِلِّ الشَّجَرَةِ، فَلَمَّا خَفَّ النَّاسُ قَالَ: يَا ابْنَ الْأَكْوَعِ أَلاَ تُبَايِعُ، قَالَ: قُلْتُ: قَدْ بَايَعْتُ يَا رَسُوْلَ اللهِ، قَالَ: وَأَيْضًا. فَبَايَعْتُهُ الثَّانِيَةَ، فَقُلْتُ لَهُ:يَا أَبَا مُسْلِمٍ، عَلَى أَيِّ شَيءٍ كُنْتُمْ تُبَايِعُوْنَ يَوْمَئِذٍ؟ قَالَ: عَلَى الْمَوْتِ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ.

''हज़रत सलमा बिन अक्वा' رضي الله عنه से रिवायत है कि मैंने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ

الحديث رقم ٤٥: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: الجهاد، باب: البيعة في الحرب أن لا يفروا، وقال بعضهم: على الموت، ٣/١٠٨١، الرقم: ٢٨٠٠، وفى كتاب: المغازى، باب: غزوة الحديبية، ٤/١٥٢٩، الرقم: ٣٩٣٦، وفى كتاب: الأحكام، باب: كيف يبايع الإمام الناس، ٦/٢٦٣٤، الرقم: ٦٧٨٠، وفى باب: مَنْ بايع مرتين، ٦/٢٦٣٥، الرقم: ٦٧٨٢، ومسلم فى الصحيح، كتاب: الإمارة، باب: استحباب مبايعة الإمام الجيش عند إرادة القتال، ٣/١٤٨٣، الرقم: ١٨٦٠، وفى كتاب: الجهاد والسير، باب: غزوة ذى قردٍ وغيرها، ٣/١٤٣٤، الرقم: ١٨٠٧، والترمذى فى السنن، كتاب: السير عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء فى بيعة النبى ﷺ، ٤/١٥٠، الرقم: ١٥٩٢، وَقَالَ أَبُوعِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ، والنسائى فى السنن، كتاب: البيعة، باب: البيعة على الموت، ٧/١٤١، الرقم: ٤١٥٩، وأحمد حنبل فى المسند، ٤/٤٧،٤٩.

से बैअ़त कर ली। फिर मैं एक दरख़्त के साए में चला गया। जब भीड़ कम हुई तो आप ﷺ ने फरमाया : ऐ इब्ने अक्वा' ! क्या तुम बैअ़त नहीं करते ? मैंने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! मैं तो बैअ़त कर चुका हूँ, आप ﷺ ने फरमाया : अच्छा दोबारा ही सही, सो मैंने दूसरी दफ़ा भी बैअ़त कर ली। तो मैंने उनसे पूछा : ऐ अबू मुस्लिम ! आप हज़रात ने उस रोज़ किस बात पर बैअ़त की थी ? उन्होंने फरमाया : (गुलामी–ए–रसूल ﷺ में) मौत पर।''

١٠٨٦ / ٤٦ـ حَدَّثَنَا الْمَكِّيُّ بْنُ إِبْرَاهِيمَ: حَدَّثَنَا يَزِيْدُ بْنُ أَبِي عُبَيْدٍ قَالَ: رَأَيْتُ أَثَرَ ضَرْبَةٍ فِي سَاقِ سَلَمَةَ، فَقُلْتُ: يَا أَبَا مُسْلِمٍ، مَا هَذِهِ الضَّرْبَةُ ؟ فَقَالَ: هَذِهِ ضَرْبَةٌ أَصَابَتْنِي يَوْمَ خَيْبَرَ فَقَالَ النَّاسُ: أُصِيْبَ سَلَمَةُ، فَأَتَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ فَنَفَثَ فِيْهِ ثَلاَثَ نَفَثَاتٍ، فَمَا اشْتَكَيْتُهَا حَتَّى السَّاعَةِ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ.

''हज़रत यज़ीद बिन अबी उबैद फरमाते हैं कि मैंने सलमा बिन अक्वा' رضي الله عنه की पिन्डली पर ज़ख़्म का निशान देखा तो पूछा : ऐ अबू मुस्लिम ! यह निशान क्या है ? उन्होंने फरमाया : यह ज़ख़्म मुझे ग़ज़्वा–ए–ख़ैबर में आया था। लोग तो यह कहने लगे थे सलमा का आख़िर वक़्त आ पहुँचा है लेकिन मैं हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की बारगाह में हाज़िर हो गया। सो आप ﷺ ने उस (ज़ख़्म) पर तीन मर्तबा दम किया तो मुझे अब तक कोई तकलीफ़ महसूस नहीं होती।''

١٠٨٧ / ٤٧ـ حَدَّثَنَا الْمَكِّيُّ بْنُ إِبْرَاهِيمَ: حَدَّثَنَا يَزِيْدُ بْنُ أَبِي عُبَيْدٍ عَنْ

الحديث رقم ٤٦: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: المغازي، باب: غزوة خيبر، ٤/ ١٥٤١، الرقم: ٣٩٦٩، وأبو داود في السنن، كتاب: الطب، باب: كيف الرقى، ٤/ ١٢، الرقم: ٣٨٩٤، والبغوي في شرح السنة، الرقم: ٣٨٠٦.

الحديث رقم ٤٧: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: الديات، باب: إذا قتل نفسه خطأ فلا دية له، ٦/ ٢٥٢٥، الرقم: ٦٤٩٦، وفي كتاب: المغازي، باب: غزوة خيبر، ٤/ ١٥٣٧، الرقم: ٣٩٦٠، وفي كتاب: الأدب، باب: مايجوز من الشعر والرجز والحداء ومايكره منه، ٥/ ٢٢٧٧، الرقم: ٥٧٩٦، ومسلم في الصحيح، كتاب: الجهاد والسير باب: غزوة ذي قَرَدٍ، ٣/ ١٤٢٧ـ ١٤٢٨، الرقم: ١٨٠٢، وأحمد بن حنبل في المسند، ٤/ ٤٧، وأبو عوانة في المسند، ٤/ ٣١٤، الرقم: ٦٨٣١.

سَلَمَةَ رضي الله عنه قَالَ: خَرَجْنَا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ إِلَى خَيْبَرَ، فَقَالَ رَجُلٌ مِنْهُمْ: أَسْمِعْنَا يَا عَامِرُ مِنْ هُنَيَّاتِكَ فَحَدَا بِهِمْ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: مَنِ السَّائِقُ قَالُوْا: عَامِرٌ، فَقَالَ: رَحِمَهُ اللهُ، فَقَالُوْا: يَا رَسُوْلَ اللهِ، هَلَّا أَمْتَعْتَنَا بِهِ، فَأُصِيبَ صَبِيْحَةَ لَيْلَتِهِ، فَقَالَ: الْقَوْمُ: حَبِطَ عَمَلُهُ، قَتَلَ نَفْسَهُ، فَلَمَّا رَجَعْتُ وَهُمْ يَتَحَدَّثُوْنَ أَنَّ عَامِرًا حَبِطَ عَمَلُهُ، فَجِئْتُ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقُلْتُ: يَا نَبِيَّ اللهِ، فِدَاكَ أَبِي وَأُمِّي، زَعَمُوْا أَنَّ عَامِرًا حَبِطَ عَمَلُهُ فَقَالَ: كَذَبَ مَنْ قَالَهَا، إِنَّ لَهُ لَأَجْرَيْنِ اثْنَيْنِ، إِنَّهُ لَجَاهِدٌ مُجَاهِدٌ وَأَيُّ قَتْلٍ يَزِيْدُهُ عَلَيْهِ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ.

''हज़रत सलमा बिन अक्वा' रضي الله عنه रिवायत फरमाते हैं कि हम हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के हमराह ग़ज़व–ए–ख़ैबर के लिए निकले तो लोगों में से एक ने कहा : ऐ आमिर! क्या आप हमें अपने अशआर नहीं सुनाएंगे ? चुनांचे उन्होंने अपने अशआर सुनाए तो हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : यह हाँकने वाला कौन है ? सहाबा ने अर्ज़ किया : आमिर बिन अक्वा' है, आप ﷺ ने फरमाया : अल्लाह तआला इस पर रहम फरमाए। सहाबा ने अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! आप हमें उनसे और फ़ायदा उठा लेने देते। सो उसी रात की सुबह को वो मौत की आग़ोश में चले गए। तो लोगों ने कहा उसके अमल बर्बाद हो गए क्योंकि उसने अपने आपको ख़ुद क़त्ल किया है। जब मैं वापस लौटा तो लोग यही बातें कर रहे थे कि आमिर के अमल बर्बाद हो गए हैं। सो मैंने हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की बारगाह में हाज़िर होकर अर्ज़ किया : या नबी अल्लाह ! मेरे माँ–बाप आप पर क़ुर्बान लोगों का यह ख़याल है कि आमिर के आ'माल बर्बाद हो गए हैं। आप ﷺ ने फरमायाः जिस किसी ने यह कहा ग़लत़ कहा है। उसके लिए तो दो गुना अज्र है वो तो मशक़्क़त उठाने वाला मुजाहिद है। उसके क़त्ल से बेहतर किसकी मौत है।''

١٠٨٨ / ٤٨۔ حَدَّثَنَا الْمَكِّيُّ بْنُ إِبْرَاهِيمَ: أَخْبَرَنَا يَزِيْدُ بْنُ أَبِي عُبَيْدٍ عَنْ

الحديث رقم ٤٨: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: الجهاد، باب: من رأى العدو فنادى بأعلى صوته ياصباحاه حتى يسمع الناس، ٣/١١٠٦، الرقم: ٢٨٧٦، وفى كتاب: المغازى، باب: غزوة ذاتِ القردِ، ٤/١٥٣٦، الرقم: ٣٩٥٨، ومسلم فى الصحيح، كتاب: الجهاد والسير، باب: غزوة ذى قَرَدٍ وغيرها، ٣/١٤٣٢۔ ١٤٣٨، الرقم: ١٨٠٦، وابن حبان فى الصحيح، ١٦/١٣٣، الرقم: ٧١٧٣، والنسائى فى السنن الكبرى، ٦/٢٤٣، الرقم: ١٠٨١٤، وأحمد بن حنبل فى ←

سَلَمَةَ ﷺ أَنَّهُ أَخْبَرَهُ قَالَ: خَرَجْتُ مِنَ الْمَدِيْنَةِ ذَاهِبًا نَحْوَ الْغَابَةِ، حَتَّى إِذَا كُنْتُ بِثَنِيَّةِ الْغَابَةِ لَقِيَنِي غُـلَامٌ لِعَبْدِ الرَّحْمَنِ ابْنِ عَوْفٍ، قُلْتُ: وَيْحَكَ مَابِكَ؟ قَالَ: أُخِذَتْ لِقَاحُ النَّبِيِّ ﷺ قُلْتُ: مَنْ أَخَذَهَا؟ قَالَ: غَطَفَانُ وَفَزَارَةُ، فَصَرَخْتُ ثَلَاثَ صَرَخَاتٍ أَسْمَعْتُ مَابَيْنَ لاَ بَتَيْهَا: يَاصَبَاحَاهُ يَا صَبَاحَاهُ، ثُمَّ انْدَفَعْتُ حَتَّى أَلْقَاهُمْ وَقَدْ أَخَذُوْهَا، فَجَعَلْتُ أَرْمِيْهِمْ وَأَقُوْلُ:

أَنَا ابْنُ الْأَكْوَعِ وَالْيَوْمُ يَوْمُ الرُّضَّعِ

فَاسْتَنْقَذْتُهَا مِنْهُمْ قَبْلَ أَنْ يَشْرَبُوْا، فَأَقْبَلْتُ بِهَا أَسُوقُهَا فَلَقِيَنِي النَّبِيُّ ﷺ فَقُلْتُ: يَارَسُوْلَ اللهِ! إِنَّ الْقَوْمَ عِطَاشٌ، وَإِنِّي أَعْجَلْتُهُمْ أَنْ يَشْرَبُوْا سِقْيَهُمْ، فَابْعَثْ فِي أَثْرِهِمْ فَقَالَ: يَا ابْنَ الْأَكْوَعِ، مَلَكْتَ فَأَسْجِحْ، إِنَّ الْقَوْمَ يُقْرَوْنَ فِي قَوْمِهِمْ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ.

''हज़रत सलमा बिन अक्वा' ﷺ रिवायत करते हैं कि मैं मदीना मुनव्वरा से जंगल की तरफ़ चला, पहाड़ी पर पहुँचा तो हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ ﷺ का एक गुलाम मिला मैंने कहा तू हलाक हो तू यहाँ कैसे आया? उसने जवाब दिया : हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की दूध देने वाली ऊँटनी पकड़ी गई है। मैंने पूछाः किसने पकड़ी है? उसने जवाब दिया क़बील–ए–ग़त्फ़ान औफ़ज़ारा के आदमी ले गए हैं । फिर मैं तीन मर्तबा ''यासबाहा'' के अल्फ़ाज़ के साथ इस ज़ोर से चिल्लाया कि मदीने मुनव्वरा के हर गौशे में रहने वाले सुन लें। फिर मैंने दौड़ लगाई यहाँ तक कि उन लोगों को जा पहुँचा। सो मैं उनकी जानिब तीर फैंकने लगा और साथ यह कहने लगा : ''मैं अक्वा' का बेटा हूँ और आज कमीनों की हलाकत का दिन है'' तो मैंने उनके पानी पीने से पहले ही उनसे ऊँटनी छीन ली। मैं उसे ले कर वापस लौटा तो रसूलल्लाह ﷺ से मेरी मुलाक़ात हो गई। मैंने अर्ज़ कियाः या रसूलल्लाह! वो लोग प्यासे थे और मैं उनके पानी पीने से पहले ही जल्दी से उनसे ऊँटनी छीन लाया। उनके पीछे किसी को रवाना कर दें, आप ﷺ ने

.... المسند، ٤/٤٨، وأبو عوانة فى المسند، ٤/٣٠٢، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٩/٨٨، وابن أبي شيبة فى المصنف، ٧/٤٢٠، الرقم: ٣٧٠٠٢.

फरमाया : ऐ इब्ने अक्वा'! तुम मालिक हो गए हो अब नरमी करो। उनकी मेहमानी अपनी क़ौम में हो रही होगी।''

١٠٨٩ / ٤٩۔ حَدَّثَنَا الْمَكِّيُّ بْنُ إِبْرَاهِيمَ: حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ أَبِي عُبَيْدٍ عَنْ سَلَمَةَ رضي الله عنه بْنِ الْأَكْوَعِ رضي الله عنه قَالَ: لَمَّا أَمْسَوْا يَوْمَ فَتَحُوْا خَيْبَرَ، أَوْقَدُوْا النِّيْرَانَ، قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: عَلَامَ أَوْقَدْتُمْ هَذِهِ النِّيْرَانَ. قَالُوْا: لُحُوْمِ الْحُمُرِ الإِنْسِيَّةِ، قَالَ: أَهْرِيْقُوْا مَا فِيْهَا، وَاكْسِرُوْا قُدُوْرَهَا. فَقَامَ رَجُلٌ مِنَ الْقَوْمِ فَقَالَ: نُهَرِيْقُ مَافِيْهَا وَنَغْسِلُهَا، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: أَوْ ذَاكَ.

رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ.

''हज़रत सलमा बिन अक्वा' रضي الله عنه रिवायत फरमाते हैं कि जिस रोज़ ख़ैबर फ़तह हुआ उस शाम लोगों ने आग जलाई। हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : तुमने यह आग क्या चीज़ पकाने के लिए जलाई है ? मुजाहिदीन ने अ़र्ज़ किया : पालतू गधों का गोश्त पकाने के लिए: आप ﷺ ने फरमाया : जो हाँडियों में है उसे उलट दो और हाँडियों को तोड़ दो। एक शख़्स ने खड़े होकर अ़र्ज़ किया: हम गोश्त को उलट लें और हाँडियों को धो न ले ? आप ﷺ ने फरमाया : चलो यूँ ही कर लो।''

١٠٩٠ / ٥٠۔ حَدَّثَنَا أَبُوْعَاصِمٍ، عَنْ يَزِيْدِ بْنِ عُبَيْدٍ عَنْ سَلَمَةَ بْنِ

الحديث رقم ٤٩: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: الذباح والصيد، باب: آنية المجوس والميتة، ٥/٢٠٩٤، الرقم: ٥١٧٨، ومسلم فى الصحيح، كتاب: الأضاحى، باب: بيان ماكان من النهى عن أكل لحوم الأضاحى بعد ثلاث فى أول الإسلام وبيان نسخه وإبا حته إلى متى شاء، ٣/١٥٦٣، الرقم: ١٩٧٤، وابن ماجه فى السنن، كتاب: الذبائح، باب: لحوم الحمر الوحشية، ٢/١٠٦٠٥، الرقم: ١٣٩٥، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٤/٥٠، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٦/١٠٢، الرقم: ١١٣٣٣، وأخرجه الحازمي فى الناسخ والمنسوخ، ١/١٥٦، بمعناه من عدة طرق۔

الحديث رقم ٥٠: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: الصوم، باب: إذا نوى بالنهار صوما، ٢/٦٧٩، الرقم: ١٨٢٤، ومسلم فى الصحيح، كتاب: الصيام، باب: صوم يوم عاشوراء، ٢/٧٩٢، الرقم: ١١٢٥، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٤/٤٨، والبغوى فى شرح فى شرح السنة، الرقم: ١٧٨٤۔

الأَكْوَعِ ﷺ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ بَعَثَ رَجُلًا يُنَادِي فِي النَّاسِ يَوْمَ عَاشُوْرَاءَ إِنَّ مَنْ أَكَلَ فَلْيُتِمَّ، أَوْ فَلْيَصُمْ، وَمَن لَمْ يَأْكُلْ فَلاَ يَأْكُلْ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ.

''हज़रत सलमा बिन अक्वा' ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने एक शख़्स को आशूरा के रोज़ लोगों में मुनादी करने के लिए भेजा कि जिसने खाना खा लिया वो रोज़ा पूरा करे या उसे चाहिए कि रोज़ा रखे और जिसने नहीं खाया वो न खाए।''

١٠٩١ / ٥١- حَدَّثَنَا أَبُوْعَاصِمٍ، عَنْ يَزِيْدَ بْنِ أَبِي عُبَيْدٍ عَنْ سَلَمَةَ بْنِ الْأَكْوَعِ ﷺ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ أُتِيَ بِجَنَازَةٍ لِيُصَلِّيَ عَلَيْهَا، فَقَالَ: هَلْ عَلَيْهِ مِنْ دَيْنٍ. قَالُوْا: لاَ، فَصَلَّى عَلَيْهِ ثُمَّ أُتِيَ بِجَنَازَةٍ أُخْرَى، فَقَالَ: هَلْ عَلَيْهِ مِنْ دَيْنٍ، قَالُوْا: نَعَمْ، قَالَ: صَلُّوْا عَلَى صَاحِبِكُمْ قَالَ أَبُوْقَتَادَةَ: عَلَيَّ دَيْنُهُ يَا رَسُوْلَ اللهِ، فَصَلَّى عَلَيْهِ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ.

''हज़रत सलमा बिन अक्वा' ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की

الحديث رقم ٥١: أخرجه البخاري فى الصحيح، كتاب: الكفالة، باب: من تكفل عن ميت دَينا فليس له أن يرجع وبه قال: الحسن، ٢/ ٨٠٣، الرقم: ٢١٧٣، وفي كتاب: الحوالات، باب: إن إحال دين الميت على رجل جاز، ٢/ ٧٩٩، الرقم: ٢١٦٨، وفى كتاب: الكفالة، باب: من تكفّل عن ميت دَينا، فليس له يرجع، ٢/ ٨٠٣، الرقم: ٢١٧٣، وفى كتاب: النفقات، باب: قول النبي ﷺ: من ترك كلاًّ أوضياعا فإليّ، ٥/ ٢٠٥٤، الرقم: ٥٠٥٦، ومسلم فى الصحيح، كتاب: الفرائض، باب: من ترك مالا فلورثته، ٣/ ١٢٣٧، الرقم: ١٦١٩، والترمذى فى السنن، كتاب: الجنائز عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء فى الصلاة على المديون، ٣/ ٣٨٨، الرقم: ١٠٧٠، وَقَالَ أَبُو عيسى: حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ، والنسائى فى السنن، كتاب: الجنائز، باب: الصلاة على من عليه دَين، ٤/ ٦٥، الرقم: ١٩٦٠- ١٩٦١، والبغوى فى شرح السنة، الرقم: ٢١٥٣، وابن حبان فى الصحيح، ٧/ ٣٢٩، الرقم: ٣٠٥٩، وابن الجارود فى المنتقى، ١/ ٢٨٠، الرقم: ١١١١، وأبو عوانة فى المسند، ٣/ ٤٤٣، الرقم: ٥٦٢٤، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٢/ ٣٨٠، الرقم: ٨٩٣٧.

ख़िदमते अक़्दस में जनाज़ा लाया गया ताकि आप ﷺ नमाज़े (जनाज़ा) पढ़ें। आप ﷺ ने फरमाया : क्या इस पर कोई क़र्ज़ है ? सहाबा ने अ़र्ज़ किया : नहीं, तो आप ﷺ ने उस पर नमाज़े जनाज़ा पढ़ी। फिर दूसरा जनाज़ा लाया गया तो आप ﷺ ने फरमाया : क्या इस पर कोई क़र्ज़ है ? सहाबा ने अ़र्ज़ किया : हाँ, आप ﷺ ने फरमाया : अपने साथी पर नमाज़ पढ़ो। हज़रत अबू क़तादा ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह! इसका क़र्ज़ मैं अदा करूँगा, फिर आप ﷺ ने उस पर नमाज़े जनाज़ा पढ़ी।''

١٠٩٢ / ٥٢- حَدَّثَنَا أَبُوْعَاصِمٍ الضَّحَّاکُ بْنُ مَخْلَدٍ، عَنْ يَزِيْدَ بْنِ أَبِي عُبَيْدٍ عَنْ سَلَمَةَ بْنِ الْأَكْوَعِ ﷺ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ رَأَى نِيْرَانًا تُوْقَدُ يَوْمَ خَيْبَرَ، قَالَ: عَلَى مَا تُوْقَدُ هَذِهِ النِّيْرَانُ. قَالُوْا: عَلَى الْحُمُرِ الإِنْسِيَّةِ، قَالَ: اكْسِرُوْهَا وَأَهْرِقُوْهَا. قَالُوْا: أَلاَ نُهْرِيْقُهَا وَنَغْسِلُهَا؟ قَالَ: اغْسِلُوْا. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ.

''हज़रत सलमा बिन अक्वा' ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने ख़ैबर के रोज़ आग जलती हुई देख कर फरमाया : यह क्यों जलाई है ? सहाबा ने अ़र्ज़ किया : पालतू गधों का गोश्त (पकाने के लिए)। इस पर आप ﷺ ने फरमाया : हाँडियाँ तोड़ दो और इसे बहा दो। सहाबा ने अ़र्ज़ किया : क्या हम ऐसा न करें कि इसे उलट दें और हाँडियाँ धो लें, आप ﷺ ने फरमाया : इन्हें धो लो।''

الحديث رقم ٥٢: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: المظالم، باب: هل تكسر الدِّنَانُ الّتِي فيها الخَمْرُ، أو تُخَرَّقُ الزِّقَاق، فإنَ كسر صَنَمًا، أو صَلِيبًا أو طُنْبُورًا أوْ ما لَا يُنْتَفَعُ بِخَشَبِهِ، ٢/ ٨٧٦، الرقم: ٢٣٤٥، وفي كتاب: الذباح والصيد، باب: آنية المجوس والميتة، ٥/ ٢٠٩٤، الرقم: ٥١٧٨، ومسلم فى الصحيح، كتاب: الأضاحى، باب: بيان ماكان من النهى عن أكل لحوم الأضاحى بعد ثلاث فى أول الإسلام وبيان شخه وإبا حته إلى متى شاء، الرقم: ١٩٧٤، وابن ماجه فى السنن، كتاب: الذبائح، باب: لحوم الحمر الوحشية، ٢/ ١٦٠٥، الرقم: ٣٩٥، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٤/ ٥٠.

١٠٩٣ / ٥٣ـ حَدَّثَنَا أَبُوْعَاصِمٍ الضَّحَّاکُ بْنُ مَخْلَدٍ: حَدَّثَنَا يَزِيْدُ بْنُ أَبِي عُبَيْدٍ عَنْ سَلَمَةَ بْنِ الْأَكْوَعِ ﷺ قَالَ: غَزَوْتُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ سَبْعَ غَزَوَاتٍ، وَغَزَوْتُ مَعَ بْنِ حَارِثَةَ، اسْتَعْمَلَهُ عَلَيْنَا. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ.

''हज़रत अबू यज़ीद बिन अबू उबैद से रिवायत है कि हज़रत सलमा बिन अक्वा' ﷺ ने फरमाया : मैंने सात ग़ज़वात हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ के साथ शरीक होने का शरफ हासिल किया है और उस ग़ज़वे में भी शरीक था जिसमें हज़रत ज़ैद बिन हारिसा ﷺ को हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने हमारा अमीर बनाया था।''

١٠٩٤ / ٥٤ـ حَدَّثَنَا أَبُوْعَاصِمٍ، عَنْ يَزِيْدَ بْنِ أَبِي عُبَيْدٍ، عَنْ سَلَمَةَ بْنِ الْأَكْوَعِ ﷺ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: مَنْ ضَحَّى مِنْكُمْ فَلَا يُصْبِحَنَّ بَعْدَ ثَالِثَةٍ وَفِي بَيْتِهِ مِنهُ شَيءٌ. فَلَمَّا كَانَ الْعَامُ الْمُقْبِلُ، قَالُوْا: يَا رَسُوْلَ اللهِ، نَفْعَلُ كَمَا فَعَلْنَا عَامَ الْمَاضِي؟ قَالَ: كُلُوْا وَأَطْعِمُوْا وَادَّخِرُوْا، فَإِنَّ ذَلِکَ الْعَامَ كَانَ بِالنَّاسِ جَهْدٌ، فَأَرَدْتُ أَنْ تُعِيْنُوْا فِيْهَا. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ.

''हज़रत सलमा बिन अक्वा' ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमाया : जो तुम मे से कुर्बानी करे तो तीसरे रोज़ की सुबह उसके घर में कुरबानी का गोश्त नहीं होना चाहिए। जब अगला साल आया तो सहाबा ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! क्या अब भी

الحديث رقم ٥٣: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: المغازى، باب: بعث النبى ﷺ أسامة بن زيد إلى الحرقات من جهينة، ٤ / ١٥٥٦، الرقم: ٤٠٢٣، ومسلم فى الصحيح، كتاب: الجهاد والسير، باب: عدد غزوات النبى ﷺ، ٣ / ١٤٤٧، الرقم: ١٨١٥، وابن حبان فى الصحيح، ١٦ / ١٣٩، الرقم: ٧١٧٤، والحاكم فى المستدرك، ٣ / ٢٤١، الرقم: ٤٩٦١، ٦٣٨٣، وأبو عوانة فى المسند، ٤ / ٣٥٥، الرقم: ٦٩٥٤، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٤ / ٥٤.

الحديث رقم ٥٤: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: الأضاحي، باب: ما يؤكل من لحوم الأضاحي وما يُتَزَوَّدُ منها، ٥ / ٢١١٥، الرقم: ٥٢٤٩، ومسلم فى الصحيح، كتاب: الأضاحي، باب: بيان ما كان من النهي عن أكل لحوم الأضاحي بعد ثلاث فى أول الإسلام وبيان نسخه وإباحة إلى متى شاء، ٣ / ١٥٦٣، الرقم: ١٩٧٤.

हम उसी तरह करें जैसे पिछले साल किया था ? आप ﷺ ने फरमाया : खाओ, खिलाओ और जमा भी कर लो क्योंकि वो साल तंगी का था तो मेरा इरादा हुआ कि तुम उस (तंगी में) एक–दूसरे की मदद करो।''

١٠٩٥ / ٥٥۔ حَدَّثَنَا أَبُوْعَاصِمٍ، عَنْ يَزِيْدَ بْنِ أَبِي عُبَيْدٍ، عَنْ سَلَمَةَ ﷺ قَالَ: بَايَعْنَا النَّبِيَّ ﷺ تَحْتَ الشَّجَرَةِ، فَقَالَ لِي: يَا سَلَمَةُ أَلاَ تُبَايِعُ. قُلْتُ: يَا رَسُوْلَ اللهِ، قَدْ بَايَعْتُ فِي الْأَوَّلِ، قَالَ: وَفِي الثَّانِي.

رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ.

''हज़रत यज़ीद बिन अबू उबैद का बयान है कि हज़रत सलमा बिन अक्वा' ﷺ ने फरमायाः हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ से हमने दरख़्त के नीचे बैअत की। फिर हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः ऐ सलमा ! क्या तुम बैअत नहीं करते, मैंने अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! मैं तो पहले ही बैअत कर चुका हूँ। फरमाया दोबारा कर लो।''

١٠٩٦ / ٥٦۔ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ الْأَنْصَارِيُّ قَالَ: حَدَّثَنِي حُمَيْدٌ

الحديث رقم ٥٥: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: الأحكام، باب: من بايع مرتين، ٦ / ٢٦٣٥، الرقم: ٦٧٨٢، وفى كتاب: الجهاد، باب: البيعة في الحرب أن لا يفروا، وقال بعضهم: على الموت، ٣ / ١٠٨١، الرقم: ٢٨٠٠، وفى كتاب: المغازى، باب: غزوة الحديبية، ٤ / ١٥٢٩، الرقم: ٣٩٣٦، وفى كتاب: الأحكام، باب: كيف يبايع الإمام الناس، ٦ / ٢٦٣٤، الرقم: ٦٧٨٠٠، وفى باب: مَن بايع مرتين، ٦ / ٢٦٣٥، الرقم: ٦٧٨٢، ومسلم فى الصحيح، كتاب: الإمارة، باب: استحباب مبايعة الإمام الجيش عند إرادة القتال، ٣ / ١٤٨٣، الرقم: ١٨٦٠، وفى كتاب: الجهاد والسير، باب: غزوة ذى قَرَدٍ وغيرها، ٣ / ١٤٣٢، الرقم: ١٨٠٧، ١٨٠٢، والترمذى فى السنن، كتاب: السير عن رسول الله ﷺ، باب: ماجاء فى بيعة النبى ﷺ، ٤ / ١٥٠، الرقم: ١٥٩٢، وَقَالَ أَبُوعِيْسَى: هَذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ، والنسائى فى السنن، كتاب: البيعة، باب: البيعة على الموت، ٧ / ١٤١، الرقم: ٤١٥٩، وأحمد حنبل فى المسند، ٤ / ٤٧، ٤٩۔

الحديث رقم ٥٦: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: الصلح، باب: الصلح فى الدية، ٢ / ٩٦١، الرقم: ٢٥٥٦، وفى كتاب: الجهاد ، باب: قول الله تعالى: مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ رِجَالٌ صَدَقُوْا مَاعَاهَدُوالله عَلَيْهِ فَمِنْهُمْ مَنْ قَضَى نَحْبَهُ وَمِنْهُمْ مَنْ يَنْتَظِرُ ←

أَنَّ أَنَسًا رضي الله عنه حَدَّثَهُمْ: أَنَّ الرُّبَيِّعَ، وَهِيَ ابْنَةُ النَّضْرِ، كَسَرَتْ ثَنِيَّةَ جَارِيَةٍ، فَطَلَبُوا الْأَرْشَ وَطَلَبُوا الْعَفْوَ فَأَبَوْا، فَأَتَوُا النَّبِيَّ صلى الله عليه وآله وسلم فَأَمَرَهُمْ بِالْقِصَاصِ، فَقَالَ أَنَسُ بْنُ النَّضْرِ: أَتُكْسَرُ ثَنِيَّةُ الرُّبَيِّعِ يَارَسُوْلَ اللهِ، لَا وَالَّذِي بَعَثَكَ بِالْحَقِّ لَا تُكْسَرُ ثَنِيَّتُهَا، فَقَالَ: يَا أَنَسُ، كِتَابُ اللهِ الْقِصَاصُ. فَرَضِيَ الْقَوْمُ وَعَفَوْا فَقَالَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وآله وسلم: إِنَّ مِنْ عِبَادِ اللهِ مَنْ لَّوْ أَقْسَمَ عَلَى اللهِ لَأَبَرَّهُ. زَادَ الْفَزَارِيُّ: عَنْ حُمَيْدٍ عَنْ أَنَسٍ رضي الله عنه: فَرَضِيَ الْقَوْمُ وَقَبِلُوا الْأَرْشَ.

رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ.

''हज़रत हुमैद का बयान है कि हज़रत अनस رضي الله عنه ने उन्हें रिवायत बयान फरमाई कि हज़रत रूबैअ बिन्ते नज़र ने एक लड़की के सामने वाले दो दाँत तोड़ दिए तो उन्होंने देयत (जुर्माने) का मुतालबा किया यह माफी के ख़्वास्तगार हुए। तो उन्होंने इन्कार कर दिया। सो वो

.... وَمَا بَدَّلُوا تَبْدِيلًا، [الأحزاب: ٢٣]، ٣/١٠٣٢، الرقم: ٢٦٥١، وفى كتاب: التفسير/البقرة، باب: قوله: يَأَيُّهَا الَّذِيْنَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِصَاصُ فِي الْقَتْلَى الْحُرُّ بِالْحُرِّ. إِلَىٰ قَوْلِهِ: عَذَابٌ أَلِيْمٌ [البقرة: ١٧٨]، ٤/١٦٣٦. ١٣٣٧، الرقم: ٤٢٣٩. ٤٢٣٠، وفى كتاب: التفسير/المائدة، باب: وَالْجُرُوحَ قِصَاصٌ: [المائدة:٤٥]، ٤/١٦٨٥، الرقم: ٤٣٣٥، وفى كتاب: الديات: باب: السِّنَّ بِالسِّنِّ [المائدة: ٤٥]، ٦/٢٥٢٦، الرقم: ٦٤٩٩، ومسلم فى الصحيح، كتاب: القسامة والمحاربين والقصاص والديات، باب: إثبات القصاص فى الإسنان وما فى معناها، ٣/١٣٠٢، الرقم:١٦٧٥، وأبوداود فى السنن، كتاب: الديات، باب: القصاص من السنّ، ٤/١٩٧، الرقم: ٤٥٩٥، والنسائى فى السنن، كتاب: القسامة، باب: القصاص من الثنية، ٨/٢٧، الرقم: ٤٧٥٦. ٤٧٥٧، وابن ماجه فى السنن كتاب: الديات، باب: القصاص فى السنّ، ٢/٨٨٤، الرقم: ٢٦٤٩، والنسائى فى السنن الكبرى، ٤/٢٢٣، الرقم: ٦٩٥٩، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٣/١٢٨، الرقم:١٢٣٢٤، ١٢٧٢٧، والطبرانى فى المعجم الكبير، ١/٢٦٤، الرقم: ٧٦٨: ٢٤/٢٦٢، الرقم: ٦٦٤، والطحاوى فى شرح معانى الآثار، ٣/١٧٧، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٨/٢٥، ٦٤.

हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो आप हुज़ूर ﷺ ने क़िसास (बदले) का हुक्म फरमाया। हज़रत अनस बिन नज़र ने अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! क्या रुबैअ के सामने के दाँत तोड़े जाएँगे ? नहीं, कसम उस ज़ात की जिसने आपको हक़ के साथ मबऊस फरमाया है, उसके दाँत नहीं तोड़े जाएंगे। आप ﷺ ने फरमाया : ऐ अनस ! अल्लाह की किताब क़िसास का कहती है (इस पर हज़रत अनस खामोश हो गए) सो (बाद में) वो लोग (जिन्होंने क़िसास का तक़ाजा किया था) राज़ी हो गए और उन्हें माफ कर दिया तो हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने फरमायाः अल्लाह के बन्दों में से वो भी हैं कि अगर वो अल्लाह के भरोसे पर क़सम खा लें तो अल्लाह तआला उसे सच्चा कर देता है। फ़ज़ारी की रिवायत में इतना ही इजाफ़ा है कि वो लोग देयत (जुर्माना) लेने पर रज़ा मन्द हो गए।''

١٠٩٧ /٥٧۔ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ الْأَنْصَارِيُّ: حَدَّثَنَا حَمِيْدٌ أَنَّ

الحديث رقم ٥٧: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: التفسير/البقرة، باب: قوله: يَأَيُّهَا الَّذِيْنَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ القِصَاصُ فِي القَتْلَى الحُرُّ بِالحُرِّ۔ إِلىَ قَوْلِهِ۔ عَذَابٌ أَلِيْمٌ [البقرة: ١٧٨]، ٤/١٦٣٦۔ ١٣٣٧، الرقم: ٤٢٣٩۔ ٤٢٣٠، الرقم: ٤٢٢٩، وفي كتاب: الصلح، باب: الصلح فى الدية، ٢/٩٦١، الرقم: ٢٥٥٦، وفى كتاب: الجهاد ، باب: قول الله تعالى: مِنَ المُؤْمِنِيْنَ رِجَالٌ صَدَقُوْا مَاعَاهَدُواللهَ عَلَيْهِ فَمِنْهُمْ مَنْ قَضَى نَحْبَهُ وَمِنْهُمْ مَنْ يَنْتَظِرُ وَمَا بَدَّلُوا تَبْدِيْلاً، [الأحزاب: ٢٣]، ٣/١٠٣٢، الرقم: ٢٦٥١،وفى كتاب: التفسير/المائدة، باب: وَالجُرُوحَ قِصَاصٌ: (٤٥)، ٤/١٦٨٥، الرقم: ٤٣٣٥، وفى كتاب: الديات: باب: السِّنَّ بِالسِّنِّ [المائدة: ٤٥]، ٦/٢٥٢٦، الرقم: ٦٤٩٩، ومسلم فى الصحيح، كتاب: القسامة والمحاربين والقصاص والديات، باب: إثبات القصاص فى الإسنان وما فى معناها، ٣/١٣٠٢، الرقم:١٦٧٥، وأبوداود فى السنن، كتاب: الديات، باب: القصاص من السنّ، ٤/١٩٧، الرقم: ٤٥٩٥، والنسائى فى السنن، كتاب: القسامة، باب: القصاص من الثنية، الرقم: ٤٧٥٦۔ ٤٧٥٧، وفي السنن الكبرى، ٤/٢٢٣، الرقم: ٦٩٥٩، وابن ماجه فى السنن كتاب: الديات، باب: القصاص فى السنّ، ٢/٨٨٤، الرقم: ٢٦٤٩، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٣/١٢٨، الرقم: ١٢٣٢٤، ١٢٧٢٧، والطبرانى فى المعجم الكبير، ١/٢٦٤، الرقم: ٧٦٨: ٢٤/٢٦٢، الرقم: ٦٦٤، والطحاوى فى شرح معانى الآثار، ٣/١٧٧، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٨/٢٥، ٦٤۔

أَنَسًا ﷺ حَدَّثَهُمْ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: كِتَابُ اللهِ الْقِصَاصُ.

رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ.

''हज़रत मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह अन्सारी हज़रत अनस ﷺ से रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ ने यह भी फरमाया था: ''अल्लाह की किताब क़िसास का हुक्म देती है।''

١٠٩٨ /٥٨۔ حَدَّثَنَا الْأَنْصَارِيُّ: حَدَّثَنَا حُمَيْدٌ، عَنْ أَنَسٍ ﷺ أَنَّ ابْنَةَ النَّضْرِ لَطَمَتْ جَارِيَةً فَكَسَرَتْ ثَنِيَّتَهَا، فَأَتَوُا النَّبِيَّ ﷺ فَأَمَرَ بِالْقِصَاصِ.

رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ.

''हज़रत हुमैद ने हज़रत अनस ﷺ से रिवायत की है कि नज़र की बेटी ने एक लड़की को तमाचा मारा जिसके बाइस उसके अगले दो दाँत टूट गए, वो हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की

الحديث رقم ٥٨: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: الديات، باب: السن بالسن، ٦/٢٥٢٦، الرقم: ٦٤٩٩، وفي كتاب: الصلح، باب: الصلح فى الدية، ٢/٩٦١، الرقم: ٢٥٥٦، وفى كتاب: الجهاد ، باب: قول اللهتعالى: مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ رِجَالٌ صَدَقُوْا مَاعَاهَدُواالله عَلَيْهِ فَمِنْهُمْ مَنْ قَضَى نَحْبَهُ وَمِنْهُمْ مَنْ يَنْتَظِرُ وَمَا بَدَّلُوا تَبْدِيْلاً، [الأحزاب: ٢٣]، ٣/١٠٣٢، الرقم: ٢٦٥١، وفى كتاب: التفسير/البقرة، باب: قوله: يَآَيُّهَا الَّذِيْنَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِصَاصُ فِي الْقَتْلَى الْحُرُّ بِالْحُرِّ. إِلَىَ قَوْلِهِ: عَذَابٌ أَلِيْمٌ [البقرة: ١٧٨]، ٤/١٦٣٦۔ ١٣٣٧، الرقم: ٤٢٣٩۔٤٢٣٠، وفى كتاب: التفسير/المائدة، باب: وَالْجُرُوحَ قِصَاصٌ: [٤٥]، ٤/١٦٨٥، الرقم: ٤٣٣٥، ومسلم فى الصحيح، كتاب: القسامة والمحاربين والقصاص والديات، باب: إثبات القصاص فى الإسنان وما فى معناها، ٣/١٣٠٢، الرقم:١٦٧٥، وأبوداود فى السنن، كتاب: الديات، باب: القصاص من السنّ، ٤/١٩٧، الرقم: ٤٥٩٥، والنسائى فى السنن، كتاب: القسامة، باب: القصاص من الثنية، ٨/٢٧، الرقم: ٤٧٥٦۔ ٤٧٥٧، وفى السنن الكبرى، ٤/٢٢٣، الرقم: ١٢٣٢٤۔١٢٧٢٧، وابن ماجه فى السنن، كتاب: الديات، باب: القصاص فى السنّ، ٢/٨٨٤، الرقم: ٢٦٤٩، والطبرانى فى المعجم الكبير، ١/٢٦٤، الرقم: ٦٩٥٩، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٣/١٢٨، الرقم: ٧٦٨: ٢٤/٢٦٢، الرقم: ٦٦٤، والطحاوى فى شرح معانى الآثار، ٣/١٧٧، والبيهقى فى السنن الكبرى، ٨/٢٥، ٦٤۔

बारगाह में हाजिर हुए तो आप ﷺ ने क़िसास का हुक्म फरमाया।''

١٠٩٩ / ٥٩۔ حَدَّثَنَا عِصَامُ بْنُ خَالِدٍ: حَدَّثَنَا حَرِيْزُ بْنُ عُثْمَانَ أَنَّهُ سَأَلَ عَبْدَ اللهِ بْنَ بُسْرٍ رضي الله عنه صَاحِبَ النَّبِيِّ ﷺ، قَالَ: أَرَأَيْتَ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ شَيْخًا؟ قَالَ: كَانَ فِي عَنْفَقَتِهِ شَعَرَاتٌ بِيْضٌ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ.

''हज़रत हरीज़ बिन उस्मान से रिवायत है कि उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ के सहाबी हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन बुस्र रضي الله عنه से पूछा : क्या आप की नज़र में हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ बूढ़े हो गए थे? उन्होंने फरमायाः आप ﷺ की ठोड़ी मुबारक के सिर्फ चंद बाल सफेद हुए थे।''

١١٠٠ / ٦٠۔ حَدَّثَنَا خَلَّادُ بْنُ يَحْيَى: حَدَّثَنَا عِيْسَى بْنُ طَهْمَانَ قَالَ: سَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ رضي الله عنه يَقُوْلُ: نَزَلَتْ آيَةُ الْحِجَابِ فِي زَيْنَبَ بِنْتِ جَحْشٍ رضي الله عنها وَأَطْعَمَ عَلَيْهَا يَوْمَئِذٍ خُبْزًا وَلَحْمًا، وَكَانَتْ تَفْخَرُ عَلَى نِسَاءِ النَّبِيِّ ﷺ، وَكَانَتْ تَقُوْلُ: إِنَّ اللهَ أَنْكَحَنِي فِي السَّمَاءِ.

رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ.

''हज़रत ईसा बिन तहमान रिवायत करते हैं कि मैंने हज़रत अनस बिन मालिक رضي الله عنه से

الحديث رقم ٥٩: أخرجه البخارى فى الصحيح، كتاب: المناقب، باب: صفة النبى ﷺ، ٣ / ١٣٠٢، الرقم: ٣٣٥٣، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٤ / ١٨٧۔ ١٨٨، ١٩٠، وإِسْنَادُ أَحْمَدَ صَحِيْحٌ عَلَى شَرْطِ الْبُخَارِيِّ. والحاكم فى المستدرك، ٢ / ٦٦٣، الرقم: ٤٢٠٠، وقال: هَذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحُ الإِسْنَادِ، وابن أبى شيبة فى المصنف، ٥ / ١٨٧، الرقم: ٢٥٠٦٣، والطبرانى فى مسند الشاميين، ٢ / ١٢٩، الرقم: ١٠٤٥، وعبد بن حميد فى المسند، ١ / ١٨١، الرقم: ٥٠٦.

الحديث رقم ٦٠: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب: التوحيد، باب: وكان عرشه على الماء وهو رب العرش العظيم، ٦ / ٢٧٠٠، الرقم: ٦٩٨٤۔ ٦٩٨٥، والنسائى فى السنن، كتاب: النكاح، باب: صلاة المرأة أذا خطبت واستخارتها ربها، ٦ / ٧٩، الرقم: ٣٢٥٢، وفى السنن الكبرى، ٥ / ٢٩١، الرقم: ٨٩١٨، ١١٤١١، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٣ / ٢٢٦، الرقم: ١٣٣٨٥، والطبرانى فى المعجم الكبير، ٢٤ / ٣٩، الرقم: ١٠٧، والهيثمى فى مجمع الزوائد، ٧ / ٩١۔

सुना : पर्दे की आयत हज़रत ज़ैनब बिन्ते जहश رضی اللہ عنہا के हक़ में नाज़िल हुई और उनके वलीमे में आप ﷺ ने रोटी और गोश्त खिलाया था और यह हुज़ूर नबी–ए–अकरम ﷺ की बाक़ी अज़्वाजे मुतह्हरात पर फ़ख्र किया करती थीं कि मेरा निकाह आसमान पर हुआ है।''

مصادر التخريج

١۔ **القرآن الحکیم۔**

٢۔ **آجری**، ابو بکر محمد بن حسین بن عبداللہ (٣٦٠ھ)۔ **الشریعة**۔ ریاض، سعودی عرب: دار الوطن، ١٤٢٠ھ/ ١٩٩٩ء۔

٣۔ **آلوسی**، ابو الفضل شہاب الدین السید محمود (م ١٢٧٠ھ/١٨٥٤ء)۔ **روح المعاني في تفسير القرآن العظيم والسبع المثاني**۔ بیروت، لبنان: دار الاحیاء التراث ۔

٤۔ **آمدی**، سیف الدین ابی الحسن علی بن ابی علی بن محمد (٥٥١-٦٣١ھ/١١٥٦-١٢٣٣ء)۔ **الإحكام في أصول الأحكام**۔ بیروت، لبنان: دارالکتب العلمیہ، ١٤٠٠ھ/ ١٩٨٠ء۔

٥۔ **ابن اثیر**، ابو الحسن علی بن محمد بن عبد الکریم بن عبد الواحد شیبانی جزری (٥٥٥-٦٣٠ھ/١١٦٠-١٢٣٣ء)۔ **أسد الغابة في معرفة الصحابة**۔ بیروت، لبنان: دار الکتب العلمیہ ۔

٦۔ **ابن اثیر**، ابو الحسن علی بن محمد بن عبد الکریم بن عبد الواحد شیبانی جزری (٥٥٥-٦٣٠ھ/١١٦٠-١٢٣٣ء)۔ **الكامل في التاريخ**۔ بیروت، لبنان: دار صادر، ١٩٧٩ء

٧۔ **احمد بن حنبل**، ابو عبد اللہ بن محمد شیبانی (١٦٤-٢٤١ھ/٧٨٠-٨٥٥ء)۔ **الزهد**۔ بیروت، لبنان: دارالکتب العلمیة، ١٣٩٨ھ۔

٨۔ **احمد بن حنبل**، ابوعبداللہ بن محمد (١٦٤-٢٤١ھ/٧٨٠-٨٥٥ء)۔ **فضائل الصحابة**۔ بیروت، لبنان: مؤسسۃ الرسالہ۔

٩۔ **احمد بن حنبل**، ابوعبداللہ بن محمد (١٦٤-٢٤١ھ/٧٨٠-٨٥٥ء)۔ **المسند**۔ بیروت، لبنان: المکتب الاسلامی، ١٣٩٨ھ/ ١٩٧٨ء۔

١٠۔ **احمد بن حنبل**، ابوعبداللہ بن محمد (١٦٤-٢٤١ھ/٧٨٠-٨٥٥ء)۔ **الورع**۔ بیروت، لبنان: دارالکتب العلمیة، ١٤٠٣ھ۔

١١۔ **أزدی**، ربیع بن حبیب بن عمر بصری۔ **الجامع الصحيح مسند الإمام الربيع بن**

حبیب۔ بیروت، لبنان، دارالحکمۃ، ۱۴۱۵ھ۔

۱۲۔ **ابن اسحاق،** محمد بن اسحاق بن یسار، (۸۵۔۱۵۱ھ)۔ **السیرۃ النبویۃ۔** معھد الدراسات والابحاث للتعریب۔

۱۳۔ **اسماعیلی،** ابو بکر احمد بن ابراہیم بن اسماعیل اسماعیلی (۲۷۷۔۳۷۱ھ)۔ **معجم الشیوخ أبي بکر الإسماعیلي۔** مدینہ منورہ، سعودی عرب، مکتبۃ العلم والحکم، ۱۴۱۰ھ۔

۱۴۔ **اندلسی،** محمد بن علی بن احمد الوادیاشی (۷۲۳۔۸۰۴ھ)۔ **تحفۃ المحتاج إلی أدلۃ المنھاج۔** مکۃ المکرّمہ، سعودی عرب: دارحراء، ۱۴۰۶ھ۔

۱۵۔ **البانی،** محمد ناصر الدین (۱۳۳۳۔۱۴۲۰ھ/۱۹۱۴۔۱۹۹۹ء)۔ **سلسلۃ الأحادیث الصحیحۃ۔** بیروت، لبنان: المکتب الاسلامی، ۱۴۰۵ھ/۱۹۸۵ء۔

۱۶۔ **بحرق،** محمد بن عمر حضرمی شافعی (۸۶۹۔۹۳۰ھ)۔ **حدائق الأنوار۔** جدہ، سعودی عرب: دار المنہاج، ۱۴۲۴ھ/۲۰۰۳ء۔

۱۷۔ **بخاری،** ابو عبد اللہ محمد بن إسماعیل بن إبراہیم بن مغیرہ (۱۹۴۔۲۵۶ھ/۸۱۰۔۸۷۰ء)۔ **الأدب المفرد۔** بیروت، لبنان: دار البشائر الاسلامیہ، ۱۴۰۹ھ/۱۹۸۹ء۔

۱۸۔ **بخاری،** ابو عبد اللہ محمد بن إسماعیل بن إبراہیم بن مغیرہ (۱۹۴۔۲۵۶ھ/ ۸۱۰۔۸۷۰ء)۔ **التاریخ الکبیر۔** بیروت، لبنان: دار الکتب العلمیہ۔

۱۹۔ **بخاری،** ابوعبد اللہ محمد بن اسماعیل بن ابراہیم بن مغیرہ (۱۹۴۔۲۵۶ھ/۸۱۰۔۸۷۰ء)۔ **خلق أفعال العباد۔** ریاض، سعودی عرب: دارلمعارف السعودیۃ، ۱۳۹۸ھ/ ۱۹۷۸ء۔

۲۰۔ **بخاری،** ابوعبد اللہ محمد بن اسماعیل بن ابراہیم بن مغیرہ (۱۹۴۔۲۵۶ھ/۸۱۰۔۸۷۰ء)۔ **الصحیح۔** بیروت، لبنان + دمشق، شام: دار القلم، ۱۴۰۱ھ/ ۱۹۸۱ء۔

۲۱۔ **بخاری،** ابوعبد اللہ محمد بن اسماعیل بن ابراہیم بن مغیرہ (۱۹۴۔۲۵۶ھ/۸۱۰۔۸۷۰ء)۔ **الکنی۔** بیروت، لبنان: دار الفکر۔

۲۲۔ **بزار،** ابو بکر احمد بن عمرو بن عبد الخالق بصری (۲۱۰۔۲۹۲ھ/ ۸۲۵۔۹۰۵ء)۔ **المسند** بیروت، لبنان: ۱۴۰۹ھ۔

۲۳۔ **بغوی،** ابومحمد حسین بن مسعود بن محمد (۴۳۶۔۵۱۶ھ/۱۰۴۴۔۱۱۲۲ء)۔ **شرح السنۃ۔**

بیروت، لبنان: المکتب الاسلامی، ۱۴۰۳ھ/۱۹۸۳ء۔

۲۴۔ **بغوی**، ابو محمد حسین بن مسعود بن محمد (۴۳۶۔۵۱۶ھ/۱۰۴۴۔۱۱۲۲ء)۔ **معالم التنزيل**۔ بیروت، لبنان: دارالمعرفۃ، ۱۴۰۷ھ/۱۹۸۷ء۔

۲۵۔ **بغوی**، عبد اللہ بن محمد بن عبدالعزیز المرزبان (۲۱۳۔۳۱۷ھ)۔ **مسند الحب بن الحب أسامة بن زيد**۔ ریاض، سعودی عرب: دار الضیاء، ۱۴۰۹ھ۔

۲۶۔ **بیضاوی**، ناصر الدین ابی سعید عبد اللہ بن عمر بن محمد شیرازی بیضاوی (۷۹۱ھ)۔ **أنوار التنزيل**۔ بیروت، لبنان: دار الفکر، ۱۴۱۶ھ/۱۹۹۶ء۔

۲۷۔ **بیہقی**، ابوبکر احمد بن حسین بن علی بن عبد اللہ بن موسیٰ (۳۸۴۔۴۵۸ھ/۹۹۴۔۱۰۶۶ء)۔ **الاعتقاد**۔ بیروت، لبنان، دارالآفاق الجدید، ۱۴۰۱ھ۔

۲۸۔ **بیہقی**، ابو بکر احمد بن حسین بن علی بن عبد اللہ بن موسیٰ (۳۸۴۔۴۵۸ھ/۹۹۴۔۱۰۶۶ء)۔ **بيان خطأ من أخطأ على الشافعي**۔ بیروت، لبنان: مؤسسۃ الرسالۃ، ۱۴۰۲ھ۔

۲۹۔ **بیہقی**، ابو بکر احمد بن حسین بن علی بن عبد اللہ بن موسیٰ (۳۸۴۔۴۵۸ھ/۹۹۴۔۱۰۶۶ء)۔ **دلائل النبوة**۔ بیروت، لبنان: دار الکتب العلمیہ، ۱۴۰۵ھ/۱۹۸۵ء۔

۳۰۔ **بیہقی**، ابو بکر احمد بن حسین بن علی بن عبد اللہ بن موسیٰ (۳۸۴۔۴۵۸ھ/۹۹۴۔۱۰۶۶ء)۔ **الزهد الكبير**۔ بیروت، لبنان: مؤسسۃ الکتب الثقافیۃ، ۱۹۹۶ء۔

۳۱۔ **بیہقی**، ابو بکر احمد بن حسین بن علی بن عبد اللہ بن موسیٰ (۳۸۴۔۴۵۸ھ/۹۹۴۔۱۰۶۶ء)۔ **السنن الصغرى**۔ مدینہ منورہ، سعودی عرب: مکتبۃ الدار، ۱۴۱۰ھ/۱۹۸۹ء۔

۳۲۔ **بیہقی**، ابو بکر احمد بن حسین بن علی بن عبد اللہ بن موسیٰ (۳۸۴۔۴۵۸ھ/۹۹۴۔۱۰۶۶ء)۔ **السنن الكبرى**۔ مکہ مکرمہ، سعودی عرب: مکتبہ دار الباز، ۱۴۱۴ھ/۱۹۹۴ء۔

۳۳۔ **بیہقی**، ابو بکر احمد بن حسین بن علی بن عبد اللہ بن موسیٰ (۳۸۴۔۴۵۸ھ/۹۹۴۔۱۰۶۶ء)۔ **السنن الكبرى**۔ مدینہ منورہ، سعودی عرب: مکتبۃ الدار، ۱۴۱۰ھ/۱۹۸۹ء۔

٣٤۔ بیہقی، ابو بکر احمد بن حسین بن علی بن عبد اللہ بن موسیٰ (۳۸۴۔۴۵۸ھ/ ۹۹۴۔ ۱۰۶۶ء)۔ شعب الإیمان۔ بیروت، لبنان: دار الکتب العلمیہ، ۱۴۱۰ھ/ ۱۹۹۰ء۔

٣٥۔ بیہقی، ابو بکر احمد بن حسین بن علی بن عبد اللہ بن موسیٰ (۳۸۴۔۴۵۸ھ/ ۹۹۴۔ ۱۰۶۶ء)۔ المدخل إلی السنن الکبری۔ الکویت، دار الخلفاء للکتاب الاسلامی، ۱۴۰۴ھ۔

٣٦۔ ترمذی، ابوعیسیٰ محمد بن عیسیٰ بن سورہ بن موسیٰ بن ضحاک سلمی (۲۱۰۔۲۷۹ھ/ ۸۲۵۔ ۸۹۲ء)۔ السنن۔ بیروت، لبنان: دار الغرب الاسلامی، ۱۹۹۸ء۔

٣٧۔ ترمذی، ابوعیسیٰ محمد بن عیسیٰ بن سورہ بن موسیٰ بن ضحاک سلمی (۲۱۰۔۲۷۹ھ/ ۸۲۵۔ ۸۹۲ء)۔ الشمائل المحمدیة والخصائص المصطفویة۔ بیروت، لبنان: مؤسسۃ الکتب الثقافیہ، ۱۴۱۲ء۔

٣٨۔ تھانوی، اشرف علی (۱۲۸۰۔ ۱۳۶۲ھ/ ۱۸۶۳۔۱۹۴۳ء)۔ نشر الطیب فی ذکر النبی الحبیب ﷺ۔ کراچی، پاکستان: ایچ۔ ایم سعید کمپنی، ۱۹۸۹ء۔

٣٩۔ ابن تیمیہ، احمد بن عبد الحلیم بن عبد السلام حرانی (۶۶۱۔۷۲۸ھ/۱۲۶۳۔۱۳۲۸ء)۔ اِقتضاء الصراط المستقیم۔ لاہور، پاکستان: المکتبۃ السلفیۃ، ۱۹۷۸۔

٤٠۔ ابن تیمیہ، احمد بن عبد الحلیم بن عبد السلام حرانی (۶۶۱۔۷۲۸ھ/۱۲۶۳۔۱۳۲۸ء)۔ الصارم المسلول۔ بیروت، لبنان: دار ابن حزم، ۱۴۱۷ھ۔

٤١۔ ابن تیمیہ، احمد بن عبد الحلیم بن عبد السلام حرانی (۶۶۱۔۷۲۸ھ/۱۲۶۳۔۱۳۲۸ء)۔ الفرقان بین أولیاء الرحمٰن وأولیاء الشیطان۔

٤٢۔ ابن تیمیہ، احمد بن عبد الحلیم بن عبد السلام حرانی (۶۶۱۔۷۲۸ھ/۱۲۶۳۔۱۳۲۸ء)۔ مجموع الفتاوی۔ مکتبہ ابن تیمیہ۔

٤٣۔ ابن جارود، ابو محمد عبد اللہ بن علی بن جارود نیشاپوری (۳۰۷ھ)۔ المنتقی من السنن المسندة۔ بیروت، لبنان: مؤسسۃ الکتاب الثقافیۃ، ۱۴۱۸ھ/ ۱۹۸۸ء۔

٤٤۔ جرجانی، ابو قاسم حمزہ بن یوسف (۴۲۸ھ)۔ تاریخ جرجان۔ بیروت، لبنان: عالم الکتب، ۱۴۰۱ھ/ ۱۹۸۱ء۔

٤٥۔ **جصاص**، احمد بن علی الرازی ابو بکر (٣٠٥۔٣٧٠ھ)۔ أحكام القرآن۔ بيروت، لبنان: دار إحياء التراث، ١٤٠٥ھ۔

٤٦۔ **ابن جعد**، ابو الحسن علی بن جعد بن عبید ہاشمی (١٣٣۔٢٣٠ھ/٧٥٠۔٨٤٥ء)۔ المسند۔ بیروت، لبنان: مؤسسہ نادر، ١٤١٠ھ/١٩٩٠ء۔

٤٧۔ **جندی**، المفضل بن محمد بن إبراہیم، ابو سعید (٣٠٨ھ)۔ فضائل المدينة۔ دمشق: دارالفکر، ١٤٠٧ھ۔

٤٨۔ **ابن جوزی**، ابو الفرج عبد الرحمٰن بن علی بن محمد بن علی بن عبید اللہ (٥١٠۔٥٧٩ھ/ ١١١٦۔١٢٠١ء)۔ التحقيق في أحاديث الخلاف۔ بيروت لبنان: دارالکتب العلمیۃ، ١٤١٥ھ۔

٤٩۔ **ابن جوزی**، ابو الفرج عبد الرحمٰن بن علی بن محمد بن علی بن عبید اللہ (٥١٠۔٥٧٩ھ/ ١١١٦۔١٢٠١ء)۔ تذكرة الخواص۔ بیروت، لبنان: مؤسسۃ أہل بیت، ١٤٠١ھ/١٩٨١ء۔

٥٠۔ **ابن جوزی**، ابو الفرج عبد الرحمٰن بن علی بن محمد بن علی بن عبید اللہ (٥١٠۔٥٧٩ھ/ ١١١٦۔١٢٠١ء)۔ زاد المسير في علم التفسير۔ بیروت، لبنان: المکتب الاسلامی، ١٤٠٤ھ۔

٥١۔ **ابن جوزی**، ابو الفرج عبد الرحمٰن بن علی بن محمد بن علی بن عبید اللہ (٥١٠۔٥٧٩ھ/ ١١١٦۔١٢٠١ء)۔ صفوة الصفوة۔ بیروت، لبنان، دارالکتب العلمیہ، ١٤٠٩ھ/ ١٩٨٩ء

٥٢۔ **ابن جوزی**، ابو الفرج عبد الرحمٰن بن علی بن محمد بن علی بن عبید اللہ (٥١٠۔٥٧٩ھ/ ١١١٦۔١٢٠١ء)۔ المنتظم في تاريخ الملوك والأمم۔ بیروت، لبنان: دار صادر، ١٣٥٨ھ۔

٥٣۔ **ابن جوزی**، ابو الفرج عبد الرحمٰن بن علی بن محمد بن علی بن عبید اللہ (٥١٠۔٥٧٩ھ/ ١١١٦۔١٢٠١ء)۔ الوفا بأحوال المصطفى ﷺ۔ بیروت، لبنان: دار الکتب العلمیہ، ١٤٠٨ھ/ ١٩٨٨ء۔

٥٤۔ **ابن ابی حاتم**، عبدالرحمٰن بن ابی حاتم محمد بن ادریس ابومحمد الرازی التمیمی (٣٢٧ھ)۔ الجرح والتعديل۔ بیروت، لبنان: دار إحياء التراث العربی، ١٢٧١ھ۔

٥٥۔ **حارث**، ابن ابی اسامہ (١٨٦۔٢٨٢ھ)۔ بغية الباحث عن زوائد مسند الحارث۔

مدینہ منورہ، سعودی عرب: مرکز خدمۃ السنۃ والسیرۃ النبویہ، ۱۴۱۳ھ/ ۱۹۹۲ء۔

٥٦۔ **حاکم**، ابوعبد اللہ محمد بن عبد اللہ بن محمد (۳۲۱۔۴۰۵ھ/۹۳۳۔۱۰۱۴ء)۔ **المستدرک علی الصحیحین**۔ بیروت۔ لبنان: دار الکتب العلمیہ، ۱۴۱۱/۱۹۹۰۔

٥٧۔ **حاکم**، ابوعبد اللہ محمد بن عبد اللہ بن محمد (۳۲۱۔۴۰۵ھ/۹۳۳۔۱۰۱۴ء)۔ **المستدرک علی الصحیحین**۔ مکہ، سعودی عرب: دار الباز للنشر والتوزیع۔

٥٨۔ **ابن حبان**، ابو حاتم محمد بن حبان بن احمد بن حبان (۲۷۰۔۳۵۴ھ/ ۸۸۴۔۹۶۵ء)۔ **الثقات**۔ بیروت، لبنان: دارالفکر، ۱۳۹۵ھ۔

٥٩۔ **ابن حبان**، ابو حاتم محمد بن حبان بن احمد بن حبان (۲۷۰۔۳۵۴ھ/۸۸۴۔۹۶۵ء)۔ **الصحیح**۔ بیروت، لبنان: مؤسسۃ الرسالہ، ۱۴۱۴ھ/۱۹۹۳ء۔

٦٠۔ **ابن حبان**، ابو حاتم محمد بن حبان بن احمد بن حبان (۲۷۰۔۳۵۴ھ/۸۸۴۔۹۶۵ء)۔ **مشاهير علماء الأمصار**۔ بیروت، لبنان: دارالکتب العلمیۃ، ۱۹۵۹ء۔

٦١۔ **ابن حجر عسقلانی**، احمد بن علی بن محمد بن محمد بن علی بن احمد کنانی (۷۷۳۔۸۵۲ھ/ ۱۳۷۲۔۱۴۴۹ء)۔ **الإصابة في تمييز الصحابة**۔ بیروت، لبنان: دار الجیل، ۱۴۱۲ھ/۱۹۹۲ء۔

٦٢۔ **ابن حجر عسقلانی**، احمد بن علی بن محمد بن محمد بن علی بن احمد کنانی (۷۷۳۔۸۵۲ھ/ ۱۳۷۲۔۱۴۴۹ء)۔ **تغليق التعليق على صحيح البخاري**۔ بیروت، لبنان: المکتب الاسلامی + عمان، اُردن: دار عمار، ۱۴۰۵ھ۔

٦٣۔ **ابن حجر عسقلانی**، احمد بن علی بن محمد بن محمد بن علی بن احمد کنانی (۷۷۳۔۸۵۲ھ/ ۱۳۷۲۔۱۴۴۹ء)۔ **تلخيص الحبير في أحاديث الرافعي الكبير**۔ مدینہ منورہ، سعودی عرب، ۱۳۸۴ھ/۱۹۶۴ء۔

٦٤۔ **ابن حجر عسقلانی**، احمد بن علی بن محمد بن محمد بن علی بن احمد کنانی (۷۷۳۔۸۵۲ھ/ ۱۳۷۲۔۱۴۴۹ء)۔ **تهذيب التهذيب**۔ بیروت، لبنان: دارالفکر، ۱۴۰۴ھ/۱۹۸۴ء۔

٦٥۔ **ابن حجر عسقلانی**، احمد بن علی بن محمد بن محمد بن علی بن احمد کنانی (۷۷۳۔۸۵۲ھ/ ۱۳۷۲۔ ۱۴۴۹ء)۔ **الدراية في تخريج أحاديث الهداية**۔ بیروت، لبنان: دارالمعرفۃ۔

٦٦۔ **ابن حجر عسقلانی**، احمد بن علی بن محمد بن محمد بن علی بن احمد کنانی (۷۷۳۔۸۵۲ھ/ ۱۳۷۲۔۱۴۴۹ء)۔ سلسلة الذهب فيما رواه الشافعي عن مالک عن نافع عن ابن عمر۔

٦٧۔ **ابن حجر عسقلانی**، احمد بن علی بن محمد بن محمد بن علی بن احمد کنانی (۷۷۳۔۸۵۲ھ/ ۱۳۷۲۔۱۴۴۹ء)۔ فتح الباري شرح صحيح البخاري۔ لاہور، پاکستان: دارنشر الکتب الاسلامیہ، ۱۴۰۱ھ/ ۱۹۸۱ء۔

٦٨۔ **ابن حجر عسقلانی**، احمد بن علی بن محمد بن محمد بن علی بن احمد کنانی (۷۷۳۔۸۵۲ھ/ ۱۳۷۲۔۱۴۴۹ء)۔ القول المسدد في الذب عن المسند للإمام أحمد۔ قاہرہ، مصر: مکتبہ ابن تیمیہ، ۱۴۰۱ھ۔

٦٩۔ **ابن حجر عسقلانی**، احمد بن علی بن محمد بن محمد بن علی بن احمد کنانی (۷۷۳۔۸۵۲ھ/ ۱۳۷۲۔۱۴۴۹ء)۔ لسان الميزان۔ بیروت، لبنان، مؤسسة الأعلمی المطبوعات ۱۴۰۶ھ/۱۹۸۶ء۔

۷۰۔ **ابن حجر عسقلانی**، احمد بن علی بن محمد بن محمد بن علی بن احمد کنانی (۷۷۳۔۸۵۲ھ/ ۱۳۷۲۔۱۴۴۹ء)۔ المطالب العالية۔ بیروت، لبنان: دار المعرفة، ۱۴۰۷ھ/ ۱۹۷۸ء۔

۷۱۔ **ابن حزم**، علی بن احمد بن سعید بن حزم اندلسی (۳۸۴۔۴۵۶ھ/۹۹۴۔۱۰۶۴ء)۔ الإحكام في أصول الأحكام۔ فیصل آباد، پاکستان: ضیاء السنہ ادارة الترجمہ والتعریف، ۱۴۰۴ھ۔

۷۲۔ **ابن حزم**، علی بن احمد بن سعید بن حزم أندلسی (۳۸۴۔۴۵۶ھ/۹۹۴۔۱۰۶۴ء)۔ المحلّٰی۔ بیروت، لبنان: دار الآفاق الجدیدة۔

۷۳۔ **حسام الدین ہندی**، علاء الدین علی متقی (م ۹۷۵ھ)۔ كنز العمال في سنن الأقوال والأفعال۔ بیروت، لبنان: مؤسسة الرسالہ، ۱۳۹۹/۱۹۷۹۔

۷٤۔ **حسینی**، ابراہیم بن محمد (۱۰۵۴۔۱۱۲۰ھ)۔ البيان والتعريف۔ بیروت، لبنان: دار الکتاب العربی، ۱۴۰۱ھ۔

۷٥۔ **حصکفی**، صدر الدین موسیٰ بن زکریا (۶۵۰ھ)۔ مسند الإمام أبي حنيفة۔ کراچی،

پاکستان: میر محمد کتب خانہ۔

٧٦۔ **ابن حضر عروسی**، ابوعبد الرحمٰن جیلان۔ **كتاب الدعاء**۔ لاہور، پاکستان: نعمانی کتب خانہ، ۲۰۰۳ء۔

٧٧۔ **حکیم ترمذی**، ابوعبد اللہ محمد بن علی بن حسن بن بشیر۔ **نوادر الأصول في أحاديث الرسول**۔ بیروت، لبنان: دار الجیل، ۱۹۹۲ء۔

٧٨۔ **حلبی**، ابراہیم بن محمد بن سبط ابن العجمی الطرابلسی (۷۵۳۔۸۴۱ھ)۔ **الكشف الحثيث رمي يوضع الحديث**۔ بیروت، لبنان: مکتبۃ النھضۃ العربیہ، ۱۴۰۷ھ/۱۹۸۷ء۔

٧٩۔ **حلبی**، علی بن برہان الدین (۱۴۰۴ھ)۔ **السيرة الحلبية**، بیروت، لبنان، دارالمعرفہ، ۱۴۰۰ھ۔

٨٠۔ **حمیدی**، ابو بکر عبداللہ بن زبیر (۲۱۹ھ/۸۳۴ء)۔ **المسند**۔ بیروت، لبنان: دار الکتب العلمیہ + قاہرہ، مصر: مکتبۃ المتنبی۔

٨١۔ **ابن حیان**، ابو محمد عبد اللہ بن محمد بن جعفر بن حیان الأنصاری (۲۷۴۔ ۳۶۹ھ)۔ **طبقات المحدثين بأصبهان والواردين عليها**۔ بیروت، لبنان: مؤسسۃ الرسالۃ، ۱۴۱۲ھ۔

٨٢۔ **ابن حیان**، عبداللہ بن محمد بن جعفر بن حبان اصبہانی، ابو محمد (۲۷۴۔۳۶۹ھ)۔ **العظمة**۔ ریاض، سعودی عرب: دار العاصمہ، ۱۴۰۸ھ

٨٣۔ **ابن خزیمہ**، ابو بکر محمد بن إسحاق (۲۲۳۔۳۱۱ھ/۸۳۸۔۹۲۴ء)۔ **الصحيح**۔ بیروت، لبنان: المکتب الاسلامی، ۱۳۹۰ھ/۱۹۷۰ء۔

٨٤۔ **خطابی**، حمد بن محمد بن إبراہیم الخطابی البستی (۳۱۹۔۳۸۸ھ)۔ **إصلاح غلط المحدثين**۔ دمشق، شام: دار المأمون للتراث، ۱۴۰۷ھ۔

٨٥۔ **خطیب بغدادی**، ابوبکر احمد بن علی بن ثابت بن احمد بن مہدی بن ثابت (۳۹۲۔۴۶۳ھ/۱۰۰۲۔۱۰۷۱ء)۔ **تاريخ بغداد**۔ بیروت، لبنان: دار الکتب العلمیہ۔

٨٦۔ **خطیب بغدادی**، ابوبکر احمد بن علی بن ثابت بن احمد بن مہدی بن ثابت (۳۹۲۔۴۶۳ھ/۱۰۰۲۔۱۰۷۱ء)۔ **تلخيص المتشابه**۔ ریاض، سعودی عرب: دار الصمیعی، ۱۴۱۷ھ۔

۸۷۔ **خطیب بغدادی**، ابوبکر احمد بن علی بن ثابت بن احمد بن مہدی بن ثابت (۳۹۲۔ ۴۶۳ھ/۱۰۰۲۔ ۱۰۷۱ء)۔ الجامع لأخلاق الراوي وآداب السامع۔ الریاض، سعودی عرب: مکتبہ المعارف، ۱۴۰۳ھ۔

۸۸۔ **خطیب بغدادی**، ابوبکر احمد بن علی بن ثابت بن احمد بن مہدی بن ثابت (۳۹۲۔ ۴۶۳ھ/۱۰۰۲۔ ۱۰۷۱ء)۔ الکفایة في علم الروایة۔ مدینہ منورہ، سعودی عرب: المکتبہ العلمیہ۔

۸۹۔ **خطیب بغدادی**، ابوبکر احمد بن علی بن ثابت بن احمد بن مہدی بن ثابت (۳۹۲۔ ۴۶۳ھ/۱۰۰۲۔ ۱۰۷۱ء)۔ موضح أوهام الجمع والتفریق۔ بیروت، لبنان: دار المعرفة ۱۴۰۷ء۔

۹۰۔ **خطیب تبریزی**، ولی الدین ابو عبد اللہ محمد بن عبد اللہ (۷۴۱ھ)۔ مشکوٰة المصابیح۔ بیروت، لبنان، دار الکتب العلمیة، ۱۴۲۴ھ/۲۰۰۳ء۔

۹۱۔ **ابن خلاد**، ابو الحسن بن عبد الرحمٰن بن خلاد رامهرمزی (۳۶۰ھ)۔ أمثال الحدیث المرویة عن النبي ﷺ۔ بیروت، لبنان: مؤسسة الکتاب الثقافیة، ۱۴۰۹ھ۔

۹۲۔ **خلال**، احمد بن محمد بن ہارون بن یزید الخلال، ابوبکر (۲۳۴۔۳۱۱ھ)۔ السنة۔ ریاض، سعودی عرب: ۱۴۱۰ھ

۹۳۔ **خوارزمی**، ابو المؤید محمد بن محمود (۵۹۳۔۶۶۵ھ)۔ جامع المسانید۔ بیروت، لبنان۔

۹۴۔ **دارمی**، ابو محمد عبد اللہ بن عبد الرحمٰن (۱۸۱۔۲۵۵ھ/۷۹۷۔۸۶۹ء)۔ السنن۔ بیروت، لبنان: دار الکتاب العربی، ۱۴۰۷ھ۔

۹۵۔ **دارقطنی**، ابو الحسن علی بن عمر بن احمد بن مہدی بن مسعود بن نعمان (۳۰۶۔۳۸۵ھ/ ۹۱۸۔۹۹۵ء)۔ السنن۔ بیروت، لبنان: دار المعرفہ، ۱۳۸۶ھ/۱۹۶۶ء۔

۹۶۔ **ابوداود**، سلیمان بن اشعث سجستانی (۲۰۲۔۲۷۵ھ/۸۱۷۔۸۸۹ء)۔ السنن۔ بیروت، لبنان: دار الفکر، ۱۴۱۴ھ/۱۹۹۴ء۔

٩٧۔ **ابن درهم**، ابو سعید احمد بن محمد بن زیاد بن بشر بن درهم (٢٤٥-٣٤٠ھ)۔ الزهد وصفة الزاهدين۔ طنطا: دار الصحابة للتراث، ١٤٠٨ھ۔

٩٨۔ **الدمشقی**، ابو عبد الله محمد بن ابی بکر الحنبلی (٦٩١- ٧٥١ھ)۔ المنار المنيف في الصحيح والضعيف۔ حلب، شام: مکتب المطبوعات الإسلامیہ، ١٤١٣ھ۔

٩٩۔ **دمیاطی**، ابو محمد شرف الدین (م ٧٠٥ھ)۔ المتجر الرابح في ثواب العمل الصالح۔ مکہ مکرمہ، سعودی عرب: مکتبة ومطبعة النهضة الحديثة، ١٤١٤ھ/١٩٩٤ء۔

١٠٠۔ **ابن ابی الدنیا**، ابوبکر عبد الله بن محمد القرشی (٢٠٨-٢٨١ھ)۔ الأولياء۔ بیروت، لبنان: مؤسسة الکتب الثقافية، ١٤١٣ھ۔

١٠١۔ **ابن ابی الدنیا**، ابوبکر عبد الله بن محمد القرشی (٢٠٨-٢٨١ھ)۔ کتاب التهجد وقيام الليل۔ الریاض، سعودی عرب: مکتبة الرشید، ١٩٨٠ء۔

١٠٢۔ **ابن ابی الدنیا**، ابوبکر عبد الله بن محمد القرشی (٢٠٨-٢٨١ھ)۔ من عاش بعد الموت۔ بیروت، لبنان: مؤسسة الکتب الثقافية، ١٤١٣ھ۔

١٠٣۔ **دولابی**، ابو بشر محمد بن احمد بن محمد بن حماد (٢٢٤-٣١٠)۔ الذرية الطاهرة النبوية۔ کویت: الدار السلفیة۔ ١٤٠٧

١٠٤۔ **دیلمی**، ابو شجاع شیرویہ بن شهردار بن شیرویہ الدیلمی الهمذانی (٤٤٥-٥٠٩ھ/ ١٠٥٣-١١١٥ء)۔ مسند الفردوس۔ بیروت، لبنان: دار الکتب العلمیہ، ١٩٨٦ء۔

١٠٥۔ **ذهبی**، شمس الدین محمد بن احمد الذهبی (٦٧٣-٧٤٨ھ)۔ میزان الاعتدال في نقد الرجال۔ بیروت، لبنان، دار الکتب العلمیہ، ١٩٩٥ء۔

١٠٦۔ **ذهبی**، شمس الدین محمد بن احمد الذهبی (٦٧٣-٧٤٨ھ)۔ سير أعلام النبلاء۔ بیروت، لبنان، مؤسسة الرسالة، ١٤١٣ھ۔

١٠٧۔ **ذهبی**، شمس الدین محمد بن احمد الذهبی (٦٧٣-٧٤٨ھ)۔ تذکرة الحفاظ۔ بیروت، لبنان: دار الکتب العلمیہ۔

١٠٨۔ **رازی**، محمد بن عمر بن حسن بن حسین بن علی تیمی (٥٤٣-٦٠٦ھ/ ١١٤٩-١٢١٠ء)۔ التفسير الكبير۔ تهران، ایران: دار الکتب العلمیہ۔

۱۰۹۔ **ابن راشد**، معمر بن راشد الأزدی (۱۵۱ھ)۔ **الجامع**۔ بیروت، لبنان: المکتب الاسلامی، ۱۴۰۳ھ۔

۱۱۰۔ **ابن راہویہ**، ابو یعقوب إسحاق بن إبراہیم بن مخلد بن إبراہیم بن عبداللہ (۱۶۱۔ ۲۳۷ھ / ۷۷۸۔ ۸۵۱ء)۔ **المسند**۔ مدینہ منورہ، سعودی عرب: مکتبۃ الایمان، ۱۴۱۲ھ/ ۱۹۹۱ء۔

۱۱۱۔ **ابن رجب حنبلی**، ابو الفرج عبد الرحمٰن بن احمد (۷۳۶۔ ۷۹۵ھ)۔ **التخويف من النار والتعريف بحال دار البوار**۔ دمشق، شام: مکتبۃ دار البیان، ۱۳۹۹ھ۔

۱۱۲۔ **ابن رجب حنبلی**، ابو الفرج عبد الرحمٰن بن احمد (۷۳۶۔ ۷۹۵ھ)۔ **جامع العلوم و الحكم في شرح خمسين حديثا من جوامع الكلم**۔ بیروت، لبنان: دارالمعرفہ، ۱۴۰۸ھ۔

۱۱۳۔ **ابن رشد**، ابو ولید محمد بن احمد بن محمد بن رشد القرطبی (۵۹۵ھ)۔ **بداية المجتهد**۔ بیروت، لبنان: دارالفکر۔

۱۱٤۔ **رویانی**، ابو بکر محمد بن ہارون الرویانی (۳۰۷ھ)۔ **المسند**۔ قاہرہ، مصر: مؤسسہ قرطبہ، ۱۴۱۶ھ۔

۱۱۵۔ **زرعی**، ابو عبد اللہ محمد بن ابی بکر ایوب (۶۹۱۔ ۷۵۱ھ)۔ **نقد المنقول بين المردود والمقبول**۔ بیروت، لبنان: دارالقاری، ۱۴۱۱ھ۔

۱۱٦۔ **زرقانی**، ابوعبد اللہ محمد بن عبد الباقی بن یوسف بن احمد بن علوان مصری أزہری مالکی (۱۰۵۵۔ ۱۱۲۲ھ/ ۱۶۴۵۔ ۱۷۱۰ء)۔ **شرح المواهب اللدنية**۔ بیروت، لبنان: دار الکتب العلمیہ، ۱۴۱۷ھ/ ۱۹۹۶ء۔

۱۱۷۔ **زرقانی**، ابوعبد اللہ محمد بن عبد الباقی بن یوسف بن احمد بن علوان مصری أزہری مالکی (۱۰۵۵۔ ۱۱۲۲ھ/ ۱۶۴۵۔ ۱۷۱۰ء)۔ **شرح الموطأ**۔ بیروت، لبنان: دار الکتب العلمیہ، ۱۴۱۱ھ۔

۱۱۸۔ **زمخشری**، ابو القاسم محمد بن عمر (۵۳۸ھ)۔ **مختصر كتاب الموافقة بين أهل البيت والصحابة**۔ بیروت، لبنان: دار الکتب الحکمیۃ۔

١١٩۔ **ابن زید**، ابو اسماعیل حماد بن اسحاق بن اسماعیل (٢٦٧ھ)۔ **تركة النبي ﷺ والسبل التي وجهها فيها**۔ ١٤٠٤ھ۔

١٢٠۔ **زیلعی**، ابو محمد عبد اللہ بن یوسف حنفی (٧٦٢ھ)۔ **نصب الراية لأحاديث الهداية**۔ مصر، دارالحدیث، ١٣٥٧ھ۔

١٢١۔ **سبکی**، تقی الدین ابو الحسن علی بن عبد الکافی بن علی بن تمام بن یوسف بن موسیٰ بن تمام انصاری (٦٨٣۔٧٥٦ھ/١٢٨٤۔١٣٥٥ء)۔ **شفاء السقام في زيارة خير الأنام**۔ حیدر آباد، بھارت: دائرہ معارف نظامیہ، ١٣١٥ھ۔

١٢٢۔ **سخاوی**، شمس الدین محمد بن عبدالرحمٰن (٨٣١ھ۔٩٠٤ھ)۔ **استجلاب إرتقاء الغرف بحب أقربا الرسول وذوى الشرف**۔ مکتبہ الملک ریاض، سعودی عرب: مکتبہ فہد الوطنیۃ، ١٤٢١ھ۔

١٢٣۔ **ابن سعد**، ابو عبد اللہ محمد (١٦٨۔٢٣٠ھ/٧٨٤۔٨٤٥ء)۔ **الطبقات الكبرى**۔ بیروت، لبنان: دار بیروت للطباعہ و النشر، ١٣٩٨ھ/١٩٧٨ء۔

١٢٤۔ **ابو سعود**، محمد بن عمادی (٨٩٨۔٩٨٢ھ/١٤٩٣۔١٥٧٤ء)۔ **إرشاد العقل السليم إلى مزايا القرآن الكريم** (تفسیر ابی سعود)۔ بیروت، لبنان: دار احیاء التراث العربی۔

١٢٥۔ **سعید بن منصور**، ابو عثمان الخراسانی، (٢٢٧ھ)۔ **السنن**۔ ریاض، سعودی عرب: دار العصیمی، ١٤١٤ھ۔

١٢٦۔ **ابن سلیمان**، خیثمہ بن سلیمان القرشی الطرابلسی (٢٥٠۔٣٤٣ھ)۔ **من حديث خيثمة بن سليمان القرشي الطرابلسي**۔ بیروت، لبنان: دار بیروت الکتاب العربی، ١٤٠٠ھ/١٩٨٠ء۔

١٢٧۔ **سمرقندی**، ابو محمد محمد بن احمد (٥٣٩ھ)۔ **تحفة الفقهاء**۔ بیروت، لبنان: دار الکتب العلمیۃ، ١٤٠٥ھ۔

١٢٨۔ **سمعانی**، منصور بن محمد بن عبدالجبار السمعانی ابو المظفر (٤٢٦۔٤٨٩ھ)۔ **التفسير**۔ ریاض، سعودی عرب: دار الوطن، ١٤١٨ھ/١٩٩٧م۔

۱۲۹۔ **سندی،** نور الدین بن عبدالهادی، ابو الحسن (۱۱۳۸ھ)۔ حاشية على سنن النسائي۔ حلب، شام: مکتبہ المطبوعات الاسلامیہ، ۱۴۰۶ھ/۱۹۸۶ء۔

۱۳۰۔ **ابن السنّی**، احمد بن محمد الدینوری (۲۸۴۔۳۶۴ھ)۔ عمل اليوم والليلة۔ بیروت، لبنان: دار ابن حزم، ۱۴۲۵ھ/۲۰۰۴ء۔

۱۳۱۔ **سیوطی،** جلال الدین ابوالفضل عبد الرحمٰن بن ابی بکر بن محمد بن ابی بکر بن عثمان (۸۴۹۔۹۱۱ھ/ ۱۴۴۵۔ ۱۵۰۵ء)۔ أسباب ورود الحديث أو اللمع في أسباب الحديث۔ بیروت، لبنان: دار المکتبۃ العلمیۃ،۱۴۰۴ھ/ ۱۹۸۴ء۔

۱۳۲۔ **سیوطی،** جلال الدین ابوالفضل عبد الرحمٰن بن ابی بکر بن محمد بن ابی بکر بن عثمان (۸۴۹۔۹۱۱ھ/ ۱۴۴۵۔ ۱۵۰۵ء)۔ الإتقان في علوم القرآن۔ لبنان، مطبعہ أمیر، منشورات الرضی بیدار۔

۱۳۳۔ **سیوطی،** جلال الدین ابو الفضل عبد الرحمٰن بن ابی بکر بن محمد بن ابی بکر بن عثمان (۸۴۹۔۹۱۱ھ/ ۱۴۴۵۔۱۵۰۵ء)۔تاريخ الخلفاء۔ بغداد،عراق:مکتبۃ الشرق الجدید۔

۱۳٤۔ **سیوطی،** جلال الدین ابوالفضل عبد الرحمٰن بن ابی بکر بن محمد بن ابی بکر بن عثمان (۸۴۹۔۹۱۱ھ/ ۱۴۴۵۔ ۱۵۰۵ء)۔ تبييض الصحيفة بمناقب أبي حنيفة۔ بیروت، لبنان: دار الکتب العلمیۃ،۱۴۱۰ھ/ ۱۹۹۰ء۔

۱۳٥۔ **سیوطی، محلی**، جلال الدین محمد بن احمد المحلی (۸۶۴ھ) جلال الدین ابو الفضل عبدالرحمٰن بن ابی بکر بن محمد ابی بکر بن عثمان (۸۴۹۔۹۱۱ھ/ ۱۴۴۵۔۱۵۰۵ء)۔ تفسير الجلالين۔ بیروت، لبنان: دار ابن کثیر، ۱۴۱۹ھ۔ ۱۹۹۸ء۔

۱۳٦۔ **سیوطی،** جلال الدین ابوالفضل عبد الرحمٰن بن ابی بکر بن محمد بن ابی بکر بن عثمان (۸۴۹۔۹۱۱ھ/ ۱۴۴۵۔ ۱۵۰۵ء)۔ تدريب الراوي في شرح تقريب النواوي۔ ریاض،سعودی عرب: مکتبہ الریاض الحدیثہ۔

۱۳۷۔ **سیوطی،** جلال الدین ابوالفضل عبد الرحمٰن بن ابی بکر بن محمد بن ابی بکر بن عثمان (۸۴۹۔۹۱۱ھ/ ۱۴۴۵۔ ۱۵۰۵ء)۔ تنوير الحوالک شرح موطأ مالک۔ مصر: مکتبہ التجاریہ الکبری، ۱۳۸۹ھ/ ۱۹۶۹ء۔

١٣٨۔ **سیوطی**، جلال الدین ابوالفضل عبد الرحمٰن بن ابی بکر بن محمد بن ابی بکر بن عثمان (۸۴۹۔۹۱۱ھ/ ۱۴۴۵۔ ۱۵۰۵ء)۔ **الجامع الصغير في أحاديث البشير النذير**۔ بیروت، لبنان: دار الکتب العلمیہ۔

١٣٩۔ **سیوطی**، جلال الدین ابو الفضل عبد الرحمٰن بن ابی بکر بن محمد بن ابی بکر بن عثمان (۸۴۹۔۹۱۱ھ/ ۱۴۴۵۔ ۱۵۰۵ء)۔ **الحاوي للفتاوى**۔ بیروت، لبنان: دارالکتب العربی، ۱۴۲۵ھ۔

١٤٠۔ **سیوطی**، جلال الدین ابو الفضل عبد الرحمٰن بن ابی بکر بن محمد بن ابی بکر بن عثمان (۸۴۹۔۹۱۱ھ/ ۱۴۴۵۔ ۱۵۰۵ء)۔ **الحاوي للفتاوى**۔ لائلپور، پاکستان: المکتبۃ النوریۃ الرضویۃ، ۱۹۷۲ھ۔

١٤١۔ **سیوطی**، جلال الدین ابو الفضل عبد الرحمٰن بن ابی بکر بن محمد بن ابی بکر بن عثمان (۸۴۹۔۹۱۱ھ/ ۱۴۴۵۔ ۱۵۰۵ء)۔ **الخصائص الكبرى**۔ فیصل آباد، پاکستان: مکتبہ نوریہ رضویہ۔

١٤٢۔ **سیوطی**، جلال الدین ابو الفضل عبد الرحمٰن بن ابی بکر بن محمد بن ابی بکر بن عثمان (۸۴۹۔۹۱۱ھ/ ۱۴۴۵۔ ۱۵۰۵ء)۔ **الدر المنثور في التفسير بالمأثور**۔ بیروت، لبنان: دار المعرفۃ۔

١٤٣۔ **سیوطی**، جلال الدین ابو الفضل عبد الرحمٰن بن ابی بکر بن محمد بن ابی بکر بن عثمان (۸۴۹۔۹۱۱ھ/ ۱۴۴۵۔ ۱۵۰۵ء)۔ **الديباج على صحيح مسلم**۔ الخبر، سعودی عرب: دار ابن عفان، ۱۴۱٦ھ/ ۱۹۹٦ء۔

١٤٤۔ **سیوطی**، جلال الدین ابو الفضل عبد الرحمٰن بن ابی بکر بن محمد بن ابی بکر بن عثمان (۸۴۹۔۹۱۱ھ/ ۱۴۴۵۔ ۱۵۰۵ء)۔ **شرح سنن ابن ماجه**۔ کراچی، پاکستان: قدیمی کتب خانہ۔

١٤٥۔ **سیوطی**، جلال الدین ابو الفضل عبد الرحمٰن بن ابی بکر بن محمد بن ابی بکر بن عثمان (۸۴۹۔۹۱۱ھ/ ۱۴۴۵۔ ۱۵۰۵ء)۔ **شرح على سنن النسائي**۔ حلب، شام: مکتب المطبوعات الإسلامیۃ، ۱۴۰٦ھ/ ۱۹۸٦ء۔

١٤٦۔ **سیوطی**، جلال الدین ابو الفضل عبد الرحمٰن بن ابی بکر بن محمد بن ابی بکر بن عثمان

(۸۴۹-۹۱۱ھ/ ۱۴۴۵- ۱۵۰۵ء)۔ لباب النقول في أسباب النزول۔ قاہرہ، مصر: مطبعہ مصطفیٰ البابی الحلبی، ۱۳۵۴ھ/ ۱۹۳۵ھ۔

١٤٧۔ **سیوطی**، جلال الدین ابو الفضل عبد الرحمٰن بن ابی بکر بن محمد بن ابی بکر بن عثمان (۸۴۹-۹۱۱ھ/ ۱۴۴۵- ۱۵۰۵ء)۔ مفتاح الجنة۔ مدینہ منورہ، سعودی عرب: الجامعۃ الإسلامیۃ، ۱۳۹۹ھ۔

١٤٨۔ **شاشی**، ابو سعید ہیثم بن کلیب بن شریح (۳۳۵ھ/ ۹۴۶ء)۔ المسند۔ مدینہ منورہ، سعودی عرب: مکتبۃ العلوم والحکم، ۱۴۱۰ھ۔

١٤٩۔ **شافعی**، ابو عبد اللہ محمد بن ادریس بن عباس بن عثمان بن شافع قرشی (۱۵۰-۲۰۴ھ /۷۶۷-۸۱۹ء)۔ المسند۔ بیروت لبنان: دار الکتب العلمیہ

١٥٠۔ **شافعی**، ابو عبد اللہ محمد بن ادریس بن عباس بن عثمان بن شافع قرشی (۱۵۰-۲۰۴ھ /۷۶۷-۸۱۹ء)۔ السنن المأثورة۔ بیروت لبنان: دار المعرفۃ، ۱۴۰۶ھ۔

١٥١۔ **شاہ ولی اللہ**، الدہلوی (۱۱۷۴ھ/۱۷۶۲ء)۔ المسوی من أحادیث الموطأ۔ مکہ مکرمہ، سعودی عرب: مکتبہ الحجاز، ۱۳۵۱ھ۔

١٥٢۔ **ابن شاہین**، ابو حفص عمر بن احمد بن عثمان (۲۹۷-۳۸۵ھ)۔ ناسخ الحدیث و منسوخہ۔ الزرقاء: مکتبۃ المنار، ۱۴۰۸ھ/ ۱۹۸۸۔

١٥٣۔ **شوکانی**، محمد بن علی بن محمد (۱۱۷۳-۱۲۵۰ھ/۱۷۶۰-۱۸۳۴ء)۔ در السحابة في مناقب القرابة والصحابة۔ لاہور، پاکستان: مکتبہ سید احمد شہید، ۱۴۰۴ھ۔

١٥٤۔ **شوکانی**، محمد بن علی بن محمد (۱۱۷۳-۱۲۵۰ھ/۱۷۶۰-۱۸۳۴ء)۔ نیل الأوطار شرح منتقی الأخبار۔ بیروت، لبنان: دار الفکر، ۱۴۰۲ھ/۱۹۸۲ء۔

١٥٥۔ **شوکانی**، محمد بن علی بن محمد (۱۱۷۳-۱۲۵۰ھ/۱۷۶۰-۱۸۳۴ء)۔ فتح القدیر۔ بیروت، لبنان: دار الفکر، ۱۴۰۲ھ/۱۹۸۲ء۔

١٥٦۔ **شہرستانی**، ابو الفتح محمد بن عبد الکریم بن ابی بکر احمد (۴۷۹-۵۴۸ھ)۔ الملل والنحل۔ بیروت، لبنان: دار المعرفۃ، ۲۰۰۱ء۔

١٥٧۔ **شیبانی**، محمد بن حسن (۱۳۲-۱۸۹ھ)۔ الموطأ۔ کراچی، پاکستان: میر محمد کتب خانہ۔

۱۵۸۔ **شیبانی**، ابوبکر احمد بن عمرو بن ضحاک بن مخلد (۲۰۶۔۲۸۷ھ/۸۲۲۔۹۰۰ء)۔ الآحاد والمثاني۔ ریاض، سعودی عرب: دار الرایہ، ۱۴۱۱ھ/۱۹۹۱ء۔

۱۵۹۔ **شیبانی**، محمد بن الحسن بن فرقد ابو عبد اللہ (۱۳۲۔۱۸۹ھ)۔ الأصل المعروف بالمبسوط۔ کراچی، پاکستان: ادارۃ القرآن و العلوم الاسلامیہ۔

۱۶۰۔ **ابن ابی شیبہ**، ابو بکر عبد اللہ بن محمد بن ابراہیم بن عثمان کوفی (۱۵۹۔۲۳۵ھ/۷۷۶۔۸۴۹ء)۔ المصنف۔ ریاض، سعودی عرب: مکتبۃ الرشد، ۱۴۰۹ھ۔

۱۶۱۔ **صنعانی**، محمد بن اسماعیل الامیر (م ۷۷۳۔۸۵۲ھ)۔ سبل السلام شرح بلوغ المرام۔ بیروت، لبنان: دار احیاء التراث العربی، ۱۳۷۹ھ۔

۱۶۲۔ **صیداوی**، محمد بن احمد بن جمیع، ابو الحسین (م ۳۰۵۔۴۰۲ھ)۔ معجم الشیوخ۔ بیروت، لبنان: مؤسسۃ الرسالۃ، ۱۴۰۵ھ۔

۱۶۳۔ **طاہر القادری**، ڈاکٹر محمد طاہر القادری۔ عرفان القرآن۔ لاہور، پاکستان: منہاج القرآن پبلی کیشنز۔

۱۶۴۔ **طبرانی**، ابو القاسم سلیمان بن احمد بن ایوب بن مطیر اللخمی (۲۶۰۔۳۶۰ھ/۸۷۳۔۹۷۱ء)۔ کتاب الدعاء۔ بیروت، لبنان: دارالکتب العلمیۃ ۱۴۲۱ھ/۲۰۰۱ء۔

۱۶۵۔ **طبرانی**، ابو القاسم سلیمان بن احمد بن ایوب بن مطیر اللخمی (۲۶۰۔۳۶۰ھ/۸۷۳۔۹۷۱ء)۔ مسند الشاميين۔ بیروت، لبنان: مؤسسۃ الرسالہ، ۱۴۰۵ھ/۱۹۸۴ء۔

۱۶۶۔ **طبرانی**، ابو القاسم سلیمان بن احمد بن ایوب بن مطیر اللخمی (۲۶۰۔۳۶۰ھ/۸۷۳۔۹۷۱ء)۔ المعجم الأوسط۔ ریاض، سعودی عرب: مکتبۃ المعارف، ۱۴۰۵ھ/۱۹۸۵ء۔

۱۶۷۔ **طبرانی**، ابو القاسم سلیمان بن احمد بن ایوب بن مطیر اللخمی (۲۶۰۔۳۶۰ھ/۸۷۳۔۹۷۱ء)۔ المعجم الصغير۔ بیروت، لبنان: دار الکتب العلمیہ، ۱۴۰۳ھ/۱۹۸۳ء۔

١٦٨۔ **طبرانی**، ابو القاسم سلیمان بن احمد بن ایوب بن مطیر اللخمی (۲۶۰ـ۳۶۰ھ/ ۸۷۳ـ۹۷۱ء)۔ المعجم الکبیر۔ موصل، عراق: مطبعة الزهراء الحدیثة۔

١٦٩۔ **طبرانی**، ابو القاسم سلیمان بن احمد بن ایوب بن مطیر اللخمی (۲۶۰ـ۳۶۰ھ/ ۸۷۳ـ۹۷۱ء)۔ المعجم الکبیر۔ قاہرہ، مصر: مکتبہ ابن تیمیہ۔

١٧٠۔ **طبری**، ابوجعفر محمد بن جریر بن یزید (۲۲۴ـ۳۱۰ھ/ ۸۳۹ـ۹۲۳ء)۔ تاریخ الأمم والملوک۔ بیروت، لبنان: دارالکتب العلمیہ، ۱۴۰۷ھ۔

١٧١۔ **طبری**، ابوجعفر محمد بن جریر بن یزید (۲۲۴ـ۳۱۰ھ/ ۸۳۹ـ۹۲۳ء)۔ جامع البیان عن تأویل أي القرآن۔ بیروت، لبنان: دارالفکر، ۱۴۰۵ھ۔

١٧٢۔ **طبری**، ابوجعفر احمد بن عبد الله بن محمد بن ابی بکر بن محمد بن ابراہیم (۶۱۵ـ ۶۹۴ھ/ ۱۲۱۸ـ۱۲۹۵ء)۔ ذخائر العقبى في مناقب ذوی القربى۔ دارالکتب العصریہ۔

١٧٣۔ **طبری**، ابوجعفر احمد بن عبد الله بن محمد بن ابی بکر بن محمد بن ابراہیم (۶۱۵ـ ۶۹۴ھ/ ۱۲۱۸ـ۱۲۹۵ء)۔ الریاض النضرة في مناقب العشرة۔ بیروت، لبنان: دارالغرب الاسلامی، ۱۹۹۶ء۔

١٧٤۔ **طحاوی**، ابوجعفر احمد بن محمد بن سلامہ بن سلمہ بن عبد الملک بن سلمہ (۲۲۹ـ۳۲۱ھ/ ۸۵۳ـ۹۳۳ء)۔ شرح معاني الآثار۔ بیروت، لبنان: دار الکتب العلمیہ، ۱۳۹۹ھ۔

١٧٥۔ **طحاوی**، ابوجعفر احمد بن محمد بن سلامہ بن سلمہ بن عبد الملک بن سلمہ (۲۲۹ـ۳۲۱ھ/ ۸۵۳ـ۹۳۳ء)۔ مَشکَل الآثار۔ بیروت، لبنان: دار صادر۔

١٧٦۔ **طیالسی**، ابوداود سلیمان بن داود جارود (۱۳۳ـ۲۰۴ھ/ ۷۵۱ـ۸۱۹ء)۔ المسند۔ بیروت، لبنان: دار المعرفہ۔

١٧٧۔ **ابن ابی عاصم**، ابوبکر بن عمرو بن ضحّاک بن مخلد شیبانی (۲۰۶ـ۲۸۷ھ/ ۸۲۲ـ۹۰۰ء)۔ الجهاد۔ مدینہ منورہ، سعودی عرب: مکتبة العلوم والحکم، ۱۴۰۹ھ۔

١٧٨۔ **ابن ابی عاصم**، ابوبکر بن عمرو بن ضحّاک بن مخلد شیبانی (۲۰۶ـ۲۸۷ھ/ ۸۲۲ـ۹۰۰ء)۔ الزهد۔ قاہرہ، مصر: دار الریان للتراث، ۱۴۰۸ھ۔

١٧٩۔ **ابن ابی عاصم**، ابوبکر بن عمرو بن ضحّاک بن مخلد شیبانی (۲۰۶۔۲۸۷ھ/۸۲۲۔۹۰۰ء)۔ السنة۔ بیروت، لبنان: المکتب الاسلامی، ۱۴۰۰ھ۔

١٨٠۔ **ابن عبد البر**، ابو عمر یوسف بن عبد اللہ بن محمد (۳۶۸۔۴۶۳ھ/۹۷۹۔۱۰۷۱ء)۔ الاستیعاب في معرفة الأصحاب۔ بیروت، لبنان: دار الجیل، ۱۴۱۲ھ۔

١٨١۔ **ابن عبد البر**، ابو عمر یوسف بن عبد اللہ بن محمد (۳۶۸۔۴۶۳ھ/۹۷۹۔۱۰۷۱ء)۔ التمهيد۔ مغرب (مراکش): وزات عموم الأوقاف و الشؤون الإسلامیہ، ۱۳۸۷ھ۔

١٨٢۔ **ابن عبد البر**، ابو عمر یوسف بن عبد اللہ بن محمد (۳۶۸۔۴۶۳ھ/۹۷۹۔۱۰۷۱ء)۔ جامع بيان العلم و فضله۔ بیروت، لبنان: دار الکتب العلمیہ، ۱۳۹۸ھ/۱۹۷۸ء

١٨٣۔ **ابوعبد اللہ**، احمد بن إبراہیم بن کثیر دورقی (۱۶۸۔۲۴۶ھ)۔ مسند سعد بن أبي وقاص۔ بیروت، لبنان: دارالبشائر الاسلامیہ، ۱۴۰۷ھ۔

١٨٤۔ **عبد اللہ**، بن احمد بن حنبل (۲۱۳۔۲۹۰ھ)۔ السنة۔ دمام: دار ابن قیم، ۱۴۰۶ھ۔

١٨٥۔ **عبد بن حمید**، ابومحمد بن نصر الکسی (م ۲۴۹ھ/۸۶۳ء)۔ المسند۔ قاہرہ، مصر: مکتبة السنہ، ۱۴۰۸ھ/۱۹۸۸ء۔

١٨٦۔ **عبد الحق**، محدث دہلوی، شیخ (۹۵۸۔۱۰۵۲ھ/۱۵۵۱۔۱۶۴۲ء)۔ شرح سفر السعادت۔ کانپور، بھارت: مطبع منشی نولکشور۔

١٨٧۔ **عبد الرزاق**، ابو بکر بن ہمام بن نافع صنعانی (۱۲۶۔۲۱۱ھ/۷۴۴۔۸۲۶ء)۔ المصنف۔ بیروت، لبنان: المکتب الاسلامی، ۱۴۰۳ھ۔

١٨٨۔ **عبد الرزاق**، ابو بکر بن ہمام بن نافع صنعانی (۱۲۶۔۲۱۱ھ/۷۴۴۔۸۲۶ء)۔ الجزء المفقود من الجزء الأول من المصنف۔ بیروت، لبنان + لاہور، پاکستان: مؤسسة الشرف، ۱۴۲۵ھ/۲۰۰۵ء۔

١٨٩۔ **عجلونی**، ابو الفداء إسماعیل بن محمد بن عبد الہادی بن عبد الغنی جراحی (۱۰۸۷۔۱۱۶۲ھ/۱۶۷۶۔۱۷۴۹ء)۔ کشف الخفا و مزيل الألباس۔ بیروت، لبنان: مؤسسة الرسالہ، ۱۴۰۵ھ۔

١٩٠۔ **ابن عدی**، عبد اللہ بن عدی بن عبداللہ بن محمد ابو احمد الجرجانی (۲۷۷ھ۔۳۶۵ھ)۔

الكامل في ضعفاء الرجال۔ بيروت، لبنان: دار الفكر، ۱۴۰۹ھ/ ۱۹۸۸ء۔

۱۹۱۔ عز الدين، بليق۔ منهاج الصالحين من أحاديث وسنة خاتم الأنبياء والمرسلين۔ بيروت، لبنان: دار الفتح، ۱۳۹۸ھ/ ۱۹۷۸ء۔

۱۹۲۔ ابن عساكر، ابو قاسم علی بن حسن بن ہبۃ اللہ بن عبد اللہ بن حسین دمشقی (۴۹۹۔ ۵۷۱ھ/ ۱۱۰۵۔ ۱۱۷۶ء)۔ تاريخ دمشق الكبير (المعروف بـ: تاريخ ابن عساكر)۔ بيروت، لبنان: دار احياء التراث العربی، ۱۴۲۱ھ/ ۲۰۰۱ء۔

۱۹۳۔ ابن عساكر، ابو قاسم علی بن حسن بن ہبۃ اللہ بن عبد اللہ بن حسین دمشقی (۴۹۹۔ ۵۷۱ھ/ ۱۱۰۵۔ ۱۱۷۶ء)۔ تهذيب تاريخ دمشق الكبير۔ بيروت، لبنان، دارالمیسرہ، ۱۳۹۹ھ/ ۱۹۷۹ء۔

۱۹۴۔ عظیم آبادی، ابو الطیب محمد شمس الحق۔ عون المعبود شرح سنن أبي داود۔ بيروت، لبنان: دار الکتب العلمیۃ، ۱۴۱۵ھ۔

۱۹۵۔ ابوعوانہ، یعقوب بن اسحاق بن إبراہیم بن زید نیشاپوری (۲۳۰۔ ۳۱۶ھ/ ۸۴۵۔ ۹۲۸ء)۔ المسند۔ بيروت، لبنان: دار المعرفہ، ۱۹۹۸ء۔

۱۹۶۔ عینی، بدر الدین ابو محمد محمود بن احمد بن موسیٰ بن احمد بن حسین بن یوسف بن محمود (۷۶۲۔ ۸۵۵ھ/ ۱۳۶۱۔ ۱۴۵۱ء)۔ عمدة القاري شرح على صحيح البخاري۔ بيروت، لبنان: دار الفکر، ۱۳۹۹ھ/ ۱۹۷۹ء۔

۱۹۷۔ غزالی، ابو حامد محمد بن محمد الغزالی (۴۵۰۔ ۵۰۵ھ)۔ إحياء علوم الدين۔ بيروت، لبنان: دارالمعرفہ۔

۱۹۸۔ ابن غزوان، ابوعبد الرحمٰن محمد بن فضیل بن غزوان ضبی (۱۹۵ھ)۔ كتاب الدعاء۔ ریاض، سعودی عرب، مکتبۃ الرشید، ۱۹۹۹ء۔

۱۹۹۔ فاکہی، ابوعبد اللہ محمد بن اسحاق بن عباس مکی (۲۷۲ھ/ ۸۸۵ء)۔ أخبار مكة في قديم الدهر وحديثة۔ بيروت، لبنان: دارخضر، ۱۴۱۴ھ۔

۲۰۰۔ فریابی، ابو بکر جعفر بن محمد بن حسن (۲۰۷۔ ۳۰۱ھ)۔ دلائل النبوة۔ مکہ المکرّمہ، سعودی عرب: دارحراء، ۱۴۰۶ھ۔

٢٠١۔ **فریابی**، ابو بکر جعفر بن محمد بن حسن (۲۰۷۔۳۰۱ھ)۔ صفة المنافق۔ کویت: دار الخلفاء الکتاب الإسلامی، ۱۴۰۵ھ۔

٢٠٢۔ **فریابی**، ابو بکر جعفر بن محمد بن حسن (۲۰۷۔۳۰۱ھ)۔ الصیام۔ بمبئی، بھارت: دار الکتب السّلفیہ، ۱۴۱۲ھ۔

٢٠٣۔ **قاضی عیاض**، ابو الفضل عیاض بن موسیٰ بن عیاض بن عمرو بن موسیٰ بن عیاض بن محمد بن موسیٰ بن عیاض یحصبی (۴۷۶۔۵۴۴ھ/۱۰۸۳۔۱۱۴۹ء)۔ الشفاء بتعریف حقوق المصطفی ﷺ۔ بیروت، لبنان: دار الکتاب العربی۔

٢٠٤۔ **قاضی عیاض**، ابو الفضل عیاض بن موسیٰ بن عیاض بن عمرو بن موسیٰ بن عیاض بن محمد بن موسیٰ بن عیاض یحصبی (۴۷۶۔۵۴۴ھ/۱۰۸۳۔۱۱۴۹ء)۔ الشفاء بتعریف حقوق المصطفی ﷺ۔ ملتان، پاکستان: عبدالتواب اکیڈمی۔

٢٠٥۔ **ابن قانع**، عبد الباقی (۲۶۵۔۳۵۱ھ)۔ معجم الصحابة۔ مدینہ منورہ، مکتبۃ الغرباء الاثریۃ، ۱۴۱۸ھ۔

٢٠٦۔ **ابن قتیبہ**، عبد اللہ بن مسلم بن قتیبہ ابو محمد الدینوری (۲۱۳۔۲۷۶ھ)۔ تأویل مختلف الحدیث۔ بیروت، لبنان: دار الجلیل، ۱۳۹۳ھ/۱۹۷۲ء۔

٢٠٧۔ **ابن قدامہ**، ابو محمد عبد اللہ بن احمد المقدسی (۶۲۰ھ)۔ المغني في فقه الإمام أحمد بن حنبل الشيباني۔ بیروت، لبنان: دار الفکر، ۱۴۰۵ھ۔

٢٠٨۔ **قرطبی**، ابو عبد اللہ محمد بن احمد بن محمد بن یحییٰ بن مفرج اُموی (۲۸۴۔۳۸۰ھ/ ۸۹۷۔۹۹۰ء)۔ الجامع لأحکام القرآن۔ بیروت، لبنان: دار احیاء التراث العربی۔

٢٠٩۔ **قزوینی**، عبدالکریم بن محمد الرافعی۔ التدوین في أخبار قزوین۔ بیروت، لبنان: دار الکتب العلمیہ، ۱۹۸۷ء۔

٢١٠۔ **قسطلانی**، ابوالعباس احمد بن محمد بن ابی بکر بن عبد الملک بن احمد بن محمد بن محمد بن حسین بن علی (۸۵۱۔ ۹۲۳ھ/۱۴۴۸۔۱۵۱۷ء)۔ المواهب اللدنية بالمنح المحمدية۔ بیروت، لبنان: المکتب الاسلامی، ۱۴۱۲ھ/ ۱۹۹۱ء۔

٢١١۔ **قضاعی**، ابو عبد اللہ محمد بن سلامہ بن جعفر (۴۵۴ھ)۔ مسند الشهاب۔ بیروت،

لبنان: مؤسسۃ الرسالہ، ۱۴۰۷ھ۔

۲۱۲۔ **قنوجی**، صدیق بن حسن القنوجی (۱۲۴۸۔۱۳۰۷ھ)۔ أبجد العلوم الوشي المرقوم في بيان أحوال العلوم۔ بیروت، لبنان: دار الکتب العلمیۃ، ۱۹۷۸ء۔

۲۱۳۔ **ابن قیسرانی**، ابو الفضل محمد بن طاہر بن علی بن احمد مقدسی (۴۴۸۔۵۰۷ھ/۱۰۵۶۔۱۱۱۳ء)۔ تذكرة الحفاظ۔ ریاض، سعودی عرب: دار الصمیعی، ۱۴۱۵ھ۔

۲۱۴۔ **ابن قیم**، ابو عبداللہ محمد بن ابی بکر أیوب الذرعی (۶۹۱۔۷۵۱ھ)۔ حاشية على سنن أبي داود۔ بیروت، لبنان: دار الکتب العلمیۃ، ۱۴۱۵ھ/۱۹۹۵ء۔

۲۱۵۔ **کاسانی**، علاء الدین (۵۸۷ھ)۔ بدائع الصنائع۔ بیروت، لبنان، دار الکتاب العربی، ۱۹۸۲ء۔

۲۱۶۔ **ابن کثیر**، ابو الفداء إسماعیل بن عمر (۷۰۱۔۷۷۴ھ/۱۳۰۱۔۱۳۷۳ء)۔ البداية والنهاية۔ بیروت، لبنان: دار الفکر، ۱۴۱۹ھ/۱۹۹۸ء۔

۲۱۷۔ **ابن کثیر**، ابو الفداء إسماعیل بن عمر (۷۰۱۔۷۷۴ھ/۱۳۰۱۔۱۳۷۳ء)۔ تحفة الطالب بمعرفة أحاديث مختصر ابن الحاجب۔ مکہ مکرمہ، سعودی عرب: دار حراء، ۱۴۰۶ھ۔

۲۱۸۔ **ابن کثیر**، ابو الفداء إسماعیل بن عمر (۷۰۱۔۷۷۴ھ/۱۳۰۱۔۱۳۷۳ء)۔ تفسير القرآن العظيم۔ بیروت، لبنان: دار المعرفہ، ۱۴۰۰ھ/۱۹۸۰ء۔

۲۱۹۔ **ابن کثیر**، ابو الفداء إسماعیل بن عمر (۷۰۱۔۷۷۴ھ/۱۳۰۱۔۱۳۷۳ء)۔ قصص الأنبياء۔ بیروت، لبنان: دار الخیر، ۱۴۱۲ھ/۱۹۹۲ء۔

۲۲۰۔ **کلاعی**، ابو الربیع سلیمان بن موسی الکلاعی الأندلسی (۵۶۵۔۶۳۴ھ)۔ الاكتفاء في مغازي رسول الله ﷺ والثلاثة الخلفاء۔ بیروت، لبنان، مکتبۃ الهلال، ۱۳۸۷ھ/ ۱۹۶۸ء۔

۲۲۱۔ **کنانی**، احمد بن ابی بکر بن إسماعیل (۷۶۲۔۸۴۰ھ)۔ مصباح الزجاجة في زوائد ابن ماجه۔ بیروت، لبنان، دار العربیۃ، ۱۴۰۳ھ۔

۲۲۲۔ **لالکائی**، ابو قاسم ھبۃ اللہ بن حسن بن منصور (م ۴۱۸ھ)۔ شرح أصول اعتقاد

أهل السنة والجماعة من الكتاب والسنة وإجماع الصحابة۔ الرياض، سعودی عرب، دار طیبہ، ۱۴۰۲ھ۔

۲۲۳۔ لالکائی، ابو قاسم ھبۃ اللہ بن حسن بن منصور (م ۴۱۸ھ)۔ کرامات أولياء الله ﷻ۔ ریاض، سعودی عرب، دار طیبہ، ۱۴۱۲ھ۔

۲۲۴۔ ابن ماجہ، ابو عبد اللہ محمد بن یزید قزوینی (۲۰۹۔۲۷۳ھ/۸۲۴۔۸۸۷ء)۔ السنن۔ بیروت، لبنان: دار الکتب العلمیہ، ۱۴۱۹ھ/۱۹۹۸ء۔

۲۲۵۔ مالک، ابن انس بن مالک ﷺ بن ابی عامر بن عمرو بن حارث اصبحی (۹۳۔۱۷۹ھ/ ۷۱۲۔۷۹۵ء)۔ المدونة الكبرى۔ بیروت، لبنان: دار صادر۔

۲۲۶۔ مالک، ابن انس بن مالک ﷺ بن ابی عامر بن عمرو بن حارث اصبحی (۹۳۔۱۷۹ھ/ ۷۱۲۔۷۹۵ء)۔ الموطأ۔ بیروت، لبنان: دار احیاء التراث العربی، ۱۴۰۶ھ/۱۹۸۵ء۔

۲۲۷۔ ابن مبارک، ابو عبد الرحمن عبد اللہ بن واضح مروزی (۱۱۸۔۱۸۱ھ/۷۳۶۔۷۹۸ء)۔ کتاب الزهد۔ بیروت، لبنان: دار الکتب العلمیہ۔

۲۲۸۔ ابن مبارک، ابو عبد الرحمن عبد اللہ بن واضح مروزی (۱۱۸۔۱۸۱ھ/۷۳۶۔۷۹۸ء)۔ الجهاد۔ تونس: دار تونسیہ۔

۲۲۹۔ مبارک پوری، محمد عبد الرحمن بن عبد الرحیم (۱۲۸۳۔۱۳۵۳ھ)۔ تحفة الأحوذي في شرح جامع الترمذي۔ بیروت، لبنان: دار الکتب العلمیہ۔

۲۳۰۔ ابو محاسن، ابو محاسن یوسف بن موسیٰ حنفی۔ معتصر من المختصر من مشكل الآثار۔ بیروت، لبنان: عالم الکتاب۔

۲۳۱۔ المحاملی، حسین بن اسماعیل الضبی ابو عبداللہ (۲۳۵۔۳۳۰ھ)۔ أمالي المحاملي۔ دمام، اردن: دار ابن القیم، ۱۴۱۲ھ۔

۲۳۲۔ مروزی، محمد بن نصر بن الحجاج، ابو عبداللہ (۲۰۲۔۲۹۴ھ)۔ تعظيم قدر الصلاة۔ مدینہ منورہ، سعودی عرب: مکتبہ الدار، ۱۴۰۶ھ۔

۲۳۳۔ مروزی، محمد بن نصر بن الحجاج، ابو عبداللہ (۲۰۲۔۲۹۴ھ)۔ السنة۔ بیروت، لبنان: مؤسسۃ الکتب الثقافیۃ، ۱۴۰۸ھ۔

۲۳٤۔ **مزی**، ابو الحجاج یوسف بن زکی عبد الرحمٰن بن یوسف بن عبد الملک بن یوسف بن علی (۶۵۴۔۷۴۲ھ/۱۲۵۶۔۱۳۴۱ء)۔ تحفة الأشراف بمعرفة الأطراف۔ ممبئی، بھارت: الدار القیمہ + بیروت، لبنان: المکتب الاسلامی، ۱۴۰۳ھ/۱۹۸۳ء۔

۲۳۵۔ **مزی**، ابو الحجاج یوسف بن زکی عبد الرحمٰن بن یوسف بن عبد الملک بن یوسف بن علی (۶۵۴۔۷۴۲ھ/۱۲۵۶۔۱۳۴۱ء)۔ تهذیب الکمال۔ بیروت، لبنان: مؤسسۃ الرسالہ، ۱۴۰۰ھ/۱۹۸۰ء۔

۲۳٦۔ **مسلم**، ابن الحجاج ابو الحسن القشیری النیسابوری (۲۰۶۔ ۲۶۱ھ/۸۲۱۔۸۷۵ء)۔ الصحیح۔ بیروت، لبنان: دار احیاء التراث العربی۔

۲۳۷۔ **مقدسی**، محمد بن عبد الواحد حنبلی (۶۴۳ھ)۔ الأحادیث المختارة۔ مکہ المکرّمہ، سعودی عرب: مکتبۃ النهضۃ الحدیثیہ، ۱۴۱۰ھ/۱۹۹۰ء۔

۲۳۸۔ **مقدسی**، محمد بن عبد الواحد حنبلی (۶۴۳ھ)۔ الأحادیث المختارة۔ فضائل بیت المقدس۔ شام: دار الفکر، ۱۴۰۵ھ۔

۲۳۹۔ **مقرئی**، ابو عمرو عثمان بن سعید دانی (۳۷۱۔۴۴۴ھ)۔ السنن الواردة في الفتن۔ الریاض: سعودی عرب، ۱۴۱۶ھ۔

۲٤۰۔ **مقری**، ابو بکر محمد بن ابراہیم (۲۸۵۔۳۸۱ھ)۔ الرخصة في تقبیل الید۔ الریاض: سعودی عرب، ۱۴۰۸ھ۔

۲٤۱۔ **مقریزی**، ابو العباس احمد بن علی بن عبد القادر بن محمد بن ابراہیم بن محمد بن تمیم بن عبد الصمد (۷۶۹۔۸۴۵ھ/۱۳۶۷۔۱۴۴۱ء)۔ مختصر کتاب الوتر۔ اُردن: مکتبۃ المنار، ۱۴۱۳ھ۔

۲٤۲۔ **ابن ملقن**، عمر بن علی بن ملقن الأنصاری (۷۲۳۔۸۰۴ھ)۔ خلاصة البدر المنیر في تخریج کتاب الشرح الکبیر للرافعي۔ الریاض، سعودی عرب: مکتبۃ الرشد، ۱۴۱۰ھ۔

۲٤۳۔ **مناوی**، عبد الرؤف بن تاج العارفین بن علی بن زین العابدین (۹۵۲۔۱۰۳۱ھ/۱۵۴۵۔۱۶۲۱ء)۔ فیض القدیر شرح الجامع الصغیر۔ مصر: مکتبہ تجاریہ کبریٰ، ۱۳۵۶ھ۔

٢٤٤۔ **ابن منجویہ**، احمد بن علی الاصبہانی (۳۴۷۔ ۴۲۸ھ)۔ **رجال صحیح مسلم**۔ بیروت، لبنان: دارالمعرفہ، ۱۴۰۷ھ۔

٢٤٥۔ **ابن مندہ**، ابو عبد اللہ محمد بن اسحاق بن یحییٰ (۳۱۰۔۳۹۵ھ/۹۲۲۔۱۰۰۵ء)۔ **الإیمان**۔ بیروت، لبنان: مؤسسۃ الرسالہ، ۱۴۰۶ھ۔

٢٤٦۔ **منذری**، ابو محمد عبد العظیم بن عبد القوی بن عبد اللہ بن سلامہ بن سعد (۵۸۱۔۶۵۶ھ/ ۱۱۸۵۔۱۲۵۸ء)۔ **الترغیب والترھیب**۔ بیروت، لبنان: دار الکتب العلمیہ، ۱۴۱۷ھ۔

٢٤٧۔ **ابن منظور**، محمد بن مکرم بن علی بن احمد بن ابی قاسم بن حبقہ أفریقی (۶۳۰۔۷۱۱ھ/ ۱۲۳۲۔۱۳۱۱ء)۔ **لسان العرب**۔ بیروت، لبنان: دار صادر۔

٢٤٨۔ **موفق**، الموفق بن احمد المکی الکردری (۸۲۷ھ)۔ **مناقب الإمام الأعظم أبي حنیفة**۔ کوئٹہ: پاکستان، مکتبۃ الاسلامیۃ، ۱۴۰۷ھ۔

٢٤٩۔ **نحاس**، احمد بن محمد بن إسماعیل المرادی ابوجعفر (۳۳۹ھ)۔ **الناسخ والمنسوخ**۔ کویت: مکتبہ الفلاح، ۱۴۰۸ھ۔

٢٥٠۔ **نسائی**، احمد بن شعیب، ابوعبدالرحمٰن (۲۱۵۔۳۰۳ھ/۸۳۰۔۹۱۵ء)۔ **خصائص أمیر المومنین علي بن أبي طالب** رضی اللہ عنہ۔ بیروت، لبنان: دار الکتب العربی، ۱۴۰۷ھ/۱۹۸۷م۔

٢٥١۔ **نسائی**، احمد بن شعیب، ابو عبدالرحمٰن (۲۱۵۔۳۰۳ھ/۸۳۰۔۹۱۵ء)۔ **السنن**۔ بیروت، لبنان: دار الکتب العلمیہ، ۱۴۱۶ھ/۱۹۹۵ء۔

٢٥٢۔ **نسائی**، احمد بن شعیب، ابوعبدالرحمٰن (۲۱۵۔۳۰۳ھ/۸۳۰۔۹۱۵ء)۔ **السنن الکبری**۔ بیروت، لبنان: دار الکتب العلمیہ، ۱۴۱۱ھ/۱۹۹۱ء۔

٢٥٣۔ **نسائی**، احمد بن شعیب، ابو عبدالرحمٰن (۲۱۵۔۳۰۳ھ/۸۳۰۔۹۱۵ء)۔ **فضائل الصحابة**۔ بیروت، لبنان: دارالکتب العلمیہ، ۱۴۰۵ھ۔

٢٥٤۔ **نسائی**، احمد بن شعیب، ابو عبدالرحمٰن (۲۱۵۔۳۰۳ھ/۸۳۰۔۹۱۵ء)۔ **عمل الیوم واللیلة**۔ بیروت، لبنان: مؤسسۃ الرسالہ، ۱۴۰۷ھ/۱۹۸۷ء۔

٢٥٥۔ **ابو نعیم**، احمد بن عبد اللہ بن احمد بن إسحاق بن موسیٰ بن مہران أصبہانی (۳۳۶۔

۴۳۰ھ/ ۹۴۸-۱۰۳۸ء)۔ تاریخ أصبهان۔ بیروت، لبنان: دار الکتب العلمیۃ، ۱۴۱۰ھ/۱۹۹۰ء۔

۲۵۶۔ **ابو نعیم**، احمد بن عبد الله بن احمد بن إسحاق بن موسیٰ بن مہران أصبہانی (۳۳۶-۴۳۰ھ/ ۹۴۸-۱۰۳۸ء)۔ حلیة الأولیاء و طبقات الأصفیاء۔ بیروت، لبنان: دار الکتاب العربی، ۱۴۰۰ھ/۱۹۸۰ء۔

۲۵۷۔ **ابو نعیم**، احمد بن عبد الله بن احمد بن إسحاق بن موسیٰ بن مہران أصبہانی (۳۳۶-۴۳۰ھ/ ۹۴۸-۱۰۳۸ء)۔ دلائل النبوة۔ حیدر آباد، بھارت: مجلس دائرہ معارف عثمانیہ، ۱۳۶۹ھ/۱۹۵۰ء۔

۲۵۸۔ **ابو نعیم**، احمد بن عبد الله بن احمد بن إسحاق بن موسیٰ بن مہران أصبہانی (۳۳۶-۴۳۰ھ/ ۹۴۸-۱۰۳۸ء)۔ المسند المستخرج علی صحیح مسلم۔ بیروت، لبنان: دار الکتب العلمیہ، ۱۹۹۶ء۔

۲۵۹۔ **ابو نعیم**، احمد بن عبد الله بن احمد بن إسحاق بن موسیٰ بن مہران أصبہانی (۳۳۶-۴۳۰ھ/ ۹۴۸-۱۰۳۸ء)۔ مسند الإمام أبي حنیفة۔ ریاض، سعودی عرب، مکتبۃ الکوثر، ۱۴۱۵ھ۔

۲۶۰۔ **ابو نعیم**، احمد بن عبد الله بن احمد بن إسحاق بن موسیٰ بن مہران أصبہانی (۳۳۶-۴۳۰ھ/ ۹۴۸-۱۰۳۸ء)۔ کتاب الأربعین علی مذهب المتحققین من الصوفیة۔ بیروت، لبنان: دار ابن حزم، ۱۴۱۴ھ/۱۹۹۳ء۔

۲۶۱۔ **نعیم بن حماد**، المروزی، ابو عبد الله (م ۲۸۸ھ)۔ الفتن۔ قاہرہ، مصر: بیروت، لبنان: مؤسسۃ الکتب الثقافیۃ، ۱۴۰۸ھ۔

۲۶۲۔ **نووی**، ابو زکریا، یحییٰ بن شرف بن مری بن حسن بن حسین بن محمد بن جمعہ بن حزام (۶۳۱-۶۷۷ھ/۱۲۳۳-۱۲۷۸ء)۔ شرح صحیح مسلم۔ کراچی، پاکستان: قدیمی کتب خانہ، ۱۳۷۵ھ/۱۹۵۶ء۔

۲۶۳۔ **نووی**، ابو زکریا، یحییٰ بن شرف بن مری بن حسن بن حسین بن محمد بن جمعہ بن حزام (۶۳۱-۶۷۷ھ/۱۲۳۳-۱۲۷۸ء)۔ تہذیب الأسماء واللغات۔ بیروت، لبنان: دار الفکر، ۱۹۹۶ء۔

٢٦٤۔ **نووی**، ابو زکریا، یحیٰی بن شرف بن مری بن حسن بن حسین بن محمد بن جمعہ بن حزام (۶۳۱۔۶۷۷ھ/۱۲۳۳۔۱۲۷۸ء)۔ **رياض الصالحين من كلام سيد المرسلين** ﷺ۔ بیروت، لبنان: دار الخیر، ۱۴۱۲ھ/۱۹۹۱ء۔

٢٦٥۔ **نیشاپوری**، عبدالملک بن ابی عثمان محمد بن ابراہیم الخرکوشی نیشاپوری (م ۴۰۶ھ)۔ **شرف المصطفیٰ** ﷺ۔ مکۃ المکرّمۃ، سعودی عرب: دار البشائر الاسلامیۃ، ۱۴۲۴ھ/۲۰۰۳ء۔

٢٦٦۔ **واسطی**، اسلم بن سہل رزاز (م ۲۹۲ھ)۔ **تاريخ واسط**۔ بیروت، لبنان: عالم الکتاب، ۱۴۰۶ھ۔

٢٦٧۔ **ابن حجر ہیتمی**، ابو العباس احمد بن محمد بن محمد بن علی بن محمد بن علی بن حجر (۹۰۹۔۹۷۳ھ/۱۵۰۳۔۱۵۶۶ء)۔ **الصواعق المحرقة**۔ قاہرہ، مصر: مکتبۃ القاہرہ، ۱۳۸۵ھ/۱۹۶۵ء۔

٢٦٨۔ **ہناد**، ہناد بن سری کوفی (۱۵۲۔۲۴۳ھ)۔ **الزهد**۔ کویت: دار الخلفاء للکتاب الإسلامی، ۱۴۰۶ھ۔

٢٦٩۔ **ہیثمی**، نور الدین ابو الحسن علی بن ابی بکر بن سلیمان (۷۳۵۔۸۰۷ھ/۱۳۳۵۔۱۴۰۵ء)۔ **مجمع الزوائد**۔ قاہرہ، مصر: دار الریان للتراث + بیروت، لبنان: دار الکتاب العربی، ۱۴۰۷ھ/۱۹۸۷ء۔

٢٧٠۔ **ہیثمی**، نور الدین ابو الحسن علی بن ابی بکر بن سلیمان (۷۳۵۔۸۰۷ھ/۱۳۳۵۔۱۴۰۵ء)۔ **موارد الظمآن إلى زوائد ابن حبان**۔ بیروت، لبنان: دار الکتب العلمیہ۔

٢٧١۔ **ابن ہشام**، ابو محمد عبد الملک حمیری (۲۱۳ھ/۸۲۸ء)۔ **السيرة النبوية**۔ بیروت، لبنان: دار الجیل، ۱۴۱۱ھ۔

٢٧٢۔ **یاقوت بغدادی**، یاقوت بن عبداللہ الحموی، ابو عبداللہ (۶۲۶ھ)۔ **معجم البلدان**۔ بیروت، لبنان: دار احیاء التراث، ۱۳۹۹ھ/۱۹۷۹ء۔

٢٧٣۔ **یحیٰی بن معین**، ابو زکریا (۱۵۸۔۲۳۳ھ)۔ **التاريخ**۔ مکہ المکرّمہ، سعودی عرب: مرکز البحث العلمی و إحیاء التراث الاسلامی، ۱۳۹۹ھ/۱۹۷۹ء۔

٢٧٤۔ **یحییٰ بن معین**، ابو زکریا (۱۵۸۔۲۳۳ھ)۔ **التاریخ**۔ دمشق، شام: دار المأمون للتراث، ۱۴۰۰ھ۔

٢٧٥۔ **ابو یعلی**، احمد بن علی بن مثنی بن یحییٰ بن عیسیٰ بن ہلال موصلی تمیمی (۲۱۰۔۳۰۷ھ/ ۸۲۵۔۹۱۹ء)۔ **المسند**۔ دمشق، شام: دار المأمون للتراث، ۱۴۰۴ھ/۱۹۸۴ء۔

٢٧٦۔ **ابو یعلی**، احمد بن علی بن مثنی بن یحییٰ بن عیسیٰ بن ہلال موصلی تمیمی (۲۱۰۔۳۰۷ھ/ ۸۲۵۔۹۱۹ء)۔ **المعجم**۔ فیصل آباد، پاکستان: إدارة العلوم الأثریہ، ۱۴۰۷ھ۔

٢٧٧۔ **ابو یوسف**، یعقوب بن إبراہیم الانصاری (۱۸۲ھ)۔ **کتاب الآثار**۔ بیروت، لبنان: دار الکتب العلمیۃ، ۱۳۵۵ھ۔